प्राच्यसाहित्य पुनःप्रकाशनश्रेणि ग्रन्थांक-६

दाक्षिण्यचिह्नाङ्क श्रीमद् उद्योतनसूरिविरचिता

कुवलयमाला

अने

श्रीमद् रत्नप्रभसूरिविरचित

कुवलयमाला कथासंक्षेप

-: शुभाशीर्वाद :-

व्याख्यानवाचस्पति तपागच्छाधिपति

परमशासनप्रभावक स्व. पहज्यपादाचार्यदेव श्रीमद्

विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा

-: प्रेरक :-

पू. आचार्यदेव श्रीपूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज

पू. आचार्यदेव श्रीमुक्तिप्रभसूरीश्वरजी महाराज

-: पुनःप्रकाशक :-

श्री सिद्धिगिरि चातुर्मास - उपधानतप आराधक समिति

महाराष्ट्र भुवन धर्मशाला, तलेटी रोड,

पालिताणा - (सौराष्ट्र)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राच्यसाहित्य पुनःप्रकाशनश्रेणि ग्रन्थांक-६

दाक्षिण्यचिह्नाङ्क श्रीमद् उद्योतनसूरिविरचिता

कुवलयमाला

अने

श्रीमद् रत्नप्रभसूरिविरचित

कुवलयमाला कथासंक्षेप

-: शुभाशीर्वाद :-

व्याख्यानवाचस्पति तपागच्छाधिपति
परमशासनप्रभावक स्व. पूज्यपादाचार्यदेव श्रीमद्

विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा

-: सदुपदेशक :-

परमस्वाध्यायप्रेमी प्रवचनप्रभावक स्व. पूज्य
आचार्यदेव श्रीमद् **विजयमुक्तिचन्द्रसूरीश्वरजी** पट्टालंकार
प्रशमरसपयोनिधि पू. आचार्यदेव श्रीमद्

विजयजयकुंजर सूरीश्वरजी महाराजा

-: प्रेरक :-

पू. आचार्यदेव श्रीपूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज
पू. आचार्यदेव श्रीमुक्तिप्रभसूरीश्वरजी महहराज

-: पुनःप्रकाशक :-

श्री सिद्धिगिरि चातुर्मास - उपधानतप आराधक समिति
महाराष्ट्रभुवन धर्मशाला, तलेटी रोड,
पालिताणा - (सौराष्ट्र)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

जिनशासनना महानज्योतिर्धर, सुविशाल सुविहित- मुनिगण गच्छाधिपति, संघस्थविर, संघसन्मार्गदर्शक, संघपरमहितैषी, व्याख्यानवाचस्पति, स्व. पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् **विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजानह शुभ आशीर्वादथी सिंहगर्जनाना स्वामी, स्व. पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् **विजयमुक्तिचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजाना** पट्टालंकार, शासनप्रभावक पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् **विजयजयकुंजरसूरीश्वरजी महाराजा** तथा तेओना विद्वान शिष्यरत्नो समर्थसाहित्यकार पू. आचार्यदेव श्रीमद् **विजयपूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराज तथा समर्थप्रवचनकार पू. आचार्यदेव श्रीमद् **विजयमुक्तिप्रभसूरीश्वरजी महाराज** आदि ठाणानुं वि.सं. २०४७ नुं चातुर्मास **शा. केशवलाल पुनमचंद परिवार उंबरीवाला** तरफथी सिद्धगिरि महातीर्थे महाराष्ट्रभुवनमां खूब ज जाहोजलाली पूर्वक थयुं. आ प्रभावक चातुर्मासमां ३१० आराधको तथा चातुर्मास दरम्यान **उंबरीवाला** शा. **केशवलाल** पुनमचंद **परिवार** आयोजित उपधानतपमां ३४८ आराधको जोडायेल. चातुर्मासमां अनेकविध तपना अनुष्ठानो पूर्वक पर्वाधिराजनी भव्यातिभव्य आराधना थवा पामी हती, तेमज पू. परमगुरुदेव आचार्य भगवंत श्रीमद् **विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजाना** संयम-जीवननी अनुमोदनार्थे ३९ छोडना उद्यापन सहित भव्य महोत्सव उजवायेल. आराधना-प्रभावनाथी चिर-स्मरणीय बनी रहे, एवा आ चातुर्मासमां थयेल ज्ञानद्रव्यनी उपजमांथी तेओना सौजन्यपूर्वक आ ग्रंथनुं, सिंघी ग्रंथमाला तरफथी पूर्वे प्रकाशित पुनः प्रकाशन करता **श्री सिद्धगिरि चार्तुमास उपधानतप आराधक समिति** अतिशय आनंद अनुभवे छे.

- श्री सिद्धगिरि चातुर्मास उपधानतप आराधक समिति
महाराष्ट्रभुवन, पालिताणा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाक्षिण्यचिह्नाङ्क-श्रीमद्-उद्द्योतनसूरिविरचिता

कुवलयमाला

(प्राकृतभाषानिबद्धा चम्पूस्वरूपा महाकथा)

*

अतिदुर्लभ्यप्राचीनपुस्तकद्वयाधारेण सुपरिशोध्य बहुविधपाठभेदादियुक्तं
परिष्कृत्य च संपादनकर्ता

डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम्. ए., डी. लिट्.

प्राध्यापक, राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर (दक्षिण)

प्रथम भाग – मूल कथाग्रन्थ

प्रकाशनकर्ता

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्याभवन, बम्बई

विक्रमाब्द २०१५] प्रथमावृत्ति [खिस्ताब्द १९५९

ग्रन्थांक ४५] सर्वाधिकार सुरक्षित [मूल्य रु० १५–५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[ग्रन्थांक ४५]

दाक्षिण्यचिह्नाङ्क-श्रीमद्-उद्द्योतनसूरि-विरचिता

कुवलयमाला

(प्राकृतभाषानिबद्धा चम्पूस्वरूपा महाकथा)

●

प्रथम भाग - मूल कथाग्रन्थ

SINGHI JAIN SERIES

[NUMBER 45]

KUVALAYAMALA

OF

UDDYOTANA SŪRI

(A Unique Campū in Prākrit)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किञ्चित् प्रास्ताविक।

*

(कुवलयमाला कथाके प्रकाशनकी पूर्व कथा।)

*

अनेक वर्षोंसे जिसके प्रकाशित होनेकी विद्वानोंको विशिष्ट उत्कण्ठा हो रही थी, उस दाक्षिण्य चिह्नाङ्कित उद्द्योतन सूरिकी बनाई हुई प्राकृत महाकथा कुवलयमाला, **सिंघी जैन ग्रन्थमाला** के ४५ वें मणिरत्नके रूपमें, आज प्रकट करते हुए मुझे अतीव हर्षानुभव हो रहा है।

इस कथा ग्रन्थको इस रूपमें प्रकट करनेका आजसे कोई ४५ वर्ष पूर्व, मेरा संकल्प हुआ था।

विद्वन्मतल्लिक मुनिवर्य्य श्री पुण्यविजयजीके स्वर्गीय गुरुवर्य्य श्री चतुरविजयजी महाराजने रत्नप्रभसूरिकृत गद्यमय संस्कृत कुवलयमाला कथाका संपादन करके भावनगरकी जैन आत्मानन्द सभा द्वारा (सन् १९१६) प्रकाशित करनेका सर्वप्रथम सुप्रयत्न किया, तब उसकी संक्षिप्त प्रस्तावनामें प्रस्तुत प्राकृत कथाका आद्यन्त भाग उद्धृत करनेकी दृष्टिसे, पूनाके राजकीय ग्रन्थसंग्रह (जो उस समय डेक्कन कॉलेजमें स्थापित था) में सुरक्षित इस ग्रन्थकी, उस समय एकमात्र ज्ञात प्राचीन हस्तलिखित प्रति, मंगवाई गई। हमारे स्वर्गस्थ विद्वान् मित्र चिमनलाल डाह्याभाई दलाल, एम्. ए. ने उस समय 'गायकवाडस् ओरिएन्टल सिरीझ' का काम प्रारंभ किया था। प्रायः सन् १९१५ के समयकी यह बात है। उन्हींके प्रयत्नसे पूना वाली प्रति बडौदामें मंगवाई गई थी। मैं और श्री दलाल दोनों मिल कर उस प्रतिके कुछ पन्ने कई दिन टटोलते रहे, और उसमेंसे कुछ महत्त्वके उद्धरण नोट करते रहे। श्री दलालके हस्ताक्षर बहुत ही अव्यवस्थित और अस्पष्ट होते थे अतः इस ग्रन्थगत उद्धरणोंका आलेखन मैं ही स्वयं करता था। ग्रन्थका आदि और अन्त भाग मैंने अपने हस्ताक्षरोंमें सुन्दर रूपसे लिखा था। उसी समय कथागत वस्तुका कुछ विशेष अवलोकन हुआ और हम दोनोंका यह विचार हुआ कि इस ग्रन्थको प्रकट करना चाहिये। मैंने श्री दलालकी प्रेरणासे, गायकवाड सीरीझके लिये, सोमप्रभाचार्य रचित **कुमारपालप्रतिबोध** नामक विशाल प्राकृत ग्रन्थका संपादन कार्य हाथमें लिया था; और उसका छपना भी प्रारंभ हो गया था। मैंने मनमें सोचा था कि कुमारपालप्रतिबोधका संपादन समाप्त होने पर, इस कुवलयमालाका संपादन कार्य हाथमें लिया जाय।

श्री दलाल द्वारा संपादित गायकवाडस् ओरिएन्टल सीरीझका प्रथम ग्रन्थ राजशेखरकृत 'काव्यमीमांसा' प्रकट हुआ। इसके परिशिष्टमें, कुवलयमालाके जो कुछ उद्धरण दिये गये हैं उनकी मूल नकल सर्वप्रथम मैंने ही की थी।

पूना वाली प्रतिका ऊपर ऊपरसे निरीक्षण करते हुए मुझे आभास हुआ कि वह प्रति कुछ अशुद्ध है। पर उस समय, जेसलमेरकी प्रति ज्ञात नहीं थी। उसी वर्ष जेसलमेरके ज्ञानभंडारोंका निरीक्षण करनेके लिये, स्वर्गवासी विद्याप्रिय सयाजीराव गायकवाड नरेशका आदेश प्राप्त कर, श्री दलाल वहां गये और प्रायः तीन महिना जितना समय व्यतीत कर, वहांके भंडारोंकी ग्रन्थराशिका उनने ठीक ठीक परिचय प्राप्त किया। तभी उनको जेसलमेरमें सुरक्षित प्राकृत कुवलयमालाकी ताडपत्रीय प्राचीन प्रतिका पता लगा। पर उनको उसके ठीकसे देखनेका अवसर नहीं मिला था, अतः इसकी कोई विशेषता उनको ज्ञात नहीं हुई। बादमें बडौदासे मेरा प्रस्थान हो गया।

सन् १९१८ में मेरा निवास पूनामें हुआ। भांडारकर ओरिएन्टल रीसर्च इन्स्टिट्यूटकी स्थापनाके काममें, जैन समाजसे कुछ विशेष आर्थिक सहायता प्राप्त करानेकी दृष्टिसे, इन्स्टिट्यूटके मुख्य स्थापक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विद्वान् स्वर्गवासी डॉ० पाण्डुरंग गुणे, डॉ० एन्. जी. सरदेसाई और डॉ० एस्. के. बेल्वलकर आदिके आमंत्रणसे मैं पूना गया था। मेरा उद्देश इन्स्टिट्यूटकी स्थापनामें जैन समाजसे कुछ आर्थिक सहायता दिलानेके साथ, स्वयं मेरा आन्तरिक प्रलोभन, पूनाके उस महान् ग्रन्थसंग्रहको भी देखनेका था जिसमें जैन साहित्यके हजारों उत्तमोत्तम ग्रन्थ संग्रहीत हुए हैं। पूनामें जा कर, मैं एक तरफसे इन्स्टिट्यूटको अपेक्षित आर्थिक मदत दिलानेका प्रयत्न करने लगा, दूसरी तरफ मैं यथावकाश ग्रन्थसंग्रहके देखनेका भी काम करने लगा। उस समय यह ग्रन्थसंग्रह, डेक्कन कॉलेजके सरकारी मकानमेंसे हट कर, भांडारकर रीसर्च इन्स्टिट्यूटका जो नया, पर अधूरा, मकान बना था उसमें आ गया था।

अहमदाबादकी वर्तमान गुजरात विद्या सभाके विशिष्ट संचालक, प्रो० श्री रसिकलाल छोटालाल परीख, जो उस समय पूनाकी फर्गुसन कॉलेजमें रीसर्च स्कॉलरके रूपमें विशिष्ट अध्ययन कर रहे थे, मेरे एक अभिन्नहृदयी मित्र एवं अतीव प्रिय शिष्यके रूपमें, इस महान् ग्रन्थसंग्रहके निरीक्षण कार्यमें मुझे हार्दिक सहयोग दे रहे थे।

सन् १९१९ के नवंबर मासमें, भांडारकर रीसर्च इन्स्टिट्यूटकी तरफसे, भारतके प्राच्यविद्याभिज्ञ विद्वानोंकी सुविख्यात ओरिएन्टल कॉन्फरन्सका सर्वप्रथम अधिवेशन बुलानेका महद् आयोजन किया गया। मैंने इस कॉन्फरन्समें पढनेके लिये महान् आचार्य हरिभद्रसूरिके समयका निर्णय कराने वाला निबन्ध लिखना पसन्द किया।

इन आचार्यके समयके विषयमें भारतके और युरोपके कई विख्यात विद्वानोंमें कई वर्षोंसे परस्पर विशिष्ट मतभेद चल रहा था जिनमें जर्मनीके महान् भारतीयविद्याविज्ञ डॉ० हेर्मान याकोबी मुख्य थे।

जैन परंपरामें जो बहु प्रचलित उल्लेख मिलता है उसके आधार पर आचार्य हरिभद्रसूरिका स्वर्गमन विक्रम संवत् ५८५ माना जाता रहा है। पर डॉ० याकोबीको हरिभद्रके कुछ ग्रन्थगत उल्लेखोंसे यह ज्ञात हुआ कि उनके स्वर्गमनकी जो परंपरागत गाथा है वह ठीक नहीं बैठ सकती। हरिभद्रके स्वयंके कुछ ऐसे निश्चित उल्लेख मिलते हैं जिनसे उनका वि० सं० ५८५ में स्वर्गमन सिद्ध नहीं हो सकता। दूसरी तरफ, उनको महर्षि सिद्धर्षिकी उपमितिभवप्रपंचा कथामें जो उल्लेख मिलता है, कि आचार्य हरिभद्र उनके धर्मबोधकर गुरु हैं,—इसका रहस्य उनकी समझमें नहीं आ रहा था। सिद्धर्षिने अपनी वह महान् कथा विक्रम संवत् ९६२ में बनाई थी, जिसका स्पष्ट और सुनिश्चित उल्लेख उनने स्वयं किया है। अतः डॉ० याकोबीका मत बना था कि हरिभद्र, सिद्धर्षिके समकालीन होने चाहिये। इसका विरोधी कोई स्पष्ट प्रमाण उनको मिल नहीं रहा था। अतः वे हरिभद्रका समय विक्रमकी १० वीं शताब्दी स्थापित कर रहे थे। जैन विद्वान् अपनी परंपरागत गाथा का ही संपूर्ण समर्थन कर रहे थे।

मेरे देखनेमें प्राकृत कुवलयमालागत जब वह उल्लेख आया जिसमें कथाकारने अनेकशास्त्रप्रणेता आचार्य हरिभद्रको अपना प्रमाणशास्त्रशिक्षक गुरु बतलाया है और उनकी बनाई हुई प्रख्यात प्राकृत रचना **'समराइच्चकहा'** का भी बडे गौरवके साथ स्मरण किया है, तब निश्चय हुआ कि हरिभद्र कुवलयमालाकथाकार उद्द्योतनसूरिके समकालीन होने चाहिये। उद्द्योतनसूरिने अपनी रचनाका निश्चित समय, ग्रन्थान्तमें बहुत ही स्पष्ट रूपसे दे दिया है; अतः उसमें भ्रान्तिको कोई स्थान नहीं रहता। उद्द्योतनसूरिने कुवलयमालाकी रचनासमाप्ति शक संवत् ७०० के पूर्ण होनेके एकदिन पहले की थी। राजस्थान और उत्तर भारतकी परंपरा अनुसार चैत्रकृष्णा अमावस्याको शक संवत्सर पूर्ण होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदाको नया संवत्सर चालू होता है। उद्द्योतनसूरिने चैत्रकृष्णा चतुर्दशीके दिन अपनी ग्रन्थसमाप्ति की, अतः उनने स्पष्ट लिखा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कि एक दिन न्यून रहते, शक संवत्सर ७०० में यह ग्रन्थ समाप्त हो रहा है। शक संवत्सर ७०० की तुलनामें विक्रम संवत् ८३५ आता है। इस दृष्टिसे हरिभद्रसूरि, विक्रमकी ९ वीं शताब्दीके प्रथम पादमें हुए यह निश्चित होता है। न वे जैसा कि परंपरागत गाथामें सूचित वि० सं० ५८५ में ही स्वर्गस्थ हुए, और न सिद्धर्षिके समकालीन वि० सं० ९६२ के आसपास ही हुए।

मैंने इस प्रमाणको सन्मुख रख कर, हरिभद्रसूरिके समयका निर्णायक निबन्ध लिखना शुरू किया था। पर साथमें पूनाके उक्त ग्रन्थसंग्रहमें उपलब्ध हरिभद्रसूरिके अन्यान्य विशिष्ट ग्रन्थोंके अवलोकनका भी मुझे अच्छा अवसर मिला। इन ग्रन्थोंमें कई ऐसे विशिष्ट अन्य प्रमाण मिले जो उनके समयका निर्णय करनेमें अधिक आधाररूप और ज्ञापकस्वरूप थे। डॉ० याकोबीके अवलोकनमें ये उल्लेख नहीं आये थे, इस लिये मुझे अपने निबन्धके उपयोगी ऐसी बहुत नूतन सामग्री मिल गई थी, जिसका पूरा उपयोग मैंने अपने उस निबन्धमें किया।

मैंने अपना यह निबन्ध संस्कृत भाषामें लिखा। और उक्त 'ऑल इण्डिया ओरिएन्टल कॉन्फ़रन्स'के प्रमुख अधिवेशनमें विद्वानोंको पढ कर सुनाया। उस कॉन्फरन्सके मुख्य अध्यक्ष, स्वर्गस्थ डॉ० सतीशचन्द्र विद्याभूषण थे, जो उन दिनों भारतके एक बहुत गण्य मान्य विद्वान् माने जाते थे। उनने भी अपने एक ग्रन्थमें हरिभद्रसूरिके समयकी थोडीसी चर्चा की थी। मैंने अपने निबन्धमें इनके कथनका भी उल्लेख किया था और उसको असंगत बता कर उसकी आलोचना भी की थी। विद्याभूषण महाशय स्वयं मेरे निबन्धपाठके समय श्रोताके रूपमें उपस्थित थे। मेरे दिये गये प्रमाणोंको सुन कर, वे बहुत प्रसन्न हुए। मेरी की गई आलोचनाको उदार हृदयसे बिल्कुल सत्य मान कर उनने, बादमें मेरे रहनेके निवासस्थान पर आकर, मुझे बडे आदरके साथ बधाई दी। ऐसे सत्यप्रिय और साहित्यनिष्ठ प्रखर विद्वान्की बधाई प्राप्त कर मैंने अपनेको धन्य माना। पीछेसे मैंने इस निबन्धको पुस्तिकाके रूपमें छपवा कर प्रकट किया और फिर बादमें, **'जैन साहित्य संशोधक'** नामक संशोधनात्मक त्रैमासिक पत्रका संपादन व प्रकाशन कार्य, स्वयं मैंने शुरू किया, तब उसके प्रथम अंकमें ही **"हरिभद्रसूरिका समयनिर्णय"** नामक विस्तृत लेख हिन्दीमें तैयार करके प्रकट किया।

मैंने इन लेखोंकी प्रतियां जर्मनीमें डॉ० याकोबीको भेजी जो उस समय, आधुनिक पश्चिम जर्मनीकी राजधानी **बॉन** नगरकी युनिवर्सिटीमें भारतीय विद्याके प्रख्यात प्राध्यापकके पद पर प्रतिष्ठित थे। डॉ० याकोबीने मेरे निबन्धको पढ कर अपना बहुत ही प्रमुदित भाव प्रकट किया। यद्यपि मैंने तो उनके विचारोंका खण्डन किया था और कुछ अनुदार कहे जाने वाले शब्दोंमें भी उनके विचारोंकी आलोचना की थी। पर उस महामना विद्वान्ने, सत्यको हृदयसे सत्य मान कर, कटु शब्दप्रयोगका कुछ भी विचार नहीं किया और अपनी जो विचार-भ्रान्ति थी उसका निश्छद्म भावसे पूर्ण स्वीकार कर, मेरे कथनका संपूर्ण समर्थन किया।

हरिभद्रसूरिकी **समराइच्चकहा** नामक जो विशिष्ट प्राकृत रचना है उसका संपादन डॉ० याकोबीने किया है और बंगालकी एसियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित 'बिब्लियोथिका इन्डिका' नामक सीरीझमें वह प्रकट हुई है। इस ग्रन्थकी भूमिकामें डॉ० याकोबीने मेरे निबन्धकी प्रशंसा करते हुए वे सारी बातें बडे विस्तारसे लिखी हैं जिनका संक्षिप्त परिचय मैंने ऊपर दिया है।

डॉ० याकोबीके विचारोंको जब मैंने पढा तो मुझे जर्मनीके महान् विद्वानोंकी सत्यप्रियता, ज्ञानोपासना एवं कर्तव्यनिष्ठाके प्रति अत्यन्त समादर भाव उत्पन्न हुआ। मेरे मनमें हुआ कि कहां डॉ० याकोबी जैसा महाविद्वान्, जिसको समग्र भारतीय साहित्य और संस्कृतिका हस्तामलकवत् स्पष्ट दर्शन हो रहा है, और कहां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरे जैसा एक अतीव अल्पज्ञ और यथाकथंचित् पुस्तकपाठी सामान्य विद्यार्थी जन, जिसको अभी संशोधन की दिशाकी भी कोई कल्पना नहीं है—वैसे एक सिखाऊ अभ्यासीके लिखे गये लेखके विचारोंका स्वागत करते हुए, इस महान् विद्यानिधि विद्वान्ने कितने बडे उदार हृदयसे अपनी भूलका स्वीकार किया और मुझे धन्यवाद दिया। मेरे मनमें उसी समयसे जर्मन विद्वत्ता और विद्याप्रियताके प्रति अतीव उत्कृष्ट आदरभाव उत्पन्न हुआ और मैंने उन्हींके प्रदर्शित मार्ग पर चल कर, अपनी मनोगत जिज्ञासा और ज्ञानपिपासाको तृप्त करते रहनेका संकल्प किया। मैं मान रहा हूं कि मेरी यह जो अल्प-स्वल्प साहित्योपासना आज तक चलती रही है उसमें मुख्य प्रेरक वही संकल्प है।

इस कुवलयमालाके अन्तभागमें जहां हरिभद्रसूरिका उल्लेख किया गया है वह गाथा पूनावाली प्रतिमें कुछ खण्डित पाठवाली थी। मैंने त्रुटित अक्षरोंको अपनी कल्पनाके अनुसार वहां बिठानेका प्रयत्न किया। इसी प्रसंगमें पुनः कुवलयमालाकी प्रतिको वारंवार देखनेका अवसर मिला और मैं इसमेंसे अन्यान्य भी अनेक इतिहासोपयोगी और भाषोपयोगी उल्लेखोंके नोट करते रहा जो आज भी मेरी फाईलोंमें दबे हुए पडे हैं।

पूनामें रहते हुए स्व० डॉ० गुणेसे घनिष्ठ संपर्क हुआ। वे जर्मनी जा कर, वहांकी युनिवर्सिटीमें भारतीय भाषाविज्ञानका विशिष्ट अध्ययन कर आये थे और जर्मन भाषा भी सीख आये थे। अतः वे जर्मन विद्वानोंकी शैलीके अनुकरण रूप प्राचीन ग्रन्थोंका संपादन आदि करनेकी इच्छा रखते थे। वे प्राकृत और अपभ्रंश भाषा साहित्यका विशेष अध्ययन करना चाहते थे। मुझे भी इस विषयमें विशेष रुचि होने लगी थी, अतः मैं उनको जैन ग्रन्थोंके अवतरणों और उल्लेखों आदिकी सामग्रीका परिचय देता रहता था। उनकी इच्छा हुई कि किसी एक अच्छे प्राकृत ग्रन्थका या अपभ्रंश रचनाका संपादन किया जाय। मैंने इसके लिये प्रस्तुत कुवलयमाला का निर्देश किया, तो उनने कहा कि—'आप इसके मूल ग्रन्थका संपादन करें; मैं इसका भाषाविषयक अन्वेषण तैयार करूं; और अपने दोनोंकी संयुक्त संपादनकृतिके रूपमें इसे भांडारकर रीसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित होने वाली, राजकीय ग्रन्थमालामें प्रकट करनेका प्रबन्ध करें।' इस विचारके अनुसार मैंने स्वयं कुवलयमालाकी प्रतिलिपि करनेका प्रारंभ भी कर दिया।

सन् १९१९-२० में देशमें जो भयंकर इन्फ्लुएंजा का प्रकोप हुआ, उसका शिकार मैं भी बना और उसमें जीवितका भी संशय होने जैसी स्थिति हो गई। ३-४ महिनोंमें बडी कठिनतासे स्वस्थता प्राप्त हुई। इसी इन्फ्लुएंजाके प्रकोपमें, बडौदानिवासी श्री चिमनलाल दलालका दुःखद स्वर्गवास हो गया, जिसके समाचार जान कर मुझे बडा मानसिक आघात हुआ। मैं गायकवाडस् ओरिएन्टल सीरीझके लिये जिस कुमारपालप्रतिबोध नामक प्राकृत विशाल ग्रन्थका संपादन कर रहा था उसमें भी कुछ व्याघात हुआ। श्री दलाल स्वयं धनपालकी अपभ्रंश रचना **भविस्सयत्तकहा** का संपादन कर रहे थे। उसका कार्य अधूरा रह गया। सीरीझका इन्चार्ज उस समय जिनके पास रहा वे बडौदाके ओरिएन्टल इन्स्टीट्यूटके क्युरेटर डॉ० ज. स. कुडालकर मेरे पास आये और दलाल संपादित अधूरे ग्रन्थोंके कामके बारेमें परामर्श किया। भविस्सयत्तकहा का काम डॉ० गुणेको सोंपनेके लिये मैंने कहा और वह स्वीकार हो कर उनको दिया गया।

महात्माजीने १९२० में अहमदाबादमें गुजरात विद्यापीठकी स्थापना की, और मैं उसमें एक विशिष्ट सेवकके रूपमें संलग्न हो गया। मेरे प्रस्तावानुसार विद्यापीठके अन्तर्गत 'भांडारकर रीसर्च इन्स्टीट्यूट'के नमूने पर 'गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर'की स्थापना की गई और मैं उसका मुख्य संचालक बनाया गया।

मेरी साहित्यिक प्रवृत्तिका केन्द्र पूनासे हट कर अब अहमदाबाद बना। मैंने गुजरात पुरातत्त्व मन्दिर द्वारा प्रकाशित करने योग्य कई प्राचीन ग्रन्थोंके संपादनकार्यकी योजना बनाई। इन ग्रन्थोंमें यह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुवलयमाला भी सम्मीलित थी। डॉ० गुणे पीछेसे क्षयरोगग्रस्त हो गये। उनके साथ जो इसके सहसंपादन का विचार हुआ था वह अब संभव नहीं रहा। पर मेरी इच्छा इस ग्रन्थको प्रकट करनेकी प्रबल बनी हुई थी, उसके परिणामस्वरूप मैंने अहमदाबादमें एक उत्तम प्रतिलिपि करने वाले कुशल लेखकसे पूरे ग्रन्थकी प्रेस कॉपी करवा ली।

इसी बीचमें स्व० पूज्यपाद प्रवर्तकजी श्री कान्तिविजयजी व श्री चतुरविजयजी महाराजके प्रयत्नसे जेसलमेरकी ताडपत्र वाली प्राचीन प्रतिकी फोटो कॉपी उतर कर आ गई। इसके आधार पर अब ग्रन्थका संपादनकार्य कुछ सुगम मान कर मैंने दोनों प्रतियोंके पाठभेद लेने शुरू किये। गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरकी ओरसे अनेक ग्रन्थोंका संपादन – प्रकाशन कार्य चालू किया गया था, इस लिये इसका कार्य कुछ मन्द गतिसे ही चल रहा था। इतनेमें मेरा मनोरथ जर्मनी जानेका हुआ और जिन जर्मन विद्वानोंके संशोधनात्मक कार्योंके प्रति मेरी उक्त रूपसे विशिष्ट श्रद्धा उत्पन्न हो गई थी, उनके कार्यकेन्द्रोंका और उनकी कार्यपद्धतिका, प्रत्यक्ष अनुभव कर आनेकी मेरी इच्छा बलवती हो गई। इंग्रेजी भाषाके प्रति मेरी कुछ विशेष श्रद्धा नहीं थी और मुझे इसके ज्ञानकी प्राप्तिकी कोई वैसी सुविधा भी नहीं मिली थी। पर जब मुझे ज्ञात हुआ कि जर्मन भाषामें, हमारी भारतीय विद्या और संस्कृति पर प्रकाश डालने वाला जितना मौलिक साहित्य प्रकाशित हुआ है उसका शतांश भी इंग्रेजी भाषामें नहीं है; तब मेरी आकांक्षा जर्मन भाषाके सीखनेकी बहुत ही बलवती हो ऊठी। मेरे जैसी परिस्थिति और प्रकृति वाले व्यक्तिके लिये, इस देशमें बैठे बैठे जर्मन भाषाका विशेष परिचय प्राप्त करना कठिन प्रतीत हुआ। क्यों कि जर्मन सीखनेके लिये पहले इंग्रेजी भाषाका अच्छा ज्ञान होना चाहिये; उसके माध्यमसे ही जर्मन भाषा जल्दी सीखी जा सकती है। मेरे लिये वैसा होना संभव नहीं लगा, अतः मैंने सोचा कि जर्मनीमें जा कर कुछ समय रहनेसे अधिक सरलताके साथ, जर्मन भाषा सीधे तौरसे सीखी जा सकेगी; और साथमें वहांके विद्वानों, लोगों, संस्थाओं, कारखानों, विद्यालयों, पुस्तकालयों एवं प्रदेशों, नगरों, गांवों आदिका साक्षात् परिचय भी प्राप्त हो सकेगा।

मैंने अपना यह मनोरथ महात्माजीके सम्मुख प्रकट किया, तो उनने बडे सद्भावपूर्वक मेरे मनोरथको प्रोत्साहन दिया और मुझे २ वर्षके लिये गुजरात विद्यापीठसे छुट्टी ले कर जा आनेकी अनुमति प्रदान कर दी। इतना ही नहीं परंतु अपने युरोपीय मित्रोंके नाम एक जनरल नोट भी अपने निजी हस्ताक्षरोंसे लिख कर दे दिया। उधर जर्मनीसे भी मुझे प्रो० याकोबी, प्रो० शुब्रींग आदि परिचित विद्वानोंके प्रोत्साहजनक पत्र प्राप्त हो गये थे–जिससे मेरा उत्साह द्विगुण हो गया। सन् १९२८ के मई मासकी २६ तारीखको मैं बंबईसे P. and O. की स्टीमर द्वारा विदा हुआ।

जर्मनीमें जाने पर प्रो० याकोबी, प्रो० शुब्रींग, प्रो० ग्लाजेनाप, डॉ० आल्सडोर्फ, प्रो० ल्युडर्स और उनकी विदुषी पत्नी आदि अनेक भारतीय विद्याके पारंगत विद्वानोंका घनिष्ठ संपर्क हुआ और उन उन विद्वानोंका स्नेहमय, सौजन्यपूर्ण, सद्भाव और सहयोग प्राप्त हुआ। जर्मन राष्ट्र मुझे अपने देशके जितना ही प्रिय लगा। मैं वहांके लोगोंका कल्पनातीत पुरुषार्थ, परिश्रम और विद्या एवं विज्ञानविषयक प्रभुत्व देख कर प्रमुदित ही नहीं, प्रमुग्ध हो गया। हांबुर्गमें डॉ० याकोबीसे भेंट हुई। उनके साथ अनेक ग्रन्थोंके संपादन–संशोधन आदिके बारेमें बात-चीत हुई। उसमें इस कुवलयमालाका भी जिक्र आया। उनने इस ग्रन्थको प्रसिद्ध कर देनेकी उत्कट अभिलाषा प्रकट की। मैंने जो पूना वाली प्रति परसे प्रतिलिपि करवा ली थी उसका परिचय दिया और साथमें जेसलमेरकी ताडपत्रीय प्रतिकी फोटू कापी भी प्राप्त हो गई है, इसका भी जिक्र किया। मैंने इन दोनों प्रतियोंके विशिष्ट प्रकारके पाठभेदोंका परिचय दे कर अपना अभिप्राय प्रकट किया कि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुवलयमालाकी आज तक ये दो ही मूल प्रतियां उपलब्ध हो रही हैं। तीसरी प्रति अभी तक कहीं ज्ञात नहीं है। ये दोनों प्रतियां बिल्कुल स्वतंत्र हैं। इनमें जो पाठभेद प्राप्त हो रहे हैं वे ऐसे हैं जो स्वयं ग्रन्थकार ही के किये हुए होने चाहिये। डॉ० याकोबी इस बातको सुन कर चकित हुए। उनने स्वयं कुवलयमालाके इस प्रकारके पाठभेद वाले १०–२० उदाहरण देखने चाहे। पर मेरे पास उस समय इसकी प्रतिलिपि थी नहीं। मैंने पीछेसे उनको इसके भेजनेका अभिवचन दिया। जैन भण्डारोंमें ऐसे कुछ ग्रन्थ मेरे देखनेमें आये हैं जो इस प्रकार स्वयं ग्रन्थकार द्वारा किये गये पाठान्तरोंका उदाहरण उपस्थित करते हैं। प्रो० वेबरके बर्लिन वाले हस्तलिखित ग्रन्थोंके विशाल केटेलॉगमें से धर्मसागर उपाध्यायकी तपागच्छीय पट्टावलिका मैंने उल्लेख किया, जिसको उनने अपनी नोटबुकमें लिख लिया। प्रो० याकोबीने वार्ताके अन्तमें अपना अभिप्राय पुनः दोराया कि आप भारत जा कर कुवलयमालाको प्रकट कर देनेका प्रयत्न अवश्य करें।

हाम्बुर्गमें मैं ३–४ महीने रहा और जैन साहित्यके मर्मज्ञ विद्वान् प्रो० शुब्रींगके और उनके विद्वान् शिष्य डॉ० आल्सडोर्फ वगैरहके साथ प्राकृत और अपभ्रंश भाषा विषयक जैन साहित्यके प्रकाशन आदिके बारेमें विशेष रूपसे चर्चा वार्ता होती रही। डॉ० ऑल्सडोर्फ उस समय, गायकवाडस् ओरिएण्टल सीरीझमें प्रकाशित 'कुमारपालप्रतिबोध' नामक बृहत् प्राकृत ग्रन्थका जो मैंने संपादन किया था उसके अन्तर्गत अपभ्रंश भाषामय जो जो प्रकरण एवं उद्धरण आदि थे उनका विशेष अध्ययन करके उस पर एक स्वतंत्र ग्रन्थ ही तैयार कर रहे थे।

हाम्बुर्गसे मैं फिर जर्मनीकी जगद्विख्यात राजधानी बर्लिन चला गया। वहांकी युनिवर्सिटीमें, भारतीय विद्याओंके पारंगत विद्वान् गेहाइमराट्ट, प्रो० हाइन्रीश ल्युडर्स् और उनकी विदुषी पत्नी डॉ० एल्जे ल्युडर्स्से घनिष्ठ स्नेहसंबन्ध हुआ। मैं वारंवार उनके युनिवर्सिटी वाले रूममें जा कर मिलता और बैठता। वे भी अनेक वार मेरे निवासस्थान पर बहुत ही सरल भावसे चले आते। उस वर्षकी दीवालीके दिन मैंने उन महामनीषी दम्पतीको अपने स्थान पर भोजन के लिये निमंत्रित किया था – जिसका सुखद स्मरण आज तक मेरे मनमें बडे गौरवका सूचक बन रहा है। डॉ० ल्युडर्स्की व्यापक विद्वत्ता और भारतीय संस्कृतिके ज्ञानकी विशालता देख देख कर, मेरे मनमें हुआ करता था कि यदि जीवनके प्रारंभकालमें – जब विद्याध्ययनकी रुचिका विकास होने लगा था, उस समय,–ऐसे विद्यानिधि गुरुके चरणोंमें बैठ कर ५–७ वर्ष विद्या ग्रहण करनेका अवसर मिलता तो मेरी ज्ञानज्योति कितनी अच्छी प्रज्वलित हो सकती और मेरी उत्कट ज्ञानपिपासा कैसे अधिक तृप्त हो सकती। डॉ० ल्युडर्स् भारतकी प्राग्-मध्यकालीन प्राकृत बोलियोंका विशेष अनुसन्धान कर रहे थे। मैंने उनको कुवलयमालामें उपलब्ध विविध देशोंकी बोलियोंके उस उल्लेखका जिक्र किया जो प्रस्तुत आवृत्तिके पृष्ठ १५१–५२ पर मुद्रित है। उनकी बहुत इच्छा रही कि मैं इस विषयके संबन्धका पूरा उद्धरण उनको उपलब्ध कर दूं। पर उस समय मेरे पास वह था नहीं, और मेरे लिखने पर कोई सज्जन यहांसे उसकी प्रतिलिपि करके भेज सके ऐसा प्रबन्ध हो नहीं सका।

जर्मनीसे जब वापस आना हुआ तब, थोडे ही समय बाद, महात्माजीने भारतकी स्वतंत्रताप्राप्तिके लिये नमक-सत्याग्रहका जो देशव्यापी आन्दोलन शुरू किया था उसमें भाग लेने निमित्त मुझे ६ महीनेकी कठोर कारावास वाली सजा मिली और नासिककी सेंट्रल जेलमें निवास हुआ। उस समय मान्य मित्रवर श्री कन्हैया-लालजी मुन्शीका भी उस निवासस्थानमें आगमन हुआ। हम दोनों वहां पर बडे आनन्द और उल्हासके साथ अपनी साहित्यिक चर्चाएं और योजनाएं करने लगे। वहीं रहते समय श्री मुन्शीजीने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गुजरात एण्ड इटस् लिटरेचर' के बहुतसे प्रकरण लिखे, जिनके प्रसंगमें गुजरातके प्राचीन साहित्यके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयमें परस्पर बहुत ऊहापोह होता रहा और इस कुवलयमाला कथाके विषय और वर्णनोंके बारेमें भी इनको बहुत कुछ जानकारी कराई गई। नासिकके जेलनिवास दरम्यान ही मेरा संकल्प और भी अधिक दृढ हुआ कि अवसर मिलते ही अब सर्वप्रथम इस ग्रन्थके प्रकाशनका कार्य हाथमें लेना चाहिये।

जेलमेंसे मुक्ति मिलने बाद, बाबू श्री बहादुर सिंहजी सिंघीके आग्रह पर, गुरुदेव रवीन्द्रनाथके सान्निध्यमें रहनेकी इच्छासे, मैंने कुछ समय विश्वभारती—शान्तिनिकेतनमें अपना कार्यकेन्द्र बनानेकी योजना की। सन् १९३१ के प्रारंभमें शान्तिनिकेतनमें **सिंघी जैन ज्ञानपीठ**की स्थापना की गई और उसके साथ ही प्रस्तुत **सिंघी जैन ग्रन्थमाला**के प्रकाशनकी भी योजना बनाई गई।

अहमदाबादके गुजरात विद्यापीठस्थित गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरकी ग्रन्थावलि द्वारा जिन कई ग्रन्थोंके प्रकाशनका कार्य मैंने निश्चित कर रखा था, उनमेंसे **प्रबन्धचिन्तामणि** आदि कई ऐतिहासिक विषयके ग्रंथोंका मुद्रणकार्य, सर्वप्रथम हाथमें लिया गया। प्रबन्धचिन्तामणिका कुछ काम, जर्मनी जानेसे पूर्व ही मैंने तैयार कर लिया था और उस ग्रन्थको बंबईके कर्णाटक प्रेसमें छपनेको भी दे दिया था। ५–६ फार्म छप जाने पर, मेरा जर्मनी जानेका कार्यक्रम बना और जिससे वह कार्य वहीं रुक गया। मेरे जर्मनी चले जाने बाद, गुजरात पुरातत्त्व मन्दिरका वह कार्य प्रायः सदाके लिये स्थगित-सा हो गया। इस लिये शान्तिनिकेतनमें पहुंचते ही मैंने इसका कार्य पुनः प्रारंभ किया और बंबईके सुविख्यात निर्णयसागर प्रेसमें इसे छपनेके लिये दिया।

इसीके साथ ही मैंने कुवलयमालाका काम भी प्रारंभ किया। शान्तिनिकेतनमें विश्वभारतीके मुख्य अध्यापक दिवंगत आचार्य श्री विधुशेखर भट्टाचार्यके साथ इस ग्रन्थके विषयमें विशेष चर्चा होती रही। उनको मैंने इस ग्रन्थके अनेक अवतरण पढ कर सुनाये और वे भी इस ग्रन्थको शीघ्र प्रकाशित करनेका साग्रह परामर्श देते रहे।

इस ग्रन्थको किस आकारमें और कैसे टाईपमें छपवाया जाय इसका परामर्श मैंने प्रेसके मैनेजरके साथ बैठ कर किया। और फिर पहले नमूनेके तौर पर १ फार्मकी प्रेसकॉपी ठीक करनेके लिये, पूना और जेसलमेर वाली दोनों प्रतियोंके पाठभेद लिख कर उनको किस तरह व्यवस्थित किया जाय इसका उपक्रम किया।

पूना वाली प्रति परसे तो मैंने पहले ही अहमदाबादमें उक्त रूपमें एक अच्छे प्रतिलिपिकारके हाथसे प्रतिलिपि करवा रखी थी और फिर उसका मिलान जेसलमेरकी प्रतिके लिये गये फोटोसे करना प्रारंभ किया। जैसा कि विज्ञ पाठक प्रस्तुत मुद्रणके अवलोकनसे जान सकेंगे कि इन दोनों प्रतियोंमें परस्पर बहुत पाठभेद हैं और इनमें से कौनसी प्रतिका कौनसा पाठ मूलमें रखा जाय और कौनसा पाठ नीचे रखा जाय इसके लिये प्रत्येक शब्द और वाक्यको अनेक बार पढना और मूल पाठके औचित्यका विचार करना बडा परिश्रमदायक काम अनुभूत हुआ। इसमें भी जेसलमेरकी जो फोटोकॉपी सामने थी वह उतनी स्पष्ट और सुवाच्य नहीं थी, इस लिये वारंवार सूक्ष्मदर्शक काचके सहारे उसके अक्षरोंका परिज्ञान प्राप्त करना, मेरी बहुत ही दुर्बल ज्योति वाली आंखोंके लिये बडा कष्टदायक कार्य प्रतीत हुआ। पर मैंने बडी साइझके ८–१० पृष्ठोंका पूरा मेटर तैयार करके प्रेसको भेज दिया और किस टाईपमें यह ग्रन्थ मयपाठभेदोंके ठीक ढंगसे अच्छा छपेगा और सुपाठ्य रहेगा, इसके लिये पहले १–२ पृष्ठ, ३–४ जातिके भिन्न भिन्न टाईपोंमें कंपोज करके भेजनेके लिये प्रेसको सूचना दी और तदनुसार प्रेसने वे नमूनेके पेज कंपोज करके मेरे पास भेज दिये। मैंने उस समय इस ग्रन्थको, डिमाई ४ पेजी जैसी बडी साइझके आकारमें छपवाना निश्चित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किया था। क्यों कि सिरीझके मूल संरक्षक स्व० बाबू बहादुर सिंहजी सिंघी, ग्रन्थमालाके सुन्दर आकार, प्रकार, मुद्रण, कागज, कवर, गेट-अप आदिके बारेमें बहुत ही दिलचस्पी रखते थे और प्रत्येक बातमें बडी सूक्ष्मता और गहराईके साथ विचार-विनिमय करते रहते थे। ग्रन्थमालाके लिये जो सर्वप्रथम आकार-प्रकार मैंने पसन्द किया, उसमें उनकी पसन्दगी भी उतनी ही मुख्य थी। प्रेसने जो नमूनेके पृष्ठ भेजे उसमें से मैंने निर्णयसागर प्रेसके स्पेशल टाईप प्रेट नं. ३ में ग्रन्थका छपवाना तय किया। क्यों कि इस टाईपमें ग्रन्थकी प्रत्येक गाथा, पृष्ठकी एक पंक्तिमें, अच्छी तरह समा सकती है और उस पर पाठ-भेद और पाद-टिप्पणी के लिये सूचक अंकोंका समावेश भी अच्छी तरह हो सकता है। प्रेसने मेरे कहनेसे इसके लिये बिल्कुल नया टाईप तैयार किया और उसमें २ फार्म एक साथ कंपोज करके मेरे पास उसके प्रुफ भेज दिये।

जिन दिनों ये प्रुफ मेरे पास पहुंचे, उन दिनोंमें मेरा स्वास्थ्य कुछ खराब था और उसी अवस्थामें मैंने प्रुफ देखने और मूल परसे पाठभेदोंका मिलान करके उनको ठीक जगह रखनेका विशेष परिश्रम किया। खास करके जेसलमेर वाली फोटोकॉपीको, प्रतिवाक्यके लिये देखने निमित्त आंखोंको जो बहुत श्रम करना पडा उससे शिरोवेदना शुरू हो गई और उसका प्रभाव न केवल मस्तकमें ही व्यापक रहा पर नीचे गर्द-नमें भी उतर आया और कोई २—३ महिनों तक उसके लिये परिचर्याकी लंबी शिक्षा सहन करनी पडी। तब मनमें यह संकल्प हुआ कि कुवलयमालाका ठीक संपादन करनेके लिये, जेसलमेर वाली प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिको स्वयं जा कर देखना चाहिये और उसकी शुद्ध प्रतिलिपि स्वयं करके फिर इसका संपादन करना चाहिये। विना ऐसा किये इस ग्रन्थकी आदर्शभूत आवृत्ति तैयार हो नहीं सकती। इस संकल्पानुसार जेसलमेर जानेकी प्रतीक्षामें, इसका उक्त मुद्रणकार्य स्थगित रखा गया और ग्रन्थमालाके अन्यान्य अनेक ग्रन्थोंके संपादन—प्रकाशनमें मैं व्यस्त हो गया। सन् १९३२—३३ का यह प्रसंग है।

उसके प्रायः १० वर्ष बाद (सन् १९४२ के अन्तमें) मेरा जेसलमेर जाना हुआ और वहां पर प्रायः ५ महिनों जितना रहना हुआ। उसी समय, अन्यान्य अनेक अलभ्य-दुर्लभ्य ग्रन्थोंकी प्रतिलिपियां करानेके साथ इस कुवलयमालाकी सुन्दर प्रतिलिपि भी, मूल ताडपत्रीय प्रति परसे करवाई गई।

द्वितीय महायुद्धके कारण बाजारमें कागजकी प्राप्ति बहुत दुर्लभ हो रही थी, इसलिये ग्रन्थमालाके अन्यान्य प्रकाशनोंका काम भी कुछ मन्द गतिसे ही चल रहा था। नये प्रकाशनोंका कार्य कुछ समय बन्द करके पुराने ग्रन्थ जो प्रेसमें बहुत अर्सेसे छप रहे थे उन्हींको पूरा करनेका मुख्य लक्ष्य रहा था। पर मेरे मनमें कुवलयमालाके प्रकाशनकी अभिलाषा बराबर बनी रही।

कुवलयमाला एक बडा ग्रन्थ है एवं पूना और जसेलमेरकी प्रतियोंमें परस्पर असंख्य पाठभेद हैं, इसलिये इसका संपादन कार्य बहुत ही समय और श्रमकी अपेक्षा रखता है। शारीरिक स्वास्थ्य और आयुष्यकी परिमितताका खयाल भी बीच-बीचमें मनमें उठता रहता था। उधर ग्रन्थमालाके संरक्षक और संस्थापक बाबू श्री बहादुर सिंहजीका स्वास्थ्य भी कई दिनोंसे गिरता जा रहा था और वे क्षीणशक्ति होते जा रहे थे। उनके स्वास्थ्यकी स्थिति देख कर मेरा मन और भी अनुत्साहित और कार्य-विरक्त बनता जा रहा था।

इसी अर्सेमें, सुहृद् विद्वद्वर डॉ० उपाध्येजी बंबईमें मुझसे मिलने आये और ४—५ दिन मेरे साथ ठहरे। उन दिनोंमें, डॉ० उपाध्येने मेरे संपादित हरिभद्रसूरिके **धूर्ताख्यान** नामक ग्रन्थका इंग्रेजीमें विशिष्ट ऊहापोहात्मक विवेचन लिख कर जो पूर्ण किया था, उसे मुझे दिखाया और मैंने उसके लिये अपना संपादकीय संक्षिप्त प्रास्ताविक वक्तव्य लिख कर इनको इंग्रेजी भाषनुवाद करनेको दिया। इन्हीं दिनोंमें इनके साथ कुवलयमालाके प्रकाशनके विषयमें भी प्रासंगिक चर्चा हुई। कुवलयमालाको सुन्दर रूपमें प्रकाशित

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

करनेका मेरा चिरकालीन उत्कट मनोरथ बना हुआ है पर शारीरिक दुर्बलावस्था, कुछ अन्य कार्यासक्त आन्तरिक मनोवृत्ति और चालू अनेक ग्रन्थोंके संपादन कार्यको पूर्ण करनेका अतिशय मानसिक भार, आदिके कारण, मैं अब इस ग्रन्थका अति श्रमदायक संपादन करनेमें समर्थ हो सकूंगा या नहीं उसका मुझे सन्देह था। अतः डॉ० उपाध्येजी – जो इस कार्यके लिये पूर्ण क्षमता रखते हैं, – यदि का इस भार उठाना स्वीकार करें तो, मैंने यह कार्य इनको सौंप देनेका अपना श्रद्धापूर्ण मनोभाव प्रकट किया।

डॉ० उपाध्ये अपने प्रौढ पाण्डित्य और संशोधनात्मक पद्धतिके विशिष्ट विद्वान्के रूपमें, भारतीय विद्याविज्ञ विद्वन्मंडलमें सुप्रसिद्ध हैं। इतःपूर्व अनेक महत्त्वके ग्रन्थोंका, इनने बडे परिश्रमपूर्वक, बहुत विशिष्ट रूपमें संपादन एवं प्रकाशन किया है। इसी सिंघी जैन ग्रन्थमालामें इनके संपादित **'बृहत्कथाकोष'** और **'लीलावई कहा'** जैसे अपूर्व ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनके द्वारा 'कुवलयमाला' कहा का संपादन सर्वथा उत्तम स्वरूपमें होनेकी मुझे पूर्ण श्रद्धा थी। अतः मैंने इनको इसका भार उठानेके लिये उत्साहपूर्वक प्रेरित किया। इनने बडी नम्रता एवं आत्मीयताके साथ मुझसे कहा कि 'यदि आपको मेरे कार्यसे पूर्ण सन्तोष हैं, तो इस सेवाका सहर्ष स्वीकार करनेमें मैं अपने जीवनका एक बहुत ही श्रेयस्कर कार्य समझूंगा' इत्यादि। चर्चाके परिणामस्वरूप इनने बडे उत्साह और सद्भावपूर्वक इस कार्यका स्वीकार किया।

कुछ दिन बाद, कुवलयमालाकी जो प्रतिलिपि आदि सामग्री मेरे पास थी, उसको मैंने कोल्हापुर डॉ० उपाध्येजीके पास भेज दी। पर उस समय इनके हाथमें, **'लीलावई कहा'** का संपादन कार्य चालू था– जो सन् १९४९ में जा कर समाप्त हुआ। उसके बाद सन् १९५०–५१ में, वास्तविक रूपसे इस ग्रन्थका मुद्रण कार्य प्रारंभ हुआ। बंबईके नि० सा० प्रेसके मैनेजरके साथ बैठ कर, मुझे इसके टाईप आदिके बारेमें फिरसे विशेष परामर्श करना पडा। क्यों कि २० वर्ष पहले जब मैंने (सन् १९३१–३२ में) इस ग्रन्थका मुद्रण कार्य प्रारंभ किया था तब इसके लिये जिस साईझके कागज आदि पसन्द किये थे उनकी सुलभता इस समय नहीं रही थी। अतः मुझे साईझ, कागज, टाईप आदिके बारेमें समयानुसार परिवर्तन करना आवश्यक प्रतीत हुआ और तदनुसार ग्रन्थका मुद्रणकार्य प्रारंभ किया गया – जो अब प्रस्तुत स्वरूपमें समापन्न हुआ है।

जैसा कि मुखपृष्ठ परसे ज्ञात हो रहा है – यह इस ग्रन्थका प्रथम भाग है। इसमें उद्द्योतन सूरिकी मूल प्राकृत कथा पूर्ण रूपमें मुद्रित हो गई है। इस विस्तृत प्राकृत कथाका सरल संस्कृतमें गद्य-पद्यमय संक्षिप्त रूपान्तर, प्रायः ४००० श्लोक परिमाणमें, रत्नप्रभसूरि नामक विद्वान्ने किया है जो विक्रमकी १४ वीं शताब्दीके प्रारम्भमें विद्यमान थे। जिनको प्राकृत भाषाका विशेष ज्ञान नहीं है, उनके लिये यह संस्कृत रूपान्तर, कथावस्तु जाननेके लिये बहुत उपकारक है। अतः इस संस्कृत रूपान्तरको भी इसके साथ मुद्रित करनेका मेरा विचार हुआ और उसको डॉ० उपाध्येजीने भी बहुत पसन्द किया। अतः उसका मुद्रण कार्य भी चालू किया गया है। इसके पूर्ण होने पर डॉ० उपाध्येजी ग्रन्थके अन्तरंग – बहिरंगपरीक्षण, आलोचन, विवेचन वगैरेकी दृष्टिसे अपना विस्तृत संपादकीय निबन्ध लिखेंगे जो काफी बडा हो कर कुछ समय लेगा। अतः मैंने इस ग्रन्थको दो भागोंमें प्रकट करना उचित समझ कर, मूल ग्रन्थका यह प्रथम भाग **सिंघी जैन ग्रन्थमालाके ४५ वें मणिरत्नके** रूपमें विज्ञ पाठकोंके करकमलमें उपस्थित कर देना पसन्द किया है। आशा तो है कि वह दूसरा भाग भी यथाशक्य शीघ्र ही प्रकाशित हो कर विद्वानोंके सम्मुख उपस्थित हो जायगा।

ग्रन्थ, ग्रन्थकार और ग्रन्थगत वस्तुके विषयमें डॉ० उपाध्येजी अपने संपादकीय निबन्धमें सविस्तर लिखने वाले हैं, अतः उन बातोंके विषयमें मैं यहां कोई विशेष विचार लिखना आवश्यक नहीं समझता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह जो मैंने अपना किञ्चिद् वक्तव्य लिखा है वह केवल इसी दृष्टिसे कि इस ग्रन्थको, वर्तमान रूपमें प्रकट करनेके लिये, मेरा मनोरथ कितना पुराना रहा है और किस तरह इसके प्रकाशनमें मैं निमित्तभूत बना हूं।

*

प्रायः १२०० वर्ष पहले (बराबर ११८० वर्ष पूर्व) उद्द्योतनसूरि अपर नाम दाक्षिण्यचिह्न सूरिने वर्तमान राजस्थान राज्यके सुप्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक स्थान जाबालिपुर (आधुनिक जालोर) में रहते हुए, वीरभद्रसूरिके बनवाए हुए, ऋषभदेवके चैत्य (जैनमन्दिर) में बैठ कर, इस महती कथाकी भव्य रचना की। ग्रन्थकारने ग्रन्थान्तमें अपने गुरुजनों एवं समय, स्थान आदिके बारेमें जानने योग्य थोडी-सी महत्त्वकी बातें लिख दी हैं। शायद, उस समय इस ग्रन्थकी १०-२० प्रतियां ही ताडपत्रों पर लिखी गई होंगी। क्यों कि ऐसे बडे ग्रन्थों का ताडपत्रों पर लिखना – लिखवाना बडा श्रमसाध्य और व्ययसाध्य कार्य होता था। इस ग्रन्थकी प्रतियोंकी दुर्लभताके कारण अनुमान होता है कि पीछेसे इस कथाका वाचन-श्रवणके रूपमें विशेष प्रचार नहीं हुआ। कारण, एक तो कथाका विस्तार बहुत बडा है। उसमें पत्तेके अन्दर पत्ते वाले कदली वृक्षके पेडकी तरह, कथाके अन्दर कथा, एवं उसके अन्दर और कथा – इस प्रकार कथाजालके कारण यह ग्रन्थ जटिल-सा हो गया है। दूसरा, ग्रन्थमें इतने प्रकारके विविध वर्णनों और विषयोंका आलेखन किया गया है कि सामान्य कोटिके वाचक और श्रोताओंको उनका हृदयंगम होना उतना सरल नहीं लगता। अतः विरल ही रूपमें इस कथाका वाचन-श्रवण होना संभव है। यही कारण है कि इस ग्रन्थकी पीछेसे अधिक प्रतियां लिखी नहीं गईं। हरिभद्रसूरिकी **समराइच्चकहा** की एवं उससे भी प्राचीन कथाकृति, **वसुदेवहिंडी** आदिकी जब अनेक प्रतियां उपलब्ध होती हैं तब इस कथाकी अभी तक केवल दो ही प्रतियां उपलब्ध हुई हैं। इनमें जेसलमेर वाली ताडपत्रीय प्रति विक्रमकी १२ वीं शताब्दी जितनी पुरानी लिखी हुई है और यद्यपि पूना वाली कागजकी प्रति १६ वीं शताब्दीमें लिखी गई प्रतीत होती है, पर है वह प्रति किसी विशेष प्राचीन ताडपत्रीय पोथीकी प्रतिलिपिमात्र। ये दोनों प्रतियां परस्पर भिन्न मूलपाठ वाली हैं। हमारा अनुमान है कि ये जो भिन्न भिन्न पाठ हैं, वे स्वयं ग्रन्थकार द्वारा ही किये गये संशोधन-परिवर्तनके सूचक हैं। ग्रन्थकारने जब अपनी रचनाके, सर्वप्रथम जो एक-दो आदर्श तैयार करवाये होंगे, उनका संशोधन करते समय, उनको जहां कोई शब्दविशेषमें परिवर्तन करने जैसा लगा वहां, वह वैसा करते गये। एक आदर्शमें जिस प्रकारका संशोधन उनने किया होगा उसकी उत्तरकालीन एक प्रतिलिपिरूप जेसलमेर वाली प्रति है, और दूसरे आदर्शमें उनने जो संशोधन-परिवर्तन आदि किये होंगे, उसकी उत्तरकालीन प्रतिलिपिरूप वह प्राचीन ताडपत्रीय प्रति है जिस परसे पूना वाली कागजकी प्रतिका प्रत्यालेखन किया गया है।

प्राचीन ग्रन्थोंके संशोधनकी दृष्टिसे कुवलयमालाकी ये दोनों पाठभेद वाली प्रतियां बहुत ही महत्त्वकी जानकारी कराने वाली हैं। इन दो प्रतियोंके सिवा और कोई प्रति उपलब्ध नहीं हुई है, अतः यह कहना कठिन है कि कौनसी प्रतिका विशेष प्रचार हुआ और किसका कम। पर इससे इतना तो ज्ञात होता ही है कि इस कृतिका प्रचार विशेष रूपमें नहीं हुआ।

*

ग्रन्थकारको अपनी रचनाके महत्त्वके विषयमें बडी आत्मश्रद्धा है। वे ग्रन्थके अन्तिम भागमें कहते हैं कि–"जो सज्जन भावयुक्त इस कथाको पढेगा, अथवा वंचावेगा, अथवा सुनेगा, तो, यदि वह भव्य जीव होगा तो अवश्य ही उसको सम्यक्त्वकी प्राप्ति होगी, और जिसको सम्यक्त्व प्राप्त है, तो उसका वह सम्यक्त्व अधिक स्थिर – दृढ होगा। जो विदग्ध है वह प्राप्तार्थ ऐसा सुकवि बन सकेगा। इस लिये प्रयत्नपूर्वक सब जन इस कुवलयमालाका वाचन करें। जो मनुष्य देशी भाषाएं, उनके लक्षण और धातु आदिके भेद जानना चाहते हैं, तथा वदनक, गाथा आदि छन्दोंके भेद जानना चाहते हैं, वे भी इस कुवलयमालाको अवश्य पढें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो इन बातोंको नहीं जानते, वे भी इसकी पुस्तक ले कर उसका वाचन करावें जिससे उनको कविताकी निपुणताके गुण ज्ञात होंगे – इत्यादि। जिस भगवती ह्री देवीने मुझे यह सब आख्यान कहा है उसीने इसकी रचना करवाई है – मैं तो इसमें निमित्तमात्र हूं। यदि इस ग्रन्थके लिखते समय, ह्री देवी मेरे हृदयमें निवास नहीं करती, तो दिनके एक प्रहरमात्र जितने समयमें सौ-सौ श्लोकों जितनी ग्रन्थरचना कौन मनुष्य कर सकता है।" इत्यादि – इत्यादि।

*

सचमुच ग्रन्थकार पर वाग्देवी भगवती ह्री देवीकी पूर्ण कृपा रही और उसके कारण आज तक यह रचना विद्यमान रही। नहीं तो इसके जैसी ऐसी अनेकानेक महत्त्वकी प्राचीन रचनाएं, कालके कुटिल गर्भमें विलीन हो गई हैं, जिनके कुछ नाम मात्र ही आज हमें प्राचीन ग्रन्थोंमें पढने मिलते हैं, पर उनका अस्तित्व कहीं ज्ञात नहीं होता। पादलिप्त सूरिकी **तरंगवती** कथा, गुणाढ्य महाकविकी पैशाची भाषामयी **बृहत्कथा,** हलिक कविकी **विलासवती** कथा आदि ऐसी अनेकानेक महत्त्वकी रचनाएं नामशेष हो गई हैं।

प्राकृत वाङ्मयका यह एक बडा सद्भाग्य समझना चाहिये कि ह्री देवीकी कृपासे इस दुर्लभ्य ग्रन्थकी उक्त प्रकारकी दो प्रतियां, आज तक विद्यमान रह सकीं; और इनके कारण, अब यह मनोहर महाकथा शतशः प्रतियोंके व्यापक रूपमें सुप्रकाशित हो कर, केवल हमारे सांप्रदायिक ज्ञानभंडारोंमें ही छिपी न रह कर, संसारके सारे सभ्य मानव समाजके बडे बडे ज्ञानागारोंमें पहुंच सकेगी और सैंकडों वर्षों तक हजारों अभ्यासी जन इसका अध्ययन-अध्यापन और वाचन-श्रवण आदि करते रहेंगे।

जिस तरह ग्रन्थकार उद्द्योतन सूरिका मानना है कि उनकी यह रचना हृदयस्थ ह्री देवीकी प्रेरणाके आध्यात्मिक निमित्तके कारण निष्पन्न हुई है; इसी तरह मेरा क्षुद्र मन भी मानना चाहता है कि उसी वागधिष्ठात्री भगवती ह्री देवीकी कोई अन्तःप्रेरणाके कारण, इस रचनाको, इस प्रकार, प्रकट करने-करानेमें मैं भी निमित्तभूत बना होऊंगा। कोई ४४-४५ वर्ष पूर्व, जब कि मेरा साहित्योपासना विषयक केवल मनोरथमय, अकिञ्चित्कर, जीवन प्रारंभ ही हुआ था, उस समय, अज्ञात भावसे उत्पन्न होने वाला एक क्षुद्र मनोरथ, धीरे धीरे साकार रूप धारण कर, आज जीवनके इस सन्ध्या-स्वरूप समयमें, इस प्रकार जो यह फलान्वित हो रहा है, इसे अनुभूत कर, यह लघु मन भी मान रहा है कि उसी माता ह्री देवीकी ही कोई कृपाका यह परिणाम होना चाहिये।

*

यद्यपि इस कथाको, इस प्रकार प्रकाशित करनेमें, मैं मुख्य रूपसे निमित्तभूत बना हूं; परन्तु इस कार्यमें मेरे सहृदय विद्वत्सखा डॉ० उपाध्येजीका सहयोग भी इतना ही मुख्य भागभाजी है। यदि ये इस कार्यको अपना कर, संपादनका भार उठानेको तत्पर नहीं होते, तो शायद यह कृति, जिस आदर्श रूपमें परिष्कृत हो कर प्रकाशमें आ रही है, उस रूपमें नहीं भी आती। मैंने ऊपर सूचित किया है कि जेसलमेर वाली ताडपत्रीय प्रतिकी प्रतिलिपि स्वयं करा लेने बाद, सन् १९४३-४४ में ही मेरा मन इसका संपादन कार्य हाथमें लेनेको बहुत उत्सुक हो रहा था; पर शारीरिक शिथिलता आदिके कारण कभी कभी मेरा मन उत्साहहीन भी होता रहता था। पर डॉ० उपाध्येजीने जब इस भारको उठानेका अपना सोत्सुक उत्साह प्रदर्शित किया तब मेरा मन इसके प्रकाशनके लिये द्विगुण उत्साहित हो गया और उसके परिणामस्वरूप यह प्रकाशन मूर्त स्वरूपमें आज उपस्थित हो सका।

डॉ० उपाध्येजीको इसके संपादन कार्यमें कितना कठिन परिश्रम उठाना पडा है वह मैं ही जानता हूं। जिन लोगोंको ऐसे जटिल और बहुश्रमसाध्य ग्रन्थोंके संपादनका अनुभव या कल्पना नहीं है, वे इसके श्रमका अनुमान तक करनेमें भी असमर्थ हैं। 'नहि वन्ध्या विजानाति प्रसूतिजननश्रमम्' वाली विज्ञजनोक्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसमें सर्वथा चरितार्थ होती है। पिछले ७-८ वर्षोंसे डॉ० उपाध्येजी इस ग्रन्थके संपादन कार्यमें सतत व्यग्र बने रहे हैं। कई बार इनको इसमें अनुत्साह उत्पन्न करने वाले प्रसंग भी उपस्थित होते रहे। ज्यों ज्यों समय बीतता जा रहा था, उसे देख कर, मैं भी कभी कभी व्याकुल होता रहा हूं कि क्या यह रचना मेरे जीते-जी प्रसिद्धिमें आ सकेगी या नहीं। पर माता ह्री देवीकी कृपासे आज मेरा चिर मनोरथ इस प्रकार सफल होता हुआ जान कर अन्तर्मन एक प्रकारकी 'कुछ' सन्तोषानुभूतिसे समुल्लसित हो रहा है[1]।

*

---

१ इस आवृत्तिका अन्तिम फार्म जब मेरे पास आया तब मुझे एका-एक इस ग्रन्थका, प्रस्तुत - मूलग्रन्थात्मक प्रथम भाग, तुरन्त प्रकट कर देनेका विचार हो आया और उसको मैंने डॉ. उपाध्येजीको सूचित किया। इनने भी इस विचारको बहुत पसन्द किया और ता. २९, अप्रेल, ५९ को, मुझे नीचे दिया गया भावनात्मक पत्र लिखा। इस पत्र द्वारा विज्ञ पाठकोंको इसका भी कुछ इंगित मिल जायगा कि इस कथाके संपादन कार्यमें डॉ. उपाध्येजीको कितना शारीरिक और मानसिक - दोनों प्रकारके कठोर परिश्रमका सामना करना पडा है।

I obey you and accept heartily your suggestion to issue the Part First of the *Kuvalayamālā*. As desired by you, I am sending herewith by return of post, the face page, the Preface and the page of Dedication.

You alone can appreciate my labours on this works: ....

I have tried to be very brief in the Preface. The Notes for the longer Preface were ready, and I just took those items which could not and should not be omitted. If you think that I have left anything important, please give me your suggestions so that the same can be added in the proofs.

Dr. Alsdrof, Dr. A. Master and others in Europe are very eager to see the work published. From June I can difinitely start drafting the Intro.; and you will please do your best to start printing of the Sanskrit Text. I have spent great lobour on that too. Unless this text is printed soon, some of my observations in the Notes cannot be sufficiently significant. So let the printing start early. You may approve of the types etc. and send to me the speciman page. I shall immediately send some matter. I send the press copy in instalments, because now and then I require some portion here for reference.

I fully understand your sentiments and thrilling experience on the publication of the *Kuvalayamālā*. You know, I paid my respects to Girnar on my way back from Somanāth. That early morning Dr. Dandekar, Dr. Hiralal and myself started climbing the hill at about 3 o'clock: If I had seen the height before climbing I would not have dared to undertake the trip. Luckily the dark morning did not disclose the height. Well the same thing has happened in my working on the *Kuvalayamālā*. If I had any idea of the tremendous labour the text-constitution demanded, perhaps I would not have undertaken it. It is really good that you also did not tell me that, from your own experience. There is a pleasure in editing a difficult text. I enjoyed it for the last six or seven years. The work was heavy, exacting and irritating; still I could do it using all my leisure for the last six or seven years. I really wonder what sustained my spirits in this strenuous work - at least you know how strenuous it is: it must be something spiritual, perhaps the same Hreedevi behind the scene! I know, the Second Part is still to come; but I find all that within my reach, within a year or so.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यहां पर यह 'कुछ' शब्दका प्रयोग इसलिये हो रहा है कि यदि आज इस महतीप्रतिष्ठाप्राप्त और युग-युगान्तर तक विद्यमान रहने वाली **सिंघी जैन ग्रन्थमाला**के संस्थापक और प्राणपोषक स्व० बाबू **श्री बहादुर सिंहजी सिंघी** विद्यमान होते तो उनको इससे भी अधिक आनन्दानुभव होता, जितना कि मुझको हो रहा है। पर दुर्भाग्यसे वे इस प्रकाशनको देखनेके लिये हमारे सम्मुख सदेह रूपमें विद्यमान नहीं हैं। इस लिये मेरी यह सन्तोषानुभूति 'कुछ' आन्तरिक खिन्नतासे संमिश्रित ही है। योगानुयोग, इन शब्दोंके लिखते समय, आज जुलाई मासकी ७ वीं तारीख पड रही है। इसी तारीखको आजसे १५ वर्ष (सन् १९४४ में) पूर्व, बाबू श्री बहादुर सिंहजीका दुःखद स्वर्गवास हुआ था। उनके स्वर्गवाससे मुझे जो आन्तरिक खेद हुआ उसका जिक्र मैंने अपने लिखे उनके संस्मरणात्मक निबन्धमें किया ही है। सिंघी जैन ग्रन्थमालाका जब कोई नया प्रकाशन प्रकट होता है और उसके विषयमें जब कभी मुझे 'यत्किञ्चित् प्रास्ताविक' वक्तव्य लिखनेका अवसर आता है, तब मेरी आंखोंके सामने स्वर्गीय बाबूजीकी उस समय वाली वह तेजोमयी आकृति आ कर उपस्थित हो जाती है, जब कि उनने और मैंने कई कई बार साथमें बैठ बैठ कर, ग्रन्थमालाके बारेमें अनेक मनोरथ किये थे। दुर्दैवके कारण और हमारे दुर्भाग्यसे वे अपने मनोरथोंके अनुसार अधिक समय जीवित नहीं रह सके। इन पिछले १५ वर्षोंमें ग्रन्थमालामें जो अनेक महत्त्वके ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं और जिनके कारण आज यह ग्रन्थमाला आन्तरराष्ट्रीय ख्यातिको प्राप्त कर, विश्वके अनेक विद्वानों एवं प्रतिष्ठानोंका समादर प्राप्त करने वाली जो बनी है, इसके यदि वे प्रत्यक्ष साक्षी रहते, तो मैं अपनेको बहुत ही अधिक सन्तुष्ट मानता।

*

पर, बाबूजीकी अनुपस्थितिमें, उनके सुपुत्र बाबू श्री **राजेन्द्र सिंहजी** सिंघी और श्री **नरेन्द्र सिंहजी** सिंघी अपने पूज्य पिताकी पुण्यस्मृतिको चिरस्थायी करनेके लिये, उनकी मृत्युके बाद, आज तक जो इस ग्रन्थमालाके कार्यका यथाशक्य संरक्षण और परिपोषण करते आ रहे हैं, इससे मुझे बाबूजीके अभावके खेदमें अवश्य 'कुछ' सन्तोष भी मिलता ही रहा है। यदि इन सिंघी बन्धुओंकी इस प्रकारकी उदार सहानुभूति और आर्थिक सहायता चालू न रहती, तो यह कुवलयमाला भी, आज शायद, इस ग्रन्थमालाका एक मूल्यवान् मणि न बन पाती। इसके लिये मैं इन सिंघी बन्धुओंका भी हृदयसे कृतज्ञ हूं। मैं आशा रखता हूं कि भविष्यमें भी ये बन्धु अपने पूज्य पिताकी पवित्रतम स्मृति और कल्याणकारी भावनाको परिपुष्ट करते रहेंगे और उसके द्वारा ये अपने दिवंगत पिताके स्वर्गीय आशीर्वाद सदैव प्राप्त करते रहेंगे।

अन्तमें मैं कुवलयमालाकारकी अन्तिम आशीर्वादात्मक गाथा ही को यहां उद्धृत करके अपनी इस कुवलयमालाके प्रकाशनकी कथाको पूर्ण करता हूं।

इय एस समत्त चिय हिरिदेवीए वरप्पसाएण।
कइणो होउ पसण्णा इच्छियफलया य संघस्स॥

अनेकान्त विहार, अहमदाबाद
जुलाई ७, सन् १९५९
आषाढ शुक्ला १, सं. २०१५

—मुनि जिनविजय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जोयणसूरिविरइया

कुवलयमाला

卐

॥ औं नमो वीतरागाय ॥

§ १) पढमं णमह जिणिंदं जाए णच्चंति जम्मि देवीओ । उव्वेल्लिर-बाहु-लया-रणंत-मणि-वलय-तालेहिं ॥
पुरिस-कर-धरिय-कोमल-णलिणी-दल-जल-तरंग-रंगंतं । णिव्वत्त-राय-मज्जण-बिंबं जेणप्पणो दिट्ठं ॥
वसिउं चिरं कुलहरे कला-कलाव-सहिया णरिंदेसु । धूय व्व जस्स लच्छी अज्ज वि य सयंवरा भमइ ॥
जेण कओ गुरु-गुरुणा गिरि-वर-गुरु-णियम-गहण-समयम्मि । स-हरिस-हरि-वासवुत्त-भूसणो केस-पब्भारो ॥
तव-खविय-पाव-कलिणो णाणुप्पत्तीए जस्स सुर-णिवहा । संसार-णीर-णाहं तरिय त्ति पणच्चिरे तुट्ठा ॥
जस्स य तित्थारंभे तियस-वइत्तण-विमुक्क-माहप्पा । कर-कमल-मउलि-सोहा चलणेसु णमंति सुर-वइणो ॥
तं पढम-पुहइ-पालं पढम-पवत्तिय-सुधम्म-वर-चक्कं । णिव्वाण-गमण-इंदं पढमं पणमह मुणि-णाणिंदं ॥ अहवा ।
उब्भिण्ण-चूय-मंजरि-रय-मारुय-विलुलियंबरा भणइ । माहव-सिरी स-हरिसं कोइल-कुल-मंजुलालावा ॥
अहिणव-सिरीस-सामा आयंबिर-पाडलच्छि-जुयलिल्ला । दीहुण्ह-पवण-णीसास-णीसहा गिम्ह-लच्छी वि ॥
उण्णय-गरुय-पओहर-मणोहरा सिहि-फुरंत-धम्मिल्ला । उब्भिण्ण-णवंकुर-पुलय-परिगया पाउस-सिरी वि ॥
वियसिय-तामरस-मुही कुवलय-कलिया विलास-दिट्ठिल्ला । कोमल-मुणाल-वेल्लहल-बाहिया सरय-लच्छी वि ॥
हेमंत-सिरी वि स-रोद्ध-तिलय-लीणालि-सललियालइया । मल्लिय-परिमल-सुहया णिरंतरुब्भिण्ण-रोमंचा ॥
अणवरय-भमिर-महुयरि-पियंगु-मंजरि-कयावयंसिल्ला । विप्फुरिय-कुंद-दसणा सिसिर-सिरी सायरं भणइ ॥
दे सुहय कुण पसायं पसीय एसेस अंजली तुज्झ । णव-णीलुप्पल-सरिसाईं देव दिट्ठीएँ चिणिएसु ॥
इय जो संगमयामर-कय-उउ-सिरि-राय-रहस-भणिओ वि । झाणाहि णेय चलिओ तं वीरं णमह भत्तीए ॥ अहवा ।
जाइ-जरा-मरणावत्त-खुत्त-सत्ताण जे दुहत्ताणं । भव-जलहि-तारण-सहे सव्वे च्चिय जिणवरे णमह ॥ सव्वहा,
बुज्झंति जत्थ जीवा सिज्झंति य के वि कम्म-मल-मुक्का । जं च णमियं जिणेहि वि तं तित्थं णमह भावेण ॥

§ २) इह कोह-लोह-माण-माया-मय-मोह-महाणुत्थल्ल-मल्ल-णोल्लणाबद्ध-चमढणा-मूढ-हियथस्स जंतुणो तहा-संकिलिट्ठ-परिणमायस्स-सेय-सलिल-संसग्ग-लग्ग-कम्म-दोगमलुग्ग-जाय-घण-कसिण-कलंक-पंकाणुलेवणा-गरुय-भावस्स गुरु-कोह-पिंडस्स

The references 1), 2), etc. are to the numbers of the lines of the text, put on both the margins.

1) JP ऊं नमो after the symbol of *bhale* which looks like Devanāgari ६०. 2) P नमह, P नचंति, P जंमि, J उव्विल्लरबाहु, P -तालेहिं. 3) J बिंवं 4) P सहिआ, J धूअ. 5) J गुरुगहणणियमसमयंमि, P -नियम, P °यंमि, J °वुत्त. 6) J णाणुप्पत्तीए P नाणुप्पत्तीए, JP -निवहा, JP -नीरनाहं. 8) J पवित्तिय, J णेव्वाण P निव्वाण, P इंदं or इंदुं, J पढमं for पणमह, J om. अहवा. 9) P उब्भिन्न, J चूअ-, J °यम्बरा भमइ । सहरिस वसंतलच्छी कोइल. 10) P आयंवर P °न्ह, P -नीसास. 11) J धम्मेल्ला, P उब्भिन्ननवं°. 12) J -बाहिया. 13) P लीलालि, J सललिआलइआ, J मल्लिअ P निरंतरुब्भिन्न. 14) J महुअरि, J पिअंगु, J °रिअ-. 15) P नवनीलु°, P दिट्ठिए विणिएसु. 16) J कयउउसिरि, J झाणाउ P नमह, J om. अहवा. 17) P °णावत्तरिय(खित्त)स°, P दुहत्ताण, P सव्वे विय, J च्चिअ, P नमह, P अहवा for सव्वहा, J repeats here दे सुहय कुण पसायं पसीय एसेस अंजली तुज्झ. 18) J °ज्झन्ति, P अ for य, P कंम, J कलि for मल P तं च नमिउं, P नमह भत्तीए ।. 19) J -रमढणा. 20) P °णाम आ°, J भरुव, J पिण्ड°.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व जलम्मि झत्ति णरए चेव पडणं। तत्थ वि अणेय-कस-च्छेय-ताव-ताडणाहोडण-घडण-विहडणाहिं अवगय-बहु-कम्म-किट्टस्स जच्च-सु-ण्णस्स व अणट्ठ-जीव-भावस्स किंचि-मेत्त-कम्म-मलस्स तिरिय-लोए समागमणं। तत्थ वि कोइल-काय-कोल्हुया-कमल-केसरी-कोसिएसु वग्घ-वसह-वाणर-विच्चुएसु गय-गवय-गंडय-गावी-गोण-गोहिया-मयर-मच्छ-कच्छभ-णक्क-चक्क-तरच्छ-च्छभल्ल-भलुंकि-मय-महिस-मूसएसुं सस-सुणउ-संबर-सिवा-सुय-सारिया-सलभ-सउणेसु, तहा पुहइ-जल-जलणाणिल-गोच्छ-गुम्म-वल्ली-लया-वणस्सइ-तसाणेय-भव-भेय-संकुलं भव-संसार-सागरमाहिंडिऊण तहाविह-कम्माणुपुव्वी-समायड्ढिओ कह-कह वि मणुयत्तणं पावइ जीवो त्ति। अवि य।

§३) बहु-जम्म-सहस्स-णीरए बहु-वाहि-सहस्स-मयरए। बहु-दुक्ख-सहस्स-मीणए बहु-सोय-सहस्स-णक्कए ॥
एरिसए संसारएँ जलहि-समे हिंडिऊण पावएँहिं। पावइ माणुस-जम्मयँ जीवो कह-कह वि पुव्व-पुण्णएँहिं ॥

तत्थ वि सय-जवण-बब्बर-चिलाय-खस-पारस-भिल्ल-मुरंडोड्ड-बोक्कस-सबर-पुलिंद-सिंघलाइसु परिभमंतस्स दुलहं चिय सुकुल-जम्मं ति। तत्थ वि काण-कुंट-मुंट-अंध-बहिर-कल्ल-ल्लायंगओ होइ। तओ एवं दुलह-संपत्त-पुरिसत्तणेण पुरिसेण पुरिसत्थेसु आयरो कायव्वो त्ति। अवि य।

रुद्दम्मि भव-समुद्दे तुलग्ग-लद्धम्मि कह वि मणुयत्ते। पुरिसा पुरिसत्थेसुं णिउणं अह आयरं कुणह ॥

§४) सो पुण तिविहो। तं जहा। धम्मो अत्थो कामो, केसिं पि मोक्खो वि। एएहिं विरहियस्स उण पुरिसस्स महल्ल-दंसणाभिरामस्स उच्छु-कुसुमस्स व णिप्फलं चेय जम्मं ति। अवि य।

धम्मत्थ-काम-मोक्खाण जस्स एक्कं पि णत्थि भुयणम्मि। किं तेण जीविएणं कीडेण व दड्ढ-पुरिसेणं ॥
एए च्चिय जस्स पुणो कह वि पहुप्पंति सुकय-जम्मस्स। सो च्चिय जीवइ पुरिसो पर-कज्ज-पसाहण-समत्थो ॥

इमाणं पि अहम-उत्तिम-मज्झिमे णियच्छेसु। तत्थत्थो कस्स वि अणत्थो चेव केवलो, जल-जलण-णरिंद-चोराईणं साहारणो। ताण चुक्को वि धरणि-तल-णिहिओ चेव खयं पावइ। खल-किविण-जणस्स दुस्सील-मेच्छ-हिंसयाणं च दिण्णो पावाणुबंधओ होइ। कह वि सुपत्त-परिग्गहाओ धम्म-फलं पावइ काम-फलं च। तेण अत्थो णाम पुरिसस्स मज्झिमो पुरिसत्थो। कामो पुण अणत्थो चेव केवलं। जं पि एयं पक्खवाय-गब्भ-णिब्भर-मूढ-हियएहिं भणियं कामसत्थयारेहिं जहा 'धम्मत्थ-कामे पडिपुण्णे संसारो जायइ' त्ति, तेसिं तं पि परिकप्पणा-मेत्तं चिय। जेण एयंत-धम्म-विरुद्धो अत्थ-क्खय-कारओ य कामो, तेण दुग्गय-रंडेकल्ल-पुत्तओ विव अट्टट्ठ-कंठयाभरण-वलय-सिंगार-भाव-रस-रसिओ ण तस्स धम्मो ण अत्थो ण कामो ण जसो ण मोक्खो त्ति। ता अलं इमिणा सव्वाहमेण पुरिसाणत्थेणं ति। धम्मो उण तुलिय-धणवइ-धण-सार-धण-फलो। तहा णरिंद-सुर-सुंदरी-णियंब-बिंबुत्तुंग-पओहर-भर-समालिंगण-सुहेल्लि-णिब्भरस्स कामो वि धम्माणुबंधी य। अत्थो धम्माओ चेव, मोक्खो वि। जेण भणियं।

लहइ सुकुलम्मि जम्मं जिणधम्मं सव्व-कम्म-णिज्जरणं। सासय-सिव-सुह-सोक्खं मोक्खं पि हु धम्म-लाभेण ॥

तेण धम्मो चेव एत्थ पुरिसत्थो पवरो, तहिं चेव जुज्जइ आयरो धीर-पुरिसेण काउं जे। अवि य।

अत्थउ होइ अणत्थउ कामो वि गलंत-पेम्म-विरसओं य। सव्वत्थ-दिण्ण-सोक्खउ धम्मो उण कुणह तं पयत्तेण ॥

§५) सो उण गोविंद-खंद-रुंदारविंदणाह-गइंद-णाइंद-चंद-कविल-कणाद-वयण-विसेस-वित्थर-विरयणो बहुविहो लोय-

1) P जलंमि ज्झत्ति, P च्चिअ णेयकयच्छेय, J °होडणाघण. 2) P सुवन्नस्स वाणट्ठ, J तत्थ कोइला-, J कोल्हुआ. 3) J गण्ड°, P गाय for गावी, J गोहिआ P गोहिय, P तरछाछ°. 4) J मअ, P मूसएसु, J सुणउ संवर P ससससउणसंबर, J सुअ, P सउणेसु J सउणसिप्पाईसु, P णानिल, J -गोच्छ P गुच्छ. 5) J °रसई, J भयसयभेय, P संकुलम्, P om. सागर, J °हिण्डि°, J वि तहाविह, J समाअड्ढिओ. 6) J मणुअत्तणं, J अवि अ. 7) J णीरए P नीरए, J बहुसोयमहासमुद्दए बहुमाणतरंगए संसारए जलहिं सम हिण्डि°. 8) P हिंडिऊण य पावइ, J माणुस्स, J वि पुण्णएहिं P वि पुव्वपुन्नएहिं. 9) J मुरुडोण्डवोकस, J दुलहं चेव आरियखेत्तं ति।. 10) J काणकोण्टमण्टअन्ध, P कलल्ला°, J संपत्तआरियत्तणे पुरिसेण. 12) P रुदंमि, P लद्धंमि, J मणुअत्ते, P निउणं, J तह for अह. 13) J सो उण, J एएहि रहियस्स पुम. 14) J °णाहिरा°, P जंमं. 15) P एक्कं, J भुअणंमि P भुयणंमि, J दड्डपुरिसेण. 16) J कहउ पहुप्पन्ति सुकय, P जंमस्स. 17) J मज्झिमे वियारेसु।. P om. चेव केवलो, P नरिंद, P °राईण. 18) J -यलणिहित्ते P तलनिहिओ,P वचइ for पावइ, J किमिण, J दिण्णं; 19) J धम्मकालं. 20) J कामा उण, P केवलम्, J एअं, P पगंतपक्खवायगंतसिब्भर, J हियएहि. 21) J पडिपुण्ण, P संपावइ for संसारो जायइ, P om. तेसिं, J °कप्पणा, J चिअ, J जेग एअंतधम्म P जेण अत्थो धम्म. 22) J रण्डेकल्ल पुत्तउ विअ°, J has a marginal note thus: विचित्तरूपयाभ° पाठांतरं with a reference to अट्टट्ठ, J कंठुया P कंठिया, P न तस्स 23) P न मोक्खो, J अलमिमिणा, J °ण त्ति ॥ छ ॥, P धणफलो, J स व्वहा for तहा. 24) P नरिंद, P णिअंब, P सुहेल्लि, P om. य, J मोक्खो वि for अत्थो, J चेय. 25) J om. मोक्खो वि. 26) J कुसलम्मि P सुकुलंमि, P °धम्मे, P निज्ज°. 27) P om. एत्थ, J धीराण काउं. 28) Here in J उ looks like ओ. P अत्थो, P अणत्थओ, J विअलंत, P पेम्मं, P दिन्न, J मोक्खउ for सोक्खउ. 29) J रुंदारविंदणागिंदगइंदचंदकविल कणाय, J लोअ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसिद्धो । ताणं च मज्झे मणीण व कोत्थुहो, गयाण व सुर-गओ, समुद्दाण व खीरोवही, पुरिसाण व चक्कहरो, दुमाण व कप्प-पायवो, गिरीण व सुरगिरी, सुराण व पुरंदरो, तहा सव्व-धम्माणं उवरिं रेहइ जिणयंद-भासिओ धम्मो त्ति । सो उण चउ-व्विहो । तं जहा । दाणमइओ, सीलमइओ, तवोमइओ, भावणामइओ त्ति । तत्थ पढमं चिय पढम-तित्थयर-गुरुणा इमिणा चेव चउव्विह-धम्म-कमेण सयल-विमल-केवलं वर-णाणं पि पावियं । जेण अविभाविय-णिण्णुण्णय-जल-थल-विवराइ-भरिय-भुवणेणायाल-काल-जलहरेण विय वरिसमाणेण णीसेस-पणइयण-मणोरहब्भहिय-दिण्ण-विहव-सारेण पवत्तिओ पढमं तेलोक्क-बंधुणा 'भो भो पुरिसा दाणमइओ धम्मो' त्ति । पुणो 'सुर-सिद्ध-गंधव्व-किण्णरोरय-णर-दइच्च-पच्चक्खं सव्वं मे पावं अकर-णिज्जं' ति पइण्णा-मंदरमारुहंतेण पयासिओ तेलोक्क-गुरुणा सीलमइओ धम्मो त्ति । पुणो छट्ठट्ठम-दसम-दुवालस-मासद्ध-मास-संवच्छरोववास-परिसंठिएण पयासिओ लोए 'तवोमइओ धम्मो' त्ति । तहिं चिय एगत्तासरणत्त-संसार-भाव-कम्म-वग्गणायाण-बंध-मोक्ख-सुह-दुक्ख-णारय-णरामर-तिरिय-गइ-गमणागमण-धम्म-सुक्क-ज्झाणाइ-भावणाओ भावयंतेण भासिओ भगवया 'भावणामइओ धम्मो' त्ति । तओ ताव अम्हारिसा तारिसेहिं दाण-सील-तवेहिं दूरओ चेव परिहरिया, जेण धण-सत्त-संघयण-वज्जिया संपयं । एसो पुण जिणवर-वयणावबोहओ जाय-संवेग-कारणो भावणामइओ सुह-करणिज्जो धम्मो त्ति । कई । जाव महा-पुरिसालिय-दोस-सय-वयण-वित्थराबद्ध-हलबोल-वड्डिय-पहरिसस्स दुज्जण-सत्थस्स मज्झ-गया पर-मम्म-मग्गण-मणा चिट्ठम्ह, ताव वरं जिणयंद-समण-सुपुरिस-गुण-कित्तणेण सहलीकयं जम्मं ति । अवि य ।

जा सुपुरिस-गुण-वित्थार-मइलणा-मेत्त-वावडा होमो । ता ताव वरं जिणयंद-समण-चरियं कयं हियए ॥

इमं च विचिंतिऊण तुब्भे वि णिसामेह साहिज्जमाणं किंचि कहावत्थुं ति । अवि य ।

मा दोसे च्चिय गेण्हह विरले वि गुणे पयासह जणस्स । अक्ख-पउरो वि उयही भण्णइ रयणायरो लोए ॥

§ ६) तओ कहा-बंधं विचिंतेमि त्ति । तत्थ वि

पालित्तय-सालाहण-छप्पण्णय-सीह-णाय-सद्देहिं । संखुद्ध-मुद्ध-सारंगओ व्व कह ता पयं देमि ॥
णिम्मल-मणेण गुण-गरुयएण परमत्थ-रयण-सारेण । पालित्तएण हालो हारेण व सहइ गोट्ठीसु ॥
चक्काय-जुवल-सुहया रम्मत्तण-राय-हंस-कय-हरिसा । जस्स कुल-पव्वयस्स व वियरइ गंगा तरंगवई ॥
भणिइ-विलासवइत्तण-चोल्लिक्के जो करेइ हलिए वि । कव्वेण किं पउत्थे हाले हाला-वियारे व्व ॥
पणईहि कइयणेण य भमरेहि व जस्स जाय-पणएहिं । कमलायरो व्व कोसो विलुप्पमाणो वि हु ण झीणो ॥
सयल-कलागम-णिलया सिक्खाविय-कइयणस्स मुहयंदा । कमलासणो गुणड्ढो सरस्सई जस्स वड्डकहा ॥
जे भारह-रामायण-दलिय-महागिरि-सुगम्म-कय-मग्गे । लंघेइ दिसा-करिणो कइणो को वास-वम्मीए ॥
छप्पण्णयाण किं वा भण्णउ कइ-कुंजराण भुवणम्मि । अण्णो वि छेय-भणिओ अज्ज वि उवमिज्जए जेहिं ॥
लायण्ण-वयण-सुहया सुवण्ण-रयणुज्जला य बाणस्स । चंदावीडस्स वणे जाया कायंबरी जस्स ॥
जारिसयं विमलंको विमलं को तारिसं लहइ अत्थं । अमय-मइयं व सरसं सरसं चिय पाइयं जस्स ॥
ति-पुरिस-चरिय-पसिद्धो सुपुरिस-चरिएण पायडो लोए । सो जयइ देवगुत्तो वंसे गुत्ताण राय-रिसी ॥
बुहयण-सहस्स-दइयं हरिवंसुप्पत्ति-कारयं पढमं । वंदामि वंदियं पि हु हरिवरिसं चेय विमल-पयं ॥
संणिहिय-जिणवरिंदा धम्मकहा-बंध-दिक्खिय-णरिंदा । कहिया जेण सुकहिया सुलोयणा समवसरणं व ॥
सत्तूण जो जस-हरो जसहर-चरिएण जणवए पयडो । कलि-मल-पभंजणो च्चिय पभंजणो आसि राय-रिसी ॥

---

1 > P °गयो. 2 > J °म्माण, P om. भासिओ, J om. धम्मो. 3 > J तओम°, P °मईओ (last three) J °ढमं ति°. 4 > P कम्मेण, P om. वरणाण. 5 > P भुयणे काल, J विअ, J °माणेण सेस P °समाणे णीसेस, J विविह for विहव, J पढमं तेलोक्क P पढमतेलक्क. 6 > J भोहो पु°, P पुरिस, P किन्नरोरयणायर. 7 > P मंदिर, P °मईओ, J पुणो च्छ°. 8 > J तओ, for तवो, P °मईओ, J चिअ P तिय, P °सरणत्ता, P सहाव for भाव. 9 > P नरामर, P धंम, J झाणाईभावणाउ, J °यन्तेण, P भाविओ. 10 > J त्ति । छ ।, J चेय for चेव. 11 > P संपयं, J उण, J बोइ for बोहओ, P जाइ-, P °मईओ, J सुर for सुह, J त्ति । छ ।. 12 > P °रावद्ध, P वड्डिय य हरिसदुज्जण. 13 > J चिट्ठम्हं, P ता वरं. 14 > J गुणु, P वित्थर, J om. ता. 15 > J च विचिन्ति° P च चिंतिऊणं, P निसा°, J वत्थु त्ति. 16 > P पंससइ जिणस्स, J उअही. 17 > J कहावद्धं, J om. त्ति. 18 > P साहलाहण, J च्छप्प°, P सद्देण ।, JP °गउ. 19 > P निम्मलगुणेण, J गरुअएण, P गुरुयएयण. 20 > J जुअल, P रंम°, P कुलप्पव्व°, P तरंगमई. 21 > J भणिई P भणिय, J वो (चो) ल्लिक्के P चोक्किले, J has a marginal gloss मदिरा on the word हाला. 22 > P °ईहिं, J कइअणेण, P °रेहिं, P न for ण. 23 > P -निलया, P कइयणो सुमुह°, P °सणा गुणड्ढा. 24 > P om. कय, J °धम्मीए P वंमीए. 25 > P छप्पन्न°, P भन्नइ, P कय for कइ, J भुअणंमि P भुवणंमि, P अन्नो. 26 > P लायन्न, P सुयण्ण, P °वीणस्स. 27 > J को अण्णो (=कुअणो on the margin) for the 2nd विमलं को, J मइअं व P °मइयं च, J चिय पाययं P विय पाइयं. 28 > P तिउरिस. 29 > J दइअं, P हु हरिवंसं चेव. 30 > J सण्णिहिय P सन्निहिय, P नरिंदा, J सुकहियाउ सु°, P वा for व ।. 31 > P जसहरिचरिएहिं, P मलयभंजणो, P पइंजणो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेहि कए रमणिज्जे वरंग-पउमाण चरिय-वित्थारे । कह व ण सलाहणिज्जे ते कइणो जडिय-रविसेणे ॥
जो इच्छइ भव-विरहं भवविरहं को ण वंदए सुयणो । समय-सय-सत्थ-गुरुणो समरमियंका कहा जस्स ॥
अण्णे वि महा-कइणो गरुय-कहा-बंध-चिंतिय-मईओ । अभिमाण-परक्कम-साहसंक-विणए विइंतेमि ॥
एयाण कहा-बंधे तं णत्थि जयम्मि जं कइ वि चुक्कं । तह वि अणंतो अत्थो कीरइ एसो कहा-बंधो ॥

§७) ताओ पुण पंच कहाओ । तं जहा । सयलकहा, खंडकहा, उल्लावकहा, परिहासकहा, तहा वरा कहिय त्ति ।
एयाओ सव्वाओ वि एत्थ पसिद्धाओं सुंदर-कहाओ । एयाण लक्खण-धरा संकिण्ण-कह त्ति णायव्वा ॥
कत्थइ रूवय-रइया कत्थइ वयणेहि ललिय-दीहेहिं । कत्थइ उल्लावेहिं कत्थइ कुलएहि णिम्मविया ॥
कत्थइ गाहा-रइया कत्थइ दुवईहिँ गीइया-सहिया । दुवलय-चक्कलएहिं तियलय तह भिण्णएहिं च ॥
कत्थइ दंडय-रइया कत्थइ णाराय-तोडय-णिबद्धा । कत्थइ वित्तेहि पुणो कत्थइ रइया तरंगेहिं ॥
कत्थइ उल्लावेहिं अवरोप्पर-हासिरेहिँ वयणेहिं । माला-वयणेहिँ पुणो रइया विविहेहिँ अण्णेहिं ॥
पाइय-भासा-रइया मरहट्ठय-देसि-वण्णय-णिबद्धा । सुद्धा सयल-कह च्चिय तावस-जिण-सत्थ-वाहिल्ला ॥
कोऊहलेण कत्थइ पर-वयण-वसेण सक्कय-णिबद्धा । किंचि अवब्भंस-कया दाविय-पेसाय-भासिल्ला ॥
सव्व-कहा-गुण-जुत्ता सिंगार-मणोहरा सुरइयंगी । सव्व-कलागम-सुहया संकिण्ण-कह त्ति णायव्वा ॥
एयाणं पुण मज्झे एस च्चिय होइ एत्थ रमणिज्जा । सव्व-भणिईण सारो जेण इमा तेण तं भणिमो ॥

§८) पुणो सा वि तिविहा । तं जहा । धम्म-कहा, अत्थ-कहा, काम-कहा । पुणो सव्व-लक्खणा संपाइय-तिवग्गा संकिण्ण त्ति । ता एसा धम्म-कहा वि होऊण कामत्थ-संभवे संकिण्णत्तणं पत्ता ।

ता पसियह मह सुयणा खण-मेत्तं देह ताव कण्णं तु । अब्भत्थिया य सुयणा अवि जीयं देंति सुयणाण ॥ अण्णं च ।
सालंकारा सुहया ललिय-पया मउय-मंजु-संलावा । सहियाण देइ हरिसं उव्वूढा णव-वहू चेव ॥
सुकइ-कहा-हय-हिययाण तुम्ह जइ वि हु ण लग्गए एसा । पोढा-रयाओ तह वि हु कुणइ विसेसं णव-वहु व्व ॥ अण्णं च ।
णज्जइ धम्माधम्मं कज्जाकज्जं हियं अणहियं च । सुव्वइ सुपुरिस-चरियं तेण इमा जुज्जए सोउं ॥

§९) सा उण धम्मकहा णाणा-विह-जीव-परिणाम-भाव-विभावणत्थं सव्वोवाय-णिउणेहिं जिणवरिंदेहिं चउव्विहा भणिया । तं जहा । अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेग-जणणी, णिव्वेय-जणणि त्ति । तत्थ अक्खेवणी मणोणुकूला, विक्खेवणी मणो-पडिकूला, संवेग-जणणी णाणुप्पत्ति-कारणं, णिव्वेय-जणणी उण वेरग्गुप्पत्ती । भणियं च गुरुणा सुहम्म-सामिणा ।

अक्खेवणि अक्खित्ता पुरिसा विक्खेवणीएँ विक्खित्ता । संवेयणि संविग्गा णिव्विण्णा तह चउत्थीए ॥

जहा तेण केवलिणा अरण्णं पविसिऊण पंच-चोर-सयाइं रास-णच्चण-च्छलेण महा-मोह-गह-गहियाइं अक्खिविऊण इमाए चच्चरीए संबोहियाइं । अवि य ।

संबुज्झह किं ण बुज्झह एत्तिए वि मा किंचि मुज्झह । कीरउ जं करियव्वयं पुण दुक्कइ तं मरियव्वयं ॥ इति धुवयं ।
कसिण-कमल-दल-लोयण-चल-रेहंतओ । पीण-विहुल-थण-कडियल-भार-किलंतओ ।
ताल-चलिर-वलयावलि-कलयल-सद्दओ । रासयम्मि जइ लब्भइ जुवई-सत्थओ ॥
संबुज्झह किं ण बुज्झह । पुणो धुवयं ति । तओ अक्खित्ता ।
असुइ-मुत्त-मल-रुहिर-पवाह-विरूवयं । वंत-पित्त-दुग्गंधि-सहाव-विलीणयं ।

---

1) P जेहिं, P न, J जडिअ-, P °सेणो. 2) P को न बंधए, J सुअणो, J सवर°. 3) P अन्ने, J गरुअ-, J चिन्तिअमईआ; P अहिमाण, P °संकवियणे. 4) J °बद्धे, P नत्थि जयंमि कहवि, J कविंचि चुक्कं, J कहाबद्धो. 5) P puts numbers after each kahā, J खण्ड°, P वरकहिय, J कहिअ त्ति. 6) P एयाउ सव्वाउ एत्थ, J एआण P पयाण, P संकिन्न, P त्ति व नायव्वा ॥छ॥. 7) P कत्थय (in both the places), P वयणेहिं, P -दियएहिं ।, J adds कत्थइ उल्लावेहिं on the margin in a later hand [उल्लालेहिं], P कुलएहिं निम्मविआ. 8) P रइआ, J दुवतीहिं, P तियलिय, P भिन्न°. 9) J दण्डय (?), P नाराय, J चित्तेहि P विरेहिं. 10) P हासिएहिं, J अणेहिं P अन्नेहिं. 11) J पायय, P -वण्णयणिबद्धा, J वाहिल्ला. 12) P निबद्धा, J कआ, P दो विय. 13) P कलागुण, J इअंगी, P संकिन्न, P नायव्वा, J भणिमो ॥ छ ॥. 15) J संपाडिअ P संपाईय. 16) J कामअत्थ, P संकिन्न°. 17) J पसिय महह सुअणा P पसियह महासुयणा, P देसु, J कण्ण त्ति P कन्नं तु, J सुअणा, J जीअं देन्ति सुअणाण, P अन्नं. 18) J मउअ, P मंजुल्लावा, P नव, J चेय for चेव. 19) J सुकय, P जय वि हु न लग्गए, P पोढ, P नव, P अन्नं. 20) P नज्जइ, J धम्माहम्मं, J हिअं, J °हिअं. 21) P सो उण, P नाणा, P विभावणसव्वो°, P जेण°. 22) J भणिआ, J संवेयणी, J णिव्वेयणी ।, P निव्वेय, P मणाणुकूला. 23) J संवेय, P °जण उण, J भणिअं, P सुहंम. 24) J विक्खेवणीय P विक्खेवणीए, P निव्विन्ना, J संजमइ त्ति ॥ for तह etc. 25) J अरण्णं पइसि°, P अरन्नं, P नच्चणछलेण, J °हिआइं, P मोहग्गहग्गहि°. 26 P °हियाणि. 27) JP किण्ण, J एत्तिलए, P बुक्कइ, J मरिअ°. 28) P लोयण वलरहंतओ, P विहुलथणकडियल, J कडिअल, P किलंतओ. 29) J -चलिर, P वयलावलि, P रासयंमि, J जुअतीसत्थओ. 30) JP किण्ण, J om. ति, P तत्तो for तओ. 31) J मंस for वंत, P पित्तं, P विरूवयं ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेय-मज्ज-वस-फोप्फस-हड्ड-करंकयं । चम्म-र्ते त-पच्छायण-जुवई-सत्थयं ॥

संबुज्झह किं ण बुज्झह । तओ विक्खित्ता ।

कमल-चंद-णीलुप्पल-कंति-समाणयं । मूढए ३ उवमिज्जइ जुवई-अंगयं ।
थोवयं पि भण कत्थइ जइ रमणिज्जयं । अ.ुइयं तु सव्वं चिय इय पच्चक्खयं ॥

संबुज्झह किं ण बुज्झह । तओ संविग्गा ।

जाणिऊण एयं चिय एत्थ असारए । असुइ-त्त-रमणूसव-कय-वावारए ।
कामयम्मि मा लग्गह भव-सय-कारए । विर.र विरम मा हिंडह भव-संसारए ॥

संबुज्झह किं ण बुज्झह ।

एवं च जहा काम-णिव्वेओ तहा कोह-लोह-माण-मायादी । कुतित्थाणं च । समकालं चिय सव्व-भाव-वियाणएण गुरुणा सव्वण्णुणा तहा तहा गायंतेण ताइं चोराणं पंच वि सयाइं संभरिय-पुव्व-जम्म-वुत्तंताइं पडिवण्ण-समण-लिंगाइं तहा कयं जहा संजमं पडिवण्णाइं ति । ता एत्तियं एत्थ सारं । अ.हेहि वि एरिसा चउव्विहा धम्म-कहा समाढत्ता । तेण किंचि काम-सत्थ-संबद्धं पि भण्णिहिइ । तं च मा णिरत्थयं ति गणेज्जा । किंतु धम्म-पडिवत्ति-कारणं अक्खेवणि त्ति काऊण बहु-मयं ति । तओ कहा-सरीरं भण्णइ । तं च केरिसं ।

§ १०) सम्मत्त-लंभ-गरुयं अवरोप्पर-णिव्वडंत-सुहि-ञ्जं । णिव्वाण-गमण-सारं रइयं दक्खिण्णइंधेण ॥
जह सो जाओ जत्थ व जह हरिओ संगएण देवेण । जह सीह-देव-साहू दिट्ठा रण्णम्मि सुण्णम्मि ॥
जह तेण पुव्वजम्मं पंचण्ह जणाण साहियं सोउं । पडि.ण्णा सम्मत्तं सग्गं च गया तवं काउं ॥
भोत्तूण तत्थ भोए पुणो वि जह पाविया भरहवासे । अ.णोण्णमयाणंता केवलिणा बोहिया सव्वे ॥
सामण्णं चरिऊणं संविग्गा ते तवं च काऊणं । कम्म-कलं.-विमुक्का जह मोक्खं पाविया सव्वे ॥
एयं सव्वं भणिमो एएण कमेण इह कहा-बंधे । सव्वं सु.ह सुयणा साहिज्जंतं मए एण्हिं ॥
एयं तु कहा-करणुज्जयस्स जह देवयाएँ मह कहियं । तह वित्थरेण भणिमो तीएँ पसाएण णिसुणेह ॥
तत्थ वि ण-याणिमो चिय केरिस-रूवं रएमि ता एयं । किं ता वंकं रइमो किं ता ललियक्खरं काहं ॥ जेण;
मुद्धो ण मुणइ वंकं छेओ पुण हसइ उज्जुयं भणियं । उ.य-छेयाण हियं तम्हा छेउज्जुयं भणिमो ॥

अलं च इमिणा विहव-कुल-बालियालोल-लोयण-कडक्ख-विक्खेव-विलास-वित्थरेण चिय णिरत्थएणं वाया-पवित्थरेणं । एयं चिय कहावत्थुं ता णिसामेह । अत्थि चउसागरजल-मेहला ।

§ ११) अहह, पम्हुट्ठं पम्हुट्ठं किंचि, पसियह, तं ता णिसामेह । किं च तं । हुं,

समुहमइसुंदरो चिय पच्छा-भायम्मि मंगुलो होइ । विंझ-गिरि-वारणस्स व खलस्स बीहेइ कइ-लोओ ॥

तेण बीहमाणेहिं तस्स थुइ-वाओ किंचि कीरइ त्ति । सं. व दुज्जणु कइसउ । हुं, सुणउ जइसउ, पढम-दंसणे च्चिय भसणसीलो पट्ठि-मासासउ व्व । तहेव मंडलो हि अप्पच्चभिण्णायं भसइ, मयहिं च मासाइं असइ । खलो घई मायाहि वि भसइ । चडप्फडंतहं च पट्ठि-मासाइं असइ त्ति । होउ काएण सरिसु, णिच्च-करयरण-सीलो छिद्दु-पहारि व्व । तहेव वायसो हि करयरेंतो पउत्थ-वइया-यणहो हियय-हरो, छिद्देहिं च आहार-मेत्तं विलुंपइ । खलो घई पउत्थ-वइया कुल-बालियाण विज्झ-संपयाणेहिं दुक्ख-जणउ, अच्छिद्दे वि जीवियं विलुप्पइ । जाणिउ खरो जइसउ, सुयण-रिद्धि-दंसणे

1 > J मय, J वसप्फो°, J प्पच्छाअणजुअती-. 2 > J किण्ण, P किं न बुज्झहा. 3 > P नील°, P °एहिं, J जुवसी. 4 > P भणहइ तत्थ जइ, P नु for तु, J इअ. 5 > J किण्ण P किन्न बुज्झहा, J संविग्गाउ P संकिग्गा. 6 > J चिअ एत्थ P चियत्थ, P रमणणसवबावारए ।. 7 > JP °यंमि, J हिण्डह. 8 > J om. किं न बुज्झह of P. 9 > P निव्वेओ, P मायाईणं तु ति°, J च्चिअ, J विआण°. 10 > P °व्वनुणा, P गा.एण, J ताण चोराण, J om. वि, P सयाणि, J °रिअ-, P-°वत्त-, P लिंगाणि. 11 > P संयमं, J पवण्णाइ त्ति, P पवन्नायं ति, J ए.तिअं, J वि एमा. 12 > P °सत्थपडिबद्धं, P भण्णिहिई, P मा निर°, P भाण ज्जा. 14 > J गरुअं, P -निव्व°, J णेव्वाण P णि°, J रइअं, J दक्खिण्णइद्धेणं P दक्खिन्न° ॥ छ ॥. 15 > P च for व, J जह परिओसं, P जह हिओ व सं°, J रण्णम्मि .ण्णम्मि P रन्नंमि सुन्नंमि. 16 > P पंचन्ह, J °हिअं, P °वन्ना, P संमत्तं. 17 > P अन्नोन्नमयाणंतो, J बोहिआ. 18 > P सामन्नं J च कातूण P व काऊणं, P पाविआ. 19 > J °बंद्धे, J सुअणा साहिप्पंतं. 20 > P कहं-, P तत्थ for तह, P निसुणेसु. 21 > P वि न-, J ललिअक्खरं. 22 > P न याणइ, J तसइ, J हुं । उज्जुअ-, J हिअं, J °उज्जुअं. 23 > J वि for विहव, J बा.ि आ°, J लोअण, J विअ P चिअ, P वायाए वि°. 24 > J एयं चिअं P यत्थुरंयं, P ति निसा° ॥ छ ॥, for ता etc., P सागरजल. 25 > J om. one पम्हुट्ठं, J पसिअह, P निसामेह, P च for च, P हुं. 26 > J च्चिअ, J भावंमि P भागंमि, P विज्झ° P कयलोओ ।. 27 > P सो व्व, उ in J at times looks like ओ, P °णो कइसओ; P हुं, P जइसुओ. 28 > P °साले , J तहे मण्ड°, J om. हि, J °च्चभिण्णाअं P °व्वभिन्नाइयइं; P °मयाहिं स.ा°, P घयं मायहे. 29 > J °फडं P °प्फडंताहं, J .ाट्ठिमासइं, P सरिसओ निच्च°. 30 > J तहे, P °यरंतो, P वइयाण होइ हिययरो, P घयं, J °वइया...बालिआण P बालियण. 31 > P संपयाणेहिं, P जणओ (even in J sometimes उ looks like ओ), J जीविअं P जीविय विलुंपओ, P जाणिओ; P .इसइओ, J सुअण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झिज्जइ, णिल्लज्जो महल्लेणं च सद्दें उल्लवइ। तहेव रासहो हि इमं तण-रिद्धि-महल्लं असिउं ण तीरइ त्ति चित्तए झिज्जइ, अविभाविजंत-अक्खरं च उल्लवइ। खलो घइं आयहो किर एमहल्ल-रिद्धि जायल्लिय त्ति मच्छरेण झिज्जइ, पयड-दोसक्खरालावं च उल्लवइ। अवि कालसप्पु जइसउ, छिड्डु-मग्गण-वावडो कुडिल-गइ-मग्गो व्व। तहेव भुयंगमो हि पर-कयाइं छिड्डाइं मग्गइ, सव्वहा पोट्टेणं च कसइ। खलो घइं सइं जे कुणइ छिड्डाइं, थड्ढो व्व भमइ। चिंतेमि, हूं, विसु जइसउ, पमुहरसिउ जीयंतकरो वि। तहेव महुरउ मुहे, महुरं मंतेहिं च कीरइ रसायणं। खलो घइं मुहे जे कडुयउ मंतइ, घडियइ वि विसंघडइ। हूं, बुज्झइ, वट्टइ खलु खलो जि जइसउ, उज्झिय-सिणेहु पसु-भत्तो य। तहेव खलो वि वराओ पीलिज्जंतो विमुक्क-णेहु अयाणंतो य पसूहिं खज्जइ। इयरु घइं एक्कपए जे मुक्क-णेहु, जाणंतो जे पसु तह वि खज्जइ। किं च भण्णउ। सव्वहा खलु असुइ जइसउ, विसिट्ठ-जण-परिहरणिज्जो अपरिप्फुड-सद्दावद्ध-खुड्डु-मंडली-गिणिगिणाविउ व्व।

तहे सो वि वरउ किं कुणउ अण्णहो जि कस्सइ वियारु। खलो घइं सइं जे बहु-वियार-भंगि-भरियल्लउ त्ति ॥ सव्वहा मह पत्तियासु एयं फुडं भणंतस्स संसयं मोत्तुं। मा मा काहिसि मेत्तिं उग्ग-भुयंगेण व खलेण ॥ जेण,
जारज्जायहो दुज्जणहो दुट्ठ-तुरंगमहो जि। जेण ण पुरओ ण मग्गओ हूं तीरइ गंतुं जि ॥ अवि य।
अकए वि कुणइ दोसे कए वि णासेइ जे गुणे पयडे। विहि-परिणामस्स व दुज्जणस्स को वा ण बीहेइ ॥ अहवा।
कीरउ कहा-णिबंधो भसमाणे दुज्जणे अगणिऊण। किं सुणएहिँ धरिज्जइ विसंखलो मत्त-करिणाहो ॥

§ १२) होंति सुयण चिय परं गुण-गण-गरुयाण भायणं लोए। मोत्तूण णई-णाहं कत्थ व णिवसंतु रयणाइं ॥

तेण सज्जण-सत्थो च्चिय एत्थ कहा-बंधे सोउमभिउत्तो त्ति। सो व सज्जणो कइसउ। रायहंसो जइसउ, विसुद्धो-भय-पक्खो पय-विसेसण्णुओ व। तहेव रायहंसो वि

उब्भड-जलयाडंबर-सद्देहिँ पावइ माणसं दुक्खं। सज्जणु पुण जाणइ जि खल-जलयहं सभावाइं ॥

तेण हसिउं अच्छइ। होइ पुण्णिमाइंदु जइसउ, सयल-कला-भरियउ जण-मणाणंदो व्व। तहे पुण्णिमायंदो वि कलंक-दूसिओ अहिसारियाण मण-दूमिओ व। सज्जणो पुण अकलंको सव्व-जण-दिहि-करो व्व। अवि मुणालु जइसउ, खंडिज्जंतो वि अक्खुडिय-णेह-तंतु सुसीयलो व, तहेव मुणालु वि ईसि-कंडूल-सहाउ जल-संसग्गि वड्ढिओ व्व। सज्जणु पुणु महुरसहावु वियड्ढ-वड्ढिय-रसो व्व। हूं, दिसागओ जइसउ, सहावुण्णउ अणवरय-पयट्ट-दाण-पसरो व्व। तहे दिसागओ वि मय-वियारेण घेप्पइ, दाण-समए व्व सामायंत-वयणो होइ। सज्जणु पुणि अजाय-मय-पसरु देंतहो व्व वियसइ वयण-कमलु। होउ मुत्ताहारु जइसउ, सहाव-विमलो बहु-गुण-सारो व्व। तहेव मुत्ताहारो वि छिड्डु-सय-णिरंतरो वण-वड्ढिउ व्व। सज्जणो पुण अच्छिड्डु-गुण-पसरो णायरउ व्व। किं बहुणा, समुद्दो जइसओ, गंभीर-सहाओ महत्थो व्व। तहेव समुद्दो वि उक्कलिया-सय-पउरो णिक्क-कलयलाराउव्वेविय-पास-जणो व्व दुग्गय-कुडुंबहो जि अणुहरइ। सज्जणु पुण मंथर-सहाओ महु-महुर-वयण-परितोसिय-जणवउ व्व त्ति। अवि य।

---

1) J हिज्जइ P ज्झिज्जइ नि°, P सद्देण, J तहे, J हिइमुत्तणरिद्धिमहल्ल असिउं ण, P वा इमं णूणरिद्धिमहल्लं प।सिउं न, P चिंतए. 2) J °तक्खरं, J खलु एइं, P om. आयहो, J किं एमहल्ल P किर नहल्ल, J जायल्लिअ P जाएल्लए, P दोसाखरलावं च. 3) P जइसओ, P om. गइ, J व for व्व, J तहे भुअंगमो हि P भुयंगो वि. 4) P छिद्दाइ मग्गइं, J सव्वहं, P पोट्टेणं व कसई, P घइ सय जे छिद्दइ कुणइ।, P थद्धो, J व for व्व, P चिंतेहुं, P जइसओ (in J उ looks like ओ). 5) P °रसिओ, J जीअंतकरो वि P जीयंतहरो व्व, P मुहरु for महुरं, P व for च, P रसायण, P घयं मुहे जे कडुयउं, J कडुअउ मंतउं व. 6) P घडियइं वि विसंघडति, P डो for हूं, P om. बुज्झइ, P खलो for खलु, P om. ज्जि, P जइसओ, P सिणेहो, J व for य, J तइ खलो, P om. वि, J वरउ. 7) P पीडिज्जतो, J णेहो, J व for य, P एमुहिं for पसूहिं, J इअरु P इयरो, J घइं P घयं, P एक्कपयमुक्कणेहो, J जाणइ जे, P ज्जे एसु. 8) J om. सव्वहा, P खलो, P जइसओ, P परहरणिज्जो, P °फुड, J सद्द for खुड्डु, J मण्डली, J व for व्व. 9) P अण्णहेव कस्सइ, J विआरु, J विआर, P भंगभरिल्लउ, J भरिअल्लउ. 10) J पत्तिआसु, P सुयणा for एयं, J भणन्तस्स, J भुअंगेण, P वि (for व) खलणेण. 11) J °ज्जा नहो, P जेण नरायहो, P जि for ज्जि, P 2nd line thus: इ ण अग्गिएण पच्छिए गंतुं हुं तीरइ।. 12) P न for ण. 13) P कीरइ, J णिबद्धो P निबंधो, P °माणो, J °णाहो ॥ छ ॥. 14) J होन्ति सुअण च्चिय, J गरुआण भाअण, P निव°, P रयणाई. 15) J च्चेअ P चेय, J °बद्धे, P °मभिगउत्तो, P सोव्व, P कइसओ (in J उ and ओ look alike), P जइसओ. 16) P °ण्णुउ व्व, J तहे. 17) P माणस, P सज्जणो, J पुणु, P जे for ज्जि, J सहावइं P सभावाहिं. 18) JP होउ, J °मायंदु P माइंदो जइसयल, P हरिओ for भरियउ, J adds जणाण जण°, J om. व्व, P तहेय पु°, P °माइंदो. 19) P अहिसारियाजणदूसिउव्व, P जइसओ. 20) J °डियनरतंतु सुसीतलो, P व्व for व, J तहे, P ईसकंदुलसहावो, J वट्टिओ व P वड्डिउ व्व, P सज्जणो पुण, P °सहावो. 21) J वियड्ढ, J रसो व, P हु, J सहाउण्णओ P सहावुन्नउ, J व for व्व. 22) J विआरेण, J व for व्व, P सज्जणो पुण, J व for व्व, J विअसइ. 23) P होइ, P °हारो, P °सओ, P गुणसीरो, J व for व्व, J तहे, J om. सय, JP निरंतरो, J व for व्व. 24) P अच्छिद्दुगुणपयरो णोय°, J व हिं for व्व किं, J समुद, P सहावो, J व for व्व, J तहे. 25) J °लिआ, J णिच्चु P निच्च, P °वुवेविपयासजाणो, J व for व्व, P कुटुंबहो, P om. जि, P सज्जणो, J पुण्णिमथिर. 26) J om. व्व.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरलो पियंवओ दक्खिण्णो चाई गुणण्णुओ सुहवो । मह जीविएण वि चिरं सुयणो च्चिय जियउ लोयम्मि ॥ अहवा ।
गुण-सायरम्मि सुयणे गुणाण अंतं ण चेव पेच्छामि । रयणाइँ रयण-दीवे उच्चेउं को जणो तरइ ॥
एत्थं च उण ण कोइ दुज्जणो, उप्पेक्खइ सज्जणं च केवलयं । तहे णिसुणेंतु भडरय त्ति ।

§ १३) अत्थि दढ-मेरु-णाहिं कुल-सेलारं समुद्द-णेमिल्लं । जंबुद्दीवं दीवं लोए चक्कं व णिक्खित्तं ॥ अवि य ।
तस्सेय दाहिणद्धे बहुए कुल-पव्वए विलंघेउं । वेयड्ढेण विरिक्कं सासय-वासं भरहवासं ॥
वेयड्ढ-दाहिणेणं गंगा-सिंधूय मज्झयारम्मि । अत्थि बहु-मज्झ-देसे मज्झिम-देसो त्ति सुपसिद्धो ॥

सो य देसो बहु-धण-धण्ण-समिद्धि-गव्विय-पामर-जणो, पामर-जण-बद्धावाणय-गीय-मणहरो, मणहर-गीय-रव-रसुक्कंठिय-सिहिउलो, सिहिउल-केया-रवाबद्ध-हलबोलुब्भिज्जमाण-कंदल-णिहाओ, कंदल-णिहाय-गुंजंत-भमिर-भमरउलो, भमरउल-भमिर-झंकार-राव-वित्तत्थ-हरिणउलो, हरिणउल-पलायंत-पिक्क-कलम-कणिस-कय-तार-रवो, तार-रव-संकिउड्डीण-कीर-पंखा-भिघाय-दलमाण-तामरसो तामरस-केसरुच्छलिय-बहल-तिंगिच्छि-पिंजरिज्जंत-कलम-गोवियणो, गोवियण-महुर-गीय-रव-रसा-खिप्पमाण-पहियणो, पहियणो-लडह-परिहास-हारि-हसिज्जमाण-तरुणियणो, तरुणियणाबद्ध-रास-मंडली-ताल-वस-चलिर-वलय-कलयलाराबुद्दीविज्जंत-मयण-मणोहरो त्ति । अवि य ।
बहु-जाइ-समाइण्णो महुरो अत्थावगाढ-जइ-जुत्तो । देसाण मज्झदेसो कहाणुबंधो व्व सुकइ-कओ ॥

§ १४) तस्स देसस्स मज्झ-भाए दूसह-खय-काल-भय-पुंजियं पुण्णुप्पत्ति-सूसमेक्क-बीयं पिव, बहु-जण-संवाह-मिलिय-हला-हलारावुप्पाय-खुहिय-समुद्द-सद्द-गंभीर-सुव्वमाण-पडिरवं, तुंग-भवण-मणि-तोरणाबद्ध-धवल-धयवडुद्धुव्वमाण-संखुद्ध-मुद्ध-रवि-तुरय-परिहरिज्जंत-भुवण-भागं, णाणा-मणि-विणिम्मविय-भवण-भित्ति-करंबिज्जंत-किरणाबद्ध-सुर-चाव-रम्म-णहयलं, महा-कसिण-मणि-घडिय-भवण-सिहर-प्पहा-पडिबद्ध-जलहर-वंद्रं, णिद्दय-करयल-ताडिय-मुरव-रविज्जंत-गीय-गज्जिय-णिणायं, तविय-तवणिज्ज-पुंजुज्जल-ललिय-विलासियण-संचरंत-विज्जु-लयं तार-मुत्ताहलुद्ध-पसरंत-किरण-वारि-धारा-णियरं णव-पाउस-समयं पिव सव्व-जण-मणहरं सुव्वए णयरं । जं च महापुरिस-रायाभिसेय-समय-समागम-वासवाभिसेय-समणंतर-संपत्त-णलिणि-पत्त-णिक्खित्त-वारि-वावड-कर-पुरिस-मिहुण-पल्हत्थिय-चलण-जुयलाभिसेय-दंसण-सहरिस-हरि-भणिय-साहु-विणीय-पुरिस-विणयंकिया विणीया णाम णयरि त्ति ।

§ १५) सा पुण कइसिय । समुद्दं पिव गंभीरा महा-रयण-भरिया य, सुर-गिरी विय थिरा कंचणमया य, भुवणं पिव सासया बहु-वुत्तंता य, सग्गं पिव रम्मा सुर-भवण-णिरंतरा य, पुहई विय वित्थिण्णा बहु-जण-सय-संकुला य, पायालं पिव सुगुत्ता रयण-पदीवुज्जोइया य त्ति । अवि य ।
चंद-मणि-भवण-किरणुच्छलंत-विमल-जल-हीरण-भएण । घडिओ जीए विहिणा पायारो सेउ-बंधो व्व ॥

जत्थ य विवणि-मग्गेसु वीहीओ वियड्ढ-कामुय-लीलाओ च्चिय कुंकुम-कप्पूरागरु-मयणाभिवास-पडवास-विच्छड्डाओ । काओ वि पुण वेला-वण-राईओ इव एला-लवंग-कक्कोलय-रासि-गब्भिणाओ । अण्णा पुण इब्भ-कुमारिया इव मुत्ताहल-सुवण्ण-रयणुज्जलाओ । अण्णा छेइल्लओ इव पर-पुरिस-दंसणे वित्थारियायंब-कसण-धवल-दीहर-णेत्त-जुयलाओ । अण्णा खलयण-गोट्ठि-मंडली इव बहु-विह-पर-वसण-भरियाओ । तहा अण्णाओ उण खोर-मंडलिओ इव संणिहिय-विदाओ

1) P °वउ, J दक्खिण्णायचाई, J सुहओ, J च्चिय जिअउ, J लोअंमि P लोयंमि, J अवि य for अहवा. 2) JP °रंमि, J सुअणो, JP न, J चेय, P पेक्खामि, P उच्चेयं. 3) P एत्थ पुण, J उवेक्खइ, J केवला, P तह, P निसुणंतु, JP त्ति ॥ छ ॥ 4) P णाही, P नेमिल्लं, P चक्कं, P om. अवि य. 5) P बहुविहकुल, P अ for वि° P वेयड्ढनगवि°. 6) J °यारंमि, J मज्झदेसो, P य for सु. 7) J पभूत for बहु, J गव्विअ P गव्विय. 8) P °उलासमयकेया, P -निहाओ, P -निहाय, P उर for उल. 9) P उहरि°. 10) P पक्खाभिघायदलण, J गोविअणो गोविअण, P रसक्खिप्प°. 11) J पहिअयणो पहिअयण, P हासिज्ज°, J °णिअणो, J °णिअणा, J मण्ड°. 12) J °हरो व त्ति, P माणहरो. 13) P कव्वाबंधो, J कउ ॥ छ ॥. 14) P काले, J वंचियं P पुंजिया, P पुण्णप्पत्ति, J बीअं, J विवा. 15) P °हलहला, J °वुप्पय°, P पडिरवा, P संखुद्द. 16) P भाया, P नाणामणिनिम्मविय, J °विअ, P कराविज्जंत, P °णावबद्ध, P नहयला. 17) P om. महा, J घडिअ, J has a daṇḍa after °प्पहा, P बद्धा for वंद्रं J करअल, P ताडियसुरवरगिज्जंत, P निनाया. 18) P °सिणीयण, P लया, J ताल-, P °हलुद्ध°, P °णधरवारि, P णियरा, P महा for णव. 19) J om. सव्व, P मणोहरा, P सुव्वइ, P नयरी, P जा य महारिस, P °सेयमणंतर. 20) J om. नलिणि of P, P निक्खि°, J om. कर, J पल्हत्थिअ. 21) P विणीयंकिया, P नाम, P नयरि. 22) P °सिया, P समुद्दो विय, J गिरि विअ, P च for य. 23) P वुत्तंता च, P निरं°, J व for विय, P विच्छन्ना, J om. सय. 24) J सगुत्ता, P पईवु°, J °ज्जोइय त्ति ॥ छ ॥. 25) P लंघण for हीरण, P घडिय व्व जीय, J व्व ॥ छ ॥. 26) J om. य, J विमणि, J वीहिओ विअड्ढकामुअ P वीहीविइय त्ति कामुअ, J विय, P -चयणाहिवास, P पडिवासविच्छड्डाओ. 27) P च्चिय for इव, P कंकोलय, P गत्तणाउ, P कुमारियाउ विय. 28) P विव for इव, P दंसणत्थ for दंसणे, J वित्थारियअवकसण, P °रियायं च कसिण, P नेत्त, J जुअ° P अन्ना. 29) J मण्ड°, P मंडलीओ इय, J विविहबहुयर for बहु etc., J °याओ ॥ छ ॥, P अन्ना उण, J मण्ड°, J सण्णि°, P सन्निहिय.

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

कच्छउड-णिक्खित्त-सरस-णहवयाओ य । अण्णा गाम-जुवईओ इव रीरिय-संख-वलय-काय-मणिय-सोहाओ कच्चूर-वयण-णिम्महंत-परिमलाओ य । अण्णा रण-भूमीओ इव सर-सरासण-भसं-चक्क-संकुलाओ मंडलग्ग-णिचियाओ य । अण्णा मत्त-मायंग-घडाउ इव पलंबंत-संख-चामर-घंटा-सोहाओ ससेंदूराओ य । अण्णा मलय-वण-राईओ इव संणिहिय-विविह-ओसहीओ बहु-चंदणाओ य । अण्णा सज्जण-पीईओ इव सिणेह-णिरंतराओ बहु-खज्ज-पेज्ज-मणोहराओ य । अण्णा मरहट्टिया इव उद्दाम-हलिद्दी-रय-पिंजराओ पयड-समुग्गय-पओहर-मणोहराओ य । अण्णा णंदण-भूमिओ इव ससुराओ संणिहिय-महुमासाओ त्ति ।

§ १६) अवि य ।

जं पुहईए सुणिज्जइ दीसइ जं चिंतियं च हियएण । तं सव्वं चिय लब्भइ मग्गिज्जंतं विवणि-मग्गे ॥ जत्थ य ।
जुवईयण-णिम्मल-मुह-मियंक-जोण्हा-पवाह-पसरेण । घर-वावी-कुमुयाइं मउलेउं णेय चाएंति ॥
णिम्मल-माणिक्क-सिहा-फुरंत-संकंत-सूर-कंतेहिं । दिय-राईं-णिव्विसेसाईं णवरि वियसंति कमलाइं ॥
जल-जंत-जलहरोत्थय-गहंगणाहोय-वेलविज्जंता । परमत्थ-पाउसे वि हु ण माणसं जंति घर-हंसा ॥
कर-ताडिय-मुरव-खुडुक्कंत-पडिसद्द-गज्जिउक्कंठा । गिम्हम्मि वि हलबोलेंति जत्थ मत्ता घर-मऊरा ॥
णेउर-रव-रस-चलिया मग्गालग्गंत-रेहिरा हंसा । जुवईहिँ सिक्खविज्जंति जत्थ बाल व्व गइ-मग्गे ॥
भणिए विलासिणीहिं विलास-भणियम्मि मंजुले वयणे । पडिभणिएहिँ गुणेइ व घर-पंजर-सारिया-सत्थो ॥
जत्थ य पुरिसो एक्केक्कमो वि मयरद्धओ महिलियाण । महिला वि रई रइ-वम्महेहिँ ठाणं चिय ण लद्धं ॥
इय जं तत्थ ण दीसइ तं णत्थि जयम्मि किंचि अच्छरियं । जं च कहासु वि सुव्वइ तं संणिहियं तहिँ सव्वं ॥
अह एक्को च्चिय दोसो आउच्छ-णियंत-बाह-महलाइं । दइया-मुहाइँ पहिया दीणाइँ ण संभरंति जहिँ ॥

§ १७) जत्थ य जणवए ण दीसइ खलो विहलो व । दीसइ सज्जणो समिद्धो व, वसणं णाणा-विण्णाणे व, उच्छाहो धम्मे रणे व, पीई दाणे माणे व, अब्भासो धम्मे धम्मे व त्ति । जत्थ य दो-मुहउ णवर मुइंगो वि । खलो तिल-वियारो वि । सूयओ केयइ-कुसुमुग्गमो वि । फरुसो पत्थरो वि । तिक्खओ मंडलग्गो वि । अंतो-मलिणो चंदो वि । भमणसीलो महुयरो वि । पवसइ हंसो वि । चित्तलओ बरहिणओ वि । जलु कीलालो वि । अयाणओ बालओ वि । चवलो वाणरो वि । परोवयावी जलणो वि त्ति । जत्थ य

पर-लोय-तत्ती-रय णवर दीसंति साहु-भडरय । कर-भग्गइं णवर दीसंति घर-करिहिं महदुमइं ॥
दंडवायाइं णवरि दीसंति छत्ताण य णक्खणइं । माया-वंचणाइं णवरि दीसंति इंदियालिय-जणहं ॥

विसंवयंति णवर सुविणय-जंपियइं । खंडियइं णवरि दीसंति कामिणियणहो अहरइं । दव-बद्धइं णवरि दीसंति कणय-संगहेहिं महारयणइं । वलामोडिय घेप्पंति णवर पणय-कलह-कय-कारिम-कोव-कुविय-कंत-कामिणियणहो अहरइं वियड्ढ-कामुएहिं ति । अहवा ।

कह वण्णिज्जइ जा किर तियसेहिं सक्क-वयणेण । पढम-जिण-णिवासत्थं णिम्मविया सा अउज्झ त्ति ॥

§ १८) तम्मि य राया

दरियारि-वारण-घडा-कुंभ-त्थल-पहर-दलिय-मुत्ताहलो । मुत्ताहल-णिवह-दलंत-कंत-रय-धूलि-धवल-करवालो ॥

---

1) P निक्खित्त, P अन्ना, P रीरीया-, J वया for वयण. 2) P निम्म°, P अन्ना, J सरासणब्भस P सराणब्भसं, J मण्ड°, J णिचिआउ P निचिलाओ, P अन्ना. 3) P विय for इव, J अ for य, P अन्ना, J मलअ, J राइउ, J सण्णि° P सन्नि°, P विविहोस°. 4) P अन्ना, J पीतीओ इव P पाईतो यव, P निरं°, J पेम्म for पेज्ज, P अन्ना, J मरहट्ठिआ P मरहट्ठियाओ. 5) J adds य before पयड, P समुम्म for समुग्गय, J सण्णि° P सन्नि°. 7) J हिअएण JP ॥ छ ॥, P जीए च for जत्थ य. 8) J जुवईअण P जुईयण, P निम्मल, J कुमुआई P नेय चायंति. 9) P भिम्मल, P संकंतरविकरम्मोहिं ।, J कन्तेहिं ।, J दिअ, P निव्वि°, J णवरं P नवरि, J विअसंति. 10) P णभंगणाभोय, P न. 11) JP गिम्हंमि, P जत्त. 12) P नेउर, P सं for रस, P जुयईहिं. 13) J विलाण-, J भणियं पि P वइयंमि, J सारिआ. 14) J च्चिअ, P न. 15) P न, P नत्थि, JP जयंमि, J ण for वि, JP सण्णि°. 16) P चियं, P नियत्तवाह, P न. 17) P व्व for व, P व्व for व, J वसणु णाणा, P वसणन्नाणे विन्नाणे च, J उच्छाहु. 18) J पीती, JP माणे च, J धम्मे । धम्मे च त्ति ॥ छ ॥, P धम्मे धम्मे च, P नवर, P तिलवयारो. 19) J सूअउ P सूअओ, J केअइ P केइ, P कुसुम°, J फरुस, J तिक्खउ P तक्खओ, J मण्ड° P मंडलो वि, J सीलु. 20) J बरहिणउ P विरहिणो, J वालउ वालउ वि, P व्वि for वि, J चवलु वी (य)णओ वि for चंचलो etc., P वानरो. 21) P व for वि, J त्ति ॥ छ ॥, J om. य. 22) J लोअ, P भरय ।, P भग्गई नवर, P करहिं, P महादुमइं. 23) P दंडवायइं नवरि, J adds on the margin छत्ताण...नवर दीसंति, P नक्खणइं, P वंचणयं, J नवर P नवरि. 24) J जंपिअइं, J खण्डिअइं, P नवरि, J °णिअणहो, P °णीणहहो, J णवर P नवरि. 25) P रयणइं, J वलक्कमोडिय घेप्पति, P वकामोडिए, P नवर, P °म कारियकोव, J कुविअ, J कामिणिअणहो P कामिणीअणहो. 26) J ति ॥ छ ॥, P °एहिं त्ति. 27) P °वा° P निम्म°, P सा विउ°, J त्ति ॥ छ ॥ P त्ति ॥ छ ॥. 28) P तंमि, J om. य. 29) P वारणाघड, P निवह, P धूलिधवल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करवाल-सिहा-णिज्जिय-महंत-सामंत-णिवह-णय-चलणो । चलण-जुयल-मणि-विणिव्विय-कंत-महा-मउड-घडिय-सुपीढो ॥

त्ति। णवरं पुण ससि-वंस-संभवो चि होऊण सयं चेय सो चोरो मुद्धड-लडह-विलासिणि-हियय-हरणेहिं, सयं चेय पर-कलत्त-रओ दरिय-रिवु-सिरी-बलामोडिय-समाकड्ढणेहिं, सयं चेय सो वाडो पडिवक्ख-णरिंद-वंद्र-वाडणेहिं ति। जो य दोगच्च-सीय-संताविया दहणो, ण उण दहणो। णियय-पणइणि-वयण-कुमुयायराणं मयलंछणो, ण उण मय-लंछणो। विणिज्जयासेस-पुरिस-रूवेणं अणंगो, ण उण अणंगो। दरियारि-महिहर-महावाहिणीणं जलही, ण उण जलही। सुयण-वयण-कमलायराणं तवणो, ण उण तवणो त्ति। जो य घण समओ बंधुयण-कयंबयाणं, सरयागमो पणइयण-कुमुय-गहणाणं, हेमंतो पडिवक्ख-कामिणी-कमलिणीणं, सिसिर-समओ णिय-कामिणी-कुंद-लइयाणं, सुरहि-मासो मित्तयण-काणणाणं, गिम्हायवो रिवु-जलासयाणं, कय-जुओ णियय-पुहइ-मंडले, कलि-कालो वइरि-णरिंद-रज्जेसुं ति। अण्णं च।

सरलो महुरो पियंवओ चाई दक्खो दक्खिणो दयालू। सरणागय-वच्छलो संविभागी पुव्वाभिभासि त्ति ॥

संतुट्ठो सकलत्तेसु, ण उण कित्तीसु। लुद्धो गुणेसु, ण उण अत्थेसु। गिद्धो सुहासिएसु, ण उण अकज्जेसु। सुसिक्खिओ कलासु, ण उण अलिय-चाडु-कवड-वयणेसु। असिक्खिओ कडुय-वयणेसु, ण उण पणईयण-संमाणणेसु त्ति। अहवा।

गहिय-सगाह-दलम्मि तम्मि अचुण्णए वियड-वच्छे। णंदण-वणे व्व कत्तो अंतो कुसुमाण व गुणाणं ॥
अह सो णिय-साहस-खग्ग-मेत्त-परिवार-पणय-सामंतो। वच्छत्थल-दढ-वम्मो दढवम्मो णाम णरणाहो ॥

§ १९) तस्स य महुमहस्स व लच्छी, हरस्स व गोरी, चंदस्स व चंदिमा, एरावणस्स व मय-लेहा, कोत्थुहस्स व पभा, सुरगिरिस्स व चूला, कप्पतरुणो इव कुसुम-फल-समिद्ध-तरुण-साहिया, पसंसिया जणेणं अवहसिय-सुर-सुंदरी-वंद्र-लायण्ण-सोहस्स अंतेउरिया-जणस्स मज्झे एक्क च्चिय पिययमा पियंगुसामा णाम सयंवर-परिणीया भारिय त्ति। अह तीए तस्स पुरंदरस्स व सईए भुंजमाणस्स विसय-सुहे गच्छइ कालो, वच्चंति दियहा य।

§ २०) अह अण्णम्मि दिवसे अब्भंतरोवत्थाण-मंडवमुवगयस्स राइणो कइवय-मेत्त-मंति-पुरिस-परिवारियस्स पिय-पणइणी-सणाह-वाम-पासस्स संकरस्स व सव्व-जण-संकरस्स एक्क-पए च्चेय समागया पिहुल-णियंब-तडप्फिडण-विसमंदोलमाण-मंडलग्ग-सणाह-वामंस-देसा वेल्लहल-णियय-बाहु-लइया-कोमलावलंबिय-वेत्तलया पडिहारी। तीय य पविसिऊण कोमल-करयलंगुली-दल-कमल-मउलि-ललियंजलिं उत्तिमंगे काऊण गुरु-णियंब-बिंब-मंथरं उत्तुंग-गरुय-पओहर-भरोवणामियाए ईसि णमिऊण राइणो विमल-कमल-चलण-जुवलयं विण्णत्तं देवस्स। 'देव, एसो सबर-सेणावइ-पुत्तो सुसेणो णाम। देवस्स चेय आणाए तइया मालव-णरिंद-विजयत्थं गओ। सो संपयं एस दारे देवस्स चलण-दंसण-सुहं पत्थेइ त्ति सोउं देवो पमाणं' ति। तओ मंतियण-वयण-णयणावलोयण-पुव्वयं भणियं राइणा 'पविसउ' त्ति। तओ 'जहाणवेसि' त्ति ससंभम-मुट्ठिऊण तुरिय-पय-णिक्खेवं पहाइया दुवार-पाली उयसप्पिऊण य भणिओ 'अज्ज पविससु' त्ति।

§ २१) तओ पविट्ठो सुसेणो। दिट्ठो य णरवइणा वच्छत्थलाभोय-मंडलग्गाहिघाय-गरुय-वणाबद्ध-दीहर-धवल-खोम-वण-पट्टओ त्ति, तियस-णाहो इव पोंडरीय-वयणोवसोहिओ, पहरिस-वस-वियंभमाण-वयण-सयवत्तेणं साहेंतो इव सामिणो जय-लच्छि सेणावइ-सुओ त्ति। उवसप्पिऊण य पणमिओ णेण राया। राइणा वि 'आसणं आसणं' ति आइसमाणेण पसारिय-दीहर-दाहिण-भुया-दंड-कोमल-करयलेणं उत्तिमंगे छिविऊण संमाणिओ। तओ कय-देवी-पणामो असेस-मंतियण-कय-जहारुह-विणओ य उवविट्ठो आसणे। सुहासणत्थो य हिययब्भंतर-घर-भरिय-उव्वरंत-पहरिसामय-णीसंद-बिंदु-संदोहं

---

1) J corrects मणि into मण and adds इर on the margin in a later hand, P विणिम्मविय, P सुवीढो. 2) P संभमो, P होउं, P °सिणी, P णेहिम्, P चेव. 3) J दरियारिउंसि°, J °यमाकड्ढ°, J वीडो for वाडो P सयमेव वाडो, J वड्ढणेहि त्ति, P दोगच्च. 4) P पणइणी-. 5) P भाएण for रूवेण. 6) J om. त्ति, J बंधुअण P बंधूयण, P कयंबाणं, J सरयगमो, P गहयाणं. 7) J कामिणि-, J कामिणीणं, P लयाणं. 8) P किय, J °सु त्ति. 9) P दक्खिणो, P पुव्वातिभासी वे त्ति. 10) P °ट्ठो कल°, P लुद्धा, J गुहासिए, P सुसुक्खिओ. 11) P अलिया-, J कवड for कडुय, J पणईणसम्मा°, P संमायण°. 12) P संगाह, P -फलंमि, P तंमि। अवुण्णए, P नंदणवणं व. 13) P दढधम्मो दढधम्मो. 14) P °महुस्स. 15) P पहा, P समिद्धा, J पव° for अव°. 16) P सोहग्गअं°, J °रियाण-, P एक्के च्चिय, P पिया for पियमा, J परिणिया, J तीय. 17) J सुहेहि य, P दिहहा, P om. य. 18) P अन्नंसि दियहे, P मंडलमु°, P पुरिपरि°, J °वारयस्स, J वियप्पिय for पिय. 19) P जणपए, J चेय, J पिहुण-, J णियंवयदुप्फि°, P विसअंदोलण. 20) J देसे, P नियमनिभय, P om. य, P °सित्तण. 21) P करयंगुली, P मउलललियमंमे, P गरुयनियंब, J -गुरुय, P भारावणा°. 22) P अव for ईसि, P om. कमल, P जुयलं विन्नत्तं, P om. देवस्स, J om. देव, P °वइणो उत्तो, P सुसेणे नामा।, P देवपासे चेव. 24) J पमाणो, J om. ति।, P वयणलीलावणोवणा-, P om. भणियं, P जं आण°. 25) J °भमुट्ठि°, J पयणुक्खेवं P निक्खे°, J दुआर°, JP उअस°, P अज्जउत्त. 26) J °त्थलोभयसमण्ड°, P -गुरुय. 27) P दियस, P विससमाण, P °वत्तेणं, P विय for इव. 28) P °वइओ तो त्ति, P om. य, P रायणो वि, J आसणट्ठि आइ°. 29) J °रिया दीहं दा°, J भुअदण्ड, J करेणं, J संम्मा° P समा°, P देवि-. 30) J om. कय, P व for य, P उपविट्ठो, P या for य, P om. घर, P भरिउव्व°, J णिसंद.

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

पिव मुंचमाणेणं णिद्ध-धवल-विलोल-पम्हल-चलंत-णयण-जुवलेणं पलोइऊण राइणा 'कुमार, कुसलं' ति पुच्छिओ। सविणयं पणमिऊण उत्तिमंगेण 'देवस्स चलण-जुयल-दंसणेणं संपयं खेमं' ति संलत्तं कुमारेण।

§ २२) पुच्छिओ राइणा 'मालव-णरिंदेण सह तुम्हाणं को वुत्तंतो' त्ति। भणियं सुसेणेण। 'जयउ देवो। इओ देव-समाएसेणं तहिं चेय दिवसे दरिय-महा-करि-तुरय-रह-णर-सय-सहस्सुच्छलंत-कलयलाराव-संघट्ट-घुट्ठमाण-गहयलं गुरु-भर-दलंत-महियलं जण-सय-संबाह-रुंभमाण-दिसावहं उद्दंड-पोंडरीय-संकुलं संपत्तं देवस्स संतियं बलं। जुज्झं च समाढत्तं। तओ देव, सर-सय-णिरंतरं खगग्ग-खणखणा-सद्द-बहिरिय-दिसिवहं दलमाण-संणाह-च्छणच्छणा-संघट्टुट्ठेंत-जलण-जाला-कराल-भीसणं संपलग्गं महाजुद्धं। ताव य देव, अम्ह-बलेणं विवडेंत-छत्तयं णिवडंत-चिंधयं पडंत-कुंजरं रडंत-जोहयं खलंत-आसयं फुरंत-कोंतयं सरंत-सर-वरं दलंत-रह-वरं भग्गं रिउ-बलं ति। तओ घेप्पंति सार-भंडारयाइं सेणिएहिं। ताणं च मज्झे एक्को बालो अबाल-चरिओ पंच-वरिस-मेत्तो तस्स राइणो पुत्तो ससत्तीए जुज्झमाणो गहिओ अम्हेहिं। तओ देव, एस सो दुवारं पाविओ अम्हेहिं' ति। राइणा भणियं 'कत्थ सो, पवेसेसु तं'। 'जहाणवेसु' त्ति भणमाणो णिग्गओ, पविट्ठो य तं घेत्तुं भणियं च 'देव, एस सो' त्ति।

§ २३) कुमारो वि भविस्स-महा-गंधगओ विय अदीण-विमणेहिं दिट्ठि-वाएहिं पलोएंतो सयलमत्थाण-मंडलं उवगओ राइणो सयासं। तओ राइणा पसरंतंतर-सिणेह-णिब्भर-हियएण पसारिओभय-दीहर-भुया-दंडेहिं गेण्हिऊण अत्तणो उच्छंगे णिवेसिओ, अवगूढो य एसो। भणियं च णरवइणा 'अहो वज्ज-कढिण-हियओ से जणओ जो इमस्स वि विरहे जियइ' त्ति। देवीए वि पुत्त-णेहेणमवलोइऊण भणियं 'धण्णा सा जुयई जीए एस पुत्तओ, दारुणा य सा जायस्स विरहम्मि संधीरए अत्ताणयं' ति। मंतीहिं भणियं 'देव, किं कुणउ, एरिसो एस विहि-परिणामो, तुह पुण्ण-विलसियं च एयं। अवि य।

कस्स वि होंति ण होंति व अहोंति होंति व कस्स वि पुणो वि। एयाओं संपयाओ पुण्ण-वसेणं जणवयम्मि॥

§ २४) एत्थंतरम्मि हिययब्भंतर-गुरु-दुक्ख-जलण-जालावलि-तत्तेहिं बाह-जल-लवेहिं रोविउं पयत्तो कुमारो। तओ राइणा ससंभमेण गलिय-बाह-बिंदु-प्पवाहाणुसारेणावलोइयं से वयणयं जाव पेच्छइ जल-तरंग-पक्खालियं पिव सयवत्तयं। तओ 'अहो, बालस्स किं पि गरुयं दुक्खं' ति भणमाणस्स राइणो वि बाह-जलोल्लियं णयण-जुवलयं। पयइ-करुण-हिययाए देवीओ वि पलोट्टो बाह-पसरो। मंतियणस्स वि णिवडिओ अंसु-वाओ। तओ राइणा भणियं। 'पुत्त कुमार, मा अद्धिइं कुणसु' त्ति भणमाणेण णियय-पट्टंसु-अंतेण पमज्जियं से वयण-कमलयं। तओ परियणोवणीय-जलेण य पक्खालियाइं णयणाइं कुमारस्स अत्तणो देवीय मंतियणेणं ति।

§ २५) भणियं च राइणा 'भो भो सुर-गुरु-प्पमुहा मंतिणो, भणह, किं कुमारेण मह उच्छंग-गएण रुण्णं' ति। तओ एक्केण भणियं 'देव, किमेत्थ जाणियव्वं। बालो खु एसो माया-पिइ-विउत्तो विसण्णो। ता इमिणा दुक्खेण रुण्णं' ति। अण्णेण भणियं 'देव, तुमं पेच्छिऊण णियए जणणि-जणए संभरियं ति इमिणा दुक्खेण रुण्णं' ति। अण्णेण भणियं 'देव, तहा जं आणियं ति, कत्थ राया देवी य कं वा अवत्थंतरमणुभवंति, इमिणा दुक्खेण रुण्णं' ति। राइणा भणियं 'किमेत्थ वियारेण, इमं चेव पुच्छामो'। भणिओ य राइणा 'पुत्त महिंदकुमार, साहह महं कीस एयं तए रुण्णयं' ति। तओ ईसि-हसिय-महुर-गंभीरक्खरं भणियं कुमारेण। 'पेच्छह, विहि-परिणामस्स जं तारिसस्स वि तायस्स हरि-पुरंदर-विक्कमस्स एयस्स एरिसे समए अहं सत्तुयणस्स उच्छंग-गओ सोयणिज्जो जाओ त्ति। ता इमिणा मह मण्णुणा ण मे तीरइ बाह-पसरो रुंभि-

~~~~~~~~~~

1) P °णेण णिद्ध°, P पम्हलं-, P नयणजुयलेणं, P सविणय पणउत्ति°. 2) P has जुयल twice. 4) P °एसेण, P चेव दियहे, P सहसु°, P फुट्टमाण. 5) J संवाह, P कड्ढमाणदिसी°, P देवसत्तियं, P जुद्धं. 6) P दरल°, P सन्नाह, P च्छणसं°. 7) J देवम्हबलेण, J om. विवडेंतछत्तयं, P बलितविंधयं. 8) P रिपु-, P भंडायाराइं, J ताणिएहि for सेणिएहिं. 9) P चरिउ, P ससत्ती°. 10) P पवियो, J °हि त्ति, P पवेससु, P °वेस त्ति, J अ for य which P om. 11) J णियं व for भणियं च. 12) P गंधराओ, J विअ P विव, P om. दिट्ठिवाएहिं, P पलोयंतो, P उवागओ. 13) J om. तओ, J राइणा वि, P °रंतसिणेह, P गिण्हि°. 14) P च राइणा, J कढिणो से. 15) P देवीए, J जीय, P सा जा इमस्स, P तं धीरेइ for संधीरए. 16) P मंतीहि, P विहसियं. 17) P इ for वि, J वि for व, P अह होंति व कस्स वी पुणो हुंति ।, P पुण्ण-. 18) P °वली, J तत्तेहि. 19) J बाहा-, P -पवाहा°, P °लोवियं, P वयणं, P तरलजलरंपक्खा°. 20) J तओ बालस्स अहो किं, P जुयलयं, P पइ for पयइ. 21) P देविय, P पलोट्टिओ बाहु-, P निवाओ for वाओ, P ततो, P अद्धियं. 22) P अद्धंतेण, P om. य. 23) P नयणीइ. 24) P -पमुहा, J om. मह. 25) J वि भणिअं, J -पिति वि°. 26) P °भरिए त्ति, J त्ति ता इमिणा. 27) P तहा तंमि समए ण याणीयइ कत्थ, J देवी वा कं P देवी य वा, P अवत्थंतरं अणुहवंति. 28) P पुच्छामि, P om. य, J ताय for पुत्त, P साहमहं, J om. महं, J एयन्तए, P रुव्वइ त्ति, P इसि. 29) P महुयर, P तारिसयस्स, P om. एयस्स. 30) P -यणस्स उत्संग, P मन्नुणा, P om. मे, P भंति for रुंभि.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org
~~~~~~~~~~

ऊणं' ति । तओ राइणा विम्हयाबद्ध-रस-पसर-खिप्पमाण-हियएण भणियं । 'अहो, बालस्स अहिमाणो, अहो सावट्ठंभत्तणं, अहो वयण-विण्णासो, अहो फुडक्खरालावत्तणं, अहो कज्जाकज्ज-वियारणं ति । सव्वहा विम्हावणीयं एयं, जं इमाए वि अवत्थाए एरिसो बुद्धि-वित्थरो वयण-विण्णासो य' त्ति भणमाणेण राइणा पलोइयाइं मंति-वयणाइं । तओ मंतीहिं भणियं । 'देव, को एत्थ विम्हओ । जहा गुंजाहल-फल-प्पमाणो वि जलणो दहण-सहावो, सिद्धत्थ-पमाणो वि वइर-विसेसो गुरु-सहावो, तहा एए वि महावंस-कुल-प्पसूया रायउत्ता सत्त-पोरुस-माण-प्पमाण-प्पभूय-गुणेहिं संवड्ढिय-सरीरा एव होंति । अण्णं च देव, ण एए पयइ-पुरिसा, देवत्तण-चुया सावसेस-सुह-कम्मा एत्थ जायंति' त्ति । तओ राइणा भणियं 'एवं च्चिय एयं, ण एत्थ संदेहो' त्ति ।

§ २६) भणिओ य साणुणयं कुमारो राइणा 'पुत्त महिंदकुमार, मा एवं चिंतेसु जहा अहं तुम्हाणं सत्तू । जं सव्वं आसि ण उण संपयं । जत्तो च्चेय तुमं अम्हाण गेहे समागओ, तओ च्चेव तुह दंसणे मित्तं सो राया संवुत्तो । तुमं च मम पुत्तो त्ति । ता एवं जाणिऊण मा कुणसु अद्धिइं, मुंचसु पडिवक्ख-बुद्धिं, अभिरमसु एत्थ अप्पणो गेहे । अवि य जहा सव्वं सुंदरं होहिइ तहा करेमि' त्ति भणिऊण परिहिओ से सयमेव राइणा रयण-कंठओ, दिण्णं च करे करेणं तंबोलं । 'पसाओ' त्ति भणिऊण गहियं, समप्पिओ य देव-गुरुणो । भणिओ य मंतिणो 'एस तए एवं उवयरियव्वो जहा ण कुलहरं संभरइ त्ति । सव्वहा तहा कायव्वो जहा मम अउत्तस्स एस पुत्तो हवइ' त्ति । तओ कंचि कालं अच्छिऊण समुट्ठिओ राया आसणाओ, कय-दियह-वावारस्स य अइक्कंतो सो दियहो ।

§ २७) अह अण्णम्मि दियहे बाहिरोवत्थाण-मंडवमुवगयस्स दरिय-महा-णरिंद-वंद्र-मंडली-परिगयस्स णरवइणो सुर-गिरिस्स व कुल-सेल-मज्झ-गयस्स आगया धोय-धवल-दुगुल्ल-जुवलय-णियंसणा मंगल-गीवा-सुत्तमेत्ताहरण-रेहिरा ललिय-मुणाल-धवलुज्जल-केस-कलाविया सरय-समय-ससि-दोसिणा-पवाह-पूर-पव्वाल-धवला इव छण-राई सुमंगला णाम राइणो अंतेउर-महत्तरि त्ति । दिट्ठा य राइणा पोढ-रायहंसी विय ललिय-गइ-मग्गा । आगंतूण य ताए सविणयं उवरिम-वत्थद्धंत-ठइय-वयणाए वर-रयण-कोंडलालंकिए विविह-सत्थत्थ-वित्थर-सयण्णे दाहिण-कण्णे किं पि साहियं । साहिऊण णिक्खंता । तओ राया वि किंचि विभाविज्जमाण-हिययब्भंतर-वियंभंत-वियप्पणा-सुण्ण-णयण-जुयलो खणं अच्छिऊण विसज्जियासेस-णरिंद-लोओ समुट्ठिओ आसणाओ, पयट्टो पियंगुसामाए वास-भवणं ।

§ २८) चिंतियं च णरवइणा 'अहो इमं सुमंगलाए साहियं जहा किर अज्ज देवीए पियंगुसामाए सुबहुं पि रुण्णमाणाए अलंकारो विय ण गहिओ आहार-वित्थरो, अमाणो विय अवलंबिओ चिंता-भारो, परिमलिय-पत्त-लेक्खं पिव विच्छायं वयण-कमलयं, माणसं पिव दुक्खं अंगीकयं मोणयं ति । किं पुण देवीए कोव-कारणं हवेज्ज' त्ति । अहवा सयं चेव चिंतेमि । 'महिलाणं पंचहिं कारणेहिं कोवो संजायइ । तं जहा । पणय-खलणेणं, गोत्त-खलणेणं, अविणीय-परियणेणं, पडिवक्ख-कलहणेणं, सासु-वियत्थणेणं ति । तत्थ ताव पणय-क्खलणं ण संभाविज्जइ त्ति । जेण मह जीवियस्स वि एस च्चेय सामिणी, अच्छउ ता धणस्स त्ति । अह गोत्त-खलणं, तं पि ण । जेण इमीए च्चेय गोत्तेण सयलमंतेउरिया-जणमहं सद्देमि त्ति । अह परियणो, सो वि कहिंचि मम वयण-खंडणं कुणइ, ण उण देवीए त्ति । पडिवक्ख-कलहो वि ण संभाविज्जइ । जेण सव्वो च्चेय मम भारियायणो देवयं पिव देवी मण्णइ त्ति, तं पि णत्थि । सेसं सासू-भंडणं, तं पि दूराओ च्चेव णत्थि । जेण अम्ह जणणी महाराइणो अण्णारुहिय देवी-भूय त्ति ता किं पुण इमं हवेज्ज' । चिंतयंतो संपत्तो देवीए वास-भवणं, ण उण

1) P रायणा वयणवि°, J om. रस, P वस for पसर, J -क्खिप्प°. 2) P विन्नासत्तणं, J °रालवत्तणं, P °वणीयमेयं, P इमाए व उवत्थारिए एरिसी बुद्धी-. 3) J om. य, P पुलो°, P ततो. 4) P om. हल, P °त्थप्प°. 5) J प्पसूता । रायपुत्ता । संते पोरुसे । माणप्पभूतीहि सह संवड्ढिय, P चेव for एव, J होंति त्ति ।. 6) J om. ण, J चुआ एव, P सुभ-. 8) P ता for पुत्त, P अम्हं, J तुम्हाण, JP सत्तु. 9) J जाउ चेव तुम्हं अम्हाणं, P मित्तत्तं, P संवुत्तं ।. 10) P अद्धेदुं, P पडिवज्ज-, अहिर°, J om. एत्थ, J गेहं for गेहे, J om. अवि य. 11) P सव्वसुं°, J होहि त्ति, J करीहामो, J राइणा वयणे-, J करें करेण P करं क°. 12) P om. त्ति, P om. य, [भणिओ] added by Ed., P जह णं. 13) P हवउ, J किंचि. 14) J य after आसणाओ, P om. य, P om. सो. 15) P नरिंदचंद्र. 16) J र for व, P दुगूल, P om. जुवलय. 17) P om. समय, P पच्छालण-. 18) J महंतेउर महंतारिअ त्ति ।, P om. य. 19) ठइय in J looks like a later correction, P -ठुइय, P °णाए व वर, J कोण्डला° P कुंडला°. 20) P किं for वि, J om. वि°, J विअंभंत omitted by P, P °प्पणसुन्न°. 21) P समुवट्ठिओ. 22) J इमं मम नृ°, P भत्त for रुण्ण. 23) J यमाणो विअ P मोणो चिय, P om. परि, P लेक्खं. 24) J °कयंमाण त्ति । ता किं, J °ज्जं ति ।, J om. चेव. 25) J संजायइ त्ति । P जायइ ।, P -क्खलणेण, P -क्खल°, P °णीयं. 26) J सासवि°, J क्खलणं P अल्णं, P °वियइ, P om. वि, P च्चेव or व्वेव. 27) P ता वण्णस्स, P णो for ण, J इमीय, J अहवा for अह. 28) J कहवि मम, P देवीउ, P खलणं पि for कलहो वि, J °विज्जइ त्ति P संभावीयइ. 29) P om. चेय, J om. देवी, P om. त्ति, J om. तंपि णत्थि, P नत्थि सर्स, P दूरओ, P जेणम्ह. 30) P °राइणा, P अणुरुंभिय, P एयं for इमं, P देवीवास, P तओ ण for ण उण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिट्ठा देवी। पुच्छिया एका विलासिणी 'कत्थ देवि' त्ति। तीए ससंभमं भणियं 'देव, कोवहरयं पविट्ठ' त्ति। गओ कोवहरयं। दिट्ठा य णेण देवी उम्मूलिया इव थल-कमलिणी, मोडिया इव वण-लया, उक्खुडिया इव कुसुम-मंजरी। पेच्छमाणो उवगओ से समीवं। तओ पट्टंसुय-मसूरद्धंत-णिमिय-णीसह-कोमल-करयला गुरु-घण-जहण-भरुव्वहण-खेय-णीसास-णीसहा सणियं सणियं अलसायमाणी अब्भुट्ठिया आसणाओ। दिण्णं च राइणो णिययं चेय आसणं ति। उवविट्ठो राया देवी य।

§ २९) तओ भणियं च राइणा 'पिए पिए अकोवणे, कीस एयं अकारणे चेय सरय-समयासार-वारि-धारा-हयं पिव पल्हत्थं कोमल-बाहु-लइया-मुणाल-णालालीणं समुव्वहसि वयण-कमलयं ति। कीस एयं अणवरय-बाह-जल-पवाह-णयण-प्पणाल-णाल-वस-पव्वालियं पिव थणवट्टं समुव्वहसि। णाहं किंचि अवराह-ट्ठाणमप्पणो संभरामि त्ति। ता पसिय पिए, साह किं तुब्भ ण संमाणिओ बंधुयणो, किं वा ण पूईओ गुरुयणो, किं ण महिओ सुर-संघो, किं वा ण संतोसिओ पणइ-वग्गो, अहवाविणीओ परियणो, अहवा पडिकूलो सवत्ती-सत्थो त्ति। सव्वहा किं ण पहुप्पइ मए भिक्खम्मि य पिययमाए, जेण कोवमवलंबिऊण ठियासि त्ति। अहवा को वा वियड-दाढा-कोडि-कराल-भीम-भासुरं कयंत-वयण-मज्झे पविसिऊण इच्छइ। अहवा णहि णहि, जेण तुमं कोविया तस्स सुवण्णद्ध-सहस्सं देमि। जेण कोवायंब-णयण-जुवलं सयवत्त-संपत्ता-हरित्त-सिरी-सोहियं किंचि णिवोल्लियाहर-दर-फुरंत-दंत-किरण-केसरालं कज्जल-सामल-विलसमाण-भुमया-लया-भमर-रिंछोलि-रेहिरं चारु-णयण-कोस-बाह-जल-महु-बिंदु-णीसंदिरं अउव्व-कमलं पिव अदिट्ठ-उव्वयं मम दंसयंतेण अवकरेंतेणावि उवकयं तेण।

§ ३०) तओ ईसि-वियसिय-विहडमाणाहरउडंतर-फुरंत-दंत-किरण-सोहियं पहसिऊण संलत्तं देवीए। 'देव, तुह पसाएण सव्वं मे अत्थि किंतु णवर सयल-धरा-मंडल-णरिंद-वंद्र-मंडली-मउड-मणि-णिहसण-मसणिय-चलण-जुयलस्स वि महाराइणो पिय-पणइणी होऊण इमिणा कज्जेण विसूरिमो, जं जारिसो एस तीए धण्णाए कीए वि जुयईए पिय-पुत्तओ सिणेह-भायणं महिंदकुमारो तारिसो मम मंद-भागाए तइयं पि णाहेण णत्थि। इमं च भावयंतीए अत्ताणयस्स उवरिं णिव्वेओ, तुह उवरिं मम कोवो संजाओ' त्ति। तओ राइणा हियएण पहसिऊण चिंतियं। 'अहो पेच्छह अविवेइणो महिलायणस्स असंबद्ध-पलवियाइं। अहवा,

एरिसं चेव अलिया-मलियासंबद्ध-प्पलाविएहिं। हीरंति हिययाइं कामिणीहिं कामुययणस्स' त्ति॥

चिंतयंतेण भणियं 'देवि, जं एयं तुह कोव-कारणं, एत्थ को उवाओ। देव्वायत्तमेयं, ण एत्थ पुरिसयारस्स अवसरो, अण्णस्स वा। भण्णइ य।

अत्थो विज्जा पुरिसत्तणाइँ अण्णाइँ गुण-सहस्साइं। देव्वायत्ते कज्जे सव्वाइँ जणस्स विहडंति॥

ता एवं ववत्थिए कीस अकारणे कोवमवलंबसि'।

§ ३१) तओ भणियं देवीए 'णाह, णाहमकज्जे कुविया, अवि य कज्जे च्चिय। जेण पेच्छह सयल-धरा-मंडलब्भंतरे जोय-जोयणी-सिद्ध-तंत-मंत-सेवियस्स महाकालस्स व तुज्झ देव-देवा वि आणं पडिच्छंति, तह वि तुह ण एरिसी चिंता संपज्जइ। किं जइ महाराओ उज्जमं च काऊण किंपि देवयं आराहिऊण वरं पत्थेइ, ता कहं मम मणोरहो ण संपज्जइ त्ति। ता पसीय मम मंद-भागिणीए, कीरउ पसाओ' त्ति भणमाणी णिवडिया से चलण-जुवलए राइणो। णिवडमाणी चेव अवलंबिया दीहरोभय-बाहु-डंडेहिं पीणेसु भुवा-सिहरेसु। तओ वण-गएण व कर-पब्भार-कलिया मुणालिणि व्व उक्खिविऊण

1 > P पुच्छिया य, P चेडिया for विलासिणी, J भणियं ति, P पविट्ठेत्ति. 2 > P om. थल, P इव चलयणया, P °डियाढ. 3 > J om. से, P °सूरयद्धं°, P करलया, J om. घण, P -क्खेय, P णीसास twice. 4 > P °णियमल°, J णियं, P om. चेय, P om. ति. 5 > J om. च, J कोवणे. 6 > P -नालालीलं, P कयण, J °यन्ति।, P -प्पवाहप्पवाह. 7 > P -प्पणाल, P नालयसरपव्वा°, P °वट्टमुव्व°, P °रावि त्ति. 8 > J तुभ ण P तुह न, J °अणो P जणो for यणो in both places, JP क्रिण्ण, P सुरं, P ता for वा, P पणय-. 9 > P आउण for अहवा°, P अह प°, P सवत्ति, J किण्ण P किं वा ण, P om. य. 10 > P om. त्ति, P चियड, P °मज्ज. 11 > J सुवण्णट्ठ-, J कोवासंयंवण° P °यंचण°, P जुयलं, P सयपत्त. 12 > J सिरि, J हरहर P हरंत for दर, P om. दर, P विमलस°, P -भुमयालिया, JP रिंच्छोलि. 13 > P कोवसवाह, P निसं°, P पुव्वं for उव्वयं, J अपकरेंते° P अवकारंते°. 15 > विहसिय, J °उट्ठंतर. 16 > P किंतु एक्कं नवर, J मण्डव, P नरिंदचंद्र. J °इसणा-. 17 > P वि होऊण, J तीअ, P कीअ, P जुवईपिय, पियय-. 18 > J °दयकु°, P तए व for तइयं पि, P णाहे णित्थि त्ति।, P om. च. 19 > P उवरि, J om. मम, J संजाओ P जाउ, P अविवेगिणो. 20 > P om. अहवा. 21 > P °याहिं कामिणीहिं कामुअजणस्स य त्ति for the whole stanza: एरिसं...त्ति॥ 22 > P चिंतियं°, J जं तए एयं, J om. तुह, P कोव ओवा°, P देवाय°. 24 > J some marginal addition of missing words, P °सत्तणं च अन्नाइं. 26 > P om. णाह, P पेच्छ, P °ब्भंतर. 27 > J जोयणी P जोयणो, P वि न तुह. 28 > P महाराउ, P om. च, P om. वरं. 29 > P पसिय, P भाइणीए, J णिअडिआ, P निवडिया, P om. से, P जुवयले. 30 > J डण्डेहिं P दंडेहिं, P भयासिह°, P करिब्भार, P उक्खुवि°.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरोविया वामम्मि ऊरुयम्मि । तओ ससज्झस-सउकंप-लज्जावणय-वयण-कमला भणिया राइणा । 'पिए, जं तुमं भणसि तं मए अवस्सं कायव्वं । तेण विमुंच विसायं, मा कुणसु अद्धिइं, णिब्भच्छेहि सोगं, परिहरसु संतावं, मज्जसु जहिच्छियं, भुंजसु भोयणं ति ।

§ ३२) सव्वहा जइ वि पिए,

णिसियासि-छेय-धारा-गलंत-रुहिर-लव-छिमिछिमायंतं । तिणयण-पुरओ हुणिऊण णियय-मंसं भुय-प्फलिहा ॥
जइ वि तिसूल-णिवडिय-महिसोवरि-णिमिय-चारु-चलणाए । कच्चाइणीएँ पुरओ सीसेण बलिं पि दाऊण ॥
जइ वि दर-दड्ढ-माणुस-पहरिस-वस-किलिकिलेंत-वेयाले । गंतुं महा-मसाणे विक्केऊणं महामंसं ॥
डज्झंत-बहल-परिमल-फुरंत-सिर-सयल-मिसिमिसायंतं । धरिऊण गुग्गुलं सुयणु जइ वि साहेमि भत्तीए ॥
णियय-बहु-रुहिर-विच्छड्ड-तप्पणा तुट्ठ-भूय-सुर-संघं । आराहिउं फुडं चिय रोइं जइ माइ-सत्थं पि ॥
इय सुयणु तुज्झ कज्जे पत्थेऊणं पुरंदरं जइ वि । तह वि मए कायव्वो तुज्झं पिय-पुत्तओ एक्को' ॥
इय णरवइणा भणियं सोऊणं हरिस-णिब्भरा देवी । भणिउं 'महा-पसाओ' त्ति णिवडिया चलण-जुवलम्मि ॥

§ ३३) तओ समुट्ठिओ राया आसणाओ देवी य । कय-मज्जण-भोयणा य संवुत्ता । णरवइणा वि आइट्ठा मंतिणो 'सिग्घमागच्छह' त्ति । आएसाणंतरं आगया उवइट्ठा उवविट्ठा जहारुहेसु आसणेसु सुहासणत्था य । भणिया य राइणा 'भो हो सुर-गुरु-पमुहा मंतिणो, अज्ज एरिसो एरिसो य वुत्तंतो' । देवीए कोव-कारणं अत्तणो पइण्णारुहणं सव्वं साहियं । 'तओ एयम्मि एरिसे वुत्तंते किं करणीयं ति मंतिऊण साहह तुब्भे किं कीरउ' त्ति । तओ मंतीहिं भणियं 'देव,

तण-मेत्तं पिव कज्जं गिरि-वर-सरिसं असत्तिमंताणं । होइ गिरी वि तण-समो अहिओय-सकक्कसे पुरिसे ॥

तेण देव, जं तए चिंतियं

तं कुविय-कयंतेण वि हु अण्णहा णेय तीरए काउं । कुविओ वि जंबुओ कुणइ किं व भण तस्स केसरिणो ॥

भण्णइ य देव,

जाव य ण देंति हिययं पुरिसा कज्जाईं ताव विहडंति । अह दिण्णं चिय हिययं गुरुं पि कज्जं परिसमत्तं ॥

तओ देव, जं तए चिंतियं तं तह च्चेय । सुंदरो एस एरिसो देवस्स अज्झवसाओ । जेण भणियं किर रिसीहिं लोय-सत्थेसु 'अउत्तस्स गई णत्थि' त्ति । अण्णं च देव, सव्वाइं किर कज्जाइं पिइ-पिंड-पाणिय-पयाणाईणि विणा पुत्तेण ण संपडंति पुरिसाणं । तहा महा-मंदर-सिहरोयरि-परूढ-तुंग-महावंसो विय उम्मूलियासेस-तरु-तमाल-साल-मालेण पलय-कालुग्घाय-मारुएण विय रिवुयणेण राय-वंसो बहूहिं णाणुण्णामण-वियत्थणाहिं उम्मूलिज्जइ, जइ ण पुत्तो दढ-मूल-बंधण-सरिसो हवइ त्ति । भण्णइ य ।

जस्स किर णत्थि पुत्तो विज्जा-विक्कम-धणस्स पुरिसस्स । सो तह कुसुम-पसिद्धो फल-रहिओ पायओ चेव ॥

ता देव, सुंदरो एस देवस्स परक्कमो, किंतु किंचि विण्णवेमि देवं । चिट्ठंतु एए ससिसेहर-सामि-महामास-विक्कय-कच्चायणी-समाराहण-प्पमुहा पाण-संसय-कारिणो उवाया । अत्थि देवस्स महाराय-वंस-प्पसूया पुव्व-पुरिस-संणेज्झा रायसिरी भगवई कुल-देवया । तं समाराहिउं पुत्त-वरं पत्थेसु'त्ति । तओ राइणा भणियं 'साहु, हो विमल-बुद्धि साहु, सुंदरं संलत्तं ति । जेण भण्णइ

---

1) P वामयंमि, J -सेउकंप. 2) J अवस्स, P °व्वं ति ।, P अधिइं, J णिब्भत्थेहि P निब्भच्छेहिं, P सोयं, P जहिच्छं. 4) P पिए जइ वि. 5) J -च्छेय, P -छिमिच्छिमायंतं, J °यंत, J पुरओ ।, P °ऊण हुयासणं नियमासं, J °मांसं (?), P भुयफलिया ।. 6) P निवाडिय, J णियय. 7) J वेयालो. 8) P फुट्टंत, J -सिहर-, P -सिमिसिमायंतं, P सुयलणु, P वि वामंमि भित्तीए. 9) P नियवाहु, J विच्छडंत°, P °हियं, P माणसत्थं. 10) J कए । for कज्जे. 11) P जुयलंमि. 12) P मोयणो, P om. य, P °वुत्तो ।. 13) P °गच्छं ति !, P om. उवइट्ठा, P सहास°. 14) P भो for हो, P -प्पमुहा, P -अज्जरि एरिसो वु°, P पइण्णारु° P om. सव्वं. 15) J om. तुब्भे, P देवा. 16) P gives here the verse जाव...परिसमत्तं instead of तणमेत्तं... पुरिसे, P °त्तिवन्ताणं, J होंति गि°, P व for वि, P तणसोमो, J सहिउव्वस P अहिओगस, P पुरिसो. 17) P तओ for तेण. 18) P om. हु, J अणहा, J जंबुओ किं कुणइ किं व भणह, P च for व, J om. तस्स P तंसि. 20) P has here the verse तणमेत्तं......पुरिसे ॥ instead of जाव......परिसमत्तं ।, P य नादंति, P ताइं वि°. 21) P यसो, P om. एरिसो, J °रसज्झवसाओ, P सत्थेसु जहा अ°. 22) J देव किर सव्वाइं कज्जाइं, J पिंति- P पिई, J °डंति त्ति पुरि°. 23) J सिहरोअरोअरिपढमतुंग, P °रोयरए°, J वि for विय, P तमालमाल, P पेलय-, J कालप्पय. 24) J रिवुअणेण P रिवुजणेणा, P नामुन्नामण, P वियड्ढणाहि, P om. ण, J गूढ for मूल. 26) P समिद्धो for पसिद्धो, P पावयं चेव. 27) P तेण for देव, P सुंदरो देवस्स एस पर°, J एससिसिर (some corretion seen), P सामिहामंस, J विकयं कच्चाइणि. 28) P °मारुहण, J, om. प्पमुहा, J भगवइ. 29) P °राहिय, P भणिओयं, J om. साहु (second).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्व-पुरिसाणुचरियं जं कम्ममाणिंदियं हवइ लोए । पुत्तेण वि कायव्वं तं चिय एसो जणे णियमो ॥

अण्णं च सयल-तेलोक्क-णरिंद-वंद्र-पत्थणिज्ज-दरिसणाए भगवईए रायसिरीए दंसणं पि दुलहं, अच्छउ ता वरो त्ति । दंसणेण चेय तीए सव्वं सुंदरं होहि' त्ति भणिऊण समुट्ठिओ राया महासणाओ मंतियणो य ।

§ ३४) अह अण्णम्मि पूस-णक्खत्त-जुत्ते भूय-दियहे असेस-तिय-चउक्क-चच्चर-सिंघाडग-सिवाणं खंद-रुंद-गोविंद-चंद-तियसिंद-गइंद-णाइंदारविंदणाहाणं तहा जक्ख-रक्खस-भूय-पिसाय-किंणर-किंपुरिस-महोरगाईणं देवाणं बलिं दाऊण तहा चरग-परिवायय-भिक्खभोय-णिग्गंथ-सक्क-तावसाईणं दाउं जहारुहं भत्त-पाण-णियंसणाईयं, तहा दुग्गय-दुक्खिय-पंथ-कप्पडियादीणं मणोरहे पूरिऊणं, तहा सुणय-सउण-कायल-प्पमुहे पुण्ण-मुहे काऊण, ण्हायंत-सुइ-भूओ धोय-धवल-दुगुल्लय-णियंसणो सिय-चंदण-सुमण-मालाहरो पासट्ठिय-परियणोधरिय-कुसुम-बलि-पडलय-णिहाओ पविट्ठो राया देवहरयं । तत्थ य जहारिहं पूइऊण देवे देवीओ य, तओ विरइओ मणि-कोट्टिमयले चंदण-गोरोयणा-दोव्वंकुर-गोर-सिद्धत्थ-सत्थियक्खय-सिय-कुसुमोवयार-णिरंतरो परम-पवित्तेहिं कुसुमेहिं सत्थरो त्ति । तओ पेसियासेस-परियणो राया णिसण्णो कुस-सत्थरे, णिसमिऊण य कमल-मउल-कोमलेहिं अणवरय-महाधणु-जंत-समायड्ढण-किणंक-कढिणिएहिं करेहिं अंजलिं काऊण इमं थुइ-कुलयं पढिउमाढत्तो ।

§ ३५) 'जय महुमह-वच्छत्थल-हारंदोलिर-ललंत-दुल्ललिए । जय कोत्थुह-रयण-विसट्टमाण-फुड-किरण-विच्छुरिए ॥
जय खीरोय-महोवहि-तरंग-रंगंत-धवल-तणु-वसणे । जय कमलायर-महुयर-रणंत-कल-कणिर-कंचिल्ले ॥
जय खग्गग्ग-णिवासिणि णरणाह-सहस्स-वच्छ-दुल्ललिए । जय कोमल-कर-पंकय-गंधायड्ढिय-भमंत-भमरउले ॥
देवि भिसुणेसु वयणं कमला लच्छी सिरी हिरी कित्ती । तं चिय रिद्धी णेव्वाणी णिव्वुइ-संपया तं सि ॥
ता दायव्वं मह दंसणं ति अब्भंतरे ति-रत्तस्स । अहवा पडिच्छियव्वं सीसं मह मंडलग्गाओ' ॥

त्ति भणिऊण य अवणउत्तिमंगेणं कओ से पणामो । काऊण य णिवण्णो कुस-सत्थरे, ठिओ य रायसिरीए चेय गुण-गहण-वावड-हियओ एक्कमहोरत्तं दुइयं जाव तइयं पि । तइय-दियहे य राइणा अदिण्ण-दंसणामरिस-वस-विलसमाण-कसिण-कुडिल-भुमया-लएणं आबद्ध-भिउडि-भंगुर-भीम-वयणेणं ललिय-विलासिणी-कमल-दल-कोमल-करयलालिहण-दुल्ललिओ कवलिओ दीहर-कसिण-कुडिल-कंत-कोंतल-कलावो, गहियं च पउर-वइरि-करि-कुंभ-मुत्ताहलुद्दलणं दाहिण-हत्थेण खग्ग-रयणं । भणियं च 'किं बहुणा

जइ सग्गे पायाले अहवा खीरोयहिम्मि कमल-वणे । देवि पडिच्छसु एयं मह सीसं मंडलग्गाओ' ॥

त्ति भणिऊण समुक्करिसिओ णियय-खंधराभोए पहारो । ताव य हा-हा-रव-सद्द-गब्भिणं काउं थंभिओ से दाहिणो भुयादंडो । उण्णामिय-वयणेण णियच्छियं राइणा, जाव पेच्छइ

वयण-मियंकोहामिय-कमलं कमल-सरिच्छ-सुपिंजर-थणयं ।
थणय-भरेण सुणामिय-मज्झं मज्झ-सुराय-सुपिहुल-णियंबं ॥
पिहुल-णियंब-समंथर-ऊरुं ऊरु-भरेण सुसोहिय-गमणं ।
गमण-विराविय-णेउर-कडयं णेउर-कडय-सुसोहिय-चलणं ॥ ति । अवि य ।

भसलालि-मुहल-हलबोल-वाउलिज्जंत-केसरुप्पीले । कमलम्मि पेसियच्छि लच्छी अह पेच्छइ णरिंदो ॥

दट्ठूण य अवणउत्तमंगेण कओ से पणामो ।

---

1 › J ˚साण च˚, P ˚मंणदियं सहइ, P य for वि, P जणो. 2 › P -तइलोक, P -चंद्र, P om. भगवईए, P वावारो for ता वरो, P ˚णेणं तीए चेव सव्वं. 3 › P होहिइ त्ति, P समुवट्ठिओ, P सीहा˚ for महा˚. 4 › P अन्नंमि दियहे पू˚, P दियहो, P चच्चरे, P खंड-, J om. चंद. 5 › J गइंदारविं˚, J भूत for भूय, P देव्वाणं, P दाऊणं. 6 › P चरयपरिव्वाय भिक्खु˚, P पाणं, P दुग्गइ-. 7 › P ˚डियाणं, J सुणया-, P कायप्प˚, P परितुट्ठे for पुण्णमुहे, J सुचीहोउं, J दुग्गुल्लय- P दुगुलनि˚. 8 › P ˚हरणो, J पास परिअणधरिअ, J om. य. 9 › P om. देवे, P थिरईओ, P गोरोयणो, P ˚व्वंकुस-, P सिद्धसत्थियक्कयसिय. 10 › J पेसिओ परिअणो, P य राया, J कुसुम for कुस. 11 › J -महाकड्ढण-, J किणकढि˚, J om करेहिं. 13 › P वत्थल, P -लुलंत, P किरण repeated. 14 › P महोयहि, P -रुणंत. 15 › P ˚नाहस्स. 16 › P कमलच्छी सिरिहिरी तहा कित्ती, P णिव्वाणि निव्वुई. 18 › P भाणिऊण, P om. य, P निसण्णो, P सत्थरो, P om. य, J ˚सिरी तीए, P चेवागुण. 19 › P तइ for तइय, J राइणो, P नरिस for मरिस, J रस for रिस. 20 › J भंगुर, J ˚सिणि-, P ˚लाणिहण. 21 › J कवलीओ, P ˚हलण. 23 › P सग्गो. 24 › P om. काउं. 25 › P य नियच्छियं, P जा for जाव. 26 › P मिणंयंको˚, P -सपिंजर. 28 › P सुमंथरऊरं. 29 › P विराइय. 30 › J भमरालि, P ˚रुप्पीलो. 31 › J अवणवुत्त˚.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३६) भणियं च रायलच्छीए 'भो भो णरिंद, अणेय-पडिवक्ख-संदणुद्दलण-पउर-रिउ-सुंदरी-वंद्र-वेहव्व-दाण-दक्खं कीस एयं तए खग्ग-रयणं जयसिरि-कोमल-भुय-लयालिंगण-फरिस-सुह-दुल्ललिए णिय-खंधराभोए आयासिज्जइ'। तओ णरवइणा भणियं 'देवि, जेण तिरत्तं मम णिरसणस्स तह वि दंसणं ण देसि' त्ति। तओ ईसि-वियसिय-सिय-दसण-किरण-विभिज्जंताहर-रायं भणियं रायसिरीए 'अहो महाराय दढवम्म, तिरत्तेणं चिय एस पुरिसो तवस्सी असहणो संवुत्तो'। भणियं च राइणा 'देवि,

मण्णइ हु तण-समाणं पि परिभवं मेरु-मंदर-सरिच्छं। को वि जणो माण-धणो अवरो अवरो चिय वराओ'॥

तओ भणियं रायलच्छीए 'सव्वहा भणसु मए किं कज्जं' ति। राइणा भणियं 'देवि,

सव्व-कलागम-णिलओ रज्ज-धुरा-धरण-धोरिओ धवलो। णिय-कुल-माणक्खंभो दिज्जउ मह पुत्तओ एक्को'॥

तओ सपरिहासं सिरीए संलत्तं। 'महाराय, किं कोइ मम समप्पिओ तए पुत्तओ जेणेवं मं पत्थेसि'। भणियं च राइणा 'ण समप्पिओ, णिययं चेय देसु' त्ति। लच्छीए भणियं 'कुओ मे पुत्तओ' त्ति। तओ राइणा ईसि हसिऊण भणियं 'देवि, भरह-सगर-माहव-णल-णहुस-मंधाइ-दिलीव-प्पमुह-सव्व-धरा-मंडल-पत्थिव-सत्थ-वित्थय-वच्छत्थलाभोय-पलंक-सुह-सेज्जा-सोविरीए तुह एक्को वि पुत्तो णत्थि' त्ति। संलत्तं सिरीए 'महाराय, कओ परिहासो।

रूएण जो अणंगो दाणे धणओ रणम्मि सुरणाहो। पिहु-वच्छो मह वयणेण तुज्झ एक्को सुओ होउ'॥

त्ति भणिऊण अदंसणं गया देवी।

§ ३७) णरवई वि लद्ध-रायसिरी-वर-प्पसाओ णिग्गओ देवहरयाओ। तओ ण्हाय-सुइ-भूओ महिऊण सुर-संघं, पणमिऊण गुरुयणं, दक्खिऊण विप्पयणं, संमाणिऊण पणइयणं, सुमरिऊण परियणं, कं पि पणामेणं, कं पि पूयाए, कं पि विणएणं, कं पि माणेणं, कं पि दाणेणं, कं पि समालिंगणेणं, कं पि वायाए, कं पि दिट्ठीए, सव्वं पहरिस-णिब्भरं सुमुहं काऊण णिसण्णो भोयण-मंडवे। तत्थ जहाभिरुइयं च भोयणं भोत्तूण आयंत-सुइ-भूओ णिग्गओ अब्भंतरोवत्थाण-मंडवं। तत्थ य वाहित्ता मंतिणो। समागया कय-पणामा य उवविट्ठा आसणेसु। साहिओ य जहावत्तो सयलो सिरीए समुल्लावो। तओ भणियं मंतीहिं 'देव, साहियं चेय अम्हेहिं, जहा

जावय ण देंति हिययं पुरिसा कज्जाइँ ताव विहडंति। अह दिण्णं चिय हिययं गुरुं पि कज्जं परिसमत्तं॥

तं सव्वहा होउ जं रायसिरीए संलत्तं' ति।

§ ३८) तओ समुट्ठिओ राया। गओ पियंगुसामाए मंदिरं। दिट्ठा य देवी णियम-परिदुब्बलंगी। अब्भुट्ठिऊण दिण्णं आसणं, उवविट्ठो राया। साहियं च राइणा सिरि-वर-प्पयाणं। तओ पहरिस-णिब्भराए भणियं च देवीए 'महापसाओ' त्ति। तओ समाइट्ठं वद्धावणयं। जाओ य णयरे महूसवो। एवंविह-खज्ज-पेज्ज-मणोहरो छणमओ विय वोलीणो सो दियहो। तावय,

कुंकुम-रसारुणंगो अह कत्थ वि पत्थिओ त्ति णाउं जे। संझा-दूईं राईएँ पेसिया सूर-मग्गेणं॥

णिच्चं पसारिय-करो सूरो अणुराय-णिब्भरा संझा। इय चिंतिऊण राई अणुमग्गेणेव संपत्ता॥

संझाएँ समासत्तं रत्तं दट्ठूण कमल-वण-णाहं। वहइ गुरु-मच्छरेण व सामायंतं मुहं रयणी॥

पच्चक्ख-विलय-दंसण-गुरु-कोवायाव-जाय-संतावे। दीसंति सेय-बिंदु व्व तारया रयणि-देहम्मि॥

---

1 > P -मद्दलुद्दलण-, P -चंद्रलेहव्व. 2 > P जयसिरी-, P लुय for भुय, J फरस, P om. सुह, P नियकंधरा°. 3 > P जेणं, P om. मम, P तहा वि, P विहसियदसण. 4 > P विहिज्जंता°, P om. राय°, P दढधंम तिरत्तेरणं च्चिय परिसो तं सि असहणो जाओ ।. 6 > P य for हु, P तणय-, P जीवियं for परिभवं, P मंदिर. 7 > P देवि सुणसु सव्व. 8 > P -धारिओ, P मह पोत्तओ. 9 > P कोवि, P तओ for तए, J मर्म for मं. 10 > P चेव, P पुत्तिउ, P विहसिऊण. 11 > J महवि for माहव, J मंधाई P मंधाय, P दिलीपपमुह. 12 > P सेज्जो-, P तु for तुह, P om. त्ति, P °हासो। अहवा. 13 > P रूवेण, P दाणेण धणउरंमि, P वच्छ मज्झ व°, J होहि. 15 > P °सिरि- 16 > P किं for कं (throughout). 17 > J om. कं (P किं) पि दाणेणं. 17 > P -निब्भरसमुहं काऊणं. 18 > P °रुइअं जहारुहंच मुत्तूण भोयण, J सुभूई. 19 > J तत्थ वाहराविता, P य आसीणा आसणेसु ।, J साहियं च जहावित्तं, P om. सयलो, P सिरिए, J सहमुल्लावो. 20 > P om. देव, P चेहिं for चेय. 21 > P नंदेति, P विय for चिय. 22 > P ता for तं, J om. ति. 23 > P समुवट्ठिओ. 25 > P च्छणमओ विव. 26 > J °रसायणंगो P °रसारुणंगे, P अकत्थव प°, P माउं for णाउं, P पिसिया सूरि-. 27 > P राई इयमग्गेणं व. 28 > J संझासमोसरंतं, J मुहं for मुहं. 29 > J -विलिय-, P °याास जायसंतावा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तार-तारयाए विलुलिय-तम-णियर-कसिण-केसीए । चंद-कर-धवल-दसणं राईएँ समच्छरं हसियं ॥
पुव्व-दिसाएँ सहीय व दिण्णा णव-चंद-चंदण-णिडाली । रवि-विरह-जलण-संतावियम्मि वयणम्मि रयणीए ॥
ससियर-पंडर-देहा कोसिय-हुंकार-राव-णित्थामा । अह झिज्जिउं पयत्ता रएण राई विणा रविणा ॥
अरुणारुण-पीउट्ठिं आयंबिर-तारयं सुरय-झीणं । दट्ठूण पुव्व-संझं राई रोसेण व विलीणा ॥
इय राई-रवि-संझा-तिण्हं पि हु पेच्छिउं इमं चरियं । पल्हत्थ-दुद्ध-धवलं अह हसियं दियह-लच्छीए ॥

§ ३९) तओ एयम्मि एरिसे अवसरे धोव-धवल-पडच्छाइए सुवित्थिण्णे पल्लंके पसुत्ता दुद्ध-धवल-जल-तरल-कल्लोल-माला-पव्वालिए खीरोय-सायरुच्छंगे व्व लच्छी पियंगुसामा देवी सुविणं पेच्छइ । तं च केरिसं ।

जोण्हा-पवाह-णीरोरु-पूर-पसरंत-भरिय-दिसियक्कं । पेच्छइ कुमुयाणंदं सयलं पि कलंक-परिहीणं ॥
अह बहल-परिमलायड्डियालि-हलबोल-णिब्भर-दिसाए । कुवलयमालाएँ दढं अवगूढं चंदिमा-णाहं ॥

तओ जावय इमं पेच्छइ तावय पहय-पडु-पडह-पडिरव-संखुद्ध-विउद्ध-मंदिरुज्जाण-वावी-कलहंस-कंठ-कलयलाराव-रविअंत-सविसेस-सुह-सुहेणं पडिबुद्धा देवी । पाहाउय-मंगल-सूर-रवेणं पडिबुज्झिऊण य णियय-भावाणुसरिस-सुमिण-दंसण-रस-वस-पहरिसुच्छलंत-रोमंच-कंचुव्वहण-पहाए देवीए आगंतूण विणओणय-उत्तमंगाए साहियं महाराइणो जहा-दिट्ठं महा-सुविणयं ति । तओ राया वि हियय-ट्ठिय-संवयंत-देवी-वर-प्पसाओ अमय-महासमुद्दे विय मज्जमाणो इमं भणिउमाढत्तो । 'पिए, जो सो रायसिरीए भयवईए तुह दिण्णो पुत्त-वरो सो अज्ज णूणं तुह उदरत्थो जाओ' त्ति । तओ देवीए संलत्तं । 'महाराय, देवयाणं अणुग्गहेणं लच्छीए वर-प्पसाएणं गहाणं साणुकूलत्तणेणं गुरुयण-आसीसाए तुह य प्पभावेणं एवं चेय एयं इच्छियं मए पडिच्छियं मए अणुमयं मए पसाओ महं' ति भणमाणी णिवडिया राइणो चलण-जुयलए त्ति ।

§ ४०) तओ राया कयावस्सय-करणीओ महिऊण सुर-संघं दक्खिऊण य दक्खिणिज्जे पूइऊण पूयणिज्जे संमाणिऊण संमाणणिज्जे वंदिऊण वंदणिज्जे णिक्कंतो बाहिरोवत्थाण-भूमिं, णिसण्णो तविय-तवणिज्ज-रयण-विणिम्मविए महरिहे सीहासणे । आसीणस्स य आगया सुर-गुरु-सरिसा मंतिणो, उवविट्ठा कण्ण-णरिंदस्स व महाणरिंदा, पणमंति दुग्गाइय-सरिसा महावीरा, उग्गाहेंति आऊ-सत्थं धण्णंतरि-समा महावेज्जा, सत्थिकारेंति चउवयण-समा महाबंभणा, सुहासणत्था वास-महरिसि-समा महाकइणो, विण्णवेंति छम्मुह-समा महासेणावइणो, पविसंति सुक्क-सरिसा महापुरोहिया । णिय-कम्म-वावडाओ अवहसिय-सुर-सुंदरी-वंद्र-लायण्णाओ वारविलासिणीओ त्ति । केएत्थ पायय-पाढया, केइत्थ सक्कय-पाढया, अण्णे अवब्भंस-जाणिणो, अण्णे भारह-सत्थ-पत्तट्ठा, अण्णे विसाहिल-मय-णिउणा, अण्णे इस्सत्थ-सत्थ-पाढया, अण्णे फरावेड्ड-उवज्झाया, अण्णे छुरिया-पवेस-पविट्ठा, अवरे बाणय-सत्ति-चक्क-भिंडिमाल-पास-जुद्ध-णिउणा, अण्णे पत्त-छेज्ज-पत्तट्ठा, अण्णे चित्तयम्म-कुसला, अण्णे हय-लक्खण-जाणिणो, अण्णे गय-लक्खणण्णू, अण्णे मंतिणो, अण्णे धाउ-वाइणो, अण्णे जोइसिणो, अण्णे उण सउण-सत्थ-पाढया, अण्णे सुविणय-वियाणया, अण्णे णेमित्तिय त्ति । अवि य ।

सा णत्थि कला तं णत्थि कोउयं तं च णत्थि विण्णाणं । जं हो तत्थ ण दीसइ मिलिए अत्थाणिया-मज्झे ॥

§ ४१) तओ तम्मि एरिसे वासव-सभा-संणिहे मिलिए महत्थाणि-मंडले भणियं राइणा । 'भो भो मंतिणो, अज्ज एरिसो एरिसो य सुविणो देवीए दिट्ठो पच्छिम-जामे, ता एयस्स किं पुण फलं' ति । तओ भणियं सुविण-सत्थ-पाढएहिं । 'देव, एयं सुविणय-सत्थेसु पढिज्जइ जहा किर महा-पुरिस-जणणीओ ससि-सूर-वसह-सीह-गय-प्पमुहे सुमिणे पेच्छंति,

1 > P विलुलिसय-, J चंद्र P थंद, P -दंसण. 2 > P सहियं व, P चिर for रवि. 3 > P पंडुर, P णिच्छामा. 4 > P -पाणोट्ठिं आयंचिर, J संझा P संज्झं, P रोसेण वोलीणो. 5 > P उ for हु, P -हच्छीए [= इत्थीए?]. 6 > P धोह-, P पडवच्छाइइए, P सुविच्छिण्ण°. 7 > P सुमिणं. 8 > P -खीरोरु, P सयणं पि. 9 > P अइ for अह, P अवऊढं. 10 > P जाव इमं, J om. पहय, P विउद्धसुद्धमंदिरुज्जाणो वावि-. 11 > P पहाओ य ।, P °सरस. 12 > P कंचउव्वहणरोहाए, P गंतूण विणयावणउत्तमंगाए. 13 > J हियअट्ठियमहासंवयंत वर°, P पसाउ त्ति, P मज्जमाणा, J भणिउं समाढत्तो. 14 > P भगवईए, P अजुत्तणं, P उअरत्थो, P संलत्ति. 15 > P अणुग्गहो णं लच्छीय वरप्पहाणेणं महणाणं साणु°, P गुरूणं आ°, J चेव. 16 > P मे for मए, J पसाओ त्ति महं, J om. राइणो, J जुवलत्ति. 17 > J om. य, P दक्खीणिज्जे, P पूइणिज्जे. 18 > P भूमी, P सविणिच्छो-, P विणम्मविए महरिह. 19 > P नरिंदसमा महा°, P महा for महावीरा. 20 > P आउसत्थं, P °बंभणो. J महारिसि, P om. समा. 22 > J वंद्रं P विंद, J -णीयण्णाओ, P केइय पाइय, P om. के इत्थ सक्कयपाढया, P अवभंस. 23 > P भरह, P ईसत्थत्थपाढया, J om. अण्णे फरावेड्डुउवज्झाया. 24 > J कय for बाण, P भिंडिला. 25 > P गयलक्खणं अन्ने, J om. उण. 26 > P -पाढया अन्ने सुविणसत्थ-, J वीणया for विया°, P नेमित्तय. 27 > P हो जत्थ, P अत्थाणमज्झंमि. 28 > P सन्निभे, P मंडले. 29 > J om. य, P °देवीए पच्छिमजामे दिट्ठो, J पुण इफलन्ति, J सुमिण, J om. सत्थ. 30 > P सुमिणसत्थे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण एयस्स पुरिसस्स सयल-चंद-दंसणस्स महापुरिस-जम्मं साहेंति' त्ति। राइणा भणियं 'देवीए पुत्त-जम्म-फलं सिरीए चेय साहियं भगवईए। जो पुण सो ससी कुवलयमालाए अवगूढो तं किंचि पुच्छिमो'। तओ भणियं सुमिण-सत्थ-पाढएहिं 'देव, तेण एसा वि तुह दुइया धूया भविस्सइ' त्ति। तओ देव-गुरुणा भणियं 'देव, जुज्जइ एयं, जइ कुवलयमाला केवला चेय दीसेज भिण्णा चंदाओ, ता होज इमं। एसा पुण तं चेय मियंकं अवगूहिऊण ठिया, तेण एसा का वि एयस्स राय-पुत्तस्स पुव्व-जम्म-णेह-पडिबद्धा कुवलयमाला विय सव्व-जण-मणोहरा पिययमा होहि त्ति। तीए चेय समालिंगिओ एस दिट्ठो' त्ति। भणियं च राइणा 'एयं संभाविज्जइ'। तओ ठिया किंचि कालं विविह-णरिंद-केसरि-कला-कलाव-सत्थ-विण्णाण-विज्जा-कहासु। समुट्ठिओ राया कय-दियह-वावारो कय-राइ-वावारो य अच्छिउं पयत्तो।

§ ४२) अह देवी तं चेय दियहं घेत्तूण लायण्ण-जल-प्पवड्ढिया इव कमलिणी अहिययरं रेहिउं पयत्ता। अणुदियह-पवड्ढमाण-कला-कलाव-कलंक-परिहीणा विय चंदिमा-णाह-रेहा सव्व-जण-मणोहरा जाया। तहा परिवड्ढमाण-दाण-दया-दक्खिण्ण-विज्जा-विण्णाण-विणय-णाणाभिमाणा सुसंमया गुरुयणस्स, पिययमा राइणो, सुपसाया परियणस्स, बहुमया सवत्ति-सत्थस्स, दाण-परा बंधु-वग्गस्स, सुमुहा पउर-जणस्स, अणुकूला साहुयणस्स, विणीया तवस्सीणं, साणुकंपा सव्व-पाणि-गणस्स जाव गब्भं समुव्वहइ त्ति।

अह तीएँ डोहलो सुंदरीएँ जाओ कमेण चित्तम्मि। जो जं मग्गइ तं चिय सव्वं जइ दिज्जए तस्स ॥
संपुण्ण-दोहला सा पणइयणब्भहिय-दिण्ण-धण-सारा। लद्ध-रइ-प्पसरा वि हु सुपुरिस-गब्भं समुव्वहइ ॥

§ ४३) सव्वहा महा-पुरिस-गब्भमुव्वहिउमाढत्ता। कहं।

अंतो-णिहित्त-सुपुरिस-मुणाल-धवलुच्छलंत-जस-णिवहो। धवलेइ व तीएँ फुडं गब्भ-भरापंडु-गंडयले ॥
मंदर-गिरि-वर-गरुयं समुव्वहंतीय भार-खिण्णाए। अलसायंति अलंबिय-मुणाल-मउयाइँ अंगाइं ॥
तुंगं समुब्भडयरं तीय वहंतीय अप्पणो गब्भं। सामायंति मुहाइं ऊणिस-गहियाण व थणाण ॥
आपूरमाण-गब्भा अणुदियहं जह पवड्ढए देवी। तह सरय-जलय-माल व्व रेहए पुण्णयंदेण ॥
अह दल-थवणं पि कयं संमाणिज्जंत-गुरुयणं रम्मं। णच्चिर-विलासिणीयण-जण-णिवहुद्दाम-पूरंतं ॥
अह तिहि-करणम्मि सुहे णक्खत्ते सुंदरम्मि लग्गम्मि। होरासुद्ध-मुहासु उच्च-त्थाणम्मि गह-चक्के ॥
वियसंत-पंकय-मुहो कुवलय-कलिया-दुरंत-णयण-जुओ। सरय-सिरीए सरो इव जाओ रुइरो वर-कुमारो ॥

§ ४४) अह तम्मि जाय-मेत्ते हरिस-भरिज्जंत-वयण-कमलाणं। अंतेउर-विलयाणं के वावारा पयट्टंति ॥

'हला हला पउमे, विरएसु मरगय-मणि-भित्ति-त्थलुच्छलंत-कसिण-किरण-पडिप्फलंत-बहलंधयार-पत्थार-रेहिरे मणि-पईवय-णिहाए। पियसहि पुरंदरदत्ते, सयं चेव किं ण पडियग्गसि सयल-भवण-भित्ति-संकंत-कंत-चित्तयम्म-संकुलाओ पोण्णिमायंद-रिंछोलि-रेहिराओ मंगल-दप्पण-मालाओ त्ति। हला हला जयसिरि, किं ण विरएसि सरय-समय-ससि-दोसिणा-मऊहोहा-मिय-सिय-माहप्पे महाणील-कोट्टिम-तलेसु णलिणी-दलेसु धवल-मुणालिया-णिवहे व्व भूइ-रक्खा-परिहरंतए। पियसहि हंसिए, हंसउल-पक्खावली-पम्ह-मउइयं किं ता ण गेण्हसि चामरं। वयंसि सिद्धत्थिए, गोर-सिद्धत्थ-करंबियाओ दे विरएसु अहिणवक्खय-णंदावत्त-सयवत्त-पत्तलेहाओ। तुमं पुण सुहडिए, रिउ-सुहड-करि-वियड-कुंभयड-पाडण-पडुं गेण्हसु बालयस्स देवीए य इमं रक्खा-मंडलग्गं' त्ति।

1 > J तेणेयस्स, P व for चंद, J om. दंसणस्स, P साहइ, J om. त्ति, J राइणो, J जम्मइलं. 2 > P भगवतीए, P अवरूढो P किंपि, P सुविमणयपसत्थ. 3 > J देवत्तेणं P देवत्तण, P तुह दइया, J जुज्जए. 4 > J दिसेज्ज, P एसा उण, P चेयं, J मियंक P मियंका, J ट्ठिया. 5 > P -उत्तस्स, P मणहरा, P होहिइ त्ति, J writes त्ति twice, P चेव. 6 > P om. एस, P संभारिज्जइ, P कंपि for किंचि. 7 > P कहासु, P राईवावारो. 8 > P चेव, P अहयवरं. 9 > J परियड्डमाण. 11 > J सत्थस्स य दाण, P वरा for परा, P समुहा, J साधुअणस्स. 12 > J पाणिअणस्स, J om. त्ति. 13 > P दोहलो, J सुंदरीय. 14 > P संपत्तदो°, °ब्भइय, P -यसरा, P सपुरिस. 15 > J तहा for महा, J कह. 16 > J जहा (for जस) corrected as मह, J तीय, J J °वंदुगण्डभले P पंडगंडयरे।. 17 > P om. °य, J मउआइं P समउयाइं. 18 > P अत्तणो, P भूनिय for ऊणिस. 19 > P आऊरमाण, P हे देवी, P जलइ-. 20 > P फलट्ठवणं व कयं सामाणिज्जंत. 21 > P सुहो, P भग्गंमि, P होरासुद्धसुहासु उब्भत्था-णंमि गहसत्थे. 22 > P -फुरंत, P रुहिरो अह कु°, J has three letters after कुमारो ॥ which look like the Nos. ६ and ३ with छ in the middle. 23 > P बहु for के, P पवट्टंति. 24 > J °त्थलच्छलंतकिरण, J मणिमईवय. 25 > P निवहे, J पुरंदरयत्ते, J -भुअण, P कंति-, J चित्तयम्मस्स संकुला. 26 > P रंछोलि, P जयसिरी, J ससिणामऊहोहामियमाहप्प।. 27 > P -लएसु for तलेसु, J om. णलिणीदलेसु, J मुणालिया इव्व, J भूई. 28 > J हंसीए, P मऊयं, P किन्न for किं ता ण, J तु सुरदेहा for दे, J has a marginal note in a later hand: किं न विरयसि रक्खापुट्टलियाओ। पाठांतरं. 29 > J °क्खयणंदावत्ता, J om. सयवत्त, P वियारण for वियड, P पदुयं for पडु.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

§ ४५) इय जा विलासिणियणो पडिहारीए णिउंजए ठाणे। वद्धाविया सरहसं उद्धावइ ता णरिंदस्स ॥ कहं।

रहसुद्दाम-विसंठुल-गमणं गमण-खलंत-सुणेउर-चलणं।
चलण-चलंतुत्तावल-हियं हियउत्तावल-फुरिय-णियंबं ॥
फुरिय-णियंब-सुवज्जिर-रसणं रसण-विलग्ग-पओहर-सिचयं।
सिचय-पडंत-सुलज्जिर-वयणं वयण-मियंकुज्जोइय-भवणं ॥ ति। अवि य।

वित्थय-णियंब-गुरु-भार-मंथरुव्वहण-खेय-सुढिया वि। उद्धावइ णरवइणो विलया वद्धाविया एक्का ॥

ताव य सा संपत्ता णरवइणो वास-भवणं। भणियं च णाए 'देव, पियं पियं णिवेएमि सामिणो, सुहं-सुहेणं वो देवी संपयं कुमारं पसूय' त्ति। ताव य राइणो पियंवइया-वयण-परितोस-रस-वस-रोमंच-कंचुओव्वहण-समूससंत-भुयासु सविसेसं गाढइए वि समोयारिऊण सव्वं चेव विलएइ पियंवइयाए कडय-कंठय-कुंडलाइए आहरण-णिहाए। समाइट्ठं च राइणा वद्धावणयं। आएसाणंतरं च,

पवण-पहय-मीसणुव्वेल्ल-संचल्ल-मच्छ-च्छडावाय-भिज्जंत-गंभीर-धीरुच्छलंताणुसद्दाभिपूरंत-लोयंत-संखुद्ध-कीलाल-णाहाणुघोसं समुद्धाइयं तूर-सद्दं [तहा]।
पवर-विलय-हत्थ-पम्मुक्क-गंधुद्धुरुद्धुव्वमाणुल्लसंतेण कप्पूर-पूरुच्छलंतेण कत्थूरिया-रेणु-राएण संछण्ण-सूरं दिसा-मंडलं तक्खणं चेय तं रेहिरं राइणो मंदिरं।
मय-रस-वस-घुम्मिरं णच्चमाणाण पीण-त्थणाभोग-घोलंत-हाराण तुट्टंत-मुत्तावली-तार-मुत्ता-गलंतेक्क-बिंदु व्व लायण्णयं णच्चमाणाण विक्खिप्पए कामिणीणं तहा।
सरहस-विलया-चलंतावडंतेहिँ माणिक्क-सारंतराणेउरेहिं तहा तार-तारं रणंतेहिँ कंची-कलावेहिँ ता किंकिणी-ताल-माला-रवारद्ध-गंधव्व-पूरंत-सद्दं दिसा-मंडलं ॥ अवि य।

णच्चंत-विलासिणि-सोहणयं मल्हंत-सुखुज्जय-हासणयं। गिज्जंत-सुसुंदर-मणहरयं इय जायं तं वद्धावणयं ॥

§ ४६) ताव य खग्गग्ग-धारा-जलण-जालावली-होमियाइं णीसेस-डड्ढाइं वइरि-वंस-सुहुमंकुराइं ति। तेण णत्थि बंधणं। तह वि विमुक्काइं पंजर-सुय-सारिया-सउण-सत्थाइं। दिज्जंति मय-जलोयलिय-बहल-परिमलायड्ढियालि-गुंजंत-कोव-गुलेगुलेंताओ वियरंत-महामायंग-मंडलीओ। पणामिज्जंति सजल-जलय-गंभीर-सद्दं हेसा-रवहे हसंतीओ इव दरिय-वर-तुरय-वंदुर-मालाओ। उवणिज्जंति महासामंताणं गुरु-चक्क-णेमी-घणघणाराव-बहिरिय-दिसिवहाओ हारि-रहवर-णियर-पत्थारीओ। समप्पिज्जंति सेवयाणं महापडिहारेहिं गाम-णयर-खेड-कब्बड-पट्टणाणं पत्तलाओ त्ति। अवि य।

सो णत्थि जस्स दिज्जइ लक्खं ऊणं च दिज्जए णेय। तह णरवइणा दिण्णं जह गेण्हंत च्चिय ण जाया ॥

तह वि दिज्जंति महामणि-णिहाए, विक्खिप्पिज्जंति थोर-मुत्ताहले, अवमण्णिज्जंति दुगुल्लय-जुवलए, उज्झिज्जंति रल्लय-कवलए, फालिज्जंति कोमले णेत्त-पट्टए, णियंसिज्जंति चित्त-पडिणिहाए, पक्खिविज्जंति सुवण्ण-चारिमे, पसाहिज्जंति कडय-कोंडले, अवहत्थिज्जंति कणय-कलधोय-थाल-संकरे, कणच्छिज्जंति वाम-लोयणद्धंत-कडच्छिएहिं दीणार-णाणा-रूवय-करंबय-कयारुक्केर त्ति। अवि य।

तं णत्थि जं ण दिज्जइ णूणमभावो ण लब्भए जं च। ण य दिज्जइ ण य लब्भइ एक्कं चिय णवर दुव्वयणं ॥
णच्चइ णायर-लोओ हीरइ उवरिल्लयं सहरिसाहिं। अण्णोण्ण-बद्ध-रायं रायंगणयम्मि विलयाहिं ॥

---

1 > J विलासिणीअणो P विलासिणी य लेणो, P पडिहारी निउंजए ट्ठाणे, P उट्ठावइ ता, J om. कहं. 2 > P °सुद्धाम P चरण. 3 > J हिययुत्ता°. 4 > P -सलज्जिर. 5 > P °कुज्जोविय-. 6 > P वद्दावइ. 7 > P य संपत्ता स नर°, J पियं only once, P om. वो. 8 > J पसूअत्तत्ति, J राइणा, J °तोसवसरसरो°, P भुयासविसेसमाढइए वि समोआयरि°. 9 > J विलइए J om. कडयकंठयकुंडलाइए, P -निवहाए. 11 > P भीसण्णूवेल्लसंचसमच्छुत्थडा, P भिज्जंतभंगीरवीरु°. 13 > J विलया-, J पमुक्क P -पमुक, J °माणलसंतेण, J om. कत्थूरियारेणुराएण. 14 > P रेहिरे राइणा. 15 > J मयवसरस, P नच्चमाणेण, P °भोयघोलत्त. 16 > J विक्खिप्पइ. 17 > P वडन्ता for चलंता, P सारंतरं, J किंकिणि, P ताला. 19 > P -सुसुंदरमणहरयं. 20 > P खग्गयधारा-, P -भोमियाइं, P -दढाइं, P °कुराइ वि।. 21 > P तहा वि विमुक्कइं पंजरि-, P जलोआलिय, P कोवगुणेंताउ विय मत्तमहा. 22 > J जलयर-, P सद्दहंसारवहसंतीओ. 23 > P उवणिज्जंत. 24 > P पडिहारिहिं गामानयर. 25 > P जहा, J गेण्हंते. 26 > P विक्खिप्पंति, P -कंबलय. 27 > J कोमल, P नेत्तवट्टए तियसिज्जंति, P चित्तवडि°, P सुवण्णवारिमे. 28 > P कणयकणाहायथालसकारे, J °रुक्केरोत्ति P -कयारुक्केवंति. 30 > P जिज्जइ, J °मभावे, J एकच्चिय, P नवरि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ४७) जावय एस वुत्तंतो तावय राइणा सद्दाविओ सिद्धत्थ-संवच्छरिओ। आएसाणंतरं च समागओ धवल-दुवलय-णियंसणो वंदिय-सिद्धत्थ-रोयणा-रेहिर-मुह-मियंको हरियाल-हरिय-(हरियाले फुडं दुव्वंकुरं)पवित्तुत्तमंगो। आगंतूण य उण्णामिय-दाहिण-करयलेणं सत्थिकारिओ राया, वद्धाविओ पुत्त-जम्मब्भुदएणं। उवविट्ठो य परियणोवणीए आसणे त्ति। तओ भणियं राइणा 'भो भो महासंवच्छर, साह कुमारस्स जम्म-णक्खत्तस्स गहाणं दिट्ठि' त्ति। संवच्छरेण भणियं 'देव, जहाणवेसि त्ति, णिसुणेसु संवच्छरो एस आणंदो, उदू सरय-समओ, मासो कत्तिओ, तिही विजया, वारो बुहस्स, णक्खत्तं हत्थो, रासी कण्णो, सुकम्मो जोगो, सोम-गह-णिरिक्खियं लग्गं, उच्च-ट्ठाण-ट्ठिया सव्वे वि गहा। उड्ड-मुहा होरा, एक्कारस-ठाण-ट्ठिया सुहयरा पाव-गहय त्ति। अवि य।

गह-रासि-गुणम्मि सुहे जाओ एयम्मि एरिसे जेण। होइ कुमारो चक्की चक्कि-समो वा य राय' त्ति॥

§ ४८) अह णरवइणा भणियं 'अहो महासंवच्छर, काओ रासीओ के वा रासि-गुण त्ति, जं भणसि एरिसे रासि-गुणम्मि जाओ कुमारो' त्ति। भणियं संवच्छरेणं 'देव, रासीओ तं जहा। मेसो विसो मिहुणो कक्कडो सिंघो कण्णो तुलो विच्छिओ धणू मगरो कुंभो मीणो त्ति। एयाओ रासीओ, संपयं एयासु जायस्स गुणे पुरिसस्स महिलाए वा णिसामेह। मेसस्स ता वदंते।

णिच्चं जो रोग-भागी णरवइ-सयणे पूइओ चक्खु-लोलो, धम्मत्थे उज्जमंतो सहियण-वलिओ ऊरु-जंघो कयण्णू।
सूरो जो चंड-कम्मे पुणरवि मउओ वल्लहो कामिणीणं, जेट्ठो सो भाउयाणं जल-णिचय-महा-भीरुओ मेस-जाओ॥
अट्ठारस-पणुवीसो चुक्को सो कह वि मरइ सय-वरिसो। अंगार-चोद्दसीए कित्तिय तह अड्ड-रत्तम्मि॥ १॥
भोगी अत्थस्स दाया पिहुल-गल-महा-गंड-वासो सुमित्तो, दक्खो सच्चो सुई जो सललिय-गमणो दुट्ठ-पुत्तो कलत्तो।
तेयंसी भिच्च-जुत्तो पर-जुवइ-महाराग-रत्तो गुरूणं, गंडे खंधे व्व चिण्हं कुजण-जण-पिओ कंठ-रोगी विसम्मि॥
चुक्को चउप्पयाओ पणुवीसो मरइ सो सयं पत्तो। मग्गसिर-पहर-सेसे बुह-रोहिणि पुण्ण-खेत्तम्मि॥ २॥
मिट्ठण्णू चक्खु-लोलो पडिवयण-सहो मेहुणासत्त-चित्तो, कारुण्णो कण्ण-वाही जण-णयण-हरो मज्झिमो कित्ति-भागी।
गंधव्वे णट्ट-जुत्तो जुवइ-जण-कए भट्ठ-छाओ धणड्डो, गोरो जो दीहरंगो गुण-सय-कलिओ मेहुणे रासि-जाओ॥
जइ किर जलस्स चुक्कइ सोलस-वरिसो मरेज्ज सो ऽसीती। पोसे मिगसिर-वारे बुहम्मि जलणे जले वा वि॥ ३॥
रोगी सीसे सुबुद्धी धण-कणग-जुओ कज्ज-सारो कयण्णू, सूरो धम्मेण जुत्तो विबुह-गुरु-जणे भत्तिमंतो किसंगो।
जो बालो दुक्ख-भागी पवसण-मणसो भिच्च-कज्जेहिं जुत्तो, खिप्पं-कोवी सधम्मो उदय-ससि-समो मित्तवंतो चउत्थे॥
जइ कह वि वीसओ सो चुक्कइ पडणस्स जियइ सो ऽसीती। पोसे मिगसिर-सुक्के राईए अड्ड-जामम्मि॥ ४॥
माणं-माणी सुखंती गुरुयण-विणओ मज्ज-मास-प्पिओ य, देसादेसं भमंतो वसण-परिगओ सीय-भीरू किवालू।
खिप्पं-कोवी सुपुत्तो जणणि-जण-पिओ पायडो सव्वलोए, सिंघे जाओ मणूसो सुर-गिरि-सरिसो णाण-विज्जाण पुज्जो॥
जइ जीवइ पंचासो मरइ वसंते सएण वरिसाणं। णक्खत्तम्मि मघासुं सणिच्छरे पुण्ण-खेत्तम्मि॥ ५॥
धम्मिट्ठो वुड्ढ-भावे धण-कणग-जुओ सव्व-लोयस्स इट्ठो, गंधव्वे कव्व-णट्टे वसण-परिगओ कामिणी-चित्त-चोरो।
दाया दक्खो कवी जो पमय-जण-कए छाय-भंसेण जुत्तो, इट्ठो देवाण पुज्जो पवसण-मणसो कण्ण-जाओ मणूसो॥
सत्थ-जलाणं चुक्को तीसइ वरिसो जिएज्ज सो ऽसीती। मूलेणं वइसाहे बुह-चित्ता-पुण्ण-खेत्तम्मि॥ ६॥

तओ देव, एरिस-गुण-जुत्तो रायउत्तो। एसो ण केणइ पाव-गहेण णिरिक्खिओ, तेण जहा-भणियं रासि-गुण-वित्थरं पावइ। जेण सुह-गुण-णिरिक्खिओ तेण अच्चंत-सुह-फलोदओ भवइ' त्ति।

---

1) P om. सिद्धत्थ, J om. च, J आगओ P समागतो, P धोयधवलंसुय- for धवल etc. 2) J वंदिया, P सिद्धरोवणा, J हरिताल हरिआले फुडं दुव्वंकुरं। अविउत्त° P हरियालहरियहरियालिया फुडं कुरु पवित्तुत्त°, P पन्नामिय. 3) J °वणिए. 4) P जहाणवसे त्ति. 5) P संवत्सरो, P उऊ, P कत्तिगोत्तिही, P बुद्धवारो for बुहस्स. 6) J सुकम्मो, P निरक्खियं, P सव्वगहा, P -ट्ठाण. 7) P -ग्गह त्ति. 8) J चक्कीसमो जहा राय, P महाराय for राय. 10) P संवत्सरेण. 11) P विच्छिओ, P त्ति। अवि य। एसो उ रासीओ 12) P जा for ता. 13) P धम्मत्थि, J सहिणयवलिओ P महिणवचलिओ. 14) J कम्मो, P जो for सो. 15) J ॥ छ ॥ P ॥ १ ॥. 16) P लद्ध for दुट्ठ. 17) P तेजस्सी, P जुयइ, J कण्णे खंदे व for गंडे etc., P विंध for चिण्हं. 19) P मिट्ठुण्णो, J मेहुणासत्तु-, P नयणधरो. 20) J कूए for जुत्तो, P भट्ट-, JP च्छाओ. 21) P जम्मस्स, JP सो सीतो (अवग्रह is put here because J puts it once below), P मियसिर. 22) P कणय-, P भत्तिवंतो. 23) P निच्चं for खिप्पं, P सुधम्मो. 24) P किर जम्मस्स for कह वि वीसओ सो, P पडमेस्स, P सो सीति।, P पत्तो for पोसे. 25) J मांस, P परिगतो. 26) P सिंहो जाओ, P गिरिसुर-, P नामधेज्जण for णाणविज्जाण. 27) J वसंतोसतेण. 29) J दक्खेक्कविज्जो, J च्छायब्भंसेण, P मणुस्सो. 30) J जएज्ज सोऽसीती (note J uses अवग्रह here) P सोसीई, J वेसाहे, P बुहचित्ता. 31) P गुणो for गुणजुत्तो, J om. रायउत्तो, P निरक्खिओ, J य for जहा, J रासी. 32) P निरक्खिओ, P हवउ for भवइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ४९) भणियं च राइणा 'अह केण एस एरिसो गुण-वित्थरो भणिओ' त्ति । भणियं च संवच्छरिएण 'देव, आसि किर को वि सव्वण्णू भगवं दिव्व-णाणी, तेण एयं सुसिस्साणं साहियं तेहि वि अण्णेसिं ताव, जाव वंगाल-रिसिणो । संपयं तेहिं एयं भणियं । तेण एयं वंगाल-जायगं भण्णइ' त्ति । भणियं च राइणा 'सुंदरं एयं, ता सेसं पि उदाहरणं णिसुणेमि' त्ति । संवच्छरेण भणियं 'देव णिसुणेसु ।

अत्थाणे रोसमंतो फुड-वियड-वओ सोय-दुक्खाण भागी, पत्तट्ठो जो वणिज्जे णिय-घर-महिला सूर-चित्तो विरागी ।
देवाणं भत्तिमंतो चिर-सुहिय-महा-मित्त-वच्छल्ल-जुत्तो, णिच्च-क्खंती-पवासो चल-णयण-धणो बाल-भावे तुलम्मि ॥
कुड्डाईणं चुक्को वीसइ-वरिसे मरेज्ज सो सीती । जेट्ठे सिव-खेत्तम्मि य अणुराहंगार-दियहम्मि ॥ ७ ॥

कूरो जो पिंगलच्छो पर-घर-मणसो साहसा साहियत्थो, सूरो माणेण जुत्तो सयण-जणवए णिट्ठुरो चोर-चित्तो ।
बालो जो विप्प-पुत्तो जणणि-परिजणे दुट्ठ-चित्तो मणूसो, भागी अत्थस्स जुत्तो पुणरवि विहलो विच्छिए होइ जाओ ॥
अट्ठारस-पणुवीसो जइ चुक्कइ चोर-सत्थ-सप्पाणं । जेट्ठम्मि सिवे खेत्ते अंगारे सत्तरो मरइ ॥ ८ ॥

सूरो जो बुद्धि-जुत्तो जण-णयण-हरो सत्तवंतो य सच्चो, सिप्पी णेउण्णवंतो धण-रयण-धरो सुंदरा तस्स भज्जा ।
माणी चारित्त-जुत्तो सललिय-वयणो छिड्ड-पाओ विहण्णू, तेयस्सी थूल-देहो णिय-कुल-महणो होइ जाओ धणम्मि ॥
पढमट्ठारस-दिवसे चुक्को सो सत्तसत्तरो मरइ । सवणे सावण-मासे अणसणएणं मरइ सुक्के ॥ ९ ॥

सीयालू दंसणीओ जण-जणणि-पिओ दास-भूओ पियाणं, चाई जो पुत्तवंतो पर-विसय-सुही पंडिओ दीह-जीवी ।
मण्णे कोऊहलो जो पर-महिल-रओ लंछिओ गुज्झ-भागे, गेजेसुं जुत्त-चित्तो बहु-सयण-धणो काम-चिंधम्मि जाओ ॥
वीसइ-वरिसो चुक्को सत्तरि-वरिसो मरेज्ज सूलेणं । भद्दवयम्मि य मासे सयभिस-णक्खत्तें ससि-दियहे ॥ १० ॥

दाया दिट्ठीएँ लोलो गय-तुरय-सणो थद्ध-दिट्ठी कयग्घो, आलस्सो अत्थ-भागी करयल-चवलो माण-विज्जाहि जुत्तो ।
पुण्णो साल्लूर-कुच्छी पर-जण-धणदो णिब्भओ णिच्च-कालं, कुंभे जाओ मणूसो अवि पिति-जणणी-त्तिक्कणे सत्तिवंतो ॥
सो चुक्को वग्घाओ अट्ठारसओ जिएज्ज चुलसीतिं । रेवइ अस्सिणिमासे आइच्च-दिणे जले जाइ ॥ ११ ॥

सूरो गंभीर-चेट्ठो अइपडु-वयणो सज्जणाणं पहाणो, पण्णा-बुद्धी-पहाणो चल-चवल-गई कोव-जुद्ध-प्पहाणो ।
गव्वेणं जो पहाणो इयर-जणवयं सेवए णेय चाई, मीणे जाओ मणूसो भवइ सुह-करो बंधु-वग्गस्स णिच्चं ॥ १२ ॥

देव, एए गुणा थिरा, आउ-प्पमाणं पुण काल-भेएणं जं सुयं ति भणियं । तं तिण्णि पल्लाइं, दुवे पल्ले, एक्क पल्लं, पुव्व-कोडीओ, पुव्व-लक्खाइं, वास-कोडीओ, वास-लक्खाइं सहस्साइं सयाइं वा । णियय-कालाणुभावाओ जं जहा भणियाइं तं तहा भवंति । तओ देव, एरिसं एयं वंगाल-रिसी-णिद्दिट्ठं । जइ रासी बलिओ रासी-सामी-गहो तहेव, सव्वं सच्चं । अह एए ण बलिया कूरग्गह-णिरिक्खिया य होंति, ता किंचि सच्चं किंचि मिच्छं' ति ।

§५०) तओ भणियं राइणा 'एवमेयं ण एत्थ संदेहो'त्ति । 'ता वीसमसु संपयं' ति आइट्ठं च राइणा संवच्छरस्स सत्त-सहस्सं रूवयाणं । समुट्ठिओ राया कय-मज्जणो उवविट्ठो आवाणय-भूमी । सज्जिया से विविह-कुसुम-वण्ण-विरयणा आवाणय-भूमी, सज्जियाइं च अहिणव-कंदोट्ट-रेणु-रंजियाइं महु-विसेसाइं, दिण्णाइं च कप्पूर-रेणु-परिसप्पंत-धवलाइं आसव-विसेसाइं, पिज्जंति अहिणव-जाई-कुसुम-सुरहि-परिमलायड्ढियालि-रुयाराव-रुणरुणेंताओ णिब्भर-रसमुक्कंठियाओ सुराओ त्ति । पाऊण य जहिच्छं संलीणो भोयणत्थाणि-मंडवं । तत्थ जहाभिरुइयं भोत्तूण भोयणं उवगओ अत्थाण-मंडवं ति । एवं

1) J पुण for एस, P संवत्सरेण, J om. देव. 2) J कोइ, J भगवान् P भयवं, P सुसीसाणं, P साहितेण अन्नेसिं, P वंगालं. 3) P om. एयं, P वंगाल एयं जायंगं भन्नइ ति, J om. त्ति, P सिसं, J उदाह°. 4) J om. त्ति, P संवत्सरेण. 5) P अत्थोणे, P फुडवयणवचो, J रओ for वओ, P सोग-, P जो सविज्जो. 6) P भत्तिवंतो, P सुहिद-, P निच्चखंती. 7) P कुड्डीदीणं, P वीसतिवरिसो, J सीतो P सीओ, J स for य, P अणुरायंगाए, J °गारा-. 8) J कूरोज्जो, P om. घर, J सातिभत्थो. 9) P पिय for परि, P मणुस्सो, P जुत्तो for पुत्तो, P विच्छिए. 10) J अट्ठारप°, P जेट्ठंमि व सिवखेत्ते. 11) P -धणो for धरो. 12) J छिद्द (ड्ड?) पातो, P -पावो, P होंति जाओ धणुंमि. 13) P -दियहे, J मरति, P सुक्को. 14) P कुजणजणपिओ, J चाइत्तो पुत्त°, P परवसय. 15) P मन्ने कोऊहले, J कोतूहलो, P भावे for भागे J बहुजणसुधणो होइ मगरम्मि ।, P कामविंधेमि. 16) P वीसति,P सत्तरिवासो, J णक्खत्त P तक्खत्ते, P दियहो. 17) J दिट्ठीय लोलो, P -णसणो धड्डदिट्ठी. 18) P धणओ, P मणुस्सो, J जणणो णिक्खिवो सत्तवंतो. 19) P धम्माओ for वग्घाओ, P रेवति, P °दिण जले जाई. 20) P सूरी, J गंभीरकोट्ठो, P अतिपडुवणो सेज्ज°. 21) JP सेवते, P मणुस्सो, P सुहयरो. 22) P एते, J थिता for थिरा, P सतंति for सुयं ति, P दुच्चे for दुवे, J दुवे पल्लं पुव्वं. 23) P om. वासकोडीओ, J सहस्सा सयाइं, P तं for जं. 24) P भवणं ति, P om. एयं वंगालरिसी, P रासिचलिओ रासीसामीसगहो, J तदेव P ता देव, P ते for एए. 25) J कूरगह, P निरक्खिया, J om. य. 26) P तओ राइणा भणियं, P om. एवमेयं. 27) J सयसहस्सं, P विरयणी. 28) P om. च, J परिअप्पंत P धरप्पंत, P आसविसेसाई पिज्जइ. 29) P कुमयसुरहिपरि°, J om. रुया P -रूया, J रुणुरु°, J णिब्भरुक्कठियाओ. 30) P पाऊणयं, P अल्लीणो for संलीणो, J भोअणत्थाणमण्डवं ति एवं च P °मडवंमि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च विविह-खज्ज-पेज्ज-दाण-विण्णाण-परियणालाव-कहासुं अइक्कंतो सो दियहो । एएणं चेय कमेणं सेस-दिवसा वि ताव जाव संपुण्णो बारसो दियहो । तत्थ राइणा सद्दाविया वास-महारिसि-समा महा-बंभणा । संपूइऊण भणियं राइणा 'एयस्स बालस्स किं णामं कीरउ'त्ति । तेहिं भणियं 'जं चेय महाराइणो रोयइ'त्ति । भणियं राइणा 'जइ एवं ता णिसामेह दियाइणो ।

कुवलयमाला चंदो दोण्णि वि दिट्ठाइँ जेण सुमिणम्मि । णामं पि होउ तम्हा कुवलयचंदो कुमारस्स ॥
जेण य सिरीएँ दिण्णो गुरु-साहस-तोसियाएँ रहसेणं । सिरिदत्तो त्ति य तम्हा णामं बिइयं पि से होउ ॥'

§५१) एवं च कय-णामधेओ पंच-धाई-परिक्खित्तो अणेय-णरवइ-विलया-सहस्स-धवल-लोयण-माला-कुमुय-वण-संड-मुद्धड-मियंकओ विय वड्ढिउं पयत्तो । अवि य ।

हत्थाहत्थिं घेप्पइ पिज्जइ णयणेहिँ वसइ हिययम्मि । अमयमइओ व्व घडिओ एसो णूणं पयावइणा ॥
अह ललियक्खर-महुरं जं जं कुमरस्स णीइ वयणाओ । सुकइ-भणियं व लोए तं तं चिय जाइ वित्थारं ॥ किं बहुणा,
चंकमिएहिं तह पुलइएहिँ हसिएहिँ तस्स ललिएहिं । चरिएहिँ राय-लोओ गयं पि कालं ण लक्खेइ ॥
अणुदियह-वड्ढमाणो लायण्णोयर-समुद्द-णीसंदो । अट्ठ-कलो व्व मियंको अह जाओ अट्ठ-वरिसो सो ॥
अह तिहि-करणम्मि सुहे णक्खत्ते सुंदरम्मि लग्गम्मि । सिय-चंदण-वासहरो लेहायरियस्स उवणीओ ॥
जत्थ ण दीसइ सूरो ण य चंदो णेय परियणो सयलो । तम्मि पएसम्मि कयं विज्जा-घरयं कुमारस्स ॥
लेहायरिय-सहाओ तम्मि कुमारो कलाण गहणट्ठा । बारस वरिसाइँ ठिओ अदीसमाणो गुरुयणेणं ॥
अह बारसम्मि वरिसे गहिय-कलो सयल-सत्थ-णिम्माओ । उक्कंठियस्स पिउणो णीहरिओ देव-घराओ ॥

तो कय-मज्जणोवयारो धोव-धवल-हंसगब्भ-णियंसणो सिय-चंदण-चच्चिय-सरीरो सुपसत्थ-सुमण-माला-धरो णियय-वेस-सरिस-पसाहण-प्पसाहिय-गुरु-जण-मग्गालग्गो आगओ पिउणो चलण-जुयल-समीवं कुमारो । उयसप्पिऊण य गरुय-सिणेह-णिब्भरुक्कंठ-पूरमाण-हियय-भर-गरुइएण विय कओ से राइणो पणामो । तओ राइणा वि असरिस-णेह-चिर-विरह-वियंभमाण-बाह-जल-णिब्भर-णयण-जुवलएणं पसारिय-दाहिण-बाहु-दंडेण संलत्तं 'उवज्झाय, किं अभिगओ कला-कलाओ कुमारेण ण व' त्ति । भणियं च उवज्झाएण 'देव, फुडं भणिमो, ण गहिओ कला-कलावो कुमारेणं' ति । तओ राइणा गुरु-वज्ज-पहार-णिद्दउद्दलिय-कुंभत्थलेण विय दिसा-कुंजरेण आउड्डिय-थोर-दीहर-करेण भणियं 'कीस ण गहिओ' । उवज्झाएण भणियं 'देव, मा विसायं गेण्ह, साहिमो जहा ण गहिओ' ।

§५२) 'आसि किर एत्थ पढम-पत्थिवो कय-धम्माहम्म-ववत्थायारो भयवं पयावई । तेण किर भरह-णरिंद-प्पमुहस्स णियय-पुत्त-सयस्स साहिओ एस कला-कलावो । तेहिं वि महा-मईहिं गहिओ । तओ तेहि वि अण्णोण्ण-णियय-पुत्त-णत्तुयाणं । एवं च देव, कमेण णरणाह-सहस्सेसु रायपुत्त-सएसु राय-कुमारिया-णिवहेसु य महामईसु संचरमाणो पारंपरेण एस कला-कलावो एयं कालंतरमुवागओ । तओ अणुदियहं हाणीए कालस्स ण कोइ तारिसो कला-कलाव-गहण-धारण-समत्थो एत्थ पुहइ-मंडले अत्थि त्ति । तओ देव, असरणेण पलीण-कुल-वंस-णाहेण दुस्सील-महिला-सत्थेण विय कला-कलावेणं चेव संपयं सयंवरं गहिओ कुमारो त्ति । तेण णाह, भणिमो ण गहिओ कुमारेणं कला-कलावो' त्ति । तओ सविसेस-जाय-पहरिसेण गहिओ कुमारो राइणा, ठविओ य उच्छंगे, उवऊढो य णेह-णिब्भरं, चुंबिओ उत्तिमंगे, पुच्छिओ य 'पुत्त कुमार, कुसलं तुह सरीरस्स' । तओ सविणय-पणउत्तमंगेण 'देवस्स चलण-दंसणेणं संपयं कुसलं' ति संलत्तं कुमारेणं ति । भणियं च राइणा 'उवज्झाय, काओ पुण कलाओ गहियाओ कुमारेणं' ति । उवज्झाएण भणियं 'देव, णिसुणिज्जंतु । तं जहा ।

1 > P दिवसो एतेणं चेव, P सेसदियहा. 2 > P महरिसि, P महावंतणा, P भणिया. 3 > P चेव सं महा°, J एयं for एवं 5 > P कुवलयमालाचंदो कुमारस्स for the entire verse कुवलयमाला etc., J नामंमि. 6 > P जेणे य सिरीय, P रहसेणा, सिरिपुत्तो वि य, P बीयं for बिइयं. 7 > P किय for कय, P धाइ, P आणेइनरवई. 9 > P हत्थाहत्थाहत्थं, P अमइम°, P पयावइणो. 10 > P वयणीओ, P च for व, P वित्थरमुवेइ for जाइ वित्थारं. 11 > J चंक्कमिएहिं P चक्कमि°. 12 > P वड्ढमाणो लायण्णोदर. 13 > J वासधरो. 14 > परियणे सयणे, P विज्जाहरहं. 15 > P वासाइं for वरिसाइं, J ट्ठिओ, P असीसमाणो. 16 > P बारसमे, P कला. 17 > P धोयधवल, P गब्भिणि°, J सुपसत्थो, P -समणमालाहरो, J णियपवेस, P सरियस-. 18 > J पसाहणसमाहियगुरूणमग्गा°, J om. जुयल, J कुमारो त्ति उवस°, P om. य, P गुरुय, J णिब्भरकंठ P निब्भरुक्कंठा. 19 > P हिययभगएण त्ति य. 20 > P संलत्तम्, P गहिओ for अभिगओ, J कुमारेण त्ति य ।. 21 > J कलाओ, P पहरनिद्दलियकुंभ°. 22 > J °रेण विय आउट्टियं, P om. थोर, P दीह for दीहर, P कीस न कहिओ. 23 > J जह for जहा, J गहिआओ. 24 > J पत्थिओ P पढमत्थिवो, P धम्म for हम्म, J °हम्मधवत्थारो, P पमुहस्स तियस्स साहिओ. 25 > P तेहिं मितेहिंमिमहामइगहिओ, P तेहिं मि अन्नाणनियय. 26 > P नरनाह ससोसुरायउत्त, P महामइसु, J परंपरेण, J एक for एस. 27 > J एवं for एयं J °मुवगओ, P न कोइ, P धारणा-. 28 > P दुसील, P कलावे य संपयं. 30 > J om. उवरूढो य. 31 > J -पणतुत्त°, P सविणसंपणामिओ उत्तिमंगेण, P कुमारेण त्ति. 32 > P उण for पुण, J णिसुणेज्ज तुमं for णिसुणिज्जंतु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलेक्खं णट्टं जोइसं च गणियं गुणा य रयणाणं । वागरणं वेय-सुई गंधव्वं गंध-जुत्ती य ॥
संखं जोगो वारिस-गुणा य होरा य हेउ-सत्थं च । छंदं वित्ति-णिरुत्तं सुमिणय-सत्थं सउण-जाणं ॥
आउज्जाणं तुरयाणं लक्खणं लक्खणं च हत्थीणं । वत्थुं वट्टा खेड्डं गुहागयं इंदजालं च ॥
दंत-कयं तंब-कयं लेप्पय-कम्माइँ चेय विणिओगो । कव्वं पत्त-च्छेज्जं फुल्ल-विही अल्ल-कम्मं च ॥
धाउव्वाओ अक्खाइया य तंताइँ पुप्फ-सयडी य । अक्खर-समय-णिघंटो रामायण-भारहाइं च ॥
कालायस-कम्मं सेक्क-णिण्णओ तह सुवण्ण-कम्मं च । चित्त-कला-जुत्तीओ जूयं जंत-प्पओगो य ॥
वाणिज्जं मालाइत्तणं च खारो य वत्थ-कम्मं च । आलंकारिय-कम्मं उयणिसयं पण्णयर-तंतं ॥
सव्वे णाडय-जोगा कहा-णिबंधं फुडं धणुव्वेओ । देसीओ सूव-सत्थं आरुहयं लोग-वत्ता य ॥
ओसोवणि तालुग्घाडणी य मायाओ मूल-कम्मं च । लावय-कुक्कुड-जुद्धं सयणासण-संविहाणाइं ॥
काले दाणं दक्खिण्णया य मउयत्तणं महुरया य । बाहत्तरिं कलाओ वसंति समयं कुमारम्मि ॥'

§५३) तओ भणियं राइणा 'उवज्झाय, एताणं कलाणं मज्झे कयरा पुण कला विसेसओ रायउत्तेण गहिया परिणया वा, कहिं वा अहिओ अब्भासो' त्ति । भणियं च उवज्झाएण 'देव,

जं जं दावेइ कलं हेलाएँ कह वि मंथरं राय-सुओ । णज्जइ तहिं तहिं चिय अहिययरं एस णिम्माओ ॥ तह वि
सोहग्ग-पढम-इंधं सयल-कला-कामिणीण मण-दइयं । सुपुरिस-सहाव-सुलहं दक्खिण्णं सिक्खियं पढमं ॥ तओ देव,
णियय-कुल-माण-पिसुणं गुरु-कुल-वासस्स पायडं कज्जं । लच्छीएँ महावासं दुइयं विणयं अदुइयं से ॥
जाणइ काले दाउं जाणइ महुरत्तणं मउयया य । एक्कं णवरि ण-याणइ वेसं पि हु अप्पियं भणिउं ॥
सव्व-कला-पत्तट्ठे एक्को दोसो णरिंद-कुमरम्मि । पणइयण-अमित्ताण य दाउं पि ण-याणए पट्ठिं ॥'

ताव य राइणा 'सुंदरं सुंदरं' ति भणमाणेण जलहर-पलय-काल-वियलंत-कुवलय-दल-ललिय-लायण्णा वियारिया रायउत्त-देहम्मि दिट्ठी । दिट्ठो य अणवरय-वेणु-वायणोग्ग-लग्गंत-लंछणा-लंछिओ महासेल-सिहरद्धंतो विय तुंगो वामो अंस-सिहरो त्ति । तहा अणुदियह-बाहु-जुद्ध-जोग्गा समय-भुया-समप्फोडण-किण-कढिणियं दिट्ठं लच्छीय मंदिरं पिव वच्छयलं, तहा अणवरय-धणुजंत-कड्ढणा-कढिण-गुण-घाय-कक्कसं वामं भुया-फलिहं, दाहिणं पि विविह-असिधेणु-अविसेस-बंधण-जोग्गालक्खिज्जमाण-किणंकियं पेच्छइ त्ति । तहा अणवरय-तुरय-ताडण-तरलियाओ दीह-कढिणाओ पुलएइ अंगुलीओ त्ति । अणेय-णट्ट-करणंगहार-चलण-कोमलाइं सेसयाइं पि से पलोएइ अंगयाइं । सिंगार-वीर-बीहच्छ-करुण-हास-रस-सूययाइं णयणाणि वि से णिज्झाइयाइं, अणेय-सत्थत्थ-वित्थर-हेऊदाहरण-जुत्ति-सावट्ठंभं वयणयं ति । अवि य ।

दीसंति कला कोसल-जोग्गा संजणिय-लंछणं पयडं । पेच्छइ मुणाल-मउयं रायंगं अह कुमारस्स ॥

§ ५४) दट्ठूण य णेह-णिब्भरं च भणियं राइणा 'कुमार पुत्त, तुह चिर-विओग-दुब्बलंगी जणणी तुह दंसणासा-विमुज्झंत-संधारिय-हियया दढं संतप्पइ । ता पेच्छसु तं गंतूणं' ति । एवं च भणिय-मेत्ते राइणा 'जहाणवेसि' त्ति भणमाणो समुट्ठिओ राइणो उच्छंगाओ, पयट्टो जणणीए भवणं । ताव य पहावियाओ बब्बर-वावण-खुज्जा-वडभियाओ देवीए वद्धावियाओ त्ति । ताव य कमेण संपत्तो जणणीए भवणं । दिट्ठा य णेण जणणी । तीए वि चिर-विओग-दंसणाणंद-बाह-भर-पप्पुयच्छीए दिट्ठो । संमुहं उयसप्पिऊण य णिवडिओ से राय-तणओ जणणीए चलण-जुयलए । तीए वि अवयासिओ सुह-सिणेह-णिब्भर-हिययाए, परिउंबिओ उत्तमंगे, कयाइं सेस-कोउयाइं । उयारिऊण य पलोट्टिओ से पाय-मूले दहि-फल-

1) P चूट्टं for णट्टं, P om. च, P वायरणं वेयसुती. 2) P संखजोगो वरिसणगुणा, P वित्ती, P समणसत्थं. 3) J आउजाणं तुरअलक्खणं, P वत्थुवड्ढासड्ढुं. 4) J दंतजालं दंतकयं P दंतकम्मं तंवकम्मं, J °कयं लेप्पयं लेप्पयक°, J °च्छेज्जं अस्स (ल्लं) कम्मं च फुल्लविहिं धाउव्वायं, P फुल्लव्विही. 5) P अक्खाइयाइं तं°, P पुप्फुसडी, J पय for समय. 6) P सुवण्णकरणं च, J -पओगो P प्पओगा. 7) J अल्ल for वत्थ, P °कारियं-, J पल्लग for पण्णयर. 8) J णागर for णाडय, P नाडयजोगो कहानिवद्धं, J लोअवत्ता P लोगजुत्ता. 9) J ओसोवणी तालुग्घाडणी, P तालुग्घाडणा य पासाओ, P कुक्कड. 10) P बाहत्तरी. 11) P om. एताणं, J om. पुण, P रायपुत्तेण. 12) P च for वा, P अब्बासो. 13) P हेलाय विकह व, P नेज्जइ. 14) P तदो for तओ. 15) P नियकुलकम्माण, P लच्छीय, J सहावासं, J अइदुइअं. 16) P मडक्खरत्तणं समउ°, P नवर न जाणइ, P वेसिं पि, P अप्पिउं. 17) J पत्तट्ठो, J पणिईयण P पणई पणमित्ताण, P दाउं चिय नयण पट्ठिं. 18) P om. ति, J लायण्ण. 19) P वायणलग्गंतलंछण, P वासो for वामो. 20) J जुज्झजोग्गो, P समलुया समप्फोडणंकेण, J मंदिरयं, J वच्छलयं. 21) P कड्ढिणा, P °ग्घायं, J वामभुआदलिहं, P भुयप्फलिहं, J असिधेणुं अविसेसं, P पवेस for अविसेस. 22) J तदा for तहा, P मुखताडण, J वलिअउ for तरलियाओ, P दीहर for दीह, J कढिणीओ, P पुलइए, P नट्टकरणमहावहारलक्खण. 23) P पि सेसयाइं से, J पुलएइ, P अंगाइ, P बीभत्स, P सूइयाइं, P वि सेस निज्झा°. 24) P सत्थरत्थ-, J जुत्तीवयणं अत्ति, J om. अवि य. 25) P -सुइयं रायां अंगं कुमा°. 26) P नेय for णेह, J णिब्भरं भणियं च, P विरहविउलियं for चिरविओग. 27) P एवं भणियमेत्तो. 28) P ताविय, P वामणयखुज्जा. 29) P विओय. 30) P भरहपणुयच्छीए, J पप्फुयच्छीए, P समुहं, P om. य, P वियवयासिया, J अइ for सुह. 31) P परिचुंबिओ उत्तिमंगे, J से for सेस, P om. य, J फलक्खय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्खय-णियरो। तओ कयासेस-मंगलो परिसेस-माइ-जणस्स जहारिहोवयार-कय-विणय-पणामो णिवेसिओ जणणीए णिय-उच्छंगे। भणिओ य 'पुत्त, दढ-वज्ज-सिलिंका-णिम्मवियं पिव तुह हियय सुपुरिस-सहाव-सरिसं, ता दीहाउओ होहि'। 'माऊणं सईणं रिसीणं गाईणं देवाणं बंभणाणं च पभावेणं पिउणो य अणुहरसु' त्ति भणिऊणं अहिणंदिओ माइ-जणेणं तु।

§ ५५) ताव य समागओ पडिहारो णरवइणो सयासाओ। आगंतूण य पायवडणुट्ठिएणं विण्णत्तं महा-पडिहारेणं 'कुमार, तुमं राया आणवेइ जहा किर संगाम-समय-धावण-वहण-खलण-चलण-पडिहत्थ-जोग्गाणिमित्तं थोवं-थोवेसु चेय दियहेसु णाणा-तुरंगमा आवाहिज्जंति, ता कुमारो वि आगच्छउ, जेण समं चेव वाहियालीए णिग्गच्छामो' त्ति। तओ 'जं आणवेइ ताओ' त्ति भणमाणेण पेसिया कुवलय-दल-दीहरा दिट्ठी जणणीए वयण-कमलम्मि। तओ भणियं च से जणणीए। 'पुत्त, जहा मेहावीओ आणवेइ तहा कीरउ' त्ति भणमाणीए विसज्जिओ, उवागओ राइणो सयासं। भणियं च राइणा। 'भो भो महासवइ, उवट्ठवेह तुरंगे। तत्थ गरुलवाहणं देसु महिंदकुमारहो, रायहंसं समप्पेह वोप्परायहो, रायसुयं सूरसेणहो, ससं पुणं देवरायहो, भंगुरं रणसाहसहो, हूणं सीलाइच्चहो, चंचलं चारुदत्तहो, चवलं बलिरायहो, पवणं च भीमहो, सेसे सेसाणं उवट्ठवेह तुरए रायउत्ताणं, महं पि पवणावत्तं तुरंगमं देसु त्ति। अवि य

कणयमय-घडिय-खलिणं रयण-विणिम्मविय-चारु-पल्लाणं। तुरियं तुरंगमं देह कुमारस्स उयहिकल्लोलं ॥'

ताव य आणत्ताणंतरं उवट्ठविओ कुमारस्स तुरंगमो। जो य केरिसओ। वाउ-सरिसओ, गमणेक्क-दिण्ण-माणसो। मणु-जइसओ, खण-संपत्त-दूर-देसंतरो। जुवइ-सहावु-जइसओ, अइणिरह-चंचलो। खल-संगइ-जइसओ, अथिरो। चोरु-जइसओ, णिच्चुव्विग्गो त्ति। अवि य खलु-णरिंद-जइसेण णिच्चुत्थद्धेण कण्ण-जुवलुल्लएणं, पिप्पल-किसलय-समेण चलचलंतेण सिर-चमरेण, महामुरुक्खु-जइसियए खमखमेंतियए गीवए, परिहव-कुविय-महामुणि-जइसएण फुरुफुरंतेण णासउडेण, महादहु-जइसएण गंभीरावत्त-मंडिएण उरत्थलेण, विमणि-मग्गु-जइसएण माणप्पमाण-जुत्तेण मुहेण सुपुरिस-बुद्धि-जइसियए थिर-विसालए पट्ठियए, वेस-महिल-पेम्म-समेण अणवट्ठिएण चलण-चउक्केणं। अवि य

जलहि-तरंग व्व चलं विज्जुलया-विलसियं व दुलक्खं। गज्जिय-हेसा-रावं अह तुरयं पेच्छए पुरओ ॥

§ ५६) दट्ठूण य तुरंगमं भणियं राइणा 'कुमार, किं तए णज्जए तुरय-लक्खणं'। ताहे भणियं कुमारेणं 'गुरु-चलण-सुस्सूसा-फलं किंचि णज्जइ' त्ति। भणियं च राइणा 'कइवय तुरयाणं जाईओ त्ति, किं वा माणं, किं वा लक्खणं, अह अवलक्खणं' ति। कुमारेण भणियं 'देव, णिसुणेसु। तुरयाणं ताव अट्ठारस जाईओ। तं जहा। माला हायणा कलया खसा कक्कसा टंका टंकणा सारीरा सहजाणा हूणा सेंधवा चित्तचला चंचला पारा पारावया हंसा हंसगमणा वत्थव्वय त्ति एत्तियाओ चेव जाईओ। एयाणं जं पुण वोल्लाहा कयाहा सेराहाइणो तं वण्ण-लंछण-विसेसेण भण्णइ। अवि य।

आसस्स पुण पमाणं पुरिसंगुल-णिम्मियं तु जं भणियं। उक्किट्ठवयस्स पुरा रिसीहिँ किर लक्खणण्णूहिं ॥
बत्तीस अंगुलाइं मुहं णिडालं तु होइ तेरसयं। तस्स सिरं केसं तो य होइ अट्ठट्ठ विच्छिण्णं ॥
चउवीस अंगुलाइं उरो हयस्स भणिओ पमाणेणं। असीति से उस्सेहो परिहं पुण तिउणियं बेंति ॥ तओ देव,
एयप्पमाण-जुत्ता जे तुरया होंति सव्व-जाईया। ते राईणं रज्जं करेंति लाहं तु इयरस्स ॥ अण्णं च।
रंधे उवरंधम्मि य आवत्ता णूण होंति चत्तारि। दो य पमाण-णिडाले उरे सिरे होंति दो दो य ॥
दस णियमेणं एए तुरयाणं देव होंति आवत्ता। एत्तो ऊणहिया वा सुहासुह-करा विणिद्दिट्ठा ॥

1 > J परिसमागयस्स जणस्स जहारिहोवयारा-, P जणणीए उत्संगे. 2 > J वज्जले for वज्ज, P हिययवयं सपुरिस, J दीहाउयं होइ. 3 > P सतीणं, J माइजणेण। ताव. 4 > P °रो त्ति नर°, J णरवइसया°. 5 > P om. तुमं, P महाराया for राया, P om. वहण, J om. चलण, P चचलण परिहत्थ, P थोयथोएसुं, बिइय for चेय. 6 > P वाहयालीए, P तहाओ जहाणवेइ. 7 > J °वेत्ति ताओ त्ति, J णिवेसिया for पेसिया, P om दल. 8 > J जहाणवेइ तहा, J उवगओ, P राइणा सगासं. 9 > P अवट्ठवेह तुरंगमे, P रायहंसु, J om. रायसुयं. 10 > J सेसं for ससं, P रणसाहसहूण, J सिला°, P चारुयत्तहो, P om. च. 11 > J सेसो सेसाण उवट्ठवेहा, P पवणवेत्तुं. 12 > P खलणं, P °गमं तु देय कुमरस्स य उअहि°. 13 > J उवट्ठिओ, P जो ताव सो केरिसो बाओ जइसओ. 14 > J सहाउ, P om. अइ, P संगो for संगइ, P अथिरचोरो. 15 > P om. अवि य, J जइसेणा P जइसएण, P निच्चत्थद्धएणं, P जुवलल°, P किसलजइसएणं सीसेण चलचलं°, P om. सिरचमरेण. 16 > P महामुरुक्खुरुक्खुजइसिआए खमंखमंतीए गीवाए, J जइसिए, P पुरुपुरंतेण, P महद्दहो. 17 > P विवणि, P जुत्तेण अंगेण सु पुरिस°, P जइसियाए थिरविलासीए पट्ठीए. 18 > P महिला, P पेमं for पेम्म, P चउक्कएण. 19 > P चं for व्व, P हसारावं, J तुरिओ for पुरओ. 20 > P नज्जइ किंचि तुरंगलक्खणं। तओ भणियं, J om. चलण. 21 > P सुस्सूसाराहणफलं, P कइ for कइवय, P om. त्ति, P om. वा before लक्खणं, P om. अह. 22 > P च त्ति for ति, P सुणेसु, J तुरियाणं, P अट्ठारसु-, J साला for माला, P भाइला कलाया for हायणा etc. 23 > P साहजाणा, P सैंधवा, P चित्ता°, P पेरा पेरावत्ता. 24 > P om. एत्ति, P वत्तलंधणं, J भणंति for भण्णइ. 25 > J सुण for पुण, P °गुणनिम्मयं, P कर for किर. 26 > P तेरसया, P स for य. 27 > P ऊरो, P य for प°, P अस्सीति, J om. से, P om. तओ देव. 28 > J एयपम्माण, P जाईओ, 29 > P व for य, J has a marginal note प्रधान उपरितनोष्ठः possibly for the word आवत्ता, J उरं. 30 > J एते, P आवत्तो, J अहिया वा P ऊणहिया य वसुहा.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

पोट्टम्मि लोयणाण य मज्झे घोणाएँ जस्स आवत्तो । रूसइ अवस्स सामी अकारणे बंधु-वग्गो य ॥
भुय-णयण-मज्झयारे आवत्तो होइ जस्स तुरयस्स । सामी घोडय-पालो य तस्स भत्तं ण भजेइ ॥
णासाएँ पास-लग्गो आवत्तो होइ जस्स तुरयस्स । सो सामियं च णिहणइ खलिय-प्पडिए ण संदेहो ॥
जाणूसु जस्स दोसु वि आवत्ता दो फुडा तुरंगस्स । खलिय-पडिएण णिहणइ सो भत्तारं रण-मुहम्मि ॥
कण्णेसु जस्स दोसु वि सिप्पीओ होंति तह णुलोमाओ । सो सामियस्स महिलं दूमेइ ण एत्थ संदेहो ॥

ता देव, एते असुह-लक्खणा, संपयं सुह-लक्खणेमे णिसामेहि त्ति ।

संघाडएसु जइ तिण्णिसु ट्ठिया रोमया णिडालम्मि । जण्णेहिँ तस्स पहु दक्खिणेहिँ णिच्चं जयइ सामी ॥
उवरंधाणं उवरिं आवत्तो जस्स होइ तुरयस्स । वड्डेइ कोट्ठयारं धणं च पइणो ण संदेहो ॥
बाहूसु जस्स दोसु वि आवत्ता दो फुडा तुरंगस्स । मंडेइ सामियं भूसणेहिँ सो मेहली तुरओ ॥'

§ ५७) जाव य एयं एत्तियं आस-लक्खणं उदाहरइ कुमारो कुवलयचंदो ताव राइणा भणियं । 'कुमार, पुणो वि सत्था सुणिहामो' त्ति भणमाणो आरूढो पवणावत्ते तुरंगमे राया । कुमारो वि तम्मि चेव समुद्दकल्लोले वलग्गो तुरंगमे । सेसा वि महा-सामंता केइत्थ तुरंगमेसुं, केइत्थ रहवरेसुं, केइत्थ गयवरेसुं, के एत्थ वेसरेसुं, अण्णे करहेसुं, अवरे णरेसुं, अवरे जंपाणेसुं, अवरे जंगएसुं, अण्णे झोलियासुं ति । अवि य ।

हय-गय-रह-जोहेहिँ य बहु-जाण-सहस्स-वाहणाइण्णं । रायंगणं विरायइ रुंदं पि हु मडह-संचारं ॥

तओ उद्दंड-पुंडरीय-सोहिओ चलंत-सिय-चारु-चामरागय-हंस-सणाहो हर-हार-संख-फेण-धवल-णियंसण-सलिल-समोत्थओ सरय-समय-सरवरो विय पयट्टो राया गंतुं । तस्स मग्गाणुलग्गो कुमार-कुवलयचंदो वि । तम्मि पयट्टे सेसं पि उच्चाइयं बलं । तओ णिद्दय-पय-णिक्खेव-चमढणा-भीया णराणं णरा, खराणं खरा, वेसराणं वेसरा, तुरयाणं तुरया, करहाणं करहा, रहवराणं रहवरा, कुंजराणं कुंजरा वि पहाविया भीया णियय-हत्थारोहाणं ति । ताव य केरिसं च तं दीसिउं पयत्तं बलं । अवि य ।

तुंग-महागय-सेलं चलमाण-महातुरंग-पवणिल्लं । णज्जइ उप्पायम्मि व पुहईए मंडलं चलियं ॥
तओ फुरंत-खग्गयं चलंत-कुंजरिल्लयं । सुतुंग-चारु-चिंधयं फुडं तुरंगमिल्लयं ॥
सुसेय-छत्त-संकुलं खलंत-संदणिल्लयं । तुडंत-हार-कंठयं पहावियं ति तं बलं ॥
ओसरह देह पंथं अह रे कह णिट्ठुरो सि मा तूर । कुप्पिहिइ मज्झ राया देह पसाएण मग्गं मे ॥
जा-जाहि तूर पसरसु पयट्ट वच्चाहि अह करी पत्तो । उच्छलिय-कलयल-रवं मग्गालग्गं बलं चलियं ॥

तओ एवं च रह-गय-णर-तुरय-सहस्स-संकुलं कमेण पत्तो राय-मग्गं । ताव य महाणई-पूरो विय उत्थरिउं पयत्तो महा-राय-मग्ग-रच्छाओ त्ति ।

अह णयरीएँ कलयलो परियट्टइ जिय समुद्द-णिग्घोसो । कुवलयचंद-कुमारे चंदम्मि व णीहरंतम्मि ॥
णीहरइ किर कुमारो जो जत्तो सुणइ केवलं वयणं । सो तत्तो च्चिय धावइ जहुज्जयं गो-गहे व्व जणो ॥
अइकोउय-रहस-भरंत-हियय-परियलिय-लज्ज-भय-पसरो । अह धाइ दंसण-मणो णायर-कुल-बालिया-सत्थो ॥

ताव य कुमारो संपत्तो धवलट्टालय-सय-सोहियं णयरी-मज्झुद्देसं रायंगणाओ त्ति ।

§ ५८) ताव य को वुत्तंतो णायरिया-जणस्स वट्टिउं पयत्तो ।

एक्का णियंब-गरुई गंतुं ण चएइ दार-देसम्मि । सहियायणस्स रूसइ पढमं च्चिय दार-पत्तस्स ॥
अण्णा धावंति च्चिय गरुय-थणाहार-भोय-सुढियंगी । णीससइ च्चिय णवरं पिययम-गुरु-विरह-तविय व्व ॥

---

1 › J सुआवत्ता P होइ आवत्तो !, P आकरणे. 2 › P भुययाणे मज्झयाए, P °त्तो जस्स होइ तु°, P वालो for पालो, J सज्जेइ P अज्जेंति. 3 › J सासाय P णाहीए पासग्गो, P °त्तो जस्स होइ तु°, P तो for सो, P om. च, P निहणए. 4 › J चडिएण. 5 › P वि सिप्पिओ होंति आणुलो°, P दूसेइ. 6 › P सुहलक्खणा मेति निसामेह त्ति. 7 › P सिंघाड°, J ट्ठिता, P ता जाण for जण्णेहिं, J बहु for पहु, P जयति. 8 › J उवरंगाणं, P आवत्ता, P होंति, P वड्डइ कोट्ठायारं, P पइण्णो. 9 › P यस्स, J दुडा for फुडा, P मंडेहिं, P भूसणाहिं, J तुरगो. 10 › P एयं च एत्तियं, P उआहरइ कुमार, P पुणो वीसत्था. 11 › P समारूढो for आरूढो, P य for चेव. 12 › P om. केइत्थ रहवरेसुं, J om. केइत्थ गयवरेसुं के एत्थ वेसरेसुं. 13 › P झोलियासु त्ति. 14 › P वाहणाइन्नं, P वियारइ. 15 › P पुंडरिय, P चामररायहंस, J समत्थओ. 16 › J तम्मि पयट्टो, P सेसं पसेसं पि. 17 › P निद्धय, P om. णराणं, J वेगसराणं वेगसरा. 18 › P य for भीया णियय°, P हत्थि for हत्था. 19 › P उप्पायं पिव पुहईए. 20 › P खग्गग्गयं, J om. चलंतकुंजरिल्लयं. 21 › J सदिणिल्लयं P सं gap, J तुट्टंत P उट्टंत, J पहावियं तं बलं ति P चलंति for बलंति. 22 › P कुप्पिही. 23 › J रवो for रवं, J तओ (on the margin) for बलं 24 › P संपत्तं for पत्तो, J महाणइपहो. 25 › P मग्गच्छाउ 26 › P कुमारो. 27 › P जुत्तो for जत्तो. 28 › P रहभरंति, J इय for अह. 29 › P सयलसाहिअं नयरिमज्झुद्देसं. 30 › P वड्डिउपयट्टो. 31 › P न एक्का नियंबगरुयी तुंगं न, P रूसइ. 32 › P धावंत, P थणाभायभोय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एका लज्जाए धरं आणिज्जइ कोउएण दारद्धं । अंदोलइ व्व बाला गयागएहिं जण-समक्खं ॥
अण्णा गुरूण पुरओ हियएणं चेय णिग्गया बाहिं । लेप्पमइय व्व जाया भणिया वि ण जंपए किंचि ॥
गुरुयण-वंचण-तुरियं रच्छा-मुह-पुलयणे य तल्लिच्छं । एकाए णयण-जुयलं सुत्ताइद्धं व घोलेइ ॥
गमण-रय-खुडिय-हारा थणवट्ट-लुढंत-मोत्तिय-पयारा । अण्णा विमुंचमाणी धावइ लायण्ण-बिंदु व्व ॥
पसरिय-गईए गलिया चलणालग्गा रसंत-मणि-रसणा । मा मा अगणिय-लज्जे कीय वि सहिय व्व वारेइ ॥
वियलिय-कडि-सुत्तय-चलण-देस-परिखलिय-गमण-मग्गिल्ला । करिणि व्व सहइ अण्णा कणय-महा-संकलं-दुइया ॥
इय जा तूरंति दढं णायर-कुल-बालियाओ हियएणं । ता णयरि-राय-मग्गं संपत्तो कुवलयमियंको ॥

ताव य का वि रच्छा-मुहम्मि संठिया, का वि दार-देसद्धए, का वि गवक्खएसुं, अण्णा मालएसुं, अण्णा चोंपालएसुं, अण्णा रायंगणेसुं, अण्णा णिज्जूहएसुं, अण्णा वेइयासुं, अण्णा कओलवालीसुं, अण्णा हम्मिय-तलेसुं, अण्णा भवण-सिहरेसुं, अण्णा धयग्गेसुं ति । अवि य ।

जत्तो पसरइ दिट्ठी णज्जइ पुर-सुंदरीण वयणेहिं । उप्पाउग्गम-ससि-बिंब-संकुलं दीसए भुयणं ॥

तओ के उण आलावा सुव्विउं पयत्ता । 'हला हला, किं णोल्लेसि इमेणं दिसा-करि-कुंभ-विब्भमेणं ममं पओहर-भारेणं' । 'सहि, दे आमुंच सुपट्ठि-देसम्मि तडुविय-सिहंडि-कलाव-सच्छहं केस-भारं' । 'अइ सुत्थिए, मणयं वालेसु कणय-कवाड-संपुड-वियडं णियंबयडं । पसीय दे ता अंतरं, किं तुह चेय एक्कीए कोउयं' । 'अइ अहव्वे, उक्खुडियाए हारलयाए दारुणे मा मोडियाइं कणय-तल-वत्ताइं' । 'अइ वज्ज मे मुसुमूरियं कुंडलं' । 'हा अवडिय-णिग्घिणे, जियउ कुमारो । अलज्जिए, संजमेसु थण-उत्तरिज्जं' ति ।

अह सो एसो च्चिय पुरओ मग्गेण होइ सो च्चेय । कत्थ व ण एस पत्तो णूणं एसो च्चिय कुमारो ॥
इय जा महिला-लोओ जंपइ अवरोप्परं तु तुरमाणो । ता सिरिदत्तो पत्तो जुवईणं दिट्ठि-देसम्मि ॥ ताव य,
एक्कम्मि अणेयाओ सलोणए तम्मि दीह-धवलाओ । सरियाओ सायरम्मि व समयं पडियाओ दिट्ठीओ ॥

§ ५९) तओ केरिसाहिं उण दिट्ठीहिं पुलइओ कुमार-कुवलयचंदो जुवईयणेणं ।

णिद्दय-सुरय-समागम-राई-परिजग्गणा-किलंताहिं । वियसंत-पाडलापाडलाहिँ काणं पि सवियारं ॥
दइयाणुराय-पसरिय-गंडूसासव-मएण मत्ताहिं । रत्तुप्पल-दल-रत्ताहिं पुलइओ काण वि विलक्खं ॥
पिययम-विदिण्ण-वासय-खंडण-संताव-गलिय-बाहाहिं । पउम-दलायंबिर-तंबिराहिँ काणं पि दीणाहिं ॥
साहीण-दइय-संगम-वियार-विगलंत-सामलंगीहिं । णीलुप्पल-मालाहिँ व ललियं विलयाण काणं पि ॥
ईसि-पसरंत-कोउय-मयण-रसासाय-घुम्ममाणाहिं । णव-वियसिय-चंदुज्जय-दल-मालाहिँ व काणं पि ॥
रहस-वलंतुव्वेल्लिर-धवल-विलोलाहिँ पम्हलिल्लाहिं । णव-वियसिय-कुंद-समप्पभाहिँ सामाण जुवईणं ॥
दिर्लिदिलियाण पुणो पसरियमासण्ण-कोउहल्लाहिं । कसणोयय-तारय-सच्छहाहिँ ताविच्छ-सरिसाहिं ॥

एवं च णाणा-विह-वण्ण-कुसुम-विसेस-विणिम्मविय-मालावलीहिं व भगवं अइट्ठउव्वो विव विरुव-विरूविय-रूवो ओमालिओ दिट्ठि-मालाहिं कुमारो । अवि य ।

णीलुप्पल-मालियाहिँ कमल-दलेहिँ सणेहयं वियसिय-सिय-कुसुमएहिँ अहिणव-पाडल-सोहयं ।
रत्तुप्पल-णिवहएहिँ तह कुंद-कुसुम-सोहयं अच्चियओ णयणएहिँ कुसुमेहिँ व सो मयणओ ॥
अंगम्मि सो पएसो णत्थि कुमारस्स बाल-मेत्तो वि । भुमया-धणु-प्पमुक्का णयण-सरा जम्मि णो पडिया ॥

तओ कुमार-कुवलयचंदं उद्दिसिय किं भाणिउं पयत्तो जुवइ-जणो । एकाए भणियं 'हला हला, रूवेण णज्जइ अणंगो कुमारो । अण्णाए भणियं 'मा विलव मुद्धे,

---

1 › P लज्जाइ, P दारंतं for दारद्धं. 2 › P गुरुयण, P चेव. 3 › P पुलयणेण तच्छिल्ला, P नमणजलं. 4 › J (ग) मणिरयण, P रइ for रय, J °वट्ट-, P लुटंत, P लावण्ण. 6 › P विहडिय, P °खलियतुरियगमणिल्ला, P करणि, P कणयमयं संखलं. 8 › P मुहं संठिया, P दारमदेसद्धंतएसु, P आलएसुं. 9 › P रायासण्णेसु, P कवोलवासीसुं, P अमियपलेसुं for हम्मिय°, P om. अण्णा before भवण-. 10 › P धयग्गएसु त्ति. 11 › J सुर for पुर, P दीसइ भुवणं. 12 › P om. तओ, J विभवेणं, P om. ममं. 13 › J देयासुं च, P पट्ठदेसंमि, P सुथिए, P कवाडसंपुडं नियंबयडं. 14 › P तादे for दे ता, P णय for चेय, P उक्खडिया हारलया दारुणो मोडियाइं कणयवत्ताइं. 15 › P वज्जा मे, P हा हा यवडिया. 16 › J संजमसु थणुत्तरिज्जयं ति. 17 › P चेय for च्चेय. 18 › P om. तु, P तुरयमाणो, J जुवईयण. 19 › P धवलो. 20 › J पुण पुलइओ दिट्ठीहिं, J °यणेण । अवि य ।. 21 › P परिजग्गिणा किलंतीहिं, J कोवं for काणं. 22 › P मयण for मएण, J कोवि व for काण वि. 23 › P विइत्त-, J -गंडण, J -खलियवासाहिं, J काहिं for काणं. 24 › P -विलयंतसामलत्ताहिं, J विलयाहिं काहिं पि ।. 25 › P वियलियचंदुज्जल-, J काहिं for काणं. 26 › P पम्हलीलाहिं, J समप्पहाहिं. 27 › J दिलिंदियाण, P पसरियमासंतु कोउयहिल्लाहिं, P कसिणोअइतरेय, P तापिच्छ. 28 › P अदिट्ठपुव्वो, P विरूवविरूवो. 30 › J णिलुप्पलमालीआहिं, P विइसिय, P कुसुयएहिं. 32 › P य देसो for पएसो, J -पम्मुक्का. 33 › P जुवईयणो, J मए कीए भणियं. 34 › P लव for विलव.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होज्ज अणंगो जइ पहरइ दीण-जुवइ-सत्थम्मि । एसो पुण वइरि-गइंद-दंत-मुसुमूरणं कुणइ' ॥
अण्णेकाए भणियं 'सहि, पेच्छ पेच्छ णज्जइ वच्छत्थलाभोगेण णारायणो' त्ति । अण्णाए भणियं ।
'सहि होज्ज फुडं णारायणो त्ति जइ गवल-कज्जल-सवण्णो । एसो पुण तविय-सुवण्ण-सच्छहो विहडए तेण ॥'
अण्णेकाए भणियं 'कंतीए णज्जइ हला, पुण्णिमायंदो' त्ति । अण्णाए भणियं ।
'हुँ हुँ वड्डइ मियंको सामलि जइ झिज्जइ जइ य मय-कलंकिल्लो । एसो उण सयल-कलंक-वज्जिओ सहइ संपुण्णो ॥'
अण्णेकाए भणियं 'सत्तीए पुरंदरो य णज्जइ' । अण्णेकाए भणियं ।
'ओ पु पुरंदरो च्चिय जइ अच्छि-सहस्स-संकुलो होज्ज । एसो उण कक्खड-वलिय-पीण-दढ-सललिय-सरीरो ॥'
अण्णेकाए भणियं 'अंगेहिं तिणयणो णज्जइ' । अण्णेकाए भणियं 'हला हला, मा एवं अलियं पलवह ।
होज्ज हरेण समाणो जइ जुवई-घडिय-हीण-वामद्धो । एसो उण सोहइ सयल-पुण्ण-चउरंस-संठाणो ॥'
अण्णेकाए भणियं 'सहि, णज्जइ दित्तीए सूरो' त्ति । अण्णाए भणियं ।
'सहि सच्चं चिय सूरो चंडो जइ होज्ज तविय-सुवणयलो । एसो उण जण-मण-णयण-दिहियरो अमयमइओ व्व ॥'
अण्णाए भणियं 'हला हला, णज्जइ मुद्धत्तणेण सामिकुमारो' । अण्णाए भणियं ।
'सच्चं होज्ज कुमारो जइ ता बहु-खंड-संघडिय-देहो । रूवाणुरूव-रूवो एसो उण कक्कसो सहइ ॥'
इय किंचि-मेत्त-घडिओ देवाणं वि कह वि जाव मुद्धाहिं । विह्डिज्जइ ता बहु-सिक्खियाहिँ जुवईहिँ सिरिणिलओ ॥'

§ ६०) ताव य कुमार-कुवलयचंद-रूव-जोव्वण-विलास-लायण्ण-हय-हिययाओ किं किं काउमाढत्ताओ णायर-तरुण-जुवाणीओ त्ति ।

एक्का वायइ वीणं अवरा वच्चीसयं मणं छिवइ । अण्णा गायइ महुरं अण्णा गाहुल्लियं पढइ ॥
देइ मुरवम्मि पहरं अण्णा उण तिसरियं छिवइ । वंसं वायइ अण्णा छिवइ मउंदं पुणो तहा अण्णा ॥
उच्चं भासइ अण्णा सद्दावइ सहियणं रुणरुणेइ । हा इ त्ति हसइ अण्णा कोइल-रडियं कुणइ अण्णा ॥
जइ णाम कह वि एसो सइं सोऊण कुवलय-दलच्छो । सहसा विलोल-पम्हल-ललियाइँ णिएइ अच्छीणि ॥
तओ कुमार कुवलयचंदस्स त्ति
जत्तो वियरइ दिट्ठी मंथर-धवला मियंक-लेह व्व । अव्वो वियसंति तहिं जुवईयण-णयण-कुमुयाइं ॥
तओ कुमार-कुवलयचंद-पुलइयाओ कं अवत्थं उवगयाओ णायरियाओ त्ति ।
अंगाइँ वलंति समूससंति तह णीससंति दीहाइं । लज्जंति हसंति पुणो दसणेहिँ दसंति अहराइं ॥
दंसेंति णियंवयडं विलियं पुलएंति ईसि वेवंति । अत्थक्क-कण्ण-कंडुयणाइँ पसरंति अण्णाओ ॥
आलिंगयंति सहियं बालं तह चुंबयंति अण्णाओ । दंसेंति णाहि-देसं सेयं गेण्हंति अवराओ ॥
इय जा सुंदरिय-जणो मयण-महा-मोह-मोहियाहियओ । ताव कमेण कुमारो वोलीणो राय-मग्गाओ ॥ तिं ।
कमेणं संपत्तो विमणि-मग्गं अणेय-दिसा-देस-वणिय-णाणाविह-पणिय-पसारयाबद्ध-कोलाहलं । तं पि वोलेऊण पत्तो वेगेण च्चेव वाहियालिं । अवि य ।
सखलिय-आस-प्पसरं समुज्जुयं णिव्विलीय-परिसुद्धं । दीहं सज्जण-मेत्ति व्व वाहियालिं पलोएइ ॥
दट्ठूण य वाहियालिं धरियं एक्कम्मि पदेसे सयल-बलं । णीहरिओ पवणावत्त-तुरंगमारूढो राया, समुद्द-कल्लोल-तुरयारूढो कुमारो य । ताव य
धावंति वलंति समुच्छलंति वग्गंति तह णिमज्जंति । पलय-पवणोवहि-समे महि-लंघण-पच्चले तुरए ॥
तओ णाऊण तूरमाणे तुरंगमे पमुक्को राइणा कुमारेण य । णवरि य कह पहाइउं पयत्ता ।
पवणो व्व तुरिय-गमणो सरो व्व दढ-धणुय-जंत-पम्मुक्को । धावइ पवणावत्तो तं जिणइ समुद्दकल्लोलो ॥
तं तारिसं दट्ठूण उद्धाइयं बलम्मि कलयलं ।

1) P होज्जणंगो, P उण. 2) P om. पेच्छ पेच्छ णज्जइ, P सहिच्छत्थलाभोएण नज्जइ णार°. 3) P गवलस्स वण्णो. 4) P पुण्णिमाइंदो. 5) P जय अमय, P सयलं. 6) J om. य. 7) P होज्जा. 8) P नज्जंति, P पलवइ अलियं. 9) JP जुवइ, P एसो पुण. 10) P om. सहि, णज्जइ दित्तीए etc. to सामिकुमारो । अण्णाए भणियं ।. 11) J दीहियरो. 14) P om. वि after देवाणं. 15) P कुवलयचंदो, P om. हय, P om. one किं. 16) P जुवई इत्ति. 17) J वायइ, J अण्णा for अवरा. 18) P मुरयंमि, P अण्णाउ तिसरियं, P छिवइ मुद्दा ।, P om. तहा. 19) P सद्दावेइ, P रुणरुणेति, J ही, हंति. 20) P निमेइ. 22) P रेह for लेह, J जुवइयण. 25) P दंसेइ, J निअंबतडं, P दुलाएंति, J अत्थकण्डकण्डुअणाइं, P कडुयाइं पकरेंति, P अवराओ for अण्णाओ. 26) J अण्णाओ for अवराओ. 27) P जाव सुंदरियणो, J om. मोह, J मोहिय°. 28) P विवणि, P अन्ने यं, P वणिया-, P पणय, J वोलेऊणं, P वेएण, J om. चेव. 30) P अक्खलिय आसपसरं, P मेत्ति वाहयालिं. 31) P om. य, P वाहयालिं, J धारिअं, P पएसे, P सयलंबणनीह°, P कल्लोलयारूढो. 33) J पच्चए. 34) P om. णाऊण, P तुरमाणे, P पहाइयं पयत्तो. 35) J तिरिय for तुरिय, JP पमुक्को. 36) J om. कलयलं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जय जय जयइ कुमारो कुवलयचंदो समुद्दकल्लोले । लच्छि-सहोदर-तुरए आरूढो तियसणाहो व्व ॥

§ ६१) जावय जय-जय-सद्द-गब्भिणं जणो उल्लवइ तावय पेच्छंताणं तक्खणं समुप्पइओ तमाल-दल-सामलं णयणयलं तुरंगमो ।

धावइ उप्पइओ विय उप्पइओ एस सच्चयं तुरओ । एसेस एस वच्चइ दीसइ अद्दंसणं जाओ ॥

इय भाणिरस्स पुरओ जणस्स उच्छलिय-बहल-बोलस्स । अक्खित्तो तुरएणं देवेण व तक्खणं कुमरो ॥

अह णह-लंघण-तुरिओ उद्धावइ दक्खिणं दिसा-भागं । पक्खि-णिवेसिय-चक्की गरुलो इव तक्खणं तुरओ ॥

धावंतस्स य तुरियं अणुधावंति व्व महियले रुक्खा । दीसंति य धरणिधरा ओमंथिय-मल्लय-सरिच्छा ॥

पुरिसा पिपीलिया इव णयराइं ता ण णयर-सरिसाइं । दीसंति य धरणियले सराय-अद्दाय-मेत्ताओ ॥

दीसंति दीहराओ धवलाओ तंस-वंक-वलियाओ । वासुइ-णिम्मोयं पिव महा-णईओ कुमारेणं ॥

तओ एवं च हीरमाणेणं चिंतियं कुमार-कुवलयचंदेण ।

'अव्वो जइ ता तुरओ कीस इमो णहयलम्मि उप्पइओ । अह होज्ज कोइ देवो कीस ण तुरयत्तणं मुयइ ॥

ता जाव णो समुद्दं पावइ एसो रएण हरि-रूवो । असिधेणु-पहर-विहलो जाणिज्जउ ताव को एसो ॥

जइ सच्चं चिय तुरओ पहार-वियलो पडेज्ज महि-पीढे । अह होज्ज को वि अण्णो पहओ पयडेज्ज णिय-रूवं ॥'

एवं च परिचिंतिऊण कुमारेण समुक्खया जम-जीह-सण्णिहा छुरिया । णिवेसिओ य से णिद्दयं कुच्छि-पएसे पहरो कुमारेण । तओ

णिवडंत-रुहिर-णिवहो लुलंत-सिरि-चामरो सिढिल-देहो । गयणयलाओ तुरंगो णिवडइ मुच्छा-णिमीलियच्छो ॥

थोवंतरेण जं चिय ण पावए महियलं सरीरेण । ता पासम्मि कुमारो मच्चु व्व तेण से पडिओ ॥

तुरओ वि णीसहंगो धरणियलं पाविऊण पहरंतो । मुसुमूरियंगमंगो समुज्झिओ णियय-जीएण ॥

तओ तं च तारिसं उज्झिय-जीवियं पिव तुरंगमं पेच्छिऊण चिंतियं कुमारेण ।

'अव्वो विम्हयणीयं जइ ता तुरओ कईं च णह-गमणं । अहवा ण एस तुरओ कीस विवण्णो पहारेण ॥'

§ ६२) तओ जाव एवं विम्हय-खित्त-हियओ चिंतिउं पयत्तो, ताव य णव-पाउस-सजल-जलय-सद्द-गंभीर-धीरो महुरो समुद्धाइओ अदीसमाणस्स कस्स वि सद्दो । 'भो भो, णिम्मल-ससि-वंस-विभूसण कुमार-कुवलयचंद, णिसुणेसु मह वयणं ।

गंतव्वं ते अज्ज वि गाउय-मेत्तं च दक्खिण-दिसाए । तत्थ तए दट्ठव्वं अइट्ठ-पुव्वं च तं किं पि ॥'

इमं च सोऊण चिंतियं कुमार-कुवलयचंदेण । 'अहो, कहं पुण एस को वि णामं गोत्तं च वियाणइ महं ति । अहवा कोइ एस देव्वो अरूवी इह-ट्ठिओ विय सव्वं वियाणइ । दिव्व-णाणिणो किर देवा भवंति' त्ति । भणियं च इमिणा 'पुरओ ते गंतव्वं । तत्थ तए किं पि अदिट्ठ-पुव्वं दट्ठव्वं' ति । ता किं पुण तं अदिट्ठ-पुव्वयं होहि त्ति । दे दक्खिण-दिसाहुत्तो चेय वच्चामि । 'अलंघणीय-वयणा किर देवा रिसिणो य होंति' त्ति चिंतियं च तेण । पुलइया णेण चउरो वि दिसि-विदिसी-विभागा, जाव पेच्छइ अणेय-गिरि-पायव-वल्ली-लया-गुविल-गुम्म-दूसंचारं महा-विंझाडविं ति । जा व कइसिया । पंडव-सेण्ण-जइसिया, अज्जुणालंकिया सुभीम व्व । रण-भूमि-जइसिया, सर-सय-णिरंतरा खग्ग-णिचिय व्व । णिसायरि-जइसिया, भीसण-सिवारावा दव-मसि-मइलंगा व । सिरि-जइसिया, महाणइंद-सणाहा दिव्व-पउमासण व्व । जिणिंद-आण-जइसिया, महब्भय-दूसंचारा सावय-सय-सेविय व्व । परमेसरत्थाणि-मंडलि-जइसिया, रायसुयाहिट्ठिया अणेय-सामंत व्व । महाणयरि-जइसिया, तुंग-सालालंकिय सप्पागार-सिहर-दुलंघ व्व । महा-मसाण-भूमि-जइसिया, मय-सय-संकुला जलंत-

1 > P °कहोलो, P सहोयर. 2 > P जाव जयासह. 4 > P वचइ for धावइ J चेय for एस. 5 > P भाणिरस्स, P इल for बहल, P om. व. 6 > P उउद्धावइ, P भायं, P गरुडो. 7 > P वि for य तु°, J मल्लिय but मंथिय is written on the margin. 8 > P पिवीलिया, J यव for इव, J णरयाइं (corrected as नयराइं on the margin) P नयणाइं, J सराय (इ?) 11 > P नहयलं समुप्पइओ, J कोवि, P दिव्वो for देवो. 12 > P नएण for रएण, J विअलो. 13 > P विहलो, P वीढे, P कोइ. 14 > P जमह for जम, P विवेसिओ सो निद्दयं, P पहारो. 16 > J ललंत सिअचा°, J गयणाओ. 17 > P थोवंतरेण इचिय र. P मच्चु, JP °त्तेण. 18 > P वी for वि, P पहहरत्तो. 19 > P जीयं, P om. पिव, P om. चिंतियं. 20 > J ताओ for ता, J om. तुरओ. 21 > P एव, P repeats पयत्तो. 22 > P अदीणमा°, P om. कस्स, P सद्दा, P वीस for वंस, P निसुणे सुहवयणं. 24 > P तत्थु तए, P अदिट्ठ. 25 > J कुमारेण for कुमार, P एयं for एस, J कोवि for कोइ. 26 > P अरूई रूइट्ठिओ इवे सव्वं, P एवंविहा for देवा. 27 > J om. तए, P पुव्वं for पुव्वयं, J त्ति होहिति त्ति, P दहक्खिणा for दे etc. P विय for चेय. 28 > P अलंघणिय, P देवया for देवा, P य हवंति, P om. णेण, P om. वि, P दिसीविभाया. 29 > P पेच्छइ किर पायवाणेय, P om. गिरिपायव, P गुहिलगुंमदुस्संचारा, P विंझाडवि त्ति, P om. कइसिया. 30 > J सेण्णो, J अज्जुणालंकिय-सुभीमं च P अज्जुणोलं°, P सिरनिरंतर, J णिचिअं च P तिव्वय व्व. 31 > P सिवारावदवदमसिमइलंगव्व, JP सणाह, JP पउमासणं च. 32 > J दूसंचारय P दुस्संचारा, P सा साविया सवियं वा, J सेवियं च, J सामंतं च. 33 > P हेसागारसीहदुलंघं च, J संकुलं च P संकुल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घोराणल ब्व । लंकाउरि-जइसिया, पवय-वंद्र-भ[illegible]त-महासाल-पलास-संकुल व्व त्ति । अवि य कहिंचि मत्त-मायंग-भज्जमाण-चंदण-वण-णिम्महंत-सुरहि-परिमला, कहिंचि घोर-वग्घ-चवेडा-घाय-णिहय-वण-महिस-रुहिरारुणा, कहिंचि दरिय-हरि-णहर-पहर-करि-सिर-णीहरंत-तार-मुत्तावयर-णिरंतर-रेहिरा, कहिंचि पकल-महा-कोल-दाढाभिघाय-[illegible]इज्जंत-मत्त-वण-महिसा, कहिंचि मत्त-महा-महिस-जुज्झंत-गवल-संघट्ट-सद्द-भीसणा, कहिंचि पुलिंद-सुंदरी-वंद्र-समुच्चीयमाण-गुंजाहला, कहिंचि दव-डज्झमाण-वेणु-वण-फुडिय-फुड-मुत्ताहलुज्जला, कहिंचि किराय-णिवहाणुद्दम्ममाण-मय-कुला, कहिंचि पवय-वंद्र-संचरंत-बुक्कार-राव-भीसणा, कहिंचि खर-फरुस-चीरि-विराव-राविया, कहिंचि उद्दंड-तडुविय-सिहंडि-कलाव-रेहिरा, कहिंचि महु-मत्त-मुइय-भमिर-भमर-झंकार-राव-मणहरा, कहिंचि फल-समिद्धि-मुइय-कीर-किलिकिलेंत-सद्द-सुंदरा, कहिंचि वाल-मेत्त-मुज्झंत-हम्ममाण-चमर-चामरि-गणा, कहिंचि उद्दाम-संचरंत-वण-तुरंग-हेसा-रव-गब्भिणा, कहिंचि किराय-डिंभ-हम्ममाण-महु-भामरा, कहिंचि किंणर-मिहुण-संगीय-महुर-गीयायण्णण-रस-वसागय-मिलंत-णिच्चल-ट्ठिय-गाय-गवय-मयउल त्ति । अवि य ।

सललिय-वण-किंकिराया तहा सल्लई-वेणु-हिंताल-तालाउला साल-सज्जुणा-णिंब-वब्बूल-बोरी-कयंबंब-जंबू-महापाडला-
सोग-पुण्णाग-णागाउला ।
कुसुम-भर-विभग्ग-फुल्लाहिँ सालाहिँ सत्तच्छयामोय-मज्जंत-णाणा-विहंगेहिँ सारंग-वंद्रेहिँ कोलाहलुद्दाम-झंकार-णिन्नाय-
माणेहिँ सा चामरी-सेरि-सत्थेहिँ रम्माउला ।
पसरिय-सिरिचंदणामोय-लुद्धालि-झंकार-रावाणुबज्झंत-दप्पुद्धुरं सीह-सावेहिँ हम्मंत-मायंग-कुंभत्थलुच्छल्ल-मुत्ताहलुग्घाय-
पेरंत-गुंजंत-तारेहिँ सा रेहिरा ।
सबर-णियर-सद्द-गद्दब्भ-पूरंत-बोक्कार-बीहच्छ-सारंग-धावंत-वेयाणिलुद्धूय-फुल्लिल्ल-साहीण-साहा-विलग्गावडंतेहिँ फुल्लेहिँ सा
सोहिय, त्ति । अवि य ।
बहु-सावय-सेविय-भीसणयं बहु-रुक्ख-सहस्स-समाउलयं । बहु-सेल-णई-सय-दुग्गमयं इय पेच्छइ तं कुमरो वणयं ॥ त्ति

§ ६३) तं च तारिसं पेच्छंतो महा-भीसणं वणंतरं कुमारो कुवलयचंदो असंभंतो मयवइ-किसोरओ इव जाव थोवंतरं वच्चइ ताव पेच्छइ

खेल्लंति वग्घ-वसहे मुइए कीलंति केसरि-गइंदे । मय-दीविए वि समयं विहरंति असंकिय-पयारे ॥
पेच्छइ य तुरय-महिसे सिंगग्गुल्लिहण-सुह-णिमीलच्छे । कोल-वराहे राहे अवरोप्पर-केलि-कय-हरिसे ॥
हरि-सरहे कीलंते पेच्छइ रण्णं-दुरेह-मज्जारे । अहि-मंगुले य समयं कोसिय-काए य रुक्खग्गे ॥
अण्णोण्ण-विरुद्धाइँ वि इय राय-सुओ समं पलोएइ । वीसंभ-णिब्भर-रसे सयले वण-सावए तत्थ ॥

तओ एवं च एरिसं वुत्तंतं पुलोइऊण चिंतियं कुमार-कुवलयचंदेण । 'अव्वो, किं पि विम्हावणीयं एयं ति । जेण

अण्णोण्ण-विरुद्धाइँ वि जाइँ पढिज्जंति सयल-सत्थेसु । इह ताइँ चिय रइ-संगयाइँ एयं तु अच्छरियं ॥

ता केण उण कारणेण इमं एरिसं ति । अहवा चिंतेमि ताव । हूं, होइ विरुद्धाण वि उप्पाय-काले पेम्मं, पेम्म-परवसाण कलहो त्ति । अहवा ण होइ एसो उप्पाओ, जेण सिणिद्ध-स्सरा अवरोप्परं केलि-मुइया संत-दिसिट्ठाणेसु चिट्ठंति, उप्पायए पुण दित्त-सरा दित्त-ट्ठाण-ट्ठिया य अणवरयं सुइ-विरसं करयरेंति सउण-सावय-गणा । एए पुण एवं ति ; तेण जाणिमो ण उप्पाओ त्ति । ता किं पुण इमं होज्जा । अहवा जाणियं मए । कोइ एत्थ महारिसी महप्पा संणिहिओ परिवसइ । तस्स भगवओ उवसम-प्पभावेण विरुद्धाणं पि पेम्मं अवरोप्परं सउण-सावयाणं जायइ'त्ति । एवं च चिंतयंतो कुमार-कुवलयचंदो जाव वच्चइ थोवंतरं ताव

अइ-णिद्ध-बहल-पत्तल-णीलुव्वेल्लंत-किसलय-सणाहं । पेच्छइ कुवलयचंदो महावडं जलय-वंद्रं व ॥

1) J व for व्व, P चंदु for वंद्र, J संकुलं च. 2) P सुरभि, J हइ for घाय, J om. णिहय. 3) P नियर for णिरंतर, P om. मत्त. 4) P गुंजाफला. 5) P वेणुधण for वेणुवण, P कहिं किराय, P °णुगम्ममाणमयउला. 6) J चिरिविराय, J तडुवि, P तडवियड. 7) P om. भमिर, J दल for फल, P किलिगिलंत. 8) P तुरंगमहिंसारव. 9) P ट्ठियागय. 11) P नव for वण, JP किंकिराय, P माउला for तालाउला, P सज्जुज्जणा, P वब्भूलया-, P कयंबजंबूयहवाडयासोयपुण्णायनायाउला. 13) P विहग, J फुलेहिं, P नच्चंत for मज्जंत, P झंकाराणिन्नायमणिहहो. 14) P सरि for सेरि. 15) P -बुज्झंतदुप्पुद्धरं, J मुत्ताहलुप्पाय, P मुत्ताफलुग्घायाफेरंतकुज्जताराहिं च सा. 16) J om तारेहिं सा. 17) P बोक्काहिं वीभच्छ, J वेताणिलुद्धुअ, J वल्लीलया for फुल्लिल्ल, P विवग्गावडं°, P om. फुल्लेहिं, J सु for सा. 18) P om. अवि य. 19) P सहस्सउ समा°, J om. ति. 20) P कुमारकुव°, P मयमवई किसोरोउविजइ जाव. 22) P खेलंति, P मुइया, P मेयदीवएहिं समयं, P पयारो. 23) P तुरियमहिसो, P °ल्लेहणा, P वराहराहे. 24) P कीलंतो, J दुरेय P दुरेहि, P मंगुसेहि, P om. य. 25) J व for वि, P रायसुयसुयं पलो°. 26) J दयं for एवं, P पुलइऊण, P इमं ति । तेण for एयं etc. 27) J कह for रइ. 28) P हुं. 29) P एरिसो for एसो, J जेण ण, P जेणासनिद्ध°, P ट्ठाणे महप्पा, P om. °सु चिट्ठंति, उप्पायए to एत्थ महारिसी. 32) J भगवत्तो, J सवण for सउण, P जाय त्ति, J एयं for एवं, P विचिंतयंतो. 34) P निद्दता-, P नीलवेल्लंत, J चंदु व्व P चंदं व.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बद्ध-जडा-पब्भारं लंबंत-कलाव-कुंडिया-कलियं । पवण-वस-थरथरंतं तावस-थेरं व वड-रुक्खं ॥
बहु-दिय-कय-कोलाहल-साह-पसाहा-फुरंत-सोहिल्लं । बंभाणं व णियच्छइ पढमं कप्पाण पारोहं ॥

तओ तं च पेच्छिऊण तं च्चेव दिसं चलिओ त्ति अचलिय-चलंत-लोयणो राय-तणओ ।

§ ६४) ता चिंतियं च 'अहो इमो वड-पायवो रमणीओ मम णयण-मणहरो, ता एयं चेय पेच्छामो' । चिंतयंतो संपत्तो वड-पायव-पारोह-समीवं, जाव पेच्छइ

तव-णियम-सोसियंगं तहा वि तेएण पज्जलंतं च । धम्मं व सरूवेणं रूविं पिव उवसमं साहुं ॥

अवि य आवासं पिव लच्छीए, घरं पिव सिरीए, ठाणं पिव कंतीए, आयरं पिव गुणाणं, खाणिं पिव खंतीए, मंदिरं पिव बुद्धीए, आययणं पिव सोम्मयाए, णिकेयं पिव सरूवयाए, हम्मियं पिव दक्खिण्णयाए, घरं पिव तव-सिरीए त्ति । किं बहुणा,

मय-वंकत्तण-रहिए अउव्व-चंदे व्व तम्मि दिट्ठम्मि । चंद-मणियाण व जलं पज्झरइ जियाण कम्म-रयं ॥
जावय कुवलयचंदो णिज्झायइ तं मुणिं पुलइयंगो । ताव बिइयं पि पेच्छइ दिव्वायारं महा-पुरिसं ॥
णिव्वण्णेइ य णं सो तं पुरिसं वाम-पासमल्लीणं । चंदाइरेय-सोम्मं कंतिल्लं दियह-णाहं व ॥
चलणंगुलि-णिम्मल-णह-मऊह-पसरंत-पडिहय-प्पसरो । जस्स मियंको णूणं जाओ लज्जाएँ रमणियरो ॥
ललिउण्णय-णिम्मल-णिक्कलंक-सोहेण चलण-जुयलेण । कुम्मो वि णिजिओ णूण जेण वयणं पि गुप्पेइ ॥
दीहर-थोर-सुकोमल-जंघा-जुयलेण णिज्जिओ वस्सं । सोयइ करिणो वि करो दीहर-सुंकार-ससिएहिं ॥
अइकक्कस-पीण-सुवट्टिएण ओहामिओ णियंबेण । वण-वासं पडिवण्णो इमस्स णूणं मयवई वि ॥
अइपीण-पिहुल-कक्कड-कणय-सिलाभोय-रुहर-वच्छेण । एयस्स विणिज्जिओ हामिएण सामो हरी जाओ ॥
पिहु-दीह-णयण-वंतं फुरंत-दिय-किरण-केसर-सणाहं । दट्ठूण इमस्स मुहं लज्जाएँ व मउलियं कमलं ॥
अइणिद्ध-कसिण-कुंचिय-मणहर-सोहेण केस-भारेण । णूणं विणिज्जिया इव गयणे भमरा विरुंटंति ॥
इय जं जं किंचि वणे सुंदर-रूवं जणम्मि सयलम्मि । अक्खिविऊणं तं चिय सो चिय णूणं विणिम्मविओ ॥

एवं च चिंतयंतेण कुमार-कुवलयचंदेण मुणिणो दाहिण-पासे वियारिया कुवलय-दल-सामला दिट्ठी । जाव य

आवलिय-दीह-लंगूल-रेहिरं तणुय-मज्झ-रमणिज्जं । उद्धुय-केसर-भारं अह सीहं पेच्छए तइयं ॥
तक्खण-गइंद-विद्दविय-कुंभ-णक्खग्ग-लग्ग-मुत्ताहं । भासुर-मुह-कुहरंतर-ललंत-तणु-दीह-जीहालं ॥
भीसण-कराल-सिय-दंत-कंति-करवत्त-कत्तिय-गइंदं । णह-कुलिस-धाय-पच्चल-पल्हत्थिय-मत्त-वण-महिसं ॥
इय पेच्छइ सो सीहं कराल-वयणं सहाव-भीसणयं । तह वि पसंत-मुह-मणं रिसिणो चलण-प्पहावेण ॥

§ ६५) तओ तं च दट्ठूण चिंतियं रायउत्तेण । अहो

धम्मो अत्थो कामो इमिणा रूवेण किं च होज्जाउ । अहवा तिण्ह वि सारं लोयाण इमं समुद्धरियं ॥

ता जारिसं पुण लक्खेमि एयं तं जं भणियं केणइ देव्वेण जहा ।

गंतव्वं ते अज्ज वि गाउय-मेत्तं च दक्खिण-दिसाए । तत्थ तए दट्ठव्वं अदिट्ठ-पुव्वं व तं किं पि ॥

एत्थ य एस को वि महरिसी, दोण्ह वि णरिंद-मइंदाणं मज्झट्ठिओ तव-तेएण दिप्पमाणो साहेंतो विय अत्तणो मुणिंदत्तणं दीसइ । सुव्वइ य सत्थेसु जहा किर देवा महारिसिणो य दिव्व-णाणिणो होंति । ता इमं सयल-तेलोक्क-वंदिय-वंदणिज्जं वंदिय-चलण-जुवलं गंतूण पुच्छिमो अत्तणो अस्सावहरणं । केणाहं अवहरिओ, केण वा कारणेणं, को वा एस तुरंगमो त्ति चिंतयंतो संपत्तो पिहुल-सिलावट्ट-संठियस्स महामुणिणो सयासं । आयरिओ य सजल-जलय-गंभीर-सद्द-संका-उड्डुंड-तंडविय-सिहंडिणा धीर-महुरेणं सरेणं साहुणा 'भो भो ससि-वंस-मुहयंद-तिलय कुमार-कुवलयचंद,

---

1) J -कुलाव, P °थरेंत. 2) J कल for कय, P सीहा for साहपसाहा, J -प्पसाहा, P -सेहलं, P पारोव्वं. 3) J चेय, J तियवलिय for त्ति अचलिय. 4) P om. ता, J णयणमणोरहो, P चिंतयत्तो. 6) P धम्मं रूवसरूवेण रूवं पिव चवसमं-साहु । 7) P ट्ठाणं, P आयरयं, P खाणी विय, J कित्तीए for खंतीए, P मंदरं. 8) P णिक्केवणं पिव. 9) P मयं, P रहियं. 10) J ताव बितियं P ताव य बिइयं, P om. पि. 11) P सोमं. 12) J मउह P मयूर. 13) J णिव्वण for णिम्मल, P कम्मो वि णिव्वउत्तण, P गुत्तेइ. 14) P व्व for वि, P ससिएहिं. 15) P सुवंकिएण. 16) J अइपिहुलपीणकक्कड, P सिलालोय, P वत्थेण, P विज्जिओ हामणाए. 17) P -वत्त, P लज्जाए मउ°. 18) J विरुंटंति P विरुंढंति. 19) P एसो for सो, P नूण निम्मविओ. 20) P चिंतियं तेण, P चंदेणल for दल, P om. य. 21) P नंगूल, J तणूय, J उद्धुअ P अद्धुय, P सीहं अह inter. 22) J मुत्तोहं, P लुलंत. 23) P वत्तिय for कत्तिय, P कुलिय-, P पम्हत्थिय. 24) P पसरंतमणहरं रिसिणा, P -प्पभावेण. 26) J किंच होज्जाओ P किंचि होज्जाएु, P तिण्ण, P सारो, P °द्धरिउं. 27) P एतं for एयं तं. 28) P सुहं for व तं. 29) P महारिसि, P -गइंदाणं, P साहेंतो विअत्तणो. 30) P om. य, P किरि, P महिरिसिणा. 31) P चलणग्गजुयलं, P आसावहरणं, J केण अहं. 32) P om. त्ति, P चिंतियं तो, J om. संपत्तो, P आयासिओ. P om. य, P om. जल. 33) P उद्दंडतड्डविय, J सिहिण्डिणा P विहंडिणा, P कुवलय for कुमार.

सागयं तुह, आगच्छसु' ति। तओ णाम-गोत्त-कित्तण-संभाविय-णाणाइसएण रोमंच-कंचुव्वहण-रेहिरंगेण विणय-पणएण पणमियं णेण सयल-संसार-सहाव-मुणिणो महामुणिणो चलण-जुयलयं ति। भगवया वि सयल-भव-भय-हारिणा सिद्धि-सुह-कारिणा लंभिओ धम्मलाह-महारयणेणं ति। तेण वि दिव्व-पुरिसेण पसारिओ ससंभमं सुर-पायव-किसलय-कोमलो माणिक्क-कडयाभरण-रेहिरो दाहिणो करयलो। तओ राय-सुएणावि पसारिय-भुय-करयलेण गहियं से ससंभमं करयलं, ईसि विणउत्तमंगेण कओ से पणामो। मयवइणा वि दरिय-मत्त-महावण-करि-वियड-गंडयल-गलिय-मय-जलोल्लुणा-णिम्मइंत-बहल-केसर-जडा-कडप्पेण उव्वेल्लमाण-दीह-णंगूलेणं पसंत-कण्ण-जुयलेणं ईसि-मउलियच्छिणा अणुमण्णिओ राय-तणओ। कुमारेण वि हरिस-वियसमाणाए सूइज्जंतंतर-सिणेहाए पुलइओ णिद्ध-धवलाए दिट्ठीए। उवविट्ठो य णाइदूरे मुणिणो चलण-जुवलय-संसिए चंदमणि-सिलायले त्ति। सुहासणत्थो य भणिओ भगवया 'कुमार, तए चिंतियं, पुच्छामि णं एयं मुणिं जहा केणाहं अवहरिओ, किं वा कारणं, को वा एस तुरंगमो त्ति। एयं च तुह सव्वं चेय सवित्थरं साहेमो, अवहिएण होयव्वं' ति। भणियं च सविणयं कुमारेण। 'भयवं, महंतओ चेय पसाओ जं गुरुणा मह हियइच्छियं साहिज्जइ' त्ति भणिऊण कर-यलंगुली-णह-रयण-किरण-जाला-संवलियंत-कयंजली ठिओ रायउत्तो। भगवं पि

अविलंबिओ अचवलो वियार-रहिओ अणुब्भडाडोवो। अह साहिउं पयत्तो भव्वाणं हियय-णिव्ववणं ॥

§ ६६) संसारम्मि अणंते जीवा तं णत्थि जं ण पावेंति। णारय-तिरिय-णरामर-भवेसु सिद्धिं अपावेंता ॥
जस्स विओए सुंदर जीयं ण धरेंति मोह-मूढ-मणा। तं चेय पुणो जीवा देसं दट्ठुं पि ण चयंति ॥
कह-कह वि मूढ-हियएण वड्ढिओ जो मणोरह-सएहिं। तं चिय जीवा पच्छा ते चिय सयर व्व छिंदंति ॥
जो जीविएण णिच्चं णियएण वि रक्खिओ ससत्तीए। तं चिय ते च्चिय मूढा खग्ग-पहारेहिँ दारेंति ॥
जेणं चिय कोमल-करयलेहिँ संवाहियाइँ अंगाइं। सो च्चिय मूढो फालइ अव्वो करवत्त-जंतेहिं ॥
आसा-विणडिय-तण्हालुएहिँ पिय-पुत्तओ त्ति जो गणिओ। संसारासार-रहट्ट-भामिओ सो भवे सत्तू ॥
पीयं थणय-च्छीरं जाणं मूढेण बाल-भावम्मि। विसमे भव-कंतारे ताणं चिय लोहियं पीयं ॥
जो चलण-पणामेहिँ भत्तीएँ थुओ गुरु त्ति काऊणं। पिहुय-पाय-प्पहरेहि चुण्णिओ सो च्चिय वराओ ॥
जस्स य मरणे रुव्वइ बाह-भरंतोत्थएहि णयणेहि। कीरइ मय-करणिज्जं पुणो वि तस्सेय मंसेहिं ॥
भत्ति-बहु-माण-जुत्तेण पूइया जा जणेण जणणि त्ति। संजाय-मयण-मोहेण रमिया एस महिल त्ति ॥
पुत्तो वि य होइ पई पई वि सो पुत्तओ पुणो होइ। जाया वि होइ माया माया वि य होइ से जाया ॥
होइ पिया पुण दासो मरिउं दासो वि से पुणो जणओ। भाया वि होइ सत्तू सत्तू वि सहोयरो होइ ॥
भिच्चो वि होइ सामी सामी मरिऊण हवइ से भिच्चो। संसारम्मि असारे एस गई होइ जीवाणं ॥

इय कुमार, किं वा भण्णउ।

खर-पवणाहउं विसमं पत्तं परिभमइ गिरि-णिउंजम्मि। इय पाव-पवण-परिहट्ठिओ वि जीवो परिब्भमइ ॥

तेण कुमार, इमं भावेयव्वं।

ण य कस्स वि को वि पिया ण य माया णेय पुत्त-दाराइं। ण य मित्तं ण य सत्तू ण बंधवो सामि-भिच्चो वा ॥
णियय-गुणाणुभाव-सरिसं सुहमसुहं जं कयं पुरा कम्मं। तं वेदंति अहण्णा जीवा एएण मोहेण ॥
बज्झंति तत्थ वि पुणो तेसिं चिय कारणेण मूढ-मणा। भव-सय-सहस्स-भोज्जं पावं पावाए बुद्धीए ॥ अहवा।
जह वालुयाए बाला पुलिणे कीलंति अलिय-कय-घरया। अलिय-वियप्पिय-माया-पिय-पुत्त-परंपरा-मूढा ॥
कलहं करेंति ते च्चिय भुंजंति पुणो वराघरिं जंति। बाल व्व जाण बाला जीवा संसार-पुलिणम्मि ॥

1 > P कंचउव्वहण, P विणयप्पण°. 2 > P जुवलयं, J सय for भय. 3 > P धम्मलाभिओ for लंभिओ, P धम्मलाभ. 4 > P कडयाहरण, P पसारिउभय. 5 > P विणिमिउत्त°, P मइवयणा, P om. गंड. 6 > P जडाजडप्पेण, P दीहरलंगूलेणं पसमंत, P अणुमओ, P कुमारेणा. 7 > J हरी वियसमाण सूइ°, P पुलोइओ, J om. धवलाए, P दिट्ठाए। उयविट्ठो, P मुणिणा, P जुयलसं°. 8 > J has a marginal note: समीवे-पा. on the word संसिए, P सिलायलए त्ति, P भयवया. 9 > P om. त्ति, P एयं च तुरंगमाइरणावेरवलंत कयंजली for एयं च तुह सव्वं etc. to संवलियंतकयंजली. 10 > J चेए for चेय. 11 > P रायपुत्तो, J adds something like भगवं पि in later hand. 12 > P अवलंबिओ, P साहियं, P निव्वहणं. 13 > P पावंति, P अपावंता. 14 > P जायं for जीयं. 15 > P om. two lines: तं च्चिय जीवा to रक्खिओ ससत्तीए. 16 > P च्चिय जीवा मूढा. 17 > P om. three lines from य कोमल to गणिओ सं. 20 > P चलयण-, P -पहारेहिं. 21 > P °त्थएण वयणेण. 22 > P जणणजणिणि, P मिहल for महिल. 23 > P सो for विय, P होई, P से for सो, P विय से पुणो जाया. 24 > P पुण दोसो. 25 > P सो भवे for हवइ से, J om. संसारम्मि to जीवाणं ।. 27 > P पवणाइद्धं, J वसमं, P परिहिट्ठिओ. 28 > P इमं संभावे°. 29 > J सत्तू. 30 > P वेयंती अन्ने जीवा. 31 > P बंधंति. 32 > P बाले, J अणियकयघरए, J पिटि for पिय. 33 > P भंजंति, P घरिं घरिं जंति, J बालो व्व.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

तओ कुमार कुवलयचंद, एयम्मि एरिसे असारे संसार-वासे पुण कोह-माण-माया-लोह-मोह-मूढ-माणसेहिं अम्हेहिं चेय जं समणुभूयं तं तुमं तुरंगावहरण-पेरंतं एगमणो साहिज्जंतं णिसामेहि त्ति ।

§ ६७) अत्थि बहु-जण्णवाड-जूव-संकुलो अणवरय-होम-धूम-धूसर-गयणंगणो महिसि-वंद्र-सय-संचरंत-कसिण-च्छवी गो-सहस्स-वियरंत-धवलायंबिर-पेरंतो णील-तण-धण-सास-संपया-पम्हलो लोयण-जुयलं पिव पुहई-महिलाए वच्छो णाम जणवओ । जत्थ य

पवण-पहल्लिर-पुंडुच्छु-पत्त-सिलिसिलिय-सद्द-वित्तत्थं । पम्हरइ रण्णुद्देसं मय-जूहं पुण्ण-तरलच्छं ॥
पुण्ण-तरलच्छ-दंसण-णिय-दइया-संभरंत-णयण-जुओ । अच्छइ लेप्प-मओ चिय सुण्ण-मणो जत्थ पहिययणो ॥
पहिययण-दीण-पुलयण-विम्हय-रस-पम्हुसंत-कायव्वो । अच्छइ पामरि-सत्थो चल-णिच्चल-धरिय-णयण-जुओ ॥
णिच्चल-णयण-जुयं चिय कुवलय-संकाए जत्थ अहिलेइ । अगणिय-केयइ-गंधा पुणो पुणो भमर-रिंछोली ॥
महुयर-रिंछोलि-मिलंत-भमर-रुणुरुणिय-सद्द-जणिएण । मयणेण जुवाण-जणो उक्कंठुलयं रुणुरुणेइ ॥
इय किंचि-मेत्त-कारण-परंपरुप्पण्ण-कज्ज-रिंछोली । जम्मि ण समप्पइ च्चिय विम्हय-रस-गब्भिणा णवरं ॥

जत्थ य पिसुणिज्जंति सालि-तृण-महाखलेहिं कलम-रिद्धीओ, साहिज्जंति सुर-भवण-मंडवेहिं जणस्स धम्म-सीलत्तणाइं, सीसंति उच्छिट्ठाणिट्ठ-मल्लएहिं गाम-महा-भोज्जाइं, उप्पालिज्जंति उद्ध-भुय-दंड-जुवल-सरिसेहिं केवल-जंतवाएहिं उच्छुवण-साम-ग्गीओ, लंघिज्जंति महा-समुद्द-सच्छमेहिं तलाय-बंधेहिं जणवय-विहवई पि, सूइज्जंति जत्थ पडिप्पवा-मंडवासत्तायारेहिं दाण-वइत्तणाइं, वज्जरिज्जंति खर-महुर-फरुस-महाघंटा-सद्देहिं गोहण-समिद्धीओ त्ति । जहिं च दिय-वर-खंडियाइं दीसंति कमल-केसरइं विलासिणीयण-अहरयं व, राय-हंस-परिगयाओ दीसंति महत्थाण-मंडलीओ दीहियाओ व, कीलंति राय-सुया पंजरेसु रायंगणे व, दीसंति चक्कवायाइं सरिया-पुलिणेसु रहवरेसुं व, सेवंति सावया महारण्णाइं जिण-भवणइं व त्ति । अवि य ।

सरिया-जल-तरलच्छं सरोज्ज-तिलयं तमाल-धम्मेल्लं । सुद्ध-दिय-चारु-सोहं व वहइ धरणीएं तं देसं ॥ ति

§ ६८) तत्थत्थि पुरी रम्मा कोसंबी सग्ग-णयर-पडिबिंबा । तुंगट्टालय-मंदिर-तोरण-सुर-भवण-सोहिल्ला ॥
धवलहर-सिहर-काणणे-भममाण-पवंग-जणिय-लच्छीए । कीलासेलं ति इमं जीय णिसम्मंति गयणयरा ॥
गंभीर-णीर-फरिहा-समुद्द-पायार-वेइया-कलिया । जंबुद्दीवं मण्णे सहसा दिट्ठा सुरेहिं पि ॥
रवि-तुरय-गमण-संताव-जाय-मुह-फेण-पुंज-धवलइए । कोडि-पडागा-णिवहे जा मारुय-चंचले वहइ ॥
जम्मि भवणग्ग-लग्गं णह-लंघण-णीसह-णिसम्मंतं । अहिसारियाओ चंदं पणय-सगब्भं उवलहंति ॥
हम्मिय-तलेसु जम्मि य मणि-कोट्टिम-विप्फुरंत-पडिबिंबा । पडिसीह-जायासंका सहसा ण णिलेंति सिहिणो वि ॥
इय केत्तियं व भणिमो जं जं चिय तत्थ दीसए णवरं । अण्ण-णयरीण तं चिय णीसामण्णं हवइ सव्वं ॥
जत्थ य फरिहाओ वि णत्थि जाउ ण विमल-जल-भरियओ । विमल-जलइँ जे णत्थि जाइँ ण सरस-तामरस-विहूसियइं ॥
सरस-तामरसइं जे णत्थि जाइँ ण हंस-कुल-चंचु-चुण्णियइं । हंसउलइँ जे णत्थि जाइँ ण णीलुप्पल-दल-भूसियइं ॥
णीलुप्पलइँ जे णत्थि जाइँ ण भमिर-भमरउल-चुंबियइं । भमरउलइं जें णत्थि जाइँ ण कुसुम-रेणु-पिंजरियइं ॥
कुसुमइँ जे णत्थि जाइँ ण णिम्महंत-बहल-मयरंद-परिमलाइं ति । अवि य ।
जलहि-जलोयरम्मि रेहेज्ज व महु-महणस्स वल्लहा । अहव तिकूड-सेल-सिहरोयरि लंका-णयरिया इमा ॥
अहव पुरंदरस्स अलया इव रयण-सुवण्ण-भूसिया । इय सा अमरएहिँ पुलइज्जइ विम्हियएहिँ णयरिया ॥

§ ६९) तं च तारिसं महाणयरिं पिय-पणइणिं पिव परिभुंजइ पुरंदरदत्तो णाम राया ।

तुंग-कुल-सेल-सिहरे जो पणइ-सउणयाण विस्सामो । जह-चिंतिय-दिण्ण-फलो दढ-मूलो कप्प-रुक्खो व्व ॥

---

1) P संसारे. 2) P तुरंगमापहरण, J णिसाहेमि. 3) P जन्नवाडुच्छुआसंकुलो. 4) P वियलंत, J धवलायंपिर P धवलायंचिर, J वहलो for पम्हलो, J जुवलं, P पुहइ, J वच्छा P वच्छ. 5) J om. य. 6) J पुण्णुच्छु, P सिलिसिय, P पसरइ, P चुन्न for पुण्ण. 7) P चुन्न for पुण्ण, P सुन्नजणो. 8) P पुलइय-, J पामरी. 10) P महुरवर, J भमिर, P उक्कुटुलयं रुणरुणेइ, 12) P तत्थ for जत्थ, P तण for तृण (a line is added here on the margin), P सीलत्तणइं. 13) P महेहिं सि गाम, P भोज्जइं, P उप्फालिज्जंति उद्द-, P कंबल for केवल, P उच्छुरयणसमग्गिओ संघिज्जंति. 14) P om. पि, J सुणिज्जंति, P तत्थ for जत्थ, P मंडवसप्पायारेहिंतो पावइत्तणइं. 15) P वधरिज्जंति, P °घंट-, P जहिं विदियखरखंडियइं. 16) P विलासिणी अहरइं, J om. व, P परिगयओ, P महत्थाणि, P दीहिअउव्व, J य for व, P सुयइ पंजरोयरेसु रायंगणेसुं. 17) P चक्कवाइयइं, P पुलणीसु, P सावयमहारन्नइं, J om. अवि य. 18) J सोहव्व, P इहं च for व वहइ. 19) J कोसंबि, P भवणे. 20) P सिहण-. 21) J दरिहा for फरिहा. 22) J धवलाए, P पडाया-. 23) P °सारियतो, P उयलहंति. 24) P हंमिययलेसु. 25) P दीसए, P नीसमण्णं वहइ. 26) J जत्थ व फरिहउ, J भरियाओ, P विभूसियइं. 27) P नवहंसउल, J चुण्णिआइं, P हंसउलयं, J om. ण, P दलदूसियइ. 28) P भमर for भमिर, P नव for ण. 29) P कुसुमयं, P परिमलयं. 30) P किं होज्ज for रेहेज्ज, J तिउड. 31) P रवण for रयण, P पुलइज्ज, J विम्हयएण णयं°. 32) P पीयपणइणी, J om. णाम. 33) P पणईधयण सउण°, P वीसम्मो ।, P जय for जह, P मूढो for मूलो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो आकड्डिय-करवाल-किरण-जालावली-करालो रिउ-पणइणीहिं जलओ सुदुस्सहो पिय-विओयम्मि, दरिय-पुरंदर-करि-कुंभ-विब्भम-त्थण-कलसोवरि मुणाल-मउय-बाहा-लया-संदाणिओ णियय-कामिणि-जणेण, पच्चक्ख-मंतु-दंसण-कय-कोव-पसायण-चलणालग्गो माणंसिणीहिं, णिच्च-पयत्तिय-दाण-पसारिय-करो पणईयणेणं, सब्भाव-णेह-परिहास-सहत्थ-ताल-हसिरो मित्त-मंडलेणं, सव्व-पसाय-सुमुहो भिच्च-वग्गेण, सविणय-भत्ति-पणओ गुरुयणेण। तस्सेय गुण-सायर-परिपयत्त-खेय-सुढिय-पसुत्तेहिं सुविणंतरेसु वि एरिसो एरिसो य दीसइ त्ति। जस्स य अत्ताणं पिव मंतियणो, मंतियणो इव सहियणो, सहियणो विय महिलायणो, महिलायणो विय विलासिणियणो, विलासिणियणो इव परियणो, परियणो विय णरिंद-लोओ, णरिंद-लोओ इव सुर-सत्थो, सुर-सत्थो इव जस्स सव्व-गओ गुण-सागरो, गुण-सागरो इव जस-प्पभावो त्ति।

अह एक्को च्चिय दोसो तम्मि णरिंदम्मि गुण-समिद्धम्मि। जं सुह-पायव-मूले जिण-वयणे णत्थि पडिवत्ती॥

तस्स य राइणो पारंपर-पुव्व-पुरिस-कमागओ महामंती। चउव्विहाए महाबुद्धीए समालिंगिय-माणसो सुर-गुरुणो इव गुरू सव्व-मंति-सामंत-दिण्ण-महामंति-जय-सद्दो वासवो णाम महामंती। तं च सो राया देवयं पिव, गुरुं पिव, पियरं पिव, मित्तं पिव, बंधुं पिव, णिद्धं पिव मण्णइ त्ति। अवि य

विज्जा-विण्णाण-गुणाहियाइ-दाणाइ-भूसणुक्केरे। चूडामणि व्व मण्णइ एक्कं चिय णवर सम्मत्तं॥
जिण-वयण-बाहिरं सो पडिवज्जइ कास-कुसुम-लहुययरं। मण्णइ सम्मद्दिट्ठिं मंदर-भाराओ गरुययरं॥

तस्स य राइणो तेण मंतिणा किंचि बुद्धीए किंचि दाणेणं किंचि विक्कमेणं किंचि सामेणं किंचि भेएणं किंचि विण्णाणेणं किंचि दक्खिण्णेणं किंचि उवयारेणं किंचि महुरत्तणेणं सव्वं पुहइ-मंडलं पसाहियं पालयंतो चिट्ठइ त्ति।

§७०) तओ तस्स महामंतिणो वासवस्स अण्णम्मि दियहे कयावस्सय-करणीयस्स ण्हाय-सुईभूदस्स अरहंताणं भगवंताणं तेलोक्क-बंधूणं पूया-णिमित्तं देवहरयं पविसमाणस्स दुवार-देसम्मि ताव णाणा-विह-कुसुम-परिमलायड्ढियालि-माला-गुंजंत-मणहरेणं खंधावलंबिणा पुप्फ-करंडएणं समागओ बाहिरुज्जाण-पालओ थावरो णामं ति। आगंतूण य तेण चलण-पणाम-पच्चुट्ठिएणं उग्घाडिऊण पुप्फ-करंडयं 'देव, वद्धाविज्जसि, सयल-सुरासुर-णर-किंणर-रमणीय-मणोहरो कुसुमबाण-पिय-बंधवो संपत्तो वसंत-समओ' त्ति भणमाणेण महु-मय-मत्त-भमिर-भमर-रिंछोलि-पंखावली-पवण-पक्खिप्पमाणुद्धुय-रय-णियरा समप्पिया महामंतिणो सहयार-कुसुम-मंजरि त्ति। अण्णं च 'देव, समावासिओ तम्मि चेइय-उज्जाणे बहु-सीस-गण-परिवारो धम्मणंदणो आयरिओ' त्ति। तं च सोऊण मंतिणा अमरिस-वस-विलसमाण-भुमया-लएणं आबद्ध-भिउडि-भीम-भासुर-वयणेणं 'हा अणज्ज' त्ति भणमाणेणं अच्छोडिया स च्चिय विसट्टंत-मयरंद-बिंदु-णीसंदिर-सहयार-कुसुम-मंजरी, णिवडिया य सेय-लओवरि कय-रेणु-लंछणा। भणियं च मंतिणा 'रे रे दुरायार, असयण्णाणिव्विवेय सच्चं थावरय, वद्धावेसि मं पढमं, पहाणं सायरं च वसंतं साहसि, भगवंतं पुण धम्मणंदणं पच्छा अप्पहाणं अणायरेण साहसि। कत्थ वसंतो, कत्थ वा भगवं धम्मणंदणो।

जो सुरभि-कुसुम-मयरंद-लुद्ध-झंकार-मणहर-रवेण। भमरावलीहि हिययं मयणग्गि-सणिब्भं कुणइ॥
भगवं पुण तं चिय मयण-जलण-जालावली-तविज्जंतं। णिव्ववइ णवरि हिययं जिण-वयण-सुहासिय-जलेणं॥
संसार-महाकंतार-केसरी जो जणइ रे रायं। मूढ वसंतो कत्थ व कत्थ व भगवं जिय-कसाओ॥

ता गच्छ, एयस्स अत्तणो दुब्बुद्धि-विलसियस्स जं भुंजसु फलयं' ति। 'रे रे को एत्थ दुवारे'। पडिहारेण भणियं 'जिय देव'। मंतिणा भणियं। 'दवावेसु इमस्स चम्म-रुक्खस्स दीणाराणं अद्ध-लक्खं, जेण पुणो वि एरिसं ण कुणइ' त्ति भणमाणो महामंती घेत्तूण तं चेय सहयार-मंजरिं आरूढो तुरंगमे, पत्थिओ य राय-पुरंदरदत्तस्स भवणं, कज्जत्थिणा-जण-सय-सहस्सेहिं अणिज्जमाणो ताव गओ जाव राइणो सीह-दुवारं। तत्थ य अवइण्णो तुरंगाओ। पइट्ठो य जत्थच्छइ पुरंदरदत्तो। उवसप्पिऊण य

'कुसुम-रय-पिंजरंगी महुयर-झंकार-महुर-जंपिल्ला। दूइ व्व तुज्झ गोंदी माहव-लच्छीए पेसविया॥'

1) J किरिउं for रिउ, P om. जलओ सुदुस्सहो पियविओयम्मि (which is added in J on the margin perhaps later). 2) J थणयरसोवरिं, P बाहालिया. 4) P -समुहो, P परिपयंतक्खेय. 5) P omits one एरिसो, P repeats जस्स, J सुहियणो इव. 6) J इव for विय throughout, P विलासिणिजणो (in both the places). 7) J सुर (in both the places), P सव्वंमओ, P om. गुणसागरो, P जसपब्भारो. 8) P चिय for च्चिय. 9) P बि for महा, 10) P मंतिसामंतिसामंत, P om. °मंति, P जं for तं, P गुरुयणं for गुरुं, P adds सहोयरं पिव before मित्तं. 11) P om. बंधुं पिव, P om. त्ति. 12) P °णुक्केरो, P नवरि. 13) P °दिट्ठी, P गुरुय°. 14) P om. य. 15) J दक्खिणेणं, P छ for त्ति. 16) P om. महा, P ण्हाइसुईभूयस्स. 17) J भयवं°, P जाव for ताव. 18) P पुप्प, P -वालओ, P पुप्प. 19) P om. णर. 20) P महुमत्तयमेत्त, J om. भमिर, P रिंछोलीपक्खावली. 21) P निवासिओ, P चेव for चेइय, P सस्स for सीसगण, P °नंदणो नाम. 22) P विलसमाण, J भुमलयालएणं. P भिउडिभंगभीमभासुयणेणं. 23) P विसट्टमयरंदबिंदुनीसंदिरा, P सेअलिओ for सेयलउवरि. 24) P असविण्ण, J पढमं for मं. 25) P साहेमि for साहसि, P भगवं, P अप्पहाणेणं अणायणेणं अणा°. 26) P सुरहि, J °वलीहियर्य, 27) P तविज्जंति, P नयर for णवरि. 28) J भयवं. 29) P धयस्स बुद्धी, P om. जं, P फलं for फलयं ति, J om. दुवारे. 30) J om. मंतिणा भणियं, J दवावसु, P सुक्खस्स केआरणे अद्ध°, J om. वि. 31) P घेत्तुंचेय, P मंजरी, J तुरंगमो, P om. य, P राइणो पुरंदरयत्तस्स. 32) P om. य, P तुरंगमाओ, P पविट्ठो, P om. य, P जत्थच्छए राया पुरंदरयत्तो उयसप्पिऊण या।. 33) P दूव्व, P तुज्झ गंदी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं भणमाणेण राइणो समप्पिया सहयार-कुसुम-मंजरी । राइणा वि सहरिसं गहिया । भणियं च । 'अहो
सव्व-जिय-सोक्ख-जणओ वम्मह-पिय-बंधवो उऊ-राया । महुयर-जुवइ-मणहरो अव्वो किं माहवो पत्तो ॥'

भणियं च मंतिणा 'जहाणवेसि देव, एह वच्चामो बाहिरुज्जाण-काणणं । तत्थ गंतूण पुलएमो जहिच्छं बाल-माहव-लच्छि' त्ति । राया वि 'एवं होउ' त्ति भणमाणो समुट्ठिओ, आरूढो य एक्कं वारुआसन्नं करिणिं । अणेय-जण-सय-सहस्स-संवाह-संकुलं फालेंतो राय-मग्गं संपत्तो वेगेणं तं चेय काणणं । तं च केरिसं ।

सहरिस-णरवइ-चिर-दिण्ण-दंसण-पसाय-गारवग्घवियं । उज्जाण-सिरीएँ समं सहसा हिययं व ऊससियं ॥

अवि य णच्चंतं पिव पवणुव्वेल्ल-कोमल-लया-भुयाहिं, गायंतं पिव णाणा-विहंग-कलयल-रवेहिं, जयजयावेंतं पिव मत्त-कोइला-राव-कंठ-कूविएहिं, तज्जंतं पिव विलसमाण-चूयंक-कलिया-तज्जणीहिं, सद्दावेंतं पिव रत्तासोय-किसलय-दलग्ग-हत्थएहिं, पणमंतं पिव पवण-पहय-विणमंत-सिहर-महासालुत्तमंगेहिं, हसंतं पिव णव-वियसिय-कुसुमट्टहासेहिं, रुयंतं पिव बंधण-खुडिय-णिवडंत-कुसुमंसु-धाराहिं, पढंतं पिव सुय-सारिया-फुडक्खरालावुल्लावेहिं, धूमायंतं पिव पवणुद्धुय-कुसुम-रेणु-रय-णिवहेहिं, पज्जलंतं पिव लक्खा-रस-राय-सिलिसिलेंत-मुद्ध-णव-पल्लवेहिं, उक्कंठियं पिव महु-मत्त-माहवी-मयरंदामोय-मुइय-रुणरुणेंत-महु-मत्त-महुयर-जुयाणेहिं ति । अवि य ।

उग्गाइ हसइ णच्चइ रूयइ धूमाइ जलइ तह पढइ । उम्मत्तओ व्व दिट्ठो णरवइणा काणणाभोओ ॥

§ ७१) तं च तारिसं पेच्छमाणो णरवई पविट्ठो चेय उज्जाणे । वियारिया य णेण समंतओ कुवलय-दल-दीहरा दिट्ठी, जाव माहवि-मंडवम्मि परिमुज्झइ, धावइ बउल-रुक्खए, रत्तासोययम्मि आरोहइ, सज्जइ चूय-सिहरए, दीहर-तालयम्मि आरोहइ, खिज्जइ सिंदुवारए, णिवडइ चंदणम्मि, वीसमइ खणे एला-वणुल्लए ।

इय णरवइणो दिट्ठी णाणा-विह-दुम-सहस्स-गहणम्मि । वियरइ अप्पडिफलिया महु-मत्ता महुयराण पंति व्व ॥

पेच्छइ य णव-कुसुम-रेणु-बहल-मयरंद-चंद-णीसंद-बिंदु-संदोह-लुद्ध-मुद्धागयालि-हलबोल-वाउलिज्जंत-उप्फुल्ल-फुल्ल-सोहिणो साहिणो । तं च पेच्छमाणेण भणियं वासव-महामंतिणा । 'देव दरियारि-सुंदरी-वंद्र-वेहव्व-दाणेक्क-वीर, पेच्छ पेच्छ, एए महुयरा णाणावत्थंतरावडिया महु-पाणासव-रस-वसणा विणडिया । अवि य ।

उय माहवीय कुसुमे पुणरुत्तं महुयरो समल्लियइ । अहवा कारण-वसया पुरिसा वंकं पि सेवंति ॥
पत्त-विणिगूहियं पि हु भमरो अल्लियइ कुज्जय-पसूयं । दुज्जण-णिवहोत्थइया णज्जंति गुणेहिँ सप्पुरिसा ॥
चंपय-कलियं मयरंद-वज्जियं महुयरो समल्लियइ । आसा-बंधो होहि त्ति णाम भण कत्थ णो हरइ ॥
धवलेक्क-कुसुम-सेसं कुंदं णो मुयइ महुयर-जुवाणो । विमलेक्क-गुणा वि गुणण्णुएहिँ णूणं ण मुंचंति ॥
अल्लीणं पि महुयरिं पवणुव्वेल्लंत-दल-हयं कुणइ । अहव असोए अइणिद्दयम्मि भण केत्तियं एयं ॥
चूय-कलियाए भमरो पवणाइद्धाइ कीरए विमुहो । णूणं रुंटण-सीलो जुवईण ण वल्लहो होइ ॥
मोत्तूण पियंगु-लयं भमरा धावंति बउल-गहणेसु । अहवा वियलिय-सारं मलिणं च्चिय णवरि मुंचंति ॥
भम रे भम रे अइभमिर-भमर-भमरीण सुरय-रस-लुद्धो । इय पणय-कोव-भणिरी भमरी भमरं समल्लियइ ॥
एवं साहेमाणो णरवइणो वासवो महामंती । महुयरि-भमर-विलसियं लोव-सहावं च बहु-मग्गं ॥

एवं च परिभममाणेणं तम्मि काणणे महामंतिणा वियारिया सुहमत्थ-दंसणा समंतओ दिट्ठी । चिंतियं च वासवेणं । 'सव्वं इमं परिब्भमियं पिव काणणं, ण य भगवं सो धम्मणंदणो दीसइ, जं हियए परिट्ठविय एस मए इहाणिओ राया । ता कहिं पुण सो भगवं जंगमो कप्प-पायवो भविस्सइ । किं वा सुत्तत्थ-पोरिसिं करिय अण्णत्थ अइक्कंतो होहिइ त्ति । ता ण सुंदरं कयं भगवया ।

1) J त्ति for एवं. 2) P सव्वज्जिय, J ऊराया for उऊराया, P जुयइ. 3) P 'देव जहाणवेति एहि, J °रुज्जाणे, P जहित्थए. 4) P एक्कं वारुपसज्जियं करिणीं, P om. सहस्स. 5) P वेएणं, P चेव. 6) P दंसणा, J सिरीय समयं, 7) J पवणुव्वेलं P पवणुवेल्ल, P लयाहिं, P कलरविहिं, P कोइलाकलाकलाराव. 8) P -कोविएहिं तज्जंतं, P सद्दावंतं, P हत्थेहिं, 9) P -वणमंत, J रूअंतं, J पिव वद्धण. 10) J कुसुमंसुएहिं, J सुअ-, P °लाविएहिं. 11) J सिलिसेलेंत, P मास for मत्त. 12) P जुवाणएहि त्ति, J om. ति. 14) P नरवई तंमि चिय पविट्ठो उ°, P om. य, P दीहदिट्ठी. 15) P माहवमंडवं ति, J आगेहइ. 16) J विज्जइ for खिज्जइ, P वीसम खणं एलावण्णुलए. 17) P दिट्ठिया, P गहणयंमि, P अप्फडिफलिअया. 18) J om. णवकुसुम etc. to विणडिया । अवि य उ, P मयरिंदचंदनीसंदा-, P वलबोलवाउलिज्जति उप्फल्ल°, P फुल्लसाहिणो सोहिणो. 19) P पिच्छमाणेण, P °मंतिणो. 20) P महुरा. 21) P पुणारुत्तं, P समुल्लियइ. 23) P नाम तण किंच नो, J भरइ for हरइ. 24) J कुंदं णा P कुंदं तो, J जुआणो, P गुणा वि twice. 25) P पिव महुयरि, P पवणुवेल्लित, P असोए इय णिंदयंमि. 26) J महुअरो for भमरो, J कंटण P रुंढण, J चेय for होइ. 27) P मलिणि, J णवर मुंचंति. 28) P सुरयसुरलोलो ।. 29) J वासओ, P लोय-. 30) J om. च, J परिभवमाणेण P परिब्भममा°, J सुहमसत्थ°, P दंसमणा, P सव्वमिमं. 31) J परिभवियं, J om. पिव, P काणेणं, P परिट्ठाविया. 32) P सुत्तत्तत्थपोसिसी, P होहि त्ति, P ण य सुंदरयं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्णाणं अमय-रसं दाऊण य दंसणं भदेंतेणं । दावेऊणं वर-णिहिं मण्णे उप्पाडिया अच्छी ॥

अहवा जाणियं मए । एत्थ तण-वच्छ-गुम्म-वल्ली-लया-संताणे सुपुप्फ-फल-कोमल-दल-किसलयंकुर-सणाहे बहु-कीडा-पयंग-पिवीलिया-कुंथु-तस-थावर-जंतु-संकुले भगवंताणं साधूणं ण कप्पइ आवासिउं जे । ता तम्मि सव्वाबाय-विरहिए फासुए देसे सिंदूर-कोट्टिम-तले सिस्स-गण-परिवारो होहिइ भगवं' ति चिंतयंतेण भणिओ महामंतिणा णरवई । 'देव, जो सो तए कुमार-समए सिंदूर-कोट्टिमासण्णे सहत्थारोविओ असोय-पायवो सो ण-याणियइ किं कुसुमिओ ण व' त्ति । राइणा भणियं । 'सुंदरं संलत्तं, पयट्ट तहिं चेव, वच्चामो' त्ति भणमाणेण गहियं करं करेण वासवस्स । गंतुं जे पयत्तो णरवई सिंदूर-कोट्टिमयलं, जाव य थोयंतरमुवगओ ताव पेच्छइ साहुणो ।

§ ७२) ते य केरिसे ।

धम्म-महोवहि-सरिसे कम्म-महासेल-कढिण-कुलिसत्थे । खंति-गुण-सार-गरुए उवसग्ग-सहे तरु-समाणे ॥
पंच-महव्वय-फल-भार-रेहिरे गुत्ति-कुसुम-चेंचइए । सीलंग-पत्त-कलिए कप्पतरू-रयण-सारिच्छे ॥
जीवाजीव-विहाणं कज्जाकज्ज-फल-विरयणा-सारं । साधूण समायारं आयारं के वि झायंति ॥
स-समय-पर-समयाणं सूइज्जइ जेण समय-सब्भावं । सूतयडं सूयगडं अण्णे रिसिणो अणुगुणेंति ॥
अण्णेत्थ सुट्ठिया संजमम्मि णिसुणेंति के वि ठाणंगं । अण्णे पढंति धण्णा समवायं सव्व-विण्णाणं ॥
संसार-भाव-मुणिणो मुणिणो अण्णे वियाह-पण्णत्ती । अमय-रस-मीसियं पिव वयणे च्चिय णवर धारेंति ॥
णाया-धम्म-कहाओ कहेंति अण्णे उवासग-दसाओ । अंतगड-दसा अवरे अणुत्तर-दसा अणुगुणेंति ॥
जाणय-पुच्छं पुच्छइ गणहारी साहए तिलोय-गुरू । फुड पण्हा-वागरणं पढंति पण्हाइ-वागरणं ॥
वित्थरिय-सयल-तिहुयण-पसत्थ-सत्थत्थ-अत्थ-सत्थाइं । समय-सय-दिट्ठिवायं के वि कयत्था अहिज्जंति ॥
जीवाणं पण्णवणं पण्णवणं पण्णवेंति पण्णवया । सूरिय-पण्णत्तिं च्चिय गुणेंति तह चंद-पण्णत्तिं ॥
अण्णाइ य गणहर-भासियाइँ सामण्ण-केवलि-कयाइं । पत्तेय-सयंबुद्धेहिँ विरइयाइँ गुणेंति महरिसिणो ॥
कत्थइ पंचावयवं दसह च्चिय साहणं परूवेंति । पच्चक्खणुमाण-पमाण-चउक्कयं च अण्णे वियारेंति ॥
भव-जलहि-जाणवत्तं पेम्म-महाराय-णियल-णिद्दलणं । कम्मट्ठ-गंठि-वज्जं अण्णे धम्मं परिकहेंति ॥
मोहंधयार-रविणो पर-वाय-कुरंग-दरिय-केसरिणो । णय-सय-खर-णहरिल्ले अण्णे अह वाइणो तत्थ ॥
लोयालोग-पयासं दूरंतर-सण्ह-वत्थु-पज्जोयं । केवलि-सुत्त-णिबद्धं णिमित्तमण्णे वियारंति ॥
णाणा-जीउप्पत्ती-सुवण्ण-मणि-रयण-धाउ-संजोयं । जाणंति जणिय-जोणी जोणीणं पाहुडं अण्णे ॥
अट्ठि-सय-पंजरा इव तव-सोसिय-चम्म-मेत्त-पडिबद्धा । आबद्ध-किडिगिडि-रवा पेच्छइ य तवस्सिणो अण्णे ॥
ललिय-वयणत्थ-सारं सव्वालंकार-णिव्वडिय-सोहं । अमय-प्पवाह-महुरं अण्णे कव्वं विइंतंति ॥
बहु-तंत-मंत-विज्जा-वियाणया सिद्ध-जोय-जोइसिया । अच्छंति अणुगुणेंता अवरे सिद्धंत-साराइं ॥
मण-वयण-काय-गुत्ता णिरुद्ध-णीसास-णिच्चलच्छीया । जिण-वयणं झायंता अण्णे पडिमा-गया मुणिणो ॥

अवि य कहिंचि पडिमा-गया, कहिंचि णियम-ट्ठिया, कहिंचि वीरासण-ट्ठिया, कहिंचि उक्कुडुयासण-ट्ठिया, कहिंचि गोदोह-संठिया, कहिंचि पउमासण-ट्ठिय त्ति । अवि य ।

इय पेच्छइ सो राया सज्झाय-रए तवस्सिणो धीरे । णित्थिण्ण-भव-समुद्दे रुंदेण जिणिंद-पोएणं ॥

§ ७३) ताणं च मज्झे सव्वाणं चेय णक्खत्ताणं पिव पुण्णिमायंदो, रयणाणं पिव कोत्थुभो कंतीए, सुराणं पिव पुरंदरो सत्तीए, तरूणं पिव कप्पपायवो सफलत्तणेणं, सव्वहा सव्व-गुणेहिं समालिंगिओ चउ-णाणी भगवं भूय-भविस्स-

1) P सदंसणं for दंसणं, P णिही, J अच्छि. 2) P न एत्थ, J सणाह, J कीडपयंग. 3) P साहूणं, P आवसिउं, J om. जे, P सव्वावयरहिया. 4) J om. देसे, P कोट्टिमयलो, J यण for गण, JP चिंतियंतेण, J भणियं. 5) P संभमए for समए, P सहत्थरो°, P न याणइ. 6) P पयट्टा, J चेय, P om. जे. 7) P om. य, J थोवंतरं गओ. 8) P केरिसो. 9) P महोयहि, P उवसग्ग. 11) P साहूण, J आयारे. 12) P सूयज्जइ, P सूयगडं, J सूअयडं P सूयगडं. 13) J ट्ठाणंगं P ठाणामं, P । पढंति अन्ने धण्णा. 14) P विवाह-, J पि for पिव, P नवरि. 15) P कहंति. 16) P जाणइ, J त्तिलोय, P -वागरण, P पण्हाए वागरण. 17) P सत्थसत्थत्थ for सत्थत्थ, P सत्थ for अत्थ, P वि वयत्था, J अभिज्जेंति. 18) P पन्नत्ति च्चिय, P -पन्नत्ति. 19) J पत्तेयइसयबुद्धेहि विरयाइं, P पत्तेय, P महारिसिणो. 20) P साहारणं for साहणं, J पच्चक्खाणु°, P चउक्कपण्णे. 22) P माइ for वाय, P -नयरिल्ले, P वाइणा. 23) P लोयालोय, P पज्जंतं, J णिबंधं, P वियारेंति. 24) जीवुप्पत्ती, J जाणिंति. 25) P अट्ठिमय, P पच्छइ. 26) P धणयच्छ for वयणत्थ, P निवडिया, P विइंतेति, J has a marginal note: च विरइं पा° (which means that च विरइंति is a पाठान्तर). 27) P जोईसा, P अच्छेंति अणुगुणेंसा. 28) P विरुद्ध for णिरुद्ध, P झायंता. 29) P पडिमं ठिया, P नियमं ठिया, P वीरासणं ठिया कहिं उक्कुडियासणं ठिया. 30) P पोमासणं ठिया ।, P om. त्ति. 31) P सिज्झाय, P विच्छिन्नतवसमुद्दे. 32) P om. च, P चेव, P पुण्णिमाइंदो, P कोत्थुहो. 33) P om. सव्वहा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भव्व-वियाणओ दिट्ठो णरवइणा धम्मणंदणो णाम आयरिओ । दट्ठूण य पुच्छियं णरवइणा 'भो भो वासव, के उण इमे एरिसे पुरिसे' । भणियं च वासवेणं 'एए सयल-तेलोक्क-वंदिय-वंदणिज्ज-चलण-जुयले महाणुभावे महाणाणिणो मोक्ख-मग्ग-मुणिणो भगवंते साहुणो इमे' त्ति । भणियं च राइणा 'एसो उण को राया इव सस्सिरीओ इमाणं मज्झ-गओ दीसइ' त्ति । भणियं च मंतिणा 'देव, एसो णं होइ राया देसिओ । कहं । संसाराडवीए जर-मरण-रोगायर-मल-दोगच्च-महा-वण-गहणे मूढ-सोग्गइ-दिसि-विभागाणं णिद्दय-कुतित्थ-तित्थाहिव-पावोवएस-कुमग्ग-पत्थियाणं कंदुग्घुसिय महा-णयर-पंथ-देसिओ भव्व-जीव-पहियाणं भगवं धम्मणंदणो णाम आयरिओ त्ति । ता देव, देवाणं पि वंदणीय-चलण-जुयलो इमो, ता उव-सप्पिऊण वंदिमो, किंचि धम्माहम्मं पुच्छिमो' त्ति । 'एवं होउ'त्ति भणमाणो राया पुरंदरदत्तो वासवस्स करयलालग्गो चेय गंतुं पयत्तो । गुरुणो सयासं उवगंतूण य मंतिणा कय-कोमल-करयल-कमल-मउलेण भणियं ।

जय तुंग-महा-कम्मट्ठ-सेल-मुसुमूरणम्मि वज्ज-सम । जय संसार-महोवहि-सुघडिय-वर-जाणवत्त-सारिच्छ ॥
जय दुज्जय णिज्जिय-काम-बाण खंतीय धरणि-सम-रूव । जय घोर-परीसह-सेण्ण-लद्ध-णिद्दलण-जय-सद्द ॥
जय भविय-कुमुय-वण-गहण-बोहणे पुण्ण-चंद-सम-सोह । जय अण्णाण-महातम-पणासणे सूर-सारिच्छ ॥
देव सरणं तुमं चिय तं णाहो बंधवो तुमं चेव । जो सव्व-सोक्ख-मूलं जिण-वयणं देसि सत्ताणं ॥

त्ति भणमाणो तिउण-पयाहिणं करेऊणं णिवडिओ से भगवओ चलण-जुवलयं वासवो त्ति राया वि पुरंदरदत्तो ।

दरिसण-मेत्तेणं चिय जण-मणहर-वयण-सोम्म-सुह-रूव । सइ-वंदिय-बहुयण-चलण-कमल तुज्झं णमो धीर ॥ त्ति

भणिए, भगवया वि धम्मणंदणेणं सयल-संसार-दुक्ख-क्खय-कारिणा लंभिओ धम्मलाह-महारयणेणं ति ।

§ ७४) भणियं च भगवया 'सागयं तुम्हाणं, उवविसह' त्ति । तओ 'जहाणवेह' त्ति भणमाणो पणउत्तमंगो भगवओ णाइदूरे तम्मि चेय पोमराय-मणि-सरिसुल्लसंत-किरण-जाले सिंदूर-कोट्टिमयले णिसण्णो राया। वासवो वि अणु-जाणाविउं भगवंतं तहिं चेय उवविट्ठो । एयम्मि समये अण्णे वि समागया णरवर-चट्ट-पंथि-कप्पडियाइणो भगवंते णमोक्कारिऊण उवविट्ठा सुहासणत्था य । गुरुणा वि जाणमाणेणावि सयल-तिहुयण-जण-मणोगयं पि सुह-दुक्खं तह वि लोय-समायारो त्ति काऊणं पुच्छियं सरीर-सुह-वट्टमाणि-वुत्तंतं । विणय-पणय-उत्तमंगेहिं भणियं 'भगवं, अज्ज कुसलं तुम्ह चलण-दंसणेणं' ति । चिंतियं च राइणा । 'इमस्स भगवओ मुणिंदस्स असामण्णं रूवं, अणण्ण-सरिसं लायण्णं, असमा हि कित्ती, असाहारणा दित्ती, असमा सिरी, सविसेसं दक्खिण्णं, उद्दामं तारुण्णं, महंता विज्जा, अहियं विण्णाणं, साइसयं णाणं । सव्वहा सव्व-गुण-समालिंगण-सफल-संपत्त-मणुय-जम्मस्स वि किं वेरग्ग-कारणं समुप्पण्णं, जेण इमं एरिसं एगंत-दुक्खं पव्वज्जं पवण्णो त्ति । ता किं पुच्छामो, अहवा ण इमस्स एत्तियस्स जणस्स मज्झे अत्ताणं गाम-कूडं पिव हियएणं हसावेस्सं' ति चिंतयंतो गुरुणा भणिओ ।

'एत्थ णरणाह णवरं चउगइ-संसार-सायरे घोरे । वेरग्ग-कारणं चिय सुलहं परमत्थ-रूवेणं ।
जं जं जयम्मि मण्णइ सुह-रूवं राय-मोहिओ लोओ । तं तं सयलं दुक्खं भणंति परिणाय-परमत्था ॥
तिण्हा-छुहा-किलंता विसय-सुहासाय-मोहिया जीवा । जं चिय करेंति पावं तं चिय णाणीण वेरग्गं ॥

जेण पेच्छ, भो भो णरणाह,

जे होंति णिरणुकंपा वाहा तह कूर-कम्म-वाउरिया । केवट्टा सोणहिया महु-घाया गाम-घाया य ॥
णरवइ-सेणावइणो गाम-महाणयर-सत्थ-घाया य । आहेडिया य अण्णे जे विय मासासिणो रोद्दा ॥
देंति वणम्मि दवग्गिं खणंति पुहईं जलं पि बंधंति । धाउं धमंति जे च्चिय वणस्सइं जे य छिंदंति ॥
अण्णे वि महारंभा पंचेंदिय-जीव-घाइणो मूढा । विउल-परिग्गह-जुत्ता खुत्ता बहु-पाव-पंकम्मि ॥

---

1 > J आयरिओ त्ति, P इमे केरिसा पुरिसा. 2 > P om. च, P एए तियलोक्कं सयलं वंदिय, P सोग्गइ for मोक्ख. 3 > J मज्झे गओ. 4 > P om. णं होइ राया देसिओ । कहं ।, P संसाराडईए, J रोगरयमल. 5 > J दिसी, P निद्दय, P तित्थाहिवोवएस, J कडुज्झुसियमहा P कंडुजुयं सिवमहा. 6 > P पयाहिणं for पहियाणं, P वंदणिय, J ताओ अवसप्पिऊण, P उवसप्पिऊण वंदामो. 7 > P कंचि धम्माधम्मं, J एवं ति होउ, P पुरंदत्तो, P करयललग्गो. 8 > P मंतिणि. 9 > J समा P समं, P महोयहि, P om. वत्त. 10 > P खंतीयं, J रूवा P रूवं, J सेण. 11 > P समसोहे, J सारिच्छा. 12 > P वि तं for the second तुमं. 13 > P तिउणं, J वासओ, P om. त्ति. 14 > P दंसण for दरिसण, P सुयणसोम, J सुहरूवे, J सइं P सय. 15 > P om. वि, P धम्मलाभ, P om. ति. 16 > P उवविसतु, P जहाणवेतु, P पणयउत्तिमंगो. 17 > P नाइ दूरंमि चेव, P सरसुल्लसंत, P जाले कोट्टिमसिंदूरमयले नीसण्णो. 18 > P चेव, P नरवईचट्टपंथ, P भगवंतं. 19 > J om. वि after गुरुणा, P om. जण. 20 > P पुच्छिओ, P वट्टमाणी, J पणमुत्त°. 21 > P नरवइणा for राइणा, P असामन्नरूवं, JP अणण्ण-, P om. सरिसं, P om. हि. 22 > J हि कन्ती (?), P असाधारणा, J अविसेसं, J कारुण्णं for तारुण्णं, J विण्णाणं ति, J om. साइसयं णाणं P साइसगं नाणं. 23 > J समालिंगणं, P दुरुत्तरं for दुक्खं. 24 > P om. त्ति, P पुच्छिमो, P एयस्सय एत्तियमज्झे अत्ताणयं गामउडं, J हसपस्सं. 26 > P सागरे. 28 > P तण्हा, P नाणेण. 29 > P पिच्छा. 30 > P कोवट्टा सोणिइया. 31 > P नरवर-, P मंसासिणो. 32 > P दढग्गी for दवग्गिं, P खणं च पु°, P च for पि, P जे विय वणस्सयं. 33 > P च for वि, P मूला.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहु-कोहा बहु-लोहा माइल्ला माण-मोह-पडिबद्धा । णिंदण-गरहण-रहिया आलोयण-णियम-परिहीणा ॥
एए करेंति कम्मं मह कुल-णीइ त्ति णिच्छिय-मईया । अवरे भणंति वित्ती अम्हाण कया पयावइणा ॥
अवरे वि व्वय-रहिया अवरे धम्मो त्ति तं चिय पवण्णा । अवरे अवरं दाएंति मूढयं चेय मूढ-मणा ॥
जीविय-हेउं एवं करेंति अम्हाण होहिइ सुहं ति । ण य जाणंति वराया दुक्खमसाहारणं णिरए ॥
पिय-पुत्त-भाइ-भइणी-माया-भज्जाण जा-कए कुणइ । ते वि तडे चिय ण्हाया भुंजइ एक्कल्लओ दुक्खं ॥
गुरु-वेयण-दुक्खत्तो पुरओ च्चिय सयल-बंधु-वग्गस्स । मरिऊण जाइ णरयं गरुएणं पाव-कम्मेणं ॥

§ ७५) केरिसा ते पुण णरया । अवि य ।

णक्खत्त-सूर-रहिया घोरा घोरंधयार-दुप्पेच्छा । अइउण्हा अइसीया सत्तसु पुढवीसु बहु-रूवा ॥

कहिंचि मेअ-मज्ज-वस-प्फेप्फसाउला । कहिंचि रत्त-पित्त-पूर-पसरंत-णिण्णया । कहिंचि मास-खेल-पूय-पूरिया । कहिंचि वज्ज-तुंड-पक्खि-संकुला । कहिंचि कुंभीपाय-पच्चंत-जंतुया । कहिंचि संचरंत-वायसाउला । कहिंचि घोर-सीह-सुणय-संकुला । कहिंचि चलमाण-चंचु-कंक-भीसणा । कहिंचि णिवडंत-सत्थवाह-संकुला । कहिंचि कड्ढमाण-तंब-तउय-ताविया । कहिंचि पच्चमाण-पाणि-दुग्गंध-गंध-गब्भिणा । कहिंचि करवत्त-जंत-फालिज्जमाण-जंतुया । कहिंचि णिवडंत-घोर-कसिण-पत्थरा । कहिंचि णरयपालायड्डिय-छुब्भमाण-जलण-जालालुक्खिय-दुक्ख-सद्द-सय-संकुल त्ति । अवि य ।

जं जं जयम्मि दुक्खं दुक्ख-ट्ठाणं च किंचि पुरिसाणं । तं तं भणंति णरयं जं णरयं तत्थ किं भणिमो ॥
अह तम्मि भणिय-पुव्वे पत्ता सत्ता खणेण दुक्खत्ता । पइसंति णिक्खुडेसुं संकड-कुडिलेसु दुक्खेण ॥
जह किर भवणे भित्तीय होइ घडियालयं मडह-दारं । णरयम्मि तह च्चिय णिक्खुडाइँ वीरेण भणियाइं ॥
मुत्त-जलु-जलु-सलोहिय-पूय-वसा-वच्च-खेल-बीहच्छा । दुद्दंसण-बीहणया चिलीणया होंति दुग्गंधा ॥
अह तेसु णिक्खुडेसुं गेण्हइ अंतोमुहुत्त-मेत्तेण । कालेण कम्म-वसओ देहं दुक्खाण आवासं ॥
अइभीम-कसिण-देहो अच्छी-कर-कण्ण-णासिया-रहिओ । होइ णपुंसग-रूवो अलक्खियक्खो कह वि किंचि ॥
जह जह पूरइ अंगं तह तह से णिक्खुडे ण माएइ । जह जह ण माइ अंगं तह तह वियणाउरो होइ ॥
कह कह वि वेयणत्तो चल-चलणच्छेलयं करेमाणो । अह लंबिउं पयत्तो कुडुकुडिच्छाओ तुच्छाओ ॥
ता दिट्ठो परमाहम्मिएहिँ अण्णेहिँ णरय-पालेहिं । धावंति ते वि तुट्ठा कलयल-सद्दं करेमाणा ॥
मारेह लेह छिंदह कड्ढह फालेह भिंदह सरेहिं । गेण्हह गेण्हह एयं पावं पासेहिँ पाएसुं ॥
एवं भणमाण च्चिय एक्के कुंतेहिँ तत्थ भिंदंति । अवरे सरेहिँ एत्तो अवरे छिंदंति खग्गेहिं ॥
एवं विलुप्पमाणो कड्ढिज्जंतो वि काल-पासेहिं । णिवडंतो वज्ज-सिलायलम्मि सय-सिक्करो जाइ ॥
णिवडंतो च्चिय अण्णे लोह-विणिम्मविय-तिक्ख-सूलासु । भिज्जइ अवरो णिवडइ धस त्ति घोराणले पाओ ॥
णिवडिय-मेत्तं एक्कं सहसा छिंदंति तिक्ख-खग्गेहिं । अवरे सरेहिँ तह पुण अवरे कोंतेहिँ भिज्जंति ॥
मुसुमूरेंति य अण्णे वज्जेणं के वि तत्थ चूरेंति । के वि णिसुंभंति दढं गय-पत्थर-लउड-घाएहिं ॥
जंतेसु के वि पीलंति के वि पोएंति तिक्ख-सूलासु । कर-कर-कर त्ति छिंदंति के वि करवत्त-जंतेहिं ॥
छमछमछमस्स अण्णे कुंभीपागेसु णवर पच्चंति । चडचडचडस्स अण्णे उक्कत्तिज्जंति विलवंता ॥

§ ७६) एवं च कीरमाणा हा हा विलवंति गरुय-दुक्खत्ता । कह कह वि बुडबुडेंता सणियं एवं पयंपंति ॥
पसियह पसियह सामिय दुक्खत्तो विण्णवेमि जा किं चि । किं व मए अवरद्धं साहह किं वा कयं पावं ॥
दाऊण सिरे पहरं अह ते जंपंति णिट्ठुर-सरेण । रे रे ण-यणइ मुद्धो एस वराओ समुज्जूओ ॥

1 > P नयण for णियम. 2 > J कुलणीति त्ति, P मईय. 3 > P om. अवरे वि व्वयरहिया, J वि वय-, P धम्मं ति, P दाणं ति for दाएंति. 4 > P हेऊ, J एयं, P तम्हान for अम्हाण, P नरए. 5 > P जं for जा. 6 > P गुरुएणं पुव्व-. 7 > P जण ते for ते पुण. 8 > P उय सीया for अइसीया. 9 > P वसापुप्फसा°, J मंम (?) खेल. 10 > P कुंभ for कुंभी. 11 > P कहिं वि बलमाणचंचुकंक, J विणिवडंत P निवडंत, J तउमय. 12 > J पडि for पाणि, P दुहंध, P om. गंध. 13 > J णरयपालोयंथियछुब्भमाण, P छत्तमाण for छुब्भमाण, P सय for सद्द. 15 > P निकडेसुं संकल-. 16 > P मडहवारं नयरंमि तह च्चिय निकुडाइं वीरेहिं. 17 > P om. वच्च. 18 > P निक्कुडेसुं. 19 > P om. कण्ण, P नपुंसय. 20 > P निकुडे ण, J मायाइ. 21 > P वेयणिल्लो चलचलत्तेलयं, P अव for अह, P कुच्छाओ for तुच्छाओ. 22 > P अह रोद्द for अण्णेहिँ, P निरय for णरय, P पावंति ते य तुट्ठा. 23 > P छिंदह for भिंदह, P एंतं for एयं, P पाडेसु for पाएसुं. 24 > P भणमाणे, P एक्केक्कंतेहिं, P adds सरे before सरेहिँ, P om. एत्तो. 25 > P य for वि, P जायइ. 26 > P अन्नो for अण्णे, P पावो for पाओ. 27 > P °मेत्तो एक्को, P om. तह पुण, P भिंदंति. 28 > P अवरे for अण्णे, P पूरंति for चूरेंति. 29 > J पीलेंति अवरे, for पीलंति के वि, P पूयंति for पोएंति, P सूलेसु, J °करेंति for कर त्ति. 30 > J °छमेंति for छमस्स, P कुंभीपाएसु नवरि, P वरिसंता for विलवंता. 31 > P विलवेंति गुरुय. 33 > P अवरे for अह ते, P सरेहिं, JP याणइ for यणइ (emended). J समुज्जओ P समुजूओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवे मारेसि तुमं जइया रे पाव णिद्दओ होउं । तइया ण पुच्छसि च्चिय कस्स मए किंचि अवरद्धं ॥
मंसं खाइसि जइया जीवाणं चडचडस्स फालेउं । तइया ण पुच्छसि च्चिय कस्स मए किंचि अवरद्धं ॥
अलियं जंपसि जइया रे पावय पावएण हियएणं । तइया मुद्ध ण-याणसि भणसि मए किं कयं पावं ॥
गेण्हसि अदिण्णयं चिय जइया रे मूढ णिग्घिणो होउं । तइया ण पुच्छसि च्चिय कस्स कयं किं व अवरद्धं ॥
परदार-मोहिय-मणो जइया रे रमसि अण्ण-जुवईहिं । तइया मूढ ण-याणसि भणसि मए किं कयं पावं ॥
गेण्हसि परिग्गहं रे जइया असराल-लोह-पडिबद्धो । तइया मूढ ण-याणसि भणसि मए किं कयं पावं ॥
रे रे खेलसि जइया रत्तो आहेडयं सराय-मणो । तइया मूढ ण-याणसि एक्कस्स कए बहुं चुक्को ॥
आलप्पाल-पसत्तो सुयणे पीडेसि रे तुमं जइया । तइया मूढ ण-याणसि एक्कस्स कए बहुं चुक्को ॥
णिय-जाइ-मओम्मत्तो णिंदसि रे सेसयं जणं जइया । तइया मूढ ण-याणसि एक्कस्स कए बहुं चुक्को ॥
रोद्दाणुबद्ध-चित्तो मारेमि इमं ति परिणओ जइया । तइया जाणसि सव्वं संपइ मुद्धो तुमं जाओ ॥
मोत्तूण हरि-हराई जइया तं भणसि को व सव्वण्णू । तइया सव्वं जाणसि एण्हिं रे मुद्धओ जाओ ॥
वेय-विहाण-विउत्तो जइया तं भणसि णत्थि सो धम्मो । तइया सव्वं जाणसि एण्हिं रे अयाणओ जाओ ॥
पावारंभ-णियत्ते णिंदसि ते साहुणो तुमं जइया । तइया तं चिय जाणसि अण्णो पुण अयणओ सव्वो ॥
ण य संति के वि देवा ण य धम्मं मूढ जंपसे जइया । तइया चिंतेसि तुमं मं मोत्तुं ण-यणए अण्णो ॥
मारेह पसुं दारेह महिसयं णत्थि पाव-संबंधो । तइया चिंतेसि तुमं मं मोत्तुं ण-यणए अण्णो ॥
इय भणमाणेहिं चिय फाडेउं चडयडस्स सव्वंगो । विक्खिप्पंति बलीओ मासम्मि सरुहिर-मँसाओ ॥
सो वि बहु-पाव-वसओ छिण्णो खइरं व खंडखंडेहिं । संगलइ गलिय-देहो पारय-रस-सरिस-परिणामो ॥
हा ह त्ति विलवमाणो छुब्भइ जलणम्मि जलिय-जालोले । खर-जलण-ताव-तत्ते सामिय तिसिओ त्ति वाहरइ ॥
अह ते वि णरय-पाला आणे आणे जलं ति जंपंता । आणेंति तंब-तउयं कढमाण-फुलिंग-दुप्पेच्छं ॥
अह तम्मि दिण्ण-मेत्ते गुरु-दाह-जलंत-गलय-जीहालो । अलमलमलं ति सामिय णट्ठा णट्ठा हु मे तण्हा ॥
अह ते वि णिरणुकंपा मास-रसो वल्लहो त्ति जंपंता । अक्कमिऊण गलए संडास-विडंबिओट्ठाणं ॥
धगधगधगेंत-घोरं गलियं गलयम्मि देंति ते लोहं । तेण य विलिज्जमाणा धावंति दिसादिसी तत्तो ॥
खर-जलण-गलिय-तउ-तंब-पूरियं तंब-ताविय-तडिल्लं । वेयरणिं णाम णई भण्णंता सीयल-जलोहं ॥
धावंति तत्थ धाविर-मग्गालग्गंत-घोर-जम-पुरिसा । हण णिहण भिंद छिंदह मारे मारे त्ति भणमाणा ॥
अह वेयरणी पत्ता झस त्ति झंपाउ देंति धावंता । तम्मि विलीणा लीणा पुणो वि देहं णिबद्धंति ॥
तो तम्मि हीरमाणा डज्झंता कलुणयं विलवमाणा । कह कह वि समुत्तिण्णा परिसडिय-लुलंत-सव्वंगा ॥
अह जलण-ताव-तवियं पेच्छंति कलंब-वालुया-पुलिणं । सिसिरं ति मण्णमाणा धावंता कह वि पेच्छंति ॥
तत्थ वि पउलिज्जंता उव्वत्त-परत्तयं करेमाणा । डज्झंति सिमिसिमेंता रेणूए चम्म-खंड व्व ॥
असि-चक्क-सत्ति-तोमर-पत्तल-दल-सिलिसिलेंत-सद्दालं । छायं ति मण्णमाणा असिपत्त-वणम्मि धावंति ॥
जाव य धावंति तहिं सहसा उद्धाइओ महावाओ । खर-सक्कर-वेय-पहार-पत्थरुग्घाय-वोमीसो ॥
अह खर-मारुय-पहयं असि-पत्त-वणं चलंत-साहालं । मुंचइ सत्थ-प्पयरं भिंदंति अंगमंगाइं ॥
छिण्ण-कर-चरण-जुयला दो-भाइज्जंत-सिर-कवालिल्ला । कोंत-विणिभिण्ण-पोट्टा दीह-ललंतंत-पब्भारा ॥
गुरु-डाह-डज्झमाणा पेच्छंति तमाल-सामलं जलयं । किर णिव्ववेइ एसो सीयल-जल-सीय-रोहेण ॥

---

1) P रुद्द for रे, P has some additional lines after अवरद्धं like this : गेण्हसि अदिण्णयं च्चिय जइ या रे मूढ निग्घिणो होउं । तइया न पुच्छसि चिय कस्स मए किंचि पारद्धं ॥. 2) J om. the gāthā : मंसं etc., P फालिउं 3) P om. ten lines from तइया मुद्ध etc. to पीडेसि रे तुमं जइया. 9) J जाइमयम्मत्तो, P संजणं for सेसयं. 10) P मारेसि. 11) J हरिहराई, J अयाणओ for मुद्धओ. 13) P अयाणओ. 14) P धम्मो, P तइया for जइया, P मम for मं, P न याणए. 15) J ण आणए P न याणए. 16) P चडचडस्स, P मंसाम्मि for मासम्मि, J मांसाओ P मीसाउ. 17) P य हु for बहु, P खइरो व्व. 18) P जालउले, P तत्तो. 19) P आणह आणह जलं, P जंपंति, J आणंति तउअं तंबं कढ°. 20) JP गलंत for जलंत (emended), P जीहाला, P सामिय सामिय नट्ठाउ मे. 21) P तह for अह, P भणमाणा for जंपंता, P देंती for गलए, P विडिंबि°. 22) P गलयं, J गलियंमि, J ते सित लोहं, P से लोहं, P तेण वि विभिन्नमाणा, P दिसादिसिं. 23) P निवह for तंब, P कडिल्लं for तडिल्लं, P नेंति for णाम. 24) P °लग्गंति ज घोर. 25) J देंति तावंता, J णिबंधंति P निबंधंति. 26) J ते for तो, J ललंत for लुलंत. 28) P सिमिसिमंता रेणूए मंसखंड वा. 29) P धावंतं. 30) P पावंति for धावंति, P सरसा, P उद्धावई, J -प्पहार, P वामीसो. 31) P पयारं छिंदंति. 32) P ललंतं च गुरुभारा. 33) P सीयजल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव असि-चक्क-तोमर-पूरे पूय-वसा-रुहिर-मुत्त-विच्छिड्डे । अग्गिगाला-मुम्मुर-णिवहे अह वरिसए जलओ ॥
तइ तेण ते परद्धा वेयालिय-पच्चए गुहाहुत्ता । धावंति धावमाणा दीणा सेलेहिँ इम्मंता ॥
पत्ता वि तत्थ केई गुरु-वज्ज-सिलाभिघाय-दलियंगा । पविसंति गुहाएँ मुहं बितियं णरयं व घोर-तरं ॥

§ ७७) अह पलय-काल-जलहर-गज्जिय-गुरु-राव-दूसहं सद्दं । सोऊण परं भीया पडिवह-हुत्तं पलायंति ॥
तत्थ वि पलायमाणा भीम-गुहा-कडय-भित्ति-भाएहिं । मुसुमूरियंगमंगा पीसंते सालि-पिट्ठं व ॥
कहकह वि तत्थ चुक्का णाऊणं एस पुव्व-वेरि त्ति । वेउव्विय-सीह-सियाल-सुणय-सउणेहिँ घेप्पंति ॥
तेहिँ वि ते खज्जंता अंछ-वियंछं खरं च विरसंता । कहकह वि किंचि-सेसा वज्ज-कुडंगं अह पविट्ठा ॥
अह ते वियण-परद्धा खण-मेत्तं ते वि तत्थ चिंतेंति । हा हा अहो अकज्जं मूढेहिँ कयं तमंधेहिं ॥
तइओ च्चिय मह कहियं णरए किर एरिसीओ वियणाओ । ण य सद्दहामि मूढो एण्हिं अणुहोमि पच्चक्खं ॥
हा हा भणिओ तइया मा मा मारेसु जीव-संघाए । ण य विरमामि अहण्णो विसयामिस-मोहिओ संतो ॥
मा मा जंपसु अलियं एवं साहूण उवइसंताणं । को व ण जंपइ अलियं भणामि एयं विमूढ-मणो ॥
साहेंति मज्झ गुरुणो पर-दव्वं णेय घेप्पए किंचि । एवमहं पडिभणिमो सहोयरो कत्थ मे दव्वं ॥
साहेंति साहुणो मे पर-लोय-विरुद्धयं पर-कलत्तं । हा हा तत्थ कहंतो पर-लोओ केरिसो होइ ॥
जइ णे भणंति गुरुणो परिग्गहो णेय कीरए गुरुओ । ता कीस भणामि अहं ण सरइ अम्हं विणा इमिणा ॥
जइ णे भणंति साधू मा हु करे एत्तियं महारंभं । ता कीस अहं भणिमो कह जियउ कुडंबयं मज्झ ॥
संपइ तं कत्थ गयं रे जीव कुडंबयं पियं तुज्झ । जस्स कए अणुदियहं एरिस-दुक्खं कयं पावं ॥
तइया भणंति गुरुणो मा एए णिहण संबर-कुरंगे । पडिभणिमो मूढप्पा फल-साग-सरिच्छया एए ॥
इय चिंतेंति तहिं चिय खण-मेत्तं के वि पत्त-सम्मत्ता । गुरु-दुक्ख-समोच्छइया अवरे एयं ण चाएंति ॥
अह ताण तक्खणं चिय उद्धावइ वण-दवो धमधमेंतो । पवणाइद्ध-कुडंगो दहिउं चिय तं समाढत्तो ॥
अह तत्थ डज्झमाणा दूसह-जालोलि-संवलिय-गत्ता । सत्ता वि सउम्मत्ता भमंति णरयम्मि दुक्खत्ता ॥ अवि य ।
सर-कोंत-समागम-भीसणए दुसहाणल-जाल-समाउलए । रुहिरारुण-पूय-वसा-कलिए सययं परिहिंडइ सो णरए ॥
इय दुक्ख-परंपर-दूसहए खण-मेत्त ण पावइ सइ सुहए । कय-दुक्कय-कम्म-विमोहियया भम रे सुह-वज्जिययं जियया ॥
सव्व-त्थोवं कालं दस-वास-सहस्साइँ पढमए णरए । सव्व-बहुं तेत्तीसं सागर-णामाण सत्तमए ॥
एयं च एरिसं भो दिट्ठं वर-णाण-दंसण-धरेहिं । तं पि णरणाह अण्णे अलियं एयं पयंपंति ॥

§ ७८) अण्णे भणंति मूढा सग्गो णरओ व्व केण भे दिट्ठो । अवरे भणंति णरओ वियड्ढ-परिकप्पिओ एसो ॥
जे च्चिय जाणंति इमं णरयं ते चेय तत्थ वच्चंति । अम्हे ण-याणिमो च्चिय ण वच्चिमो के वि जंपंति ॥
अण्णाणं अण्णाणं ण-याणिमो को वि एस णरओ त्ति । अवरे भणंति अवरा जं होही तं सहीहामो ॥
संसार-णगर-कयवर-सूयर-सरिसाण णत्थि उव्वेओ । किं कोइ डोंब-डिंभो पडहय-सद्दस्स उत्तसइ ॥
अणुदियहम्मि सुणेंता अवरे गेण्हंति णो भयं धिट्ठा । भेरी-कुलीय पारावय व्व भेरीएँ सद्देणं ॥
णरय-गइ-णाम-कम्मं अवरे बंधंति णेय जाणंति । ता ओदिसंति मूढा अवरे जस्सोवरिं रोसो ॥
अवरे चिंतेंति इमं कल्लं विरमामि अज्ज विरमामि । ताव मरंति अउण्णा रहिया ववसाय-सारेणं ॥
दे विरम विरम विरमसु पावारंभाओ दोग्गइ-पहाओ । इय विलवंताणं चिय साहूणं जंति णरयम्मि ॥
ता णरणाह सयण्णो जो वा जाणाइ पुण्ण-पावाइं । जो जाणइ सुंदर-मंगुलाइँ भावेइ सो एयं ॥
णरए णेरइयाणं जं दुक्खं होइ पच्चमाणाणं । अरहा तं साहेज्ज व कत्तो अम्हारिसा मुक्खा ॥

---

1 > J कुंत for तोमर, P पूर for पूय, P om. मुत्त, P अच्चिगाला, P नियरे for णिवहे. 3 > P गुहाभिमुहं वायंतरयं च घोर-. 4 > J भीता P भीया. 5 > P °यंगवंगी, J पिस्संते, P सालिंपिंडं. 6 > P सुयणेहिं for सउणेहिँ. 7 > P तहं मि ते खज्जंता अच्छिविअच्छक्खरं, P वज्जकुडंगेसु पइसंति ॥ वज्जकुडंगपविट्ठा खणमेत्तं तत्थ किंचि चिंतेंति ।. 8 > P अहा for अहो, J धम्मेहिं for मंधेहिं. 9 > P तत्तो for तइओ. 10 > P संघायं, J निसयाविस, P संते. 11 > P मूढं for एयं. 12 > P om. °ए किंचि, P सहोअरं. 13 > P om. पर-, P भणामो for कहंतो. 14 > P नो for णे, P परिग्गओ, J गरुओ, P तरइ for सरइ. 15 > P णो for णे, P साहू साहुकारे, P जियइ. 17 > P सायरससिच्छया पते. 18 > P चिंतंति, P गुरुदत्तसमोपतेच्छ°, P चायंति. 19 > P उव्वावइ. 20 > P °माणो, P संपलित्तंगा, P निरयंमि. 21 > J हीसणए P भीसणाए, J पूअसमा P पूइवसा. 22 > P पाविय, P भमिरे, P वज्जिय जं. 23 > P त्थोयं, P सहस्साइं मं. 24 > J एरिसो, P दिट्ठिं, P नारनाह, P एयं ति जंपंति. 25 > J वियढपरियप्पिओ. 26 > P वुच्चंते. 27 > P होहि त्ति तं. 28 > P नयर, P repeats कयवर, P उव्वेवो, P के वि for कोइ, P पडिहयसद्दसउव्वियइ. 29 > J दट्ठा for धिट्ठा, P कुलाय पारावइ व्व भीरीय सद्देण. 30 > J गई, P ता for ताओ, J अइसंति P उद्दिसंतु, J ज्जस्सोवरी P जस्सावरिं. 31 > P चिंतंति इमो, P थिरमामि सकयसंकेया ।, P ववसारेयसारेण. 32 > P om. विरम. 33 > J जे वा जाणंति, P जो जीणइ, P सो एवं. 34 > P जुं for जं, P मुक्का.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ७९) कह-कह वि आउयंते उव्वट्टो किंचि-सेस-कम्म-मलो । पइसइ तिरिक्ख-जोणिं मणुओ वा जो इमं कुणइ ॥
वय-भंग-सीलु-भंग काम-रई-राग-लोह-कूडत्तं । कूड-तुल-कूड-माणं कूडं टंकं च जो कुणइ ॥
पसु-महिस-दास-पेसा जे य किलिस्संति दुक्ख-तण्हत्ता । पर-लोय-णिरावेक्खा लोयं खाएंति दुस्सीला ॥
एए सव्वे मरिउं अकय-तवा जंति तिरिय-जोणिम्मि । तिरियाणुपुव्वि-रज्जू-कड्ढिज्जंता बइल्ल व्व ॥
तत्थ तस-थावरत्ते संपुण्णापुण्ण-थूल-सुहुमत्ते । वियलेंदिय-पंचेंदिय-जोणी-भेए बहु-वियप्पे ॥
जल-जलणाणिल-भूमी-वणस्सई चेय थावरे पंच । बिय-तिय-चउ-पंचेंदिय-भेए य जंगमे जाण ॥
दुवय-चउप्पय-भेया अपयापय-संकुला चउ-वियप्पा । पसु-पक्खि-सिरीसिव-भमर-महुयराई बहु-वियप्पा ॥
जल-थल-उभय-चरा वि य गयण-चराई य होंति बहु-भेया । णरणाह किंचि सोक्खं इमाण सव्वं पुणो दुक्खं ॥
खोड्डण-खणण-विदारण-जलण-तह-घट्टण-बंध-मोडेहिं । अवरोप्पर-सत्थेहि य थावर-जीवाण तं दुक्खं ॥
छिज्जंति वणस्सइणो वंक-कुहाडेहिँ णिद्दय-जणेणं । लुव्वंति ओसहीओ जोव्वण-पत्ता दुहत्ता य ॥
छुब्भंति कढयढंते उयए जीवा उ बीय-जोणिम्मि । मुसुमूरिज्जंति तहा अवरे जंत-प्पओगेणं ॥
णिद्दय-समत्थ-दढ-बाहु-दंड-पविद्ध-असि-कुहाडेहिं । णरणाह तरुयरत्ते बहुसो पल्हत्थिओ रण्णे ॥
खर-पवण-वेय-पडिबद्ध-गरुय-साला-णमंत-भारेण । भग्गो वणम्मि बहुसो कडयड-सद्दं करेमाणो ॥
पज्जलिय-जलण-जाला-कराल-डज्झंत-पत्त-पब्भारो । तडतडतडस्स डड्डो णरवइ बहुसो वण-दवेण ॥
कत्थइ वज्जासणिणा कत्थइ उम्मूलिओ जल-रएणं । वण-करि-करेण कत्थइ भग्गो णरणाह रुक्खत्ते ॥

§ ८०) गंतूणमचाएंतो लोलंतो कढिण-धरणिवट्ठम्मि । कत्थइ टस त्ति खइओ दुइंदियत्तम्मि पक्खीहिं ॥
खर-णर-करह-पसूहि य रह-सयड-तुरंग-कढिण-पाएहिं । दिट्ठि-विहूणो तेइंदियएसु बहुसो णिसुद्धो हं ॥
उरग-भुयंगम-कुक्कुड-सिहि-सउण-सएहिँ असण-कज्जम्मि । विलवंतो च्चिय खइओ सहसाहुत्तो भय-विसण्णो ॥
खर-दिणयर-कर-संताव-सोसिए तणुय-विरय-जंबाले । मच्छत्तणम्मि बहुसो कायल-सउणेहिँ खइओ हं ॥
बहुसो गलेण विद्धो जाल-परद्धो तरंग-आइद्धो । जलयर-सएहिँ खद्धो बद्धो पावेण कम्मेणं ॥
मयर-खर-णहर-दाविय-तिक्खग्ग-कराल-दंत-करवत्ते । कत्थइ विसमावत्ते पत्तो णिय-कम्म-संतत्तो ॥
कत्थइ अहि त्ति दट्ठुं मारे-मारेह पाव-पुरिसेहिं । खर-पत्थर-पहरेहिं णिहओ अकयावराहो वि ॥
कत्थइ सिहीहिँ खइओ कत्थइ णउलेहिँ खंड-खंड-कओ । ओसहि-गद्धाइद्धो बद्धो मंतेहिँ उरयत्ते ॥
णिट्ठुर-वग्घ-चवेडा-फुड-णहर-विदारिओ मओ रण्णे । महिसत्तणम्मि कत्थइ गुरु-दूसह-भार-दुक्खत्तो ॥
हरि-खर-णहर-विदारिय-कुंभत्थल-संगलंत-रुहिरोहो । पडिओ वणम्मि कत्थइ पक्खि-बलुत्तो सउणएहिं ॥
गुरु-गहिर-पंक-खुत्तो सरवर-मज्झम्मि दिणयर-परद्धो । ताव तहिं चिय सुक्को तावस-थेरो व्व जुण्ण-गओ ॥
कत्थइ वारी-बद्धो बद्धो घण-लोह-संकल-सएहिं । तिक्खंकुस-वेलु-पहार-तज्जणं विसहियं बहुसो ॥
अइभारारोहण-णिसुढियस्स रण्णे बइल्ल-रूवस्स । जीय-सणाहस्स वि कोल्हुएहिँ मासं महं खइयं ॥
कत्थइ विसमावडिओ मुसुमूरिय-संधि-बंधणो दुहिओ । तण्हा-छुहा-किलंतो मुसिऊण मओ अकय-पुण्णो ॥
कत्थइ णंगल-जुत्तो सयड-धुरा-धरण-जूरण-पयत्तो । तोत्तय-पहर-परद्धो पडिऊण ठिओ तहिं चेय ॥
डहणंकण-बंधण-ताडणाइँ वह-छेज्ज-णत्थणाइं च । पसु-जम्ममुवगएणं णरवइ बहुसो वि सहियाइं ॥
हरिणत्तणम्मि तक्खण वियायईं-मय-तणं पमोत्तूणं । सावय-सहस्स-पउरे वणम्मि विवलाइयं बहुसो ॥
कत्थइ य जाय-मेत्तो मुद्धत्तणएण जणणि-परिहीणो । दढ-कोडंडायड्डिय-बाणं वाहं समल्लीणो ॥

---

1) P कह व आउणंते, P पइसति, P जोणी, J जं for जो, P कुणए. 2) P कामरती, P कुडुंतं. 3) J जे किलिस्संति P जोइ किलेसेइ, P निरापेक्खा, P खायंति. 4) J तिरियाणपुव्विरज्जा. 5) P थावरत्तो ते पुन्नापुन्न. 6) P तेय for चेय, J बिइ, P भेएणं for भेए य. 7) P दुप्पय, J अपयापद, P सिरीसवभमरामहुयरबहुविहवियप्पा । 8) P गयणचरा चेय. 9) P खोहण, P वियारणजालणतहघमण. 10) P °स्सइणो कुहाडिधाएण निद्दय, P लुंभंति, P वि for य. 11) P कढकढेंते उदए जीवा तु बीय. 12) J पविद्ध, P सिय for असि. 13) P पविद्ध, P साला निमंतभावेण. 14) P दड्डो. 15) J रयेणं, P करकरेण. 16) P °चायंतो, P वसत्थि for टस त्ति, J विइंदियं तम्मि. 17) P रहसड. 18) P om. भुयंगम, P विवलाइत्तो खइओ. 19) J विअर for विरय, P जंबोले, P काइल-. 21) P दारिय for दाविय. 23) P ओसहिं गंधाइद्दो, P उयरत्ते. 24) P वियारिओ, P सार for भार. 25) J कर for खर, P वियारिय, P पक्खिबलुत्तो. 26) P गुरुपंग°. 27) P कत्थइ वीराबंधो, P तिक्खुंकुसावलपहार, P विसहिउं पयसो. 28) P मयं for महं. 29) J असिऊण for मुसिऊण. 30) P नंगलहुजुत्तो, P चेव for चेय. 31) P तहा for वह. 32) P हरित्तणंमि, J विआयमयतण्णयं, P मयतणयं, P विवलाइओ. 33) P om. य, P कोयंडा, P बाणवाहं.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

गेयस्स दिण्ण-कण्णो कत्थइ णिहओ सरेण तिक्खेणं । कत्थइ पलायमाणो भिण्णो सेल्ल-प्पहारेहिं ॥
कत्थइ धावंतो च्चिय पडिओ विसमम्मि गिरि-वर-झसम्मि । कत्थइ वण-दव-जालावलीहिँ डड्ढो णिरुच्छाहो ॥
णो णिब्भएण चिण्णं तणं पि णो चेय पाणियं पीयं । ण य णिब्भएण सुत्तं णरणाह मयत्तणम्मि मए ॥
सस-संबर-महिस-पसुत्तणम्मि पुरिसेहिँ मंस-लोहेणं । मंसं बहुसो खइयं फालेउं अंगमंगाइं ॥
सर-सत्ति-सेल्ल-सव्वल-णिद्दय-णिक्खित्त-सर-पहारेहिं । बहुसो अरण्ण-मज्झे जीएण णिएण वि विमुक्को ॥
सुय-सारिय-सउणत्ते लावय-तित्तिर-मयूर-समयम्मि । पंजरय-पास-मइयं बहुसो मे बंधणं पत्तं ॥
तण्हा-छुहा-किलंतेहिँ णवर वच्चं पि वंफियं बहुसो । जो उण णिवसइ गब्भे आहारो तस्स तं चेय ॥
कज्जाकज्जं बहुसो गम्मागम्मं अयाणमाणेण । णरवइ भक्खाभक्खं परिहरियं णो भमंतेण ॥ अवि य ।
दुक्खं जं णारयाणं बहु-विविह-महा-घोर-रूवं महंतं, होज्जा तं तारिसं भो तिरिय-गइ-गयाणं पि केसिं चि दुक्खं ।
छेज्जे बंधे य घाए जर-मरण-महावाहि-सोगुद्दुयाणं, णिच्चं संसार-वासे कह-कह वि सुहं साह मज्झं जियाणं ॥
अंतोमुहुत्त-मेत्तं तिरियत्तं को वि एत्थ पावेइ । अण्णो दुह-सय-कलिओ कालमणंतं पि वोलेइ ॥
तिरियत्तणाउ मुक्को कहं पि णिच्छुब्भए मणुय-जम्मे । मणुओ व्व होइ मणुओ कम्माइ इमाइ जो कुणइ ॥
§ ८१) ण य हिंसओ जियाणं ण य विरइं कुणइ मोह-मूढ-मणो । पयइ-मिउ-मद्दवो जो पयइ-विणीओ दयालू य ॥
तणु-कोह-माण-माया जीया विरमंति जे कसाएसु । मूढ-तत्त-णियाणेहिँ य जे होंति य पाव-परिणामा ॥
दट्ठूण य साहुयणं ण वंदिरे णेय णिंदिरे जे य । रंडा दूभग तह दुक्खिया य बंभं धरेमाणी ॥
सीउण्ह-खुप्पिवासाइएहिँ अवसस्स णिज्जराए उ । तिरियाण य मणुयत्तं केसिं पि अकाम-वसयाणं ॥
दारिद्देण वि गहिया धणिय-परद्धा तहा सया थद्धा । सणियाणं पडिऊणं मरंति जलणे जले वा वि ॥
जे पर-तत्ति-णियत्ता णवि थद्धा णेय दोस-गहण-परा । ण महारंभ-परिग्गहण-डंभया णेय जे चोरा ॥
ण य वंचया ण लुद्धा सुद्धा मुद्धा जणे ण दुस्सीला । मरिऊण होंति एए मणुया सुकुले समिद्धे य ॥
जे उण करेंति कम्मं णरय-तिरिक्खत्तणस्स जं जोग्गं । पच्छा विरमंति तहिं कुच्छिय-मणुया पुणो होंति ॥
मणुयाउगं णिबद्धं पुव्विं पच्छा करेंति जे पावं । ते णरय-तिरिक्ख-समा पुरिसा पुरिसत्थ-परिहीणा ॥
णरणाह इमे पुरिसा तिरिया वा एय-कम्म-संजुत्ता । देवा णेरइया वा मरिउं मणुयत्तणे जंति ॥
जायंति कम्म-भूमीसु अहम-भूमीसु के वि जायंति । आरिय-जणम्मि एक्के मेच्छा अवरे पुणो होंति ॥
सक-जवण-सबर-बब्बर-काय-मुरुंडोड्ड-गोंड-कप्पणिया । अरवाग-हूण-रोमस-पारस-खस-खासिया चेय ॥
डोंबिलय-लउस-बोक्कस-भिल्ल-पुलिंदंध-कोत्थ-भररूया । कोंचा य दीण-चंचुय-मालव-दविला कुडक्खा य ॥
किक्कय-किराय-हयमुह-गयमुह-खर-तुरय-मेंढगमुहा य । हयकण्णा गयकण्णा अण्णे य अणारिया बहवे ॥
पावा पयंड-चंडा अणारिया णिग्घिणा णिरासंसा । धम्मो त्ति अक्खराइं णवि ते सुविणे वि जाणंति ॥
एए णरिंद भणिया अण्णे वि अणारिया जिणवरेहिं । मंदर-सरिसं दुक्खं इमाण सोक्खं तण-समाण ॥
चंडाल-भिल्ल-डोंबा सोयरिया चेय मच्छ-बंधा य । धम्मत्थ-काम-रहिया सुह-हीणा ते वि मेच्छ व्व ॥
§ ८२) आरिय-कुले वि जाया अंधा बहिरा य होंति लल्लाया । रुल्ला अजंगम च्चिय पंगुलया चलण-परिहीणा ॥
धणमंतं दट्ठूणं दूरं दूमेंति दुक्खिया जे य । रूविं च मंद-रूवा दुहिया सुहियं च दट्ठूणं ॥
णरणाह पुरिस-भावं महिला-भावं च के वि वच्चंति । मोहग्गि-सिमिसिमेंता णपुंसयत्तं च पावेंति ॥
दीहाउया य अप्पाउया य आरोग्ग-सोक्ख-भागी य । सुभगा य दूभगा वि य अवरे अयसाईं पावेंति ॥

---

1) J दिण्णयण्णो, P कत्थइ धाययमाणो. 2) P णइ for वर, P दड्ढो. 3) J णिब्भएण for णिब्भएण. 4) P मांस लोभेण, P मांसं. 5) J प्पहारेहिं, P मज्जे जीए नीएण. 6) P सउणत्तो, J पासाईयं, J णे for मे, J पत्तो. 7) P णाम for णवर, P भक्खियं for वंफियं, P जो पुण, P गत्तो for गब्भे. 9) P गमाणं for गयाणं. 10) P महाबोहिसोगडुयाणं. 12) P तिरियत्तणओ चुक्को, J कहिं पि, P पि नच्छुब्भए, P अणुउ for मणुओ, P om. होइ. 13) J विरई, P न विरइं, J पयइम्मि मद्दवो, P निउ for मिउ. 14) J अइ for तणु, J लोहेण कया वि for जीया, J णियाणहि. 15) P साहुणयं, P रंडायर-दुब्भगा दु°. 16) P °वासाइयाउ अवसस्स, J वि for य. 17) J व for वि, P इद्धा for थद्धा. 18) J परिग्गहडंभया. 19) P सुकुले सुमिद्धे. 20) P जे पुण. 21) J मणुआउअं, P पुच्छी पुच्छा करेंति. 23) J अकम्म for अहम. 24) J सय for सक, P खसखोसिया, P चेव. 25) P डोंबय, J वोक्कस P बोक्कस्स, J पुलिंध अंध, P पुलिंदव्वकोंवभमररूया, P य वीण, P कुलक्खा. 26) P किक्कयकराय, P हयमुहा गयमुहा, JP तुरया. 27) P दंडा for चंडा. 28) P मंदिर. 29) P मेअ for चेय. 30) J होंति कल्लाय P हों लल्लाया, J रुल्लायंरामच्चिय, P कुल्ला for रुल्ला. 31) J दूमेइ, J रूवं for रूविं. 32) P मोहपि मिसिमिसंता, J वच्चंति for पावेंति. 33) P उ for य in the first two places.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खुज्जा य पंगुला वामणा य अवरे य होंति हीणंगा । मूया बहिरा अंधा केई वाहीहिँ अभिभूया ॥
संजोय-विप्पओगं सुह-दुक्खाइं च बहु-पगाराइं । बहुसो णरवर जम्मण-मरणाणि बहूणि पावेंति ॥
एयं चिय पज्जत्तं णरवर वेरग्ग-कारणं पढमं । जं असुइम्मि वसिज्जइ णव-मासे गब्भ-वासम्मि ॥
असुइ-मल-मुत्त-पउरे छिन्नाडिया-मास-पेसि-समयम्मि । बहुसो अहं विलीणो उयरे च्चिय पाव-कम्मेहिं ॥
बहुसो पवुत्थवइया-गयवइयाणं च गब्भ-संभूओ । खर-खार-मूल-डड्ढो गलिओ रुहिरं व णिक्खंतो ॥
अण्णो गब्भ-गओ च्चिय जणणीएँ मयाएँ जीवमाणो वि । डज्झइ चडप्फडंतो दुसह च्चिय जलण-जालाहिं ॥
अवरो संपुण्णंगो कह वि विवण्णो तहिं अकय-पुण्णो । परिछेइयंगमंगो कड्ढिज्जइ जणणि-जोणीए ॥
कह-कह वि विणिक्खंतो अंतो-संतोस-सासमुज्झंतो । जुण्णो तत्थ विवण्णो बहुसो रुण्णो अकय-पुण्णो ॥
जायंतेण मए च्चिय अणंतसो गरुय-वेयणायल्ला । णीया जणणी णिहणं चलचलुव्वेल्लिर-ससल्ला ॥
कत्थइ य जाय-मेत्तो पंसुलि-समणी-कुमारियाहिं च । चत्तो जीवंतो च्चिय फरिहा-रच्छा-मसाणेसु ॥
तत्थ वि विरसंतो च्चिय खइओ बहु-साण-कोल्हुयाईहिं । थणयं च अलभमाणो कत्थइ सुसिओ तहिं चेय ॥
कत्थइ जायंतो च्चिय गहिओ बालग्गहेण रोद्देण । तत्थ मुओ रुयमाणो माऊए रोयमाणीए ॥
कत्थइ कुमार-भावं पडिवण्णो पुण्ण-लक्खणावयवो । सयण-सय-दिण्ण-दुक्खो विहिणा जम्मंतरं णीओ ॥
कय-दार-संगहो हं बहुसो बहु-सयण-मणहरो पुत्ति । दुग्गय-मणोरहो इव सय-हुत्तं मच्चुणा णीओ ॥
जुवईयण-मणहरणो बहुसो दढ-पीण-सललिय-सरीरो । सिद्धत्थ-कंदली विय टस त्ति भग्गो कयंतेण ॥
पर-दार-चोरियाइसु गहिओ रायावराह-कज्जेण । छेयण-लंछण-ताडण-डहणंकण-मारणं पत्तो ॥
दुब्भिक्ख-रक्ख-खइए जणम्मि णरणाह मे खुहत्तेण । खइयं माणुस-मंसं जण-सय-परिणिंदियं बहुसो ॥
बहु-रइय-चीर-मालो उच्छिट्ठाणिट्ठ-खप्पर-करग्गो । कय-डिंभ-कलयलो हं बहुसो उम्मत्तओ भमिओ ॥
खडुया-मेत्थय-पहराहओ वि दीणत्तणं अमुंचंतो । सरणं अविंदमाणो जणस्स पाएसु पडिओ हं ॥
कत्थइ महिलत्तणए दूसह-दोहग्ग-सोय-तवियाए । दालिद्द-कलह-तवियाएँ तीएँ रुण्णं धव-मणाए ॥
वेहव्व-दूमियाए दूसह-पइ-णेहमसहमाणीए । उर-पोट्ट-पिट्टणेणं णिरत्थयं तं कयं बहुसो ॥
पिययम-विलीय-दंसण-ईसा-वस-रोस-मोहिय-मणाए । णरणाह मए अप्पा झस त्ति अयडम्मि पक्खित्तो ॥
दुस्सीलत्तण-चिंधं पाव-फलं कुसुम-पल्लवुब्भेयं । णासाहर-कण्णाणं छेयं तह भेयणं सहियं ॥
विसम-सवत्ती-संतावियाएँ पइणा अलीढ-गणियाए । णरणाह मए अप्पा विलंबिओ दीण-वयणाए ॥
बहुली व परिगयाए सिसिरे जर-कंथ-उत्थय-तणूए । दुग्गय-घरिणीएँ मए बहुसो तण-सत्थरे सुइयं ॥
वसियं विसमावत्ते हल्लिर-कल्लोल-वीइ-पउरम्मि । तिमि-मयर-मच्छ-कच्छव-भमंत-भीमे समुद्दम्मि ॥
एयाणि य अण्णाणि य णरवर मणुयत्तणम्मि दुक्खाइं । पत्ताइँ अणंताइं विसमे संसार-कंतारे ॥
सिर-दुह-जर-वाहि-भगंदराभिभूएहिँ दुक्ख-कलिएहिं । सास-जलोदर-अरिसा-लूया-विप्फोड-फोडेहिं ॥
णिब्भच्छण-अवमाणण-तज्जण-दुव्वयण-बंध-घाएहिं । फेडण-फाडण-फोडण-घोलण-घण-घंसणाहिं च ॥
साणप्फोडण-तोडण-संकोयण-डहण-झाडणाहिं च । सूलारोवण-बंधण-मद्दण-करि-चमढणाहिं च ॥
सीस-च्छेयण-भेयण-लंबण-तडिवडण-तच्छणाहिं च । खल्लुक्कत्तण-त्रोडण-जलणावलि-डहण-विंयणाहिं ॥
णरवइ णरय-सरिच्छं बहुसो मणुयत्तणे वि णे दुक्खं । सहियं दूसहणिज्जं जम्मण-मरणारहट्टम्मि ॥ अवि य ।
§८३) दूसह-पिय-विओय-संताव-जलण-जालोलि-तावियं । अप्पिय-जण-संगमेण गुरु-वज्जासणिए व्व ताडियं ॥
अइदारिद्द-सोय-चिंता-गुरु-भार-भरेण भग्गयं । भीसण-खास-सास-वाही-सय-वेयण-दुक्ख-पउरयं ॥

1) J य मंगुला, J अद्धा केई, P अहिहूया. 2) P संजोग-, P °ओगा सुहदु°, P पयाराई, P मरणाणि य पावइ बहूणि ।. 3) P असुयंमिवसुज्जइ. 4) P मासपिसि, P उयरे. 5) P पउत्थवइआगइवयायाणं, P मूलदड्ढो, P रुहिरं. 6) J जणणीय मयाय P जणणीए समाइ. 7) J उण्णो for पुण्णो, P कड्ढिज्जइ. 8) P संत for सास, P जुन्नो for जुण्णो. 9) J वेयणायल्लो, P चलुवेल्लिर. 10) P कुमारियाणं च, P रच्छा सुसाणे य ।. 11) P कोल्हुयादीहिं, P चेव. 12) P तत्थ मओ. 14) P मणहरो चिय सय°. 15) P सुललिय, P विय दस त्ति. 16) P रायावराह,-दहणं°. 17) P जणंम्मि P °णाह रे मे. 18) P उच्छिट्ठा°. 19) P खडुया, P पहगहओ. 20) P परिपूरियाए for तवियाए, J तीय रुण्णं, J धवि (?) for धव, P रुण्णं चिय विणोउ ।. 21) P पइणेहम°, P उरपोट्टपिट्टणंमनिर°. 22) P निक्खित्तो for पक्खित्तो. 23) J चिंधं for चिंधं, J छेयम छयण मे सहियं, P तह भेयणं. 24) P पइणो. 25) P बहुलीए परिग्गहियाए, J कंथरोत्थय. 26) P भीमावत्ते for विसमावत्ते, P कच्छभममंति-. 28) P जल for जर, P भगंदराहिंभू°, P सूल for सास, P जलोयरहरिसालूयाहि वि°. 29) P निब्भच्छणाव°, J तह for घण. 30) P साडणफोडण, P संकोडण, J झाडणाइं P उज्झोडणाहि, J चमढणा किंच. 31) P च्छेदणभेदण, J तत्थहाणि च, P खल्लकुत्तण, P दहण. 32) P बहुसो व मणु°, P मए for वि णे. 33) J जालोलिअतविअयं, P ताविइयं, P वज्जाअस°, J ताडिअअं P ताडिअयं. 34) P गिरि for गुरु, J सोत for सास, P वाहि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णरवर एरिस-दुक्खयँ मणुयत्तणयं पि णाम जीवाण । वीसमउ कत्थ हिययं वायस-सरिसं समुद्द-मज्झम्मि ॥
एक्को मुहुत्त-मेत्तं सव्व-त्थोवं तु भुंजए आऊ । पल्लाइँ तिण्णि पुरिसा जियंति उक्कोस-भावेण ॥
तम्हा देवत्तणयं इमेहिँ कम्मेहिँ पावए मणुओ । तिरिओ व्व सम्मदिट्ठी सुर-णारइया ण पावेंति ॥
जल-जलण-तडीवडणं रज्जू-विस-भक्खणं च काऊणं । कारिम्मि-बाल-तवाणि य विविहाइँ कुणंति मूढ-मणा ॥
सीउण्ह-खुप्पिवासाय सकाम-अकाम-णिज्जराए य । मरिऊण होंति देवा जइ सुद्धा होंति भावेण ॥
जे उण सणियाण-कडा माया-मिच्छत्त-सल्ल-पडिवण्णा । मरिऊण होंति तिरिया अट्टज्झाणम्मि वट्टंता ॥
तत्थ वि वंतर-देवा भूय-पिसाया य रक्खसा अवरे । जे मणुयाण वि गम्मा किंकर-णर-सरिसया होंति ॥
सम्मत्त-बद्ध-मूला जे उण विरया व देस-विरया वा । पंच-महव्वय-धारी अणुव्वए जे य धारेंति ॥
कम्म-मल-विमुक्काणं सिद्धाणं जे कुणंति वंदणयं । पूयं अरहंताणं अरहंताणं च पणमंति ॥
पंचायार-रयाणं आयरियाणं च जे गया सरणं । सुत्तत्थोज्झायाणं उज्झायाणं च पणमंति ॥
सिद्धि-पुरि-साहयाणं संजम-जोएहिँ साहु-करणाणं । पयईए साहूणं साहूणं जे गया सरणं ॥
ते पुरिस-पोंडरीया देहं चइऊण कलमलावासं । दिय-लोय-विमाणेसुं मणहर-रूवेसु जायंति ॥
चल-चवल-कोंडल-धरा पलंब-वण-माल-रेहिर-सरीरा । वर-रयणाहरण-धरा हवंति देवा विमाणम्मि ॥
ताण वि मा जाण सुहं सययं णरणाह कामरूवीणं । होइ महंतं दुक्खं देवाण वि देव-लोयम्मि ॥
जे होंति णाडइल्ला गोज्जा तह किंकरा य पडिहारा । भिच्चा भडा य भोज्जा अभिओगाणं इमं दुक्खं ॥
अइतिक्ख-कोडि-धारा-फुरंत-जालावली-जलायंतं । तं एरिस-वज्जहरं वज्ज हरंते सुरा दट्ठुं ॥
पच्छायाव-परद्धा हियएण इमाइं णवरि चिंतेंति । हा हा अहो अकज्जं विसयासा-मोहिएण कयं ॥
जइ तइया विरमंतो अविराहिय-संजमो अहं होंतो । इंदो व्व होज्ज इहइं इंद-सरिच्छो व्व सुर-राया ॥
अव्वो संपइ एसो किंकर-पुरिसो इमाण हं जाओ । तव-सरिसं होइ फलं साहू सच्चं उवइसंति ॥
सरिसाण य सम्मत्तं सामण्णं सेवियं समं अम्हे । अज्झवसाय-गुणेणं एसो इंदो अहं भिच्चो ॥
विसयासा-मोहिय-माणसेण लद्धे जिणिंद-वयणम्मि । ण कओ आयर-भावो चुक्को एयं विसय-सोक्खं ॥
बहु-काल-संचिओ मे जो वि कओ संजमो बहु-वियप्पो । सो वि अकारण-कुविएण णासिओ णवर मूढेण ॥
लोए पूया-हेउं दाण-णिमित्तं च जो तवो चिण्णो । सो धम्म-सार-रहिओ भुस-सरिसो एरिसो जाओ ॥
तडि-जलण-वारि-मरणे बाल-तवे अज्जियं च जं धम्मं । तं कास-कुसुम-सरिसं अवहरियं मोह-वाएण ॥
स च्चिय संजम-किरिया तं सीलं भाव-मेत्त-परिहीणं । तं कीड-खइय-हिरिमिंथ-सच्छहं कह णु णीसारं ॥
विबुह-जण-णिंदिएसुं असार-तुच्छेसु असुइ-पउरेसु । खण-भंगुरेसु रज्जइ भोएसु विडंबण-समेसु ॥
जीवो उण मणुयत्ते तइया ण मुणेइ विसय-मूढ-मणो । जइ एयं जाणंतो तं को हियएण चिंततो ॥
इय ते किंकर-देवा देवे दट्ठूण ते महिड्ढीए । चिंताणल-पज्जलिया अंतो-जालाहिँ डज्झंति ॥

§८४) जे तत्थ महिड्ढीया सुरवइ-सरिसा सुरा सुकय-पुण्णा । छम्मास-सेस-जीविय-समए ते दुक्खिया होंति ॥
कुसुमं ताण मिलायइ छाया परिमलइ आसणं चलइ । विमणा य वाहणा परियणो य आणं विलंघेइ ॥
एरिस-णिमित्त-पिसुणिय-चवणं णाऊण असणो देवो । भय-वुण्ण-दीण-वयणो हियएण इमाइँ चिंतेइ ॥
हा हंस-गब्भ-मउए देवंग-समोत्थयम्मि सयणम्मि । उववजिऊण होहिइ उप्पत्ती गब्भ-वासम्मि ॥
वियसिय-सयवत्त-समे वयणे दट्ठूण तियस-विलयाणं । हा होहिइ दट्ठव्वं थुड्डुकियं पिसुण-वग्गस्स ॥
तामरस-सरस-कुवलय-माले वावी-जलम्मि ण्हाऊण । हा कह मज्जेयव्वं गाम-तलाए असुइयम्मि ॥

1) J जीवयाण. 2) J मेत्तयं, P त्थोयं, P आउं. 3) P सुरनेरइया न पावंति. 4) J तवावि य. 5) J °वासाअस-कामसकामाणि° P °वासाअकामसकाम, P हियएणं for भावेण. 6) P सल्लपरिभित्ता. 7) P भूया य पिसाय रक्खसा. 8) P विरियव्व, P धारंति. 9) P विप्पमुक्का जे सिद्धाणं कु°. 10) P उवज्झायाणं. 11) P पुरसाधयाणं. 12) P पोंडराया, P J रूएसु. 13) P धण for वण. 14) P सययं य नरनाह कामरूवाणं, P लोगंमि. 15) P अभिउयाणं. 16) P अति-तिक्ख, P जलयलेंतं. 17) P चिंतंति, J विसयाविसमो°. 18) J णिरसंको for विरमंतो, P महं for अहं. 20) J सामण्णं. 21) J भाओ. 23) P पूयाहिउं, P तुस for भुस. 24) P तडिजालानलमरणे. 25) J हिरिमिच्छ P हिरिमंथ, P णु निरसारं. 27) P जीवो पुण, P मोह for विसय. 28) P पज्जलिए, P उज्जल for अंतो. 29) P तो for जे, P महिड्ढिया. 30) P परियणा. 31) P चलणं for चवणं, J भयदीणपुण्णवयणो P भयचुन्नदीणविमणो. 33) P सिय for सय, P वियलाणा for विलयाणं, P थुडुंकियं. 34) P मालो वावी°.

मंदार-पारियायय-वियसिय-णव-कुसुम-गोच्छ-चेंचइए । वसिउं दिव्वामोए हा कह होहं असुइ-गंधो ॥
फालिय-मणि-णिम्मविए जलंत-वेरुलिय-मंडिए भवणे । वसिऊणं वसियव्वं जर-कडय-कए उडय-वासे ॥
तेलोक्क-तुंग-चिंता-दुमे व्व णमिऊण जिणवरे एत्थ । णूण मए णवियव्वं मूढाणं अण्ण-पुरिसाणं ॥
वित्थय-णियंब-पुलिणे रमिउं हंसो व्व तियस-विलयाण । हा मणुय-लोय-पत्तो होहं महिलो कुमहिलो व्व ॥
वर-पोमराय-मरगय-कक्केयण-रयण-रासि-विक्खित्तो । णूणं किविणो घेच्छं वराडियं धरणिवट्टाओ ॥
गंधव्व-ताल-तंती-संवलिय-मिलंत-महुर-सद्देणं । बुज्झंतो होही सो संपइ खर-णिट्ठुर-सरेहिं ॥
सुर-सेलम्मि पयासं जिण-जम्मण-मंगलम्मि वट्टंते । तं तत्थ णच्चियं मे तं केण ण सलहियं बहुसो ॥
हा दिणयर-कर-परिमास-वियसियंबुरुह-सरिस-मुह-सोहं । सुरगिरि-सिर-मउड-समं कइया उण जिणवरं दच्छं ॥
दर-दलिय-कुवलउप्पल-विसट्ट-मयरंद-बिंदु-संदुमियं । थण-जुयलं हो सुर-कामिणीण कइया पुणो दच्छं ॥
तियसिंद-विलासिणि-पणय-कोव-पव्विद्ध-कमल-राइल्लं । पउम-महापउमाइसु दहेसु मह मज्जणं कत्तो ॥
तं णवर खुडइ हियए जं तं णंदीसरे जिणिंद-महे । तीय महं पेसविया दिट्ठी धवलुज्जल-विलोला ॥
सुंदरयर-सुर-सत्थ-संकुले वि रंगम्मि णच्चमाणीए । सहि-वयण-णिवेसिय-लोयणाएँ तीए चिरं दिट्ठो ॥
समवसरणम्मि पत्तो विविह-विणिम्मविय-भूसणावयवो । सुरलोय-णिमिय-लोयण-धवलुज्जल-पम्हलं दिट्ठो ॥
हा सुर-णरिंद-णंदण हा पंडय रुइ-भद्द-सालवण । हा वक्खार-महागिरि हिमवंत कहिं सि दट्ठव्वो ॥
हा सीए सीओए कंचण-मणि-घडिय-तीर-तरु-गहणे । हा रम्मय धरणीहर फुरंत-मणि-कंचण-धराणं ॥
हा उत्तर-देव-कुरू हा सुर-सरिए सरामि तुह तीरे । रयणायर-दीवेसुं तुज्झं मे कीलियं बहुसो ॥
इय विलवंतो च्चिय सो थोवत्थोवं गलंत-कंतिल्लो । पवणाहओ व्व दीवो झत्ति ण णाओ कहिं पि गओ ॥ अवि य ।
एवं पलावेहिँ दुहं जणेंतो, पासट्ठियाणं पि सुराण णिच्चं । वज्जासणी-घाय-हओ व्व रुक्खो, पुण्णक्खए मच्चु-वसं उवेइ ॥
दस वास-सहस्साइं जहण्णमाउं सुराण मज्झम्मि । उक्कोसं सव्वट्ठे सागर-णामाइँ तेत्तीसं ॥

§८५) तओ भो भो पुरंदरदत्त महाराय, जं तए चिंतियं 'एयस्स मुणिणो सयल-रूव-जोव्वण-विण्णाण-लायण्ण-संपण्ण-सफल-मणुय-जम्मस्स वि किं पुण वेरग्गं, जेण एयं एरिसं एयंत-दुक्खं पव्वज्जं पवण्णो' त्ति । ता किं इमं पि एरिसं संसार-दुक्खं अणुहविऊण अण्णं पि वेरग्ग-कारणं पुच्छिज्जइ त्ति ।

णरणाह सव्व-जीवा अणंतसो सव्व-जाइ-जोणीसु । जाया मया य बहुसो बहु-कम्म-परंपरा-मूढा ॥
एयं दुह-सय-जलयर-तरंग-रंगंत-भासुरावत्तं । संसार-सागरं भो णरवर जइ इच्छसे तरिउं ॥
भो भो भणामि सव्वे एयं जं साहियं मए तुज्झ । सद्दहमाणेहिँ इमो उवएसो मज्झ सोयव्वो ॥ अवि य ।
मा मा मारसु जीए मा परिहव सज्जणे करेसु दयं । मा होह कोवणा भो खलेसु मेत्तिं च मा कुणह ॥
अलिए विरमसु रमसु य सच्चे तव-संजमे कुणसु रायं । अदिण्णं मा गेण्हह मा रज्जसु पर-कलत्तम्मि ॥
मा कुणह जाइ-गव्वं परिहर दूरेण धण-मयं पावं । मा मज्जसु णाणेणं बहु-माणं कुणह जह-रूवे ॥
मा हससु परं दुहियं कुणसु दयं णिच्चमेव दीणम्मि । पूएह गुरुं णिच्चं वंदह तह देवए इट्ठे ॥
संमाणेसु परियणं पणइयणं पेसवेसु मा विमुहं । अणुमण्णह मित्तयणं सुपुरिस-मग्गो फुडो एसो ॥
मा होह णिरणुकंपा ण वंचया कुणह ताव संतोसं । माण-त्थद्धा मा होह णिक्किवा होह दाण-परा ॥
मा कस्स वि कुण णिंदं होज्जसु गुण-गेण्हणुज्जओ णिययं । मा अप्पयं पसंसह जइ वि जसं इच्छसे धवलं ॥
बहु-मण्णइ गुण-रयणे एक्कं पि कयं सयं विचिंतेसु । आलवह पढमयं चिय जइ इच्छह सज्जणे मेत्तिं ॥
पर-वसणं मा णिंदह णिय-वसणे होह वज्ज-घडिय व्व । रिद्धीसु होह पणया जइ इच्छह अत्तणो लच्छी ॥

---

1 > P चिंचइए, P वसिओ. 2 > J तडय for उडय. 3 > P om. तुंग, P नमियव्वं, P अन्नदेवाणं ॥. 4 > J होहम for होहं. 5 > P पउम for पोम, P कंकेयण, P किमिणो घेत्थं वडाणियं. 6 > P बोहिस्सं for होही सो. 7 > P साहियं for सलहियं 8 > P दाहिणकरपरि° for हा दिणयरकरपरि°, P मुहहोहं, P om. सिर, P समं से कइयाओ जिणवरिंदत्थे ।. 9 > P दरि for दर P भिंदु° for संदु°, P om. हो, P सुरं वरकामि°. 10 > J दहेसु महु मज्जणं. 11 > P नरवर for णवर, P महं for महे. 12 > P om. सुरसय, P नच्चमाणीओ, P निमेसिय. 13 > J °लोयणिम्मिय. 14 > P नंदण for णरिंद, J णंदण पंडय तरुक्कपभद्द-सालवणे. 15 > J सीतोदे, P धरणियरा सोहियफुडकंचण. 16 > P तुज्झ मए कीलियं. 17 > P थोवंथोवं, P च्चि for पि. 18 > P °दुहं जुणेंतो, J वज्जासणि, P रुस्सो पुणक्खए वच्चुवसं. 20 > P पुरंदरयत्त. 21 > P पण्णा for संपण्ण, J सफलजम्म-मणुयस्स वि, P वेरयं for वेरग्गं, P एतं for एयं, P ध्पवन्नो त्ति । तो किं. 22 > P अणुभविऊणं अन्नंमि वे°. 24 > P तुरंग, for तरंग, P तो for भो. 25 > J सं for जं, J तुब्भं for तुज्झ, P मज्ज for मज्झ. 26 > P मारेसु जिए, P कोहणाहो खलेहिं. 27 > P तह for तव, P अगिन्न for अदिण्णं. 28 > P माणेणं बहुमायं मा कुणसु रूवे for the 2nd line. 29 > P परं for परं, J दयं णिच्च णिच्च दी°, P गुरू for गुरुं. 30 > J फुडं for फुडो. 31 > JP -थद्धा. 32 > J कस्सइ कुण णिंदं होज्ज गुण, P गेण्हसु जुओ, P जइ सि for जइ वि. 33 > P मण्णय for मण्णइ, P पि चिंतेसु for विचिंतेसु. 34 > P लच्छि ।.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

अह्लियह धम्म-सीलं गुणेसु मा मच्छरं कुणह तुब्भे । बहु-सिक्खिए य सेवह जइ जाणह सुंदरं लोए ॥
मा कडुयं भणह जणे महुरं पडिभणह कडुय-भणिया वि । जइ गेण्हिऊण इच्छह लोए सुहयत्तण-पडायं ॥
हासेण वि मा भण्णउ णवरं जं मम्म-वेहयं वयणं । सच्चं भणामि एत्तो दोहग्गं णत्थि लोयम्मि ॥
धम्मम्मि कुणह वसणं राओ सत्थेसु णिउण-भणिएसु । पुणरुत्तं च कलासुं ता गणणिज्जो सुयण-मज्झे ॥
इय णरवइ इह लोए एयं चिय णूण होइ कीरंतं । धम्मत्थ-काम-मोक्खाण साहयं पुरिस-कज्जाणं ॥
ता कुणसु आयरं भो पढमं काऊण जं इमं भणियं । तत्तो सावय-धम्मं करेसु पच्छा समण-धम्मं ॥
ता कलि-मल-सयल-कलंक-वज्जिओ विमल-णाण-कंतिल्लो । वच्चिहिसि सिद्धि-वसही सयल-किलेसाण वोच्छेयं ॥
जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं । तिहुयण-सोक्खाण परं णवरं पुण अणुवमं सोक्खं ॥ अवि य ।
संसारे दूर-पारे जलहि-जल-समे भीसणावत्त-दुक्खे, अणंतं-वाहि-पीडा-जर-मरण-मयाबद्ध-दुक्खाइ-चक्के ।
मज्जंताणं जियाणं दुह-सय-पउरे मोह-मूढाण ताणं, मोत्तुं तं केवलं भो जिणवर-वयणं णत्थि हत्थावलंबो ॥' त्ति

§८६) एत्थंतरम्मि कहंतरं जाणिऊण आबद्ध-करयलंजलिणा पुच्छिओ भगवं धम्मणंदणो वासव-महामंतिणा, भणियं च णेण । 'भगवं, जो एस तए अम्ह एयंत-दुक्ख-रूवो साहिओ चउ-गइ-लक्खणो संसारो, एयस्स पढमं किं णिमित्तं, जेण एए जीवा एयं परिभमंति' त्ति । भणियं च गुरुणा धम्मणंदणेण । 'भो भो महामंति, पुरंदरदत्त महाराय, णिसुणेसु, संसार-परिभमणस्स जं कारणं भणियं तेलोक्क-बंधूहिं जिणवरेहिं ति ।

कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोहा य पवड्ढमाणा । चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइँ पुणब्भवस्स ॥
अण्णाणंधो जीवो पडिवज्जइ जेण विसम-दोग्गइ-मग्गे । मूढो कज्जाकज्जे एयाणं पंचमो मोहो ॥

तत्थ कोहो णाम जं केणइ अवरद्धे वा अणवरद्धे वा मिच्छा-वियप्पेहिं वा भावयंतस्स परस्स उवरिं बंध-घाय-कस-च्छेय-तज्जणा-मारणाइ-भावो उववज्जइ तस्स कोहो त्ति णामं । जो उण अहं एरिसो एरिसो त्ति तारिसो त्ति य जाइ-कुल-बल-विज्जा-धणाईहिं एसो उण ममाहमो किं एयस्स अहं विसहामि त्ति जो एरिसो अज्झवसाओ अहं ति णाम सो माणो त्ति भण्णइ । जो उण इमेणं पओगेणं इमेण वयण-विण्णाणेणं इमेणं वियप्पेणं एयं परं वंचेमि त्ति, तं च सकारणं णिकारणं वा, सव्वहा वंचणा-परिणामो जो एसो सव्व-संसारे माया माय त्ति भण्णइ । जो उण इमं सुंदरं इमं सुंदरयरं एयं गेण्हामि इमं ठावेमि एयं रक्खामि त्ति सव्वहा मुच्छा-परिणामो जो सो लोहो त्ति भण्णइ । तत्थ जो सो कोवो सो चउप्पयारो सव्वण्णूहिं भगवंतेहिं परूविओ । तं जहा । अणंताणुबंधी, अप्पच्चक्खाणावरणो, पच्चक्खाणावरणो, संजलणो चेय । तत्थ य

पव्वय-राई-सरिसो पढमो बीओ उ पुढवि-भेय-समो । वालुय-रेहा तइओ होइ चउत्थो य जल-रेहा ॥
पव्वय-राइ-सरिच्छो कोवो जम्मे वि जस्स जो हवइ । सो तेण किण्ह-लेसो णरवर णरयं समल्लियइ ॥
खर-पुढवी-भेय-समो संवच्छर-मेत्त-कोह-परिणामो । मरिऊण णील-लेसो पुरिसो तिरियत्तणे जाइ ॥
वालुय-रेहा-सरिसो मास-चउक्केण कोह-परिणामो । मरिऊण काउ-लेसो पुरिसो मणुयत्तणमुवेइ ॥
जल-रेहा-सारिच्छा पुरिसा कोहेण तेउ-लेस्साए । मरिऊण पक्ख-मेत्ते अह ते देवत्तणमुवेंति ॥
माणो वि चउ-वियप्पो जिणेहिँ समयम्मि णवर पण्णविओ । णामेहि पुव्व-भणिओ जं णाणत्तं तयं सुणह ॥
ण णमइ सेलत्थंभो ईसिं पुण णमइ अत्थिओ थंभो । कह-कह वि दारु-घडिओ सवसो चिय होइ वेत्तमओ ॥
सेलत्थंभ-सरिच्छेण णवर मरिऊण वच्चए णरए । किंचि पणामेण पुणो अट्ठिय-थंभेण तिरिएसु ॥
दारुय-थंभ-सरिच्छेण होइ माणेण मणुय-जम्मम्मि । देवत्तणम्मि वच्चइ वेत्तलओ णाम सम-माणो ॥
माया वि चउ-वियप्पा वंस-कुडंगी य मेंढग-विसाणा । धणुओरंप-सरिच्छा ईसिं वंकाउ गप्पडिया ॥

1 > P अअज्झिहिय for अह्लियह, P ह for य before सेवह. 2 > P जणं for जणे, P पडायं. 3 > P य for वि, P नरवर जं. 5 > P नरवर for णरवइ, J च्चिय होइ णूण कीरंतं, P साहसं for साहयं. 6 > P तो for भो, P जइ for जं. 7 > P वसइं for वसही. 8 > P वाहिणा णेय, P तहुयणसोक्खाउ परं. 9 > P जलहिसममहाभी°, P मयाणेकतिक्खाइं. 10 > P ते for तं. 11 > P om. कहंतरं, J भयवं. 12 > P एसो for एस, J om. अम्ह, P om. एयंत, P लक्खणं, J एएण for एए. 13 > J om. एयं, P पुरंदरयत्त, P परिभवणस्स. 14 > P बंधू for बंधूहिं, P om. °हिं जिणवरेहिं etc. to अणवरद्धे वा. 15 > J अणिग्गिहीया. 17 > P बधघायतज्जणमा°. 18 > P कोवो for कोहो, P om. त्ति तारिसो त्ति. 19 > J कीस for किं, P om. अहं, J विसहमि P विसहामो, J एरिस अज्झवसाओ सो माणो. 20 > P जो पुण, P वयणभिन्नासेणं, P एयं परवंचमित्ति. 21 > P सा for जो एसो, JP संसारमाया, P इमं न सुंदरं इमं च न सुंदरं एयं, P ठावेमि इमं न देमि एयं. 22 > P लोभो, J om. भगवंतेहिं. 23 > J अप्पच्चक्खाणो, P om. तत्थ य. 24 > P बिइओ, J adds उ later, J पुढवीभेय, J जलरेहो. 25 > राई for राइ, P जस्स नो घडइ ।. 26 > P तिरियत्तणं, J जाई P जायइ. 27 > P सरिसा सास, P परिणामा, P कोउलेसा, P मणुयत्तणे जंति ।. 28 > J जलरेहासरिसो उण पुरिसा कोहेण तउ तेउ, P सारिच्छा कीलंतपणट्ठ कोवसब्भावो । मरिऊण तेउलेसा पुरिसा देवत्तणे जंति ।. 29 > P नामेण for णामेहि, J णाणं तं for णाणत्तं. 30 > P उण for पुण. 31 > P उणो for पुणो. 32 > P दारुत्थंभ, J सममाणे. 33 > P मेढंगवसाणा, P धणउरंवसरिच्छा ईसिं च काउ खप्पडिया, J सरिच्छो ईसी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंस-कुडंगो अइवंक-वलिय-समाओ अवस्स णरयम्मि । जाइ तिरिएसु णवरं मय-सिंग-समाएँ लेसाए ॥
घणुओरंप-सरिच्छो माया-बंधेहिँ होइ मणुयत्तं । होइ अवस्सं देवो ईसी-वंकाएँ मायाए ॥
लोहो वि चउ-वियप्पो किमि-राओ होइ णीलि-राओ य । कद्दम-राय-सरिच्छो होइ चउत्थो हलिद्दि व्व ॥
पढमेण होइ णरयं बीएण भणंति णवर तिरियत्तं । तइएण मणुय-जोणिं होइ चउत्थेण देवत्तं ॥
कोवो उव्वेयणओ पिय-बंधव-णासणो णरवरिंद । कोवो संतावयरो सोग्गइ-पह-रुंभओ कोवो ॥

§८७) अवि य कुविओ पुरिसो ण गणेइ अत्थं णाणत्थं, ण धम्मं णाधम्मं, ण कम्मं णाकम्मं, ण जसं णाजसं, ण कित्ती णाकित्ती, ण कज्जं णाकज्जं, ण भक्खं णाभक्खं, ण गम्मं णागम्मं, ण वच्चं णावच्चं, ण पेयं णापेयं, ण बलं णाबलं, ण दोग्गई ण सोग्गई, ण सुंदरं णासुंदरं, ण पच्छं णापच्छं ति । अवि य ।

बुहयण-सहस्स-परिणिंदियस्स पयईएँ पाव-सीलस्स । कोवस्स ण जंति वसं भगवंते साहुणो तेण ॥ जेण,
मिच्छा-वियप्प-कुविओ कोव-महापाव-पसर-पडिबद्धो । मारेइ भायरं भइणियं पि एसो जहा पुरिसो ॥'

भणियं च णरवइणा 'भयवं, ण-याणिमो को वि एस पुरिसो, केरिसो वा, किं वा इमेण कयं' ति । भणियं च गुरुणा ।

"जो एस तुज्झ वामे दाहिण-पासम्मि संठिओ मज्झ । भमरंजण-गवलाभो गुंजाफल-रत्त-णयण-जुओ ॥
तिवलि-तरंग-णिडालो-भीसण-भिउडी-कयंत-सारिच्छो । भुमयावलि-भंगिल्लो रोस-फुरंताहरोट्ठ-जुओ ॥
दढ-कढिण-णिट्ठुरंगो बीओ कोवो व एस संपत्तो । एएण कोव-गहिएण जं कयं तं णिसामेहि ॥

§ ८८) अत्थि बहु-कणय-घडियं फुड-रयण-फुरंत-विमल-कंतिल्लं । दमिलाण कंचि-देसं पुहईय व कोंडलं एक्कं ॥
उत्तत्त-कणय-मइया फरिहा-पायार-रुचिर-गुण-सोहा । तम्मि पयासा णयरी कंची कंचि व्व पुहईए ॥

तीए वि य महाणयरीए पुव्वदक्खिणा-भाए तिगाउय-मेत्ते रगडा णाम संणिवेसो । सो य केरिसो । विंझाडइ-जइसओ दरिय-मत्त-महिस-संकुलो, हर-णिलओ जइसओ उद्दाम-वसह-ढेक्कंत-रेहिरु, मलय-महागिरि-जइसओ दीहर-साहि-सय-संकुलु, णहंगणाभोउ जइसओ पयड-गहवइ-सोहिओ त्ति । अवि य ।

धण-धण्ण-सालि-कलिओ जण-सय-वियरंत-काणणो रम्मो । रगड त्ति संणिवेसो गोउल-सय-मिलिय-गोट्ठयणो ॥
तम्मि य जम्म-दलिद्दो बहुलीय-रुयंत-परिगओ चंडो । कलहाबद्ध-कलयलो सुसम्मदेवो त्ति वसइ दिओ ॥

तस्स य भद्दसम्मो णाम जेट्ठउत्तो । सो य बालत्तणे चेय चंडो चवलो असहणो गव्विओ थद्धो णिट्ठुरो णिट्ठुर-वयणो सव्व-डिंभाणं चेय दुद्धरिसो अणवराहिणो अण्णे डिंभे य परिताडयंतो परिभमइ । तस्स तारिसस्स दट्ठूण सब्भावं पयई व डिंभेहिं कयं णामं चंडसोमो त्ति गुण-णिप्फण्णं णामं । ता णरणाह, सो उण एसो । इमस्स य गुरुयणेणं सरिस-गुण-कुल-सील-माण-विहव-विण्णाण-विज्ञाणं बंभण-कुलाणं बालिया बंभण-कण्णया पाणिं गाहिया । ते वि तस्सेव कुडुंब-भारं णिक्खिविऊण मूढ-लोग-वाया-परंपरा-मूढा दूसह-दालिद्द-णिव्वेय-णिव्विण्णा गंगाए तित्थयत्ता-णिमित्तं विणिग्गया माया-पियरो त्ति । एसो वि चंडसोमो कय-णियय-वित्ती जाव जोव्वणं समारूढो । सा वि णंदिणी इमस्स महिला तारिसे असण-पाण-पावरण-णियंसणा-विए असंपडंते विविह-विलासे तहा वि जोव्वण-विसट्टमाण-लायण्णा रेहिउं पयत्ता । अवि य ।

भुंजउ जं वा तं वा परिहिज्जउ जं व तं व मलिणं वा । आऊरिय-लायण्णं तारुण्णं सव्वहा रम्मं ॥

तओ तम्मि तारिसे जोव्वणे वट्टमाणा सा णंदिणी केरिसा जाया ।

जत्तो जत्तो वियरइ तत्तो तत्तो य कसिण-धवलाहिं । अच्चिज्जइ गाम-जुवाण-णयण-णीलुप्पलालीहिं ॥

§ ८९) तओ इमो चंडसोमो तं च तारिसं पेच्छमाणो अक्खंडिय-कुल-सीलाय वि तीय अहियं ईसा-मच्छरं समुव्वहिउमाढत्तो । भण्णइ य,

---

1) P अइवंगवलियओ वच्चइ अवस्स, P जाति for जाइ, P संग for सिंग, P मायाए for लेसाए. 2) P धणउरंव-, J मायाबद्धे व होइ, P ईसि-. 3) J राइ for राय, P हलिद्द व्व. 4) J वितिएण for बीएण, P भवन्ति for भणंति, P तइए माणुसजोणी. 5) J कोहो, P उव्वेवणओ, J रुंभओ कोओ. 6) J ण अणत्थं P नाणेत्थं, J om. णाधम्मं, P न कामं for ण कम्मं, J णाअकम्मं P नोकामं, P न यसं, J णा अजसं P णोयसं. 7) J णा अकित्ती, J णा अकज्जं, J णा अभक्खं, J णा अगम्मं. 8) P सोयई for सोग्गई, P न पंथं नापंथं ति. 9) P बहु for बुह. 10) J मेच्छामिअप्प, J पावपडलपसरद्धो. 11) P om. केरिसो वा, J किमेण for किं वा इमेण. 12) J P वामो (?), J वासंमि for पासम्मि, P गवलातो for गवलाभो. 13) J भुमयावल-. 14) P रूवी for बीओ, P व्व for व, P हियएण for गहिएण, P निसामेह. 15) J दमिलोण कंचि देसं पुहवीय P दमिलाकंति निवेसं पु. 16) J रुइय for रुचिर. 17) J तीय य कंचीय महा°, J °दक्खिणे P पुव्वभक्खिणा-. 18) P उम्मत्त for मत्त, P हरिणलओ, P वसभढेकंतरेहिरो, P सहि for साहि. 19) P नहंगनाहोउ. 20) P वियरत्तकाणरणारामो, P ओल for गोउल. 21) P बहुलीव-, J कलहोवद्ध. 22) P रुद्दसोमो for भद्दसम्मो, P चेव चंडो. 23) P °णो वि अण्णे, P om. य, P तस्स य तारिसयस्स, P सभावपइयं च डिंभेहिं. 24) P निप्फन्नं नामं ।, P ताण for ता, P om. य, P सीलनाणविहवविज्जाविन्नाणं. 25) P पाणी गहिया, J तस्सेय P तस्सेवि. 26) P वाय for वाया, P दारिद्दनिव्वेय, P तित्थयत्ताए निमित्तं, P मापियरो. 27) P सो for सा, P पाणे for पाण, J णिअंसणादि अ असं°. 28) P वि विहव-, P -वोसट्टमाणलायण्ण रेहिउं पयत्ते ।, J om. अवि य. 29) P भुज्जउ, P परिहिज्जिउ इं व वत्थं वा ।, P रुण्णं for रम्मं. 30) J वट्टमाणे, P सो for सा. 31) P वत्तो for the first तत्तो. 32) P अक्खंडिय, J कुलसीलाय वि तीय यहिअयं P कुलसीलयवित्तीय अहियं. 33) J om. भण्णइ य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे धणिणो होंति णरा वेस्सा ते होंति णवरि रोराणं । दट्ठूण सुंदरयरं ईसाए मरंति मंगुलया ॥

णरवर, अहिओ इमाणं अहम-णर-णारीणं ईसा-मच्छरो होइ । अवि य ।

अत्थाणाभिणिवेसो ईसा तह मच्छरं गुण-समिद्धे । अत्ताणम्मि पसंसा कुपुरिस-मग्गो फुडो एसो ॥

तओ एवं णरणाह, तीय उवरिं ईसं समुव्वहमाणस्स वच्चइ कालो ।

अह धवल-कास-कुसुमो णिम्मल-जल-जलय-रेहिर-तरंगो । सरएण विणिम्मविओ फलिय-मइओ व्व जिय-लोओ ॥
जोण्हा-जलेण पच्चालियाइँ रेहंति भुयण-भायाइं । पलओव्वेल्लिर-भीसण-खीरोय-जलाविलाइं व ॥
दर-लुव्वमाण-कलमा दर-कुसुमिय-सत्तिवण्ण-मयरंदा । दर-वियसमाण-णीमा गामा सरयम्मि रमणिज्जा ॥
णिप्फण्ण-सव्व-सासा आसा-संतुट्ठ-दोग्गय-कुडुंबा । ढेकंत-वसह-रुइरा सरयागम-मुदिया पुहई ॥

तओ एयं च एरिसं पुहइं अवलोइऊण परितुट्ठा णड-भट्ट-मुट्ठिय-चारण-गणा परिभमिउं समाढत्ता । तम्मि य गामे एक्कं णड-पेडयं गामाणुगामं विहरमाणं संपत्तं । तत्थ पहाण-मयहरो हरयत्तो णाम । तेण तस्स णडस्स पेच्छा दिण्णा, णिमंतियं च णेण सव्वं गामं । तत्थ छेत्त-बइल्ल-जुय-जंत-जोत्त-पग्गह-गो-महिस-पसु-वावडाण दिवसओ अणवसरो दट्ठूण तेण राईए पढम-जामे पस्संते कलयले संठिए गो-वग्गे संजमिए तण्णय-सत्थे पसुत्ते डिंभयणे कय-सयल-घर-वावारा गीय-मुरय-सद्द-संदाणिया इव णिक्खंतुं पयत्ता सव्व-गामउडा । अवि य ।

गहिय-दर-रुइर-लीवा अयरे वच्चंति मंचिया-हत्था । परिहिय-पाउय-पाया अवरे डंगा य घेत्तूण ॥

§९०) एसो वि चंडसोमो णिय-जाया-रक्खणं करेमाणो । कोऊहलेण णवरं एयं चिंतेउमाढत्तो ॥

'अव्वो जइ णडं पेच्छओ वच्चामि, तओ एसा मे जाया, कहं अह इमं रक्खामि । ता णडो ण दट्ठव्वो । अह एयं वि णेज्ज, ण जुज्जइ तम्मि रंगे बहु-सुंदर-जुवाण-सय-संकुल-णयण-सहस्स-कवलियं काउं जे । सो वि मम भाया तहिं चेव तं णडं दट्ठुं गओ त्ति । ता जं होउ तं होउ । इमीए सिरिसोमाए भेणीए समप्पिऊण वच्चामि णडं दट्ठुं । समप्पिऊण, कोंटिं घेत्तूण गओ एसो चंडसोमो सो । चिर-णिग्गए य तम्मि सिरिसोमाए भणियं 'हला णंदिणि, रमणीओ को वि एसो णच्चिउं समाढत्तो, ता किं ण खणं पेच्छामो' । णंदिणीए भणियं 'हला सिरिसोमे, किं ण-याणसि णिययस्स भाउणो चरिय-चेट्ठियं जेण एवं भणसि । णाहं अत्तणो जीएण णिव्विण्णा । तुमं पुण जं जाणसि तं कुणसु' त्ति भणमाणी ठिया, सिरिसोमा पुण गया तं णडं दट्ठूणं ति । तस्स य चंडसोमस्स तम्मि रंगे चिरं पेच्छमाणस्स पट्ठीए एक्कं जुवाण-मिहुणयं मंतेउं समाढत्तं । भणियं च जुवाणेणं ।

'सुंदरि सुमिणे दीससि हियए परिवससि घोलसि दिसासु । तह वि हु मणोरहेहिँ पच्चक्खं अज्ज दिट्ठासि ॥
तुह सोहग्ग-गुणिंधण-वड्ढिय-जलणावली महं कामो । तह कुणसु सुयणु जह सो पसमिज्जइ संगम-जलेण ॥'

एयं मंतिज्जमाणं सुयं चंडसोमेण आसण्ण-संठिएणं । दिण्णं च णेण कण्णं । एत्थंतरम्मि पडिभणिओ तीए तरुणीए सो जुवाणो

'बालय जाणामि अहं दक्खो चाई पियंवओ तं सि । दढ-रोहिओ कयण्णू णवरं चंडो पई अम्ह' ॥

§९१) एयं च सोऊण चंड-सद्दायण्णणा जाय-संकेण चिंतियं चंडसोमेणं । 'णूणं एसा सा दुरायारा मम भारिया । ममं इहागयं जाणिऊण इमिणा केण वि विडेण सह मंतयंती ममं ण पेच्छइ । ता पुणो णिसुणेमि किमेत्थ इमाणं णिप्फण्णं दुरायाराणं' ति । पडिभणियं च जुवाणेण ।

'चंडो सोम्मो व्व पई सुंदरि इंदो जमो व्व जइ होइ । अज्ज महं मिलियव्वं घेत्तव्वा पुरिस-वज्झा वा' ॥

---

1) P वेतातो for वेस्सा ते, J inter. णवरि होंति, P नवर रोराण, P सुंदरयणं. 2) P इमाणमहम, J -णारीणं इमाणं ईसा. 3) J अत्थाण अभि°. 4) J एयं for एवं, P वच्चए. 5) J फलियमइय P फालिहमइउ. 6) P पज्जालियाइं, P पलओवेल्लिर, J व्व for व. 7) P कलमाणकलमादर कुसुमयसत्तिवण्णे मरंदा, J णीवा for णीमा. 8) P निप्पन्न, P संतुट्ठदोग्गयकुडुंगा । ढेंकतवसहि-, P गदिया for मुदिया. 9) P मुढिय for मुट्ठिय, P मासे for गामे. 10) J णडवेडयं, P °गामवियरमाणं, P तम्मि य for तत्थ. 11) J च से णेण सव्वगामं, P ते य for तत्थ, J -वइल्लजुयं P छयलजुय, P om. जोत्त, P महिसि-, P अवसरो. 12) P पसंते, P वावारो. 13) J ईय for इव. 14) P पागा for पाया, P उ for य. 15) P चिंतिउ°. 16) P नड for णडं, J कह, P इमं च रक्खामि, P om. ता, J णेज्जा. 17) P -जायाणसयसंकुले, J om. तहिं चेव. 18) P संहोउं for तं होउ, P भइणीए for भेणीए, P दट्ठुणं for दट्ठुं, J om. समप्पिऊण, J कोंगी P कोंटि. 19) J om. सो, J om. य, P नंदिणी, J को वि च (य?) एसो P को विउ एसो. 20) P णच्चिउमाढत्तो, J भाउअस्स चरियचेट्ठिअं. 21) P जीविएण, J om. पुण, P ट्ठिओ for ठिया. 22) P उण for पुण, P पट्ठी एक्कं ति जुवाणमिहुणयं मंते समाढत्तं (J adds ए after पट्ठि later and it has some letter, not easily identified, between एक्कं and जु°, J समाढत्तो. 25) P जाला° for जलणा°, P महकामो, P कुण for कुणसु. 26) P एयंच, मंति°, J आसण्ण-ट्ठिएणं. 27) P बालय जणोमि, P मज्झ for अम्ह. 28) J om. चंडसद्दायण्णणा, P जाया से केण. 29) P ममभिहागयं, P इमिणा य नो केण. 30) P om. च, P जुवाणेण. 31) P सोमो, JP जसो for जमो, P इह होज्ज for जइ होइ, P adds नो before घेत्तव्वा, P om. वा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं च तरुणीए । 'जइ एवं तुह णिच्छओ ता जाव मह पई इह कहिं पि णड-पेच्छणयं पेच्छइ ता अहं णिय-गेहं गच्छामि, तत्थ तए मम मग्गालग्गेणं चेय आगंतव्वं' ति भणिऊण णिग्गया, घरं गया सा तरुणी । चिंतियं च चंडसोमेण 'अरे, स च्चिय एसा दुरायारा, जेण भणियं इमीए 'चंडो मह पइ' त्ति । अण्णं च 'इह चेय पेच्छणए सो कहिं पि समागओ' त्ति । ण तीए एत्थ अहं दिट्ठो त्ति । ता पेच्छ दुरायारा दुस्सीला महिला, एएणं चेय खणेणं एमहंतं आलप्पालं आढत्तं । ता किं पुण एत्थ मए कायव्वं' ति । जाव य इमं चिंतेइ चंडसोमो हियएणं ताव इमं गीययं गीयं गाम-णडीए ।

जो जसु माणुसु वल्लहउँ तं जइ अण्णु रमेइ । जइ सो जाणइ जीवइ व सो तहु प्राण लएइ ॥

§ ९२) एयं च णिसामिऊण आबद्ध-तिवलि-तरंग-चिरइय-भिउडी-णिडालवट्टेणं रोस-फुरफुरायमाणाहरेणं अमरिस-वस-विलसमाण-भुवया-लएणं महाकोव-कुविएणं चिंतियं । 'कहिं मे दुरायारा सा य दूसीला वच्चइ अवस्सं से सीसं गेण्हामि' त्ति चिंतेंतो समुट्ठिओ, कोंटिं घेत्तूण गंतुं च पयत्तो । महा-कोव-धमधमायमाण-हियओ णियय-घराहुत्तं गंतूण य बहल-तमोच्छइए सयले भूमि-भागे घर-फलिहस्स पट्ठि-भाए आयारिय-कोंटी-पहार-सज्जो अच्छिउं समाढत्तो । इओ य उक्खेडे पेच्छणए सो तस्स भाया भइणी य घर-फलिहय-दुवारेण पविसमाणा दिट्ठा णेणं चंडसोमेणं । दट्ठूण य अवियारिऊण पर-लोयं, अगणिऊण लोगाववायं, अयाणिऊण पुरिस-विसेसं, अवुज्झिऊण णीई, अवहत्थिऊण सुपुरिस-मग्गं, सव्वहा कोव-विस-वेय-अंधेण विय पहओ कोंकीए सो भाया भइणी वि सिरिसोमा । ते य दुवे वि णिवडिया धरणिवट्ठे । 'किर एसो सो पुरिसो, एसा वि सा मम भारिय' त्ति 'आ अणज्ज' त्ति भणमाणो जाव 'सीसं छिंदामि' त्ति कोंटी आभामिऊणं पहाविओ ताव य झण त्ति फलिहए लग्गा कोंटी । तीय य सद्देण विउद्धा सा कोट्टय-कोणाओ णंदिणी इमस्स भारिया । भणियं ससंभमाए तीए 'हा हा दुरायार, किमेयं तए अज्झवसियं' ति घाइया ते णियय-बहिणि त्ति भाया वि' । तं च सोऊणं ससंभमेण णिरूविया जाव पेच्छइ पाडिए तं भइणीयं ति तं पि भाउयं ति । तओ संजाय-गरुय-पच्छायावेणं चिंतियं णेण ।

'हा हो मए अकज्जं कह णु कयं पाव-कोव-वसएणं । मिच्छा-वियप्प-कप्पिय जाया अलियावराहेणं ॥
हा बाले हा वच्छे हा पिइ-माया-समप्पिए मज्झ । अह भाउणा वि अंते केरिसयं संपयं रइयं ॥'

एयं च चिंतिऊणं 'हा हतोम्हि' त्ति भणमाणो मुच्छिओ, पडिओ धरणि-वट्ठे । णंदिणी वि विसण्णा ।

हा मह देयर वल्लह हा बाले मह वयंसि कत्थ गया । हा दइय मुंच मा मा तुमं पि दिण्णं ममं पावं ॥

§ ९३) खण-मेत्तस्स य लद्ध-सण्णो विलविउं पयत्तो चंडसोमो ।

हा बालय हा वच्छय कह सि मए णिग्घिणेण पावेणं । भाउय वच्छल मुद्धो णिवाइओ मूढ-हियएणं ॥
हा जो कडियल-वूढो बालो खेलाविओ सणेहेणं । कह णिइएण सो च्चिय छिण्णो सत्थेण फुरमाणो ॥
हा भाउय मह वल्लह हा भइणी वच्छला पिउ-विणीया । हा माइ-भत्त बालय हा मुद्धय गुण-सयाइण्ण ॥
चलियस्स तित्थयत्तं मग्गालग्गो जया तुमं पिउणो । पुत्त तुमं एस पिया भणिऊण समप्पिओ मज्झ ॥
जणणीए पुण भणिओ ओ अंतालूहणो ममं एसो । पुत्त तुमे दट्ठव्वो जीयाओ वि वल्लहो वस्सं ॥
ता एवं मज्झ समप्पियस्स तुह एरिसं मए रइयं । पेच्छ पियं पिय-वच्छय कोव-महारक्ख-गहिएणं ॥
वीवाहं वच्छाए कारेंतो संपयं किर अउण्णो । चिंतिय-मणोरहाणं अवसाणं केरिसं जायं ॥
किर भाउणो विवाहे णव-रंगय-चीर-बद्ध-चिंधालो । परितुट्ठो णच्चिस्सं अप्फोडण-सद्द-दुल्ललिओ ॥
जाव मए च्चिय एयं कुविएण व पेच्छ कयं महकम्मं । अण्णहयँ चिंतियं मे घडियं अण्णाए घडणाए ॥

1 > P कहं for कहिं, P ण for णड, P ताव for ता, J णिअअ for णिय, P वच्चामि for गच्छामि. 2 > J om. धरं गया, J अवरे for अरे. 3 > P इह पेक्खणए चेय कहिं. 4 > P अहमेत्थ for एत्थ अहं, P तो for त्ति । ता, J महिलाए for महिला, J एमहंतं आलपालं P महंतं एयं आलप्पालं, P समाढत्तं for आढत्तं. 5 > J inter. मए एत्थ, P गायनडीए. 6 > P माणस for माणुसु, P om. सो, P वि for व, J सो looks like तो, P तहो पाण. 7 > P एवं च, P तिवली-, P विलइय, JP °वट्ठेणं, J फुरुफुरा°, P om. -वस-. 8 > J विलस for विलसमाण, P भुमया, P °कोवेण कुविए चिंतियं च ।, P om. सा, P दुस्सीला, P om. से. 9 > P om. त्ति, P चिंततो, J कोंकी P कोंट्ठीं, P om. च, P हियओ आगओ नियययराहुत्तो. 10 > P तमोत्थईए, J भूमिभाए, P फलिहयपट्ठि°, J कोंकी for कोंटी, P अच्छिउं for अच्छिउं, P उक्खिडिए पेच्छणए. 11 > P भइणीया घरफरिहय, J दट्ठूणं अवि°, P परिलोयं. 12 > J °ऊण य पुरिस, J अवउज्झिऊण य णीई, P णीइं, P कोवि विसवेयंधण विय. 13 > P om. कोंकीए, P पहणी for भइणी, P सिरिसेएमा, P विनिविडिया, P एस for एसो, P repeats पुरिसो. 14 > J om. आ, J अणज्जं ति, J कोंकी for कोंटी, P आभाविऊण 15 > J om. य, P खण for झण, J कोंकी for कोंटी, P om. य, P om. सा. 16 > P किमयं तए अज्जवसियं, J ए for ते, J भइणीए त्ति, J om. भाया वि. 17 > P पाडियं तं भइणिभायरं ति ।. 18 > P हा हा मए, J कयं पेच्छ पाववसएणं । मिच्छावियप्पियं पिय जाया. 19 > P पिय for पिइ, P पियं ते for वि अंते, J रमियं for रइयं. 20 > P repeats हा. 21 > J मुंच इमा मा, P दीणं मए पावं. 22 > P विलविउं पलविउं पयत्तो. 23 > J हा बाला य, P वच्छ न नाओ निवाडिओ. 24 > P कडियड, P सिणेहेणं, P फरु for फुर. 25 > J पिउविणीए, J माए for माइ, P गुणसमाइन्न. 26 > J मग्गाभग्गो. 27 > P पुणो for पुण, J एसो for वस्सं. 29 > P पुव्वाहं for वीवाहं, J अवसारणं. 30 > J चिद्धालो, J णच्चीसं, P उप्फोडण. 31 > J om. कयं, P पेच्छह एयं कयंतेण । हा अण्णह चिंतिअं घडाविअं अण्णाए (the page has its ink rubbed very much).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ वि पडामि समुद्दे गिरि-टंके वा विलामि पायाले । जलणे व्व समारुहिमो तहा वि सुद्धी महं णत्थि ॥
कह गोसे च्चिय पढमं कस्स व हलियस्स णवर वयणमहं । दंसेहामि अहण्णो कय-भइणी-भाइ-णिहणं तो ॥
ता णवरं मह जुत्तं एयं चिय एत्थ पत्त-कालं तु । एएसिं चेय चियाणलम्मि अप्पा विछोडुं जे ॥
इय जाव विलविए च्चिय ता दूसह-कलुण-सद्द-विहाणो । जल-ओयारं दाउं अवर-समुद्दं गओ चंदो ॥
सोऊण रुण्ण-सद्दं महिलत्तण-थोय-मउय-हिययाए । बाह-जलं-थेवा इव तारा वियलंति रयणीए ॥
ताव य कोवायंबो दुज्जय-पडिवक्ख-पडिहय-पयावो । पाडिय-चंडयर-करो उइओ सूरो णरवइ व्व ॥

§ ९४) तओ मए इमाए पुण वेलाए णाइदूरमुग्गए कमलायर-पिय-बंधवे चक्काय-कामिणी-हियय-हरिसुप्पायए सूरे समासत्थिया मुच्छाए तओ भणिओ जणेणं । 'मा एवं विलवसु, जइ वि मया इमे' त्ति । तह वि पच्छायाव-परद्धो जलणं पविसामि त्ति कय-णिच्छओ इमो चंडसोमो दीण-विमणो मरण-कय-ववसाओ गुरु-पाव-पहर-परद्धो इव णिक्कंतो गामाओ, गओ मसाण-भूमिं, रइया य महंती महा-दारुएहिं चिया । तत्थ य तिल-घय-कप्पास-कुसुंभ-पब्भार-वोच्छाहिओ पज्जलिओ जलिओ जलण-जलावली-पब्भारो । एत्थंतरम्मि चंडसोमो आबद्ध-परियरो उद्धाइओ जलियं चियं पविसिउं । ताव य

गेण्हह गेण्हह रे रे मा मा वारेह लेह णिवडंतं । इय णिसुय-सद्द-समुहं बलिय-जुवाणेहिँ सो धरिओ ॥

भणियं च णेण 'भट्टा भट्टा, किं मए पाव-कम्मेण जीविएणं । अवि य ।

धम्मत्थ-काम-रहिया बुहयण-परिणिंदिया गुण-विहूणा । ते होंति मय-सरिच्छा जीवंत-मयल्लया पुरिसा ॥

ता ण कज्जं मह इमिणा पिय-बंधव-णिहण-कलुसिएणं बुहयण-परिणिंदिएणं अणप्पणा इव अप्पणा' । भणियं च हल-गोउल-छल-संवड्ढिएहिं पिय-पियामह-परंपरागएक्केक्कासंबद्ध-खंड-खंड-संघडिय-मणु-वास-वम्मीय-मक्कंड-महरिसि-भारह-पुराण-गीया-सिलोय-वित्त-पण्णा-सोत्तिय-पंडिएहिं 'अत्थेत्थ पायच्छित्तं, तं च चरिऊण पाव-परिहीणो भच्छसु' त्ति । भणियं च चंडसोमेणं 'भगवंतो भट्टा, जइ एवं ता देसु मह पायच्छित्तं, जेण इमं महापावं सुज्झइ' त्ति । ता एक्केण भणियं । 'अकामेन कृतं पापं अकामेनैव शुद्ध्यति' । अण्णेण भणियं असंबद्ध-पलाविणा । 'जिघांसंतं जिघांसीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत्' । अण्णेण भणियं । 'कोपेन यत्कृतं पापं कोप एवापराध्यति' । अण्णेण भणियं । 'ब्राह्मणानां निवेद्यात्मा ततः शुद्धो भविष्यति' । अण्णेण भणियं । 'अज्ञानाद्यत्कृतं पापं तत्र दोषो न जायते' ।

§ ९५) एवं पुव्वावर-संबंध-रहियवरोप्पर-विरुद्ध-वयणमणुगाहिरेहिं सव्वहा किं कयं तस्स पायच्छित्तं महा-बदर-भट्टेहिं । सयलं घर-सव्वस्सं धण-धण्ण-वत्थ-पत्त-सयणासण-डंड-भंड-दुपय-चउप्पयाइयं बंभणाणं दाऊण, इमाइं च घेत्तुं, जय जिय त्ति अहव अट्ठिताइं भिक्खं भमंतो कय-सीस-तुंड-मुंडणो करंका-हत्थो गंगा-दुवार-हेमंत-ललिय-भद्देस्सर-वीरभद्द-सोमेसर-पहास-पुक्खराइसु तित्थेसु पिंडयं पक्खालयंतो परिभमसु, जेण ते पावं सुज्झइ त्ति ।

तं पुण ण-यणंते च्चिय जेण महा-पाव-पसर-पडिबद्धो । मुच्चइ एस कुडं चिय अप्पा अप्पेण कालेण ॥
जइ अप्पा पाव-मणो बाहिंजल-धोवणेण किं तस्स । जं कुंभारी सूया लोहारी किं घयं पियउ ॥
सुज्झउ णाम मलं चिय णरणाह जलेण जं सरीरम्मि । जं पुण पावं कम्मं तं भण कह सुज्झए तेण ॥
किंतु पवित्तं सय-सेवियं इमं मण-विसुद्धि-करयं च । एत्तिय-मेत्तेण कओ तत्थ भरो धोय-वत्तीए ॥
जं तं तित्थम्मि जलं तं ता भण केरिसं सहावेण । किं पाव-फेडण-परो तस्स सहावो अह ण व त्ति ॥
जइ पाव-फेडण-परो होज्ज सहावेण तो दुवे पक्खा । किं अंग-संगमेणं अहवा परिचिंतियं हरइ ॥
जइ अंग-संगमेणं ता एए मयर-मच्छ-चक्काइं । केवट्टिय-मच्छंधा पढमं सग्गं गया णंता ॥

---

1) P विलाम for विलामि, P महं नत्थी. 2) P गोस, P वयणमुहं. 3) J मह जत्तं, P कालंमि।, P एतेसिं चेव वियालणंमि, J विछोडु P विछोडुं. 4) P जाव विलवउ चिय ता, J जलओयारं. 5) P थोव, P जलत्थेवा, J इय for इव. 6) P दुज्जण for दुज्जय. 7) J पुण for मए, P पहरिसु for हरिसु. 8) P समासासिओ पुच्छिओ। तओ, P भणियं for भणिओ, P विलवेसु जीविया इमे, J मेत्ती for इमे त्ति, P om. तह वि पच्छायाव......पविसामि त्ति. 9) J इय णिक्खंतो. 10) J om. गओ, P भूमी for भूमिं, P वारेह for महंती, J वोच्छहिओ. 11) P om. जलिओ, P जलिय for जलण, P उद्धाइयं, P चियं पइसिउं. 12) J गेण्ह गेण्ह रे, P हंती for मा मा, J णिसुणिय, P निसुयइ, J सम्मुहं. 13) P भद्दा भद्दा, P कमेण. 14) P जीवंती मयल्लया. 15) J इवप्पणो. 16) J थल for हल, P संवड्डिएहिं, J °गएक्केक्कोसबद्ध° P मए एक्केक्कासंबंध, P om. खंटखंट, P मणुय for मणु, P वंमीय. 17) J वित्तं, P विडंबणा for वित्तपण्णा, J एडिएहिं, P om. च after भणियं. 18) P ताए for ता, P मे for मह, P repeats महापायच्छित्तं जेण इमं, P तओ for ता. 22) P संबद्धेहिं अवरोप्पर, J वयणामणुगाहिरेहिं P वयणमेतुनाहिरेहिं, P वट्ट for बदर. 23) P सयलधर, P पत्थ for पत्त, J °प्पयाईयं P °प्पयादियं, J णिक्खंतो for इमाइं च घेत्तुं जय जिय त्ति अहव अट्ठिताइं भिक्खं. 24) J मुण्ड for मुंडणो, P हत्थे, P ललियाभद्देसरवीरभद्दा°. 25) J om. सोमेसर, P पभासपुक्करा°, P पिंडं for पिंडयं, P एवं for ते, P सुज्झय त्ति. 26) P नयणंत चिय, P पडिबद्धो, J मुंचइ. 27) P बाहिरमलधोअणेण, P जइ for जं, P पियइ।. 28) P जलेण तं सरीरं ति, P जेण for तेण. 29) P om. here the verse किंतु पवित्तं etc. but gives it below, included in the foot-notes. 30) J -वरो for -परो, P पहावो for सहावो. 31) J सहावो तओ दुवे. 32) P तो for ता, P चक्काया। J केवट्टिया, JP मच्छंधा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहव परिचिंतियं चिय कीस इमो दूर-दक्खिणो लोओ । आगच्छइ जेण ण चिंतिऊण सग्गं समारुहइ ॥
अह पावणो त्ति ण इमो विसिट्ठ-बुद्धीएँ होज परिगहिओ । तत्थ वि विसिट्ठ-बुद्धी-परिगहियं होज कुव जलं ॥
अह भणसि होज तं पि हु तित्थे गमणं णिरत्थयं होज । अह तं ण होज तित्थं पुण होहिइ एत्थ को हेऊ ॥
जुत्ति-वियारण-जोग्गं तम्हा एयं ण होइ विबुहाण । मूढ-जण-वयण-वित्थर-परंपराए गयं सिद्धी ॥
जं पुण मयस्स अंगट्ठियाइँ छुब्भंति जण्हवी-सलिले । तं तस्स होइ धम्मं एत्थ तुमं केण वेलविओ ॥
ता एत्थ णवर णरवर एस वराओ अयाणुओ मुद्धो । पाव-परिवेढिओ च्चिय भामिज्जइ मंद-बुद्धीहिं ॥"

एयं च सोऊण सव्वं सच्चयं तं णियय-पुव्व-वुत्तंतं, पुणो वि

विणय-रइअंजलिउडो भत्ति-भराऊरमाण-सब्भावो । संवेग-लद्ध-बुद्धी वेरग्गं से समल्लीणो ॥

उद्धाइओ भगवओ चलण-जुय-हुत्तं, घेत्तूण भगवओ चलण-जुयलं करयलेहिं, अवि य,

संवेग-लद्ध-बुद्धी बाह-जलोयलण-धोय-गुरु-चलणो । मुणिणो चलणालग्गो अह एयं भणिउमाढत्तो ॥
'भयवं जं ते कहियं मह दुच्चरियं इमं अउण्णस्स । अक्खर-मेत्तेण वि तं ण य विहडइ तुम्ह भणियाओ ॥
ता जइ एयं जाणसि तह णूण वियाणसे फुडं तं पि । जेण महं पावमिणं परिसुज्झइ अकय-पुण्णस्स ॥
ता मह कुणसु पसायं गुरु-पाव-महा-समुद्द-पडियस्स । पणिवइय-वच्छल च्चिय सप्पुरिसा होंति दीणम्मि ॥'

एवं च पायवडिओ विलवमाणो गुरुणा भणिओ 'भद्दमुह, णिसुणेसु मज्झ वयणं । एवं किल भगवंतेहिं सव्वण्णूहिं सव्व-तित्थयरेहिं पण्णवियं परूवियं 'पुव्विं खलु भो कडाणं कम्माणं दुप्पडिकंताणं वेयइत्ता मोक्खो, णत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता' । तेण तुमं कुणसु तवं, गेण्हसु दिक्खं, पडिवज्जसु सम्मत्तं, णिंदसु दुच्चरियं, विरमसु पाणि-वहाओ, उज्झसु परिग्गहं, मा भणसु अलियं, णियत्तसु पर-दव्वे, विरमसु कोवे, रज्जसु संजमे, परिहरसु मायं, मा चिंतेसु लोहं, अवमण्णसु अहंकारं, होसु विणीओ त्ति । अवि य ।

एवं चिय कुणमाणो ण हु णवर इमं ति जं कयं पावं । भव-सय-सहस्स-रइयं खणेण सव्वं पणासेसि ॥'

एयं च सोऊण भणियं चंडसोमेण 'भयवं, जइ दिक्खा-जोग्गो हं, ता महं देसु दिक्खं' ति । गुरुणा वि णाणाइसएणं उवसंत-खविय-कम्मो जाणिऊण पवयण-भणिय-समायारेण दिक्खिओ चंडसोमो त्ति ॥ ॐ ॥

§९६) भणियं च पुणो वि गुरुणा धम्मणंदणेणं ।

'माणो संतावयरो माणो अत्थस्स णासणो भणिओ । माणो परिहव-मूलं पिय-बंधव-णासणो माणो ॥

माणत्थद्धो पुरिसो ण-याणइ अप्पणं णाणप्पणं, ण पियं णापियं, ण बंधुं णाबंधुं, ण सत्तुं णासत्तुं, ण मित्तं णामित्तं, ण सज्जणं णासज्जणं, ण सामियं णासामियं, ण भिच्चं णाभिच्चं, ण उवयारिणं णाणुवयारिणं, ण पियंवयं णापियंवयं, ण पणयं णापणयं, ति । अवि य

लहुयत्तणस्स मूलं सोग्गइ-पह-णासणं अणत्थयरं । तेणं च्चिय साहूहिं माणं दूरेण परिहरियं ॥
माण-महा-गह-गहिओ मरमाणो पेच्छए ण वारेइ । अवि मायरं पियं भारियं पि एसो जहा पुरिसो ॥'

भणियं च राइणा 'भयवं, बहु-पुरिस-संकुले ण-याणियो को वि एस पुरिसो' त्ति । भणियं च धम्मणंदणेण ।

"जो एस मज्झ वामे दाहिण-पासम्मि संठिओ तुज्झ । एक्कुण्णामिय-भुमओ वित्थारिय-पिहुल-वच्छयलो ॥
गव्व-भर-मउलियच्छो परियंकावद्ध-उब्भडाडोवो । ताडंतो धरणियलं पुणो पुणो वाम-पाएण ॥
उत्तत्त-कणय-वण्णो आयंबिर-दीहरच्छिवत्त-जुओ । रीढा-पेसवियाए तुमं पि दिट्ठीए णिज्झाइ ॥
इमिणा रूवेण इमो माणो व्व समागओ इहं होज । एएण माण-मूढेण जं कयं तं णिसामेह ॥

---

2 > P वामणो for पावणो, P बुद्धीय होज्ज, J होऊण for होज्ज, J तत्थ विसिट्ठा बुद्धी, J होउ for होज्ज (sometime उ and ज्ज look similar). 3 > P गंता for तित्थे, J णिरत्थओ, P गंगं for तित्थं. 4 > P गय, P has here the verse किंतु पवित्तं तियसिंदसेवियं गणविसुद्धिकरयं च । एत्तियमेत्तेण कओ तस्स मरो वो अवंतीए—compare the readings with the verse in J noted above, p. 48, foot-note, 29. 5 > J पुण एयस्स. 6 > P om. णवर, P अयाणओ मुद्धो, P परिवेड्डिओ, J पाव for मंद. 7 > J सच्चं P सम्मयं, P तिययं for णियय, J om. वि. 8 > J रइयविणयअंजलीउडो, J संव्वेयलद्ध. 9 > P जुयलहुत्तो, P omits अवि य. 10 > J संवेय, P om. धोय, P चलणजुयललग्गो. 11 > P भगवं, P तेहिं for ते, J मत्तेण for मेत्तेण. 12 > P मि for पि. 14 > P भद्द मह सुणेसु मह वयणं, P किर for किल. 15 > J दुप्परकंताणं, P वेइत्ता. 16 > J व for वा, J ज्जोसइत्ता. 17 > P भणेसु, P विरज्जसु. 18 > J अहंकारो. 20 > P भगवं, P दिक्खाए जोगो अहं ता महं, P om. ति, P नाणाइसए उव°. 21 > P खइय. 22 > J तु for च before पुणो. 23 > P मूलो, P बंधुविणासणो. 24 > P माणथद्धो, P अप्पयं नाणप्पयं, P न बंधू नाबंधू, J ण सत्तू णासत्तू. 25 > P नाउवयारिणं, P पिय° for पियं in both places. 27 > P पणनासणं अणत्थकरं. 28 > P मारियं for मायरं, J पिया for पियं. 29 > P भगवं. 30 > P वामो for वामे, P एकुन्नामियभमिओवत्थारिय, P वत्थयलो. 31 > J खंध for गव्व, P उत्तडाडोवो, P –प्पाएण. 32 > P वेत्त for वत्त, P निज्झायइ. 33 > J इहं for इमो, P समागमो, P होज्जा, P निसामेहि.

§९७) अत्थि णर-णारि-बहुलो उववण-वण-पउम-संड-रमणिज्जो । गाउय-मेत्त-ग्गामो गामासण्ण-ट्ठिय-तलाओ ॥
जो सुसम-पढम-णरिंद-णियय-सुय-दिण्ण-णाम-चिंधालो । छक्खंड-भरह-सारो णाममवंती-जणवओ त्ति ॥

सो य केरिसो अवंति-जणवओ । जत्थ य पहिएहिं परिभममाणेहिं सयले वि देसे दिट्ठइं एक्को व दोण्णि व तलायइं जाइं ण घण-घडिय-कसण-पत्थर-णिबद्धइं, दोण्णि व तिण्णि व दिट्ठइं रुक्खइं जाइं ण सरस-साउ-महल्ल-पिक्क-घण-फलइं, तिण्णि व चयारि व दिट्ठइं गामइं जाइं ण गणिज्जंति थोव-धीहियइं, चत्तारि व पंच व दिट्ठइं देवउलइं जाइं ण सुंदर-विलासिणी-यणाबद्ध-संगइ-गीयइं, पंच व छ व दिट्ठउ विलासिणिओ जाओ ण धरिय-धवलायवत्त-माऊर-छत्त-चामराडंबराओ त्ति । अवि य ।

बहु-रयण-णियर-भरिओ वियरंतुद्दाम-मुइय-संखउलो । णिम्मल-मुत्ता-पउरो मालव-देसो समुद्दो व्व ॥

तस्स देसस्स मज्झ-भाए

धवलहर-णिम्मलब्भा फुरंत-मणि-विमल-किरण-तारइया । सरए व्व गयण-लच्छी उज्जेणी रेहिरा णयरी ॥

जा य गिम्ह-समए जल-जंत-जलहर-भरोरल्लि-णिसुय-सहरिस-उद्दंड-तडुविय-पायडिज्जंत-घर-सिहंडि-कुल-संकुला फुड-पोमराय-इंदोवय-रेहिरि व्व पाउस-सिरि-जइसिय । पाउस-समए उण फलिह-मणि-विणिम्मविय-घर-सिहरब्भ-धवला विमलिंदणील-फुरमाणी इंदीवर-संकुलं व सरय-समय-सिरि-जइसिय । सरय-समए उण दूसह-रवि-किरण-णियर-संताविय-पज्जलंत-सूरकंत-जणिय-तिव्वायवा आसार-वारि-धारा-धोय-णिम्मल-सिय-कसिण-रयण-किरण-संवलिय-सिरीस-कुसुम-गोच्छ-संकुल व्व गिम्ह-समय-सिरिहि अणुहरइ त्ति । जहिं च णयरिहिं जुवइ-जुवाण-जुवलेहिं ण कीरंति सुह-मंडणइं । केण कज्जेण । सहाव-लायण्ण-पसरंत-चंदिमा-कलुसत्तण-भएण । जहिं च कामिणियणेण ण पिज्जंति विविहासवइं । केण कज्जेण । सहाव-सुरय-विलास-वित्थर-भंग-भएण । जहिं च विलासिणीहिं विवरीय-रमिरीहिं ण बज्झंति रणंत-महामणि-मेहलउ । केण कज्जेण । सहाव-कलकंठ-कुविय-सद्दामयासा-लुद्धेहि त्ति । अवि य ।

अइतुंग-गोउराइं भवणुज्जाणाइँ सिहर-कलियाइं । एक्केक्कमाइँ जीए णयरि-सरिच्छाइँ भवणाइं ॥

§९८) तीए य महाणयरीए उज्जेणीए पुव्वुत्तरे दिसाभाग-विभाए जोयण-मेत्ते पएसे कूववंद्दं णाम गामं अणेय-धण-धण्ण-समिद्धि-गव्विय-पामर-जणं महाणयर-सरिसं । तत्थ एक्को पुव्व-राय-वंस-पसूओ कइं पि भागहेज्ज-परिहीणो सयण-संपया-रहिओ खेत्तभडो णाम जुण्ण-ठक्कुरो परिवसइ । एरिस च्चिय एसा मुणाल-दल-जल-तरल-चंचला सिरी पुरिसाणं । अवि य ।

होऊण होइ कस्स वि ण होइ होऊण कस्सइ णरस्स । पढमं ण होइ होइवि पुण्णंकुस-कड्डिया लच्छी ॥

तस्स य एक्को च्चिय पुत्तो वीरभडो णाम णियय-जीयाओ वि वल्लहयरो । सो तं पुत्तं घेत्तूण उज्जेणियस्स रण्णो ओलग्गिउं पयत्तो । दिण्णं च राइणा ओलग्गमाणस्स तं चेव कूववंद्दं गामं । कालेण य सो खेत्तभडो अणेय-रण-सय-संघट्ट-वइरि-वीर-तरवारि-दारियावयवो जरा-जुण्ण-सरीरो परिसक्किऊण असमत्थो तं चेय पुत्तं वीरभडं रायउले समप्पिऊण घरे चेय चिट्ठिउं पयत्तो । रायउले वि तस्स पुत्तो चेय अच्छिउं पयत्तो । तस्स य से पुत्तस्स सत्तिभडो णाम । सो उण सहावेण थद्धो माणी अहंकारी रोसणो विहवुम्मत्तो जोव्वण-गव्विओ रूव-माणी विलास-मइओ पुरिसाभिमाणी । तस्स य एरिसस्स सव्वेणं चेय उज्जेणएणं रायउत्त-जणेणं सत्तिभडो त्ति अवमण्णिऊण माणभडो त्ति से कयं णामं । तेण णरणाह, सो उण एसो माणभडो । अह अण्णम्मि दियहे उवविट्ठे सयले महाराय-मंडले णिय-णिय-ट्ठाणेसु समागओ माणभडो । तओ राइणो अवंतिवद्धणस्स कय-ईसि-णमोक्कारो णिययासण-ट्ठाण-पेसियच्छि-जुओ जाव पेच्छइ तम्मि ठाणे पुलिंद-रायउत्तं उवविट्ठं । तओ वलिओ तं चेय दिसं । भणियं च णेण 'भो भो पुलिंद, मज्झ संतियं इमं आसणट्ठाणं, ता उट्ठसु तुमं' । पुलिंदेण भणियं 'अहं अयाणंतो

---

1 > P गामोसण्ण, J तलाओ. 2 > J जा for जो, J चिंद्धालो. 3 > P अवंती-, J परिभवमा°, P सयले च्चिय दोस दिट्ठइं, P तलायइम जाइं. 4 > P कसिणपत्थरसिलोहबद्धइं, J दोण्णि वि तिण्णि, P दो for दोण्णि, J ट्ठियइं for दिट्ठइं, J सरसाउ, J महु for घण, J फलइं. 5 > P चत्तारि, J गामाइं, J om. जाइं, P om. ण, P गणिज्जंत, J चयरि, P पंच वि (for व), J व दिट्ठइं देवउलइं P वि देवउलइं न दिट्ठइं. 6 > J °यणबद्धसंगीयइं P संगइंगीयइं, P व छ विणिदिट्ठिउ विलासिणीओ, P धवयायवत्त, J मापूर for माऊर. 8 > P सुपइ for मुइय, J वयारो for पउरो, P सालवदेसो. 10 > P निम्मलत्ता. 11 > P जो for जा य, P सहरिसह-रिसउद्दंड, J उड्डुंड, P तंडविय, J -पीडिज्जंत, J पोमराइंदोवय P पोमरायणिदूरोहि व पाउस. 12 > J व for व्व (emended), P जइ-सिया, P om. मणि, J धवलविमल. 13 > P फुरमाणींदीवरासंकुल, P °सिरि जइसिया, J सूर for सूरकंत. 14 > J तिव्वायव्व । P तिव्वायव आसारि-, J संकुलं व. 15 > J ति for त्ति, P om. सुह. 16 > P कलुसण, P कामिणीयणेण, P om. ण. 17 > P रम-रीर्हि, P मेहलाओ. 18 > P सद्दायलु°, J लुद्धेहिं, J om. त्ति. 19 > P गोयराइ, P णयर. 20 > J तीय य, J om. उज्जे-णीए, P दिसाभाए. 21 > P सरिच्छं for सरिसं, J -पसूओ, P कहिं चि भागधेज्ज, P सयल for सयण. 22 > P खत्तहडो for खेत्तभडो, J om. परिवसइ, P एरिसु, P एस for एसा, P तरलवचंचला, J om. सिरी. 24 > P होउं न होइ, P कस्सइ न होइ, J पुण्णंकुस, P कुट्टिआ for कड्डिया. 25 > J एक्को चेय, P पुरिसो for पुत्तो, J om. वीरभडो णाम, P निय for णियय, P घेत्तुं उज्जेणयस्स. 26 > J दिण्णो for दिण्णं, P om. य, P सो खत्तहडो, P स for सय. 27 > J दरिया, P तं चेव, J सत्तिभडं for वीरभडं, P चेव. 28 > P राउले, J om. वि, P om. चेय, J om. तस्स य से पुत्तस्स सत्तिभडो णाम ।. 29 > P विहवुमत्तो, J भवमाणी for रूवमाणी, J -मुइओ P मईओ, P पुरिसाहिमाणी, P एरिसयस्स. 30 > P om. first त्ति, P om. तेण. 31 > J om. दियहे, J महाराइ-, P नियनिययठाणेसु, P राइणा अवंतिवद्धणस्स य कय-. 32 > P om. ट्ठाण, P पेसियच्छीओ तं जाव, P रायउत्तं, P तओ चलिओ. 33 > P om. चेय, J om इमं, P आसणत्थाणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इहोवविट्ठो, ता खमसु संपयं, ण उणो उवविसिस्सं'। तओ अण्णेण भणियं 'अहो, एवं परिभओ कीरइ वरायस्स'। चिंतियं च माणभडेण 'अहो, इमिणा मह पुलिंदेण परिहओ कओ। ताव जीवियं जाव इमाणं परिभवं सहिज्जइ त्ति। अवि य।

जाव य अभग्ग-माणं जीविज्जइ ताव जीवियं सफलं। परिहव-परिमलिय-पयावस्स भण किं व जीएणं ॥ अण्णं च।

ताव य मंदर-गरुओ पुरिसो जा परिहवं ण पावेइ। परिभव-तुलाएँ तुलिओ तणु-तणुय-तणाओं तणुययरो ॥'

एवं एरिसं चिंतिऊण समुक्खया जम-जीहा-संणिहा छुरिया। ताव य अवियारिऊण कज्जाकज्जं अयाणिऊण सुंदरासुंदरं अचिंतिऊण अत्तणो मरणामरणं 'सव्वहा जं होउ तं होउ' त्ति चिंतिऊणं पहओ वच्छत्थलाभोए पुलिंदो इमिणा रायउत्तो त्ति। अवि य।

ण गणेइ परं ण गणेइ अप्पयं ण य होंतमहाहोंतं। माणमउम्मत्त-मणो पुरिसो मत्तो करिवरो व्व ॥

तं च विणिवाइऊण णिक्खंतो लहुं चेव अत्थाणि-मंडवाओ। ताव य

गेण्हह गेण्हह को वा केण व मारेइ लेह रे धाह। उद्धाइ कलयल-रवो खुहियत्थाणे जलणिहि व्व ॥

§ ९९) एत्थंतरम्मि एसो माणभडो उद्धाइओ णियय-गामहुत्तं। कयावराहो भुयंगो इव झत्ति संपत्तो णियय-घरं भणिओ य तेण पिया 'बप्पो बप्पो, मए इमं एरिसं वुत्तंतं कयं। एयं च णिसामेउं संपयं तुमं पमाणं किमेत्थ कायव्वं' ति। भणियं च वीरभडेणं 'पुत्त, जं कयं तं कयं णाम, किमेत्थ भणियव्वं। अवि य।

कज्जं जं रहस-कयं पढमं ण णिवारियं पुणो तम्मि। ण य जुज्जइ भणिऊणं पच्छा लक्खं पि वोलीणं ॥

एत्थ पुण संपयं जुत्तं विदेस-गमणं तयणुप्पवेसो वा। तत्थ तयणुप्पवेसो ण घडइ। ता विदेस-गमणं कायव्वं। अण्णहा णत्थि जीवियं। ता सिग्घं करेह सज्जं जाण-वाहणं'। सज्जियं च। आरोवियं च णेहिं सयलं सार-भंडोवक्खरं। पत्थिया य णम्मया-कूलं बहु-वंस-कुडंग-रुक्ख-गुम्म-गुविलं। इमो पुण कइवय-पुरिस-परिकय-परिवारो वारिज्जंतो वि पिउणा कुलउत्तयाए पुरिसाहिमाण-गहिओ तहिं चेव गामे पर-बलस्स थक्को।

लब्भो दुहा वि लाहो रणंगणे सूर-वीर-पुरिसाण। जइ मरइ अच्छराओ अह जीवइ तो सिरी लहइ ॥

एवं चिंतयंतस्स समागयं पुलिंदस्स संतियं बलं। ताव य,

एसेस एस गेण्हह मारे-मारेह रे दुरायारं। जेणम्ह सामिओ च्चिय णिहओ अकयावराहो वि ॥

एयं च भणमाणा समुद्धाइया सव्वे समुत्थ-रिउ-भडा। इमो य आयड्डिय-खग्ग-रयणो कह जुज्झिउं समाढत्तो।

वेलं उप्पइओ च्चिय पायालयलम्मि पइसए वेलं। कइया वि धाइ तुरियं चक्काइद्धो व्व परिभमइ ॥

§ १००) एवं च जुज्झमाणेणं थोवावसेसियं तं बलं इमिणा। तह दूसह-पहरंतो-गुरु-क्खय-णीसहो पाडिओ तेहिं उच्छूढो य तस्स णियएहिं पुरिसेहिं मिलिओ णियय-पिउणो। ते वि पलायमाणा कह कह वि संपत्ता णम्मया-तीर-लग्गं अणेय-वेलुया-गुम्म-गोच्छ-संकुलं वण-महिस-विसाण-भज्जमाण-वड्ढ-वेढं उद्दाम-वियरंत-पुलि-भीसणं एक्कं पच्चंतिय-गामं। तं चेय दुग्गं समस्सइऊणं संठिया ते तत्थ। इमो य माणभडो गुरु-पहर-परद्धो कह कह वि रूढ-वणो संवुत्तो। तत्थ तारिसे पच्चंते अच्छमाणाणं वोलिओ कोइ कालो। ताव य

कड्डिय-मुहल-सिलीमुह-दुप्पेच्छो कोइला-कलयलेणं। चूय-गइंदारूढो वसंत-राया समल्लीणो ॥

अल्लीणम्मि वसंते णव-कुसुमुब्भेय-रइयमंजलिया। सामंता इव पणया रुक्खा बहु-कुसुम-भारेण ॥

रेहइ किंसुय-गहणं कोइल-कुल-गेज्जमाण-सद्दालं। णव-रत्तंसुय-परिहिय-णव-वर-सरिसं वणाभोयं ॥

साहीण-पिययमाणं हरिसुप्फुल्लाइँ माहव-सिरीए। पहिय-घरिणीण णवरं कीरंति मुहाइँ दीणाइं ॥

सुव्वइ गामे गामे कय-कलयल-डिंभ-पडहिया-सद्दो। विविह-रसत्थ-विरइओ चच्चरि-सद्दो समुट्ठाइ ॥

पिज्जइ पाणं गिज्जइ य गीययं बहु-कलयलारावं। कीरइ मयणारंभो पेसिज्जइ वल्लहे दूई ॥

1) P अन्नेहिं for अण्णेण, P परिहवो कवरायस्स. 2) P om. च, P परिहवो, P ता जीविनं जाव, J परिहवं P परिभवो 3) P परिमलय-, J पयावयस्स, P भण कस्स जीएणं. 4) P मंदरगुरुओ, P परिहव-, P तणुयाउ for तणुयतणाओ. 5) J एयं च परिसं, P उक्खया for समुक्खया, J जमजीहसणिणह, P अवयारिऊण, P °सुंदरं चिंतिऊण. 6) P सव्वहा जं होउ त्ति, P रायपुत्तो 8) J अप्पयं णो य होन्तमहहोंतं, P हांतं for होंतं, J माणमएउम्मत्त P माणं मउम्मत्त-. 9) J च णिवाइऊण, P रायत्थणे for अत्थाणि. 10) J धावह P धाव, P खुहिओ अत्थाणे. 11) P सो for एसो, P गामाहुत्तो, J च्छअंतो for भुयंगो, P अत्ति for झत्ति. 12) P om. य, P णेण for तेण, P बप्पो बप्पा, P om. एरिसं, P एवं च. 13) J भणिअं for भणियव्वं. 14) P जं कह वि रहसरइयं पढम. 15) P एत्थं पुण, P वि एस for विदेस, P तणुयपवेसो वा. 16) P आहोहियसयलसार, J भंडारवक्खरं 17) J णम्मयाकुलं, P कुडुंग, P om. परिकय, P कुलउत्तया पुरिसाभिमाण. 18) J चेय गामे. 19) J लाभो, P रणंगणो धीरवीर, J सिरि लहइ. 20) P चिंतियंतस्स, P पुलिंदसंतियं. 21) P om. रे. 22) J च्चिय for च, P संमरित्तु for समुत्थरिउ, P वि for य, P पयत्तो for समाढत्तो. 23) P इव for च्चिय, P पायालइलंमि, J चक्काइद्धं व. 24) J om. तं, J पयरंतो गुरु, P पहरंतो खुरप्पेणं णीसहो पाडिओ तेहिं उच्छूढो तस्स. 25) P om. पुरिसेहिं, P मिलिय- for मिलिओ, P तीरं लग्गं. 26) J वेसक्या for वेलुया, P नियरंत for वियरंत, J पच्चंतियागामं. 27) P दुग्गे, P ये for य after इमो), J पहरपारद्धो, P तारिसो. 29) J °मुहरपेच्छिओइला. 30) P नवकुसुमुच्छेयरइयपंजलिया. 31) J केसुअगहणं, P -गिज्झमाण, P नवरत्तसुरलसपरिहिय, P वणाभोए. 32) P सीहीण, J पियमाणीहरिसु°, J घरिणीए णवरं. 33) P om. कय, P डिंभजणपडिहया, P विरईओ, J समुट्ठाइ. 34) P om. य, P वल्लहो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§१०१) तओ एयम्मि एरिसे वसंत-समए तरुवर-साहा-णिबद्ध-दढ-दीह-माला-वक्कलय-दोला-हिंदोलमाण-वेल्लहल-विलासिणी-विलास-गिज्जमाण-मणहरे महु-मास-माहवी-मयरंदामोय-मुइय-मउम्मत्त-महुयर-रुइराराव-मणहर-रुणरुणेंत-जुवल-जुवइ-जणे सो माणभडो गाम-जुवाण-वंद-समग्गो अंदोलए अंदोलेउमाढत्तो। भणियं च जुवाण-जणेण ताणं [illegible]ऊण 'भो भो गाम-बोद्रहा णिसुणेह एक्कं वयणं।

'जो जस्स हियय-दइओ णीसंकं अज्ज तस्स किर गोत्तं। गाएयव्वमवस्सं एत्थ हु सवहो ण अण्णस्स ॥'

पडिवण्णं च सव्वेण चेय गाम-जुवाण-जणेणं। भणियं च सहत्थ-ताल-हसिरेहिं 'रे रे सच्चं सच्चं सुंदरं सुंदरं च संलत्तं। जो जस्स पिओ तस्स इर अज्ज गोत्तं गाएयव्वं अंदोलयारूढएहिं ण अण्णस्स। अवि य।

सोहग्ग-मउम्मत्ता ज च्चिय जा दूहवाओ महिलाओ। ताणं इमाण णवरं सोहग्गं पायडं होइ ॥'

एवं च भणिए णियय-पियाणं चेय पुरओ गाइउं पयत्ता हिंदोलयारूढा। तओ को वि गोरीयं गायइ, को वि सामलियं, को वि तणुयंगी, को वि णीलुप्पलच्छी, को वि पउम-दलच्छि त्ति।

§१०२) एवं च परिवाडीए समारूढो माणभडो अंदोलए, अक्खित्तो य अंदोलए जुवाण-जणेण। तओ णियय-जायाए गोरीए मय-सिलिंवच्छीए पुरओ गाइउं पयत्तो इमं च दुवइ-खंडलयं।

परहुय-महुर-सद्द-कल-कूविय-सयल-वणंतरालए। कुसुमामोय-मुइय-मत्त-भमरउल-रणंत-सणाहए ॥
बहु-मयरंद-चंद-णीसंदिर-भरिय-दिसा-विभायए। जुवइ-जुवाण-जुवल-हिंदोलिर-गीय-रवाणुरायए ॥
एरिसयम्मि वसंतएँ जइ सा णीलुप्पलच्छिया पमएँ। आलिंगिज्जइ मुद्धिय सामा विरहूसुएहिँ अंगेहिं ॥

एवं सामाए गोत्तं गिज्जमाणं सुणिऊणं सा तस्स जाया सरिस-गाम-जुवई-तरुणीहिं जुण्ण-सुरा-पाण-मउम्मत्त-विहलालाव-जंपिरीहिं काहिं वि हसिआ, काहिं वि णोल्लिया, काहिं वि पहया, काहिं वि णिज्झाइया, काहिं वि णिंदिया, काहिं वि तज्जिया, काहिं वि अणुसोइय त्ति। भणिया य 'हला हला, अम्हे चिंतेमो तुज्झ जोव्वण-रूय-लायण्ण-वण्ण-विण्णाण-णाण-विलास-लास-गुण-विणयक्खित्त-हियओ एस ते पई अण्णं महिलियं मणसा वि ण पेच्छइ। जाव तुमं गोरी मयच्छि च उज्झिउं अण्णं कं पि साम-सुंदरं कुवलय-दलच्छि च गाइउं समाढत्तो, ता संपयं तुज्झ मरिउं जुज्जइ' त्ति भणमाणीहिं णोल्लिज्जमाणी। ते खेल्लाविउं पयत्ता। इमं च णिसामिऊणं चिंतिउं पयत्ता हियए णिहित्त-सल्ला विव तवस्सिणी 'अहो इमिणा मम पिययमेणं सहियजणस्स वि पुरओ ण च्छाया-रक्खणं कयं। अहो णिद्दक्खिण्णया, अहो णिल्लज्जया, अहो णिण्णेहया, अहो णिप्पिवासया, अहो णिब्भयया, अहो णिग्घिणया, जेण पडिवक्ख-वण्ण-खलण-पडिभेयं कुणमाणेण महंतं दुक्खं पाविया। ता मह एवं विणाणिय-सोहग्गाए ण जुत्तं जीविउं। अवि य।

पडिवक्ख-गोत्त-कित्तण-वज्जासणि-पहर-घाय-दलियाए। दोहग्ग-दूमियाए महिलाए किं व जीएणं ॥

इमं च चिंतिऊण तस्स महिला-वंद्रस्स मज्झाओ णिक्खमिउं इच्छइ, ण य से अंतरं पावइ। ताव य

बहु-जुवईयण-कुंकुम-वास-रउद्धय-धूलि-मइलंगो। वच्चइ छणम्मि ण्हाउं अवर-समुद्द-द्दहं सूरो ॥
जह जह अल्लियइ रवी तुरियं तुंगम्मि अत्थ-सिहरम्मि। तह तह मग्गालग्गं धावइ तम-णियर-रिवु-सेण्णं ॥
सयल-णिरुद्ध-दिसिवहो पूरिय-कर-पसर-दूसह-पयावो। तिमिरेण णरिंदेण व खणेण सूरो वि कह खविओ ॥
अत्थमिय-सूर-मंडल-सुण्णे णहयल-रणंगणाभोए। वियरइ कज्जल-सामं रक्खस-वंद्रं व तम-णिवहं ॥

§१०३) एयम्मि एरिसे अवसरे दरिउम्मत्त-दिसा-करि-कसिण-महामुहवडे विय पलंबिए अंधयारे णिग्गया जुवइ-सत्थाओ सा इमस्स महिला। चिंतियं च णाए। 'कहिं उण इमं दोहग्ग-कलंक-दूसियं अत्ताणं वावाइउं णिव्वुया होहं। अहवा जाणियं मए, इमं वण-संडं, एत्थ पविसिऊण वावाइस्सं। अहवा ण एत्थ, जेण सव्वं चेय अज्ज उज्जाण-वणंतरालं

1) तरुयर, P डोला for दोला. 2) J मणहरो, J om. मुइय, J मयुम्मत्त, P मुइयमणुत्त for मउम्मत्त, J P रुइरावमण°, J रुणुरुणेंत. 3) जणो for जणे, P अंदोलिए, P भो भो भो. 4) J गामबोदुहा. 5) J हियइदइओ, P समहो. 6) J णायडिवण्णं for पडिवण्णं, P जुवाणवणेण, J सहत्थयाल, P हसिएहिं, J om. च. 7) P तस्स किर, P om. अज्ज, P अंदोलयारूढेहिं. 8) P मओम्मत्ता. 9) P चेव, J पवत्ता P पयत्तो, P हिंदोलयारुढो कं कोवि गोरियं, J कोई for कोवि, J गाययइ, P सामलिं. 10) J सामलंगि for तणुयंगी. 11) J om. च, P अक्खित्तओ, J अंदोलउ. 12) P जाए for जायाए, P सिलिंवच्छीए. 13) P वणंतरालोए, P भमरालि for भमरउल, J रणंतसयसणाहए. 14) P मंद for चंद, P दिसाविहायए, P रवाणुराईए. 15) P जइया for जइ सा, J णिलुप्पलच्छिया P नीलुप्पलच्छिया, J पयतएण P पयत्तणए for पमएँ (emended), JP मुद्धिया, J विरहूसएहिं अंगएहिं, P विहूसुएहिं, 16) P एयं च सा, P om. सा, J सरिसा-, J मयुम्मत्त, P पाणमत्तविहलालीव. 17) J काहिं वि in all places, P काहिं मि in all places, P om. काहिं वि पहया, P मिज्झाइया, J om. काहिं वि णिंदिया काहिं वि तज्जिया. 18) P अणुसोचिय, J अम्हेहिं चिंतेमो, P तुह for तुज्झ, P लावण्ण विण्णाणेण य विलाससालगुणविणयविक्खत्त-हियया अन्नं. 19) P तुमं गोरिं, P उज्झिय अन्नं किं पि समासुंदरिं. 20) P पयत्तो for समाढत्तो. P नोलिज्जमाणी खेला°. 21) P पइत्ता for पयत्ता, P मम पिएण सहियायणस्स पुरओ. 22) P निदक्खिणया अहो निलच्छया. 23) J निग्घिणयया. 24) J एयं. 26) P निक्खिविओ for णिक्खमिउं, P निय for ण य. 27) J वासरअुधूलिमइलंगो (note the form of अु), P रउद्धय. 28) P निवु for रिवु. 29) J अयल for सयल, P मरिंदेण, P सूरो कहं. 30) P सुण्ण for सुण्णे, P रणंगणोहोए, P रक्खसं. 31) J om. दरि, P दरियुमत्त, P महामुडवडे विलंबिए अंध°, J om. अंधयारे, J ताओ before जुवइ-. 32) P इ only for इमस्स, P विचिंतियं, P कहं पुण, J दूसिउं, P हत्ताणं for अत्ताणं. 33) P अवि य for अहवा. J om. अज्ज, P om. उज्जाण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उववणं पिव बहु-जण-संकुलं । एत्थ मह मणोरहाणं विग्घं उप्पज्जइ त्ति । ता घरे चेय वासहरयं पविसिउं जाव एस एत्थ बहु-जुवईयण-परिवारो ण-याणइ ताव अत्ताणयं वावाएमि ।' चिंतयंती आगया गेहं । तत्थागया पुच्छिया सासूए 'पुत्ति, कत्थ पई' । भणियं च तीए । 'एस आगओ चेय मह मग्गालग्गो त्ति' भणमाणी वासहरयं पविट्ठा । तत्थ [illegible]ऊण गुरु-दूसह-पडिवक्ख-गोत्त-वज्ज-पहर-दलियाए य विरइओ उवरिल्लएण पासो, णिबद्धो य कीलए, समारूढा य आसणेसुं, दाऊण य अत्तणो गलए पासयं भणियं इमीए ।

'भो भो सुणेह तुब्भे तुब्भे च्चिय लोग-पालया एत्थ । मोत्तूण णियय-दइयं मणसा वि ण पत्थिओ अण्णो ॥
तुब्भे च्चिय भणह फुडं जइ णो एत्थं मए जुवाणाणं । धवलुव्वेल्लिर-पंम्हल-णयण-सहस्साइँ खलियाइं ॥
मज्झं पुण पेच्छसु वल्लहेण अह एरिसं पि जं रइयं । पिय-सहि-समूह-मज्झ-ट्ठियाए गोत्तं खलंतेण ॥
ता तस्स गोत्त-खलणुल्लसंत-संताव-जलण-जलियाए । कीरइ इमं अउण्णाएँ साहसं तस्स साहेज्जा ॥'

भणमाणीए चलण-तलाहयं पक्खित्तं आसणं, पूरिओ पासओ, लंबिउं पयत्ता, णिग्गया णयणया, णिरुद्धं णीसासं, वंकीकया गीवा, आयड्ढियं धमणि-जालं, सिढिलियाइं अंगयाइं, णिव्वोलियं मुहं ति । एत्थंतरम्मि इमो माणभडो तं जुवई-वंद्रे अपेच्छमाणो जायासंको घरं आगओ । पुच्छिया य णेण माया 'आगया एत्थ तुह वहु' त्ति । भणियं च तीए 'पुत्त, आगया सोवणयं पविट्ठा' । गओ इमो सोवणयं जाव पेच्छइ दीवुज्जोए तं वीणं पिव महुरक्खरालाविणी णिय-उच्छंग-संग-दुल्ललियं वील-कीलयावलंबिणी । तं च तारिसिं पेच्छिऊण ससंभमं पहाविओ इमो तत्तोहुत्तं । गंतूण य णेण छरं ति छिण्णो पासओ छुरियाए । णिवडिया धरणिवट्टे, सित्ता जलेणं, वीइया पोत्तएणं, संवाहिया हत्थेणं । तओ ईसि णीससियं, पविट्ठाइं अच्छियाइं, चलियं अंगेण, वलियं बाहुलयाहिं, फुरियं हियएणं । तओ जीविय त्ति णाऊण कहकह वि समासत्था ।

§ १०४) भणियं च णेणं ।

'सुंदरि किं किं केण व किं व वरद्धं कया तुमं कुविया । कह वा केण व कत्थ व किं व कयं केण ते होज्ज ॥
जेण तए अत्ताणं विलंबयंतीएँ सुयणु कोवेणं । आरोवियं तुलग्गे मज्झ वि जीयं अउण्णस्स ॥'

एवं च भणिया पिययमेणं ईसि-समुव्वेल्लमाण-मुणाल-कोमल-बाहुलइयाए ईसि-वियसंत-रत्त-पम्हल-धवल-विलोल-लोयणाए दट्ठूण पिययमं पुणो तक्खणं चेय आबद्ध-भिउडि-भंगुराए विरज्जमाण-लोयणाए रोस-वस-फुरमाणाधराए संलत्तं तीए ।

'अव्वो अवेहि णिल्लज्ज वच्च तत्थेव जत्थ सा वसइ । कुवलय-दल-दीहर-लोल-लोयणा साम-सामलंगी ॥'

इमं च सोऊणं भणियं माणभडेणं ।

'सुंदरि ण-याणिमो च्चिय का वि इमा साम-सुंदरी जुवई । कत्थ व दिट्ठा कइया कहिं व केणं व ते कहियं ॥'

इमं च णिसामिऊण रोसाणल-सिमिसिमेंत-हिययाए भणियं तीए ।

'अह रे ण-याणसि च्चिय जीए अंदोलयावलग्गेणं । वियसंत-पम्हलच्छेण अज्ज गोत्तं समणुचीयं ॥'

एवं च भणिऊण महासुण्णारण्ण-मुणी विय मोणमवलंबिऊण ठिय त्ति । 'अहो मे कुविया एसा, ता किमेत्थ करणीयं । अहवा सुकुविया वि जुवई पायवडणं णाइवत्तइ त्ति पडामि से पाएसु' चिंतिऊण भणियं च णेणं ।

'दे पसिय पसिय सामिणि कुणसु दयं कीस मे तुमं कुविया । एयं माणत्थद्धं सीसं पाएसु ते पडइ ॥'

त्ति भणमाणो णिवडिओ से चलण-जुवलए । तओ दुगुणयरं पिव मोणमवलंबियं । पुणो वि भणिया णेण ।

'दे सुयणु पसिय पसियसु णराहिवाणं पि जं ण पणिवइयं । तं पणमइ मह सीसं पेच्छसु ता तुज्झ चलणेसु ॥'

तओ तिउणयरं मोणमवलंबियं । पुणो वि भणिया णेण ।

'दरियारि-मंडलग्गाहिघाय-सय-जज्जरं इमं सीसं । मोत्तूण तुज्झ सुंदरि भण कस्स व पणमए पाए ॥'

---

1) P मम for मह, P वासघरयं. 2) J जुवईअणपरिअणयाणइ ताव य अत्ता°, P परिवारा य ण-, J तथागया, P सासूए J पुत्तय for पुत्ति. 3) P चेय महालग्गो त्ति. 4) P दलिया इव विर°, J उवरिल्लयेण, P खीलए, P om. य in both places. P गले पासं भणियमिमीए. 6) J णिसुणह for सुणेह, P तुब्भे तुब्भि, J लोभपालया, J णिअअदइयओ. 7) P धवलुवेल्लिरपम्हर-नयण. 8) J णिअं P पियं (पि जं ed.). 9) P खलणुल्लसंताव, J जवियाए, P कह वि ता for साहसं, J साहेज्जो. 10) J पक्खिअं, P आसण्णं, J णिग्गया णअणयणया, P निरुद्धो नीसासो । वकीगया. 11) P आयट्टियं धमणिजालं, J धम्मणिजालं सिढिलयाइं, P अंगाइं, J णिष्पोलिअं मुहं मि । P निवोल्लिमहं ति ।, P जुवइ-, J बंदे for वंद्रे. 12) P om. य, P वहुय त्ति, J पुत्तय for पुत्त, 13) J गओ य इमो, J महुरालाविणीं णिययुच्छंग, P -उत्संग. 14) P लील for वील, P तारिसं, P पहाइओ, P तत्ताहुत्तो, J om. णेण, P ज्झड for छर, P पासाओ. 15) P वीया पोत्तेणं, P हत्थेहिं ।. 16) P अंगेहिं, P बाहुलइयाहिं. 18) J केण व, कस्स व किम्व अवरद्धं, J कत्थ वा किं, J होज्जा. 19) J विलंबिअंतीए, P विलंबयंतीय सुयण कोवेण. 20) J om. च, P समु-वेल्लमाण, P -धवधल-. 21) P आबद्धा-, J फुरंतमाणधराए P फुरमाणावसाएहराए, P om. संलत्तं तीए. 22) P तत्थ य for तत्थेव, J दीहकल्लोल. 24) J कत्थ वि दिट्ठा, J कहि व्व, P कहं व तेणं. 26) J याणइ for याणसि, P समणुणीयं ।. 27) P ट्ठिय त्ति, P मम for मे. 28) J जुअई, J णाहिवत्तइ त्ति P नाइवत्तय त्ति. 29) P माणथद्धं, P तं for ते. 30) J om. त्ति, P जुयलए, J तेण for णेण. 31) P om. सुयणु, P यं for जं, P पणमइ । जं तं for पणिवइयं । जं तं, P तुज्झा. 32) P तिगुणतरं मोणमवलंबिऊण पुणो. 33) P मंडलग्गाभिघायसयजुज्जरं, P पणवए.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

§१०५) ता एवं भणिया ण किंचि जंपइ । तओ समुद्धाइओ इमस्स माणो महंतो । 'अहो, एसा एरिसी जेण एवं पि पसाइज्जमाणी वि ण पणाम-पसायं कुणइ । सव्वहा एरिसाओ चेय इमाओ इत्थियाओ होंति त्ति । अवि य ।

खण-रत्त-विरत्ताओ खण-रूसण-खण-पसज्जणाओ य । खण-गुण-गेण्हण-मणसा खण-दोसग्गहण-तल्लिच्छा ॥

सव्वहा चल-चवल-विज्जु-लइयाणं पिव दुव्विलसियं इमाणं । तं वच्चामि णं बाहिं । किमेसा ममं वच्चंतं पेच्छिऊण पसज्जइ ण व' त्ति विचिंतिऊण पयट्टो माणभडो, णिक्खंतो वास-घराओ । णीहरंतो य पुच्छिओ पिउणा 'किं पुत्त, ण दिण्णं से पडिवयणं' । णिग्गओ बाहिं गंतुं पयत्तो । तओ चिंतियं इमस्स महिलाए 'अहो, एवं वज्ज-कढिण-हियया अहं, जेण भत्तुणो तहा पाय-पडियस्स ण पसण्णा । ता ण सुंदरं कयं मए । अवि य ।

अकय-पसाय-विलक्खओ पुणरुत्त-पणाम-सव्वहा-खविओ वि । अव्वो मज्झ पियल्लओ ण-याणिमो एस पत्थिओ कहिं पि ॥

ता इमस्स चेय मग्गालग्गा वच्चामो' त्ति चिंतिऊण णीहरिया वास-घरयाओ । पुच्छिया य सासुयाए 'पुत्ति, कत्थ चलिया' । तीए भणियं । 'एसो ते पुत्तो कहिं पि रुट्ठो पत्थिओ' त्ति भणमाणी तुरिय-पय-णिक्खेवं पहाइया । तओ ससंभमा सा वि थेरी मग्गालग्गा । चिंतियं च तेण इमस्स पिउणा वीरभडेणं । 'अरे सव्वं चेय कुडुंबयं कत्थ इमं पत्थियं' ति चिंतयंतो मग्गालग्गो सो वि वीरभडो । इमो य घण-तिमिरोत्थइए कुहिणी-मग्गे वच्चमाणो कह-कह वि लक्खिओ तीए । बहु-पायव-साहा-सहस्संधयारस्स पच्चंत-गाम-कूवस्स तडं पत्तो । तत्थ अवलोइयं च णेण पिट्ठओ जावोवलक्खिया णियय-जाय त्ति । तं च पेच्छिऊण चिंतियमणेण । 'दे पेच्छामि ताव ममोवरि केरिसो इमीए सिणेहो' त्ति चिंतयंतेण समुक्खित्ता एक्का गाम-कूव-तड-संठिया सिला । समुक्खिविऊण य दढ-भुय-जंत-पविद्धा पक्खित्ता अयडे । पक्खिविऊण य लहुं चेय आसण्ण-संठियं तमाल-पायवं समल्लीणो । ताव य आगया से जाया । सिला-सद्द-संजणिय-संकाए अवलोइयं च इमीए तं कूवं । जाव दिट्ठं

वित्थिण्ण-सिला-घाउच्छलंत-जल-तरल-वेविर-तरंगं । कूवं तं पिव कूवं सुव्वंतं पडिसुय-रवेण ॥

तं च तारिसं दट्ठूण पुलइयाइं तीए पासाइं । ण य दिट्ठो इमो तमाल-पायवंतरिओ । तओ चिंतियं । 'अवस्सं एत्थ कूवे मह दइएण पक्खित्तो अप्पा होहिइ । ता किमेत्थ करणीयं । अहवा

सो मह पसाय-विमुहो अगणिय-परिसेस-जुवइ-जण-संगो । एत्थ गओ गय-जीवो मज्झ अउण्णाए पेम्मंधो ॥
सयणे परिभूयाओ दोहग्ग-कलंक-दुक्ख-तवियाओ । भत्तार-देवयाओ णारीओ होंति लोयम्मि ॥'

चिंतिऊण तीए अप्पा पक्खित्तो तहिं चेय अयडे । दिट्ठा य णिवडमाणी तीए थेरीए । पत्ता ससंभमंता । चिंतियं तीए 'अहो, णूण मह पुत्तओ एत्थ कूवे पडिओ, तेण एसा वहू णिवडिय त्ति ।

हा हा अहो अकज्जं देव्वेण इमं कयं णवर होज्जा । दावेउं णवर णिहिं मण्णे उप्पाडिया अच्छी ॥

ता जइ एवं, मए वि ता किं जीवमाणीए दूसह-पुत्त-सुण्हा-विओय-जलण-जालावलि-तवियाए' त्ति भणिऊण तीए थेरीए पक्खित्तो अप्पा । तं च दिट्ठं अणुमग्गालग्गेणं थेर-वीरभडेणं । चिंतियं च णेणं । 'अरे, णूणं मह पुत्तो सुण्हा महिला य णिवडिया । अहो आगओ कुलक्खओ । ता सव्वहा वइरि-गइंद-दंत-मुसलेसु सुहं हिंदोलियं मए, उब्भड-भड-सहस्स-असि-घाय-घणम्मि वि वियारियं, पुणो धणु-गुण-जंत-पमुक्क-सिलीमुह-संकुले रणे । एण्हिं एत्थ दड्ढ-दइवेण वसाणमिणं णिरूवियं । ता मह ण जुज्जइ एरिसो मच्चू । तहा वि ण अण्णं करणीयं पेच्छामि' त्ति चिंतिऊण तेण वि से पक्खित्तो अप्पा । एयं च सव्वं दिट्ठं वुत्तंतं इमिणा माणभडेणं । तहा वि माण-महारक्खस-पराहीणेणमणिवारियं, ण गणिओ पर-लोओ, ण संभरिओ धम्मो, ण सुमरिओ उवयारो, अवहत्थिओ सिणेहो, अवमाणिओ से पेम्म-बंधो, ण कया गुरु-भत्ती, वीसरियं दक्खिण्णं, पम्हुट्ठा दया, परिचत्तो विणओ त्ति । ते मए जाणिऊण संजाय-पच्छायाओ विलविउं पयत्तो ।

1 > P एवं° for एवं, J अहो एरिसा जेण. 2 > P कुणइ त्ति सव्वहा, P चेव इमाइओ अत्थियाओ, P om. त्ति. 4 > P सव्वहा, J ता for तं, J किमेस. 5 > J त्ति चिंतिऊण, P गब्भघरयाओ for वासघराओ, J om. य, P पुच्छिउणो किं. 6 > P हं for अहं, J ण for जेण, J तहा वि पा°. 7 > J मे for मए. 8 > P पणरुत्त, P सवहु for सव्वहा, P खविओ, J पियलओ, P एस कयं पि पत्थिओ. 9 > J वासहरयाओ, P सासूए, J पुत्त for पुत्ति. 10 > J वि से थेरी. 11 > P पिउणो, J कुडुंबयं, P om. कत्थ, P पत्थिय त्ति, J om. चिंतयंतो मग्गालग्गो etc. to णिययजाय त्ति ।. 13 > P पाया for साहा (ed.), P अवलोइउं च णेणापिट्ठिओ, P निययजाय त्ति ।. 14 > P दे पच्छामि, J om. इमीए, P चिंतिय तेण, J एगाम-. 15 > P संसिया for संठिया, J om. य, P भुया for भुय, P पविट्ठा for पविद्धा, P adds य before अयडे. 16 > P संका for संकाए, J कूवं । जावय दिट्ठं. 17 > P घायउच्छलंत, J तं पि कूवसुव्वत्तयडासुअ-, P सुव्वंतं. 18 > J तीय, P एत्थं. 19 > J पविट्ठो for पक्खित्तो, P होहीई. 20 > J गयजीओ, J पेम्मद्धो P पेमंधो. 21 > P देवयाए. 22 > P चिंतियं for चिंतिऊण, P तेहिं चेव, P दिट्ठो, P तीय थेरीय, P ससंभंतो चिंतयंती. 23 > P सा for एसा. 24 > P दव्वेण, P दावेऊर णवर निही मण्ण उप्पाडिऊण अच्छीणि. 25 > P एव, P om. वि, P जलणजालतवियाएउ त्ति, P om. थेरीए. 26 > P परिक्खित्तो. 27 > P ताव for ता. 28 > P जंतु for जंत, J जंतमुक्कपमोक्क-, J दइएण, P वसणमिणं, P निरुवियमहं. 29 > P ता हा for तहा वि. 30 > P om. वुत्तंतं, P माणमाणरक्खसा पराहीणेण न निवारियं ।, J परलोगो. 31 > P उवयारहरो, J पेम्माबद्धो P पेमाबंधो. 32 > J °चत्तो विणओ ते य मए जाणि°.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§१०६) 'हा ताय पुत्त-वच्छल जाएण मए तुमं कहं तविओ । मरणं पि मज्झ कज्जे णवरं णीसंसयं पत्तो ॥
धी धी अहो अकज्जं आयर-संवड्डियस्स मायाए । वुड्डत्तणम्मि तीए उवयारो केरिसो रइओ ॥
हा हा जीए अप्पा विलंबिओ मज्झ णेह-कलियाए । तीएँ वि दइयाएँ मए सुपुरिस-चरियं समुव्वूढं ॥
वज्ज-सिलिंका-घडियं णूण इमं मज्झ हिययं विहिणा । जेणेरिसं पि दट्ठुं फुट्टइ सय-सिक्करं णेय ॥

ता पुण किमेत्थ मह करणीयं । किं इमम्मि अयडे अत्ताणं पक्खिवामि । अहवा णहि णहि,

जलणम्मि सत्त-हुत्तं जलम्मि वीसं गिरिम्मि सय-हुत्तं । पक्खित्ते अत्ताणे तहा वि सुद्धी महं णत्थि ॥

§१०७) 'ता एयं एत्थ जुत्तं कालं । एए मएल्लए कूवाओ कड्ढिऊण सक्कारिऊणं मय-करणिज्जं च काऊणं वेरग्ग-मग्ग-वडिओ विसयाओ विसयं, णयराओ णयरं, कब्बडाओ कब्बडं, मडंबाओ मडंबं, गामाओ गामं, मढाओ मढं, विहाराओ विहारं परिभममाणो कहिं पि तारिसं तुलग्गेणं कं पि गुरुं पेच्छिहामो, जो इमस्स पावस्स दाहिइ सुद्धिं' ति चिंतिऊण तम्हाओ चेय ठाणाओ तित्थं तित्थेण भममाणो सयलं पुहई-मंडलं परिभमिऊण संपत्तो महुराउरीए । एत्थ एकम्मि अणाह-मंडवे पविट्ठो । अवि य तत्थ ताव मिलिएल्लए कोड्ढीए वलक्ख खइयए दीण दुग्गय अंधलय पंगुलय मंदुलय मडहय वामणय छिण्ण-णासय तोडिय-कण्णय छिण्णोट्ठय तडिय कप्पडिय देसिय तित्थ-यत्तिय लेहाराय धम्मिय गुग्गुलिय भोया । किं च बहुणा । जो माउ-पिउ-रुट्ठेल्लओ सो सो सव्वो वि तत्थ मिलिएल्लओ त्ति । ताहं च तेत्थु मिलिएल्लयहं समाणहं एकेक्कमहा आलावा पयत्ता । 'भो भो कयरहिं तित्थे दे चेवा गयाहं कयरा वाहिया पावं वा फिट्टइ' त्ति । एक्केण भणियं । 'अमुक्का वाणारसी कोढिएहिं, तेण वाणारसीहिं गयहं कोढा फिट्टइ' त्ति । अण्णेण भणियं । 'हुं हुं कहिओ वुत्तंतओ तेण जंपिएल्लउ । कहिं कोढं कहिं वाणारसि । मूलत्थाणु भडारउ कोढइं जे देइ उद्दालइज्जे लोयहुं ।' अण्णेण भणियं । 'रे रे जइ मूलत्थाणु देइजे उद्दालइज्जे कोढइं, तो पुणु काइं कज्जु अप्पाणु कोढियल्लउ अच्छइ ।' अण्णेण भणियं । 'जा ण कोढिएल्लउ अच्छइ ता ण काइं कज्जु, महाकाल-भडारयहं छम्मासे सेवण्ण कुणइ जेण मूलहेज्जे फिट्टइ' । अण्णेण भणियं । 'काइं इमेण, जत्थ चिर-परूढु पावु फिट्टइ, तं मे उद्दिसह तित्थं' । अण्णेण भणियं । 'प्रयाग-वड-पडियहं चिर-परूढ पाय वि हत्थ वि फिट्टंति' । अण्णेण भणियं । 'पाव पुच्छिय पाय साहहि' । अण्णेण भणियं । 'खेड्डु मेल्लहं, जइ पर माइ-पिइ-वह-कयइं पि महापावाइं गंगा-संगमे ण्हायहं भइरव-भडारय-पडियहं णासंति ।'

§१०८) तं च सुयं इमेणं माणभडेणं । तं सोऊण चिंतियं मणेण । 'अहो सुंदरं इमिणा संलत्तं । ता अहं माइ-पिइ-वह-महापाव-संतत्तो गंगा-संगमे ण्हाइऊण भइरवम्मि अत्ताणयं संजिमो जेण इमस्स महापावस्स सुद्धी होइ' त्ति चिंतयंतो महुरा-णयरीओ एस एयं कोसंबी संपत्तो त्ति । ता

णरवर ण-याणइ च्चिय एस वराओ इमं पि मूढ-मणो । जं मूढ-वयण-वित्थर-परंपराए भमइ लोयं ॥
पडियस्स गिरियडाओ सो विहडइ णवर अट्ठि-संघाओ । जं पुण पावं कम्मं समयं तं जाइ जीवेण ॥
पडण-पडियस्स पत्थिव पावं परियलइ एत्थ को हेऊ । अह भणसि सहावो च्चिय साहसु ता केण सो दिट्ठो ॥
पच्चक्खेण ण घेप्पइ किं कज्जं जेण सो अमुत्तो त्ति । पच्चक्खेण विउत्ते ण य अणुमाणं ण उवमाणं ॥
अह भणसि आगमेणं तं पुण सव्वण्णु-भासियं होज्ज । तस्स पमाणं वयणं जइ मण्णसि तो इमं सुणसु ॥
पडण-पडियस्स धम्मो ण होइ तह मंगुलं भवइ चित्तं । सुद्ध-मणो उण पुरिसो घरे वि कम्मक्खयं कुणइ ॥
तम्हा कुणह विसुद्धं चित्तं तव-णियम-सील-जोएहिं । अंतर-भावेण विणा सव्वं भुस-कुट्टियं एयं ॥''

§१०९) एवं च णिसामिऊणं माणभडो विउडिऊण माण-बंधं णिवडिओ से भगवओ धम्मणंदणस्स चलण-जुवलए । भणियं च णेण । 'भगवं

---

1) J महा for कहं. 2) P धिद्धी, J तहया for आयर. 3) P जीए अप्पो, P तीय for तीए, P om. मए, P सव्वुरिस, P समवूढं. 4) P सिलंका, P जं एरिसं, J दट्ठुं हुट्टइ, P सियसक्करं निय।. 5) ता उण, P मओ for मह, P करणीयं ति, J तो for किं. 6) P सत्तहुत्तं. 7) J जत्तं कालं P जुत्तकालं, P कूयाओ, P om. च, P मग्गपडिओ. 8) P नरयाओ नरयं. 9) P किं पि गुरुवं पे°, P om. पावस्स, P दाहीय for दाहिइ, J सुद्धि त्ति (?) P सुद्धि त्ति, P तओ चेय ट्ठाणाओ. 10) P पुहइमंडलं, P तत्थ for एत्थ. 11) J मिलियालए, P मिलिएल्लय कोढियवलक्खइए दीणदुग्गयं, P मंढहय. 12) P -नासियताडियकन्नए, J देविय for देसिय, P लेहारिय, P गुम्मुलियाभोय. 13) P माउपीउ, P om. सो सो, P च्चिय for वि, P मिलियल्लओ, P तत्थ for तेत्थु, J मिलिएलय सहसमाणह, P एक्केक्कमहं. 14) J देवा for दे चेवा, J वाहिं for वाहिया, P व for वा, J पिट्टइ. 15) J वाणारसी गयाणं कोढु फिट्टइ त्ति, P om. त्ति, P कहिं उवउत्तंतओ तणए जंपिअल्लए. 16) P °त्थाण भराडओ कोढइं देइ जो, J कोढइं जे देइ, J उद्दालि लोअहुं, P लोयहं । अण्णेण. 17) P मूलुद्धत्थाणु, J देइ उद्दालइज्जं, J ता for तो, P पुण, P कज्ज अप्पणु कोढएल्लउ छइ । ताणं काइं कज्जउ. 18) J महाकालु भडारउ छम्मास, P भडारहयहं छम्मासे सेव न करइ, P मूलहोज्जे. 19) P तत्थ for जत्थ, J चिरपरूढ पाउ, J तुम्मे for तं मे, J तित्थ, P प्रयागवडे पडिहयं चिरं. 20) J अरे पाव, P पावे पुच्छिउं पाए सोहसि, P खड्डमेल्लिहुं जइ परमायपियवहुकयाइं पि पावाइं, J माइं पिइ°. 21) P फिट्टंति before गंगा°, P पडिहयं, J णासइ त्ति. 22) P स निसुयं, P तं च सोऊण, P ता अलं माइपियवहपावमहासंतत्ता. 23) J अत्ताणं, P अत्ताणयंमि भजिमो, P होउ, P चिंतियंतो. 24) J एय for एयं. 25) J इमं विमूढ-. 26) J पडिअस्सइ गिरि°, P महिट्ट (ड्ड) for अट्ठि. 27) P पिरिथव. 28) J कज्जे, P विउत्तो. 29) P भणि for भणसि, P होज्जा, P repeats वयणं. 30) P पडणवडियस्स, P जइ for तह, P कह वि for भवइ, P वि पावक्खयं करइ. 31) P जोगेहिं, P सव्वं तुसमुट्ठियं एयं. 32) J एयं च, P विउट्ठिऊण, J माणवधं P माणबंधे, P सेस भगवओ, P जुवणए. 33) J तेण for णेण.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

दुक्ख-सय-णीर-पूरिय-तरंग-संसार-सागरे घोरे । भव्व-जण-जाणवत्तं चलण-जुयं तुज्झ अल्लीणो ॥
जं पुण एयं कहियं मह दुत्तंतं तए अपुण्णस्स । तं तह सयलं वुत्तं ण एत्थ अलियं तण-समं पि ॥
ता तं पसियसु मुणिवर वर-णाण-महातवेण दिप्पंत । पाव-महापंक-जलोवहिम्मि धारेसु खिप्पंतं ॥'

भणियं च गुरुणा धम्मणंदणेणं ।

'सम्मत्तं णाण तवो संजम-सहियाइँ ताइँ चत्तारि । मोक्ख-पह-पवण्णाणं चत्तारि इमाइं अंगाइं ॥
पडिवज्जइ सम्मत्तेणं जं जह गुरु-जणेण उवइट्टं । कज्जाकज्जे जाणइ णाण-पईवेण विमलेणं ॥
जं पावं पुव्व-कयं तवेण तावेइ तं णिरवसेसं । अण्णं णवं ण बंधइ संजम-जमिओ मुणी कम्मं ॥
ता सयल-पाव-कलिमल-किलेस-परिवज्जिओ जिओ सुद्धो । जत्थ ण दुक्खं ण सुहं ण वाहिणो जाइ तं सिद्धिं ॥'

इमं च सोऊण भणियं माणभडेणं । 'भगवं, कुणसु मे पसायं इमेहिं सम्मत्त-णाण-तव-संजमेहिं जइ जोग्गो' त्ति । गुरुणा वि णाणाइसएणं उवसंत-कसाओ जाणिऊण पव्वाविओ जिण-वयण-भणिय-विहीए माणभडो त्ति ॥ ॐ ॥

§ ११०) भणियं च पुणो वि गुरुणा धम्मणंदणेण ।

'माया उव्वेययरी सज्जण-सत्थम्मि णिंदिया माया । माया पावुप्पत्ती वंक-विवंका भुयंगि व्व ॥

माया-परिणाम-परिणओ पुरिसो अंधो इव बहिरो विव पंगू इव पसुत्तो विय अयाणओ विय बालो विय उम्मत्तो विय भूय-गहिओ इव सव्वहा माइल्लो । किं च ।

सज्जण-सरल-समागम-वंचण-परिणाम-लग्गय-मणाए । मायाए तेण मुणिणो णरणाह ण अप्पयं देंति ॥
माया-रक्खसि-गहिओ जस-धण-मित्ताण णासणं कुणइ । जीयं पि तुलग्गं मिव णरवर एसो जहा पुरिसो ॥'

भणियं च णरवइणा 'भगवं, ण-याणिमो को वि एस पुरिसो, किं वा इमेण कयं' ति । भणियं च धम्मणंदणेण गुरुणा ।

"जो एस तुज्झ वामे पच्छा-भायम्मि संठिओ मज्झ । संकुइय-मडह-देहो मंदो कसण-च्छवी पावो ॥
जल-बुब्बुय-सम-णयणो दिट्ठो जो कायरो तए होइ । णिज्झाइ य पेच्छंतं बगो व्व जो कुंचिय-ग्गीओ ॥
कम-सज्जो मज्जारो माया इव एस दीसए जो उ । माया-मएण एएण जं कयं तं णिसामेहि ॥

§ १११) अत्थि बहु-गाम-कलिओ उज्जाण-वणंतराल-रमणिज्जो । आढत्त-महाभोज्जो भोज्ज-सउग्गीय-भोजयणो ॥

जो य रेहइ णिरंतर-संठिएहिं गामेहिं, गामइं मि रेहंति तुंग-संठिएहिं देव-कुलेहिं, देवउलइं मि रेहंति धवल-संठिएहिं तलाएहिं, तलायइं मि रेहंति विहुल-दलेहिं पउमिणी-संडेहिं, पउमिणि-संडइं मि रेहंति वियसिय-दलेहिं अरविंदेहिं, अरविंदइं पि रेहंति महु-पाण-मत्त-मुइय-महुयर-जुवाणएहिं ति ।

इय एक्केक्कम-सोहा-संघडिय-परंपराए रिंछोली । जम्मि ण समप्पइ च्चिय सो कासी णाम देसो त्ति ॥
तम्मि य णयरी अइ-तुंग-गोउरा कणय-घडिय-वर-भवणा । सुर-भवण-णिरंतर-साल-सोहिया सग्ग-णयरि व्व ॥

जहिं च णयरिहिं जणो देयणओ अत्थ-संगह-परो य, कुणंति विलासिणीओ मंडणइं अमय-वियारइं च, ण सिक्खविज्जंति कुलधण-लज्जियव्वइं गुरुयण-भत्तिओ य, सिक्खविज्जंति जुवाणा कला-कलावइं चाणक्क-सत्थइं च । अवि य ।

जा हरिस-पणय-सुरवइ-मउड-महा-रयण-रइय-चलणस्स । वम्मा-सुयस्स जम्म-णयरी वाणारसी णाम ॥

§ ११२) तीय य महाणयरीए वाणारसीए पच्छिम-दक्खिणे दिसा-विभाए सालिग्गामं णाम गामं । तहिं च एक्को वइस्स-जाई परिवसइ गंगाइच्चो णाम । तम्मि य गामे अणेय-धण-धण्ण-हिरण्ण-सुवण्ण-समिद्ध-जणे वि सो चेय एक्को जम्म-दरिद्दो । कुसुमाउह-सरिससमसरिस-रूव-पुरिसयणे वि सो चेय एक्को विरूओ । महु-महुर-वयण-ग्गाहिरे वि जणम्मि सो चेय एक्को दुव्वयण-विसो । सरय-समय-संपुण्ण-ससि-सिरी-सरिस-दंसण-सुहस्स वि जणस्स सो चेय एक्को उव्वेयणिज्ज-दंसणो ।

1) P भवजलहि for भव्वजण. 2) P अउण्णस्स, P वत्तं for वुत्तं. 3) P om. महा, J जलोयहिअअम्मि, P खुप्पंतं. 5) J संजमसमियाइं. 6) JP जहा, P गुरुयणेण, P कज्जाकज्जं. 8) J सयलकलिकिलेस, J जीउ, J तत्थ for जत्थ, P सुक्खं for दुक्खं. 9) P भणियं for भगवं, J om. मे, P नाणसतव, J जोग्गे, P इ for वि. 10) J णाणाईसएणं, J पवाविओ, P माणभडो त्ति । प्रव्रजितो माणभट । भणियं. 11) P om. च, P om. गुरुणा. 12) J ऊव्वेवयरी, J पावुप्पत्ति. 13) J अंधो इवा बहिरो विवा पंगू इवा, P बहिरो इव पसू विय पसुत्तो, P इव for विय thrice, P उम्मत्तओ. 14) P भूयगहिल्लो, P माइल्लओ । किंचि. 16) P जीयं च तुलग्गंमी नरवर. 17) J भयवं, P इमे for इमेण. 18) JP वामो, P कसिणच्छवी. 19) P जिट्ठो for दिट्ठो, P पेच्छंतो, P कुंचियग्गीवो. 20) P मायामएण, P निसामेह. 21) J भोज्जसयागीय, P भोज्ज-इणो. 22) J गामइम्मि, P गामाइंमि च्चिय रहिंति, J om. रेहंति, P देवउलेहि देवलइं च्चिय रेहंति तलसिठिएइं तलाएहिं तलाइं च्चिय रेहंति. 23) P संडइं वि, P अरवंदेहिं. 24) P मइय for मुइय, J जुवाणेहिं. 26) J णयरीए P नयरीए for णयरी, J गोपुरा. 27) P जेहं च्चिय for जहिं च, P मंडणइं मयणवियारियं च सिक्खंति कुल°. 28) P भत्तिउव्व सिक्ख°, P जुवाणकला°, P माणिक्क for चाणक्क, P om. अवि य. 29) P नरवइ for सुरवइ, J णामा. 30) P om. य, P दिसाभाए. 31) P वइसजाई, P om. य, P अणेय, J om. सुवण्ण, P समिद्धे जिणे सो. 32) P कुसुमसरिस, J om. °मसरिस, P पुरिसयणो, J चेय एक्को, P °ग्गहिरे, P व for वि, P om. जणम्मि, P सो च्चिय. 33) J सरयसमयदंसण, P सो च्चेय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरस-सरल-संलाविराणं पि सो चेय एक्को जरढ-कुरंग-सिंग-भर-भंगुर-जंपिरो । तण-मेत्तुवयारि-दिण्ण-जीवियाणं पि मज्झे सो चेय कयग्धो । सव्वहा सज्जण-सय-संकुले वि तम्मि गामे सो चेय एक्को दुज्जणो त्ति । तस्स य तारिसस्स असंबद्ध-पलाविणो वंकयस्स णिद्दयस्स णिद्दक्खिण्णस्स णिकिवस्स णिरणुकंपस्स बहु-जण-पुणरुत्त-विप्पलद्ध-सज्जणस्स समाण-गाम-जुवाणएहिं बहुसो उवलक्खिय-माया-सीलस्स गंगाइच्चो त्ति अवमण्णिऊण मायाइच्चो कयं णामं । तओ सव्वत्थ पइट्ठियं सहासं च बहुसो जणो उल्लवइ मायाइच्चो मायाइच्चो त्ति । सो उण णरवर, इमो जो मए तुज्झ साहिओ त्ति । अह तम्मि चेय गामे एक्को वाणियओ पुव्व-परियलिय-विहवो थाणू णाम । तस्स तेण सह मायाइच्चेण कह वि सिणेहो संलग्गो । सो य सरलो मिउ-मद्दवो दयालू कयण्णू मुद्धो अवंचओ कुलुग्गओ दीण-वच्छलो त्ति । तहा विवरीय-सील-वयणाणं पि अवरोप्परं देव्व-वसेण बहु-सज्जण-सय-पडिसेहिज्जमाणेणावि अत्तणो चित्त-परिसुद्धयाए कया मेत्ती । अवि य ।

सुयणो ण-याणइ च्चिय खलाण हिययाइँ होंति विसमाइं । अत्ताण-सुद्ध-हिययत्तणेण हिययं समप्पेइ ॥
जो खल-तरुयर-सिहरम्मि सुवइ सब्भाव-णिब्भरो सुयणो । सो पडिओ च्चिय बुज्झइ अहव पडंतो ण संदेहो ॥

§ ११३) एवं च ताणं सज्जण-दुज्जणाणं सब्भाव-कवडेण णिरंतरा पीई वड्ढिउं पयत्ता । अण्णम्मि दियहे वीसत्था-लाव-जंपिराणं भणियं थाणुणा । 'वयस्स,

धम्मत्थो कामो वि य पुरिसत्था तिण्णि णिम्मिया लोए । ताणं जस्स ण एक्कं पि तस्स जीयं अजीय-समं ॥
अम्हाण ताव धम्मो णत्थि च्चिय दाण-सील-रहियाणं । कामो वि अत्थ-रहिओ अत्थो वि ण दीसए अम्हं ॥
ता मित्त फुडं भणिमो तुलग्ग-लग्गं पि जीवियं काउं । तह वि करेमो अत्थं होहिइ अत्थाओ सेसं पि ॥'

भणियं च मायाइच्चेण । 'जइ एवं मित्त, ता पयट्ट, वाणारसिं वच्चामो । तत्थ जूयं खेल्लिमो, खत्तं खणिमो, कण्णुं तोडिमो, पंथं मूसिमो, गंठिं छिण्णिमो, कूडं रइमो, जणं वंचिमो, सव्वहा तहा तहा कुणिमो जहा जहा अत्थ-संपत्ती होहिइ' त्ति । एवं च णिसामिऊण महा-गइंद-दंत-जुवल-जमलाहएण विय तरुयरेणं पकंपियाइं कर-पल्लवाइं थाणुणा । भणियं च णेण ।

'तुज्झ ण जुज्जइ एयं हियएणं मित्त ताव चिंतेउं । अच्छउ ता णीसंकं मह पुरओ एरिसं भणिउं ॥'

एवं च भणिएण चिंतियं मायाइच्चेणं 'अरे अजोग्गो एसो, ण लक्खिओ मए इमस्स सब्भावो, ता एवं भणिस्सं' । हसिऊण भणियं च णेणं 'णहि णहि परिहासो मए कओ, मा एत्थ पत्तियायसु त्ति । अत्थोवायं जं पुण तुमं भणिहिसि तं करेहामो' त्ति । भणियं च थाणुणा ।

'परिहासेण वि एवं मा मित्त तुमं कयाइ जंपेज्जा । होइ महंतो दोसो रिसीहिँ एयं पुरा भणियं ॥
अत्थस्स पुण उवाया दिसि-गमणं होइ मित्त-करणं च । णरवर-सेवा कुसलत्तणं च माणप्पमाणेसुं ॥
धाउव्वाओ मंतं च देवयाराहणं च केसिं च । सायर-तरणं तह रोहणम्मि खणणं वणिज्जं च ॥
णाणाविहं च कम्मं विज्जा-सिप्पाइँ णेय-रूवाइं । अत्थस्स साहयाइं अणिंदियाइं च एयाइं ॥

§ ११४) ता वच्चिमो दक्खिणावहं । तत्थ गया जं जं देस-काल-वेस-जुत्तं तं तं करिहामो' त्ति सम्मं मंतिऊण अण्णम्मि दियहे कय-मंगलोवयारा आउच्छिऊण सयण-णिद्ध-वग्गं गहिय-पच्छयणा णिग्गया दुवे वि । तत्थ अणेय-गिरि-सरिया-सय-संकुलाओ अडईओ उल्लंघिऊण कह कह वि पत्ता पइट्ठाणं णाम णयरं । तहिं च णयरे अणेय-धण-धण्ण-रयण-संकुले महा-सग्ग-णयर-सरिसे णाणा-वाणिज्जाइं कयाइं, पेसणाइं च करेमाणेहिं कह कह वि एक्केक्कमेहिं विढत्ताइं पंच पंच सुवण्ण-सहस्साइं । भणियं च णेहिं परोप्परं । 'अहो, विढत्तं अम्हेहिं जं इच्छामो अत्थं । एयं च चोराइ-उवद्दवेहिं ण य णेउं तीरइ सएस-हुत्तं । ता तं इमेण अत्थेण सुवण्ण-सहस्स-मोल्लाइं रयणाइं पंच पंच गेण्हिमो । ताइं सदेसं गयाणं सम-मोल्लाइं अहिय-मोल्लाइं वा वच्चहिं' ति भणिऊण गहियं एक्केक्कं सुवण्ण-सहस्स-मोल्लं । एवं च एयाइं एक्केक्कस्स पंच पंच रयणाइं ।

1) P सरलमरस, J सो चेय, P om. एक्को, P om. भर, P मेत्तूवयरी, P om. मज्झे सो चेय etc......to तस्स य तारिसस्स. 3) J वंकय णिद्द°, J णिद्दक्खिणस्स, P निरणुकंपस्स, P विप्पलुद्ध. 5) P बहुजणो, J उलवइ व माया°, P सोऊग for सोउण, P चेव. 6) P संपग्गो. 7) P कुलग्गओ, J सीलरयणाणं, P अवरोप्परं देववसेण. 8) P अप्पणो च्चिय पडिसुद्धयाए. 10) P सुयइ. 11) P कवड for कवडेण, J पीती, P पड्डिओ for वड्ढिउं, J विसत्थालाव P वीसत्थालावकवडनिरंतरा पीइं जंपि°. 13) P पुरिसत्थो. 14) P तम्हा न for अम्हाण. 15) J जइ जिअं for जीवियं, P जीविउं for जीवियं, P अत्थो होही. 16) P om. च, P खेलिमो, P कण्णं. 17) P मुसिमो, P छिंदिमो for छिण्णिमो, P om. one तहा, J होहिति त्ति. 18) J तरुवरेण, P तरुयरेणं एयं पियाइं करयलपल्लवालइं. 19) P हियएण वि ताव मित्त चिंतेउं. 20) P भणिऊण, J लक्खितो. 21) J om. त्ति, J अत्थोवायं जं ण पुण तुमं, P एत्थोवायं पुण जं तुमं भणसि तं. 23) P एयं सा मित्त. 24) P उण. 25) P मंतं देव°, J केसिं चि for च केसिंच. 26) P सप्पाइ णेग-, P साहणाइं, J om. अणिंदियाइं च. 27) P गयाणं जंमं कालदेसवेसजुत्तं तं करीहामो त्ति समं. 28) P सयलनिद्धवग्गो गच्छिहिय, J पच्छेया for पच्छयणा, P सिरि for गिरि. 29) P विलंघिऊण, P नयणं for णयरं, J om. णयरे, P om. अणेय, J om. धण्ण. 30) J वणिज्जाइं, P वरणिज्जाइं कम्मं च करेमाणेहिं पेसणेण कह. 31) P om. अहो, P जहिच्छाए for जं इच्छामो, P एवं च चोराउद्दवेहिं, P तीरइ विसयाहुत्तं. 32) J ततो for ता तं, P om. one पंच, P सएसं गयाइं, P सरिस for सम, J सममोल्लाइं च वच्चिहंति. 33) P वच्चीहिंति J आई for एयाइं, P पंचपं for second पंच.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताइं च दोहि मि जणेहिं दस वि रयणाइं एकम्मि चेय मइल-धूली-धूसरे कप्पडे सुबद्धाइं। कयं च णेहिं वेस-परियत्तं। कयाइं मुंडावियाइं सीसाइं। गहियाओ छत्तियाओ। लंबियं डंडयग्गे लाउयं। धाउ-रत्तयाइं कप्पडाइं। विलग्गाविया सिक्कए करंका। सव्वहा विरइओ दूर-तित्थयत्तिय-वेसो। ते य एवं परियत्तिय-वेसा अलक्खिया चोरेहिं भिक्खं भममाणा पयट्टा। कहिंचि मोल्लेणं कहिंचि सत्तागारेसु कहिंचि उद्ध-रत्थासु भुंजमाणा पत्ता एकम्मि संणिवेसे। तत्थ भणियं थाणुणा 'भो भो मित्त, ण पारेमो परिसंता भिक्खं भमिऊणं, ता अज्ज मंडए कारावेउं आहारेमो'। भणियं च मायाइच्चेणं 'जइ एवं, ता पविससु तुमं पट्टणं। अहं समुज्जुओ ण-याणिमो कय-विक्कयं, तुमं पुण जाणसि। तुरियं च तए आगंतव्वं।' भणियं च थाणुणा 'एवं होउ, किं पुण रयण-पोत्तडं कहं कीरउ' त्ति। भणियं च मायाइच्चेण 'को जाणइ पर-पट्टणाण ठिई। ता मा अवाओ को वि होहि त्ति तुह पविट्ठस्स मह चेव समीवे चिट्ठउ रयण-कप्पडं' ति। तेण वि एवं भणमाणेण समप्पियं तं रयण-कप्पडं। समप्पिऊण पविट्ठो पट्टणं। चिंतियं च मायाइच्चेणं। 'अहो, इमाइं दस रयणाइं। ता एत्थ मह पंच। जइ पुण एयं कहिंचि वंचेज्ज, ता दस वि महं चेव हवेज्ज' त्ति चिंतयंतस्स बुद्धी समुप्पण्णा। 'दे घेत्तूण पलायामि। अहवा ण महंती वेला गयस्स, संपयं पावइ त्ति। ता जहा ण-याणइ तहा पलाइस्सामि' त्ति चिंतिऊण गहिओ णेण रच्छा-धूलि-धूसरो अवरो तारिसो चेय कप्पडो। णिबद्धाइं ताइं रयणाइं। तम्मि य चिरंतणे रयण-कप्पडे णिबद्धाइं तप्पमाणाइं वट्टाइं दस पाहाणाइं। तं च तारिसं कूड-कवडं संघडंतस्स सहसा आगओ सो थाणू। तस्स य हलप्फलेण पाव-मणेण ण णाओ कत्थ परमत्थ-रयण-कप्पडो, कत्थ वा अलिय-रयण-कप्पडो त्ति। तओ णेण भणियं 'वयंस, कीस एवं समाउलो ममं दट्ठूणं' ति। भणियं मायाइच्चेणं। 'वयंस, एस एरिसो अत्थो णाम भओ चेय पच्चक्खो, जेण तुमं पेच्छिऊण सहसा एरिसा बुद्धी जाया 'एस चोरो' त्ति। ता इमिणा भएणं अहं सुसंभंतो'। भणियं च थाणुणा 'धीरो होहि' त्ति। तेण भणियं 'वयंस, गेण्ह एयं रयण-कप्पडं, अहं बीहिमो। ण कज्जं मम इमिणा भएण' त्ति भणमाणेण अलिय-रयण-कप्पडो त्ति काऊण सच्च-रयण-कप्पडो वंचण-बुद्धीए एस तस्स समप्पिओ। तेण वि अवियप्पेण चेय चित्तेण गहिओ। अवि य,

वंचेमि त्ति सयण्हं वग्घी अलियइ मय-सिलिंबस्स। अणुधाइ मय-सिलिंबो मुद्धो थणयं विमग्गंतो॥

§ ११५) तओ तं च समुज्जुय-हिययं पाव-हियएण वंचिऊण भणियमणेण। 'वयंस, वच्चामि अहं किंचि अंबिलं मग्गिऊण आगच्छामि' त्ति भणिऊण जं गओ तं गओ, ण णियत्तइ। इमेण य जोयणाइं बारस-मेत्ताइं दियहं राइं च गंतूण णिरूवियं णेण रयण-कप्पडं जाव पेच्छइ ते जे पाहाणा तत्थ बद्धा किर वंचणत्थं तम्मि कप्पडे सो चेय इमो अलिय-रयण-कप्पडो। तं च दट्ठूण इमो वंचिओ इव लुंचिओ इव पहओ इव तत्थो इव मत्तो इव सुत्तो इव मओ इव तहाविहं अणाचक्खणीयं महंतं मोहमुवगओ। खण-मेत्तं च अच्छिऊण समासत्थो। चिंतियं च णेण। 'अहो, एरिसो अहं मंदभागो जेण मए चिंतियं किर एयं वंचिमो जाव अहमेव वंचिओ'। अवि य,

जो जस्स कुणइ पावं हियएण वि कह वि मूढ-मणो। सो तेणं चिय हम्मइ पच्चुप्फिडिएण व सरेण॥

चिंतियं च णेण पाव-हियएणं। 'दे पुणो वि तं वंचेमि समुज्जुय-हिययं। तहा करेमि जहा पुणो मग्गेण विलग्गइ' त्ति चिंतयंतो पयट्टो तस्स मग्गालग्गो। इयरो वि थाणू कुलउत्तओ तत्थेव य पडिवालयंतो खणं मुहुत्तं अद्धप्पहरं पहरं दियहं पि जाव ण पत्तो ताव चिंतिउं पयत्तो।

'अव्वो सो मह मित्तो कत्थ गओ णवर होज्ज जीय-समो। किं जियइ मओ किं वा किं वा देव्वेण अवहरिओ॥'

तं च चिंतिऊण अण्णेसिउं पयत्तो। कत्थ।

रच्छा-चउक्क-तिय-चच्चरेसु देवउल तह तलाएसुं। सुण्ण-घरेसु पवासु य आराम-विहार-गोट्ठेसु॥

जया एवं पि गवेसमाणेण ण संपत्तो तया विलविउं पयत्तो।

---

1) P ताइं दोहिं चि जणेहिं, P एक्कम्मी, J धूलि-, P बद्धाइं for सुबद्धाइं, J om. कयं, J om. वेसपरियत्तं. 2) P om. कयाइं, P मुंडाविय सिरं, P छत्तीओ, P दंडग्गे, J धाउरत्तया P धाउरत्ताइं, J कप्पडाइं च. 3) P विरिइओ, P ते एवं, P चोरेहिं, J om. पयट्टा. 4) J om. कहिं चि उद्धरत्थासु, J पयत्ता for पत्ता. 5) P मंडवे काराविउं. 6) P पविस तुमं, J om. तुमं. J अहमुज्जुओ P समुज्जओ. 7) J पुण इमं रयण-, P रयणपोत्तकप्पडं कह, P जाणउ परपट्टणाणं का वि ट्ठीति।. 8) P को वि तुह होइ तुह. 9) P adds य before पविट्ठो, P जइ उण अहं कहिंचि. 10) J वंचेज्जा, P दस वि चेव मइ हवेज्ज त्ति चिंतियंतस्स. 11) P om. गयस्स, J ता for तहा, P पलाइस्सं ति. 12) P चेव कप्पडो। बद्धाइं, J दसप्पहाणाइं P दसपाइणाइं. 13) P -कवडं घडेंतस्स, J थाणुं, P हलप्फलेण, J पावमाणेण, P om. ण. 14) J परमत्थकप्पडो, J व for वा. 15) P च before माया°, P om. एस. 16) P ससंभंतो, P होहिय त्ति, P गेण्ह for वयंस. 17) J adds ति before अहं, P बीहोमो. 18) J om. एस. 19) J अणुद्धाइ. 20) J भणिओ अण्णेण. 21) P तं गओ जं गओ, J गंतूण for इमेण य, P दियहराईए गंतूण. 22) J पेच्छेइ, P ते पाइणा तत्थ किर बद्धा, P कप्पडो. 23) P om. लुंचिओ इव, P दट्ठो for तत्थो, P मओउ इव, J अणाविक्खणीयं. 24) P महंत, P च्चिय for च, P एरिसं मंद°. 25) P चिंतियं एयं किर वंचेमि. 26) P हियएणं, P केण for कह, P मोहमूढ. 27) J पुणे for पुणो, J वंचेमि त्ति समुज्जाय, P समुज्जय, P adds वि after पुणो. 28) P पइट्ठो, J थाणुं P थाण, J om. य, P पडिवालयंता, P अद्धपहरं. 29) P णो for ण. 30) J सो कोइ मह, P जीयइ मओ वा. 32) J inter. तिय and चउक्क, P चउक्केसु for तलाएसुं. 33) J om. पि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हा मित्त मित्त-वच्छल छल-वज्जिय जिय-जियाहि वास-सयं । कत्थ गओ कत्थ गओ पडिवयणं देसु तुरियं ॥
अव्वो केणइ दिट्ठो सरल-सहाओ गुणाण आवासो । मज्झ वयंसो सो सो साहसु वा केण वा दिट्ठो ॥'

एवं च विलवमाणस्स सा राई दियहो य अइक्कंतो । राईए पुण कहिं पि देवउले पडिऊण पसुत्तो । राईए प[illegible]-जामे केण वि गुज्जर-पहियएण इमं धवल-दुवहयं गीयं । अवि य ।

जो णवि विहुरे विभज्जणउ धवलउ कड्ढइ भारु । सो गोट्ठंगण-मंडणउ सेसउ ब्व जं सारु ॥

इमं च गिज्जमाणं सोऊण संभरिया इमा गाहुल्लिया थाणुणा ।

पिय-विरहे अप्पिय-दंसणे य अत्थक्खए विवत्तीसु । जे ण विसण्णा ते च्चिय पुरिसा इयरा पुणो महिला ॥

ता एत्थ विसाओ ण कायव्वो । सव्वहा जइ कहिंचि सो जीवइ तो अवस्सं गेहं आगमिस्सइ । अह ण जीवइ, तो तस्स य माणुसाणं समुप्पेस्सं रयणाणि त्ति चिंतिऊण पयट्टो अत्तणो णयराभिमुहो, वच्चमाणो कमेण संपत्तो णम्मया-तीरं । ताव सो वि मायाइच्चो विलक्खो दीण-विमणो भट्ठ-देह-लच्छीओ संपत्तो पिट्ठओ दिट्ठो अणेण । दट्ठूण य पसारिओभय-बाहुणा गहिओ कंठे रोइउं पयत्तो ।

हा मित्त सरल सज्जण गुण-भूसण मज्झ जीय वर-दइय । कत्थ गओ मं मोत्तुं साहसु ते किं व अणुभूयं ॥

§ ११६) इमो वि कवड-कय-रोवणो किं पि किं पि अलियक्खरालावं रोइऊण गाढयं च अवगूहिऊण उवविट्ठो पुरओ, पुच्छिओ थाणुणा । 'भणसु ता मित्त, कत्थ तुमं गओ, कत्थ वा संठिओ, किं वा कयं, कहं व मज्झ विउत्तो, जेण मए तहा अण्णेसिज्जमाणो वि ण उवलद्धो' त्ति । भणियं च णड-पडिसीसय-जडा-कडप्प-तरंग-भंगुर-चल-सहावेण इमिणा मायाइच्चेणं । 'वर-वयंस, णिसुणेसु जं मए तुह विओए दुक्खं पावियं । तइया गओ तुह सयासाओ अहं घरं घरेण भममाणो पविट्ठो एक्कम्मि महंते पासाए । तत्थ मए ण लद्धं किंचि । तओ अच्छिउं कं पि वेलं णिग्गंतुं पयत्तो जाव पिट्ठओ पहाइएहिं रोस-जलण-जालावली-मुज्झंतेहि धूमंधयार-कसिणेहिं भीसणायारेहिं जम-दूवेहिं व खुड्डया-पहार-कील-चवेडा-घाय-डंडप्पहारेहिं हम्ममाणो 'किं किमेयं' ति 'किं वा मए कयं' ति भणमाणो, 'हा मित्त, हा मित्त, कत्थ तुमं गओ, मह इमा अवत्थ' त्ति विलवमाणो तओ 'चोरो' त्ति भणमाणेहिं णीओ एक्कस्स तम्मि घरे घर-सामिणो सगासं । तत्थ तेण भणियं 'सुंदरो एस गहिओ, सो चेय इमो चोरो, जेण अम्हाणं कोंडलं अवहरियं । ता सव्वहा इमम्मि उवघरए णिरुंभिऊण धारेह जाव रायउले णिवेएमि । तओ अहं पि चिंतिउं पयत्तो । 'अहो,

पेच्छह विहि-परिणामं अण्णह परिचिंतियं मए कज्जं । अण्णह विहिणा रइयं भुयंग-गइ-वंक-हियएण ॥

तओ वयंस,

ण वि तह डज्झइ हिययं चोर-कलंकेण जीय-संदेहे । जह तुज्झ विरह-जालोलि-दीवियं जलइ णिब्भूमं ॥'

तओ 'अहो अकयावराहो अकयावराहो' त्ति विलवमाणो णिच्छूढो एक्कम्मि घर-कोट्टए, ण य केणइ अण्णेण उवलक्खिओ तत्थ वयंस, तुह सरीरे मंगुलं चिंतेमि जइ अण्णहा भणिमो, एत्तियं परिचिंतेमो ।

जइ होइ णाम मरणं ता कीस जमो इमं विलंबेइ । पिय-मित्त-विप्पउत्तस्स मज्झ मरणं पि रमणिज्जं ॥

§ ११७) एवं च चिंतयंतस्स गओ सो दियहो । संपत्ता राई । सा वि तुह समागम-चिंता-सुमिण-परंपरा-सुह-सुत्थियस्स झत्ति वोलीणा । संपत्तो अवरो दियहो । तत्थ मज्झण्ह-समए संपत्ता मम भत्तं घेत्तूणं एका वेस-विलया । तीय य ममं पेच्छिऊण सुंदर-रूवं अणुराओ दया य जाया । सा य मए पुच्छिया 'सुंदरि, एक्कं पुच्छिमो, जइ साहसि फुडं' । तीए भणियं 'दे सामसुंदर, पुच्छ वीसत्थं, साहिमो' । मए भणियं 'कीस अहं अणवराही गहिओ' त्ति । तीए संलत्तं 'सुहय, इमाए णवमीए अम्हं च ओरुद्धा देवयाराहणं काहिइ । तीए तुमं बली कीरिहिसि, चोरं-कारेण य गहिओ मिसं दाऊण' ।

1 > P om. मित्त, J om. छल, P om. जिय, P पडिवयणं for the 2nd कत्थ गओ. 2 > P केण वि, P सहावो, J inter. सो सो and साहसु. 3 > J राइ, P उण for पुण, P राईए°, P inter. केण & जामे. 4 > J -पहिएण, P -दुव्वहयं. 5 > P सज्जणओ (for मज्ज°) धवलओ कड्ढइ भारो ।, P मंडणओ सेसओ, P तह्निय for व्व जं (?). 7 > P इयरे for इयरा. 8 > P पि for च्चि, J आगच्छिरिसइ, J तो तओ तस्स य माणुस्साणं, P om. य. 9 > P अप्पणो for अत्तणो. 10 > P पट्ठीओ for पिट्ठओ, P पसारिणोभयबाहुणा. 11 > P राइउं. 12 > P मज्झ हिययदइया ।, J अणुहूअं. 13 > P -रोइणो, J रोत्तूण गाढं अव°. 14 > P आ for ता, J कत्थ व, P कह व. 15 > P तहा वि, P लद्धो for उवलद्धो, P भडिणियं for भणियं, P पडिसीसया. 16 > P om. णिसुणेसु, P तुहं. 17 > P किं पि कालं निग्गंतुं, J जा for जाव. 18 > P पहाविएहिं, P मुज्झंत धूमं°, J जमदूएहिं, P व खड्डया-, P कीडचवेडघायदंडपहारेहिं हंसमाणो. 20 > J सयासं. 21 > P एस तए गहिओ, P जेणम्हाणं, P उवरए निरुंभिऊण धारेहि. 23 > P विहिपरिणामो. 25 > P संदेहो, P अह for जह. 26 > J विलवमाणो for अहो, P om. 2nd अकयावराहो, P घरं for घर, P अन्नेण उ उव°. 27 > P चिंतेमो । लइ अन्नहा भणिओ, P परं for परि°. 28 > P होज्ज, P पि वमणिज्जं. 29 > P सो for सा, P सुसुत्थियस्स. 30 > P वोलिणो, P मज्झण्हमए. 31 > P om. सुंदरं, P om. सुंदरि, P पुच्छामो, P adds मह before फुडं. 32 > P adds अ before कीस, P om. अहं, J अणावराही. 33 > P उभट्ठा for ओरुद्धा, P काहिहीति for काहिइ, P चोर-

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तओ सविसेस-जाय-जीविय-भएणं मए पुच्छिया 'सुंदरि, ता को उण मम जीवणोवाओ' त्ति । तीए भणियं । 'णत्थि तुह जीवणोवाओ । सामिणो दोज्झं ण करेमो । तहा वि तुम्हं मज्झेण मह महंतो सिणेहो । ता मह वयणं णिसुणेसु । अत्थि एक्को उवाओ, जइ तं करेसि' । मए भणियं 'साह, केरिसो' । तीए संलत्तं 'हिज्जो णवमीए सव्वो इमो परियणो सह सामिणा ण्हाइउं वच्चीहि त्ति । तओ तम्मि समए एक्कद्दय-मेत्ते रक्खवाले जइ कवाडे विहडेउं पलायसि, तओ चुक्को, ण अण्णह' त्ति भणंती णिग्गया सा । मए चिंतियं । 'णीहरंतो जइ ण दिट्ठो, तो चुक्को । अह दिट्ठो, तो धुवं मरणं' ति चिंतिऊण तम्मि दियहे णिक्खंतो । तओ ण केणइ दिट्ठो । तओ मित्त, तम्हा पलायमाणो तुमं अण्णेसिउं पयत्तो । ताव एक्केण देसिएण साहियं जहा पुरिसो पुरिसो य देसिओ एक्को गओ इमिणा मग्गेणं । एयं सोऊण तुह मग्गालग्गो समागओ जाव तुमं एत्थ दिट्ठो णम्मया-कूले । ता मित्त, एयं मए अणुहूयं दुक्खं, संपयं सुहं संवुत्तं ति । अवि य ।

मित्तेहिँ जाव ण सुयं सुहं व दुक्खं व जीव-लोयम्मि । सुयणाण हियय-लग्गं अच्छइ ता तिक्ख-सल्लं व ॥'

एयं च णिसामिऊण बाह-जल-प्पुयच्छेण भणियं थाणुणा । 'अहो

अज्जं चिय जाओ हं अज्जं रयणाइँ णवर पत्ताइं । जं सव्व-सोक्ख-मूलं जीवंतो अज्ज संपत्तो ॥'

§ ११८) एवं च भणिऊण कयं मुह-धोवणं । कयाहार-किरिया य उत्तिण्णा जल-तरल-तरंग-रंगंत-मत्त-मायंग-मज्जमाण-मयरेहाहोय-दाण-जल-णीसंद-बिंदु-परिप्पयंत-चित्तल-जलं महाणइं णम्मयं ति । थोवंतरं च जाव वच्चंति ताव अणेय-वेल्लि-लया-गुविल-गुम्म-दूसंचाराए महाडवीए पणट्ठो मग्गो भव-सय-सहस्स-गुविल-संचारे संसार-कंतारे अभवियाणं पिव णिम्मलो जिणमग्गो । तओ ते पणट्ठ-मग्गा मूढ-दिसिवहा भय-वेविर-गत्ता उम्मत्तगा विय अणिरूविय-गम्मागम्मा तं महाडविं पविसिउं समाढत्ता । जा पुण कइसिय । अवि य ।

बहु-विह-कुसुमिय-तरुवर-कुसुमासव-लुद्ध-भमिर-भमरउला । भमिर-भमिरोलि-गुंजा-महुर-सरुग्गीय-मिलिय-हरिणउला ॥
हरिणउल-णिच्चल-ट्ठिय-दंसण-धावंत-दरिय-वण-वग्घा । वण-वग्घ-दंसणुव्वित्थ-हत्थि-णासंत-वण-महिसा ॥
वण-महिस-चेय-भज्जंत-सिंग-सण्हावडंत-तरु-णिवहा । तरु-णिवह-तुंग-सदुच्छलंत-पडिसुत्त-बुद्ध-वण-सीहा ॥
वण-सीह-मुक्क-दीहर-परिकुविओरल्लि-हित्थ-हत्थिउला । हत्थिउल-संभमुम्मुक्क-भीम-सुंकार-कुविय-वण-सरहा ॥
वण-सरह-संभम-भमंत-सेस-सय-सउण-सेण्ण-वीहच्छा । सउण-सय-सावयाराव-भीम-सुव्वंत-गरुय-पडिसद्दा ॥

अवि य । कहिंचि करयरेंत-वायसा कुलुकुलेंत-सउणया रणरणेंत-रण्णया चिलिचिलेंत-वाणरा रुणुरुणंत-महुयरा घुरुघुरुंत-वग्घया समसमेंत-पवणया धमधमेंत-जलणया कडकडेंत-साहिया चिरिचिरेंत-चीरिया दिट्ठा रण्णुद्देसया । अवि य ।

बहु-वुत्तंत-पयत्तिय-भव-सय-संबाह-भीम-दुत्तारं । संसाराडइ-सरिसं भमंति अडइं अभविय व्व ॥

§ ११९) तओ एवं च परिभमंताण तम्मि समए को कालो वट्टिउं पयत्तो । अवि य ।

वित्थिण्ण-भुवण-कोट्टय-मज्झ-गयं तविय-पव्वयंगारं । उय धम्मइ पवणेणं रवि-बिंबं लोह-पिंडं व ॥
सयल-जण-कम्म-सक्खी भुवणब्भंतर-पयत्त-वावारो । गिम्हम्मि रवी जीए कुविय-कयंतो व्व तावेइ ॥

एयारिसे य गिम्ह-समए वट्टमाणे का उण वेला वट्टिउं पयत्ता ।

अवरोवहि-वेला-वारि-णियर-तणु-सिसिर-सीयरासत्ता । णहयल-गिरिवर-सिहरं रवि-रह-तुरया वलग्गंति ॥
सिसिर-णरिंदम्मि गए दूसह-घण-सिसिर-बंधण-विमुक्को । तावेइ अवर-णिकरे संपइ सूरो णरवइ व्व ॥

1) J सुंदरी, P ता का मग जीवणोउवाउ, P तुमं for तुह. 2) J om. ण, P वि ममं तुज्झ मज्झेण महंतो, P महं. 3) P होज्जा णवमी सव्वो. 4) J सामिणो, J वच्चीहिति P वच्चिहिसि, P तंमि ससए एक्कंदुयमेत्ते, P जइ वाडे विहडाविउं. 5) P भणिउं for भणंती, J जइ णिक्खंतो ता चुक्को, P om. ति. 6) P ता for ताव. 7) J सोउं for एयं सोऊण, P तुमं न दिट्ठो एत्थ नम्मया°. 8) P एवं for एयं. 10) J -प्पप्पुअच्छेण, P adds च before थाणुणा. 12) P एयं for एवं, P कयमुहधावण-कयाहारा तुरिया, J जलयरतरंग. 13) P मयरहाधाय, J चित्तऊजला महाणइणम्मयं, P मलं for जलं, P om. च, P तावय, J ताव अणय. 14) J गुहिल, P दुस्संचारा महाडईए, J पणट्ठमग्गा, P om. सय, J गुहिल, P संसारे. 15) P तेण for ते, P मूढदिसि व्विहाया भय-, P उम्मत्तगो विय निरूविय, P om. तं. 16) P महाडइं, P पुण केसिया. 17) P कुसुमयतरुयर, J om. भमिर, P भमिरोल-, P सरग्गीय. 18) P धोवंत, P दंसणुव्विच्छ, J मत्त (on the margin) for हत्थि. 19) P -भेयभज्जंतसंग, J णिवट्ठ for णिवह, P भग्गु for तुंग, P वणसीह. 20) J सभमुमुक्क P संभममुक्क, J सहरा for सरहा. 21) J सेस for सेससय, J वीरुच्छा for वीहच्छा. 22) P करयरंत, J adds कहिंचि before कुलुकुलेंत, P रुणरुणेंतभमरया, J घुरुघुरेंत. 23) P कडयडंत, P रण्णुद्देसिया, J om. अवि य. 24) P बुहु for बहु. 26) P विच्छिन्नभवण, J पिण्डव्व. 27) J सयलजल P सयजण्ण, P जीवे for जीए. 28) P om. य, P गिण्हसमए का उण. 29) P अवरोअहि. 30) P तावेइ य धरणिधरो संपर, P नरिंदो for णरवइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालो दंसण-सुहवो परिवड्ढंतो तवेइ कह सूरो । सच्चो च्चिय णुण वणे जोव्वण-समयम्मि दुप्पेच्छो ॥

तओ एयम्मि एरिसे समए वट्टमाणे ते दुवे वि जणा दूसह-रवि-किरणपरद्धा अहो-गिम्ह-तत्त-वालुया-डज्झमाणा दूसह-तण्हा-भर-सूसमाण-तालुय-तला दीहद्धाण-खेय-परितत्ता छुहा-भर-क्खाम-णिण्णोयरा मूढ-दिसिवहा पणट्ठ-पंथा पुलिंद-भय-वेविरा सिंघ-वग्घ-संभंता मयतण्हाजल-तरंग-वेलविज्जमाणा जं किंचि णिण्णयं दट्ठूण जलं ति धावमाणा सव्वहा अणेय-दुक्ख-सय-संकुले पविट्ठा तम्मि कंतारे इमं पि ण-याणंति कत्थ वच्चिमो, कत्थ वा आगया, कहिं वा वट्टामो त्ति । एयम्मि अवसरे बहु-दुक्ख-कायर-हियएणं भणियं थाणुणा । मित्त-गरुय-दुक्ख-भर-पेल्लिज्जमाण-हिययओ भणिउं पयत्तो । 'ओसरइ य मे छुहा-तणु-उदरस्स दढ-बद्धो वि णियंसणा-बंधो । ता इमं रयण-कप्पडं गेण्ह, मम कहिंचि णिवडिहइ त्ति । ता तुमं चेय गेण्हसु, जेण णिव्वुय-हियओ गमिस्सं' ति । चिंतियं च मायाइच्चेण । 'अहो, जं मए करियव्वं तं अप्पणा चेय इमिणा कयं, समप्पियाइं मज्झ रयणाइं । ता दे सुंदरं कयं । संपयं इमस्स उवायं चिंतिमो' त्ति णिरूवियाइं पासाइं जाव दिट्ठो अणेय-वरिस-सय-सहस्स-परूढ-साहा-पसाह-वित्थिण्णो महंतो वड-पायवो । वलिया य तं चेय दिसं । जलं ति काऊण संपत्ता कह-कह वि तत्थ, जाव पेच्छंति । अवि य,

तण-णिवहोच्छइय-मुहं ईसिं लक्खिज्जमाण-परिवेढं । विसम-तडुट्ठिय-रुक्खं गहिरं पेक्खंति जर-कूवं ॥
बंधुं पिव चिर-णट्ठं रज्जं पिव पावियं गुण-समिद्धं । अमय-रसं पिव लद्धं दट्ठुं मण्णंति जर-कूवं ॥

पलोइयं च णेहिं सव्वत्तो जाव ण कहिंचि पेच्छंति रज्जुं अण्णं वा भंडयं जेण जलं समाहरंति कूवाओ । तओ चिंतियं इमिणा दुट्ठ-बुद्धिणा मायाइच्चेणं । 'अहो सुंदरो एस अवसरो । जइ एयम्मि अवसरे एयं ण णिवाएमि, ता को उण एरिसो होहिइ अवसरो त्ति । ता संपयं चेय इमं विवाडेमि एत्थ कूवे, जेण मह चेय होंति दस वि इमाइं रयणाइं' । चिंतयंतेण भणिओ थाणू इमिणा मायाइच्चेणं । 'मित्त, इमं पलोएसु । एत्थ जुण्ण-कूवे केद्दूरे जलं ति, जेण तस्स पमाणं वेल्ली-लया-रज्जू कारेमि' त्ति । सो वि तवस्सी उज्जुओ, एवं भणिओ समवलोइउं पयत्तो जुण्ण-कूवोवरं । इमिणा वि माया-इच्चेणं पाव-हियएणं माया-मूढ-मणेणं अणवेक्खिऊण लज्जं, अवमाणिऊण पीइं, लोविऊण दक्खिण्णं, अवहत्थिऊण पेम्मं, अयाणिऊण कयण्णुत्तणं, अजोइऊण परलोयं, अवलोइऊण सज्जण-मग्गं, सव्वहा मायाए रायत्त-हियएणं णिद्दयं णोल्लिओ इमिणा सो वराओ । णिवडिओ सो धस त्ति कूवे । पत्तो जलं जाव बहु-रुक्ख-दल-कट्ठ-पूरियं किंचि-सेस-जंबालं दुग्गं व थोय-सलिलं पेच्छइ कूवोदरं थाणू । णिवडिओ य तम्मि जंबाले, ण पीडा सरीरस्स जाया ।

§ १२०) तओ समासत्थेणं चिंतियं णेण थाणुणा । अव्वो,

पढमं च्चिय दारिद्दं पर-विसओ रण्ण-मज्झ-परिभमणं । पिय-मित्त-विप्पओगो पुण एयं विरइयं विहिणा ॥

एयं पुण मम हियए पडिहायइ जहा केण वि णिद्दयं णोल्लिओ हं एत्थ णिवडिओ । ता केण उण एत्थ अहं णोल्लिओ होज्ज । अहवा किं एत्थ वियप्पिएण । मायाइच्चो चेय एत्थ संणिहिओ, ण य कोइ अण्णो संभावीयइ । ता किं मायाइच्चेण इमं कयं होज्जा महासाहसं । अहवा णहि णहि, दुट्ठु मे चिंतियं पाव-हियएणं ।

अवि चलइ मेरु-चूला होज्ज समुद्दं व वारि-परिहीणं । उग्गमइ रवी अवि वारुणीए ण य मित्तो एरिसं कुणइ ॥

ता धिरत्थु मज्झ पाव-हिययस्स, जो तस्स वि सज्जणस्स एयं एरिसं असंभावणीयं चिंतेमि । ता केण वि रक्खसेण वा भूएण वा पिसाएण वा देव्वेण वा एत्थ पक्खित्तो होज्जा । एवं चिंतिऊण ठिओ । पयई चेय इमा सज्जणाणं । अवि य ।

मा जाणज जाणइ सज्जणो त्ति जं खलयणो कुणइ तस्स । णाऊण पुणो मुज्झइ को वा किर एरिसं कुणइ ॥
अवरद्धं ति वियाणइ जाणइ काउं पडिप्पियं सुयणो । एक्कं णवरि ण-याणइ दक्खिण्णं कह वि लंघेउं ॥

तओ एयं जाणमाणो वि सो मूढो तं चिय सोइउं समाढत्तो ।

---

1) P दंसणसुहओ, P परियट्टंतो. 3) P सूसमाणा, J ताल्लुअयला P तालुयतलो, J खाम for क्खाम, P णिक्खोयरा. 4) P सिंह for सिंघ, P om. सय. 5) J inter. तंमि and पविट्ठा, P न याणंति कत्थ वागया कहिं वा वच्चामो त्ति. 6) P गुरुय, P उत्तुररय for ओसरइ य. 7) J उअरस्स, P दढबंधो, P गिण्हसु for गेण्ह, P कहं पि णिवडीहइ, P चेव. 8) J णिव्वुअहिअओ, P om. ति, P जे for जं. 9) P om. दे, P चिंतेमि for चिंतिमो. 10) J om. सय, P om. य, P तिसं for दिसं, P om. one कह. 12) P °होत्थइय, P ईसि for ईसिं, J तदुट्ठिय P तडच्छिय, P पेच्छंति. 13) P दिट्ठं for णट्ठं, P लद्धं. 14) P पलोवियं, J सव्वं तो P सव्वतो, J ण किंचि पेच्छंति ताव रज्जुं वा अण्णं P न पेच्छंति कहिंचि रज्जु अन्नं. 15) J दुट्ठदुबुद्धिणा, P एव for एस, J एयंमि for एयं. 16) P om. first चेय. 17) P चिंतियंतेण भणियं, J थाणु, J om. इमिणा मायाइच्चेणं etc. to थोयसलिलं पेच्छइ कूवोदरं थाणू ।, P मित्तं. 18) P उज्जओ. 20) P कयणुत्तणं. 21) P सा वराओ. 22) P om. य. 23) P om. णेण. 24) P परिवसओ, P परितवणं, J विप्पओओ P विप्पओगे, P एवं. 25) P हिययस्स पडिहाइ जहा केणावि, J णोल्लीओ, P om. हं एत्थ to अहं णोल्लिओ. 26) J किमेत्थ, J एय (?) for चेय, P ण कोइ उण्णो संभावियइ. 27) P होज्ज, P om. one णहि. 28) J om. मित्तो. 29) P मम for मज्झ, P वाए for वा. 30) P विक्खित्तो for पक्खित्तो, P ट्ठिओ, P चेव. 31) J मा जाणमयाणइ. 32) P पडिप्पिउं सुयण्णो, J णवर. 33) P तं चेव य सोइउं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हा कइ मित्तो होहिइ वसणावडिओ अरण्ण-मज्झम्मि । पिय-मित्त-विप्पहूणो मओ व्व णिय-जूह-पब्भट्ठो ॥

§ १२१) एवं च सो सज्जणो जाव चिंतिउं पयत्तो, ताव णरणाह, इमो वि मायाइच्चो किं काउमाढत्तो । चिंतियं च णेण 'अहो, जं करियव्वं तं कयं । संपयं णीसंको दस वि इमाइं रयणाइं अत्तणो गेण्हिमो, फलं च भुंजिमो' । चिंतयंतस्स 'हण हण हण' त्ति 'गेण्हह गेण्हह' त्ति समुद्धाइओ महंतो कलयलो । पुरओ भय-वेविर-हियएण य से णिरूवियं जाव दिट्ठो अणेय-भिल्ल-परिवारो सबरसेणो णाम पल्लिवई । तं च दट्ठूण पलाइउं पयत्तो । पलायमाणो य धणु-जंत-पमुक्क-सरेहिं समाहओ णिवडिओ गहिओ । णिरूवियं च दिट्ठं रयण-पोत्तयं, समप्पियं च णेहिं चोर-सेणावइणो । णिरूवियं च णेण जाव पेच्छइ दस रयणाइं महग्घ-मोल्लाइं । भणियं च णेण 'अरे, महंतं कोसल्लियं अम्हाण इमेणं आणियं, ता मा मारेसु, बंधिऊण पक्खिवह एक्कम्मि कुडंगे । कयं च णेहिं चोर-पुरिसेहिं जहाइट्ठं ।

§ १२२) सो य चोर-सेणावई णियय-पल्लीए सरसंमुहं वच्चंतो संपत्तो तमुद्देसं । तत्थ भणियं च णेणं 'अरे अरे, तण्हा बाहिउं पयत्ता । ता किं इमम्मि पएसे कहिंचि जलं अत्थि । भणियं च एक्केण चोरेण । 'देव, एत्थ पएसे अत्थि जुण्णं कूवं, ण-याणीयइ तत्थ केरिसं जलं' ति । भणियं च सेणावइणा । 'पयट्ट, तत्थेव वच्चामो' त्ति भणंता संपत्ता तम्मि पएसे । उवविट्ठो य वड-पायवस्स हेट्ठओ सेणावई । भणियं च णेण 'रे, कड्ढह पाणियं, पियामो' । माएसाणंतरं च वित्थिण्ण-सायवत्तेहिं पलास-दलेहि य सीविओ महंतो पुडओ । दीह-दढ-वल्ली-लयाओ य संधिऊण कया दीहा रज्जू । पत्थर-सगब्भो ओयारिओ पुडओ तम्मि कूवे जाव दिट्ठो थाणुणा । भणियं च थाणुणा । 'अहो, केण इमं ओयारियं । अहं एत्थ पक्खित्तो दव्वेणं । ता ममं पि उत्तारेह' । साहियं च सेणावइणो । 'एत्थ कूवे को वि देसिओ णिवडिओ । सो जंपइ 'ममं समाकड्ढह' ।' सेणावइणा भणियं 'अलं अलं ता जलेणं, तं चेय कड्ढह वरायं' । उत्तारिओ य सो तेहिं । दिट्ठो य सेणावइणा । भणिओ य 'भण हो कत्थ तुमं, कहं वा इहागओ, कहं वा इह णिवडिओ' त्ति । भणियं च णेण ।-'देव, पुव्व-देसाओ अम्हे दुवे जणा दक्खिणावहं गया । तत्थ दोहिं वि पंच पंच रयणाइं विढत्ताइं । अम्हे आगच्छमाणा इमं अडइं संपत्ता, पंथ-पब्भट्ठा तण्हा-छुहा-परिगय-सरीरा इमं देसंतरमागया । तण्हाइएहि य दिट्ठो इमो जुण्ण-कूवो । एत्थ मए णिरिक्खियं केद्दूरे जलं ति । ताव केण वि पेएण वा पिसाएण वा रक्खसेण वा णिद्दयं णोल्लिओ णिवडिओ जुण्ण-कूवे । संपयं तुम्हेहिं उत्तारिओ' त्ति । इमं च सोऊण भणियं सेणावइणा । 'तेण दुइएण तुमं पक्खित्तो होहिसि' । भणियं च थाणुणा 'संतं पावं । कहं सो जीयाओ वि वल्लहस्स मज्झ एरिसं काहिइ' । भणियं च सेणावइणा 'संपयं कत्थ सो वट्टइ' त्ति । थाणुणा भणियं 'ण-याणामो' । तओ हसियं सव्वेहिं चोर-पुरिसेहिं । 'अहो समुज्जुओ मुद्धो वराओ बंभणो, ण-याणइ तस्स दुट्ठस्स दुट्ठ-भावं वा अप्पणो चित्त-सुद्धत्तणं वियाणंतो । भणियं च सेणावइणा 'सो चेय इमस्स सुमित्तो होहिइ जस्स इमाइं रयणाइं अम्हेहिं अक्खित्ताइं' । तेहिं भणियं 'सव्वं संभावियइ' त्ति । भणिओ य 'बंभण, केरिसो सो तुह मित्तो' । भणियं च थाणुणा । 'देव,

कसिणो पिंगल-णयणो मडहो वच्छ-त्थलम्मि णीरोगो । णिम्मंसुओ य वयणे एरिसओ मज्झ वर-मित्तो ॥'

तओ सव्वे वि हह त्ति हसिउं पयत्ता चोर-पुरिसा । भणियं च सेणावइणा । 'अहो सुंदरो भट्टो दंसण-सुहओ सव्व-लक्खण-संपुण्णो मित्तो तए लद्धो । एरिसो तुब्भेहिं पि मित्तो कायव्वो । सव्वहा बंभण, तेणं चिय तुमं पक्खित्तो । ता जाणसि दिट्ठाइं अप्पणाइं रयणाइं' । तेण भणियं 'देव, जाणामि' । दंसियाइं से सेणावइणा पच्चभिण्णाणियाइं । तेण भणियं 'इमाणि मज्झ संतियाणि । पंच इमाइं तस्स संतियाइं । कत्थ तुम्हेहिं पावियाइं । ण हु मित्तस्स मे णिवाओ कओ होहिइ' । तेहिं भणियं । 'तस्स इमाइं अम्हेहिं अक्खित्ताइं । सो य बंधेऊण कुडंगे पक्खित्तो । ता गेण्हसु इमाइं अप्पणाइं पंच । जाइं पुण तस्स दुरायारस्स संतियाइं ताइं ण समप्पिमो' त्ति भणमाणेण पंच समप्पियाइं । भणिओ य 'वच्च इमाए वत्तिणीए ।

---

1 > P होही, J णिअजूह P नियजूय. 2 > P om. जाव, P ता for ताव, P om. वि. 4 > J भणंति for हणत्ति, P गेण्ह गेण्ह, P समुट्ठाइओ. 5 > P परियरो सबरो नाम, J om. य, J धणुज्जत्त. 6 > P निवडिउं, J om. च. 7 > P अम्ह इमेण. 8 > P बंधेऊण पक्खह. 9 > P पल्लिए, P om. च, P अरे रे. 10 > P ता किमिनं पि पएसे किंपि चि वि जलं, P भएणियं for भणियं, P om. अत्थि, J जुण्णकूवं P जुन्नं कूव न याणिमो य तत्थ. 12 > P कन्हह for कड्ढह. 13 > J om. महंतो, P om. य, P पत्थरस्स°, J उआयरिओ. 14 > P फुडओ फुओ तंमि, P दिट्ठा पु थाणुणा । अहो केण, J केण मओसारियं, P दव्वेणं. 15 > P om. पि, P इमं for ममं. 16 > P om. one अलं, P ताव for ता, P चेव, P भणिहो. 17 > P वा गइहागओ, P गओ for णिवडिओ, J जाणा for ज... 18 > P मि for वि, P संपत्तो, J पंथभट्ठा. 19 > P तण्हाएहिं, P om. य, P inter. णिरिक्खियं and केद्दूरे जलं. 20 > P om. ति, J तुब्भे for तुम्हेहिं. 21 > J च after भणियं (first), J एत्थ for तुमं, J होहिति. 22 > P जीयवल्लहस्स, J om. एरिसं. 23 > P अहो अहो उज्जुओ वराहो मुद्धो बंभणो, P om. दुट्ठस्स, J om. दुट्ठभावं. 24 > P सेणावइणो, P होही, P वयणाइं for रयणाइं. 25 > P संभावीय त्ति, J om. त्ति, P om. य, J केविसो, P तुह सुमित्तो. 27 > J पिंडुल for पिंगल, J णिल्लिणो for णीरोगो, P सो for वर. 28 > P जओ for तओ, J वि हह त्ति हत्ति P विय हहहह त्ति, P भट्टा, J दंसणसुहयं भद्दलक्खण (letters not clearly readable). 29 > J तुम्हेहिं for तुब्भेहिं, P जेणं for तेणं. 30 > J णेण इमाइं मज्झ संताइं । पंच, P om. भणियं. 31 > J संताइं for संतियाइं, P कत्थ तुमे पावियाणि, J मित्तस्सस्स से णिवाओ, J होहिउइ (?). 32 > J om. अम्हेहिं, J वि for य, P inter. पक्खित्तो and कुडंगे, P गेन्हहसु. 33 > P om. ताइं ण, J om. पंच, P om. वच्च, P वत्तणीए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कं पुण भणिमो ।

जारिसओ सो मित्तो अण्णो वि हु तारिसो जइ हवेज्ज । उग्ग-विसं व भुयंगं दूरं दूरेण परिहरसु ॥'

त्ति भणिऊण विसज्जिओ ।

§ १२३) सो वि थाणू कुडंगे कुडंगेण तं अण्णिसमाणो परिभमइ । ताव दिट्ठो णेण एक्कम्मि कुडंगे । केरिसो ।
दढ-वल्ली-संदाणिय-बाहु-जुओ जमिय-चलण-जुवलिल्लो । पोट्टलओ व्व णिबद्धो अहोमुहो तम्मि पक्खित्तो ॥

तं च दट्ठूण हा-हा-रव-गब्भिणं 'मित्त, का इमा तुह अवत्थ' त्ति भणमाणेण सिढिलियाइं बंधणाइं, संवाहियं अंगं, बद्धाइं च वण-मुहाइं कंथा-कप्पडेहिं, साहियं च णिय-वुत्तंतं । 'पंच मए रयणाइं पावियाइं । तत्थ मित्त, अड्ढाइज्जाइं तुज्झ अड्ढाइज्जाइं मज्झ । तह वि पज्जत्तं, ण काइ अद्धिई कायव्व' त्ति भणमाणेण ताव णीओ जाव अडई-पेरंत-संठियं गामं । तत्थ ताव पडियरिओ जाव रूढव्वणो । तम्मि य काले चिंतियं णेण मायाइच्चेण । 'अहो,

हिम-सीय-चंद-विमलो पए पए खंडिओ तहा सुयणो । कोमल-मुणाल-सरिसो सिणेह-तंतू ण उक्खुडइ ॥

ता एरिसस्स वि सज्जणस्स मए एरिसं ववसियं । धिरत्थु मम जीवियस्स । अवि य ।

पिय-मित्त-वंचणा-जाय-दोस-परियलिय-धम्म-सारस्स । किं मज्झ जीविएणं माया-णियडी-विमूढस्स ॥

ता संपयं किमेत्थ करणीयं । अहवा दे जलणं पविसामि' त्ति चिंतयंतेण मेलिया सव्वे गाम-महयरा । कोउय-रस-गब्भिणो य मिलिओ सयलो गाम-जणो । तत्थ मूलियं वुत्तंतं सव्वं जहा-वत्तं साहियं सयल-गाम-जणस्स, जहा णिग्गया घराओ, जहा विढत्ताइं रयणाइं, जहा पढमं वंचिओ थाणू, जहा य कूवे पक्खित्तो, जहा चोरेहिं गहिओ, जहा पण्णविओ थाणुणा ।

§ १२४) तओ एवं साहिऊण भणियं मायाइच्चेण । 'अहो गाम-महत्तरा, महापावं मए कयं मित्त-दोज्झं णाम । ता अहं जलियं हुयासणं पविसामि । देह, मज्झ पसियह, कट्ठाइं जलणं च' त्ति । तओ भणियं एक्केण गाम-महत्तरेणं ।

'एहु एहउं दुम्मणस्सहुं । सव्वु एउ आयरिउ, तुज्झ ण उ वंकु चलितउं । प्रारद्धउं एवु प्रइ सुगति । प्रोतु वर भाति संप्रतु ॥'

तओ अण्णेण भणियं ।

'जं जि विरइदु धण-लवासाए । सुह-लंपडेण तुब्भइं । दुत्थट्ठ-मण-मोह-लुद्धउं । तुं संप्रति मोहितउं । एतु एतु प्रारद्धु भद्दउं ॥'

तओ अण्णेण भणियं चिर-जरा-जुण्ण-देहेण ।

'एत्थ सुज्झति किर सुवण्णं पि । वइसाणर-मुह-गतउं । कउं प्राउ मित्तस्स वंचण । कावालिय-व्रत-धरणे । एउ एउ सुज्झेज्ज णहि ॥'

तओ सयल-व्रंग-सामिणा भणियइ जेट्ठ-महामयहरेण ।

'धवल-वाहण-धवल-देहस्स सिरे भ्रमिति जा विमल-जल । धवलुज्जल सा भडारी । यति गंग प्राविसि तुहुं । मित्र-द्रोज्झु तो णाम सुज्झति ॥'

एवं भणिए सव्वेहिं चेय भणियं । 'अहो, सुंदरं सुंदरं संलत्तं । ता मुंच जलण-पवेस-णिच्छयं । वच्चसु गंगं । तत्थ ण्हायंतो अणसणेणं मरिहिसि, तया सुज्झिहिसि तुहं पावं' ति । विसज्जिओ गाम-महयरेहिं । सिणेह-रुयमाणेण य थाणुणा अणुणिज्जमाणो वि पत्थिओ सो । अणुदियह-पयाणेण य इहागओ, उवविट्ठो" त्ति । एवं च साहियं णिसामिऊण णिवडिओ चलण-जुयलए भगवओ धम्मणंदणस्स । भणियं च णेणं मायाइच्चेणं ।

'माया-मोहिय-हियएण णाह सव्वं मए इमं रइअं । मोत्तूण तुमं अण्णो को वा एयं वियाणेज्ज ॥ ता सव्वहा
माया-मय-रिउ-सूयण-मूरण-गुरु-तिक्ख-कोव-कुंतस्स । सव्व-जिय-भाव-जाणय सरणमिणं ते पवण्णो मि ॥
ता दे कुणसु पसायं इमस्स पावस्स देसु पच्छित्तं । अण्णह ण धारिमो च्चिय अप्पाणं पाव-कम्मं वा ॥'

1) P भणामो. 4) P om. कुडंगे, P जाव for ताव. 5) J वल्लि, P बाहु-, J संजमिय for जमिय. 7) J णिअअ for णिय, P तुह for तुज्झ. 8) P मग्ग for मज्झ, P तुह for तह, J काइं, P अत्वद्धितीया for अद्धिई, J आणिओ for णीओ, P अइ for अडई. 9) P पडियरओ, J कालेण for काले. 11) P वि मए ज णस्स एरिसं विलसियं ।, J om. मए. 12) J पाव for दोस. 13) J पविसामो, P चिंतियंतेण. 14) P सव्वहा for सव्वं, J जाविसं, P जहा पविढत्ताइं. 15) P घोरेहिं for चोरेहिं. 16) P मयहरा for महत्तरा. 17) P कयाइं for कट्ठाइं. 18) J दुम्मणस्सहुं (?), P एउ पहउं होउ मणुस्साइं सव्वु एउ आयरिउं तुज्झा न उ वंकु चलियउं ।, J सव्वं जं पुंजाअरिदु (letters rubbed) तुज्झाणउं वंक चलितउं ।, J पारद्धउं, P प्रारद्धओ एउ J प्रइं सुगइ प्रोतु वरप्रा (भा ?) ति संप्रतु, P भातु वर, P संप्रइ ।. 20) J थु जे for जं जि, P विररइओ for विरइदु, J धणलव. सातसुहलंपडेए, P om. तुब्भइं, P दु तुट्ठभाणमोहिएथुं मणुस्सेणं लद्धउं ।, P बोहियउं एउ एउ पारद्धु. 21) P जुन्न. 22) P सुज्झइ, J सुवण्णं व वइसा°, P सुवन्नं, P °नरमुहगयउं । रेयं प्राउ, J पाउ for प्राउ, J कामालियव्रतधरणे एतु पाउ दुज्झे णणाहिय, P व्रयधरणे, P सुज्झेज्ज णाहिं. 24) P भणियं for भणियइ, P om. जेट्ठमहामयहरेण(रेणं ?). 25) P देवस्स for देहस्स, P भमती धवलजलधव°, J विमलजलधवलुज्जल सा, P यदि गंगा, P तुं हुं मित्तुद्रोज्झ तो नाम सुज्झइ । एवं च भणिए. 27) P om. one सुंदरं, J पवेसं णि°, P निच्छयं, P हो पत्तो for ण्हायंतो. 28) P तदा सुज्झिहिसि तुह, J om. ति. 29) P अणुमग्गिज्जमाणो, P एसो for सो, P य before त्ति, J एयं च. 30) P चलणकमलए. 31) J inter. इमं and मए, J om. ता सव्वहा. 32) P मूयण for मूरण, P पवन्नोहं. 33) P कम्मं तु ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १२५) इमं च णिसामिऊण गुरुणा धम्मणंदणेण भणियं ।

'जे पिययम-गुरु-विरह-जलण-पजलिय-ताव-तवियंगा । कत्तो ताणं ताणं मोत्तुं आणं जिणिंदाणं ॥
जे दूसह-गुरु-दारिद्द-विदुया दलिय-सेस-धण-विहवा । कत्तो ताणं ताणं मोत्तुं आणं जिणिंदाणं ॥
दोगच्च-पंक-संका-कलंक-मल-कलुस-दूमियप्पाणं । कत्तो ताणं ताणं मोत्तुं आणं जिणिंदाणं ॥
सव्व-जण-णिंदियाणं बंधु-जणोहसण-दुक्ख-तवियाणं । कत्तो ताणं ताणं मोत्तुं आणं जिणिंदाणं ॥
जे जम्म-जरा-मरणोह-दुक्ख-राय-भीसणे जए जीवा । कत्तो ताणं ताणं मोत्तुं आणं जिणिंदाणं ॥
जे डहणंकण-ताडण-वाहण-गुरु-दुक्ख-सायरोगाढा । कत्तो ताणं ताणं मोत्तुं आणं जिणिंदाणं ॥
संसारम्मि असारे दुह-सय-संबाह-बाहिया जे य । मोत्तुं ताणं ताणं कत्तो वयणं जिणिंदाणं ॥

तओ एवं सव्व-जण-जीव-संघायस्स सव्व-दुक्ख-दुक्खियस्स तेलोक्केकल्ल-पायवाणं पिव जिणाणं आणं पमोत्तूण ण अण्णं सरणं तेलोक्के वि अत्थि त्ति । इमं च वयणं आराहिऊण पुणो

जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं । सासय-सिव-सुह-सोक्खं अइरा मोक्खं पि पाविहिसि ॥'

एवं च भणियं णिसामिऊण भणियं कयंजलिउडेणं मायाइच्चेणं । 'भगवं जइ एवं, ता देसु मे जिणिंद-वयणं, जइ अरिहो मि'। भगवया वि धम्मणंदणेण पलोइऊण णाणाइसएणं उवसंत-कसाओ त्ति पव्वाविओ जहा-विहाणेणं गंगाइच्चो त्ति ॥ ✽ ॥

§ १२६) भणियं च पुणो वि गुरुणा धम्मणंदणेणं ।

'लोहो करेइ भेयं लोहो पिय-मित्त-णासणो भणिओ । लोहो कज्ज-विणासो लोहो सव्वं विणासेइ ॥

अवि य लोह-महा-गह-गहिओ पुरिसो अंधो विय ण पेच्छइ समं व विसमं वा, बहिरो विय ण सुणेइ हियं अणहियं वा, उम्मत्तो विय असंबद्धं पलवइ, बालो इव अण्णं पुच्छिओ अण्णं साहेइ, सलहो विय जलंतं पि जलणं पविसइ, झसो विय जलणिहिम्मि वियरइ त्ति ।

इय असमंजस-घडणा-सज्जण-परिहार-पयड-दोसस्स । लोहस्स तेण मुणिणो थेवं पि ण देंति अवयासं ॥
लोह-परायत्त-मणो दव्वं णासेइ घायए मित्तं । णिवडइ य दुक्ख-गहणे पत्थिव एसो जहा पुरिसो ॥'

भणियं च राइणा पुरंदरदत्तेण । 'भगवं बहु-पुरिस-संकुलाए परिसाए ण-याणिमो को वि एस पुरिसो, किं वा इमेणं कयं' त्ति । भणियं च भगवया ।

"जो तुज्झ पट्ठि-भाए वामे जो वासवस्स उवविट्ठो । मंस-विवज्जिय-देहो उच्चो सुक्को व ताल-दुमो ॥
अट्ठि-मय-पंजरो इव उवरिं तणु-मेत्त-चम्म-पडिबद्धो । दीसंत-पंसुलीओ तणु-दीहर-चवल-गीवालो ॥
खल्लइय-चम्म-वयणो मरु-कूव-सरिच्छ-गहिर-णयण-जुओ । अच्छइ वेयालो इव कम-सज्जो मंस-खंडस्स ॥
लोहो व्व सरूवेणं णरवर पत्तो इमो इहं होज्जा। एएण लोह-मूढेण जं कयं तं णिसामेह ॥

§ १२७) अत्थि इमम्मि चेय लोए जंबूदीवे भारहे वासे वेयड्ढ-दाहिण-मज्झिम-खंडे उत्तरावहं णाम पहं । तत्थ तक्खसिला णाम णयरी ।

जा पढम-पया-पत्थिव-पुत्त-पयावुच्छलंत-जस-भारं । धवलहर-सिहर-संपिंडियं व एयं समुव्वहइ ॥

जहिं च णयरिहिं एक्कु वि ण दीसइ मइलु कुवेसो व । एक्कु वि दीसइ सुंदर-वत्थ-णियत्थो व । बेण्णि ण अत्थि, जो कायरो तण्हाभिभूओ व । दोण्णि वि अत्थि, सूरउ देयणओ व । तिण्णि णेव लब्भंति, खलो मुक्खु ईसालुओ वि । तिण्णि चोवलब्भंति, सज्जणु वियड्ढो वीसत्थो व त्ति । जहिं च णयरिहिं फरिहा-बंधो सज्जण-दुज्जणहं अणुहरइ, गंभीरत्तणेण अणवयारत्तणेण व । सज्जण-दुज्जण-समो वि पायारु अक्खुण्णउ वंक-वलिय-गमणो व । जहिं च वसिमु दीव-समुद्द-जइसओ, असंखेज्जो पवड्ढमाण-वित्थरो य त्ति । अवि य ।

कह सा ण वण्णणिज्जा वित्थिण्णा कणय-घडिय-पायारा । पढम-जिण-समवसरणेण सोहिया धम्म-चक्कंका ॥

---

1) P inter. भणियं and गुरुणा धम्मनंदणेण. 3) P repeats गुरु. 5) J बंधुजणसयणदुक्ख. 6) P मरणाण नाह दुक्ख-, J P भीसणो, P om. जए. 7) P दहणंकण, J वयणं for आणं. 8) J बोहिया. 9) P तिलोक्केक्कपाय°. 10) P वि य नत्थि त्ति ।, P om. वयणं. 11) P सासयं. 12) P adds इच्चेणं after जइ, P त्ति for मि. 13) P adds जहाविओ after पव्वाविओ. 16) P लोभगहिओ य पुरिसो. 17) P उम्मत्तओ, P लावइ सलसो, P पिव for वि, P ऊसो for झसो. 19) P थोवं, P उवयाणं for अवयासं. 20) P om. य, P दुक्खग्गहण. 22) P om. ति. 23) P वामो, P विसज्जियदेहो वच्चो सुक्को व्व तालदुमो. 24) P धवल for चवल. 25) P चम्मधमणो, P मास for मंस. 26) P एतेण. 27) P जंबुदीवे, P मज्झिमे खंडे उत्तरा नाम. 29) P जो for जा, P संपिंडियव्व तेरियं समु°. 30) P एकु न दीसइ एक्कु दीसइ मयलकुचेलो सुंदर, J एको वि दीसइ सुंदर, P व्व for व. 31) J तण्हाभिहूओ P तण्हाविभूओ, P सूरो देउणउ वि, P नोवलंभंति, P मुक्खो ईसालुओ व त्ति. 32) P चोवलंभंति सज्जणो वियड्ढो वीसत्थो, J चि for च, P फरिह-, J बंद्धो. 33) P अणोवयार°, P om. व, P पागारो अक्खुण्णओ, P च्चि for च, P -जयसओ. 34) P परिवड्ढमाण, J -वित्थारो. 35) P सो for सा, P समवसरणोव.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताए य णयरीए पच्छिम-दक्खिणे दिसा-भाए उच्चत्थलं णाम गामं, सग्ग-णयरं पिव सुर-भवणेहिं, पायालं पिव विविह-रयणेहिं, गोट्ठंगणं पिव गो-संपयाए, धणय-पुरी विय धण-संपयाए त्ति। तम्मि गामे सुद्द-जाईओ धणदेवो णाम सत्थवाहउत्तो। तत्थ तस्स सरिस-सत्थवाहउत्तेहिं सह कीलंतस्स वच्चए कालो। सो पुण लोह-परो अत्थ-गहण-तल्लिच्छो मायावी वंचओ अलिय-वयणो पर-दव्वावहारी। तओ तस्स एरिसस्स तेहिं सरिस-सत्थवाह-जुवाणएहिं धणदेवो त्ति अवहरिउं लोहदेवो त्ति से पइट्ठियं णामं। तओ कय-लोहदेवाभिहाणो दियहेसु वच्चंतेसु महाजुवा जोग्गो संवुत्तो। तओ उद्धाइओ इमस्स लोओ बाहिरं पयत्तो, तम्हा भणिओ य णेण जणओ। 'ताय, अहं तुरंगमे घेत्तूण दक्खिणावहं वच्चामि। तत्थ बहुयं अत्थं विढवेमो, जेण सुहं उवभुंजामो' त्ति। भणियं च से जणएण। 'पुत्त, केत्तिएण ते अत्थेण। अत्थि तुहं महं पि पुत्त-पपोत्ताणं पि विउलो अत्थ-सारो। ता देसु किवणाणं, विभएसु वणीमयाणं, दक्खेसु बंभणे, करावेसु देवउले, खाणेसु तलाय-बंधे, बंधावेसु वावीओ, पालेसु सत्तायारे, पयत्तेसु आरोग्ग-सालाओ, उद्धरेसु दीण-विहले त्ति। ता पुत्त, अलं देसंतर-गएहिं'। भणियं च लोहदेवेणं। 'ताय, जं एत्थ चिट्ठइ तं साहीणं चिय, अण्णं अपुव्वं अत्थं आहरामि बाहु-बलेणं' ति। तओ तेण चिंतियं सत्थवाहेणं। 'सुंदरो चेय एस उच्छाहो। कायव्वमिणं, जुत्तमिणं, सरिसमिणं, धम्मो चेय अम्हाणं, जं अउव्वं अत्थागमणं कीरइ त्ति। ता ण कायव्वो मए इच्छा-भंगो, ता दे वच्चउ' त्ति चिंतिउं तेण भणिओ। 'पुत्त, जइ ण-ट्ठायसि, तओ वच्च'।

§ १२८) एवं भणिओ पयत्तो। सज्जीकया तुरंगमा, सज्जियाइं जाण-वाहणाइं, गहियाइं पच्छयणाइं, चित्तविया आडियत्तिया, संठविओ कम्मयर-जणो, आउच्छिओ गुरुयणो, वंदिया रोयणा, पयत्तो सत्थो, चलियाओ वलत्थाउ। तओ भणिओ सो पिउणा। 'पुत्त, दूरं देसंतरं, विसमा पंथा, णिट्ठुरो लोओ, बहुए दुज्जणा, विरला सज्जणा, दुप्परियल्लं भंडं, दुद्धरं जोव्वणं, दुल्ललिओ तुमं, विसमा कज्ज-गई, अणत्थ-रुई कयंतो, अणवरद्ध-कुद्धा चोर त्ति। ता सव्वहा कहिंचि पंडिएणं, कहिंचि मुक्खेणं, कहिंचि दक्खिणेणं, कहिंचि णिट्ठुरेणं, कहिंचि दयालुणा, कहिंचि णिक्किवेणं, कहिंचि सूरेणं, कहिंचि कायरेणं, कहिंचि चाइणा, कहिंचि किमणेणं, कहिंचि माणिणा, कहिंचि दीणेणं, कहिंचि वियड्ढेणं, कहिंचि जडेणं, सव्वहा

णिट्ठुर-डंड-सिराहय-भुयंग-कुडिलंग-वंक-हियएणं। भवियव्वं सज्जण-दुज्जणाण चरिएण पुत्त समं॥'

एवं च भणिऊण णियत्तो सो जणओ। इमो वि लोहदेवो संपत्तो दक्खिणावहं केण वि कालंतरेण। समावासिओ सोप्पारए णयरे भद्दसेट्ठी णाम जुण्ण-सेट्ठी तस्स गेहम्मि। तओ केण वि कालंतरेण महग्घ-मोल्ला दिण्णा ते तुरंगमा। विढत्तं महंतं अत्थ-संचयं। तं च घेत्तूण सदेस-हुत्तं गंतुमणो सो सत्थवाह-पुत्तो त्ति। तत्थ य सोप्पारए पुरवरे इमो समायारो देसिय-वाणिय-मेलीए। 'जो कोइ देसंतरागओ वत्थव्वो वा जम्मि दिसा-देसे वा गओ जं वा भंडं गहियं जं वा आणियं जं वा विढत्तं तत्थ तं देसिय-वणिएहिं गंतूणं सव्वं साहेयव्वं, गंध-तंबोल-मल्लं च घेत्तव्वं, तओ गंतव्वं' त्ति। एसो पारंपर-पुराण-पुरिसट्ठिओ त्ति। पुणो जइया गंतुमणो तइया सो तेणेय भद्दसेट्ठिणा सह तत्थ देसिय-मेलीए गओ त्ति। देसिय-वाणिय-मेलिए गंतूण उवविट्ठो। दिण्णं च गंध-मल्लं तंबोलाइयं।

§ १२९) तओ पयत्तो परोप्परं समुल्लावो देसिय-वणियाणं। भणियं च णेहिं। 'भो भो वणिया, कत्थ दीवे देसे वा को गओ, केण वा किं भंडं आणियं, किं वा विढत्तं, किं वा पच्चाणियं' ति। तओ एक्केण भणियं। 'अहं गओ कोसलं तुरंगमे घेत्तूणं। कोसल-रण्णा मह दिण्णाइं महंताइं भाइल-तुरंगेहिं समं गय-पोययाइं। तओ तुम्ह पभावेणं समागओ लद्ध-लाहो' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं गओ उत्तरावहं पूय-फलाइयं भंडं घेत्तूण। तत्थ लद्ध-लाभो तुरंगमे घेत्तूण आगओ' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं मुत्ताहले घेत्तूण पुव्व-देसं गओ, तओ चमरे आणिओ' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं बारवइं गओ, तत्थ संखयं समाणियं' ति। अण्णेण भणियं। 'अहं बब्बरउलं गओ, तत्थ चेलियं घेत्तूणं, गय-दंताइं मोत्तियाइं च घेत्तुं

1) J तीय य, P om. य, J णयरीय. 2) P om. धणयपुरी विय धणसंपयाए, P तम्मि य गामे सुद्दंजाइओ. 3) P वच्चइ, J सो उण, P अत्थग्गहण. 4) P त्ति से अव°, P लोभदे°. 5) J °देवाहिहाणो, J जोगो, P उद्धाइय. 6) P om. य, P तुरंगे घेत्तूण, P पभूयं for बहुयं, P विढवेमा. 7) P उवभुंजामि, P केत्तिए ते, P -पपोत्ताणं विउलो. 8) P किमणाणं, P विभवसुवणियमयाणं, P बंभणाणं कारा°, J करावेसु. 9) P आरोगसालासालाओ. 10) J om. च, P लोभदेवेणं, P जं एयं तं साहीणं चिट्ठइ चिय, J आराहामि, P om. ति. 11) J एसो, J om. जुत्तमिणं, P अम्हाणं अंजं अउव्वअत्था°. 12) P त दे for तादे, J चिंतयंतेण, P पुत्ति for पुत्त. 13) P चिंतविया. 14) P कंमारयजणो. 15) J भणिअं से, P पिउणो, P दूरे, P निट्ठुवरो. 16) P अणणुरूवी कयंता. 17) P दक्खिणेणं कहिं च्चिय वियड्ढेणं कहिंचि, P निक्कोवेणं. 18) P किविणेणं, P om. कहिंचि माणिणा, P वियड्ढेणं. 19) P -डंडसिराघायभुयंगकुडिलवंक, P दुज्जणचरिएणं, P सम्मं। एवं. 20) P से जणउ।, P लोभदेवो, P सेमावासिओ. 21) P ढिला for दिण्णा ते. 22) P घेत्तूण देसहुत्तं, J -उत्तो, P om. त्ति. 23) P कोइ देसिओ देसं°, P om. वा, J जम्मि दिसा देसा वागओ P जंमि वा जंमि दिसादेसे वा जं गओ. 24) P inter. साहेयव्वं & सव्वं, P तंबोलं, P घेत्तूणं तओ, J ततो for तओ, J एसा for एसो. 25) P पुरिसत्थ इत्ति, P तेण य भसेट्ठिणा, P देसिमेलीए, J देसियमेलए गंतूण. 26) P उवविट्ठो त्ति, J om. च. 27) P om. भणियं, P भो भो देसियवणिया. 28) P inter. भंडं & किं, P तुरंगे घेत्तूणं. 29) P om. मह, J om. महंताइं, J भाइलतुरंगमेहिं, P समं मयपोत्तयाइं, P तुम्हा. 30) P पूयफलाइं, P भंडं, J घेत्तुं, P समागओ for आगओ. 31) P । मह मुत्ताफले, J तत्थ for तओ, J आणिय त्ति, P बारवइं. 32) P inter. बब्बरऊलं & अहं, P तत्थ before गयदंताइं, P गयदंता मोत्ति°, P घेत्तूण for घेत्तुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समागओ' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं सुवण्णदीवं गओ पलास-कुसुमाइं घेत्तूणं, तत्थ सुवण्णं घेत्तूण समागओ' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं चीण-महाचीणेसु गओ महिस-गवले घेत्तूण, तत्थ गंगावडिओ णेत्त-पट्टाइयं घेत्तूण लद्ध-ला[भो] णियत्तो' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं गओ महिला-रज्जं पुरिसे घेत्तूण, तत्थ सुवण्ण-समतुलं दाऊण आगओ' त्ति। अण्णेण भणियं। 'अहं गओ रयणदीवं णिंब-पत्ताइं घेत्तूण, तत्थ रयणाइं लद्धाइं, ताइं घेत्तूण समागओ' त्ति। एवं च णिसामिऊण सव्वेहिं चेय भणियं। 'अहो, सुंदरो संववहारो, णिंब-पत्तेहिं रयणाइं लब्भंति, किमण्णेण वणिज्जेण कीरइ' त्ति। तेण भणियं। 'सुंदरो जस्स जीयं ण वल्लहं' ति। तेहिं भणियं 'किं कज्जं'। भणियं च णेण। 'एवं तुब्भेहिं भणियं 'किं कज्जं' ति। जेण दुत्तारो जलही, दूरे रयणदीवं, चंडो मारुओ, चवला वीईओ, चंचला तरंगा, परिहत्था मच्छा, महंता मयरा, महग्गाहा गाहा, दीहा तंतुणो, गिलणो तिमिंगिली, रोद्दा रक्खसा, उद्धाविरा वेयाला, दुलक्खा महिहरा, कुसला चोरा, भीमं महासमुद्दं, दुल्लहो मग्गो, सव्वहा दुग्गमं रयणदीवं ति, तेण भणिमो सुंदरं वणिज्जं जस्स जीवियं ण वल्लहं' ति। तओ सव्वेहि वि भणियं। 'अहो दुग्गमं रयणदीवं। तहा दुक्खेण विणा सुहं णत्थि' त्ति भणमाणा समुट्ठिया वणिया।

§ १३०) इमं च तस्स हियए पइट्ठियं लोहदेवस्स। आगओ गेहं, कयं भोयणाइ-आवस्सयं। तओ जहा-सुहं उवविट्ठाणं भणियं लोभदेवेण। 'वयंस भद्दसेट्ठि, महंतो एस लाभो जं णिंब-पत्तेहिं रयणाइं पाविज्जंति। ता किं ण तत्थ रयणदीवे गंतुमुज्जमो कीरइ' त्ति। भद्देण भणियं। 'वयंस,

जेत्तिय-मेत्तो कीरइ मणोरहो णवर अत्थ-कामेसु। तत्तिय-मेत्तो पसरइ ओहट्टइ संधरिज्जंतो॥

ता विढत्तं तए महंतं अत्थ-संचयं, घेत्तूण सएसं वच्च। किं च,

भुंजसु देसु जहिच्छं सुयणे माणेसु बंधवे कुणसु। उद्धरसु दीण-विहलं दव्वेण इमं वरं कज्जं॥

ता पहुत्तं तुह इमिणा अत्थेणं' ति। इमं च सोऊण भणियं इमिणा लोहदेवेणं। 'अवि य,

जइ होइ णिरारंभो वयंस लच्छीएँ मुच्चइ हरी वि। फुरिओ च्चिय आरंभो लच्छीय य पेसिया दिट्ठी॥
आलिंगियं पि मुंचइ लच्छी पुरिसं ति साहस-विहूणं। गोत्त-क्खलण-विलक्खा पिय व्व दइया ण संदेहो॥
कज्जंतर-दिण्ण-मणं पुरिसं णाउं सिरी पलोएइ। कुल-बालिया णव-वहू लज्जाएँ पियं व वक्खित्तं॥
जो विसमम्मि वि कज्जे कज्जारंभं ण मुंचए धीरो। अहिसारिय व्व लच्छी णिवडइ वच्छत्थले तस्स॥
जो णय-विक्कम-बद्धं लच्छिं काऊण कज्जमारुहइ। तं च्चिय पुणो पडिच्छइ पउत्थवइय व्व सा लच्छी॥
काऊण समारंभं कज्जं सिढिलेइ जो पुणो पच्छा। लच्छी खंडिय-महिल व्व तस्स माणं समुव्वहइ॥
इय आरंभ-विहूणं पुरिसं णाऊण पुरिस-लच्छीए। उज्झिज्जइ णीसंकं वूढव-पुरिसो व्व महिलाहिं॥

तओ वयंस, भणिमो 'पुरिसेण सव्वहा कज्ज-करणेक्क-वावड-हियएण होइयव्वं, जेण सिरी ण मुंचइ। ता सव्वहा पयट्ट, रयणदीवं वच्चामो' त्ति। भद्दसेट्ठिणा भणियं 'वयंस,

'जइ पायाले वसिमो महासमुद्दं च लंघिमो जइ वि। मेरुम्मि आरुहामो तह वि कयंतो पुलोएइ॥

ता सव्वहा गच्छ तुमं। सिज्झउ जत्ता। अहं पुण ण वच्चामि' त्ति। तेण भणियं 'कीस तुमं ण वच्चसि'। भद्दसेट्ठिणा भणियं। 'सत्त-हुत्तं जाणवत्तेण समुद्दे पविट्ठो। सत्त-हुत्तं पि मह जाणवत्तं दलियं। ता णाहं भागी अत्थस्स। तेण भणिमो ण वच्चिमो समुद्दं' ति। लोहदेवेण भणियं।

'जइ घडियं विहडिज्जइ घडियं घडियं पुणो वि विहडेइ। ता घडण-विहडणाहिं होहिइ विहडप्फडो देव्वो॥

तेण वयंस, पुणो वि करियव्वो आयरो, गंतव्वं ते दीवं' ति। तेण भणियं। 'जइ एवं ता एक्कं भणिमो, तुमं एत्थ जाणवत्ते भंडवई, अहं पुण मंदभागो त्ति काऊण ण भवामि' त्ति। इमेण य 'एवं' ति पडिवण्णं।

---

2 > P तत्थ संगावडिओ णेत्तपट्टाइं. 3 > P inter. गओ and अहं, P पुरिसं, P सुवन्नसमतलं, J समतुलं दाऊणागओ. 4 > P om. गओ, P adds गओ after घेत्तूण, J एयं for एवं. 5 > J किमण्णेहिं कीरइ. 6 > J om. जेण. 7 > P दुत्तारो, J रयणदीवं, P चवलाओ वीइएओ, P परियच्छमच्छा. 8 > P गिलिणो, P उद्धाविरा. 9 > P दुग्गमरयण°. 10 > P तहा दुक्खेहिं विणा, J om. वणिया. 11 > P लोभदेवस्स, J आगया गेहं. 12 > J लोहदेवेण, P पावीयंति, J किण्ण P किन्न. 13 > J रयणदीवं, P गंतुमुज्जमं, J om. त्ति. 14 > J जत्तिय, P सचरिज्जंतो. 15 > P गच्छ for वच्च. 16 > P नवर for वरं. 17 > P ता पुहुत्तं. P लोहदेवेणं, P om. अवि य. 18 > P आरंभो रंभो लच्छीअ य. 19 > P °यं विमुचइ, P विहीणं। गोत्तक्खलण, J विलक्खो. 20 > P दाउं for णाउं, J -बालिआ णववहु P बालिया व नववहु, P पियं व वज्जाक्खित्तं. 21 > J विसमं वि, P निवडइ. 22 > J लच्छी, P पयच्छइ, P सो for सा. 24 > P -विहीणं, J -लच्छीअ. 25 > J -कारणेक्क, P सिरीए न. 27 > P आरुहामो, P पलोएइ. 28 > P पुण न वच्चामो. 29 > P inter. पविट्ठो & समुद्दं (for समुद्दे पविट्ठो), P सत्तउत्तं पि दलियं जाणवत्तं मह।. 30 > P om. ण वच्चिमो, P समुद्दंमि। लोभदेवेण. 31 > P होहीति हडप्फडो दिव्वो।. 32 > P करेयव्वो आयारो, J adds तं after गंतव्वं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १३१) तओ रयणदीव-कय-माणसेहिं सज्जियाइं जाणवत्ताइं । किं च करिउं समाढत्तं । घेप्पंति भंडाइं, उवयरिज्जंति णिज्जामया, गणिज्जए दियहं, ठाविय्यं लग्गं, णिरूविज्जंति णिमित्ताइं, कीरंति अवसुईओ, [illegible]ज्जंति इट्ठ-देवए, भुंजाविज्जंति बंभणे, पूइज्जंति विसिट्ठयणे, अच्चिज्जंति देवए, सज्जिज्जंति सेयवडे, उब्भिज्जंति कूवा-खंभए, संगहिज्जंति सयणे, वड्ढिज्जंति कट्ठ-संचए, भरिज्जंति जल-भायणे त्ति । एवं कुणमाणाणं समागओ सो दियहो । तम्मि य दियहे कय-मज्जणा सुमण-विलेवण-वत्थालंकारिया दुवे वि जणा सपरियणा जाणवत्तं समारूढा । चालियं च जाणवत्तं । तओ पहयाइं तूराइं, पवाइयाइ संखाइं, पगीयाइं मंगलाइं, पढंति बंभण-कुलाइं आसीसा, सुमुहो गुरुयणो, दीण-विमणो दइयायणो, हरिस-विसण्णो मित्तयणो, मणोरह-सुमुहो सज्जण-जणो त्ति । तओ एवं च मंगल-थुइ-सय-जय-जया-सद्द-गब्भ-पूरंत-दिसिवहं पयट्टं जाणवत्तं । तओ पूरिओ सेयवडो, उक्खित्ताइं लंबणाइं, चालियाइं आवेल्लयाइं, णिरूवियं कण्णहारेणं, लग्गं जाणवत्तं वत्तणीए, पवाइओ हियइच्छिओ पवणो । तओ जल-तरल-तरंग-रंगंत-कल्लोल-माला-हेला-हिंदोलय-परंपरारूढं गंतुं पयत्तं जाणवत्तं । कहं । कहिंचि मच्छ-पुच्छच्छडाहउच्छलंत-जल-वीई-हिंदोलियं, कहिंचि कुम्म-पट्ठि-संठि-उच्छलंतयं, कहिंचि वर-करि-मयर-थोर-करायड्ढियं, कहिंचि तणु-तंतु-गुणावज्झंतयं, कहिंचि महा-विसहर-पास-संदाणिज्जंतयं गंतुं पयत्तं । केण वि कालंतरेण तम्मि रयण-दीवे लग्गं । उत्तिण्णा वणिया । गहियं दंसणीयं । दिट्ठो राया । कओ पसाओ । वट्टियं सुंकं । परियलियं भंडं । दिण्णा हत्थ-सण्णा । विक्किणीयं तं । गहियं पडिभंडं । दिण्णं दाणं । पडिणियत्ता णियय-कूल-हुत्तं । पूरिओ सेयवडो । लग्गो हियइच्छिओ पवणो । आगया जाव समुद्द-मज्झ-देसं । तओ चिंतियं णेण लोह-मूढ-माणसेण लोहदेवेण । 'अहो, पत्तो जहिच्छिओ लाहो, भरियं णाणा-विह-रयणाणं जाणवत्तं, ता तउं पत्तस्स एस मज्झ भागी होहिइ त्ति । ता ण सुंदरं इमं' ति चिंतयंतस्स राईए बुद्धी समुप्पण्णा । 'दे, एयं एत्थ पत्त-कालं मए कायव्वं' ति संठावियं हियएणं । समुट्ठिओ लोहदेवो । भणियं च णेण 'वयंस, पावक्खालयं पविसामो, जेण विगणेमो आयव्वयं केत्तियं' ति । तं च सोऊण समुट्ठिओ भद्दसेट्ठी, उवविट्ठो णिज्जूहए । तत्थ इमिणा पावेणं लोह-मूढ-माणसेणं अवलंबिऊण णिक्करुणत्तणं, अवमण्णिऊण दक्खिण्णं, पडिवज्जिऊण कयग्घत्तणं, अणायरिऊण कयण्णुत्तणं, अवियारिऊण कज्जाकज्जं, परिच्चइऊण धम्माधम्मं णिद्दयं णोल्लिओ णेण भद्दसेट्ठी । तावय वोलीणं जाणवत्तं ।

§ १३२) खणेण य ति-जोयण-मेत्तं वोलीणं । तओ धाहावियं णेण ।

अवि धाह धाह धावह धावह एसो इहं ममं मित्तो । पडिओ समुद्द-मज्झे दुत्तारे मयर-पउरम्मि ॥
हा हा एसो एसो गिलिओ च्चिय भीसणेण मयरेणं । हा कत्थ जामि रे रे कहिं गओ चेय सो मयरो ॥

एवं अलियमलियं पलवमाणस्स उद्धाइओ णिज्जामय-लोओ परियणो य । तेहिं भणियं 'कत्थ कत्थ सो य णिवडिओ' । तेण भणियं । 'इहं णिवडिओ, मयरेण य सो गिलिओ । ता मए वि किं जीयमाणेणं । अहं पि एत्थ णिवडामि' त्ति भणमाणो उद्धाइओ समुद्दाभिमुहं महाधुत्तो । गहिओ य महल्लएहिं परियणेण य । तेहिं भणियं । 'एक्को एस विणट्ठो, पुणो तुमं पि विणस्सिहिसि, इमं तं जं पज्जलिए तण-भारयं पक्खित्तं । ता सव्वहा ण कायव्वमेयं । अवि य ।

मा रूसह पुरिसाणं इमो णओ एस दुण्णओ व्व कओ । अवि जस्स कम्म-णिवहे पढमं चिय देव्व-णिम्मविए ॥'

एवं च भणमाणेहिं संठाविओ इमो । गंतुं पयत्तं तं जाणवत्तं । सो उण भद्दसेट्ठी इमिणा पाव-हियएणं णिद्दयं णोल्लिओ णिवडिओ अहोमुहो जलरासिम्मि । तओ झत्ति णिम्मग्गो, खणेण य उम्मग्गो । तओ जल-तरल-तरंग-वीइ-कल्लोल-माला-हिंदोलयारूढो हीरिउं पयत्तो । तओ कहिंचि जल-तरंग-पव्वालिओ, कहिंचि वीई-हेलुल्लालिओ, कहिंचि तुंग-तरंगोयर-वग्गिरो महा-मयरेण आसाइओ । तओ वियड-दाढा-करालं महा-मयर-वयण-कुहरंतरालं पविसंतो च्चिय अद्दंसणं पत्तो ।

1) P च कीरिउं. 2) P दियहो, J om. ठावियं लग्गं, P विलिग्गाइं for णिमित्ताइं. 3) P सीयवडे उब्भिज्जं वि कूवाथंभए. 4) P जलसंचए, J एवं च कुण°, P कुणमाणेणं, P om. सो, P दियउहो, P om. य. 5) J चलियं. 6) P पवाइयाइ, P समुहो, P om. दीणविमणो दइयायणो. 7) P मियत्तयणो दीणविमणो महिलायणो मणोरहसमुहो, P जयजय-, J गब्भ P गंदब्भ. 8) P om. जाणवत्तं, P सियवडो, P आवल्लयाइं, J कण्डभारेण. 9) P पवाओ, P रंगंता-, P हिंदोलिय-. 10) J पुंच्छ, P °हयुच्छलंत जलहिंदोलइं, P -संट्ठिउ°. 11) P om. करि, P -करायट्टियं, P -गुणावत्त ज्झत्तयं, J वास for पास. 12) J -दीवे. 13) P सुंकुं, P विक्कीयं तं गहियं । गहियं तं भंडं ।. 14) P पुरिओ, J चिंतियं च. 15) P लोहमूढेणं for लोहदेवेण, P पत्तो हियइच्छिओ लाभो भरियं, J om. णाणाविह. 16) J भविसति for होहिइ. J om. मए. 17) P संट्ठावियं, J पविसिमो, J विगणिमो, P विगणेमो आयवयं केत्तियं अज्जियं ति. 18) J om. समुट्ठिओ, J एत्थ for तत्थ. 19) P निरुक्करुणत्तणं, P कयग्घणत्तं, J कअणुअत्तणं P कयण्णुत्तरं. 20) P धम्मं for धम्माधम्मं. 21) P तिजोयतिजोयण-, J धाहाविओ य णेण, P अवि य after णेण. 22) J om. one धावह, P धाह पावह पावह, J महं for ममं. 23) P आ for हा (कत्थ), P जासि for जामि, J कहं for कहिं. 24) P उद्धाइं य for उद्धाइओ, P om. परियणो य, P om. य. 25) P om. य सो, P जीवमाणेणं. 26) P उत्थाइओ समुद्दाभिमुहो, P पि स for एस. 27) P पुणो वि तुमं, J पि विणिस्सिहिसि P पि से विणिस्सिहसि, P om. जं, P तणहारं पक्खित्तं. 28) P अवि जंमकम्मनिहणे. 29) J om. च, P संट्ठविओ इमं च गंतुं, P सोऊण. 30) P निडिओ अहो जलरासिं, P जत्ति for झत्ति, J णिमुग्गो, J उमुग्गो, P inter. तरंग and तरल, J वीई. 31) P जलतरलतरंग, P कहिं तुंग-. 32) P om. मयर.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुज्जण-जण-हत्थ-गओ विय णिक्खेवो कडयडाविओ णेणं । तओ अकाम-णिज्जराए जलणिहिम्मि महा-मयर-वयण-कुहर-दाढा-मुसुमूरणेण वेइयं बहुयं वेयणिज्जं । तेण मओ संतो कत्थ गंतूण उववण्णो ।

§ १३३) अत्थि रयणप्पभाए पुढवीए पढमे जोयण-सहस्से तत्थ वंतराणं भवणाइं, तेसु अप्पिड्डिओ रक्खसो समुप्पण्णो । पउत्तं च णेणं विभंग-णाणं । 'अहो, केण उण तवेण वा दाणेण वा सीलेण वा इमा एरिसा देव-रिद्धी मए पाविय' त्ति । जाव दिट्ठं णेण अत्ताणं मयरेण गिलियं । दिट्ठं च जाणवत्तं । जाणियं च णेण । 'अरे, इमेणं अहं पक्खित्तो एत्थ लोह-मूढ-माणसेणं' ति । तओ चिंतिऊण पयत्तो । 'अहो पेच्छ पेच्छ, इमस्स दुरायारस्स साहसं । ण गणिओ णिद्धो त्ति । ण मण्णिओ उवयारि त्ति । ण जाणिओ सज्जणो त्ति । ण चिंतियं सुकयं ति । ण इच्छिओ पिय-मित्तो त्ति । ण-ट्ठविओ अणुवगय-वच्छलो त्ति । सव्वहा

जो घडइ दुज्जणो सज्जणेण कह-कह वि जइ तुलग्गेण । सो तक्खणं विरज्जइ तावेण हलिद्दि-रागो ब्व ॥'

इमं च चिंतयंतस्स उद्धाइओ तस्स कोवाणलो । चिंतियं च णेण । 'अरे इमिणा चिंतियं जहा एयं विणिवाइऊण एक्को चेय एयं अत्थं गेण्हामि । ता कहं गेण्हइ दुरायारो । तहा करेमि जहा ण इमस्स, अण्णस्स हवइ' त्ति चिंतिऊण समागओ समुद्दं । तत्थ किं काउमाढत्तो । अवि य ।

सहस च्चिय खर-फरुसो उद्धावइ मारुओ धमधमेंतो । उच्छलिओ य जलणिही णच्चइ व तरंग-हत्थेहिं ॥

तओ किं जायं । समोत्थरिया मेहा । उल्लसंति कल्लोला । धमधमेंति पवणा । उच्छलंति मच्छा । उम्मुग्गवेंति कच्छभा । मज्जंति मयरा । अंदोलइ जाणवत्तं । भग्गं कूवा-खंभयं । णिवडंति पत्थरा । उत्थरंति उप्पाया । दीसए विज्जू । णिवडंति उक्काओ । गज्जए भीमं । फुट्टइ अंबरं । जलइ जलही । सव्वहा पलय-काल-भीसणं समुद्धाइयं महाणत्थं । तओ विसण्णो सत्थवाहो, विमणो परियणो, असरणो जणो, मूढो णिज्जामय-सत्थो त्ति । तओ को वि णारायणस्स थयं पढइ । को वि चंडियाए पसुं भणइ । को वि हरस्स जत्तं उवाइएइ । को वि बंभणाणं भोयणं, को वि माईणं, को वि रविणो, को वि विणायगस्स, को वि खंदस्स, को वि जक्खस्स, को वि रेमंतस्स, को वि बुद्धस्स, अण्णाणं च बहुविहं बहुविहे उवाइय-सहस्से भणइ । सत्थवाहो उण अदण्णो अद्द-पड-पाउरणो धूय-कडच्छुय-हत्थो विण्णवेउं पयत्तो 'भो भो, देवो वा दाणवो वा जक्खो वा रक्खसो वा, किमम्हेहिं कयं पावं, किं वा तुमं कुविओ । सव्वहा दिट्ठो कोवो, संपयं पसायं पेच्छिमो' त्ति । तओ पहाइओ पलय-पवण-संखुद्ध-मयरहर-भीसणो महासद्दो । किलिकिलेंति वेयाला । णच्चंति जोइणीओ । पयत्ता बिहीसिया-संघाया । ताणं चाणंतरं

मुह-कुहर-विणिग्गयग्गिगण-जाला-करालाचलंतत-पब्भार-पयत-गंधुक्कड दीह-दंतावली-वक्क-रोवंत-डिंभं सिवाराव-भीमं भउब्बे-वियासेस-लोयं महा-डाइणी-णच्चणाबद्ध-हासं ।

विरइय-णर-सीस-मालायवं तंडवं णच्चमाणस्स वेयाणिलुद्धूय-संबद्ध-खट्टक्खडाराव-पूरंत-मुज्झंत-वेयाल-जालावली-रुद्ध-संचार-मग्गं णहं दीसए ।

पहसिय-सिय-सीम-दीहट्ट-हासुच्छलंतद्ध-बद्धंधयारम्मि णासेंतमच्चत्थ-दीहंकरं कंक-माला-महामास-लुद्धाए गिद्धावलीए समं सेवियं ।

खर-पहर-महा-पहाराहयदारियासेस-खज्जंत-जंतू-रवाराव-भीमं महा-हास-संसद्द-गब्भ-पूरंत-बीभच्छ-पेच्छं महा-रक्खसं । ति ।

§ १३४) तेण य मुह-कुहर-विणिग्गयग्गि-जालावली-संवलिज्जंतक्खरं पलय-जलहर-समेणं सद्देणं भणियं । 'रे रे दुरायार पाव कूर-कम्म णिद्दय णिक्करुण, भद्दसेट्ठिं वरायं अणवराहं वावाइऊण एवं वीसत्थं पत्थिओ' त्ति भणमाणेण समुक्खित्तं दाहिण-दीह-भुया-डंडेणं तं जाणवत्तं । समुद्धाइओ गयण-हुत्तं । तओ तं उप्पइयं जाणवत्तं केरिसं दीसिउं पयत्तं ।

1) P -जलहत्थ-. 2) P विइयं, J बहुवेयणिज्जं. 3) J °प्पहाए, P पढमो, P भवणे. 4) J विहंगं णाणं, P om. उण, P om. वा after तवेण. 5) P brings एत्थ after इमेणं. 6) J य पत्तो for पयत्तो. 7) P अवयारो for उवयारि, P पियमत्तो. 8) P अणवगय-. 9) P घडइ सज्जणो दुज्जणंमि, P जह for जइ, J विरज्जइ, J हलिदिराओ, P हलिद्द-. 10) P उट्ठाइओ, J कोआणलो. 11) P जहा इमस्स, J इमस्स ण अण्णस्स. 13) P उच्छिलिओ. 14) P वि after तओ, P समोत्थया, P उम्मग्गंति, J कच्छवा. 15) P भग्गइ कूवा-. 16) P फुट्टइ य अंबरं । दलइ जलनिही, P महाअणत्थं. 17) J णारायणट्ठस्सयं P नारायणसत्थयं. 18) J हणइ for भणइ, P उवाएइ, J om. को वि before विणायगस्स, P विणागयस्स. 19) P रेवंतस्स, P भण्णइ. 20) J om. अदण्णो, P अद्ध for अद्द, P विन्नविउं, J om. जक्खो वा. 21) P पेच्छामो, J om. त्ति. 22) P पयत्तो. 24) P चलंतपब्भार-. 25) P महालाइणी-. 26) P °वयंसतंडवं, P वेयानिलुद्धसंबद्धखट्टक्खडाराव. 27) P दीसवे । 28) P हासुच्छलंतबद्धंधयारविणासेंत° 30) P कर for खर, P repeats नहर, P खज्जंतजियंतजंपूर°, P हस हासससंभद्दगब्भ. 31) P संचलिज्जंतिखरपलय. 33) P भुयादंडेणं, J उप्पइउं P समुप्पइयं, P अवि य after पयत्तं ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायालयलाओ समुट्ठियं व गयणंगणे समुप्पइयं । असुर-विमाण-सरिच्छं व दीसए जाण-वरवत्तं ॥

ताव उप्पइयं जाव जोयण-सयं दुरुत्तरं । तओ रोस-वस-सिमिसिमेंत-हियएण अच्छोडियं कह दीसिउं पयत्तं । अवि य ।

णिवडंत-रयण-णिवहं मुत्ताहल-धवल-सोहिओऊलं । धुव्वंत-धया-धवलं कीला-सेलस्स खंड व ॥

तं च तारिसं णिद्दय-असुर-कर-णोल्लियं णिवडियं । आवडियं विित्थण्णे महा-समुदुच्छंगे तं जाणवत्तं । अवि य ।

तह तं वेयावडियं समुद्द-मज्झम्मि जाण-वरवत्तं । णिवडंतं चिय दिट्ठं पुणो ण णायं कहिं पि गयं ॥

पेच्छ मणि-णिम्मल-गुणंतम्मि समुद्दम्मि कत्थ वि विलीणं । अहव गुण-भूसियाण वि संबंधो णत्थि जलहिम्मि ॥

तओ पलीणं भंडं, मया णिज्जामया, विणट्ठो परियणो, चुण्णियं जाणवत्तं । एत्थंतरे एस कह-कह वि णासग्ग-पत्त-जीविओ जल-तरंग-वीईए किर भंडवई समुद्देण विवज्जइ त्ति । तेण कह-कह वि तरल-जल-पेल्लण-घोल-णिव्वोलिज्जंतो वि एक्कम्मि मुसुमूरिय-जाणवत्त-फलहयम्मि विलग्गो । गहियं च णेण तं फलहयं । कह ।

कोमल-दइयालिंगण-फंस-सुहासाय-जाय-सोक्खाहिं । बाहाहिँ तेण फलयं अवगूढं दइय-देहं व ॥

तं च अवगूहिऊण समासत्थो । चिंतियं च णेण । 'अहो,

जं जं करेंति पावं पुरिसा पुरिसाण मोह-मूढ-मणा । तं तं सहस्स-गुणियं ताणं देव्वो पणामेइ ॥

अण्णहा कत्थ समुद्दे विणिवाइओ भद्दसेट्ठी, कत्थ व समुद्धाइओ रक्खस-रूवी कयंतो । ता संपयं ण-याणामि किं पावियव्वं' ति चिंतयंतो जल-तरल-तरंगावली-हेला-हिंदोलय-मालारूढो फलहए हीरिउं पयत्तो । ता कहिंचि मच्छ-पुच्छ-च्छडा-छोडिओ, कहिंचि पक्क-णक्क-संकिओ, कहिंचि तणुय-तंतु-संजमिज्जंतओ, कहिंचि धवल-संखउलावली-विलुलिज्जंतओ, कहिंचि घण-विदुम-दुम-वण-विमुज्झंतओ, कहिंचि विसहर-विस-हुयास-संताविज्जंतओ, कहिंचि महाकमढ-तिक्ख-णक्खावली-संलिहिज्जंतओ ।

§ १३५) एवं च महाभीसे जलणिहिम्मि असरणो अबलो अमाणो उज्झिय-जीवियव्वो जहा भविस्स-दिण्ण-हियओ सत्तहिं राइंदिएहिं तारद्दीवं णाम दीवं तत्थ लग्गो । आसत्थो सीयलेण समुद्द-वेला-पवणेणं । समुट्ठिओ जाव दिसं पलोएइ ताव य गहिओ कसिण-च्छवीहिं रत्त-पिंगल-लोयणेहिं बद्धुद्ध-जूडएहिं जम-दूय-संणिहेहिं पुरिसेहिं । इमेण भणियं 'किं ममं णेण्हह' । तेहिं भणियं । 'धीरो होहि, अम्हाणं एस णिओओ । जं को वि पुरिसो गेहं णेऊण मज्जिय-जिमिओ कीरइ' त्ति । एवं भणमाणेहिं णीओ णियय-घरं, अब्भंगिओ मज्जिओ जिमिओ जहिच्छं । उवविट्ठो आसणे समासत्थो । तओ चिंतियं च णेण । 'अहो अकारण-वच्छलो लोओ एत्थ दीवे । किं वा अहं सभग्गो' त्ति चिंतयंतो चिय सहसा उद्धाविएहिं बद्धो । पच्छा बहु-पुरिसेहिं बंधिऊण य मासलेसु पएसेसु छिंदिउं समाढत्तो । मासं च चडचडस्स वड्डए । छिण्णं मासं, पडिच्छियं रुहिरं । वियणा-उरो य एसो चलचलु-पेल्लणयं कुणमाणो विलित्तो केण वि ओसह-दव्व-जोएणं, उवसंता वेयणा, रूढं अंगं ति । एत्थंतरम्मि पुच्छियं वासवेण महामंतिणा भगवं धम्मणंदणो । 'भगवं, अह तेण महामासेण रुहिरेण य किं कुणंति ते पुरिस' त्ति । भणियं च भगवया धम्मणंदणेणं । 'अत्थि समुद्दोयर-चारी अग्गियओ णाम महाविडो ऊरुगो ऊरुग-संठाणो वेलाउलेसु पाविज्जइ त्ति । तस्स परिक्खा मधुसित्थयं गंधरोहयं च मत्थए कीरइ । तओ तं पगलइ । तं च गेण्हिऊण ते पुरिसा महारुहिरेण महामंसेण विसेण य चारेंति । तओ एक्को सो महाविडो सुव्वं सहस्संसेण पाविऊण हेमं कुणइ त्ति । तेण भो महामंति, तेहिं पुरिसेहिं सो गहिओ । तओ पुणो वि भक्ख-भोज्ज-खज्ज-सएहिं संवड्ढियं तस्स मासं जाव छम्मासे । पुणो पुणो उक्कत्तिय मंसं रुहिरं च गालियं । वेयणत्तो पुणो वि विलित्तो ओसह-दव्वेहिं । पुणो वि सत्थो जाओ त्ति । एवं च छम्मासे छम्मासे उक्कत्तिय-मास-खंडो वियलिय-रुहिरो अट्ठि-सेसो महादुक्ख-समुद्द-मज्झ-गओ बारस संवच्छराइं वसिओ ।

§ १३६) अह अण्णम्मि दियहे उक्कत्तिय-देहेण चिंतियं अणेण लोहदेवेण । 'असरणो एस अहं णत्थि मे मोक्खो । ता सुंदरं होइ, जइ मह मरणेण वि इमस्स दुक्खस्स होज्ज वीसामो' त्ति । चिंतयंतेण पुलइयं णेण गयणयलं जाव दिट्ठो

2) P उप्पइउं, J सिमिसिमिसिमेंत P °सिमिंत, J कहं अ दीसिउं. 3) P -सोहिउं ऊलं। धूयंत-, J खण्डव्व, P च for व, 4) J णिद्दअं सुरकर-, P करु for कर. 5) J inter. तं & तह, P कहिं चि. 7) P रुंडं for भंडं. 8) P वीचीए, P भंडव्व तीए स समुद्देण, P पेच्छगुबालनिब्बोलि°. 10) J सुहापाय-, P जाई for जाय, J दलयं for फलयं, P अवरूढं, P inter. देह and दइयं. 11) J अवऊहिऊण, P समासत्थेण. 12) P करंति, P देवो पणासेइ. 13) J om. व, P संपयं न याणिमो पा किं. 14) P तरंगावलिज्जंतओ कहिंचि घणविद्रुम etc. (portion from below) गंताविज्जंतओ कहिंवली हेलाहिंदोलयमालारूढ-फलहओ, JP च्छडाच्छोडिओ. 15) P कहिं पक्कणक्क, P -तंत. 16) P -सलिहिज्जंतओ. 17) P जीवियव्वओ भविस्स. 18) P रायंदिएहिं, P -वेलाए वणेण. 19) P om. य, J कसण, J वड्डुद्ध (?) P बद्ध for बद्धुद्ध (emended), P सन्निभेहिं. 20) P कोइ for को वि, P मज्जिओ for मज्जिय. 21) P अभिंगिय जिमिउं, P उविविट्ठो आसणो, J om. च. 22) J सरुग्गो, P बाहु for बहु. 23) P बंधेऊण मांसलेसु, P समाढत्ता, P om. च, J चडुए P वड्डुए, P मंसं पडिच्छियं. 24) P om. य, P चलुचलुवेल्लणं कुणमाणो. 25) P वासवमहा°, J om. भगवं before अह, P -मंसेण, P om. ते. 26) P °विडो जरुगोजरसंठाणो. 27) P तत्थ for तस्स, P गंधरोहं, P om. तओ. 28) P चारंति, J सोम for सो, P सुंच for सुव्वं, P कुणंति ।. 29) P om. तओ, P भोज्जएहिं, P मंसं, J om. one पुणो, J मासं. 30) J om. पुणो, P -दव्वेणं ।, P om. त्ति, J om. च, J -मांसं खंतो. 31) P वसिउं ।. 32) P अहो असंमि, J णेण for अणेण, P एत्थ for एस, J मो for मे. 33) P repeats सुंदरं, P चिंतियंतेण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुहिर-मास-गंधायड्ढिओ उवरि भममाणो भारंड-महापक्खी। तं च दट्ठूण आउलमाउले परियणे णिक्खंतो बाहिं आयास-तले दिट्ठो य तक्खणुक्कत्तिय-वहंत-रुहिर-णिवहो भारंड-महापक्खिणा, झड त्ति णिवडिऊण गहिओ। हा-हा-रव-सद्द-गब्भिणस्स परियणस्स समुद्धाइओ पुरओ च्चिय गयणंगण-हुत्तं। तओ णिसियासि-सामलेणं गयण-मग्गेणं पहाइओ पुव्वुत्तर-दिसा-विभायं। तत्थ किं काउमारद्धो। अवि य।

पियइ खणं रुहिरोहं लुंपइ मासं पुणो खणं पक्खी। भंजइ अट्ठिय-णिवहं खणं खणं घट्टए मम्मं॥

एवं च विलुप्पमाणो जाव गओ समुद्दुच्छंगे ताव दिट्ठो अण्णेण भारंड-पक्खिणा। तं च दट्ठूण समुद्धाइओ तस्स हुत्तं। सो य पलाइउं पयत्तो। पलायमाणो य पत्तो पच्छा पहाइएणं महापक्खिणा। तओ संपलग्गं जुद्धं। णिट्ठुर-चंचु-पहर-खर-णहर-मुह-वियारणेहिँ य जुज्झमाणाणं चुक्को चंचु-पुडाओ। तओ णिवडिउं पयत्तो।

णिट्ठुर-चंचु-पहारावडंत-संजाय-जीय-संदेहो। आसासिओ पडंतो गयणवहे सीय-पवणेण॥

णिवडिओ य धस त्ति समुद्द-जले। तओ तम्मि अहिणवुक्कत्तिय-मेत्ते देहे णिद्दय-चंचु-पहर-परद्धे य तं समुद्द-सलिलं कह डहिउं पयत्तं। अवि य।

जह जह लग्गइ सलिलं तह तह णिव्वूमयं डहइ अंगं। दुज्जण-दुव्वयण-विसं सज्जण-हियए व्व संपत्तं॥

तओ इमो तम्मि सलिले अणोरपारे उज्झंतो जलेणं, खज्जंतो जलयरेहिं, जल-तरंग-वीई-हत्थेहिं व णोलिज्ज-माणो समुद्देणावि मित्त-वह-महापाव-कलुसिय-हियओ इव णिच्छुब्भंतो पत्तो कं पि कूलं। तत्थ य खण-मेत्तं सीयल-समुद्द-पवण-पहओ ईसि समूससिओ। णिरूवियं च णेणं कह-कह वि जाव पेच्छइ कं पि वेला-वणं। तं च केरिसं।

एला-लवंग-पायव-कुसुम-भरोणमिय-रुद्ध-संचारं। कप्पूर-पूर-पसरंत-बहल-मयरंद-गंधड्ढं॥

चंदण-लयाहरेसुं किंणर-विलयाओ तत्थ गायंति। साहीण-पिययमाओँ वि अणिमित्तुक्कंठ-णडियाओ॥

कयली-वणेसु जत्थ य समुद्द-मिउ-पवण-हल्लिर-दलेसु। वीसंभ-णिमीलच्छा कणय-मया णिच्च-संणिहिया॥

§ १३७) तस्स य काणणस्स विणिग्गएणं बहु-पिक्क-फल-भर-विविह-सुरभि-कुसुम-मासल-मयरंद-वाहिणा पवणेण समासासिओ समुट्ठिओ समुद्द-तडाओ परिभमिउमाढत्तो तम्मि य काणणे। तओ करयल-दलिय-चंदण-किसलय-रसेण विलिंप-माणेणं अंगं। कयाहारो य संवुत्तो पिक्क-सुरहि-सुलह-साउ-फलेहिं। दिट्ठो य णेण परिभममाणेणं काणणस्स मज्झ-देसे महंतो वड-पारोहो। तत्थ गओ जाव पेच्छइ मरगय-मणि-कोट्टिमयलं णाणाविह-कुसुम-णियर-रेहिरं सरय-समए विय बहुल-पओसे णहंगणं। तं च पेच्छिऊण चिंतियं अणेणं। 'अहो, एवं किर सुव्वइ सत्थेसु जहा देवा सग्गे णिवसंति, ता ण ते सुंदरासुंदर-विसेस-जाणया। अण्णहा इमं पएसं तेलोक्क-सुंदरं परिच्चइउं ण सग्गे णिवसंति'। चिंतयंतो उवविट्ठो तम्मि वड-पायव-तले त्ति। तत्थ णिसण्णेण य देव-णाम-कित्तणालद्ध-सण्णा-विण्णाणेणं चिंतियमणेणं लोहदेवेणं। 'अहो, अत्थि को वि धम्मो जेण देवा देव-लोएसु परिवसंति दिव्व-संभोग त्ति। अत्थि य किं पि पावं जेण णरए णेरइया अम्ह दुक्खाओ वि अहियं दुक्ख-मुव्वहंति। ता किं पुण मए जीवमाणेण पुण्णं वा पावं वा कयं जेण इमं दुक्खं पत्तो' त्ति चिंतयंतस्स हियए लग्गो सहस त्ति तिक्ख-सर-सल्लं पिव भद्दसेट्ठी। तओ चिंतिउं पयत्तो। 'अहो,

अम्हारिसाणँ किं जीविएण पिय-मित्त-णिहण-तुट्ठाण। जेण कयग्घेण मए भद्दो णिहणं समुवणीओ॥

ता धिरत्थु मम जीविएणं। ता संपयं किं पि तारिसं करेमि, जेण पिय-मित्त-वह-कलुसियं अत्ताणयं तित्थट्ठाणम्मि वावाएमि, जेण सव्वं सुज्झइ' त्ति चिंतयंतो णिवण्णो। तओ सुरहि-कुसुम-मयरंद-बहल-परिमलुग्गार-वाहिणा समासासिज्जंतो सिसिर-जलहि-जल-तरंग-रंगावली-विक्खिप्पमाण-जल-लव-जडेणं दक्खिणाणिलेणं तहिं चेय पसुत्तो वड-पायव-तलम्मि। खण-मेत्तस्स य विबुद्धो ईसि विभाविज्जंत-खर-महुर-सुहुमेणं सरेणं। दिण्णं च णेण सविसेसं कण्णं।

1 > P उवरि कमनाणो भारुंड-, J आयासअले । P -तले य।. 2 > P तक्खणकत्तिय-, P भारुंड, J inter. महा and भारंड, J झस P ज्झड. 3 > P गयणांगण-, P om. पहाइओ, P दिसाभायं. 5 > P खणं घोट्टए रुहिरं॥. 6 > J विलुंपमाणो, P समुद्दुच्छंगो ताव दिट्ठो समुद्दुच्छंगे ताव दिट्ठो अनेन भारुंड-, P सपुद्धाइं तस्स. 7 > P संलग्गं, P -प्पहार-. 8 > P कुहर for मुह, P निवडियं. 9 > P -प्पहारा°, J धुयधरिय for संजाय, P गयणयले सीय-, J सीयल-. 10 > P om. तओ, P अहिणवकत्तिय-, P निद्दयं, P परद्धेयं, P सलिलं अह दहिउं. 12 > P दहइ, P -हियये व। 13 > P अणोरपारो, P पुणो लिज्ज° for व णोलिज्ज°, P समुद्दोणाविवित्तवह. 14 > J कलुसिओ इव, P निब्भच्छंतो, P ईसी. 17 > P सीहीण, J अणुरत्तुक्कंठ- P अणमित्तुकण्ण. 18 > P कणेसु for वणेसु, J कणयमाया. 19 > P बहुरपिक्कफलहर, P -सुरहि-, P मासमयरंददाहिणपवणेण. 20 > P समुट्ठिओ, P करयलयदलिय-, P विलिंपमाणेणं. 21 > J कयाभारो, P -फ्फलेहिं।, JP वणेण for य णेण, P परिब्भम°. 22 > J वडयारोहो, P -कोट्टिमयले, P -नियरेहिरं, P विआ for विय. 23 > J णेण for अणेणं, P किर after जहा, P निवसंति, P inter. ते and ण. 24 > P विस for विसेस, JP परिच्चइऊण. 25 > J णिसुण्णेण, P चिंतयमप्पेण, P धमो for धम्मो. 26 > P -संभोगो, P नारइया। अहं दुक्खाओ. 27 > P संपत्तो for पत्तो, P सहस्स for सहस. 28 > P चिंतियं for चिंतिउं. 30 > P om. पि, P om. अत्ताणयं, P अत्थत्थाणंमि. 31 > P om. त्ति, P ताओ for तओ, P -कुसुमयरंद-. 32 > P om. जलहि, P तरंगारंगा°, P तरेणं for जडेणं. 33 > P om. य, P विभाविज्जंतखरमुहुर-, P adds सुणयंति before दिण्णं च. J om. णेण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १३८) आयण्णिऊण य चिंतियं णेण । 'अरे, कयरीए उण भासाए एयं उल्लवियइ केणावि किं पि । हुं, अरे सक्कयं ताव ण होइ । जेण तं अणेय-पय-समास-णिवाओवसग्ग-विभत्ति-लिंग-परियप्पणा-कुवियप्प-सय-दुग्गमं दुज्जण-हिययं पिव विसमं । इमं पुण ण एरिसं । ता किं पाययं होज्ज । हुं, तं पि णो, जेण तं सयल-कला-कलाव-माला-... कल्लोल-संकुलं लोय-वुत्तंत-महोयहि-महापुरिस-महणुग्गयामय-णीसंद-बिंदु-संदोहं संघडिय-एक्केक्कम-वण्ण-पय-णाणारूव-विरयणा-सहं सज्जण-वयणं पिव सुह-संगयं । एयं पुण ण सुट्टु । ता किं पुण अवहंसं होहिइ । हुं, तं पि णो, जेण सक्कय-पायओभय-सुद्धा-सुद्ध-पय-सम-विसम-तरंग-रंगंत-वग्गिरं णव-पाउस-जलय-पवाह-पूर-पव्वालिय-गिरि-णइ-सरिसं सम-विसमं पणय-कुविय-पिय-पणइणी-समुल्लाव-सरिसं मणोहरं । एयं पुण ण सुट्टु । किं पुण होहिइ त्ति चिंतयंतेण पुणो समायण्णियं । अरे, अत्थि चउत्था भासा पेसाया, ता सा इमा होहि'त्ति । एत्थ वड-पायवोयरे पिसायाण उल्लावो होहइ' त्ति ।

§ १३९) 'ता पुण को इमाणं समुल्लावो वट्टइ' त्ति चिंतयतो ट्ठिओ । भणियमण्णेण पिसाएण णियय-भासाए । 'भो एतं तए लप्पिय्यते यथा तुब्भेहिं एतं पब्बय-नती-तीर-रम्म-वन-काननुय्यान-पुर-नकर-पत्तन-सत-संकुलं पुथवी-मंडलं भममानकेहिं कतरो पतेसो रमनिय्यो निरिक्खितो त्ति । एत्थं किं लपियं । तं अभिनवुब्भिन्न-नव-चूत-मंजरी-कुसुमोत्तर-लीन-पवन-संचालित-मंदमंदंदोलमानमुपांत-पातपंतरल-साखा-संघट्ट-वित्तासित-छच्चरन-रनरनायमान-तनुतर-पक्ख-संतति-विघट्टनुद्धूत-विचरमान-रजो-चुन्न-भिन्न-हितपक-विगलमान-विमानित-मानिनी-सयंगाह-गहित-वियाथर-रमनो विय्या-धरोपवनाभोगो रमनिय्यो' त्ति । अण्णेण भणियं । 'नहि नहि कामचार-विचरमान-सुर-कामिनी-निगिय्यमान-दहूत-गोत्त-कित्तनुल्लसंत-रोमंच-सेत-सलिल-पज्झरंत-पातालंतरक-रत्तुप्पल-चित्त-पिथुल-कनक-सिलंतलो तितस-गिरिवरो पब्बत-राजो रमनिय्यतरो' त्ति । अण्णेण भणियं । 'कत्थमेतं लपितं सुलपितं भोति । विविथ-कप्पतरु-लता-निबद्ध-दोलक-समारूढ-सुर-सिद्ध-विय्याधर-कंत-कामिनी-जनंदोलमान-गीत-रवाकन्नन-सुख-निब्भर-पसुत्त-कनक-मिक-युगलको नंदनवनाभोगो रमनिय्यतरो' त्ति । अवरेण भणियं । 'यति न जानसि रमनिय्यारमनिय्यानं विसेसं, ता सुनेसु । उद्दाम-संचरंत-तिनयन-वसभ-ढेंकंता-रवुप्पित्थ-बुज्झंत-गोरी-पंचानन-रोस-वस-वितिन्न-विक्कम-निपात-पातित-तुंग-तुहिन-सित-सिसिर-सिला-सिखरो हिमवंतो रमनीयतमो' त्ति । अण्णेण भणियं । 'नहि नहि वेला-तरंग-रंगंत-सलिल-वेवुद्धूत-सिसिर-मारुत-विकिरिय्यमानेला-लवंक-कक्कोलक-कुसुम-बहल-मकरंदामुतित-मधुकर-कलकलारावुगिय्यमानेक्केक्कम-पातप-कुसुम-भरो इमो य्येव वेला-वनाभोगो रमनिय्यतमो' त्ति । अवरेण भणियं । 'अरे, किं इमकेहिं सव्वेहिं य्येव रामनीयकेहिं । यं परम-रमनीयकं तं न उल्लपथ तुब्भे । सग्गावतार-समनंतर-पतिच्छित-नव-तिभाग-नयन-जटा-कटापोतर-निवास-ससि-कला-निद्धूतामत-निवह-मथुर-धवल-तरंग-रंगावली-वाहिनिं पि भगवतिं भगीरथिं उज्झिऊन जम्मि पापक-सत-दुट्ठप्पमो पि, किं बहुना मित्त-वध-कतानिं पि पातकानि सिनान-मेत्तकेनं येव सत-सकरानि पनस्संति । ता स च्चेय रमनीया सुरनति' त्ति । तओ सव्वेहिं भणियं । 'यदि एवं ता पयट्टथ तहिं चेय वच्चामो' त्ति भणमाणा उप्पइया धोय-खग्ग-णिम्मलं गयणयलं पिसाय त्ति । इमस्स वि णरणाह, हियवए जहा दिव्वाणं पि पूयणीया सव्व-पावहारी भगवई सुरसरिया तम्मि चेय वच्चामो जेण मित्त-वह-कलुसियं अत्ताणयं

1 > P om. य, P तेण for णेण, J कयलीए, P अणु for उण, P उल्लवीय त्ति केण वि, P हुं. 2 > P तम अ°, P समासनिवाओ-वसयविभक्ति-. 3 > J om. ण, P पायं for पाययं, P -सकुला. 4 > P महोयही-, P मुहणुग्गया, P संरोह संघ°, J संघडिय एक्के°, P -वंनपायनाणारूव, P सुहं for सहं. 5 > P वणं for वयणं, J किं अवहंसं, P अवब्भंसं होहिई । हुं, P adds त before सक्कय. 6 > J om. विसम, J जलयर (but र perhaps struck off), P जलरय for जलय, P पणयकुवियं पिव पण°. 7 > P तहा for सुट्टु, P सम्मायन्नियं. 8 > P वडपायवे, P om. होहइ त्ति । ता पुण को इमाणं समुल्लावो. 10 > J एयं for एतं, P लपिप्पते, J om. एतं, J -णणती, P नदी for नती, P om. तीर, P रंम, J वण P चन, P काननुप्पान, J नकरपत्तदसत्त-, P पुत्तन for पत्तन, J मण्डलं. 11 > J के किं for केहिं, J निरिक्खित्तो P तिरिक्खिदो, P लप्पिज्जते for लपिय्यं, P om. तं, P om. नव, P -भूतपंजरी. 12 > J -लीण-, J adds पवनसंचालित on the margin which is omitted in P. J °दोलमानामुपात्तयातरुसंघट्ट P °दोलमानन्नवपातपं, J तरु for तरल, J om. साखा, P संघव्वचित्तासितच्छच°. 13 > J -संतती-, P विघटनु°, JP चुण्ण, J भिण्ण, P भिन्नाहतपंकावि°, P विय्यधरो°. 14 > P रमनिज्जो, P अन्नेण, J भणिअं, P कामकामचारविचारमान, P -निचमानउदितगोत्त. 15 > P रोमंचा-, J सेय for सेत, P पज्जरंत, J पायालंतरक P पातालनूक-, P चिन for चित्त, P सिलातले. 16 > J रमनिय्यातरो P रमनिज्जतरो, P अण्णेण्ण, J भणिअं, P om. लपितं, J त्ति for ति (in भोति), P विविध-, J adds तर before लता. 17 > P विज्जाधर, J °कन्नाना-, J -णिब्भर, P यमलके नंदनो वना°, J रमनिय्योतरो P रमनिज्जतरो. 18 > J भणिअं, P रमनिज्जारमनिज्जानं तासु तेसु विसेसं उद्दाम-. 19 > J ढेंकंता P टेक्कता, J पंचाननं, J वास for रोस, J वितिण्ण P वित्तिन, P -पतित, J om. सिला, J हेमंतो रमणीयतमो P हिमवंतो सामनीयतमो. 20 > P अन्नेण, J भणिअं, J लेवुद्धुत, P विरूत, J मारु for मारुत, P विकरिप्पमानेला लवंग-. 21 > P बहुलमकरंदमतितमधुकराकलाकलारावुगिप्पमाने°, J मधुकरतलकलारावुगिय्यमानेकेक्केपातकुसुम-. 22 > J रमनिय्योतमो P रमनिज्जतमो, P इमं कहिं, J om. सव्वेहिं, P य्पेव for य्येव. 23 > P पतीच्छितनमनय-, J भट्टा for जटा, J कटाघात for कटापोतर, J निद्धूतामननिवह, P मधुर. 24 > J तरंगा-, J वाहिनी पि भगवति भागीरथि P वाहनिं पि भगवती भगीरथी उज्झिउन जंमि, P रुद्धपसो for दुट्ठप्पमो, P कांतानि for कतानिं. 25 > J सिज्जानमेत्तकेनं P सिशानमेत्तकेनपेवासत, J पतस्संति, P सव्वे य रम्मयासुरनत्ती त्ति, J सव्वेहि वि भणियं, J जइ for यदि. 26 > P खगनिम्मलं, JP नरनाह. 27 > J पूअणीयावहारी, P पूयणीया । सव्वपावहरी भगवती, J adds ता before तम्मि, P ताइंमि for तम्मि.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

लोहेमो त्ति चिंतयंतो समुट्ठिओ सुरणई-संमुहो। तओ कमेण आगच्छमाणो इह संपत्तो, उवविट्ठो य इमम्मि जण-संकुले समवसरणे त्ति। इमं च सयलं वुत्तंतं भगवया साहियं णिसामिऊण लज्जा-हरिस-विसाय-विमुहिज्जंतो समुट्ठिओ णिवडिओ य भगवओ धम्मणंदणस्स चलण-जुवलए। भणियं च णेण।

'जं एयं ते कहियं भगवं सव्वं पि तं तह च्चेय। अलियं ण एत्थ वर-जस तिल-तुस-मेत्तं पि ते अत्थि ॥
ता भगवं दे जंपसु एत्थ मए किं च णाह कायव्वं। किं ता सुरसरिय च्चिय अहवा अण्णं पि पच्छित्तं ॥'

§ १४०) भणियं च गुरुणा धम्मणंदणेणं।

'जलणो डहइ सरीरं जलं पि तं चेय णवर सोहेइ। अंगट्ठियाइँ भंजइ गिरी वि णवरं णिवडियाणं ॥
देवाणुपिया जं पुण घण-करिणं विरइयं पुरा कम्मं। तं पर-तवेण तप्पइ णियरा सम्मत्त-जुत्तेणं ॥
ता उज्झिऊण लोहं होसु विणीओ गुरूण सय-कालं। कुणसु य वेयावच्चं सज्झाए होसु अहिउत्तो ॥
खंतीएँ देसु चित्तं काउस्सग्गं च कुणसु ता उग्गं। विगई परिहर धीरो वित्ती-संखेवणं कुणसु ॥
पालेऊण वयाइं पंच-महासइ-पढम-गरुयाइं। गुरुयण-दिट्ठेण तओ अणसणएणं मुयसु देहं ॥
जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं। सासय-सिव-सुह-सोक्खं अइरा मोक्खं पि पाविहिसि' ॥"

इमं च णिसामिऊण पहरिस-वियसमाण-वयणेणं भणियं लोहदेवेणं।

'भगवं जइ ता जोग्गो इमस्स तव-संजमस्स ता देसु। मित्त-वहं मम पावं परिसुज्झइ जेण करणेणं ॥'

भगवया वि धम्मणंदणेण

पायवडियस्स सुइरं बाह-जलोल्लिया-महल-गंडस्स। उवसंत-तिव्व-लोहे सामण्णं तेण से दिण्णं ॥

एवं च णाणाइसएणं णाऊण उवसंत-कसाओ पव्वाविओ लोह-देवो त्ति ॥ ॐ ॥

§ १४१) भणियं च पुणो वि गुरुणा धम्मणंदणेणं।

'मोहो कज्ज-विणासो मोहो मित्तं पणासए खिप्पं। मोहो सुगइं रुंभइ मोहो सव्वं विणासेइ ॥

अवि य मोह-मूढ-मणो पुरिसो अकज्जं पि कुणइ कज्जं पि ण कुणइ, अगम्मं पि वच्चइ गम्मं पि ण वच्चइ, अभक्खं पि असइ भक्खं पि णासइ, अपेयं पि पियइ पेयं वि ण पियइ, सव्वहा हियं पि णायरइ अहियं पि आयरइ त्ति। अवि य।

गम्मागम्म-हियाहिय-भक्खाभक्खाण जस्स ण विवेगो। बालस्स व तस्स वसं मोहस्स ण साहुणो जंति ॥ जेण,
भइणिं पि कुणइ भज्जं जणयं मारेइ पेच्छ ईसाए। मोह-विमोहिय-चित्तो णरवर एसो जहा पुरिसो ॥'

भणियं च णरवइणा। 'भयवं बहु-पुरिस-संकुलाए परिसाए ण-याणिमो को वि एस पुरिसो' त्ति। भणियं च गुरुणा धम्मणंदणेणं।

"जो एस तुज्झ दूरे दाहिण-देसम्मि वासवस्स भवे। ण सुणइ भणियं वयणं सुयं पि सम्मं ण-याणाइ ॥
पुरओवट्ठिय-कज्जं ण पेच्छइ किं पि मउलियच्छीओ। जूय-जिओ जूययरो व्व ओ अह किं पि चिंतेइ ॥
लेप्पमइउ व्व घडिओ बाहिर-दीसंत-सुंदरावयवो। कज्जाकज्ज-वियारण-विमुहो थाणु व्व एस ठिओ ॥
जो सो सुव्वइ मोहो तं च सरूवेण पेक्ख णरणाह। एएण मोह-मूढेण जं कयं तं णिसामेह ॥

§ १४२) अत्थि भुयणे पयासो कोसल-णरणाह-पुत्त-गोत्तंको। कोसल-जणो जणाणं कोसल-जण-णिवह-पूरंतो ॥

जहिं च ससूयाओ सालीओ कुडुंबिणीओ य, सवाणियइं गामाइं तंबोलइं च, सासाउलइं पउत्थवइया-मुहइं छेत्तइं च, असण-संकुलइं वणइं भोज्जइं च, दियवराहिट्ठियओ सालीओ वाविओ य, सहलइं तरु-सिहरइं सीमंतरइं च, धम्म-महासाहणुज्जुवा जुवाणा महामुणिंदा य त्ति। अवि य।

सालिवण-उच्छु-कलिए तम्मि य देसम्मि महियलब्भहए। अत्थि पुरी पोराणा पवरा पर-चक्क-दुल्लंघा ॥

तहिं च तुंगइं धवलहरइं ण गुरुयण-पणामइं च, दीहरइं पेम्माबंधइं ण कोवारंभइं, वंक-विवंकइं कामिणी-केस-

1) P सुरनई, J जओ for संमुहो, P इहं, J om. जण. 2) J °सरण त्ति, P सयल°, P विसया for विसाय, P om. णिवडिओ. 3) P जुवलये. 4) J या for ते (after पि). 5) P om. च. 7) P दहर, P कोहोई for सोहेइ, P नवरं विनडियाण. 8) P adds जीवेण बहुं before घण, P जतेणं ॥. 9) J गुरुअणस्स सयकालं, J अभिवुत्तो. 10) P खंतीय, J काउसग्गं, P विगई, P धीरो विरो वित्ती-. 11) P पउमगुरुयाई, J अणसणं. 12) J तओ तत्थ जत्थ for the first line जत्थ ण जरा etc., J पावेसि. 13) P भणियं च लोभदेवेणं. 16) J जलोल्लि- P जलोयालि-, P उवसंतं तिव्वलोहो त्ति सा°, P सो for से. 17) P repeats पव्वाविओ, P त्ति ॥ छ ॥ प्रव्रजितो लोभदेवः चतुर्थो धर्मनंदनाचार्येण। भणियं etc. 18) P om. वि. 19) P सुगई. 20) J om. कज्जं पि ण कुणइ. 21) P असई, P नासेई, P interchanges the places of पेयं and अपेयं, J णा पियइ, J पि णायरइ त्ति ।, P om. त्ति. 22) P विवेओ ।. 23) P पि मुं इच्छइ जणयं, J पेच्छइ साए. 24) P om. धम्मणंदणेणं. 26) J om. three verses जो एस तुज्झ etc. to थाणु व्व एस ठिओ ॥. 27) P पुरओ वेट्ठियं, [पेच्छई or मउलियअच्छीओ] P अह किं किं 29) P सु for सो, J णिसामेहि. 31) J ससूआउ P सपुआओ, P व for य. 32) P °राहिट्ठियओ, P सालाओ, J व for य, P अब्वा for य, P °साहणजुवाणमहा°. 33) P om. जुवाणा, J मुणिंद च त्ति, P मुणिंद व्व त्ति. 35) P तुंगाई, J om. च, P om. ण कोवारं ३ J वंकइं for वंकविवंकइं, J कामिणि-, J केसद (ह ?) मरइं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टमरइं ण चरियइं, थिरो पीइ-पसाओ ण माण-बंधो, दीहरइं कामिणी-लोयणइं ण खल-संगइं ति ।

अवि कामिणियण-मुहयंद-चंदिमा-दुमिय-तुंग-धवलहरा । पउम-पुरी पोराणा पयडा अह कोसला णाम ॥

तम्मि य पुरवरीए कोसलो णाम राया, जो चंडो, चंड-सासणो, विणय-पणिमइय-सामंतो, सामंत-पणय-चलणो, चलण-चलंताचालिय-महिवीढो, महिवीढ-णिवज्जियासेस-महिहरो वज्जहरो व्व । अवि य जस्स

संभम-पलाण-वण-मज्झ-रोइरे तुरिय-भीय-विमणाहिं । रिउ-पणइणीहिँ लीवे भूयलिज्जंति णामेण ॥

सो य राया कोसलो सामण्णेण उड्डंडो वि पारदारियाणं विसेसओ चंडो । अह तस्स पुत्तो विज्जा-विण्णाण-गुणातिहि-दाण-विक्कम-णीइ-रूव-जोव्वण-विलास-लास-णिब्भरो तोसलो णाम अणिवारिओ वियरइ णियय-णयरीए । वियरमाणो य संपत्तो एक्कस्स महाणयर-सेट्ठिणो धवलहर-समीवं । तत्थ य गच्छमाणेणं दिट्ठं जाल-गवक्ख-विवरंतरेण जलहर-विवर-विणिग्गयं पिव ससि-बिंबं वयण-कमलं कीय वि बालियाए । तओ पेसिया णेण कुवलय-दल-दीहरा दिट्ठी रायउत्तेण । तीए वि

धवलायंबिर-रेहिर-कज्जल-कसणुज्जला वियसमाणी । पेसविया णिय-दिट्ठी माला इव कसण-कमलाण ॥

एत्थंतरम्मि सहसा परदारालोव-जणिय-कोवेण । पंच सरा पंचसरेण तस्स हिययम्मि पक्खित्ता ॥

तओ णिद्दय-सर-णियर-पहर-वियणा-विमुहेण परिमलियं वच्छयलं दाहिण-हत्थेणं । वामेण य अणभिलक्खं उद्धीकया तज्जणी-अंगुलि त्ति राय-तणएणं । तीए य दाहिण-हत्थेणं दंसिया खग्ग-वत्तणी । तओ रायउत्तो गंतुं पयत्तो । चिंतियं च णेणं । 'अहो, रूवाणुरूवं इमीए वणिय-दुहियाए वियड्ढत्तणं' । चिंतयंतो संपत्तो णियय-धवलहरं । तत्थ य तीए वेयड्ढ-रूव-गुण-विण्णाण-विलासावहरिय-माणसो तीए संगमोवायं चिंतिउं समाढत्तो ।

ताव य कुसुंभ-णिग्गयय-राय-रत्तंबरो रवी रुइरो । णव-वर-सरिसो रेहइ सेवंतो वारुणिं णवरं ॥

वारुणि-संग-पमत्तो पल्हत्थिय-रुइर-कमल-वर-वसओ । अत्थइरि-पीढयाओ रवी समुद्दम्मि कह पडिओ ॥ ताव य,

सुपुरिस-पयाव-वियले कुपुरिस-जण-दिण्ण-पयड-पसरम्मि । कलि-जुय-समे पओसे खल व्व पसरंति तम-णिवहा ॥

§ १४३) तओ जामिणी-महामहिला-गवलंजण-भमर-कसिण-दीह-वित्थिण्ण-चिहुर-धम्मेल्ल-विरल्लणावडंत-पयड-तारा-सिय-मल्लिया-कुसुमोवयार-सिरि-सोहिए गयणंगणे बहले तमंधयारे चिंतियं रायउत्तेणं ।

राईं बहलं च तमं विसमा पंथा य जाव चिंतेमि । ताव वरं चिंतिज्जउ दुक्खेण विणा सुहं णत्थि ॥

त्ति चिंतयंतो समुट्ठिओ । कयं णेण सुणियत्थं णियंसणं । णिबद्धा णेणं कुवलय-दल-सामला छुरिया । गहियं च दाहिण-हत्थेण वइरि-वीर-सुंदरी-माण-णिसुंभणं खग्ग-रयणं । पूरियं पउट्ठे वसुणंदयं । सव्वहा कओ आहिसारण-जोग्गो वेसग्गहो । संपत्तो धवलहरं । दिण्णं विज्जुक्खित्तं करणं । वलग्गो मत्त-वारणए । समारूढो पासाए । दिट्ठा य णेण सयल-परियण-रहिया णिम्मल-पजलंत-लट्ठि-पईवुज्जोइयासेस-गब्भहरयावराहुत्ता किं किं पि दीण-विमणा चिंतयंती सा कुल-बालिय त्ति । तं च दट्ठूण सणियं रायउत्तेण णिक्खित्तं वसुणंदयं वसुमईए, तस्सुवरि खग्ग-रयणं । तओ णिहुय-पय-संचारं उवगंतूण पसारिओभय-दीह-भुया-डंडेण ठइयाइं से लोयणाइं रायउत्तेण । तओ फरिस-वस-समूससिय-रोमंच-कंचुयं समुव्वहंतीए चिंतियं तीए कुलबालियाए जहा मम पुलइयं अंगं, पउम-दल-कोमल-दढिणाइं च करयलाइं, सहियणो ण संणिहिओ, तेण जाणिमो सो चेय इमो मह हियय-चोरो त्ति चिंतिऊण संलत्तं तीए ।

'तुह फंसूसव-रस-वस-रोमंचुच्चइय-सेय-राएहिं । अंगेहिं चिय सिट्ठं मण-मोहण मुंच एत्ताहे ॥'

इय भणिए य हसमाणेण सिढिलियं णयण-जुवलयं राय-तणएण । अब्भुट्ठिया य सा ससंभमं कुलबालिय त्ति । उवविट्ठो राय-

1) J पिइपसाओ, J माणबद्धो, P संगयं ति. 2) JP अवि य कामिणि°, J चंद for तुंग, P पुराणा. 3) P transposes राया before कोसलो, J वणिअ for विणय, J om. पणिमइय. 4) J चलंचा°, P om. महिवीढ, P -विणिज्जियासेस, P व्वजहरो, P om. जस्स. 5) P मज्झे, P लावे [लीवे हि]. 6) P सामल्लेण उग्गदंडो वि, J पर for पार, P विन्नाणगुणाहियादाण. 7) J भव for रूव, P °वारिओ व वियरइ वियइ नियय-. 8) P -सेठिणा, J तत्थ अइच्छमाणेण. 9) J तीय वि. 12) P adds व after विमुहेण, J उद्धाकया. 13) P रायउत्तेण for रायतणएणं, J तीय य, P om. य, J दाहिणं, J हत्थे for हत्थेणं, P om. गंतुं पयत्तो. 14) P om. इमीए, P वियट्टत्तणं, P तीअ य वियड्ढगुण-. 15) P विलासालावहरिय, P तीय for तीए. 16) P ताव य मलियकुसुंभरायरत्तवरा रवी, J णिगयय, P रहइ, J सेवेंतो, P वारुणी नवरं. 17) P संगममित्तो, P रुहिरकमलकरवसओ अत्थिइरि. 18) P [illegible]ुरिस, J जल for जण, P पयर for पयड, P कलिजयसमे पउसो. 19) P विच्छिन्न for वित्थिण्ण. 20) J सिहि for सिरि. 21) J चिंतेमो. 22) P समुवट्ठिओ, J कयण्णेण णियत्थं, P णेण सुणियत्थ, J सामलफलाच्छुरिया, J om. च. 23) P माणं for माण, J अहिसारिआण, P वेसग्गहणे. 24) P किरणं for करणं. 25) P पजलंत, P °पराहुत्ता, P om. पि, J दीणविमणं, J om. सा. 26) P निहुय for णिहुय, P om. दीह, J om. भुया. 27) P दंडेण, P हरिस for फरिस, J मूसलिअ for समूससिय, P कंचुइयं, P समुव्वहंती विय चिं°, J om. चिंतियं तीए. 28) J कोमलकढिणाई P कमलदढिणाइं, J सहियणोऽण्णिहिओ, J om. सो. 29) P संलत्तीए for संलत्तं. 30) P om. वस, P सेयराहेहिं. Here, after एत्ताहे, P repeats इय भणिए पहसमणेण सिढिलयं नयणजुवलयं रायतणएयण । अब्भुट्ठिया य सा ससंभमं कुलराहेहिं अंगेहिं सिट्ठं मणमोहण मुंच एत्ताहे ।. 31) P हसमणेण.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पि सहाविह-कम्म-धम्म-भवियव्वयाए तीए उयरे गब्भो जाओ। अणुदियहोवहुत्त-लक्खण-दंसणेण गब्भेण य पयडीभूया, जाणिया सहियणेण, पयडा कुलहरम्मि, वियाणिया बंधुयणेणं। एवं च कण्ण-पारंपरेण विण्णायं णंदसेट्ठिणा। तेणावि संजाय-कोवेण को एवं मए परिहावइ त्ति णिवेइयं कोसलस्स महारण्णो। 'देव, मह दुहिया पउत्थवइया। सा य रक्खिज्जंती वि केणावि अणुदियहं उवभुंजिज्जइ त्ति। तं च देवो दिव्वाए दिट्ठीए अण्णिसउ' त्ति। राइणा भणियं 'वच्च, अण्णिसावेमि'। आणत्तो मंती। उवलद्धं च मंतिणा। दिट्ठो तोसलो रायउत्तो। णिवेइयं तेण जहा 'देव, तोसलो रायउत्तो मए उवलद्धो' त्ति। तओ गुरु-कोव-फुरफुरायमाणाहरेणं आइट्ठो राइणा मंती। 'वच्च, सिग्घं तोसलं मारेसु' त्ति। मंती वि 'जहाणवेसि' त्ति भणिऊण रायउत्तं घेत्तुं उवगओ मसाण-भूमिं। तत्थ य कज्जाकज्ज-वियारणा-पुव्वयं भणिओ मंतिणा। 'कुमार, तुह कुविओ राया, वज्झो आणत्तो, ता तुमं मह सामी, कह विणिवाएमि। कज्जं च तए। ता वच्च, जत्थ पउत्ती वि ण सुणीयइ। ण तए साहियव्वं जहा 'अहं तोसलो' त्ति भणिऊण विसज्जिओ। सो वि य कयावराहो जीविय-भय-भीरुओ पलाइओ, पत्तो पलयमाणो य पाडलिउत्तं णाम महाणयरं, जत्थच्छए सयं राया जयवम्मो। तत्थ इयर-पुरिसो विय ओलग्गिउं पयत्तो।

§ १४६) इओ य कोसलापुरीए तम्मि सा सुवण्णदेवा उवलद्ध-दुस्सीलत्तण-चिंधा परिखिंसिज्जमाणी बंधु-वग्गेण णिंदिज्जमाणी जणेणं रायउत्त-विरहुव्विग्गा य गब्भ-भर-विणडिया चिंतिउं पयत्ता 'कत्थ उण सो रायउत्तो' त्ति। तओ कह कह वि णायं जहा मम दोसेण मंतिणा णिवाइओ त्ति। तं च णाऊण कह वि छलेण णिग्गया बाहिं घरस्स, तओ णयरस्स। राईए पच्छिम-जामे पाडलिउत्तं अणुगामिओ सत्थो उवलद्धो। तत्थ गंतुं पयत्ता। सणियं सणियं च गब्भ-भर-णीसहंगी गंतुं अचाएंती पिट्ठओ उज्झिया सत्थस्स अणेय-ताल-हिंताल-तमाल-सज्जज्जुण-कुडय-कयंबंब-जंबू-सय-संकुले वणंतराले। तओ कमेण य वच्चंती मूढ-दिसा-विभाया पणट्ठ-पंथा तण्हाभिभूया छुहा-खाम-वयणा गब्भ-भर-मंथरा पह-समम-किलंता सिंघ-सद्द-विहुया वग्घ-वाय-वेविरा पुलिंद-सद्द-भीरुया गिम्ह-तत्त-वालुया-पउलिया उवरि-दूसह-रवियर-संताविया, किं च बहुणा, दुक्ख-सय-समुद्द-णिवडिया इत्थि-सहाव-कायर-हिययत्तणेण वेवमाणी, थाणुं पि चोरं मण्णमाणी, रुक्खं पि गय-वरं विकप्पयंती, हरिणं पि वग्घं, ससयं पि सीहं, सिहिणं पि दीवियं, सव्वहा तणिए वि चलिए मारिय त्ति, पत्ते वि चलंते गिलिय त्ति, भय-वेविर-थणहरा विलविउं पयत्ता।

'हा ताय तुज्झ दइया आसि अहं बाल-भाव-समयम्मि। एण्हिं कीस अधण्णाएँ तं सि जाओ विगय-णेहो ॥
हा माए जीयाओं वि वल्लहिया आसि हं तुहं दइया। एण्हिं मं परितायसु विणडिज्जंतिं अरण्णम्मि ॥
हा दइय कत्थ सि तुमं जस्स मए कारणे परिच्चत्तं। सीलं कुलं कुलहरं लज्जा य जसं सहियणो य ॥
हा माए हा भाया हा दइया हा सहीओ हा देवा। हा गिरिणइ हा विंझा हा तरुवर हा मया एस ॥'

त्ति भणमाणी मुच्छिया, धस त्ति णिवडिया धरणियले।

एत्थंतरम्मि सूरो मय त्ति णाऊण गरुय-दुक्खत्तो। परिचियलियंसुवाओ अवर-समुद्द-द्दहं पत्तो ॥
थेरीइ व दिण-लच्छीय मग्ग-लग्गो रवी रइय-पाओ। रत्तंबर-णव-वहुं व संझं अणुवट्टइ वरो व्व ॥
तीय य मग्गालग्गा कसणंसुय-पाउया पिय-सहि व्व। तिमिरंजणंजियच्छी राई रमणि व्व संपत्ता ॥

§ १४७) तओ एवं च विंझ-गिरि-सिहर-कुहरंतराल-तरुण-तमाल-मालाणिभे पसरिए तिमिर-महा-गइंद-वंदे एयम्मि एरिसे रयणि-समए णाणाविह-तरुवर-कुसुम-रेणु-मयरंद-बिंदु-मासल-सुह-सीयलेणं समासत्था सुरहि-वण-पवणेणं सा कुलबालिया। समासत्था य ण-याणए कत्थ वच्चामि कत्थ ण वच्चामि, किं करेमि किं वा ण करेमि, किं सुंदरं किं वा मंगुलं, किं कयं सुकयं

---

1 > J तीय for तीए, P बहुय for °वहुत्त, P om. य (after गब्भेण), J पयडीहूआ. 2 > J अवियाणिया for वियाणिया, P कन्नपरंपरेण. 3 > J om. एवं, P परिहव त्ति निवे कोइयं, J पउत्थवई. 4 > P उवभुंजइ, J दिव्वा (ए added on the margin) दिट्ठीए, P अण्णिसामि. 6 > J फुरुफुरा°, P रायणा, J om. मंती वि. 7 > J भणियं for भणिऊण, J वियारिणा, P पुव्वं तं भणिओ, J भणितो. 8 > J तुअं for तुमं, J कहिं for कह, P न सुणियइ त्ति, J adds य before तए. 9 > J भाणिऊण, J om. य, J जीवियभिओ, J पलाइउं, P पलाइओ पयत्तो।. 10 > P om. य, P पाडलिपुत्तं, P जयधम्मो, J पुरिस इव करस उलग्गिउं. 11 > P इवओ, P om. य, P inter. तम्मि and कोसलापुरीए, J om. सा, J सुअण्णदेवा ओलद्धदुसीलत्तणचिंद्धा. 12 > P विणिवडिया. 13 > P णिव्वासिउ त्ति, P पुरस्स for घरस्स. 14 > P पाडलिपुत्त, P सत्थो लद्धो, P तत्थं. 15 > J सज्जज्जुणय P सज्जुज्जण, J कयंबजंबू, P जंबुय. 17 > J वालुआउत्तिआ, P om. च. 18 > P कायरा-, P adds चेय before वेवमाणी, J थाणुं for चोरं, P वियप्पयंती for विकप्पयंती. 19 > P पिव for पि, P ससं for ससयं, P पिव दीवयं, P तणे वि चिलिए, P चलेंते. 20 > P थणाहरावलंबिउं. 21 > J अहण्णाए. 22 > P om. वि, P निवडिज्जंती अरन्नंमि. 24 > J ताया for भाया, P गिरणइ, J हो विंझं, J तरुवरा P तरुवर. 26 > P नय for मय, P गुरुय. 27 > J थेरीअ वि, P लच्छीमग्ग°, J -वाओ, P रत्तंवरं, P om. व. 28 > P राईइ मणि. 29 > J इरि for गिरि, J मालाणिले. 30 > P रुअर for तरुवर, J om. रेणु, P मांसल, P om. य. 31 > P णयाए, P om. कत्थ ण वच्चामि, P करोमि, P om. किं वा ण करेमि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होहिइ त्ति । एत्थंतरम्मि गब्भस्स णवमो मासो अइकंतो, अट्ठ य राइंदिणाइं । णवम-राई-पढम-जामे तम्मि य समए वट्टमाणे वियसियं णियंबेण, वियणाइयं णाहि-मंडलेण, सूलाइयं पोट्टेणं, थंभियं ऊरु-जुयलेणं, चलियं अंगेहिं, उच्छलियं हियएणं, मउलियं अच्छीहिं, सव्वहा आसण्ण-पसव-चिंधाइं वट्टिउं पयत्ताइं । तओ तम्मि महाभीमे वणंतरे राईए असरणा अचवला भीया विसण्णा परिचत्त-जीवियासा जहा-भवियव्व-दिण्ण-माणसा किमेयं ति पढम-पसूया कह वि कम्म-धम्म-संजोएण दर त्ति लीव-रूव-जुवलयं पसूया । पच्छा जाव पेच्छइ ता एका दारिया, दुइओ दारओ त्ति । तं च पेच्छिऊण हरिस-विसाय-विणडिज्जंत-हियवया पलविउं पयत्ता ।

'पुत्त तुमं गब्भ-गओ तेण विवण्णा ण एत्थ वण-वासे । अण्णह अबला-बालय अबला अबला फुडं होइ ॥
पुत्त तुमं मह णाहो तं सरणं तं गई तुमं बंधू । दइएण विमुक्काए माया-पिइ-विप्पउत्ताए ॥
होइ कुमारीएँ पिया णाहो तह जोव्वणम्मि भत्तारो । थेरत्तणम्मि पुत्तो णत्थि अणाहा फुडं महिला ॥
ताव पिउम्मि सिणेहो जा दइओ णेय होइ महिलाण । संपिंडियं पियाओ वि जाए पुत्तम्मि संचरइ ॥'

एवं च जाव पलवइ ताव करयरेंति वायसा, मूयलिज्जंति घूया, चिलिचिलेंति सउणया, बुकरेंति वाणरा, विरवंति रोहासिया, वियलंति तारया, पणस्सए तिमिरं, दीसए अरुणारुणा पुव्व-दिसा । णियत्तंति णिसियरा, पसरंति पंथिया । एयम्मि एरिसे समए चिंतियमणाए । 'किं वा मए करियव्वं संपयं । अहवा ण मए ताव मरियव्वं, पडियरियव्वो एस पुत्तो, अण्णहा बाल-वज्झा संपज्जइ । कयाइ इमाओ चेय इमस्स दुक्खस्स अंतो हवइ त्ति । ता कहिंचि गामे वा गोट्ठे वा गंतूणं आसण्णे पडियरियव्वं बाल-जुवलयं'ति चिंतेमाणीए तोसलि-णामा रायउत्त-णामंका मुद्दा सा परिहिया कंठे बालयस्स । बालियाय वि णियय-णामंका । तं च काऊण णियय-उवरिम-घण-वत्थद्धंतए णिबद्धो दारओ, दुइय-दिसाए य दारिया । कयं च उभयवास-पोट्टलयं । तं च काऊण चिंतियमिमीए । 'दे इमम्मि आसण्ण-गिरि-णिज्झरे असाणयं रुहिर-जरु-पूय-वसा-विलित्तं पक्खालिऊण वच्चामि' । चिंतयंती तम्मि चेय पएसे तं वासद्धंत-णिबद्धं बाल-जुवलयं णिक्खिविऊण उवगया णिज्झरणं ।

§ १४८) एत्थंतरम्मि वग्घी णव-पसूया वणम्मि भममाणी छाउव्वाया पत्ता मासत्थं डिंभ-रूवाणं राई-भमण-विउला पसूय-रुहिरोह-गंध-गय-चित्ता । वासोभयंत-बद्धं गहियं तं बाल-जुवलयं तीए । सा य घेत्तूण तं ललमाणोभय-पोट्टलं जहागयं पडिगया । वच्चंतीय य तीए वणंतराले उज्जयणि-पाडलिउत्ताणं अंतराले महामग्गो, तं च लंघयंतीए कहं पि सिढिल-गंठि-बंधण-बद्धो उक्खुडिओ सो दारिया-पोट्टलो । णिवडिया मग्गम्मि सा दारिया । ण य तीए वग्घियाए सुय-सिणेह-णिब्भर-हिययाए जाणिया गलिय त्ति । अइगया सा । तेण य मग्गेण समागओ राइणो जयवम्मस्स संतिओ दूओ । तेण सा दिट्ठा मग्गवडिया, गहिया य सा दारिया । घेत्तूण य णियय-भारियाए समप्पिया । तीए वि जाय-सुय-सिणेह-भर-णिब्भरं परिवालिउं पयत्ता । कमेण य पत्ता सा पाडलिउत्तं । कयं च णामं से वणदत्त त्ति । संवड्ढिउं पयत्ता । इओ य सा वग्घी थोवंतरं संपत्ता णियय-गुहा, पारद्धि-णिग्गएणं दिट्ठा राइणो जयवम्मस्स संतिएण रायउत्त-सबरसीहेण । तेणावि दंसणाणंतरं वग्घो त्ति काऊण गुरु-सेल्ल-पहर-विहुरा णिहया, धरणिवट्ठे दिट्ठं च तं पोट्टलयं । सिढिलियं रायउत्तेण, दिट्ठो य तत्थ ।

कोमल-मुणाल-देहो रत्तुप्पल-सरिस-हत्थ-कम-जुयलो । इंदीवर-वर-णयणो अह बालो तेण सो दिट्ठो ॥

तं च दट्ठूण हरिस-णिब्भर-माणसेण गहिओ । घेत्तूण य उवगओ घरं । भणियं च तेण । 'पिए, एसो मए पाविओ तुह पुत्तो' त्ति समप्पिओ, तीए गहिओ । कयं च वद्धावणयं 'पच्छण्ण-गब्भा देवी पसूय' त्ति । दुवालसमे दियहे णामं पि से विरइयं गुण-णिप्फण्णं वग्घदत्तो त्ति । सो वि तेण बालएण समयं सबरसीहो पाडलिउत्तं पत्तो । तत्थ य सरिस-रायउत्तेहिं समं कीलंतस्स मोह-पउरस्स से कयं णामं तेहिं मोहदत्तो त्ति । एवं च मोहदत्त-कयाभिहाणो संवड्ढिउं पयत्तो ।

---

1) J राई दिणाइं, P राइंदिणा । नवमणइं दिणे नवमराईपढमे. 2) P विइणायं नाभीमंडलेणं, J वलियं for चलियं, J उब्वलियं. 3) P पसवण for पसव, J व (च ?) before वट्टिउं, P असरणे अचला. 4) J कहिं पि for कह वि, P om. कम्म. 5) P त्ति लीजुवलयपसूया, J om. पच्छा, P adds पेच्छंति before जाव, P om. पेच्छइ ता. 6) P विनडिज्जंतीहियविया पलविउं पयत्ती. 7) P गब्भगवो, P विविन्नाण, J अबला for बालय P अनला for अबला अबला. 8) P गयं for गई, P पिय for पिइ, J विप्पमुक्काए ॥. 9) P थेरत्तणंमि पु and repeats महनाहो तं सरणं etc. to जोव्वणंमि भत्तारो. 10) J ता णिउमित्तसिणेहो जो, J विज्जाए P. वि जाउ. 11) P पलवई, P करयतंति, P धूयया, P बुक्कारेंति. 12) P वियरंति for वियलंति, P दीरुए for दीसए, P adds णियव्वो after पुव्वदिसा ।, P om. णियत्तं ति णिसियरा etc. to मरियव्वं पडियरियव्वो. 14) P बालबज्झा संपज्जंति, P चेय for चेय, P गोहे for गोट्ठे, P आसण्णे परियालियव्वं. 15) P तोसलिणो रायउत्तस्स नामंका, J बालियावि. 16) P om. णियय after काऊण, P उवरि for उवरिम, J om. घण, P °तेण for °तए, P बद्धो for णिबद्धो, J om. य, P om. च. 17) P उभवास, J चिंतियं इमीए, P जर for जरु. 18) P चेव, J वासद्धं बाल°, P बालय जुवलयंमि णि°, P ओउवगया. 19) P छाउद्धाया, P राईभममाणं विलोया पसूय . 20) P रुहिरोगंध, P बंध for बद्धं. 21) P पडिहया ।, P तीए वणंतवणंतराले उज्जयणीपाडलिपुत्ताणं, P repeats महा, J च संघयंतीए, P चि for पि. 22) J णिवडिओ, P तीय वग्घीसुय. 23) J -हियाए, P om. य, P जयधम्मस्स. 24) P om. य in both the places, J तीय for तीए, P om. -भरणिब्भरं परिवालिउं etc. to पारद्धिणिग्गएणं. 26) P णिद्दिट्ठा for दिट्ठा, P सबलसीलेण ।. 27) P दिट्ठिय for दिट्ठं च, J सिढिलयं. 28) P वाहो for मुणालदेहो, J सयलचलण for सरिसहत्थ, P कय for कम. 29) P हसिइ for हरिस, P स for एसो. 30) P समयंप्पिओ, P om. च. 31) P सबरसीलो पाडलिपुत्तं, P om. य, P रायउत्तिहिं. 32) J om. तेहिं, J adds एवं च मोहदत्तो त्ति ॥ before एवं च.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§१४९) इमा य से माया तम्मि वणे आगया णिज्झराओ जाव ण पेच्छइ तं बालय-जुवलयं। अपेच्छमाणी य मुच्छिया णिवडिया धरणिवट्ठे। पुणो समासत्था य विलविउं पयत्ता।

'हा पुत्त कत्थ सि तुमं हा बाले हा महं अउण्णाए। कत्थ गओ कत्थ गया साहह दे ता समुल्लावं॥
एत्थं चिय तं पत्तो कह सि मए दुक्ख-सोय-तवियाए। एत्थं चिय मं मुंचसि अव्वो तं कह सि णिक्करुणो॥
पेच्छह मह देव्वेणं दंसेऊणं महाणिहिं पच्छा। उप्पाडियाइँ सहसा दोण्णि वि अच्छीणि दुहियाए॥
पेच्छह दइय-विमुक्का वणं पि पत्ता तहिं पि दुक्खत्ता। पुत्तेणं पि विउत्ता आढत्ता कह कयंतेण॥'

एवं च विलवमाणीए दिट्ठं तं वग्घीय पयं। अह वग्घीय गहियं ति तं जाणिऊण, 'जा ताणं गई सा ममं पि' तं चेय वग्घी-पयं अणुसरंती ताव कहिं पि समागया जाव दिट्ठं एक्कम्मि पएसे कं पि गोट्ठं। तत्थ समस्सइया एक्कीए घरं आहीरीए। तीए वि धूय त्ति पडिवज्जिऊण पडियरिया। तत्तो वि कहं पि गामाणुगामं वच्चंती पत्ता तं चेव पाडलिउत्तं णगरं। तत्थ कम्म-धम्म-संजोएणं तहाविह-भवियव्वयाए तम्मि चेय दूयहरे संपत्ता, जत्थच्छए सा तीए दुहिया। तीए साहु-धूय त्ति काऊण समप्पिया। तं च मज्जयंती कीलावयंती य तहिं चेय अच्छिउं पयत्ता ता जाव जोव्वणं संपत्ता। जोव्वणे य वट्टमाणी सा केरिसा जाया। अवि य।

जं जं पुलएइ जणं हेलाएँ चलंत-णयण-जुवलेणं। तं तं वम्मह-सर-वर-पहार-विहुरं कुणइ सव्वं॥

§१५०) इमम्मि एरिसे जोव्वणे वट्टमाणीए वणदत्ताए को उण कालो वट्टिउं पयत्तो।

तरुवर-साहा-बाहा-णव-पल्लव-हत्थ-कुसुम-णह-सोहो। पवणुव्वेल्लिर-हल्लिर-णच्चिर-सोहो णव-वसंतो॥

तओ तम्मि सुरवर-णर-किंणर-महुयर-रमणी-मणहरे वसंत-समयम्मि मयण-तेरसीए वट्टमाणे महामहे संकप्प-वेहिस्स काम-देवस्स बाहिरुज्जाण-देवउल-जत्तं पेच्छिउं माइ-समग्गा सहियण-परियरिया तहिं उज्जाणे परिभममाणी मयणूसवागएण दिट्ठा मोहदत्तेण। जाओ से अणुराओ। तीय वि वणदत्ताए दिट्ठो सो कहिं पि पुलइओ।

जंभा-वस-वलिउव्वेल्लमाण-णव-कणइ-तणुय-बाहाए। तह तीएँ पुलइओ सो लेप्पय-घडिओ व्व जह जाओ॥

खणंतरं च सुण्ण-णयण-जुयलो अच्छिऊण चिंतिउं पयत्तो। सव्वहा

धण्णो को वि जुयाणो जयम्मि सो चेव लद्ध-माहप्पो। धवलुव्वेल्लिर-णयणं जोव्वणयं पाविहिइ मीए॥

चिंतिऊण सब्भावं परियाणणा-णिमित्तं च पढिया एक्का गाहुल्लिया मोहदत्तेण। 'वयंस, पेच्छ पेच्छ,

कह-कह वि दंसणं पाविऊण भमरो इमो महुयरीए। रुंटंतो च्चिय मरिहिइ संगम-सोक्खं अपावेंतो॥'

इमं च सोऊण चिंतियं वणदत्ताए। 'अहो, णिययाणुराओ सिट्ठो इमिणा इमाए गाहाए। ता अहं पि इमस्स णियय-भावं पयडेमि' त्ति चिंतयंतीए भणियं।

'अत्ता भमर-जुवाणं कह वि तुलग्गेण पाविउं एसा। होंत-विओयाणल-ताविय व्व भमरी रुणुरुणेइ॥'

तीय य सुवण्णदेवाए अणुहूय-णिययाणुराय-दुक्खाए जाणिओ से अणुराओ। भणियं च तीए। 'पुत्ति, अइचिरं वट्टइ इहाग-याए, मा ते पिया जूरिहिइ, ता पयट्ट घरं वच्चामो। अह तुह गरुयं कोउहल्लं, ता णिव्वत्ते मयण-महूसवे णिज्जणे उज्जाणे आगच्छिय पुणो वीसत्थं पुलोएहिसि उज्जाण-लच्छि भगवंतं अणंगं च' त्ति भणमाणी णिग्गया उज्जाणाओ। चिंतियं च मोहदत्तेण। 'अहो, इमीय वि ममोवरि अत्थि णेहो। दिण्णं च इमीए धाईए महं संकेयं जहा णिव्वत्ते मयण-महूसवे णिज्जणे उज्जाणे वीसत्थं अणंगो पेच्छियव्वो त्ति। सव्वहा तद्दियहं मए आगंतव्वं इमम्मि उज्जाणम्मि' त्ति चिंतयंतो सो वि णिग्गओ। सा य वणदत्ता कह-कह वि परायत्ता घरं संपत्ता देहेण ण उण हियएणं। तत्थ वि गुरु-विरह-जलण-जालावली-करालिज्जमाण-देहा केरिसा जाया। अवि य।

1) J बाल for बालय. 2) J om. मुच्छिया, P पुच्छिया, J om. य. 3) P साहसु दे, J दे ता अ संल्लावं. 4) P संपत्तो for तं पत्तो, J inter. सोय and दुक्ख. 5) P पेच्छ मइ, P महानिही, P मि for वि. 6) P वणंमि पत्ता, P पत्तेणं for पुत्तेणं. 7) P वग्घीगहियं, P यंति for तं, P चे for चेय. 8) J कहियं पि, P किं पि for कं पि, P एक्कीय घरं. 9) P om. वि, P कहिं पि, J om. तं चेव, P पाडलिपुत्तं, J णअरं, P adds य after तत्थ. 10) P तहाविय्वयाए, J भवियव्वताए य तम्मि, P adds गया before चेय, J दूअघरे, P om. संपत्ता, J तीय for तीए in both the places, P om. साहु. 11) P कीलावंती, P ताव for ता, P पत्तो for संपत्ता. 13) P बलंतनयणजुयलेण, P सरपहरत्रियणविहुरं. 14) P adds य before एरिसे, P धणदत्ताए. 15) P तरुयर, P -नवसोहा।. 16) P om. वर, P -विहिस्स कामएवस्स. 17) P -जुत्तं for जत्तं, P सहियणिपरिवारिया, P मयणूसवाएण. 18) P सो for से, P कहिंचि पुलइउं, J adds अवि य after पुलइओ. 19) P कणयवणुय, P -जडियव्व जहा. 21) P जुवाणो, J -णयणो, J पाविहिइ इमीए, P पाविही इमीए. 22) P °ऊण य सहावपरियणा निमित्तं, P om. one पेच्छ. 23) J इमी (अ) for इमो, P रुंढंतो, P मरिहइ, P अपावंतो. 24) P om. इमाए, P om. पि, P नियभावं. 25) J om. त्ति, P चिंतियं भणियं. 26) P विओयानल, J भाविअव्व for तावि°, P रुणरुणेइ. 27) P वि for य, P -नियया णुरादुक्खाए, P adds राया after से, J पुत्त for पुत्ति, J °चिरं च इहागया माए पिया. 28) P om. मा ते, P जूरिही ता, तुमं for तुह, P कोऊहयं निव्वत्ते ता मयण, J मयणे-. 29) J विसाथाए पलो°, P -लच्छी, P अणंगवत्ति, J उज्जाणओ. 30) J धाइए, P om. महं, J जह. 31) J om. त्ति, J om. सो. 32) J वि परायत्त. 33) P °ज्जमाणमदेहा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता झाइ हसइ सूसइ सिज्जइ ता पुलय-परिगया होइ । ता रुयइ मुयइ देहं हुं हुं महुरक्खरं भणइ ॥
ता खलइ वलइ जूरइ गायइ ता पढइ किं पि गाहद्धं । उम्मत्तिय व्व बाला मयण-पिसाएण सा गहिया ॥

§ १५१) एरिसावत्थाए य तीए अइक्कंतो सो मयण-महाकंतार-सरिसो मयण-महूसवो । गरुय-समुक्कंठ-हलहला पयत्ता तम्मि उज्जाणे गंतुं, ओइण्णा रच्छामुहम्मि । थोवंतरं च उवगया राय-मग्गंतराले य वट्टमाणी दिट्ठा णेण तोसलिणा रायउत्तेण । देसंतर-परियत्तिय-रूव-जोव्वण-लायण्ण-वण्णो ण पच्चभियाणिओ सुवण्ण-देवाए । सा वि तेण दूर-देसंतरासंभाव-णिज्ज-संपत्ती ण-याणिया । केवलं तीए वणदत्ताए उवरिं बद्धाणुराय-गय-दिट्ठिल्लो महा-मयण-मोह-गहिओ इव ण कज्जं मुणइ णाकज्जं, ण गम्मं णागम्मं । सव्वहा तीय संगमासा-विणडिओ चिंतिउं पयत्तो । 'अहो,

सो च्चिय जीवइ पुरिसो सो च्चिय सुहओ जयम्मि सयलम्मि । धवलुव्वेल्लिर-लोयण-जुवलाएँ इमीएँ जो दिट्ठो ॥

ता कहं पुण केण वा उवाएण एसा अम्हारिसेहिं पावियव्व त्ति । अहवा भणियं च कामसत्थे कण्णा-संवरणे । रूव-जोव्वण-विलास-लास-णाण-विण्णाण-सोहग्ग-कला-कलावाइ-सएहिं धणियं साम-भेय-उवप्पयाणएहि य कण्णाओ पलोहिज्जंति । अह ण तहा वसीभवंति, तओ परक्कमेणावि परिणीयव्वाओ, छलेण बलामोडीए णाणा-वेलवणेहि य वीवाहेयव्वाओ । पच्छा कुल-मइलणाए तस्सेय समप्पिज्जंति बंधुवग्गेणं । ता सव्वहा

जइ वि फुलिंग-जलण-जालावलि-भासुर-वज्ज-हत्थयं । सरणं जाइ जइ वि अहवा विफुरंत-तिसूल-धारयं ॥
पायालोयरम्मि जइ पइसइ ससि-रवि-तेय-विरहियं । तह वि रमेमि अज्ज पीणुण्णययं थण-भार-सिहरयं ॥
अज्ज इमं मह सीसयँ इमीएँ बाहु-उवहाण-ललियाए । दीसइ अहवा णिहय-खग्गपहाराहयं धरणियाए ॥

ता सुंदरं चिय इमं, जं एसा कहिं पि बाहिरं पइरिकं पत्थिया । ता इमीए चेय मग्गालग्गो अलक्खिज्जमाण-हियय-गय-ववसाओ वच्चामि' त्ति चिंतयंतो मग्गालग्गो गंतुं पयत्तो । सा वि वणदत्ता करिणि व्व सललिय-गमणा कमेण संपत्ता उज्जाणं । पविट्ठा य चंदण-एला-लयाहरंतरेसु वियरिउं पयत्ताओ । एत्थंतरम्मि अणुराय-दिण्ण-हियवएणं अणवेक्खिऊण लोयाववायं, गलत्थिऊण लज्जं, अवहत्थिऊण जीवियं, अगणिऊण भयं, चिंतियं णेण 'एस अवसरो' त्ति । चिंतयंतो पहाइओ णिक्कड्ढियासि-भासुरो । भणियं च णेणं मोह-मूढ-माणसेण । अवि य ।

'अहवा रमसु मए च्चिय अहवा सरणं च मग्गसु जियंती । धारा-जलण-कराला जा णिवडइ णेय खग्ग-लया ॥'

तं च तारिसं वुत्तंतं पेच्छिऊण हा-हा-रव-सद्द-णिब्भरो सहियणो, धाहावियं च सुवण्णदेवाए ।

'अवि धाह धाह पावह एसा केणावि मा ऍमह धूया । मारिज्जइ विरसंती वाहेण मइ व्व रण्णम्मि ॥'
एत्थंतरम्मि सहसा कड्ढिय-करवाल-भासुर-च्छाओ । वग्घो व्व वग्घदत्तो णीहरिओ कयलि-घरयाओ ॥

भणियं च णेण ।

'किं भायसि वण-मइ-लीव-चुण्ण-तरलच्छि लच्छि धरमाणे । रिउ-गयवर-कुंभत्थल-णिद्दलणे मज्झ भुय-दंडे ॥'

आयारिओ य णेण सो तोसलो रायउत्तो । 'रे रे पुरिसाधम,

चुण्ण-मय-लीव-लोयण-कायर-हियाण तं सि महिलाण । पहरसि अलज्ज लज्जा कत्थ तुमं पवसिया होज्जा ॥

ता एहि मज्झ समुहं'त्ति भणमाणस्स कोवायंबिर-रत्त-लोयणो मयवइ-किसोरओ विय तत्तो-हुत्तं वलिओ तोसलो रायउत्तो । भणियं च णेण ।

'सयल-जय-जंतु-जम्मण-मरण-विहाणम्मि वावड-मणेण । पम्हुसिओ च्चिय णवरं जमेण अज्जं तुमं भरिओ ॥'

त्ति भणमाणेण पेसिओ मोहदत्तस्स खग्ग-पहारो । तेण य बहु-विह-करण-कला-कोसलेण वंचिओ से पहरो । वंचिऊण य पेसिओ पडिपहारो । णिवडिओ खंधराभोए खग्ग-पहरो, ताव य णीहरियं रुहिरं । तं च केरिसं दीसिउं पयत्तं । अवि य ।

1) P गायइ for झाइ, P ज्झिज्जइ for सिज्जइ, J हूं हूं. 2) P वइलइ लइ for वलइ, P तो for ता, P मण for मयण. 3) J °वत्थाअ य, P सो मयणमहाकंतारसरिसो, P हलहला य पत्ता तम्मि. 4) P adds य before णेण. 5) J पच्चिगाणिओ, P सुवन्नदेवयाए. 6) P संपत्तीए ण, J -गहिट्ठिल्लो, P inter. मयण and महा, J कयं for कज्जं. 7) J ण कज्जं for णाकज्जं, P संगमासायविणडिओ. 8) P जीवो for जीवइ, P च्चइ for च्चिय, P इमीए सो जा दिट्ठो. 9) P पावियइ त्ति, J om. च, P संठाणे for संवरणे 10) J om. लास, P om. कला, P कलावाणिमएहिं सएहिं धणेहि य साम°, P उवप्पयाणेहि, J कन्नाओ उपपलोभिज्जंति, P अह तहा नत्थि अवसीहेंति तओ. 11) J परिक्कमेणावि परिणियव्वाओ, P परिणीयव्वा, P नाणाविलंबणेहि य विवाहेयव्वा ।. 12) P तस्सेयमप्पि°. 13) P जयण for जलण, P -वज्जहयं, J अज्ज for जइ वि, J विफुलंत P विप्फुरंत. 14) P पयसति, P व्विरमेमि. 15) J बाहुवहाणललिअएण, P निहयं, P °हय व, J धरणिया ॥. 16) J कहं पि, P इमाए, P अलक्खिज्जमाणेहिं अइगय-. 17) J गंतूणं for गंतुं, P उज्जाणवणं ।. 18) J पविट्ठाओ य, P om. य, J adds वंदण after चंदण, P हियएणं अविवेक्खिऊण. 19) P उज्जं for लज्जं, P om. अगणिऊण भयं, P तेग for णेण, P निकट्ठियासि. 21) P -जणकराला. 22) P सुवण्णदेवयाए. 23) P धावह for धाह धाह, P वरिसंती. 24) P नीहलिओ कयलिहरयाओ. 26) J मय for मइ, J पुण्ण P चुण्ण, P रिवु°. 27) J पुरिसाहम. 28) J पुण्ण for चुण्ण, J हिअयाण, P लज्जो, P पवसिओ. 29) P मज्ज for मज्झ, J कोवायंबिरत्त, P -रत्तं न लोयणो मइव किसो°. 31) J जण for जय, J तु संभरिओ. 32) P कोसलेण जं वाचिओ से पवाणो ।. 33) P खग्गपहारो तवयनीहनीहरियं.

खग्ग-पहार-णिरंतर-संपत्तो रत्त-सोणिओप्पंको । हियय-गओ विव दीसइ पियाणुराओ समुच्छलिओ ॥

§ १५२) तओ तं च विणिवाइऊण वग्घदत्तो वलिओ वणदत्ता-हुत्तं । तीय वि पिओ त्ति काउं अह जीविय-दायओ त्ति पडिवण्णो । मिट्ठं च ओसहं चिय कुंभंड-घयं व णारीणं । समासत्थो सहिसत्थो, तुट्ठा सुवण्णदेवा, समासासिया वणदत्ता, भणियं च णेण । 'सुंदरि, अज्ज वि तुह च्चेय ऊरु-जुवलयं, थरहरायइ हियवयं । ता ण अज्ज वि समस्ससहि, एहि इमम्मि पवण-पहल्लिर-कयली-दल-विज्जमाण-सिसिर-मारुए बाल-कयली-हरए पविसिउं वीसत्था होहि'त्ति भणमाणेण करयल-गहिया, पवेसिया तम्मि आलिंगिया मोह-मूढ-माणसेण । जाव य रमिउमाढत्तो ताव य उद्धाइओ दीह-महुरो सद्दो । अवि य ।

मारेऊणं पियरं पुरओ जणणीएँ तं सि रे मूढ । इच्छसि सहोयरिं भइणियं पि रमिऊण एत्ताहे ॥

इमं च णिसामिऊण पुलइया चउरो वि दिसावहा । चिंतियं च णेण । 'अरे, ण कोइ एत्थ दिट्ठि-गोयरं पत्तो, ता केण उण इमं भणियं किं पि असंबद्धं वयणं । अहवा होंति च्चिय महाणिहिम्मि घेप्पमाणे उप्पाय त्ति । पुणो वि रमिउं समाढत्तो । पुणो वि भणिओ ।

'मा मा कुणसु अकज्जं जणणी-पुरओ पिइं पि मारेउं । रमसु सहोयर-भइणिं मूढ महामोह-ढयरेण ॥'

इमं च सोऊण चिंतियं च णेण । 'अहो, असंबद्ध-पलावी को वि, कहं कत्थ मम पिया, कहं वा माया, किं वा कयं मए, ता दे अण्णो कोइ भण्णइ णाहं' ति भणमाणेणं तं चिय पुणो वि समाढत्तं । पुणो वि भणियं ।

'णिल्लज्ज तए एक्कं कयं अकज्जं ति मारिओ जणओ । एण्हिं दुइयमकज्जं सहोयरिं इच्छसे घेत्तुं ॥'

तं च सोऊण सासंको कोव-कोऊहलाबद्ध-चित्तो य समुट्ठिओ खग्गं घेत्तूण मग्गिउं पयत्तो सद्दाणुसारेण । जाव णाइदूरे दिट्ठो रत्तासोय-पायवयले पडिमा-संठिओ भगवं पच्चक्खो इव धम्मो तव-तेएण पज्जलंतो व्व को वि मुणिवरो । दट्ठूण य चिंतियं णेण । 'अरे, इमिणा मुणिणा इमं पलत्तं होहिइ त्ति । ण य अण्णो कोइ एत्थ एरिसे उज्जाणे । एरिसो एस भगवं वीयरागो विय उवलक्खीयइ, ण य अलियं मंतेहिइ । दिव्व-णाणिणो सच्च-वयणा य मुणिवरा किर होंति' त्ति चिंतयंतो उवगओ मुणिणो सयासं । अभिवंदिऊण य चलण-जुवलयं उवविट्ठो णाइदूरे मोहदत्तो त्ति । एत्थंतरे समागया सुवण्णदेवा, वणदत्ता, सहियणो य । णमिऊण य चलणे भगवओ उवविट्ठा पायमूले । भणियं च मोहदत्तेण । 'भगवं, तए भणियं जहा मारेऊण पियरं माऊए पुरओ भइणिं च मा रमेसु । ता मे कहिं सो पिया, कहिं वा माया, कत्थ वा भइणि' त्ति ।

§ १५३) भणियं च भगवया मुणिणा । 'भो रायउत्त, णिसुणेसु । अत्थि कोसला णाम पुरी । तत्थ य णंदणो णाम महासेट्ठी । तस्स सुवण्णदेवा णाम दुहिया पउत्थवइया दिट्ठा रायउत्तेण तोसलिणा, उवभुत्ता य । णायं रण्णा जहा य तीय गब्भो जाओ । सव्वं जाणियं मंतिणा । जहा णिव्वासिओ तोसलो पाडलिउत्तं पत्तो । जहा य गुरुहारा सुवण्णदेवा वणं पविट्ठा, तत्थ बालय-जुवलयं पसूया । जहा अवहरिओ दारओ दारिया य वग्घीए । पडिया पंथे दारिया, गहिया दूएणं, वणदत्ता य से णामं कयं । सो वि दारओ गहिओ सबरसीहेण पुत्तो त्ति संवड्ढिओ, वग्घदत्तो त्ति से णामं कयं । एवं च सव्वं ताव साहियं जाव सुवण्णदेवा मिलिया धूयाए ताव जा मारिओ तोसलो त्ति । रायउत्त, इमा तुह सा माया सुवण्णदेवा । एसा उण भइणी सहोयरा वणदत्ता । इमो सो उण तुम्हाणं जणओ । अत्थि य तुह तोसलि-णाम-मुद्दंका एसा मुद्दा । इमाए सुवण्णदेवाए मुद्दंका घरे चिट्ठइ त्ति । ता सव्वहा मारिओ ते जणओ । संपयं भइणी अभिलससि त्ति । सव्वहा धिरत्थु मोहस्स' । इमं च सोऊण भणियं सुवण्णदेवाए । 'भगवं, एयं जं तए साहियं' ति । वणदत्ता वि ट्ठिया अहोमुहा लज्जिया । मोहदत्तो वि णिव्विण्ण-काम-भोगो असुइ-समं माणुसं ति मण्णंतो वेरग्ग-मग्ग-लग्गो अह एयं भणिउमाढत्तो ।

---

1) J पहाराणंतरं, P सोणियप्पंको ।, J °पंको ।, P विय for विव. 2) P वग्घदत्तो चलिओ. 3) J पियो त्ति. 4) P तुह चेव एरु-, J उरु-. 5) J समस्ससियहि P समाससहिएहिं, J वहल्लिर-, J -विज्जमाण-. 6) JP होहिइ त्ति, J पवेसियालिंगिया, P पेसिया for पवेसिया. 7) P om. य after ताव. 8) P मारेऊण वि पियरं, P सहोयरं. 9) P adds से before चउरो, P दिसिवहा, P om. एत्थ. 10) P असंबद्धवयणं, P रमिउमाढत्तो, J समाढत्ता ।. 11) J om. वि. 12) P पियं पि, P भइणी. 13) P अणेण for च णेण, P repeats कज्जं जणणीपुरओ etc. to असंबद्धपलावी को वि. 14) P देव for दे, P को वि for कोइ, J om. भण्णइ, P वि आढत्तं. 15) P निलज्जकयमकज्जं एक्कं जं मारिओ तए जणओ ।, P सहोयरं. 16) P ससंको. 17) P रत्तासोयस्स पायव°, J पाययले P पायवचेले. 18) P तेण for णेण, P कोवि एएत्थ, P om. एरिसे, J. om. एस. 19) P °रागो अउव्वो लक्खीयइ, J विय उवलक्खीअदि, P अलीयं, P repeats सच्च, J om. किर. 20) P सगासं, P अभिवंदिवंदिऊण चलणजुयलं, JP एत्थंतरं. 21) J om. भगवओ, P उवविट्ठो. 22) P पुरऊ for पुरओ, J भइणी मा, P om. मे, P मे for सो, P om. कहिं वा, P adds का वा before भइणि. 23) P मुणिणो, P repeats भो, J om. य, P नंदो for णंदणो. 24) J सुअण्णदेवा, J om. दुहिया, J °वइयावई दिट्ठा, J णाया for णायं, P om. य before तीय. 25) P साहियं मुणिणा for जाणियं मंतिणा (J is correcting मुणिणा into मंतिणा), P पाडलिपुत्तं, P om. य. 26) P बालजुवलय, J om. य, P दूतेण, J inter. णामं and से. 27) P सवरसीलेण, P संवड्ढिउ, P om. त्ति, J om. से. 28) P जाव for जा, J om. त्ति, P एस सो for इमा, P om. सा. 29) J inter. उण and सो, P तोसओ, P मुद्दा for मुद्दा, J एमाए P इमीए, P सुवन्नदेवा मुद्दं घर चिट्ठइ. 30) J परि for घरे, P adds ता समुद्दा before ता सव्वहा, P om. ते, J अहिलसि त्ति ।. 31) P om. सोऊण, P सुवन्नदेवयाए, P एवं मम जं, J om. वि after मोहदत्तो. 32) P असुति इमं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'धिक्कट्ठं अण्णाणं अण्णाणं चेव दुत्तरं लोए। अण्णाणं चेय भयं अण्णाणं दुक्ख-भय-मूलं ॥
ता भगवं मह साहसु किं करियव्वं मए अउण्णेण। जेण इमं सयलं चिय सुज्झइ जं विरइयं पावं ॥'

§१५४) भणियं च भगवया मुणिणा।

'चइऊण घरावासं पुत्त-कलत्ताइँ मित्त-बंधुयणं। वेरग्ग-मग्ग-लग्गो पव्वज्जं कुणसु आउत्तो ॥
जो चंदणेण बाहं आलिंपइ वासिणा य तच्छेइ। संथुणइ जो य णिंदइ तत्थ तुमं होसु समभावो ॥
कुणसु दयं जीवाणं होसु य मा णिद्दओ सहावेण। मा होसु सढो मुत्तिं चिंतेसु य ताव अणुदियहं ॥
कुणसु तवं जेण तुमं कम्मं तावेसि भव-सय-णिबद्धं। होसु य संजम-जमिओ जेण ण अज्जेसि तं पावं ॥
मा अलियं भण सच्चं परिहर सच्चं पि जीव-वह-जणयं। वहसु सुइं पाव-विवज्जणेण आकिंचणो होहि ॥
पसु-पंडय-महिला-विरहियं ति वसही णिसेवेसु। परिहरसु कहं तह देस-वेस-महिलाण संबद्धं ॥
मा य णिसीयसु समयं महिलाहिँ आसणेसु सयणेसु। मा तुंग-पओहर-गुरु-णियंब-बिंब त्ति णिज्झासु ॥
मा मिहुणं रममाणं णिज्झायसु कुड्ड-ववहियं जइ वि। इय हसियं इय रमियं तीय समं मा य चिंतेसु ॥
मा भुंजसु अइणिद्धं मा पज्जत्तिं च कुणसु आहारे। मा य करेसु विहूसं कामाहंकार-जणणिं च ॥
इय दस-विहं तु धम्मं णव चेव य बंभ-गुत्ति-वेंचइयं। जइ ताव करेसि तुमं तं ठाणं तेण पाविहिसि ॥
जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय माणसं दुक्खं। सासय-सिव-सुह-सोक्खं अइरा मोक्खं पि पाविहिसि ॥'

तओ भणियं च मोहदत्तेण। भगवं जइ अहं जोग्गो, ता देसु मह पव्वज्जं। भणियं च भगवया 'जोग्गो तुमं पव्वज्जाए, किंतु अहं ण पव्वावेमि'त्ति। तेण भणियं 'भगवं, किं कज्जं' ति। भणियं च णेण भगवया 'अहं चारण-समणो, ण महं गच्छ-परिग्गहो। तेण भणियं 'भगवं केरिसो चारण-समणो होइ'। भणियं च भगवया। 'भद्दमुह, जे विज्जाहरा संजाय-वेरग्गा समण-धम्मं पडिवज्जंति, ते गयणंगण-चारिणो पुव्व-सिद्ध-विज्जा चेव होंति। अहं च पट्ठिओ सेत्तुंजे महागिरिवरे सिद्धाणं वंदणा-णिमित्तं। तत्थ गयणयलेण वच्चमाणस्स कहं पि अहो-उवओगो जाओ। दिट्ठो य मए एस पुरिसो तए घाइज्जंतो। णिरूवियं च मए अवहिणा जहा को वि एस इमस्स होइ त्ति जाव इह भवे चेव जणओ। तओ मए चिंतियं 'अहो कट्ठं, जेण एसो वि पुरिसो

जणयमिणं मारेउं पुरओ च्चिय एस माइ-भइणीणं। मोहमओ मत्त-मणो एण्हिं भइणिं पि गेच्छिहिइ ॥

इमं च चिंतयंतस्स णिवाइओ तए एसो। चिंतियं च मए एक्कमकज्जं कयं णेण जाव दुइयं पि ण कुणइ ताव संबोहेमि णं। भव्वो य एस थोवावसेस-किंचि-कम्मो। जं पुण इमं से चेट्ठियं तं किं कुणउ वराओ। अवि य।

णित्थिण्ण-भव-समुद्दा चरिम-सरीरा य होंति तित्थयरा। कम्मेण तेण अवसा गिह-धम्मे होंति मूढ-मणा ॥

चिंतिऊण अवइण्णो संबोहिओ य तुमं मए' त्ति। भणियं च मोहदत्तेणं 'भगवं, कहं पुण पव्वज्जा मए पावियव्व'त्ति। भगवया भणियं। 'वच्च, कोसंबीए दक्खिणे पासे राइणो पुरंदरदत्तस्स उज्जाणे सुद्ध-पक्ख-चेत्त-सत्तमीए समवसरियं धम्मणंदणं णाम आयरियं पेच्छिहिसि। तत्थ सो सयं चेय णाऊण य तुम्ह वुत्तंतं पव्वावइस्सइ'त्ति भणमाणो समुप्पइओ कुवलय-दल-सामलं गयणयलं विज्जाहर-मुणिवरो त्ति। तओ भो भो पुरंदरदत्त महाराय, एसो तं चेव वयणं मुणिणो गेण्हिऊण चइऊण घरावासं मं अण्णिसमाणो इहागओ त्ति। इमं च सयलं वुत्तंतं णिसामिऊण भणियं मोहदत्तेण 'भगवं, एवमेयं, ण एत्थ तण-मेत्तं पि अलियं, ता देसु मे पव्वज्जं' ति। भगवया वि णाऊण उवसंत-मोहो त्ति पव्वाविओ वग्घदत्तो त्ति ॥ ॐ ॥

1 > J किं कट्ठं for धिक्कट्ठं, J चेय, P लाए for लोए, P चेव कयं for चेय भयं. 2 > P तु for साहसु. 4 > P ते उग्गं for आउत्तो. 5 > P बाहुं अणुलिंपइ, J व for य. 8 > P भव for भण, P जणणं।, P सुइं. 9 > J पसुमण्डव, P -विरहितं ति राईय सन्निवेसेसु।, P संबंधं ॥. 10 > P णिच्छीतसु for णिसीयसु, J पओहरा-. 11 > P कुडुवचहियं, P तीयं. 12 > P आहारो, P विभूसं, P जणसं च. 13 > P गुत्तिवंचइयं, J तुमं ता तट्ठाणं. 14 > P repeats न जरा, P अई for अइरा. 15 > P ततो for तओ, P भवगवं, P जोणा for जोग्गो, P om. मह, P जोगो. 16 > P om. भगवं. 17 > P भद्दमुणह, P वेरग्ग. 18 > J सिद्धवेज्जा, P पत्थिओ, P सेतुञ्जे for सेत्तुंजे. 19 > J गयणयले, P adds मज्झ before वच्चमाणस्स, J om. अहो, J om. तए. 20 > P om. वि, P inter. इमस्स and एस, J om. तओ. 21 > J पुरिसो for एसो, J om. वि. 22 > J घेत्थिहिइ P घेच्छिहेति. 23 > P सो for एसो, P तेण for णेण. 24 > J वराओ।. 25 > P वित्थिण्ण-, P चरसरीरय. 26 > J om. च, P पज्जावियव्वज्जा for पव्वज्जा, P om. मए. 27 > J om. भगवया भणियं, J दक्खिणेण, P पुरंदत्तस्स, P om. चेत्त. 28 > P तुच्छ for तत्थ, J om. य, P वुत्तंतं निसामिऊण तस्स राइणो पव्वावइस्स त्ति. 29 > J चेय. 30 > J adds एस before मं, J मोहदत्तेण. 31 > J एयं इमं for एवमेयं, P तिणमेत्तं, P ताव for ता.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १५५) भणियं च पुणो वि गुरुणा धम्मणंदणेण । तओ भो भो वासवमहामंति, जं तए पुच्छियं जहा इमस्स चउ-गइ-लक्खणस्स संसारस्स किं पढमं णिव्वेय-कारणं ति । तत्थ इमे महामल्ला पंच कोह-माण-माया-लोह-मोहा परायत्तं जीवं काऊण दोग्गइ-पहमुवणेंति । तत्थ इमाणं उदय-णिरोहो कायव्वो उदिण्णाणं वा विहली-करणं ति । तं जहा ।

जइ अक्कोसइ बालो तहा वि लाभो त्ति णवर णायव्वो । गुरु-मोह-मूढ-मणसो जं ण य ताडेइ मे कह वि ॥
अह ताडेइ वि बालो मुणिणा लाभो त्ति णवर मंतव्वं । जं एस णिरासंसो ण य मे मारेइ केणं पि ॥
अह मारेइ वि बालो तहा वि लाहो त्ति णवर णायव्वो । जं एस णिव्विवेओ महव्वए णेय णासेइ ॥
इय पुव्वावर-लाभो चिंतेयव्वो जणेण णिउणेणं । रोद्दप्फलो य कोहो चिंतेयव्वो जिणाणाए ॥
माणं पि मा करेज्जसु एवं भावेसु ताव संसारे । आसि इमो अब्भयरो अहं पि दुहिओ चिरं आसि ॥
आसि इमो वि विअड्ढो आसि अहं चेय अयणओ लोए । आसि इमो वि सुरूवो पुहईय वि मंगुलो अहयं ॥
सुकुलम्मि एस जाओ आसि अहं चेय पक्कण-कुलम्मि । आसि इमो बलवंतो अहयं चिय दुब्बलो आसि ॥
आसि इमो वि तवस्सी होहिइ वा दीहरम्मि संसारे । एसो बहुं लहंतो अहयं चिय वंचिओ आसि ॥
होऊण ललिय-कुंडल-वणमाला-रयण-रेहिरो देवो । सो चेय होइ णवरं कीडो असुइम्मि संसारे ॥
होऊण चिरं कीडो भव-परिवाडीएँ कम्म-जोएण । सो च्चिय पुणो वि इंदो वज्जहरो होइ सग्गम्मि ॥
सो णत्थि जए जीवो णवि पत्तो जो दुहाइँ संसारे । जो असुहं णवि पत्तो णिय-विरइय-कम्म-जोएण ॥
इय एरिसं असारं अथिरं गुण-संगमं इमं णाउं । ता कयरं मण्णंतो गुणं ति माणं समुव्वहसि ॥
माया वि कीस कीरइ बुहयण-परिणिंदिय त्ति काऊण । कह वंचिज्जउ जीवो अप्प-समो पाव-मूढेहिं ॥
जह वंचिओ त्ति अहयं दुक्खं तुह देइ दारुणं हियए । तह चिंतेसु इमस्स वि एस च्चिय वंचणा पावं ॥
जइ वि ण वंचेसि तुमं माया-सीलो त्ति तह वि लोयम्मि । सप्पो व्व णिव्विसप्पं णिच्चं चिय होइ बीहणओ ॥
तम्हा मा कुण मायं मायं सयलस्स दुक्ख-वग्गस्स । इय चिंतिऊण दोसे अज्जव-भावं विभावेसु ॥
लोभो वि उज्झियव्वो एवं हिययम्मि णवर चिंतेउं । णाणाविहं तु अत्थं आसि महंतं महं चेय ॥
वेरुलिय-पउमरायं कक्केयण-मरगयाइँ रयणाइं । आसि महं चिय सुइरं चत्ताइँ मए अवसएणं ॥
अइ ता करेसि धम्मं साहीणाणि पुणो वि रयणाइं । अहवा रज्जसि पावे एयं पि कडिल्लयं णत्थि ॥
जइ णव महाणिहीओ रज्जं सयलं च भुंजए चक्की । ता कीस तुमं दुहिओ पावय पावेण चिंतेण ॥
कुणसु य तुमं पि धम्मं तुज्झ वि एयारिसा सिरी होइ । ता पर-विहव-विलक्खो ण लहिसि णिद्दं पि राईए ॥
आलप्पालारंभं मा कुण विहवो त्ति होहिइ महं ति । पुव्व-कयस्स ण णासो ण य संपत्ती अविहियस्स ॥
अह परिचिंतेसि तुमं भत्तं पोत्तं व कह णु होज्जा हि । तत्थ वि पुव्व-कयं चिय अणुयत्तइ सयल-लोयस्स ॥
महिलायणे वि सुव्वइ पयडं आहाणयं णरवरिंद । जेण कयं कडियलयं तेण कयं मज्झ वत्थं पि ॥
जेण कया धवल च्चिय हंसा तह बरहिणो य चित्तलया । सो मह भत्तं दाहिइ ण भणणयारी तणं चरइ ॥
इय चिंतिऊण पावं मा मा असमंजसं कुणसु लोहं । पडिहण संतोसेणं तह चेय जिणिंद-वयणेणं ॥
मोहस्स वि पडिवक्खं चिंतेयव्वं इमं सुविहिएहिं । असुई-कलमल-भरिए रमेज्ज को माणुसी-देहे ॥
जं असुई-दुग्गंधं बीभच्छं बहुयणेण परिहरियं । जो रमइ तेण मूढो अव्वो विरमेज्ज सो केण ॥
जं जं गुज्झं देहे मंगुल-रूवं ठविज्जए लोए । तं चेय जस्स रम्मं अहो विसं महुरयं तस्स ॥
जं असइ ससइ वेयइ मउलइ णयणाइँ णीसहा होइ । तं चिय कुणइ मरंती मूढा ण तहा वि रमणिज्जा ॥

2) P om. णिव्वेय, P -लोभ-. 3) P उवइसाणं विहली. 4) P लाहो त्ति, J उ for य, P ताडेय मं कह. 5) P मुणिणो लोभो, P मंतव्वो । जं निएस. 8) P संसारो, P repeats अब्भयरो, P om. आसि. 9) P अयाणओ. 10) P सुकुलं पि, P चेव, P चिय. 11) P होही वा, P बहुं तो अहियं. 12) P चेय. 13) P परिवाडीय. 14) P जो यसुहं, J णय for णवि, P पत्तो न य वियरइ. 15) P संगमं च नाऊणं ।, P गुणाभिमाणं. 16) P om. कीस, P वंचिज्जइ. 17) P अह for जह, J दुहवेइ for तुह देइ, P चिंतेइ, P पावा ।. 18) P वंचेमि, P व्वि for व्व. 19) J -मग्गस्स ।, J विलग्गासु for विभावेसु. 20) P लोहो. 21) J -पोमराए, J -मरगए य रयणाइं. 22) J साहीणाणं P साहीणावि, P एवं पि. 23) P तुहं for तुमं. 24) P कुज्ज for तुज्झ, P मा for ता. 26) P °त्तइ सव्वलोगस्स ॥. 28) P तह वरहिलो य चित्तयला ।. 29) P असमंजसं, P विमलेण for तह चेय. 30) P इमं सुबुद्धीहिं ।, J कलिमल. 31) P बीभत्सं. 32) P मंगलरूयं च विरमणिज्जा ।, P om. ठविज्जए लोए etc. to मूढाण तहा वि. 33) J ज for जं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जण-लज्जणयं पि तहा बुहयण-परिणिंदियं चिलीणं पि । जं सोडीरा पुरिसा रमंति तं पाव-सत्तीए ॥
जइ तीरइ काउं जे पडिहत्थो विंदुएहिं जलणाहो । ता काम-राय-तित्तो इह लोए होज्ज जीवो वि ॥
कट्ठिंधण-तण-णिवहेहिँ पूरिओ होज्ज णाम जलणो वि । ता कामेहि वि जीवो हवेज्ज तित्तो ण संदेहो ॥
उत्तुंग-पीण-पीवर-थण-भारोणमिय-तणुय-मज्झाहिं । सग्गे वि मए रमियं देवीहिँ ण चेय संतोसो ॥
माणुस-जोणीसु मए अह उत्तिम-मज्झिमासु णेयासु । रमियं तहा वि मज्झं रोरस्स व णत्थि संतोसो ॥
इय असुई-संबंधं मुंचसु मोहं ति पाव रे जीव । चिंतेसु जिणवराणं आणं सोक्खाण संताणं ॥
इह कोह-माण-माया-लोहं मोहं च दुह-सयावासं । परिहरियव्वं बहु-सिक्खिएण एयं जिणाणाए ॥ त्ति ।

§ १५६) एत्थंतरम्मि सूरो सोऊणं धम्म-देसणं गुरुणो । पच्छायाव-परद्धो अह जाओ मउलिय-पयावो ॥

इमाए पुण वेलाए वट्टमाणीए अत्थगिरि-सिहर-संगमूसुएसु दिणयर-रह-वर-तुरंगमेसु अभिवंदिऊण भगवओ चलण-जुवलयं राया पुरंदरदत्तो वासवो य महामंती पविट्ठा कोसंबीए पुरवरीए । सेस-जणो वि जहागओ पडिगओ । साहुणो वि भयवंते संपलग्गा णियएसु कम्म-धम्म-किरिया-कलावेसु । तओ

अत्थिइरि-णिहिय-हत्थो अहोमुहो णयण-हुत्त-पाइल्लो । मत्थुत्थल्लं दाउं वालो इव ववसिओ सूरो ॥
संझा-वहूएँ णज्जइ गयणाहिंतो समुद्द-मज्झम्मि । णिय-कर-रज्जु-णिबद्धो सूरो कुडओ व्व ओयरिओ ॥
अह मउलिय-प्पयावो तम-पडलंतरिय-किरण-दिट्ठिल्लो । संकुइय-करोइय-थेरओ व्व जाओ रवी एसो ॥
जायस्स धुवो मच्चू रिद्धी अवि आवई धुवं होइ । इय साहेंतो व्व रवी णिवडइ अत्थगिरि-सिहराओ ॥
पाडिय-चंडयर-करो कमसो अह तविय-सयल-भुवणयलो । सहसा अत्थाओ च्चिय इय सूरो खल-णरिंदो व्व ॥
अह दिणयर-णरणाहे अत्थमिए णलिणि-मुद्ध-विलयाहिं । पल्हत्थ-पंकय-मुहं अव्वो रोउं पिव पयत्तं ॥
दट्ठूण य णलिणीओ रुयमाणीओ व्व मुद्ध-भमरेहिं । अणुरुव्वइ बालेहि व सुइरं रुइरे जणणि-सत्थे ॥
उये मित्तस्स विओए हंस-रवुम्मुक्क-राव-कलुणाणं । विहडइ चक्काय-जुयं अव्वो हिययं व णलिणीणं ॥
सूर-णरिंदत्थवणे कुसुंभ-रत्तंबराणुमग्गेण । कुल-बालिय व्व संझा अणुमरइ समुद्द-मज्झम्मि ॥

अवि य खल-भोइयस्स व बहू-पणइयण-पत्थिज्जमाणस्स ईसि अंधयारिज्जंति मुहाइं तम-णिवहेण दिसा-वहूणं, मित्त-विओयाणल-डज्झमाण-हिययाइं व आउलाइं विलवंति सउण-सत्थाइं, ईसालुय-णरिंद-सुंदरीओ इव पडिहय-दूरप्पसराओ दिट्ठीओ त्ति । अवि य ।

अत्थं गयम्मि सूरे तिहुयण-घर-सामिए व्व कालगए । रोवंति दिसि-वहूओ जण-णिवहुद्दाम-सद्देण ॥

§ १५७) ताव य को वुत्तंतो पयत्तो भुवणयले । अवि य पडिणियत्तइं गोहणइं, णिग्गयाइं चोर-वंद्रइं, आवासियइं पहिय-सत्थइं, उक्कंठियइं पंसुलि-कुलइं, संझोवासणा-वावडइं मुणिवर-वंद्रइं, विरह-विहुरइं चक्कायइं, समूससियइं णारी-पुरिस-हिययइं, गायत्ती-जव-वावडइं बंभण-घरइं । मूएल्लिहोंति कायल, पसरंति घूय, चिलिचिलेंति पिंगलओ, संकुयंति सउणा, वियरंति सावया, किलिकिलेंति वेयाला, पणच्चंति डाइणीओ, परिक्कमंति भूया, रडंति भसुयओ त्ति । अवि य ।

वच्छंतरेसु सउणे णिद्दा-भर-मंथरे णिसेऊणं । कच्छंतरम्मि बाले सोवइ जणणि व्व वण-राई ॥

एरिसए समयम्मि के उण उल्लावा कत्थ सोऊण पयत्ता । डज्झिर-तिल-घय-समिहा-तडत्तडा-सद्दइं मंत-जाय-मंडवेसु, गंभीर-वेय-पढण-रवइं बंभण-सालिसु, मणहर-अक्खित्तिया-गेयइं रुद्द-भवणेसु, गल्लफोडण-रवइं धम्मिय-मढेसु, घंटा-डमरुय-सद्दइं कावालिय-घरेसु, तोडहिया-पुक्करियइं चच्चर-सिवेसु, भगवगीया-गुणण-धणीओ आवसहासु, सब्भूय-गुण-रइयइं

1) P बहुयण-· 2) P काओ for काउं, J पडहच्छो, P तो for ता, P ·तत्तो· 3) P णाम जणाम जलणो, J मि for वि, P जीवा, P तित्ता· 4) P adds घणपीवर before थणभारो. 5) P अहमुत्तिम, J तहवी, P वि for व, P संदेहो for संतोसो· 6) J असुइमं संबोज्झ मुंच मोहो त्ति, P संबंधो· 7) P लोभं, J जिणाणाएं ति· 9) P adds य before पुण, J om. वट्टमाणीए, P दिणवर, P अभिनंदिऊण भगवतो चलणजुयलं· 10) P कोसंबीपुर°, J om. वि, P om. पडिगओ, P भगवंतो संपलग्गाणियएसु· 12) P अत्थगिरि, P om. मुहो, J मच्छुत्थल्लं P मछुत्थलं, P पवसिओ· 13) P संझावबहू णज्जइ, P नियकरकेया बद्धो सूरो कडओ, J ओसरिओ P ओयरिहो· 14) J -पयावो, J त्थोय for किरण, P repeats करोइय, P थेरय व्व· 15) P इव for अवि, P उदयत्थ for अत्थगिरि· 17) P नलणि-, P मुहं अद्दो रोत्तुं पिव· 18) J रुइरो जणणिसत्थो· 19) P हंसरवमुक्क, P चुक्काय· 20) P नरिंदत्थमणे, P रत्तंवराणमग्गेण, P अणुसरइ समुज्झंमि ॥· 21) J -होइयस्स, P बहू (बहु?), P पणईयण, J दिसावहूं· 22) J om. आउलाइं, P ईयालुनरिंद, J दूरपसराओ, P दूरप्पसरा दिट्ठीओ· 25) P पडिनियत्ताइं गोहणाइं, P वंद्राइं आवसियाइं पहयणसत्थाइं । उक्कंठियाइं· 26) P कुलाइं, P वावले for वावडइं and repeats अवि य पडिनियत्ताइं etc. to संझोवासणावावडाइं· 27) P चोर for णारी, P गायंति जाव वावडइं, P संघाइं for घरइं, J सुयंती for मूएल्लि°, P घूया· 28) P सउणविरयरंति सावय, P परिभमंति, J भसुओ for भसुयओ. 30) P सउणा, J भय for भर, P सोयइ जइ जणणि· 31) P एरिसे य, P दज्झिर, P सद्दइ· 32) P बंभाण सालोसु, J अक्खित्तिआअइं, P गेयाइं, P गल्लफोडण· 33) P कालालिय, P -चुक्करियइं, J -सिसिवेसु, J गुणणव्वणउ आव°, P गुणरइअं.

थुइ-थोत्तइं जिणहरेसु, एयंत-करुणा-णिबद्धत्थई वयणइं बुद्ध-विहारेसु, चालिय-महल्ल-घंटा-खडहडओ कोट्टजा-घरेसु, सिहि-कुक्कुड-चडय-रवइं छम्मुहालएसु, मणहर-कामिणी-गीय-मुरय-रवइं तुंग-देघ-घरेसुं ति । अवि य ।

कत्थइ गीयस्स रवो कत्थइ मुरयाण सुव्वए सद्दो । कत्थइ किं पि पढिजइ इय हलबोलो पओसम्मि ॥

कामिणीहरेसु पुण के उल्लावा सुव्विउं पयत्ता । हला हला पल्लविए, सज्जीकरेसु वासहरयं, पप्फोडेसु चित्त-भित्तीओ, पक्खिवसु मइराए कप्पूरं, विरएसु कुसुम-माला-घरयइं, रएसु कोट्टिमे पत्तलयाओ, विरएसु कुसुम-सत्थरे, संधुक्केसु धूव-घडियाओ, संजोएसु महुर-पलावे जंत-सउणए, विरएसु णागवल्ली-पत्त-पडलए, ठवेसु कप्पूर-फडा-समुग्गए, णिक्खिव कक्कोलय-गोलए, ठवेसु जाल-गवक्खए अत्थुर-सेज्जं, देसु सिंगाडए, णिक्खिव वलक्खलए, पक्खिव चक्कलए, पज्जालेसु पईवे, पवेसेसु महुं, कोंतलं काउं सुइरं णिमज्जसु मज्ज-भायणे, पडिमग्गसु मइरा-भंडए, हत्थ-पत्ते कुणसु चसए, णिक्खिव सयण-पासम्मि विविह-खज्ज-भोज्ज-पेज्ज-पडलए त्ति । अवि य ।

एक्केक्कयम्मि णवरं वर-कामिणि-विहुल-वास-घरयम्मि । कम्मे तो ण समप्पइ पिय-संगम-गारवग्घविए ।

§ १५८) एयम्मि एरिसे समए को वावारो पयत्तो णायर-कामिणी-सत्थस्स । अवि य ।

सहि संपइ मज्झ घरं पावइ दइओ त्ति मंडणं कुणसु । अहवा अलं ति मह मंडणेण अंगस्स भारेण ॥
दे तूर महं पियसहि तिलए भालं रएसु दइएण । इय विहलक्खर-भणिरी सहियाहि हसिज्जए अण्णा ॥
आसण्ण-दइय-संगम-सुहेल्लि-हल्लप्फला हलहलेंति । अण्णा रसणं कंठे बंधइ हारं णियंबम्मि ॥
होंत-जियणाह-संगम-मयण-रसासाय-सुण्ण-हिययाए । भद्दाए च्चिय रइओ तिलओ अण्णाए घुसिणेण ॥
अण्णा ण जंपइ च्चिय आणेसु पियं ति दूइ-लज्जाए । पिय-वयण-गब्भिणेहिँ णयण-पदाणेहिँ पयडेइ ॥
संचारियाएँ अण्णा अप्पाहेंती पियस्स संदेसं । अगणिय-मग्ग-विहाया सहसा गेहं चिय पविट्ठा ॥
एहिइ पिओ त्ति अण्णा इमिणा मग्गेण अंधयारम्मि । तं चेय णियच्छंती अच्छइ जोइ व्व झाणत्था ॥
अज्जेक्कं चिय दियहं अत्ता वच्चामि जइ तुमं भणसि । अणुदियहं पि भणंती अण्णा दइयं समल्लियइ ॥
पढमं चिय पिय-वसही गंतव्वं अज्जमेव चिंतेंती । गुरु-सज्झस-तोस-विसाय-णिब्भरा होइ अण्णा वि ॥
तम-पडहत्था रच्छा कीय वि जो होइ संभमो हियए । सो होंत-दइय-संगम-सुहेल्लि-पडिपेल्लिओ गलइ ॥
अणुराओ चेय फरो तस्स गुणा चेय णिम्मलं खग्गं । इय भणिउं एक्क च्चिय पिय-वसहिं पत्थिया अण्णा ॥
वण्णेंति पोढ-महिला किर सो बहु-सिक्खिरो जुवाणो त्ति । णिव्वडइ तं पि अज्जं इय भणिरी वच्चए अण्णा ॥
घण्णिज्जइ महिलाहिं जा रयणाली कुमार-कंठम्मि । तं पेच्छइ मह कंठे एव भणंती गया अण्णा ॥
कसिण-पड-पाउयंगी दीवुज्जोयम्मि कुहिणि-मज्झम्मि । वोलेइ झत्ति अण्णा कयावराहा भुयंगि व्व ॥
अण्णा भय-भरियंगी अच्छिच्छोएहिँ जाइ पुलयंती । णीलुप्पल-णियरेहिँ व अच्चंती पंथ-देवीओ ॥
अण्णा सहियण-भणिया पिय-वसहिं वच्च ताव मंडेउं । चलिय च्चिय णिय-सोहग्ग-गव्विरी का वि दइयस्स ॥
वच्चंतीय य कीय वि दिट्ठो सो चेय वल्लहो पंथे । अह पडिमग्गं चलिया पिय त्ति गव्वं समुव्वहिरी ॥
दट्ठूण काइ दइयं पियाएँ समयं सुणिब्भर-पसुत्तं । वच्चइ पडिपह-हुत्तं धोयंसुय-कज्जला वरई ॥
अण्णा वासय-सज्जा अच्छइ जिय-णाम-दिण्ण-संकेया । अण्णाएँ सो वि हरिओ भूयाण य वाइओ वंसो ॥
इय एरिसे पओसे जुयईयण-संचरंत-पउरम्मि । मयण-महासर-पहर-णीसहा होंति जुवईओ ॥

---

1) P थोत्तयं, P -निबद्धथईवयई बद्ध-, P महल्ला-, P घडहडओ. 2) P सिहिकुडुचडय, P -गेयमुखरइयइं. 4) J को for के, P repeats के उल्लावा, P om. one हला, J सज्जीअरेसु. 5) J पक्खि मइराए P पक्खिवह मइराएसु कप्पूरं, P मालघराइं, P repeats विरएसु कुसुममालाघराइं । रएसु कोट्टिमे पत्तलयाओ, P विएसु कुसुमसत्थरो. 6) P धूम for धूव, J ठएसु, P -प्फडा. 7) P कंकोलय, J ठएसु, P सिंघाडए, J चक्कलए for वलक्खलए, P om. पक्खिव चक्कलए. 8) P महुरकोंतलकाओ सइरं, P om. मज्ज, JP have a daṇḍa after काउं, J अत्थपत्थेसु. 9) P मयण, P inter. पेज्ज and भोज्ज. 10) J adds वि before ण, P °वग्घविओ. 11) P पहुत्तो for पयत्तो. 12) P सइ for सहि. 13) J सहिअहि P सहियाइं. 14) P संगमसुहलि-, J हल्लफला. 16) P संदयदाणिहिं for णयणपदाणेहिँ. 17) P अप्पाहंती, P -विभागा. 18) P एही for एहिइ. 19) P अणुदियहंमि, J समुल्लियइ 20) J पढमं च्चिय वसई चेय गंतव्वं, P चिंतंती, P सब्भस. 21) J संहमो, J सुहुल्लि. 22) J खरो for फरो, P भणियं, J पियवसइं. 23) P अण्ण त्ति for वण्णेंति, P सिक्खिओ. 24) P महिलाइं, J रयणीली P रयणावली, J का वि for अण्णा. 25) P पाउरंगी, J adds जा before दीवु°, J has a marginal note on कुहिणि thus: देशी कुहणी कर्पूरो रथ्या च ।, P -मज्जंमि. 26) J अण्ण, J अच्छिच्छोहेहिंइ, P नयणेहिं व अच्चेंती, J पंत्थ. 27) J सहि for वसहिं, P चविय for चलिय, J कियसोहग्गगव्विणी. 29) P दट्ठूण कोइ, P पविवइ, P धोइंसुय, P धरई for वरई. 30) P जितणाम, J हूआणं वाइओ. 31) P जुवईयणसंचरंमि मयणमहारहसर, J पहरेहि नीसहा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§१५९) ताव य अइक्कंतो पढमो जामो चउ-जामिणीए । अवि य ।

मयण-महाहव-वेला-पहार-समयं व पज्जरंतो व्व । उद्धाइ संख-सद्दो वर-कामिणि-कणिय-वामिस्सो ॥

एत्थंतरम्मि विविह-णरिंद-वंद्र-मंडली-सणाहं पाओसियं अत्थाण-समयं दाऊण समुट्ठिओ राया पुरंदरदत्तो । विसज्जियासेस-णरिंद-लोओ पविट्ठो अब्भंतरं । तत्थ पडियग्गिऊण अंतेउरिया-जणं, संमाणेऊण संमाणणिज्जे, पेच्छिऊण पेच्छणिज्जे, सव्वहा कय-कायव्व-वावारो उवगओ वास-भवणं । तत्थ य उवगयस्स समुट्ठिओ चित्ते वियप्पो । 'अहो, एरिसा वि एसा संपया खण-भंगुरा । एवं सुयं मए अज्ज भगवओ धम्मणंदणस्स पाय-मूले । अहो, गुरुणा जणिअं वेरग्गं, असारी-कओ संसारो, विरसीकया भोगा, णिंदिओ इत्थि-पसंगो । ता पेच्छामि ताव एत्थ मयण-महूसवे एरिसे य पओसे किं करेंति ते साहुणो, किं जहा-वाई तहा-कारी आओ अण्णह' त्ति चिंतयंतेण राइणा पुरंदरदत्तेण गहिअं अद्ध-सवण्णं वत्थ-जुवलयं । जस्स य ।

अद्धं ससंक-धवलं अद्धं सिहि-कंठ-गवल-सच्छायं । पक्ख-जुवलं व घडियं कत्तिय-मासं व रमणिज्जं ॥

परिहरियं च राइणा धवलमद्धं कसिणायार-परिक्खित्तं । उवरिल्लयं पि कयं कसिण-पच्छायणं । गहिया य छुरिया । सा य केरिसा । अवि य ।

रयण-सुवण्ण-कंठ-सिरि-सोहिय-तणुतर-मुट्ठि-गेज्झिया । वइरि-णरिंद-वच्छ-परिचुंबण-पसर-पयत्त-माणिया ॥
रेहिर-वर-वरंग-सोहा णव-कुवलय-सामलंगिया । रिउ-जण-पणइणि व्व सा बज्झइ कडियलए छुरिल्लिया ॥

सा य उत्थल्लियए माणिक्क-पट्टियए दढ-णिबद्ध कयल्लिया । तओ सुयंध-सिणेहो एरिसो य सव्वायर-परियड्डिओ सीसेण धरियल्लओ । तह वि वंक-विवंको पयइ-कसिणो सहावो य त्ति कोवेण व उद्धो विणिबद्धो केस-ढमर-पब्भारो । तओ णाणा-विह-कुसुम-मयरंद-बिंदु-णीसंदिर-कप्पूर-रेणु-राय-सुयंध-गंध-लुद्ध-मुद्धागयालि-रण-रणेंत-मुहल परिहिय मुंडे मालुल्लिया । तओ अइविमल-मुहयंद-चंदिमा-पूर-पसर-परिप्फलणाई कड्ढियइं उभय-गंडवासेसु बहल-कत्थूरियामयवट्टइं । रंजियइं च तीय सेसइं परियर-वलग्गइं पसरंत-णिम्मल-मऊहइं रयणइं । तओ कप्पूर-पूर-पउरहं कंकोलय-लवंग-मीसह पंच सोयंधियइं तंबोलह भरियइं गंडवासइं । असेस-सुरासुर-गंधव्व-जक्ख-सिद्ध-तंत-वत्तियए विरइओ भालवट्टे तिलओ । बहले वि तमंधयारे रइ-रेणुवदंसावएण अंजण-जोएण अंजियइं अच्छिवत्तइं । पूरियं च पउट्ठे पउर-वेरि-वीर-मंडलग्गाभिघाय-णिवडंत-णिट्ठुरत्तण-गुणं वसुणंदयं । गहियं च दाहिण-हत्थेण खग्ग-रयणं ति । तं च केरिसं । अवि य ।

वइरि-गइंद-पिहुल-कुंभत्थल-दारणए समत्थयं । णरवर-सय-सहस्स-मुह-कमल-मुणाल-वणे दुहावहं ॥
जयसिरि-धवल-णेत्त-लीला-वस-ललिउव्वेल्ल-मग्गयं । दाहिण-हत्थएण गहियं पुण राय-सुएण खग्गयं ॥

तं च घेत्तूण णिहुय-पय-संचारं वंचिऊण जामइल्ले, विसामिऊण अंगरक्खे, भामिऊण वामणए, वेलविऊण विऊसए, छंदिऊण वडहे, सव्वहा णिग्गओ राया वास-घराओ, समोइण्णो दद्दर-सोमाण-पंतीए त्ति ।

§१६०) इमम्मि य एरिसे समए केरिसावत्थो पुण वियड्ड-कामिणियणो भगवं साहुयणो य । अवि य ।

एक्को रणंत-रसणो पिययम-विवरीय-सुरय-भर-सिग्गो । वेरग्ग-मग्ग-लग्गो अण्णो कामं पि दूसेइ ॥
एक्को महुर-पलाविर-मम्मण-भणिएहिँ हरइ कामियणं । अण्णो फुड-वियडक्खर-रइयं धम्मं परिकहेइ ॥
एक्को पिययम-मुह-कमल-चसय-दिण्णं महुं पियइ तुट्ठो । अण्णो तं चिय णिंदइ अणेय-दोसुब्भडं पाणं ॥
एक्को णह-मुह-पहरासिय-दंतुल्लिहण-वावडो रमइ । अण्णो धम्मज्झाणे कामस्स दुहाइँ चिंतेइ ॥
एक्को संदट्ठाहर-वियणा-सिक्कार-मउलियच्छीओ । धम्मज्झाणोवगओ अवरो अणिमिसिय-णयणो य ॥
एक्को पिययम-संगम-सुहेल्लि-सुह-णिब्भरो सुहं गाइ । अण्णो दुह-सय-पउरं भीमं णरयं विचिंतेइ ॥
एक्को दइयं चुंबइ बाहोभय-पास-गहिय-वच्छयलं । अण्णो कलिमल-णिलयं असुइं देहं विचिंतेइ ॥

2) J वेणी for वेला, P वज्जरंतो. 3) P नरेंद्र, J पुरंदरयत्तो. 4) P लोतो for लोओ, P अब्भंतरो, J अंतेउरिजणं, P संमाणणिज्जो. 5) P repeats °वारो उवगओ, P तत्थ ववगयस्स, P om. वि. 7) J om. एत्थ, P transposes ते before किं, P करंति. 8) P जहावाती, J अण्णहि त्ति, P चिंतियंतेण, J पुरंदरयत्तेण, J अद्धसुवण्णं P अद्धसवत्रं जत्थ, P om. य. 9) J ससंख-, J पक्खजुवलेण घडिओ कत्तियमासो व्व रमणिज्जो ।. 10) P परिहियं च, P धवलं मद्धं कणाइ विपक्खित्तं, P om. पि, P गहियं जच्चच्छुरिया. 12) J कण्ण for कंठ, P सोहिया, P om. तर, J गेज्झिआ ।, P नरिंद्रचंद्रपरि°. 13) J रिउअण-, J छुरुल्लिया. 14) J सार for सा य, P सा च उच्छुल्लियाए माणिक्कपट्टियाए, J कडियल्लिअ ।, J परिवड्डिओ. 15) J उबद्धो for व उद्धो, P उद्धो बद्धो केस तरस तमर पब्भारो. 16) P मयरिंद, J वंद for बिंदु, P णीसिरंकप्पूर, P सुगंध, P मुद्धासवालि, P परिहिया. 17) P पसरि, P कड्डिअइं, J रंजियं च, P च तिय. 18) P om. रयणइं, J कक्कोलय, J repeats लय, P om. मीसह, J पंचासो°, P पंच सुअंधियइं. 19) P तंबोलभरियइं गंडवासयं, J रक्खा for जक्ख, P सिद्धंतत, J कालवट्ठो P मालवट्टे 20) P रेणुपयंसावएण, P अंजियाइं अत्थवत्तइं, P वइरि for वेरि, P °घाया-. 21) P णिट्ठुरत्तगुणं, P om. हत्थेण, J om. ति, 22) P गयंद, J दुहावयं. 23) P ललियुव्वेल, P दाहिणत्थएण. 24) J हामिऊण for भामिऊण. 25) P वासहराओ समोइन्नो, P सोमणपत्तीए वि ।. 26) J om. य, P उण for पुण, P कामिणीयणो भयवं साहुणो. 27) J पियमण-, J -करसिग्गो P भरसित्तो, P om. मग्ग. 28) P पलावीमम्मण, J हणिएहिं for भणिएहिँ. 30) P सिरंतुल्लि, J °धम्मत्थाणे. 31) P संदुट्ठाहरविणोयसिक्कार, P अणिमेसणो जाओ. 32) J सुहल्लि, J P गायइ, P संसारपहं for भीमं णरयं, J विंतेइ. 33) P वास for पास, P कलमल, J असुइदेहं विइंतेइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय जं जं कामियणो कुणइ पओसम्मि णवर मोहंधो । तं तं मुणिवर-लोओ णिंदइ जिण-वयण-दिट्ठिल्लो ॥

तओ एयम्मि एरिसे समए णिक्खंतो राया णियय-भवणाओ । ओइण्णो राय-मग्गं, गंतुं पयत्तो । वच्चंतेण य राइणा दिट्ठं एक्कं तरुण-जुवइ-जुयलयं । दट्ठूण य चिंतियं 'अहो, किं किं पि सहास-हसिरं इमं तरुणि-जुवलयं, वच्चंता दे णिसामेमि इमाणं वीसत्थं मंतियं' ति । तओ एक्काए भणियं 'पियसहि, कीस तुमं दीससि ससेउकंप-हास-वस-वेविर-पओहरा' । तीए भणियं 'अम्ह पियसहीए अउव्वं वुत्तंतं वुत्तं' । तीए भणियं 'सहि केरिसं' ति ।

§१६१) तीए भणियं । "आगओ सो पियसहि, एसो वल्लहो । तेण य समं सही-सत्थो सव्वो पाणं पाऊण समाढत्तो । तओ एवं पयत्ते णिज्जंतणे पेम्माबंधे अवरोप्परं पयत्ताए केलीए कहं कहं पि मडु-मत्तेण कयं णेण वल्लहेण गोत्तक्खलणं पियसहीए । तं च सोऊण केरिसा जाया पियसही । अवि य ।

तिवलि-तरंग-णिडाला थरिगर-विलसंत-कसिण-भुमय-लया । चलिया रणंत-रसणा फुरुप्फुरेंताहरा सुयणू ॥

तओ झत्ति विद्दाणो सही-सत्थो । आउलीहूओ से वल्लहो अणुणेउं पयत्तो । किं च भणियं णेण ।

'मा कुप्पसु ससि-वयणे साह महं केण किं पि भणिया सि । अवियारिय-दोस-गुणाएँ तुज्झ किं जुज्जए कोवो ॥'

तं च सोऊण अमरिस-वस-विलसमाण-भुमया-लयाए भणियं पियसहीए ।

'अवियाणिय-दोस-गुणा अलज्ज होज्जा तुमे भणंतम्मि । जइ तुह वयण-विलक्खो ण होज एसो सही-सत्थो ॥'

तओ अम्हे वि तत्थ भणिउं पयत्ताओ । 'पियसहि, ण किंचि णिसुयं इमस्स अम्हेहिँ एत्थ दुव्वयणं' । तीए भणियं । 'हुं, मा पलवह, णायं तुम्हे वि इमस्स पक्खम्मि' । भणिऊण ठइय-वयण-कमला रोविउं पयत्ता । तओ दइएण से पलत्तं ।

'सुंदरि कयावराहो सच्चं सच्चं ति एस पडिवण्णो । एस परसू इमो वि य कंठो जं सिक्खियं कुणसु ॥'

त्ति भणमाणो णिवडिओ चलणेसु । तह वि सविसेसं रोविउं पयत्ता । तओ अम्हेहिं कण्णे कहिओ पिययमो किं पि, तओ पविट्ठो पल्लंकस्स हेट्ठए णिहुओ य अच्छिउं पयत्तो । पुणो भणियं अम्हेहिं ।

'अइ ण पसण्णा सि तुमं इमस्स दइयस्स पायवडियस्स । अकय-पसाय-विलक्खो अह एसो णिग्गओ चेव ॥

ता अच्छ तुमं, अम्हे वि घराहरेसु वच्चामो' त्ति भणमाणीओ णिग्गयाओ वास-भवणाओ, णिरूविउं पयत्ताओ पच्छण्णाओ । 'किं किं करेइ'त्ति पेच्छामो जाव पेच्छामो णीसद्दं वासहरं जाणिऊण उग्घाडियं वयणं, जाव ण स दइओ, ण सहीओ, तओ पच्छायाव-परद्धा चिंतिउं पयत्ता ।

'हा हा मए अहव्वाएँ पेच्छ दूसिक्खियाएँ जं रइयं । ण पसण्णा भग्गासा तह पइणो पाय-पडियस्स ॥

ता कहिं मे सहियाओ भणियाओ जहा 'तं आणेसु, ण य तेण विणा अज्ज जीवियं धारेमि' त्ति । ता किं करियव्वं । अहवा किमेत्थ चिंतियव्वं' ति दढग्गलं कयं दारं विरइओ य उवरिल्लएण पासो, णिबद्धो कीलए, वलग्गा आसणे, दिण्णो कंठे पासो । भणियं च णाए । अवि य ।

'जय ससुरासुर-कामिणि-जण-मण-वासम्मि सुट्ठु दुल्ललिय । जय पंचबाण तिहुयण-रण-मल्ल णमोत्थु ते धीर ।

एस विवज्जामि अहं पिययम-गुरु-गोत्त-वज्ज-णिद्दलिया । तह वि य देज्जसु मज्झं पुणो वि सो चेय दइओ' त्ति ॥

भणंतीय पूरिओ पासओ, विमुक्कं अत्ताणयं । एत्थंतरम्मि

अह एसो दिण्णो च्चिय तुट्ठेणं सुयणु तुज्झ मयणेणं । एवं समुल्लवंतेण तेण बाहाहिँ उक्खित्ता ॥

तओ 'अहो, पसण्णो धण्णाए भगवं कुसुमाउहो' त्ति भणंतीओ अम्हे वि पहसियाओ । विलक्खा य जाया पियसही । अवणीओ पासओ । समारोविया सयणे । समासत्था य पुणो पियसही ।

तं तेहिं समाढत्तं णियंब-हेलुच्छलंत-रसणिल्लं । जं पियसहि पाव तुमं वाससयं अक्खया मज्झ ॥

तओ 'सुहं वससु'त्ति भणंतीओ पविट्ठाओ अत्तणो घराहरेसुं ।"

---

1) P कामिजणो, J मोहद्धो, P -लोतो निंदेइ. 2) P ओयण्णो, P om. य. 3) J जुअइजुवलयं, J चिंतयं, P पि सहासिरं, P °लयं किं वच्चइ ता, J om. दे. 4) J मंतेय त्ति, P दीससि उक्कंपहासवसाखोयवेविर. 5) J तीय for तीए, J अउवं, J वत्तं for वुत्तं. 6) J आगओ पियसहि सो अ वल्लहो, P पियसहीए सो, P om. सव्वो, J om. पाणं. 7) J णिज्जंत्तणे, P पयत्ता केली कहं, P मडुमित्तेण, J कयण्णेण P कयन्तेण. 9) P तरंडनिडाला, P रणं व रसणा, JP फुरुफुरें°, J सुअण्णू P सतणू. 10) P अणुणिउं. 11) P कुप्पसि, J महं किंपि केण किंपि, P कंथ तुहं for तुज्झ किं. 13) P अवियारिय, P अज्जालज्ज, J तुमं for तुमे. 14) P एत्थ पुव्ववयणं, P हुं. 15) P तु अम्हे for तुम्हे, P ठिइय for ठइय, P रोइउं, P दइए से. 17) P भणिओ for कहिओ. 18) P om. पविट्ठो, P om. य. 19) J चेय. 20) J अच्छसु, P अम्हे घरंघरेसु, P निरूवियं, P पेच्छआओ. 21) J om. one किं, J om. स, J adds य before सहीओ. 23) P दुस्सिक्खियाए, P पायवडियस्स. 24) J कहं, J scores भणियाओ. 25) J आसणा. 27) P जइ for जय, P वासंसि, J दूर for सुट्ठु, P दुल्ललिया, J -मोल्ल णमोत्थु ए वीर. 28) P एव for एस, P मज्झं पुणो य सो चेय. 30) P दिण्णा. 31) P om. अहो, J ए for धण्णाए, P भणंतीए, J om. विलक्खा य जाया. 32) P उवणीओ, P समारोया सयणो, J पुणो सहि. 34) P घराघरेसुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १६२) चिंतियं च राइणा । 'अहो, णिब्भरो अणुराओ, णिउणो सही-सत्थो, वियड्ढो जुवाणो' त्ति । 'सव्वहा रमणीयं पेम्मं' ति चिंतयंतो गंतुं पयत्तो । तम्मि य रायमग्गे बहल-तमंधयारे दिट्ठं राइणा एक्कं णयर-चच्चरं । तत्थ य किं किं पि उद्धागारं चच्चर-खंभ-सरिसं लक्खियं । तं च दट्ठूण चिंतियं णरवइणा । 'अहो, किमेत्थ णयर-चच्चरे इमं लक्खिज्जइ । ता किं पुरिसो आउ थंभो त्ति । दे पुरिस-लक्खणाइं थंभ-लक्खणाइं चेय णिरूवेमि' । ताव चिंतयंतस्स समागओ तत्थ णयर-वसहो । सो य तत्थ गंतूण अवघसिउं पयत्तो, सिंगग्गेण य उल्लिहिउं । तं च दट्ठूण राइणा चिंतियं । 'अहो, ण होइ एस पुरिसो, जेणेस वसहो एत्थ परिघसइ अंगं ति । ता किं थंभो होही, सो वि ण मए दिट्ठो दिवसओ । ता किं पुण इमं' ति चिंतयंतो जाव थोवंतरं वच्चइ ताव पेच्छइ ।

तव-णियम-सोसियंगं कसिणं मल-धूलि-धूसरावयवं । दव-दड्ढ-थाणु-सरिसं चच्चर-पडिम-ट्ठियं साहुं ॥

तं च दट्ठूण चिंतियं राइणा । 'अहो धम्मणंदणस्स भगवओ एस संतिओ लक्खीयइ । तत्थ मए एरिसा रिसिणो दिट्ठ-पुव्वा । अहवा अण्णो को वि दुट्ठ-पुरिसो इमेणं रूवेणं होहिइ, ता दे परिक्खं करेमि' त्ति चिंतिऊण अयाल-जलय-विज्जुजलं असिवरं आयड्ढंतो पहाइओ 'हण हण' त्ति भणंतो संपत्तो वेएणं साहुणो मूलं । ण य भगवं ईसिं पि चलिओ । तओ जाणियं णरवइणा जइ एस दुट्ठो होंतो ता मए 'हण हण' त्ति भणिए पलायंतो खुहिओ वा होंतो । एस उण मंदर-सरिसो णिच्चलत्तणेणं, सायरो व्व अक्खोभत्तणेणं, पुहई-मंडलं खंतीए, दिवायरो तव-तेएणं, चंदो सोमत्तणेणं ति । ता एस धम्मणंदणस्स संतिओ होहिइ । ण सुंदरं च मए कयं इमस्स उवरिं महातवस्सिणो खग्गं कड्ढियं ति । ता खमावेमि एयं । एवं चिंतिऊण भणियं ।

'जइ वि तुमं सुसियंगो देव तुमं चेव तह वि बलिययरो । जइ वि तुमं मइलंगो णाणेण समुज्जलो तह वि ॥
जइ वि तुमं असहाओ गुण-गण-संसेविओ तह वि तं सि । जइ वि हु ण दंसणिज्जो दंसण-सुहओ तुमं चेय ॥
जइ वि तुमं अवहत्थो झाण-महा-पहरणो तह वि णाह । जइ वि ण पहरसि मुणिवर मारेसि तहावि संसारं ॥
जइ वि वइएस-वेसो देव तुमं चेय सव्व-जण-णाहो । जइ वि हु दीणायारो देव तुमं चेय सप्पुरिसो ॥
ता देव खमसु मज्झं अविणयमिणमो अयाण-माणस्स । मा होउ मज्झ पावं तुह खग्गाकरिसणे जं ति ॥'

भणंतो ति-पयाहिणं काऊण णिवडिओ चलण-जुवलए राया । गंतूण समाढत्तो पुणो णयरि-रच्छाए । जाव थोवंतरं वच्चइ ता पेच्छइ कं पि इत्थियं । केरिसिया सा । अवि य ।

कसिण-पड-पाउयंगी मूयल्लिय-णेउरा ललिय-देहा । रसणा-रसंत-भीरू सणियं सणियं पयं देंती ॥

§ १६३) तओ तं च दट्ठूण चिंतियं रायउत्तेण । 'दे पुच्छामि णं कत्थ चलिया एस' त्ति चिंतयंतो ठिओ पुरओ । भणियं च णेणं ।

'सुंदरि घोरा राई हत्थे गहियं पि दीसए णेय । साहसु मज्झ फुडं चिय सुयणु तुमं कत्थ चलिया सि ॥'

भणियं च तीए ।

'चलिया मि तत्थ सुंदर जत्थ जणो हियय-वल्लहो वसइ । भणसु य जं भणियव्वं अहवा मग्गं ममं देसु ॥'

भणियं च रायउत्तेण ।

'सुंदरि घोरा चोरा सूरा य भमंति रक्खसा रोद्दा । एयं मह खुडइ मणे कह ताण तुमं ण बीहेसि ॥'

तीए भणियं ।

'णयणेसु दंसण-सुहं अंगे हरिसं गुणा य हिययम्मि । दइयाणुराय-भरिए सुहय भयं कत्थ अल्लियउ ॥'

चिंतियं च राइणा । 'अहो, गुरुओ से अणुराओ, सव्वहा सलाहणीयं एयं पेम्मं । ता मा केणइ दुट्ठ-पुरिसेणं परिभवीयउ

---

1) P सहिसत्थो, P वियट्ठो. 2) P पेमं, J बहले, P om. य. 3) P -क्खंभ, P adds व before लक्खियं. 4) P किं वा for ता किं, P रे for दे, P om. थंभलक्खणाइं, P च for चेय. 5) J तत्थागंतूण, J उल्लहिउं. 6) P वसओ, P repeats after एत्थ a portion from above beginning with गंतूण व घसिउं पयत्तो सिंगग्गेण उल्लिहिउं etc. upto जेणेस वसओ एत्थ, P होहिई for होही, P हियइओ for दिवसओ. 7) P जाव for ताव. 9) P भगवत्तो, P लक्खियइ त्ति. 10) P ताहे for ता दे, P जल for जलय. 11) P आइड्ढंतो, J हणं ति. 12) P मारेह for ता मए, P खुभिओ. 13) P om. व्व, P पुहई व मंडलं खंतीओ. 14) J धम्मणंदणसंतिओ, P adds य before सुंदरं, P उवरिमस्सिणो खग्गं. 15) P om. एयं. 16) P ससियंगो, P om. चेव, P तह वि थंमवलियरो. 17) P संसेवि तह, P सि for हु. 18) P संसारे. 19) J वईएसवेसो P वइएसवासो, P सव्वजगनाहो, P सि for हु. 20) P अयाणणस्स, P खग्गुक्करिसणेणं ति. 21) P तिपयाहिणी काऊण, P जुयलए, J adds य after जाव. 22) P किं पि इच्छियं, P केरिसा य सा. 23) P पाउरंगी मूउल्लिय, P रसंति for रसंत. 24) J adds च after चिंतियं, J दे पेच्छामि, J ट्ठिओ. 25) J adds अवि य after णेणं. 26) P सुयण तुमं. 28) P चलियाम, P adds भणिय जं before भणियव्वं. 30) P भवंति, P मणो कह. 32) P फरिसं for हरिसं, P सुकय for सुहय. 33) J अहो गरुओ, P om. एयं, P केणइदुट्ठपुरिसेणं परिहविअओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एसा। दे धरं से पावेमि' त्ति चिंतयंतेण भणिया। 'वच्च वच्च, सुंदरि, जत्थ तुमं पत्थिया तं पएसं पावेमि। अहं तुज्झ रक्खो, मा बीहेसु' त्ति भणिए गंतुं पयत्ता, अणुमग्गं राया वि। जाव थोवंतरं वच्चंति ताव दिट्ठो इमीए ससंभमं एज्जमाणो सो चेय णिय-दइओ। भणियं च णेण।

'दइए ण सुंदरं ते रइयमिणं जं इमीएँ वेलाए। चलिया सि मज्झ वसइं अणेय-विग्घाएँ राईए॥

ए-एहि, सागयं ते। ता कुसलं तुह सरीरस्स।' तीए भणियं 'कुसलं इमस्स महाणुभावस्स महापुरिसस्स पभावेणं'। दिट्ठो य णेण राया। भणियं च णेण। 'अहो, को वि महासत्तो पच्छण्ण-वेसो परिभमइ' त्ति चिंतयंतेण भणियं अणेण जुवाणेण।

'ए-एहि सागयं ते सुपुरिस जीयं पि तुज्झ आयत्तं। जेण तए मह दइया अणहा हो पाविया एत्थ॥'

भणियं च राइणा।

'तं सुहओ तं रूवी तं चिय बहु-सिक्खिओ जुवाणाण। एइ गुण-पास-बद्धा जस्स तुहं एस धवलच्छी॥'

त्ति भणमाणो राया गंतुं पयत्तो। राईए बहले तमंधयारे णयर-मज्झम्मि बहुए वियड्ढ-जुवाण-जुवलय-जंपिय-हसिओग्गीय-विलासिए णिसामंतो संपत्तो पायारं। तं च केरिसं। अवि य।

तुंगं गयण-विलग्गं देवेहि वि जं ण लंघियं सहसा। पायालमुवगएणं फरिहा-बंधेण परियरियं॥

तं च पेच्छिऊण राइणा दिण्णं विज्जुक्खित्तं करणं। उप्पइओ णहंगणं। केरिसो य सो दीसिउं पयत्तो। अवि य।

विज्जुक्खित्ताइद्धो दीसइ गयणंगणे समुप्पइओ। अहिणव-साहिय-विज्जो इय सोहइ खग्ग-विज्जहरो॥

ण हु णवर लंघिओ सो पायारो तुंग-लग्ग-णह-मग्गो। पडिओ समपाओ च्चिय फरिहा-बंधं पि वोलेउं॥

अणुत्तुणो चेय गंतुं पयट्टो।

§ १६४) किं बहुणा संपत्तो तमुज्जाणं, जत्थ समावासिओ भगवं धम्मणंदणो। पविट्ठो य अणेय-तरुयर-पायव-वल्ली-लया-सविसेस-बहलंधयारे उज्जाण-मज्झम्मि। उवगओ य सिंदूर-कोट्टिम-समीवम्मि। दिट्ठा य णेण साहुणो भगवंते। कम्मि पुण वावारे वट्टमाणे त्ति।

केइ पढंति सउण्णा अवरे पाढेंति धम्म-सत्थाइं। अवरे गुणेंति अवरे पुच्छंति य संसए केइ॥
वक्खाणंति कयत्था अवरे वि सुणेंति के वि गीयत्था। अवरे रयंति कव्वं अवरे झाणम्मि वट्टंति॥
सुस्सूसंति य गुरुणो वेयावच्चं करेंति अण्णे वि। अण्णे सामायारिं सिक्खंति य सुत्थिया बहुसो॥
दंसण-रयणं अण्णे पालेंति य के वि कह वि चारित्तं। जिणवर-गणहर-रइयं अण्णे णाणं पसंसंति॥ अवि य।
सुत्तत्थ-संसयाइ य अवरे पुच्छंति के वि तित्थेय। णय-जुत्ते वादे जे करेंति अब्भास-वायम्मि॥
धम्माधम्म-पयत्थे के वि णिरूवेंति हेउ-वादेहिं। जीवाण बंध-मोक्खापयं च भावेंति अण्णे वि॥
तेलोक्क-वंदणिज्जे सुक्कज्झाणम्मि के वि वट्टंति। अण्णे दोग्गइ-णासं धम्मज्झाणं समल्लीणा॥
मय-माण-कोह-लोहे अवरे णिंदंति दिट्ठ-माहप्पा। दुह-सय-पउरावत्तं अवरे णिंदंति भव-जलहिं॥
इय देस-भत्त-महिला-राय-कहाणत्थ-वज्जियं दूरं। सज्झाय-झाण-णिरए अह पेच्छइ साहुणो राया॥

तं च दट्ठूणं चिंतियं राइणा। 'अहो, महप्पभावे भगवंते जहा-भणियाणुट्ठाण-रए। ता पेच्छामि णं कत्थ सो भगवं धम्मणंदणो, किं वा करेइ' त्ति चिंतयंतेण णिरूवियं जाव पेच्छइ एयंते णिविट्ठं। ताण तद्दियस-णिक्खंताणं पंचण्ह वि जणाणं धम्मकहं साहेमाणो चिट्ठइ। चिंतियं य राइणा। 'दे णिसुणेमि ताव किं पुण इमाणं साहिज्जइ' त्ति चिंतयंतो एक्कस्स तरुण-तमाल-पायवस्स मूले उवविट्ठो सोउं पयत्तो त्ति।

---

1 > P चिंतियंतेण, P वच्चावच्च. 2 > P मंतु for गंतुं. 3 > P सा चेय नियय-. 4 > P सुंदरं तो इयमिणं. 5 > J om. एएहि सागयं ते, J तीय. 6 > P तेण for णेण, P के वि, P चिंतियंतेण, P भणि।मणेण, P om. जुवाणेण. 7 > J सुवुरिस. 9 > P ईय for एइ, J जइ for जस्स. 10 > J om. त्ति, P राई बहले, J णायरमज्झंमि, P वियट्ट-, P जुवलजंपियहरियं, P om. सिओग्गीय-विलासिए etc. to बंधेण परियरियं. 13 > P । वं च दट्ठूण राइणा, P किरणं for करणं. 14 > P °क्खित्ताइद्धा, P गयणंगणं, P साहियव्विज्जो. 15 > P नवरं, J तुंगमग्गणहलग्गो, J वंधम्मि. 16 > P अणुत्तरो चेय, J पयत्तो।. 17 > J तरुपायव, P पायवल्ली. 18 > P बहुलंधयारे, P om. य, P समीवं।, P om. भगवंते. 20 > J पठंति, P सुणंति for गुणेंति, JP om. य, P संसयं, J केई. 21 > P om. कयत्था अवरे वि सुणेंति, P केइ गीयत्था, J रयंति. 22 > P समायारी. 23 > J सालेंति (some portion written on the margin) P पालंति, J om. अवि य. 24 > J संसयाई, P तत्थेय, P सद्दत्थोभयजुत्तो for णयजुत्ते, J वादे ये P वादे य, P अब्भासं।. 25 > P केइ, P हेउवाएहिं, P मोक्खोगइं च, J पावेंति for भावेंति. 26 > P वंदणिज्जा. 27 > P माहप्पे. 28 > P वज्जिया. 30 > P om. त्ति, JP चिंति° for चिंत°, P अंतो for एयंते, P तद्दियहदिक्खियाणं पंचण्ह. 31 > P om. चिट्ठइ, P दे सणियं सुणेमि. 32 > P मूले उवस्स मूले उव:°

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§१६५) भणियं च भगवया धम्मणंदणेण । 'देवाणुप्पिया,
पयडं जिणवर-मग्गं पयडं णाणं च दंसणं पयडं । पयडं सासय-सोक्खं तहा वि बहवे ण पार्वेति ॥
पुहवी-जल-जलणाणिल-वणस्सई-णेय-तिरिय-भेएसु । एएसु के वि जीवा भमंति ण य जंति मणुयत्तं ॥
मणुयत्तणे वि लद्धे अंतर-दीवेसु णेय-रूवेसु । अच्छंति भमंत च्चिय आरिय-खेत्तं ण पार्वेति ॥
आरिय-खेत्तम्मि पुणो णिंदिय-अहमासु होंति जाईसु । जाइ-विसुद्धा वि पुणो कुलेसु तुच्छेसु जायंति ॥
सुकुले वि के वि जाया अंधा बहिरा य होंति पंगू य । वाहि-सय-दुक्ख-तविया ण उणो पार्वेति आरोग्गं ॥
आरोग्गम्मि वि पत्ते बाल च्चिय के वि जंति काल-वसं । के वि कुमारा जीवा इय दुलहं आउयं होइ ॥
वास-सयं पि जियंता ण य बुद्धिं देंति कह वि धम्मम्मि । अवरे अवसा जीवा बुद्धि-विहूणा मरंति पुणो ॥
अह होइ कह वि बुद्धी कम्मोवसमेण कस्स वि जणस्स । जिण-वयणामय-भरियं धम्मायरियं ण पार्वेति ॥
अह सो वि कह वि लद्धो साहइ धम्मं जिणेहिँ पण्णत्तं । णाणावरणुदएणं कम्मेण ण ओग्गहं कुणइ ॥
अह कह वि गेण्हइ च्चिय दंसण-मोहेण णवरि कम्मेण । कु-समय-मोहिय-चित्तो ण चेय सद्धं तहिं कुणइ ॥
अह कुणइ कह वि सद्धं जाणंतो चेय अच्छए जीवो । ण कुणइ संजम-जोयं वीरिय-लद्धीएँ जुत्तो वि ॥
इय हो देवाणुपिया दुलहा सव्वे वि एत्थ लोयम्मि । तेलोक्क-पायड-जसो जिणधम्मो दुल्लहो तेण ॥
भणियं च भगवया सुधम्मसामिणा ।

माणुस्स-खेत्त-जाई-कुल-रूवारोग्गमाउगं बुद्धी । समणोग्गह-सद्धा संजमो य लोगम्मि दुलहाइं ॥
एक्के ण-यणंत च्चिय जिणवर-मग्गं ण चेय पावंति । अवरे लद्धे वि पुणो संदेहं णवर चिंतेंति ॥
अण्णाण होइ संका ण-याणिमो किं हवेज्ज मह धम्मो । अवरे भणंति मूढा सव्वो धम्मो समो चेय ॥
अवरे बुद्धि-विहूणा रत्ता सत्ता कुतित्थ-तित्थेसुं । के वि पसंसंति पुणो चरग-परिव्वाय-दिक्खाओ ॥
अवरे जाणंति च्चिय धम्माहम्माण जं फलं लोए । तह वि य करेंति पावं पुव्वज्जिय-कम्म-दोसेण ॥
अवरे सामण्णम्मि वि वट्टंता राग-दोस-वस-मूढा । पेसुण्ण-णियडि-कोवेहिँ भीम-रूवेहिँ घेप्पंति ॥
अण्णे भव-सय-दुलहं पाविऊणं जिणिंद-वर-मग्गं । विसयासा-मूढ-मणा संजम-जोए ण लग्गंति ॥
ण य होंति ताण भोया ण य धम्मो अलिय-विरइयासाणं । लोयाण दोण्ह चुक्का ण य सग्गे णेव य कुलम्मि ॥
अवरे णाणत्थद्धा सव्वं किर जाणियं ति अम्हेहिं । पेच्छंत च्चिय डज्झा जह पंगुलया वण-दवेणं ॥
अवरे तव-गारविया किर किरिया मोक्ख-साहणा भणिया । डज्झंति ते वि मूढा धावंता अंधया चेव ॥
इय बहुए जाणंता तह वि महामोह-पसर-भर-मूढा । ण करेंति जिणवराणं आणं सोक्खाण संताणं ॥'

एत्थंतरम्मि चिंतियं णरवइणा तमाल-पायवंतरिएण । 'अहो, भगवया साहियं दुलहत्तणं जिणवर-मग्गस्स । ता सव्वं सच्चमेयं । किं पुण इमं पि दुलहं रज्ज-महिला-घर-परियण-सुहं । एयं अणुपालिय पच्छा धम्मं पेच्छामो' त्ति चिंतयंतस्स भगवया लक्खिओ से भावो । तओ भणियं च से पुणो भगवया धम्मणंदणेणं ।

जं एयं घर-सोक्खं महिला-मइयं च जं सुहं लोए । तमणिच्चं तुच्छं चिय सासय-सोक्खं पुणो णंतं ॥ जहा ।

§१६६) अत्थि पाडलिपुत्तं णाम णयरं । तत्थ वाणियओ धणो णाम । सो य धणवइ-सम-धणो वि होऊण रयणदीवं जाणवत्तेण चलिओ । तस्स य वच्चमाणस्स समुद्द-मज्झे महा-पवण-रूविणा देव्वेण वीई-हिंदोलयारूढं कह कह वि टस त्ति दलियं जाणवत्तं । सो य वाणियओ एक्कम्मि दलिय-फलहए वलग्गो, तरंग-रंगंत-सरीरो कुडंगदीवं णाम दीवं तत्थ सो पत्तो । तत्थ य तण्हा-छुहा-किलंतो किंचि भक्खं मग्गइ जाव दिट्ठो सो दीवो । केरिसो । अवि य ।

1 > P देवाणुपिया. 2 > J बहुए for बहवे. 3 > P जलणानिल, P भेदेसु, P कि वि जीवा. 4 > P अच्छंति भमंतं चिय. 5 > P निंदियधतमा य होंति. 6 > J पंगू या, P वाहिय, P उनगो for ण उणो, P om. आरोग्गं. 8 > P अवरे अवरे for अवसा, J होवि P होंति for होइ, P कस्सइ जणस्स. 10 > P कह कह for अह सो वि. 11 > P कह for अह, P गेहिए for गेण्हइ, P सद्धिं. 13 > J अ॰ for इय, J दुलहं सव्वंमि एत्थ. 15 > P °रोग्गमाउयं, J लोयंमि. 16 > J णयणंति, P चियं, P चेव, J पावेंति, P चिंतंति. 18 > P कुतित्थेसु, P चरय for चरग. 19 > P धंमाधंमाण, P पुव्वकियकंम. 20 > J रायदोस. 21 > J दुलहं, J मूढमणो. 22 > J भोयाण for लोयाण, J य मग्गे णत्तिअकुलंमि. 23 > P नाणं सव्वं एयं किर, P पेच्छंति य च्चिय दड्ढा (J डड्ढा?) जह. 24 > P किरि for किर, P मूढो. 27 > J om. पि, P दुलहरज्जं, P अणुपालियं, JP पेच्छामो. 28 > P भावा । ततो भणियं पुणो पि भगवया. 30 > P पाडलिउत्तं, P वणिओ. 31 > P रयणदीवं, P om. महा, P देवेण, P कहं कहं पि दस त्ति स दलियं. 32 > P फलिहए विलग्गो, P कुडंगदीवं, J णाम दीवं. 33 > P तत्थ य संपत्तो, P om. तत्थ य, JP daṇḍa after मग्गइ.

अप्फल-कडुय-कुडंगो कंटय-खर-फरुस-रुक्ख-सय पउरो । हरि-पुलि-रिच्छ-दीविय-सिव-सउण-सएहिँ परियरिओ ॥
मल-पंक-पूइ-पउरो भीम-सिवाराव-सुव्वमाण-रवो । दोस-सय-दुक्ख-पउरो कुडंगदीवो त्ति णामेणं ॥

तम्मि य तारिसे महाभीमे उव्वियणिज्जे भमिउं सो समाढत्तो । तेण य तत्थ भमंतेण सहसा दिट्ठो अण्णो पुरिसो । पुच्छिओ य सो तेण 'भो भो, तुमं कत्थेत्थ दीवे' । तेण भणियं 'मह सुवण्णदीवे पत्थियस्स जाणवत्तं फुडियं, फलयालग्गो य एत्थ संपत्तो' । तेण भणियं 'पयट्ट, समं चेय परिभमामो' । तेहि य परिभममाणेहिं अण्णो तइओ दिट्ठो पुरिसो । तओ तेहिं पुच्छिओ 'भो भो, तुमं कत्थेत्थागओ दीवे' । तेण भणियं 'मह लंकाउरिं वच्चमाणस्स जाणवत्तं दलियं, फलहयालग्गो एत्थ संपत्तो' त्ति । तेहिं भणियं 'सुंदरं, दे सम-दुक्ख-सहायाणं मेत्ती अम्हाणं । ता एत्थ कहिंचि तुंगे पायवे भिण्ण-वहण-चिंधं उब्भेमो' । 'तह' त्ति पडिवज्जिऊण उब्भियं वक्कलं तरुवर-सिहरम्मि । तओ तण्हा-छुहा-किलंता असणं अण्णेसिऊणं पयत्ता । ण य किंचि पेच्छंति तारिसं रुक्खं जत्थ किर फलं उप्पज्जइ त्ति । तओ एवं परिभमणुव्वाएहिं दुक्ख-सय-विहलेहिं कह-कहं पि पावियाइं घरायाराइं तिण्णि कुडंगाइं । तत्थ एक्केकम्मि कुडंगे एक्केका काउंबरी । तं च पेच्छिऊण ऊससियं हियएणं, भणिऊण य समाढत्ता । 'अहो, पावियं जं पावियव्वं, णिव्वुया संपयं अम्हे, संपत्ता जहिच्छियं सोक्खं' त्ति भणमाणेहिं विरिक्काइं तेहिं अवरोप्परं कुडंगाइं । पलोइयाणि य तेहिं काउंबरीहिं फलाइं । ण य एक्कं पि दिट्ठं । तओ दीण-विमण-दुम्मणा फुट्ट-मुहा कायल-लीव-सरिसा अच्छिउं पयत्ता । तओ केण वि कालंतरेण मणोरह-सएहिं णव-कक्कस-सणाहाओ आयाओ ताओ काउंबरीओ । तओ आसाइयं किंचि-मेत्त-फलं । तहा तत्थ णिबद्धासा तम्मणा तल्लेसा जीविय-वल्लहाओ ताओ काउंबरीओ सउण-कायलोवद्दवाणं रक्खंता अच्छिउं पयत्ता । अच्छंताण य जं तं तेहिं कयं भिण्ण-वहण-चिंधं तं पेच्छिऊण कायव्व-करुणा-परिगएणं केणावि वणिएण दोणिं घेत्तूण पेसिया णिज्जामय-पुरिसा । ते य आगंतूण तं दीवं अण्णिस्संति । दिट्ठा य तेहिं ते तिण्णि पुरिसा कुडंग-काउंबरी-बद्ध-जीवियासा । भणिया य तेहिं णिज्जामय-पुरिसेहिं । 'भो भो, अम्हे जाणवत्त-वइणा पेसिया, ता पयट्टह, तडं णेमो, मा एत्थ दुक्ख-सय-पउरे कुडंग-दीवे विवज्जिहिह' त्ति । तओ भणियं तत्थ एक्केण पुरिसेण । 'किमेत्थ दीवे दुक्खं, एयं घरं, एसा काउंबरी फलिया, पुणो पच्चीहिइ । एयं असणं पाणं पि कालेण वुट्ठे देवे भविहिइ त्ति । किं च एत्थ दुक्खं, किं वा तत्थ तीरे अवरं सुहं ति । ता णाहं वच्चामि । जलहि-मज्झे वट्टमाणस्स एयं पि ण हवीहइ' त्ति भणिऊण तत्थेय ट्ठिओ । तओ तेहिं णिज्जामय-पुरिसेहिं बिइओ भणिओ । सो वि वोत्तुं पयत्तो । 'सव्वमिणं दीवं दुह-सय-पउरं, ण एत्थ तारिसं मणुण्णं सुहं । किंतु इमाइं उडयाइं, इमा य वराइणी काउंबरी फलिया मए परिचत्ता सउण-कायल-प्पमुहेहिं उवद्दवीहिइ त्ति । ता इमाए पिक्काए फलं उवभुंजिऊण पुणो को वि णिज्जामओ एहिइ, तेण समयं वच्चीहामि, ण संपडइ संपयं गमणं' ति भणिऊण सो वि तम्मणो तत्थेव ट्ठिओ त्ति । तओ तेहिं तइओ पुरिसो भणिओ 'पयट्ट, वच्चामो' । तेण भणियं । 'सागयं तुम्हाणं, सुंदरं कयं जं तुम्हे आगया । तुच्छमिणं एत्थ सोक्खं अणिच्चं च । बहु-पच्चवाओ य एस दीवो । ता पयट्टह, वच्चामो' त्ति भणमाणो पयट्टो तेहिं णिज्जामएहिं समयं । आरूढो य दोणीए । गया तडं । तत्थ पुत्त-मित्त-कलत्ताणं धण-धण्ण-संपयाए य मिलिया सुहं अणुहवंति । ता किं । भो,

देवाणुपिया एसो दिट्ठंतो तुम्ह ताव मे दिण्णो । जह एयं तह अण्णं उवणयमिणमो णिसामेहि ॥

§ १६७) जो एस महाजलही संसारं ताव तं वियाणाहि । जम्म-जरा-मरणावत्त-संकुलं तं पि दुत्तारं ॥
जो उण कुडंग-दीवो माणुस-जम्मो त्ति सो मुणेयव्वो । सारीर-माणसेहिँ य दुक्खेहिँ समाउलो सो वि ॥
जे तत्थ तिण्णि पुरिसा ते जीवा होंति तिप्पयारा वि । जोणी-लक्खाउ चुया मणुस्स-जम्मम्मि ते पत्ता ॥
तत्थ वि उडय-सरिच्छा तिण्णि कुडंगा घरेहिँ ते सरिसा । काउंबरीओ जाओ महिलाओ ताण ता होंति ॥
जाइं तत्थ फलाइं ताइं ताणं तु पुत्त-भंडाइं । अलिय-कयासा-पासा तं चिय रक्खंति ते मूढा ॥

1) P कुड for कडुय, P फरुसयपउरो, P हरिफुलिरिंछ. 3) J भमिऊण, P om. सहसा. 4) P om. य, P अहं for मह, P फलहया°, P om. य. 5) J परिब्भमामो, P om. य, J om. तओ. 6) J om. भो भो, P कत्थेत्थ दीवे, P मम for मह, P फलहयाविलग्गो. 7) P सुंदर, P सुक्ख for दुक्ख, P पच्छा for एत्थ, J चिंधं (?) उब्भेमो. 8) P उब्भिउं. 9) P एक्कं, P उप्पट्ठाइ, J om. तओ, P परिब्भम°, P कहिं for कहकहं पि. 10) P घरागाराइं, P एक्केक्कं पि कुडंमे एक्केक्को, P ससियं for ऊससियं. 11) P adds जं after अहो, J जइच्छियं P कहिच्छियं, J विरिक्कायाइं. 12) J om. य, P विमणा फुट्ट. 13) J काय for कायल, P सरीसा, P तेण for केण, J कक्कसणाहाओ. 14) P कादंबरीओ, P आसादय, P om. मेत्त, JP फला, J om. तहा. 15) J कहिअं for कयं, J चिंधं. 16) P दोणी, J अण्णिसंति. 17) P om. तेहिं, J om. ते, P कुडुंगा य काउं°, P om. बद्ध, J अम्हेहिं for अम्हे. 18) J कुंडग, P विवज्जिह त्ति. 19) P पुणो वच्चिह त्ति, J वुट्ठो देवो. 20) P भविहिति त्ति, P किं चि, P अवरि सुह ति, P न भविहि त्ति. 21) P तत्थेव, P बीओ for बिइओ, J सव्वं णिमं. 22) P पउरंग न, P इमाइं वरा°. 23) P उवद्दविहि त्ति, J om. त्ति, P इमीए पक्काए, P निज्जामए ओहिइं. 24) P वच्चीहामी, J विमणो for तम्मणो. 25) P तुब्भे, J तुच्छं णिमं एत्थ. 26) P om. ता, P पयट्ट, J om. य. 27) P om. य before मिलिया, P om. ता किं भो. 28) P देवाणुप्पिया एस, J तुम्हाणं P अम्हं for तुम्ह (emended). 30) P माणुसेहिं. 31) P वि भमिऊण जोणिलक्खाउ माणुसजंमंमि ते पयत्ता ॥. 32) P य for वि, J पुरिसा for सरिसा, J जा वि य for जाओ, P om. ताण. 33) P कया माया तं चिय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दारिद्द-वाहि-दुह-सय-सउणाणं रक्खए उ तं मूढो । ताणं चिय सो दासो ण-यणइ जं अत्तणो कज्जं ॥
जे णिज्जामय-पुरिसा धम्मायरिया भवंति लोगम्मि । जा दोणी सा दिक्खा जं तीरं होइ तं मोक्खं ॥
संसार-दुक्ख-तविए जीवे तारेंति ते महासत्ता । जंगम-तित्थ-सरिच्छा चिंतामणि-कप्परुक्ख-समा ॥
तुच्छा एए भोया माणुस-जम्मम्मि णिंदिया बहुसो । ता पावसु सिद्धि-सुहं इय ते मुणिणो परूवेंति ॥
तत्थेक्को भणइ इमं एयं चिय एत्थ माणुसे दीवे । जं सोक्खं तं सोक्खं मोक्ख-सुहेणावि किं तेण ॥
पुत्त-पिइ-दार-बंधू-माया-पासेहिँ मोहिओ पुरिसो । तं चिय भण्णइ सोक्खं घर-वास-परेण धम्मेण ॥
साहेंताण वि धम्मं तीर-सुहं जइ य ताण पुरिसाण । ण य तं मोत्तुं वच्चइ केण वि मोहेण मूढप्पा ॥
सो जर-मरण-महाभय-पउरे संसार-णयर-मज्झम्मि । गड्डा-सूयर-सरिसो रमइ च्चिअ जो अभव्व-जिओ ॥
बिइओ वि काल-भविओ पडिवज्जइ मुणिवरेहिँ जं कहियं । तीरं ति गंतुमिच्छइ किंतु इमं तत्थ सो भणइ ॥
भगवं घरम्मि महिला सा वि विणीया य धम्मसीला य । मुंचामि कस्स एयं वराइणिं णाह-परिहीणं ॥
पुत्तो वि तीय-जोग्गो तस्स विवाहं करेमि जा तुरियं । दुहिया दिण्ण च्चिय मे अण्णो पुण बालओ चेय ॥
ता जाव होइ जोग्गो ता भगवं पव्वयामि णियमेण । अण्णो वि ताव जाओ ते वि पलासा य ते दिग्घा ॥
णाऊणं जिण-वयणं जं वा तं वा वलंबणं काउं । अच्छंति घरावासे भविया कालेण जे पुरिसा ॥
तइओ उण जो पुरिसो सोऊणं धम्म-देसणं सहसा । संसार-दुक्ख-भीरू चिंतेऊणं समाढत्तो ॥
वाहि-भव-पाव-कलिमल-कंटय-फरुसम्मि मणुय-लोगम्मि । अच्छेज्ज को खणं पि विमोक्ख-सुहं जाणमाणो वि ॥
घर-वास-पास-बद्धा अलिय-कयासावलंबण-मणा य । गेण्हंति णेय दिक्खं अहो णरा साहस-विहूणा ॥
ता पुण्णेहिँ महं चिय संपत्ता एत्थ साहुणो एए । दिक्खा-दोणि-वलग्गा तीर-सुहं पाविमो अम्हे ॥
कणयं पि होइ सुलहं रयणाणि वि णवर होंति सुलहाइं । संसारम्मि वि सयले धम्मायरिया ण लब्भंति ॥
ता होउ मह इमेणं जम्म-जरा-मरण-दुक्ख-णिलएणं । पावेमि सिद्धि-वसइं तक्खण-भव्वो इमं भणइ ॥
ता मा चिंतेसु इमं एयं चिय एत्थ सुंदरं सोक्खं । उंबरि-कुडंग-सरिसं तीर-सुहाओ विमोक्खाओ ॥ त्ति ।

§ १६८) एत्थंतरम्मि भणियं चंडसोमप्पमुहेहिं पंचहिँ वि जणेहिं ।

'जइ आणवेसि भगवं पडिवज्जामो तहेय तं सव्वं । जं पुण तं दुच्चरियं हियए सल्लं व पडिहाइ ॥'

भणियं च भगवया धम्मणंदणेणं ।

'एयं पि मा गणेज्जसु जं किर अम्हेहिँ पाव-कम्मं ति । सो होइ पाव-कम्मो पच्छायावं ण जो कुणइ ॥
सो णत्थि कोइ जीवो चउ-गइ-संसार-चारयावासे । माइ-पिइ-भाइ-भइणीओ णंतसो जेण णो वहिया ॥
ता मारिऊण एक्को णिंदण-गुरु-गरहणाहिँ सव्वाहिं । लहुयं करेइ पावं अवरो तं चेय गरुएइ ॥
तुब्भे उण सप्पुरिसा कह वि पमाएण जे करेउं जे । पावं पुणो णियत्ता जेण विरत्ता घरासाओ ॥

इमं च एत्थ तुब्भेहिं पायच्छित्तं करणीयं' ति साहियं किं पि सणियं धम्मणंदणेणं । तं च राइणा ण सुयं ति । एत्थंतरम्मि

इंदिय-चोरेहिँ इमो पडिवज्जइ इय मुसिज्जए लोए । जायम्मि अड्ड-रत्ते धुक्करियं जाम-संखेण ॥

ताव य चिंतियं राइणा । 'दुट्ठु मे चिंतियं जहा इमम्मि मयण-महूसवे किं करेंति साहुणो । ता को अण्णो इमाणं वावारो त्ति । अवि य ।

जं कणयं कणयं चिय ण होइ कालेण तं पुणो लोहं । इय णाण-विसुद्ध-मणा जे साहू ते पुणो साहू ॥ सव्वहा
जं जं भणंति गुरुणो अज्ज पभायम्मि तं चिय करेमि । को वा होज्ज सयण्णो इमस्स आणं ण जो कुणइ ॥' त्ति ।

---

1 > J सो for तं, J दोसो for दासो, P नयणं for णयणइ. 2 > P हवंति, J लोअम्मि, P जा for जं, P होंति तं. 3 > P तारंति, P मे for ते, P कप्प for तित्थ, P inter. रुक्ख & कप्प. 5 > P तत्थेक्को. 6 > P पित्तपियदारबंधू, P मायाइ for पासेहिं, P भणइ for भण्णइ. 7 > P तीरसुजं जह. 8 > P गत्ता for गड्डा, P रइमइ for रमइ, J अइव्व. 9 > J य for वि, P om. ति. 10 > P मुच्चामि for मुंचामि, P वराइणी. 11 > P उण for पुण. 12 > P ता होइ जो व जोग्गो, J य त दिघा. 15 > J मणुअलोअंमि, J जो for को. 16 > J कसायावलंबणमणा या।. 17 > P साहुणा, P विलग्गो. 18 > J रयणाइं णवर. 19 > P वसहिं. 20 > P मुक्खं for सोक्खं, P कुडुंग. 21 > J मि for वि. 22 > P तहेव, P om. तं after पुण, P दुच्चरियाइं, P सल्लि. 25 > P को वि जीवो, J माइपियि P मायपिय, P अणंतसो for णंतसो. 26 > J एक्कं for एक्को, P गुरुएइ. 27 > P तुम्हे for तुब्भे, P नियत्ता for विरत्ता. 28 > P भणियं for सणियं, J सुतं ति।, P om. एत्थंतरम्मि. 29 > P लोओ. 32 > P om. सव्वहा. 33 > P पहायंमि, P सउण्णो.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

अवि य चिंतयंतो राया गंतुं पयत्तो। चिंतियं च णरवइणा। 'अहो, ण-याणीयइ गुरुणा अहं जाणिओ ण व त्ति इहागओ। अहवा किं किंचि अत्थि तेलोक्के जं ण-याणइ भगवं धम्मणंदणो। ता किं पयडं चिय वंदामि। अहवा णहि णहि, इमं एयं समुब्भड-भीसणं मुणियण-चरिय-विरुद्धं वेस-गहणं भगवओ दंसयामि लज्जणीयं ति। ता माणसं चिय करेमि पणामं।

जय संसार-महोवहि-दुक्ख-सयावत्त-भंगुर-तरंगे। मोक्ख-सुह-तीर-गामिय णमोत्थु णिज्जामय-सरिच्छ ॥'

त्ति चिंतयंतो णिग्गओ उज्जाणाओ, संपत्तो पायारं, दिण्णं विज्जुक्खित्तं करणं, लंघियं, संपत्तो रायमग्गं, पत्तो धवलहरं, आरूढो पासाए, पविट्ठो वासहरं, णिसण्णो पलंके, पसुत्तो य।

§ १६९) साहुणो भगवंते कय-सज्झाय-वावारे कयावस्सय-करणे य खणंतरं णिद्दं सेविऊण विबुद्धे वेरत्तियं कालं काउमाढत्ता। एत्थ य अवसरे किंचि-सेसाए राईए, अरुणप्पभा-रंजिए सयले गयणंगणाभोए, महु-पिंगलेसु मुत्ताहलेसु व तारया-णियरेसु, पढियं इमं पाहाउय-दुवइ-खंडयं बंदिणा। अवि य।

अवर-समुद्द-तीर-पुलिणोयरए परिमंद-गमणियं। विरहुब्वेय-दुक्ख-परिपंडुरियं ससि-चक्कवाइयं ॥

पुव्वोयहि-तीरयाओं संगम-रहसुड्डीण-देहओ। इच्छइ अहिलसिऊण दइयं पिव तं रवि-चक्कवायओ ॥

जोण्हा-जल-पडिहत्थए गयण-सरे णिम्मले पहायम्मि। मउलइ अरुणाइद्धउ तारा-चंदुज्जयाण सत्थओं वि ॥

णाणा-णयण-मणो-हरिय तउ अंगेहिं विलसंत। मेल्लि भडारा णिद्द तुहुं अण्णु विइज्जिय कंत ॥

इमं च बंदिणा पढियं णिसामिऊण जंभा-वस-वलिउव्वेल्लमाण-बाहु-फलिहो णिद्दा-घुम्मिरायंब-णयण-जुवलो समुट्ठिओ राया सयणाओ। कयं च कायावस्सय-करणीयं। उवगओ अत्थाण-मंडवं जाव ओक्कारिओ वासवेण। भणियं च राइणा 'भो भो वासव, कीस ण वच्चिमो भगवओ धम्मणंदणस्स पाय-मूलं'। भणियं च वासवेणं 'जहा पहू आणवेइ' त्ति। पयत्ता गंतुं, समारूढा य वारुया-करिणिं, णिग्गया य णयरीओ। संपत्ता तमुज्जाणं। वंदिओ भगवं धम्मणंदणो साहुयणो य। पुच्छिया य भगवया पउत्ती, साहिया य णेहिं। भणियं च भगवया। 'भो भो महाराय पुरंदरदत्त, किं तुह वट्टइ किंचि हिययम्मि'। तओ राइणा चिंतियं। 'णिस्संसयं जाणिओ भगवया इहागओ' त्ति चिंतयंतेण भणियं च णेण। 'भगवं, जारिसं तए समाइट्ठं तारिसं सव्वं पडिवण्णं। किंतु इमे कुडंग-काउंबरी-फलाणि मोत्तुं ण चाएमि। ता इह-ट्ठियस्स चेय देसु भगवं, किंचि संसार-सागर-तरंडयं' ति। भगवया भणियं। 'जइ एवं, ता गेण्ह इमाइं पंचाणुव्वय-रयणाइं, तिण्णि गुण-व्वयाइं, चत्तारि सिक्खावयाइं, सम्मत्त-मूलं च इमं दुवालस-विहं सावय-धम्मं अणुपालेसु' त्ति। तेणावि 'जहाणवेसि' त्ति भणमाणेण पडिवण्णं सम्मत्तं, गहियाइं अणुव्वयाइं, सव्वहा गहियाणुव्वओ अणण्ण-देवो जाओ राया पुरंदरदत्तो। वासवो वि तुट्ठो भणिउमाढत्तो। 'भगवं, किं पि तुम्हाणं वुत्तंतं अम्हे ण-याणिमो'। भगवया भणियं। 'इमो चेय कहइस्सइ त्ति। अम्हाणं सुत्तत्थ-पोरिसीओ अइक्कमंति। गंतव्वं च अज्ज अम्हेहिं'। इमं च सोऊणं मण्णु-भर-कंठ-गग्गर-गिरेहिं भणियमणेहिं। अवि य।

'अम्हारिसाण कत्तो हिययइच्छिय-दइय-संगम-सुहेल्ली। एयं पि ताव बहुयं जं दिट्ठं तुम्ह चलण-जुयं ॥

ता पुणो वि भगवं, पसाओ करियव्वो दंसणेणं' ति भणमाणा णिवडिया चलण-जुवलए भगवओ। अभिणंदिऊण य तिउणं पयाहिणं काऊण पविट्ठा कोसंबीए पुरवरीए। भगवं पि सुत्तत्थ-पोरिसिं करिय तप्पभिइं च सिव-सुह-सुभिक्ख-खेत्तेसु विहरिउं पयत्तो। भगवं गच्छ-परिवारो। ते वि थोवेणं चिय कालेणं अधीय-सुत्तत्था जाया गीयत्था पंच वि जणा। ताणं च एग-दियह-वेला-समवसरण-पव्वइयाणं ति काऊण महंतो धम्माणुराय-सिणेहो जाओ त्ति।

§ १७०) अह अण्णया कयाइ ताणं सुहं सुहेण अच्छमाणाणं जाओ संलावो। 'हो हो, दुलहो जिणवर-मग्गो, ता कह पुण अण्ण-भवेसु पावेयव्वो त्ति। ता सव्वहा किमेत्थ करणीयं' ति चिंतिऊण भणिओ पाय-पडणुट्ठिएहिं चंडसोम-जेट्ठओ। अवि य।

1) P om. चिंतयंतो राया गंतुं पयत्तो। etc. to ता माणसं चिय करेमि पणामं।. 4) P जइ संसारमहोयहिदुग्गसयावत्त, P मोक्खस्स तीर. 5) P किरणं for करणं. 6) P वासहरंमि निवण्णो. 7) J adds वि before भगवंते, P सेविऊण विबुद्धो वेरत्तियं कालं काउमाढत्तो. 8) P om. य, P अरुणपहारं°, J अ for व. 9) P दुआइखंडलयबंदिणो. 10) P विरहु-वेयदुक्खपरिपंडुरियंससेसि. 11) P संगमरहं, JP °सुड्डीण, P पुच्छइ अहिलिऊण दइयं, P चक्कवाइओ. 12) J पडिच्छए P पडहच्छए, P अरुणाइट्ठओ, P चंदुज्जुयाण. 13) P राइणा सयण मणो for णाणा etc., P अं for अंगेहिं, J णिद्द (?), P अन्नइ वियज्जिय. 14) P जं तावस, P जुयलो. 15) P om. जाव, P जोकारिओ. 16) P जइ, JP पयत्तो. 17) P समारूढो. P करिणिं, P साहुणो. 18) P om. य before णेहिं, P महा for महाराय. 19) P निस्संदिट्ठं जाणिओ, JP चिंतियंतेण. 20) P कुडयकाउंबरी, J adds त्ति after चाएमि. 21) P ट्ठिय चेय. 22) P दुवालसविधं. 23) P जहाणवेसु, P अणण्णदेवो. 24) P तुम्हाणं पुव्ववुत्तंतं. 25) P कहिस्सइ, P पोरिसीओ. 26) P om. कंठ. 27) P om. दइय, P एयंमि ताव. 28) After अभिणंदिऊण य P repeates °ट्ठं तुम्ह चलणजुयं etc. to अभिणंदिऊण य. 29) J rightly restores पविट्ठा P पविट्ठो, P om. पि, P पोरिसी, J तप्पभूइं, P च सुविसुहसुहेक्कखेत्तेसु. 30) P परियालो।, J अधीद-. 31) P एक्क for एग, P पव्वइयाण काऊण. 32) J कयाई, P adds त्ति after मग्गो. 33) P om. ति, P adds य before भणिओ, P पायवडणु°, J चंडसोम्म-. 34) P -जेट्ठज्जो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जइ थोव-कम्मयाए अण्ण-भवे होज्ज अइसओ तुज्झ । ता जत्थ ठिया तत्थ तए संमत्तं अम्ह दायव्वं ॥
पुव्व-ठिईए एयं अम्ह सिणेहोवयार-पक्खेहिं । सुविहिय तं पडिवज्जसु इच्छा-कारेण साहूणं ॥'

णिवडिया भणमाणा पाएसु । भणियं च चंडसोमेणं ।

'जइ होज्ज अइसओ मे तुम्हे वि य होज्ज मणुय-लोगम्मि । पंचिंदियत्त्व-सण्णी ता पडिवण्णं ण अण्णत्थ ॥'

तओ तेहिंमि चउहिंमि जणेहिं भणिओ माणभडो 'इमं चेय' । तत्थ तेणावि 'तह' त्ति पडिवण्णं । तो तेहिं चउहिं मि भणिओ मायाइच्चो । तेणावि 'इत्थं' ति पडिभणियं । तओ लोहदेवो, पुणो मोहदत्तो त्ति । एवं अवरोप्पर-कय-समय-संकेय-सम्मत्त-लंभब्भुयय-मग्गिरा अच्छिउं पयत्ता । एवं च पव्वज्ज-किरिया-णाण-झाण-वावडाणं च ताणं वच्चइ कालो । किंतु सो चंडसोमो देस-सभावेणं चेय कहिंचि कारणंतरे कोवण-सहावो, मायाइच्चो वि मणयं माया-णियडि-कुडिल-हियवओ । सेसा उण पडिभग्ग-कसाय-पसरा पव्वज्जमणुपालेंति । कालेण य सो लोभदेवो णिययाउयं पालिऊण कय-संलेहणा-कम्मो णाण-दंसण-चारित्त-तवाराहणाए चउक्खंधाए वि पाण-परिच्चायं काऊण तप्पाओग्ग-परिणाम-परिणय-पुव्व-बद्ध-देवत्तण-णाम-गोत्तो मरिऊण सोहम्मे कप्पे उववण्णो ।

§ १७१) जं च केरिसं । अवि य ।

णिम्मल-रयण-विणिम्मिय-तुंग-विमाणोह-रुद्ध-गयणवहं । रम्म-मणि-कूड-रइयं सिरि-णिलयं णंदणवणं व ॥

कहिंचि सुर-कामिणी-गीय-मणहरं, कहिंचि रयण-रासि-पज्जलिउज्जलं, कहिंचि वीणा-रव-सुव्वमाणुक्कंठुलयं, कहिंचि तार-मुत्ता-फलुज्जलं, कहिंचि मणि-कोट्टिमुच्छलंत-माणिक्कयं, कहिंचि फालिह-मणि-विरइय-अक्खाडयं, कहिंचि पोमराय-मणि-वियसिय-तामरसं, कहिंचि वियरंत-सुर-सुंदरी-णेउर-रवाराविय, कहिंचि मुइउम्मत्त-सुर-कुमारप्फोडण-सुव्वमाण-पडिरवं, कहिंचि ताडिय-मुरय-रव-रविज्जंतयं, कहिंचि तियस-विलया-णच्चण-खिप्पमाण-सुर-कुसुम-रयं, कहिंचि संचरंत-वज्जदेव-विज्जुज्जोइयं, कहिंचि सुर-जुवाण-मुक्क-सीह-णाय-गब्भिणं, कहिंचि सुर-पेक्खणालोयमाण-बद्ध-कलयलं, कहिंचि चलमाण-वज्जहर-जयजया-सद्द-सुव्वमाण-पडिरवं, कहिंचि सुर-पायव-कुसुमामोय-णिम्महंत-गंधयं, कहिंचि दिव्व-थुइ-थुव्वमाण-जिणवरं, कहिंचि पवण-पसर-वियरंत-पारियाय-कुसुम-मंजरी-रेणु-उद्धुव्वमाण-दिसिवहं ति । अवि य ।

जं जं णराण सोक्खं सोक्खट्ठाणं व सुव्वइ जणम्मि । तं तं भणंति सग्गं जं सग्गं तत्थ किं भणिमो ॥

एयम्मि एरिसे इयर-जण-वयण-गोयराईए सुइ-सुहए सग्ग-णगर-पुरवरे अत्थि पउमं णाम वर-विमाणं ।

§ १७२) तं च केरिसं । अवि य ।

वर-पोमराय-णिम्मल-रयण-मऊहोसरंत-तम-णियरं । वर-मोत्ताहल-माला-धवल-पलंबंत-ओऊलं ॥
पवणुद्धुय-धुय-धयवड-किंकिणि-माला-रणंत-सद्दालं । वर-वेजयंति-पंती-रेहिर-वर-तुंग-सिहरालं ॥
मणि-पोमराय-घडियं वियसिय-पोमं व पोम-सच्छायं । पउम-वण-संड-कलियं पउम-सणाहं वर-विमाणं ॥
तम्मि य पउमसणामे विमाण-मज्झम्मि फलिह-णिम्मवियं । ललमाण-मोत्तिओऊल-जाल-मालाहिँ परियरियं ॥
वर-वइर-घडिय-पायं मरगय-मणि-णिव्वडंत-पावीढं । कक्केयणुप्पल-दलं सयण-वरं कोट्टिमयलम्मि ॥
तस्स य उवरिं रेहइ तणु-लहु-मउयं सुवित्थयं रम्मं । गयणयलं पिव सुहुमं सुइ-सुहयं किं पि देवंगं ॥
तस्स य उवरिं अण्णं धवलं पिहुलं पलंब-पेरंतं । तं किं पि देव-दूसं खीर-समुद्दस्स पुलिणं व ॥
अह ताण दोण्ह विवरे आणिज्जइ कास-कुसुम-मउययरे । देवाणुपुव्वि-रज्जू-कड्डिज्जंतो बइल्लो व्व ॥
अह कम्मय-तेओमय-सरीर-सेसो खणं अणाहारो । संपत्तो एक्केणं समएणं लोहदेव-जिओ ॥
तत्थ य संपत्तो च्चिय गेण्हइ वर-कुसुम-रेणु-सरिसाइं । वेउव्व-पोग्गलाइं अगुरु-लहु-सुरहि-मउयाइं ॥
जह तेल्ल-मज्झ-पत्तो पूयलओ गेण्हए उ तं तेल्लं । पुण मीसो पुण मुंचइ एवं जीवो वियाणाहि ॥

---

1) P कंमताए, JP जत्थट्ठिया. 2) J -ट्ठिईए P -ट्ठितीए. 3) P adds य before भणमाणा. 4) J तुम्हे, J मणुअलोअंमि. 5) P तेहिं चउहिं जिणेहिं, P ता for तो, J चउहिं वि. 6) J इच्छंति P इच्छियं, P om. समय. 7) P °ब्भुयए, J यच्छिउं, P adds च after ताणं. 8) P सहावेणं. 9) P पसाय for कसाय, J -प्पसरा, P पव्वज्ज-मब्भुवगया पालेंति, J लोहदेवो. 10) J चरित्तआराहणाए चउखंधाए, J तप्पओग्ग, P वद्द for बद्ध. 13) P कुड्ड for कूड, J च for व. 14) J कामिणि, P पज्जलियउज्जलं, J सुव्वमाणकंठुल्लयं P सुव्वमाणुक्कंठुलं. 15) P मुत्ताहल°, P कोट्टिमुज्ज-लंत, P विरइयक्खाडयं. 16) P णेउराराव-, J कुमारफोडण. 17) P तालियमुरय, P -खिप्पमाणसुरकुमारयं, J -कुसुमारयं, J -विज्जदेव विज्जुजोइउं. 18) P सुरपेक्खणाबंधमाणकलयलं. 19) P om. थुइ. 20) P रेणुरयथुव्व, J om. ति. 21) P मि for व. 22) J गोयराइं । तो सुइसुहए णियरा पुरवरे, J om. वर. 24) J मउहो°. 25) P पवणवमुद्धुयधय°, P रसंत for रणंत, J तुरंग for तुंग. 26) P पोमवण, J पउमसणामं P पोमसणाहं. 27) P पोमसणामे, J इलिह for फलिह, P मोत्तिउज्जलजाला. 28) J कक्केअणुप्फल P कक्केयणउप्पउप्पलदलसयण. 29) P सुवित्थरं (in J र is scored and अ written after that), P मिव for पिव, P सुइ सुहुमं. 31) J °पुव्विरज्जु P °पुरज्जू. 32) P सरीस for सरीर. 33) P मऊयाइं. 34) P पूलइओ, J एयं, P विजाणाहिं ॥ अखइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह खणमेत्तेणं चिय आहारण-करण कुणइ पजत्तिं । अणुसमः चिय तस्स य गेण्हइ य सरीर-पजत्तिं ।
ठावेइ इंदियाइं फरिस-प्पमुहाइँ कम्म-सत्तीए । ता अणुपाणं त्राउं मणं च सो कुणइ कम्मेणं ॥
भासा-भासण-जोग्गे गेण्हइ सो पोग्गले ससत्तीए । इय सो छव्वाहिं चिय पजत्तीहिं हवइ पुण्णो ॥
एत्थंतरम्मि सव्वं मुहुत्त-मेत्तेण अत्तणो रूवं । अंगोवंग-सउण्णं गेण्हइ कम्माणुभावेणं ॥
अह तं उवरिम-वत्थं उत्थल्लेऊण तत्थ सयणयलं । जंभा-वस-वलिउव्वेल्लमाण-बाहाण उक्खेवो ॥
आयँब-दीहरच्छो वच्छत्थल-पिहुल-पीण-भुय-सिहरो । तणु-मज्झ-रेहिरंगो विदुम-सम-रुइर-ओट्ठ-जुओ ॥
उण्णय-णासा-वंसो ससि-बिंबायार-रुइर-मुह-कमलो । वर-कप्परुक्ख-किसलय-सुट्ठुव्वेल्लंत-पाणियलो ॥
कोमल-मुणाल-बाहू चामीयर-घडिय-सरिस-वर-जंघो । ईसि-समुण्णय-कोमल-चलणग्ग-फुरंत-कंतिल्लो ॥
पिहु-वच्छत्थल-लंबिर-हार-लया-रयण-राय-वेंचइओ । गंडत्थल-तड-ललमाण-कुंडलो कडय-सोहिल्लो ॥
कप्पतरु-कुसुम-मंजरि-संताण-पारियाय-मीसाए । आजाणु-लंबिराए वणमालाए विरायंतो ॥
णिद्दा-खए विबुद्धो जह किर राई कुमारओ को वि । तह सयणाओ उट्ठइ देवो संपुण्ण-सयलंगो ॥
इय जाव सो विबुद्धो ईसिं पुलएइ लोयण-जुएण । ता पेच्छइ सयलं चिय भत्ति-णयं परियणं पासे ॥
अवि य । केरिसं च तं परियणं दिट्ठं लोहदेवेण ।

गायंति के वि महुरं अण्णे वाएंति तंति-वजाइं । णच्चंति के वि मुइया अण्णे वि पढंति देव-गणा ॥
पालेसु जियं जं ते अजियं अजिणसु परम-सत्तीए । विरइय-णिरंजलिउडा थुणन्ति एएहिँ वयणेहिं ॥
जय जय णंदा जय जय भद्दा अम्हाण सामिया जयहि । अण्णे किंकर-देवा एवं जंपंति तुट्ठ-मणा ॥
भिंगार-तालियंटे अण्णे गेण्हंति चामरे विमले । धवलं च आयवत्तं अवरे वर-दप्पण-विहत्था ॥
वीणा-मुइंग-हत्था वत्थालंकार-रेहिर-करा य । अच्छंति अच्छर-गणा तस्साएसं पडिच्छंता ॥ सव्वहा,
अह पेच्छइ तं सव्वं अदिट्ठउव्वं अउव्व-रमियं च । उव्वेल्ल-वेल्ल-मय-वस-विलासिणी-रेहिर-पयारं ॥

§ १७३) तं च तारिसं अदिट्ठउव्वं पेच्छिऊण चिंतियं लोहदेवेणं । 'अहो, महल्ला रिद्धी, ता किं पुण मह इमा किं वा अण्णस्स कस्सइ' त्ति चिंतयंतस्स भणियं देव-पडिहारेण । अवि य ।

जोयण-सहस्स-तुंगं रयण-महा-पोमराय-णिम्मवियं । पडिहय-तिमिर-प्पसरं देवस्स इमं वर-विमाणं ॥
वर-इंदणील-मरगय-कक्केयण-पोमराय-वज्जेहिं । अण्णोण्ण-वण्ण-भिण्णो रयणुक्केरो तुहं चेय ॥
पीणुत्तुंग-पओहर-णियंब-गरुओ रणंत-रसणिल्लो । मयण-मय-घुम्मिरच्छो इमो वि देवस्स देवियणो ॥
लय-ताल-सुद्ध-गेयं सललिय-करणंगहार-णिम्मायं । वर-मुरय-गहिर-सद्दं देवस्स इमं पि पेक्खणयं ॥
असि-चक्क-कोंत-पहरण-वर-तोमर-वावडग्ग-हत्थेहिं । देवेहिँ तुज्झ सेणा अच्छइ बाहिं असंखेज्जा ॥
पल्हत्थेइ य पुहइं मुट्ठि-पहारेण चुण्णए मेरुं । आणं सिरेण गेण्हइ इमो वि सेणावई तुज्झ ॥
सुर-सेल-तुंग-देहो गंडत्थल-पज्झरंत-मय-सलिलो । दंसण-पलाग-दणुओ इमो वि सुर-कुंजरो तुज्झ ॥
मंदार-सुरहि-केसर-कप्पतरू-पारियाय-सय-कलियं । फल-कुसुम-पल्लविल्लं उज्जाणमिमं पि देवस्स ॥
हियइच्छिय-कज्ज-पसाहयाइँ णिच्चं अमुक्क-ठाणाइं । तुज्झं चिय वयण-पडिच्छिराइँ इय किंकर-सयाइं ॥
देव तुमं इंद-समो बल-वीरिय-रूव-आउय-गुणेहिं । पउम-विमाणुप्पण्णो तुज्झं पउमप्पहो णामं ॥
इय रिद्धि-परियण-बले पडिहारेणं णिवेइए णाउं । अह चिंतिउं पयत्तो हियए पउमप्पहो देवो ॥
किं होज्ज मए दिण्णं कम्मि सुपत्तम्मि केत्तियं विभवं । किं वा सीलं धरियं को व तवो मे अणुचिण्णो ॥
इय चिंतेंतस्स य से वित्थरियं झत्ति ओहि-वर-णाणं । पेच्छइ जंबुद्दीवे भरहे मज्झिल्ल-खंडम्मि ॥
पेच्छइ जत्थुप्पण्णो तुरए घेत्तूण जत्थ सो पत्तो । चलिओ रयणद्दीवं जह पत्तो जाणवत्तेण ॥
जह भरियं रयणाणं जह य णियत्तो समुद्द-मज्झम्मि । जह भद्दो पक्खित्तो लोह-विमूढप्पणा तेण ॥

1) P ad'.. after कुणइ, णं भासभासणजोग्गो गेन्हइ तह पोग्गले ससत्तीए ॥, P चिय, P पज्जत्तं ॥ णावेइ. 2) P फरिसयपमुहाइं तस्स भत्तीए, P om. ता, P आणुपाणुं, J वायुं, P मणुं, P कुणइ इकंमेणं. 3) P जोग्गो गेन्हइ तह पोग्गले, P पज्जंतीहिं. 4) J रूयं, P सउणं. 5) P वच्छलेऊण, P वलिउव्वेलमाणवाहालिपुक्खेवो. 6) P पीयण, P -अट्ठजुओ. 7) J बिंबोणयणरुइर, P सुट्ठुवेल्लंतपाणितलो. 8) P समुलयकोमलणग्ग. 9) P लयालत्तराय, J वर for तड. 10) J संताणय-. 11) P विउद्धो, P सव्वंगो. 12) P ईसिं for ईसिं, P भत्तिपणं. 14) P वायंति. 16) P om. one जय, P सामिय जयाहि. 17) P तालियंटो, P त for च. 18) P मुयंग, P तस्स्एएसं, P om. सव्वहा. 19) P अदिट्ठपुव्वं, P रमियव्वं ।. 20) P अइट्ठउव्वं, P लोभदेवेणं. 23) P भिदो for भिण्णो. 24) P पीणतुंग, P रणतरमणिल्लो. 25) P गेहं for गेयं. 29) J कप्पतरु, P पारियायसंवलियं ।. 31) J विहव for रूव. 32) J परिहारेणं. 33) J व मवे for विभवं, P धरिउं. 34) P चिंततस्स, J वित्थारियं, P ज्झत्ति, P खंडिमि. 35) P जो for सो. 36) P भरिओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह फुट्टं बोहित्थं तारद्दीवम्मि जह दुहं पत्तो । संपत्तो कोसंबिं जह दिट्ठो धम्मणंदणो भगवं ॥
जह पव्वज्जमुवगओ संविग्गो जह करेउमाढत्तो । पंच-णमोक्कार-मणं काल-गयं चेय अत्ताणं ॥
णायं तु जहा कम्मं बहुयसुहं सोसियं तु दिक्खाए । पंच-णमोक्कार-फलं जं देवत्तं मए पत्तं ॥

§ १७४) इमं च पेच्छिऊण सहसा वलिय-चलंत-कंत-कामिणी-गुरु-णियंब-बिंब-मंथर-विलास-कणय-कमलाली-खलंत-मणि-णेउर-रणरणारावं रसणा-रसंत-किंकिणी-जाल-माला-रणंत-जयजयासद्द-पहरिस-संवलिउच्छलंत-सपडिसद्द-पसरंत-पूरिय-खुब्भमाण-सुरयणं समुट्ठिओ सयणाओ, अभिगओ सत्तट्ठ-पयाइं जंबुद्दीवाभिमुहो, विरइओ य सिरे कमल-मउल-सरिसो अंजली । णिमियं च वामं जाणुयं । मणि-कोट्टिम-तलम्मि भत्ति-भर-विणमिउत्तिमंगेण भणियं च णेण ।

सुर-गंधव्व-सिद्ध-विजाहर-किंणर-गीय-वयणयं । दणुवइ-वर-णरिंद-तियसिंद-पहुत्तण-लंभ-गरुययं ।
भीसण-जणण-मरण-संसार-महोयहि-जाणवत्तयं । जयइ जिणिंदयाण वर-सासणयं सिव-सोक्ख-मूलयं ॥
तित्थ-पवत्तण-गरुयएँ णिम्मल-पसरंत-णह-मऊहयए । सयल-सुरासुर-णमियएँ पणमामि जिणाण य चलणए ॥
एरिसिया सुर-रिद्धिया दिण्णा रयण-समिद्धिया । जेण महं सुह-कम्मयं तं पणमामि सुधम्मयं ॥ ति ।

समुट्ठिओ य पणामं काऊणं, भणियं च णेण 'भो भो मए, किं करियव्वं संपयं' ति । पडिहारेण विण्णत्तं 'देव, कीला-वावीए मज्जिऊण देवहरए पोत्थय-वायणं' ति । तेण भणियं । 'पयट्ट, कीला-वाविं वच्चामो' त्ति भणमाणो चलिओ सरहसं । पडिहारो ओसारिज्जमाण-सुर-लोओ संपत्तो मज्जण-वाविं ।

§ १७५) सा पुण केरिसा । अवि य ।

पेरंत-रयण-कोट्टिम-णाणा-मणि-किरण-बद्ध-सुरचावा । तीर-तरुग्गय-मंजरि-कुसुम-रउद्धूय-दिसिचक्का ॥
मणि-सोमाण-विणिम्मिय-कंचण-पडिहार-धरिय-सिरिसोहा । कलधोय-तुंग-तोरण-धवलुद्धुत-धयवडाइद्धा ॥
पवण-वस-चलिय-किंकिणि-माला-जाला-रणंत-सुइ-सुहया । बहु-णिज्जूहय-णिग्गम-दार-विरायंत-परिवेढा ॥
कंचण-कमल-विहूसिय-सिय-रयण-मुणाल-धवल-सच्छाया । फलिह-मउजल-कुमुया णिक्ख-विणिम्मविय-सुरहि-कल्हारा ॥
णीलमणि-सुरभि-कुवलय-विसट्ट-मयरंद-बिंदु-चित्तलिया । वर-पोमराय-सयवत्त-पत्त-विक्खित्त-सोहिल्ला ॥
वर-इंदणील-णिम्मल-णलिणी-वण-संड-मंडिउद्देसा । विच्छित्ति-रइय-पत्तल-हरिया बहु-पत्त-भंगिल्ला ॥
सुर-लोय-पवण-चालिय-सुरदुम-कुसुमोवयार-सोहिल्ला । अच्छच्छ-धवल-णिम्मल-जल-भर-रंगंत-तामरसा ॥
इय कमल-मुही रम्मा वियसिय-कंदोट्ट-दीहरच्छि-जुया । मणि-कंचण-घडियंगी दिट्ठा वावी सुर-वहु व्व ॥

तं च पेच्छिऊण दिण्णा झंपा वावी-जलम्मि । तस्साणुमग्गओ ओइण्णो सुर-कामिणी-सत्थो । किं च काउमाढत्तो । अवि य ।

तुंग-थणवट्ट-पेल्लण-हल्लिर-जल-वीइ-हरिय-णिय-सिचओ । कलुसेइ णिम्मल-जलं लज्जंतो अंग-राएण ॥
वित्थय-णियंब-मंथण-धवलुग्गय-विप्फुरंत-फेणोहं । अह मह इमं ति सिचयं विलुलिज्जइ जुवइ-सत्थेण ॥
अवरोप्पर-ओल्लण-सोल्लणाहिँ णिवडंत-णीसहंगाहिं । पोढ-तियसंगणाहिं दइओ णिद्दोसमवऊढो ॥
पउमप्पहो वि खेल्लइ ससंक-णिवडंत-पउम-लहु-पहरो । अच्छोडिय-णिद्दय-कमल-संग-जल-पहर-धाराहिँ ॥
अंगम्मि तस्स ताव य पहरंति मुणाल-णाल-पहरेहिँ । मुद्ध-तियसंगणाओ वलिऊण ण जाव पुलएइ ॥
जा जा मुणाल-पहया होइ ससिक्कार-मउलियच्छीया । तं तं पउम-समाणा पोढा ण गणेइ खेलम्मि ॥
जल-जंत-णीर-भरियं लोयण-जुयलं पियस्स काऊण । चुंबइ दइयस्स मुहं लज्जा-पोढत्तणुप्फालं ॥
इय मज्जिऊण तो सो तियस-वहू-वर-करेणु-परियरिओ । उत्तरिओ लीलाए दिसा-गइंदो व्व सवियारं ॥

पमज्जियं च रायहंस-पम्ह-मउएण देव-दूसेण से अंगं । समप्पियं च तस्स धोयवत्ति-जुवलयं । तं पुण केरिसं ।

1) J दुक्खं for दुहं, J om. संपत्तो, P कोसंबी, J भयवं. 2) P संवेग, P करेउ आढत्तो, P चेव व अप्पाणं. 3) P बहुभसुयं ज्झोसियं, J °कारहलं. 4) P om. कंत, P रणरणारसणरसंत. 5) P °सद्दा, J om. पहरिस, J °लंत-पडिसद्दयसरपूरिय. 6) P रयणाओ for सयणाओ, P adds य before सत्तट्ठ, J विरइय सिरे, P कमलउल, J सरिस अंजलिं. 7) P निम्मियं, J वामजाणुं, J कोट्टिमयलंमि, J विणेमिउ° P वियणमिउ°. 8) P विज्जाधर. 9) P om. भीसण, P जमण, P adds विणास before संसार. 10) P गरुए, P मयूहए, P नमियएइ, P om. य. 11) J एरिसा. 12) P om. य, P om. भणियं च णेण. 13) J देवहरय (यं?) P देवहरयं, J वायणं च त्ति, J कीलावावी, J om. त्ति, P पडिहारो सारि°. 15) P जा for सा. 16) P रयद्धूय, J दिसिअक्का. 17) P सोपाण, P किलहोय, P धवलुद्धुंत. 18) P जालमाला for मालाजाला. 19) P विगासिय, J om. धवल, P फलिहविलुज्जकुमुयानिक्कवि°, P om. सुरहि, P कल्हारा. 20) P सुरहि, P adds मरगयस before सयवत्त, P om. पत्त. 21) P विच्छित्त, P पत्तउपत्तलयावत्तपत्त. 22) J अच्चत्थधवल, J जलहर. 23) P हरिसा for रम्मा. 24) P तरसालुमग्गो. 25) P थणवड्ढपल्लण, P वीइतियसच्चिचइओ. 26) P विप्फरंतफेणाइं, P विलुलिज्जति. 27) P निद्दयसमवऊढो. 28) P खेलइ, P उच्छोडियनिद्दलकमल. 30) P होहिइ, J पउमसणामो P पओसणामो, P पोढं. 32) P एरिओ ।, P गयंदो. 33) P पओगेण for मउएण, om. देव.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किं होज्ज तूल-मउयं घडियं वा कास-कुसुम-पम्हेहिं । किं वा मुणाल-तंतू-णिम्मवियं देव-सत्तीए ॥

तं च तारिसं णियंसिऊण कय-उत्तरासंगो पडिहार-दाविय-मग्गो पयत्तो गंतुं, देवहरयं पत्तो य । उग्घाडियं च से दारं णिओइएण देव-घरयस्स । ताव य

णिज्जियसेस-मऊहा परिपेल्लिय-दूर-पाव-तम-पसरा । दिणयर-सहस्स-मइय व्व झत्ति कंती समुच्छलिया ॥

§ १७६) ताव य णव-वियसिय-पारियाय-कुसुम-मंजरी-रेहिरो सुर-मंदार-कुसुम-गोच्छ-चावडो कणय-कमल-विसट्टमाणें-दीवर-भरिओ सव्वहा दसद्ध-वण्ण-कुसुम-पडहत्थ-कणय-पडल-णिहाओ उवट्ठविओ परियणेण । एत्थंतरम्मि पविट्ठो 'णमो जिणाणं' ति भणमाणो देवहरए पउमप्पहो देवो । पेच्छइ य जिणहरं । तं च केरिसं । अवि य,

अण्णोण्ण-वण्ण-घडिए णिय-वण्ण-पमाण-माण-णिम्माए । उप्पत्ति-णास-रहिए जिणवर-बिंबे पलोएइ ॥

फलिह-मणि-णिम्मलयरा के वि जिणा पूसराय-मणि-घडिया । के वि महाणीलमया कक्केयण-णिम्मिया के वि ॥
मुत्ताहल-तारयरा अवरे वर-पोमराय-सच्छाया । अवरे सामल-देहा मरगय-दल-णिम्मिया के वि ॥

ते य भगवंते पेच्छिऊण जिणवरे हरिस-वस-वियसमाण-णयण-जुवलओ चलणेसु 'णमो सव्व-जिणाणं' ति भणमाणो णिवडिओ । ताव य दिव्व-सुरहि-जल-भरिए समप्पिए कणय-कलसे अहिसिंचिऊण, विलित्ते दिव्व-देवंगराएण, उप्पाडियं च गोसीस-चंदण-गंध-गब्भिणं पवर-धूयं । आरोवियाणि य जं-जहावण्ण-सोहा-विण्णास-लायण्णाइं जल-थलय-कुसुमाइं । तओ विरइय-विविह-पूयं केरिसं तं तियस-देवहरयं दीसिउं पयत्तं । अवि य ।

वियसिय-कणय-कमल-सिरि-णिज्जिय-माणस-लच्छि-गेहयं । णव-कंदोट्ट-कुसुम-कल्हार-विराविय-कंत-सोहयं ॥
णव-मंदार-गोच्छ-संताणय-कुसुम-पइण्ण-राययं । मंदिरयं जिणाण तं सोहइ तत्थ समत्त-पूययं ॥

तं च तारिसं पेच्छिऊण पहरिस-वस-समूससंत-रोमंच-कंचुइओ थोऊण समाढत्तो भगवंते जिणवरिंदे । अवि य,

जय ससुरासुर-किंणर-मुणिवर-गंधव्व-णमिय-चलण-जुया । जय सयल-विमल-केवल-जिण-संघ णमोत्थु णं तुज्झ ॥
जइ देवो णेरइओ मणुओ वा कह वि होज्ज तिरिओ हं । सयल-जय-सोक्ख-मूलं सम्मत्तं मज्झ देज्जासु ॥

§ १७७) एवं च थोऊण णिवडिओ पाएसु । दिट्ठं च पोत्थय-रयणं पीढम्मि । तं च केरिसं । अवि य,

वर-पोमराय-गत्तं फलिह-विणिम्मविय-पत्तयं रुइरं । धुय-इंदणील-लिहियं पोत्थय-रयणं पलोएइ ॥

तं च दट्ठूण भत्ति-भर-णिब्भर-हियएण गहियं पोत्थयं सिढिलियं च, उग्घाडिय वाचिउं पयत्तो । अवि य । णमो सव्व-सिद्धाणं ।

अविरहिय-णाण-दंसण-चारित्त-पयत्त-सिद्धि-वर-मग्गो । सासय-सिव-सुह-मूलो जिण-मग्गो पायडो जयइ ॥
संसार-गहिर-सायर-दुत्तारुत्तार-तरण-कज्जेणं । तित्थ-करणेक्क-सीला सव्वे वि जयंति तित्थयरा ॥
पज्जलिय-झाण-हुयवह-कम्मिंधण-दाह-वियलिय-भवोहा । अपुणागम-ठाण-गया सिद्धा वि जयंति भगवंता ॥
णाणा-लद्धि-समिद्धे सुय-णाण-महोयहिस्स पारगए । आसण्ण-भव्व-सत्ते सव्वे गणहारिणो वंदे ॥
णाण-तव-विरिय-दंसण-चारित्तायार-पंच-वावारे । पज्जलियागम-दीवे आयरिए चेव पणमामि ॥
सुय-सुत्त-गुणण-धारण-अज्झयणज्झावणेक्क-तल्लिच्छे । उवयार-करण-सीले वंदामि अहं उवज्झाए ॥
पंच-महव्वय-जुत्ते ति-गुत्ति-गुत्ते विलुत्त-मिच्छत्ते । वंदामि अप्पमत्ते ते साहू संजमे पत्ते ॥
इय धम्मारह-सिद्धे गणहर-आयरिए तह उवज्झाए । साहुयणं णमिऊणं जिणवर-धम्मं पवक्खामि ॥
दु-विहो जिणवर-धम्मो गिहत्थ-धम्मो य समण-धम्मो य । बारस-विहो गिहीणं समणाणं दस-विहो होइ ॥
पंचाणुव्वय-जुत्तो ति-गुणव्वय-भूसिओ सचउ-सिक्खो । एसो दुवालस-विहो गिहि-धम्मो मूल-सम्मत्तो ॥

---

1) P कि होज्ज दूलमईयं, J मउअं किं वा विहु कास॰, P पडियं वा (emonded घडियं वा), J तंतु P तंत. 2) P निसेयंसिऊण, P देवघरयं, P उक्खाडियं, J om. से. 3) P देवहरयं. 4) P पडिपेल्लिय, P कंति. 5) P वियसिया- P मंदर. 6) J पडलय-, P उवद्धविउ, P repeats नमो. 7) P पेच्छइ यरा के वि जिणा पोमरायमणिघडिया । के वि महानील महाकक्केयणरयणनिम्माया । for पेच्छइ य जिणहरं । etc. to कक्केयणणिम्मिया के वि ।, J कक्केयिणि-. 10) P अवरोवर, P मरगय-चलनिमया. 11) P ॰तिऊण for पेच्छिऊण. 12) P खीरोय for दिव्वसुरहि, P om. समप्पिए. 13) P जहावण्ण-, P लावण्णाइं, P थल for थलय. 14) P विरइयं, P om. तं, P पयत्ता. 15) P वयण for कणय, P राहयं for गेहयं. 16) P राइयं, P adds च before सोहइ. 17) J कंचुओ, 18) P गण for वर. 19) P जय देवो. 20) P om. च after एवं, P पोत्थयं रयणं पीढंमि. 21) P विणिम्मिय, J दुअ for धुय, P लियं for लिहियं. 22) P om. णिब्भर, J om. पोत्थयं, P वाइउं. 24) P अविरहियए नाण-, P पायडो जियइ. 25) P गहियसायर, P तरुणकज्जेण, P वि जियंति. 26) P पज्ज-लियज्झाणहुयवहा, P दाणताविय भवोहा, P अपुणागयट्ठाण, P भगवंतो. 27) P सुयणायणमुहोय॰, P सव्व for भव्व, P om. सत्ते. 29) P सुत for सुय, P -गणण, J अज्झायण॰, P धारणसज्झावणेक्क. 30) P om. मिच्छत्ते, P अप्पवमत्ते, P पत्ता. 31) P सिद्धो, P आयरिय, P साहूणं. 33) P य चउ for सचउ, P गिहधम्मो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंती य मद्दवज्जव-मुत्ती-तव-संजमे य बोद्धव्वे । सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइ-धम्मो ॥
इय एयं चिय अइवित्थरेण अह तम्मि पोत्थए लिहियं । वाएऊणं मुंचइ भत्तीऍ पुणो रयण-पीढे ॥

णमिऊण य जिणवरे णीहरिओ देवहरयाओ । पुणो जहासुहं भोए भुंजिउं पयत्तो पउमप्पभो देवो त्ति । एवं थोएसु चेय दियहेसुं वच्चमाणेसु माणभडो वि जहा-समयं पालेऊण आराहिऊण जिण-णमोक्कारं तेणेय कमेण तम्मि चेय विमाणे अणेय-जोयण-लक्ख-वित्थरे देवो उववण्णो । तस्स वि सा चेवावत्था, णवरं पुण णामं पउमवरो त्ति । तओ केण वि कालंतरेण जहा-संजम-विहीए आउय-कम्म-णिज्जरणे उप्पण्णो तम्मि चेय विमाणे मायाइच्चो वि, णवरं पुण से णामं पउमसारो त्ति । तओ ताणं पि दियहाणं परिवालिय-संजमो सो वि मरिऊण चंडसोमो वि उप्पण्णो तम्मि चेय विमाण-वरे, णवरं से पुण णामं पउमचंदो त्ति । तओ केसुइ दियहेसु कय-सामाइय-कम्मो मरिऊण मोहदत्तो तम्मि चेय विमाणवरे उववण्णो, णवरं से णामं पउमकेसरो त्ति । तओ एवं च ते पंच वि जणा पउम-विमाणुप्पण्णा सम-विभव-परिवार-बल-पोरुस-प्पभावा-इया अवरोप्परं च महा-सिणेह-परा जाणंति जहा कय-संकेय त्ति । एवं वच्चइ कोइ कालो । एत्थंतरम्मि

सुर-सेणावइ-तालिय-घंटा-रावुच्छलंत-पडिसद्दं । पडिसद्द-पोग्गलुग्घाय-घट्टणाचलिय-सुर-घंटं ॥
घंटा-रव-गुंजाविय-वज्जिर-सुर-सेस-विसर-आउज्जं । आउज्ज-सद्द-संभम-सहसा-सुर-जुवइ-मुक्क-हुंकारं ॥
हुंकार-सवण-विम्हिय-दइया-मुह-णिमिय-तियस-तरलच्छं । तरलच्छ-दंसणुप्पित्थ-भग्ग-गंधव्व-गीय-रवं ॥
गीय-रव-भंग-णासिय-ताल-लउम्मग्ग-णच्चिरच्छरसं । अच्छरसायण-संखुहिय-कलयलाराव-रविय-दिसियक्कं ॥
इय ताणं सहस च्चिय आसण-कंपो सुराण भवणेसु । उच्छलिय-बहल-बोलो जाओ किं-किंचि पडिसद्दो ॥

पुच्छियं च णेहिं सुरवरेहिं 'भो भो किमेयं' ति । तओ तेहिं विण्णत्तं पडिहारेहिं । 'देव,

जंबुद्दीवे भरहे दाहिण-मज्झिल्लयम्मि खंडम्मि । तम्मि य धम्म-जिणिंदो विहरइ उप्पण्ण-णाणवरो ॥
ता तस्स समवसरणे गंतव्वं तिअस-वंद-सहिएण । सुरणाहेण समं चिय भत्ति-भरोणमिय-सीसेण ॥

तं च सोऊण कयं सव्वेहिं चेय सुर-वरेहिं 'णमो भगवओ सुधम्म-धम्मस्स जिणस्स' त्ति । तं च काऊण पयट्टा सुरिंद-पमुहा सुरवरा । कह य । अवि य,

सहसुद्धाइय-रहवर-बहु-जाण-विमाण-रुद्ध-गयणवहं । परितुट्ठ-तियस-कलयल-हरिस-वसुम्मुक्क-बोलिक्कं ॥
तियसिंद-पोढ-विलया-विलास-गिज्जंत-मंगलुग्गीयं । अवसेसच्छरसा-गण-सरहस-णच्चंत-सोहिल्लं ॥
रयण-विणिम्मिय-णेउर-चलमाण-चलंत-किंकिणी-सद्दं । वर-संख-पडह-भेरी-झल्लिरि-झंकार-पडिसद्दं ॥
णारय-तुंबुरु-वीणा-वेणु-रवाराव-महुर-सद्दालं । उक्कुट्ठि-सीह-णायं कलयल-सद्दुच्छलंत-दिसियक्कं ॥
इय एरिस-हलहलयं जिणिंदयंदस्स समवसरणम्मि । वच्चंति हिट्ठ-तुट्ठा अंगेसु सुरा अमायंता ॥

संपत्ता य चंपा-पुरवरीए ।

§ १७८) भणिओ य तियसिंदो पउमसारेणं तियसेण । 'देव, जइ तुब्भे अणुमण्णह, ता अहं चेय एक्को सामिणो धम्म-जिणस्स समवसरणं विरएमि' त्ति । भणियं च वासवेणं 'देवाणुप्पिया, एयं होउ' त्ति । भणियमेत्ते किं जायं ति । अवि य ।

सहस च्चिय धरणियले उद्धावइ मारुओ धमधमस्स । खर-सक्कर-तण-सय-रेणु-णासणो जोयणं जाव ॥
पवणुद्धुय-रय-संताव-णासणो सुरभि-गंध-रिद्धिल्लो । अदिट्ठ-मेह-मुक्को णिवडइ जल-सीयल-तुसारो ॥
मयरंद-बिंदु-णीसंद-लुद्ध-मुद्धागयालि-हलबोलो । वेंट-ट्ठिय-सुर-पायव-कुसुमुक्केरो पडइ तत्तो ॥
तो तस्स परियरेणं णाणा-मणि-रयण-किरण-संवलियं । बद्ध-सुर-चाव-सोहं पायार-वरं विणिम्मवियं ॥
तस्स य बाहिं सहसा बीयं वर-तियस-कणय-णिम्मवियं । रयणुज्जोविय-सिहरं रइयं तियसेण पायारं ॥

---

1) P बोधव्वे, P आलिंबणं for आकिंचणं. 2) P om. अइ, P मुचइ. 3) P om. य, J पउमप्पहो, P एयं. 4) P दियह for दियहेसुं, P तेणय. 5) P सा चेय ववत्था, P पुणा for पुण, J पउमीरु त्ति P पउमवरो त्ति, P केणावि. 6) P संजमविही आ°, P inter. पउमवरो (for पउमसारो) and से णामं, J पउमसारो added on the margin, J P त्ति. 7) P काणं for ताणं, P चेव. 8) P उण, J पउमचंडो, P उप्पण्णो. 9) P om. से. 10) P सिण्हइ for सिणेह, P तहा for जहा, P के वि for कोइ. 11) J सेणावई, P घंटारवणुच्छ°, P पोग्गलग्घाय, J adds सेस before चलिय. 12) P गुंजाविया. 13) P adds रव before सवण, J समण for सवण, P निहिय for णिमिय, P °णुप्पिपच्छगंधव्व, P repeats गीयरवं. 14) P भंगाणसिरतालज्झूमग्गणच्चिर°, J °रच्छरयं, P सुहं य for संखुहिय, P दियक्कं. 15) P उच्छलियहलापोला, P किंतिपडिसद्दा. 17) J णाणधरो. 18) J गतंव्वन्तिअस, P तिअमरवंद्र°, P समयं चिय. 19) P चेव, P सुहंमधंमजिणस्स, P प्पमुहा. 20) P कयहा for कह य. 21) P om. हरिसवसुम्मुक्कबोलिक्कं etc. to उक्कुट्ठिसीहणायं. 24) P repeats कलयल. 25) P जिणिंदइंदस्स, P हट्ठतुट्ठा. 26) P om. य. 27) P om. य, P om. तियसेण, P चेव. 29) P मासुओ, P खरविक्कम°, P जोयणे. 30) P रव for रय, P णासणासुरहि, J P अदिट्ठ. 31) P चंद for बिंदु, P वेंदु for वेंट. 32) P परि-यणेणं, P om. किरण, P चावसाइं पायारतयं. 33) P य बाहिं, P दुइयं for बीयं, P adds कण before कणय, P पागारं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थोवंतरेण तस्स य कलधोय-मयं फुरंत-कंतिल्लं । उत्तुंग-सिहर-राहं सहसा तइयं पि पायारं ॥
अह तुंग-कणय-तोरण-सिहरोवरि-चलिर-धयवडाइल्लं । मणि-घडिय-सालभंजिय-सिरि-सोहं चामरिंद-सुहं॥
वर-मणि-वराल-वारण-हरि-सरह-सएहिँ संवराइण्णं । महमहमहेंत-धूयं वण-माला-रुइर-लंबिर-पलंबं ॥
वर-वेजयंति-सोहं मुत्ताहल-रुइर-दीहरोऊलं । तक्खण-मेत्तेणं चिय विणिम्मियं दार-संघायं ॥
वर-कणय-पउम-राढा वियसिय-कंदोट्ट-कुसुम-चंचइया । अच्छच्छ-वारि-भरिया रइया दारेसु वावीओ ॥
पवणुव्वेल्लिर-पल्लव-वियसिय-कुसुम-सुरहि-गंधाइं । वर-चूय-चंपयासोय-सार-गरुयाइँ य वणाइं ॥
एयस्स मज्झयारे रइयं देवेण मणिमयं तुंगं । कंचण-सेलं व थिरं वरासणं भुवण-णाहस्स ॥
तत्तो पसरिय-किरणं दित्तं भामंडलं मुणिवइस्स । वर-दुंदुही य दीसइ वर-सुर-कर-ताडिया सहसा ॥
कोमल-किसलय-हारं पवणुव्वेल्लंत-गोच्छ-चंचइयं । बारस-गुण-तुंगयरं असोग-वर-पायवं रम्मं ॥
तत्तो वि फलिह-मइयं तिहुयण-सामित्तणेक्क-वर-चिंधं । चंदावलि व्व रइयं छत्त-तियं धम्मणाहस्स ॥
पासेहिँ चामराओ सक्कीसाणेहिँ दो वि धरियाओ । उक्कुट्ठि-सीह-णाओ णिवडंति य दिव्व-कुसुमाइं ॥
एत्थंतरम्मि भगवं पुव्वद्दारेण पविसए धम्मो । तियस-पउमावलीए ठावेंतो पाय-पउमाइं ॥
अह पविसिऊण भगवं चेइय-रुक्खं पयाहिणं काउं । णिसियइ पुव्वाभिमुहो थुव्वंतो तियस-णाहेहिं ॥
तत्तो णिमियस्स य से जाया पडिरूवया तिय-दिसासु । जिणवर-सरिसा ते च्चिय तस्सेव पभावओ जाया ॥
तो तस्स दाहिणेणं णमिउं तं चेय ठाइ गणहारी । तस्साणुमग्ग-लग्गा केवलिणो सेस-साहू य ॥
तत्तो विमाण-देवी समणी-सहियाउ ठंति अण्णाओ । बहु-जणवय-सय-कलियं तहा वि रुंदं ति पडिहाइ ॥
कत्थइ विमाण-देवा कत्थइ भवणाण सामिणो होंति । कत्थइ जोइसिय च्चिय वंतर-देवा य अण्णत्थ ॥
कत्थइ य वंतरीओ कत्थइ देवीओं जोइसाणं तु । कत्थइ णायर-लोओ कत्थइ राया सुरवरिंदो ॥
अवरोप्पर-वेर-विवज्जियाइँ सयलाइँ सावय-गणाइं । पायारंतर-परिसट्ठियाइँ चिट्ठंति णिहुयाइं ॥
एवं जोयण-मेत्ते धम्म-जिणिंदस्स समवसरणम्मि । अजंतणे अविकहे वेर-विमुक्के भय-विहीणे ॥
अह भणिउं पयत्तो जोयण-णीहारिणीएँ वाणीए । गंभीर-महुर-घोसो णमोत्थु तित्थस्स वयणमिणं ॥
इय भणियम्मि समं चिय सव्वे वि सुरिंद-दणुवइप्पमुहा । कर-कमल-मउलि-सोहा पणया देवा जिणिंदस्स ॥
अह सुर-णर-तिरिएसु य सण्णी-पंचिंदिएसु सव्वेसु । परिणमइ सभासाए एक्कं चिय सव्व-सत्तेसु ॥
जह बुज्झइ देव-गुरू सयल-महासत्थ-वित्थरुप्फालं । णउलाइ वि तह च्चिय वियप्प-रहियं जिणाणं ति ॥

§ १७९) इमाए उण एरिसाए वाणीए सयल-सुरासुर-णर-तिरियामय-पाण-सरिसाए किं भणिउं पयत्तो भगवं धम्म-जिणिंदो ।

लोयम्मि अत्थि जीवो अत्थि अजीवो वि आसवो अत्थि । अत्थि य संवर-भावो बंधो वि य अत्थि जीवस्स ॥
अत्थि य णिज्जरणं पि य मोक्खो वि य अत्थि णवर जीवाणं । धम्मो वि अत्थि पयडो अत्थि अहम्मो वि लोयम्मि ॥
सद्दव्व-खेत्त-कालाभावेहि य अत्थि अप्पणो सव्वं । पर-दव्व-खेत्त-कालाभावेहि य णत्थि सव्वं पि ॥
जइ वि ण घेप्पइ जीवो अप्पच्चक्खो सरीर-मज्झम्मि । तह वि अणुमाण-गम्मो इमेहिँ लिंगेहिँ णायव्वो ॥
उग्गह-ईहापूहा-मग्गण तह धारणा य मेहा य । बुद्धी मई वियक्का विण्णाणं भावणा सण्णा ॥
अवखेवण-उक्खेवण-आउंच-पसारणा य गमणं च । आहार-असण-दंसण-पढण-वियारा बहु-वियप्पा ॥
एयं करेमि संपइ एयं काहामि एस-कालम्मि । एयं कयं ति-काले तिण्णि वि जो मुणइ सो जीवो ॥
सो य ण सिओ ण कण्हो ण य रत्तो णेय णील-कावोओ । देहम्मि पोग्गल-मए पावइ वण्णक्कमं णवरं ॥
ण य दीहो ण य तंसो ण य चउरंसो ण वट्ट-हुंडो वा । कम्मेणं देहत्थो संठाणं पावए जीवो ॥

---

1) P कंतिल्ले. 2) P चलियधय, P चामरिंद. 3) P सरिहिं, P रइय for रुइर. 5) P कणयपोमराहा, P repeats रइया, J वाईओ. 6) P पवणुव्वेल्लिर, P धूय for चूय. 7) P देवेण मयं. 8) P साहसा for सहसा. 9) P राहं for हारं, J जिण for गुण. 11) P उक्कुट्ठिसीहनीहो, P adds वहंति before य. 12) P ठावंते. 13) P अह विसि°, P चेतियरुक्खं, P शुत्तंतो for थुव्वंतो. 14) P ततो, J विय for च्चिय, P तस्सेय पभावओ. 15) P नमियं. 16) J रुंदं व्व पडि°. 17) J विमाणा, P भवणाण वासिणो होइ. 18) P देवीइ. 19) J °रट्ठियाइं P °संट्ठियाइं. 20) P जोव्वणमेत्ते, P य विकहे for अविकहे. 23) P परिणवइ सहासवे एक्क चिय सव्वसत्थेसु. 25) P om. वाणीए, P पयात्तो. 27) P लोअंमि य अत्थि, P ॥ अत्थि जीवस्स । अत्थि निज्जरणं पि यामोक्खो. 28) P सुहंमोय for अहम्मो वि. 29) P कालाभावे च्चिय अत्थि. 30) P जीवो इय पच्चक्खो 31) P विअप्पा for वियक्का. 32) J आउंट, P हसण for असण, J सद्दण for दंसण, P वितारा. 34) P किण्हो, P नीय for णील.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

ण य सीयलो ण उण्हो ण य फरुसो णेय कोमलप्फरिसो । गुरु-लहु-सिणिद्ध-भावं वच्चइ देहम्मि कम्मेणं ॥
ण य अंबिलो ण महुरो ण य तित्तो कडु-कसाय-लवणो व्व । दुरही-सुगंध-भावं वच्चइ देहस्स मज्झ-गओ ॥
ण य सो वट्टवट्ट-रूवो अच्छइ देहस्स मज्झयारम्मि । ण य होइ सव्व-वावी अंगुट्ठ-समो वि य ण होइ ॥
णिय-कम्म-गहिय-पोग्गल-देह-पमाणो परोप्पराणुगओ । णह-दंत-केस-वज्जो सेस-सरीरम्मि अवि भावो ॥
जह किर तिलेसु तेल्लं अहवा कुसुमम्मि होइ सोरब्भं । अण्णोण्णाणुगयं चिय एवं चिय देह-जीवाणं ॥
जह देहम्मि सिणिद्धे लग्गइ रेणू अलक्खिओ चेय । रायद्दोस-सिणिद्धे जीवे कम्मं तह च्चेय ॥
जह वच्चंते जीवे वच्चइ देहं पि जत्थ सो जाइ । तह मुत्तं पिव कम्मं वच्चइ जीवस्स णिस्साए ॥
जह मोरो उड्डीणो वच्चइ घेत्तुं कलाव-पब्भारं । तह वच्चइ जीवो वि हु कम्म-कलावेण परियरिओ ॥
जह कोइ इयर-पुरिसो रंधेऊणं सयं च तं भुंजे । तह जीवो वि सयं चिय काउं कम्मं सयं भुंजे ॥
जह वित्थिण्णम्मि सरे गुंजा-वायाहओ भमेज्ज हढो । तह संसार-समुद्दे कम्माइद्धो भमइ जीवो ॥
जह वच्चइ को वि णरो णीहरिउं जर-घराउ णवयम्मि । तह जीवो चइऊणं जर-देहं जाइ देहम्मि ॥
जह रयणं मयण-सुगूहियं पि अंतो-फुरंत-कंतिल्लं । इय कम्म-रासि-गूढो जीवो वि हु जाणए किंचि ॥
जह दीवो वर-भवणं तुंगं पिहु-दीहरं पि दीवेइ । मल्लय-संपुड-छूडो तत्तिय-मेत्तं पयासेइ ॥
तह जीवो लक्ख-समूसियं पि देहं जणेइ सज्जीवं । पुण कुंथु-देह-छूढो तत्तिय-मेत्तेण संतुट्ठो ॥
जह गयणयले पवणो वच्चंतो णेय दीसइ जणेण । तह जीवो वि भमंतो णयणेहि ण घेप्पइ भवम्मि ॥
जह किर घरम्मि दारेण पविसमाणो णिरुंभई वाऊ । इय जीव-घरे रुंभसु इंदिय-दाराइं पावस्स ॥
जह डज्झइ तण-कट्ठं जाला-मालाउलेण जलणेणं । तह जीवस्स वि डज्झइ कम्म-रयं झाण-जोएण ॥
बीयंकुराण व जहा कारण-कज्जाइँ णेय णज्जंति । इय जीव-कम्मयाण वि सह-भावो णंत-कालम्मि ॥
जह धाउ-पत्थरम्मि सम-उप्पण्णम्मि जलण-जोएहिं । डहिऊण पत्थर-मलं कीरइ अह णिम्मलं कणयं ॥
तह जीव-कम्मयाणं अणाइ-कालम्मि झाण-जोएण । णिज्जरिय-कम्म-किट्टो जीवो अह कीरए विमलो ॥
अह विमलो चंदमणी झरइ जलं चंद-किरण-जोएण । तह जीवो कम्म-मलं मुंचइ लद्धूण सम्मत्तं ॥
जह सूरमणी जलणं मुंचइ सूरेण ताविओ संतो । तह जीवो वि हु णाणं पावइ तव-सोसियप्पाणो ॥
जह पंक-लेव-रहिओ जलोवरिं ठाइ लाउओ सहसा । तह सयल-कम्म-मुक्को लोगग्गे ठाइ जीवो वि ॥
इय जीव-बंध-मोक्खो आसव-णिज्जरण-संवरे सव्वे । केवलणाणीहिँ पुरा भणिए सव्वेहि वि जिणेहिं ॥

एवं च देवाणुप्पिया ।

लोयम्मि के वि सत्ता विसउम्मत्ता वहम्मि आसत्ता । मरिऊण जंति णरयं दुक्ख-सयावत्त-पउरम्मि ॥
णाणावरणुदएणं कम्मेणं मोहणीय-पउरेणं । अट्ट-वसट्टा अण्णे मरिऊणं थावरा होंति ॥
मय-लोह-मोह-माया-कसाय-वसओ जिओ अयाणंतो । मरिऊण होइ तिरिओ णरय-सरिच्छासु वियणासु ॥
को इत्थ होइ देवो विमाण-वासी य वंतरो अण्णो । अण्णो भवण-णिवासी जोइसिओ चेव तह होइ ॥
झाणं णिरुंभिऊणं तवं च चरिऊण जिणवराणाए । कोइ तहिं चिय जीवो तियसिंदो होइ सग्गम्मि ॥
अण्णे गणहर-देवा आयरिया चेव होंति अण्णे वि । सम्मत्त-णाण-चरणे जीवा अण्णे वि पावंति ॥
सयल-जय-जीव-वित्थर-भत्ति-भरोणमिय-संथुयप्पाणो । भव्व-कुमुयाण ससिणो होंति जिणिंदा वि के वि जिया ॥
अण्णे मोहावत्तं दुह-सय-जल-वीइ-भंगुर-तरंगं । तरिऊण भव-समुद्दं जीवा सिद्धिं पि पावंति ॥
तम्हा करेह तुब्भे तव-संजम-णाण-दंसणेसु मणं । कम्म-कलंक-विमुक्का सिद्धि-पुरं जेण पावेह ॥

---

2 > J सुअंध. 3 > P विड for वट्ट, P य न वि for वि य ण. 4 > P परोप्पणुगओ, P केसविज्जो से सरीरंमि, J भावो' 5 > P कुसुमेसु देइ सोरंभं, P एयं चिय जीव देवाणं. 6 > P सिणिद्धो, P अलक्खेओ, P सणिद्धे. 7 > P जायइ, J पिविकम्मं. 8 > P कलावभारं पि, P य for हु, J वि हु विहिकम्मकलावपरि°. 9 > J रद्धेऊणं P रंधेसंऊणं. 10 > P हडो, P भइ for भमइ. 11 > J कोइ णरो, J नवयंति, P नवत्तंमि ज किं वि जह दीवो चऊकणं जह देहं. 12 > P रयणमयणसुगूहियंमि, P रासिमूढो, P वि न याणएइ, P om. किंचि ॥ जह दीवो etc. to पि देहं जणेइ. 15 > J जीवो for दीवो. 16 > P दारे पविस्समाणो, P वाओ. 17 > P ज्झाणजोगेण. 18 > P बीयंकुराव जाव हा कारण. 19 > J धाउ P धाओ, J पत्थरंमी, J उप्पण्णं पि. 20 > P अणावि काले वि ज्झाणजोगेहिं, P जीवो अह कीरइ अह निम्मलं कणयं, P repeats तह जीवकम्मयाणं etc. to अह कीरए विमलो. 21 > J जह for अह, J सरइ for झरइ, P किरणसंगेण. 22 > P नाणं पवइ तह सोसि°. 23 > P पंकिलेव, P जालोवरिगइलाउओ, P कम for कम्म. 24 > P adds य after इय, J मि for वि. 26 > J विसयुम्मत्ता, P सहंमि for वहम्मि. 28 > P repeats मोह, P होंति for होइ. 29 > P चेव तव होया 30 > P माणं निसुंमिऊणं, J कोवि तहिं. 31 > P inter. होंति & चेव. 32 > P संठुयप्पाणो, P व for वि (first). 33 > J पाविंति. 34 > P तुम्हा for तम्हा, J सिद्धिपुरिं, P पाविहिति for पावेह.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ पणया सव्वे वि वासवप्पमुहा देव-दाणव-गणा भणिउं च पयत्ता । 'अहो, भगवया कहिया जीवादओ पयत्था । साहिओ जीवो, परूवियाइं जीव-धम्माइं । पण्णवियं बंध-णिज्जरा-मोक्ख-भावं' त्ति ।

§ १८०) एत्थंतरम्मि कइंतरं जाणिऊण विरइयंजलिउडेण पुच्छिओ भगवया गणहर-देवेण भगवं जिणवरो । 'भगवं, इमीए स-सुरासुर-णर-तिरिय-सय-सहस्स-संकुलाए परिसाए को पढमं कम्मक्खयं काऊण सिद्धि-वसहिं पाविहइ' त्ति । भगवया भणियं । 'देवाणुप्पिया,

एसो जो तुह पासेण मूसओ एइ धूसरच्छाओ । संभरिय-पुव्व-जम्मो संविग्गो णिब्भर-पयारो ॥
मह दंसण-परितुट्ठो आणंद-भरंत-बाह-णयणिल्लो । तडुविय-कण्ण-जुयलो रोमंचुचइय-सव्वंगो ॥
अम्हाणं सव्वाण वि पढमं चिय एस पाव-रय-मुक्को । पाविहइ सिद्धि-वसहिं अक्खय-सोक्खं अणाबाहं ॥'

एवं च भगवया भणिय-मेत्ते सयल-णरिंद-वंद्र-तियसिंद-दणुवइ-पमुहस्स तियस-बलिय-वलंत-कोउय-रहस-वस-वियसमाणाइं णिवडियाइं रण्णुंदुरस्स उवरि दिट्ठि-माला-सहस्साइं । सो य आगंतूण भत्ति-भर-णिब्भरो भगवओ पायवीढ-संसिओ महियल-णिमिउत्तमंगो किं किं पि णिय-भासाए भाणिउं पयत्तो । भणियं च तियस-णाहेण । 'भगवं, महंतं मह कोऊहलं जं एस सव्वाहम-तुच्छ-जाईओ कोमल-वालुया-थली-बिल-णिवास-दुल्ललिओ रण्णुंदुरो सव्वाणं चेय अम्हाणं पढमं सिद्धि-पुरिं पाविहिइ त्ति । कहं वा इमिणा थोव-कम्मेण होइऊण एसा खुद्द-जाई पाविय' त्ति ।

§ १८१) भगवया भणियं । 'अत्थि विंझो णाम महीहरो । तस्स कुहरे विंझवासो णाम संणिवेसो विसमंतो य । तत्थ पच्चंतिओ महिंदो णाम राया । तस्स तारा णाम महादेवी । तीए पुत्तो ताराचंदो अट्ठ-वरिस-मेत्तो । एयम्मि अवसरे छिड्डुण्णेसिणा बद्ध-वेराणुसएण कोसलेण रण्णा ओक्खंदं दाऊण भेल्लियं तं संणिवेसं । तहिं णिग्गदो महिंदो, जुज्झिउं पयत्तो, जुज्झंतो य विणिवाइओ । तओ हयं सेण्णं अणाणयं त्ति पलाइउं पयत्तं, सव्वो य जणो जीव-सेसो पलाणो । तत्थ तारा वि महादेवी तं पुत्तं ताराचंदं अंगुलीए लाइऊण जणेण समयं पलायमाणी य भरुयच्छं णाम णयरं तत्थ संपत्ता । तओ तत्थ वि ण-याणए कस्स सरणं पवज्जामो । ण कयाइ वि कस्सइ अणिमित्तु थुडुंकियं मुहं दिट्ठं खलयणस्स । तओ तण्हा-छुहा-परिस्समुव्वेय-वेवमाण-हियया कत्थ वच्चामि, कत्थ ण वच्चामि, किं करेमि, किं वा ण करेमि, कत्थ पविसामि, किं पुच्छामि, किं वा आलवामि, कहं वा वट्टियव्वं' ति चिंतयंती तरला सुण्णा रण्ण-कुरंग-सिलिंबी विय अहिणव-प्पसूया णियय-जूह-भट्ठा वुण्ण-कायर-हियविया एक्कम्मि णयर-चच्चर-सिव-मंडवे पविसिउं पयत्ता । खणेण य गोयरग्ग-णिग्गयं साहुणीणं जुवलयं दिट्ठं । तं च दट्ठूण चिंतियं तीए । 'अहो, एयाओ साहुणीओ महाणुभागाओ धम्म-णिरयाओ वच्चंतीओ य पुरा मम पेइयम्मि पूयणिज्जाओ । तत्थ ता इमाओ जइ परं मह सरणं काऊण अम्हारिसाण गइ' त्ति चिंतयंती पुत्तं अंगुलीए घेत्तूण समुट्ठिया, वंदियाओ णाए साहुणीओ । आसीसिया य ताहिं, साणुणयं च पुच्छिया 'कत्तो सि आगया' । तीए भणियं 'भयवईओ विंझपुराओ' । ताहिं भणियं 'कस्स पाहुणीओ' । तओ तीय भणियं 'इमं पि ण-याणामि' त्ति । तओ तीय रूव-लायण्ण-लक्खणादिसयं पेच्छंतीहिं तं च तारिसं कलुणं भासियं सोऊण अणुकंपा जाया साहुणीणं । ताहिं भणियं 'जइ तुह इह णयरे कोइ णत्थि, ता एहि पवत्तिणीए पाहुणी होहि' । तीए वि 'अणुग्गहो'त्ति भणंतीए पडिवण्णं । गंतुं च पयत्ता । मग्गालग्गा दिट्ठा य पवत्तिणीए, चिंतियं च णाए 'अहो, इमाए वि आगितीए एरिसा आवइ' त्ति । तओ असरिस-रूव-जोव्वण-लायण्ण-लक्खण-विलासेहिं लक्खियं पवत्तिणीए जहा का वि राय-दारिय त्ति । इमो य से अइसुंदरो पासे पुत्तओ त्ति । तीए वि उवगंतूण वंदिया पवत्तिणी । आसीसिया, तीय पुच्छिया य 'कत्तो आगया' । साहियं च णियय-वुत्तंतं पवत्तिणीए । तओ सेज्जायर-घरे समप्पिया । तेहिं वि णियय-धूय व्व विणय-समा सा कया । सो वि रायउत्तो अब्भंगिउव्वत्तिय-मज्जिय-जिमिय-विलित्त-परिहिओ कओ, सुह-णिसण्णो य । भणिया पवत्तिणीए 'वच्छे, किं संपयं तए कायव्वं' ति । तीए भणियं 'भयवइ, जो मह

1) P adds या before सव्वे, P देवादाणव, P om. च, J जीवातिओ P जीवादयो. 2) P मोक्खो भावं. 3) P विरइ अंजलिणा. 4) P पाविहित्ति. 5) J देवाणुपिया. 6) P एय for एइ, J om. धूसरच्छाओ. 7) P भणंतबाइ-. 8) P पढमचिय, P पाविहिसि, J सिद्धिवसइं, P सोक्खो अणावाहिं. 9) J वंद for वंद्र, J पमुहस्स, P ति for तियस, P वियसमणाइं. 10) P रन्नंदुरस्स, P दिट्ठी, P पायपीढं. 11) P महियलनिउत्त°, P om. one किं, P नियय, P कोउहलं. 12) P जाइओ, P थलिनिवास, P रण्णुंदुरो, P inter. अम्हाणं & चेय, P सिद्धिफलं पुरिं. 13) J पाविहि त्ति, P थोय for थोव, P होइऊणा P खुड्डु, जाई. 14) P महिहरो, J कुलहरे for कुहरे, J adds महा before संणिवेसो. 15) J तीय, P छिड्डमेसेणा. 16) J ओखंदं, P से for तं, P सनिव्वेसं, P निग्गओ, P om. य. 17) J पयत्तो, P जीयसेसो. 18) P जाणेण for जणेण. 19) P अणुमित्तथुडंकियं, P °मुव्वेगमाण, J वेअमाणहिअविआ. 20) P om. कत्थ ण वच्चामि किं करेमि, P om. ण before करेमि, P आलसामि. 21) J om. तरला, P तरलारन्नकुरंगिसिलिंबी विय, P -पसूया. 23) P चिंतयंतीए, P वच्चंतीय, P पूणिज्जाओ. 24) P om. ता, P अम्हारिसा गइ त्ति चिंतयतीए पोत्तं. 25) P तीए ताहिं भणियं धम्मलाभो त्ति for णाए साहुणीओ । आसीसिया य ताहिं, साणुणयं च, J तीय for तीए, P भयवईओ. 26) J ताहिं for तीय, P इमंमि न याणमि । तओ, P रूयलावण्णलक्खणाइसयं पेच्छयंतीहिं. 27) P भाणियं, P जाया जुणीणं, P om. इह. 28) P होह, J तीय, J भणंतीय, P °लग्गा विट्ठायो पविंत्तिणी. 29) P om. वि, P अगीतीए, P अवत्थ for आवइ, P विलासाए. 30) P पविंत्तिणीए, P रायादारिय, P अमोसे for इमो य से, P दाओ for पुत्तओ, J तीय for तीए, P om. वि. 31) P पविंत्तिणी य धंनलाहिया । तीय, J णिअयं, J पवित्त (त्ती?) णीए P पविंत्तिणीए, P सेजायर. 32) P om. वि, P सायरं दिट्ठा for विणयसमा सा कया, P अब्भंगिय-. 33) P सुयनिसन्ना, P repeats वत्तिणीए before वच्छे, J तीय for तीए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णाहो सो रणम्मि विणिवाइओ । विणट्ठं विंझपुरं । णट्ठो परियणो । चंडो कोसल-णरिंदो । बालो पुत्तो अपरियणो य । ता णत्थि रज्जासा । अह उण एत्थ पत्त-कालं तं करेमि, जेण पुणो वि ण एरिसीओ आवईओ पावेमि त्ति । सव्वहा तुमं जं आदिससि तं चेय करेमि' त्ति । तओ पवत्तिणीए भणियं । 'वच्छे, जइ एवं ते णिच्छओ, तओ एस ताराचंदो आयरियाणं समप्पिओ, तुमं पुण अम्हाणं मज्झे पव्वयाहि त्ति । एवं कए सव्वं संसार-वास-दुक्खं छिण्णं होहिइ' त्ति । तीए वि 'तह' त्ति पडिवण्णं । समप्पिओ ताराचंदो भगवओ अणंत-जिणवर-तित्थे अणुवत्तमाणे सुणंदस्स आयरियस्स । तेण वि जहा-विहिणा पव्वाविओ ।

§ १८२) तओ किंचि कालंतरं अइक्कंतं जोव्वण-वस-विलसमाण-रायउत्त-सहावो खग्ग-धणु-जंत-चक्क-गंधव्व-णट्ट-वाइय-विलासो उम्मग्गं काउमाढत्तो । तओ पण्णविओ आयरिएणं, भणिओ गणावच्छेएण, सासिओ उवज्झाएण, संणविओ साहु-यणेण । एवं च चोइज्जमाणो य ईसि-परिणाम-भंगं काउमाढत्तो । एत्थ य अवसरे आयरिया बाहिर-भूमिं गया । सो य मग्गओ गओ । तत्थ य अच्छमाणेणं वणत्थलीए रण्णुंदुरा कीलंता दिट्ठा । तओ चिंतियं णेणं । 'अहो, धण्णा इमे, पेच्छ खेलंति जहिच्छाए, फरुसं णेय सुणेंति, णेय पणमंति, वियरंति हियय-रुइयं । अव्वो रण्णुंदुरा धण्णा । अम्हाणं पुण परायत्त-जीवियाणं मय-समं जीवियं, जेण एक्को भणइ एयं करेहि, अण्णो पुण भणइ इमं करेहि, इमं भक्खं इमं चाभक्खं, इमं पियसु इमं मा छिवसु, एत्थ पायच्छित्तं, एयं आलोएसु, विणयं करेसु, वंदणं कुणसु, पडिक्कमसु त्ति । ता सव्वहा एक्कं पि खणं णत्थि ऊसासो त्ति । तेण रण्णुंदुरा धण्णा अम्हाहिंतो' ति चिंतयंतो वसइं उवगओ । तं च तारिसं णियाण-सल्लं ण तेण गुरूणं आलोइयं, ण णिंदियं, ण पायच्छित्तं चिण्णं । एवं च दियहेसु वच्चंतेसु अकाल-मच्चूए मरिऊण णमोक्कारेणं जोइसियाणं मज्झे किंचि-ऊण-पलियाउओ देवत्ताए उववण्णो । तओ तत्थ एसो भोए भुंजिऊण एत्थ चंपाए पुव्वुत्तरे दिसा-भाए मोरुत्थलीए थलीए रण्णुंदुर-कुले एक्काए रण्णुंदुर-सुंदरीए कुच्छिंसि उववण्णो । तत्थ य जाओ णियय-समएणं, कमेण य जोव्वणमणुप्पत्तो । तत्तो अणेय-रण्णुंदुर-सुंदरी-वंद्र-परियरिय-मंदिरो रममाणो अच्छिउं पयत्तो । तओ कहिंचि बाहिरं उवगयस्स समवसरण-विरयण-कुसुम-वुट्ठि-गंधो आगओ । तेण य अणुसारेण अणुसरंतो तहाविह-कम्म-चोइज्जमाणो य एत्थ समवसरणे संपत्तो, सोउं च समाढत्तो मह वयणं । सुणेंतस्स य जीवाइए पयत्थे पेच्छंतस्स य साहु-लोयं तहाविह-भवियव्वयाए ईहापूह-मग्गणं करेमाणस्स 'एरिसं वयणं पुणो वि णिसुय-पुव्वं' ति, 'एयं पुण वेसं अणुहूय-पुव्वं' ति चिंतयंतस्स तस्स तहाविह-णाणावरणीय-कम्म-खओवसमेणं जाई-सरणं उववण्णं । 'अहं संजओ आसि, पुणो जोइसिओ देवो, पुणो एस रण्णुंदुरो जाओ' त्ति । एयं सुमरिऊण 'अहो, एरिसो णाम एस संसारो त्ति, जेण देवो वि होऊण तिरिय-जाईए अहं उववण्णो त्ति । ता आसण्णं भगवओ पाय-मूले गंतूण भगवंतं वंदामि । पुच्छामि य किं मए उंदुरत्तणं पत्तं, किं वा पाविहामि' त्ति चिंतयंतो एस मम सयासं आगओ त्ति । बहुमाण-णिब्भर-हियओ य ममं हियएण थुणिऊण समाढत्तो । 'अवि य,

भगवं जे तुह आणं तिहुयण-णाहस्स कह वि खंडंति । ते मूढा अम्हे विय दूरं कुगईसु वियरंति ॥

ता भगवं, किं पुण मए कयं, जेणाणुभावेण एस एरिसो जाओ मि' । एस पुच्छइ । 'ता भो भो महासत्त, तम्मि काले तए चिंतियं जहा रण्णुंदुरा धण्ण' त्ति । तओ तेण णियाण-सल्ल-दोसाणुभावेण देवत्तणे वि आउय-गोत्ताइं रण्णुंदुरत्तणे णिबद्धाइं ।

§ १८३) एत्थंतरे पुच्छिओ भगवया गणहारिणा । 'भगवं, किं सम्मद्दिट्ठी जीवो तिरियाउयं बंधइ ण व' त्ति । भणियं च भगवया 'सम्मद्दिट्ठी जीवो तिरियाउयं वेदेइ, ण उण बंधइ । भण्णइ य ।

---

1 > P विज्झपुरं. 2 > P पत्तयालन्तं, P om. ण after वि, J आवइओ, P adds न before पावेमि. 3 > P आइससि, P om. चेय, J पवत्तिणीय, P तो for ते. 4 > J समप्पीयदु P समुप्पिओ, P होहिति, J तीय for तीए. 5 > P पडिसन्नं, P अणंतइ-, P अणुव्वट्टमाणे, P तेणावि. 7 > J तओ कंचि, P विलासमाण, J धणुचक्क, P वातिय. 8 > P गणावच्छेआएण सासिया, P om. उवज्झाएण संणविओ etc. to अवसरे आयरिया. 10 > P मओ for गओ, P वरात्थलीए रत्नंदुरा. 11 > P न for णेय, J सुणंति. P विरयंति हियरुइयं, P रण्णंदुरा, P अम्हाण पुणो. 12 > P om. पुण, J तमं करेइ for इमं करेहि. 13 > P एवं for इमं before मा, P एवं for एयं, J पि ण खणण्णत्थि. 14 > P रत्नंदुरा, P om. ति, P वसहिं, P -सल्लं न चेय गुरुणोइयं न. 15 > J जोतिसियाणं. 16 > J पलिताउओ P पलियाओउ, J om. एसो, P एत्थं चंप्पाए, P दिसाविभाए मोरच्छलीए रण्णंदुरकूले. 17 > J एक्का रण्गुंदुदुंदरीय कुच्छीए, P रण्णंदुर, P जोव्वणं संपत्तो. 18 > J तओ for तत्तो, P अणेयरं सुंदरसुंदरी, P परियंदिय, P सवसरणवियरणा. 19 > J वुट्ठी, P om. य. 20 > J जीवातीए पदत्थे, P तहाविहभविहभविय°, J भवितव्वताए य ईहा°, P ईहापूइयमग्गणं. 21 > J करमाणस्स, P om. ति, J om. तस्स. 22 > J कम्मखयोव°, J संजोतो, P संजझओ, J जोतिसिओ, P om. एस, J om. त्ति. 23 > P जेण दोवो वि. 24 > J पावीहामि, P सगासं. 25 > P बहुनाण, P om. य before ममं. 26 > P खंडेंति, P विव दूरं कुगवीसु. 27 > P सए for एस, P om. one भो, J महासत्ता P महासत्तो. 28 > P रण्णंदुरा, P adds निंदिया before णियाण, P रण्णंदुरत्तणेण. 30 > P एत्थंतरेण, P सम्मद्दिट्ठी, P adds न before बंधइ. 31 > P सम्मद्दिट्ठी, J वेतेति for वेदेइ, P बंधंति, P वा for य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्मत्तम्मि उ लद्धे ठइयाइं णरय-तिरिय-दाराइं । जइ य ण सम्मत्त-जढो अहव ण बद्धाउओ पुव्विं ॥

ता इमिणा देवत्तणम्मि वट्टमाणेण सम्मत्तं वमिऊणं आउयं तिरियत्ते बद्धं' ति । भणियं च तियसवइणा 'भगवं, कहं पुण संपयं एस सिद्धिं पाविहि' त्ति । भणियं च भगवया । 'इओ एस गंतूणं अत्तणो वणत्थलीए वच्चंतो चिंतिहिइ हियए । 'अहो दुरंतो संसारो, चलाइं चित्ताइं, चंचला इंदिय-तुरंगमा, विसमा कम्म-गईं, ण सुंदरं णिग्गम-सत्तं, अहमा उंदुर-जोणी, दुलहं जिणवर-मग्गं, ता वरं एत्थ णमोकार-सणाहो मरिऊण जत्थ विरइं पावेमि तत्थ जाओ' त्ति चिंतयंतो तम्मि चेय अत्तणो बिल-भवणेक्क-देसे भत्तं पच्चाइक्खिय एयं चिय मह वयणं संसारस्स दुग्गत्तणं च चिंतेंतो णमोकार-परो य अच्छिहइ त्ति । तत्थ वि से चिट्ठंतस्स रण्णुंदुर-सुंदरीओ सामाय-तंदुल-कोद्दवाइए य पुरओ णिमेंति । तओ चिंतेहिइ । 'भो भो जीव दुरंत-पंत-लक्खण, एत्तियं कालं आहारयंतेण को विसेसो तए संपाविओ । संपयं पुण भत्त-परिच्चाएण तं पावसु जं संसार-तरंडयं' ति चिंतयंतो तत्तो-हुत्तं ईसिं पि ण पुलएइ । एयारिसं तं दट्टूण ताओ रण्णुंदुर-सुंदरीओ चिंतिहिंति । 'अहो, केण वि कारणंतरेण अम्हाणं एस साम-सुंदरंगो कोविओ होहिइ । ता दे पसाएमो' त्ति चिंतयंतीओ अल्लीणाओ । तओ का वि उत्तिमंगं कंडुयइ, अण्णा मंसु-केसे दीहरे संठवेइ, अण्णा रिक्खाओ अवणेइ, अण्णा अंगं परिमुसइ । एवं च कीरमाणो चिंतिहिइ । अवि य,

णरओयारं तुब्भे तुब्भे सग्गग्गलाओ पुरिसस्स । संसार-दुक्ख-मूलं अवेह पुत्तीउ धुत्तीओ ॥

त्ति मण्णमाणो ण ताहिं खोहिज्जिहि त्ति । तओ तत्थ तइए दियहे खुहा-सोसिय-सरीरो मरिऊण मिहिलाए णयरीए मिहिलस्स रण्णो महादेवीए चित्तणामाए कुच्छीए गब्भत्ताए उववज्जिहिइ । गब्भत्थेण य तेण देवीए मित्त-भावो सव्व-सत्ताणं उवरिं भविस्सइ । तेण से जायस्स मित्तकुमारो त्ति णामं कीरिहिइ । एवं च परिवड्ढमाणो कोतुहली बालो कुक्कुड-मक्कडए पसु-संबर-कुरंग-घोरुद्दवेहिं बंधण-बंधएहिं कीलिहि त्ति । एवं च कीलंतस्स अट्ठ वरिसाइं पुण्णाइं । समागओ वासारत्तो । अवि य,

गज्जंति घणा णच्चंति बरहिणो विज्जुला वलवलेइ । रुक्खग्गे य बलाया पहिया य घरेसु वच्चंति ॥

जुप्पंति णंगलाइं भज्जंति पवाओ वियसए कुडओ । वासारत्तो पत्तो गामेसु घराइं छज्जंति ॥

एरिसे य वासारत्त-समए णिग्गओ सो रायउत्तो मित्तकुमारो णयर-बाहिरुद्देसं । कीलंतो तेहिं सउण-सावय-गणेहिं बंधण-बद्धेहिं अच्छिहिइ । तेण य पएसेण ओहिणाणी साहू वच्चिहिइ । वोलेंतो चेय सो पेच्छिऊण उवओगं दाहिइ चिंतेहिइ य 'अहो, केरिसा उण रायउत्तस्स पयई, ता किं पुण एत्थ कारणं' ति । उवउत्तो ओहिणाणेणं पेच्छिहिइ से ताराचंद-साहु-रूवं, पुणो जोइस-देवो, पुणो रण्णुंदुरओ, तओ एत्थ समुप्पण्णो' त्ति । जाणियं च साहुणा जहा एसो पडिबुज्झइ त्ति चिंतयंतो भाणिहिइ । 'अवि य,

भो साहू देवो वि य रण्णुंदुरओ सि किं ण सुमरासि । णिय-जोणि-वास-तुट्ठो जेण कयत्थेसि तं जीवे ॥'

तं च सोऊण चिंतिहिइ कुमारो 'अहो, किं पुण इमेणं मुणिणा अहं भणिओ, साहू देवो रण्णुंदुरओ' त्ति । ता सुय-पुव्वं पिव मंतियं णेण । एवं च ईहापूहा-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स तहाविह-कम्मोवसमेणं जाई-सरणं से उवयज्जिहिइ । णाहिइ य जहा अहं सो ताराचंदो साहू जाओ, पुण देवो, तत्तो वि तिरएसु रण्णुंदुरो जाओ त्ति, तम्हा मओ णमोक्कारेण इहागओ त्ति । तं च जाणिऊण चिंतिहिइ । 'अहो, धिरत्थु संसार-वासस्स । कुच्छिओ एस जीवो जं महा-दुक्ख-परंपरेण कह-कह वि पाविऊण दुलहं जिणवर-मग्गं पमाओ कीरइ त्ति । ता सव्वहा संपयं तहा करेमि जहा ण एरिसाइं पावेमि । इमस्स चेव मुणिणो सगासे पव्वइउं इमाइं तवो-विहाणाइं, इमाइं अभिग्गह-विसेसाइं, इमा चरिया करेमि' त्ति चिंतयंतस्स अउव्व-करणं खवग-सेढी अणंत-केवल-वर-णाण-दंसणं समुप्पज्जिहिइ ।

---

2 > P च रियसवइणा. 3 > J इ for त्ति, P चिंतिहि, J om. हियए. 4 > P तुरंगा. 5 > P दुलहं, P विरइयं. 6 > P चेय for च्चिय, P संसारदुग्ग°, P om. य. 7 > P से चिट्ठं च सारंणुंदुरदुंदुरीओ, J कोद्दवाईए P कोद्दवाथिए, P चिंतेइ. 8 > J वंत for पंत, P निल्लक्खण for लक्खण, J आहारंतेण. 9 > P तरंडयंतो हुतत्तो तं ईसिं, P एतारिसं च तं, P रण्णंदुर. 10 > J केणावि, P कालंतरेण, कुविओ होही ।. 11 > J उत्तमंगं, P कंदुइय, P कोसे, J अन्ना लिक्खाओ अवणेइ अ अन्ना. 13 > P inter. तुब्भे & नरओयारं, P मुत्तीउ for पुत्तीउ. 14 > P om. त्ति, P खोहिज्जइ त्ति, P om. तओ, P महिलाए नयरीए महिररस. 15 > P कुच्छीए गब्भे उववन्नो ।, P om. य, P भव्व for सव्व. 16 > P जाओ for भविस्सइ, J adds त्ति after भविस्सइ, P से जोयस्स, P कीरइइ, P °माणकोऊहली, J पालो for बालो. 17 > P कुरंगमोरुदुरेहिं बंधणबद्धेण कीलि°, J ति for त्ति, P om. च. 19 > P विज्जुला चलचलेइ. 21 > P om. य, P गणेणंहि. 22 > P om. अच्छिहिइ, P य तेएसेण य ओहि°, P वच्चियइ, J वोलेंचेय, P om. चेय, J उवगओगं, P दीहीइ, J चिंतेहिंदिअ P om. चिंतेहि य. 23 > J inter. पयई & रायउत्तस्स, P पुण तेत्थ, P पेच्छइ से. 24 > P रण्णंदुरओ. 26 > P रण्णंदुरणो, J किण्ण P किं दिन्न. 27 > P चिंतिहीइ, P रण्णुंदुरतो, P ति for पिव. 28 > P से उप्पन्नं । जाणियं च णेणं जहा अहं से तारा°, P पुणो, P तिरिएसो रणुंदुरो, J उ for मओ. 30 > J परंपरे. 31 > P संपयत्तहा, P inter. एरिसाइं & ण, J चेअ. 32 > J सयासे, J om. तवोविहाणाइं इमाइं. 33 > P समुप्पज्जिह त्ति.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

एत्थंतरम्मि जं तं आउय-कम्मं ति तेण संगहियं । केवल-णाणुप्पत्ती तस्स खओ दो वि जायाइं ॥

एवं च तक्खणं चेय तत्तिय-मेत्त-कालाओ अंतगड-केवली होहिइ त्ति । तेण भणिमो जहा एस अम्हाणं सव्वाण वि पढमं सिद्धिं वच्चिहिइ । अम्हाणं पुण दस-वास-लक्खाउयाणं को वच्चइ त्ति ।

§ १८४) इमं च रयणुंदुरक्खाणयं णिसामिऊण सव्वाणं चेय तियसिंदप्पमुहाणं सुरासुराणं मणुयाण य महंतं कोउयं समुप्पण्णं । भत्ति-बहु-माण-सिणेह-कोउय-णिब्भर-हियएणं सुरिंदेणं आरोविओ णियय-करयले सो रयणुंदुरो । भणियं च वासवेणं । 'अहो,

तं चिय जए कयत्थो देवाण वि तं सि वंदणिज्जो सि । अम्हाण पढम-सिद्धो जिणेण जो तं समाइट्ठो ॥
भो भो पेच्छह देवा एस पभावो जिणिंद-मग्गस्स । तिरिया वि जं सउण्णा सिज्झंति अणंतर-भवेण ॥
तेणं चिय बेंति जिणा अहयं सव्वेसु चेय सत्तेसु । जं एरिसा वि जीवा एरिस-जोणी समल्लीणा ॥'

एवं जहा वासवेण तहा य सव्व-सुरिंदेहिं दणुय-णाहेहि य णरवइ-सएहिं हत्थाहत्थिं घेप्पमाणो राय-कुमारओ विय पसंसिज्जमाणो उववूहिज्जंतो थिरीकरिज्जंतो वण्णिज्जंतो परियंदिओ पूइऊण पसंसिओ । अहो धण्णो, अहो पुण्णवंतो, अहो कयत्थो, अहो सलक्खणो, अहो अम्हाण वि एस संपूर-मणोरहो त्ति जो अणंतर-जम्मे सिद्धिं पाविहइ । ण अण्णहा जिणवर-वयणं ति । एयम्मि अवसरे विरइयंजलिउडेण पुच्छियं पउमप्पह-देवेणं । भणियं च णेण 'भगवं, अम्हे भव्वा किं अभव्व' त्ति । भगवया भणियं 'भव्वा' । पुणो देवेण भणियं 'सुलह-बोहिया दुलह-बोहिय' त्ति । भणियं च भगवया 'किंचि णिमित्तं अंगीकरिय सुलह-बोहिया ण अण्णह' त्ति । पउमप्पहेण भणियं 'भगवं, कइ-भव-सिद्धिया अम्हे पंच वि जणा' । भगवया भणियं 'इओ चउत्थे भवे सिद्धिं पाविहह पंच वि तुम्हे' त्ति । भणियं पउमप्पभेणं 'भगवं, इत्तो चुक्का कत्थ उप्पज्जिहामो' त्ति । भगवया भणियं 'इओ तुमं चइऊणं वणियउत्तो, पउमवरो उण रायउत्तो, पउमसारो उण रायधूया, पउमचंडो उण विंझे सीहो, पउमकेसरो उण पउमवर-पुत्तो' त्ति । इमं च भणमाणो समुट्ठिओ भगवं धम्म-तित्थयरो, उवसंघरियं समवसरणं, पवज्जिया दुंदुही, उट्ठिओ कलयलो, पयट्टो वासवो । विहरिउं च पयट्टो भगवं कुमुद-संड-बोहओ विय पुण्णिमायंदो । अम्हे वि मिलिया, अवरोप्परं संलावं च काउमाढत्ता । एक्कमेक्कं जंपिमो 'भो, णिसुयं तुब्भेहिं जं भगवया आइट्ठं । तओ एत्थ जाणह किं करणीयं सम्मत्त-लंभत्थं' ति । तओ मंतिऊण सव्वेहिं 'अहो, को वि वाणियउत्तो, अण्णो रायउत्तो, अवरो वणे सीहो, अण्णो राय-दुहिय त्ति । ता सव्वहा विसंठुलं आवडियं इमं कज्जं । ता ण-याणामो कहं पुण बोहि-लाभो अम्हाणं पुण समागमो य होज्ज' त्ति । 'ता सव्वहा इमं एत्थ करणीयं' ति चिंतयंतेहिं भणियं । 'अहो पउमकेसर, तुमं भगवया आइट्ठो, 'पच्छा चविहिसि', ता तए दिव्वाए सत्तीए अम्हाणं जत्थ तत्थ गयाणं सम्मत्तं दायव्वं, ण उण सग्ग-सुंदरी-वंद्र-तुंग-थण-थल-पेल्लणा-सुहल्लि-पम्हुट्ठ-सयल-पुव्व-जंपिएण होयव्वं' । तेण भणियं । 'देमि अहं सम्मत्तं, किंतु तुब्भे मह देंतस्स वि मिच्छत्तोवहयमणा ण पत्तियायहिह । ता को मए उवाओ कायव्वो' त्ति । तेहिं भणियं । 'सुंदरं संलत्तं, ता एयं पुण एत्थ करणीयं । अत्तणोत्तणो रूवाइं जं भविस्साइं रयण-मयाइं काऊण एक्कम्मि ठाणे णिक्खिप्पंति । तम्मि य काले ताइं दंसिज्जंति । ताइं दट्ठूण कयाइं पुव्व-जम्म-सरणं साहिण्णाणेण धम्म-पडिवत्ती वा भवेज्ज' त्ति भणमाणेहिं णिम्मवियाइं अत्तणो रूव-सरिसाइं रयण-पडिरूवयाइं । ताइं च णिक्खित्ताइं णेऊण वणे जत्थ सीहो उववज्जिहि त्ति । तस्स य उवरिं महंती सिला दिण्ण त्ति । तं च काऊण उवगया णियय-विमाणं । तत्थ भोए भुंजंता जहा-सुहं अच्छिउं पयत्ता । तओ कुमार कुवलयचंद, जो सो ताण मज्झे पउमप्पहो देवो सो एक्कपए चेय केरिसो जाओ । अवि य,

---

1) P, after तस्स, repeats अउव्वकरणं खमगसेढी etc. to केवलनाणुप्पत्ती तस्स. 2) P om. च, J मेत्तकला(त)ओ J om. त्ति, P एसो for एस. 3) P सहस्साउ for लक्खाउ, J वच्चिइ P वच्चउ. 5) J करयलंजलि (णे?). 8) P सहावो for पभावो, P भवेसु. 9) P तेयणं for तेणं, P अहियं. 10) P वावेण्ण for वासवेण, J om. य, P नरवर-, P हत्थाहत्थेहिं, P रायकुमारो. 11) P उवगूहिज्जंतो, P om. वण्णिज्जंतो (of J ?), J विपरिअंदिओ, P पसंसिक. 12) P सव्वहा for अहो before अम्हाण, P संपुन्न for संपूर, J जिणवयणं. 13) P adds य before अवसरे, P विरइय पंजलि°. 14) P अम्हा for भव्वा after भणियं, J om. पुणो देवेण भणियं, J दुलहबोधिअ त्ति. 15) P अंगीकरी सु°, P पउमप्पमेण, J कतिभव. 16) J इतो for इओ, J पाविहिह, J तुम्हेहिं । P तुब्भे त्ति ।, J इदो चुक्का P इतु चुया. 17) J उप्पज्जीहामो, P संपज्जिहामो. J इतो for इओ, P om. पउमवरो उण रायउत्तो, P पढमसारो. 18) P om. उण before विज्झे सीहो (in P), J पउमवरस्स पुत्तो, P भणमाणो उवट्ठिओ. 19) P विरिहरिउं, P om. च, J पयत्तो । कुमुद°. 20) J adds भगवं after पुण्णिमायंदो. 21) J लम्हत्थं ति. 22) P अन्ने रायउत्तो, P दुहिओ त्ति, J विसंथुलं. 23) P ता एयं ण-, P om. पुण, P om. ति. 24) P पउमकेसरं, P चविहसि. 25) P adds दाऊण before सुंदरी-, J त्थलारूपेल्लणा. 26) J महदिसंतस्स मिच्छत्तो°, P तं for ता. 27) P om. पुण before एत्थ, P अत्तिणो रूवाइं, P om. जं, J भविस्सइं. 28) P थाणे निक्खमंति, J णिक्खिम्मंति. 29) P वि for ताइं च, P inter. जत्थ and वणे. 30) J विमाणे, P भुंजित्ता. 31) P पउमप्पभो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियलंत-देह-सोहो परियण-परिवज्जिओ सुदीण-मणो । पवणाहओ व्व दीवो झत्ति ण णाओ कहिं पि गओ ॥

तत्तो य चविऊण मणुयाणुपुव्वी-रज्जू-समायड्ढिओ कत्थ उववण्णो ।

§ १८५) इहेव जंबुदीवे भारहे वासे दाहिण-मज्झिम-खंडे चंपा णाम णयरी । सा य केरिसा । अवि य,

धवल-हर-तुंग-तोरण-कोडि-पडाया-फुरंत-सोहिल्ला । जण-णिवहुद्दाम-रवा णयरी चंप त्ति णामेणं ॥

तीए णयरीए तुलिय-धणवइ-धण-विहवो धणदत्तो णाम महासेट्ठी । तस्स य घरे घर-लच्छि व्व लच्छी णामेण महिला । तीए य उयरे पुत्तत्ताए उववण्णो सो पउमप्पभो देवो । णवण्ह य मासाणं बहु-पडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं सुकुमाल-पाणिपाओ रत्तुप्पल-दल-भारओ विय दारओ जाओ । तं च दट्ठूण कयं वद्धावणयं महासेट्ठिणा जारिसं पुत्त-लंभस्सुदए त्ति । कयं च से णामं गुरूहिं अणेय-उवयाइएहिं सागरेण दत्तो त्ति सागरदत्तो । तओ पंचधाई-परिवुडो कमेण य जोव्वणं संपत्तो । तो जोव्वण-पत्तस्स य ता रूव-धण-विहव-जाइ-समायार-सीलाणं वणिय-कुलाणं दारिया सिरि व्व रूवेण सिरी णामा उवभोग-सहा एगा दिण्णा गुरुयणेणं । तओ अणेय-णिद्ध-बंधु-भिच्च-परिवारो अच्छिउं पयत्तो । को य से कालो उववण्णो । अवि य,

रेहंति हंस-मंडलि-मुत्ताहल-मालिया-विहूसाओ । आवण्ण-पयहराओ परियण-वहुयाउ व णईओ ॥
रेहंति वणे कासा जलम्मि कुमुयाइँ णहयले मेहा । सत्तच्छयाइँ रण्णे गामेसु य फुल्ल-णीयाइं ॥

एरिसे य सरय-काले मत्त-पमत्ते णच्चिरे जणवए पुण्णमासीए महंते ऊसवे वट्टमाणे सो सागरदत्तो सेट्ठिउत्तो णियय-बंधु-णिद्ध-परियारो णिग्गओ णयरि-कोमुइं दट्ठूण । एक्कम्मि य णयरि-चच्चरे णडेण णच्चिउं पयत्तं । तत्थ इमं पढियं कस्स वि कइणो सुहासियं । अवि य ।

यो धीमान् कुलजः क्षमी विनयवान् धीरः कृतज्ञः कृती, रूपैश्वर्ययुतो दयालुरशठो दाता शुचिः सत्रपः ।
सद्भोगी दृढसौहृदो मधुरवाक् सत्यव्रतो नीतिमान्, बन्धूनां निलयो नृजन्म सफलं तस्येह चामुत्र च ॥

तं च वोलंतेण तेण सागरदत्तेण णिसुयं । तओ सुहासिय-रसेण भणियं तेण । 'भो भो भरह-पुत्ता, लिहह सायरदत्तं इमिणा सुहासिएण लक्खं दायव्वं' ति । तओ सव्वेहि चि णयरी-रंग-जण-णायरएहिं भणियं । 'अहो रसिओ सायरदत्तो, अहो वियड्ढो, अहो दाया, अहो चाई, अहो पत्थावी, अहो महासत्तो' त्ति । एवं पसंसिए जणेणं, तओ एक्केण भणियं खल-णायरएणं 'सच्चं चाई वियड्ढो य जइ णियय-दुक्खज्जियं अत्थं दिण्णं, जइ पुण पुव्व-पुरिसज्जियं ता किं एत्थ परदव्वं देंतस्स । भणियं च ।

'जो देइ धणं दुह-सय-समज्जियं अत्तणो भुय-बलेण । सो किर पसंसणिज्जो इयरो चोरो विय वराओ ॥'

एयं च णिसामिऊण हसमाणेहिं भणियं सव्वेहिं णिद्ध-बंधवेहिं । 'सच्चं सच्चं संलत्तं' ति भणमाणेहिं पुलइयं तस्स वयणं ।

§ १८६) सायरदत्तो पुण तं च सोऊण चिंतिउं समाढत्तो । 'अहो, पेच्छ कहं अहं हसिओ इमेहिं । किं जुत्तं इमाण मम हसिउं जे । अहवा णहि णहि, सुंदरं संलत्तं जहा 'जो बाहु-बल-समज्जियं अत्थं देइ सो सत्ताहिओ, जो पुण परकीयं देइ सो किं भण्णउ' त्ति । ता सव्वहा ममं च अत्ताणयं णत्थि धणं, ता उवहासो चेय अहं' ति चिंतयंतस्स हियए सल्लं पिव लग्गं तस्स । अवि य,

थेवं पि खुडइ हियए अवमाणं सुपुरिसाण विमलाण । वायालाइय-रेणुं पि पेच्छ अच्छिं दुहावेइ ॥

तह वि तेण महत्थत्तणेण ण पयडियं । आगओ घरं, विरइया सेज्जा, उवगओ तम्मि उवविट्ठो, लक्खिओ य सिरीए इंगियायार-कुसलाए जहा किंचि उव्विग्गो विय लक्खीयइ एसो । लद्ध-पणय-पसराए य भणिओ तीए 'अज्ज तुमं दुम्मणो विय लक्खीयसि' । तेण य आगार-संवरणं करेंतेण भणियं 'ण-इंचि, केवलं सरय-पोण्णिमा-महूसवं पेच्छमाणस्स परिस्समो

---

1) P -सोभो, P परियज्जिओ. 2) P om य, J चइऊण, P रज्जसमा°. 3) J जंबूदीवे, P नगरी, P केरिसी. 4) P तोरणुकोडिपडागा-, P °दामरया. 5) P om. महा, P om. य. 6) P तीय उयरे, J उवरे, P नवण्हं मासाणं, P °पुण्णाइं अद्धट्ठमाइं राइंदियाइं सुकु°. 7) J om. दल, P adds च after कयं, P महसेट्ठिणा. 8) J पुत्तलंभसुअए P पुत्तलंसुदए, J om. कयं च से etc. to सागरदत्तो । P उववाइएहिं सागरदत्तो त्ति, P पंचधावी-. 9) J तओ for तो, J अइ for जाइ P जाई, J राणिय for वणिय, P दारियं. 10) J उवभोगसुहाइ य दिण्णा, P om. अणेय, P निबद्ध for णिद्ध, P कोलो for को य से कालो. 12) P विभूसाओ, P परिणय for परियण. 13) P फुल्लिया निंबा ॥, P om. य सरयकाले etc. to णिग्गओ णयरि. 15) P नयरचच्चरे. 17) P कुलज्ञ for कुलजः, P om. कृतज्ञः, P रूपेश्वर्य°, P सत्रपः सद्भागी. 18) P तस्येह वा चमुत्र. 19) P बोलंतेण, P om. तेण P सायरदत्तेण, P adds च after भणियं, J भरहउत्ता, J सायरयत्तं. 20) P सव्वेहिं नयरि°, J सागरदत्तो. 21) J दाता, P repeats अहो before महासत्तो, P जिणाणं for जणेणं, P तओ भणियं एक्केण नायरएणं. 22) P om. य, J भणिअव्वं । जो. 23) P इव for विय. 24) P एवं च निसामिऊणइ, P ति for second सच्चं. 25) P सागरदत्तो उण, J om. च (later struck off), P दूसिओ for हसिओ, P अम्हाणं for इमाण. 26) P परकियं. 27) P किं न भण्णउ, J adds अ before धणं, P हियसल्लं. 29) P वाओलाइय, J दुवावेइ. 31) J किंपि for किंचि, J लक्खीयति P लक्खियति, J तीय, P दुमाणा विय. 32) P आगारससंवरणं, P न किंचि, P adds आसि before महूसवं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाओ, णिव्वजामि' त्ति भणमाणो णिवण्णो । तत्थ य अलिय-पसुत्तो किं किं पि चिंतयंतो चिट्ठइ ताव सिरी पसुत्ता । सुपसुत्तं च तं णाऊण सणियं समुट्ठिओ । गहियं च एक्कं साडयं, फालियं च । एक्कं णियंसियं, दुइयं कंठे णिबद्धं । गहियं च खडिया-खंडलयं । वासहर-दारे आलिहिया इमा गाहुल्लिया । अवि य,

संवच्छर-मेत्तेणं जइ ण समज्जेमि सत्त कोडीओ । ता जलिइंधण-जालाउलम्मि जलणम्मि पविसामि ॥

त्ति लिहिऊण णिग्गओ वास-घराओ । उवगओ णयर-णिद्धमणं । णिग्गओ तेण, गंतुं पयत्तो दक्खिणं दिसिवहं । तं च केरिसं । अवि य,

बहु-रयणायर-कलिओ सुरूव-वियरंत-दिव्व-जुवइ-जणो । विबुहयण-समाइण्णो सग्गो इव दक्खिणो सहइ ॥

तं च तारिसं दक्खिणावहं अवगाहेंतो संपत्तो दक्खिण-समुद्द-तीर-संसियं जयसिरि-णामं महाणयरिं । जा य कइसिया । कंचण-घडिय-पायार-कंची-कलाव-रेहिरा, बहु-रयणालंकारिया, मुत्ताहार-सोहिया, संख-वलय-सणाहा, दिव्व-मउय-सण्ह-णियसण-मळय-रस-विलेवण-णाणा-विहुल्लाव-चेयड्ढि-मणोहरा, चारु-दियवर-रेहिर-कप्पूर-पूर-पसरंत-परिमल-सुयंध-धूव-मघमघेंतुग्गार-कक्कोलय-जाइफल-लवंग-सुयंध-समाणिय-तंबोल व्व णज्जइ वासय-सज्जा विय पणइणि महासमुद्द-णायग-गहिय त्ति । अवि य,

विरइय-रयणाहरणा विलेवणा-रइय-सुरहि-तंबोला । उयहि-दइयं पडिच्छइ वासय-सज्जा पणइणि व्व ॥

§ १८७) तीय य महाणयरीए बाहिरुद्देसे एक्कम्मि जुण्णुज्जाणे रत्तासोयस्स हेट्ठा दूर-पह-सम-किलंतो णिसण्णो सो वाणियउत्तो । किं च चिंतिउं पयत्तो । अवि य,

किं मयर-मच्छ-कच्छव-हलिर-वीई-तरंग-भंगिल्ले । उयहिम्मि जाणवत्तं छोढूणं ताव वच्चामि ॥
किं वा णिहय-असि-पहर-दारियासेस-कुंभवीढाए । आरुहिउं कुंजर-मंडलीएँ गेण्हे बला लच्छि ॥
किं वा पयंड-भुय-सिहर-वच्छ-णिच्छल्लणा-रुहिर-पंकं । अज्जं चिय अज्जाए देमि बलिं मंस-खंडेहिं ॥
किं वा राई-दियहं अवहत्थिय-सयल-सेस-वावारो । जा पायालं पत्तो खणामि ता रोहणं चेय ॥
किं वा गिरिवर-कुहरे खत्तं खणिऊण मेलिउं जोए । अवहत्थिय-सेस-भओ धाउव्वायं च ता धमिमो ॥
इय हियउच्छाह-रसो अवस्स-कायव्व-दिण्ण-संकप्पो । जावच्छइ वणिय-सुओ किं कायव्वं ति संमूढो ॥

एवं च अच्छमाणेण दिट्ठो एक्कस्स मालूर-पायवस्स पसरिओ पायओ । तं च दट्ठूण सुमरिओ अहिणव-सिक्खिओ खण्णवाओ । अहो, एवं भणियं खण्णवाए ।

मोत्तूण खीर-रुक्खे जइ अण्ण-दुमस्स पायओ होइ । जाणेज्जसु तत्थत्थो अत्थि महंतो व्व थोओ व्व ॥

ता अवस्सं अत्थेत्थ किंचि । ण इमं अकारणं । जेण भणियं धुवं बिल्ल-पलासयो । केत्तियं पुण होज्ज अत्थो ।

तणुयम्मि होइ थोवं थूलम्मि य पादवे बहुं अत्थं । रयणीए जल-समाणे बहुयं थोवं सु उम्हाले ॥

ता थूलो एस पादवो, बहुओ अत्थो । ता किं कणयं किं वा रययं किं वा रयणं त्ति । हूं,

विद्धम्मि एइ रत्तं जइ पाए तो भवेज्ज रयणाइं । अह छीरं तो रययं अह पीयं तो भवे कणयं ॥

केन्दूरे पुण होज्जा अत्थो ।

जेत्तिय-मेत्तो उवरिं तेत्तिय-मेत्तेण हेट्ठओ होइ । ण-याणियइ तं दव्वं पावीयदि एस ण व त्ति ॥
जइ उवरिं सो तणुओ हेट्ठे उण होइ पिहुल-परिवेढो । ता जाणसु तं पत्तं तणुए उण तं ण होज्जा हि ॥

ता ण दूरे, दे खणामि, देवं णमामो त्ति । 'णमो इंदस्स, णमो धरणिंदस्स, णमो धणयस्स, णमो धणपालस्स' त्ति । तं, पढमाणेण खयं पएसं । दिट्ठो य णिही । दे गेण्हामि जाव वाया । अवि य,

---

1) J adds (on the margin) य before सिरी, P पसुत्ता पसुत्ता पसुत्तं च तं च नाऊण. 2) P समुवट्ठिओ, P साडियं P om. दुइयं. 3) P च खंडिया खंडिया खंडियं, P दारे य लिहिया. 4) P जालिंधण°. 5) P नियय for वास, P नयरनिद्धवणं, P adds च after पयत्तो. 7) J सुरूअ, P सयाइन्नो. 8) J तीरं, P संसयं, J मगह for महा, P । नाम जाव कइसियं ।. 9) P पार for पायार, J रेहिर, J °लकारिय, J सोहिय, J सणाह, J पउज for मउय, P नियंसण. 10) J मणोहर, J रेहिरं, P सुयंवधूव, P om. मघ. 11) P कंकोलय, J adds संग before सुयंध, J सनागिय P संमाणिय, J तंबोल च P तंबोलं च, J वासवसज्जा P वासयसज्जं पिअपणइणि, J णायगह त्ति P नायगहियत्ति. 12) J रहिअ for रइय. 13) P जेनुज्जाणे, P हेट्ठे. 14) P किंचि चिंतिउं. 15) P कच्छह-, P वीची-, J भंगिल्लं P भंगिल्लो, P उवहिमि, P छोहूणं. 16) P आरुहियं, P बलावली ॥. 17) P पयडी for पयंड, P निच्छणा, P अज्जए देमि, P मास for मंस. 18) J inter. सेस and सयल, P जो for जा. 19) J खेत्त for खत्तं. 20) P अव्वस्स, P कायव्व त्ति संमूहो. 21) P om. च, P सालुर, P repeats पायवस्स पसरिओ, P पायओ, P अहिणाव, P खण्णवओ. 22) P एत्तो for अहो, J खण्णवाते । अवि य P खंनुवाए मोत्तूण. 23) J पातओ, P पाइओ, P थोवव. 24) P तावस्सं, J पिल्लपलासयोः P बिल्लपलासाया, J P अत्थि. 25) P थोयं, J पादवे P पायवे, J रयणीय जलणसमाणे, J थोअं. 26) P पायवो, J किं वा for ता किं, P हुं. 27) J पाते P पात्ते, P अलह for अह, J पीतं. 28) P दूरे उण होज्ज, J अत्थि for अत्थो. 29) J जत्तियमेत्तो P जेत्तियमेते, J तत्तिय°, J ण याणीअति पावीयदि, P दव्वं पावियमिगाइ तं दव्वं न वा व त्ति. 30) J हेट्ठो, P जइ for उण, P om. तं, P ओयणं for उण, J तण्ण. 31) P om. दे खणामि, J om. देवं णमामो त्ति, J णंदस्स for इंदस्स, P धणदपालस्स for धणयस्स णमो धणपालस्स, J एतं for तं. 32) P पढमाए खयं, J om. य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ वि तए उवलद्धा रक्खिज्जइ चक्कवट्टिणा एसा । गेण्हसु य भंड-मोल्लं थोयं चिय अंजली-मेत्तं ॥

§ १८८) एवं च सोऊण गहिया एक्का अंजली रूवयाणं । णिही वि झत्ति पायाले अइंसणं गओ । णिबद्धं च णेण कंठ-कप्पडे तं पुट्टलयं । तओ चिंतियं वणियउत्तेण । 'अहो, पेच्छ चवलत्तणं देव्वस्स । अवि य,

दाऊण ण दिण्णं चिय पुणो वि दाऊण कीस अक्खित्तं । महिला-हियय-गई विय देव्व-गई सव्वहा चवला ॥'

तहा वि कयमणेण भंड-मोल्लं । इमेणं चेय समज्जिउं समत्थो हं सत्त-कोडीओ । अवि य,

एयं चेय अहं णट्ठ-दरिद्दं कुलं अह करेज्ज । विवरीय-सील-चरिओ जइ देव्वो होज्ज मज्झत्थो ॥

चिंतयंतो पविट्ठो तम्मि महाणयरी-विवणि-मग्गम्मि । तत्थ य वोलेंतेण दिट्ठो एक्कम्मि आमणम्मि वाणियओ परिणय-वओ मिऊ मद्दवो उज्जुय-सीलो । तओ दट्ठूण चिंतियं । 'एस साहु-वणिओ परिणओ य दीसइ । इमस्स विस्ससणीयस्स समल्लियामि' त्ति । उवगओ तस्स समीवं । भणियं च णेण 'ताय, पायवडणं' । तेण वि 'पुत्त, दीहाऊ होहि' त्ति । तेणं दिण्णं आसणं णिसण्णो य । तम्मि णयरे तम्मि दियहम्मि महूसवो । तओ बहुओ जणो एइ, ण य सो परिणय-वओ जरा-जुण्ण-जज्जर-गत्तो ताणं दाउं पि पारेइ । तं च जण-संवट्टं दट्ठूण भणियं इमिणा 'ताय, तुमं अब्भिंतराओ णीणेहि जं भंडं अहं दाहामि जणस्स' । अणुमण्णो दाउं पयत्तो । तओ एस [illegible] देइ त्ति तं चेय आवणं सव्वो जणो संपत्तो, खणेण य पेसिओ णेण अमूढ-लक्खेण । जाव थोय-वेला ताव विक्कीयाइं भंडाइं, महंतो लाभो जाओ । वणिएण चिंतियं । 'अहो, पुण्णवंतो एस दारओ, सुंदरं होइ जइ अम्ह घरे वसइ' त्ति चिंतयंतेण भणियं । 'भो भो दीहाऊ, तुमं कओ आगओ' । तेण भणियं 'ताय, चंपापुरीओ' । तेण भणियं 'कस्सेत्थ पाहुणओ' । तेण भणियं 'सज्जणाणं' । थेरेण भणियं 'अहो, अम्हे कीस सज्जणा ण होमो' । तेण भणियं 'तुमं चेय सज्जणो, को अण्णो' त्ति । तओ तेण वणिएण तालियं आमणं, पयट्टो घरं, उवगओ संपत्तो तत्थ य । तत्थ णियय-पुत्तस्स व कयं णेण सयलं कायव्वं ति । पुणो अब्भंगिय-मद्दिय-उव्वत्तिय-मज्जिय-जिमिय-विलित्त-परिहियस्स सुह-णिसण्णस्स उवट्ठाविया अहिणवुब्भिज्जमाण-पओहर-भरा णिम्मल-मुह-मियंक-पसरमाण-कवोल-कंति-चंदिमा विसट्टमाण-कुवलय-दल-णयणा सव्वहा कुसुमबाण-पिय-पणइणि व्व तस्स पुरओ वणिएण णियय-दुहिय त्ति । भणिओ य णेण थेरेण 'पुत्त, मह जामाओ तुमं होहि' त्ति । भणियं च णेण 'ताय, अम्हं वयं कुलं गुणा सत्तं वा ण जाव जाणह ताव णियय-दुहियं समप्पेह तुब्भे' । भणियं च थेरेणं 'किं तए ण सुयं कहिं चि पढिज्जंतं । अवि य,

रूवेण णज्जइ कुलं कुलेण सीलं तहा य सीलेण । णज्जंति गुणा तेहि मि णज्जइ सत्तं पि पुरिसाण ॥

ता तुह विणय-रूवेहिं चेय सिट्ठो अम्ह सील-सत्तादि-गुण-वित्थारो । सव्वहा एसा तुज्झं मए समप्पिय' त्ति । तेण भणियं । 'ताय, अत्थि भणियव्वं । अहं पिउहराओ णीहरिओ केण वि कारणेण । ता जइ तं मह णिप्फण्णं, तओ जं तुमं भणिहिसि तं सव्वं काहामि । अह तं चिय णत्थि ता अलं मह सरणं ति । एवं सब्भावे साहिए मा पडिबंधं करेह' । तेण भणियं 'एवं ववत्थिए किं तुह मए कायव्वं' । तेण भणियं 'एयं मह कायव्वं । पर-तीर-गामुयं इमिणा भंड-मोल्लेण भंडं गहियव्वं, जाणवत्ताइं च भंडेयव्वाइं, पर-तीरं मए गंतव्वं' ति । तेण भणियं 'एवं होउ' त्ति । तओ तद्दियहं चेय घेत्तुमारद्धाइं पर-तीर-जोग्गाइं भंडाइं । कमेण य संगहियं भंडं । सज्जियं जाणवत्तं, गणियं दियहं, ठावियं लग्गं, पयट्टिया णिज्जामया, गहिया आडियत्तिया, संगहियं पाणीयं, वसीकयं धण्णं । सव्वहा,

तिहि-करणम्मि पसत्थे पसत्थ-णक्खत्त-लग्ग-जोयम्मि । सिय-चंदण-वास-धरो आरूढो जाणवत्तम्मि ॥

§ १८९) तत्थ य से आरुहंतस्स पहयाइं पडहयाइं, पवाइयाइं संखाइं, पढियं बंभणेहिं, जय-जय-कारियं पणइयणेण। तओ दक्खिऊण दक्खिणिज्जे, पूइऊण समुद्द-देवं, अभिवाइऊण वणियं, जोक्कारिऊण गुरुयणं कय-मंगल-णमोक्कारो पयट्टो । तओ चालियाइं अवल्लयाइं, पूरिओ सेयवडो, पयट्टं पवहणं, लद्धो अणुकूलो पवणो, ढोइओ णइ-मुहम्मि पडिओ समुद्दे ।

1) J °ज्जइ रक्खवट्टिणो, P थोवं, P अंजलामेत्ति. 2) P एक्का अंगुली रयणाणं, P adds य before झत्ति, P om. from कंठकप्पडे तं पुट्टलयं etc. to समीवं । भणियं च णेण.। (in line 9). 9) J दीहाउओ, P adds भणियं तेण, after होहि त्ति. 10) P निसण्णो य । तं मिसण्णो य । तंमि य नयरे तंमि य दियहे महूसवो, P जुरजुन-. 11) P तेणे for ताणं, P om. पि, P जणसद्दं घट्टं, J अब्भंतराओ णीणेहि (?). 12) P आयणं for आवणं, J om. य. 13) P पेसिओऽणेण, P ताव विक्कीयाइं, P लोभो for लाभो. 14) P सुंदर, J om. त्ति, P केउ for कओ. 15) P om. ताय चंपापुरीओ । तेण भणियं, J om. अहो, 16) P आवणं for आमणं. 17) P om. तत्थ य, J adds य before णियय, P नियपुत्तस्स वइणेण कयं सयलं, J om. ति, P om. मद्दिय. 18) J om. सुहणिसण्णस्स, P उवट्ठविया, P पओहरभारा. 19) P कुसुमाउहबाण, J दुहिआ. 20) J om. त्ति, P भणिओऽणेण, P जामाआ (उ) ओ तुम होहि, J होहत्ति, J तेण for णेण, P अम्ह, P गणा for गुणा. 21) P पढिज्जंतं. 22) J सीलेणं for सीलेण, P तेहिं मि णिज्जइ. 23) J दिट्ठो P सिद्धा for सिट्ठो, P वित्थरो. 24) P नीओ for णीहरिओ, P केणावि, P om. ता, P निष्पन्नं, J भणीहसि. 25) P करेहि ।, P एवं वत्थिए. 26) P गामियं इमिणी. 27) P च ताडेयव्वाइं. 28) J om. भंडाइं, J गहियं for गणियं, P om. गहिया. 29) P भाडयत्तिया. 30) P जोग्ग for लग्ग. 31) P om. य, P पडहाइं, J -कारियं, P पणईयणेण. 32) P वणिए. 33) P आवल्लयाइं, P अणुकूलओ, P पडिसमुद्दे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताव य गंतुं पयत्तं पवहणं अणेय-मच्छ-कच्छह-मगर-करि-संवट्ट-भिज्जमाण-वीई-तरंग-रंगंत-विहुम-किसलए समुद्द-मज्झम्मि। थोएणं चेय कालेण संपत्तं जवण-दीवे तं जाणवत्तं, लग्गं कूले, उत्तारियाइं भंडाइं, दिण्णं सुंकं। विणिवट्टियं जहिच्छिएण लाहेण गहियं पडिभंडं। तं च केत्तियं। अवि य,

मरगय-मणि-मोत्तिय-कणय-रुप्प-संघाय-गब्भिणं बहुयं। गण्णेण गणिज्जंतं अहियाओ सत्त-कोडीओ॥

तओ तुट्ठो सायरदत्तो। 'अहो, जइ देवस्स रोयइ, तओ पूरिय-पइण्णो च्चिय अहं जाओ' त्ति चलिओ य तीर-हुत्तं। तत्थ य चालियाइं जाणवत्ताइं, संपत्ताइं समुद्द-मज्झ-देसम्मि। तत्थ य पंजर-पुरिसेण उत्तर-दिसाए दिट्ठं एक्कं सुप्प-पमाणं कज्जल-कसिणं मेह-पडलं। तं च दट्ठूण भणियमणेण। 'एयं मेह-खंडं सव्वहा ण सुंदरं। अवि य।

कज्जल-तमाल-सामं लहुयं काऊण परिहवावडियं। वड्ढंतं देइ भयं पत्तिय-कण्हाहि-पोयं व॥

ता लंबेह लंबणे, मउलह सेयवडं, ठएह भंडं, थिरीकरेह जाणवत्तं। अण्णहा विणट्ठा तुब्भे' त्ति। ताव तं केरिसं जायं ति। अवि य,

अंधारिय-दिसियक्कं विज्जुज्जल-विलसमाण-घण-सद्दं। मुसल-सम-वारि-धारं कुविय-कयंतं व काल-घणं॥

तं च तहा वरिसमाणं दट्ठूण आउलीहूया वणिया। खणेण य किं जायं जाणवत्तस्स। अवि य,

गुरु-भंड-भार-गरुयं उवरिं वरिसंत-मेह-जल-भरियं। वुण्ण-विसण्ण-परियणं झत्ति णिबुड्डं समुद्दम्मि॥

तत्थ य सो एक्को वाणिय-पुत्तो कह-कह वि तुंग-तरंगावडणुव्वोल्लं करेमाणो विरिक्क-तेल्ल-कुरुंठीए लग्गो। तत्थ य वलग्गो हीरमाणो मच्छेहिं, हम्मंतो मयरेहिं, उल्लिहिज्जमाणो कुम्म-णक्खेहिं, विलुलिज्जमाणो संखउलेहिं, अग्घिज्जमाणो कुंभीरएहिं, फालिज्जमाणो सिंसुमारेहिं, भिज्जंतो जल-करि-दंत-मुसलेहिं, कह-कह वि जीविय-मेत्तो पंचहिं अहोरत्तेहिं चंददीवं णाम दीवं तत्थ लग्गो। तत्थ कहं कहं पि उत्तिण्णो। पुणो मुच्छा-विणिमीलंत-लोयणो णिसण्णो एक्कस्स तीर-पायवस्स अहे समासत्थो। तओ उट्ठाइया इमस्स छुहा। जा य केरिसा। अवि य।

विण्णाण-रूव-पोरुस-कुल-धण-गव्वुत्तणे वि जे पुरिसा। ते वि करेइ खणेणं खलयण-सम-सोयणिज्जयरे॥

§ १९०) तओ तारिसाए छुहाए परिगओ समुट्ठिओ तीर-तरुयर-तलाओ, परिभमिउं समाढत्तो तम्मि चंददीवे। केरिसे। अवि य,

बउलेला-वण-सुहए णिम्मल-कप्पूर-पूर-पसरम्मि। अवहसिय-णंदणा किंणरा वि गायंति संतुट्ठा॥

वच्छच्छाओच्छइए छप्पय-भर-भमिर-सउण-पउरम्मि। कय-कोउया वि रविणो भूमिं किरणा ण पावंति॥

तम्मि य तारिसे चंददीवे णारंग-फणस-माउलुंग-पमुहाइं भक्खाइं फलाइं। तओ तं च साहरिऊण कय-पाणाहुई वियसंत-कोउओ तम्मि चेय वियरिउं पयत्तो। भममाणेण य दिट्ठं एक्कम्मि पएसे बहु-चंदण-वण्ण-एला-लवंग-लयाहरयं। तं च दट्ठूण आबद्ध-कोउओ संपत्तो तमुद्देसं, जाव सहसा णिसुओ सद्दो कस्स वि। तं च सोऊण चिंतिउं पयत्तो। 'अहो, सद्दो विय सुणीयइ। कस्स उण होहिइ त्ति। जहा फुडक्खरालावो तहा कस्स वि माणुसस्स ण तिरियस्स। ता किं पुरिसस्स किं वा महिलाए। तं पि जाणियं, ललिय-महुरक्खरालावत्तणेण णायं जहा महिलाए ण उण पुरिसस्स। ता किं कुमारीए आउ पोढाए। तं पि णायं, सलज्जा-महुर-पिओ सण्ह-सुकुमारत्तणेण अहो कुमारीए ण उण पोढाए। ता कत्थेत्थ अरण्णम्मि माणुस-संभवो, विसेसओ बाला-अबलाए त्ति। अहवा अहं चिय कत्थेत्थ संपत्तो। सव्वहा,

जं ण कहासु वि सुव्वइ सुविणे वि ण दीसए ण हिययम्मि। पर-तत्ति-तग्गएणं तं चिय देव्वेण संघडियं॥'

चिंतयंतेण णिरूवियं जाव दिट्ठा कयलि-थंभ-णिउरुंब-अंतरेण रत्तासोयस्स हेट्ठे अप्पडिरूव-दंसणी सुरूवा का वि कण्णया वणदेवया विय कंठ-दिण्ण-लया-पासा। पुणो वि भणियमणाए। अवि य।

---

1) J मयर, J वगत्त for रंगंत. 2) J -दीवे P दीवं, P adds कलियाइं before दिण्णं, P om. विणिवट्टियं etc. to अवि य. 4) P विधाय for मरगयमणिमोत्तियकणयरुप्पसंघाय. 5) P om. तुट्ठो, P पूरिपइण्णो वि अहं, P om. य before तीर. 6) P om. मज्झ, P पंजयपुरिसेण, P सुप्पमाणं. 7) P खंडं for पडलं, P भणियंऽणेण. 8) P साणं for सामं, J वट्टंतं, P किण्हाहि, J बोअम्व for पोयं व. 9) P मंउलेह सयवडे, P तहं for ताव, P om. ति. 11) P विज्जुल, P सल for घणसद्दं, P om. मुसल. 12) P repeats वणिया, P om. य after खणेण. 13) J पुण्ण for वुण्ण. 14) P om. य after तत्थ, P वणियउत्तो, P तुंगतडणव्वोलं, P कुरंटीए. 15) P हरमाणो मच्छहिं, J विलिज्जमाणो. 16) J सिसुमारेहिं, P जलकरेहिं कह, P पंचेंहिं, P चंददीवं, J णामदीवं. 17) P adds य after तत्थ, P पुण्णो, P अहो for अभे. 18) J उद्धाइया. 19) P सोयणिज्जपरे. 20) P तंमि चंददीवो केरिसो. 22) J उवलेला P चउलेला, P कप्पूरइपूर, J किण्णरावि P किन्नरावे. 23) P वत्थच्छा°, P पावेंति. 24) P चंददीवे नारिंग, P भक्खियाइं, P तं च आहारिऊण, P वियसंतमियचेय. 25) P भणमाणेण यट्ठिदिट्ठं एकंमिए एकंमि, J बहुं, J वंदण for वण्ण. 26) P adds य after जाव, P समुद्दो for सद्दो विय. 27) J सुणीयदि P सणियइ, P होहइ, J adds य after जहा, P om. ण तिरियस्स, J om. वा. 28) P तं मि for तं पि, P om. णायं before जहा, P om. उण, P ताओ for ता. 29) J सेलज्जा, P सलिलायमहुरम्मिओमण्हकुमार°, J पिउसण्ह, P तओ ण for ण उण. 31) J जण्ण P जन्न. 32) J थंभणिरूविअंतरेणं। रत्तासोअहेट्ठो, P -विउरुंब, P °रूवं दंसणीयरूवं किंपि काणणवणदेवयं. 33) P लया एसा, P om. अवि य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'भो भो वणदेवीओ तुब्भे वि य सुणह एत्थ रण्णम्मि । अण्णम्मि वि मह जम्मंतरम्मि मा एरिसं होज्ज ॥'

त्ति भणंतीए पक्खित्तो अप्पा । पूरिओ पासओ, णिरुद्धं णीसासं । अग्घविअं पोट्टं, णिग्गयं वयणेण फेणं, णीहरियाइं अच्छियाइं, संकुइयं धमणि-जालं, सिढिलियाइं अंगाइं । एत्थंतरम्मि तेण वणियउत्तेण सहसा पहाविऊण तोडियं लया-पासं । णिवडिया धरणियले । दिण्णो पड-वाऊ । अहिणव-चंदण-किसलय-रसेण विलित्तं वच्छयलं । संवाहिओ कंठो । सट्ठाणं गयाइं अच्छियाइं । ऊससियं हियएणं । पुलइयं णयणेहिं । लद्ध-सण्णाए दिट्ठो णाए य वणियउत्तो । तं च दट्ठूण लज्जा-सज्झस-वसावणय-मुहयंदा उत्तरिज्जयं संजमिउमाढत्ता । भणिया य णेण ।

'किं तं वम्मह-पिय-पणइणी सि किं होज्ज का वि वण-लच्छी । दे साह सुयणु किं वा साहसमिणमो समाढत्तं ॥'

तीए भणियं दीहुण्हमूससिऊणं ।

'णाहं हो होमि रई ण य वणलच्छी ण यावि सुर-विलया । केण वि वुत्तंतेणं एत्थ वणे माणुसी पत्ता ॥'

तेण भणियं 'सुयणु, साहसु तं मह वुत्तंतं जइ अकहणीयं ण होइ' । तीए भणियं 'अत्थि कोइ जणो जस्स कहणीयं, जस्स य ण कहणीयं' । तेण भणियं 'केरिसस्स कहणीयं' । तीए भणियं ।

'गुरुदिण्ण-हियय-वियणं किं कायव्वं ति मूढ-हियएहिं । दुक्खं तस्स कहिज्जइ जो कड्ढइ हियय-सल्लं व ॥'

सायरदत्तेण भणियं ।

'जइ अहिणव-गज्जंकुर-सिण्हा-लव-लग्ग-चंचलयरेण । जीएण किंचि सिज्झइ सुंदरि ता साह णीसंकं ॥'

तीए भणियं 'वोलिओ सव्वो अवसरो तस्स, तह वि णिसामेसु ।

§ १९१) अत्थि दाहिण-मयरहर-वेलालग्गा सिरितुंगा णाम णयरी । तीय य वेसमण-समो महाधणो णाम सेट्ठी । तस्स य अहं दुहिया अच्चंत-दइया घरे अणिवारियप्पसरा परिब्भमामि । तओ अण्णम्मि दियहे अत्तणो भवण-कोट्टिम-तलम्मि आरूढा णिसण्णा पलंकियाए णिद्दावसमुवगया । विउद्धा अणेय-सउण-सावय-सय-घोर-कलयल-रवेण । तओ पबुद्धा णिद्दा-खएणं तत्थ हियएण चिंतेमि । 'किं मण्णे सुमिणओ होज्ज एसो' त्ति चिंतयंतीए उम्मिल्लियाइं लोयणाइं । ताव य अणेय-पायव-साहा-णिरुद्ध-रवि-किरणं इमं महारण्णं, तं च दट्ठूण थरथरेंत-हियविया विलविउं पयत्ता ।

'हा हा कत्थ णिरासा ताय तए उज्झिया अरण्णम्मि । हा कत्थ जामि संपइ को वा मह होहिइ सरणं ॥' ति ।

एत्थंतरम्मि 'अहं तुह सरणं' ति भणमाणो सहसा दिव्व-रूवी को वि समुट्ठिओ पुरिसो लयाहराओ । तं च पेच्छिऊण दुगुणयर-लज्जा-सज्झसावणय-वयणा रोइउं पयत्ता । सो य पुरिसो मं उवसप्पिऊण भणिउमाढत्तो । अवि य,

'मा सुयणु किंचि रोवसु ण किंचि तुह मंगुलं करीहामि । तुह पेम्म-रसूसव-लंपडेण मे तं सि अक्खित्ता ॥'

तीए भणियं 'को सि तुमं, किं वा कारणं अहं तए अवरिहय' त्ति । तेण भणियं । 'अत्थि वेयड्ढो णाम पव्वयवरो । तस्स सिहर-णिवासिणो विज्जाहरा अम्हे गयण-गोयरा महाबल-परक्कमा तियस-विलयाणं पि कामणिज्जा । ता मए पुहइ-मंडलं भममाणेण उवरि-तलए तुमं दिट्ठा, मम हियए पविट्ठा । विज्जाहरीणं पि तुमं रूविणि त्ति काऊण अवहरिया । अहवा किं रूवेण । सव्वहा,

सुंदरमसुंदरं वा ण होइ पेम्मस्स कारणं एयं । पंगुलओ वि रमिज्जइ वज्जिज्जइ कुसुमचावो वि ॥

सो च्चिय सुहओ सो चेय सुंदरो पिययमो वि सो चेय । जो संधी-विग्गह-कारिणीएँ दिट्ठीए पडिहाइ ॥

ता सुंदरि, किं बहुणा जंपिएण । अभिरमइ मे दिट्ठी तुमम्मि । तेण पसुत्तं हरिऊण संकंतो गुरूणं ण गओ विज्जाहर-सेढिं । एत्थ उयहि-दीवंतरे णिप्पइरिक्के समागओ त्ति । एवं च ठिए रमसु मए समयं' ति । तओ मए चिंतियं । 'अव्वो, इमे ते विज्जाहरा जे ते मह सहीओ परिहासेण भणंतीओ, मा तुमं विज्जाहरेण हीरिहिसि । अहं च कण्णा, ण य कस्सइ दिण्णा । पुणो वि केणइ लक्खवइएण किराडएण परिणेयव्वा । ता एस विज्जाहरो सुरूवो असेस-जुयइ-जण-मणहरो सिणेहवंतो य

---

1) P om. one भो, P तुम्हे निसुणेह, P om. अण्णम्मि वि मह, J होज्जा. 2) J om. त्ति, P पोट्टम्, J वयणेण हेणं P वयणे फेणं, P अत्थीयाइं. 3) P धवणि, P पढाविऊण. 4) P धरणितले, P पडिवाओ, P रसेणय for रसेण, J संठाणं. 5) P लोयणाइं for अच्छियाइं, P पुलोइयं अच्छीहिं, J adds अ ॥ before दिट्ठो, P om. णाए य. 6) P adds अवि य after णेण. 7) P किं त वंमह, J कहवि for का वि, P साहसु किं. 8) J तीअ, P दी कुण्णं ऊससिएणं. 9) P om. हो, P adds केण विलया before केण वि. 10) P सुयण, J तीय, P om. कहणीयं जस्स य. 11) J तीअ for तीए. 12) J दिण्णविअणहिअयं किं कायव्वं. 14) P गज्जंकुर. 15) J तीय. 16) P नगरी, P om. णाम, P adds वेसमणो नाम after सेट्ठी. 17) J om. य, P परिभमामि. 18) J -यलंमि, P निद्दावसं उवगया, P adds य before अणेय, P साव for सावय, P कललरवेण, J तओ इस त्ति गयं हिअवएण तत्थ. 19) J किमण्णे, J होज्जा एसत्ति. 20) J om. य, P थरथरंत. 22) P अह for अहं. 23) J दुगुणयरं, P वइणा, J रोविउं, J om. मं, P भणिउं समा°. 24) J णाइंत्रि, P लंपेडेण तं सि पक्खित्ता. 26) J महाबला-. 27) J (perhaps) तुमं दिट्ठा तुमं च मम, P रूवणि, J om. अवहरिया. 29) P om. सुंदरम°, J पंगुलिओ. 30) P च्चेय, J य for वि 31) P अहिरमइ दिट्ठी. 32) P निप्पइरक्के, P च ठीए, J adds मए (later) after चिंतियं, P इमो ते. 33) P हीरइसि, P नइ for णय. 34) J केणइ वा लक्खवएण, P सरूवो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मं परिणेइ, ता किं ण लद्धं' ति चिंतयंतीए भणियं मए । 'अहं तए एत्थ अरण्णे पाविया, जं तुह रोयइ तं करेसु' त्ति । तओ हरिस-णिब्भरो भणिउं पयत्तो 'सुयणु, अणुग्गिहीओ म्हि' त्ति । एत्थंतरम्मि अण्णो कड्ढिय-मंडलग्ग-भासुरो खग्ग-विज्जाहरो 'अरे रे अणज्ज, कत्थ वच्चसि' त्ति भणमाणो पहरिउं पयत्तो । तओ सो वि अम्ह दइओ अणुव्विग्गो कड्ढिऊण मंडलग्गं समुट्ठिओ । भणियं च णेण 'अरे दुट्ठ दुब्बुद्धि कुविज्जाहर, दुग्गाहियं करेमि तुह इमं कण्णयं' त्ति भणमाणो पहरिउं पयत्तो । तओ पहरंताण य णिद्दय-असि-धाय-खणखणा-रवेण बहिरिज्जंति दिसि-वहाइं । एत्थंतरम्मि सम-घाएहिं खंडाखंडिं गया दो वि विज्जाहर-जुवाणा । खणेण य लुय-सीसा दुवे वि णिवडिया धरणिवट्ठे । ते य मुए दट्ठूण गुरु-दुक्ख-क्खित्त-हियविया विलविउं पयत्ता । अवि य ।

हा दइय सुहय सामिय गुण-णिहि जिय-णाह णाह णाह त्ति । कत्थ गओ कत्थ गओ मोत्तुं मं एक्कियं रण्णे ॥
आणेऊण घराओ रण्णे मोत्तूण एक्कियं एण्हिं । मा दइय वच्चसु तुमं अहव घरं चेव मे णेसु ॥

§ १९२) एवं विलवमाणीए य मे जो मुओ सो कहं पडिसंलावं देइ त्ति । तओ दीण-विमणा संभम-वस-विवसा जीविय-पिया इमाओ दीवाओ गंतुं ववसिया परिब्भमामि । सव्वत्तो य भीमो जलणिही ण तीरए लंघेउं जे । तओ मए चिंतियं । 'अहो, मरियव्वं मे समावडियं एत्थ अरण्णम्मि । ता तहा मरामि जहा ण पुणो एरिसी होमि' त्ति चिंतिऊण विरइओ मे इमम्मि लयाहरम्मि लया-पासो । अत्ताणयं च णिंदिउं, सोइऊण सव्व-दुहयण-परिणिंदियं महिलिया-भावं, संभरिऊण कुलहरं, पणमिऊण तायं अम्मयं च एत्थ मए अत्ताणं ओबद्धं ति । एत्थंतरम्मि ण-याणामि किं वत्तं, केवलं तुमं वीयंतो पडेण दिट्ठो त्ति । तुमं पुण कत्थेत्थ दुग्गमे दीवे' त्ति । साहियं च णिय-वुत्तंतं सागरदत्तेण पइण्णारुहणं जाणवत्त-विहडणं च त्ति । तओ तीए भणियं 'एवं इमम्मि विसंठुले कज्जे किं संपयं करणीयं' ति । सायरदत्तेण भणियं ।

'जइ होइ कलिज्जंतो मेरू करिसं पलं च णइणाहो । तह वि पइण्णा-भंगं सुंदरि ण करेंति सप्पुरिसा ॥'

तीए भणियं 'केरिसो तुह पइण्णा-भंगो' । सागरदत्तेण भणियं ।

'संवच्छर-मेत्तेणं जइ ण समज्जेमि सत्त कोडीओ । ता जलिइंधण-जालाउलम्मि जलणम्मि पविसामि ॥

ममं च एवं समुद्द-मज्झे भममाणस्स संपुण्णा एक्कारस मासा । अवइण्णो एस दुवालसमो मासो । इमिणा एक्केण मासेण कहं पुण सत्त कोडीओ समज्जेमि । अह समज्जियाओ णाम कहं घरं पावेमि । तेणाहं सुंदरि, भट्ठ-पइण्णो जाओ । ण य जुत्तं भट्ठ-पइण्णस्स मज्झ जीवियं ति । ता जलणं पविसामि' त्ति । तीए भणियं 'जइ एवं, ता अहं पि पविसामि, अण्णेसियउ जलणं' ति । भणियं च तेण 'सुंदरि, कहं तुह इमं असामण्णं लायण्णं भगवं हुयासणो विणासिहिइ' । तीए भणियं । 'हुं,

सुंदरमसुंदरे वा गुण-दोस-वियारणम्मि जच्चंधा । डहणेक्क-दिण्ण-हियओ देव्वो मयणो य जलणो य ॥

ता मए वि किमेत्थ रण्णम्मि कायव्वं' । तओ 'एवं' ति भणिऊण मग्गिउं समाढत्ता हुयासणं । दिट्ठो य एक्कम्मि पएसे बहु-वंस-कुडंगासंग-संसग्ग-संघासुग्गयग्गि-पसरिओ बहलो धूमुप्पीलो । पत्ता य तं पएसं । गहियाइं कट्ठाइं, रइया महा-चित्ती, लाइओ जलणो, पज्जलिओ य । केरिसा य सा चिई दीसिउं पयत्ता । अवि य,

णिद्धूम-जलण-जलिया उवरिं फुरमाण-मुम्मुर-कराला । णज्जइ रयणप्फसला ताविय-तवणिज्ज-णिम्मविया ।

तं च तारिसं चियं दट्ठूण भणियं सागरदत्तेणं । 'भो भो लोयपाला, णिसुणेह ।

संवच्छर-मेत्तेणं जइ ण समज्जेमि सत्त कोडीओ । ता जलिइंधण-जालाउलम्मि जलणम्मि पविसामि ॥
एसा मए पइण्णा गहिया णु घराओ णीहरंतेण । सा मज्झ ण संपुण्णा तेण हुयासं समुल्लीणो ॥'

तीए वि भणियं ।

'दइएण परिच्चत्ता माया-पिइ-विरहिया अरण्णम्मि । दोहग्ग-भग्ग-माणा तेणाहं एत्थ पविसामि ॥'

त्ति भणमाणेहिं दोहि वि दिण्णाओ झंपाओ तम्मि चियाणले ।

---

1) J ममं for मं, J चिंतयतीय, J om. तए. 2) P म्मि for म्हि, J om. अण्णो, P कढिय. 3) P रे for अरे, J ततो सो P कढ्ढिऊण. 4) J कुव्विज्जाहर, J इअं for इमं, J भणमाणा. 5) J पयत्ता, P -घायखणखणारवेण, J खण्डखण्डि P खंडाखंडि. 6) P विज्जाहरा । खणेण, P खित्तहियवियं. 8) P जियनाम णाह णाह त्ति, P om. one कत्थ गओ. 9) P इन्हिं, J चेअ. 10) P om. य मे, J पडिसल्लावं, J विवसजीविआ इमाओ. 11) J महाजलही for जलणिही. 12) J om. पुणो. 13) P से for मे, P लयाहरंमि पासो, J om. च, P निंदिऊण सोऊण. 14) P अंबं for अम्मयं, P मए अत्ता उव्वंधेइ ति. 15) J । भणियं च निययवुत्तंतं सायरत्तेण. 16) J तीय, P om. किं, J om. ति, J सायरयत्तेण. 17) P मेरुं, J करंति. 18) J तीय, P पइन्ना भंगो, J सायरयत्तेण. 19) P जालिंधण. 20) J इमं for ममं, J एत्थ for एवं, J adds य before मासा, P om. एस. 21) P कह घरं, P नइ for णय. 22) P om. मज्झ, P पविस्सामि, J तीय J अण्णिसीअउ P अन्नेसीयउ. 23) P जलणो त्ति, J तुमं for तुह, P भगवं जुयसेणो, J विणेसेहिति, J तीय, P हुं. 24) P °मसुंदरं, P जच्चंधो । दहणेक्क. 25) J समाढत्तो, J य एअम्मि. 26) P कुडंगसंलग्ग, P °सुगयग्गी, P महाचीई. 27) J चिता P चीई. 28) P मुम्मर. 29) J सायरदत्तेण, J लोअवाला. 30) P ता जालिंधणजाउलंमि जलणे पविस्सामि. 31) P संपन्ना तेण हुयासणं समल्लीणो. 32) P om. वि. 33) P दइएणं परिचत्ता मायापिय, J दोहग्गमाणभग्गा. P adds तेणा before तेणाहं. 34) P दोहिंमि दिण्णाओ.

§ १९३) तओ केरिसा य सा चिई जाया। अवि य,

दीहर-मुणाल-णालो वियसिय-कंदोट्ट-संड-चेंचइओ। जाओ य तक्खणं चिय वर-पंकय-सत्थरो एसो ॥

तं च दट्ठूण चिंतियं सायरदत्तेण। 'अहो,

किं होज अण्ण-जम्मं किं वा सुमिणं इमं मए दिट्ठं। किं इंदयाल-कुहयं जं जलणो पंकए जाओ ॥' एत्थंतरम्मि,

गणि-पोमराय-घडियं कणय-महाखंभ-णिवह-णिम्मवियं। मुत्ताहल-ओऊलं दिट्ठं गयणे वर-विमाणं ॥ तत्थ य,

वर-कणय-मउड-राहो गंडत्थल-घोलमाण-रयणोहो। लंब-वणमाल-सुहओ महिड्ढिओ को वि देव-वरो ॥

तेण य संलत्तं दर-हसिय-वियसमाणाहर-फुरंत-दंत-किरण-धवलिय-दिसिवहं 'भो भो सागरदत्त, किं तए इमं इयर-जण-णिसेवियं बुहयण-परिणिंदियं अप्प-वहं समाढत्तं ति। अवि य,

दोहग्ग-भग्ग-भग्गा पइणो अवमाण-णिवडिया दुक्खे। लहुय-हियया वराई णवर इमं महिलिया कुणइ ॥

तुज्झं पुण ण जुत्तं एरिसं ति। अह भणसि 'सत्त कोडीओ पइण्णा' त्ति,

ता तं पि किं ण बुज्झसि सग्गे वसिऊण वर-विमाणम्मि। अम्हेहिँ समं सुहिओ चउहिँ पि जणेहिँ सोहम्मे ॥

तत्थ तए कक्केयण-इंदणील-मणि-पोमराय-रासीओ। पम्मोक्कामुक्काओ कोसाहारो इमेहिँ पि ॥

ता गेण्ह तुमं णाणं सम्मत्तं चेय जिणवर-मयम्मि। पंच य महव्वयाइं इमाओ ता सत्त कोडीओ ॥

अह इच्छसि किंचि धणं गेण्हसु तिगुणाओ सत्त कोडीओ। आरुह विमाण-मज्झे घरे पि पावेमि ता तुरियं ॥'

इमं सोऊण तं च देव-रिद्धिं णिएऊण ईहापूह-मग्गण-गवेसणं कुणमाणस्स जाई-सरणं समुप्पण्णं। णायं च जहा। अहं सो पउमप्पहो, एत्थ चविऊण उप्पण्णो। एसो उण पउमकेसरो भणिओ य मए आसि जहा 'तए अहं जिणवर-मग्गे संबोहेयव्वो'। तं संभरमाणेण इमिणा अहं मरणाओ विणियट्टिओ त्ति। 'अहो दढ-पइण्णो, अहो कओवयारी, अहो सिणेह-परो, अहो पेम्म-मइओ, अहो मित्त-वच्छलत्तणं। अवि य।

जीवत्तणम्मि मणुओ सारो मणुए वि होइ जइ पेम्मं। पेम्मम्मि वि उवयारो उवयारे अवसरो सारो ॥'

त्ति चिंतयंतेण पणमिओ णेण। तेणावि भणियं 'सुट्ठु सुमरिओ ते णियय-पुव्व-भवो'। भणियं च सायरदत्तेण 'अहो रक्खिओ अहं तए संसार-पडणाओ। अवि य,

जइ जलणम्मि मरंतो अट्टज्झाणेण दोग्गइं णीओ। अच्छउ ता जिणधम्मो मणुयत्तणए वि संदेहो ॥

ता सुंदरं तए कयं। आइससु किं मए कायव्वं' ति। तेण भणियं 'अज्ज वि तुह चारित्तावरणीयं कम्मं अत्थि, तं भुंजिऊण संजमो तए कायव्वो' त्ति। ता कुमार कुवलयचंद, जो सो सागरदत्तो सो हं। तओ समारोविओ तेण विमाणम्मि। गहिया य सा मए बाला। आरोविया विमाणम्मि एक्कवीसं च कोडीओ। तओ तम्मि य विमाणवरे समारूढा संपत्ता खणेणं चेय जयतुंगं णयरिं। तत्थ जण्णसेट्ठिणो घरे अवइण्णा। परिणीयाओ दोण्णि वि दारियाओ मए। तओ विमाणारूढा गया चंपा-पुरवरिं। बहु-जण-संवाह-कलयलाराव-पूरंत-कोऊहलं अवइण्णा घरम्मि। पूइआ अग्घवत्तेणं। वंदिओ गुरुयणो।

§ १९४) तओ देवेण भणियं। 'भो भो, तुज्झं दस-वास-सहस्सं सव्वाऊ, तओ तिण्णि कोडीणाइं, पंच य भोए भुंजसु, दुवे वास-सहस्साइं सामण्णं पालेयव्वं' ति भणिऊण जहागयं पडिगओ इमो सो देवो। मए वि उवट्ठावियाओ एक्कवीसं कोडीओ गुरूणं। तओ णिद्ध-बंधूहिं सहिओ तिहिं य सुंदरीहिं भोए भुंजिऊण, पणइयणं पूरिऊण, णिव्विण्ण-काम-भोओ जाणिय-परमत्थो संभरिय-पुव्वजम्मो सुमरिय-देव-वयणो विसुज्झंत-चारित्त-कंडओ वेरग्ग-मग्गालग्गो पूइऊण अरहंते, वंदिऊण साहुणो, संठविऊण बंधु-वग्गं, माणिऊण परियणं, संमाणिऊण पणइयणं, अभिवाइऊण गुरुयणं, दक्खिऊण विप्पयणं, पूरिऊण भिक्खयणं, सव्वहा कय-कायव्व-वावारो धणदत्त-णामाणं थेराणं अंतिए अणगारियं पव्वज्जमुवगओ। तत्थ य किंचि पढं तरिय-सयल-सत्थत्थो थोएणं चेय कालेणं गहिय-सुत्तत्थो जाओ। तओ तव-वीरिय-भावणाओ भाविऊण एक्क-

1) P om. अवि य. 2) J संदर्चेंचइओ P सिंढचिंचईओ. 3) J सायरयत्तेण. 4) P अन्नजंमो. 5) P inter. पोम and मणि, J मुत्ताहलऊजणदिट्ठं, P मुत्ताफलओ व्व लंगयणे दिव्वं वर. 6) P हारो for राहो. 7) J सायरदत्त. 8) P निसवियं बहुयण, J अप्पव्वहं. 9) P भग्गलग्गा, P अवमाणणाहि निव्वडिया i. 10) P तुज्झ पुत्त ण. 11) J क्रिण्ण P किन्न, P मि for पि. 12) J पम्मोक्कं for मुक्काओ, J मि for पि. 14) J तिउणाओ. 15) P adds च after इमं, P कुणस्स for कुणमाणस्स. 16) P चइऊण. 17) J adds वि before विणियट्टिओ. 18) P पेममइओ. 19) P जीअत्तणम्मि, P सामे for सारो, P सारो हि ॥. 20) P om. त्ति, J मए for ते, J सायरयत्तेण. 22) P दोग्गईं, J आ and P ती for ता. 23) P ए for तए, P। अइसमु. 24) P om. तए, J सागरयत्तो, J adds य before तेण. 25) P om. य. 26) P inter. चेय & खणेणं, P °तुंगनयरिं, P जुण्णसेट्ठिणो, J अवइण्णो. 29) P तुब्भं for तुज्झं, J सहस्साइं सव्वाउं, P om. य. 30) P साहिं for सामण्णं, P om. पालेयव्वं etc. to तिहि य सुंदरीहिं. 31) P पूरियणं. 32) P कडओ, P मग्गालग्गो. 33) P संठाविऊण, P बंधुयणं for परियणं, J सम्माणिऊण य पणइयणं दक्खिऊण विप्पयणं अभि°, P दिक्खिऊण. 34) J विप्पणं, J पूइऊण, J धणउत्त, J om. य. 35) P सव्वत्थो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहार-पडिमं पडिवण्णो। तत्थ य भावयंतस्स एगत्तणं, चिंतयंतस्स असरणत्तं, अणुसरंतस्स संसार-दुत्तारत्तणं, सुमरंतस्स कम्म-चडुलत्तणं, भावयंतस्स जिण-वयण-दुलहत्तणं सव्वहा गुरुय-कम्म-खओवसमेणं झत्ति ओहि-णाणं समुप्पण्णं, अहो जाव रयणप्पभाए सव्व-पत्थडाइ उड्ढं जाव सोहम्म-विमाण-चूलियाओ तिरियं माणुस-णग-सिहरं ति। तओ तम्मि उप्पप्पमाणे समुप्पण्णे दिट्ठं मए अत्ताणयं जहा। आसि लोहदेवाभिहाणो, पुणो सग्गम्मि पउमप्पभो देवो, तत्तो वि एस सायरदत्तो त्ति। इमं च दट्ठूण चिंतियं मए। 'अहो, जे उण तत्थ चत्तारि अण्णे ते कहिं संपयं' ति चिंतियंतो उवउत्तो जाव दिट्ठं। जो सो चंडसोमो सो मरिऊण पउमचंदो समुप्पण्णो। तत्तो वि सग्गाओ चविऊण जाओ विंझाडईए सीहो त्ति। माणभडो मरिऊण पउमवरो जाओ। तत्तो वि चइऊण अओज्झ-पुरवरीए राइणो दढवम्मस्स पुत्तो कुमार-कुवलयचंदो त्ति। मायाइच्चो वि मरिऊण पउमसारो। तत्तो वि चविऊण दक्खिणावहे विजया-णामाए पुरवरीए राइणो महासेणस्स दुहिया कुवलयमाला जाय त्ति। इमं च णाऊण चिंतियं मए। 'अहो, तम्मि कालम्मि अहं इच्छाकारेण भणिओ जहा। 'जत्थ गया तत्थ गया सम्मत्तं अम्ह दायव्वं' ति।' ता सा मए पइण्णा संभरिया। ताव य आगओ एस पउमकेसरो देवो। भणियं च इमिणा। अवि य,

जय जय मुणिवर पवराचरित्त सम्मत्त-लद्ध-ओहिवरा। वंदइ विणएण इमो धम्मायरिओ तुहं चेय॥

सोऊण य तं वयणं, दट्ठूण य इमं देवं, भणियं च मए 'भो भो, किं कीरउ' त्ति। इमिणा भणियं 'भगवं, पुव्वं अम्हेहिं पडिवण्णं जहा 'जत्थ गया तत्थ गया सम्मत्तं अम्ह दायव्वं' ति। ता ओ वराया इमेसु मिच्छादिट्ठी-कुलेसु जाया, दुलहे जिणवर-मग्गे पडिबोहेयव्वा। ता पयट्ट, वच्चामो तम्मि अउज्झा-णयरीए। तत्थ कुमार-कुवलयचंदं पडिबोहेमो'। मए भणियं 'ण एस सुंदरो उवाओ तए उवइट्ठो। अवि य,

जो मयगल-गंडत्थल-मय-जल-लव-वारि-पूर-दुल्ললिओ। सो कह भमर-जुवाणो भण सवसो पियइ पिचुमंदं॥

तत्थ य सो महाराया बहु-जण-कलयले दट्ठुं पि ण तीरइ। अच्छउ ता धम्मं साहिऊण। अह कहियं पि णाम, ता कत्थ पडिवज्जिहि त्ति। अवि य,

जाव ण दुहाइँ पत्ता पिय-बंधव-विरहिया य णो जाव। जीवा धम्मक्खाणं ण ताव गेण्हंति भावेण॥

ता तुमं तत्थ गंतुं तं कुमारं अक्खिवसु। अहं पि तत्थ वच्चामि जत्थ सो चंडसोम-सीहो। तत्थ य पइरिक्के अरण्णम्मि संपत्त-दुक्खो दिट्ठ-बंधु-विओगो राय-तणओ सुहं सम्मत्तं गेण्हिहिइ त्ति। इमं च भणिऊण अहं इहागओ। इमो य अउज्झाए संपत्तो। तत्थ तक्खणं विणिग्गओ तुमं तुरयारूढो वाहियालीए दिट्ठो। अणुप्पविसिऊण तुरंगमे उप्पइओ य तुमं घेत्तूणं। तए य तुरओ पहओ। इमिणा मायाए मओ विय दंसिओ, ण उण मओ। तुह केवलं आसा-भंगो कओ त्ति। तओ कुमार तुमं इमिणा तुरंगमेणं अक्खित्तो इमं च संमत्त-लंभं कज्जं हियए काऊण मए तुमं हराविओ। इमाइं ताइं पुरंतणाइं अत्तणो रूवाइं पेच्छसु' त्ति। दिट्ठं च कुवलयचंदेण अत्तणो रूवं।

§१९५) कुवलयमालाए सव्वाणं च पुव्व-जम्म-णिम्मियं भूमीए णिहित्तं साहिण्णाणं तं च दंसिऊण भणियं मुणिवरेण। 'कुमार, एवं संठिए इमम्मि कज्जम्मि जाणसु विसमो संसारो, बहु-दुक्खाओ णरए वेयणाओ, दुलहो जिणवर-मग्गो, दुप्परियल्लो संजम-भारो, बंधणायारो घर-वासो, णियलाइं दाराइं, महाभयं अण्णाणं, दुक्खिया जीवा, सुंदरो धम्मोवएसो, ण सुलहा धम्मायरिया, तुलग्ग-लद्धं मणुयत्तणं। इमं च जाणिऊण ता कुमार, गेण्हसु सम्मत्तं, पडिवज्जसु साहु-दक्खिण्णं, उच्चारेसु अणुव्वए, अणुमण्णसु गुणव्वए, सिक्खसु सिक्खावए, परिहर पावट्ठाणे' त्ति। इमं च एत्तियं पुव्व-जम्म-वुत्तंतं अस्सावहरणं च अत्तणो णिसामिऊण संभरिय-पुव्व-जम्म-वुत्तंतो भत्ति-भर-णिब्भर-पणउत्तिमंगो पयलंत-पहरिस-बाह-पसरो पायवडणुट्ठिओ भणिउं पयत्तो। 'अहो, अणुग्गहिओ अहं भगवया, अहो दढ-पइण्णत्तणं भगवओ,

1) P om. विहार, J तत्थ वयंतस्स एअत्तणं, P चित्तस्स for चिंतयंतस्स, J असरणत्तणं सरंतस्स. 2) J चदुलत्तणं (?) P चउरत्तणं, J वासयंतस्स for भावयंतस्स, J सव्वहा तारूवकम्मक्ख°. 3) P ओड्ढ for उड्ढं, J माणुसग्गं सिहरं, P एयप्पमाणो. 5) J चिंतेंतो उवयुत्तो. 6) J दिट्ठो for दिट्ठं, J पउमचंडो, J inter. जाओ & चविऊण. 7) J adds वि after माणभडो, P पउमसारो for पउमवरो, J चविऊण, P दढधम्मस्स. 8) P om. वि, P om. पउमसारो। तत्तो वि चविऊण. 9) J इच्छकारेण. 10) P adds स after तत्थ, J om. ताव य. 12) P पवर for पवरा. 13) J इमं च तं देवं, P om. च before मए, P om. one भो. 14) P ता वेरा वराया, P दुलह. 15) P पयट्ठ, P अउज्झनयरीए। कुमार. 16) J उवविट्ठो. 17) J गय for गल, P वर for लव, P पिउमंदं. 18) J तत्थ सो राया, J दट्ठूण वि ण, J आ for ता, P धम्मसाहकहियं. 19) P पडिवज्जिहिति त्ति. 20) J inter. दुहाइं & ण (न in J). 21) J om. तं, J om. य. 22) J दिट्ठबंधवविओओ य राय-, P om. त्ति, P om. अहं. 23) J adds य after तत्थ, P। पविसिऊण, P om. य. 24) J इव for विय, J तुहं. 25) P om. कज्जं, P om. काऊण, P पुरत्तणाइं. 26) P पेच्छइ त्ति, P अत्तणा. 27) P सयव्वाणं च्चिय पुव्वजंमनिमित्तं. 28) P एवं पि संट्ठिए, J om. कज्जम्मि, J om. बहु, J णरयवेयणाओ. 29) P दुपरियल्लो, J °यारा घरणिवासो. 30) P तुलग्गलग्गं माणुसत्तणं. 31) P दक्खिण्णं, P पावट्ठाणो. 32) P om. जम्म, P भत्तिभरत्तिभरनिब्भर, J पणयुत्तमंगो. 33) P om पहरिस, P पायपडणु°, P गिहीओ for अणुग्गहिओ, J om. अहं, P om. भगवओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहो कारुणियत्तणं, अहो कओवयारित्तणं, अहो णिक्कारण-वच्छलत्तणं, अहो साणुग्गहत्तणं भगवओ। भगवं, सव्व-जग-जीव-वच्छल, महंतो एस मे अणुग्गहो कओ, जेण अवहाराविऊण सम्मत्तं मह दिण्णं ति। ता देसु मे महा-संसार-सायर-तरंडयं जिणधम्म-दिक्खाणुग्गहं' ति। मुणिणा भणियं। 'कुमार, मा ताव तूरसु। अज्ज वि तुह अत्थि सुह-वेयणिज्जं भोय-फलं कम्मं। तो तं णिज्जरिय अणगारियं दिक्खं गेण्हहिह त्ति। संपयं पुण सावय-धम्मं परिवालेसु' त्ति। इमं च भणिओ कुमार-कुवलयचंदो समुट्ठिओ। भणियं च णेण। 'भगवं णिसुणेसु,

उप्पह-पलोट्ट-सलिला पडिऊलं अवि वहेज्ज सुर-सरिया। तह वि ण णमिमो अण्णं जिणे य साहू य मोत्तूण ॥ अण्णं च।
हंतूण वि इच्छंतो अगहिय-सत्थो पलायमाणो वि। दीणं विय भासंतो अवस्स सो मे ण हंतव्वो ॥'

भगवया भणियं 'एवं होउ' त्ति। एत्तियं चेय जइ परं तुह णिव्वहइ' त्ति। उवविट्ठो य कुमारो। भणियं च मुणिणा। 'भो भो मइंद, संबुद्धो तुमं। णिसुयं तए पुव्व-जम्म-वुत्तंतं। ता अम्हे वि तुम्ह तं वयणं संभरमाणा इहागया। ता पडिवज्जसु सम्मत्तं, गेण्हसु देस-विरइं, उज्झसु णिसंसत्तणं, परिहर पाणिवहं, मुंचसु कूरत्तणं, अवहरेसु कोवं ति। इमिणा चेय दुरप्पणा कोवेण इमं अवत्थंतरं उवणीओ सि। ता तह करेसु इमो कोवो जहा अण्णम्मि वि भवंतरम्मि ण पहवइ' त्ति। इमं च सोऊण ललमाण-दीह-णंगूलो पसत्त-कण्ण-जुयलो रोमंच-वस-समूससंत-खंधरा-केसर-पब्भारो समुट्ठिओ धरणियलाओ, णिवडिओ भगवओ मुणिणो चलण-जुयलयम्मि, उवविट्ठो य पुरओ। अदूरे कय-करयलंजली पच्चक्खाणं मग्गिउं पयत्तो। भगवया वि णाणाइसएण णाऊण भणियं। 'कुमार, एसो मयवई इमं भणइ जहा। महा-उवयारो कओ भगवया, ता किं करेमि। अम्हाणं अउण्ण-णिम्मियाणं णत्थि अणवज्जो फासुओ आहारो। मंसाहारिणो अम्हे। ण य कोइ उवयारो अम्ह जीविय-संधारणेणं। ता ण जुत्तं मम जीविउं जे। तेण भगवं मम पच्चाहिक्खाहि अणसणं ति।' 'इमं च भो देवाणुप्पिया, कायव्वमिणं जुत्तमिणं सरिसमिणं जोग्गमिणं ति सव्वहा संबुद्ध-जिणधम्मस्स तुज्झ ण जुज्जइ जीविउं जे' भणमाणेण मुणिणा दिण्णं अणसणं। तेणावि पडिवण्णं विणओणमंत-भासुर-वयणेणं। गंतूण य फासुए विवित्ते तस-थावर-जंतु-विरहिए थंडिले उवविट्ठो। तत्थ य माणसं सिद्धाण आलोयणं दाऊण पंच-णमोक्कार-परायणो भावेंतो संसारं, चिंतेंतो कम्म-वसयत्तणं, पडिवज्जंतो जीव-दुस्सीलत्तणं अच्छिउं पयत्तो।

§ १९६) भणियं च कुमारेण 'भगवं, सा उण कुवलयमाला कहं पुण संबोहेयव्वा'। भगवया भणियं। 'सा वि तत्थ पुरवरीए चारण-समण-कहाणएणं संभरिय-पुव्व-जम्म-वुत्तंता पादवं लंबेहि त्ति। तत्थ य तुमं गंतूण तं पादवं भिंदिऊण तुमं चेय परिणेहिसि। तुज्झ सा महादेवी भवीहइ। तीए गब्भे एस पउमकेसरो देवो पुत्तो पढमो उववज्जीहिइ। ता वच्च तुमं दक्खिणावहं, संबोहेसु कुवलयमालं' ति भणमाणो समुट्ठिओ भगवं जंगमो कप्प-पायवो महामुणी। देवो वि 'अहं तए धम्मे पडिबोहेयव्वो' त्ति भणिऊण समुप्पइओ णहंगणं। तओ कुमारेण चिंतियं। एयं भगवया संदिट्ठं जहा दक्खिणावहं गंतूण कुवलयमाला संबोहिऊण तए परिणेयव्व त्ति। ता दक्खिणावहं चेय वच्चामि। कायव्वमिणं ति चिंतयंतो चलिओ दक्खिणा-दिसाहुत्तं। दिट्ठो य सो सीहो। तं च दट्ठूण संभरियं इमिणा कुमारेण कुवलयचंदेण पुव्व-जम्म-पढियं इमं सुत्तंतरं भगवओ वयण-कमल-णिग्गयं। अवि य, जो मं परियाणइ सो गिलाणं पडियरइ। जो गिलाणं पडियरइ सो ममं परियाणइ त्ति। सव्वहा,

साहम्मिओ त्ति काउं णिद्धो अह पुव्व-संगओ बंधू। एक्कायरियमुवगओ पडियरणीओ मए एसो ॥

अण्णहा सउण-सावय-कायलेहिं उवद्दवीयंतो रोद्दं झाणं अट्टं वा पडिवज्जिहिइ। तेण य णरयं तिरियत्तं वा पाविहि त्ति। तेण रक्खामि इमं जाव एसो देवीभूओ त्ति। पच्छा दक्खिणावहं वच्चीहामि त्ति चिंतयंतो कण्ण-जावं दाउमाढत्तो, धम्म-कहं च। अवि य।

जम्मे जम्मे मयवइ मओ सि बहुसो अलद्ध-सम्मत्तो। तह ताव मरसु एण्हिं जह तुह मरणं ण पुण होइ ॥

1) J om. अहो कारुणियत्तणं, P साहु for अहो after वच्छलत्तणं, P जय for जग. 2) P inter. मे & एस, J अवहरिऊण P अवहराविऊण, P मे संसायरत्तरंडयं जिणधम्मं दुक्खनिग्गहं ति।. 3) P झूरसु for तूरसु, P भोयप्फलं. 4) P ता तंमि निज्जरिए. 6) J पडिऊणं P पडिकूलं अवि वहेज्ज सुर. 7) P अग्गहिय. 9) J तुज्झ for तुम्ह, J वयणं भरमाणा. 10) P नीसंसत्तणं, P अवहारेसु, P। इति मिणा. 11) P अवत्थंतरमुव°, J तहा for तह, J om. वि. 12) P पवहइ, J om. पसत्तकण्णजुयलो. 13) J जुवलयंमि, P om. अदूरे।, P कयकरयंजली. 14) P मयई इमं. 15) P फासुअ अहारो. 16) P om. अम्ह, J जुत्तं for जुत्तं, P पच्चक्खाहि. 17) J जुत्तं णिमं सरीसं णिमं जोग्ग°, P संबुद्धा, J जिणधम्म तुज्झ, P om. तुज्झ. 18) P दिन्नं। निराया मणविपडिवन्नं विणउणमंत. 19) P थंडिले, P तत्थ for य, P माणसिद्धाण, P चिंतयंतो. 20) P पडिवज्जंतो, P ठिओ for अच्छिउं पयत्तो. 22) J कुहाणएणं, P पाययलंबेहिं तत्थ, P मंतूण for गंतूण, P पाययं. 23) J भवीहति। तीय, J om. पढमो, J उववज्जिहिति P उववज्जिहिइ. 24) P भगवं जंमपायवो. 25) P समुप्पइओ नहं। P चिंतिउं। एवं च भगवया. 26) P चेव, P om. ति. 27) P सीहो। दट्ठुण तं संभरियं कुवलय°, J om. कुवलयचंदेण. 28) J ममं परियाणति, J पडियरति in both places, J परियाणति ति P परियायण त्ति. 30) J गज्झ for बंधू, J परिअरणीओ. 31) P सावय कायकायलेहिं, J °ज्जिहि त्ति। J तिरियं तिरिअत्तं वा पावीहिति, P तिरियं ति वा. 32) P वच्चइामि चिंत°, P दाउं समा°, J om. धम्मकहं च. 34) P चरसु for मरसु, P ज for जह, P inter. पुण and ण (न in P)।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं च धम्मकहं णिसामंतो तइय-दियहे छुहा-किलंत-देहो णमोक्कार-परायणो मरिऊण सागरोवमट्ठिईओ देवो जाओ। तत्थ भोए भुंजंतो अच्छिउं पयत्तो। तओ तं च मयवइ-कलेवरं उज्झिऊण कुमार-कुवलयचंदो गंतुं पयत्तो दक्खिणं दिसाभायं। कहं। अवि य,

तुंगाइँ गयउल-सामलाइँ दावग्गि-जलिय-सोहाइं। अहिणव-जलय-समाइं लंघेंतो विंझ-सिहराइं॥

तओ ताणं च विंझ-सिहराणं कुहरंतरालेसु केरिसाओ पुण मेच्छ-पल्लीओ दिट्ठाओ कुमारेणं। अवि य।

अहिणव-णिरुद्ध-बंदी-हाहा-रव-रुण्ण-करुण-सद्दाला। सद्द-वियंभिय-कलयल-समाउलुब्भंत-जुयइ-जणा॥
जुयई-जण-मण-संखोह-मुक्क-किंकिं-ति-णिसुय-पडिसद्दा। पडिसद्द-मूढ-तण्णय-रंभिर-णेहोगलंत-गोवग्गा॥
गोवग्ग-रंभिरुद्दाम-तण्णउव्विग्ग-धाविर-जणोहा। इय एरिसाओ दिट्ठा पल्लीओ ता कुमारेण॥

दिट्ठाइं च कलधोय-धोय-सिहर-सरिसाइं वण-करि-महादंत-संचयइं, अंजण-सेल-समइं च महिस-गवलुक्कुरुडइं। तण-मह-क्खल-समइं च दिट्ठाइं चारु-चमरी-पुच्छ-पब्भारइं। जहिं मऊर-पिंछच्छाइएल्लय मंडव विरइय-थोर-मुत्ताहलोऊल व त्ति। जहिं च थूरिएल्लय महिसा, मारिएल्लय बइल्ला, वियत्तिएल्लियाओ गाईओ, पडलिएल्लिय छेलय, पक्केलिय सारंग, कुरथेल्लय सूयर, णिप्पिंच्छिएल्लय सुय-सारिया-तित्तिर-लावय-सिहि-संचय व त्ति। अवि य। सव्वहा

पहरण-विभिण्ण-जिय-देह-णिग्गउद्दाम-रुहिर-पंकेण। जण-चलण-चमढियं तंबिरइज्जइ कोट्टिम-तलं व॥

जहिं च महामुणि-जइसय धम्म-मेत्त-वावार-रसिय वसंति जुवाणय, अण्णे णारायण-जइसय सुर-कज्जेक्क-वियावड, अण्णे तिणयण-जइसय सर-मोक्खग्गि-णिडड्ढ-तिउर-महाणयर व, अण्णे पुण मयवइ-जइसय दरिउम्मत्त-महा-वण-गइंद-वियारिय-कुंभयड, अण्णे पुण पुलि-समाण मत्त-महा-महिस-णिद्दलणेक्क-रसिय। जहिं च पत्त-साड-समइं हत्थ-पाय-छेज्जइं, अंदोलय-हेला-सरिसइं उब्बंधणइं, सीहासण-सुहइं सूलारोवणइं, अंगवालिया-करइं करि-चलण-चमढणइं, झंपुल्लिया-खेल्लणइं गिरि-तडावडणइं, अहिय-मासावगत्तण-समइं कण्ण-णासाहरोट्ठ-वियत्तणइं, मज्जण-कीला-तुलणाइं जल-विच्छुहणइं, सीयावहरणइं जलण-पवेसणइं मण्णंति। अवि य।

जं जं कीरइ ताणं दुक्ख-णिमित्तं ति मारण-छलेणं। तं तं मण्णंति सुहं केण वि पावेण कम्मेण॥

जहिं च पावकम्मइं चिलायइं दुट्ठ-घोट्ट-जइसउं बंभणु मारियव्वउ, भत्त-सूइ-सरिसओ गामाइ-वहो, ऊसव-सरिसओ परदार-परिग्गहो, पुरोडासु-जइसओ सुरा-पाणु, ओंकारो जइसओ चोर-विण्णाणु। गायत्ति-जइसिय बहिणि-गालि। जहिं च सवहइं माइं से भहिणिं से पइं मारेमि तओ लोहिउं पियमि त्ति। इमेहिं एरिसेहिं चिलाएहिं दिव्वो त्ति काऊण ससंभमं णमिज्जंतो पयत्तो। केरिसाइं पुण ताणं वीसत्थ-मंतियइं णिसामेइ। अवि य।

हण हण हण त्ति मारे-चूरे-फालेह दे लहुं पयसु। रुंभसु बंधसु मुयसु य पियसु जहिच्छं छणो अज्ज॥

§ १९७) ताओ तारिसाओ विंझ-कुहर-पल्लीओ वोलिऊण कुमारो संपत्तो विंझ-रण्णे, तम्मि य वच्चमाणस्स को कालो पडिवण्णो। अवि य।

फरुसो सहाव-कढिणो संताविय-सयल-जीव-संघाओ। गिम्ह-च्छलेण णज्जइ समागओ एस जम-पुरिसो॥

जत्थ य पिय-पणइणीओ इव अवगूहिज्जंति गंध-जल-जलद्दियओ, सहसागओ पिय-मित्तो व्व कंठ-वलग्गो कीरइ मुत्ता-हारो, पिय-पुत्तो व्व अंगेसु लाइज्जइ चंदण-पंको, गुरुयणोवएसइं व कण्णेसु कीरंति णव-सिरीसइं, माया-वित्तइं जह उवरि-ज्जंति कोट्टिमयलइं ति। अवि य किंच होऊण पयत्तं। वियसंति पाडलाओ। जालइज्जंति मल्लियाओ। परिहरिज्जंति रल्लयइं। सेविज्जंति जलासयइं। परिहरिज्जंति जलणइं। बद्ध-फलइं चूयइं। वियलिय-कुसुमइं कणियार-वणइं। परिसडिय-पत्तइं अंकोल्ल-रुक्खइं ति। अवि य।

---

1) P देहे for दियहे, J सायरोवमठितीओ. 2) J दिसाभोअं. 3) P कहा for कहं. 4) P गवल for जलय, P लंघंतो. 5) P om. पुण. 6) P om. रुण्ण. 7) J जुअईअण, J om. णिसुय (emended) P निसुउ, J रंहिरनेहो अणंतगोवग्गा. 8) J तंणबुद्धाविर P तन्नउव्वेम्वधाविर. 9) P om. धोय, P संवयम for संचयइं, J °कुरुडयं P कुरुडइं. 10) P च इ दिट्ठइं, P पुंछ, J । कहिं च मऊर, P °इएल्लव, J °मंडवा, J मुत्ताहलःऊले. 11) P थूरएल्लएय, J महिसय, J °एल्लिअओ, J °एल्लय, P पक्केल्लय, P गुच्छेल्लय सूयरे वोणि णिपिंछपल्लय. 12) P सिहिसंचव त्ति. 13) J विभिण्णे, J णिग्गउद्दाम, P तंबिरज्जइ, J कोट्टिमयलं व्व. 14) P वावाररसिय, P जुवाणा, J णारायणु. 15) P निदड्ढ, J अण्णि वणि मयवइ. 16) J कुंभयड अवि य अण्णि पणि पुलि. P रसिया।, J जाह चं for जहिं च, P समयं. 17) P सरिसई उव्वंधणइं, P अंगावालिया, J -अरइं करचलण, P चमड्ढणइं संबुल्लिया, J खेलणइं, P गिरिउडा°. 18) J मासावगमइं, P कीलातुलइं, P °हणयं. 19) J प्पवेसइं, P पवेसणयं पन्नत्ति. 20) P P ता for ताणं, P मारणत्थेण।. 21) J जाहं च पावकम्म चिला°, P चि for च, P चिलाहं दुट्ठा, J repeats जइ, P बंभण मारियव्वउं, J भत्तसूअ-, P गोमाइवहो। ऊसवो जइसओ। परदारपरिग्गहो पुरोडासु जइसओ परदार परियहो। पुरोडासु जइसओ सुरापाणकारो जइसओ। सुरापाणा। उंकारो. 22) P विन्नाणो, J जाहं for जहिं, P सवहिं माहि से बहिणि से पइ. 23) J जे for से before पइं. 24) P ताणं वीसत्थमंतियाइं. 25) P om. one हण, J रुंधसु P रुंभसुं, P जहिच्छच्छणा. 26) P om. तम्मि य. 27) J om. अवि य. 29) J च for य, P पणइणि उवगू°, J अवऊहिज्जंति, P जलद्दीओ, J कंठलग्गो. 30) P वित्तरं जह उवरियज्जंति कोट्टिमतलं ति. 31) P किं चि होऊण, P जालिज्जंति, J मल्लिअओ, P रल्लियइं। सेविज्जंति. 32) P फलयइं पूवइं, P रुक्खयं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोत्तूण चूय-सिहरं पइसइ णव-तिणिस-गुम्म-वण-गहणं । हूं हूं ति वाहरंती णिदाह-डड्ढा व वणराई ॥

केसु पुण पएसेसु किं किं कुणइ गिम्ह-मज्झण्हो । अवि य फुरफुरेइ णीलकंठ-कंठेसु, अंदोलइ मईंद-ललमाण-जीहंदोलणेसु, णीससइ थोर-करिवर-करेसु, पज्जलइ दवाणलेसु, धूमायइ दिसा-मुहेसु, धाहावइ चीरी-रुएसु, णच्चइ मयतण्हा-जल-तरंग-रंगेसु, संठाइ विंझ-सिहरेसु, मूयलिज्जइ महाणईसुं ति । अवि य ।

उग्गाइ हसइ गायइ णच्चइ णीससइ जलइ धूमाइ । उम्मत्तओ व्व गिम्हो ण णज्जए किं व पडिवण्णो ॥

केसु पुण पएसेसु गिम्ह-मज्झण्हं वोलावेंति जंतुणो । अवि य महावण-णिउंजेसु वण-करि-जूहइं, गिरिवर-गुहासु मयवइणो, उच्चत्थलीसु सारंग-जूहइं, वच्छ-च्छायासु पसु-वंद्रइं, सरिद्दह-कूलेसु गाम-चडय-कुलइं, सरवरेसु वण-महिस-जूहइं, पेरंत-खंजणेसु कोलउलइं, जालीयलेसु मोरह वंद्रइं, पवा-मंडवेसु पहिय-सत्थइं ति । अवि य ।

सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि जो ण गिम्हेण । संताविओ जहिच्छं एक्कं चिय रासहं मोत्तुं ॥

तम्मि य काले पुरवर-सुंदरीओ कइसियओ जायलियओ। कप्पूर-रेणु-रय-गुंडियओ सिसिर-पल्लवत्थुरणओ पाडला-दाम-सणाह-कंठओ मल्लिया-कुसुम-सोहओ पओहर-णिमिय-मुत्ता-हारओ कोमल-तणु-खोम-णिवसणओ धाराहर-संठियओ तालियंट-पवण-लुलियालयओ विइण्ण-चंदण-णेडालियओ दीहर-णीसास-खेइयओ साहीण-दइयओ वि णज्जइ पिययम-विरहायल्लय-संताव-तवियओ त्ति । अवि य ।

किंसुय-लयाओ पेच्छह परिवियलिय-रत्त-कुसुम-जोग्गाओ । गिम्ह-पिय-संगमेणं बद्ध-फलाओ व्व दइयाओ ॥
दट्ठूण तमाल-वणं देंतं भमराण कुसुम-मयरंदं । उयह विणओणयंगी भमरे पत्थेइ तिणिस-लया ॥
कंद-फलाइं पुरओ पासम्मि पिया महुं च पुडएसु । पल्लव-सयणं सिसिरं गिम्हे विंझम्मि वाहाणं ॥
कह कह वि णेंति दियहं मज्झण्हे गाम-तरुण-जुवईओ । अवरण्ह-मज्जण-सुहं गामयलायम्मि भरिरीओ ॥
चिंतिज्जइ जो वि पियत्तणेण हिययम्मि णाम पविसेज्ज । इय-गिम्ह-तविय-देहो सो च्चिय तावेइ सुरयम्मि ॥
मज्झण्ह-गिम्ह-ताविय-पवणुद्धुय-वालुयाएँ णिवहेण । हिरिमंथए वि जीवे पेच्छह पउलेइ कह सूरो ॥
इय मंडल-वाउली-धूलि-समुच्छलिय-जय-पडायाहिं । धवलुत्तुंगाहिँ जए गिम्हो राया पइट्ठविओ ॥

जहिं च बहु-विडयणोवसेव्वओ वेसओ जइसियओ होंति गाम-तरुवर-च्छायओ । किमण-दाणइं जइसइं तण्हाच्छेय-सहइं ण होंति गिरि-णइ-पवाहइं । पिययम-विरह-संताव-खेइयओ पउत्थवइया-सरिसियओ होंति णईओ । महापहु-सरीरइं जइसइं असुण्ण-पासइं होंति कुयडयडइं । गयवइयओ जइसियओ कलुण-चीरि-विरावेहिं रुयंति महाडईओ । जुण्ण-घरिणियओ जइसियओ बहुप्पसूयओ होंति सत्तलियओ । जिणवरोवइट्ठ-किरियओ जइसियओ बहुप्फलओ होंति सहयार लयओ त्ति । अवि य ।

कुसुमाइँ कोट्टिमयलं चंदण-पंको जलं जलद्दीया । अवरण्ह-मज्जणं महिलियाण गिम्हम्मि वावारा ॥

§ १९८) एयारिसम्मि य गिम्ह-समए तम्मि विंझगिरि-रण्णम्मि वट्टमाणस्स रायउत्तस्स का उण वेला वट्टिउं पयत्ता । अवि य ।

मयतण्हा-वेलविए तण्हा-वस-कायरे घुरुहुरंते । वियरंति सावय-गणे कत्थ वि णीरं विमग्गंते ॥
ओसरयइ डहणो विअ इंदाएँ दिसाएँ णोल्लिओ व्व रवी । ईसाएँ वारुणीएँ वि वट्टइ दोण्हं पि मज्झम्मि ॥

एयारिसे य गिम्ह-मज्झण्ह-समए तम्मि महारण्णम्मि तण्हा-छुहा-किलंत-सरीरो गंतुं पयत्तो । जत्थ य चिरिचिरेंति चीरिओ,

---

1) P पइस नव-, P हुं हु ति वाहारन्ती निदाहदड्ढा व वणराई, J णिआइ...वणसवई. 2) P om. one किं, P किं पुणइ, P मज्झण्णो, P नीलयंठ, P मंडल for मइंद, P जीहंदोलएसु. 3) P कहाबेइ (for धाहावेइ) भीरीरूवेसु, P महतण्हाजलतरंगेसु. 4) J om. संठाइ विंझसिहरेसु, J मूलिज्जइ महाडइसुं. 5) P किं चि for किंव. 6) J केसु उण, P गिम्हण्हं, P पाणिणो for जंतुणो, P om. अवि य, P जूहाइं. 7) P उच्चच्छली सारंगजूहइ, P सिरिद्दहकुलेसु गामवियडकुलाइं सरोवरेसु रणमहिस, J सरवरोवरेसु. 8) P कोसलउलइं, P मोरचंद्रयं ति (perhaps J too has ति)। 9) P जगंमि, P को for जो. 10) P काले खरसुंदरीओ कयसिओ, P कण्णय for कप्पूर, P गुंडियाउ, J पल्लवुत्थुरणओ P पल्लवत्थुरणओ. 11) P गल्लिय, P नमिय for णिमिय. 12) P पवणतुलिया°, P वियन्व for विइण्ण, P निडालियाओ, P खेइययओ, P दइयओ वणिज्जइ वियम विरहाइल्लाय. 14) P केसुय for किंसुय, P बहुप्फलाओ. 15) P अह for उयह. 16) P कंदप्फलाइं, P जलं for महुं. 17) P णेंत, J भरईओ. 18) P चिय for च्चिय. 19) J हिरिमत्थरव्व जीवे, P सूरा. 20) P जमवडा°, P धवलुत्तुंगाइं, J पयट्ठाविओ. 21) P °णोवसेवओ, P तरुयरच्छाइओ। किविण, P जइसययं तण्हाछेय. 22) P गिरिनइं, P खेइयपउत्थ, P after नईओ repeats किविणइं जइसययं तण्हाछेय सहइं न होंति गिरिनइं पओओ, P om. महापहुसरीरइं etc. to गयवइयओ. 23) P कलुणवीररावेहिं. 24) J घरिणीओ, P होंति सललिओ. 25) P लयाउ त्ति. 26) P वावारो. 27) P om. य, P वट्टमाणराय°, P कण for उण. 29) P वसरकायरे फुरफुरेंते, P वयम्गंते. 30) J डहणो सिय इंदाय दिसाय, P ईसा घारुणीए, J ईसा (ए added ater) वारुणीअ. 31) P मज्झणसमए, P चिरिचिरेंत चीरियओ झरज्झरेंति ज्झरलीओ। धमधमेंति.

15

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

सरसरेंति सरलिओ, धमधमेंति पवणया, हलहलेंति रुयरा, धगधगेंति जलणया, करयरेंति सउणया, रणरणेंति रण्णया, सरसरेंति पत्तया, तडतडेंति वंसया, घुरुघुरेंति वग्घया, भगभगेंति भासुया, सगसगेंति मोरय त्ति । अवि य ।

इय भीसण-विंझ-महावणम्मि भय-वज्जिओ तह वितोसो । वियरइ राय-सुओ च्चिय हियय अण्णस्स पु... ॥

तओ रायउत्तस्स अहियं तण्हा बाहिउं पयत्ता । ण य कहिंचि जलासयं दीसइ । तओ चिंतियं रायउत्तेण ।

'अच्छीसु णेय दीसइ सूसइ हिययं जणेइ मोहं च । आसंघइ मरणं चिय तण्हा तण्ह व्व पुरिसाणं ॥

ता सव्वहा अच्छउ गंतव्वं । इमम्मि महारण्णम्मि जलं च्चिय विमग्गामि ।' इमं च चिंतेंतो उवगओ मयतण्हा-वेल्लविज्जमाण-तरल-लोयण-कडक्ख-विक्खेवो कं पि पएसंतरं । तत्थ य दिट्ठाइं एक्कम्मि पएसे इमिणा वण-करिवर-जूह-पयाइं । दट्ठूण य ताइं चिंतियं णेण । 'अहो, इमं हत्थि-जूहं कत्थ वि सरवरे पाणियं पाऊण अरण्णे पविट्ठं ति । कहं पुण जाणीयइ । ओयरिय-कर-सलिल-सीयरोल्लाइं भूमि-भागाइं । अह होज्ज मय-जलोल्लियइं । तं च णो । जेण इहेव जाइं मय-जलोल्लियइं ताइं भमिर-भमरउल-पक्खावली-पवण-पव्वायमाणाइं लक्खिज्जंति । अद्दद्द-कद्दमुप्पंक-चरणग्ग-लग्ग-णिक्खेव-कलंकियाइं दीसंति इमाइं । चंचल-करि-कलह-केली-खंडियाइं धवल-मुणाल-सामलाइं दीसंति । इमाइं च ललिय-मुद्धड-करेणु-कर-संवलिय-मुणालेंदीवर-सरस-तामरस-गब्भ-कमलिणी-कवल-खंडणा-खुडियइं मयरंद-गंध-लुद्ध-मुद्धागयालि-हलबोल-रुणुरुणेंतइं उज्झियइं च दीसंति णीलुप्पल-दलद्धइं । ता अत्थि जीवियासा, होहिइ जलं ति । कयरीए उण दिसाए इमं वण-करि-जूहं समागयं ।' णिरूवियं जाव दिट्ठं । 'अरे इमाए दिसाए इमं घण-करि-जूहं, जेणेत्थ पउर-सलिल-कद्दम-मुणाल-विच्छड्डो दीसइ' त्ति चिंतयंतो पयत्तो गंतुं । अंतरेण दिट्ठं णीलुव्वेल्लमाण-कोमल-सिणिद्ध-किसलयं वणाभोगं । तं च दट्ठूण लद्ध-जीवियासो सुट्ठुयरं गंतुं पयत्तो । कमेण य हंस-सारस-कुरर-कायल-बय-बलाहय-कारंड-चक्कवायाणं णिसुओ कोलाहल-रवो । तओ 'अहो, महंतो सरवरो' त्ति चिंतयंतो गंतुं पयत्तो रायउत्तो । कमेण य दिट्ठं कमल-कुवलय-कल्हार-सयवत्त-सहस्सवत्तुप्पल-मुणाल-कमलिणी-पत्त-संड-संछाइय-जलं वियरमाण-महामच्छ-पुच्छच्छडा-भिज्जमाण-तुंग-तरंग-संकुलं णाणा-वण्ण-पक्खि-संघ-मंडिय-तीरं माणस-सरवर-सरिसं महासरवरं ति । अवि य ।

वियसंत-कुवलयच्छं भमरावलि-भमिर-कसण-भुमइल्लं । सुद्ध-दिय-चारु-हासं वयणं व सरं वण-सिरीए ॥

तं च दट्ठूण ऊससियं पिव हियवएणं, जीवियं पिव जीविएणं, पच्चागयं पिव बुद्धीए, सव्वहा संपत्त-मणोरहो इव, संपत्त-सुविज्जो विव विज्जाहरो, सिद्ध-किरिया-वाओ विव णरिंदो सहरिसो कुमारो उवगओ तं पएसं । तण्हा-सुक्क-कंठोट्ठो ओयरिउं पयत्तो । तीरत्थेण य चिंतियमणेण । 'अहो, एवं आउ-सत्थेसु मए पढियं जहा किर दूसह-तण्हा-छुहा-परिस्सम-संभमायासेसु ण तक्खणं पाणं वा भोयणं वा कायव्वं ति । किं कारणं । एए सत्त वि धायवो वाउ-पित्त-सिंभादीया य दोसा तेहिं तण्हाइयाहिं वेयणाहिं ताविय-सरीरस्स जंतुणो णियय-ट्ठाणाइं परिच्चइय अण्णोण्णाणुवलिया विसम-ट्ठाणेसु वट्टंति । इमेसु य एरिसेसु विसमत्थेसु दोसेसु खुभिएसु धाऊसु जइ पाणिणो आहारेंति मज्जंति वा, तओ ते दोसा धायवो य तेसु तेसु चेय पर-ट्ठाणेसु थंभिया होंति । तत्थ संणिवाओ णाम महादोसो तक्खणं जायइ त्ति । तेण य सीस-वेयणाइया महावाहि-संघाया उप्पज्जंति । अण्णे तक्खणं चेय विवज्जंति । तम्हा ण मे जुज्जइ जाणमाणस्स तक्खणं मज्जिउं ।' उवविट्ठो एक्कस्स तीर-तमाल-तरुयरस्स हेट्ठओ, खणंतरं च सीयल-सरवर-कमल-मयरंद-पिंजरेण आसासिओ सिसिर-पवणेणं । तओ समुट्ठिओ अवइण्णो य सरवरे अवगाहिउं पयत्तो । कह । अवि य ।

णिद्दय-थोर-कराहय-जल-वीइ-समुच्छलंत-सद्देण । पूरंतो दिसि-चक्कं मज्जइ मत्तो व्व वण-हत्थी ॥

---

1 > J जलणओ, P करयरंति. 2 > P तडतडेति, P भगभंगेति, P रुसुया, J मोरयं P मोरिय. 3 > J विचरइ. 4 > P repeats दीसइ. 5 > P भूसइ for सूसइ. 6 > J आगंतव्वं for गंतव्वं, P विमग्गावि, P चिंतयंतो. 7 > P om. तरल, P ट्ठियाइं for दिट्ठाइं, P वर for वण, P om. य. 8 > P चिंतियमणेण, J जाणीयति, P जाणियइ. 9 > P ओयरिच्छय, J सीअलोरल्लाइं भूमिभायाइं, P जलोल्लियाइं in both places. 10 > P repeats ताइं, J लक्खिज्जइ, J कद्दमु° P कद्दमुप्पंकचरणग्गलग्गं. 11 > P कलकेली, J मुद्धकरेणू. 12 > P संचालियमुणालइंदीवर, J खुडियमयरंद, P खुडियाइं, J गंधलुद्धागयालि, P -मुद्दागयालि, J रुणुरुणेंतइं P रुणतरुणेताइं. 13 > P om. उज्झियइं च, P दलद्धंताइं, P होहिइ, P कइरीए. 14 > J om. णिरूवियं, J om. इमं वणकरिजूहं, J पउम for पउर. 15 > J om. गंतुं, P णीलुवेल्लमाण, J वणाभोअं, P सुट्ठुतरं. 16 > J कुरलकायअपयबलाहय P कुरबयकायंबबलाहय, P कोलाहलवो. 17 > P om. रायउत्तो, P सयवउसहस्सरत्तुप्पल. 18 > J भंड for संड, P सकुलं णाणावन्नयपक्खसंघ. 19 > J सरसरिसं. 20 > J भमरालीभमिर कसिणभुमयिल्लं. 21 > P दट्ठूयण, P om. पिव, P हियएण, P पव for पिव, J पच्छागयं, P विव for इव. 22 > J किरिआवातो, P नरिंदसरिसो, P उवगतं, J ओयरिउं तुहत्थेण य चिंतिअं णेण. 23 > P om. य, P संभमयाशेसु, J adds य before ण. 24 > J एते P एए स सत्त, P om. वि, J धातवो वायुपित्तसेंभादिअमायदोसो तेहिं तण्हातिआहिं. 25 > P परिच्चयइ अन्नोन्नाणुव्वलिया, J °व्वलिअ विसम°. 26 > J धातुसु जति P धाउस जइ, P नज्जंति for मज्जंति, P om. वा, J ततो, J दोसा वायवो, P om. one तेसु. 27 > P परिट्ठाणेस, J थंभिता, J सन्निवातो, P महादोसा, J वेतणादिआ. 28 > J अम्हा for तम्हा, P inter. मे & जुज्जइ, P जाणस्स, J मज्जिऊणं, P उवविढो, 29 > P adds पायवस्स before हेट्ठओ, J हेट्ठाओ, P त for च, P सीयरकमलमयरिंद. 30 > J om. य before सरवरे. 31 > J अक्कं P चक्कं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १९९) तं च तहा मज्जिऊण कुमारेण पीयं कमल-रय-रंजणा-कसायं सरवर-पाणियं, आसाइयाइं च कोमल-मुणाल-णाल-सयलाइं । तओ गय-तण्हा-भरो उत्तिण्णो सरवराओ । तओ तेसु य तीर-तरुवर-लया-गुम्म-गुविलेसु पएसेसु किंचि वण-पुप्फं फलं वा मग्गिउं पयत्तो । भममाणेण य दिट्ठं एक्कम्मि तीर-तरुण-तरु-लयाहरंतरम्मि महंतं दिव्व-[illegible]ख-पडिमं । तं च दट्ठूण णिरूविउं पयत्तो कुमारो जाव सहसा दिट्ठा तेलोक्क-बंधुणो भगवओ अरहओ मउडम्मि पडिमा मुत्ता-सेल-विणिम्मविया । तं च दट्ठूण हरिस-वस-वियसमाण-लोयणेणं भणियं च णेण । अवि य ।

'सव्व-जय-जीव-बंधव तियसिंद-णरिंद-अच्चिय-चलण । सिद्धि-पुरि-पंथ-देसिय भगवं कत्थेत्थ रण्णम्मि ॥'

भणमाणेण वंदिओ भगवं । वंदिऊण चिंतियं अणेण । 'अहो, अच्छरियं जं इमस्स दिव्वस्स जक्ख-रूवस्स मत्थए भगवओ पडिम त्ति । अहवा किमेत्थ अच्छरियं कायव्वमिणं दिव्वाणं पि जं भगवंता अरहंता सिरेण धारिज्जंति । इमं पि अरहंति भगवंता जं दिव्वेहिं पि सीसेहिं धारिज्जंति ।' चिंतयंतो पुणो वि अवइण्णो कुमारो सरवरम्मि । तत्थ मज्जिऊण गहियाइं कमल-कुवलय-कल्हाराइं सरस-तामरस-पब्भाराइं । ताइं च घेत्तूण गहियं णलिणी-दलं भरिऊण सरो-जलस्स, ण्हाणिओ भगवं जिणवरिंदो, आरोवियाइं च कुसुमाइं । तओ थुणिउमाढत्तो । अवि य ।

'जय सोम्म सोम्म-दंसण दंसण-परिसुद्ध सुद्ध जिय-सेस । सेस-विसेसिय-तित्थय तित्थ-समोत्थरिय-जिय-लोय ॥
जिय-लोय लोय-लोयण जिय-णयण-विसट्टमाण-कंदोट्ट । कंदोट्ट-गब्भ-गोरय गोरोयण-पिंजरोरु-जुय ॥
णाह तुमं चिय सरणं तं चिय बंधू पिया य माया य । जेण तए सासय-पुरवरस्स मग्गो पइट्ठविओ ॥'

त्ति भणमाणो णिवडिओ भगवओ चलण-जुवलएसु त्ति ।

§ २००) एत्थंतरम्मि उद्धाइओ महंतो कलयलो सरवरोयरम्मि । अवि य ।

उद्धुद्धाइय-वीई-हल्लिर-जल-णिवह-तुंग-भंगिल्लं । वट्टइ णहयल-हुत्तं खुहियं सहस च्चिय सरं तं ॥

तं च तारिसं सरवरं वलिय-वलंत-लोयणो राय-तणओ पलोइऊण चलिओ तत्तो हुत्तो । चिंतियं च णेण । अहो अच्छरियं, ण-याणीयइ किं सरवरस्स खोहो जाओ त्ति । इमं च चिंतयंतस्स सरवर-जल-तरंग-फलयाओ णिग्गयं वयण-कमलमेक्कं । तं च केरिसं । अवि य ।

वियसंत-णयणवत्तं णासाउड-तुंग-कण्णिया-कलियं । दिय-किरण-केसरालं मुह-कमलं उग्गयं सहसा ॥

तस्साणंतरं चेय ।

उत्तुंग-थोर-चक्कल-गुरु-पीवर-वट्ट-पक्कलं सहसा । आसा-करिवर-कुंभत्थलं व थणयाण पब्भारं ॥

तं च दट्ठूण चिंतियं कुमारेण । 'अहो किं णु इमं हवेज्ज । अवि य ।

कमलायरस्स लच्छी होज्ज व किं किं व जक्खिणी एसा । किं वा णायकुमारी णज्जइ लच्छि व्व रण्णस्स ॥'

इय चिंतेंतस्स य से कुमारस्स णिग्गयं सयलं सरीरयं । तीय य मग्गालग्गा दिव्व-सरस-सरोरुहाणणा कुसुम-सणाह-पडलय-विहत्था कणय-भिंगार-वावड-दाहिण-हत्था य खुज्जा समुग्गया सरवराओ । ताओ दट्ठूण चिंतियं कुमारेण । 'अहो, णिस्संसयं दिव्वाओ इमाओ, ण उण जाणीयइ केण कारणेण इहागयाओ' त्ति चिंतयंतस्स वलियाओ कुमार-संमुहं । तं च दट्ठूण चिंतियं णेण, अहो वलियाओ इमाओ । ता कयाइ ममं दट्ठूण इत्थि-भाव-सुलहेण सज्झसेण अण्णत्तो पाविहिंति । ता इमाए चेव दिव्व-जक्ख-पडिमाए पिट्ठओ णिलुक्क-देहो इमाण वावारं उइक्खामि त्ति णिलुक्को पडिमाए पट्ठि-भाए, पलोइउं च पयत्तो जाव समागयाओ दिव्व-पडिमाए समीवं । दिट्ठो य भगवं दूरओ च्चिय सरस-सरोरुह-माला-परियरिओ । तं च दट्ठूण भणियं तीए 'हला हला खुज्जिए, अज्ज केणावि भगवं उसहणाहो पूइओ कमल-मालाहिं' । तीए भणियं 'सामिणि, आमं' ति । 'ण-

---

1 > J रंजणे, J पाणिआइं, J य for च. 2 > P तन्हामारो, J तरुअर, P लयाउगुंम. 3 > P भणमाणे य, P तरुणलयाहरंमि. 4 > P om. कुमारो, J adds सयल before तेलोक्क. 5 > P विणिम्मिया, P विसमाण. 6 > J भव्व for सव्व, J चलणा P चलण, P पथं, P भयवं पणमामि तुह चलणे ॥. 7 > P om. भणमाणेण वंदिओ भगवं, J चिंतिअं णेण, P चिंतियमणेण, P कुं for जं, P भगवंतो. 8 > J अरहतो, P om. इमं पि अरहंति etc. to धारिज्जंति. 9 > J om. पुणो वि, P om. कुमारो. 10 > P कल्हारयाइं च सरसरसतामरस, P कमलिणी for णलिणी, P सरसं जरलस्स. 11 > J तओ for च. 12 > P जय सोम सोमनंदन परिसुद्धविमुद्ध-मुद्धजयसेस । विसेसविसेमय. 13 > P जयलोयडलोयलोयणजयणयण, J कंदोट्टा, J जुआ ॥. 14 > P जं for तं, P माया या ।. 15 > J पडिओ for णिवडिओ, P om. भगवओ, P जुयलेसु. 16 > P उद्धाइओ, J सरवरंमि. 17 > J उ[illegible](?) द्धाइय P उद्धुद्धाइय, P खुहियं सव्वं चिय. 18 > J adds ति । अ before वलिय, P om. वलिय, J अच्छरीअं ण याणीयति P अच्छरियं न याणइ. 19 > P कमलं एक्कं. 20 > P om. अवि य. 21 > P पत्तं for वत्तं. 23 > J वट्टवक्कलं. 24 > J P किण्ण for किं णु (emended), P किं न महवेज्जा, J om. अवि य. 25 > J किअ for किंव. 26 > P चिंतयंतस्स, P मग्गलग्गा, J सर for सरस, J पड(ह)य विहत्था. 27 > J ते य for ताओ, P निस्संसियं, J दिव्वाइओमाओ. 28 > J जाणीयंति केण, P चिंतियमणेण, 29 > P मं for ममं, P भावसलहेण, P अण्णहो for अण्णत्तो, J इमे for इमाए, P दव्वजक्खं पडिमाउ पिट्ठिओ. 30 > J om. जक्ख, J repeats पडिमाए, P उदिक्खामि, P पलोएउं. 31 > J adds ता तो before दिव्व, J सर for सरस, P परिआरिओ. 32 > P भगवं तियसनाहो, J तीय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

याणीयइ केण उण पूइओ भगवं' ति। तीए भणियं 'सयल-तेलोक्क-वंदिय-वंदणिज-चलण-कमलाणं पि भगवंताणं एवं भणीयइ केण वि पूइओ त्ति। किमेत्थ वणाभोए ण वियरंति जक्खा, ण परिसक्कंति रक्खसा, ण चिट्ठंति भूया, ण परिभमंति पिसाया, ण गायंति किंणरा, ण वसंति किंपुरिसा, ण पावंति महोरगा, ण उवयंति विज्जाहरा, जेण भगवओ वि पूया पुच्छियइ' त्ति भणमाणी उवगया पडिमाए सगासं। भणियं च तीए 'हला खुज्जिए, जहा एसा पय-पद्धई तहा जाणामि ण केणइ देव्वेण अच्चिओ भगवं, किंतु माणुसेण। खुज्जाए भणियं 'सामिणि, परिसक्कंति एत्थ वणे बहवे सबरा पुलिंदा य'। तीए भणियं 'मा एवं भण। पेच्छ पेच्छ, इमं पि सहिण-वालुया-पुलिणोयर-णिहित्त-चलण-पडिबिंबं सुणिरूविय-प्पमाणं पमाण-घडियं-गुट्ठयं अंगुट्ठाणुरूव-रुहिरंगुलीयं अंगुली-बद्ध-पमाण-पडिबिंबं। तहा जाणिमो कस्स वि महापुरिसस्स इमं चलण-पडिबिंबं। अवि य।

वर-पउम-संख-सोत्थिय-चक्कंकुस-छत्त-तोरणुक्किण्णं। जह दीसइ पडिबिंबं तह णूण इमो महापुरिसो ॥'

§२०१) इमं च भणमाणी संपत्ता भगवओ सयासं, णमोक्कारिओ भगवं तीए। 'अणुजाणह' त्ति भणमाणीए सविणयमवणीओ कमल-पब्भारो भगवओ सिराओ। ण्हाविओ भगवं णियएणं कणय-भिंगार-गंधोयएणं। पुणो वि रइया पूया कोमल-विउल-दल-कणय-कमल-मयरंद-णीसंद-बिंदु-संदोह-पसरंत-लुद्ध-मुद्धागयालि-माला-वलय-हलबोल-पूरमाण-दिसि-यक्केहिं दिव्वेहिं जल-थलय-कुसुमेहिं। तं च काऊण णिब्भर-भत्ति-भरोणय-वयण-कमला थुणिउमाढत्ता। अवि य।

'जय ससुरासुर-किंणर-णर-णारी-संघ-संथुया भगवं। जय पढम-धम्म-देसिय सिय-झाणुप्पण्ण-णाणवरा ॥
जय पढम-पुरिस पुरिसिंद-विंद-णागिंद-वंदियचलणा। जय मंदरगिरि-गरुयायर-गुरु-तव-चरण-दिण्ण-विण्णाणा ॥
णाह तुमं चिय सरणं तं णाहो बंधवो वि तं चेव। दंसण-णाण-समग्गो सिव-मग्गो देसिओ जेण ॥'

एवं च थोऊण णिवडिया चलणेसु। समुट्ठिया य गाइउं समाढत्ता इमं दुवई-खंडलयं। अवि य।

सुरपति-मुकुट-कोटि-तट-विघटित-कोमल-पल्लवारुणं सललित-युवति-नमित-सुरपादप-निपतित-कुसुम-रञ्जितम्।
अभिनव-विकसमान-जलजामल-दल-लावण्य-मण्डितं प्रथम-जिन-चरण-युगलमिदं नमत गुरुतर-भव-भय-हरम् ॥

इमं च लय-ताल-सर-वत्तणी-मुच्छणा-मणहरं गिज्जमाणं णिसामिऊण गेय-अक्खित्त-माणसस्स पम्हुट्ठं अत्ताणयं कुमारस्स। तओ रहसेण भणियं। 'अहो गीयं, अहो गीयं, भण भण, किं दिज्जउ' त्ति भणमाणो पयडीभूओ। तओ तं च तारिसं असंभावणीयं मणुय-जम्म-रूव-सोहा-संपयं दट्ठूण ससंभमं अब्भुट्ठिओ कुमारो जक्ख-कण्णगाए। कुमारेण वि साहम्मिय-वच्छलत्तणं भावयंतेण पढमं चिय वंदिया। तीय वि ससज्झस-लज्जा-भओकंप-वेवमाण-थणहराए सविणयं भणियं 'सागयं साहम्मियस्स, एहि, इमं पल्लवत्थुरणं पवित्तीकरेसु अत्तणो सरीर-फंसेणं' ति। कुमारो वि सायरं णिसण्णो पल्लवत्थुरणे। तओ तीए य तम्मि कालंतरम्मि को उण वियप्प-विसेसो हियए वट्टए। अवि य।

किं मयणो च्चिय रूवी किं वा होज्जा णु कप्पवासि-सुरो। विज्जाहरो व्व एसो गंधव्वो चक्कवट्टी वा ॥

इमं च चिंतयंतीए भणिओ कुमारो। देव, ण-याणामि अहं, मा कुप्पसु मह इय भणंतीए 'को सि तुमं, कत्थ व पत्थिओ सि, कम्हाओ आगओ तं सि'। तओ ईसि-वियसिय-दसणप्पभा-विभिज्जमाणाहरं संलत्तं कुमारेण। अवि य।

'सुंदरि अहं मणुस्सो कज्जत्थी दक्खिणावहं चलिओ। आओ म्हि अओज्झाओ एस फुडो मज्झ परमत्थो ॥
एयम्मि महारण्णे कत्थ तुमं कत्थ वा इमो जक्खो। केणं व कारणेणं इमस्स सीसम्मि जिण-पडिमा ॥
एयं महं महंतं हिययम्मि कुऊहलं चुलुचुलेइ। ता सुयणु साह सव्वं एत्तियमेत्तं महं कुणसु ॥'

इमं च कुमारेण भणियं णिसामिऊण ईसि विहसिऊण भणियं इमीए।

जइ सुंदर अत्थि कुऊहलं पि ता सुणसु सुंदरं भणियं। रण्णम्मि जिणस्स जहा जक्खस्स य होइ उप्पत्ती ॥

---

1) P केणइ for केण उण, J तीय, P om. पि. 2) P om. केण वि, P परिब्भमंति. 3) P महोरया, P पुच्छियइ. 4) J °माणीओ उवगयाओ, P om. पडिमाए, P पद्धती. 5) J om. वणे, P बद्धहवे for बहवे, J तीय, P भणह. 6) JP मि for पि (emended), P सुहिणवालुया पुणिलोयर, P सुनिरूवियप्पमाणघडियंगुट्ठाणुरूवरइयं रंगुलीयं अंगुलियं अंगुलीबद्धमाण. 7) J पिणिद्ध for बद्ध. 9) P पउमचक्कसत्थिय, J तोरणाक्खिअले (?). 10) P सगासं, J °माणीय सविणयं अवणीयओ. 11) P सिहराओ ण्हाणिओ. 12) P कोमलदलवियलदल, P कोमल for कमल, J संदोहं. 13) J om. दिव्वेहिं. 14) P धम्मदेसयं, P नियज्झाणु°. 15) J णरिसिंदचलणा इंदवंदियचलना, P गुरुयारिगुरुयतव, J गरुआयरअतवचरणदिण्णाण. 16) P om. वि, P तुमं for तं, P विसुद्धो for समग्गो. 17) P om. च, P ओ for य, P गाइओ पयत्ता इमं, J adds च after इमं, P अक्खित्तियं for दुवईखंडलयं. 18) J मकुट, P सुरपति for सललित, J जुवति, J पादपरेणुरजोपरंजितं. 19) P जलजामल-रेणुरजोघरंजितं प्रथम, J लायण्ण for लावण्य, P adds कमल after चरण, P om. गुरुतर, JP हरं. 20) P वत्तणामण-हरगिज्ज°, P गेयक्खित्त. 21) P रहासेण, J om. first गीयं, P दीयउ त्ति, J पायडीहूओ. 22) J adds तीए before जक्ख, P कन्नगाए. 23) J मह्उकंप P तओकंप, P सावयं for सागयं. 24) J पल्लववत्थरणं, P पल्लवुत्थुरणं, P पल्लवुत्थरणो. 25) J तीए य P तीय तंमि, P उय for उण. 26) P किं बीहोज्जा. 27) J चिंतयंतीय, P मज्झ for मह, J इमं for इय J व for सि (after को). 28) P सि कत्तो हुयाओ सि, P भाविज्जमाणाहरं. 29) J आउम्मि. 30) P केणे for केणं. 31) J कुतूहलं, P परिप्फुरइ for चुलुचुलेइ. 32) P भणियमिमीए. 33) J कुतूहलं मि ता सुअणु सुंदरं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २०२) अत्थि इमम्मि चेय पुहइ-मंडले कणयमय-तुंग-तोरणालंकिया पिहुल-गोउर-पायार-सिहर-रेहिरा मायंदी णाम णयरि त्ति । जहिं च तुंगइं कुलउत्तय-कुलइं देवउलइं व, विमलइं सुपुरिस-चरियइं धवलहरइं व, सिणेह-णिरंतरओ वीहिओ सज्जण-पीइओ व, गंभीर-सहावओ परिहओ घरिणिओ व, रयण-रेहिरओ पायार-गोउर-भित्तिओ विलासिणिओ व त्ति । अवि य ।

वियरंत-कामिणीयण-णेउर-कल-राव-बहिरिय-दियंता । देवाण वि रमणिज्जा मायंदी णाम णयरि त्ति ॥

ता कुमार, तीय य महाणयरीए अणेय-णरवइ-सय-सहस्सुच्छलंत-हलहलारावाए अत्थि जण्णयत्तो णाम सोत्तिय-बंभणो । सो य केरिसो । अवि य ।

कसिणो दुब्बल-देहो खर-फरुसो रुक्ख-पंडर-सरीरो । दीसंत-धमणि-जालो जम्म-दरिद्दो तहिं वसइ ॥

तस्स य बंभणी धम्म-घरिणी । सा उण केरिसा । अवि य ।

पोट्टम्मि थणा जीए पोट्टम्मि ऊरु-अब्भासं । एक्कं णित्थामं चिय बीयं पुण कुच्छियं णयणं ॥

तीय य सावित्ती-णामाए बंभणीए तेण जण्ण-सामिणा जायाइं तेरस डिंभरूवाइं । ताणं च मज्झे पच्छिमस्स जण्णसोमो त्ति णामं । तस्स जाय-मेत्तस्स चेव समागया अहमा वीसिया । तत्थ य काल-जुत्तो संवच्छरो । तेण य बारस-वासाइं अणावुट्ठी कया । तीय य अणावुट्ठीए ण जायंति ओसहीओ, ण फलेंति पायवा, ण णिप्फज्जए सस्सं, ण परोहंति तणाइं । केवलं पुण वासारत्ते वि धमधमायए पवणो, णिवडंति पंसु-वुट्ठीओ, कंपए मेइणी, गज्जंति धरणिधरा, सुव्वंति णिग्घाया, णिवडंति उक्काओ, पलिप्पंति दिसाओ, बारह-दिवायर-कक्कसो णिवडइ मुम्मुरंगार-सरिसो गिम्हो त्ति । एवं च उप्पाएसु पसरमाणेसु किं जायं । अवि य ।

उव्वसिय-गाम-ठाणं ठाणं मुह-करयरेंत-विसर-मुहं । विसर-मुह-बद्ध-मंडलि-मंडलि-हुंकार-भय-जणयं ॥

एरिसं च तं पुहइ-मंडलं जायं । अह णयरीओ उण केरिसा जाया ।

खर-पवणुद्धुय-ताडिय-धवल-धया-खंड-वंस-बाहाहिं । उद्धीकयाहिँ घोसइ अद्धं भत्तं व दीहाहिं ॥

तओ एवं अणुप्पज्जमाणासु ओसहीसु खीयमाणासु पुव्व-गहियासु अपूरमाणेसु उयरेसु किं जायं । अवि य । ण कीरंति देवक्खणइं, वियलंति अतिहि-सक्कारइं, विसंवयंति बंभण-पूयाओ, विहडंति गुरुयण-संमाणइं, परिवडंति पणइयण-दाणइं, वियलंति लज्जियव्वयइं, पमाइज्जंति पोरुसियइं, अवमण्णिज्जंति दक्खिण्णइं ति । अवि य ।

वोलीण-लोय-मग्गा अगणिय-लज्जा पणट्ठ-गुरु-वयणा । तरुणि व्व राय-रत्ता जाया कालेण मायंदी ॥
उज्झिय-अवसेस-कहा अणुदियहं भत्त-मेत्त-वावारा । जीएँ णरा महिला वि य पमोय-रहिया सुदीणा य ॥
किं होज्ज मसाणमिणं किं वा पेयाण होज्ज आवासो । किं जम-पुरि त्ति लोए किं जं तं सुव्वए णरयं ॥

एवं च हा-हा-रवीभूए सयल-जणवए पोट्ट-विवरं-पूरणा-कायरे खयं गएसु महंत-महापुरिस-कुलउत्तय-वणिय-सेट्ठी-कुलेसु सो बंभणो जण्णसामीओ भूरु-भुवस्स-मेत्त-वज्झो जाओ जायणा-मेत्त-वावारो भिक्खा-वित्ती, तं च अलहमाणो खयं गओ सकुडुंबो । केवलं जो सो बंभणो सोमो सव्व-कणिट्ठो पुत्तो सो कहं कहं पि आउ-सेसत्तणेण अकय-बंभणक्कारो अबद्ध-मुंज-मेहलो छुहा-भरुच्छण्ण-सयल-बंधु-वग्गो कहिंचि विवणि-मग्ग-णिवडिय-धण्ण-कणेहिं कहिंचि बलि-भोयण-दिण्ण-पिंडी-पयाणेहिं कहिंचि बालो त्ति अणुकंपाविएणं कहिंचि बंभण-डिंभो त्ति ण ताडिओ कहिंचि उच्चिट्ठ-मल्लय-संलिहणेणं कहं कहं पि तं तारिसं महा-दुक्काल-कंतारं अइक्कंतो । ताव य गह-गईए णिवडियं जलं, जायाओ ओसहीओ, पमुइओ जणो, पयत्ताइं

1) P तोरणाणंकिया पिउहुल. 2) P °उत्तइं कुलयं, JP च for व in both places, P निरंतरुओ. 3) P पीईओ इव, P परिहाओ घरिणीओ, P भित्तीओ विलासिणीओ, P om. व. 4) P om. अवि य. 5) P कलवरा-. 6) P जयण्णयत्तो. 7) P om. अवि य. 8) P फरुससो. 10) J विदिअं for बीयं, P पुच्छियं for कुच्छियं. 11) P om. य, P सावित्ती-, J (उ) ओरस for तेरस. 12) P adds य before जाय, J चेअ, P अहववीसिया. 13) P निप्पज्जए, J ण य रोहंति. 14) J धमधमायाए P धमधमायइ, P वंसु for पंसु. 15) P पलिप्पति रसाओ, J adds य after कक्कसो, J णितडए for णिवडइ. 17) P उप्पुसियगामट्ठाणं ट्ठाणं, P करयरंत, P विरस (for विसर) in both places, J मण्डलहुंकार. 18) P नयरं उण. 19) P पवणुद्धुयतोडिय, भयखण्ड, P धुयारखंड, P उट्ठीकयाहिं, J उद्धीकयाविघोसइ, J अचम्हण्णं व P अद्धं भत्तं व दीहाइं. 20) J उवएसु P उयरेहिं. 21) P तिहिं for अतिहि, J बंभणथूअओ, P गुरुयसम्माणइं. 22) J फरुसिअइं P पोरुसइं. 23) P अवणियलज्जा, P रायउत्ती, P मायंदा. 24) P नीसेस for अवसेस, P वावारो, J जीअ, J या ॥. 25) J मसाणमिमं, P पुरिस for पुरि. 26) P om. च, P सयले, P विवरपूरणा कायरेसु खयंगएसु, J सेट्ठिउलेसु. 27) P जन्नदत्तो भूरु, J भूरुभुअस्स, P om. मेत्तवज्झो जाओ। जायणा, P भिक्खवित्ती, P सुकुटुंबो. 28) J बंभसोमो, J बंभणो सक्कारो. 29) P om. कहिंचि विवणि etc. to कणेहिं. 30) P बंवणो त्ति न ताडिन ताडिओ, J उच्चिट्ठामल्लसंलेहणेणं, P कहं कहिं पि, J om. तं. 31) P दुक्खाल, P गहवईए, P पयआइं for पयत्ताइं.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

ऊसयाइं, परिहरियाइं लज्जणाइं, उप्फुसियाइं च विग ाइद्धाइं । इमम्मि य एरिसे काले सो बंभणो सोम-बडुओ थोवूण-सोलस-वरिसो जाओ । अवि य ।

सोहेइ वक्ष-वरए उज्झइ उच्चिट्ठ-मल्लय-णिहाए । लोएण उवहसिज्जइ किर एसो बंभणो आसि ॥

§ २०३) तओ एवं उवहसिज्जंतस्स जणेणं णिंदिज्जमाणस्स खिंसिज्जमाणस्स जोव्वण-वास-नट्टमाणस्स एरिसो चित्ते वियप्पो जाओ । अवि य । अहो,

धम्मो अत्थो कामो जसो य लोयम्मि होंति पुरिसत्था । चत्तारि तिण्णि दोण्णि व एक्को वा कस्सइ जणस्स ॥
ता ताण ताव धम्मो दूरेणं चेय मज्झ वोलीणो । अगणिय-कज्जाकज्जो गम्मागम्मप्फलो जेण ॥
अत्थो वि दूरओ च्चिय णत्थि महं सुणय-सउण-सारिसस्स । दुप्पूरोयर-भरणेक्क-कायरो जेण तद्दियहं ॥
कामो वि दूरओ च्चिय परिहरइ य मह ण एत्थ संदेहो । सयल-जण-णिंदिओ मंगुलो य दिट्ठो य भीसणओ ॥
अह चिंतेमि जसो मे तत्थ वि जय-पेल्लिएण अयसेण । णिय-जोणी-करयंटय-ठाणं पिव णिम्मिओ अहयं ॥
ता हो धिरत्थु मज्झं इमिणा जीएण दुक्ख-पउरेण । जण-णिवह-णिंदणा-लहुइएण एवं असारेण ॥

ता किं परिच्चयामि जीवियं, अहवा ण जुत्तं इमं, ण य काऊण तीरइ दुक्करं खु एयं । ता इमं पुण पत्त-कालं । अवि य ।

धण-माण-विप्पमुक्का मुणिय-परद्धा जणम्मि जे पुरिसा । ताण सरणं विएसो वणं व लोए ण संदेहो ॥

ता सव्वहा विएसो मम सरणं ति चिंतयंतो णिग्गओ तक्खणं चेय मायंदी-पुरवरीए । चलिओ य दक्खिण-पच्छिमं दिसाभोयं । तओ कमेण य अणवरय-पयाणएहिं कुच्छि-मेत्त-संबलो अकिंचणो भिक्खा-वित्ती महा-मुणिवरो विय वच्चमाणो संपत्तो विंझ-सिहर-पेरंत-पइट्ठियं महाविंझाडइं । जा उण कइसिया । उद्दाम-रत्त-पीय-लोहिय-मुह-महापलास-संकुला, वाणर-बुक्कार-राव-वियंभमाण-भीसणा, देवेहिं अलंघिय-पायवा, बहु-मय-सय-खज्जमाण-मयवइ-आउल-तुंग-सालालंकिया, सप्पायार-सिहर-दुलंघा य लंकाउरि-जइसिया । जीए अणेयइ भीसणइं सावय-कुलइं जाह णामइँ वि ण णज्जंति । तम्मि य महाडइय मज्झम्मि सो बंभणो जण्णसोमो एगाई गंतुं पयत्तो । तम्मि य वच्चमाणस्स को उण कालो वट्टिउं पयत्तो । अवि य ।

धम-धम-धमेंत-पवणो सल-हल-हीरंत-सुक्क-पत्तालो । धग-धग-धगेंत-जलणो सिलि-सिलि-णव-पल्लवुब्भेओ ॥
बहुसो मय-तण्हा-पाणिएण वेयारियं महिस-जूहं । उप्पल-मुणाल-रहिए सरम्मि णवि पाणियं पियइ ॥
जत्थ पहियाण सत्थो पासत्थो दुसह-गिम्ह-मज्झण्हे । अवरण्हे वि ण मुंचइ तोय-पवा-मंडवं सिसिरं ॥
सयल-जण-कामणिज्जं कलस-थणाभोय-दिण्ण-सोहग्गं । दट्टूण पवं पहिया दइयं पिव णिव्वुया होंति ॥

तओ तम्मि तारिसे सयल-जय-जंतु-संताव-कारए गिम्ह-मज्झण्ह-समए सो बंभसोमो तम्मि भीमे वणंतराले वट्टमाणो छुहा-खाम-वयणोयरो पणट्ठ-मग्गो दिसा-विमूढो सिंघ-वग्घ-भय-वेविरो तण्हाए वाहिउं पयत्तो । तओ चिंतियं तेण । 'अहो महंती मह तण्हा, ता कत्थ उण पाणियं पावेयव्वं' ति चिंतयंतो मग्गिउं पयत्तो जाव दिट्ठो एक्कम्मि पएसे बहल-पत्तल-सिणिद्धो महंतो वणाभोओ । चलिओ य तद्दिसं जाव णिसुओ हंस-सारस-चक्कवायाणं महंतो कोलाहलो । तं च सोऊण ऊससियं पिव हियएणं जीवियं पिव जीविएणं अहिय-जाय-हरिसो तओ संपत्तो तं पएसं, दिट्ठं च तेण सरवरं । तं च केरिसं । अवि य ।

वियसंत-कुवलउप्पल-परिमल-संमिलिय-भमिर-भमरउलं । भमरउल-बहल-हलबोल-वाउलिज्जंत-सयवत्तं ॥
सयवत्त-पत्त-णिक्खित्त-पुंजइज्जंत-कंत-मयरंदं । मयरंद-चंद-णीसंद-मिलिय-महु-बिंदु-बोंगिल्लं ॥

§ २०४) तओ कुमार, सो बंभ-सोमो ता एरिसं दट्ठूण महासरवरं पत्तं जं पावियव्वं ति ओइण्णो मज्जिओ जहिच्छं, पीयं पाणियं, आसाइयाइं मुणाल-खंडाइं । उत्तिण्णो सरं । उववणम्मि छुहा-भर-किलंतो य मग्गिउं पयत्तो

1 > P उप्पुसियाइं च चेयणाइं।, P om. य, J बंभसोम, P om. थोवूण. 3 > P वषहरए. 4 > P जणेणं निवडिज्जमाणस्स जोव्वण-, J जोव्वणवसट्टमाणस्स. 5 > P om. अहो. 6 > P मोक्खो for जसो, P य for व. 7 > P °फलो. 8 > P नहि for णत्थि. 9 > J परिहरइ त्ति णत्थि संदेहो, P मर for मह, P वि for य. 10 > P विजस for वि जय, P करकट्टयथाणु. 11 > J हे for हो, J जीवेण. 12 > J om. य, P पुत्तकालं, 13 > J धणिय for मुणिय. 14 > J णिक्खओ. 15 > P दिसाभागं, P अणवरयपयाणेहिं, J कुच्छी-. 16 > J adds अवि य before उद्दाम. 17 > J ..क्कार for बुक्कार, P वियज्झमाणभासणा, J पयावा for पायवा, P आउलपुंगमाला°, P सपायार. 18 > J लंकाउरिसजइसिय जीअ य अणेय भीसणइं, P सावणयं जाह, P महाडइमज्झंमि. 19 > J सो बम्हसोमो, P एक्काकी. 20 > P om. one धम, P सिलेंतनव. 21 > P नय for णवि. 22 > P पासंतो for पासत्थो, J धोअ for तोय. 24 > J कारये, J वट्टमाणे P वट्टमाणा. 26 > P महा तण्हा, P om. ति, P पत्तसिणिद्धो. 27 > J तं दिसं, P हंसं, P om. ऊससियं to जीविएणं. 28 > J om. अहियजायहरिसो, P om. तओ, P पत्तो for संपत्तो. 29 > P adds, after अवि य, वियसंतकुवलउप्पलपरिमलसंदिट्ठं च तेण सरवरं। तं च केरिसं। अवि य and then again वियसंत etc. 30 > J कुवलयुप्पल, P सयपत्तं. 31 > J बहु for महु, P बोगिल्लं. 32 > P -सोमो तारिसं, P मज्जिउं. 33 > P पीयपाणियं, J आसाइअइं, J तडवडम्मि for सरं । उववणम्मि, P उववणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फलाइं । परिब्भमंतेण कत्थइ अंबे कत्थइ अंबाडए कत्थइ णारंगे कत्थइ फणसे कत्थइ पिंडीरए त्ति पाविए । तेहिं य कय-दुप्पूरोयर-भरणो विहरिउं पयत्तो तम्मि तड-काणणम्मि । तत्थ य रायउत्त, परिब्भममाणेण दिट्ठं एक्कम्मि पएसे चंदण-वंदण-लया-एला-लवंग-लयाहरयं । तं च दट्ठूण उप्पण्ण-कोउओ तहिं चेय पविट्ठो जाव तत्थ [illegible] मुत्ता-सेल-विणिम्मिया भगवओ सुरासुरिंद-कय-रायाभिसेयस्स पढम-जिणवरस्स पडिमा । तं च दट्ठूण तस्स [illegible]-भवियव्वयाए भगवओ य सोम्म-दंसण-प्पभावेण णिय-कम्माणं खओवसमेणं तम्मि चेय जिण-बिंबे बहुमाणो जाओ । चिंतियं च णेण 'अहो, दिट्ठं मए मायंदीए एरिसं इमं किंपि देवयं ति । ता जुत्तं इमस्स भगवओ पणामं काउं जे, ता [illegible]मि । धम्मो किर हवइ' । चिंतिऊण भणियमिमिणा । अवि य ।

'भगवं जं तुह णामं चरियं व गुणा कुलं व सीलं वा । एयं ण-याणिमो च्चिय कह णु थुइं तुज्झ काहामो ॥
ता तुह दंसण-तुट्ठो णमामि एमेय भत्ति-भर-जुत्तो । तं किं पि होउ मज्झं जं तुह चलणग्गे होइ ॥'

चिंतयंतो णिवडिओ भगवओ पाएसु । पाय-पडणुट्ठिएण चिंतियं णेण । 'अहो, रम्मो वणाभोओ, मणहरो सरवरो, रेहिरं लयाहरयं, फलिया पायवा, सोमो य एस देवो त्ति । ता मए वि दूसह-दारिद्दावमाणणा-कलंक-दूसियप्पणा विएसं गंतूण पुणो वि पर-पेसणं कायव्वं । का अण्णा गई अम्हारिसाणं अकय-पुव्व-तवाणं ति । अवि य ।

दूरगओ वि ण मुच्चइ एत्तिय पुरिसो सपुव्व-कम्माण । जइ रोहणम्मि वच्चइ दारिद्दं भग्ग-रहियस्स ॥

ता सव्वहा णत्थि पुव्व-विहियस्स णासो त्ति । ता वरं इह चेय विमल-गंभीर-धीर-जले सज्जण-हियए व्व मज्जमाणो इमाइं च जल-थलय-दिव्व-कुवलय-कल्हार-कुसुमाइं घेत्तूणं इमं किं पि देवयं अच्चयंतो कय-कुसुम-फलाहारो, सारंग-विहंग-कय-संगो, अणिवारिय-वण-प्पयारो, अकारण-कुवियाइं खलयण-मुह-दंसणाइं परिहरंतो, सुहं-सुहेण वण-तावसो व्विव किं ण चिट्ठामि' त्ति चिंतयंतस्स इमं चेय हियए पइट्ठियं । तत्तो अच्छिउं पयत्तो । कय-ण्हाण-कम्म-वावारो भगवओ उसभसामिस्स कय-कुसुमच्चणो इमं च णं पढमाणो त्ति । अवि य ।

भगवं ण-याणिमो च्चिय तुम्ह गुणा जेण संथयं करिमो । तं किं पि होउ मज्झं जं तुह-चलणग्गे होइ ॥

भणमाणो कय-कुसुम-फलाहारो अच्छिउं पयत्तो । एवं च अच्छमाणस्स वच्चए कालो । कालंतरेण य बहु-पुप्फ-फल-कयाहार-किरियस्स पोट्ट-सूल-रूवी उवट्ठिओ सव्व-जग-जंतु-साहारणो मच्चू । अवि य ।

जइ पइसइ पायालं अडइं व गिरिं तरुं समुद्दं वा । तह वि ण चुक्कइ लोओ दरिय-महामच्चु-केसरिणो ॥

तओ कुमार, सो वराओ तत्थ ताए पोट्ट-सूल-वियणाए धणियं बाहिउं पयत्तो । तओ तेण णायं णत्थि मे जीवियास त्ति भण्णमाणो णिवण्णो भगवओ पुरओ । तत्थ तओ गुरु-वियणायल्लो णीसहो भगवओ उसभ-सामिस्स मुह-पंकयं णियच्छंतो भणिउं पयत्तो । अवि य ।

भगवं ण-याणिमो च्चिय तुज्झ गुणे पाव-पसर-मूढप्पा । जं होइ तुज्झ पणयाण होउ मज्झं पि तं चेय ॥

त्ति भणमाणो भगवओ पायवडिओ चेय णियय-जीविएण परिचत्तो ।

§ २०५) तओ कुमार, तत्तो य सो मरिऊण कत्थ गओ । अवि य । अत्थि रयणप्पभाए पुढवीए पढमे जोयण-सहस्से वंतराणं भवणो, तत्थ य अट्ठ णिगाया होंति । तं जहा । जक्खा रक्खसा भूया पिसाया किंणरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्व त्ति । तत्थ पढमिल्लए णिगाए जक्खाणं मज्झे महिड्ढिओ जक्ख-राया समुप्पण्णो । तस्स य रयणसेहरो णामं । तत्थ समुप्पण्णेण णियच्छियं तेण । 'अहो, महंतो रिद्धि-समुदओ मए पाविओ । ता केण उण तवेण वा दाणेण वा सीलेण वा एस मए पाविओ'त्ति चिंतयंतस्स झत्ति ओहि-वर-णाणं पसरियं । तेण य णाणेण णिरूवियं जाव पेच्छइ तम्मि वणाभोए सरवरस्स तीरम्मि लयाहरए भगवओ उसभ-सामिस्स पुरओ णिय-देहं उज्झिय-जीवियं ति । तं च दट्ठूण चिंतियं ।

---

1) J om. अंबे कत्थइ, P अंबोडर, J कत्थवि णारंगे, P पावाए. 2) P om. तड-, J चंदवंदण. 3) P om. वंदण, P om. लया, P om. च, P कोउओ for कोउओ, P तंमि for तहिं, P transposes तत्थ after तेण, P दिट्ठो. 4) J पडिमं ति. 5) P सोमदंसणत्तणेण, J खयोव°, P adds च असुहकम्माणं before तम्मि, P चिंतियं तेण. 6) J एमं for इमं, J काउं । दे (for जे), P किर भवइ. 7) J भणियं इमिणा. 10) P om. णिवडिओ, J पायवडणु°, P वणो भोओ. 11) P पयावा for पायवा, P दारिद्दवमा°, P दूसियप्पण. 12) P om. वि after पुणो, P repeats कायव्वं, J कायण्णा. 13) J मुचइ पत्तिग, P कंमोहं । P भाग for भग्ग. 14) J ताव परं for ता वरं, J इह चेअ, P विमलं, P इमाणं च. 15) P repeats विहंग, P विहं-, कायसंगो अणवारिय. 16) J om. वण-, J व्विअ किं. 17) J तओ for तत्तो, P ओसहसामिस्स. 18) J looks like इमण्च, P om. इमं च णं पढमाणो त्ति. 19) J तुज्झ for तुम्ह, P ण for तं, P होउ ॥. 20) P कालंतरेयण, J फलाहार-किरियस्स, P कयाहारो. 21) J जय for जग. 22) P गिरितरुं. 24) P om. णिवण्णो, P भवओ for भगवओ, P तत्थ for तओ, P वियणाइल्लो. 26) J गुणा. 27) P नियजीविएण परिचत्तो. 29) J सए for सहस्से, P अट्ठ निकाया, P किन्नुरिसा. 30) P निकाए, J adds य after तत्थ. 31) P adds य before णियच्छियं, J समुदयो, J om. ता. 32) P झत्ति, J adds णेण before जाव. 33) P उसहय-, P पुरओ उज्झियदेहं नियजीवियं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अहो इमस्स भगवओ पभावेण मए एयं पावियं' ति । 'णमो भगवओ उसभ-सामि-जिणवरस्स महइ-महप्पभावस्स' त्ति भणमाणो वेएणं संपत्तो इमं पएसं । दिट्ठो य भगवं उसभणाहो, दट्ठूण य भत्ति-भरोणमिउत्तिमंग-मउड-रयण-किरण-संवयंत-तार-मुत्ताहारो थोउं पयत्तो । अवि य ।

जय सयल-सुरासुर-सिद्ध-कामिणी-विणय-पणय-चलण-जुय । जय भुयइंद-विलासिणि-सिर-मणि-किरणग्ग-चुंबियच्चलणा ॥
जय चंदिंद-णमंसिय जय हंद-भवोह-तारण-समत्थ । जय भुवण-सोक्ख-कारण जय कम्म-कलंक-परिहीणा ॥
भगवं तं चिय णाहो तं सरणं बंधवो तुमं चेय । भव-संसार-समुद्दे जिण-तित्थं देसियं जेणं ॥

त्ति भणमाणो णिवडिओ भगवओ चलणेसु । पणाम-पच्चुट्ठिएण भणियं च णेण । 'भगवं,

णामं पि ण-याणंतो णवरं तुह भत्ति-मित्त-संतुट्ठो । तेणं चिय णाह अहं एसो जक्खाहिवो जाओ ॥
जे उण जाणंति तुहं णामं गुण-कित्तणं च चरियं च । तुह वयण-वित्थरत्थे सत्थे य अणेय-माहप्पे ॥
ते णर-सुर-वर-भोए भोत्तूणं सयल-कम्म-परिहीणा । सासय-सिव-सुह-मूलं सिद्धिमविग्घेण पावेंति ॥'

भणमाणो णिवडिओ पुणो चलणेसु । भणिओ य तेणं णियय-परियणो । 'अहो देवाणुप्पिया, पेच्छह भगवओ णमोक्कार-फलं । अवि य ।

सयल-पुरिसत्थ-हीणो रंको जण-णिंदिओ वि होऊण । एयस्स चलण-लग्गो अहयं एयारिसो जाओ ॥'

अहो भगवं महप्पभावो, ता जुत्तं णिच्चं भगवंतं सीसेण धारिउं । जेण एक्कं ताव सुरिंदाणं पि पुज्जो, बिइयं अलज्जणिज्जो, तइयं महाउवयारी, चउत्थं भत्ति-भर-सरिसं, पंचमं सिद्धि-सुह-कारणं ति काऊण सव्वहा विउव्विया अत्तणो महंता मुत्ता-सेल-मई पडिमा । सा य एसा । इमीय य उवरिं णिवेसिओ एस मउलीए भगवं जिणयंदो त्ति । तप्पभिइं चेय सयल-जक्ख-लोएण रयणसेहरो त्ति अवहत्थिय जिणसेहरो से णामं पइट्ठियं । तओ कुमार, तं च काऊण महंती पूयं णिव्वत्तिऊण वंदिऊण थोऊण णमंसिऊण य भणियं णेण 'कणयप्पभे कणयप्पभे' त्ति । मए वि ससंभमं करयल-कयंजलिउडाए भणियं 'आइससु' त्ति । तओ तेण अहं आइट्ठा जहा 'तए अणुदिणं इहागंतूण भगवं दिव्व-कुसुमेहिं अच्चणीओ त्ति । मए पुण अट्ठमी-चउद्दसीए सव्व-परियण-परियरिएण इहागंतव्वं भगवओ पूया-णिमित्तं ति भणिऊण उवगओ अत्तणो पुरवरम्मि । तओ कुमार जं तए पुच्छियं 'को एसो जक्खो, किं वा इमस्स मउडे पडिमा, का वा तुमं' ति । तं एस सो जक्खराया-इमा य सा पडिमा, तस्स य अहं किंकरी दियहे दियहे मए एत्थ आगंतव्वं ति । एवं भणिए भणियं कुमारेण । 'अहो महंतं अच्छरियं, महप्पभावो भगवं, भत्ति-णिब्भरो जक्ख-राया, विणीया तुमं, रम्मो पएसो । सव्वहा पज्जत्तं मह लोयणाणं कण्णाण य फलं इमं एरिसं वुत्तंतं दट्ठूण सोऊण य'त्ति भणिए भणियं कणयप्पभाए 'कुमार, जाणामि ण तुह केणावि किंचि कज्जं, तहा वि भणसु किंचि हियय-रुइयं जं तुह देमि' त्ति । कुमारेण भणियं 'ण किंचि मह पत्थणिज्जं अत्थि' त्ति । तीए भणियं 'तहा वि अवज्झ-दंसणा किर देवहर'त्ति । कुमारेण भणियं 'सुंदरि, इओ वि उड्ढं फलं अण्णेसीयइ त्ति । अवि य ।

एस भगवं जिणिंदो जिण-भत्तो एस जक्ख-राया य । दिट्ठा सि तं च सुंदरि तहावि विहलं ति वाहरसि ॥' त्ति ।

'वंदामि'त्ति भणमाणो समुट्ठिओ कुमार-कुवलयचंदो । तओ तीए भणियं । 'कुमार, दूरे तए गंतव्वं, बहु-पच्चवाओ य एस बहु-रण्ण-दुग्गमो मग्गो। ता गेण्ह इमं सयल-सुरासुर-वंतर-णर-किंणर-करिवर-वग्घ-हरि-सरह-रुरु-प्पमुहेहिं पि अलंघणीओ ओसही-वलय-विसेसो'त्ति भणमाणीए करयलाओ समप्पिओ कुमारस्स । तओ 'महंती साहम्मिय-वच्छल'त्ति भणमाणेण गहिओ कुमारेणं ति । तं च घेत्तूण अब्भुट्ठिओ कुमार-कुवलयचंदो, पयत्तो दक्खिणं दिसाभोयं, वच्चइ य तुंग-विंझइरि-सिहराइं लंघयंतो । वच्चमाणो दिट्ठो य णेय-तरुयर-साहा-बाहा-पवण-पहोलमाण-साहुली-विइज्जंतं पिव महाणइं णम्मयं ति ।

1) JP एवं, P उसहसामि, J महति-. 2) P भगवओ उसहनाहो, J उत्तमंग P उत्तिमंगउड. 3) J मुत्ताहारेण भणिअं । अवि य।. 4) J जुआ, P विलसिणि. 5) P वंदिद for चंदिंद, J परिहीणं. 7) P om. भगवओ. 9) J णामगुणे, P गुण कि तुह वयण. 10) P inter. वर and सुर, P परिहीणो, P चिरेण for विग्घेण. 11) P repeats पुणो, J णिअओ for णियय. 14) P जुत्तमिमं भगवंतं, J पि पूअणिज्जो । बितिअं. 15) P भत्तिब्भरसरिसं J om. सव्वहा, J विउव्विअ. 16) P adds मओ एस before मउलीए, J तप्पभूई चेअ. 17) P om. से, P महंतं पूयं निव्वत्तेउण. 18) P भणिय(?)णेण, J ससंभम, P करयलंजलि. 19) J om. अहं, P अह for अहं, J आइट्ठो, P adds न before मए. 20) P परिवारिएण. 21) J को for का. 22) P एयस्स for तस्स, P inter. किंकरी & अहं, J adds य after first दियहे, P om. ति. 23) J अच्छरीअं, P भत्तिब्भरनिब्भरो. 24) J कण्णेण, P फलमिमं, P तुह वि केण वि. 25) P रुइरं for रुइयं, J णइंच्चि मह, J तीय. 26) J देवा होंति त्ति P देवाहरति, P विय for वि, J अण्णिसीअति त्ति. 28) J तीय for तीए. 29) J बहुरण्णो, J om. मग्गो, P सयलसुर, J om. किंणर, P om. करिवर, J om. वग्घ, J हरिस-भररुप्प॰. 30) J भणमाणीय, P वच्छल ति. 31) P om. भोयं, P विंझसिहराइं. 32) J वच्चमाणेण य दिट्ठा P वच्चमाणेण दिट्ठो, P णेण for णेय, P वियज्जंतं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§२०६) आ व कइसिया । णव-जोव्वणुम्मत्त-कामिणि-जइसिय कुंकुम-रस-पिंजर-चक्कल-चक्कवाय-पओहर-सेला-लुब्भिजमाण-रोम-राई-मणहरं च, कहिंचि णव-वहु-जइसिया तड-तरुयर-घण-साहा-लयावगुंठण-णीसद्द-गइ-पयारा व, कहिंचि वेसा-विलय-जइसिया हरि-णहर-णिद्दलिहिय-मत्त-मायंग-कामुय-दंत-जुयलंकिय व, कहिंचि वासय-सज्ज-जइसिया मघमघेंत-सुरहि-कुसुम-गंधड्ड-फुरमाण-बिंदु-माहर व, कहिंचि पउत्थवइ-जइसिय पल्हत्थिय-कमल-वयण-आवंडुर-पओहरय त्ति । अवि य ।

उच्छंगम्मि णिवण्णं चुंबइ तड-पायवग्ग-वयणेहिं । णवि णज्जइ किं धूया किं दइया होज विंझस्स ॥

जीए य महामल्ल-सरिसइं कर-कत्तरी-घाएहिं जुज्झंति मत्त-मायंग-जूहइं, कहिंचि दुप्पुत्त-सरिसइं महा-कुलुम्मूलण-ववसियइं, कहिंचि गाम-डिंभरूय-सरिसइं जल-कीला-वावडइं, कहिंचि तड-परिणय-पायवडियइं णज्जंति कुविय-दइया-पसायणोणयइं ति । अवि य ।

णवि णज्जइ किं दइया सहोयरा होज्ज किं व एयाण । किं जणणि च्चिय रेवा होज व धाई गय-कुलाण ॥

कहिंचि मच्छ-पुच्छ-च्छडा-घाउच्छलंत-पाणिया, कहिंचि तणुय-तंतु-हीरमाण-मत्त-हत्थि-संकुला, कहिंचि महा-मयर-कराघाय-कुविय-मत्त-वण-महिस-कलुसिया, कहिंचि पक्कल-गाह-गहिय-गंडयाउला, कहिंचि कुम्म-पट्ठि-उल्लसंत-विदुम-किसलयालंकिया, कहिंचि वेला-वसागय-पोमराय-रयण-रंजिय-जला, कहिंचि परिप्पयंत-चक्कवाय-जुवलुक्कंठ-णिज्जिया, कहिंचि सर-सरसरंत-कंत-सारसाउला, कहिंचि तुंग-तरंग-रंगंत-सिप्पि-संपुडा, कहिंचि चंड-पवण-पहय-कल्लोल-माल-हेला-हीरमाण-पक्खि-गणा, कहिंचि मत्त-मायंग-मंडली-मज्जमाण-गंडयल-गलिय-मय-जल-संदोह-बिंदु-वंद-णीसंद-परिप्पयंत-चंदय-पसाहिय त्ति । अवि य ।

धवल-बलाया-माला-वलया-हंसउल-पंति-कय-हारा । चलिया पइहर-हुत्तं णज्जइ रेवा णव-वहु व्व ॥

अण्णं च । गायइ व गय-मय-गंध-लुद्ध-मत्त-महुयर-महुरुल्लावेहिं, जंपइ व णाणा-विहंग-कलयलारावेहिं, हसइ व हंस-मंडली-धवल-दसण-पंतीहिं-णच्चइ व पवण-वेउच्छलिय-तुंग-तरंग-हत्थेहिं, पढइ व जलयर-हीरंत-पत्थर-संघट्ट-खलहला-खलियक्खर-गिराहिं, भणइ व तड-विडवि-पिक्क-फलवडण-दुहुदुहारावेहिं, रुयइ व णिज्झर-झरंत-झरहरा-सद्देहिं । अवि य ।

उग्गाइ हसइ णच्चइ रुयइ व कलुणक्खरं पुणो पढइ । उम्मत्तिय व्व रेवा इमीए को होहिई वेज्जो ॥
जाइ समुद्दाभिमुहं रेवा पुण वलइ वेविर-सरीरा । पयइ च्चिय महिलाणं थिरत्तणं णत्थि कज्जेसु ॥
मोत्तूण विंझ-दइयं तुंगं जलहिम्मि पत्थिया रेवा । अहवा तीएँ ण दोसो महिला णीएसु रज्जंति ॥
रयणायरम्मि लीणा विंझं मोत्तूण णम्मया पेच्छ । अहवा लुद्धाओ च्चिय महिलाओ होंति पयईए ॥
किं ण सुहओ य दाणे रेवे जेणुज्झिओ तए विंझो । हुं पइणा एक्केणं ण होइ महिलाण संतोसो ॥
अण्णाण वि एस गई तेण समुद्दम्मि पत्थिया रेवा । होंति च्चिय कामिय-कामियाओ काओ वि महिलाओ ॥
उव्वूढा विंझेणं महप्पमाणं च पाविया तेण । मोत्तूण तह वि चलिया अहो कयग्घा महिलियाओ ॥
जलही खारो कुग्गाह-सेविओ बहुमओ य रेवाए । इय साहेइ समुद्दो वियारणा णत्थि महिलासु ॥
इय जुवइ-चरिय-कुडिलं गंभीरं महिलियाण हिययं व । महिला-सहाव-चडुलं अह रेवं पेच्छए कुमरो ॥

तं च तारिसं महाणइं णम्मयं समोइण्णो रायउत्तो कह तरिउं पयत्तो । अवि य,

णिट्ठुर-कर-पहराहय-जल-वीइ-समुच्छलंत-जल-णिवहं । अह मजइ सिरिदत्तो महागइंदो व्व उद्दामं ॥

एवं च मज्जमाणो कुमार-कुवलयचंदो समुत्तिण्णो तं महाणइं णम्मयं ति, गंतुं च पयत्तो तम्मि तीर-तरुवर-वल्ली-लया-गुविल-गुम्म-दुस्संचारे महाडई-मज्झयारे ।

---

1) J कइसिअ, P om. णवजोव्वणुम्मत्त etc. to मणहरं च कहिंचि, J जइसिअ. 2) P नववहुसिया तड, J तरुण for तड, P om. घण, P गुंठणानीसद्द, J गयप्पयार व. 3) P वियलिय for विलय, J जइसिअ, J दुल्लिहिअ for उल्लिहिय, P जुयलंकियं कहिं चि, J जइसिय. 4) P गंध for गंधड्ड, J फरमाण for फुरमाण, P पउत्थवइजइसियपल्लत्थियवयणकमल, J आवण्डु P आवंदुरपओहर व्व त्ति. 6) P उत्संगंमि, P तह for तड, P नयणेहिं for वयणेहिं, P नज्जिय for णज्जइ. 7) P वा for य, P कुलम्मूलण. 8) P डिंभरुय, J पायवडिअइं । णज्जइ, P पायवडइं । नज्जंति. 10) P दयया, P धाती for धाई. 11) P मच्छपुच्छडा, J घायुच्छलंतपाणिअ, P तणुतंतु. 12) J om. वण, J पज्जल for पक्कल, P गंडलाउला. 13) J om. °लंकिया, J वेलोवसा°, P परिपयंत, J जुअलुकुंठ, P सरसरत्तकंत. 14) J om. कंत, P वेण्ड for चंड, J माला for माल, J om. हेला. 15) P बिंदुविंदणसिंद. 17) P हंसउलं, J रज्जइ P नज्जइ, P नर for णव. 18) P महुयरल्लावेहिं. 19) J inter. धवल & मंडली, J om. व, P चेवच्छालिय, JP य for व, P जलयलहीरंत. 20) P तडवेडसिपिक्क, J दुहुदुहारवेहिं P कुडुडारावेहिं, P निज्झरुज्झरंतझरासद्देहिं, J सरेहिं for सद्देहिं. 21) P णु for व, P व for व्व, P को हाहिई वेज्जा. 22) P पुण विलइ. 23) J तीय for तीएँ, P रच्चंति. 24) P अहवा लद्धाउ. 25) J य दाणो रेवे जोणुज्झिओ, J हूं. 26) J पई for गई. 27) J पि for च. 30) J महाणम्मयं, P तह for कह. 31) J सिरिअत्तो. 32) P तरुयर. 33) P गुहिल, J दुसंचारे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २०७) एवं च वच्चमाणेण कुमारेण दिट्ठो एक्कम्मि पएसे विंझगिरि-पायवासण्णे बहल-सिणिद्ध-तरुयर-णियर-संकुले एक्को उडओ। दट्ठूण तं चेय दिसं वलिओ त्ति अचालिय-वलंत-लोयणो राय-तणओ कयाइ कोइ एत्थ रिसी आसमे होइ त्ति चिंतयंतो संपत्तो तं उडयंगणं। जाव दिट्ठं तरुण-तमाल-पायव-पंती-परंपरा-परियरियं अंगणं। अण्णं च। कुसुमिय-बउल-रुक्खयं, आसण्ण-पिक्क-करमद्दयं, पलंबंत-पिंडिरयं, ललमाण-माउलुंगं, समंतओ कुसुमिय-बहु-जाइ-कुसुम-मयरंद-लुद्ध-भमर-रिंछोलि-रुणुरुणा-सद्द-संगीय-मणहरं पेच्छंतो पविट्ठो उडए। दिट्ठं च णेण पुत्तजीवय-घडिय-रुद्दक्ख-माला-वलयं। दिट्ठाइं च णाणा-सुक्क-फल-संचयाइं। दिट्ठं च तियट्ठिया-ठावियं कमंडलं। दिट्ठं च उवट्ठवासणं। तं च दट्ठूण चिंतियं। 'अहो को वि एत्थ महामुणी परिवसइ'त्ति चिंतयंतेण दिट्ठा पंसुल-पएसे पय-पंती। तं च दट्ठूण 'अहो, जहा इमाइं लहुय-मउय-कोमलंगुली-ललिय-दलाइं व दीसंति चलण-पडिबिंबाइं, तेण महिलाए होयव्वं, ण उण पुरिसेण। ता कह तवोवणं कहं वा महिल' त्ति चिंतयंतो तत्थेव उवविट्ठो। 'दे, पेच्छामि णं को एत्थ परिवसइ' त्ति। थोव-वेलाए दिट्ठा तेण तावसी। सा केरिसा। अवि य।

उब्भड-जडा-कडप्पा खर-फरुसा-दीह-केस-णहरिल्ला। वक्कल-पीण-पओहर माईण व आगया एक्का॥

तीय य मग्गालग्गा समागया तरुण-जुयइ-चंचल-णयण-सम-सोहा-लोयण-जुयला मुद्ध-मया, ताणं चाणुमग्गओ जुयइ-हिययं व चंचला वाणर-लीवा, ताणं च पुरओ समागओ मण-पवण-वेओ झत्ति एक्को महाणील-सच्छामो महंतो राय-कीरो त्ति, तस्साणुमग्गं अण्णे य सुय-सारिया-णिवहा। ते य दट्ठूण चिंतियं राय-तणएण। 'अहो, उवसम-प्पभावो इमीए तावसीए जेण पेच्छ एए वण-तण-जल-मेत्त-संतुट्ठ-जीवणा अरण्ण-सावय-सउणया वि ण मुंचंति से पासं सव्वहा। किं वा तवस्सिणो असज्झं' ति चिंतयंतो दिट्ठो तीए राय-उत्तो। दट्ठूण य केरिसा जाया। अवि य।

भय-सज्झस-सेउकंप-कोउहल्लेहिँ विणडिया तो सा। इच्छइ पलाइऊणं को उण एसो विचिंतेंती॥

तं च पलायंती दट्ठूण पहाइओ सरसइ-वरो महाकीरो। भणिया य णेण 'सामिणि एणिए, किं तुमं पलाइउं पयत्ता'। तीए भणियं 'इमो उण को इमम्मि मज्झ उडयम्मि वण-सावओ। तेण भणियं 'मा बीहसु, एस एत्थ को वि अरण्ण-मज्झम्मि पंथ-परिब्भट्ठो पंथिओ इमं पएसं समागओ। ता माणुसो एसो, अहं इमिणा सह भलीहामो त्ति। ता दे पावेसु, तुमं सागयं च इमस्स कुणसु। महाणुभावो विय लक्खीयइ'। एवं भणिया तेण कीरेण समागया सलज्ज-वेवमाण-पओहरा। आगंतूण य तीए भणियं 'सागयं पहियस्स, कत्तो आगओ सि, कहिं वा पत्थिओ सि, किं वा कज्जं' ति। तेण भणियं 'आगओ हं महाणयरीओ अउज्झाओ, कज्जत्थी दक्खिणावहं चलिओ' त्ति। तओ भणियं कीरेण 'सागयं महाणुभावस्स, उवविससु एत्थ पल्लवत्थुरणे'। तओ उवविट्ठो राय-तणओ। एणियाए विणिक्खित्ताइं विविह-तरु-वर-पिक्क-साउ-सुरहि-फल-णियराइं। सुरहि-कुसुम-पत्त-पुडए य संठाविए एगंतम्मि उवविट्ठो य। तओ चिंतियं कुमारेण 'ण-याणीयइ का वि एसा, कहं वा केण वा कारणेण, केण वा वेरग्गेण, कत्थ वा आगय त्ति, ता किं पुच्छामि'। 'दे पुच्छामि'त्ति चिंतिऊण भणियं। अवि य।

'जइ तुम्ह णोवरोहो अकहेयव्वं च कह वि णो होइ। ता साह सुंदरि महं जं ते पुच्छामि ता सुयणु॥
कत्थ तुमं एत्थ वणे कम्हाओ केण वा वि कज्जेण। एयंत-दुक्करमिणं वण-वासं जं पवण्णा सि॥'

एवं च भणिया समाणी अहोमुहा ठिया। तओ कुमारो वि तीए पडिवयणं उवेक्खंतो थोव-वेलं विलक्खो विय आसि। तं च दट्ठूण भणियं तेण राय-कीरेण। 'भो भो महापुरिस, एस मणयं लज्जइ। ता कया उण तए एसा पत्थणा ण णिरत्थया कायव्व त्ति अहं साहेस्सं' ति।

1) P पायासण्णे, P repeats णियर. 3) J तरुतमाल, P परियं for परियरियं, J om. अंगणं, P om. अण्णं च. 4) P पिंडीरयं, P adds कुजाइ after जाइ. 5) P रुणरुणासद्द, J सगाइं for मणहरं, J पुत्तज्जीवय P पुत्तजीव, J फाडिअ for घडिय, P रुद्दक्खमालयं. 6) J अ for च before णाणा, J om. दिट्ठं च...कमंडलं।, P ट्ठावियं, J उवट्ठयासणं P उवट्टयासणं. 7) J दिट्ठो पंसुल, J लहुमउअ. 9) P महिलय त्ति, J om. णं, P थोइ for थोव. 10) P om. सा, P om. अवि य. 11) J णहरुक्खा।, J पउहरा. 12) P जुवई, J च मग्गओ. 13) J हिययं पिव चला, P adds पुरओ उप्फिडंता after लीवा, J om. च, P सच्छमो. 15) P पेच्छा for पेच्छ, J संतुट्ठा, P जीविणो, J पासं। सव्वहा किं, P च for वा. 16) P adds महंतो after तवस्सिणो, P om. ति, J तीय. 17) P कोउहल्लेहिं, J विणरिआ, P om. तो, P इत्थए, J विइंतेती P विचिंतेइ. 18) P सरसवइरो, P महाकीरा, J om. य, P सामिणी, J तीय. 19) P om. वणसावओ, P om. एत्थ, P अरन्नंमि पंथं परिवुढो पंथिओ इमं परिसं. 20) J एस for एसो. 21) J पि for च, J लक्खीयति, P om. तेण, J सलज्जं. 22) J तीय, P कत्तो सि आगओ सि, JP कहं वा, P om. सि, J त्ति for किं वा कज्जं ति. 23) J आगयोहं, P अज्जत्थी for कज्जत्थी. 24) P पल्लवुत्थरणं ति।, J om. तओ, J एणिआय, J तरुयरपक्क. 25) J पुडए संठाविए P पुडए य ठाविए, J एअंतम्मि, J -याणीयति. 26) P om. केण वा before वेरग्गेण, P inter. वा & कत्थ, P om. ता किं पुच्छामि. 28) J अकहेयं वा वि कह, J आ for ता. 29) P om. तुमं एत्थ, J कम्हाउ व केण, P एंतं for एयंत. 30) P अहोमुही, J ट्ठिआ, J तीय, P थोयवेलं. 31) P एसा for एस, J om. ता, P om. उण, P ताए for तए. 32) J कायव्वं ति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २०८) अत्थि एयम्मि चेय पुहइ-मंडले णम्मया णाम महाणई । अवि य ।

मत्त-करि-कामि-णिट्ठुर-घोर-कराघाय-चड्डुण-सयण्हा । दंत-जुवलंकिओट्ठी पोढा इव कामिणी रेवा ॥

तीए दक्खिण-कूले देयाडई णाम महाडई । जा य कइसिया ।

बहु-तरुवर-सय-कलिया बहु-सावय-सेविया सुभीसणया । बहु-गिरिवर-सय-सोहा अडई देयाडई णाम ॥

तीए महाडईए मज्झ-भाए अत्थि महंतो वड-पायवो । सो य केरिसो । अवि य ।

पत्तल-बहल-विसालो साल-पलंबंत-चडय-घरयालो । बहु-सउण-सयावासो आवासो सव्व-सत्ताणं ॥

तम्मि य महावडे बहुए कीर-कुले परिवसंति । तत्थ एक्को मणि-मंतो णाम महासुय-वंद्-राया राय-कीरो अत्थि । तस्स एक्काए रायकीरीए उयरे गब्भो जाओ । सो य अत्तणो काल-कमेण पसूओ अंडओ जाओ । केण वि कालंतरेण फुडिओ तओ जाओ मंस-पेसी-सरिसो किंचि विभाविज्जमाण-चुंचु-खुर-णहावयवो अणुदियहं च पक्खावली-पयावुम्हा-परिपोसिज्जमाण-सरीरो किंचि-समुब्भिज्जमाण-मरगय-सामलंकुर-पक्खावली-कयावयवो पाउस-समओ इव मणोहर-च्छाओ । एरिसम्मि समए दर-जाय-पक्खाविक्खेव-डोहलो णिग्गएसु कहिं पि पोट्ट-पूरण-तग्गएसु पिइ-माइ-बंधव-जणेसु समुत्तिण्णो कुलयावासाओ । थोवंतरेण य अपरिप्फुड-पक्ख-विक्खेवो गंतुं अचाएंतो गिम्ह-महाताव-तविय-सरीरो तण्हा-सुक्क-कंठो एक्कस्स तरुण-तमाल-पायवस्स छायाए णिसण्णो अच्छिउं पयत्तो । तहा य अच्छमाणस्स आगओ तम्मि पएसे एक्को वाह-जुवाणओ । तेण य तस्सेय तरुयरस्स अहे वीसममाणेण कहं पि दिट्ठो सो कीरो । तं च दट्ठूण पसारिओ णेण कसिणाहि-भोग-भीसणो हत्थो । गहिओ य सो पलायमाणो । घेत्तूण य चिंतियं तेण । 'अहो, एस पाविओ राय-कीरो त्ति । ता सव्वहा ण एस वावाएयव्वो त्ति य मए देसणीओ पल्लीवइणो होहिइ' त्ति घेत्तूण असोय-तरुवर-पत्ताइं णिबद्धो पुडए, धणुयर-कोडि-णिबद्धो ललमाणो य संपाविओ घरं, समप्पिओ य पल्लीवइणो, तेणावि राय-कीरो त्ति घेत्तूणं पंजरए रुद्धो । तत्थ य वड्ढिउं पयत्तो । ता अहो महापुरिस, जो सो कीरो सो अहं । तओ अहं च तेण संवड्ढिओ त्ति ।

§ २०९) एत्थंतरम्मि भरुयच्छं णाम णयरं । तत्थ भिगू णाम राया । तं च दट्ठूण उवगओ सो पल्लीवई । तेण य तस्स अहं उवट्ठाविओ । ममं च दट्ठूण राइणा महंतो तोसो उव्वूढो, भणियं च 'रे रे, को एत्थ' । पडिहारीए भणियं 'आइससु' त्ति । 'वच्च सिग्घं, वच्छं मयणमंजरिं गेण्हिऊण पावसु' त्ति । आएसाणंतरं गया, पविट्ठा य मयणमंजरीए समं । भणियं च राइणा । 'वच्छे मयणमंजुए, एस तए रायकीरो तहा करियव्वो जहा सव्व-कला-पत्तट्ठो हवइ' त्ति भणंतेण समप्पिओ पंजरो । तओ सा य रायसुया ममं सहिं पिव मित्तं पिव बंधुं पिव भायरं पिव सुयं पिव मण्णमाणी पाढिउं पयत्ता । थोएणं चेय कालेणं जाणियाइं अक्खराइं, गहियं णट्ट-लक्खणं, जाणियं विसाहिलं, गहियाइं गय-गवय-मय-कुक्कुड-आस-पुरिस-महिला-लक्खणाइं । बुज्झियाइं सव्व-सत्थाइं । सव्वहा,

सव्व-कलागम-कुसलो जिण-वयण-सुणिच्छिओ महाबुद्धी । तीए पसाएण अहं अह जाओ पंडिओ सहसा ॥

तओ एवं च अच्छमाणस्स को कालो समागओ । अवि य ।

उण्हो उव्वेवणओ दीहर-खर-फरुस-पवण-णीसासो । संताविय-भुवणयलो गिम्हो कालो व्व वेयालो ॥

तम्मि य तारिसे गिम्ह-काले एक्कस्स मुणिणो आयावणं करेंतस्स णीसंगयं भावयंतस्स एगत्तणं चिंतयंतस्स असरणत्तणं झायंतस्स सुत्तं अणुगुणेंतस्स संसारं णिंदमाणस्स जिण-वयण-दुल्लहत्तणं भावयंतस्स सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अउव्व-करणं खवग-सेढीए अणंतं केवल-वरणाण-दंसणं समुप्पण्णं । सो य रिसी तस्स राइणो पिया अभिसिंचिऊण पव्वइओ, एक्कल्ल-विहार-पडिमं पडिवण्णो । भरुयच्छं समागओ विहरमाणो, तत्थ य केवल-णाणं समुप्पण्णं । तओ देवाणं उप्पय-णिवयं दट्ठूण जणेण साहियं राइणो पिउणो जहा 'महाराय, रिसिणो इहेव भरुयच्छे समागयस्स केवलणाणं समुप्पण्णं' ति ।

2) P काम for कामि, J कामिणिट्ठारघोर, J वत्तण for चड्डुण, J जुवलंकिउट्ठी, P रेहा for रेवा. 3) J तीय, P नई for महाडई, J जा च P जा व. 4) P तरुयर, P सेवया, J सुभीसणिया, P य for सय. 5) J तीय महाडईमज्झ. 6) J घरयाला । P बहुसयणिसयनिवासो. 7) J कीरकुले P कीलकुले. 8) P कालक्कमेण. 9) P om. तओ, P चंचुखुरणुहा°, P पयाउम्ह. 10) J किंचि अब्भिज्जमाण, J सामलंकूर P सामलंकुरु, P तओ for कयावयवो, P समयं पिव मणहरच्छाओ. 11) P पक्खो तओ विक्खेव, J -दोहला, P पिअ for पिइ, P कुलायावावसाओ । थोअंतरेण. 12) J अपडिप्फुड P अपरिफुड, P अचायंतो, P तरुतमालपालपायगस्स. 13) P सिसण्णो for णिसण्णो, P अस्थिउं, P वाहजुवाणो. 14) P अहो वीसमाणेण कहिं पि, P कसिणाहभोग, J भोअभीसणो. 15) J णेण for तेण, P पायवो for पाविओ, J एस विवाए अव्वो, P वावाएयव्वो मम दंसणो पल्ली°. 16) J होहई, P adds य सोय before असोय, J पसाय for असोय, P तरुयरपत्तनिबद्धो. 17) P पल्लीवइणा, J तेण वि, P repeats ता सव्वहा न वावाएयव्वो etc. to तेणावि रायकीरोत्ति, J पंजरओ. 18) P om. तओ अहं च, P संवड्डिओ. 19) P नगरं for णयरं, P inter. सो & उवगओ. 20) P उवट्ठविओ, P तं for ममं, P adds णेण before रेरे. 21) P अइससु, P adds च before गया, P पयट्ठा, P om. य, J °मंजरीय P °मंजरी । ससंभमं भणियं. 22) J होइ for हवइ, J adds य after भणंतेण. 23) P समप्पिउं, P सा रायधूया मं सहिं, P बंधुं पिय. 24) J अहिआइं for गहियाइं, P om. मय. 25) J -सत्थइं. 26) J कव्व for सव्व, J सुणिच्छओ, J तीय. 27) P om. च. 28) P उण्हा. 29) J गिम्हयाले, J णीसंगं, J om. एगत्तणं चिंतयंतस्स, P चिंतयंतयंतस्स, J असरणअत्तणं. 30) P om. सुत्तं अणुगुणेंतस्स. 31) P रिस्सी for रिसी, P पियाभिसिंचिऊण. 33) P om. इहेव, P om. ति.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तं च सोऊणं हरिस-वस-वियसमाण-लोयण-जुवलो राया भणिउं पयत्तो । 'सज्जेह जाण-वाहणाइं, अंतेउरिया-जणस्स सव्व-रिद्धीए अज्ज भगवंतं तायं उप्पण्ण-केवल-वर-णाणं वंदामि'त्ति भणिऊण पयत्तो बहु-जाण-वाहण-पूरमाण-महियलो संपत्तो य भगवओ सयासं । थोऊण य पयत्तो । कह ।

जय धम्मज्झाण-करवाल-सूडियासेस-कम्म-रिउ-सेण्ण । जय जय अक्खय-णाणमणंत-जाणियासेस-परमत्थ ॥

त्ति भणमाणेण वंदिओ भगवं केवली राइणा । राया णिसण्णो य पुरओ, अण्णे वि य रायाणो भड-भोइया य णायर-जणो य राय-धूया वि ममं घेत्तुं चेव तत्थ उवगया । मए वि संथुओ भगवं स-बुद्धि-विहवेणं । अवि य ।

जय णिज्जिय-सयल-परीसहोवसग्ग जय णिहय-मय-मोह । जय णिज्जिय-दुज्जय-काम-बाण जय विमल-णाण-धर ॥

त्ति भणिऊण पणमिओ मए वि भगवं केवली । णिसण्णा य राय-दुहिया ममं पुरओ णिमेऊण । केवलिणा वि भगवया कय-कायव्व-वावारेणं वोलीण-लोय-मग्गेण तहा वि किं पि कज्जंतरं पेच्छमाणेण भणियं । अवि य ।

जर-मरण-रोग-रय-मल-किलेस-बहुलम्मि णवर संसारे । णत्थि सरणं जयम्मि वि धम्मं जिण-देसियं मोत्तुं ॥

ता मा कुणह पमायं देवाणुपिया इमम्मि जिण-मग्गे । संसार-भव-समुद्दं जइ इच्छह अप्पणा तरिउं ॥

§ २१०) एत्थंतरम्मि समोवइया दोण्णि णील-पीय-वाससा विप्फुरंत-मणि-किरण-कणय-भासुरालंकार-सोहिया विज्जाहरा ।

णिम्मल-करवाल-करा फुरंत-मणि-रयण-किरण-सोहिल्ला । गयणाओ ओवइया सहसा विज्जाहरा दोण्णि ॥

ते य भगवंतं केवलिं पयाहिणं करेमाणा समोइण्णा । वंदिओ य भगवं सविणय-ओणय-करयल-दल-मउलमंजलिमुत्तिमंगे णिमेऊण । णिसण्णा य पायमूले भगवओ । सुह-णिसण्णेहिं भणियं 'भगवं, का उण स' त्ति । भणिय-मेत्ते राइणा भिगुणा सव्वेहि य णायरएहिं भणियं । 'भो भो विज्जाहरा, सा उण का जं तुब्भेहिं भणियं का स' त्ति भणिए, तेहि य पलत्तं । 'अम्हे वेयड्ढ-गिरिवराओ सम्मेय-सिहरं गया । तत्तो सत्तुंजयं चलिया । तत्थ वच्चमाणेहिं विंझ-गिरि-सिहर-वणंतराले भीमे णिम्माणुसे अरण्ण-पएसे, जत्थ अम्हे वि गयण-गोयरा भीया झत्ति वोलेमो, णम्मयाए दक्खिणे कूले दिट्ठं महंतं मय-जूहं । ताणं च मग्गालग्गा एक्का का वि मयलीव-वुण्ण-लोयणा समुब्भिज्जमाण-पओहर-भरा भउव्विग्ग-लोयणा मयाणं अणुमग्गेणं वच्चंती बाला । तं च दट्ठूण चिंतियं अम्हेहिं । 'अहो, महंतं अच्छरियं' चिंतयंता अवइण्णा । भणिया य अम्हेहिं । 'भो भो बालिए, किं एत्थ अरण्णम्मि तुमं एक्का, कत्थ वा तुमं आगय' त्ति भणिया य समाणी मुरलारण्ण-मय-सिलिंब-वुण्ण-लोल-लोयणा अहिययरं पलाइउं पयत्ता । ण य ते मया तीए उव्वियंति । तेहिं चेय समं सा संगय त्ति । तओ अउव्वं वुत्तंतं चिंतंता भणमाणाणं चेय अइंसणं गया वणंतराले । तओ अम्हेहिं चिंतियं । 'अहो, किं पि अत्थेत्थ कारणं, सव्वहा को वि अइसय-णाणी अम्हेहिं पुच्छियव्वो' त्ति । तओ भगवं एत्थ दिट्ठो । तेण पुच्छियं अम्हेहिं 'भगवं, का उण स' त्ति । भणियं च राइणा पिउणो 'भगवं, अम्हाणं पि कोउयं जायं । ता पसीयसु, साहेसु' त्ति ।

§ २११) भगवं साहिउं पयत्तो ।

अत्थि पयडा पुरीणं तेलोक्कम्मि वि पयत्त-जसहारा । धवलुत्तुंग-मणहरा उज्जयणी पुरवरी रम्मा ॥

जीय य मणहर-गीय-रव-रम्मइं भवणइं, भवण-माला-विभावियइं रायवहइं, रायवह-सोहिओ विवणि-मग्गु, विवणि-मग्ग-रेहिरइं गोउरद्दारइं, गोउरद्दार-विराइयइं पागार-सिहरइं, पागार-सिहर-छज्जिरइं फरिहा-बंधइं ति । जत्थ य रेहंति फरिहउ णिम्मल-जल-तरंगेहिं, जल-तरंगइं पि सोहंति वियसिय-सुरहि-कुसुमेहिं, कमलइँ वि अग्घंति भमिर-भमरउलेहिं, भमर-

1) P मंते' for अंते'. 2) P भगवओ तायस्स उप्पन्नं, P om. य before पयत्तो. 4) P सूडिताइसेस, P adds अय after जय. 5) P om. राइणा, J om. राया, P अन्नो वि, J ण for य before णायर. 6) J रायधूअ वि, P om. ममं, P घेत्तुं, J चेअ, P om. तत्थ, P बुद्धि for सबुद्धि. 7) P सयमलपरीसहोवसहोवसग्ग, J णिहयमळमयमोहा !, J णाणवर. 8) J णिसण्णो, P मं for ममं. 12) J दुण्णि (?) for दोण्णि, J om. किरण, P किणिय for कणय. 14) P उवईया. 15) P om. य, P केवलि, J सविणओणय, J उत्तिमंगे for मुत्तिमंगे. 16) P नमिऊण for णिमेऊण, J adds अ before भणियं, J सिउणो for भिगुणा. 17) P om. one भो, J कज्जं for का जं, J भणितं का P भणियं तं का, J om. य. 18) P तओ for तत्तो, P सेंत्तुज्जं. 19) J -प्पएसे, P तत्थ for जत्थ, P गोयरे, P यत्ति for झत्ति, J णम्मयाय. 20) P मलयलीवपुन्नलोयणा समुज्झिज्जमाणपओभरभरा तओव्विग्ग, J भयुव्विग्ग. 21) J अच्छरीयं, P चिंतइंता. 22) J om. किं, P एक्को, J om. य. 23) P पयत्तो, J om. तीए, J समं सा संगया P समं समागय, J om. त्ति, J अपुव्वं. 24) J चिंतेता, P भणमाणेणं. 25) P दिट्ठं. 26) J om. च, P भि गुणा for पिउणो, P adds अम्हा before अम्हाणं, J पसिअतु. 27) J adds भणिओ before भगवं. 28) P तिलोकंमि, P जरस पभारा for जसहारा. 29) J जिअ for जीय, J रम्माइं भवणाइं, P विरवियइं रायनिवहइं, J om. विवणिमग्गु, P विपणिमग्गु विपणि-. 30) P om. गोउरद्दारइं, P गोउरदारा, J विराविअइं पायार-, J पायार-, P छज्जिरवं परिहा-, P कत्थ for जत्थ, P फरिहाउ. 31) J मि for पि, J कमलेहिं for कुसुमेहिं, P कमल विय अग्धंति, P भमरभलेहिं भमर कुलइं विरायंति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उलहँ वि विरायंति णव-कुसुम-रेणु-रएणं ति । अवि य ।

उत्तुंग-धवल-तोरण-बद्ध-पडाय-च्छलेण भणइ व्व । उब्भेउँ अंगुलिं सा जइ अण्णा एरिसा णयरि ॥ त्ति ।

तम्मि य पुरवरीए सिरिवच्छो णाम राया पुरंदर-सम-सत्त-वीरिय-विहवो । तस्स य पुत्तो सिरिवद्धणो णाम । धूया य एक्का सिरिमई णाम । सा य विजय-पुरवइणो विजय-णराहिवस्स पुत्तो सीहो णाम तेण परिणीया । सो य सीहो जोव्वणं संपत्तो । केरिसो जाओ । अवि य ।

मारेइ खाइ लुंपइ णिरवेक्खो णिद्दओ णिरासंसो । वण-सीहो इव कुविओ पयईए एरिसो जाओ ॥

तं च तारिसं णाऊण राइणा विजएण णिव्विसओ आणत्तो । सो य तं राय-धूयं णियय-भारियं घेत्तूण णिग्गओ विसयाओ । एक्कम्मि पव्वत-गामे आवासिओ, अप्प-दुइओ अच्छिउं पयत्तो । वच्चंति दियहा । ताव य एत्थंतरम्मि केण वि कालंतरेण सो सिरिवद्धणो रायउत्तो धम्मरुइणो अणगारस्स अंतिए धम्मं सोऊण दुरुत्तरं संसार-सागरं णाऊण दुलहं भगवओ वयणं जाणिऊण सासयं मोक्ख-सुहं कलेऊण सव्वहा णिव्विण्ण-काम-भोओ अणगारो जाओ । सो य केण वि कालंतरेण परिणिप्फण्ण-सुत्तत्थो एक्कल्लप्पडिमं पडिवण्णो एक्को चेय विहरिउं पयत्तो ।

§ २१२) सो य भगवं विहरमाणो तं चेय गामं समागओ जत्थ सो भगिणी-पई भगिणी य । तम्मि अवसरे सो भगवं मास-खमणट्ठिओ पारणए य गामं पविट्ठो । भिक्खत्थं च गोयर-चरियाए विहरमाणो भगवं तव-तणुय-देहो खाम-णिण्णोयरो कमेण य तम्मि भइणीए घरम्मि संपत्तो । तीय य भगिणीए दूरओ चेय दिट्ठो, दट्ठूण य चिंतियं च तीए 'एस सो महं भाउओ त्ति, णिसुयं च मए किल एसो केण वि पासंडिएण वेयारिऊण पव्वाविओ । ता सव्वहा सो चेय इमो' त्ति । तओ आऊरमाण-सिणेहाए भाउओ त्ति णिब्भर-बाहुप्पीलण-थंभिय-णयण-गग्गर-वयणाए चिर-दिट्ठुक्कंठा-पसर-पयत्त-फुरमाण-बाहु-लइयाए अयाणंतो सो रिसी अभिधाविऊणं कंठे गहिओ, आलिंगिओ जाव रोविउं पवत्ता तावागओ तीए भत्तारो सीहो बाहिराओ । दिट्ठो य तेण आलिंगिज्जंतो । तं च दट्ठूण चिंतियं तेण 'अरे, पर-पुरिसो को वि पासंडिओ मह जाय-महिलसइ' त्ति । चिंतयंतो केरिसो जाओ । अवि य ।

ईसाणल-पज्जलिओ दढ-मूढो कोव-रत्त-णयणिल्लो । आयड्ढिऊण खग्गं अह रिसिणो पहरइ णिसंसो ॥

तओ गरुय-पहर-हओ णिवडिओ रिसी धरणिवट्ठे । तं च दट्ठूणं णिवडंतं किं कियं से भइणीए । अवि य ।

दूसह-गुरु-भाइवह-दंसण-संजाय-तिव्व-रोसाए । कट्ठेण पई पहओ जह मुच्छा-वेंभलो जाओ ॥

णिवडमाणेण तेणावि किं कयं । अवि य ।

णिट्ठुर-कट्ठ-पहारा वियणा-संताव-गरुय-मुच्छेण । खग्गेण तेण पहया जह जाया दोण्णि खंडाइं ॥

णिवडिओ तं णिवाएमाणो सो वि जीविय-विमुक्को जाओ । पुणो चंड-सहावयाए महारिसि-वह-पाव-पसर-परायत्तो पढमे रयणप्पभे णरयं रउरवे णरयावासे सागरोवमट्ठिई णेरइओ उववण्णो । सा वि तस्स [मुणिणो] भइणी गरुय-सिणेह-मुच्छा-परिणया तक्खणुप्पण्ण-कोव-विणिवाइय-भत्तार-णिहण-पाव-संतत्ता, तहिं चेव णरय-पत्थडे उववण्णा । सो उण रिसी भगवं णिद्दय-खग्ग-पहारा वियणायल्ल-सरीरो कहं कहं पि उवरओ, उववण्णो य सागरोवम-ट्ठिई सोहम्म-विमाण-वरे । तओ चइऊण णिय-आउक्खएण एत्थ भरुयच्छे राया जाओ । सो य अहं दिट्ठो तुम्हेहिं पच्चक्खं केवली जाओ । सो उण सीहो तम्मि महारउरवे णरए महंतीओ वियणाओ अणुभविऊणं कहं कहं पि आउक्खए उवट्टिऊण णंदिपुरे पुरवरे बंभणो जाओ । तत्थ वि गारुहत्थं पालेऊण एग-डंडी जाओ । तत्थ य आसम-सरिसं संजम-जोयं पालिऊण मरिऊण य जोइसियाणं मज्झे देवो उववण्णो । तत्थ य केवली पुच्छिओ णियय-भवंतरं । साहियं च भगवया दुइयं पि जम्मंतरं । तओ तं च सोऊण उप्पण्णो इमस्स कोवो । 'अरे, अहं तीए णियय-महिलाए मारिओ । ता कत्थ उण सा दुरायारा

1) P रेणुएणं- 2) P पडायाछलेण, J P उब्भेउ. 3) P समू for सम, P om. य. 4) P adds सा after तेण. 7) P om. विजएण. 8) P om. य after ताव. 9) P राउत्तो. 10) P कामभोगो, J परिणिप्फिण्ण P परिनिप्पन्नो. 11) P चेवल्लो for चेय विहरिउं पयत्तो. 12) P परागओ for समागओ, J adds तत्थ before भगिणी:, P सो पती भगिणीए. 13) P मासंक्खमण°, P भिक्खट्ठं, P चरिया विहरमाणा. 14) P -णिण्णोदरो, P om. दिट्ठो दट्ठूण य. 15) P महं भाय त्ति, J ति for च, J पासण्डिणा, P वियारिऊण for वेया°, P om. पव्वाविओ. 16) J बाहुप्पील P बाहुपीलण, J मण्ण P मणु (for णयण emended), J चिरु-, P चिरविट्ठुकंठपसरंतपव्वत्त. 17) P अभिधाइऊणं, J पयत्ता । ताव आगओ तीय. 18) P om. तं च, J om. मह जायमहिलसइ. 20) P ईसानल. 21) J -पहरंतो णिवडिओ, P धरणिवीढं ।, P निवडियं for णिवडंतं. 22) P भाइवहं. 23) J य तेण for तेणावि. 24) P पहार, P खंडाई. 25) J चंद for चंड, J महारिसी, J परयत्तो 26) P नयरं for णरयं, P रओरवि नरयावासे, J णरयवासे, J सायरोवमठिती णारइओ, P नेरईय उवविन्नो, JP om. [मुणिणो]. 27) J चेय. 28) J -प्पहरा, J -ठिती P ट्ठिती, J सोहम्मे. 29) J om. चइऊण, P सो हं दिट्ठो तुम्मेहिं, P om. जाओ. 30) P महारोरवे, P आउक्खएण. 31) P जाओ । तओ वि गारहत्थं, P तवसंजमं for संजमजोयं. 32) J om. य after मरिऊण, J om. य before केवली, J णिअ for णियय. 33) J तीय, P निय for णियय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपयं' ति चिंतेमाणेण दिट्ठा सा वि तम्हा णरयाओ उव्वट्टिऊण पउमणयरं णाम णयरं । तत्थ पउमस्स रण्णो सिरीकंता णाम महिला तीय उयरे धूयत्ताए उववण्णा । तम्मि य समए जाय-मेत्ता । तं च दट्ठूण जाइ-मेत्तं उद्धाइओ इमस्स रोसो इमाए पुव्वं अहं विणिवाइओ' त्ति । 'ता कत्थ संपयं वच्चइ' त्ति चिंतयंतो गुरु-कोव-फुरफुरायमाणाहरो समागओ वेएणं । गहिया य सा तेण बालिया । घेत्तूण य उप्पइओ आगओ दक्खिणं दिसाभोयं । तत्थ विंझ-सिहर-कुहरंतराले चिंतिउं पयत्तो । किं ताव । अवि य ।

'किं पक्खिवेंमि समुद्दे किं वा चुण्णेमि गिरि-णियंबम्मि । किं खइरं पिव णेमो मलेमि किं वा करयलेहिं ॥

अहवा णहि णहि दुट्ठु मए चिंतियं । ण जुज्जइ मह इमं ति । जेण इत्थिय त्ति इत्थि-वज्झा, बाल त्ति बाल-वज्झा, अयाणिय त्ति भूण-वज्झा, असरण त्ति एक्किय त्ति सव्वहा इमम्मि चेव कंतारम्मि उज्झामि । सयं चेव एत्थ माणुस-रहिए असेसोवाय-विरहिया मरिहिइ, महा-पक्खीहिं वा विलुप्पिहिइ, सावएहिं व खज्जिहिइ' त्ति चिंतयंतेण उज्झिया गयणयले कमेण य णिवडिया । अवि य ।

किं विज्जाहर-बाला अह णिवडइ चंदिमा मियंकस्स । विज्जु व्व घणब्भट्ठा तारा इव णिवडिया सहसा ॥

णिवडमाणी य आसासिया पवणेण । णिवडिया य तम्मि पएसे महंताए जालीए अणेय-गुविल-गुम्म-कोमल-किसलयाए । ण य तीए विवत्ती जाया । तओ णिवडिया लोलमाणी जालिय-मज्झुद्देसे ।

§ २१३) एत्थंतरे य तहा-विह-धम्म-कम्म-भवियव्वयाए एयम्मि चेय पएसे समागया गब्भ-भर-वियणा-विब्भलंगी वण-मय-सिलिंबी । सा य तं पएसं पाविऊण पसूया । पसव-वियणा-मुच्छा-विरमे य तीए णिरूवियं, दिट्ठं च तं मय-सिलिंबयं बालिया य । चिंतियं च तीए इमं मइ जुवलयं जायं ति । मुद्ध-सहावत्तणेण ण लक्खियं । दिण्णं थणं एक्कं बालियाए दुइयं मयलीयस्स । तओ एएण पओएण सा जीवमाणी जीविया । सा य मई तम्मि चेय पएसे दियहे राईए अच्छिउं पयत्ता । जाव ईसि परिसक्किउं पयत्ता, तओ मिलिया मय-जूहस्स, किर मईए एसा जाय त्ति ण उव्विवयंति सारंगया । ण य तीय तत्थ कोइ माणुसो दिट्ठो । तओ तत्थेय मय-दुद्ध-पुट्ठा वड्ढिउं पयत्ता । तओ भो भो विज्जाहरा, तत्थ सा अरण्णम्मि भममाणी जोव्वणं पत्ता । तत्थ य अच्छमाणीए कुडंगाइं घराइं, णिद्धे पक्खिणो, बंधवे वाणर-लीवे, मित्तं तरुयरा, असणं वण-फलाइं, सलिलं णिज्झर-पाणियं, सयणं सिलायलाइं, विणोओ मयउल-पट्ठि-सिहरोलिहणं ति । अवि य,

गेहं जाण तरु-तलं फलाइ असणं सिलायलं सयणं । मित्तं च मय-कुलाइं अहो कयत्था अरण्णम्मि ॥

तओ सा मय-जूह-संगया माणुसे पेच्छिऊण मय-सिलिंबी इव उव्वुण्ण-लोयणा पलायइ । तेण भो, जं तुब्भेहिं पुच्छियं जहा का उण एसा वणम्मि परिब्भमइ, ता जा सा मह भइणी पुव्व-भवे आसि सा णरयाओ उव्वट्टिऊण एत्थ उववण्णा । ण य कयाइ माणुसो तीए दिट्ठो, तेण दट्ठूण तुब्भे सा पलाण त्ति । एत्थंतरम्मि भणियं विज्जाहरेहिं णरवइणा य 'अहो महावुत्तंतं, अहो कट्ठं अण्णाणं, अहो विसमं मिच्छत्तं, अहो भय-जणओ पमाओ, अहो दुरंता ईसा, अहो कुडिला कम्म-गई, अहो ण सुंदरो सिणेहो, अहो विसमा कज्ज-गई । सव्वहा अइकुडिलं देव्व-विलसियं । अवि य ।

अकयं पि कयं तं चिय कयं पि ण कयं अदिण्णमवि दिण्णं । महिलायणस्स चरियं देव्व तए सिक्खियं कइआ ॥

भणियं च तेहिं 'भगवं, किं सा भव्वा, किं वा अभव्व' त्ति । भगवया भणियं 'भव्वा' । तेहिं भणियं 'कइ वा सम्मत्तं पावेहिइ' । भगवया भणियं 'इमम्मि चेय जम्मम्मि सम्मत्तं पावेहिइ' । तेहिं भणियं 'को से धम्मायरिओ होहिइ' । भगवया भणियं मं उद्दिसिऊण 'जो एस राय-कीरो एसो इमीए धम्मायरिओ' त्ति । तेहिं भणियं 'कइ एसो तं वणं पावेहिइ' । भगवया भणियं 'इमा चेय राय-धूया पेसिहिइ' । इमं च वयणं णिसामिऊण पियामहस्स राय-धूयाए कोमल-करयलंगुली-संवलंत-णह-मऊहाए भणियं । 'भगवं, समाइससु जइ किंचि कज्जं इमेणं कीरेणं, किं पेसेमि ?'

1 > P पउमनयरे, P om. णाम णयरं । तत्थ, P सिरीकंताए. 2 > P महादेवीए for णाम महिला तीय उयरे, J om. य after तम्मि, P om. च. 3 > P पुव्वमहं. 4 > J उत्तरं for दक्खिणं. 5 > J om. किं ताव. 6 > J किं पक्खिवामि P किं वाखिवेमि [°वमि], P वइरं for खइरं, P ता for वा. 7 > P मे for मए, J om. ति. 8 > P एक्किय, J चेअ, J चेअ, P आयससोवायरहिया. 9 > J मरीहिहापक्खीहिं, P पक्खिहि P विलुंपेइहिइ, J वा for व, P गयणे कमेण. 11 > P om. अह, P adds किं before चंदिमा, P मयंकस्स, 12 > J om. य before आसासिया, P om. य, P पएसे, J गुहिल. 13 > P से for तीए, J om. लोलमाणी, P आलिमज्झदेसे । एत्थंतरे य. 14 > P om. कम्म, J भविअव्वताए, P विम्हलंगी. 15 > P पयवियण°, J तीय. 16 > P सिलिंबिबालिया, P जुवलं. 17 > P मयलीवस्स, P मती for मई, J दिअहे दिअहे राईएण अच्छिउं. 18 > P परिब्भमिओ सक्किया, P om. पयत्ता, तओ मिलिया etc. to वड्ढिउं पयत्ता ।. 19 > J om. तओ before भो भो. 20 > P वानरलीवा. 21 > J वणहलाइं P वणप्फलाइं, J सिरोहिहणंति. 22 > J तरुअरे J मयउलाइं, J कयत्थो. 23 > J व for इव, P उवुण्ण, P पलाइ, P om. भो. 24 > J काऊण, P परिभमइ, P उवट्टिऊण, J एत्थोववण्णा. 25 > P om. य, J तीय, P तुज्झे सा पुलाय त्ति. 26 > P om. महा, P वुत्तंतो, J भयावणओ. 27 > P कम्मगती, P अइकुडिदलं देवविलसियं. 28 > P देव तइ. 29 > P अभवया for अभव्व त्ति, P om. भगवया, P तेण for तेहिं. 30 > P पाविहिइ, J पाविहिति । तेहिं, P सो for से. 31 > J अहं for मं, P om. एसो इमीए, P adds भहिं after तेहिं. 32 > P पावेइहिइ, P भणिओ, P राभूया, J पेसिहिति P पेसिइहिइ, P वयणं पियामहस्स संतियं सुणिऊण राय°. 33 > P करयंगुली, J मयूहाए, P किंपि कज्जं.

भगवया भणियं 'अविग्घं देवाणुपिए, मा पडिबंधं करेसु । कायव्वमिणं भवयाणं, किच्चमेयं भवियाणं, जुत्तमिणं भव्वाणं, जं कोइ कत्थइ भव्व-सत्तो अरहंताणं भगवंताणं सिव-सासय-सोक्ख-सुह-कारए मग्गम्मि पडिबोहिज्जइ' त्ति । इमम्मि य भणिए 'जहाणवेसि' त्ति भणमाणीए अइप्पिओ तह वि भत्तीए 'अलंघणीय-वयणो भगवं' ति सिढिलियाइं पंजरस्स सलाया-बंधाइं । भणियं च तीए । अवि य ।

वर-पोमराय-वयणा पूस-महारयण-णील-पक्ख-जुया । अब्भत्थिओ सि वर-सुय कइया वि हु दंसणं देज्जा ॥

अहं पि णीहरिओ पंजराओ । ठिओ भगवओ केवलिणो पुरओ । भणियं च मए ।

जय ससुरासुर-किंणर-मुणि-गण-गंधव्व-णमिय-पाय-जुया । जय सयल-विमल-केवल-जाणिय-तेलोक्क-सब्भाव ॥

त्ति भणमाणेण पयाहिणीकओ भगवं पणमिओ य । आउच्छिओ य णरवई । दिट्ठा य रायधूया । वंदिऊण य सव्वे उप्पइओ धोय-असि-सच्छहं गयणयलं, समागओ इमं उणंतरालं । एत्थ मग्गंतेण दिट्ठा मए एसा, भणिया य 'हला हला बालिए'। इमाए य इमं सोऊण ससंकिओव्वेव-भीय-लोयणाए पुलइयाइं दिसि-विभायाइं जाव दिट्ठो अहं । तओ एस वण-कीरो त्ति काऊण ण पलाइया । तओ अहं आसण्णो ठिओ । पुणो भणियं 'हला हला बालिए' त्ति । इमाए य किं किं पि अव्वत्तं भणियं । तओ मए गहियं एक्कं चंचूए सहयार-फलं । भणियं च मए 'गेण्ह एयं सहयार-फलं'। गहियं च तीए । पुणो मए भणियं 'मुंच इमं सहयार-फलं' । तओ खाइउं पयत्ता । पुणो मए भणिया 'मा खायसु इमं सहयार-फलं' । पुणो भणइ 'किं किं पि अव्वत्तक्खरं तुमं भणसि' । मए भणियं एयं सहयार-फलं भण्णइ । तं पुण बाला महिला भण्णसि । अहं राय-कीरो भण्णामि । एसो रुक्खो भण्णइ । एयं वणं भण्णइ । इमं गहियं भण्णइ । इमं मुक्कं भण्णइ । एए वाणर-लीव त्ति । एवं च मए बालो विव सव्व-सण्णाओ गाहिया । एवं च इमिणा पओगेण अक्खर-लिवीओ गाहिया । तओ धम्मत्थ-काम-सत्थाइं अहीयाइं । सव्वहा जाणियं हियाहियं । अवगयं भक्खाभक्खं । सिट्ठं कज्जाकज्जं ति । अण्णं च ।

णज्जंति जेण भावा दूरे सुहुमा य ववहिया जे य । ते मि मए सिक्खविया णिउणं वयणं जिणवराणं ॥

साहिओ य एस सयलो वुत्तंतो जहा तुमं पउमराइणो धूया, वेरिएण एत्थ आणीय' त्ति । भणिया य मए एसा जहा 'एहि, वच्चामो वसिमं, तत्थ भोए वा भुंजसु परलोयं वा करेसु' । इमीए भणियं 'वर-सुव, किमेत्थ भणियव्वं, सव्वहा ण पडिहायइ मज्झं वसिमं' ति । किं कारणं । जेण दुल्लक्खा लोयायारा, दुरुत्तरा विसया, चवला इंदिय-तुरंगा, णिंदिओ विसय-संगो, कुवासणा-वासिओ जीवो, दुस्सीलो लोओ, दारुणो कुसील-पसंगो, बहुए खला, विरला सज्जणा, पर-तत्ति-तग्गओ जणो, सव्वहा ण सुंदरो जण-संगो त्ति । अवि य ।

पर-तत्ति-तग्गय-मणो दुस्सीलो अलिय-जंपओ चवलो । जत्थ ण दीसइ लोओ वणं पि तं चेय रमणिज्जं ॥'

भणिऊण इहेव रण्णुद्देसे परिसडिय-फासुय-कुसुम-फल-कंद-पत्तासणा तव-संजमं कुणमाणी अच्छिउं पयत्ता । तओ जं तए पुच्छियं भो रायउत्त, जहा 'कत्थ तुमं एत्थ वणम्मि, किं वा कारणं' ति तं तुह सव्वं साहियं ति ।

§ २१४) एत्थंतरम्मि ईसि-पणय-सिरो पसारिय-करयलो उद्धाविओ रायतणओ । भणियं च णेण 'साहम्मियं वंदामि' त्ति । रायकीरेणावि भणियं 'वंदामि साहम्मियं' ति । तओ तीए भणियं 'भणियाए लक्खिओ चेय अम्हेहिं जहा तुमं सम्मत्त-सावओ त्ति । किं कारणं । जेण केवलि-जिणधम्म-साहु-संजम-सम्मत्त-णाणाइं किरिया-कलावेसु णामेण वि घेप्पमाणेसु सरय-समय-राई-सयल-ससंक-लंछण-जोसिणा-पूर-पसर-पवाह-पव्वलणा-वियसियं पिव चंदुज्जयं तुह मुहयंदं ति ।

एत्थंतरम्मि सूरो पसढिल-कर-वलय-दिट्ठ-वलि-पलिओ । अह जोव्वण-गलिओ इव परिणमिउं णवर आढत्तो ॥

इमम्मि य वेले वट्टमाणे भणियं एणियाए 'रायउत्त, अइक्कंतो मज्झण्ह-समओ, ता उट्ठेसु, ण्हाइउं वच्चामो' त्ति

---

1) P देवाणुप्पिए, J भवआणं 'P भवियाणं, after कायव्वमिणं भवियाणं किच्च P adds a long passage कालंतरेण परिनिष्पन्नो etc to परपुरिसो को वि पासं from the earlier context p. 125, ll. 10–18. 2) P को वि कत्थ वि भव्व. 3) J जहाणवेहि (?) त्ति, P om. तह, P om. भत्तीए, J भत्तीए भगवं अलंघणीओ त्ति सिढिलि°, J पंजरसणाया. 4) J om. अवि य. 5) J महारायणील, J य वि for वि हु, 6) J अह वि णीहरिओ, P ट्ठिओ. 7) P सभाव. 8) P काओ for कओ, P om. य after आउच्छिओ, दिट्ठा and वंदिऊण. 9) J उप्पइओ य धोआसिसच्छमं. 10) P om. य before इमं, P ससंकिओव्विग्गलोयणाए, P दिसिवहाइं. 11) P adds आसन्नो ठिओ before हला, बालिय, P om. य before किं. 12) J चूअ for चंचूए, P om. भणियं च मए गेण्ह एयं सहयारफलं, J adds य before मए. 14) P भणिया for भणइ, P अव्वत्तक्खरं, P adds किं before तुमं, P एमं for एयं. 16) J om. च, J पओएण, P लिविओ. 17) J अहिआइं, P सिज्जं for सिट्ठं. 18) P सुहुमा य बायरा जे य । तं पि मए सिक्खकामसत्थाइं अहीयाइं सव्वहा जाणियं हियाहियं वियानिउणं वयणं जिणवराणं । साहिओ. 19) P om. य, P ए for एस, P दुत्तंतो for वुत्तंतो, J जह, P तुहं for तुमं, J वत्थु for एत्थ, P आणिय. 20) J इमीय, P वरसुय. 21) P पडिहाइ मह, P लोयायारो, J दुत्तरा, P चंचला for चवला, P तुरंगमा. 22) J adds संगो before जीवो, J दुसीलो. 24) P वरं for वणं, P चेव. 25) P इहेवारन्नदेसे, P repeats फासुय, J पयत्त त्ति. 26) J repeats भो, J adds कारणं जेण after किं वा, P साहिय. 27) P उद्धाविओ, P साहम्मिय. 28) J तीय, P एणियाए for भणियाए. 29) J om. जेण, J केवल-, P समत्त. 30) P सयलससिलंछणजोसिणा, P om. पवाह, P पवालणा, P तुहयंदं ति. 31) P वलियलिओ.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

समुट्ठिओ य रायतणओ। उवगया य तस्सासम-पएसस्स दक्खिणं दिसा-भायं। थोयंतरेण दिट्ठं एक्कम्मि ऊसिय-सिय-विंझ-गिरि-सिहर-कुहरंतरालम्मि विमल-जलुक्कलिया-लहरि-सीयल-जलोज्झरं। तत्थ य तीर-तरुयरस्स हेट्ठओ संठिओ। संठियाणि मियाइं वक्कलाइं। कुसुम-पुडयाइं गहियाइं। फलिहामलिणीय पडियाइं सुकोमलाइं रुक्खाइं सिलायलम्मि। उल्लियाइं उत्तिमंगाइं। मज्जिया जहिच्छं। परिहियाइं कोमल-धोय-धवल-वक्कल-दुऊलाइं। गहियं च पउमिणी-पुडए जलं। तं च घेत्तूण चलिया उत्तरं दिसाभोयं। तत्थ य एक्कम्मि गिरि-कंदराभोए दिट्ठा भगवओ पढम-तित्थ-पवत्तगस्स उसह-सामिस्स फलिह-रयणमई महापडिमा। तं च दट्ठूण णिब्भर-भत्ति-भरावणउत्तमंगेण 'णमो भगवओ पढम-तित्थयरस्स' त्ति भणमाणेण कओ कुमारेण पणामो। तओ ण्हाणिओ भगवं विमल-सलिलेण, आरोवियाइं जल-थलय-कुसुमाइं। तओ कय-पूया महाविहिणा थोऊण पयत्ता। अवि य।

जय पढम-पया-पत्थिव जय सयल-कला-कलाव-सत्थाह। जय पढम-धम्म-देसिय जय सासय-सोक्ख-संपण्ण॥

त्ति भणमाणेण णमिए चलणे। तओ एणियाए वि भणियं।

'लंछण-लंछिय-वच्छयलाए पीण-समुण्णय-भुय-जुयलाए। मत्त-महागय-गइ-सरिसाए तुज्झ णमामि पए जिणयंद॥'

त्ति भणंतीए पणमिओ भगवं। वंदिओ य रायतणओ। सुएण वि भणियं।

'तिरिया वि जं सउण्णयों तुह वयणं पाविऊण लोयम्मि। पावंति ते वि सग्गयं तेण तुमं पणमिमो पयत्तेणं॥'

ति इमाए य गीइयाए थुणिऊण णिवडिओ चलणेसु कीरो। पुणो वंदिओ कुमारो एणियाए। तओ आगया तं पएसं अस्थासमं। तत्थ य पडियग्गयाइं मय-सिलिंबयाइं, संवग्गियाइं वाणर-लीवाइं, ओजियाइं असेस-सुय-सारिया-सउण-सावय-संघाइं। पणमियाइं च कुमारस्स सुइ-सीयल-साउ-सुरहि-पिक्क-पीवर-वण-फलाइं। पच्छा जिमियं एणियाए कीरेण य।

§ २१५) तओ आयत्त-सुहे-सत्थेंदिय-गामाण य विविह-सत्थ-कला-कहा-देसि-भासा-णाण-दंसण-चरित्त-तित्थादिसय-वेरग्ग-कहासु अच्छंताणं समागयं एक्कं पत्त-सवरि-सवर-जुवलयं। तं च केरिसं। अवि य।

कोमल-दीहर-वल्ली-बद्धुद्ध-जडा-कलाव-सोहिल्लं। णाणा-विह-वण-तरुवर-कुसुम-सयाबद्ध-धम्मेल्लं॥
गिरि-कुहर-वियड-सामल-धाउ-रसोयलिय-सामल-च्छायं। सिय-पीय-रत्तवत्तय-चक्खिर-चक्खिक्क-पइरिक्कं॥
अइथोर-थणत्थल-घोलमाण-गुंजावली-पसाहणयं। सिय-सिहि-पिंछ-विणिम्मिय-चूडालंकार-राइल्लं॥
मयगल-गंडयल-गलंत-दाण-घण-वट्ट-विरइयालेक्खं। अवरोप्पर-सीविय-पत्त-वक्कलुक्केर-परिहणयं॥ त्ति। अवि य।
कोलउल-कालयक्कं दाहिण-हत्थम्मि दीहरं कंडं। वामे कयंत-भुय-दंड-सच्छहं धणुयरं धरियं॥

तस्स य सवर-जुवाणस्स पासम्मि केरिसा वर-जुवाणिया। अवि य।

बहु-मुत्ताहल-रुइरा चंदण-गय-दंत-वावडा सुयणू। सिय-चारु-चमर-सोहा सवरी णयरी अयोज्झ व्व॥

उवसप्पिऊण य तेहिं कओ पणामो रायउत्तस्स एणियाए कीरस्स य। णिसण्णा य एक्कम्मि दूर-सिलायलम्मि। पुच्छिया य एणियाए सरीर-कुसल-वट्टमाणी। साहिया य तेहिं पणउत्तमंगेहिं, ण उण वायाए। णिक्खित्तं च तं कालवट्ठं धरणीए। सुहासणत्था जाया। कुमारेण य असंभावणीय-रूव-सोहा-विरुद्ध-सवर-वेस-कोऊहलुप्फुल्ल-लोयण-जुयलेण य णियच्छियं पायग्गाओ जाव सिहग्गं ति। चिंतियं च हियएण। अवि य,

एक्कस्स देहि विहवं रूवं अण्णस्स भोइणो अण्णे। इय देव्व साहसु फुडं कोढिल्लं कत्थ ते वडियं॥

ता धिरत्थु भावस्स। ण कज्जं लक्खणेहिं। विहडियाइं लक्खणाइं, अप्पमाणाइं सत्थाइं, असारीकया गुणा, अकारणं वेसायारो, सव्वहा सव्वं विवरीयं। अण्णहा कत्थ इमं रूवं लक्खण-वंजण-भूसियं, कत्थ वा इमं इयर-पुरिस-विरुद्ध

1 > J om. य before रायतणओ, P पएसस्स पच्छिमदक्खिणदिसा, J एक्कं for एक्कम्मि, P ऊससियं विंझ°, J विंझइरि. 2 > J -जलुतरुक्कलियासलहलं सीअल-, J हेट्ठाओ, P संठिया निम्मियाइं. 3 > P om. कुसुमपुडयाइं, J फालिआमलिणीयलपडियाइं. 4 > J परिहिआ कोमल, J om. पउमिणी. 5 > J वलिया for चलिया, P om. पढम, J पवत्तयस्स उसभ-. 6 > J फडिअ for फलिह, P om. रयण, J भत्ति*भरावणयुत्तमंगेण, P °वणयुत्तमंगेण. 7 > J inter. पणामो and कुमारेण, P थलकुसुमाइं. 8 > J विहाणाइं for महाविहिणा, P थुणिऊण for थोऊण. 9 > J जय for सयल, P om. कला, P सत्थाह।, P देसय. 10 > P om. तओ, J एणिआय P पणियाए. 11 > P -लच्छिय, P भुयलाए, J जिणयंदाए त्ति. 12 > P सूएण. 13 > P सवण्णया, P पयत्तएणं. 14 > J om. ति, P एमाए, J एणिआय P पणियाए, P आगयाइ तं. 15 > J पडिअग्गिआइं, J सेस for असेस. 16 > P सीयलाओ साओ, J वणहलाइं P वणप्फलाइं. 17 > P देसिहासा, P तित्थाइसयवरग्ग 18 > P पत्तं, J om. सवरि. 19 > J दीहरपल्लीवड्ढुद्ध P वल्लीवद्धुद्ध, P तरुयर, J समाबद्ध. 20 > P पीव for पीय, J रत्तवण्णर-, P चच्चिय, J सचिक्क for चक्खिक्क. 21 > P राहिल्लं. 22 > J om. धण, J वट्ठ for वट्ट, 23 > P वाम. 24 > P वरजुयाणिय. 25 > P सुयणु, J अयोज्झ. 26 > P य तहिं, P om. य. 27 > J पणयुत्तमंगेहिं, J om. तं. 28 > J लोअणजुअलेण. 29 > P सिरग्गं. 30 > P देह, P रूयं, J देव, P कोहेल्लं, J ए for ते, J पढिमं P पडियं. 31 > P रूवस्स for भावस्स, J कलुमेहिं for लक्खणेहिं, J उप्पमाणाइं. 32 > J रूवंजणभूसिअं.

पत्त सवरत्तणं ति चिंतयंतेण भणियं 'एणिए, के उण इमे'त्ति । एणियाए भणियं 'कुमार, एए पत्त-सवरया, एत्थ वणे णिवसंति, अणुदिणं च पेच्छामि इमे एत्थ पएसे' । तओ कुमारेण भणियं 'एणिए, ण होंति इमे पत्त-सवरय' त्ति । तीए भणियं 'कुमार, कहं भणसि' । 'भणामि समुद्द-सत्थ-लक्खणेणं' ति । तीए भणियं 'किं सामुद्दं कुमारस्स परिणयं' । तेण भणियं 'किंचि जाणामि' । तीए भणियं 'अच्छंतु ताव इमे पत्त-सवरया, भणसु ता उवरोहेणं पुरिस-लक्खणं' ति । कुमारेण भणियं 'किं वित्थरओ कहेमि, किं संखेवओ' त्ति । तीए भणियं 'केत्तियं वित्थरओ संखेवओ वा' । कुमारेण भणियं 'वित्थरओ लक्खप्पमाणं, संखेवओ परिहायमाणं जाव सहस्सं सयं सिलोगं वा' । तीए भणियं 'संखेवओ साहसु' । तेण भणियं ।

'गतेर्धन्यतरो वर्णः वर्णाद्धन्यतरः स्वरः । स्वराद्धन्यतरं सत्त्वं सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥

एस संखेवो' त्ति ।

§ २१६) भणियं च तीए ईसि विहसिऊण 'कुमार, एस अइसंखेवो, सक्कयं च एयं, ता मणयं वित्थरेण भणसु पायएणं' ति । तेण भणियं 'जइ एवं ता णिसुणसु । अवि य ।

पुव्व-कय-कम्म-रइयं सुहं च दुक्खं च जायए देहे । तत्थ वि य लक्खणाइं तेणेमाइं णिसामेह ॥
अंगाइँ उवंगाइं अंगोवंगाइँ तिण्णि देहम्मि । ताणं सुहमसुहं वा लक्खणमिणमो णिसामेहि ॥
लक्खिज्जइ जेण सुहं दुक्खं च णराण दिट्ठि-मेत्ताणं । तं लक्खणं ति भणियं सव्वेसु वि होइ जीवेसु ॥
रत्तं सिणिद्ध-मउयं पाय-तलं जस्स होइ पुरिसस्स । ण य सेयणं ण वंकं सो राया होइ पुहईए ॥
ससि-सूर-वज्ज-चक्कंकुसे य संखं च होज्ज छत्तं वा । अह बुड्ढ-सिणिद्धाओ रेहाओ होंति णरवइणो ॥
भिण्णा संपुण्णा वा संखाइं देंति पच्छिमा भोगा । अह खर-वराह-जंबुय-लक्खंका दुक्खिया होंति ॥
वट्टे पायंगुट्ठे अणुकूला होइ भारिया तस्स । अंगुलि-पमाण-मेत्ते अंगुट्ठे भारिया दुइया ॥
जइ मज्झिमाएँ सरिसो कुल-वुड्ढी अह अणामिया-सरिसो । सो होइ जमल-जणओ पिउणो मरणं कणिट्ठीए ॥
पिहुलंगुट्ठे पहिओ विणयग्गेणं च पावए विरहं । भग्गेण णिच्च-दुहिओ जह भणियं लक्खणण्णूहिं ॥
दीहा पएसिणी जस्स होइ महिलाहि लंघिओ पुरिसो । स च्चिय मडहा कलहप्पियस्स पिय-पुत्त-विरहं वा ॥
अह मज्झिमा य दीहा धण-महिलाणं विणासणं कुणइ । तइया दीहा विज्जाहिवाण मडहा पुणो कण्णा ॥
जइ दीहा तुंगा वि य पएसिणी पेच्छसे कणिट्ठा वा । तो जणणी जणयं वा मारेइ ण एत्थ संदेहो ॥
उत्तुंग-णहा धण्णा पिहुलेहिँ णरा सुहाइँ पावेंति । रुक्खेहिँ दुक्खिया वि य आयरिस-समेहिँ रायाणो ॥
तंबेहिँ दिव्व-भोगी सुहिओ पउमेहिँ णरवई-पुत्तो । समणो सिएहिँ पाएहिँ फुलिएहिँ च दुस्सीलो ॥
मज्झे संखित्त-पायाणं इत्थि-कज्जो महं भवे । णिम्मंसा उक्कडा जे य पाया ते धण-वज्जिया ॥
जे दीह-थूर-जंघा वराह-जंघा य काय-जंघा य । ते दीह-दुक्ख-भागी अद्धाणं णिच्च पडिवण्णा ॥
जे हंस-भास-वारण-चक्काय-मोर-मयवइ-वसह-समा । ते होंति भोग-भागी गईहिँ सेसाहिँ दुक्खत्ता ॥
जाणू जस्स भवे गूढो गुप्फो वा सुसमाहिओ । सुहिओ सो भवे णिच्चं घड-जाणू ण सुंदरो ॥
जइ दक्खिणेण चलियं लिंगं तो होइ पुत्तओ पढमं । अह वामं तो धूया भोगा पुण उज्जए होंति ॥
दाहिण-पलंब-वसणे पुत्तो धूया य होइ वामम्मि । होंति समेसु य भोगा दीहर-वट्टेसु तह पुत्तो ॥
जइ होंति तिण्णि वसणा सुहुमा वा वट्टिया तओ राया । उक्खुडुए थोवाऊ होइ पलंबम्मि दीहाऊ ॥
ऱ्हस्सो पउम-सवण्णो मणि-मज्झो उण्णओ सुही लिंगो । वंक-विवण्ण-सुदीहे णिण्णयले होइ दोहग्गं ।

1) [पत्तसवरत्तणं], P एते for एए. 2) J पत्तसबरे त्ति P पत्तस्सवरय त्ति, J तीअ for तीए. 3) P adds सा before समुद्द, P om. सत्थ, P लक्खणेहि त्ति, J तीअ, J परिइअं for परिणयं. 4) J तीअ, P ता for ताव, J लक्खणं च त्ति. 5) J विन्थरत्तो, J संखेवत्तो, J तीअ भणिअं, J वित्थरं for वित्थरओ. 6) P जाय for जाव, J तीअ. 8) P गतेर्द्धन्य°. JP वर्णाः [वर्णो], JP वर्णाद्धन्यतरः JP सत्वं, P सत्वे प्रतिष्ठितमिति. 9) J संखेवओ. 10) P adds सि before ईसि, J inter. एअं & च, J adds एअं before ता. 12) J असुहं च for दुक्खं च, J एणि इमाइं for तेणेमाइं, J णिसामेहि. 13) J उवंगाइ य अंगो°. 15) P रत्तसिणिद्धं, P होंति for होइ. 16) P होइ for होज्ज, P वुड्ढि. 17) P संखाइं, P अहि for अह. 18) P अंगुलपमाण. 19) J अहमणामिआ सरिसा । ता होइ जमडजणओ. 20) P पिहुलंगुट्ठो. 21) P दीहाए for दीहा, P महिलाइं लंघिउं, P विरहो व्व. 22) J om. य. 24) J आयरिय° P आयंस°. 25) P दीह for दिव्व, J भागी for भोगी, J पाएहिं for पउमेहिं, J रत्ता for पुत्तो, P सिएहिं पीएहिं वम्हहा दुस्सीलो फुलि°, J om. च, P om. दुस्सीलो. 26) J मज्झे, P कज्जे वद्दंतवे. 27) J थूल for थूर. 28) P हंसचायडचक्कामोरायमयवइसमाहिं, J मयवसह, P गतीहिं. 29) P हु before सो. 30) P लिंगं विणयं for चलियं लिंगं, J भोगा उण. 31) P विसणो for वसणे, P होंति for होइ, J अपवसु (corrected as तह पुत्तो) P पूवसु. 32) P विसणा for वसणा, P भा for वा, P वड्ढिया, J उक्खुडए. 33) P उज्झओ for उण्णओ, P मज्झे, J सुदीहो.

जो कुणइ मुत्त-छड्डी बहु-वीयं मोत्तियप्पभं होइ । णीलुप्पल-दहि-मंडे हरियालाभे य रायाणो ॥
मंसोवइया पिहुला होइ कडी पुत्त-धण्ण-लाभाए । संकड-व्हस्साएँ पुणो होइ दरिद्दो विएसो य ॥
वसह-मऊरो सिंहो वग्घो मच्छो य जइ समा उयरे । तो भोगी वट्टम्मि य सूरो मंडुक्क-कुच्छी य ॥
गंभीर-दक्खिणावत्ता णाभी भोगाण साहिया होइ । तुंगा वामावत्ता कुलक्खयं कुणइ सा णाही ॥
पिहुलं तुंगं तह उण्णयं च सुसिणिद्ध-रोम-मउयं च । वच्छयलं सुहियाणं विवरीयं होइ दुहियाणं ॥
सीह-सम-पट्ठि-भाया गय-दीहर-पट्ठिणो य ते भोगी । कुम्म-सम-पुट्ठि-भाया बहु-पुत्ता अत्थ-संपण्णा ॥
उबद्ध-बाहुणो बद्धा दासा उण होंति मडह-बाहुणो पुरिसा । दीहर-बाहू राया पलंब-बाहू भवे रोगी ॥
मेस-विस-दीह-खंधो णिम्मंसो भार-वाहओ पुरिसो । सीह-सम-मडह-मंसल-वग्घ-क्खंधे घणं होइ ॥
दीह-किस-कंठ-भाया पेसा ते कंबु-कंठया धणिणो । दीहर-णीमंस-णिहो बहु-पुत्तो दुक्खिओ पुरिसो ॥
पीणोट्ठो सुभगो सो मडहोट्ठो दुक्खिओ चिरं पुरिसो । भोगी लंबोट्ठो वि य विसमोट्ठो होइ भीसणओ ॥
सुद्धा समा य सिहरी घण-णिद्धा राइणो भवे दंता । विवरीया पेस्साणं जह भणियं लक्खणण्णूहिं ॥
बत्तीसं राईणं एकत्तीसं च होइ भोगीणं । मज्झ-सुहाण य तीसं एत्तो ऊणा अउण्णाणं ॥
अइ-बहु-थोवा सामा मूसय-दंता य ते णरा पावा । बीभच्छ-करालेहि य विसमेहि होंति पावयरा ॥
काला जीहा दुहिणो चित्तलिया होइ पाव-णिरयाणं । सुहुमा पउम-दलाभा पंडिय-पुरिसाण णायव्वा ॥
गय-सीह-पउम-पीआ तालू य हवंति सूर-पुरिसाण । कालो णासेइ कुलं णीलो उण दुक्खओ होइ ।
जे कोंच-हंस-सारस-पूसय-सद्दाणुलाइणो सुहिआ । खर-काय-भिण्ण-भायल-रुक्ख-सरा होंति धण-हीणा ॥
सुहओ विसुद्ध-णासो अगम्म-गामी भवे उ छिण्णम्मि । [·························· ॥]
दीहाए होइ सुही चोरो तह कुंचियाएँ णासाए । चिविडाएँ होइ पिसुणो सुयणो दीहाएँ रायाणो ॥
सूईं-समाण-णासो पावो तह चेव वंक-णासो य । उत्तुंग-थोर-णासा हल-गोउल-जीविणो होंति ॥
मयवइ-वग्घ-सरिच्छा णीलुप्पल-पत्त-सरिसया दिट्ठी । सो होइ राय-लच्छी जह-भणियं लक्खणण्णूहिं ॥
महु-पिंगलेसु अत्थो मज्जार-समेहिँ पावओ पुरिसो । मंडल-णिभा चोरो रोद्दा उण केयरा होंति ॥
गय-णयणो सेणवई इंदीवर-सरिसएहिँ पंडियया । गंभीरे चिर-जीवी अप्पाऊ उत्थलेहिँ भवे ॥
अइकसण-तारयाणं अच्छीण भणंति कह वि उप्पाडं । थूलच्छो होइ मंती सामच्छो दुब्भगो होइ ॥
दीणच्छो धण-रहिओ विउलच्छो होइ भोग-संपण्णो । णिस्तो खंडप्पच्छो अइरत्तो पिंगलो चोरो ॥
कोंगच्छो वह-भागी रुक्खच्छो दुक्खिओ णरो होइ । अइविसम-कुक्कडच्छो होइ दुराराहओ पुरिसो ॥
कोसिय-णयणालोए पुज्जो महुपिंगलेसु सुहयं ति । [·························· ॥]
काणाओ वरं अंधो वरं काणो ण केयरो । वरमंधो वि काणो वि केयरो वि ण कायरो ॥
एएहिँ समं सुंदरि पीईं मा कुणसु तेहिँ कलहं वा । पुरिसाहमाण पढमा एए दूरेण वज्जेसु ॥
सुत्त-विउद्ध व्व जहा अवद्ध-लक्खा अकारणे भमइ । रुक्खा गिलाण-रूवा दिट्ठी पावाण णायव्वा ॥
उज्जुयमवलोएंतो तिरियं पुण कोवणो भवे पुरिसो । उद्धं च पुण्ण-भागी अहो य दोसालओ होइ ॥
हीण-भुमयाहिँ पुरिसा महिला-कज्जे य बंधया होंति । दीहाहिँ य पिहुलाहिँ य सुहया ते माणिणो पुरिसा ॥
मडहेहिँ य थूलेहिँ य महप्पमाणेहिँ होंति धण-भागी । मूसय-कण्णा मेहाविणो य तह रोमसेहिँ चिरजीवी ॥
विउलम्मि भालवट्टे भोगी चंदेण सरिसए राया । अप्पाऊ संखित्ते हुंडे पुण दुक्खिया होंति ॥

1 > J मोत्तियं पभं P मोत्तियप्पभो. 2 > J मंसोवचिया. 3 > J मंडूक-, P कुक्खी य. 5 > J adds य befor रोमं, J वच्छत्थलं, J विरायइ for सुहियाणं. 6 > P पट्ठि for पुट्ठि. 7 > J भोगी for रोगी. 8 > J adds होइ after णिम्मंसो, P सामल for मंसल, J -क्खद्धे P खंडे, P होंति for होइ. 9 > J हाया for भाया, P धणिणा, J णिद्ध P णिवू, J दक्खिओ for दुक्खिओ. 10 > J बीभणओ for भीसणओ. 11 > J विवरीता, P सेसाणं for पेस्साणं. 12 > J होंति for होइ. 13 > J थोआ, J मूसादंता, P बीभत्स-, J विसमेहि य होंति. 14 > P जीवा सुहिणो, P पाव for पाण. 15 > J पीता, P तालुया हवंति, P दुक्खिओ. 16 > J जो for जे, P सारसमूसय, J सद्दाणुणाइणो, P सुहिओ, P भायणरुक्खयरा. 17 > P अनंमगामी, J तु for उ. 18 > J om. होइ, J कुंचिताए, P चिविडीए. 19 > P सुई for सुही, J चेअ, J वकणासो, P थोरनासो. 20 > J सरिसआय जा दिट्ठी. 21 > P पिंगुलेसु, P मंडलजुण्हा चोरो, P रोद्दो, P केयरो होइ ॥. 22 > P सेणावई, J गंभीरेहिं चिर°. 23 > J अइकसिण, P मई for मंती, J सावच्छो, P दुहवो. 24 > P संपुण्णो, J अतिरत्तो. 25 > P कागच्छो for कोंगच्छो. 26 > P -नयणोलाए, J पुज्जामह, P सुहियं. 27 > P वरअंधो काणो य वरं न. 28 > J एतेहिं, J पीतिं. 29 > J सुत्ता विउव्व P सुत्तविउद्धो व्व. 30 > P उज्जुयमवलायंतो, J adds उज्जु before तिरियं, J om. पुण, J om. भवे, P उद्धं, J भाई अधो य, P त for य. 31 > J कज्जेहिं बंधया, P य कइया, P पुरिसो ॥. 33 > J भालवट्ठो, P सरिसओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीह-वच्छा य णीया पिहुले उण होंति के वि कंतारा । चक्कागारे णीया वयणे पुण लक्खणण्णूहिं ॥
वाम-दिसाए वामा आवत्तो जस्स मत्थए दिट्ठो । कुल-धण-धणेया-रहिओ हिंडउ वीसत्थओ भिक्खं ॥
दाहिण-दिसाए सव्वो आवत्तो होइ कह वि पुरिसस्स । तस्स धण-धण्ण-सोक्खा लच्छीए भायणं होइ ॥
वामावत्तो जइ दाहिणम्मि अह दाहिणो व्व वामम्मि । तो होइ सोक्ख-भागी पच्छा पुरिसो ण संदेहो ॥
जइ होंति दोण्णि सव्वा आवत्ता तो भवे पुहइ-भत्ता । सव्वावत्तो सुहओ वामो उण दूहवो होइ ॥
गउया णिद्धा सुहया अणलाभा कलह-कारया होंति । केसा रुक्खा मलिणा छुडिया दारिद्दवंताणं ॥
उर-मुह-भाला पिहुला गंभीरा सद्द-सत्त-णाभीया । णह-दंत-तया-केसा सुहुमा पुहईवई होंति ॥
जइ णास-वच्छ-कंठो पिट्ठ-मुहं च अइउण्णयं होइ । अह पाणि-पाय-लोयण-जिब्भा रत्ता सुही राया ॥
कंठं पिट्ठी लिंगं जंघे य हवंति ह्रस्सया एए । पिहुला हत्था पाया दीहाऊ सुत्थिओ होइ ॥
चक्खु-सिणेहे सुहओ दंत-सिणेहे य भोयणं मिट्ठं । तय-णेहेण उ सोक्खं णह-णेहे होइ परम-धणं ॥
केस-णेहेण भल्लाई भोए भुंजंति सव्वहा । मंसलं णेहवंतं च सव्वं तं सुह-भायणं ॥
होइ गईए गोरवं दिट्ठीए णरीसरो सरेण जसो । गोरो सोमो णिद्धो होइ पभू जण-समूहस्स ॥
होइ सिरी रत्तच्छे अत्थो उण होइ कणय-पिंगम्मि । होइ सुहं मासलए पलंब-बाहुम्मि इस्सरियं ॥
अण्णाणी ज सुणासो ण वहइ भारं सुसोहिय-क्खंधो । सत्थेण णत्थि सुक्खं ण य मग्गइ सुस्सरो किंचि ॥
अइदीहा अइह्रस्सा अइथूला अइकिसा य जे पुरिसा । अइगोरा अइकसिणा सव्वे ते दुक्खिया होंति ॥
जे कोसिय-रत्तच्छा कायच्छा होंति दद्दुरच्छा य । अइकायर-कालच्छा सव्वे ते पाव-संजुत्ता ॥
तय-रोम-णहा दंता केसा ओट्ठा तहा य णयणेसु । जइ णत्थि तेसु णेहो भमिया भिक्खा वि णो तस्स ॥
पावेइ उर-विसालो लच्छिं तह पुत्तए कडी-पिहुलो । पिहुल-सिरो धण-धण्णं पिहु-पाओ पावए दुक्खं ॥
जइ होंति भालवट्टे लेहाओ पंच दीह-पिहुलाओ । तो सुत्थिओ धणड्ढो वरिस-सयं जीवए णिययं ॥
चत्तारि होंति जस्स य सो णवइं जीवए असी वा वि । अह तिण्णि सट्ठि वरिसा अह दोण्णि य होंति चालीसा ॥
अह कह वि होइ एक्का रेहा भालम्मि कस्स वि णरस्स । वरिसाइँ तीस जीवइ भोगी धण-धण्ण-संपण्णो ॥
होइ असीइ अधम्मो णवई पुण अंगुलाइँ मज्झिमओ । अट्ठ-सयं जो पुरिसो सो राया णिच्छिओ होइ ॥
एसो संखेवेणं कहिओ तुह पुरिस-लक्खण-विसेसो । जइ वित्थरेण इच्छसि लक्खेहि वि णत्थि णिप्फत्ती ॥

§ २१७) तीए भणियं 'कुमार, सुंदरं इमं, ता किं तए जाणियं इमस्स पुरिसस्स' । तेण भणियं 'एणिए, जहा इमस्स सुहाइं लक्खणाइं दीसंति, तेण जाणिमो को वि एस महासत्तो पत्त-सबर-वेस-पच्छाइय-णिय-रूवो एत्थ विंझ-वर्णतराले किं पि कज्जंतरं अणुपालयंतो अच्छिउं पयत्तो । भणियं च ।

ता णेंति किं पि कालं भमरा अवि कुडय-वच्छ-कुसुमेसु । कुसुमेंति जाव चूया मयरंदुद्दाम-णीसंदा ॥

इमिणा ण होइयव्वं पत्त-सबरेणं' ति । इमं च सुणिऊण सबर-पुरिसेण चिंतियं । 'अहो, जाणइ पुरिस-लक्खणं । ता ण जुत्तं अम्ह इह अच्छिउं, वच्चामो अम्हे जाव ण एस जाणइ जहा एस अमुगो' त्ति चिंतयंतो समुट्ठिओ पत्त-सबरो सघरीय त्ति । तओ तेसु य गएसु भणियं एणियाए 'कुमार, अहो विण्णाणं ते, अहो जाणियं ते, जं एस तए जाणिओ' त्ति । तेण भणियं 'जाणिओ सामण्णेणं, ण उण विसेसेण । ता के उण इमे त्ति फुडं मह साहसु' त्ति । भणियं च एणियाए 'कुमार, एए विज्जाहरा' । तेण भणियं 'कीस इमो इमिणा रूवेण' । तीए भणियं 'इमाणं विज्जाहराणं जाणहि च्चिय तुमं । भगवओ उसभ-सामिस्स सेवा-णिमित्तं तुट्ठेण धरणिंदेणं णमि-विणमीणं विज्जाओ बहुप्पयाराओ दिण्णाओ ।

1) P वदणा, P होइंति, P वयणा पुण. 2) P वामो, P om. धण. 3) J inter. कह वि and होइ. 4) P दाहिणो वि वामं ति । ते होइ. 5) P होइ for होंति, J पुह for पुहइ, P दूरहवो. 6) P कारिया, P महिला for मलिणा, P फुडिया for छुडिया. 7) P मुहलाला, J णाभीय ।. 8) J adds कक्खा before कंठो, J पिट्ठं, J अतिउण्णयं । अहव णिपातलोयण, P रत्ता for लोयण. 9) J कंठं पट्ठी, J दीहाउ सुत्थितो. 10) J ण for य, P भोयणं दिट्ठं, J तु for उ. 11) J मल्लोदी, P सुंजइ for भुंजंति, J मासालं. 12) JP गतीए, J दिट्ठीय, P गोरवं ट्ठिए नरं सरो, P गोरो सामो, P पहू. 13) P सुहं सामलए, P ईसरियं. 14) P अन्नाणं सुणयंसो न हवइ तारं, J दुक्खं for सुक्खं. 15) J अदिदीहा अदिह्रस्सा अतिथूला अतिकिसा, J अतिगोरा अतिकसिणा, J दुक्खिता. 16) P या ।, J अतिकायर. 17) J ओट्ठा P उद्धा, J भमिता. 18) J उरविलासो, P कडिपिहुलो, J विहुवातो for पिहुपाओ. 19) J भालवट्ठे, P भालवलेहाओ, P ते for तो. 20) J तु for य, P सो नउयं, J णवतिं जीवाओ असीतिं वा, J om. अह दोण्णि य होंति चालीसा. 21) J inter. होइ and कह वि, P एक्को, J जीवति. 22) J होति असीति, J णवतिं, P निच्छओ. 23) J adds तुह after एसो, P लक्खेण. 24) J तीय, P ति । for ता, P किं तयए, P सुह for जहा इमस्स सुहाइं. 25) J णिअय. 26) J चिट्ठइ for अच्छिउं पयत्तो. 27) J आउलीए for कुडयवच्छ. 28) P om. इमिणा ण to सबरेणं ति ।, J च सोऊण सबरेण चिंतियं. 29) P अम्हाण इहाच्छिउं, P om. अम्हे, J अमुओ for अमुगो, P अब्भुट्ठिओ for समुट्ठिओ. 31) J केण उण, P om. मह. 32) J एते, J इमेण for इमो, J तीय, J इमिणा for इमाणं. 33) P उसहसामियस्स, P विज्जा बहु°.

ताणं च कप्पा साहणोवाया, काओ वि काल-मज्जागएहिं साहिज्जंति, काओ वि जलणे, अण्णा वंस-कुडंगे, अण्णा णयर-चच्चरेसु, अण्णा महाडईसुं, अण्णा गिरिवरेसु, अण्णा कावालिय-वेस-धारीहिं, अण्णा मातंग-वेस-धारीहिं, अण्णा रक्खस-रूवेणं, अवरा वाणर-वेसेणं, अण्णा पुलिंद-रूवेणं ति । ता कुमार, इमाणं सावरीओ विज्जाओ । तेण इमे इमिणा वेसेणं विज्जा साहिउं पयत्ता । ता एस विज्जाहरो सपत्तीओ । असिहारएण बंभ-चरिया-विहाणेण एत्थ विरइ' त्ति । भणियं च कुमारेण 'कहं पुण तुमं जाणासि जहा एस विज्जाहरो' त्ति । तीए भणियं 'जाणामि, णिसुयं मए कीरेण साहियं । एक्कम्मि दियहे अहं भगवओ उसभ-सामियस्स उवासणा-णिमित्तं उवास-पोसहिया ण गया फल-पत्त-कुसुमाणं वणंतरं । कीरो उण गओ । आगओ य दियहस्स वोलीणे मज्झण्ह-समए । तओ मए पुच्छिओ 'कीस तुमं अज्जं इमाए वेलाए आगओ सि' । तेण भणियं 'ओ वंचियासि तुमं जीए ण दिट्ठं तं लोयणाण अच्छेरय-भूयं अदिट्ठउव्वं' ति । तओ एस मए सकोऊहलाए पुच्छिओ 'वयस्स, दे साहसु किं तं अच्छरियं' । तओ इमिणा मह साहियं जहा 'अहं अज्ज गओ वणंतरं । तत्थ य सहसा णिसुओ मए महंतो कलयलो संख-तूर-भेरी-णिणाय-मिस्सिओ । तओ मए सहसुब्भंतेण दिण्णं कण्णं कयरीए उण दिसाए एस कलयलो त्ति । जाव णिसुयं जत्तो-हुत्तं भगवओ तेलोक्क-गुरुणो उसह-सामिस्स पडिमा । तओ अहं कोऊहला-ऊरमाण-माणसो उवगओ तं पएसं । ताव पेच्छामि दिव्वं णर-णारीयणं भगवओ पुरओ पणामं करेमाणं ।

§ २१८) तओ मए चिंतियं इमे ते देवा णीसंसयं ति । अहवा ण होंति देवा जेण ते दिट्ठा मए भगवओ केवलिणो केवल-महिमागया । ताणं च महियलम्मि ण लग्गंति चलणया ण य णिमेस्संति णयणाइं । एयाणं पुण महिवट्ठे संठिया चलणया, णिमिसेंति णयणाइं । तेण जाणामो ण एए देवा । माणुसा वि ण होंति, जेण अइकंत-रूवाइसया गयणंगण-चारिणो य इमे । ता ण होंति धरणीयरा । के उण इमे । अहवा जाणियं विज्जाहरा इमे त्ति । ता पेच्छामि किं पुण इमेहिं एत्थ पारद्धं ति चिंतयंतो णिसण्णो अहं चूय-पायवोयरम्मि । एत्थंतरम्मि णिसण्णा सव्वे जहारुहं विज्जाहर-णरवरा विज्जा-हरीओ य । तओ गहियं च एक्केण सव्व-लक्खणावयव-संपुण्णेण विज्जाहर-जुवाणएण पउम-पिहाणो रयण-विचित्तो कंचण-घडिओ दिव्व-विमल-सलिल-संपुण्णो मंगल-कलसो । तारिसो चेय दुईओ उक्खित्तो ताणं च मज्झे एक्काए गुरु-णियंब-बिंब-मंथर-गई-विलास-चलण-परिक्खलण-क्खलिय-मणि-णेउर-रणरणासद्द-मिलंत-ताल-वसंदोलमाण-बाहु-लइयाए विज्जाहरीए । घेत्तूण य ते जुवाणया दो वि अल्लीणा भगवओ उसभ-सामिय-पडिमाए समीवं । तओ 'जय जय'त्ति भणमाणेहिं समकालं च्चिय भगवओ उत्तिमंगे वियसिय-सरोरुह-मयरंद-बिंदु-संदोह-पूर-पसरंत-पवाह-पिंजरिज्जंत-धवल-जलोज्झरो पलोट्टिओ कणय-कलस-समूहेहिं । तओ समकालं च्चिय पहयाइं पडहाइं । ताडियाओ झल्लरीओ । पवाइयाइं संखाइं । पग्गीयाइं मंगलाइं । पढियाइं थुइ-वयणाइं । जवियाइं मंताइं । पणच्चिया विज्जाहर-कुमारया । तुट्ठाओ विज्जाहरीओ । उच्चं पढंति किंपुरिस त्ति । तओ के वि तत्थ विज्जाहरा णच्चंति, के वि अप्फोडेंति, के वि सीह-णायं पमुंचंति, के वि उक्कुट्ठिं कुणंति, के वि हलहलयं, के वि जयजयावेंति, के वि उप्पयंति, अण्णे णिवयंति, अवरे जुज्झंति । एवं च परमं तोसं समुव्वहिउमाढत्ता । तओ भगवं पि ण्हाणिओ तेहिं जुवाणएहिं । पुणो विलित्तो केण वि सयल-वणंतर-महमहंत-सुरहि-परिमलेणं वण्णगराय-जोगेणं । तओ आरोवियाणि य सिय-रत्त-कसिण-पीय-णील-सुगंध-परिमलायड्डियालि-माला-वलय-मुहलाइं जल-थलय-दिव्व-कुसुमाइं । उप्पाडियं च कालायरु-कुंदुरुक्क-मयणाहि-कप्पूर-पूर-डज्झमाण-परिमल-करंबिज्जमाण-धूम-धूसर-गयणयलाबद्ध-मेह-पडल-संकास-हरिस-उड्डुंड-तडुविय-सिहंडि-कुल-केयारवारद्ध-कलयलं धूव-भायणं ति । एवं च भगवंतं उसह-णाहं पूइऊण णिवेइयाइं

1 > P om. काओ वि कालमज्जागएहिं साहिज्जंति, P कोओ वि जलणो. 2 > P om. अण्णा मातंगवेसधारीहिं. 3 > P अन्ना (for अवरा) वा नरवेसेणं, P इमाओ for इमाणं, P om. इमे. 4 > J P पयत्तो, P असिहारणेण, P वियरन्ति कुमारेण भणियं यं कहं. 5 > J तीय for तीए, P om. जाणमि, P कीरसयासाओ for कीरेण साहियं. 6 > P adds मि after एक्कम्मि, P उसह- J -सामिस्स, J उवासओसहिया, P om. पत्त. 7 > P या for य, J वोलीए, J om. तओ मए पुच्छिओ, J तुमं मज्जं एमाए. 8 > P भणियं उवंचियासि, P om. तं, J भूनं P -ब्भूयं. 9 > J वएम for वयस्स, J साह किं पि तं अच्छरीअं, J inter. अज्ज & अहं. 10 > P om. मए, J णिणाओ । तओ, P तए for तओ, J सहमुब्भतरेण P सहसुसंतेण. 11 > P सुणियं for णिसुयं, J भगवओ उसभस्स पडिमा । तओ अहं पि कोऊहल्लहलहलाजरमाणमाणसो, P कोऊहलाऊरमाणसो. 12 > J जाव for ताव 13 > P देव निस्संसयं, P writes केवलिणो four times. 14 > P केवलिमहिमा॰ P महियले न, J om. य, P निमिसंति, P एयाइं पुण J महिवट्ठा, P संट्ठिया. 15 > J जाणिमो, P मणुसा, P रूवातिसया. 16 > J यारिणो for चारिणो, P मणुया for धरणीयरा, J adds वा after धरणीयरा. 17 > P पायवसाहाए ।. 18 > P om. विज्जाहरजुवाणएण, P रयणचित्तो. 19 > P om. चेय, J दुइओ, P अक्खित्तो for उक्खित्तो, P om. च, J गिरि for गुरु. 20 > P गइ for गई, P -खलिय, J विज्जाहरीओ. 21 > P जुवाणेया, P उसहसामियपडिमासमीवं, J जयजयं ति. 22 > J मयरंदु P मयरिंद, J पूरवरसपवाह, P जरोज्झरो. 23 > J कलसमुहेहिं, P adds ताइं after पडहाइं, P पगीयाइं. 24 > J जइआइं मंताइं, J किंपुरिसा सत्ति (झत्ति?), P किंपुरिसा । केइ तत्थ. 25 > P उक्कट्ठिं, P om. के वि हलहलयं । के वि जयजयावेंति ।. 26 > P om. च after एवं, P तोसमुव्वहि॰. 27 > J णिम्महंत for महमहंत, P वण्णगराय, J जोएण. 28 > J सुअंध. 29 > P -कंदुरुक्क, P धूमसूसर, P पडह for पडल. 30 > P उद्दंड, J -कुले-, P केयारारद्ध-

केहिं पि पुरओ णाणाविहाइं खज्ज-पेज्ज-विसेसाइं। तओ समकालं चिय दिव्वाहिं थुईहिं थुणिऊण भगवंतं कयं एक्कं काउसग्गं धरणिंदस्स णाग-राइणो आराहणावत्तियाए, दुइयं जीवियब्भहियाए अग्ग-महिसीए, तइयं साबरीए महाविज्जाए। एवं च काऊण णमोक्कार-पुव्वयं अवयारियाइं अंगाओ रयणाहरणाइं, परिहियाइं पत्त-वक्कलाइं, गहियं कोदंडं सरं चावद्धो वल्ली-लयाहिं उद्धो टमर-केस-पब्भारो पडिवण्णो पत्त-सबर-वेसं। ता वि जुवाणिया गुंजा-फल-माला-विभूसणा पडिवण्णा सबरित्तणं। तओ एवं च ताणं पडिवण्ण-सबर-वेसाणं साहिया महारायाहिराएण सबराहिवइणा महासाबरी विज्जा कण्णे ताणं जुवाणयाणं। तेहिं पि रइय-कुसुमंजली-सणाहेहिं पडिवण्णा। साहियाणि य काइं पि समयाइं। पडिवण्णं मूणव्वयं ति। तओ पणमिओ भगवं, वंदिओ गुरुयणो, साहम्मिय-जणो य।

§ २१९) तओ भणियं एक्केणं ताणं मज्झाओ विज्जाहरा आबद्ध-करयलंजलिणा। 'भो भो लोगपाला, भो भो विज्जाहिवइणो, णिसुणेसु आघोसणं। आसि विज्जाहराहिवई पुव्वं सबरसीलो णाम सव्व-सिद्ध-साबर-विज्जा-कोसो महप्पा महप्पभावो। सो य अणेय-विज्जाहर-णरिंद-सिर-मउड-चूडामणि णिहसिय-चलणवट्टो रज्जं पालिऊण उप्पण्ण-वेरग्ग-मणो पडिवण्ण-जिणवर-वयण-किरिया-मग्गो सव्व-संग-परिच्चायं काऊण एत्थं गिरि-कुहरे ठिओ। तस्स पुत्तेण सबर-सेणावइ-णामधेएण महाराइणा भत्तीए गुरुणो पीईए पिउणो एत्थ गिरि-कुहरम्मि एसा फडिग-सेलमई भगवओ उसभस्स पडिमा णिवेसिया। तप्पभूई चेय जे साबर-विज्जाहिवइणो विज्जाहरा ताणं एयं सिद्धि-खेत्तं, इमाए पडिमाए पुरओ दायव्वा, एत्थ वणे वियरियव्वं। ताणं च पुव्व-पुरिसाणं सव्व-कालं सव्वाओ विज्जाओ सिज्झंतीओ। तओ इमस्स वि सबरणाह-पुत्तस्स सबरिंदस्स सबर-वेसस्स भगवओ उसभ-सामिस्स पभावेणं धरणिंदस्स णामेणं विज्जाए सिणिद्धेणं सिज्झउ से विज्ज त्ति। भणह भो सव्वे विज्जाहरा, 'सव्व-मंगलेहिं पि सिज्झउ से कुमारस्स विज्ज' त्ति। तओ सव्वेहि वि समकालं भणियं। 'सिज्झउ से विज्जा, सिज्झउ से विज्ज' त्ति भणिऊण उप्पइया तमाल-दल-सामलं गयणयलं विज्जाहरा। तओ ते दुवे वि पुरिसो महिला य इहेव ठिया पडिवण्ण-सबर-वेस त्ति।

§ २२०) तओ कुमार, इमं च सोऊण मह महंतो कोऊहलो आसि। भणियं च मए 'वयंस, कीस तए अहं ण पेच्छाविया तं तारिसं दंसणीयं'। भगवओ पूया रइया, साहम्मिया विज्जाहरा विज्जा-पडिवण्णा य। अणाढियं तं तुह पुरिसं ति। तओ इमिणा भणियं 'तीए वेलाए तेण अपुव्व-कोउएण मे अत्ताणयं पि पम्हुट्ठं, अच्छसु ता तुमं ति। ता संपयं तुह ते विज्जा-पडिवण्णे सबर-वेस-धारिणो जुवाणे दंसेमि' त्ति। मए भणियं 'एवं होउ' त्ति। गया तं पएसं जाव ण दिट्ठा ते सबरया। पुणो अण्णम्मि दियहे अम्हाणं पडिमं णमोक्कारयंताणं आगया दिट्ठा ते अम्हेहिं। तेहिं पि साहम्मिय त्ति काऊण कओ काएण पणामो, ण उण वायाए। तप्पहुइं च णं एए अम्हाणं उडएसु परिब्भममाणा दियहे दियहे पावंति। तेण कुमार, अहं जाणिमो इमे विज्जाहरा। इमेणं मह कीरेणं साहियं इमं ति। तए पुण सरीर-लक्खण-विहाणेणं चेय जाणिया। अहो कुमारस्स विण्णाणाइसओ, अहो कुसलत्तणं, अहो बुद्धि-विसेसो, अहो सत्थ-णिम्मायत्तणं। सव्वहा

जिणवर-वयणं अमयं व जेण आसाइयं कयत्थेण। तं णत्थि जं ण-याणइ सुयप्पईवेण भावाणं॥

ति भणमाणीए पसंसिओ कुमारो त्ति।

§ २२१) तओ थोव-वेलाए य भणियं कुमारेण। 'एणिए,

एक्कं भणामि वयणं कडुयमणिट्ठं च मा मह कुप्प। दूसहणिज्जं पि सहंति णवर अब्भत्थिया सुयणा॥'

ससंभमं च चिंतियं एणियाए 'किं पुण कुमारो णिट्ठुरं कडुयं च भणिहिइ। अहवा,

---

1) J कणि for केहिं, P थुतीहिं, P कयमेक्कं. 2) P धरणिंदनाग°, J णागरण्णो, P आराहणवत्ति°, J om. जीवियब्भहियाए. 3) P om. च, P om. परिहियाइं, J परिहिहाइं हिआइं पत्त°, J कोडण्डसरं, P च वद्धो वल्लिलयाहिं टमर. 4) J टामर for टमर, P वंसं for वेसं, J सबरत्तणा।. 5) P पडिवण्णं, P सबराहिवइणो, J महासावरा, P तत्तो for कण्णे. 6) J पडिवण्णो।, P मूणवयं. 7) J inter. गुरुयणो and वंदिओ, J साहम्मिअयणो, J om. य. 8) P एक्कोणं, P °लंजलिणो।, J लोअपाल. 9) J अघोसणं, J सिद्धसबर, P -विज्जो-. 10) P चूडामणिसियचलणवट्टो, J °सियवलयवट्टो रज्जं, J पाविऊण, P उप्पणवेरग्गमग्गो, 11) J एत्थ, P सेणावइणा व नाम। तेण महाराइणो. 12) P पीतीए, J हरित for फडिग, P उसहस्स. 13) P सबरविज्जा° J °वईणो, [either गायव्वा or पूया दायव्वा, for दायव्वा]. 14) J रणे for वणे, P विज्जाओ विज्झंतीओ. 15) P om. सबरवेसस्स, P उसह for उसभ, P साणिद्धेणं सिज्जओ, 16) P सिज्जओ, J मि for वि, P सिज्जउ से विज्झा सिज्झउ, P adds वि after ते. 18) P ट्ठिया. 19) J inter. महं and महंतो. 20) J om. रइया, J य। एरिसं तुह अणाढियं ति।. 21) J तीय, P om. तेण, J आ for ता. 22) P om. ते, P जुवाणए, P दिट्ठा. 23) J णमोक्कारेयंताणं, P om. ते. 24) P तप्पभइं च एए, J दिअसे दिअसे. 25) P om. मह, P उण ण for पुण, J विहाएण. 26) J विण्णाणादिसयो. 27) P समयं for अमयं, J सुअप्पईएण P सुइयप्पईवेण. 28) J भणमाणीय. 29) P थोयवेलाए. 30) J च मा हु कुप्पज्जा। दूसभणि.., P वि for पि, P नर for णवर. 31) J भाणिहिइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवि णिवडइ अच्चिंगाल-मुम्मुरो चंद-मंडलाहिंतो । तह वि ण जंपइ सुयणो वयणं पर-दूसणं दुसहं ॥'

त्ति चिंतयंतीए भणियं 'दे कुमार, भणसु जं भणियव्वं, ण ए कुप्पामो' त्ति भणिए जंपियं कुमारेण ।

'संतोसिज्जइ जलणो पूरिज्जइ जलणिही वि जलएहिं । सज्जण-समागमे सज्जणाण ण य होइ संतोसो ॥

ता पुणो वि भणियव्वं । अच्छह तुब्भे, मए पुण अवस्सं दक्खिणावहं गंतव्वं ति, ता वच्चामि' । एणियाए भणियं 'कुमार, अइणिट्ठुरं तए संलत्तं' । कीरेण भणियं 'कुमार, महंतं किं पि दक्खिणावहे कज्जं जेण एवं पत्थिओ दक्खिणं दिसाहोयं' । कुमारेण भणियं 'रायकीर, एमं णिमं, महंतं चेय कज्जं'ति । कीरेण भणियं 'किं तं कज्जं' ति । कुमारेण भणियं 'महंतो एस वुत्तंतो, संखेवेण साहिमो त्ति । अवि य,

पढमं अब्भत्थणयं दुइयं साहम्मियस्स कज्जं ति । तइयं सिव-सुह-मूलं तेण महंतं इमं कज्जं ॥'

ति भणमाणो समुट्ठिओ कुमारो । तओ ससंभमं अणुगओ एणियाए कीरेण य । तओ थोवंतरं गंतूण भणियं एणियाए 'कुमार, जाणियं चेय इमं महंत-कुल-पभवत्तणं अम्हेहिं तुज्झ । तह वि साह अम्हाणं कयरं सणाहीकयं कुलं एएण अत्तणो जम्मेण, के वा तुज्झ तुमंग-संग-संसग्गुल्लसंत-रोमंच-कंचुय-च्छवी-रेहिर-चलण-जुयला गुरुणो, काणि वा सयल-तेलोक्क-सोहग्ग-सायर-महणुग्गयामय-णीसंद-बिंदु-संदोह-घडियाइं तुह णामक्खराइं, कत्थ वा गंतव्वं' ति भणिओ कुमारो जंपिउं समाढत्तो । 'अवस्सं साहेयव्वं तुम्हाणं, ण वियप्पो एत्थ कायव्वो त्ति । ता सुणेसु ।

§ २२२) अत्थि भगवओ उसभ-सामिस्स बालत्तण-समय-समागय-वासव-करयल-संगहिउच्छु-लट्ठि-दंसणाहिलास-पसारिय-ललिय-मुणाल-णाल-कोमल-बाहु-लयस्स भगवओ पुरंदरेण भणियं 'किं भगवं, इक्खु अदसि' त्ति भणिए भगवया वि 'तह' त्ति पडिवज्जिय गहियाए उच्छु-लट्ठीए पुरंदरेण भणियं 'भो भो सुरासुर-णर-गंधव्वा, अज्जपभिइं भगवओ एस वंसो इक्खागो' त्ति । तप्पभिइं च णं इक्खागा खत्तिया पसिद्धा ताव जा भरहो चक्कवट्टी, तस्स पुत्तो बाहुबली य । तओ भरहस्स चक्कवट्टिणो पुत्तो आइच्चजसो, बाहुबलिणो उण सोमजसो त्ति । तओ तप्पभिइं च एणिए, एक्को आइच्च-वंसो दुइओ ससि-वंसो । तओ तत्थ ससि-वंसे बहुएसु राय-सहस्सेसु लक्खेसु कोडीसु कोडाकोडि-सएसु अइक्कंतेसु दढवम्मो णाम महाराया अओज्झापुरीए जाओ । तस्स अहं पुत्तो त्ति । णामं च मे कयं कुवलयचंदो त्ति । विजयाए णयरीए मज्झ पओयणं, तत्थ मए गंतव्वं' ति । इमम्मि य भणिए भणियं एणियाए 'कुमार, महंतो संतावो तुह जणय-जणणीणं । ता जइ तुज्झाहिमयं, ता इमो रायकीरो तुज्झ सरीर-पउत्तिं साहउ गुरूणं' ति । तेण भणियं । 'एणिए, जइ तरइ ता कुणउ एयं । पूयणिज्जो गुरुयणो' त्ति भणमाणो पणामं काउं चलिओ पवणवेओ कुमारो । पडिणियत्ता हियय-मण्णु-णिब्भर-बाह-जल-लव-पडिवज्जमाण-णयणा एणिया रायकीरो वि । कुमारो वि कमेण कमंतो अणेय-गिरि-सरिया-संकुलं विंझाडइं वोलिओ । दिट्ठो य णेण सज्झ-गिरिवरो । सो य केरिसो । अवि य ।

बउलेला-वण-सुहओ चंदण-वण-गहण-लीण-फणि-णिवहो । फणि-णिवह-फणा-मंडव-रयण-विसट्टंत-बहल-तिमिरोहो ॥
तिमिरोह-सरिस-पसरिय-सामल-दल-विलसमाण-तरु-णिवहो । तरु-णिवहोदर-संठिय-कोइल-कुल-कलयलंत-सद्दालो ॥
कलयल-सद्दुद्दाविय-कणयमउक्खुत्त-बाल-कप्पूरो । कप्पूर-पूर-पसरंत-गंध-लुद्धागयालि-हलबोलो ॥
हलबोल-संभमुब्भंत-पवय-सुय-धूयसेस-जाइ-वणो । जाइ-वण-विहुय-णिवडंत-पिक्क-बहु-खुडिय-जाइ-फलो ॥
जाई-फल-रय-रंजिय-सरहर-पज्झरिय-णिज्झर-णिहाओ । णिज्झर-णिहाय-परिसेय-वड्ढिय-सेस-तरु-गहणो ॥ त्ति

इय सज्झ-सेल-सिहरओ णंदण-वण-सरिसओ विभूइयाए दिट्ठो अदिट्ठउव्वओ उक्कंठुलओ जए कुमारेण । तं च पेच्छमाणो वच्चए कुमार-कुवलयचंदो जाव थोवंतरेण दिट्ठो अणेय-वणिय-पणिय-दंड-भंड-कुंडिया-संकुलो महंतो सत्थो । जो व कइसओ । मरु-देसु जइसओ उद्दाम-संचरंत-करह-संकुलो । हर-णिवासु जइसओ ढेंकंत-दरिय-वसह-सोहिओ । रामण-रज्ज-जइसओ

1 > J अचिन्दाल, J परदुम्मणं. 2 > P om. जं, P भणियं ए जंपियं. 3 > J जलणिहिम्मि जलएहिं. 4 > J ताव for ता. 5 > P दिसाभोगं. 6 > P एवमिमं । महंतं चेव, P om. तं, J om. एस वुत्तंतो. 10 > J कुलप्पभव°, J ते for एएण. 11 > J तिमंगसंगसंसग्गुल्लसंत- P तुमंगमंगसंभमुल्लसंतंगुलिरोमंच-, J repeats चलण, P जुयलो. 12 > J सर for सायर, J °महणीसंद. 13 > J om. एत्थ. 14 > P उसह, P समयं, J करयलाओ संगहियच्छु-. 15 > P om. णाल, P दसि for अदसि. 16 > P तहित्ति, J गंधव्वा मज्जपभुदि भगवओ. 17 > J तप्पभितिं, P om. णं, P इक्खागत्तिया. 18 > J तप्पभूइं. 19 > J कोडाओ-डीसुएसु. 20 > P दढधम्मो, J अयोज्झा° P आउज्झ,° J विजयाए य पुरवरीए मज्झं. 21 > P इमं भणिए, P जणाय. 22 > J तुम्मेहि for तुज्झाहि, J तुब्भ for तुज्झ, P adds न before तरइ. 24 > J पडिभज्जमाण P पडिवज्झमाण. 25 > P वोलिय for वोलिओ, P om. य before णेण. 26 > P फल for फणि, P om. फणिणिवह. 27 > J णिवहोअर, P मंजु for कलयलंत. 28 > P सद्दुद्दाविय, P °मयुक्खुण्ण P °मयूक्खुत्त. 29 > J धुआसेस P धूयसेस, P om. जाइवण, J om. विहुय, P बहुफुडियजाइवलो. 30 > P om. णिज्झर in 2nd line, P परिसेस-, P om. त्ति. 31 > P लेस for सेल, P विभूतिआए दिट्ठो व्वओ, J जाए कुमारएण, P च मेच्छमाणो. 32 > P थोवंतरे दिट्ठो, P महंतो हत्थसत्थो. 33 > P हरि for हर, P ढक्कंत, J दरियवरवसह, P रज्जु for रज्ज.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्दाम-पयत्त-खर-वूसणु । रायंगणु जइसओ बहु-तुरंग-संगओ । विमणि-मग्गु जइसओ संचरंत-वणिय-पवरु । कुमारावणु जइसओ अणेय-भंड-विसेस-भरिओ त्ति । अवि य ।

खर-णर-करह-सएहिं कलयल-वट्टंत-सज्झ-पडिरावं । सत्थं सत्थो पेच्छइ सव्वत्तो सत्थ-णिम्माओ ॥

§ २२३) तं च दट्ठूण पुच्छिओ एक्को पुरिसो कुमारेण 'भो भो पुरिसा, एस सत्थो कओ आगओ कहिं वा वच्चीहइ' त्ति । तओ भणियं पुरिसेण 'भद्द, एस विंझपुराओ आगओ कंचीउरिं वच्चीहिइ' । कुमारेण भणियं 'विजया उण पुरवरी कत्थ होइ, जाणसि तुमं' । तेण भणियं 'भट्टा, दूरे विजया दाहिण-मयरहर-तीर-संसिया होइ' । तओ कुमारेण चिंतियं । 'इमेणं चेय सत्थेणं समं जुज्जइ मह गंतूण थोवंतरं' ति चिंतयंतेण दिट्ठो सत्थवाहो वेसमणदत्तो । भणिओ य णेण 'भो भो सत्थवाह, तुब्भेहिं समं अहं किंचि उद्देसं वच्चामि' त्ति । सत्थवाहेण वि महापुरिस-लक्खणाई पेच्छमाणेण पडिवण्णो । 'अणुग्गहो' त्ति भणमाणेण तओ उच्चलियं । तं सत्थं गंतुं पयत्तं, तम्मि य सज्झ-गिरिवर-महाडईए संपत्तं मज्झुद्देसे । तत्थ आवासियं एक्कम्मि पएसे महंते जलासए । तम्मि य पएसे आसण्णाओ भिल्ल-पल्लीओ । तेण महंतं भय-कारणं जाणमाणेण अब्भंतरीकयाइं सार-भंडाइं, बाहिरीकयाइं असार-भंडाइं, विरइया मंडली, आढत्ता आडियत्तिया, सज्जीकया करवाला, णिबद्धाओ असि-धेणूओ, आरोवियाइं कालवट्ठाइं, णिरूवियं सयलं सत्थ-णिवेसं ति ।

एत्थंतरम्मि सूरो कमेण णह-मंडलं विलंघेउं । तिमिर-महासुर-भीओ पायाल-तलम्मि व पविट्ठो ॥
तस्साणुमग्ग-लग्गो कत्थ य सूरो त्ति चिंतयंतो व्व । उद्धावइ तम-णिवहो दणुइंद-समप्पभो भद्दरा ॥
तरुयर-तले सुयइ व विसइ व दरीसुं वणम्मि पुंजइओ । उद्धावइ गयणयले मग्गइ सूरं व तम-णिवहो ॥
उद्धाइ धाइ पसरइ वियरइ संठाइ विसइ पायालं । आरोसिय-मत्त-महागओ व्व अह तज्जए तिमिरो ॥
इय एरिसे पओसे तम-णिवहंतरिय-सयल-दिसियक्के । आवासियम्मि सत्थे इमे णिओया य कीरंति ॥

सामग्गिया जामइल्लया, गुडिया तुरंगमा, णिरूविया थाणया । एवं बहु-जण-संभम-कलयल-हलबोल-बहुला सा राई खिज्जिउं पयत्ता । अवि य, वियलंति तारया, संकुयंति सावया, उप्पयंति पक्खिया, मूयलिज्जंति महासउणा, करयरेंति वायस-कुले त्ति । तम्मि य तारिसे पहाय-समए भणियं पच्छिम-जामइल्लएहिं । 'भो भो कम्मयरा, उट्ठेह, पल्लाणेसु करहे, चलउ सत्थो, देह पयाणयं, विभाया रयणि'त्ति । इमम्मि य समए पहयाइं तूराइं, पगीयाइं मंगलाइं, पवाइयाइं संखाइं, उट्ठिओ कलयलो, विबुद्धो लोओ, पल्लाणिउं पयत्ता । किं च सुब्भिउं पयत्तं । अवि य, अरे अरे उट्टेसु, ढोलेसु करहए, सामग्गेसु रयणीओ, कंठालेसु कंठालाओ, णिक्खिवसु उवक्खरं, संवेल्लेसु पडउडीओ, गेण्हसु दंडीयं, आरोहेसु मंडीयं, अप्फोडेसु कुंडियं, गुडेसु तुरंगमे, पल्लाणेसु वेसरे, उट्ठावेसु वइल्ले । अवि य,

तूरेसु पयट्ट वच्चसु चक्कमसु य णेय किंचि पम्हुट्ठं । अह सत्थो उच्चलिओ कलयल-सद्दं करेमाणो ॥

एरिसम्मि य काले हलबोलिए वट्टमाणे, पयत्ते कलयले, वावडे आडियत्तिय-जणे किं जायं । अवि य,

हण हण हण त्ति मारे-चूरे-फालेह लेह लुंपेह । खर-सिंग-सद्द-हलबोल-गब्भिणो धाइओ सद्दो ॥

एत्थाणंतरं च । अवि य,

सो णत्थि कोइ देसो भूमि-विभायम्मि णेय सो पुरिसो । जो तत्थ णेय विद्धो अदिट्ठ-भिल्लाण भल्लीहिं ॥

तओ तं च तारिसं वुत्तंतं जाणिऊण आउलीहूओ सत्थाहो, उट्ठिया आडियत्तिया, जुज्झिउं पयत्ता, पवत्तं च महाजुद्धं । तओ पभूओ भिल्ल-णिवहो, जिओ सत्थो मेल्लिओ य, भिल्लेहिं विलुंपिउमाढत्तो । सव्वाइं घेप्पंति सार-भंडाइं ।

1 > P पयरत्तखदूसणु, P वियणि for विमणि, P पउर for पवरु, J कुंभारावाउ. 3 > JP वट्टंत, P सग्ग for सज्झ, P inter. सत्थो & सत्थं, J सत्थण्णू for सव्वत्तो. 4 > P वच्चिहि त्ति. < 5 J om. त्ति, P भद्दा for भद्द, P किंचिउरिं, J वच्चोहिति P वच्चिहिइ. 6 > P भद्दा, P मयण for मयर, P संठिया for संसिया, P ततु for तओ. 7 > P मम गंतुं, J थोअंतरं, P चिंतिऊण दिट्ठो. 9 > P om. तओ, P उच्चलिओ सत्थो गंतं, J adds च before तं, P पयत्तो । पत्तो य गिरिवरमहाडईए मज्झुदेसं । तत्थ आवासिओ एक्कम्मि पएसे आसन्नाओ. 11 > J बाहिरि°, P असाराइं । विरईया, P आयत्तिया. 13 > J पायालयलंमि, P पइट्ठो. 14 > P व for य, JP उद्धावइ. 15 > J तरुअरयले सुठाइ व, P वियरइ for विसइ, P om. व, J दरिसुं P दीरीसु विणंमि, P उद्धावइ. 16 > P उद्धाइ द्धाइ, P पायालो, J आरोसि-, J मह for अह, P अह भंजए सूरो. 17 > J णिओआणु कीरंति. 18 > P जामइल्लिया, P लाई for राई. 19 > J वियरंति, P उप्पायंमि, P मुयलिज्जंति, P करयरंति. 20 > P कुलं ति, J पच्छिमजामइल्लेहिं, J उट्ठोह, P पट्ठाणेह for पल्लाणेसु. 22 > J om. विबुद्धो लोओ, P किंचि, J सुट्ठिउं, P पयत्ता, J om. अवि य. 23 > P रयणिओ, P संवोलेसु, J पडउडिं, J दलियं for दंडीयं, P मंडीयं. 24 > P गुठेसु, J वेसरारे. 25 > J om. य. 26 > P om. काले, J om. हलबोलिए, P हलबोलिय, J आवडे for वावडे. 27 > P om. लेह, P लुंपह निरासं । खर. 29 > P कोवि देसो, P बद्धो for विद्धो, J अदिट्ठं भिल्लभल्लीहिं. 30 > P सत्थवाहो, P आडियत्तियं, P पवत्ता पवत्तं. 31 > P om. मेल्लिओ य, J om. भिल्लेहिं, J °माढत्ता, J एत्थंतरंमि for सव्वाइं, J सव्व for सार.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

§२२४) एत्थंतरम्मि सत्थाहस्स दुहिया धणवई णामा। सा य दिसो-दिसिं पणट्ठा। परियणे वावाइय-सेसे णट्ठे य सत्थवाहे भिल्लेहिँ घेप्पमाणी सा वेवमाण-पओहरा मल्लिला-सुलहेण कायरत्तणेण विणडिज्जमाणी थरहरेंत-हियविया 'सरणं सरणं' ति विमग्गमाणी कुवलयचंद-कुमारं समल्लीणा। अवि य,

गुरु-थण-णियंब-पब्भार-भारिया भिल्ल-भेसिया सुयणू। सरणं विमग्गमाणी कुवलयचंदं समल्लीणा ॥

भणियं च तीए।

'तं दीससि सूर-समो अहं पि भिल्लेहिँ भेसिया देव। तुज्झ सरणं पवण्णा रक्खसु जइ रक्खिउं तरसि ॥'

कुमारेण वि 'मा भायसु, मा भायसु'त्ति भणमाणेण एक्कस्स गहियं भिल्लस्स हढेण धणुवरं। तं च घेत्तूण वरिसिउमाढत्तो सर-णियरं। तओ सर-णियर-पहर-परद्धं वलियं तं भिल्ल-बलं। तं च पलायमाणं पेच्छिऊण उट्ठिओ सयं चेय भिल्ल-सेणाहिवो। भणियं च णेण। 'अरे अरे, साहु जुज्झियं। अवि य।

आसासिय णियय-बलं विणिहय-सेसं पलाइयं सेण्णं। आरासिय-मत्त-महागओ व्व दुद्दंसणो वीर ॥

ता एह मज्झ समुहं किं विणिवाएसि कायर-कुरंगे। वीर-सुवण्णय-वण्णी रण-कसवट्टम्मि णिव्वडइ ॥'

इमं च भणियं णिसामिऊण वलंत-णयण-जुवलेण णियच्छिऊण भणियं कुमारेण।

'चोरो त्ति णिंदणिज्जो भिल्लो त्ति ण दंसणे वि मह जोग्गो। एण्हिं पुण वयणेहिँ मज्झ उभयं पि पम्हुट्ठं ॥

छल-घाइ त्ति य चोरो कत्थ तुमं कत्थ एरिसं वयणं। ता पत्तिय होसि तुमं मणय म्ह रणंगणे जोग्गो ॥'

त्ति भणमाणस्स पेसियं कुमारस्स एक्कं सर-वरं। तं पि कुमारेण दूरओ चेय छिण्णं। तओ कुमारेण पेसिया समयं चिय दोण्णि सर-वरा। ते हि भिल्लाहिवेण दोहिं चेय सरेहिँ छिण्णा। तओ तेण पेसिया चउरो सर-वरा। ते वि कुमारेण विच्छिण्णा। तओ पयत्तं समंजसं जुद्धं। सर-वर-धाराहिँ पूरिउं पयत्ता णव-पाउस-समय-जलया विव णहयलं। ण य एक्को वि छलिउं तीरइ। तओ सरवरा कत्थ दीसिउं पयत्ता। अवि य,

गयणम्मि कमंति सरा पुरओ ते चेय मग्गओ बाणा। धरणियलम्मि य खुत्ता उवरिं रुंटंति भमर व्व ॥

एवं च जुज्झमाणाणं पीण-भुया-समायड्ढणायासेण दलियाइं कालवट्ठाइं, उज्झियाइं धरणिवट्ठे, गहियं च वसुणंदयं मंडलग्गाइं च, दोहि वि जणेहिं तओ विरइयाइं करणाइं। वलिउं समाढत्ता। अवि य,

खण-वलणं-खण-धावण-उव्वण-संवेल्लणा-पयाणेहिं। णिद्दय-पहर-पडिच्छण-वारण-संचुण्णणेहिँ च ॥

§२२५) एवं पि पहरंताणं एक्को वि छलिउं ण तीरइ। तओ णिट्ठुर-पहराहयाइं मुसुमूरियाइं दोण्णि वि वसुणंदयाइं, तुट्टाणि य मंडलग्गाइं। तओ ताइं विउज्झिऊण समुक्खयाओ कुवलय-दल-सामलाओ छुरियाओ। पुणो पहरिउं पयत्ता, उद्धप्पहार-हत्थावहत्थ-हुलिप्पहारेहिं अवरोप्परं। ण य एक्को वि छलिउं तीरइ। तओ कुमारेण गुरुयामरिस-रोस-फुरुफुरायमाणाहरेण आबद्ध-भिउडि-भीम-भंगुर-भासुर-वयणेण दिण्णं से दुप्प-सायणं णाम बंधं। तओ भिल्लाहिवेण वि दिण्णो पडिबंधो। कहं कहं पि ण तेण मोइओ भिल्लाहिवेण। तओ चिंतियं च तेण 'अहो, को वि एस महासत्तो णिउणयर-कला-कोसल्ल-संपुण्णो ण मए छलिउं तीरइ। मए पुण एयस्स हत्थाओ मक्कू पावेयव्वो। जिओ अहं इमिणा, ण तीरइ इमाओ समुव्वरिउं। ता ण सुंदरमिमं। अवि य,

धी धी अहो अकज्जं जाणंतो जिणवराण धम्ममिणं। विसयासा-मूढ-मणो गरहिय-वित्तिं समल्लीणो ॥

जं चिय णेच्छंति मुणी असुहं असुहप्फलं तिहुयणम्मि। पर-जीविय-धण-हरणं स च्चिय जीवी अउण्णस्स ॥

चोरो त्ति णिंदणिज्जो उव्वियणिज्जो य सव्व-लोयस्स। भूय-दया-दम-रहिओ विसेसओ साहु-सत्थस्स ॥

हियए जिणाण आणा चरियं च इमं महं अउण्णस्स। एयं आलप्पालं अव्वो दूरं विसंवयइ ॥

1) P सत्थवाहस्स, P धणवई नाम।, P पणट्ठ. 2) P om. य, P थिरहरेंतहियया. 4) P भारिसारिल्लभेसिया सुयणु. 5) J तीय. 7) J हत्थेण for हढेण, P om. तं, P वरसिउ° J वरिसिउं माढत्तो. 8) P भिल्लवत्तं।. 9) P जुज्झिउं. 10) P विणिहय, J पलाविअं, P वीरो ॥. 11) P एहिं, J महं for मज्झ, P कारे पुरिसे।, P रणवसवट्टमि. 12) P जुयलेण, P inter. कुमारेण & भणियं. 13) J भल्लो for भिल्लो, P दंसणो वि, P जोगो, J मज्झ उभयं. 14) P छयघाय त्ति, J मयण for मणय, P जोगो. 15) P om. त्ति, P om. कुमारस्स, P चेव. 16) P om. हि, P चेव, P छिण्णा for विच्छिण्णा. 17) J सरवराहिं P सवरधाराहिं, J पयत्तो, P om. जलया विव णहयलं। ण य. 18) J सरासत्थ for सरवरा कत्थ. 19) P भमंति for कमंति, P मग्गए, J om. य. 20) P एवं च जुज्झमाणेणं पीणभुयासत्तः। अवि य गयणंमि etc. to भमर व्व ॥ एवं च जुज्झमाणेणं पीणभुया-सण्णाकड्ढणायासेण विउणियाइं कालवट्टाइं, P धरणिवट्टे, P च सुणंदयं. 21) J om अवि य. 22) P वलणधावण, J उवण-संवेल्लणापयारेहिं, P धारण for वारण. 23) P एवं वि पि, P पहरहयाइं, J om. मुसुमूरियाइं. 24) P वि सुणंदगाइं, P मुक्तयाओ for समुक्खयाओ. 25) P उद्धपहर, J हत्थव°, J हुलिप्पहारेहिं P हुलिप्पहारिहिं, P गरुयामरिसफुरफुरा°. 26) भिउडी-, P om. भासुर, J दिण्णं दिप्पसायणं, P om. वि. 27) P कहंकहं, J णेण for तेण, J एसो महा°. 28) J संपण्णो, J मए उण, P इमस्स for एयस्स, P अहमिमिणा, P तीरइमाउ समुव्वरियं. 29) J ता सुंदरं ण इमं।. 30) P धिद्धी अहो अकज्जं जं जाणंतो त्ति जिणवराणमिणं, J त्तिती. 31) P जं जं नेच्छंति, P असुहं असुहाण बंधि असुहफलं।. 32) P सयल for सव्व (°ल struck off in J), P रहिओ for रहणो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंतेसु ताव तं चिय रे हियवय तुज्झ एरिसं जुत्तं । जं जाणंतो चिय णं करेसि पावं विमूढो व्व ॥
अज्ज चयामि कल्लं सावज्जमिणं जिणेहिँ पडिरुद्धं । इय चिंतेंतो चिय से अकय-तवो पाविओ मच्चुं ॥
एवं गए वि जइ ता कहं पि चुक्कामि एस पुरिसस्स । अवहत्थिऊण सव्वं पव्वज्जं अब्भुवेहामि ॥'

त्ति चिंतयंतो मच्चुव्वत्तेण ओसरिओ मग्गओ ऊणं हत्थ-सयं एकप्पएसे उज्झिऊण असिधेणुं पलंबमाण-भुयप्फलिहो य णीसंगो काउस्सग्ग-पडिमं संठिओ त्ति । अवि य

अच्छोडिऊण तो सो असिधेणुं णिहयं धरणिवट्टे । ओलंबिय-बाहु-जुओ काउस्सग्गं समल्लीणो ॥
सायार-गहिय-णियमो पंच-णमोक्कार-वयण-गय-चित्तो । सम-मित्तो सम-सत्तू धम्मज्झाणं समल्लीणो ॥

तं च तारिसं वुत्तंतं दट्ठूण, सोऊण य पंच-णमोक्कार-वयणं, सहसा संभंतो पहाविओ कुवलयचंदो । साहम्मिओ त्ति काऊण 'मा साहसं मा साहसं' ति भणमाणेण कुमारेण अवयारिओ । भणियं च तेण । ' अवि य,

मा मा काहिसि सुपुरिस ववसायमिणं सुदुत्तरं किं पि । पच्चक्खाणादीयं णीसंग-मुणीण जं जोग्गं ॥
एयं मह अवराहं पसियसु दे खमसु कंठ-लग्गस्स । साहम्मियस्स जं ते पहरिय-पुव्वं मए अंगे ॥
पावाण वि पावो हं होमि अभव्वो त्ति णिच्छियं एयं । सम्मत्त-सणाहे वि हु जं एवं पहरियं जीवे ॥
जलणम्मि ण सुज्झामो जले ण कत्तो कया वि पडणेण । जइ वि तवं तप्पामो तहा वि सुद्धी मईं कत्तो ॥
मिच्छामि दुक्कडं ति य तहा वि एयं रिसीहिं आइण्णं । पुव्व-कय-पाव-पव्वय-पणासणं वज्ज-पहरं व ॥
ता दे पसियसु मज्झं उवसंहर ताव काउसग्गमिणं । दीसइ बहुयं धम्मं जं कायव्वं पुणो कासि ॥ त्ति

§ २२६) एवं ससंभम-सविणय-भत्ति-जुत्तं च कुमारे विलवमाणे चिंतियं भिल्लाहिवेण । 'अरे, एसो वि साहम्मिओ, ता मिच्छामि दुक्कडं जं पहरियं इमस्स सरीरे । अवि य,

जो किर पहरइ साहम्मियस्स कोवेण दंसण-मणम्मि । आसायणं पि सो कुणइ णिक्किवो लोय-बंधूणं ॥

ता अण्णाणं इमं किं करेमि त्ति । इमस्स एवं विलवमाणस्स करेमि से वयणं । मा विलक्खो होहिइ । मए वि सायारं पच्चक्खाणं गहियं । ता ऊसारेमि काउसग्गं' ति चिंतयंतेण गहिओ कुमारो कंठम्मि । 'वंदामि साहम्मियं'ति भणमाणा दो वि अवरोप्परं हियय-णिहित्त-धम्माणुराया णेह-णिब्भरत्तणेण पयलंत-बाह-बिंदु-णयण-जुवला जाया । अवि य ।

परिहरिय-वेर-हियया जिण-वयणब्भंतर त्ति काऊण । चिर-मिलिय-बंधवा इव ससिणेहं रोत्तुमाढत्ता ॥

तओ खणं एक्कं समासत्था भणियं च कुमारेण ।

'जइ एवं कीस इमं अह एयं चेय ता किमण्णेण । जोण्हा-गिम्हाण व से संजोओ तुम्ह चरियस्स ॥'

भणियं च भिल्लाहिवेण ।

'जाणामि सुट्ठु एयं जह पडिसिद्धं जए जिणवरेहिं । कम्मं चोराईयं हिंसा य जियाण सव्वत्थ ॥
किं वा करेमि अहयं चारित्तावरण-कम्मदोसेण । कारिज्जामि इमं भो अवसो पेसो व्व णरवइणा ॥
अत्थि महं सम्मत्तं णाणं पि हु अत्थि किं पि तम्मेत्तं । कम्माणुभाव-मूढो ण उणो चाएमि चारित्तं ॥
तुम्ह पहावेण पुणो संपइ तव-णियम-झाण-जोएहिं । अप्पाणं भावेंतो णिस्संगो पव्वईहामि ॥' त्ति

भणियं च कुमारेण 'असामण्णं इमं तुह चरियं, ता साहसु को सि तुमं' । भणियं भिल्लाहिवेणं च । 'कुमार, सव्वहा ण होमि अहं भिल्लो, होमि णं पुण भिल्लाहिवो । इमं च वित्थरेण पुणो कहीहामि कुमारस्स । संपयं पुण दारुणं भयं सत्थस्स । विलुप्पइ सत्थो चोर-पुरिसेहिं । ता णिवारणं ताव करेमो' त्ति भणिऊण पहाविओ । भणियं च णेण 'भो भो भिल्लपुरिसा,

---

1) P आ for चिय. 2) P adds चयामि after कल्लं, J मच्चू. 3) P या for ता, J अहं for कहं. 4) P मच्चुवत्तेण, P एकपएसे, J -हुयप्फलिहो P -बुयफालिओ नीसंगो काउस्सग्गं पडिमं ठिओ. 6) P om. सो, P धरणिवट्टे. 7) P adds पंचनमो before पंच. 8) P om. य, P संकंतो पहाइओ, P after कुवलयचंदो adds साई मित्तो समसत्तू धम्मज्झाणं etc. to पहाविओ कुवलयचंदो. 9) P om. 2nd मा, P अवयारिओ. 10) P पच्चक्खाणाईयं निस्संग. 11) J पहरिसपुव्वं. 12) J हं होंति अभव्वेंति. 13) P नवावि for कयावि, P om. वि after जइ. 14) J तह वि इमं रिसीहिं, P आइन्नं for आइण्णं. 15) J उवसंघर, P वाव for ताव, P धम्मकायव्वं. 16) P एवं च संभमं, J सविणस-, P om. च, P कुमारो विलवमाणो, P om. वि after एसो. 18) P साहं विभियस्स, P दंसणमिणंमि. 19) P अन्नाणमिमं. 20) P उस्सारेमि, J वंदिअ for वंदामि, P भणमाणो. 21) P धमाणुरायनेह, J बाहु for बाह, P जुयला. 22) P रोवुमाढत्ता. 23) P inter. एक्कं & खणं. 24) J एयं for एवं, P संजाओ. 26) P सट्ठु, J एवं, P चोराईहिं. 27) P करिमि, P चारित्तावंमरण-कंमदोसे ।. 28) J तंमत्तं, P adds मं before कम्माणु°. 29) P पभावेण, P inter. च & भिल्लाहिवेणं. 31) P adds न before होमि (second), P om. णं, P दुण for पुण, P सवित्थरं for वित्थरेण. 32) P विलुंपइ, P om. ताव.

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

मा विलुंपह मा विलुंपह सत्थं, मह पायच्छित्तियाए साविया तुब्भे जइ णो विरमह' त्ति । एवं च सोऊण भिल्लपुरिसा कुड्डालिहिया इव पुत्तलया थंभिया महोरया इव मंतेहिं तहा मंठिया । तओ भणियं 'अरे, अण्णिसह सत्थवाहं, मं-भीसेह वणिजए, आसासेह महिलायणं, पडियग्गह करहे, गेण्हह तुरंगमे, पडियग्गह पहरंते, सक्कारेसु मइल्लए' त्ति । इमं च आणं घेत्तूणं पहाइया भिल्ला दिसोदिसं । सत्थवाहो वि तारिसे सत्थ-विब्भमे पलायमाणो वणम्मि णिलुक्को परिब्भमंतेहिं पाविओ भिल्लेहिं । तओ आसासिओ तेहिं, भणिओ य 'मा बीहेह, पसण्णो तुम्हाणं सेणावई' । आणिओ से पासं मं-भीसिओ तेण । भणियं च सेणावइणा 'भो भो सत्थवाह, पुण्णमंतो तुमं, चुक्को महंतीओ आवईओ, जस्स एसो महाणुभागो समागओ सत्थम्मि । ता धीरो होहि, पडियग्गसु अत्तणो भंडं । जं अत्थि तं अत्थि, जं णत्थि तं एक्कारस-गुणं देमि त्ति । पेच्छसु पुरिसे, जो जियइ तं पण्णवेमि त्ति । सव्वहा जं जं ण संपडइ तमहं जाणावेसु' त्ति भणमाणो घेत्तुं कुमारस्स करं करेण समुट्ठिओ सेणावई पल्लिं गंतुं समाढत्तो ।

§ २२७) आढत्ता य पुरिसा । 'भो भो, एयं सत्थाहं सुत्थेण पराणेसु जत्थ भिरुइयं सत्थवाहस्स' त्ति भणिऊण गओ सज्झ-गिरि-सिहर-कुहर-विवर-लीणं महापल्लिं । जा य कइसिय । कहिंचि चारु-चमरी-पिंछ-पब्भारोत्थइय-घर-कुडीरया, कहिंचि बरहिण-बहल-पेहुण-पडाली-पच्छाइय-गिम्हयाल-मंडव-रेहिरा, कहिंचि करिवर-दंत-वलही-सणाहा, कहिंचि तार-मुत्ताहल-कय-कुसुमोवयार-रमणिज्जा, कहिंचि चंदण-पायव-साहा-णिबद्धंदोलय-ललमाण-विलासिणी-गीय-मणहर त्ति । अवि य,

अलया पुरि व्व रम्मा धणय-पुरी चेय धण-समिद्धीय । लंकाउरि व्व रेहइ सा पल्ली सूर-पुरिसेहिं ॥

तीए तारिसाए पल्लीए मज्झेण अणेय-भिल्ल-भड-ससंभम-पणय-जयजया-सद्द-पूरिओ गंतुं पयत्तो । अणेय-भिल्ल-भड-सुंदरी-वंद्र-दंसण-रहस-वस-वलमाण-धवल-विलोल-पम्हल-सामल-णीलुप्पल-कुमुय-माला-संवलंत-कुसुम-दामेहिं अच्चिज्जमाणो भगवं अदिट्ठ-पुव्वो कुसुमाउहो व्व कुमारो वोलीणो त्ति । तओ तस्स सेणावइणो दिट्ठं मंदिरं उवरि पल्लीए तुंगयर-सज्झ-गिरिवर-सिहरम्मि । तं च केरिसं । अवि य,

तुंगत्तणेण मेरु व्व संठियं हिमगिरि व्व धवलं तं । पुहई विव विल्थिण्णं धवलहरं तस्स णरवइणो ॥

तं च पुण कुमार-दंसण-पसर-समुब्भिज्जमाण-पुलइयं विव लक्खिज्जइ घण-कीलय-मालाहिं, णिज्झायंतं विव धुंधालय-गव-क्खासण-सयणोयरेहिं, अंजलिं पिव कुणइ पवण-पहय-धयवडा-करग्गएहिं, सागयं पिव कुणइ पणच्चमाण-सिहि-कुल-केया-रवेहिं ति ।

§ २२८) तओ तं च तारिसं सयल-णयर-रमणिज्जं पल्लिं दट्ठूण भणियं कुमारेण । 'भो भो सेणावइ, किं पुण इमस्स संणिवेसस्स णामं' ति । सेणावइणा चिंतियं । 'दूरमारुहियव्वं, उव्वाओ य कुमारो, ता विणोएयव्वो परिहासेणं'ति चिंतयं-तेण भणियं 'कुमार, कत्थ तुमं जाओ' । कुमारेण भणियं 'अउज्झापुरवरीए' । तेण भणियं 'कत्थ सा अयोज्झापुरवरी' । कुमारेण भणियं 'भरहवासे' । तेण भणियं 'कत्थ सो भरहवासो' । कुमारेण भणियं 'जंबुदीवे' । तेण भणियं 'कत्थ तं जंबुदीवं' । कुमारेण भणियं 'लोए' । तेण भणियं 'कुमार, सव्वं अलियं' । कुमारेण भणियं 'किं कज्जं' । तेण भणियं 'जेण लोए जंबुदीवे भरहे अयोज्झाए जाओ तुमं कीस ण-याणसि इमीए पल्लीए णामं तेलोक्क-पयड-जसाए, तेण जाणिमो सव्वं अलियं' । तओ कुमारेण हसिऊण भणियं 'किं जं जं तेल्लोक्क-पयडं तं तं जणो जाणइ सव्वो' । तेण भणियं 'सुट्ठु जाणइ' । कुमारेण भणियं 'जइ एवं ण एस सासओ पक्खो' । तेण भणियं 'किं कज्जं' । कुमारेण भणियं । 'जेणं

सम्मत्त-णाण-वीरिय-चारित्त-पयत्त-सिद्धि-वर-मग्गो । सासय-सिव-सुह-सारो जिणधम्मो पायडो एत्थं ॥

तह वि बहूहिँ ण णज्जइ ण य ते तेल्लोक्क-बाहिरा पुरिसा । तो अत्थि किंचि पयडं पि ण-याणियं केहि मि णरेहिं ॥'

तेण भणियं 'जइ एवं जिओ तए अहं । संपयं साहिमो, इमं पुण एक्कं ताव जाणसु पण्होत्तरं । अवि य ।

---

1 > P मा लुंपह in both places, J पातच्छित्ति°, P इत्ति for त्ति. 2 > P कुड्डलिहिया इव पुत्तला, P inter. इव & महोरया, P महोरगा मंतेहिं, J तओ भणिआ अण्णिसह, P मंतासह. 3 > P वणिया, P महिलायलं, P सक्कारेह, P एवमिमं च for इमं च. 4 > J adds अ before पाविओ. 6 > J सत्थाह कयउण्णो तुमं, P महाणुभावो. 7 > P अत्तणं, P om. जं before अत्थि, P om. तं after णत्थि, P मुणं for गुणं, P पुरिसो. 8 > P पन्नवेमो, P संघडइ, J तं महं. 9 > P सेणावती, J समाढत्ता. 10 > Better [आणत्ता] for आढत्ता, P om. य, J सच्छाहं सत्थेण, P om. सत्थाहं, P परायणेसु, P जइा भिरु°, J भिरुईयं, J om. सत्थवाहस्स त्ति. 11 > J om. गिरि, P om. कुहर, J -लीणं, P जाव कतिसिय, P पुच्छ for पिंछ, J पब्भारोत्थइयघरकुडीरया. 12 > P गिम्हयालंगंडव, J रेहिर, P वर for करि, J वरहीसणाह. 13 > J रमणिज्ज, P om. अवि य, 14 > P अलयाउर त्ति रम्मा, J adds रम्मा before रेहइ. 15 > J तीअ, P om. भड, P after ससंभमपणय, repeats धणसमिद्धी य । etc. to भिल्लभससंभमपणय, P दसद्द for सद्द, P inter. भड & भिल्ल. 16 > P विलसमाण for वलमाण, P कुसुमयमेहिं. 19 > J पुहई पिव. 20 > J सो य for तं च, P दंसणवसणहसुब्भिज्ज°, J पुलइओ इव लज्जिज्जइ घण°, J णिज्झायंती विव चुंबलेयरववक्खयाणयणोअरेहिं. 21 > P कुण्णइ नच्चमाण. 23 > P सयलउयनरीरम°. 24 > J दूरं आरु°, P वि for ति, J (partly on the margin) चितयंतेण भणिअं पल्लीवइणा कुमारस्स तुम्हाणं कत्थ जम्मो कत्तो वा आगया । कुमारेण भणियं । अयोज्झापुरवरीओ. 25 > P om. तेण भणियं before कत्थ etc., P अउज्झपुरवरी. 26 > P भरहावासे, J om. तं. 27 > J om. कुमारेण भणियं before किं कज्जं, J om. तेण भणियं, P om. जेण लोए. 28 > P अवज्झाए, adds जइ before तुमं कीस, P -पायड-. 29 > P सव्वं for सव्वो. 31 > J एत्थ for एत्थं. 32 > J तहा वि, P न मज्जइ जइ ते, J ता for तो, P किंपि पयडं पि न याणियं केहि नि नरेहिं. 33 > जइ (for तेण) भणियं तेण जइ, P om. पुण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का चिंतिज्जइ लोए णागाण फणाए होइ को पयडो । जह-चिंतिय-दिण्ण-फलो कुमार जाणासु को लोए ॥

कुमारेण चिंतियं 'अरे, को चिंतिज्जइ । हूं चिंता । को वा णायाण मत्थए पयडो । हूं मणी । को वा जह-चिंतिय-दिण्ण-फलो । अरे, जाणियं चिंतामणी । किमिमाए पहीए चिंतामणी णामं' ति चिंतयंतेण पुच्छियं जाणिय भणियं 'भो चिंतामणि'त्ति । सेणावइणा भणियं 'कुमार, जहाणवेसि' त्ति । एवं च परिहास-कहासुं आरूढा तं अत्तणो मंदिरं, दिट्ठं च अणेय-ससंभम-वियरमाण-विलासिणी-णियंब-रसणा-रसंत-रव-रावियं । तओ पविट्ठा अब्भिंतरं, उवगया देवहरयं । तत्थ य महंतं कणय-कवाड-संपुड-पडिच्छण्णं दिट्ठं देव-मंदिरं । तत्थ उग्घाडिऊण दिट्ठाओ कणय-रयणमइयाओ पडिमाओ । तओ हरिस-भरिज्जंत-वयण-कमलेहिं कओ तेलोक्क-बंधूणं पणामो । णिग्गया य उवविट्ठा महरिहेसु सीहासणेसु । वीसंता खणं । तओ समप्पियाओ ताणं पोत्तीओ । पक्खित्तं च सय-सहस्स-पागं वियसमाण-माळई-सुगंध-गंध-सिणेहं उत्तिमंगे तेल्लं । संवाहिया य अहिणव-वियसिय-कमल-कोमलेहिं करयलेहिं विलासिणीयणेणं ति । तओ उव्वट्टिया कसाएहिं, ण्हाणिया सुगंध-सुसीयल-जलेणं । तओ ण्हाय-सुई-भूया सिय-धोय-दुकूल-धरा पविट्ठा देवहरए । तत्थ य पूइया भगवंतो जहारुहं । तओ झाइओ एक्कं खणंतरं समवसरणत्थो भगवं । जविया य जिण-णमोक्कार-चउव्वीसिया । तओ आगया भोयणत्थाण-मंडवं, परिभुत्तं च जहिच्छियं भोयणं । तओ णिसण्णा जहासुहं, अच्छिउं पयत्ता वीसत्थ त्ति ।

§ २२९) तओ अच्छमाणाणं ताणं समागओ धोय-धवलय-वत्थ-णियंसणो लोह-दंड-वावड-करो एक्को पुरिसो । तेण य पुरओ ठाऊण सेणावइणो इमं दुवलयं पढियं । अवि य ।

'णारय-तिरिय-णरामर-चउ-गइ-संसार-सायरं भीमं । जाणसि जिणवर-वयणं मोक्ख-सुहं चेय जाणासि ॥
तह वि तुमं रे णिद्दय अलज्ज चारित्त-मग्ग-पब्भट्ठो । जाणंतो वि ण विरमसि विरमसु अहवा इमो डंडो ॥'

त्ति भणमाणेण तेण पुरिसेण ताडिओ उत्तिमंगे सेणावई । तओ महागरुल-मंत-सिद्धत्थ-पहओ व्विव ओअंडिय-महाफणा-मंडवो महाभुयंगो विय अहोमुहो संठिओ चिंतिऊण य पयत्तो । अहो पेच्छ, कहं णिट्ठुरं अहं इमिणा इमस्स पुरओ सुपुरिसस्स पहओ डंडेणं, फरुसं च भणिओ त्ति । अहवा णहि णहि सुंदरं चेय कयं । जेण,

जर-मरण-रोग-रय-मल-किलेस-बहुलम्मि एत्थ संसारे । मूढा भमंति जीवा कालमणंतं दुह-समिद्धा ॥
ताणं चिय जो भव्वो सो वि अउव्वेण कह वि करणेणं । भेत्तूण कम्म-गंठिं सम्मत्तं पावए पढमं ॥
तं च फलयं समुद्दे तं रयणं चेय णवर पुरिसस्स । लद्धूण जो पमायइ सो पडिओ भव-सयावत्ते ॥
लद्धूण पुणो एयं किरिया-चारित्त-वज्जियं मोहं । काय-किरियाए रहिओ फलयारूढो जल-णिहिम्मि ॥
ता जम्म-लक्ख-दुलहं एयं तं पावियं मए एण्हिं । चारित्तं पुण तह वि हु ण ताव पडिवज्जिमो मूढो ॥
जिण-वयण-बाहिर-मणो ण-यणइ जो जीव-णिज्जरा-बंधे । सो कुणउ णाम एयं मूढो अण्णाण-दोसेण ॥
मह पुण तेलोक्केक्कल्ल-बंधु-वयणं वियाणमाणस्स । किं जुज्जइ जीव-वहो धिरत्थु मह जीव-लोगस्स ॥
संसारो अइ-भीमो एयं जाणामि दुलहा बोही । भट्ठा उयहिम्मि वराडिय व्व दुक्खेण पावेस्सं ॥
जाणंतो तह वि अहं चारित्तावरण-कम्म-दोसेणं । ण य विरमामि अउण्णो सत्तेण विवज्जिओ अहमो ॥
धिद्धी अहो अउण्णो करुणा-वियलो अलज्ज-णय-सत्तो । खर-णिट्ठुर-फरुसाणं दूरं च्चिय भायणं मण्णे ॥
इय चिंतंतो च्चिय सो पव्वालिय-बाह-सलिल-णयणिल्लो । आमुक्क-दीह-णीसास-दुम्मणो दीण-वयणिल्लो ॥

भणिओ य कुमारेणं । 'भो भो, को एस वुत्तंतो, को वा एस पुरिसो, किं वा कज्जेण तुमं ताडिओ, किं वा अवराहो खमिओ, किं वा तुमं दुम्मणो सि' त्ति भणिए दीह-णीसास-मंथरं भणियं सेणावइणा 'कुमार, महल्लो एस वुत्तंतो, तहा वि तुज्झ संखेवेणं साहिमो, सुणासु त्ति ।

1) J किं for का, J णायाण, P भणाहि for फणाए, J चिंतियदिअहफलो P दिन्नफलो अरे जाणियं चिंतामणी ॥, P om. कुमार जाणासु को लोए ॥ कुमारेण चिंतियं 'अरे etc. to दिण्णफलो । 3) P किं इमाए, J णाम चिंतयं°, P om. पुच्छियं जाणिय, J om. भणियं, P adds चिंतामणियं भो after भो. 4) J जहाणवेहि त्ति. 5) P वियरमाणे वियासिणी, J रस for रव, J अब्भंतरं. 6) P परिच्छिन्नं, J adds च after दिट्ठं, P adds य after तत्थ, P कणयणयरमतीआउ. 8) J सत for सय, J सुअंध, J om. तेल्लं. 9) P नव for अहिणव, P विणासिणीअणेणं, P ति ण्हाणिया for ण्हाणिया, J सुअंध, P सुयसीयलेणं जलेणं. 10) P सुईभूसिय, P दुगुल्लहरा, J om. य, J भगवंता. 11) P चउवीसिया, P om. आगया, P भोयत्थाण, J om. च. 13) J धोव°, P धवलनियंसणे. 15) P सागरावत्ते ।, P जिणवयणेणं. 16) P इमो दंडो त्ति. 17) P -प्पहओ-, J विव उअंटिअ-, P om. महा before फणा. 18) P अहो for अहोमुहो, P om. अहो, P om. अहं. 19) P दंडेण, P om. णहि णहि, J adds अवि य after जेण. 20) J णवर for एत्थ. 21) J P भोत्तूण for भेत्तूण (emended). 23) J किरेआए. 24) J याव for ताव. 25) P बंधो ।, P कुणाउ. 26) P °क्कवयणं वंधु वियाण°, P महो for वहो. 27) P उअहंमि. 29) P दूच्चिय. 30) J चिंतेंतो, P दीणविगणिल्लो, 31) P om. य, P om. one भो, J om. वा before अवराहो. 32) P मडुरं for मंथरं, J तुमं for तुज्झ. 33) P नितुणेसु for सुणासु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २३०) अत्थि पुहई-पयासा उववण-वण-संणिवेस-रमणिज्जा । रयणाउरि त्ति णामं जण-णिवहुद्दाम-गंभीरा ॥ जहिं च पक्कण-कुलइं पि पवण-पहल्लमाण-कोडि-पडाया-णिहायइं, असेस-सत्थत्थ-णिम्मायइं पंजर-सुय-सारिया-णिहायइं, विहडिय-विरूव-रूव-सोहा-समुदय चकिय-जुवाण, विरूव-लावण्ण-विणिज्जिय-मच्छर-कडच्छ-पहयउ णायर-बालियउ रईए त्ति । अवि य ।

जं तत्थ किंचि अहमं लोए लहुयं ति परिहवावडियं । इयर-णयरीण तं चिय पत्तिय पढमं गणिज्जेज्जा ॥

तीए णयरीए राया रयणमउडो णाम ।

जो होइ जमो धणओ कोव-पसाएहिं सत्तु-पणईणं । दीणाण गव्वियाण य पयडं धण-खग्ग-पहरेहिं ॥

सव्वहा ण समत्थो वण्णेउं तस्स गुणे । तओ तस्स य राइणो दुवे पुत्ता, तं जहा, दप्पफलिहो बाहुफलिहो य । एवं च तस्स रज्जं अणुपालयंतस्स एक्कम्मि दियहे अमावसाए परिहरिय-सयल-संणिहिय-पाय-पयत्थ-सत्थस्स पओस-समए वासहरयं पविट्ठस्स णीसारिय-सयल-महिला-विलासिणीयणस्स लट्ठिप्पईव-सिहाए दिट्ठी विलग्गा । तओ किं-किं पि चिंतयंतस्स आगओ तम्मि पईवे एक्को पयंगो । सो तं पईव-सिहं अल्लिऊणं इच्छइ । तओ राइणा पयइ-अणुयंपा-सहावेण चिंतियं । 'अरे, वराओ अण्णाण-मोहिओ पडिहिइ इमम्मि पईवे, ता मा वराओ विवज्जउ' त्ति चिंतयंतेण गहिओ करयलेणं, घेत्तूण पक्खित्तो कवाड-विवरंतरेण । पक्खित्त-मेत्ते चेय पुणो समागओ । पुणो वि चिंतियं णरवइणा 'अहो, पेच्छह विहि-विहियत्तणं पयंगस्स' । पुणो आगओ, पुणो गहिओ, पक्खित्तो य । पुणो वि आगओ । तओ चिंतियं णरवइणा 'अहो एयं लोए सुणीयइ किर उवाय-रक्खिओ पुरिसो वास-सयं जीवइ त्ति । ता पेच्छामि किं उवाएहिं मज्झुणो सयासाओ रक्खा काइ हवइ, किं वा ण व'त्ति चिंतयंतेण गहिओ पुणो पयंगो । 'दे इमं रक्खामि । जइ एस इमाओ मच्चु-मुहाओ रक्खिओ होज्जा, ता जाणिमो अत्थि वेज्जोसहेहिं वि मरण-परित्ता । अह एस ण जीविहिइ मए वि रक्खिज्जमाणो, ता णत्थि सरणं मज्झुणो त्ति, परलोग-हियं चेव करणिज्जं' ति चिंतयंतेण पलोइयाइं पासाइं । दिट्ठं च एक्कं उग्घाडियं समुग्गं । तओ राइणा झत्ति पक्खित्तो तम्मि समुग्गयम्मि सो पयंगो, ठइओ य उवरिं, पक्खित्तो य अत्तणो ऊसीसए । एवं च काऊण एसुत्तो राया, पडिबुद्धो णिद्दा-खए चिंतिउं पयत्तो । 'अहो, पेच्छामि किं तस्स पयंगस्स मह उवाएणं कयं' ति गहिउं समुग्गयं णिरूवियं मणि-पदीवेण जाव पेच्छइ कुड्ड-गिरोलियं ति । तं च दट्ठूण पुलइयं णिउणं, ण य सो दीसइ । तओ चिंतियं राइणा 'अवस्सं सो इमीए खइओ होहिइ त्ति । अहो धिरत्थु जीव-लोयस्स । जेण

रक्खामि त्ति सयण्हं पक्खित्तो एस सो समुग्गम्मि । एत्थ वि इमीए खइओ ण य मोक्खो अत्थि विहियस्स ॥

जेत्तिय-मेत्तं कम्मं पुव्व-कयं राग-दोस-कलुसेण । तेत्तिय-मेत्तं से देइ फलं णत्थि संदेहो ॥

वेज्जा करेंति किरियं ओसह-जोएहिँ मंत-बल-जुत्ता । णेय करेंति वराया ण कयं जं पुव्व-जम्मम्मि ॥

पच्चक्खं जेण इमो मए पयंगो समुग्गए छूढो । गिलिओ गिरोलियाए को किर मच्चूए रक्खेज्जा ॥

ता णत्थि एत्थ सरणं सयले वि सुरासुरम्मि लोयम्मि । जं जं पुव्वं रइयं तं तं चिय भुंजए एयं ॥

ता कीस एस लोओ ण मुणइ पर-लोय-कज्ज-वावारं । घण-राय-दोस-मूढो सिढिलो धम्मासु किरियासु ॥

इय णरवइणो एयं सहसा वेरग्ग-मग्ग-पडियस्स । तारूव-कम्म-खयउवसमेहिँ जम्मं पुणो भरियं ॥ तओ,

जाए जाईं-सरणे संभरिओ राइणा भवो पुव्वो । जह पालिय-पव्वज्जो दिय-लोयं पाविओ तइया ॥

तम्हाओ वि चुओ हं भोए भोत्तूण एत्थ उववण्णो । जं पुव्व-जम्म-पढियं तं पि असेसेण संभरियं ॥

---

1 > P एएसो for पयासा, J om. वण, J रयणपुरि, P लोए for णामं. 2 > P कुणइं, J वि for पि, P पि पवयण, J णिहायाइं J सत्थत्थु-, P सत्थनिम्माइं पिंजर-. 3 > P विउडियाविरूवसोहा, J om. लावण्ण, P पहायओ, P -बालिउरइआए. 5 > P inter किंचि and तत्थ, P परिहंति वावडियं । अन्न नयरीण, P गणेज्जासु ॥. 6 > J तीअ रयणाउरी राया. 7 > P होज्ज for होइ, P कोवपएसाहिं सत्तुपणतीणं, J पहराहिं. 8 > J om. तस्स गुणे, J बाहुप्फलिहो, P एवं तस्स य रज्जं. 9 > J समावासिए for अमावसाए, J पाव for पाय. 10 > P om. महिला, P लट्ठीपईओ सिहाए, J विलग्गो, P om. one किं. 11 > P अहिल-सिऊणं इच्छइ, J पयई, P अणुकंपा. 12 > J om. अण्णाणमोहिओ, P पडीहिइ. 13 > P °मेत्तो, J om. वि, J विविहिअत्तणं P विहिविहियं, J adds वि in both places after पुणो. 14 > P पखितो, P ततो for तओ, J लोए सुणीयति. 15 > J रक्खितो, P adds वा before उवएहिं. 16 > P दे रइमं. 17 > P परत्ता, J P जीविहिति, P वि खिज्जमाणो. 18 > J चेअ for चेव, P पलोवियाइं, P उग्धाडयं, P समुयं for समुग्गं, P मुक्को for पक्खित्तो. 19 > J om. य, J उसीसए, J विबुद्धो for पडिबुद्धो. 20 > J गहिअं, J मणिपईवेण, P मणिपदीवे जाव पेच्छाइ, 21 > J कुण्ड P कुड्ड, P गिरोलयं ति, P राइणो. 22 > होहिसित्ति, P लोगस्स, P संपयं for जेण. 23 > P सत्तण्हं, P मे for सो, P om. एत्थ वि इमीए etc. to पुव्वजम्मम्मि. 24 > J जत्तिय. 25 > J णय for णेय. 26 > J गरोलियाए. 27 > P लोगंमि, P पुव्वरइयं, P भुंजए. 28 > P लोए for लोओ, J लोअ for कज्ज, P रागद्दोस. 29 > P नरवइणा, P क्खयओव°, P जंमो पुणो. 30 > P पुव्वभवो for भवो पुव्वो, P पालिय for पालिय. 31 > P भुओ for चुओ, P य तेण for असेसेण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २३१) अह चिंतिउं पयत्तो धिरत्थु संसार-वास-दुक्खस्स । गय-चारित्तावरणो दिक्खं अह गेण्हए मणसा ॥
कय-पंच-मुट्ठि-लोओ सुमणो परिहरिय-सेस-सावज्जो । गय-पावो णिल्लेवो जाओ सलिलम्मि लउओ व्व ॥

एवं च तस्स इमम्मि अवसरे अहा-संणिहियाए देवयाए किं कयं । अवि य,

धवलं विमलं सुहयं पसरिय-दसिया-मऊह-फुरमाणं । बहु-पाव-रओहरणं रयहरणं अप्पियं तस्स ॥
मुह-पोत्तिया य बीया पत्ताईयाइँ सत्त अण्णे वि । इय णव-उवहि-सणाहो जाओ पत्तेय-बुद्धो सो ॥

ताव य पभाया रयणी । पढियं मंगल-पाढएणं । अवि य,

अरुण-कर-णियर-भरियं गयणयलं णासमाण-ताराल । ओअग्गइ उज्जोओ वियलइ तिमिरं दस-दिसासु ॥
कूयंति सारसाइं सावय-सउणाण सुव्वए सद्दो । विरहोलुग्ग-सरीरं घडियं चक्काय-जुवलं पि ॥
पसरइ कुसुमामोओ वियरइ दिसासु पाडलागंधो । उद्धाइ कलयल-रवो रवंति सव्वत्थ कुक्कुडया ॥
इय एरिसे पभाए णरवर दे बुज्झिऊण कुण एक्कं । णिद्दा-मोहं अह वारिऊण परलोग-वावारं ॥

तं च तारिसं वंदिणा पढियं णिसामिऊण भगवं रायरिसी विहाडिऊण कवाड-संपुडं वास-भवणस्स णिग्गओ सीह-किसोरओ व्व गिरिवर-गुहाओ, दिट्ठो य परियणेण । केरिसो । अवि य,

कय-केस-लुंचणो सो पत्तय-रय-हरण-रेहिर-करग्गो । चइउं तणं व रज्जं राया सीहो व्व णिक्खंतो ॥

तं च तारिसं पेच्छिऊणं वासहर-पालीए धाहावियं । कहं । अवि य ।

हा हा माए धावह धावह एसो म्ह सामिओ राया । अज्ज च्चिय वासहरे अह किं पि विडंबणं पत्तो ॥

एवं सोऊण धाहा-रवं णिसामिऊण पहाइओ अंतेउरिया-जणो । संभम-वस-खलमाण-चलण-णेउर-रणरणासद्द-मुहलो पहाइओ वर-विलासिणि-जणो । तओ ताहिं भणियं ।

'जिय दइय सुहय सामिय पसिय तुहं किं व अवकयं अम्हे । जेणम्हे तं मुंचसि तं अत्ताण विडंबणं काउं ॥
जे वेल्लहल-विलासिणि-करयल-संसग्ग-वड्डिया णिच्चं । ते कत्थ तुज्झ केसा अइवज्जम लुंचिया केण ॥
कप्पूर-पूर-चंदण-मयणाहि-समुग्गएक्क-कलियम्मि । वासहरम्मि करंका कत्थ तए पाविया णाह ॥
दरियारि-दारण-सहं तुह खग्गं णाह रेहइ करग्गे । उण्णामय-दसियालं एयं पुण पिंछयं कत्तो ॥'

तओ एवं पलवमाणस्स अंतेउरिया-जणस्स अदिण्ण-पडिसंलावो गंतुं पयत्तो । तओ मुक्क-कंठं धाहावियं ताहिं ।

'अवि धाह धाह धावह एसो अम्हाण सामिओ सहसा । केण वि हीरइ पुरओ अदिण्ण-संलाव-दिमणाणं ॥

इमं च हा-हा-रवं णिसामिऊण संपत्ता मंतिणो । तेहिं य दिट्ठो से भगवं महामुणि-रूवो । वंदिऊण य भणियं तेहिं 'भगवं को एस वुत्तंतो' त्ति । एवं च भण्णमाणो विणिग्गओ चेय णयरीओ । तओ तह च्चिय मग्गालग्गो सेस-परियणो वि संपत्तो उज्जाण-वणं । तत्थ य तस-थावर-विरहिए पएसे णिसण्णो भगवं रायरिसी । तओ णिसण्णा मंतिणो अंतेउरिया-जणो य । अम्हे वि दुवे वि जणा तस्स पुत्ता दप्पफलिह-भुयफलिहा भायरो णिग्गया पिउणो सयासं । तओ उवविट्ठाण य भगवं रायरिसी साहिउं पयत्तो । अवि य ।

§ २३२) णारय-तिरिय-णरामर-चउ-गइ-संसार-सायरं भीमं । भममाणएण बहुसो अणोरपारं सया-कालं ॥
रज्जं बहुसो पत्तं बहुसो पुण सेवियं च दोग्गच्चं । णिय-धम्म-कम्म-वसओ खय-हाणिं पावए जीवो ॥
जइ देइ विसिट्ठाणं इट्ठमणिट्ठं च जइ ण आयरइ । जइ अणुकंपा-परमो ता रज्जं को ण पावेइ ॥
अह बंध-घाय-वह-मार-परिणओ णट्ठ-धम्म-वावारो । ता वच्चंत णरए साहसु को रुंभिउं तरइ ॥
सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि जो ण संसारे । पत्तो देवत्त-पयं किमी य असुइम्मि उववण्णो ॥

---

1) P अहा चिंतिउं पयत्ता, J दिक्खा अह. 2) P जाओ सरयंमि जलउ व्व. 3) J अवसरे अहासण्णिहि°. 5) J य बितिआ पत्तातीआइं, P पत्ताईया वि, P पमाणो for सणाहो, P पत्तेयबुद्धो. 6) J om. य. 7) P नयणयलं तासमाण for गयण° etc., P उज्जोवो. 8) P जुयलं. 10) P °मोहं अवयारिऊण, J परलोअ-. 11) P रायसिरी, J विहरिऊण, J om. णिग्गओ, P किसोरो. 14) J वासहरयवालीए, J om. अवि य. 15) J om. one धावह, J आ कहं for अह किं. 16) P adds च after एवं, J धाहरवं P धाहावरवं, J °यणो for जणो, J खणमाण. 17) P वारविलासिणीयणो. 18) P सुयय, J पसीअ, P अम्हे । जे जेणत्थेक्के मुंचसि अत्ताण. 19) J om. जे, P विलासिणि, P संगि for संसग्ग. 21) P दरियाविदारण. 22) P अंतिउरिया, P कंठं हाविय ताहि । अवि धावह धाह धावह. 23) J धावह माए एसोम्ह सामिओ. 24) P सो for से. 25) P चेव नयराओ, P तहे व for तह च्चिय. 26) J रहिए for विरहिए, P तओ निसन्नो. 27) P वि दुवे जणा दप्प°, J दप्पफलिहो भुयप्फलिहा, P सगासं, P om. य. 28) J om. अवि य. 30) P उण for पुण, P दोहग्गं for दोग्गच्चं, P inter. कम्म (कंम) & धम्म, J रायहाणिं for खयहाणिं. 31) P विसिट्ठाणं, J यारइ for आयरइ, J अणुअंपा. 32) P अह --- P घाय for मार.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो णत्थि कोइ जीवो इमम्मि संसार-दुक्ख-वासम्मि । माइ-पिइ-पुत्त-बंधू बहुसो सयणत्तणं पत्तो ॥
सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि जो ण कम्मेण । विसयासा-मूढ-मणो अवरोप्पर-मारणं पत्तो ॥
सो णत्थि कोइ जीवो चउगइ-संसार-चारयावासे । अवरोप्पर-कज्ज-मओ जो ण वि मित्तत्तणं पत्तो ॥
सो णत्थि कोइ जीवो भममाणो जो ण कम्मजोएण । ईसा-मच्छर-कुविओ जो ण य सत्तुत्तणं पत्तो ॥
सो णत्थि कोइ जीवो चउगइ-संसार-सागरे भीमे । णह-दंत-दलिय-देहो जो य ण आहारिओ बहुसो॥
सो च्चिय सत्तू सो चेय बंधवो होइ कम्म-जोएणं । सो च्चिय राया सो चेय भिच्छुओ होइ पावेणं ॥
ता पत्तियासु एयं ण एत्थ बंधू ण चेय कोइ अरी । णिय-चरिय-जाय-कम्मं पत्तिय सत्तुं च मित्तं च ॥
इय जाणिउं अणिच्चं संजोय-विओय-रज्ज-बंधुयणं । वेरग्ग-मग्ग-लग्गो को वा ण करेज्ज परलोयं ॥

एत्थंतरम्मि पुच्छिओ विमलबंधुणा मंतिणा । 'भगवं, एस उण को वुत्तंतो वासहरयम्मि जाओ जेण समुप्पण्ण-वेरग्ग-मग्ग-लग्गो इमं लिंगं पडिवण्णो सि' त्ति । साहियं च भगवया सयलं पयंग-पईव-समुग्गय-वुत्तंतं । तओ तं च दट्ठूण मए चिंतियं । 'अहो, धिरत्थु संसार-वासस्स जं एसो पयंगो रक्खिज्जमाणो विवण्णो । उवाओ त्ति समुग्गए पक्खित्तो, तहिं चेव अवाओ जाओ । तं जहा ।

जइ सेण-तासिओ सो सरणत्थी मग्गए बिलं ससओ । अयगर-मुहं पविट्ठो को मल्लो हय-कयंतस्स ॥
ओसह-जोएहिँ समं णाणाविह-मंत-आहुइ-सएहिं । ण य रक्खिऊण तीरइ मरण-वसं उवगओ पुरिसो ॥
एयं णाऊण इमं अणिच्च-भावेण भावियं लोयं । तम्हा करेमि धम्मं को साहारो त्थ रज्जेणं ॥

एवं च मज्झ वेरग्ग-मग्गावडियस्स तहा-कम्मक्खओवसमेणं अण्ण-जम्म-सरणं समुप्पण्णं । आसि अहं अवरविदेहे साहू, तत्तो य सोहम्मे देवो । तत्तो वि चइऊण अहं इह राया समुप्पण्णो । तओ कयं मए पंचमुट्ठियं लोयं । अहासंणिहियाए देवयाए समप्पियं रय-हरणं उवकरणं च । तओ णिग्गंथो मुणिवरो जाओ अहं' ति ।

§ २३३) एवं च भगवया साहिए समाणे सयले वुत्तंते पुच्छियं विमलेण मंतिणा । 'भगवं, को उण एस धम्मो, कहं वा कायव्वो, किं वा इमिणा साहेयव्वं' ति । एवं च पुच्छिए भणियं भगवया रायरिसिणा ।

'देवाणुपिया णिसुणेसु जं तए पुच्छियं इमं धम्मं । पढमं च्चिय मूलाओ ण होइ जइ संसओ तुज्झ ॥
धम्माधम्मागासा जीवा अह पोग्गला य लोयम्मि । पंचेव पयत्थाइं लोयाणुभवेण सिद्धाइं ॥
धम्माधम्मागासा गइ-ठिइ-अवगास-लक्खणा भणिया । जीवाण पोग्गलाण य संजोए होंति णव अण्णे ॥
जीवाजीवा आसव पुण्णं पावं च संवरो चेय । बंधो णिज्जर-मोक्खो णव एए होंति परमत्था ॥
जो चलइ वलइ वग्गइ जाणइ अह मुणइ सुणइ उवउत्तो । सो पाण-धारणाओ जीवो अह भण्णइ पयत्थो ॥
जो उण ण चलइ ण वलइ ण य जंपइ णेय जाणए किंचि । सो होइ अजीवो त्ति य विवरीओ जीव-धम्माणं ॥
अह कोह-लोह-माया-सिणिद्ध-रूवस्स दुट्ठ-भावस्स । लग्गइ पावय-पंको सिणिद्ध-देहे महि-रओ व्व ॥
सो आसवो त्ति भण्णइ जह व तलायस्स आगमद्दारो । सो होइ दुविह-भेओ पुण्णं पावं च लोयम्मि ।
देवत्तं मणुयत्तं तत्थ विसिट्ठाइँ काम-भोगाइं । गहिएण जेण जीवो भुंजइ तं होइ पुण्णं ति ॥
णरएसु य तिरिएसु य तेसु य दुक्खाइँ णेय-रूवाइं । भुंजइ जस्स बलेणं तं पावं होइ णायव्वं ॥
अह पुण्ण-पाव-खेलय-चउगइ-संसार-वाहियालीए । गिरिओ व्व जाइ जीवो कसाय-चोरेहिँ हम्मंतो ॥
तं णाण-दंसणावरण-वेयणिज्जं च होइ तह मोहं । अवरंतराय-कम्मं आयुक्खं णाम गोत्तं च ॥
तं राग-दोस-वसओ मूढो बहुएसु पाव-कम्मेसु । अट्ठ-विहं कम्म-मलं जीवो अह बंधए सययं ॥

---

1) P बंधू हुसो सणयणयत्तणं. 3) P संसारसायरावासे, P कज्जपमओ. 4) P जं for जो, P inter. य and ण. 5) P जोइ for कोइ, J सायरे, P inter. न and य. 6) P सो चेय भिच्चो अह होइ. 7) P सत्तू य मित्तं. 8) P जाणियं, P लग्ग-मग्गो. 9) J वुण for उण, P inter. को & उण, P वुत्तंतो सहरम्मि य जाओ. 10) P मग्गो for मग्गलग्गो, P om. सि, J -पईव, P समुयय. 11) P एस पयंगो, J adds वि before विवण्णो, J चेअ. 13) J सयणत्थी. 15) P लोगं, P बंधं for धम्मं, P inter. साहारो and को, P व for त्थ. 16) J °विदेहो साहो. 17) J om देवो, J om. अहं, P om. इह, J मे for मए, P °सन्निहियए, J देवताए. 18) J रयणहरणं. 19) P om. समाणे, J om. सयले, P पुच्छियविंयं विमलमंतिणा. 20) J पुच्छिएण भणियं. 21) P देवाणुप्पिया, P तुम्हं for तुज्झ. 22) P लोगंमि, J लोआइभवेण P लोयणुभावेण. 23) J गति-ठिति, P अवगाह-. 24) P संवरं चेव, J inter. बंधो & णिज्जर, J एते, P परमत्थो. 25) P repeats चलइ, J जाणइ इअ हसइ उवयुत्तो. 26) P किंपि l. 27) P inter. लोह & कोह, J पायव for पावय, J देहो. 28) P वइ for व, J आगमंदारो, P लोगंमि. 29) J भोआइं. 30) P णेणग for णेय, J जस्स हलेणं. 31) P पुण्णपाव, P गिलिओ व्व लाजाइ, J -चोराण, P निज्जंतो for हम्मंतो. 32) P om. होइ, P आउक्खं. 33) P अट्ठविहं, J सततं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मिच्छ-अविरइ-कसाया-पमाय-जोगेहिँ बंधए कम्मं । सत्तट्ठ-विहं छव्विहमबंधओ णत्थि संसारी ॥
एगंत-बद्ध-चित्तो कुसमय-मोहिज-माण-सब्भावो । मिच्छा-दिट्ठी कम्मं बंधइ अह चिक्कणं होइ ॥
गम्मागम्म-वियप्पो वचावच्चाइँ जो ण परिहरइ । सो अविरय-पाव-मग्गो अविरतओ बंधए पावं ॥
मज्जं वि महाणिद्दा एए उ हवंति ते पमायाओ । एएसु जो पमत्तो सो बंधइ पावयं कडुयं ॥
मय-कोह-माण-लोहा एए चत्तारि जस्स उ कसाया । संसार-मूल-भूएहिँ तेहिँ सो बंधए पावं ॥
काय-मण-वाय-जोगा तेहि उ दुट्ठेहिँ दुट्ठ-बुद्धीए । बंधइ पावं कम्मं सुहेहिँ पुण्णं ण संदेहो ॥
ता जाव एस जीवो एयइ वेयइ य फंदए चलए । सत्तठ-छब्वेगविहं बंधइ णो णं अबंधो उ ॥
ता तेण कम्मएणं उच्चाणीएसु णवर ठाणेसु । जीवो इमो भमिज्जइ कराहओ कंदुउ व्व समं ॥
इंदत्तणं पि पावइ जीवो सो चेय णवर किमियत्तं । णरए दुक्ख-सहस्साइँ पावए सो च्चिय वराओ ॥
पुढवि-जल-जलण-मारुय-वणस्सई णेय-भेय-भिण्णेसु । एग-दु-ति-चउरिंदिय-विगलेसु अणेय-रूवेसु ॥
अंडय-पोत्तय-जरजा रसाउया चेय होंति संसेया । सम्मुच्छिमा य बहुए उब्भिय-उववाइआ अण्णे ॥
सीउण्ह-मीस-जोणिसु जायंते के वि तत्थ दुक्खत्ता । संकड-वियडासु पुणो मीसासु य होंति अवरे वि ॥
पंचेंदियाण पुच्छसि चउरो भेदा उ होंति देवाणं । भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वासी विमाणत्था ॥
विज्जु-घण-थणिय-अग्गी-सुवण्ण-तह-दीव-दिसि-कुमारा य । वाऊदधी य णागा दस भेया होंति भवणत्था ॥
अह जक्ख-रक्ख-भूया पिसाय तह किंणरा य किंपुरिसा । महउरया गंधव्वा अट्ठ-विहा वंतरा एए ॥
चंदा सूरा पढमं गहा य णक्खत्त-तारया अवरे । एए पंच-विह च्चिय जोइस-वासी सुरा होंति ॥
वेमाणिया य दुविहा कप्पाईया य कप्पमुववण्णा । कप्पोववण्ण-भेया बारस एए णिसामेसु ॥
सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लोया य । लंतय-सुक्क-सहस्साराणय-पाणय य दिय-लोया ॥
आरण-अच्चुय-भेएहिँ संठिया बारस-विहाओ । एए कप्पोवण्णा देवा अह होंति सव्वे वि ॥
कप्पाईया दुविहा गेवेज्जाणुत्तरा य पंच-विहा । एएसु कोइ वच्चइ बहु-कय-पुण्णो हु जो पुरिसो ॥
§ २३४) मणुया वि अणेय-विहा कम्मय-भूमा [अकम्म-भूमा] य । अंतर-दीवा अण्णे सबरादी बब्बरा अण्णे ॥
तिरिया असंख-भेया दुपया अपया चउप्पया चेव । पक्खी सप्पाईया पभूय-पय-संकुला अण्णे ॥
णरए वि सत्त णरया पत्थर-भेएण ते विभिज्जंति । भीमा उव्वेवणया बहु-दुक्खा णिच्च-कालं पि ॥
अमर-णर-तिरिय-णारय-भव-संसारम्मि सागर-सरिच्छे । अट्ठविह-कम्म-बद्धा भमंति जीवा ण संदेहो ॥
अह एत्थ मणुय-लोए जीवो च्चिय सुकय-पुण्ण-पब्भारो । उप्पज्जइ तित्थयरो अंतयरो सयल-दुक्खाणं ॥
से साहइ सव्वमिणं दिव्वण्णाणेण जाणिउं भगवं । सोऊण य तं जीवा केई वच्चंति सम्मत्तं ॥
अण्णे पाव-परद्धा संसारे ववहरय-सरिसम्मि । अच्छंति दुक्ख-तविया ण तस्स वयणं अवि करेंति ॥
जे पुण करेंति एयं ते पुरिसा णवर एत्थ गेण्हंति । सम्मदंसण-णाणं चरणं च्चिय तिण्णि परमत्था ॥
जे जह जीवाईया भावा परिसंठिया सभावेण । सद्दहइ ते तह च्चिय अह एयं दंसणं होइ ॥
गम्मागम्मं जाणइ भक्खाभक्खं च वच्चमवच्चं । जाणइ य जेण भावे तं णाणं होइ पुरिसस्स ॥
परिहरइ पाव-ठाणं संजम-ठाणेसु वट्टए जेण । तं चारित्तं भण्णइ महव्वए पंचयं होंति ॥
जीवाणं अइवायं तह य मुसावाय-विरमणं दुइयं । अदिण्णदाण-मेहुण-विरई पडिच्चाओ सव्व-दव्वाणं ॥

1) J मिच्छाअविरती, J जोएहिं, J छव्विहं बंधओ णेत्थ संसारी. 2) P एयंतु दुट्ठचित्तो, J P कुसुम°, J सुह P अहं, J चिक्कणे भोए. 3) P om. ण, P अविरओ. 4) J मज्जं वि महाणिद्दा एते तु हवंति ते पमत्तातु । एतेसु जो अमतो, P पावगं. 5) P मोहा for लोहा, J एते, J भूतेहिं. 6) J जोआ तेहिं तुट्ठेहिं. 7) J एतइ वेतइ अं, J P सत्तट्ठ, P छवेगविहं, J बंधइ अ णोणं अहं होंतु ॥. 9) P चेव, P om. णवर. 10) J णेय भिण्णभिण्णेसु, J विअलेसु. 11) J अण्डपोत्तय, P पोयय, J जरसा, J संसेता, J ओवातिआ. 12) J जोणिय for जोणिसु. 13) J भेता तु होंति, P य for उ, J भवणवतिवाणवंतरजोतिसवासी, P भवणवणवाण,° P जोविस. 14) J थणितअग्गीआसण्णदीतह, J दिसकुमारा, J वाऊउदधी णागा, P वाऊदही, J om. य, J भेता. 15) J जह for अह, P जक्खारक्खस, J भूता, P महोरग य गंधव्वा, J एते. 16) P अन्ने for अवरे, JP एते, J -विध, J जोतिस. 17) तु for य, J दुविधा कप्पातीता य, P कप्पउववण्णा, J -भेता, J एते. 18) P om. लंतय, J °स्सार आणतपाणतो य दियलोओ, P °स्साराय-णपाणया य दिसियलोया. 19) J अच्चुतभेतेहि, P भेएएहिं, J -विधातु ।, P कप्पोववण्णा. 20) J कप्पातीता, J पंचविधा । एतेसु, J उ for हु. 21) P अणेग, J कम्माभूमा, the second pada may be read thus: कम्मय-भूमा अकम्म-भूमा य ।. J -दीवा, P सवराई. 22) J यसंखभेता दुपता अपता चउप्पता, P पक्खा अप्पाईया, J सप्पातीआ, J पसूअपत-. 23) P पत्थर-भेएहिं ण ते, J भेतेण ते, P विभज्जंति. 24) J सायर, J कम्मबंधा. 25) P सुकयभीमसंसारे ।. 26) J सो for से, P से सोहइ. 27) P ववहरय. 29) J जो for जे, J जीवातीआ P जीवाएया, J परिसंठिता, P परिसंठिया सयावेण, P होंति for होइ. 30) P गंमागंमा न याणइ, P वच्चं for वच्चमवच्चं, P भावो तं. 31) P -ट्ठाणं, P -ट्ठाणेसु, J वच्चए for वट्टए, J पंचतं. 32) J अतिपातं, J मुसावात, J दुतिअं P दुईयं, J °दाण-, J विरती, P विरइअपरिच्चाउ पंचमयं ॥.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहुमं वा बायरं व जीवं मण-वयण-काय-जोगेहिं । ण वहइ ण वहावइ य वहयंतं णाणुजाणाइ ॥
भय-हास-कसाएहिँ य अलियं मण-वयण-काय-जोगेहिं । ण भणइ ण भणावेइ भणमाणं णाणुजाणाइ ॥
गामे णयरे अदिण्णं मण-वय-काएहिँ तिविह-जोएहिं । ण य गेण्हे गिण्हावे गेण्हंतं णाणुजाणाइ ॥
दिव्वं माणुस-तिरियं इत्थि मणो-वाय-काय-जोएहिं । ण य भुंजइ भुंजावए भुंजंतं णाणुजाणेज्जा ॥
थोव-बहुं सावज्जं परिग्गहं काय-वाय-जोएहिं । ण कुणइ ममत्तं कारेइ णेय ण य भणइ तं कुणसु ॥
एया पंच पइण्णा घेत्तुं गुरु-देव-साहु-सक्खीया । राई-भोयण-विरई अह सो छट्ठं वयं कुणइ ॥
एया परिवालेंतो अच्छइ तव-संजमं करेमाणो । अह तस्स संवरो सो पावट्ठाणेसु जं विरओ ॥
एवं च संवरेणं संवरियप्पा वि णिज्जरं कुणइ । दुविहेण तवेणेयं अब्भिंतर-बाहिरेणं पि ॥
अणसणमूणोदरया वित्ती-संखेव-रस-परिच्चागो । काय-किलेसो संलीणया य बज्झं तवं भणियं ॥
पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तओ समाधी य । सज्झाय-चरण-करणं एयं अब्भिंतरं होइ ॥
एएण पओएणं पुव्व-भव-कोडि-विरइयं कम्मं । खेवेण णिज्जरिज्जइ णिज्जरणा होइ सा जाण ॥
ता संजम-णिज्जरणं काऊण इमं स जीव-सत्तीए । वच्चइ धम्मज्झाणं सुक्कज्झाणं तओ जाइ ॥
आरुहइ खवग-सेढिं खविउं कम्माइँ ताइँ चत्तारि । केवल-णाणमणंतं अह पावइ दंसणं चेव ॥
तो संभिण्णं पासइ लोयमलोयं च सव्वओ सव्वं । तं णत्थि जं ण पासइ भूयं भव्वं भविस्सं च ॥
तत्तो वि आउगंते संबोहेऊण भव्व-कमलाइं । खविऊण णाम-गोत्ते सेलेसिं पावए भगवं ॥
कायं वायं रुंभइ मण-रहिओ केवली सुहुम-जोगी । अह सयल-जोग-रहिओ सिद्धिपुरिं पावए जीवो ॥
जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं । सासय-सुहं अणंतं अह भुंजइ णिरुवमं जीवो ॥
ता एस एस धम्मो इमेण सज्झं च सासयं ठाणं । तेणुज्झिऊण रज्जं पव्वज्जं अह पवण्णो हं ॥'

§ २३५) भणियं च भगवया रायरिसिणा । 'भो भो दप्पप्फलिह-भुयप्फलिहा मंतिणो राइणो य भणिमो । एस दुरुत्तरो संसारो, महंतं दुक्खं, अणंतं कालं, परिणइ-विरसा भोगा, कडुय-फलं कम्मं, मूढो बहु-जणो, दुलग्गेण पावेयव्वं मणुयत्तणं, ण पाविज्जंति खेत्त-जाई-कुल-रूवारोग्गाइं, थोवं आउयं, विरला धम्मायरिया, दुल्लहो जिणवर-धम्मो । दुक्करो किरिया-कलावो, ण तीरइ मण-णिरोहो, सव्वहा दुक्खं संसारत्तणं ति । तेण णियय-जीयं पिव रक्खह पाणिणो, अव्वत्तव्वमिव मा भणह अलिय-वयणं, तणं पिव मा गेण्हह पर-धणं, मायरं पिव मण्णह परदारं, सत्तुं पिव कलेह परिग्गहं, पडिवज्जह इमं । अवि य ।

जर-मरण-रोग-रय-मल-किलेस-बहुलम्मि णवर संसारे । णत्थि सरणं जयम्मि वि एक्कं मोत्तूण जिणवयणं ॥'

ति भणमाणो समुट्ठिओ भगवं रायरिसी, णीसंगो विहरिउं पयत्तो । तओ कुमार, अम्हे तप्पभुइं सम्मत्त-मेत्त-सावगा जाया । पइट्ठियं च हियए जहा अम्हेहि वि एयं अवस्स कायव्वं ति । आगया आवासं । तत्थ मंतीहिं पेसिओ दूओ । अम्ह पिउणो भाया दढवम्मो महाराया अयोज्झाए, तेण य आणत्तं जहा दप्पप्फलिहो पढमपुत्तो रज्जे अभिसिंचसु त्ति । 'तह' त्ति पडिवण्णं रायलोएणं । एक्को मंती वेज्जो य एक्को भुयप्फलिह-जणणीय य मंतियं । अगणिऊण पर-लोयं, अवमण्णिऊण जण-वयणिज्जं, अवहत्थिऊण लोगायारं, अवलंबिऊण पावं, संजोइयं जोइयं, कालंतर-विडंबणा-मरण-फलं दिण्णं च मज्झ पाणं । तओ कुमार, वियंभिउं पयत्तो मज्झ सो जोओ । किं च जायं । थोवं पेच्छामि अच्छिएहिं, ण फुडं सुणेमि सवणेहिं, ण-याणामि गंधं णासियाए, ण संवेएमि फरिसं सरीरेण, ण विंदामि सायं जीहाए । णासए मई, पणस्सए बुद्धी, विणस्सए पण्णा । वियलियं सीलं, णिग्गया लज्जा, अवगया दया, अवहरियं दक्खिण्णं, पलाणं पोरुसं, परिहरिओ रईए, णिग्गच्छिओ विण्णाणेणं, पम्हुट्ठो संकाए, अवहत्थिओ विवेएणं ति । अवि य ।

1) J om. वा, J बातरं, J P वा for व, P वयजोगेहिं, J °जोएहिं, J वहेइ ण व होइ, P वहावेयं, P om. य. 2) J जोएहिं. 3) J गामणगरे व दिण्णं मणवइ-, P गेण्हे न य गिन्हावेइ गेण्हितं. 4) P जोगेहिं, J inter. णय भुंजावए and ण भुंजइ, P न भुंजए न भुंजावेई. 5) P न कुणइ ममत्तकारे, J om. णेय, P om. य. 6) J P एता, P घेत्तूं, P राती-, J विरतिं, P कुणति. 7) J P एता, J विरतो. 8) J संवरितप्पा, J दुविधेण, P वि corrected as पि. 9) P °ण मोणोयरिया, J परिच्चाओ, J संलीणता, J भणितं. 10) J ततो, P समाही, J एतं. 11) एतेण, J भुव्वं for पुव्व, P निज्जरज्जइ, J होहिइ इमा जाण 12) P तओ जीइ ॥. 14) P पासइ लोगं च, J लोअमलोवं, J सव्वतोवस्सं । P repeats the line तं नत्थि etc., J भूतं. 15) J संबोहेत्तूण सव्वजीवाओ ।. 16) P सिद्धिपुरं. 17) P सुहमणंतं. 18) P पवज्जोइं. 19) P °रिसिणो, P दप्पफलिहा, P om. भुयप्फलिहा. 20) J दुलुग्गपावे°. 21) P माणुसत्तणं, P जाती-, P दुलहो. 22) P मणो for मण, P दुक्खं संसारो । तेण, P अव्वत्तं पिव. 24) J om. अ वि य. 25) P एक्के, P जिणवयणमि ॥. 26) P om. भगवं, J तप्पभूतिं P तप्पभूइ, P om. मेत्त, J सावया. 27) P अम्हेहिम्मि, J पेसिआ दूआ, P पिउणा. 28) P दढधम्मो, P अउज्झाए, P दप्पहो, J पढमउत्तो, P om. तह त्ति. 29) J पडिवण्णे, P inter. एक्को and विज्जो, P om. य, P भुयफलिह. 30) P om. जण before वयणिज्जं, J लोआयारं, J जो for जोइयं, P विडंबिणा, J मरणप्फलं. 31) P थोअं, J सुणेमि समणएहिं. 32) J ण संवेवेमि प्फरिसं सरीरएणं, P फरुसं, J सातं for सायं, J मती. 33) P वियलए सीलं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विण्णाण-णाण-पोरुस-दाण-दया-बुद्धि-गुण-सयाइं पि । दारिद्देण व जोएण तेण सहस त्ति णट्ठाइं ॥

केवलं पियं-भाणिरं पि अप्पियं भणामि पणमंतं पि ताडेमि त्ति । एरिसं च मं पेच्छिऊण राय-लोओ 'हा हा कट्ठं'ति भणिऊण देव्वं उवालहिय ठिओ । अहं पुण कहिंचि गायंतो कहिंचि णच्चमाणो कहिंचि रुयमाणो कहिंचि हसमाणो कहिंचि णिवडंतो कहिंचि पहावेंतो रच्छा-कय-चीर-विरइय-मालो धूलि-धवल-सरीरो णिम्मल्ल-बद्ध-मुंड-मालो गहिय-खप्पर-करग्गो कइया वि परिहिओ, कइया विणियंसणो, कइया वि कहिं पि परिभममाणो इमं असंबद्धक्खरालाव-रइयं चच्चरियं णच्चमाणो । अवि य ।

यदि कश्चिविपश्चि न जातु सखे यदि सर्कस्सर्करला न भवेत् ।
यदि चन्द्रमुनीन्द्रमनङ्ग चितः यदि सोऽस्ति नमोऽस्तु नमोऽस्तु ततः ॥

एवं च वच्चमाणो कय-बाल-परियारो गामागर-णगर-पट्टणाराम-देवउल-सर-तलाय-तिय-चउक्क-चच्चर-महापह-पहेसु परिब्भममाणो इमं विंझगिरि-सिहर-कुहरंतरालेसु पत्तो । तओ तण्हा-छुहा-किलंतो, एक्कं-गिरिणई-पवाह-पत्थर-विवरंतरालम्मि पाणियं अणेय-बिल्ल-सल्लई-तमाल-हरडय-बहेडयामलय-पत्त-फल-पूर-णिज्जास-कसाइयं, तं च दट्ठूणं पीयं जहिच्छाए । णिसण्णो छायाए । तओ थेव-वेलाए वेलावस-समुच्छलिय-सलिल-सागर-तरंग-रंगंत-सरिसो उदरब्भंतरो जाओ । विरिक्को उड्ढं अहेण य । तओ णीहरिउं पयत्तो । पुणो पीयं, पुणो विरिक्कं । पुणो पीयं जाव सव्व-दोसक्खओ जाओ त्ति ।

§ २३६) तओ पच्चागयं पिव जीविएणं, उइयं पिव दिवायरेणं, उग्घाडियाइं व दिसि-मुहाइं, आगयं पिव बुद्धीए, संपत्तं पिव सुमरणाए, पावियं पिव विवेगेणं, उद्धाइयं पिव वेयणाए, सव्वहा पढमं पिव सत्थ-चित्तो जाओ अहं । तओ चिंतियं मए । 'अहो, किमेयं मम वुत्तंतं जायं । णिग्गओ विव महाकंताराओ, णीहरिओ विव पायालाओ, उत्तरिओ विव समुद्दाओ, णिव्वुओ संपयं जाओ म्हि । ण-याणामि किं पि अहं आसी, किं ता पसुत्तो हं, किं वा गब्भ-गओ हं, किं वा मत्तो हं, किं उम्मत्तगो, सव्वहा जं होइ तं होउ । भुक्खिओ हं, ता अण्णेसामि एत्थ पुप्फं वा, फलं वा' चिंतेमाणेण पलोइयाइं पासाइं । जाव दिट्ठो अणेय-भिल्ल-परिवारो एक्को पसत्थ-रूव-वंजणायार-संपुण्णो पुरिसो । तेण य ममं पेच्छिऊण पसरमाणंतर-सिणेह-णिब्भरं भणियं 'सागयं तुह मह भाउणो, कत्तो सि आगओ' । मए भणियं 'अहं पुव्व-देसाओ आगओ' । तेण भणियं । 'पयट्ट, वच्चामो गामं' ति भणमाणो गंतुं पयत्तो, आगओ य इमं महापल्लिं । आरूढा एत्थ मंदिरोयरे । तओ तेण आणत्तो विलासिणियणो 'आणेसु पोत्तिए दोण्हं पि' । तओ अब्भंगिय-उव्वट्टिय-मज्जियाणं पविट्ठो देवहरयं । तत्थ 'णमो अरहंताणं' णिसुए अहं पि हरिस-वसुल्लसंत-पुलओ पविट्ठो । वंदिया य मए भगवंतो । चिर-दिट्ठं पिव बंधुं मण्णमाणेण भणियं तेण पुरिसेण । 'पणमामि साहम्मियं, अहो कयत्थो हं, पसंसणिज्जो हं धण्णो हं कय-पुण्णो अहं' ति । तओ मए वि सहरिसं सविणयं च पणमिओ । तओ कमेण उवविट्ठा भोयण-मंडवे । तत्थ जं जहा-रुइयं भोत्तुं भोयणं तओ सुहासणत्थाण य भणियं तेण । 'साहसु, कत्थ तुमं, कहं वा एयं देसंतरं पाविओ । कत्थ वा इमम्मि णरयामर-तिरिय-मणुय-भव-भीम-पायाल-किलेसे महाकोव-धगधगेंत-कराल-जालाउल-वाडवाणले जर-मरण-रोग-संताव-करि-मयर-जलयर-वियरमाण-दुरुत्तारे बहु-विह-कम्म-परिणाम-खार-णीसार-णीर-पडहत्थे हत्थ-परियत्तमाण-संपत्ति-विवत्ति-मच्छ-पुच्छ-च्छडाभिज्जमाण-तुंग-कुल-तरंग-भंगिल्ले राय-रोस-वेला-जल-पसरमाण-पवाहुम्मूलिज्जंत-वेला-वण-पुण्ण-पायवे संसार-सायरम्मि सिद्ध-पुरि-पावयं जाणवत्तं पिव भगवंताणं वयणं पावियं' ति ।

1) P त्ति नट्ठाणं ॥. 2) P पियं भणिओ वियप्पियं, P om. मं. 3) P उवालहिउं ट्ठिओ, P repeats कहिंचि नच्चमाणो, P नडंतो for णिवडंतो. 4) J पभावेंतो, P पहावंतो, P निम्मलबुद्धमुंडेमालो. 5) P चच्चरं. 6) P अपि च for अवि य. 7) P कश्चिद्विपश्चित्, J सर्कर सर्कर न भवेत्, P भवे. 8) P चंद्र, J चंद्रमर्तिद्र°, P °मनागतितयदि, J सोस्तु P सोस्ति. 9) J च णच्चमाणो, P om. सरतलाय, P महापहेसु. 10) P सिहरंतरालं पत्तो, P गिरिनइं. 11) P बिल्लईतमाल, P हरडइबहेडओमलय, P -कसाइयं, J adds तओ before तं च. 12) J थोव for थेव, J °वसमुच्छलिय, J सायर, P सागरतरंगंत, J उरब्भंतरो, P उदब्भरो, P विरिक्के. 13) P adds सो जाओ पुणो पीयं between पयत्तो । and । पुणो, J जा for जाव. 14) J दिसिवहाइं. 15) P समत्तं for संपत्तं, J उद्धाइतं P उद्धाइयं, J वेतणाए, J जाओ हं. 16) P उद्धरिओ इव. 17) J त्ति for म्हि, P मह for पि अहं, J आसि, J गब्भगतो P गब्भओ. 18) P किं वोमत्तगो, J भुक्खितो, J व for वा after फलं. 19) J -संपण्णो, P मं ते for य ममं, J °माणंतर°. 20) P गब्भिणंगभणियं, P भायत्तोणो for भाउणो, P om. आगओ after देसाओ. 21) P इमं पल्लिं, J मंदिरोवरो. 22) P विलासिणीयणो, P पोत्ती दोण्हं, P आब्भंगिय, P उव्वत्तिअ, P तओ for तत्थ. 23) P अरिहंताणं, P सुए for णिसुए, P दिट्ठं. 24) P om. पुरिसेण, P धणो for धण्णो, P om. हं, J हं for अहं. 25) P च, P उवविट्ठो, P जहारुययं भोत्तूण [भोत्तं भोयणं ।]. 26) J पाविओ ।, P इमम्मि नरयामरयामर. 27) P कलसे for किलेसे, P वडवानले, J मरणारोग, P दुत्तरे for दुरुत्तारे. 28) P खायर for खार, P पडिहत्थे, J विपत्तिमच्छपुंछ, J रंगिल्लो for भंगिल्ले. 29) P पसरमाणपवाहुमूलि°, P रण्ण for वण, J पावियं तेण । जाण°. 30) P adds पिव before वयणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २३७) मए भणियं । 'रयणपुरे रयणचूडो णाम राया । तस्स पुत्तो हं दप्पफलिहो णामं ति । धम्मो उण तेणेय भगवया पत्तेय-बुद्धेण होऊण साहिओ । उम्मत्त-जोएण य परव्वसो एत्थ अरण्णे पाविओ' त्ति । एवं च साहिए समाणे भणियं तेण । 'किं तुमं सोमवंस-संभवस्स रयणमउडस्स पुत्तो । दे सुंदरं जायं, एक्को अम्हाण वंसो । तुमं एत्थ रज्जे होसु संपयं' ति भणमाणेण सद्दाविया सव्वे सेणावइणो । ताण पुरओ सिंहासणत्थो अहिसित्तो अहं । तेण भणिया य ते सेणावइणो । 'भो भो, एस तुम्हाणं समयट्ठियाणं राया पालओ । अहं पुण जं रुइयं अत्तणो तं करीहामि' भणिए तेहिं 'तह'त्ति पडिवण्णं । तओ णिग्गओ तक्खणं चेय सो राया । तस्स य मग्गालग्गा अम्हे वि णीहरिया । तओ थोयंतरं गंतूण भणियं णेण 'सेणावइणो, वच्चह, णियत्तह तुब्भे । खमियव्वं जं किंचि मज्झ दुव्विलसियं । परियालेयव्वाओ ताओ तुब्भेहिं पइण्णाओ पुव्व-गहियाओ'त्ति भणमाणो गंतुं पयत्तो । ते वि भूमि-णिवडिया उत्तिमंगेण गलमाण-णयणया णियत्ता सेणावइणो । अहं पि थोयं पएसंतरं उवगओ तेण भणिओ 'वच्छ, दे णियत्तसु । केवलं एए मिच्छा जइ समयाइं पालयंति पुव्व-गहियाइं । तओ तए पालेयव्वा, अहवा परिच्चएयव्व त्ति । अण्णं च,

संसार-सायरम्मि दुक्ख-सयावत्त-भंगुर-तरंगे । जीवाण णत्थि सरणं मोत्तुं जिण-देसियं धम्मं ॥

तम्मि अपमाओ कायव्वो' त्ति भणमाणो पवसिओ । ण उण केणावि णाओ कहिं गओ त्ति । एवं पुण मए विगप्पियं गंतुं अणगारियं पव्वजमब्भुवगओ'त्ति । तप्पभुइं च कुमार, पेच्छामि इमे मेच्छा ण मारेंति तण-जीवाणं, पसुं ण घाएंति अघायमाणं, ण हणंति पलायमाणं, ण भणंति कूड-सक्खेज्जं, ण लुंपंति अप्प-धणं पुरिसं, ण मुसंति महिलियं, ण छिंदंति अवहत्थयं, मुसिऊण वि पणामेंति थोयं, ण गेण्हंति अणिच्छं जुवइयं तं पडिवज्जंति भगवंतं भव-विणासणं देवाहिदेवं ति । तओ कुमार, कालेण य वच्चमाणेण अकायव्वं पि काउं समाढत्तं, जेण महंतो मोहो, गरुओ कोवो, महामहल्लो माणो, दुज्जओ लोहो, विसमा कुसील-संसग्गी, सव्व-कम्म-परायत्तणेणं जीवाणं । अहं पि तं चेय चोर-वित्तिं समस्सिओ त्ति । दिट्ठं चिय तुब्भेहिं । तओ चिंतियं मए । 'अहो, अकल्लाणो एस मेच्छ-पसंगो । ता मज्झ एस मेच्छ-वावार-विणडियस्स एयं पि अणेय-भव-परंपरा-पवाह-पूर-पसर-हीरमाणस्स कुसमयावत्त-गत्तावडियस्स इमं पि पम्हुसीहिइ भगवओ वयणं ति । तेण मए आणत्तो एस पुरिसो जहा 'अहं लोहेण इमं एरिसं अवत्थं पाविओ, तेण लोह-दंडेण ताडेयव्वो दियहे दियहे इमं भणमाणेणं'ति । ता एत्थंतरे पुच्छियं तए जहा 'को एस पुरिसो, किं वा तुमं पि इमिणा पहओ' त्ति । तुह पुण पुरओ ताडियस्स महंतो मह उव्वेओ जाओ'त्ति ।

§ २३८) तओ भणियं कुमारेण । 'अहो महंतो वुत्तंतो, महासत्तो रयणमउडो, महातिसओ पत्तेय-बुद्धो, दुलहो जिणवर-मग्गो, महंतो उवयारो, णीसंगा रिसिणो, महंतं वेरं एग-दव्वाभिलासित्तं, दुज्जओ लोह-पिसाओ, णिव्विवेगा पाणिणो, पयईए अणुवगय-वच्छला महापुरिसा, परिच्चयंति चक्कवट्टिणो वि रज्जं, होइ च्चिय साहम्मियाण सिणेहो । परिवालेंति मेच्छा वि किं पि कस्सइ वयणं ति । अवि य,

ण य अत्थि कोइ भावो ण य वुत्तंतो ण यावि पज्जाओ । जीवेण जो ण पत्तो इमम्मि संसार-कंतारे ॥

ता संपयं परिहरसु णिक्करुणत्तणं, मा अणुमण्णह चोर-वित्तिं, उज्जमसु तव-संजमम्मि, अब्भुट्ठेसु जिणवर-मग्गे, उज्झसु चंचलं लच्छिं । अवि य ।

रज्ज-सिरीओ भोगा इंदत्तणयं च णाम अणुभूयं । जीवस्स णत्थि तुट्ठी तम्हा उज्झाहि किं तेण ॥

एवं च कुमार-कुवलयचंदेण भणिए, जंपियं दप्पफलिहेणं 'एवं च एयं ण एत्थ संदेहो त्ति । अह उण कुमारस्स रूव-विण्णाण-णाण-कला-कलाव-विणय-णय-सत्त-सार-साहस-दक्खिण्णाईहिं गुणेहिं साहियं जहा महाकुल-णहयल-मियंको महापुरिसो त्ति । इमं पुण ण-याणामि कयरं तं कुलं, किं वा कुमारस्स सव्व-जण-हियय-सुहयं णामं ति । ता करेउ अणुग्गहं कुमारो, जाणिउं

1 > J भणियं । रयणचूडो णाम रयणपुरे अत्थि राया ।. 2 > P भगवया पुत्तेयबद्धेण, J पारव्वसो, P एत्थारन्ने. 3 > J संभमो त्ति रयण°. 4 > P सिंघासणत्थो, J अभिसित्तो. 5 > P सेणावइणा, P adds एक्को before भो भो, J तं कीरीहामि. 6 > P थोवंतरं, 7 > J ण्णेण P तेण for णेण, P om. मज्झ, P परिव्वाले.° 8 > J पइण्णाइ पुव्वगहिआहिं भण°, P -निवडिओत्तिमंगा. 9 > P थोवंतरं पएसं उवगतो, J om. भणिओ, JP एते for एए, J समायाइं वालयंति. 10 > J पालेअव्वो P पालियव्वा, J परिच्चयतव्व. 11 > P सायरंमी. 12 > P अप्पमाओ, P पवेसिओ, P हं किं वि for कहिं, P यं पुण, J विअप्पिअं. 13 > J पव्वज्जा अब्भु°, J P तप्पभूइं, J पेच्छा for मेच्छा, P मारंति, J तणजीवणं, P घायंति. 14 > J om. ण हणंति पलायमाणं, P -सखेज्जं, J लुप्पंति, P अत्तधणं. 15 > J पणामंति, P थोवयं, J अगेण्हंति for ण गेण्हंति, P अणिच्छियजुवइं, J om. तं, J भगवंतं रूव विण्णासदेवा.° 16 > P om. कुमार कालेण य etc. to लोहो विसमा. 17 > J परअत्तणेणं, P चोरयवित्तं. 19 > P कुसुमयावत्त-, J पम्हुसीहिति, P भगवया. 20 > P जहालोएण इमं, P adds त्ति । after पाविओ, J भणमाणएणं ति. 21 > P एयं तए for एत्थंतरे, P ति for तए, J om. पि. 22 > J मह उव्वेगो, P उव्वेवो. 23 > P महं for महंतो, P महाइसओ पत्तेय°. 24 > J संगा for णीसंगा, J दव्वाहिलासित्तं. 25 > J संति for पयईए, P repeats महा, J परिच्चयति, P om. वि, P साहम्मियाणंमि. 27 > P कोवइ for कोइ, P जोग for जो ण. 28 > P adds वि after संपयं, J om. मा, P उब्भुट्ठेसु. 30 > J भोगे for भोगा, P उज्जाहि. 31 > P भणियं for भणिए, P om. च, J इण for उण. 32 > J om. णय, P om. सार, J दक्खिणातीहिं, J साहिउं, P इयं for इमं. 33 > P om. तं, P inter. कुमारो & अणुग्गहं, P जाणिउमिच्छामित्ति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छामि'त्ति । तओ कुमारेण भणियं 'अच्छउ ता सयलं जंपियव्वं । पुच्छामि पुच्छियव्वं किंचि तुम्हे' । तेण भणियं 'पुच्छउ कुमारो' । कुमारेण भणियं 'जो सो दढवम्मो णाम राया अयोज्झाए पुरवरीए तुज्झ पिसिओ, तस्स किं कोइ पुत्तो अत्थि, किं वा णत्थि'त्ति । तओ तेण दीहं णीससिऊण भणियं 'कुमार, कत्तो एत्तियाइं पुण्णाइं । एकं पुण मए एकस्स देसियस्स वयणाओ सुयं जहा दढवम्म-महाराया सिरिं आराहिय पुत्तवरं पाविओ । पुणो ण-याणामि किं तत्थ वत्तं । को वा एत्थ मज्झ-गिरि-सिहर-विवरंतराल-महागहणेसु सायत्तो पइसइ'त्ति । कुमारेण भणियं 'अहं सो जो सिरिप्पसायओ लद्धो दढवम्म-राइणो पुत्तो, णामं च मह कुवलयचंदो'त्ति । एवं च उल्लविय-मेत्ते अभिभाविऊण भाउओ त्ति काउं कंठे गहिऊण रोइउं पयत्तो, तओ परियणेण संठविया, गहियं च णयण-धोवणं जलं, उवविट्ठा आसणेसु । तओ पुच्छियं दप्पफलिहेण 'भणसु, केण उण वुत्तंतेण तुमं एगागी एत्थ य संपत्तो, किं कुसलं राइणो दढवम्मस्स, कहं दढा देवी सामा, अवि थिरं रज्जं' । एवं च पुच्छिए साहियं सयलं वुत्तंतं कुमारेण । संपयं पुण विजयणयरीए कुवलयमाला संबोहेयव्व त्ति । एवं च पिय-कहालाव-जंपिएहिं अच्छिऊण दोण्णि तिण्णि दियहाइं, भणियं च कुमारेण 'ताय, जइ तुमं भणसि, तओ वच्चामि अहं विजयपुरवरिं'ति ।

§ २३९) इमं च सोऊण भणियं दप्पफलिहेण 'कुमार, कत्थ गम्मए एरिसेसु दियहेसु, किं ण पेच्छसि, दव-दड्ढ-विंझ-पव्वय-सिहर-सरिच्छाइं वड्ढमाणाइं णव-पाउसम्मि, पेच्छसु सुहय, णवब्भाइं दीसंति ।

कोमल-तमाल-पल्लव-णीलुव्वेल्लंत-कोमलच्छाया । कत्थइ गय-कुल-सरिसा मिलंति मेहा गयण-मग्गे ॥
कत्थइ वण-सर-हिक्कास-कास-बहलद्ध-लग्ग-मइलंगा । वण-महिस व्व सरहसं वियरंति य मेह-संघाया ॥
अणुमग्ग-लग्ग-भंगुर-जरढ-महापत्त-पत्त-सच्छाया । करि-प्पयर व्व सरोसा कत्थइ जुज्झंति वारिहरा ॥
पलउव्वेल्लिर-हल्लिर-समुद्द-वेला-तरंग-रंगंता । पवण-वसुच्छलमाणा कत्थइ जलयावलि-णिहाया ॥
डंडाहय-कुविय-भुयंग-भीम-भिंगंग-सामलच्छाया । वियरंति कत्थइ णहे असुर व्व सकामिणो जलया ॥
इय सामल-जलय-समाउलम्मि णव-पाउसस्स वयणम्मि । को मुंचइ दइय-जणं दक्खिण्णं जस्स हिययम्मि ॥'

एवं च भणिओ समाणो ठिओ कुमारो । तम्मि य काले केरिसो पवणो वियरिउं पयत्तो । अवि य,

णव-पच्चमाण-सहयार-गंध-पसरंत-परिमलुग्घाओ । वियरइ वणंतरेसुं कत्थइ पवणो धमधमेंतो ॥
पढमोवुट्ठ-महीयल-जल-संगम-संगलंत-गंधड्ढो । वायइ सुरही पवणो मय-जणओ महिस-वंद्राणं ॥
धूली-कयंब-परिमल-परिणय-जरढायमाण-गंधिल्लो । सिसिरो वियरइ पवणो पूरंतो णासिया-विवरे ॥
इय पसरमाण-खर-फरुस-मारुया वेय-विहुर-धुय-पक्खा । रिट्ठा करेंति णट्टं कह-कह वि कलिंच-भिवहेहिं ॥

पढमोवुट्ठे य पुहइ-मंडले किं जायं । अवि य उब्भिज्जंति णव-कोमल-कंदल-णिहायइं । णच्चंति बरहिणो गिरिवर-विवर-सिहरेसु । दीण-विमणओ पावासुय-घरिणीओ । उब्भिज्जमाण-णवंकुर-रेहिर पुहइ । आउलीहोंति जणवया । सज्जंति पवा-मंडवा । हल-लंगल-वावड हलिय । णियत्तंति पंथिय । छज्जंति गामेसु घरइं । णिय-चंचु-विरइय-घरोयरे संठिय चडय । कीरंति मट्टिया-गहणइं भगवेहिं । बज्झंति वरणाबंधइं कासएहिं । जलं जलं ति वाहरंति बप्पीहय-कुला य । कलिंचय-वावड-विसर-मुह-धम्मलाभ-मेत्त-लद्धावलद्ध-वित्ति-परवसइ संठिय तव-णियम-सोसिय-सरीर-सज्झाय-ज्झाण-वावड साहु-भडरय त्ति ।

णव-पाउसम्मि पत्ते धाराहय-घोरणेहिँ तुरंतो । को य ण करेइ गेहं एक्क च्चिय कोइला मोत्तुं ॥

§ २४०) तओ एरिसे णव-पाउसम्मि किं कुणंति पउत्थवइयाओ । अवि य ।

सुरयावसाण-चुंबण-समय-विदिण्णम्मि ओहि-दियहम्मि । लेहा-विगणिय-पुण्णम्मि णवरि जीयं विणिक्खित्तं ॥
सहि-दंसणेहि दियहं राई उण सुविण-विप्पलंभेहिं । दइया-दिण्ण-दिणं पिव गयं पि मुद्धा ण-याणाइ ॥

1) J आसवलं for ता सयलं, J om. पुच्छामि पुच्छियव्वं, P तुब्मे for तुम्हे. 2) P जं for जो, P दढधम्मो, P om. अयोज्झाए पुरवरीए. 3) P कुओ for कत्तो, P देसिवयणाओ. 4) J णिसुयं for सुयं, JP दढधम्मो, J महाराइणा, J पुत्तवरो, J पत्तं for वत्तं, P को वि एत्थ सज्झसिरि-. 5) J सिहरकुहरंतराल, J adds को before सायत्तो, P साइत्तो, P om. जो, P सिरिपसायलद्धो, J adds य before लद्धो, JP दढधम्म-. 6) J adds सो अहं before णामं, P मेत्त for मेत्ते, P भाउगो. 7) J adds य before संठविया, J -धावणं, P दप्पफलिहेणा. 8) P om. य, J P दढवम्मस्स, P महादेवी for दढा देवी. 9) P पुच्छिए सयलं पि साहियं वुत्तंतं. 10) P जपिरेहिं, P दो for दोण्णि, J विजयं पुरवरिं. 12) P दढप्फलिहेण. 13) P समाणाइं for सरिच्छाइं, P नवब्भाइं. 14) J गयउलसरिसा P कुलगइसरिसा मिलंते. 15) J बहलदलग्ग, P तण for वण, P सहरिसं for सरहसं. 17) J पलवुव्वे°, J रंग व्व P रंगं वा ।. 18) J कुवियमहाभुअंगभिंगिग. 19) P पाउसवयस्स. 20) P om. च. 21) J गरु for गंध, P पलिमलग्घाओ. 22) J वट्ट & P वुड्ढ for वुट्ठ. 23) P जहारमाणगंधल्लो, J -गंडिल्लो. 24) P निच्चं for णट्टं, P om. वि. 25) P पढमो वुट्ठो य, P वहिणगिरिवरदीग. 26) J उज्जंति, P भज्जंति for सज्जंति(emended), P मंडव. 27) P -नंगल for लंगल, P ग्गामे for गामेसु, P घरोयरसंठिय, P चियड for चडय. 28) P बंधंति, P वग्घेहिं for कासएहिं, J जलजलं, P कलिंचवावडविहं मुह-. 29) J धम्मलाभ-, J om. लद्धाव, J om. वित्ति, P सज्झाण, J वावडसाधुणभडयर च त्ति, P -भडरय त्ति ।, J adds अवि य after त्ति. 30) J धाराभरघोरणीहिं दूरंतो, P न for य. 31) J एरिसम्मि for एरिसे, J पउत्थपइयाउ. 32) J भुवण for चुंबण, J विइण्णम्मि, P लाभा for लेहा, J णवर जीअं, P जीवा विणिक्खित्तो. 33) P सहिदंसणेहि, J राईजणसुइण, J दइअदयादिण्णादिण्णं गयं.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अणुदियहं पि गणेंती तं दियहं णेय जाणए मुद्धा । भीमेहिँ रक्खसेहिँ व हिय-हियया काल-मेहेहिँ ॥
अणुसमय-रुयंतीए बाह-जलोयालि-मइल-वयणाए । पेच्छह जलओ जलओ गय-लज्जो गज्जए उवरिं ॥
मा जाण ण वज्झाइं मा ए मलिणाइं विंझ-सिहराइं । सहियायण-वेलविया मुच्छा-विरमे समूससिया ॥
गज्जसि अलज्ज विज्जुजलो सि दे गज्ज जलय मा उवरिं । झीण-सिरिएण तेणं उज्झिय-झीणाएँ बालाए ॥
इय णव-जलहर-माला-मुहल-मिलंतेहिँ को ण जूरविओ । तव-संजम-णाण-रयं साहु-जणं णवर मोत्तूणं ॥

तओ तं च तारिसं लक्खिऊण अहिणव-मलिण-जलय-माला-संवलंतुव्वेल्लमाण-बलायावली-कय-कवाल-मालालंकारे झत्ति तइय-णयणग्गि-विलसंत-विज्जुलए गज्जिय-भीमट्टहास-णच्चणायद्ध-केली-वावड-हर-रूव-हरे मेघ-संघाए गज्जंत-मेह-सद्द-संकाउएसु पलायमाणेसु माणस-सरवर-माणसेसु मुद्ध-रायहंस-कुलेसु चिंतियं कुमारेण । अवि य ।

कसिणाण विज्जु-पुंजुज्जलाण गज्जंत-भीम-णायाणं । मेहाण रक्खसाण व को चुक्कइ णवर पंथम्मि ॥

ता ण जुज्जइ मह पइं पडिवज्जिऊण । एवं च पडिवण्णे णव-पाउस-समए तेण भाउणा सह अणुदियहं वड्ढमाण-सिणेह-भावो अच्छिउं पयत्तो । तओ कमेण य संपत्तेसु इंदमह-दियहेसु कीरमाणासु महाणवमीसु होंत-मणोरहेसु दीवाली-छण-महेसु पयत्तासु देवउल-जत्तासु वोलिए बलदेवूसवे णिप्फज्जमाणेसु सव्व-सासेसु बद्ध-कणिसासु कलमासु हलहल-वड्डिरेसु पुंडेच्छु-वणेसु वियसमाणेसु तामरस-संडेसु कय-कंदोट्ट-कण्णपूरासु सालि-गोवियासु ढेंकंतेसुं दरिय-वसहेसु कोमल-बाल-मुणाल-वेल्लहल-बाहुलइयालंकार-धवल-वलयावली-ताल-वस-खलखलामुहलालाव-गीय-रास-मंडली-लीला-वावडेसु गामंगण-गोट्ठ-जुवाण-जुवल-जणेसु चिंतियं कुमारेण । 'गंतव्वं मए तेण कज्जेणं । अवि य ।

तं णारहंति कज्जं जं ण समाणेंति कह वि सप्पुरिसा । आढत्ते उण जीयं वयं व णियमा समाणेंति ॥

ता ण जुत्तं मज्झ असमाणिय-कज्जस्स इह अच्छिउं' ति चिंतयंतेण भणिओ दप्पफलिहो । अवि य ।

'जायस्स केण कज्जं अवस्स मरणाइ सव्व-जीवस्स ।'

णरवइणा भणियं ।

'जइ सीसइ तुम्ह फुडं जायस्स तु मच्चुणा कज्जं ॥'

कुमारेण भणियं 'अहो जाणियं, अण्णं पि पण्हं पुच्छिमो' । अवि य ।

'इट्ठस्स अणिट्ठस्स व संजोए केण कह व होयव्वं ।'

भणियं च सेणावइणा ।

'को व ण-याणइ एयं संजोए विप्पओएणं ॥'

§ २४१) इमम्मि य णरवइणा उल्लविए समाणे जंपियं कुमारेणं सहासेण । 'जाणियं तए संजोए विप्पओएण होयव्वं, ता वच्चामि अहं तेण कारणेणं'ति । णरवइणा भणियं 'किं अवस्सं गंतव्वं कुमारेण । जइ एवं, ता अहं पि सयलं परिवहऊण रज्जं वच्चामि कं पि पएसं । तत्थ अणगारियं पव्वज्जमब्भुवेहामि'त्ति भणमाणा णीहरिया ताओ पल्लीओ । भणियं च णरवइणा 'अहं सव्व-बल-वाहणो चेव तुह सहाओ तं विजयपुरवरिं वच्चामि' । कुमारेण भणियं 'ण एवं, केण किं कज्जं । जेण दुग्गमो देसो, दूरं विसयंतरं, बलवंता णरवइणो अणुबद्ध-वेरा, तुब्भे थोवं बलं ति, तेण एक्को चेय सत्त-सहाओ तं कज्जं साहेहामि' । तेण भणियं 'जइ एवं ता अभिप्पाय-सिद्धी होउ कुमारस्स' । कुमारेण वि भणियं । 'एवं होउ गुरूणं पसाएणं'ति भणमाणेण समालिंगिओ । पडिओ पाएसु कुमारो, पणमिओ य साहम्मियस्स । 'वंदामि'त्ति भणमाणो चलिओ कुमारो दक्खिणं दिसाभोगं । तओ णरवई वि ठिओ पलोएंतो कुमार-हुत्तं ताव जा अंतरिओ तरुण-तरुवर-वण-लया-गुम्म-गहणेहिं

1) P गणंती तं दियहं, P महिला सा for व हियहियया. 2) P अणवरय रुवंतीए बाहजलोरल्लिधोयनयणाए ।. 3) J वद्दाइं for वज्झाइं, P । मयसहियण. 4) P जलय मा एवं । उवरिम्ह वारिएणं विओयज्झीणीए बालाए ।. 5) J साहुअणं. 6) J -जलिय, P -व्वेल्लमाणा, J -पलायावली. 7) J °णाबंध-, J केवली for केली, P संकालएसु. 8) J °प्पलाय°, J repeats मुद्ध, J °हंसउलेसु. 9) J भीममायाण ।, P महाण for मेहाण. 10) P om. च, P समं for सह, J अणुदिअहा, JP वट्टमाण J सिणेहोवयारो वोलाविउं पयत्तो. 11) P om. य, P adds वोलिए बलपवऊसवो after दियहेसु, J कीरमाणेसु, P दीवालिय-. 12) P जुत्तासु for जत्तासु, P om. वोलिए बलदेवूसवे, P निप्पज्जमाणेसु, J सव्वसरसेसु. 13) J पुण्णच्छरणेसु P पुन्नच्छुवणेसु, J वणेस for संडेसु, J -जलासु for पूरासु, J साल-, P सालिणावियासु ढेंकंतेसुं, J -वसभेसु. 14) P तालवसलामुहलाराव, J रोसय for रास, J ला & P कीला for लीला. 15) P गोह for गोट्ठ, P जुयलजलेसु, J adds त्ति before चिंतियं. 16) J तण्णारहंति P तं नारुहंति, P समाणंति, J वडं for वयं, P ति for व, P समाणंति. 17) J दप्पप्फलिहो. 18) J जीअस्स for जायस्स. 20) P तुज्झ for तुम्ह, J जातस्स, P उ for तु. 21) J जाणियं अ अण्णं पि मज्झ पुच्छिमो. 22) P कह वि for कह व. 23) J om. च. 24) P repeats एयं, P विप्पओगेणं. 25) P एयंमि for इमम्मि, P विप्पओगेण. 27) P किं पि for कं पि, P ओ for ताओ. 28) P विजयपुरिं सरस वच्चामि, J om. केण. 29) P तुज्झे थोवं. 30) P साहेसामि, J adds तुहं before होउ, P om. ति. 32) P दक्खिणदिसिभागं, J दिसाभोअं, J om. कुमारहुत्तं, P जाव for जा, P तरुयरवणालया.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ति । तओ आगओ गेहं । दक्खिऊण दक्खिणिज्जे संमाणिऊण संमाणणिज्जे संठाविऊण पणइयणं काऊण करणिज्जं दाऊण दायव्वं भोत्तूण भोज्जं तक्खणं चेय णीहरिओ । अब्भिंतर-घर-वियरमाण-विरह-जलण-जालावली-तविज्जंतुव्वत्तमाण-णयण-पलाल-माल-सकज्जल-बाह-जल-पवाह-पूर-पसर-पव्वालिज्जंत पलोइज्जंतो दीण-विमणेणं विलासिणियणेणं णीहरिओ सो महासत्तो ।

§ २४२) कुमारो वि कमेण कमंतो अणेय-गिरि-सरिया-महाडईओ य वोलेमाणो णाणाविह-देस-भासा-दुलक्ख-जंपियव्वयाइं बोलेमाणो अणेय-दिव्व-विज्जाहर-मणुय-वुत्तंते पेच्छमाणो संपत्तो तं दाहिण-मयरहर-वेला-लग्गं विजयापुरवरी-विसयं । दिट्ठं च तं कुमारेण । केरिसं । अवि य, बाण-खेव-मेत्त-संठिय-महागामु । गामोयर-पय-णिक्खेव-मेत्त-संठिय-णिरंतर-धवलहरु । धवलहर-पुरोहड-संठिय-वणुज्जाणु । वणुज्जाण-मज्झ-फलिय-फणस-णालिएरी-वणु । णालिएरी-वण-वलग्ग-पूयफली-तरुयरु । तरुयरारूढ-णायवल्ली-लया-वणु । वणोत्थइयासेस-वण-गहणु । वण-गहण-णिरुद्ध-दिणयर-कर-पब्भारो य त्ति । अवि य ।

चंदण-णंदण-एला-तरुयर-वण-गहण-रुद्ध-संचारो । साहा-णिमिय-करग्गो वियरइ सूरो पयंगो व्व ॥

जहिं च सुह-सेवओ तरुयर-च्छाइओ सुपुरिस-पाय-च्छाहिओ व, वहंति कीर-रिंछोलियउ लोयय-उत्तओ व, महिज्जंति सज्जण-समागमइं इट्ठ-देवयइं व, उण्णयइं तरुयर-सिहरइं सप्पुरिस-हिययइं व । धावंति तण्णय पामर व्व, गायंति जुवाणा माहवी-मयरंद-मुइय-मत्त-महुयरी व त्ति । जहिं च सीयलइं सकज्जइं ण परकज्जइं, मण्णंति पहिय-वंद्रइं ण पुत्त-भंडइं, पसंसिज्जंति सीलइं ण विहवइं, लंघियवइयइं उच्छु-वणइं ण कलत्तइं, जलाउलइं वप्पिणइं ण जण-संघयइं ति । जहिं च मयल-घुम्मिरायवुलोयण णंगल-वियावड य बलदेवु जइसय पामर, अण्णि पणि बाल-कालि णारायणु जइसय रंभिर-गो-वग्ग-तण्णय-वावडा गोव-विलासिणी-धवल-वलमाण-णयण-कडक्ख-विक्खेव-विलुप्पमाण व, अण्णि पणि संकर-जइसय भूई-परिभोग-ढेक्कंत-दरिय-वसहेक्क-वियावड व त्ति । अवि य ।

बहु-सुर-णियर-भमंतर-दिव्व-महा-तरुवरेहिँ उच्छइयं । बुहयण-सहस्स-भरियं सग्गं पिव सहइ तं देसं ॥

तं च तारिसं देसं मज्झं-मज्झेण अणेय-गाम-जुवइयण-लोयणेंदीवर-माला-पूइज्जंतो गंतुं पयत्तो । तओ कमेण य दिट्ठा सा विजया णयरी । केरिसा ।

§ २४३) अवि य । उत्तुंग-धवलहरोवरि-पवण-पहय-विलसमाण-धवल-विमलुज्जल-कोडि-पडाया-णिवह-संकुला, णाणाविह-वण्ण-रयण-विण्णाण-विण्णास-विणिम्मविय-हम्मिय-सिहरग्ग-कंचण-मणि-घडिय-पायार-वलय-रेहिर-विद्दुम-मय-गोउर-कवाड-मणि-संपुड त्ति । जा य लंकाउरि-जइसिय धीर-पुरिसाहिट्ठिय ण उण वियरंत-रक्खसाउल, धणय-पुरि-जइसिय धण-णिरंतर ण उण गुज्झय-णिमियत्थ-वावार, वारयाउरि-जइसिय समुद्द-वलय-परिगय ण संणिहिय-गोविंद । जहिं च ण सुव्वंति ण दीसंति वयणइं बहुयणहो खलयणहो व । जहिं च दीसंति रमिज्जंति य दोलइं लायलइं च धवलहरेसु कामिणी-वयणेसु त्ति । किं बहुणा,

सिरि-सोहा-गुण-संघाय-विहव-दक्खिण्ण-णाण-भासाण । पुंजं व विणिम्मविया विहिणा पलयग्गि-भीएण ॥

तीए णयरीए उत्तरे दिसि-विभाए णीसहो णिसण्णो राय-तणओ चिंतिउं पयत्तो । 'अहो एसा सा णयरी विजया जत्थ सा साहुणा साहिया कुवलयमाला । तो केण उण उवाएण सा मए दट्ठव्वा । अहवा दे पुच्छामि कं पि जणं ताव पउत्तिं । को उण एवं वियाणइ । अहवा पर-तत्ति-तग्गय-वावारो महिलायणो, उद्द-रुच्छा-जीवणो चट्ट-जणो य । ता जहा सललिय-सहिण-मिदु-सुहुमंगुली-सणाह-चलण-पडिबिंब-लंछिओ मग्गो दीसइ एसो, तहा लक्खेमि इमिणा उदय-हारिया-मग्गेण होयव्वं ।

---

2) J अब्भंतर, J तविज्जमाणणयणथलाणणाल, P °व्वत्तमाणानयण-. 3) P बाहलपवाह, J °प्पवाह, P पव्वालिज्जंतो अवलोइज्जंतो, P विलासिणीनीहरिओ. 4) P गिरिया-, J दुलक्ख P दुल्लक्खं. 5) P adds जणव्वयाइं after जंपियव्वयाइं, P transposes तं after लग्गं. 6) P om. तं, J om. केरिसं, P बाणक्खेव, P महागाम, J गामोअरपाणखेवमेत्त, P धवलहरा । धवलपुरो°. 7) J -परोहड, P मंडिय for संठिय वणुज्जाणु, P om. फलिय, P -नालिएरिवण ।, J णालिएरिवण-, P पूयफ्फलीतरुयर. 8) J लयाजणु, J गहणरुद्ध, P पब्भार, J P व for य. 9.) J चंदण for णंदण, P एया for एला, J पवंगो. 10) J च्छाहिओ, P सुसुरिस, पायच्छाहिअओ, P om. वहंति कीररिंछोलियउ लोअयउत्तओ व, J सज्जणपसमागमइं. 11) P तरुअसिहरइं, P हिययं व J धावंति तणुयपामर च धायंति अवाणा माहवी.° 12) P मउय for मुइय, J महुअर व, J महिअ for पहिय. 13) P सीयलइं ण, J उच्छुरणइं, J om. ण कलत्तइं, P जिण for जण, P संघायइं, P जहिं च पामरसयणघुम्मुराणं यं च लोयणणंगर-. 14) J P व for य, P अन्ने पुण बालकालनाराणु, J बालकलिनारा°, P रंभिरा°. 15) J तणुअवावड, P धवलदलमाण, P om. विक्खेव, P P अण्णे पुणु, J संकर-. 16) P वसमेक्क. 17) P बहुसुरहिवणनिरंतर, P तरुवणेहिं, J उ for तं. 18) J om. तं च तारिसं देसं, P देसमज्झं, J जुवइजणेंदीवर P जुवईयणलोयणंदीवर, P om. य. 20) J धवलहरोअर-, P विमलुव्वज्जल, P संकुलं°. 21) P विण्णास for विण्णाण, P विणम्मविय, J पायाल for पायार, P रेहिरे-. 22) J जच्च for जा य, P विरयरंत, P धरियपुरिसजइजइजसिय. 23) P गुज्झयनमिअत्थ, P जइसिया, P सन्निहिया, P जहिं च दीसंति न सुवंति वययइं बहुवयणहो. 24) J adds च after वयणइं, J च for व, P रमिज्जंति चंडायलइं द्रायलइं च. 26) J एण for णाण, J विणिम्मविअं, P पलयग्गभीएण. 27) J तीय, P दिसाविहाए निरसहो निसन्ना, P एत्थ for जत्थ. 28) J repeats साहुणा, P ता f तो, P किं पि for कं पि, P repeats वट्टजणो for चट्टजणो, P ता जललिय. 30) J मिंद for मिदु, J लंछितो, J उअय, P उदयाहारिया.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता फुडा होहिइ एत्थ मे पउत्ती, ता इमिणा चेव वच्चामि' त्ति चिंतयंतो समुट्ठिओ कुमारो। जाव थोवंतरं गओ ताव पेच्छइ णायरिया-वंद्रं जल-भरियारोविय-कुडयं। तं च दट्ठूण तस्स य मग्गालग्गो णिहुय-पय-संचारो गंतुं पयत्तो। भणियं एक्काए णायरियाए 'मा, एसा उण कुवलयमाला कुमारिया चेय खयं जाहिइ, ण य केणइ परिणावेहिइ'। अण्णाए भणियं 'किं ण रूवं सुंदरं। किं तीय ण विहिणा विहिया वीवाह-रत्ती, जइ णाम रूव-जोव्वण-विलास-लास-सोहग्ग-मडप्फर-गव्विया कुल-रूव-विहव-संपुण्णो वि णेच्छइ णरणाहउत्तो'। अण्णाए भणियं 'केरिसं तीए रूवं जेण एरिसो मडप्फरो'। अण्णाए भणियं 'किं तीए ण रूवं सुंदरं सुंदरेण मोर-कलाव-सरिसेण केस-पब्भारेण, कमल-दल-णिलीण-भमर-जुवलेण व अच्छिवत्तएणं, तेल्ल-धारा-समुज्जायाए णासियाए, पुण्णिमायंद-सरिसेणं मुहेणं, हत्थि-कुंभ-विब्भमेणं थणवट्टेणं, मुट्ठि-गेज्झेणं मज्झ-देसेणं, कणय-कवाड-सरिसेण णियंबयडेणं, मुणाल-णाल-सरिसेणं बाहा-जुवलेणं असोय-पल्लवारुणेणं चरण-करयलेणं कित्तीए रूवं वण्णीयइ'। अण्णाए भणियं 'हूं केरिसं तीए रूवं, जा काला काल-वण्णा णिकिट्ठ-भमर-वण्णा'। अण्णाए भणियं 'सच्चं, सच्चं'। ताए भणियं 'लोओ भणइ, काला किंतु सोहिया'। अण्णाए भणियं 'अणेय-मुत्ताहल-सुवण्ण-रयणालंकार-वेंचइया अहं तीए माणं खंडेमि'। अण्णाए भणियं 'ण एत्थ रूवेण ण वा अण्णेण, महादेव-देवी पसण्णा, तीसे सोहग्गं दिण्णं'। अण्णाए भणियं 'एरिसं किं पि उववुत्थं जेण से सोहग्गं जायं'। अण्णाए भणियं 'जं होउ तं होउ अत्थि से सोहग्गं, कीस उण ण परिणिज्जइ'। अण्णाए भणियं 'किर केण वि जाणएण किं पि इमीए साहियं तप्पभुइं चेय एस पादओ लंबिओ'। 'तं किर कोइ जइ भिंदिहिइ सो मं परिणेहिइ, अण्णहा ण परिणेहिइ त्ति वेणी-बंधं काऊण सा ठिय'त्ति भणंतीओ ताओ अइक्कंताओ। कुमारो वि सहास-कोऊहल-फुल्ल-णयण-जुयलो चिंतिउं पयत्तो। 'अहो, लोगस्स बहु-वत्तव्वालावत्तणं। सा घडइ तं रिसिणो वयणं जहा पादयं लंबेहिइ त्ति। तेण णयरिं पविसामि। सविसेसं से पउत्तिं उवलहामि' चिंतयंतो उवगओ कं पि पएसं। दिट्ठं च महंतं मढं। तत्थ पुच्छिओ एक्को पुरिसो 'भो भो पुरिसा, इमो कस्स मंदिरवरो' त्ति। तेण भणियं 'भट्टा भट्टा, ण होइ इमं मंदिरं किंतु सव्व-चट्टाणं मढं'। कुमारेण चिंतियं 'अरे, एत्थ होहिइ फुडा कुवलयमाला-पउत्ती। दे मढं चेय पविसामि'। पविट्ठो य मढं। दिट्ठा य तेण तम्मि चट्टा। ते य केरिसा उण। अवि य।

लाडा कण्णाडा वि य मालविय-कणुज्ज-गोल्लया केइ। मरहट्ठ य सोरट्ठा ढक्का सिरिअंठ-सेंधवया ॥

किं पुण करेमाणा। अवि य।

धणुवेओ फर-खेडुं असिधेणु-पवेस-कणय-चित्त-डंडं च। कुंतेण लउडि-जुद्धं बाहु-जुज्झं णिउद्धं च ॥
आलेक्ख-गीय-वाइय-भाणय-डोंबिल्लिय-सिग्गडाईयं। सिक्खंति के वि छत्ता छत्ताण य णच्चणाइं च ॥

§ २४४) ते य तारिसे दरिउम्मत्त-महाविंझ-वारण-सरिसे पलोएंतो पविट्ठो कुमारो। दिट्ठाओ य तेण वक्खाण-मंडलीओ। चिंतियं कुमारेण 'अए, पेच्छामि पुण किं सत्थं वक्खाणीयइ। तओ अल्लीणो एक्कं वक्खाण-मंडलिं जाव पयइ-पच्चय-लोवागम-वण्ण-वियारादेस-समासोवसग्ग-मग्गणा-णिउणं वागरणं वक्खाणिज्जइ त्ति। अण्णत्थ रूव-रस-गंध-फास-सद्द-संजोय-मेत्त-कप्पणा-रूवत्थ-खण-भंग-भंगुरं बुद्ध-दरिसणं वक्खाणिज्जइ। कत्थइ उप्पत्ति-विणास-परिहारावत्थिय-णिच्चेग-सहावायरूव-पयइ-विसेसोवणीय-सुह-दुक्खाणुभवं संख-दरिसणं उग्गाहीयइ। कत्थइ दव्व-गुण-कम्म-सामण्ण-विसेस-समवाय-पयत्थ-रूव-णिरूवणावट्ठिय-भिण्ण-गुणायवाय-परूवणपरा वइसेसिय-दरिसणं परूवेंति। कहिंचि पच्चक्खाणुमाण-पमाण-छक्क-णिरूविय-णिच्च-जीवादि-णत्थि-सव्वण्णु-वाय-पद-वकप्पमाणाइवाइणो मीमंसया। अण्णत्थ पमाण-पमेय-संसय-णिण्णय-छल-जाइ-

1) P तप्फडा होइमे पउत्ती. 2) P नयरिया, P कुडइं, J च for एक्काए, P एक्कोए. 3) P माए एसा J om. किमरूवं सुंदरं, P किं मरूवं. 4) P om. तीय, P adds य before विहिणा, J inter. विहिआ & विहिणा, P विहिया विहद्दियएसु वोलिद बळदेवूमवेसु etc. (the passage repeated here as on p. 148 line 12 to p. 149 line 1) to धणइयणं, P वाह for वीवाह, J रंती for रत्ती, J adds किण्ण विहिआ before जइ, P om. लास. 5) P संपुन्नो, J णरणाहपुत्तो, J तीअ, J तीय ण रूवं सुंदरसुंदरेण. 6) P नं for ण, P जुवलेण धवलच्छीवत्तएण J जुवलेण व अच्छिवत्तेणं 7) J समुज्जअए, J मज्झेण, P चक्कायारेण for कवाडसरिसेण. 8) P बाहुजुयलेयणं, J चलण, J कित्तीय P किं तीए, J वन्नीयति. (originally perhaps पुच्छीयति) P पुच्छइ for वण्णीयइ. 9) P हुं, J तीय, P कालवन्न. 10) J तीय. 11) P खंडीए for खंडेमि, P रूवेण वा अन्नेण वा सुहदेवी पसुत्ता तीसे, J तीय से for तीसे. 12) P उववत्थं, J उववुत्थं किं अणुण्णाए जेण से सोहग्गअं। अण्णाए, J कीस पुण. 13) J P तप्पभूइं, P पाईओ लंबिउं ।. 14) P जो for जइ, J भिंदिहिति P निंदिहिइ [विंदिहिइ?], J परिणिहिति P परिणेहित्ति, J परिणेहिति P परिणेति, P सं for सा, P भणंतीओ अइकन्ताओ. 15) P कोऊहलुप्फुल्ल, P पयत्ता, J लोअस्स, J एअं तस्स for तं. 16) P पायायं for पादयं, J लंबेहिति, P om. त्ति, P om. से, P पउत्तिमुव°, P मुणवओ for उवगओ. 17) P om. इमो. 19) P inter. तंमि & तेण, P adds य after चट्टा, P ते या केउणा. 20) P मालविया कणुज्ज, J कुडुक्क for कणुज्ज, P करय for केइ, J टक्का सिरिअंठसेंध° P ढक्का किरिअंगसेंध°. 21) P करेमाणो. 22) P फरुखेंदुं असिधणु, P चित्तंदं च। कुतेण, J कुंतो लउडीजुज्झं णिउद्धं च।, P बाहुजुद्ध निजुद्धं च. 23) J गीतवाइत, P -भाणयाडोंबिलयासेंग्गडाईया। णिक्खंति के वि छत्ताण. 24) P om दरि, J सविसेसं for सरिसे, P दिट्ठा ठ तेण. 25) अरे पुच्छामि, J adds कम्मि before पुण, J वक्खाणीयति P वक्खाणियइ, P om एक्कं, J पयति- 26) P -वियारा°, P om. त्ति, P संजोयनिमित्तकम्मणा. 27) J खल for खण, J वक्खाणीयति, J सहावातरूवपयहि- P सहावासरूव-. 28) P -सह दुक्खाणभवं, J रुवं for भवं, J उग्गाहीयति P उग्गाहेंति. 29) J om. रूव, P निरूवणाठितिभिन्न, J गुणातवात-, P om. पमाण. 30) P °जीवाइ-, J सव्वयण्णुवातपततवकप्पमाणातिवातिणो, P मिम्मंसणया, J -प्पमेय-, P समय for संसय, J -जाति-.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिग्गहत्थाण-वाइणो णइयाइय-दरिसण-परा । कहिंचि जीवाजीवादि-पयत्थाणुगय-दव्वट्ठिय-पजाय-णय-णिरूवणा-विभागो-वालद्ध-णिव्वाणिव्वाणेयंतवायं परूवेंति । कत्थइ पुहइ-जल-जलणाणिलागास-संजोय-विसेसुप्पण्ण-चेयण्णं मजंग-मदं पिव अत्तणो णत्थि-वाय-परा लोगायतिग त्ति ।

§ २४५) इमाइं च दट्टूण कुमारेण चिंतियं । 'अहो, विजया महापुरी जीए दरिसणाइं सव्वाइं पि वक्खाणीयंति । अह णिउणा उवज्झाया । ता किं करेमि किंचि से चालणं, अहवा ण करेमि, कज्जं पुणो विहडइ । ता कारेयव्वं मए कज्जं' ति चिंतिऊण अण्णत्थ चलिओ राय-तणओ । अवि य । तत्थ वि

के वि णिमित्तं अवरे मंतं जोगं च अंजणं अण्णे । कुहयं धाउव्वायं जक्खिणि-सिद्धिं तह य खत्तं च ॥
जाणंति जोग-मालं तत्थं मिच्छं च जंत-मालं च । गारुड-जोइस-सुमिणं रस-बंध-रसायणं चेय ॥
छंदवित्ति-णिरुत्तं पत्तच्छेज्जं तहेंदयालं च । दंत-कय-लेप्प-कम्मं चित्तं तह कणय-कम्मं च ॥
विसगर-तंतं वालय तह भूय-तंत-कम्मं च । एयाणि य अण्णाणि य सयाइं सत्थाण सुव्वंति ॥

तओ कुमारेण चिंतियं । 'अहो साहु साहु, उवज्झाया णं बाहत्तरि-कला-कुसला चउसट्ठि-विण्णाणब्भंतरा य एए' त्ति चिंतयंतो वलिओ अण्णं दिसं राय-तणओ । तत्थ य दिट्ठा अणेए दालि-वट्टा केवल-वेय-पाढ-मूल-बुद्धि-वित्थरा चट्टा । ते उण केरिसा । अवि य ।

कर-घाय-कुडिल-केसा णिद्दय-चलण-प्पहार-पिट्ठुलंगा । उण्णय-भुय-सिहराला पर-पिंड-परूढ-बहु-मंसा ॥
धम्मत्थ-काम-रहिया बंधव-धण-मित्त-वज्जिया दूरं । केइत्थ जोव्वणत्था बाल च्चिय पवसिया के वि ॥
पर-जुवइ-दंसण-मणा सुहयत्तण-रूव-गव्विया दूरं । उत्ताण-वयण-णयणा इट्टाणुग्घट्ट-मट्टोरू ॥

ते य तारिसे दालि-वट्ट-छत्ते दट्ठूण चिंतियं । 'अहो, एत्थ इमे पर-तत्ति-तग्गय-मणा, ता इमाणं वयणाओ जाणीहामि कुवलयमालाए लंबियस्स पाययस्स पउत्तिं । अल्लीणो कुमारो । जंपिओ पयत्तो । 'रे रे आरोट्ट, भण रे जाव ण पम्हुसइ । जनार्दन, प्रच्छहुं कत्थ तुम्हे कल्ल जिमियल्लया' । तेण भणियं 'साहिउं जे ते तओ तस्स वलक्खएल्लयहं किराडहं तणए जिमियल्लया' । तेण भणियं 'किं सा विसेस-महिला वलक्खइएल्लिय' । तेण भणियं 'अहहा, सा य भडारिय संपूर्ण-स्वलक्खण गायत्रि यहसिय' । अण्णेण भणियं 'वर्णिग कीदशं तत्र भोजनं' । अण्णेण भणियं 'चाई भट्टो, मम भोजन स्पृष्टं, तक्षको हं, न वासुकि' । अण्णेण भणियं 'कत्तु घडति तउ, हृदय उल्लाव, भोजन स्पृष्ट स्वनाम सिंघसि' । अण्णेण भणियं 'अरे रे वड्डो महामूर्ख, ये पाटलिपुत्र-महानगरावास्तव्ये ते कुत्था समासोक्ति बुज्झंति । अण्णेण भणियं 'अस्मादपि इयं मूर्खतरी' । अण्णेण भणियं 'काइं कज्जु' । तेण भणियं 'अनिपुण-निपुणार्थोक्ति-प्रचुर' । तेण भणिय 'मर काइं मां बुक्त, अन्योपि विदग्धः संति' । अण्णेण भणियं 'भट्टो, सत्यं त्वं विदग्धः, किं पुणु भोजने स्पृष्ट माम कथित । तेण भणिय 'अरे, महामूर्खः वासुकेर्वदन-सहस्रं कथयति' । कुमारेण य चिंतियं । 'अहो, असंबद्धक्खरालावत्तणं बाल-देसियाणं । अहवा को

---

1) J -वातिणो, P नइवाइय, J P °जीवाइ, J °पदत्थाणुगत, P °णुगतदव्वट्ठिइ-. 2) P °निव्वाणयं, J °णेअंतवातं, P °वायं रूवेंति, J °जलणणिला°, J विसेसुप्पण्णुचेतण्णं, P मयं for मदं. 3) J -वात-, P परलोयगायगित्ति ।· 4) P trans. दरिसणाइं after पि, J वक्खाणियंति. 5) J inter. करेमि & किंचि. 7) J जोअं, P जक्खण-, J तहेय, P खत्तं. 8) J जोअमालं, P मित्थं च जेत्तमालं, P गारुडमाइससुमिणं, J जोतिस. 9) J छंदविति, J तहेय इंद° P तहेंदयालं, J om. the line दंतकय etc. 10) J भूत-, J एताणि, J सताइं. 11) P उवज्जाया, P बाहुत्तरिकाला, J विण्णाणक (स ?) त्तरा य एयंति. 12) P चलिओ for वलिओ, P दिसंतराय, J om. य, J अणेये दालिविट्टा, P अणेय, P वेयपाय-, P om. बुद्धि, J ते पुण. 14) P अन्नय for उण्णय, P बहु मासा. 15) J जण for धण. 16) P सुवत्तणरूव. 17) P तारिसं, J दालिविट्ट, J inter एत्थ & इमे, P जाणिहामि. 18) J पातअस्स, J जंपिउं P जंपियउं, P जाव न पमुहुसइ. 19) J पुच्छइ कत्थ, J भणिओ, P om. ते, J वलक्तइएल्लयइ, J om. किराडहं. 20) JP विसे for विसेस. The passage अहहा to कथयति (lines 20-26), is found only in J; it is given in the text mostly as it is with the restoration of य-श्रुति. 21) भट्टो or रुट्टो. 22) हचय or हृदय. 23) ते is added below the line. 24) मरकाइं or नरकाइं. Instead of the passage अहहा to कथयति found in J and adopted in the the text above, P has the following passage which is reproduced here with minor corrections: 'अहह रुंड-मुंड-सुनिहल-कल्लोल-भाल भडारिया दुत्तडिय सरस्वति-जइसिया' । तेण भणियं 'अरे, दुचारिणी सा' । 'अहह इमं कुअक्षर-नवक्खण्फ मात- भडारिया गंगादेवि जइसिया भस्मीकरेज्जा' । तेण भणियं 'अरे त्वं भुंज्यमान्या सा सस्नेहेहिं दीर्घ-धवलेहिं लोचनेहिं निरकृति' । तेण भणियं 'हुं हुं मसल्य-चालि-निरीकृति काइं वररुहो सति महासुवर्णढिवमि । तहिं दीर्घ-धवल-लोचनेहिं ग्रसतीव पिबतीव लुंपतीव विलुंपतीव अक्षिपहिं निरिक्ष्यति' । तेण भणियं 'अरे, तया भणियं सा दुश्चारिणी न होति । अथ च त्वं सस्पृहं निरीक्ष्यति । परस्परं विरुद्धं एहु वचनु' । तेण भणियं 'अरे न-याणाहि कामशास्त्र मदीय-गुरूपदिट्ठ । यदि भवति मात सीतसती व दमयंती अप्सर तदपि क्षुभति' ।. In the following conversational passage the readings are exhaustively noted and the passage is faithfuly reproduced as in one or the other Ms. 26) P om. य, J चिंतिअं, J °क्खरालायत्तणं बालदेसिआणं ।, P °लावत्तणं मुरुक्खमडुयाणं ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णो वावारो इमाणं पर-पिंड-पुट्ठ-देहाणं विज्जा-विण्णाण-णाण-विणय-विरहियाणं चट्ट-रसायणं मोत्तूणं' चिंतयंतस्स भणियं अण्णेणं चट्टेणं 'भो भो भट्टउत्ता, तुम्हे ण-याणह यो राजकुले वृत्तांत'। तेहिं भणियं 'भण, हे व्याघ्रस्वामि, क वार्ता राजकुले'। तेण भणियं 'कुवलयमालाए पुरिस-द्वेषिणीए पायओ लंबितः'। इमं च सोऊण अप्फोडिऊण उट्ठिओ एको चट्टो। भणियं च णेणं 'यदि पांडित्येन ततो मइं परिणेतव्य कुवलयमाल'। अण्णेण भणियं 'अरे कवणु तउ पाण्डिस्यु'। तेण भणियं 'षडंगु वेउ पढमि, त्रिगुण मन्त्र पढमि, किं न पाण्डित्यु'। अण्णेण भणियं 'अरे ण मंत्रेहिं तृगुणेहिं परिणिज्जइ। जो सहियउ पाए भिंदइ सो तं परिणेइ'। अण्णेणं भणियं 'अहं सहियओ जो ग्वाथी पढमि'। तेहिं भणियं 'कइसी रे व्याघ्रस्वामि, गाथा पठसि त्वं'। तेण भणियं 'इम ग्वाथ।

सा ते भवतु सुप्रीता अबुधस्य कुतो बलं। यस्य यस्य यदा भूमि सर्व्वत्र मधुसूदन ॥

तं च सोऊण अण्णेण सकोपं भणियं 'अरे अरे मूर्ख, स्कंधकोपि गाथ भणसि। अम्ह गाथ ण पुच्छह'। तेहिं भणियं 'त्वं पठ भट्टो यजुस्वामि गाथः'। तेण भणियं 'सुट्टु पढमि,

आइं कज्जि मत्त गय गोदावरि ण मुयंति। को तहु देसहु आवतइ को व पराणइ वत्त ॥

अण्णेण भणियं 'अरे सिलोगो अम्हे ण पुच्छह, ग्वाथी पठहो'। तेण भणियं 'सुट्टु पढमि।

तंबोल-रइय-राओ अहरो दट्ठूण कामिणि-जनस्स। अम्हं चिय खुभइ मणो दारिद्र-गुरू णिवारेइ ॥'

तओ सव्वेहि वि भणियं 'अहो भट्ट यजुस्वामि, विदग्ध-पंडितु विद्यावंतो ग्वाथी पठति, एतेन सा परिणेतव्या'। अण्णेण भणियं 'अरे, केरिसो सो पायओ जो तीए लंबिओ'। तेण भणियं 'राजांगणे मइं पढिउ आसि, सो से विस्मृतु, सव्वु लोकु पढति' त्ति।

§ २४६) इमं च सोऊण चट्ट-रसायणं चिंतियं रायउत्तेण। 'अहो, अणाह-वड्डियाणं असंबद्ध-पलावत्तणं चट्टाणं ति। सव्वहा इमं एत्थ पहाणं जं रायंगणे पायओ लंबिओ त्ति पउत्ती उवलद्धा। ता दे रायंगणे चेव वच्चामि' त्ति चिंतेंतो णिक्खंतो रायतणओ मढाओ, पविट्ठो णयरीए विजयाए। गोउर-दुवारे य पविसंतस्स सहसा पवाइयाइं तूराइं, आहयाइं पडहाइं, पवज्जियाइं संखाइं, पढियं मंगल-पाढएण, जयजयावियं जणेण। तं च सोऊण चिंतियं कुमारेण 'अरे कत्थ एसो जय-जयासद्दो तूर-रवो य' जाव दिट्ठं कस्स वि वणियस्स किं पि कज्जं ति। तओ तं चेय सउणं मणे घेत्तूण गंतुं पयत्तो जाव थोयंतरे दिट्ठं इमिणा अणेय-पणिय-पसारियाबद्ध-कय-विक्कय-पयत्त-पवड्ढमाण-कलयल-रवं हट्ट-मग्गं ति। तत्थ य पविसमाणेणं दिट्ठा अणेय-देस-भासा-लक्खिए देस-वणिए। तं जहा।

कसिणे णिट्ठुर-वयणे बहुक-समर-भुंजए अलज्जे य। 'अडडे' त्ति उल्लवंते अह पेच्छइ गोल्लए तत्थ ॥
णय-णीइ-संधि-विग्गह-पडुए बहु-जंपए य पयईए। 'तेरे मेरे आउ'त्ति जंपिरे मज्झदेसे य ॥
णीहरिय-पोट्ट-दुव्वण्ण-मडहए सुरय-केलि-तल्लिच्छे। 'एगे ले'-जंपुल्ले अह पेच्छइ मागहे कुमरो ॥
कविले पिंगल-णयणे भोयण-कह-मेत्त-दिण्ण-वावारे। 'कित्तो किम्मो' पिय-जंपिरे य अह अंतवेए य ॥
उत्तुंग-थूल-घोणे कणयव्वण्णे य भार-वाहे य। 'सरि पारि' जंपिरे रे कीरे कुमरो पलोएइ ॥

1) P इमाण, J बुद्ध for पुट्ठ, P om. पुट्ठ, P देहबद्धाणं for देहाणं, P विन्नाणनाण, J विरहिआण, J भणियमण्णेण. 2) P अन्नेण, P तुब्भे for तुम्हे, P नयाणह, P वृत्तांतः (?), P हो for हे, P का for क. 3) P राजकुलो, P पुरुष-, J पातओ, P लंबिओ, P अप्फोडिऊण, J inter. एको & उट्ठिओ. 4) P भट्टो for चट्टो, P om. च, P णेण, P ततो इमं परिणेतव्ज कुवलयमाला। अन्नेण, P कमणु तओ, P पांडित्यु. 5) J भणिअं, P सडंग, J om. वेउ, J विगुणमन्त्र पढमि किं न P तिउणमंत कड्ढमि किन्न, P पांडित्यं। अन्नेण, P न, J तृगुणेहि P त्रिगुणएहिं. 6) J सहितौ P सहिअउ, J पातौ for पाए, J परिणेति, J सहितउज्जोग्गाथी, J भणिअं. 7) J व्याघ्रसामि गाथः, J om. पठसि त्वं, J भणिअं, J इम गाथ P इमा ग्वाथा. 8) Instead of the verse सा ते भवतु etc. P has the following: अनया जघनाभोगमंथरया तया। अन्यतोपि प्रजंत्येमं हृदये विहितं पदं॥. 9) P अन्नेण, J भणिअं, P मुक्खा, P पि ग्वाथा, P गाथ न पुच्छह, J भणिअं, P चव for त्वं पठ. 10) J यज्ञस्वामि (?), P आथ for गाथः. 11) J आए कप्पे for आइं कज्जि, P गया गोयवरि न, P को तह के देसह, J आवतति P आवइ, J पराणति वात्त P पराइ वत्त अन्नेण भणियं. 12) J भणिअं, P adds एसो before अम्हे, P न, P पढहुं तेहिं भणियं पढहो। तेण भणियं सुट्ठु, J भणिअं in both places. 13) J अहरो कामिनि दृष्ट्वा अम्हं चिअ P अहरो दृष्ट्वा कामिनी [Better read दट्ठूण for दृष्ट्वा], J क्खुभइ P क्षुभइ, P दालिद्द, P निवारेइ. 14) P सव्वेहिं मि भणियं, J भणिअं, J यज्ञस्वामि (?), P विदग्धपांडित्यविज्जमंतो, P अन्नेण. 15) P om. अरे, J पातओ, J तीय, J भणिओ, P राइंगणे, J पठितु P पढिउं, P आसि सा विसुतु सव्वो लोकु. 17) P वट्ट for चट्ट, P अहो वेसपायमूढबुद्धीणं असंबद्धपलावित्तणं छत्तवट्टाणं ति. 18) J पातओ, J पतित्ती for पउत्ती, J ते for ता, P om. दे, P रायंगणं, J चेअ, P चिंतयंतो. 19) P नयरीओ, P -दुवारे, P om. य, adds ओ before सहसा, J पडढयाइं पवज्जिआइं. 20) J -वादएणं, P एसो जयासद्दो, P om. य. 21) P विवाहो त्ति for किं पि कज्जं ति, P om. तं, J सउणमणेण. 22) P थोवंतरे, P अणियवणिय, J पणियपसारया, J -वड्ढमाण-. 24) P कसिणा निट्ठुर, P अरडे. 25) J णीति, J पडुए, J -जंपिरे य पयतीए. 26) P दुवन्न-, P एसे ले [एशे ले], J जंबुले, J मागधे कुमारो. 27) P लोयणकहदिन्नमेत्तवावारे, P किं ते किं मो, J जिय for पिय, P जंपिरो, P om. अह, J अंतवेते P अत्तवेए. 28) J °वण्णे P°वन्ने, J वारि, for पारि, P अवरे for रे, P कुमारो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दक्खिण्ण-दाण-पोरुस-विण्णाण-दया-विवज्जिय-सरीरे । 'एहं तेहँ' चवंते ढक्के उण पेच्छए कुमरो ॥
सललिय-मिउ-मद्दवए गंधव्व-पिए सदेस-गय-चित्ते । 'चउडय मे' भणिरे सुहए अह सेंधवे दिट्ठे ॥
वंके जडे य जड्डे बहु-भोई कढिण-पीण-सूणंगे । 'अप्पाँ तुप्पाँ' भणिरे अह पेच्छइ मारुए तत्तो ॥
घय-लोणिय-पुट्ठंगे धम्म-परे संधि-विग्गहे-णिउणे । 'णउ रे भल्लउं' भणिरे अह पेच्छइ गुज्जरे अवरे ॥
ण्हाओलित्त-विलित्ते कय-सीमंते सुसोहिय-सुगत्ते । 'अम्हं काउं तुम्हं' भणिरे अह पेच्छए लाडे ॥
तणु-साम-मडह-देहे कोवणए माण-जीविणो रोद्दे । 'भाउय भइणी तुम्हे' भणिरे अह मालवे दिट्ठे ॥
उक्कड-दप्पे पिय-मोहणे य रोद्दे पयंग-वित्ती य । 'अडि पाँडि मरे' भणिरे पेच्छइ कण्णाडए अण्णे ॥
कुप्पास-पाउयंगे मास-रुई पाण-मयण-तल्लिच्छे । 'इसि किसि मिसि' भणमाणे अह पेच्छइ ताइए अवरे ॥
सव्व-कला-पत्तट्ठे माणी पिय-कोवणे कढिण-देहे । 'जल तल ले' भणमाणे कोसलए पुलइए अवरे ॥
दढ-मडह-सामलंगे सहिरे अहिमाण-कलह-सीले य । 'दिण्णल्ले गहियल्ले' उल्लविरे तत्थ मरहट्ठे ॥
पिय-महिला-संगामे सुंदर-गत्ते य भोयणे रोद्दे । 'अटि पुटि रटिं' भणंते अंधे कुमरो पलोएइ ॥
इय अट्ठारस देसी-भासाउ पुलइऊण सिरिदत्तो । अण्णाइय पुलएई खस-पारस-बब्बरादीए ॥

§ २४७) तस्स य तारिसस्स जण-समूहस्स मज्झे के उण आलावा सुव्विउं पयत्ता । अवि य ।

दे-देहि देहि रोयइ सुंदरमिणमो ण सुंदरं वच्च । ए-एहि भणसु तं च्चिय अहव तुहं देमि जह कीयं ॥
सत्त गया तिण्णि ठिया सेसं अद्धं पऊण पादेण । वीसो व यद्धवीसो वयं च गणिका कणिसवाया ॥
भार-सयं अह कोडी-लक्खं च्चिय होइ कोडि-सयमेगं । पल-सय-पलमद्ध-पलं करिसं मासं च रत्ती य ॥
होइ धुरं च वहेडो गोत्थण तह मंगलं च सुत्ती य । एयाण उवरि मासा एए अह देमि एएहिं ॥
कह मंडं संवरियं गेण्हसु सुपरिक्खिऊण वच्च तुमं । जइ लब्भइ कह वि कवड्डिया वि एगारसं देमि ॥

एवं च कुमार-कुवलयचंदो विवणि-मग्गेण वच्चमाणो अणेए वणियाणं उल्लावे णिसुणेंतो गंतुं पयत्तो । कमेण संपत्तो अणेय-णायर-विलया-धवल-विलोल-लोयण-मालाहिं पलोइज्जंतो रायंगणं, जं च अणेय-णरणाह-सहस्स-उद्दंड-तंडविय-सिंइंधि-कलाव-विणिम्मविय-छत्त-संकुलं । तत्थ सव्वो चेव णरवइ-जणो करयल-णिमिय-मुह-कमलो किंपि किंपि चिंतेंतो कयिवणो व्विव दीसइ । तं च दट्ठूण पुच्छिओ णरणाह-पुत्तो कुमारेण 'भो भो रायउत्त, कीस णरवइ-लोओ एवं दीण-विमणो दीसइ' त्ति । तेण भणियं 'भो भो महापुरिस, ण एस दीणो, किंतु एत्थ राइणो धूया कुवलयमाला णाम पुरिसद्देसिणी, तीय चिर पायओ लंबिओ जहा 'जो एयं पायं पूरेहिइ सो मं परिणेहि' त्ति । ता तं पाययं एस सव्वो चेव णरवइ-लोओ चिंतेइ' त्ति । कुमारेण भणियं 'केरिसो सो पाओ' । तेण भणियं 'एरिसो सो' । अवि य । 'पंच वि पउमे विमाणम्मि ।'

§ २४८) कुमारेण भणियं 'ता एस पायओ केणइ कम्मि भणिए पूरिओ ण पूरिओ वा कहं आणियव्वो' । तेण भणियं 'सा चेय जाणइ कुवलयमाला, ण य अण्णो' । कुमारेण भणियं 'कहं पुण पच्चओ होइ जहा सो चेय इमो पायओ जो कुवलयमालाए अभिमओ' । तेण भणियं । 'अत्थि पच्चओ । कहं । इमस्स पायस्स पुव्वमेव

1) J तेह P तेहं, J टक्के, J कुमारो. 2) J सललितमिदुमंदवए, P सएस, P वंसे दइणो for च (व) उडय मे of J, P सुहसे अह, J दिट्ठो. 3) J वंकि P कंवे, P -सूणंगे, J अप्पा तुप्पा P अप्पां तुप्पां, J मारुए P कारुए. 4) J लोलिय. P विग्गहे. 5) P सीमंते सोहियं गत्ते, J आहम्ह काइं तुम्हं मितु भणिरे for अम्हं etc., J om. अह, P अच्छइ for अह 6) P -जीवणे, P भाइय, P तुम्भे for तुम्हे, J दिट्ठो. 7) J एय for य (before रोद्दे), J अद्रि पोण्डिमरे P अडिपांडिरमरे. 8) P णइ for रुई, P असि for इसि, P मणि for मिसि, P भणमाणो. 9) J सत्थ for सव्व, J पत्तट्ठो P पत्तभट्ठे, J देहो. 10) P सहिए· अहमाण, P दिसल्ले, J रा (ठा?)हिल्ले for गहियल्ले (written twice in P). 11) P गोत्ते for गत्ते, J मोहणे, P भायणे रोद्दे । अट्ठिमविभणंति अवरे अंधे कुमारो, J रटिं भणंते रंभे कुमारो. 12) J सिरिअत्तो, P सिरिदत्ते । अणोइय पुलयती जवसपारस, J अण्णाईय पुलएई, J पव्वरादीए P बब्बरातीए. 13) J जणस्समुहस्स सज्झे काऊण अलावा, P केण उण. 14) P देहेहि, P स for ण, P एएहिं, J कीतं. 15) J तस्स गता for सत्त गया, J थिरा सेसं, P पऊण पाएण । वीसो अद्धवीसो, J कणिसवाता P गणिसवाया. 16) J सतं, P adds होइ after अह, P च for च्चिय होइ, J कोडिसतमेकं । पलसतप°, J रत्तीया P रत्तीसं. 17) On the verse होइ etc. we have a marginal note (in J) like this (with numerals below the words): कणियउ/२। महेसरु/३। तलु/५। पविती/७। उवणु९। आंगुलु/१०। पूंखाल/१००।८ उ. The text of J numbers धुरं as 2, वहेडो as 6, गोत्थण as 4 and सुत्तीय as 20. J उवरिसंता एते, J एतेहिं. 18) J भण्णं संवरितं, J एआरसं. 19) P om. च, P उल्लावें. 20) P नारय for णायर, P om. जं, P adds केरिसं before अणेय, P उदंड, J तण्डविआ P तडुविय. 21) P -निम्मिय, J om. one किंपि, P वि for व्विव. 22) P नरनाहउत्तो, J रायउत्ता, J adds एस after कीस, P om. एवं. 23) P inter. ण (न) & एस, P रायणो, P पुरिसवेसिणी, P यद for तीय. 24) J पातओ, J पातयं पूरेहितित्ति, J ति for त्ति, P पाययं, J चेअ, J विंतेइ त्ति. 25) P om. सो, J पातओ for पाओ, J writes twice पंच वि पउमे विमाणम्मि. 26) J पातओ, J भणिते P भणिअए, J पूरितो ण पूरितो. 27) P om. य. 28) J पातओ, J पातयस्स for पायस्स.

20

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तिण्णि पादे इमाए काऊण गोलए पक्खिविय मुद्दिऊण महाभंडारम्मि पक्खित्ते। तेण कारणेण पढियं ति जो पमाणं जं पुण तीए रइयं तं तत्थ पादए वड्ढिहि त्ति तओ तं परिणेहिइ' त्ति। इमं च सोऊण चिंतियं रायउत्तेणं 'अहो, सुंदरं जायं जेण सुपरिक्खिओ पादओ पूरेयव्वो त्ति। ता दे चिंतेमि, अहवा किमेत्थ चिंतियइ। 'पंच वि पउमे विमाणम्मि'। 'अम्हे तम्मि पउमे विमाणम्मि उप्पण्णा तवं च काऊण। किं पुण ताए एत्थ पादए णिबद्ध-पुव्वं' चिंतिऊण, हूं अत्थि,

कोसंबि-धम्मणंदण-मूले दिक्खा तवं च काऊण। कय-संकेया जाया पंच वि पउमे विमाणम्मि ॥

अहो णिव्वडियं मायाइच्चत्तणं मायाइच्चस्स जेण केरिसो पादय-वुत्तंतो कुडिल-मग्गो कओ, इमीए कुवलयमालाए ओलंबिओ। ताव य उद्धाइओ समुद्द-सद्द-गंभीरो कलयलारावो जणस्स रायंगणम्मि। किं च जायं। पलायंति कुंजरा। पहावंति तुरंगमा। ओसरंति णरवइणो। पलायंति वामणया। णिवडंति खुज्जया। वित्थक्कंति धीरा। वलंति वीरा। कंपंति कायरा। सव्वहा पलय-समए इव खुभिओ सव्वो रायंगण-जणवओ त्ति। चिंतियं च कुमारेण। 'को एसो अयंडे चेय संभमो' त्ति। पुलोइयं कुमारेण जाव दिट्ठो जयवारणो उम्मूलियालाण-खंभो पाडियारोहणो जणं मारयंतो संमुहं पहाविओ त्ति। अवि य।

तुंगत्तणेण मेरु इव संठिओ हिमगिरि इव जो धवलो। हत्थ-परिहत्थ-वलिओ पवणं पि जिणेज्ज वेगेणं ॥ तओ,

रणंत-लोह-संखलं झरंत-दाण-वेब्भलं खलंत-पाय-बंधणं ललंत-रज्जु-चूलयं।
चलंत-कण्ण-संखयं फुरंत-दीह-चामरं रणंत-हार-घंटयं गलंत-गंडवासयं ॥

दिट्ठं तं जयकुंजरं। अवि य।

संवेल्लियग्ग-हत्थो उण्णामिय-खंधरो धमधमेंतो। मारेंतो जण-णिवहं भंजंतो भवण-णिवहाइं ॥
दाण-जल-सित्त-गत्तो गंधायड्ढिय-रणंत-भमरउलो। पत्तो कुमार-मूलं अह सो जयकुंजरो सहसा ॥

§ २४९) तं च तारिसं कुविय-कयंत-सच्छहं दट्ठूण जणेण जंपियं। 'बप्पो बप्पो, ओसरह ओसरह, कुविओ एस जयहत्थी। तं च तारिसं कलयलं आयण्णेऊण राया वि सअंतेउरो आरूढो भवण-णिज्जूहए दट्ठुं पयत्तो। कुमारस्स य पुरओ दट्ठूण राइणा भणियं 'भो भो महापुरिस, अवेह अवेह इमाओ महग्गहाओ वावाइज्जसि तुमं बालओ' त्ति। तओ तहा-भणंतस्स राइणो जणस्स य हा-हा-कारं करेमाणस्स संपत्तो कुंजरवरो कुमारासण्णं। कुमारेणावि

संवेल्लिऊण वत्थं आइद्धं तस्स हत्थिणो पुरओ। कोवेण धमधमेंतो दंतच्छोहं तहिं देइ ॥
हत्थं-परिहत्थेणं ताव हओ करयलेण जहणम्मि। रोसेण जाव वलिओ चलिओ तत्तो कुमारो वि ॥
पुण पहओ मुट्ठीए पुण वलिओ करिवरो सुवेएण। ताव कुमारो चलिओ पच्छिम-भाए गयवरस्स ॥
ता वलइ खलइ गज्जइ धावइ उद्धाइ परिणओ होइ। रोसेण धमधमेंतो चक्काइद्धं पुणो भमइ ॥
जाव य रमिउव्वाओ णिप्फुर-कर-धरिय-कण्ण-जुयलिल्लो। दंत-मुसलेसु चलणं काऊणं ता समारूढो ॥

तत्थ य समारुहंतेण भणियं कुमार-कुवलयचंदेण।

'कोसंबि-धम्मणंदण-मूले दिक्खा तवं च काऊण। कय-संकेया जाया पंच वि पउमे विमाणम्मि ॥'

तं च सोऊण 'अहो पूरिओ पायओ' त्ति भणंतीए पेसिया मयरंद-गंध-लुद्धा गयालि-हलबोल-मुहलिया सिय-कुसुम-वरमाला आरूढा य कंधराभोए कुमारस्स। राइणा वि भणियं पुलइयंगेण 'साहु साहु, कुवलयमाले, अहो सुवरियं वरियं, अहो पूरिओ पायओ। ताव य जयजयावियं रायलोएणं 'अहो दिव्वो एस कोइ, अहो ण होइ मणुओ' त्ति। ताव य णिवडिया उवरि दिव्वा अदीसमाण-सुर-पेसिया सुरहि-कुसुम-वुट्ठी। जावं च तं पएसं जयजया-सद्द-मुहलं ति। एत्थंतरम्मि पहाइओ महिंदकुमारो जयकरिणो मूले। भणियं च णेण 'जय महारायाहिराय परमेसर सिरिदढवम्म-

1) P पाए, P लोगए for गोलए, P °भंडारे, J पढितं, J णो for जो, P जो पुयमाणं. 2) J तीए रइय, P om. तं, P पायए, J घट्टिहिति ततो तं, J परिणेहिति। P परिणेहियत्ति, P कुमारेण for रायउत्तेणं. 3) P सुपरिक्खिय पाईओ पूरओ त्ति, J पूरेतव्वो, P चिंतेति, J चिंतयति, J adds पंच वि पउमे विमाणे before अम्हे etc. 4) P om अम्हे तम्मि पउमे विमाणम्मि, J ता for ताए, P पायए. 5) J कोसंमि. 6) P पायय-, P काउं for कओ, J om. ओलंबिओ। ताव य. 7) J उच्छाइओ, P adds जरावो before जणस्स. 8) P विकत्थंति वीरा कंपंति. 9) P -वंजणवओ, P om. च, P अयंडो संभमो त्ति चिंततेण पुलोइयं, J पुलइयं. 10) J थंभो for खंभो, P समुहं, J संमुहं पाविओ त्ति।. 11) J आगत्तणेण P कुंगत्तणेण, P पवणंमि जिणेज्जु वेएण ॥, J adds य after तओ. 12) P -संकुलं, P -वेंभलं, P -रज्ज. 13) JP -संखयं [= घंखयं ?], P भार for हार, J -घंटगं. 14) P om. दिट्ठं तं जयकुंजरं. 17) P सच्छमं, P बप्पा for बप्पो बप्पो. 19) P om. one भो, P om. one अवेह, P बालो for बालओ. 20) P adds य before राइणो, P करेणस्स संपत्तो, J कुमारेण वि. 21) P आइद्धं, P दंतच्छोहिं. 22) P ताए for ताव. 23) P पुण पुहओ, P सुरेवेण।, J adds वि after कुमारो. 24) P चक्काइद्धं. 25) P repeats चलणं. 26) P तत्थ समारूवेण भणियं. 28) P adds त्ति after पूरिओ, J पातओ त्ति भणंतीए, P सेय for सिय. 29) J om. वि, J adds त्ति after second साहु, P कुवलयमाला एयं ते सुचरियं। अहो. 30) J पातओ, P om. एस, P एसो for अहो, P माणुसो त्ति, P य निवडियावरिं अदिस्समाणा. 31) P adds विय before सद्द. 32) P महिंदकरिणा मूले, P om. सिरिदढवम्मणंदण etc. to साहसालंकार.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंदण कुमार-कुवलयचंद इक्खागुवंस-बालंकुर सोम-साहा-णहयल-मियंक अओज्झापुरवरी-तिलय णरवर-पुंडरीय साहसालंकार विज्जा-परिवार धरणी-कंप पर-बल-खोह माण-धण कला-कुलहर दक्खिण्ण-महोयहि विणयावास दाण-वसण पणइ-जण-वच्छल जय कुमार' त्ति । इमं च सोऊण लीला-वलंत-धवल-विलोल-लोयणेणं णियच्छियं रायउत्तेणं । 'अहो को एत्थ तायस्स पायाणं णामं गेण्हइ' त्ति जाव पेच्छइ अणेय-णरणाह-पुत्त-परियारं जेट्ठं सहोयरं पिव महिंदकुमारं ति । तओ तं च दट्ठूण पसरमाणंतर-सिणेह-सब्भाव-भाव-पहरिस-वसुल्लसंत-रोमंच-कंचुयंगेण घट्टिओ मम्म-पएसे जयकुंजरो, तओ णिसण्णो, आरूढो य महिंदो, पसारिय-भुएण य समालिंगियं अवरोप्परं । पुच्छिओ य 'अवि कुसलं महाराइणो, दढ-सरीरा देवि त्ति, सुंदरं तुमं' ति । ताव य णरवइणा वि विजएण चिंतियं । 'अहो, अच्छरीयं इमं । एक्कं ताव इमं चेव इमस्स रूवाइसयं, दुइयं असामण्ण-जय-कुंजरालंघणग्घवियं महासत्तं, तइयं णरणाह-सहस्स-पुरओ पाद-पूरणं, चउत्थं पुण दिव्वेहिं कुसुम-वरिस-पूयणं, पंचमं महाराइणो दढवम्मस्स पुत्तो त्ति । अहो, पावियं जं पावियव्वं वच्छाए कुवलयमालाए । साहु पुत्ति कुवलयमाले, णिव्वाहियं तए पुरिसद्देसित्तणं इमं एरिसं पुरिस-सीहं पावयंतीए । अहवा ण जम्मंतरे वि मुणिणो अलियं मंतयंति' । भणिओ य णरवइणा कुमारो 'समप्पेह जयकुंजरं हत्थारोहाणं, आरुहसु मंदिरं' ति । एवं च भणिओ कुमारो । 'जहाणवेसि' त्ति भणमाणो ओयरिओ जयकुंजराओ, आरूढो य पासायं महिंद-दुइओ, अवयासिओ राइणा ससिणेहं । दिण्णाइं आसणाइं । णिसण्णा जहासुहं । पेसिया य राइणा कुवलयमाला, ससिणेहं च पुलयंती णीहरिया य सा

§ २५०) राइणा भणियं 'को एस वुत्तंतो, कहं तुमं एक्को, कहं वा कप्पडिय-वेसो, किं वा मलिण-कुचेलो एत्थ दूर-देसंतरं पाविओ' त्ति । कुमारेण भणियं 'देव जाणासि च्चिय तुमं । अवि य ।

जं ण सुमिणे वि दीसइ चिंतिय-पुव्वं ण यावि सुय-पुव्वं । विहि-वाउलीए पहओ पुरिसो अह तं पि पावेइ ॥

तेण देव, कहं कहं पि भममाणो देव्व-वसेणं अज्ज च्चिय संपयं एस पत्तो' त्ति । राइणा भणियं 'महिंद, किं एसो सो जो तए पुच्छिओ दढवम्म-पुत्तो एत्थ पत्तो ण व त्ति । महिंदेण भणियं 'देव, जहाणवेसि' त्ति 'एस सो' त्ति । कुमारेण भणियं 'महिंदकुमार, तुमं पुण कत्थ एत्थ दाहिण-मयरहर-वेलालग्गं विजयपुरवरिं पुव्वदेसाओ संपत्तो सि' । तेण भणियं 'देव णिसुणेसु । अत्थि तइया वाहियालीए समुद्दकल्लोल-तुरएणावहरिओ तुमं । अवि य ।

धावइ उप्पइओ इव उप्पइओ चेय सव्वयं तुरओ । एसेस एस वच्चइ दीसइ अद्दंसणं पत्तो ॥

तओ हाहा-रव-सद्द-णिब्भरस्स रायलोयस्स अवहरिओ तुमं । तओ वाहिओ राइणा तुरओ तुज्झाणुमग्ग-लग्गो सेस-णरवइ-जणेण य । तओ य दूरं देसंतरं ण य तुज्झ पउत्ती वि सुणीयइ । तओ गिरि-सरिया-संकुले पएसे णिवडिओ पवणावत्त-तुरंगमो । तओ राया वि तुज्झ पउत्ती असंभावेंतो णिवडिओ मुच्छा-वेब्भलो जाओ, आसासिओ य अक्केहिं पडंत-वाएहिं । तओ 'हा पुत्त कुवलयचंद, कहिं मं मोत्तुं वच्चसि' त्ति भणमाणो पुणो मुच्छिओ । तओ आसासिओ विलविउं पयत्तो ।

हा पुत्त कत्थ वच्चसि मोत्तूण ममं सुदुक्खियमणाहं । हा देव कत्थ कुमरो णिसंस ते अवहिओ सहसा ॥

किं च बहुणा परायत्तो विव, उम्मत्तगो विव, गह-गहिओ विव, णट्ठ-सण्णो विव, पणट्ठ-चेयणो विव, सव्वहा गय-जीविओ विव ण चलइ, ण वलइ, ण जंपइ, ण फंदइ, ण सुणेइ, ण वेयए, ण चेतइ त्ति । तं च तारिसं दट्ठूण मरणासंक-वेब्भलेण मंतियणेण साहिओ से जहा 'सगर-चक्कवट्टिणो सट्ठि-सहस्स-पुत्ताणं धरणिंद-कोव-विस-हुयास-जालावली-होमिआणं णिहण-वुत्तंतो तहा वि ण दिण्णो सोगस्स तेण अत्ताणो । ता महाराय, कुमारो उण केण वि दिव्वेणं अक्खित्तो किं पि कारणं गणेमाणेणं, ता अवस्सं पावइ पउत्ती । पुच्छामो जाणए, गणेंतु गणया, कीरंतु पसिणाओ, सुव्वंतु अवसुइओ, दीसंतु

2) P धरणीकंपापरबजलखोहमाणइणकयाकुलहर, J दाणवसाण, P पणदीयलवच्छल. 3) P adds लोल after विलोल, P लोयणमेगं. 4) P परियरियं जेट्ठसहोयरं. 5) P सब्भावतइरिस, J वसूल्लसंत. 6) P -भुएहिं, P कुलसं for कुसलं. 7) J देवीए त्ति । सुंदरो, P अच्छरियं, P om. इमं, P एगं ताव, J चेअ. 8) J रूवातिसयं, P जयजंजय-कुंजणग्घवियं, P पुरहओ, P पायपूरणं. 9) JP दढधम्मस्स, J adds ति before वच्छाए. 10) J णिव्वडियं उ for णिव्वाहियं, तए, P पुरिसवेसित्तणं, J adds च after इमं, P om. पुरिस, J पावयंतीय. 11) P भणंति for मंतयंति, P °कुंजहरं, J हत्थरोहाणं P हत्थारोहणं, J ति for त्ति. 12) P पसायं. 13) J णिसण्णो, P पुलइयं तीए नीहरिया. 14) P कप्पडीय, J कप्पडिवेसो तत्थ दूरदेसंतर पाविओ, P जेव for देव. 16) J सुइणे, P मेत्तं for पुव्वं before ण, J हुओ and P पुहई for पहओ. 17) P ममामाणो दिव्व-, P adds वसेणं before संपयं, J पुत्तो for पत्तो, P om. सो जो. 18) J P दढधम्म-, P om. एत्थ पत्तो, P माहिंदेण, J एसो for एस. 19) P om. तुमं पुण, P कत्थेत्थ. 20) P तुरणावहरिओ. 21) P एस for चेय, P पुत्तो for पत्तो. 22) P ज्झा for तुज्झा, J °मग्गं सेस. 23) P om. य after तओ, P तुज्झा, J संकुलपएसे. 24) P -विब्वलो (व्व looks like च), J om. य. 25) P भणमाणो पुच्छिओ पुणो आसासिओ ततो विलविउं, P adds अवि य before हा पुत्त. 26) J हा देव्व. 27) P नह for णट्ठ, P विय for विव, J तहा for सव्वहा. 28) P सुणइ न वेय सि । तं च. 29) J जह for जहा, P सहस्सा for सहस्स, P कोववस. 30) J inter. सोअ (for ग) स्स & तेण, P om. पि. 31) P पुच्छामि, J जाणउ, P गणंतु, J गणयं, P अवसुईओ.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

सुमिणयाइं, णिरुच्छंतु णेमित्तिया, पुच्छिज्जंतु जोइणीओ, गाहेंतु कण्ण-पिसाइयाओ, सव्वहा जहा तहा पाविज्जइ कुमारस्स सरीर-पउत्ती, धीरो होहि।' एवं मंतियणेण भणिओ समाणो समासत्थो मणयं राया। देवी उण खणं आसासिया, खणं पहसिया, खणं विहसिया, खणं णीसहा, खणं रोइरी, खणं मुच्छिय त्ति। सव्वहा कहं कहं पि तुह पउत्ति-मेत्त-णिबद्ध-जीवियासा आसासिज्जइ अंतेउरेणं। 'हा कुमार, हा कुमार' त्ति विलाव-सद्दो केवलं णिसुणिज्जइ।

§ २५१) णयरीए उण तिय-चउक्क-चच्चर-महापह-रच्छामुह-गोउरेसु 'हा कुमार, केण णीओ, कत्थ गओ, कत्थ पाविओ, हा को उण सो तुरंगमो दारुणो त्ति। सव्वहा तं होहिइ जं देवयाओ इच्छंति' त्ति। तरुणियणो 'हा सुहय, हा सुंदर, हा सोहिय, हा मुद्धड, हा वियड्ढ, हा कुवलयचंद-कुमार कत्थ गओ त्ति। सव्वहा कुमार, तुह विरहे कायरा इव पउत्थवइया।' णयरी केरिसा जाया।

उवसंत-मुरय-सद्दा संगीय-विवज्जिया सुदीण-जणा। झीण-विलासासोहा पउत्थवइय व्व सा णयरी॥

तओ कुमार, एरिसेसु य दुक्ख-वोलावियव्वेसु दियहेसु सोय-विहले परियणे णिवेइयं पडिहारीए महाराइणो 'देव, को वि

पूसराय-मणि-पुंज-सच्छमो पोमराय-मणि-वयणो। किं पि पियं व भणंतो दट्ठुं कीरो महइ देवं॥'

तं च सोऊण राइणा 'अहो, कीरो कयाइ किं पि जाणइ त्ति दे पेसेसु णं' उल्लविए, पहाइया पडिहारी पविट्ठा य, मग्गालग्गो रायकीरो। उवसप्पिऊण भणियं रायकीरेण। अवि य।

'भुंजसि पुणो वि भुंजसु उयहि-महामेहलं पुहइ-लच्छिं। वड्ढसि तहा वि वड्ढसु णरणाह जसेण धवलेणं॥'

भणिए, णरवइणा अउव्व-दंसणायण्णण-विम्हय-वस-रस-समूससंत-रोमंच-कंचुय-च्छविणा भणियं 'महाकीर, तुमं कओ, केण वा कारणेण इहागओ सि' त्ति। भणियं च रायसुएणं। 'देव, वड्ढसि कुवलयचंद-कुमार-पउत्तीए' त्ति भणियमेत्ते राइणा पसरंतंतर-सिणेह-णिब्भर-हियएण पसारिओभय-बाहु-डंडेण गहिओ करयलेण, ठाविओ उच्छंगे। भणियं च राइणा 'वच्छ, कुमार-पउत्ती-संपायणेण कुमार-णिव्विसेस-दंसणो तुमं। ता दे साह मे कुमारस्स सरीर-वट्टमाणिं। कत्थ तए दिट्ठो, कहिं वा कालंतरम्मि, कत्थ वा पएसे, केच्चिरं वा दिट्ठस्स' त्ति। एवं च भणिए भणियं कीरेण 'देव एत्तियं ण-याणामि, जं पुण जाणामि तं साहिमो त्ति।

§ २५२) अत्थि इओ अइदूरे णम्मया णाम महाणई। तीय य दाहिणे कूले देयाडई णाम महाडई। तीए देयाडईए मज्झे णम्मयाए णाइदूरे विंझ-गिरिवरस्स पायासण्णे अणेय-सउण-सावय-संकिण्णे पएसे एणिया णाम महातावसी। तीए आसम-पए अम्हे वि चिट्ठामो। एवं च परिवसंतस्स इओ थोएसुं चेय दियहेसुं एगागी सत्त-मेत्त-परिवारो संपत्तो तम्मि आसम-पएसम्मि कुमारो। तओ अम्हेहिं दिट्ठो। तत्थ य सब्भाव-णेह-णिब्भरालावो पयत्तो। पुणो गंतुं समुट्ठिओ पुच्छिओ अम्हेहिं जहा 'कुमार, किं तुज्झ कुलं, किं वा णामं, कत्थ वा गंतुं ववसियं' ति। तओ तेण भणियं। 'सोम-वंस-संभवो दढवम्म-महाराओ अओज्झाए परिवसइ। तस्स पुत्तो अहं, कुवलयचंदो मह णामं, गंतव्वं च मए भगवओ मुणिणो समाएसेण विजयाए पुरवरीए कुवलयमालाए पलंबियस्स पादयस्स पूरणेण परिणेउं संबोहणेणं च' त्ति। एवं च भणिऊण गओ तं दक्खिणं दिसं कुमारो। भणियं च तीय तावसीय 'कुमार, महंतो उव्वेवो तुह गुरूणं, ता जइ तुमं भणसि ता साहेउ एस कीरो गंतूणं सरीर-पउत्ति' त्ति। भणियं च तेण 'को दोसो, पूयणिज्जा गुरुणो, जइ तीरइ गंतुं, ता वच्चउ, साहेउ गुरूणं पउत्तिं। साहेयव्वं च मज्झ वयणेणं पायवडणं गुरूणं' ति भणमाणो पत्थिओ मण-पवण-वेओ कुमारो' त्ति।

1) P पुच्छियंतु, P पिसाईआओ, P कुमार तस्स. 2) P होही, J om. समाणो, P ओ for उण, P मुच्छिया for आसासिया, J om. खणं पहसिया. 3) J रोइणी for रोइरी, J सव्वहा अहं कहं, P पउत्तिमेत्त निससबद्ध-. 4) J om. 2nd हा, J विलव-. 5) J तीयचउक्क, P महापहारच्छामुहा-. 6) P होइ for होहिइ, P om. त्ति, J तरुणीअणो उण हा सुहयसुंदर. 7) J विय for इव. 8) J adds अवि य before उवसंत. 9) J उअसंत-, P सुदीणमणा, P मोहा for सोहा. 10) P om. कुमार, P आ दुक्ख for य दुक्ख, P वियले for विहले, P देवि for देव. 11) [मणि-सच्छम-वयणो] 12) P adds अवि य before तं च, P कहीइ for कयाइ, P om. णं, J om. य. 13) J मग्गालग्गा रायकीराओ समप्पिऊण य भणियं. 14) P भुंजसु पुणो, P लच्छी।. 15) P भणिए for भणिए, J णरवइणो, P दंसणायत्तण, P om. रस, J कंचअच्छविणो भणियं च रायसुएण, J om. भणियं महाकीर etc. to इहागओ सि त्ति, P adds राइणा भणिओ before महाकीर. 16) P सु त्ति for सि त्ति, P om. च, P om. कुमार. 17) J पसारिओ भुअडण्डेण. 18) J om. पउत्तीसंपायणेण कुमार, P साह कुमार सट्टरीरसट्ठमा..., P दिट्ठो कहं व कंनि व कालंतरंमि. 19) J om. च, J देवि for देव, J किं पुण जं for जं पुण. 21) J दाहिणकूले P दीहिणे कूल, J तीय देआडईअ मज्झे. 22) P om. णम्मयाए णाइदूरे. 23) P अम्ह, P om. वि, J च परिसवंतस्स, P -वरियासो. 24) P आसमपए कुमारो, J P °भरालावे, P पयत्ते. 25) J adds य before अम्हेहिं. 26) JP -संभमो, P दढधम्म-, J उवज्झाए for अओज्झाए, P हं for अहं, P om. मह. 27) P मुणिणा, P विजयपुर°, P °मालालंबियस्स पादस्स पादस्स पूरणेण, J पातयस्स, P परिणेओ, P संबोहणं ति।. 28) J adds त्ति after कुमारो, P om. तीय, P तावसीए, P adds गुरूणं before तुमं. 29) P साहउ, P -पउओ त्ति, J om. त्ति, P पूयणिज्जो गुरुयणो. 30) P मयण for मज्झ, J om. पायवडणं, P पुच्छिओ for पत्थिओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २५३) इमं च सोऊण राइणा तक्खणं चेय सद्दाविया दिसा-देस-समुद्द-वणिया, पुच्छिया य 'भो भो वणिया, जाणह तुब्भे णिसुय-पुव्वा दिट्ठ-पुव्वा वा विजया णाम णयरी दाहिण-समुद्द-वेलाउलम्मि' । तेहिं भणियं 'अत्थि देव सयल-रयणाहारा णयरी विजया, को वा ण-याणइ । तत्थ राया महाणुभावो तुज्झ चरियाणुवत्ती विजयसेणो सयं णिवसए, देवो वि तं जाणइ च्चिय जइ णवरं पम्हुट्ठो' त्ति । इमं च सोऊण राइणा भणियं । 'वच्छ महिंदकुमार, पयट्ट, वच्चामो तं चेय णयरिं' ति भणमाणो समुट्ठिओ राया । तओ मया विण्णविओ । 'देव, अहं चेव वच्चामि, चिट्ठ तुमं' ति भणिए राइणो पोम्मरायप्पमुहा आणत्ता राय-तणया । 'तुब्भेहिं सिग्घं महिंदेण समं गंतव्वं विजयं पुरवरिं' ति भणिए 'जहाणवेसि' त्ति भणमाणा पयत्ता । अम्हेहि वि सज्जियाइं जाण-वाहणाइं । तओ णीहरिया बाहिं णयरीए । संदिट्ठं च राइणा ।

'मुच्छा-मोहिय-जीया तुज्झ पउत्तीहिँ आससिज्जंती । ता पुत्त एहि तुरियं जा जणणी पेच्छसि जियंती ॥'

देवीय वि संदिट्ठं ।

'जिण्णो जराए पुत्तय पुणो वि जिण्णो विओग-दुक्खेण । ता तह करेसु सुपुरिस जा पियरं पेच्छसि जियंतं ॥'

इमे य संदेसए णिसामिऊण आगया अणुदियह-पयाणएहिं गिम्हयालस्स एक्कं मासं तिण्णि वासा-रत्तस्स । तओ एत्थ संपत्ता । एत्थ य राइणो समप्पियाइं कोसल्लियाइं, साहिया पउत्ती महारायसंतिया, पुच्छिया य तुह पउत्ती जहा एत्थ महारायपुत्तो कुवलयचंदो पत्तो ण व त्ति, जाव णत्थि णोवलद्धा पउत्ती । तओ पम्हुट्ठ-विज्जो विव विज्जाहरो, विहडिय-किरिया-वाओ विव णरिन्दो, णिरुद्ध-मंतो विव मंतवाई, विसंवयंतो विव तंतवाई, सव्वहा दीण-विमणो जाओ । पुणो राइणा भणियं 'मा विसायं वच्च, को जाणइ जइ वि एत्थ संपत्तो तहावि णोवलक्खिज्जइ' । अण्णं च 'अज्ज वि कह वि ण पावइ' त्ति ता इह-ट्ठिओ चेय कं पि कालं पडिवालेह । दिण्णं आवासं । कयाइं पसायाइं । दियहे य दियहे य तिय-चउक्क-चच्चर-महापह-देवउल-तलाय-चट्ट-मढ-विहारेसु अण्णिसामि । तओ अज्ज पुण उट्ठेमाणस्स फुरियं दाहिणेणं भुयाडंडेणं दाहिण-णयणेण य । तओ मए चिंतियं 'अहो सोहणं णिमित्तं जेण एवं पढीयइ । जहा,

सिर-फुरिए किर रज्जं पिय-मेलो होइ बाहु-फुरिएण । अच्छि-फुरियम्मि वि पियं अहरे उण चुंबणं होइ ॥
उट्ठम्मि भणसु कलहं कण्णे उण होइ कण्ण-लंकरणं । पियदंसो वच्छयले पोट्टे मिट्ठं पुणो भुंजे ॥
लिंगम्मि इत्थि-जोगो गमणं जंघासु आगमो चलणे । पुरिसस्स दाहिणेणं इत्थीए होइ वामेणं ॥
अह होइ विवज्जासो जाण अणिट्ठं च कह वि फुरियम्मि । अह दियहं चिय फुरणं णिरत्थयं जाण वाएण ॥'

ता कुमार, तेण बाहु-फुरिएण पसरमाण-हियय-हरिसो किर अज्ज तुमं मए पावियव्वो त्ति इमं रायंगणं संपत्तो जाव दिट्ठो तुमं इमिणा जयकुंजरेण समं जुज्झमाणो त्ति ।

§ २५४) तओ इमं च णिसामिऊण राइणा भणियं । 'सुंदरं जायं जं पत्तो इह कुमारो तुमं च त्ति । सव्वहा धण्णा अम्हे, जेण दढवम्म-महाराइणा समं संबंधो, कुवलयमालाए पुव्व-जम्म-णेहोवलंभो, अम्ह घरागमणं कुमारस्स, उद्दाम-जयकुंजर-लंघणं, दिव्व-कुसुम-वुट्ठि-पडणं, पादय-पूरणं च । सव्वं चेय इमं अच्छरियं । सव्वहा परिणाम-सुह-फलं किं पि इमं ति । तेण वच्चह तुब्भे आवासं, वीसमह जहा-सुहं । अहं पि सद्दाविऊण गणयं वच्छाए कुवलयमालाए वीवाह-मास-दियह-तिहि-रासि-णक्खत्त-वार-जोय-लग्ग-मुहुत्तं गणाविऊण तुम्हं पेसेहामि' त्ति भणमाणो राया समुट्ठिओ आसणाओ । कुमारा वि उवगया आवासं कय-संमाणा । तत्थ वि सरहसमइभग्ग-पयत्त-गइ-वस-खलंत-चलणग्ग-मणि-णेउर-रणरणा-सणाह-मेहला-सद्द-पूरमाण-दिसिवहाओ उद्धाइयाओ विलासिणीओ । ताहिं जहा-सुहं कमल-दल-कोमलेहिं करयलेहिं पक्खालियाइं संख-चक्कंकुसाइ-लक्खण-जुयाइं चलणयाइं, समप्पियाओ य दोण्हं पि पोत्तीओ । अवि य ।

णेहोयल्लिय-देहा सुपुरिस-फरिसोगलंत-हद्दरंगी । पोत्ती रत्ता महिल व्व पाविया णवर कुमरेण ॥

तओ सय-सहस्स-पाएहिं बहु-गुण-सारेहिं सिणेह-परमेहिं सुमित्तेहि व तेल्ल-विसेसेहिं अब्भंगिया विलासिणीयणेण, उवट्टिया खर-फरुस-सहावेहि सिणेहावहरण-पडुएहिं खलेहिं व कसाय-जोएहिं, ण्हाणिया य पयइ-सत्थ-सीय-सुह-सेव्व-सच्छेहिं

2) P वेलाउलंमि, P देवा for देव. 3) P om. णयरी, P जत्थ for तत्थ, J चरियवत्ती. 4) J णयाणइ for जाणइ. 5) J मए for मया, J चेअ for चेव, P om. ति, J राइणा for राइणो. 6) J पोम्म° P चोप्परायपमुहा, P विजयपुरवरिं. J भणिआ for भणिए. 7) P अम्हे किंचि सज्जियाइं । ताओ, P adds अवि य before मुच्छा. 8) P आससिज्जंति, P ता कुणसु पुत्त एन्हि जा जणणीं पेसुच्छसु जियंती. 10) J विओअ. 11) P संदेसे, J एक्कमासं. 12) P य राइण, J संहिआ for साहिया, P पयत्ती महा°, P महारायउत्तो. 13) J विणडियकिरियावाओ. 14) J विरुद्ध for णिरुद्ध, J मंतवाती, J om. विसंवयंतो विव तंतवाई, P तंतवई. 16) P कालं पडिवज्जेहं, P पासायाइं, P om. य दियहे य, J महापह°. 17) P अन्नसामि, P om. तओ, P दाहिणं, P भुयादंडेणं, P om. दाहिण-. 18) J पढीयति. 19) P अच्छिफुरणंमि. 20) P कन्नलंकारं । पियफसो. 21) J इत्थिजोओ. 23) P तओ for ता. 24) P ति for त्ति. 25) J एअव for इमं च, J संपत्तो for जं पत्तो. 26) P दढधम्मंमहाराइणो, J संबद्धो. 27) P पायवपूरणं, J अच्छरीयं. 28) P विवाह°. 29) J दिअहं, P गणामिऊण. 30) J सरहसगइभग्ग, P वइस for वस, P रणरणो. 31) P उद्धाइयाओ, P om. जहा, J om. दल. 32) P om. लक्खणजुयाइं, P चलणाइं, P om. य. 33) J देहो, P सुपुरेस, J फरिसोभलंत, P adds त्तीरत्ता after रत्ता. 34) P पणिया for परमेहिं, P om. सुमित्तेहि व etc. to ण्हाणिया. 35) JP सच्छसीअ°.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

कलंकावहारएहिं सज्जण-हियएहिं व जलुप्पीलेहिं, दिण्णाणि य सुरहि-परिमलायड्डिय-गुमुगुमेंत-भमर-बलामोडिय-चरण-चुंबियाइं गंधामलयाइं उत्तिमंगे। तओ एवं च कय-इट्ठ-देवया-णमोक्कारा, भोत्तूण भोयणं सुह-णिसण्णाणं आसणेसुं किं-किं पि चिर-विओय-संभरंताण समागया एक्का राय-कुलाओ दारिया। तीय पणाम-पच्चुट्ठियाए साहियं। 'कुमार, वच्छाए कुवलयमालाए गणिए गह-गोयरे गणएण ण ठवियं सुज्झमाणं लग्गं अज्ज वि वीसत्थं, ता मा तूरउ कुमारो हियएणं। णिययं चिय कुमारस्स इमं गेहं ता जहा-सुहं अच्छसु' त्ति भणिऊण णिक्खंता दारिया। तओ महिंदेण भणियं 'कुमार, अज्ज वि दीहं इमं, संपयं महाराइणो लेहं पेसेम्ह तुह संगम-पउत्ति-मेत्तेणं अत्थेणं' ति भणिऊण विणिक्खंतो महिंदो। कुमारो य चिंतिउं पयत्तो 'अहो, लंघिया मए असंखा गिरिवरा, पभूया देसा, बहुयाओ णिण्णयाओ, महंताओ महाणईओ, अणेयाओ महाडईओ, पावियाइं अणेयाइं दुक्खाइं, ताइं च सव्वाइं कुवलयमाला-मुहयंद-चंदिमा-गलत्थियाइं तम-पंथाइ व पणट्ठाइं। संपयं पुण इमिणा पडिहारि-वयणेण अण्णाणि वि जाइ लोए दुक्खाइं ताइं मज्झ हियए पक्खित्ताइं ति मण्णे हं। सव्वहा कत्थ अहं कत्थ वा सा तेलोक्क-सुंदरी। अवि य।

आइट्ठं जइ मुणिणा पूरिज्जइ णाम पायओ गूढो। तेलोक्क-सुंदरीए तीए उण संगमं कत्तो ॥
अच्छउ ता तीएँ समं पेम्माबंधो रयं च सुरयम्मि। हेलाए जो वि दिट्ठो ण होइ सो माणुसो मण्णे ॥'

§ २५५) इमं चिंतयंतो मयण-सर-गोयरं संपत्तो। तओ किं चिंतिउं पयत्तो। अवि य। अहो तीए रूवं।

चलणंगुलि-णिम्मल-णह-मऊह-पसरंत-पडिहयप्पसरं। पंचमियंद कह णेमि णवर-णक्खेहिँ उवमाणं ॥
जइ वि सिणिद्धं मउयं कोमल-विमलं च होइ वर-पउमं। लज्जंति तीएँ पाया उवमिज्जंता तह वि तेण ॥
सामच्छायं मउयं रंभा-थंभोवमं पि ऊरु-जुयं। ण य भणिमो तेण समं बीहेंतो अलिय-दोसस्स ॥
सुरयामय-रस-भरियं महियं विबुहेहिँ रमण-परियरियं। सग्गस्स समुद्दस्स व तीय कलत्तं अणुहरेज्ज ॥
चिंतेमि मुट्ठि-गेज्झो मज्झो को णाम सद्दहे एयं। देवा वि काम-रुइणो तं मण्णे कत्थ पावंति ॥
मरगय-कलस-जुयं पिव थण-जुयलं तीएँ जइ भणेज्जासु। असरिस-समसीसी-मच्छरेण मह णाम कुप्पेज्जा ॥
कोमल-मुणाल-ललियं बाहा-जुयलं ति णत्थि संदेहो। तं पुण जल-संसग्गि दूसियं विहडए तेण ॥
कंतीएँ सोम्म-दंसित्तणेण लोओवरोह-वयणेहिं। चंद-समं तीएँ मुहं भणेज्ज णो जुज्जए मज्झ ॥
किं धवलं कंदोट्टं सप्फं रत्तं च णीलयं कमलं। कंदोट्ट-कुमुय-कमलाण जेण दिट्ठी अणुहरेज्ज ॥
घण-णिद्ध-मउय-कुंचिय-सुसुरहि-वर-धूव-वासियंगाण। कज्जल-तमाल-भमरावलीउ दूरेण केसाण ॥
इय जं जं च्चिय अंगं उवमिज्जइ कह वि मंद-बुद्धीए। तं तं ण घडइ लोए सुंदरयर-णिम्मियं तिस्सा ॥

§ २५६) एवं च चिंतयंतो दुइयं मयणावत्थं संपत्तो कुमारो, तत्थ संगमोवायं चिंतिउं समाढत्तो। केण उण उवाएण तीए दंसणं होज्ज। अहवा किमेत्थ वियारेण।

रइऊण इत्थि-वेसं कीय वि सहिओ सहि त्ति काऊण। अंतेउरम्मि गंतुं तं चंदमुहिं पलोएमि ॥

अहवा णहि णहि।

सुपुरिस-सहाव-विमुहं राय-विरुद्धं च णिंदियं लोए। महिला-वेसं को णाम कुणइ जा अत्थि भुय-दंडो ॥

किं पुण करियव्वं। हुं,

माया-वंचिय-बुद्धी भिण्ण-सही-वयण-दिण्ण-संकेयं। तुरयारूढं हरिऊण णवर राईए वच्चामि ॥

अहवा ण एरिसं मह जुत्तं।

स च्चेय कहिं वच्चइ कत्थ व तुरएहिँ हीरए बाला। चोरो त्ति णिंदणिज्जो काले अह लंछणं होइ ॥

ता किं पुण कायव्वं। हुं,

---

1) J सज्झाण and P सज्जए हियए for सज्जण, P गुमुमुमेंत. 2) P -नमोक्कारो. 3) P पच्चुट्ठियाए. 4) J P गणए (perhaps गणएँ) for गणएण (emended), P ठुवियं for ठवियं, J °मागलग्गं, P तूरओ कुमार. 6) P inter. इमं & दीहं, J पेसेसु for पेसेम्ह, P -पउत्तमेत्तेणं अत्थेविणं, P om. ति भणिऊण. 7) P विय for य, P om. महंताओ महाणईओ. 8) P -मुहलंदिवागलवत्थियाइं, J पंथ इव P पंदा इव. 9) P पणट्ठं।, P पडिहार-, P जाणि for जाइ-. 10) P करयाइं. 11) P मुणिणो पूरिज्जउ. 12) J आ तीय for ता तीएँ, J पेम्माबद्धो P पेम्माबंधा. 13) P मरण for मयण, P पत्तो for संपत्तो, P om. तओ किं चिंतिउं पयत्तो. 14) J मयूह, J परिहय.° 15) J तीय. 16) P ऊरुजयं, P इमं for समं, P बीहंतो. 17) J समुद्द व, J अणुहरेज्जा P अवहरेज्ज. 19) J तीय, P कुप्पज्जो. 20) P पुण खलजणसंसग्गिदूसियं, J दूसिअं. 21) J कंतीय, P सोम, J तीय मुहं मणेज्ज. 22) P किंदोट्टं, P om. सत्थं रत्तं, P कुमुया, J अणुहरेज्जा. 23) P कुंचियसुरहि-. 24) J से for अंगं, J सुंदरयरअम्मि तिस्साए ॥. 25) P चिंतयते, J adds य after तत्थ, P उण वाएण. 26) J तीय, J होज्जा, P किमित्थ. 29) P om. णाम, P adds नवर before जा, J जो for जा. 31) P राई न for राईए. 32) P अहवा न जुत्त मह एरिसं।, P om. मह जुत्तं. 33) J कहं for कहिं, P कुले य for काले य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवहत्थिऊण लज्जं समुहं चिय विण्णवेमि रायाणं । उप्पिज्जउ अज्ज चिय कुवलयमाला पसाएणं ॥

तं पि णो जुज्जइ । कह ।

अवहत्थिय-लज्जो हं मयण-महासर-पहार-विहलंगो । ठाहामि गुरूण पुरो पियाए णामं च घेच्छामि ॥

ता एक्को उण सुंदरो उवाओ । अवि य ।

णिकड्डियासि-विसमो णिवाडियासेस-पक्क-पाइक्को । दारिय-करि-कुंभयडो गेण्हामि बला जयसिरिं व ॥

§ २५७) एवं च चिंतयंतस्स समागओ महिंदकुमारो । तेण य लक्खिओ से हियय-गओ वियप्पो । भणियं च सहासं णेण 'कुमार कुमार, किं पुण इमं सिंगार-वीर-बीभच्छ-करुणा-णाणा-रस-सणाहं णाडयं पिव अप्पणयं णच्चीयइ' त्ति । तओ ससज्झस-सेय-हास-मीसं भणियं कुमारेण 'णिसण्णसु आसणे, पेसिओ तायस्स लेहो' । महिंदेण भणियं 'पेसिओ' । कुमारेण भणियं 'सुंदरं कयं, अह इओ केत्तिय-मेत्ताइं जोयणाइं अओज्झा पुरवरी । महिंदेण भणियं 'कुमार, किं इमिणा अपत्थुय-पसंगेण अंतरेसि जं मए पुच्छियं' । तओ सविलक्ख-हास-मंथरच्छिच्छोहं भणियं कुमारेण 'किं वा अण्णं एत्थ पत्थुय-पुव्वं' । महिंदेण भणियं 'णणु मए तुमं पुच्छिओ जहा किं पुण इमं अप्पणयं तए णडेण व णच्चिं य समाढत्तं' । तओ कुमारेण सविलक्खं हसिऊण भणियं 'किं तुहं पि अकहणीयं अत्थि । जं पुण मए ण साहियं तं तुह विण्णाणं परिक्खमाणेण । किं ।

जइ मह हियय-गयं लक्खेसि तुमं किं वा ण व' त्ति । महिंदेण भणियं 'किं कुमार, महाराय-सिरिदढवम्म-परियणे अत्थि कोइ जो जणस्स हियय-गयं ण-याणइ' त्ति । कुमारेण भणियं 'अलं परिहासेण । सव्वहा एयं मए चिंतियं जहा आगया एत्थ अम्हे दूरं देसंतरं किर कुवलयमाला परिणेयव्व त्ति । गहिओ जयकुंजरो, पूरिओ पायओ, दिट्ठा कुवलयमाला, किर संपयं णिव्वुया जाय त्ति जाव इमाए पडिहारीए साहियं जहा अज्ज वि कुवलयमालाए गह-लग्ग-जोओ ण सुंदरो, तेण 'कुमार, ण तए जूरियव्वं वीसत्थो होहि' एयं किर राइणा संदिट्ठं ति । तेण मए चिंतियं जहा 'एस एरिसो छलो जेण गह-लग्ग-दियहो वा ण परिसुज्झइ त्ति । सव्वहा कुवलयमाला-थण-थली-परिमलण-पक्कलं ण होइ अम्ह वच्छयलं । अवि य ।

अइबहुयं अम्ह फलं लहुयं मण्णामि कामदेवं पि । जं तीएँ पेसिया मे धवल-विलोला तहा दिट्ठी ॥

ता ण सा मं वरेउ' त्ति इमं मए चिंतियं ।

§ २५८) महिंदेण भणियं 'अहो,

जं तं सुव्वइ लोए पयडं आहाणयं णरवरिंद । पंडिय-पढिओ वि णरो मुज्झइ सव्वो सकज्जेसु ॥

जेण पुव्व-जम्म-सिणेह-पास-बद्धा मुणिवर-णाणोवएस-पाविया जयकुंजर-लंघण-घडंत-मुणि-वयणा लंबिय-पादय-पूरण-संपुण्ण-पइण्णा सयल-णरिंद-वंद-पच्चक्ख-दिण्ण-वरमाला गुरुयण-लज्जावणय-वयण-कमल-वण-माल-ललिय-धवल-विलोल-पसरंत-दिट्ठि-माला वि कुवलयमाला वियप्पंतरं पाविय त्ति । अहो मूढो सि, इंगियाइं पि ण गेण्हसि । किं पुण एंतो ण पुलइओ सि । किं पुलइज्जंतीए ण लज्जियं तीए । किं ण पयडिओ अंस-भाओ । किं जयकुंजर-लंघण-वावडो ण पुलइओ तं जहिच्छं । किं किं पि गुरु-पुरओ वि ण भणियं अव्वत्तक्खरं । किं ओयंछिय-वयणा ण जाया । किं पिउणा 'वच्छे, वसु' त्ति भणिए ण अलसाइयं । किं दूरे ण तुह दिण्णो अच्छिच्छोहो । किं ण मउलियाइं आसण्णे णयणाइं । किं ण अण्ण-ववएसेहिं हसियं तीए । किं कण्ण-कंडूयच्छलेण ण वूढो रोमंचो । किं ण पीडिए णियय-थण-मुहे । किं ण गहियं अहरं दियवरेहिं । किं ण केस-संजमण-मिसेण दंसियं थणंतरं । किं ण संजमियं अलिय-लहसियमुत्तरिज्जयं । किं तुमं दट्ठुं ण पुलइयं अत्ताणयं । किं अहं ण पुलइओ गुरुयणो विव सलज्जं । किं अलिय-खेय-किलंत-जंभा-वस-वलिउव्वेल्लमाण-बाहा-लयाए ण णिक्खित्तो अप्पा सहीए उच्छंगे त्ति, जेण भणसि जहा णाहं रुइओ कुवलयमालाए' त्ति । इमं च सोऊण भणियं

1 > P समुहे, P पसाएसणं. 2 > J अह for कह. 3 > P दाहामि, P पुरओ for पुरो, P घेत्तूण for घेच्छामि. 5 > P निव्वडियायेस, जयसिरिव्व, P च for व. 6 > J हिअयग्गओ P हिओदयगओ. 7 > P inter. णेण (णेयण) & सहासं, P om. one कुमार, P बीभत्सकारुण-, J सणाहणाडयं. 8 > J ससुज्झससेअहास- P सज्झस-, J णीसम्मसु P निसम्मसु, P तायतस्स, P भणिउं. 9 > P अइ for इओ, J अयोज्झा P अउज्झा, J अप्पत्थुअ-. 10 > P पुच्छिओ, J -संथरछिछोहं, J अण्णं कत्थ एत्थ अपुव्वं. 11 > J णच्चिउं. 12 > P अकहणीयमत्थि, P om. किं. 13 > P लक्खसि, P दढधम्म-. 14 > P न for जणस्स, P जणस्स जाणइ for णयाणइ. 15 > J पातओ. 16 > J जायन्ति, P विवाह for गह. 17 > P inter. चिंतियं & मए. 18 > P om. वा before ण, om. त्ति, P थणत्थली for थणथली, P om. पक्कलं. 19 > P अप्पफलं, J तीय. 20 > J ममं for मं, P वरउ, J adds ति after चिंतियं. 22 > J एअं तं जं सुव्वइ पयडं आहाणयं जणे सयले । for the first line जं तं etc. P पंडिये, P व for वि, P inter. सव्वो & मुज्झ (ज्झा) इ. 23 > J adds संबद्ध before सिणेह, P सिणह, P पाययपूरण. 24 > P om. दिण्ण, P om. विलोल. 25 > P इंगियं पि, P किं पुलयंतो न. 26 > J om. ण लज्जियं तीए, J पडिओ for पयडिओ, P °कुंजरलंघण, J om. तं. 27 > P गुरू-, J अब्भंतरक्खरं, P किं उअच्छिय-. 28 > P adds त्ति after अच्छिच्छोहो. 29 > P किं अन्नावएसेहिं न हसियं, J तीय, P किं वा कन्नकंडुय°, J कुट्ठो for वूढो, J पंडिए for पीडिए, P नियमे-. 30 > P दसणेहिं for दियवरेहिं, P संजममिसेण. 31 > P दट्ठूण न पुलइयमत्ताणयं, P जंतावस-. 32 > P om. ण, P सही for सहीए, P om. जहा before णाहं, P एवं for इमं.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

कुमारेण 'अहो, गुरु-पुरओ पढम-विज्जुरेहा इव दिट्ठ-णट्ठा एक्कंते एत्तिए भावे पदंसिए कत्थ वा तए लक्खिए' त्ति। तेण भणियं 'कुमार, अहो पंडिय-मुक्खो तुमं, जेण

हसियं पि ण हसियं पिव दिट्ठं पि ण दिट्ठमेव जुवईण। हियय-दइयम्मि दिट्ठे को वि अउव्वो रसो होइ ॥'

कुमारेण भणियं 'एयं तुमं पुण जाणसि, मए उण ण किंचि एत्थ लक्खियं'ति। महिंदेण भणियं 'तुमं किं जणसि मय-जलोयलंत-गंडयलोलेहड-भसलावली-कलप्पलावाउलिज्जंत-जय-कुंजर-लंघण-वावड-मणो, अहं पुण तीए तम्मि समए तुह दंसण-पहरिसुल्लसंत-रोमंच-पसाहण-पसाहियायार-भावण्णेसण-तग्गओ, तेण जाणिमो' त्ति। जं च तए आसंकियं महाराय-विजयसेणो बहु-दियह-लग्ग-गणण-च्छलेण ण दाहिइ बालियं ति तं पि णो। को पुण अण्णो तुह सरिसो कुल-विहव-रूव-जोव्वण-विण्णाण-णाण-सत्त-कला-कलावेहिं जस्स तं दाहिइ। ता मिच्छा-वियप्पो तुह इमो'त्ति भणमाणस्स समागया एक्का दारिया। तीए चलण-पणाम-पच्चुट्ठियाए विण्णत्तं। 'कुमार, भट्टिदारियाए सहत्थ-गंथिया इमा सिरिमाला तुहं पेसिया। एसो य पारियाय-मंजरी-सिरीस-कय-कारिम-गंध-लुद्ध-मुद्धागयालि-माला-हलबोल-वाउलिज्जमाण-कारिम-केसरो कण्णऊरओ पेसिओ' त्ति भणमाणीए पणामिओ कुमारस्स। कुमारेणावि सुह-संदोह-महोयहि-मंथणुग्गओ विव सायरं गहिओ त्ति पुलइयं च तेहिं।

§ २५९) भणियं च महिंदेण 'कुमार, सुंदरं कण्णपूरयं, किंतु मणयं इमस्स इमं णालं थूलं'। कुमारेण वि भणियं 'एवमिमं, किं पुण कारणं दे णिरूवेमि'। दिट्ठं च अइतणुय-भुजवत्तंतरियं पत्तच्छेज्ज-रायहंसियं। उव्वेल्लिया य कुमारेण, दिट्ठा असरिसा विय रायहंसिय त्ति। कुमारेण भणियं 'वयंस, जाण ताव केरिसा इमा हंसिय' त्ति। महिंदेण भणियं 'किमेत्थ जाणियव्वं, भुज्ज-विणिम्मिया'। तओ सहासं कुमारेण भणियं 'णणु अहं भावं पुच्छामि'। महिंदेण भणियं 'केरिसो इमाए अचेतणाए भावो'। कुमारेण भणियं 'अलं परिहासेण। णणु किं एसा भीया, किं वा उव्विग्गा, किं वा दीणा, किं वा पमुइया, आउ पिय-विरह-विहुरा होउ साहीण-दइय-सुरयासाय-लालस' त्ति। महिंदेण भणियं 'ण इमाण एक्का वि, किंतु अहिणव-दिट्ठ-णट्ठ-दइया-सुह-संगम-लालसा एसा'। कुमारेण भणियं 'भण, कहं जाणीयइ'। महिंदेण भणियं 'किं वा एत्थ जाणियव्वं। अवि य।

तक्खण-विणट्ठ-पिययम-पसरिय-गुरु-विरह-दुक्ख-सिढिलंगी। उक्कंठिय-पसरिय-लोल-लोयणा दीसए जेण ॥

कुमारेण भणियं 'एवं णिमं णिउणं च णिरूविउं पयत्तो। पुलयंतेण य भणियं 'वयंस, दुवे इमीए पुडा'। विहाडिया य जाव पेच्छइ अवरलिवी-लिहियाइं सुहुमाइं अक्खराइं। भणियं च तेण 'अहो, अक्खराणि व दीसंति'। वाइउं पयत्तो। किं पुण लिहियं तत्थ। अवि य।

अहिणव-दिट्ठ-दइय-सुह-संगम-फरिस-रसं महंतिया। दूसह-विरह-दुक्ख-संताविया कलुणं रुवंतिया ॥
तरलिय-णयण-बाह-जल-पूर-जलज्जलयं णियंतिया। दइया-हंसएण मेलिज्जइ इह वर-रायहंसिया ॥

तओ कुमारेण भणियं 'अहो णिउणत्तणं कलासु कुवलयमालाए, जेण पेच्छ कारिम-कण्णपूरओ, तस्स मुणाले रायहंसिया, सा वि णिय-भाव-भाविया, तीय वि मज्झे हंसिया-भाव-विभावणं इमं दुवइ-खंडलयं ति सव्वहा तं तहा जहा तुमं भणसि'। महिंदेण भणियं 'तुमं पुण असंबद्धं पलवसि, जेण इमं पि एरिसं रायहंसिं अण्णहा संभावेसि' त्ति। ताव य।

मा हीरइ रायरसा धण-धणिया-विहव-पुत्त-भंडेहिं। धम्मेण विणा सव्वं पुक्करियं जाम-संखेण ॥

इमं च सोऊण सहसुब्भंत-विलोल-चलंत-पम्हल-णयणो भणिउं पयत्तो। 'अहो अत्थंगओ दिणयरो, पूरिओ चउ-विहय-जाम-संखो। ता संपयं करणीयं किंचि करेमो। ता वच्च तुमं, साहसु कुवलयमालाए 'सव्वं सुंदरं, अहो णिउणा तुमं'ति। तओ 'जहाणवेसि' त्ति भणिऊण पडिगया सा दारिया।

1 > J विज्जुरेहं पिव, P दिट्ठनट्ठा एक्कत्तो, P om. तए. 2 > P मुद्धो for मुक्खो, J om. जेण. 3 > J दिट्ठमे जुवईण. 4 > P om. पुण, J गइंचि, P om. एत्थ, P inter. किं & तुमं, P मजलोअलंतगंडयलल्लेहडसलावलीकिलप्प°. 5 > J तीय. 6 > J पसोहिआयारभावणेसण-, P जो णिमो त्ति, P adds त after तए, P adds तं before महाराय. 7 > J दाहिति जालिअं ति, P को उण, P -विविहव-. 8 > J जस्स त्तं दाहिति ।, P दारियो. 9 > J तीय, J पच्चुट्ठिताए पच्चुट्ठियाए P भट्टदारियाए, P गुच्छा for गंथिया, P om. तुहं. 10 > P कन्नेऊरउ पेसिउ. 11 > J भणमाणीय, P कुमारेण वि, P om. त्ति. 12 > P om. च after भणियं, P कन्नेऊरयं, J om. किंतु मणयं, J इमण्णालं, P om. वि. 13 > J om. एवमिमं, J अतितणुय, P -चुज्जवुत्त°. 14 > P om. जाण, J om. इमा, P हंसिया ।. 15 > P भिड for भुज्ज, P om. महिंदेण भणियं 'केरिसो etc. to कहं जाणीयइ. 18 > J जाणीअति. 20 > P पणट्ठ for विणट्ठ, P om. पसरियगुरु etc. to पुलयंतेण. 21 > J एवणिमं, P एतेण for य before भणियं, J पुडे विहडिया. 22 > P अक्खराइं च. 23 > P om. अवि य. 24 > J -रसम्महंतिआ, P om. विरह, P संतावियं, J करुणं रुअंतिआ. 25 > P वाहजलपूरजलपूरजलुजलुयं, J णियंतिआ, J देया for दइया, J मेणिज्जउ. 26 > J णिउत्तणं, J जोण for जेण, J कण्णऊरओ, J विआले P मुणाल for मुणाले. 27 > P विणीय-, P adds विभाव before विभावणं, J दुइअखण्डलयं P दुइयखंडयं. 28 > J पर for पुण, P adds ण after पुण, P अहण्णहा. 29 > P मोहीरइ-रायहसा, P सव्वं थुक्करियं. 30 > P सहसुव्वत्त, J -मम्हल, P -नयणा, P पयत्ता, J अह for अहो, P transposes जाम after चउ. 31 > P सहाय for साहसु, J णिउणो. 32 > P परिगया, P चेडिया for दारिया.

§ २६०) कुमारा वि कय-ण्हाण-कम्मा उवगया अब्भंतरं । तत्थ वि कुमारेण जविया जिण-णमोक्कार-चउव्वीसिया, झाणेण य झाइओ समवसरणत्थो भयवं जय-जीव-बंधवो उसभणाहो । पढियं च ।

जय ससुरासुर-किंणर-णर-णारी-संघ-संथुया भगवं । जय सयल-विमल-केवल-ललिउज्जल-णाण-वर-दीव ॥
मय-माण-लोह-मोहा एए चोरा मुसंति तुह वयणं । ता कुणसु किं पि तं चिय सुरक्खियं जह इमं होइ ॥

त्ति भणिऊण कओ मण-वियप्पियाणं भगवंताणं पणामो त्ति । तओ सुहासणत्था संवुत्ता । भणियं च महिंदेण 'कुमार, कीस तए कुवलयमालाए ण किंचि संदिट्ठं पेम्म-राय-संसूयणं वयणं' । कुमारेण भणियं 'ण तुमं जाणसि परमत्थं । पेच्छामो इमिणा संदेस-विरहेण किं सा करेइ, किं ताव संगमूसुया आयल्लयं पडिवज्जइ, किं ता विण्णाणं ति करिय अम्हाणं पेसिए कण्णऊरए ण कज्जं तीए संदेसेणं' ति । महिंदेण भणियं 'एवं होउ, किंतु होहिइ कुवलयचंदो चंदो व्व सकलंको' । कुमारेण भणियं 'केण कलंकेण' । महिंदेण भणियं 'इत्थि-वज्झा-कलंकेणं' ति । तेण भणियं 'कहं भणसि' । महिंदेण भणियं 'किमेत्थ भणियव्वं ति । ण दिण्णो तए पडिसंदेसो । तओ सा तुह संदेसायण्णणुक्कंठिया तुह-मग्ग-पलोयण-परा चिट्ठइ । पुच्छियाए दूईए ण य किंचि संदिट्ठं ति सुए गिम्ह-समय-मज्झण्ह-दिणयर-कर-णियर-सूसमाण-विरय-जंबालोयर-कडुयालय-सहरुल्लिय व्व तुह विरह-संताव-सोसिज्जंती उव्वत्त-परियत्तयं करेऊण मरिही वराई कुवलयमाला । पुणो पभायाए रयणीए जत्थ दीससि भमंतो तत्थ लोएण भणियव्वो, अहो एसो बाल-वहओ भूण-वहओ इत्थि-वहओ त्ति, तेण भणामि कलंकिज्जसि' त्ति । कुमारेण भणियं 'अहो, तुमं सव्वहा पहसण-सीलो, ण तुह पमाणं वयणं' ति ।

§ २६१) एवं विहसमाणा कं पि कालं अच्छिऊण णुवण्णा पलंकेसु, पसुत्ता सुहरं । ताव य पढियं पाहाउय-पाढएण । अवि य ।

णिम्मल-फुरंत-रुइरप्पसेण रुहिराणुरंजियंगेण । अरि-तिमिरं णासिज्जइ खग्गेण व तुज्झ सूरेण ॥
लोयालोय-पयासेण विमल-दीसंत-देव-चरिएण । ओयग्गिज्जइ भुवणं तुज्झ जसेणं व अरुणेणं ॥
सूरोअग्गण-मइलेण गलिय-देहप्पहा-णिहाएण । अरि-णिवहेण व तुज्झं वियलिज्जइ उडु-णिहाएण ॥
वण-राइ-परिगएणं दूरुण्णय-दुक्ख-लंघणिज्जेणं । पयडिज्जइ अप्पाणो वीरेण व सेल-णिवहेणं ॥
मंगल-भणिएण इमं लंघिय-जलणाह-दूर-पसरेण । आसा-णिवहेण तुमं वियसिज्जइ संपयं वीर ॥
इय तुज्झ चरिय-सरिसं सव्वं चिय णाह आगयं पेच्छ । मुह-दंसणं च दिज्जउ णरणाह णरिंद-वंद्राण ॥

इमं च णिसामिऊण 'णमो तेलोक्क-बंधूणं'ति भणमाणो जंभा-वस-वलिउव्वेल्लमाण-बाहा-पक्खेवो समुट्ठिओ पलंकाओ कुमारो महिंदो वि । ताव य समागया अप्प-दुइया एक्का मज्झिम-वया जुवई । सा य केरिसा । अवि य ।

अणुसीमंतं पलिया ईसि-पलंबंत-पीण-थण-जुवला । सिय-हार-लया-वसणा ललिय-गई रायहंसि व्व ॥

तओ तीय य दारियाए पुरओ उवसप्पिऊण भणियं 'कुमार, एसा कुवलयमालाए जणणी धाई पियसही किंकरी सरीरं हिययं जीवियं व' त्ति । तओ कुमारेण ससंभमं 'आसणं आसणं' ति भणमाणेण अब्भुट्ठिया, भणियं च 'अज्जे, पणमामि' । तीय य उत्तिमंगे चुंबिऊणं 'चिरं जीवसु वच्छ' त्ति भणंतीए अभिणंदिओ कुमारो । णिसण्णा य आसणम्मि । भणियं च 'कुमार, अम्हाणं तुमं देवो सामी जणओ सहा मित्तं बंधवो भाया पुत्त-भंडं अत्तागयं हिययं वा, सव्वहा वच्छाए कुवलयमालाए तुहं च को विसेसो त्ति, तेण जं भणामि तस्स तुमए अणुण्णा दायव्वा । अण्णहा कत्थ तुम्हाणं पुरओ अणेय-सत्थत्थ-वित्थर-परमत्थ-पंडियाणं अम्हारिसाओ जुवइ-चंचल-हियय-सहावाओ वीसत्थं जंपिउं समारहंति । ता सव्वहा खमसु जं भणिस्सं ।

---

1) J अम्हंता for अब्भंतरं, J जिणे for जिण, P चउव्वीसिया. 2) P उसहनाहो. 3) P -दीवा ॥. 4) P मयण for लोह, P एते चोरा, P कुणमु तं पि किं पि तं चियं. 6) J ईंचिअ for किंचि. 7) P करेत्ति for करेइ, J संगमूसुआ पल्लयं, P संगमूसिया. 8) P कन्नारूरणए, J तीय, J होहिति, P होहित्ति. 9) P om. इत्थिवज्झा to महिंदेण भणियं, J इत्थिवज्जा 10) P त for तए, P संदेसायणुणुक्कंठिया पुणो दूइ, J दूई. 11) J चिट्ठति, J पुच्छिया दूई, P णिसुए for सुए, P -दियर-, P om. करणियर, J -सुसमाण. 12) P जंबालोयरि-, P सप्परियल्लयव्व, J -परत्तयं, J adds वि before वराई, P वराती 13) P पभाया रयणीए, P भणितव्वो, J एस for एसो. 15) P निवण्णा लंकेसु, P सुरं for सुइरं. 17) P रुहिराणरंजियंगेण, P om. व, J य तुज्झ. 18) P अरुणाणं. 19) P सूरोअग्गेण, J -महिलेण, J उउ for उडु. 20) J परिअएणं, P अप्पाणं. 21) J तुहं for तुमं. 23) P om. च, P - वलीयुव्वेल्लमाण, J ल्लयुक्खेवो for पक्खेवो, P मुट्ठिओ for समुट्ठिओ. 24) P जुवती. 25) P पलंपंत, J -जुअला ।, P हरि for हार, J गया P गती for गई. 26) P अवसप्पिऊण, P धाती. 27) P हितयं, J हिअयं जीअव्वं ति ।, P repeats व, P ततो, P om. one आसणं. 28) P तीए for त्ति, J भणंतीय, P अहिणंदिऊण, J भणिअं तीय कुमार. 29) P सहा मित्तो. 30) P दातव्वा. 31) J अत्थत्थ for सत्थत्थ, J अम्हारिसीओ जुवईसहावचंचल, P -सहियय-, P वासत्थं for वीसत्थं, P समाहरंति. 32) J खमेज्जसु जं भणिअं ।.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

§ २६२) अत्थि इमा चेव पुरवरी तुमए वि दिट्ठ-विहवा विजया णाम, इमाए चेय पुरवरीए विजयसेणो णाम राया । इमा चेय तस्स भारिया रूवेण अवहसिय-पुरंदर-घरिणी-सत्था भाणुमई णाम । सा य महादेवी, ण य तीए कहिं पि किंचि पुत्त-भंडं उयरीहोइ । तओ सा कत्थ देवा, कत्थ दाणवा, कत्थ देवीओ, कत्थ मंताई, कत्थ वा मंडलाइं, सव्वहा बज्झंति रक्खाओ, कीरंति बलीउ, लिहिज्जंति मंडलाइ, पिज्जंति मूलियाओ, मेलिज्जंति तंताइं, आराहिज्जंति देवीओ । एवं च कीरमाणेसु बहुएसु तंत-मंतोवाइय-सएसु कहं-कहं पि उयरीभूयं किं पि भूयं । तओ तप्पभूइं च पडिवालियं बहुएहिं मणोरह-सय-सएहिं जाव दिट्ठं सुमिणं किर पेच्छइ वियसमाणाभिणव-कंदोट्ट-मयरंद-बिंदु-णीसंद-गंध-लुद्ध-भमर-रिंछोलि-रेहिरा कुवलय-माला उच्छंगे । तओ विबुद्धा देवी भाणुमई । तओ णिवेइए राइणा भणियं 'तुह देवि, तेलोक्क-सुंदरी धूया भविस्सइ' त्ति । तओ 'जं होउ तं होउ' त्ति पडिवण्णे वच्चंतेसु दियहेसु पडिपुण्णे गब्भ-समए जाया मरगय-मणि-बाउल्लिया इव सामलच्छाया बालिया । तओ तीए पुत्त-जम्माओ वि अहियं कयाइं वद्धावणयाइं । एवं च णिव्वत्ते बारह-दियसिए णामं से णिरूवियं गुरु-जणेणं, कुवलयमाला सुमिणे दिट्ठा तेण से कुवलयमाल त्ति णामं पइट्ठियं । सा य मए सव्व-कज्जेसु परिवड्ढिया । तओ थोएसुं चेय दियहेसु जोव्वणं पत्ता । तओ इच्छंताणं पि पिऊणं वरं वरेंताणं पि णेय इच्छइ, पुरिसद्देसिणी जाया । तओ मए बहुप्पयारेहिं पुरिस-रूव-जोव्वण-विलास-विण्णाण-पोरुस-वण्णणेहिं उवलोभिया जाव थोवत्थोवं पि ण से मणं पुरिसेसु उप्पज्जइ त्ति । तओ विसण्णो राया माया मंतियणो य कहं पुण एसो वुत्तंतो होहिइ त्ति । एरिसे अवसरे साहियं पडिहारेण 'देव, एरिसो को वि विज्जाहर-समणो दिव्व-णाणी उज्जाणे समागओ, सो भगवं सव्वं धम्माधम्मं कज्जाकज्जं वच्चावच्चं पेयापेयं सुंदरासुंदरं सव्वाणं साहइ त्ति, तीतागागत-भूत-भव्व-भविस्स-वियाणओ य सुव्वइ, सोउं देवो पमाणं'ति । तओ राइणा भणियं 'जइ सो एरिसो महाणुभावो तओ पेच्छियव्वो अम्हेहिं । पयट्ट, वच्चामो तं चेय उज्जाणं' ति भणमाणो समुट्ठिओ आसणाओ । तओ कुवलयमालाए वि विण्णत्तं 'ताय, तए समयं अहं पि वच्चामि' । राइणा भणियं 'पुत्त, वच्चसु' त्ति भणमाणो गंतुं पयत्तो । वारुया-करिणिं समारुहिऊण संपत्ता य तमुज्जाणं । दिट्ठो य सो मुणिवरो, राइणा कओ से पणामो, आसीसिओ य तेण, णिसण्णो पुरओ से राया ।

§ २६३) तओ सो भगवं साहिउं पयत्तो । भणियं च णेण ।

लोयम्मि दोण्णि लोया इह-लोओ चेय होइ पर-लोओ । परलोगो हु परोक्खो इह-लोओ होइ पच्चक्खो ॥
जो खाइ जाइ भुंजइ णच्चइ परिसक्कए जहिच्छाए । सो होइ इमो लोओ परलोगो होइ मरिऊण ॥
लोगम्मि होंति अण्णे तिण्णि पयत्था सुहासुहा मज्झ । हेओयादेय-उवेक्खणीय-णामेहिँ णायव्वा ॥
ता इह-लोए हेया विस-कंटय-सत्थ-सप्पमादीया । एयाइँ होंति लोए दुक्ख-णिमित्तं मणुस्साणं ॥
कुसुमाइँ चंदणं अंगाण य दव्वा वि होंति आदेज्जं । जेण इमे सुह-हेऊ पच्चक्खं चेय पुरिसाणं ॥
अवरं उवेक्खणीयं तण-पव्वय-कुहिणि-सक्करादीयं । तेण सुहं ण य दुक्खं ण य चयणं तस्स गहणं वा ॥
ता जह एयं तिविहं इह-लोए होइ पंडिय-जणस्स । तह जाणसु पर-लोए तिविहं चिय होइ सव्वं पि ॥
पाणिवहालिय-वयणं अदिण्ण-दाणं च मेहुणं चेय । कोहो माणो माया लोहं च हवंति हेयाइं ॥
एयाइँ दुक्ख-मूलं इमाइँ जीवस्स सत्तु-भूयाइं । तम्हा कण्हाहिं पिव इमाइँ दूरं परिहरासु ॥
गेण्हसु सच्चमहिंसा-तव-संजम-बंभ-णाण-सम्मत्तं । अज्जव-मद्दव-भावो खंती धम्मो य आदेया ॥
एयाइँ सुहं लोए सुहस्स मूलाइँ होंति एयाइं । तम्हा गेण्हह सव्वायरेण अमयं व एयाइं ॥
सुह-दुक्ख-जर-भगंदर-सिरवेयण-वाहि-खास-सोसाई । कम्मवसोवसमाइं तम्हा विक्खाइँ एयाइं ॥
तो एयं णाऊणं आदेये कुणह आदरं तुब्भे । हेयं परिहर दूरे उवेक्खणीयं उवेक्खेहि ॥'

1 > J चेअ, P adds पुरव before पुरवरी, J चेव. 2 > P भज्जा for भारिया, P भाणुमती, J कीय for तीए, P om. पि, P चि for किंचि. 3 > P उयारिहोंति ।, P मंतीइ, P मंगलाई for मंडलाइं in both places. 4 > P कीलंति, J adds मूला before मूलियाओ. 5 > J उअरीहूअं P उदरीभूयं, P तप्पभूयं, J मणोरहोसय, P सतसएहिं. 6 > P ताव for जाव, P मयारिंद-बिंदनीसंद. 7 > P भाणुमजी, P धूया हविस्सइ. 8 > P ज होउ for जं होउ तं होउ, J om. त्ति, P adds गब्भसमये before वच्चंतेसु, P om. पडिपुण्णे गब्भसमए, J पाउल्लिया P पुत्तलिया for बाउल्लिया. 9 > J तीय for तीए, P adds च after कयाइं, P णिव्वत्ति बारसमे दिवसे णामं. 10 > J गुरुअणेणं, P कुवलयमाला णामं. 11 > P °वड्ढिया, J चेअ P चिय, P जोव्वणं संपत्ता, P च for पि before पिऊणं, P om. पि, P इच्छत्ति पुरिसद्दोसिणी. 12 > P adds रस before रूव, J विलासलो-, P विन्नाणेहिं उवलोहिया जाव थोवं पि. 13 > P मंतिणा for मंतियणो, P होहिति. 14 > P अवसरि. 15 > P सोहति for साहइ, P तीतीणागत, P भवियस्स. 16 > P adds त्ति after सुव्वइ, P पेच्छितव्वो. 17 > P om. ति, J °माला विय विण्णत्तं, P समं for समयं. 18 > P वच्चाम्मो, J भणमाणा गंतु पयत्ता, P तारुअं for वारुया, J तं उज्जाणं. 19 > P om. सो, P om. य P inter. से & पुरओ. 20 > P सोहिउं for साहिउं. 21 > P inter. होइ & चेय, J परलोओ उ परोक्खो. 22 > P खाति भुंजति णच्चति, J परलोओ. 23 > J लोअम्मि, P होति, J हेओआदेयउवेक्ख°, P हेऊआदेयउवेक्खणे अणालोमेहि. 24 > P कंटइ, P सप्पमाईय ।, P दुक्ख for दुक्ख. 25 > J दव्वादि होइ, P आएज्जं, J सुहहेउं P साहेऊ. 26 > P वच्चं य for पव्वय, P धरणं for चयणं. 27 > P होंति सव्वं. 28 > J एआइं P हेताइं. 29 > J सत्थभूताइं, P दूरेण परिहरसु. 30 > P एयाइं for आदेया. 31 > J एताइं in all places, J सहस्स for सुहस्स. 32 > P om. the verse सुहदुक्ख etc., J सोसाती, J एताइं. 33 > P एते for एयं, J उवक्खेहि, P उवेक्खाहि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २६४) एवं च भणिए भगवया तेण मुणिणा सव्वेहिं चेय णरणाहप्पमुहेहिं भणियं 'भगवं, एवं एयं, ण एत्थ संदेहो' त्ति । एत्थंतरम्मि णरवइणा पुच्छियं 'भगवं, मम धूया इमा कुवलयमाला, एसा य पुरिसद्देसिणी कुल-रूव-विहव-विण्णाण-सत्त-संपण्णे वि रायउत्ते वरिज्जंते णेच्छइ । ता कहं पुण एसा परिणेयव्वा, केण वा कम्मि वा कालंतरम्मि' त्ति पुच्छिए णरवइणा, भणियं च भगवया मुणिवरेण । अत्थि कोसंबी णाम णयरी । तत्थ य तम्मि काले पुरंदरयदत्तो णाम राया, वासवो य मंती । तत्थ ताणं उज्जाणे समवसरिओ सीस-गण-परियारो धम्मणंदणो णाम आयरिओ । तस्स पुरओ सुणेंताणं ताणं धम्म-कहं कोह-माण-माया-लोह-मोहावराह-परद्ध-माणसा पंच जणा, तं जहा, चंडसोमो माणभडो मायाइच्चो लोहदेवो मोहदत्तो त्ति । ते य पव्वज्जं काऊण तव-संजम-सण्णाहा, पुणो कमेण कय-जिणधम्म-संबोहि-संकेया आराहिऊण मरिऊण कत्थ उववण्णा । अवि य । अत्थि सोहम्मं णाम कप्पं । तत्थ य पउमं णाम विमाणं । तत्थ वि पउमसणामा पंच वि जणा उववण्णा तहिं पि जिणिंद-वयण-पडिबुद्ध-सम्मत्त-लंभब्भुदय-पावण-परा संकेयं काऊण एत्थ चेय भरहे मज्झिम-खंडे उप्पण्णा । एक्को वणियउत्तो, अवरो रायउत्तो, अवरो सीहो त्ति । अवरा वि एसा कुवलयमाल त्ति । तत्थ ताणं मज्झाओ एक्केण एसा परिणेयव्वा । धम्मं च पावेयव्वं ति । भणियं च णरवइणा 'भगवं, कहं पुण सो इहं पावेहिइ, कहं वा एत्थ अम्हेहिं णाइयव्वो' त्ति । भगवया भणियं 'सम्हारिय-पुव्व-जम्म-वुत्तंतो कायव्व-संकेय-दिण्ण-माणसो इमाए चेय पडिबोहण-हेउं इहं चा पावीहइ त्ति, तं च जाणसु । सो चेय इमं तुह उम्मत्तं तोडिय-बंधणं जयकुंजरं रायंगणे गेण्हिहिइ, पुणो कुवलयमाला-लंबियं पाययं भिंदिहिइ, सो चेय जाणसु इमं परिणेहिइ, ण अण्णइ' त्ति भणंतो समुप्पइओ मुणी । तओ कुमार, उप्पइयम्मि तम्मि मुणिवरे आगओ राया पुरवरिं । इमा कुवलयमाला तप्पभूइं चेय किं-किं पि हियएण चिंतयंती अणुदिणं सूसिउं पयत्ता । ता इमाए एस पुव्व-जम्म-सरण-पिसुणो एस पायओ लंबिओ । अवि य 'पंच वि पउमे विमाणम्मि' । इओ य ण केण वि भिंदिउं पारिओ ताव जाव एस जयकुंजर-संभम-कलयलो । तओ पुच्छिए राइणा भणियं 'पुत्ति कुवलयमाले, पेच्छ तं अत्तणो वरं, [जो] एत्थ इमं जयकुंजरं गेण्हिहिइ, सो तं पादयं पूरेहिइ । इमं मुणिणा तेण आइट्ठं' ति । ता पेच्छामु णं को पुण इमं गेण्हइ' त्ति भणमाणो णरवई समारूढो पासाद-सिहरं, कुवलयमाला य । अहं पि तीए चेय पास-परिवत्तिणी तम्मि समए । तओ कुमार, तए अप्फालण-खलण-चलणाहिं णिप्फुरीकए जयकुंजरे सीह-किसोरएण व लंघिए पूरिओ सो पादओ । इओ य पूरिओ पायओ त्ति दिण्णा वरमाला । इमिणा ओघुट्टिए दढवम्म-पुत्तो त्ति तुह णामे उव्वूढो पहरिसो राइणा । कुवलयमाला उण तुमए दिट्ठम्मि किं एस देवो, किं विज्जाहरो, अह सिद्धो, उओ कामदेवो, किं वा चक्कवट्टी, किं वा माणुसो त्ति । पुणो घेप्पंते य जयकुंजरे, केरिसा जाया । अवि य ।

वलइ वलंतेण समं खलइ खलंतम्मि णिवडइ पडंते । उट्ठाइ उल्ललंते वेवइ दंतेसु आरूढे ॥

§ २६५) जइया पुण कुंजरारूढो संमुहं संठिओ तइया किं चिंतिउं पयत्ता । अवि य ।

आयंबिर-दीहर-पम्हलाइँ धवलाइँ कुसुम-सरिसाइं । णयणाइँ इमस्स वणे णिवडेज्जंगेसु किं मज्झं ॥
विद्दुम-पवाल-सरिसं रुइरं लायण्ण-वत्ति-सच्छायं । अहरं इमस्स मण्णे पाविज्जइ अम्ह अहरेण ॥
पिहु-पीण-ललिय-सोहं सुर-करि-दंतग्ग-मूरण-समत्थं । वच्छयलं किं मण्णे पाविज्जइ मज्झ थणएहिं ॥
दीहे उण्णय-सिहरे दरिय-रिऊ-काल-दंड-सारिच्छे । एयस्स बाहु-डंडे पावेज्ज व अम्ह अंगाइं ॥
मासल-पिहुलं रुइरं सुरय-रसासाय-कलस-सारिच्छं । एयस्स कडियलं णे पावेज्ज व अम्ह सयणम्मि ॥
पूरेज्ज एस पादं देज्ज व अहयं इमस्स वरमालं । इच्छेज्ज व एस जुवा होज्जम्ह मणोरहा एए ॥
होज्ज इमस्स पणइणी कुप्पेज्ज व णाम अलिय-कोवेण । कुवियं च पसाएज्जा अहवा कत्तो इमं मज्झ ॥

---

1) P om. च, P भणिया, P ते मुणिणो, P नरनारिप्प°, P एतं for एयं 2) P नरवइया, J om. इमा, P °देसिणी. 3) P संपत्त for संपण्णे, P णेच्छत्ति ।, P om. कहं, P adds कहिं after एसा. 4) P तं for च, J सयले for काले, P पुरंदत्तो. 5) P om. ताणं. 6) P transposes लोह after कोह, P मोहोवराहपहरद्ध-, J लोहभडो. 7) P मोहदत्ता, J कया-, P जिणधंमं, P मरिऊण. 8) P सोधंम, P om. य, P य for वि after तत्थ. 9) P adds धम्म before जिणिंद, J सम्मत्तलम्भब्भुदय-, P-लंभुदय-, P उववन्ना for उप्पण्णा, J वणिअपुत्तो. 10) J om. अवरा वि एसा कुवलयमाल त्ति ।, P एगेण. 11) J भगवं पुण को इहं पावेहिति ।, P इह पाविहित्ति । भगवया भणियं संभावियपुव्वजुंम-. 12) P कायव्वो, P पडिबोहणाहेउं इमं पाविहित्ति. 13) P जो for सो, खुहिय for तोडिय, J गेण्हिहिति P गेण्हिहित्ति, J पातयं. 14) J भिंदिहिति P भिंदहित्ति, J चेव, J परिणेहिति P परिणेहि त्ति, P अण्णाहि. 15) P om. तम्मि, P चेव, P सुसिउं. 16) P इमा एस, J पातओ, P om. वि पउमे. 17) J केणइ भिंदिउं, P भिंदिओ, J पारओ, P पुच्छिओ, J पुच्छिए for पुत्ति, P कुवलयमालो पेच्छं. 18) P जयकुंजरो गेण्हइ त्ति, J गेण्हिहिति, P पाययं पूरेहित्ति, J पूरेहिति, J om. तेण, P ता पुच्छामु. 19) P णरवती, P पासाय-, P वि for य. 20) J पाद for पास, P om. तए, P णिप्फरिकए. 21) P पुरओ सो पायओ, J पातओ त्ति ।, J P ओघट्टिए दढधम्म-°. 22) J adds तम्मि after दिट्ठम्मि, J उतो, P तओ for उओ. 23) J य कुंजरे, P य जकुंजरे, J om. जाया. 24) P खलति, J उद्धाइ, P आरूढो. 25) J तउआ. 26) P अयंचिर for आयंबिर, P पंभलाइं, P पुणो for वणे. 27) P पलास for पवाल, P लाइन्न-. 28) P पिहुणललिय-. 29) J दीओ for दीहे, J -रिउ-, P -सारिच्छो, P बाहुदंडे. 30) P मंसलं, J कडिअलण्णे, P कहिं अन्ने पावेज्जइ अम्ह. 31) P पायं for पादं, J जुआ, P एस जवा हो जम्ह, P एते. 32) P -कोवेण, P कत्ता.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमं च चिंतयंतीए पूरिओ पायओ । तं च सोऊण हरिस-वस-समूससंत-रोमंच-कंचुय-रेहिरंगाए दिण्णा तुहं वरमाला, तओ अवलंबिया तुह खंधराभोए । तं च दट्ठूण कुमार, तए पेसिया धवल-विलोल-लोला चलमाणा पम्हला दिट्ठी । तीय य दिट्ठीय पुलइया केरिसा जाया । अवि य, वियसिया इव कमलिणी, कुसुमिया इव कुंदलया, विहडिया इव मंजरी, मत्ता इव करिणिया, सित्ता इव वेल्लिया, पीयामय-रसा इव भुयंगिया, गय-घणा इव चंदलेहिया, सुरय-ऊसुया इव हंसिया, मिलिया इव चक्किय त्ति । सव्वहा

अमएण व सा सित्ता पक्खित्ता सुह-समुद्द-मज्झे व्व । अप्पाणं पुण मण्णइ सोहग्ग-मयं व णिम्मवियं ॥

एरिसे य अवसरे तुमं राइणा भणिओ जहा 'समप्पिय कुंजरवरं आरुह इमं पासायं' ति । तओ तुह दंसणासायणा-सज्झस-सेउकंप-कुतूहलाऊरमाण-हिययाए समागओ तुमं । पिउणा य भणियं 'वच्छे, वच्च अंतेउरं' ति । तओ मंताहया इव भुयंगिया अंकुसायड्ढिया इव करिणिया उम्मूलिया इव वणलया उक्खुडिया इव मंजरी दीण-विमणा कहं-कहं पि अलंघणीय-वयणो ताओ त्ति अलसायंती समुट्ठिया, गया आवासं सरीर-मेत्तेणं ण उण हियएणं । अवि य,

दुलह-लंभं मोत्तूण पिययमं कत्थ वच्चसि अणज्जे । कुविएण व पम्मुक्का णियएण वि णाम हियएण ॥

अवरोप्पर-लोयण-वाणिएहिँ कलियम्मि सुरय-भंडम्मि । हिययं रयण-महग्घं सच्चकारं व से दिण्णं ॥

§ २६६) तओ एवं च कुमार, तम्मि संपत्ता णियय-मंदिरम्मि, तत्थ गुरु-सज्झस-णियंब-भरुव्वहण-खेय-णीसहा णिसण्णा पल्लंके संवाहिउं पयत्ता । तओ समासत्था किं-किं पि चिंताभर-मंथरा इव लक्खिया मए । तओ भणिया 'पुत्ति कुवलयमाले, किं पुण इमं हरिसट्ठाणे ठियप्पा चिंताए दिण्णो, किं तुह ण पूरिओ पायओ, किं वा ण पडिच्छिया वरमाला, आओ विहडियं मुणिवर-वयणं, किं वा णाभिरुइओ हिययस्स, किं वा ण सत्तमंतो सो जुवाणो, किं वा ण पुलइया तेणं, किं वा तुह हियय-उव्वेयं ति । ता पुत्ति, फुडं साहिज्जउ जेण से उवाओ कीरइ' त्ति संलत्ते भणियं तीए 'माए, ण इमाणं एक्कं पि । किं पुण

वम्मह-पडिबिंब-समो सुर-जुवईणं पि पत्थणिज्जो सो । इच्छेज्ज ममं दासिं ण व त्ति चिंता महं हियए ॥'

इमम्मि य भणिए, अम्हेहिं भणियं 'ओ माए, किं एयं अलियमलियं असंबद्धं उल्लवीयइ । कीस तुमं सो ण इच्छइ । किं तेण ण लंघिओ सो जयकुंजरो, किं वा ण पूरिओ पायओ, किं ण पेसिया तुह दिट्ठी, किं ण पडिच्छिया वरमाला, किं ण जाओ से अंगम्मि पुलउग्गमो, किं ण मण्णिओ तेण य गुरु त्ति महाराया, किं ण साहिओ मुणिणा । सव्वहा मा एवं वियप्पेसु, जेण तुमं दिट्ठा अत्थि सो ण अण्णत्थ अभिरमइ त्ति । अवि य ।

मा जूरसु पुत्ति चिरं दट्ठूण तुमं ण जाइ अण्णत्थ । तं चिय ठाणं एहिइ माणस-हंसो व्व भमिऊणं ॥'

तओ एवं पि भणिए ण सद्दहयइ अइपियं ति काऊण । अवि य ।

जं होइ दुलहं वलहं च लोयस्स कह वि भुयणम्मि । तं कप्पिय-दोसुक्केर-दुग्गमं केण सद्दहियं ॥

तओ अम्हेहिं भणिया 'वच्छे कुवलयमाले, जइ तुमं ण पत्तियसि ता कीरउ तस्स जुवाणस्स परिक्खा । तओ तीए भणियं 'अत्ता, किं च कीरउ तस्स' । मए भणियं 'पेसिज्जउ दूई सिरिमालं अण्णं वा किंचि घेत्तूण तओ तस्स भावो जेण घेप्पइ' त्ति । तओ तीए कहं-कहं पि लज्जा-भर-मंथराए सेउल्ल-वेविर-करयलाए कप्पिया सा रायहंसिया । पुणो तीय उवरि लिहियं कहं-कहं पि दुवइ-खंडलयं । अवि य ।

अह तस्स इमो लेहो अणुराउच्छलिय-सेय-सलिलेणं । लिहिओ वि उप्पुसिज्जइ वेविर-कर-लेहणि-गएण ॥

एवं पेसिया तुह भाव-गहणत्थं दूई ।

1) J पूरिओ य पातओ, P -कन्चुइरेहिं°, J उ (or ओ) for तओ. 2) खंधराए ।, P -लोलवलमाण, P दिट्ठीये for दिट्ठी, P om. तीय य दिट्ठीय. 3) P कुंदुलया, J विहरिया, P करणिया. 4) P इव वल्लिया, J रा for रसा, J सुरयूसुआ. 6) P ओ for व्व, P सोहग्गबियं विणि°. 7) P समप्पिऊण, P आरुहइ, P पुज्झ for तुह, J दंसणायामणा सज्झस P दंसणासामज्झस. 8) P कुतूहरमाण, P वि for य, P repeats वच्छे. 9) J °यड्ढिआ P °इड्ढिया, P adds उम्मूलि before उम्मूलिया, P कहं कहम्मि J -वयणा. 11) P दुलभ-, P कुविएण विप्पमुक्का, J णाइ for णाम. 13) J इमं for एवं, J एत्थ for तत्थ, P सज्जस. 14) P संवाहिऊण, J adds च before पयत्ता, P किंपि किंचि. 15) P हरिसिद्धाणे विअप्पा, J पातओ, P किं पाण पडच्छिया. 16) P सत्तवंतो, P om. सो, P adds त्ति after तेणं. 17) P repeats तुह, P उव्वेवं, P संलत्तं, J तीअ. 19) P वमह, J परिबिंब, P जुवतीणं, P om. सो, P ण व त्ती. 20) J ए for एयं, J °मलिअअसं°, J उल्लवीयति, J inter. ण & सो. 21) J पातओ, J किण्णा पेसिआ. 22) J ए for य. 24) P तुमं for चिरं, J एहिति P एहित्ति समुद्दकाउम्व भणिऊणं. 25) P भणियए ण सद्दहायइ अइपियंयंति, J अपियं. 26) P भुवणंमि, P किंपिअ for कप्पिय. 27) P भणियं, J पत्तियथीसि (?) P पत्तिआसि, P कीरओ, J तीय. 28) P पेसिज्जओ दूती. 29) P om. त्ति, P ततो, J तीय, P करतलाए, J उवरे, 30) P om. one कहं, J दुवय for दुवइ. 31) P इमो लोहो अणुरायच्छलिय, J अणुरायुच्चलिअ, P वि ओप्फसिज्जइ, P विवेर for वेविर, P करलेहिणगएण. 32) P दूती.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २६७) ताव य समागओ महाराय-सगासाओ कंचुई। तेण य भणियं जहा कुवलयमालाए 'गणियं गणएणं अज्ज वि थीसत्थं विवाह-लग्ग-जोगो' त्ति। तं च सोऊण विसण्ण-मणा संवुत्ता कुवलयमाला, हंसिय व्व वज्जासणि-पहया कुलवहु व्व गोत्त-खलणेण दूमिया जाया। तओ अम्हेहि चित्तं जाणिऊण भणिया 'वच्छे, मा एवं वियप्पेसु। सुणेसु ताव तस्स जुवाणस्स अच्चंताणुराय-सूययं कं पि वयणं। तओ जं तुज्झाभिरुइयं तं करीहामि' त्ति भणमाणीहिं कहं-कहं पि संधारिया। एत्थंतरम्मि समागया सा दूई तुह सयासाओ दीण-विमणा किं-किं पि चिंतयंती। तओ ससंभमाहिं पुच्छिया अम्हेहिं 'किं कुसलं कुमारस्स'। तीए भणियं 'कुसलं, किं पुण कोइ ण दिण्णो पडिसंदेसो, केवलं भणियं, अहो कला-कुसलत्तणं कुवलयमालाए' त्ति। इमं च सोऊण तओ हया इव महादुक्खेण, पहया इव महामोह-मोग्गरेणं, विलुट्टा इव विरहग्गि-जालावलीहिं, ओवग्गिया इव महावसण-सीहेणं, गिलिया इव महामयरद्धय-मगरेणं, अक्कंता इव महाचिंता-पव्वएणं, गहिया इव महाकयंत-वग्घेणं, गसिया इव महाविग्घ-रक्खसेणं, उल्लूरिया इव महाकयंत-करिवर-करेहिं, सव्वहा किं वा भण्णउ कुमार, पच्चमाणं पिव महाणरए, डज्झमाणं पिव वडवाणलेण, हीरमाणं पिव पलयाणलेण, वुज्झमाणं पिव जुयंताणिलेणं, णिम्मज्जंतं पिव महामोह-पयालेणं, उक्कत्तिज्जंतं पिव महाजम-करवत्तेणं अत्ताणं अभिमण्णइ। तओ तं च तारिसं दट्ठूणं तं कुवलयमालं मालं पिव पव्वायमाणिं 'हा, किं णेयं जायं'ति भणमाणीहिं गहिया उच्छंगए, भणिया य। 'पुत्ति कुवलयमाले' किं तुह बाहइ' त्ति पुणो पुणो भण्णमाणाए 'हूं' पडिवयणं। तओ कुमार, एवं च पेच्छमाणाणं अक्खित्तं सुहं दुक्खेणं, विणिज्जिया रई अरईए, भल्लिया मई अमईए, पडिहयं विण्णाणं अण्णाणेणं, अवहरियं लायण्णं अलायण्णेणं, वसीकयं सुंदरत्तणं असुंदरत्तणेणं, सव्वहा कलि-काले व्व तीय सरीरे सव्वं विवरीयं जायं। उम्हायइ चंदण-पंकओ, धूमायइ कुसुम-रउक्केरओ, जलइ व हारओ, डहइ व णलिणी-पवणओ, दीवेंति व काम-जलणयं पुणो पुणो मुणाल-णाल-वलय-हारयाइं, पुणो पुणो पज्जलंतीव बउलेला-लयाहरयाइं ति। केवलं कुमार, णीससइ व णीसासओ, ऊससइ व ऊसासओ, दुक्खाइज्जइ दुक्खयं, उक्कंपिज्जइ उक्कंपओ, सेयाइज्जइ सेयओ, पुलइज्जइ रोमंचओ, मोहिज्जइ मोहओ वि। किं वा कुमार, बहुणा जंपिएणं।

हिययब्भंतर-तुह-विरह-जलण-जालावली-तविज्जंतं। णीहरइ य विरहुव्वत्त-तत्त-सलिलं व से बाहो ॥
विरहग्गि-हित्थ-पत्थिय-पय-चंपियं व हिययाओ तीय तूरंतं। दीहर-णीसास-पयाणएहिँ जीयं व णिक्खमइ ॥
मयलंछण-कर-गोरे उज्झइ वण-वड्डिए त्ति चिंतेंती। तुहिण-कण-फंस-सिसिरे चंदण-हारे मुणालं व ॥
णिय-दुक्ख-दुक्खियं सा सवम्महं सहियणं पि कुणमाणी। अणलक्खियक्खरं महुयरि व्व दियहं रुणुरुणेइ ॥
पुलइज्जइ हसइ खणं तसइ पुणो दीहरं च णीससइ। तुह-संगम-विमुहासा सा सामा सुहय सूसंती ॥
झाऊण किं पि हूँ हूँ ति जंपिरी सहरिसं समुट्ठेइ। लज्जावणामिय-मुही मुच्छा-विरमे पुणो रुयइ ॥
इय जीवियं पि वच्चइ सीसइ तुह हो फुडं तह करेसु। जह सा वि जियइ पयडं च जणवए होइ दक्खिण्णं ॥'

§ २६८) भणियं च महिंदेण 'इमम्मि य एवं ववत्थिए, साहह किं कीरउ' त्ति। तीए भणियं 'इमं कज्जं, एवं संठियं, तीए उण दसमी कामावत्था संपयं पावइ। जेण

विरह-भुयंगम-डक्का अइरा य विसोयलंत-विहलंगी। आसासिज्जइ मुद्धा सुहय तुहं गोत्त-मंतेण ॥

संपयं पुण तीय ण-याणामि किं वट्टइ'त्ति। आसंकियं हियएण भणियं च कुमारेण 'तह वि तुमं आउच्छणीया, किं तत्थ करणीयं संपयं' ति। तीए भणियं। 'कुमार, जइ ममं पुच्छसि ता अइक्कंतो सव्वोवायाणं अवसरो। एत्तियं पुण जइ तुब्भे राइणो भवणुज्जाणं वच्चह, तओ अहं कुवलयमालं कहं-कहं पि केणावि वा मोहेणं गुरुयणस्स महिलयाणं च तम्मि उज्जाणे णेमि। तत्थ जहा-जुत्तं दंसण-विणोइय-मयण-महाजर-वियणा होहिइ बालिय' त्ति। तओ महिंदेण भणियं। 'को दोसो,

1 > P om. महारायसगासाओ. 2 > J विवाहगहलग्गजोओ, J विमणमणा, P विमण्णमण्णा संजुत्ता, J हंसि व्व. 3 > J -क्खलणेण, P खलणदूसिया. 4 > P जुवाणयस्स, J तो जं तुज्झभिरुइयं, P करिहिसि, J संवारिआ P संधारया. 5 > P दूती, J ततो ससंभमा ठिया पुच्छियं. 6 > J तीय P तए, J तुह for पुण, J om. ण, P adds न after दिण्णो, J adds न दिण्णो (on the margin) before केवलं. 7 > P मं for इमं, P पिलुद्धा for विलुट्टा. 8 > J ओअग्गिआ, P मयरेण, P inter. चिंता and महा. 9 > P इव हिं महावियप्परक्खसेणं. 10 > P पलयाणले वुब्भमाणं, J om. वुज्झमाणं पिव etc. to महामोहपयालेणं. 11 > P adds णिम्मज्जंतं पिव जुअंताणिलेणं before णिम्मज्जंतं, P महाजमक्खत्तेणं. 12 > P om. मालं पिव, P कुवलयमालं दव्वायमालं पिव माये हा, P उच्छंगे, P om. य. 13 > J पुणो भिण्णव्वमाणाए, P हुं. 14 > P रती अरतीए, P मती अमतीए, P पडिहअं अन्नाणं विन्नाणेणं. 15 > J अम्हायइ P रम्हाइ. 16 > P हारो, J य for व after दीवेंति, P कामजलणया, P om. पुणो पुणो मुणालणालावलयहारयाइं, J om. पुणो पुणो पज्जलती to लयाहरयाइं. 17 > P कुमारी ससइ, P दुखातिज्जइ, P दुक्खयं चकंपिज्जंति. 18 > P सेताइज्जइ, P om. सेयओ पुलइज्जइ, P om. वि, P बहुणो. 19 > P विज्जंत for तविज्जंतं, P om. तत्त, J सलिलणिवहो व्व से बाहो. 20 > P हत्थि for हित्थ, J पयविअ for पयचंपियं व, P चंपयं व हीयआउ, J दूरंतं for तूरंतं, P णिक्खमए. 21 > P व णिवट्टिए, J वड्डिअ for वड्डिए, P मुणाल व्व ॥. 22 > P व for पि, P दियहं रुणेंति ॥. 23 > P पुलआयर हसयखणं, P दीहरं समूससइ, P om. सामा. 24 > P सोऊण for झाऊण, P हुं हुं, P समुहेइ, P रुवइ. 25 > P वमुव्वइ for वच्चइ, P जिणवुहो for च जणवए. 26 > P om. य, J om. एवं. 27 > P कामावत्थी, J adds ण before संपयं. 28 > P om. य, J वसोअलंत P विसोतलंत, J अद्धा for मुद्धा, J गोममंतेहिं. 29 > J वट्टति ।. 30 > J तीय, P जती for जइ, P ती for ता. 31 > P om. अहं, P कुवलयमाला, P गुरुजणस्स महलयाणं. 32 > J विणोइअं P विणोइयं, P विणयणं for वियणा, J होहिति पालिअ त्ति, P बालिया य त्ति.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

एवं होउ'त्ति भणिए समुट्ठिया सा भोयवई, पडिगया आवासं। भणियं च महिंदेण 'कुमार, मए विण्णत्तं आसि जहा कुवलयचंदो सकलंको इत्थि-वज्झाए होहिइ, को अम्हाणं दरिद्दाणं पत्तियइ'त्ति। कुमारेण भणियं 'अलं परिहासेणं, संपयं किं कायव्वं अम्हेहिं'। महिंदेण भणियं 'जं चेय मयरद्धय-महारायाहिराय-कुलदेवयाए जुण्ण-कोट्टणीए आणत्तं तं चेव कीरउ, तम्मि चेय राइणो मंदिरुज्जाणे गम्मउ'त्ति। कुमारेण भणियं 'किं कोइ ण होही सय-विरोहो, आसंका-ठाणं ण संभावइस्सइ, ण होहइ कुल-लंछणं अणभिजाय त्ति, ण होहइ गणणा-विरुद्धं लोए, ण कायरो त्ति आसंका जणस्स होहइ'त्ति। महिंदेण भणियं 'अहो एरिसेणावि धीरत्तणेण विहिणा पुरिसो त्ति विणिम्मिओ'। कुमारेण भणियं 'किं तए भीरु त्ति अहं संभाविओ'। महिंदेण भणियं 'ण, ण कोइ तं भीरु त्ति भणइ'। कुमारेण भणियं 'अण्णं किं तए लवियं'। महिंदेण भणियं 'मए लवियं सत्त-ववसाय-रहिओ'त्ति। कुमारेण भणियं 'मा एवं भणह। अवि य।

जइ पइसइ पायालं रक्खिज्जइ गय-घडाहिँ गुडियाहिं। किं कुणउ मज्झ हत्थो कयग्गहायड्ढणं तीय ॥

अहवा सच्चं सच्चं, भीरू। कहं। जेण

एत्तिय-मेत्ते भुवणे असुरासुर-णर-समूह-भरियम्मि। संते वि सत्त-सारे धणियं अयसस्स बीहेमि ॥'

महिंदेण भणियं 'अहो अइमुद्धो तुमं। को एत्थ अयसो, किं ण कारणेण परिसक्कइ जणवओ, किं कोऊहलेण ण दीसइ उज्जाणं, किं णिद्दोस-दंसणाउ ण होंति कण्णाओ। किं ण होसि तीय सव्व-कारणेहिं अणुरूवो वरो, किं ण वरिओ तीए तुमं, जेण एवं पि संठिए अयसो त्ति अलिय-वियप्पणाओ भावीयंति त्ति। ता दे गम्मउ त्ति' भणंतेण पयत्तिओ कुमारो महिंदेण। संपत्ता य तमुज्जाणं अणेय-पायव-वल्ली-लया-संताण-संकुलं। जं च

चंदण-वंदण-मंदार-परिगयं देवदारु-रमणिज्जं। एला-लवंग-लवली-कयली-हरएहिँ संछण्णं ॥
चंपय-असोग-पुण्णाग-णाग-जवयाउलं च मज्झम्मि। सहयार-महुव-मंदार-परिगयं बउल-सोहिल्लं ॥
मल्लिय-जूहिय-कोरंटयाउलं कुंद-सत्तलि-सणाहं। वियइल-सुयण्ण-जाई-कुज्जय-अंकोल्ल-परिगयं रम्मं ॥
पूयय-फलिणी-खज्जूरि-परिगयं णालिएरि-पिंडीरं। णारंग-माउलिंगेहिँ संकुलं णायवल्लीहिं ॥

§ २६९) तं च तारिसं उज्जाणं दिट्ठं रायउत्तेण। तओ तम्मि महुमास-मालई-मयरंद-मत्ता महुयरा विय ते जुवाण परिब्भमिउमाढत्ता। पेच्छंति य मरगय-मणि-कोट्टिमाइं कुसुमिय-कुसुम-संकंत-पडिबिंब-रेहिराइं पोमराय-मणि-णियरघणाइं च। कहिंचि सच्छ-सुद्ध-फलिह-मयाइं संकंत-कयलीहरय-हरियाइं महाणील-रयण-सरिसाइं। तओ ताणि अण्णाणि य पेच्छमाणा उवगया एक्कं अणेय-णाय-वल्ली-लया-संछण्णं गुम्म-वण-गहणं। ताणं च मज्झे एक्कं अइकडिल्ल-लवली-लयाहरयं। तं च दट्ठूण 'अहो, रमणीयं' ति भणमाणा तत्थेव परिब्भमिउं पयत्ता जाव सहस त्ति णिसुओ महुरो अव्वत्तो कल-कूविय-रवो। तओ महिंदेण भणियं 'कुमार, कत्थेत्थ रायहंसा जाणं एसो महुरो कल-कूविय-सद्दो'। कुमारेण भणियं 'किमेत्थ णत्थि दीहियाओ, ण संति वावीओ, ण संभमंति कमलायरा, ण दीसंति गुंजालियाओ, ण वियरंति घर-हंसा, जेण एत्थ रायहंसाणं संभावो पुच्छीयइ' जाव य इमं एत्तिअं वियप्पेंति ताव आसण्णीहूओ कलरवो। भणियं च महिंदेणं 'कुमार, ण होइ एसो हंस-कोलाहलो,' णेउर-सद्दो खु एसो। कुमारेण भणियं 'एवं एयं, जेण हंसाणं घग्घर-महुरो सरो जायइ। इमो उण तार-महुरो, ता णेउराणं इमो' त्ति भणमाणाणं संपत्ता णाइदूर-देसंतरम्मि। तओ महिंदेण भणियं 'जहा लक्खेमि तहा समागया सा तुह मयण-महाजर-वियणा-हरी मूलिया कुवलयमाला'। कुमारेण भणियं 'किं संभावेसि मह एत्तिए भागधेए'त्ति। महिंदेण भणियं। 'धीरो होहि, अण्णं पि ते संभावइस्सं' ति भणमाणेहिं णियच्छियं बहल-लयाहरोयरंतरेण जाव दिट्ठा सा कुवलयमाला सहीणं मज्झगया कल-हंसीण व रायहंसिया, तारयाणं पिव मियंक-रेहिया, कुमुइणीण व कमलिणी, वणलयाण व कप्पलया, मंजरीण व परियाय-मंजरी, अच्छराण व तिलोत्तिमा, जुवईण व मयरद्धय-हियय-दइया रइ' त्ति। तं च तारिसं

1) P भोगवती, P om. च. 2) J इत्थिवज्झए होहिति ता को, P अम्ह for अम्हाणं, J पत्तिआए. 4) कोवि ण, J होइ, P om. ण. 5) J संभावइस्सति P संभायस्सत्ति, P होहीं for होहइ, J जाणभिआअ त्ति, P होहिइ गणाणणे विरुद्धं, P आसंका जं जस्स होहिय त्ति. 6) P एरिसेण धीर°, P विणिम्मविओ. 7) P णणु को तं, J om. तं, J अलं for अण्णं. 8) P सत्तं, J एयं. 9) P पयसइ, J उत्थो P हत्थि for हत्थो, P ती for तीय. 10) P om. one सच्चं, J adds ति before भीरू, P भीरु. 11) P त्तिय for एत्तिय, P मेत्ते सुयणे मणुयसुरासुर, P om. णर. 12) J काणणेण P कारणे, P om. किं, P adds किं before ण. 13) P om. तीय, P तीय. 14) P संतिए for संठिए, P writes अयसो thrice, J भाविअति त्ति, P गमउ, J भणितेण, P पयडिओ for पयत्तिओ. 15) P संपत्ती तमु°, P अणिय for अणेय, P om. जं च. 16) P °नंदणमदारपरिगतं, P संछिन्नं. 17) J असोयपुण्णायणाय°, J °जंबुयाउलं, P उव for महुव (emended), J बउल, P परियय, P सोहल्लं. 18) P कोरंटियाउं, P विअइल्लसुवण्णजातीकुज्जय°, J °अगोल्ल, JP परिगरिअं (P °यं), P om. रम्मं. 19) J पूअफलिणी. 20) P रायउत्ते ।, J मासलपहत for महुमास, J मत्त, J त्तो for ते. 21) P परिभमिउ°, P पच्छेति, J om. य, P om. च. 22) P कहंचि. 23) P एक्क, J om. णाय, P गुम, P अइकुडिल्लयवल्ली°. 24) P तत्थेय, P सहत्त for सहस त्ति, J अहुरो for महुरो, P अवत्तो, P रसो for रवो. 25) J किं एत्थ. 26) J दीसंति कुंजालियाओ, J विअलंति, J संभवो, J पुच्छीयति P पुच्छीअत्ति. 27) J om. जाव य इमं, P आसन्नीभूओ, P adds भो before कुमार. 28) P णेरउर, P घरेघरे for घग्घर, P जायति. 29) J णाइदूरे, J om. तओ 30) P सम्मं भावेसि, P महा for मह, J भागधेये, P ति 31) J ए for ते, P adds संभावइ before संभावइस्सं. P om. णियच्छियं P लयाहरोअंतरेण. 32) J सहीण, P मज्जगया हंसीण, J व for पिव P om. मियंकरेहिया etc. to तं च तारिसं. 33) P सियं for तारिसं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दट्ठूण चिंतियं कुमारेण 'अहो, सव्वं जं लोए सुणीयइ किर थेरो पयावई । जइ थेरो ण होइ, ता कहं एरिसं जुवइं विणिम्मविऊण अण्णस्स उवणेइ त्ति । अहवा णहि णहि, ण होइ थेरो, जेण थेरस्स कत्तो एरिसं दिट्ठि-कम्मं णिव्वडइ त्ति । तं सव्वहा धण्णं तं पुहइ-मंडलं जत्थ इमं पाय-तल-कोमलंगुलीयं चलण-पडिबिंबं इमाए संठियं'ति चिंतयंतस्स भणियं कुवलयमालाए । अवि य ।

पेच्छेज्ज व तं पुरिसं अत्ता सो वा ममं णियच्छेज्ज । एत्तिय-मेत्तं अब्भत्थिओ सि हय-देव्व दे कुणसु ॥

कत्थेत्थ सो जुवाणो अत्ता कवडेण वंचियाओ म्ह । सब्भाव-दिण्ण-हिययाण तुम्ह किं जुज्जए एयं ॥

§ २७०) इमं च सोऊण महिंदेण भणियं 'एसो को वि धण्णो इमाए पत्थिज्जइ जुवाणो' । कुमारेण भणियं 'अत्थि पुहईए बहुए रूव-जोव्वण-सोहग्ग-सालिणो पुरिसा' । महिंदेण भणियं 'अवस्सं सुहओ पत्थिज्जइ, जइ असुहओ वि पत्थिज्जइ ता तुमं ममं व किं ण कोइ पत्थेइ'त्ति । तओ सहासं भणियं कुमारेण 'दे णिहुओ चिट्ठ, पेच्छामो किं एत्थ एयाओ कुणंति' । भणियं च भोगवईए 'पुत्ति कुवलयमाले, मा जूरसु, आगओ सो एत्थ जुवाणो । जइ इमे संख-चक्कंकुस-सयवत्तंकिए दीसंति चलण-पडिबंधए तहा जाणिमो आगओ' । 'इहं चेय मग्गामो'त्ति भणंतीओ पहाइयाओ सव्वाओ चेय दिसादिसं चेडीओ । ण य उवलद्धा ते, तओ साहियं ताहिं 'सामिणी, ण कोइ एत्थ काणणे लक्खिओ अम्हेहिं भमंतीहिं पि' । तओ भणियं भोगवईए 'वच्च पुणो कयलीहरेसुं चंपय-वीहियासु लवली-वणेसु अण्णिसह जाव पाविओ'त्ति भणिए पुणो वि पहावियाओ ताओ सव्वाओ विलासिणीओ । भोगवईए भणियं 'पुत्ति कुवलयमाले, अहं सयं चेव इमाए पय-पद्धईए वच्चामि, सयं चेव उवलहीहामि, तुमए पुण एयम्मि ठाणे अच्छियव्वं'ति भणमाणी सा वि णीहरिया भोगवई । चिंतियं च कुवलयमालाए 'अहो सव्वो एस कवडो, किर दुट्ठो सो जुवाणो, तेण इमं इमं च भणियं, दिण्णो संकेओ इमम्मि उज्जाणे । ता सव्वं अलियं । ण एत्थ सो जुवाणो, ण य पय-पंतीओ, णेय अण्णं किंचि । सव्वहा कत्थ सो देवाण वि दुलहो जुवाणो मए पाविओ, कालेण जाव ताओ ममं परिणावेहिइ ताव को जीवइ त्ति । ता संपयं चेय तहा करेमि जहा पुणो एरिसाणं दोहग्गाणं ण पावेमि गोयरे त्ति । देव्वं उवालहिय, वणदेवयाओ विण्णविय, तायं पणमिय, अंबं अभिवाइय, तं पुरिसं संभरिय, भगवंतं मयणं विण्णवेमि जहा पुणो वि मह सो चेय दइओ दायव्वो त्ति । पुणो लया-पासं बंधिऊण अत्ताणयं उब्बद्धिय वावाइस्सं ति । ता तं च इह महं ण संपज्जइ, संपयं सहीओ पावंति । तेण इमम्मि घण-तरुवर-लवलि-लयाहरंतरम्मि पविसिय अत्तणो अत्थ-सिद्धिं करेमि'त्ति चलिया तं चेय लयाहरंतरं जत्थच्छए कुमारो । दिट्ठा य कुमारेण संमुहं चलिया । तम्मि य समए कुमारो लज्जिओ इव, भीओ इव, विलक्खो विव, जीविओ इव, मओ विव आसि । सव्वहा अणाचिक्खणीयं कं पि अवत्थंतरं पाविओ, दिट्ठो य तीए सो । तओ एक्किय त्ति भीया, सो त्ति हरिसिया, सयमागय त्ति लज्जिया, एस मे वरिओ त्ति वीसत्था, कत्थ एसो त्ति संकिया, एसो सुरूवो त्ति ससज्झसा, वियणे पाविय त्ति दिसा-पेसिय-तरल-तारया-दिट्ठी । सव्वहा तं कं पि ससज्झस-सेउकंप-दीण-पहरिस-रस-संकरं पाविया जं दिव्व-णाणीहिं पि मुणिवरेहिं दुक्खमुवलक्खिज्जइ त्ति । तम्मि अवत्थंतरे वट्टमाणी कुमारेण अवलंबिऊण साहसं, ववसिऊण ववसायं, धारिऊण धीरत्तणं, संभरिऊण कामसत्थोवएसं, ठविऊण पोढत्तणं, अवहत्थिऊण लज्जं, उज्झिऊण सज्झसं, सव्वहा सत्तमवलंबिऊण भणियं । 'एहि सुंदरि, सागयं ते' भणमाणेण पसारिओभय-बाहु-डंडेण अंसत्थलेसु गहिया । तओ कुवलयमालाय वि ससज्झस-सेउकंप-भयाणुराय-पहरिस-णिब्भरं ईसि-धवलं-चलमाण-लोयण-कडच्छ-विच्छोह-रेहिरं भणियं 'मुंच मुंच, ण कज्जं सव्वहा इमिणा जणेणं लोगस्स' । कुमारेण भणियं ।

'पसियसु मा कुप्प महं को वा तुह मंतुयं कुणइ मुद्धे ।'

तीए भणियं ।

'पडिवयणं पि ण दिण्णं भण किं मह मंतुयं थोयं' ॥

1 > J सुणीयति, P पयावती, J जुवई, P जुवइं णिम्मिऊण. 2 > J ता सव्वहा. 3 > P खंडलं for मंडलं, J लोय for पाय. 5 > J पेच्छज्ज, P आ for अत्ता, P अह for हय देव्व. 6 > P inter. जुवाणो & सो, P कवडेहिं वंचिओ अम्हे । 7 > P एवं for इमं, J परिथज्जओ, P पयडिज्जइ जुवणो. 8 > P बहुरूव, P सालिणणो, P अवस्स, P पढिज्जइ, J om. वि. 9 > P गम, P पत्थेय, P adds दे before चिट्ठ. 10 > P भोगवई, P om. पुत्ति कुवलयमाले etc. to भणियं भोगवईए. 13 > P उणो for पुणो, J om. लवलीवणेसु, J पहाइओ. 14 > J सव्वा, J चेअ, J पयबद्धईए P पयपद्धतीए. 15 > P तुमए उण तंमि ट्ठाणे, J भोगमई P भोगवती. 16 > J दिट्ठो for दुट्ठो, P inter. दुट्ठो & सो, P जुवा, P adds य before इमं, J संकेयो, P उज्जाओणे, J om. ता सव्वं अलियं. 17 > P सो वाणो, J om. ण य, J पयपंतीओ, P देवाणं, P om. वि. 18 > J परिणावेहितिं, P °हिसि, P जीवति. 19 > P देवं, J उवालहीअं, J वणवियं for विण्णविय, P पणमिया, P अभिवादया, J संभरिअं. 20 > P चेव, P तओ for पुणो, J लतासं, P उवद्धिय for उब्बद्धिय. 21 > P ण पजइ ता संपयं, J सहीओ, P इमं for इमम्मि, P तरुयर, J लयली, P लयाहरंमि. 23 > J adds कंपिओ इव before विलक्खो, J मयो इव. 24 > J तीय, P एक्किय, J सहरिसा for हरिसिया, P वीसत्थी. 25 > P adds संकिय before ससज्झसा, J पेसि P पेसिया, J om. दिट्ठी, J तं किं पि. 26 > P सब्भस for ससज्झस, P जिं for जं, P om. पि, P दुक्खमुवयल°. 27 > P om. ववसिऊण ववसायं, P ठाविऊण. 28 > P उज्झिणससज्झसं, P परिसाउभयबाहुदंडेण. 29 > P कुवलयमाला वि, P सेओकंप-, P णिब्भरइरं ईसि-. 30 > J om. चलमाण, J लोअस्स. 31 > P मंतुवं. 33 > J भण किं ता मह मंतुअं भणिअं थोअं । P किं नामं तुम थोअं ।

कुमारेण भणियं ।

'एत्तिय-मेत्तं भूमिं पत्तो हं सुयणु जाणसे किं पि' ।

तीए भणियं ।

'जाणामि पुहइ-मंडल-दंसण-कोऊहलेणं ति' ॥

कुमारेण भणियं । 'मा एवं भणसु,

किं सुमरसि णेय तुमं मायाइच्चत्तणम्मि जं भणियं । इच्छकारेण तुमे सम्मत्तं अम्ह दायव्वं ॥
तं वयणं भणमाणो मुणिणा संबोहिओ इहं पत्तो । ता मा जूरसु मुद्धे संबुज्झसु मज्झ वयणेण ॥'

§ २७१) जाव एस एत्तिओ आलावो पयत्तो ताव संपत्ता भोगवई । 'वच्छे कुवलयमाले, राइणा वंजुलाभिहाणो कण्णंतेउर-महल्लओ पेसिओ जहा अज्ज वच्छा कुवलयमाला राईए दढं असत्थ-सरीरा आसि, ता कत्थ सा अज्ज परिभमइ त्ति सिग्घं गेण्हिय आगच्छसु त्ति भणमाणो इहं संपत्तो । मंदमंद-गइ-संचारो संपयं पावेइ, ता तुरियं अवक्कम इमाओ पएसाओ, मा अविणीय त्ति संभावेहिइ' त्ति । तं च सोऊण सयल-दिसा-मुह-दिण्ण-तरल-लोल-लोयण-कडक्ख-विक्खेव-रेहिर वलिया कुवलयमाला । तओ कुमारेण भणियं । 'सव्वहा

किं जंपिएण बहुणा किं वा सवहेहि एत्थ बहुएहिं । सच्चं भणामि पत्तिय जीयाउ वि वल्लहा तं सि ॥'

कुवलयमाला वि 'महापसाओ पडिवण्णो एवं अम्हेहिं' त्ति भणमाणी तुरिय-पय-णिक्खेवं णीहरिया लवली-लयाहरंतराओ । दिट्ठो य सो वंजुलो कण्णंतेउर-पालओ । तेण य खर-णिट्ठुर-कक्कसेहिं वयणेहिं अंबाडिऊण 'पेच्छ, पेच्छ, एक्का चेय कहं पाविय' त्ति भणमाणेण पुरओ कया 'वच्च, तुरियं अंतेउरं' ति । तओ कुवलयमालाए वि चिंतियं 'माए, पेच्छ पुरिसाण य अंतरं ।

एक्को महुर-पलावी सुंदर-भणिएहि हरइ हिययाइं । अण्णो णिट्ठुर-भणिरो पावो जीयं पि णासेइ ॥
दीसंतो अमय-मओ लोयण-मण-णंदणो इमो एक्को । विस-दल-णिम्मिय-देहो एसो उण दूहवो अण्णो ॥'

इमं चिंतयंती समागया कण्णंतेउरं । कुमारो वि तं चेय पणय-कोव-कय-भंगुर-भुमयालंकियं वयणं हियय-लग्गं पिव, पुरओ णिमियं पिव, घडियं पिव, पासेसु ठवियं पिव, उवरिं णिक्खित्तं पिव, महियलम्मि उप्पेक्खंतो तीए य चेय ताइं सवियार-पेम्म-कोव-पिसुणाइं संभरमाणो वयणाइं कयत्थं पिव अप्पाणं मण्णमाणो तं महिंदं अण्णेसिउं पयत्तो । दिट्ठो एक्कम्मि पायवोयरे कुसुमावचयं करेमाणो । तओ भणियं कुमारेण 'वयंस, एहि वच्चामो आवासं, दिट्ठं जं दट्ठव्वं' । तेण भणियं 'कुमार, भण ताव किं, तए तत्थ मयण-महासरवर-णियर-संकुले रणंगणे किं ववसियं' । कुमारेण भणियं 'वयंस,

दिट्ठं अदिट्ठउव्वं तीए लायण्ण-मंडणं वयणं । वयणोयर-मंडल-भूसणाइँ सामाइँ णयणाइं ॥

महिंदेण भणियं 'कुमार,

तं वयणं ताणि य लोयणाइँ पढमं तए वि दिट्ठाइं । तं किं पि साह मज्झं जं अब्भहियं तए रइयं ॥'

कुमारेण भणियं 'कुओ एत्तियाइं भागधेयाइं । तह वि

लायण्ण-महागिरिवर-सिहरेसु व तीय अंस-देसेसु । हत्था अमय-विहत्था वीसत्थं सुत्थिया मज्झं ॥'

तओ महिंदेण सहासं भणियं 'एरिसो तुमं । अण्णहा,

बहु-दियह-मणोरह-पत्त-संगमालद्ध-दुलह-पइरिक्का । वण-करिवरेण णलिणि व्व पाविया सा कहं मुक्का ॥'

कुमारेण भणियं 'वयंस, मा एवं भण ।

गुरु-देव-दियादीहिं करग्गहं जा ण पाविया पढमं । जालोलि-जलिय-भीमं मण्णामि चिहं व तं जुवइं ॥'

महिंदेण भणियं 'एवं एयं, अण्णहा को विसेसो सुकुल-दुकुलाणं' । 'ता पयट्ट वच्चामो आवासं' ति भणमाणा णीहरिया

---

2) P सुयण, P किं वि ।. 4) P adds दंसणदंसण before मंडल, P om. दंसण. 6) P इच्छाकारेण, J तुमं for तुमे. 7) J इहं, P इह संपत्तो, P संबुज्झ वयणेण. 8) P भोगवती, J राइणे, P रायणा, J वंजुलाहिहाणो. 9) P कन्नंतउर, P रातीए, J परिब्भमइ. 10) J om. सिग्घं गेण्हिय आगच्छसु त्ति, J गई. 11) J om. संभावेहिइ त्ति, P संभावेहिय त्ति, P मुहकन्नंतरलोयलोयणा-, P विक्खेवरेरेहिरा. 12) J adds वि after कुमारेण. 14) P कुवलयमालए वि, J om. एवं. 15) P तं for तेण, P adds कक्कस before णिट्ठुर, P एक्क च्चिय. 16) P भणमाणे पुरओ, J om. वि. 17) J पलाविर, P सुंदरिहियएण हरइ, J -भणिओ. 18) J विसमओ for दूहवो. 19) P इमं च चिंतेंती, P om. पणय, P भुमयालंकयं. 20) P णिम्मियं, P ठिइअं for ठविअं, P उवेक्खंतो, J तीय चेअ. 21) P कोह for कोव, P महिंद अण्णसिउ, J adds य after दिट्ठो. 22) P पायवे कुसु°, P आवासं जं दिट्ठं तं दट्ठव्वं । कुमार भणियं तेणं भण ताव किं. 23) P संकुल, P adds व्व before किं, P वयस्स. 24) P अदिट्ठं उव्वं, P -मंडलं, P वयणायमंडण-, J मण्डलाहूसणाइ, P समाए. 26) तव for तं, P लोवणाइं, J अब्भहिअं 27) P om. कुओ. 28) J om. व, P तीययंस, J हत्थ. 29) J हणियं for भणियं, P एसो for एरिसो. 30) P दियर for दियह, P adds अण्णहा before पत्त, P दुक्ख for दुलह, P वरेणे for °वरेण, P कहिं for कहं. 31) P भणह for भण. 32) J देवदियाहिं, P जालोलियभीम. 33) J अण्णह को.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जाणाओ, संपत्ता आवासं । तत्थ य महाराइणा पेसियाओ अणेयाओ सिणेह-कारा जल-कलस-सुयंध-ण्हाण-गंध-वण्णय-तंबोल-वावडाओ वारविलासिणीओ । तओ ताहिं जहाविहि मक्खिय-उव्वट्टिय-ण्हाविय-जिमिय-परिहिय-विलित्ता कया । तओ सुहासणत्थाण य संपत्ता एक्का विलासिणी । तीय उग्घाडिऊणं कणय-मय-पक्खल-संजोइयं तंबोल-मच्छयं पणामियं कुमारस्स । भणियं च इमीए 'इमं केण वि जणेण पेसियं तंबोलं' । तओ कुमारेण गहियं, णिरूवियं च जाव णियय-णव-णक्ख-विणिम्मवियं तंबोल-पत्तेसु पत्तच्छेज्जं । तस्स य उवरिं पत्तक्खराइं, सिरिकुवलयचंदस्स णामं लिहियं । तओ तं च वाइऊण कुमारेण भणियं 'अहो, णिउणत्तणं कस्स वि जणस्स' । गहियं तंबोलं । तओ कुमारेणावि एक्कम्मि पत्ते णह-मुहेहिं रइयं सहंस-सारस-चक्कवाय-णलिणि-सयवत्त-भमर-रिंछोलि-रेहिरं सरवरं । विरइया य इमा गाहुलिया । अवि य ।

हियय-दइयस्स कस्स वि णियय-दुक्खत्त-भत्ति-चित्तलियं । पेसिज्जइ केण वि किं पि कारणं सरवरं एयं ॥

§ २७२) तओ एवं च अण्णम्मि दियहे तेणेय कमेण णाणा-भोयणादीयं, पुणो कइया वि तंबोलं, कइया वि पत्त-च्छेज्जं, कइया वि वीणं, कइया वि आलेक्खं, कइया वि पाणं, कइया वि गंध-जोओ, कइया वि किं पि तहाविहं णियय-णेउण्ण-सिणेह-सब्भाव-पिसुणं पेसिज्जइ कुमारस्स । एवं च ताणं कुमाराणं णियय-रज्जे व्व सुहंसुहेणं भुंजमाणाणं रज्ज-सिरिं वच्चंति दियहा । कमेण य को उण कालो वट्टिउं पयत्तो । अवि य ।

अग्घंति जम्मि काले कंबल-घय-तेल्ल-रल्लयग्गीओ । अच्छइ पाउय-देहो मंदो मंदो व्व सव्व-जणो ॥

किं च दीहरीहोंति णिसाओ, झत्ति वोलेंति वासरा, दूहवीहोंति चंद-किरणाइं, परिहरिज्जंति जलासयइं, णिक्खिप्पंति मुत्ताहार-लट्ठीओ, सिढिलिज्जंति हम्मिय-तलाइं, अणायरिज्जंति चंदण-पंकयइं, घेप्पंति रल्लयइं, संगहिज्जंति इंधणइं, विरइ-ज्जंति वेणीओ, मक्खिज्जंति मुहइं, अंजिज्जंति अच्छिवत्तइं, णियंसिज्जंति कुप्पासयइं, चमढिज्जंति सव्व-धण्णइं, उब्भिज्जंति खज्जंकुर-सूईओ, णियत्तंति णियय-दइया-णियंबयड-बिंब-पओहरुम्हा-सुहइं संभरमाण पहिय त्ति । अवि य ।

घण-बंधण-पम्मुक्को तुलग्ग-लग्गो य पत्त-धणु-वंसो । उय सूरो सूरो इव अह जाओ मउलिय-पयावो ॥
गहिय-पलाला मय-धूलि-धूसरा खंध-णिमिय-कर-जुयला । दीसंति अल्लियंता पहिया गामम्मि हेमंते ॥
विरह-भुयंगेण हओ खंडाखंडिं कओ य सिसिरेण । एसो पसु व्व पहिओ पचइ अग्गिम्मि रयणीए ॥
दीसंति के वि पहिया कर-जुवल-णियंसणा फुडिय-पाया । गोसे मग्गालग्गा वाएंता दंत-वीणाओ ॥
वाहोगलंत-णयणा रहसुव्वेल्लंत-बाहुणो केइ । चिर-दिट्ठ-बंधवं पिव धम्मग्गिं कह समल्लीणा ॥
मल-खउरियंगमंगा तणुया णिक्किंचणा मइल-वासा । दीसंति के वि रिसिणो व्व धम्म-रहिया परं पहिया ॥

अवि य । जम्मि य काले

हिम-सत्तु-णिहय-सीसं सयलं दट्ठूण काणणं सहसा । सिय-कुसुम-दसण-सोहं खलो व्व कह विहसिओ कुंदो ॥

किं च । मंजरिज्जंति पियंगु-लयउ, वियसंति रोद्द-वल्लरीओ, विसट्टंति तिलय-मंजरीओ, उवगिज्जंति महुर-मयरंद-बिंद-णीसंद-पाण-मय-मत्त-मउय-मणहर-गीयाबद्ध-मंडली-विलास-महुयरी-भमर-जुवाणेहिं मघमघेंत-मल्लियउ त्ति । सव्वहा

कालम्मि तम्मि को वा ण भरइ धणिओवऊहण-सुहाणं । णागंकुस-रुद्ध-मणो एक्के पर साहुणो मोत्तुं ॥

तम्मि य काले को कत्थ समल्लीणो त्ति । कालायरु-कुंकुम-सुगंध-सयणोयरेसु ईसर-जुवाणया, धम्मग्गि-धमण-पयावण-तप्परा पंथ-कप्पडिया, जर-मंथर-कंथा-मेत्त-देहया जुण्ण-धम्मिया, तण-पलाल-खल-एक्क-सरणा कासया, खल-तिल-कंथा-जीवणाओ दुग्गय-धरिणीओ, मुम्मुर-करीसग्गि-समाकड्ढण-वावडइं दरिद्द-डिंभरूयइं, थोर-थणवट्ट-कलत्त-वच्छयल-संपुड-सुह-पसुत्तइं पुअंड-मंडलइं ति । अण्णं च पंचग्गि-ताव-तवियंग-महामुणि-जइसिय जर-डोंब-थेरय, सिसिर-पवण-पइय-विमल-

1) P om. य, P om. अणेयाओ, P सणेह, P om. कारा, J om. जल, P सुगंध, J om. गंध. 2) P वाडाओ, P तेहिं मंक्खियउवट्टियण्हविय-. 3) P कणगमयमक्ख, J तंपूल for तंबोल. 4) P णिययकरणिक्खनिम्मलवियतंबोलपत्ते. 5) P om. य. 6) P कस्सइ जणस्स, P णक्कं पि मि for एक्कम्मि, J णस for णह. 7) P सार for सारस. 8) P -दुइयस्स, J णिअयल-दुक्खत्तरत्ति, P चित्तेलियं, P व for वि. 9) P तेण य, P ण्हाण for णाणा. 10) J गंधजोए P बंधुजोओ, JP कंपि for किंपि. 13) P जंसि काले, P कंबलयतेल्लरल्लयंगीओ, P पाउदेहो. 14) J णिसओ संति वोलेंति, P बोलंति, J -किरणा, P जलासयाई, P णिक्खिपंति. 15) J -लंठिओ, J हम्मियवट्टइं, P -पंकई, P रल्लयाइं, J इंधणयं P इंद्धणाइं. 16) J वेणिओ, P कुप्पासयाइं. 17) J खज्जंकुड P गज्जंकुर, J णिअदइया J संभरमाणदइअयत्ति. 18) P पम्मुक्को पयपत्त, P om. one सूरो. 19) P मल for मय, P खंधणमिय, 20) P व्व for व, P अग्गंमि. 21) P णियंसणे, P गोसग्गिमग्गलग्गा वायंता. 22) J बाहोअलंत, केवि !. 23) P णिक्कंचणा. 24) P om. जम्मि य काले. 25) J om. सयलं, P व्व कुहविलसिओ कंदो. 26) J मंजरिज्जंत, P पियंगुलयाओ, P उवग्गीजति. 27) P मंणहरं-, P महुरीभवणजु°, P मघमघेंति मल्लियाओ. 28) P धणिओवगूहणाणाणं, P रुद्धमणो, P पुण for पर. 29) P य का कत्थ, J सुअंध, J रमियइ for ईसर, J जुआणया, P धम्मत्थिधमण. 30) J जरकंथर, J मेत्तदेवया, P देहया अज्जाहम्मिया, P कासवा, J कत्थ for कंथा. 31) P करिसग्गि, J समाकड्डवावडइं. P समायड्ढणवावारइं, J डिंभभूअइं P डिंभरुयइं, J वच्छयला P वच्छयर. 32) P मंडलयं, J -तविअयमहा, P सय for जइसिय.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

जल-पहल्लमाण-वीई-तरंग-भंग-भंगुर-वियरंत-मच्छ-पुच्छच्छडाघाउल्लसंत-मुत्ताहल-हड्ड-जल-लवालंकिय दीसंति सरवर, भाविय-एयत्तासरणत्त-संसार-महादुक्ख-गहण-विउडण-सज्झायज्झाणेक्क वावड पमुक्क-वरिसा-कप्प याचण-संठिया आयावेंति साहु-भडरय व त्ति । अवि य,

सिसिरेण को ण खविओ सिसिर-पवायंत-मउय-पवणेण । पर-मंस-पिंड-पुट्ठे जंबुय-सुणए पमोत्तूण ॥

§ २७३) इमम्मि एरिसे काले सुहंसुहेण अच्छमाणाणं कुवलयमाला-कुवलयचंदाणं अण्णम्मि दियहे सद्दाविओ राइणा संवच्छरो 'भो भो गणियं तए कुवलयमालाए विवाह-लग्गं' ति । तेण भणियं 'देव, तद्दियहं गणेमाणेण इमं सोहियं । तं जहा । इमस्स जम्म-णक्खत्तस्स उवचयकरो सीयकिरणो, सुवण्णदो सहस्सरस्सी, पुत्त-लाभयरो वहस्सई, भोग-करो बुधरायपुत्तो, कुडुंब-विजय-करो धरणीसुओ, णिव्वुइयरो उसणसो, भूमि-लाभयरो सणिच्छरो त्ति । अण्णं च णिवत्तं उत्तरायणं, बलियं लग्गं, सयल-दिट्ठिणो सोम्मा, पाय-दिट्ठिणो पावा, ण पीडियं गब्भादाणं, अणवहुयं जम्म-णक्खत्तं, अपीडियं जम्मं, सुकम्म-णिव्व-जोओ । सव्वहा ण विरुद्धं अट्ठुत्तरेणावि चक्कसएण णिरूविज्जंतं । चुक्कं च जइ इमं लग्गं ता दुवालसाणं वासाणं मज्झे ण एरिसो लग्ग-जोओ सुज्झइ त्ति । जारिसो एस फग्गुण-सुद्ध-पक्ख-पंचमीए बुधवारे साती-णक्खत्ते राईए वोलीणे पढम-जामे दुइय-जामस्स भरियासु चउसु घडियासु पंचमाए णाडीए दोसु पाणियवलेसु पाऊण करिसाहिएसु वोलीणे सिंघे उयमाणे कण्णे पूरीए मए संखे परिणीया दारिया जइ तओ दीहाऊ से भत्ता, चिरं अविहवा, सुहया वसीकय-भत्तारा, धणं कोडी-गणणाहिं, एक्को से पुहइ-सारो पुत्तो, भोय-भाइणी, पच्छा धम्म-भाइणी, पढमं भत्तारओ मरणं ण अण्णह' त्ति भणिए गणएणं, णरवइणा वि 'तह' त्ति पडिवज्जिय 'कल्लाणं' ति भणमाणेण णिवेइयं तं कुमारस्स । 'कुमार वच्छ, बहुयं कालंतरं तुह कुवलयमालाए णियय-विण्णाण-सत्त-सहाव-पुव्व-जम्मजियाए वि विओग-दुक्ख-वित्थरो कओ । ता संपयं इमीए पंचमीए गेण्हसु परम-कल्लाण-मंगलेहिं गुरूणं आसीसाए देवाणं पहावेणं से करं करेणं बालियाए' त्ति । कुमारेण भणियं 'जहा महाराओ आणवेइ'त्ति । णिवेइयं कुवलयमालाय वि तओ हियय-दइय-समागम-सुहल्लि-वयणायण्णण-पहरिस-वसूसलंत-रोमंच-कंचुइज्जंत-सललिय-मुणाल-णाल-ललिय-कोमल-बाहुलया चिर-चिंतिय-संवयंत-मणोरहाऊरमाण-हियय-हलहला भुवणे वि माइउं ण पयत्ता । किंचि तम्मि रायउले कीरिउं पयत्तं । अवि य मुसुमूरिज्जंति धण्णाइं, पुणिज्जंति सहिण-समियाओ, सक्कारिज्जंति खंड-खज्जाइं, उयक्खिज्जंति भक्खाइं, आहरिज्जंति कुलालइं, कीरंति मंच-सालाओ, विरइज्जंति धवलहरइं, रइज्जए वर-वेई, कीरंति उल्लोयइं, परिक्खिज्जंति रयणाइं, उप्पिज्जंति तुरंगमा, पणामिज्जंति करिवरा, णिमंतिज्जए रायलोओ, पेसिज्जंति लेह-वाहयए, आमंतिज्जए बंधुयणो, मंडिज्जए भवणोयरं, धवलिज्जंति भित्तीओ, घडिज्जए कलधोयं, ववज्जंति जवंकुरा, णमंसिज्जंति देवयाओ, सोहिज्जंति णयर-रच्छाओ, फालिज्जंति पडीओ, सीविज्जंति कुप्पासया, कीरंति धयवडा, रइज्जंति चारु-चामरी-पिच्छ-पब्भारइं ति । सव्वहा

सो णत्थि कोइ पुरिसो महिला वा तम्मि णयर-मज्झम्मि । जो ण विहलप्फलओ कुवलयमाला-विवाहेण ॥
सो को वि णत्थि पुरिसो कुवलयचंदो ण जस्स हिययम्मि । ण य सा पुरीए महिला कुवलयमाला ण जा भरइ ॥

§ २७४) एवं च होंत-विवाह-महूसव-वावडस्स जणस्स संपत्तो सो दियहो । केरिसो ।

कणय-वडिओ व्व एसो अमय-रसासाय-वड्डिय-सरीरो । सोहग्ग-णिम्मिओ इव विवाह-दियहो समणुपत्तो ॥

तम्मि य दियहे कुवलयमाला-जणणीए होंत-जामाओ य गुरु-सिणेह-पसर-रसुच्छलंत-रोमंच-सेय-सलिल-राहाए पमक्खिओ कुमारो । तओ कयं से जहा-विहीए सिद्धत्थक्खय-सत्थिय-मंगलोयारणयं । कयाणि य से णियय-वंस-कुल-देस-वेस-समयट्ठाइं

1) P om. जल, P वीइ-, J °च्छडाधायुलसंत P °च्छडाइयुलसंत, P -लवालंकित, P सरवरा । अवि य भाविया· 2) P सज्झायज्झाणक, J वावरपमुक्क, P पमुक्का, J °कप्पायावणासंठिअयायावेंति साहुण भडरय च त्ति· 4) P पयायत्तमउयवणेण । परमासवसापुट्ठं एक्कं चिय जंबुयं मोत्तुं ॥· 5) J कंड्डाविओ for सद्दाविओ· 6) P गणितं, P om. तेण भणियं, J देव अहिअहं, P गणमाणेण· 7) P om. तं, P सहस्सरासी, P बुहस्सती, P भोगयरो बुहरायउत्तो कुडुंब· 8) J बुधरायापुत्तो, P णेव्वुइयरो. J उसिणसो· 9) P सोमा पातट्ठिणो, P पीडितं गब्भदाणं, J अणवहुतं P अगुवहुतं, JP अपीडितं· 10) P सुकम्मा, P अट्ठुत्तरेणावी, P जई संलग्गं, J om. लग्गं ॥. 11) P inter. एरिसो & ण (न), P फयुणद्धपक्ख, J सातीसुं णक्खत्ते P रेवतिणक्खत्ते· 12) J दुतिअजामस्स, P पंचमाराएणाली, P पाणियलेसु पाउण· 13) J उअमाण, P पूरिए संखे, P दीहाओ, P भत्तारे· 14) P अवहिवावसीकयभत्तारो धणकोडीण गणाहिं, P -सारो पत्तो पच्छा, P transposes भोगभाइणी before पढमं· 15) P महरणं· 16) P om. तं, J om. कुमारवच्छ, P सत्तसुहाव· 17) J विउअ for विओग· 18) P जइ महाराय, P कुवलयमालाइ वि. 19) P वसुच्छलंत, J सयल for सललिय P om. णाल· 20) P सयवत्त for संवयंत, P हलाहला, P माइओ ण, J किंच for किंचि· 21) P मुणिज्जंति for पुणिज्जंति, P -समिओ सक्करिज्जंति, J खज्जइं, P खंडकज्जादि उयकिज्जंति, J भक्खयं· 22) P वियलिज्जंति धवलहर इज्जएवेती ।, J रइजवरकई, P उलोवइ, J रयणइं· 23) P लेहवाहया· 24) P सवणोयरं for भवणो°, P भित्तीए, P कलहोयं, P ठविज्जंति, J गज्जंकुरा for जंवकुरा, J देवया, P सोहरिज्जंति देवयाओ णयर-· 25) P पयडीओ, J चमरी पिंछे· 27) P को वि पुरिसो, J णयरि-· 28) P inter. ण (न) त्थि and कोवि, J पुरीय, P महियला, P कुवलयमाला ण· 29) P महुस्सव· 30) P णिम्मि इव, J विआह-· 31) P, after तम्मि य दियहो, repeats केरिसो । कणय etc. to दियहे as above, P सहए पमक्खित्तो· 32) P जहा विहीए, J मंगला आरयणं, P यय for णियय, J वेसमय°, P -समट्ठिती·

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंगल-कोउयाई, तओ ण्हाय-सुइ-धोय-धवल-जुवलय-णियंसणो सिय-चंदण-चच्चिय-सरीरो वंदिय-गोरोयण-सिद्धत्थ-रइय-तिलओ खंधरावलंबिय-सिय-कुसुम-सुरहि-दामो महिंदाणुगय-मग्गो अल्लीणो विवाह-मंडवं। कुवलयमाला वि कय-कायव्व-वावारा सिय-सण्ह-वसण-णियंसणा मंगल-मोत्ताहरण-रेहिर-सरीरा अल्लीणा वेदि-मूलं। तओ संपत्ताए वेलाए, पत्तिए लग्गे, अग्गि-होत्त-सालाए जलणं आणियं छीरवच्छ-समिहा-घय-संधुक्खियं काऊण, समक्खीहूयाणं सव्व-कुल-जुण्ण-महत्तराणं, पच्चक्खे राइणो, मज्झट्ठियस्स अणेय-वेय-समय-सत्थ-पारयस्स दुयाइणो, आमंतिय लोय-पाले, णामं गेण्हिय राइणो दढवम्मस्स, दिण्णाओ लायंजलीओ। समप्पिया य तस्स करंजली कुवलयमालाए। गहिया य कुमारेण। उभय-विरइयंजलीउडेहिं करयलेहिं ताव य पणीयाओ अविहवाओ। पवाइयाइं तूराइं। पूरियाइं संखाइं। पहयाओ झल्लरीओ। पढंति बंभण-संघाइं। जयजयावेंति महासामंता। आसीसा-समुद्दा कुल-महल्लया, मंगल-पढण-वियावड गाणायरिय त्ति। एवं च तेण दुयाइणा होमिउं पयत्तं। 'इक्खागु-वंस-पभवस्स सोमवंस-कुलालंकारस्स महारायाहिराय-दढवम्म-पुत्तस्स कुमार-कुवलयचंदस्स विजयसेण-दुहिया कुवलयमाला एसा दिण्णा दिण्ण त्ति जाव णिसुणेंति सयल-तेलोक्क-सक्खिणो भगवंता लोयवाला। पडिच्छउ लायंजली भगवं एस सुरासुर-मणुय-तिरिय-लोयालोयणो जलणो' त्ति। इमिणा कमेण पढमं मंडलं। दुइयं पि पक्खित्ता लायंजली। आहूया लोयवाला। तइयं मंडलं। पुणो तेणेय कमेण दिण्णं दायव्वं। तहा चउत्थं मंडलं। तओ जय जय त्ति भणमाणा जरा-जुण्ण-देहा वि पहरिस-वसुव्वेल्लमाण-बाहुलयावली-वलया णच्चिउं पयत्ता कुल-जुण्ण-महिलय त्ति। कुवलयमाला-जणणी वि सरहसुव्वेल्लमाण-बाहुलया-कंचण-मणि-वलय-वर-तरल-कल-ताल-वस-पय-णिक्खेव-रेहिरा मंथरं परिसक्किया। सेसो वि विलासिणियणो मय-वस-घुम्ममाण-खलंत-चलण-चलिय-मणि-णेउर-रणरणाराव-रेहिरो पणच्चिओ जहिच्छं जयजयासद्द-पूरमाण-दिसिवहाओ। णिवडंति अदिट्ठ-करयलंजलि-विमुक्काओ णाणाविह-वण्णाओ गंध-लुद्ध-मुद्ध-भमरोलि-माला-मुहलाओ दिव्व-कुसुम-वुट्ठीओ त्ति। अवि य,

गिज्जंत-सुमंगल-मणहरए णच्चंत-विलासिणि-सोहणए। मल्हंत-सुहासण-वामणए वज्जंत-पयत्तय-तूर-रवे॥
खोभंतावल-वज्जिर-तूरं तूर-रसंत-पणच्चिर-खोरं। खोर-पणच्चिर-चच्चरि-सद्दं चच्चरि-सद्द-मिलंत-जणोहं॥
मिलिय-जणोह-सुकलयल-रावं कलयल-राव-वियंभिय-तोसं। तोस-वियंभिय-वग्गिर-मल्लं वग्गिर-मल्ल-पलंबिय-कच्छं॥
लंबिय-कच्छ-ललंत-सचूलं चूल-ललंत-सुमंथर-तालं। ताल-लउंतप्फोडण-सद्दं सद्द-वियंभिय-पूरिय-लोयं॥ ति। अवि य।
तूर-रव-गहिर-सद्दं आऊरिय-संख-राव-गंभीरं। उव्वेलं व समुद्दं वियाह-वद्धावणं जायं॥

तओ वत्ते य वद्धावणए किं जायं। संमाणिज्जंति संमाणणिज्जे, पूइज्जंति पूयणिज्जे, तोसिज्जंति तोसणिज्जे, मंडिज्जंति मंडणिज्जे, दिज्जए पणईणं, पणामिज्जइ राईणं, उवणिज्जइ गुरूणं, पक्खिज्जए जणवयाणं, अप्पिज्जए अंतेउरियाणं, पेसिज्जए णायरियाणं, दिज्जइ य अगणणिज्जं जहाभिलसियं धणं दीण-वणीमय-किमिण-पणईणं ति। अवि य।

दिज्जउ देसु पयच्छसु गेण्हसु पक्खिवसु दे पडिच्छाहि। मग्गसु भणसु जहिच्छं इय हलबोलो वियाहम्मि॥

§ २७५) तओ णिव्वत्ते वद्धावणए महिए सुर-संघे सुपूइए गुरुयणे सव्वहा कए तक्काल-पाउग्गे करणीए विरइया कुमारस्स वासहरए महरिहा सेज्जा। अवि य।

रयण-विणिम्मिय-सोहा मुत्ताहल-णियर-रेहिरा धवला। खीरोदहि-वेला इव रइया वर-विदुमा सेज्जा॥

---

1) J कोउअइं, P ण्हाइसुय-, J सुई-, J सच्चिअ for चच्चिय, P गोरोयणो. 2) P सुरहिरदामो (?) महिंदाणुजायमग्गो आल्लीणो, P वावार. 3) P वेईमूलं. 4) P आणिरच्छीर, J adds महु after घय, P संधुक्कियं, J समक्खीहूअणेसद्धकुल, P समक्खयाणं, P कुच्च for जुण्ण, P पच्चक्खं. 5) P मज्झिट्ठियस्स, P अणेयअवेय, J यत्थ for सत्थ, P दियाइणो, P राइणा दढधम्मस्स दिन्ना, J दढधम्मदिण्णाओ. 6) P om. य before तस्स, P विरइयंजली°. 8) J विआवडणआयरिय, P णागायरिय for गाणायरिय (emended), P दियाइणा, J होइउं P होमियं. 9) P -प्पभवस्स, J P दढधम्म-, P om. कुमार, P विजसेणस्स दुहिया. 10) J repeats दिण्णा, J om. जाव before णिसुणेंति, P -तेलोक्क, J भगवंतो लोगवाला, P पडिच्छिओ, J भयवं, P एस ससुरासुर. 11) P लोयलोयणो, J P मंगलं for मंडलं, P लायंजलायाभूता, J आहुता. 12) J adds पि after तइयं, P मंगलं in both places (for मंडलं), P तेण च, P दातव्वं. 13) P बाहुललमाणवल्लीलया णच्चिउं, J -महल्लयं ति, J om. वि, J सइरसुव्वेल्ल° P वि रसुव्वेल्ल°. 14) J बहुलयाकंठण, P -चलयचलतरकल ता[illegible]वस, P विलासिणीयणो. 15) P repeats चलण, J माण for मणि, P om. जहिच्छं, P °सद्दं 16) P अविद्ध-करयंजली-, P -वुद्धीओ. 18) P गिज्जंति, J हल्लंत P मण्हंत, P वज्जंति. 19) P खोरत्तावज्जिरतरत्तररसंते पणच्चियखोर, P पणच्चिय. 20) P om. मिलियजणोह, P वग्गियमेल्लं वग्गिय-, J पलंबिर. 21) J लंछिय for लंबिय, P सुचूलं, J -सुमच्छ (त्थ?) रतालं. 23) P om. तओ वत्ते य वद्धावणए किं जायं, P पूइणिज्जे, P मज्जिज्जंति मज्जणिज्जे. 24) J दिज्जउ, P पणतीणं, P पणामिज्जपरादीणं उवणिज्जए, P पक्खिणिज्जए, P उप्पिज्जए, P णायराणं दिज्जए अगणिज्जं. 25) J विज्जइ for दिज्जए, P जहाहिलासियं. 26) J देसु पयच्छसु. 27) P णिवत्ति वद्धावणिए, P -संघे पूइए, J गुरुअणो, P पाउग्गकरणीए. 28) P वासहरे, J महरिआ, P inter. सेज्जा and महरिहा. 29) P खीरोयहि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तम्मि य लज्जा-महोदही-पुलिणोवरे व्व रायहंस-जुवलयं पिव णिविट्ठं कुमार-जुवलयं ति कयाणि य आरत्तियाईणि मंगल-कोउयाणि। अच्छिऊण य कं पि कालं परिहास-हसिर-लोयण-जुवलो सहियायणो अलिय-कय-वक्खेवो सहर-सहरं णीहरिउं पयत्तो। अवि य।

अलिय-कय-कज्जत्तण-विक्खेवो दिण्ण-महुर-संलावो। अवरोप्पर-कय-सण्णो णीहरिओ से सही-सत्थो ॥

तओ कुवलयमालाय वि भणियं।

'मा मा मुंचसु एत्थं पियसहि एक्कलियं वण-मइ व्व।'

ताहि भणियं।

'इय एक्कियाओं सुइरं पियसहि अम्हे वि होज्जासु ॥'

तीय भणियं।

'रोमंच-कंप-सेयं जरियं मा मुंचह पियसहीओ।'

ताहि भणियं।

'तुज्झ पइ च्चिय वेज्जो जरयं अवणेही एसो ॥'

§ २७६) तओ एवं च भणिया समाणी लज्जा-सलज्झस-वेवमाण-पओहरा एसा 'अहं पि वच्चामि' त्ति भणमाणी चलिया, गहिया य उवरि-वत्थद्धंते कुमारेण भणिया य 'कत्थ वच्चसि।' तीय भणियं 'मुंच, सहियणेण समं वच्चामि'। [कुमारेण भणियं]

'वच्चसु सुंदरि वच्चसु वच्चंती को व रुंभए एण्हिं। एक्कं पुण मह कीरउ जं गहियं तं समप्पेहि ॥'

तीय ससंभमं भणियं 'किं पुण मए गहियं'। कुमारेण भणियं।

'तुह-चिंता-रयण-करंडयं च विण्णाण-बुद्धि-पडहत्थं। हिययं मह चोरि हियं मा वच्चसु जाव णो दिण्णं ॥'

तीय भणियं।

'हरियं व ण हरियं वा हिययं अण्णं च एत्थ को सक्खी। ण हु वयण-मेत्त-सिद्धा होइ परोक्खा हु ए किरिया ॥'

कुमारेण भणियं।

'एयाउ च्चिय तुज्झं सव्वाउ सहीउ मह पमाणं ति।'

तीय भणियं।

'आणेसु ता इमाओ सुहय तुहं उत्तरं देमि ॥'

कुमारेण चिंतियं। 'अहो, सुंदरो उवण्णासो मए कओ इमीए चेय पुरओ एस ववहारो' चिंतयंतो। तीय भणियं 'किं इमं चिंतियइ, आणेसु पिय-सहीओ जाम उत्तरं देमि, अहवा मुंचसु मए' त्ति। कुमारेण भणियं 'मा वच्च सुंदरि, सद्देमि ए पिय-सहीओ' त्ति भणंतेणं कओ ताणं सद्दो। 'आइसस' त्ति भणंतीओ समागयाओ। भणियं च ताहिं 'कुमार, को अम्हाणं णिउत्ति'। कुमारेण भणियं 'अम्हं ववहारो दट्ठव्वो'। ताहिं भणियं 'केरिसो, हुण्णिप्पउ पुव्व-पक्खो'। तेण भणियं 'एसा तुम्ह पियसही चलिया गंतुं, हिययं समप्पेसु त्ति मए वारिया, इमीए मित्तत्तीकयं तत्थ तुब्भे पमाणं' ति। ताहि भणियं 'पियसहि पियसहि' किं एरिसो पुव्वंतर-पक्खवाओ'। तीय भणियं 'एत्तिओ एस ववहारो' त्ति। ताहि भणियं 'अहो, महंतो एस ववहारो, जइ परं सिरिविजयसेण-णरवइणो णयर-महल्लयाणं च पुरओ णिव्वडइ' त्ति। कुवलयमालाए भणियं 'तुब्भे च्चिय महप्पमाणं ति जइ किंचि इमस्स मे गहियं' ति। कुमारेण भणियं 'सुंदरं सुंदरं' दे भणह तुब्भ पमाणं ति। अवि य।

मा कुणह पियं एयं मा वइएस्सं ति कुणह मा एसं। वम्मह-गुरु-पायच्छित्तियाएँ धम्मक्खरं भणह ॥'

ताहिं भणियं। 'जइ फुडं भणामो ता सुणेह,

एएण तुज्झ हरियं तुज्झ वि एयाए वल्लहं हिययं। अवरोप्पर-जुवय-थेणयाण जं होइ तं होइ ॥'

इमम्मि भणिय-मेत्ते गहियाओ वत्थद्धंते। 'कुमार, तुमं कंपिओ' त्ति भणंतीए तेण वि 'तुमं कुसुमालि' त्ति भणमाणेण संवाए गहिया। तओ किं जायं। अवि य।

एस गहिओ त्ति कलमो अरहइ ए बंधणं कुमारेणं। भणेए मज्झ त्ति तं च्चिय तेण वि सा तक्खणं भणिया ॥

1 > P om. तम्मि य सेज्जा, P महोदहीपुलिणोअरे, P जुवलं, P मंगलकोउ before मंगल. 2 > P कोउयाइ, P om. य, J हरिस for हसिर, P जुअलो सहिअणो, J वअ for कय, P क्यविक्खेवो (?), J सरइर for सरर, J सइरण्णीहरिउं P सयरयणीहरिउं 4 > J सलावा, P repeats सही. 5 > P om. तओ कुवलयमालाय वि etc. to ववहारो पडुओ उत्तरवाइ त्ति on p. 173, l. 17. This passage is reproduced here with minor corrections like ya-śruti etc. 10 > Better मुयइ for मुंचह. 12 > Better अवणेहेइ य एसो. 14 > J चडिया for चलिया. 20 > J वण्ण for व ण. 22 > J पमाण त्ति (?). 34 > Better एयं for एयं. 37 > J भणमाणेण संवाए (?).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं अवरोप्पर-वियप्पमाणा सहीहि भणिया 'मा मा करण-समक्खं असमंजसं भणह, जं अम्हे भणामो तं कीरउ' त्ति। तेहिं भणियं 'सुट्ठु ए भणह किंचि धम्मक्खरं' ति। सहीहि भणियं। 'जइ अम्हे पमाणं ता भणिमो ण अण्णह' त्ति भणिए, तेहि भणियं 'पमाणं पमाणं' ति। ताहि भणियं 'जइ पमाणं ता सुणेह। अवि य।

मुद्धे पिज्जइ से हिययं च कुमार ओप्पेसु। अवरोप्पर-पाविय-हिययवाण अह णिव्वुई तुब्भ ॥'

भणिय-मेत्ते कुमारेण भणियं।

'सुयणु इमं ते हिययं गेण्हसु हिययं ति मा वियारेसु। एयं पि मज्झ दिज्जउ जइ मज्झत्था पमाणं ति ॥'

भणमाणेणावयासिया। एवं च कए गुरु-कोव-फुरुफुरायमाणाहराए विलसमाण-कुडिल-चारु-चंचल-भुमया-लयाए भणियं च तीए 'अव्वो माए इमिणा अलिय-कय-कवड-पंडिय-णड-पेडय-सरिसेणं दुज्जणी-सत्थेणं इमस्स अणाय-सील-सहावस्सा-हियस्सावयासणं दवाविय' त्ति भणमाणी परहुत्ता संठिय त्ति। तओ ताहि भणियं।

'मा सुयणु कुप्पसु तुमं किं कीरउ एरिसो च्चेय। णिक्करुणो होइ फुडं मयण-महाधम्म-ववहारो ॥

ता सुंदरो एस ववहारो जो संपयं पत्तो'। तीय भणियं 'ण सुंदरो'। ताहि भणियं 'अण्णं सुंदरं विरएमो'। तीय भणियं 'ण कज्जं मह इमिणा वि जो संपयं रइओ'। ताहि भणियं।

'मा कुमर वंचसु इमं अम्हं कवडेण वालियं मुद्धं। उप्पज्जउ से संपइ जं तुह एयाए तं दिण्णं ॥'

कुमारेण भणियं।

'जइ दाऊण सयं चिय पच्छायावं समुव्वहसि मुद्धे। मा होउ मज्झ दोसो गेण्हसु अवयासणं णिययं ॥'

त्ति भणमाणेण समवलंभाहिणव-सिणेह-भरा णिद्दयमवयासिया। तओ पहसिओ सहि-सत्थो 'अहो, एरिसो अम्हसंतिओ धम्माहिगरणो जं एरिसाइं पि गूढ-ववहारइं पयडीहोंति त्ति अहो सुसिलिट्ठो ववहारो पडुओ उत्तरवाइ' त्ति।

§ २७७) तत्थट्ठियाण तेसिं सुहं-सुहेण वोलिया रयणी। ताव य पडु-पडह-पडिहय-पडिरव-संखुद्ध-मुद्ध-मंदिरुज्जाण-वावी-कलहंस-सारस-कंठ-कूइय-कलयलाराव-रविज्जंत-महुरो उद्धाइओ पाहाउओ य तूर-रवो। पढियं च मंगल-पाढएहिं पाहाइय-मंगलं। उग्गीयं मंगल-गायणीहिं मंगल-गेयं। समागया तो वारविलासिणीओ। पणामियं मुह-धोवणं दंत-धावणं च। तओ पयंसियं अद्दयं च भायणत्थं। पलोइयं तत्थ मुहयंदं। उग्गीय-मंगल-गायणीहिं पणामियं विमल-दप्पणं, तह दहि-सुवत्त-णंदावत्त-अक्खयाणि य। वंदिया गोरोयणा। सिय-सिद्धत्थएहिं विरइओ भालवट्टे तिलओ कुमारस्स। तओ एवं च कय-देवयाहिदेव-पणामो पच्छा विविह-कला-कोसल्ल-विण्णाण-णाण-सत्थत्थ-कहासु संपत्तो मज्झण्ह-समओ। भुत्तं जहिच्छियं भोयणं। पुणो तेणेय कमेण संपत्ता रयणी। तीय रयणीए केण वि वियड्ढ-पओयणंतरेण किंचि उप्पाइयं। वीसं-भंतरं सहाविया अंगमंग-फरिस-रसं दिण्णा मुद्दिया। पसारिओ कणयमय-घडिय-णालो विव कोमल-बाहु-दंडो करतलो णीवि-देसंतरम्मि। एवं च कयावस्सय-करणीओ समुट्ठिओ सयणाओ। ताव दुइया वि रत्ती। तओ तेणेय कमेण संपत्ता तइया राई अणुराय-पवड्ढमाण-णिब्भर-हिययाणं पिव। तओ तइय-रयणीय य णिव्वत्तिय-वीसंभेणं तेणं केणं पि लज्जा-सज्झस-सह-रिस-सुहमुप्पायएण पओएण कयं किं पि कज्जं तं। अवि य।

जुवईयण-मण-मोहं मोहं मूढाण सव्व-जीवाणं। होइ पसूहिँ वि रमियं परिहरियं दिव्व-भावेहिं ॥

णिव्वत्ते य तम्मि जुवइयण-मण-मोहणे मोहणे कयाइं वद्धावणयाइं। दिण्णाइं महादाणाइं।

§ २७८) एवं च कय-कायव्व-वावारा अण्णम्मि दियहे समारूढा हिमगिरि-सिहर-सरिसं पासाय-तलं। तत्थ य आरूढेहिं दिट्ठं तेहिं विजयपुरवरीए दक्खिण-पायार-सेणी-बंधं धुयमाणं महारयणायरं। तं च केरिसं। अवि य।

गयणंगणं व रुंदं धवलं कलधोय-धोय-पत्तं व। दुत्तार-दूर-तीरं खीर-समुद्दस्स बिंबं व ॥

कहिंचि परिहत्थ-मच्छ-पुच्छच्छडा-छडिउच्छलंत-पाणियं, कहिंचि णिट्ठुर-कमढ-पट्ठि-संठिउल्ललंत-विद्दुम-पल्लवं, कहिंचि कराल-मयर-करग्ग-वग्गंत-सिप्पि-संपुडं, कहिंचि पक्क-णक्क-चक्क-करवत्तुक्कंत-माण-मीणयं, कहिंचि दुग्गाह-गाह-गहिय-विवस-

1) J समेक्खं. 3) J ताहे for तेहि, J तेहि for ताहि. 4) Better हिययं तं for च, and कुमर for कुमार, J हिअंअ वाण. 6) J मि for पि, J मज्झत्थ. 7) J °माणाहरए, J चंचलहुमया. 8) J -सहवस्सोहि°. 9) J तेहि for ताहि. 15) J सउव्वहसि. 17) J अहो ससिलिट्ठो. 18) J om. तत्थट्ठियाण etc. to रयणी, P तेंसी, P वोलिओ, J पडिरव-. 19) P कलहंसरस हंससारसकंठकूरइय, J कुविय for कूइय, P रविजुत्त, J बाहुओ P पाहाओ for पाहाउओ, P adds ताव य before पढियं, P य for च. 20) J om. पाहाइयमंगलं, P पाहायअमंगलं उयीयं, J om. मंगलगेयं समागया etc. to देसंतरम्मि l. 26 below. 21) P अधयं च, P उयीयं for उग्गीयं. 22) P तदहिसुवण्णणंदा°, P भालवट्ठे. 25) P अंगमंगमंगफरिस, P पसारियाओ, 26) J एयं for एवं, P om. कयावस्सय etc. to सयणाओ। ताव, P दुइया वि राती for दुइया वि रत्ती, P तेणय. 27) P राती, P तइया-, P om. य, P विसंभेणं, P -सज्जाससरिस. 28) J सुहप्पयाएण, J om. पओएण, P कयं कंपि जंतं. 29) P जुवतीयण, J पसूहिमि रमियं, P विसरिसंप रिहरियं दिट्ठिभावेहिं. 30) J जुवईयण, J om. दिण्णाइं महादाणाइं. 31) P om. कायव्व, P हिमहिगिरि. 32) J सेणीयद्धं. 33) P गयणंगयं व, P धवलकलहोय, P दुत्तारदुरं. 34) J छडिउच्छढंत, P छोडिओच्छलंतपालियं, P कमठ-पट्ठिसंठिउल्लसंतविद्दुसंपल्लवं कालिहिंचि. 35) P करग्गमग्गंत, P om. चक्क, P णीणयं for मीणयं, J -गाह for गाह, P गहित-.

हीरमाण-वणचरं, कहिंचि धवल-संखउल-लोलमाण-कमल-राय-रयण-दित्ति-चित्तलं, कहिंचि भिण्ण-सिप्पि-संपुडुल्लसंत-कंत-मुत्ताहलुज्जलं, कहिंचि जल-वड्डिय-जल-विदुम-दुम-गहण-राय-रंजियं, कहिंचि तणुय-तंतु-तुलिय-हीरमाण-वण-करिवरं, कहिंचि मरगय-मणि-सिलायल-णिसण्ण-भिण्ण-वण्ण-दीसंत-मच्छ-जुवलयं, कहिंचि जल-करि-दंत-जुवल-भिज्जमाण-जल-माणुसं, कहिंचि उव्वत्तमाण-महाभुयंग-भीम-भोग-भंग-भासुरं, कहिंचि जल-मणुय-जुयाण-जुवलय-पयत्त-सुरय-केली-हेला-जल-वीइ-संकुलं, कहिंचि मज्जणावइण्ण-दिसा-गइंदावगाहमाण-गंडयल-गलिय-मय-जल-संदोह-बिंदु-णीसंद-पयड-पसरंत-वेलावली-वलं-तुल्लसंत-चंदय-चित्तलं जलं ति । अवि य ।

§ २७९) पवण-पसर-वेअ-संखुद्ध-वीई-तरंगग्गहिज्जंत-तंतूहि संदाणियासेस-मच्छच्छडा-घाय-वेउल्लसंतेण णीरेण संखावली-खोह-दीणाणुणायाणुसारागयाणप्पसप्पेहिँ पम्मोक्क-दाढा-विसुव्वेल-दिप्पंत-जालाउलं । जल-करिवर-रोस-णिडिभण्ण-दंतग्ग-वेवंत-कुम्भेहिँ णक्कंकुसा-घाय-विज्झंत-मम्माहउक्कत्तियासेस-कुंभत्थलुच्छल्ल-मुत्ताहलुग्घाय-मज्जंत-कंतप्पहा-भिण्ण-दीसंत-वण्णण्ण-माणिक्क-संघाय-रस्सीहिँ तं संकुलं । वर-मयर-करग्ग-संलग्ग-णक्खावली-घाय-वेउच्छलुच्छल्ल-कीलाल-सेवाल-संलग्ग-मुत्तावली-लोह-णिद्धाइयाणेय-णीरंगणा-जुद्ध-संखुद्ध-पायाल-भज्जंत-माणिक्क-भक्खुल्ल-संतुट्ठ-मुद्धागउल्लूरियाणेय-दीसंत-सप्पल्लवं । पसरिय-जल-पूरमाणुल्लसंतग्गि-पूरंत-पायाल-संमेलियासेस-खुब्भंत-जंतू-जवावत्त-संवत्तणी-संभमुक्कंत-णायाणुसद्दुल्ल-संतुट्ठ-णच्चंत-देवंगणामुक्क-हुंकार-वाउज्जलुव्वत्त-दिप्पंत-सव्वाडवं ति ॥ अवि य ।

णच्चंत-तरंग-सुभंगुरयं वियरंत-समीण-महामयरं । दिप्पंत-समुज्जल-मणि-रयणं दिट्ठं च समं रयणायरयं ॥

तं च दट्ठूण वेला-महिलालिंगियं महाजलहिं भणियं कुवलयमालाए । 'अज्जउत्त, पेच्छ पेच्छ,

गंभीर-धीर-गरुओ होइ महत्थो वि अमय-णीसंदो । सामण्ण-दिण्ण-विहवो तुह चरियं सिक्खइ समुद्दो ॥'

कुमारेण भणियं । 'पिए तुमं पि पेच्छ,

फुड-मुत्ताहल-दसणा फुरंत-णव-विहुमाहरा सामा । वेविर-तरंग-मज्झा तुज्झ णु सरिसा उयहि-वेला ॥'

§ २८०) तओ कुवलयमालाए भणियं । 'अज्जउत्त, अलं इमिणा बुहयण-परिणिंदिएण इयर-बहुमएण अत्तणो पसंसा-वयण-वित्थरेण, ता अण्णेण केण वि वियड्ढ-बुद्धि-परिकप्पिएण विणोएण अच्छामो'त्ति । कुमारेण भणियं 'पिए, सुंदरं संलत्तं, तत्थ वियड्ढ-परिकप्पियाइं इमाइं विणोय-कारणाइं । तं जहा । पहेलिया वूढाओ अंतिमक्खराओ बिंदुमईओ अट्ठा-सिडयं पण्हुत्तराइं पट्ठट्ठाइं अक्खर-चुययाइं मत्ता-चुययाइं बिंदु-चुत्ताइं गूढ-चउत्थ-पाययाइं भाणियव्वियाओ हिययं पोम्हं संवि-हाणयं गाहद्धं गाहा-रक्खसयं पढमक्खर-विरइयं ति । अण्णाणि य महाकवियर-कप्पियाइं कवि-दुक्कराइं पओयाइं' ति । कुवलय-मालाए भणियं 'अज्जउत्त, जाइं तए भणियाइं इमाइं लक्खणं किं किं पि वा सरूवं' ति । कुमारेण भणियं । 'सुंदे, सुणेसु पहेलिया अंतिमक्खर-वूढाओ गोवाल-बालेसु वि पसिद्धाओ णज्जंति । सेसाणं पुण णिसुणेसु लक्खणं । अवि य ।

जत्थक्खराइँ कीरंति बिंदुणो आइमंतिमं मोत्तुं । अत्थो उण साहिज्जइ सा बिंदुमइ त्ति णायव्वा ॥ तं जहा ।

तं ि ं ं ु ं ि ं ि ि ु ु ि ं ।

ी ं ा ि ी ु ि ॥

---

1 > J हीरमभाण, P जलकरिवरं for वणचरं, P लोलमाणकोमयराय, J सप्पुडुल्ल°, P संपडुल्लसंत, J कंतर for कंत. 2 > J वड्डिअ, J om. जल, P रेहियं for रंजियं, J लिहिअ for तुलिय, P वर for वण. 3 > P णियत्तभिज्ज, J om. भिण्णं, J जुअलयं, J करिदंतजुअल. 4 > J भोअ for भोग, P जलदुमाणुसजुयल, J जलवीई P जलवीचि. 5 > J मज्जणवइण्ण, P दिसामयंदावगाहण, J गिलिय for गलिय, J पहयपसंतकवावलाविता for पयडपसरंतवेलावली. 7 > J पसरंत for पसर, P वीचीतरंग, J °गहिज्जंत P °गमिज्जंत. 8 > P -दीयागुणाया°, J °णायाणुसारागयाण°, J °प्पेहि पमुक्कपमोक्कदाढा, P पमोक्कदाढा-, J विहुवेल P विसवेल, J रोसविणिभिण्ण. 9 > J णक्खत्तसंधाविइज्जंत-, P विज्झं तं च माइयुक्क त्ति असेस, J मुत्ताफलु°, P मुत्ताहलुधाय, P कंदपहा. 10 > P संघायरासीहिं, P णक्कावली, P घायतेलुच्छलुल्ल. 11 > P संलग्ग, J लोभ-, P °इयाणेयाणीरंगणाकूइसंखुद्ध, P पायालभिज्जंतमाणिक्ककलसंतुट्ठ, J संखुद्ध for संतुट्ठ, P °गहूरियाणेय. 12 > J सपल्लवं P सपल्लव, J सम्मेलिया, P संतमुक्कंतणायाणुसदूलसंतुद्ध. 13 > J संतुद्धवच्चंत, P हुंकारवाकुकलुवत्त-, J °वाउज्जलव्वंत-; P सव्वाडवेत्ति. 14 > P णच्चततरंतसुभंगुरयं, J -सभंगुरयं, P om. महा. 15 > P adds च after भणियं. 16 > P repeats धीर, P तरुओ for गरुओ. 17 > P om. पिए, J om. पि and repeats पेच्छ. 18 > J दंसणा, J मण (partly written between lines). for णव, P कुज्झण for तुज्झ णु. 19 > P इयरमहुएण. 20 > J om. ता, P बुद्धिपक्खिलकप्पिएण, J repeats विणोएण 21 > P वियट्टपरियप्पियाइं, J adds करि (or परि) before कप्पि, J बुड्डाओ for वूढाओ, J अट्ठाविअड्ड P अट्ठाविडयं. 22 > J पट्टंट्ठाइ P पधाइं, J अक्खरचूअआइं मत्ताचूअआइं गूढ-, P अक्खरचुतयाइं मत्ताचुत्ताइं विंदुवुत्ताइं, J om. बिंदुचुत्ताइं, P गूढचतुपादाइं, J भाणिअव्विआओ P भाणेयव्वियाओ हियय पोम्हं. 23 > P पढमक्खरं, P om. अण्णाणि य etc. सरूवं ति. 24 > P मुद्धे निहुणेसु. 25 > J संतिमक्खरवूढाओ, P चूलाओ for वूढाओ. 26 > J करेंति for कीरंति, J आइअंतिपमोत्तूणं. 27 > The Mss. J & P have irregularly presented the symbols of *bindus* and vowels, so they are not reproduced here. It may be noted that J does not give the *Śirorekhā* or serifs but P gives it. In the text these are duly represented in the light of the verse for which they stand,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह उण लद्धा तइं सा एसा पढिज्जइ ।

संमि महं बहु-जण-वल्लहंमि तं किं पि कुणसु सहि जेण । असईयण-कण्ण-परंपराएँ कित्ती समुच्छलइ ॥

बत्तीसं-घरएसुं वत्थ-समत्थेसु छुब्भइ सिलोओ । अहवा खप्परियासुं सो भण्णइ अट्ठविडओ त्ति ॥

तं जहा । लेखितव्यमित्यनन्तरमेव ।

स	मं	ल	ग	स	क	ण	र
प्र	नं	र्व	मो	जै	ज	ति	स
र्व	ग	मां	ल्यं	र्व	ल्या	का	णं
धा	स	ध	णां	नं	य	शा	नं

जइ पुण बुद्धीए जाणियं तइआ पाढो पढिज्जए ।

सर्व-मंगल-मांगल्यं सर्व-कल्याण-कारणं । प्रधानं सर्व-धर्माणां जैनं जयति शासनं ॥

चत्तारि दोण्णि तिण्णि व चउयाओ जत्थ पुच्छिया पण्हा । एक्केण उत्तरेणं भणंति पण्हुत्तरं तमिह ॥

किं जीवियं जियाणं को सद्दो वारणे वियड्ढाणं । किं वा जलम्मि भमराण ताण मंदिरं भणसु आलत्तं ॥

जइ जाणइ तओ 'कमलं' । इमं पुण पण्हुत्तरं दइए, होइ बहु-वियप्पं । एक्कं समत्थयं, अवरं वत्थयं, अण्णं समत्थ-वत्थयं, एक्कालावयं । पुणो लिंग-भिण्णं, विभत्ति-भिण्णं, काल-भिण्णं, कारय-भिण्णं, वयण-भिण्णं ति । पुणो सक्कयं, पाययं, अवब्भंसो, पेसाइयं, मागहियं, रक्खसयं, मीसं च । पुणो आइउत्तरं बाहिरुत्तरं च त्ति । को णिरवसेसं भणिउं तरइ । गूढुत्तरं साहेमो ।

पण्हं काऊण तओ गूढं जा उत्तरं पि तत्थेय । पर-मइ-वंचण-पडुयं तं चिय गूढुत्तरं भणियं ॥ तं जहा ।

कमलाण कत्थ जम्मं काणि व वियसंति पोंडरीयाइं । के काम-सराणिं चंद-किरण-जोण्हा-समूहेणं ॥

जया पुण जाणियं तया कमलाणं कत्थ जम्मं । के, जले । वियसंति पोंडरीयाइं । काइं, सराणि । तत्थ समत्थ-समत्थ-उत्तरं । के सराणि ।

जं पुट्ठं तं दिज्जइ अंधो विय णेय जाणए तह वि । तं पयड-गूढ-रइयं पट्ठहं भण्णए अण्णं ॥ तं जहा ।

केण कयं सव्वमिणं केण व देहो अहिट्ठिओ वहइ । केण य जियंति जीया साहसु रे साहियं तुज्झ ॥

जइ जाणसि, केण कयं सव्वमिणं । पयावइणा । कः प्रजापतिरुद्दिष्टः । क इत्यात्मा निगद्यते । सलिलं कमिति प्रोक्तम् । अत्तो तेण कयं सव्वं । त्ति ।

---

1 > P adds तं before जइ, J पुण for उण, P पढिज्जए. 2 > P कुण साहि जेण, P असतीयणकण्णपरंपराणं कित्ती, J समुच्छलई. 3 > P बत्तीसुं, P वत्थमवत्थेसु, J छुब्भए, J खप्परिआसुं P खप्पडिआसुं. 4 > P तं जहा । लेखितव्यमित्यनन्तरमेव । J °मित्यानंतरमेव. 5 > It is uncertain from the MSS. that at what place the diagram is to be put. In the diagram and also in the subsequent verse र्व is often written as र्व्वं in both the MSS. Some syllables are wrongly written in the diagram. 9 > P adds तं जहा before जइ पुण, P दाऊण for पुण, J om. पढिज्जए. 10 > P सव्व for सर्व in both places, J सासनं P शासनं. 11 > J has योजनीयः before चत्तारि; possibly the diagram according to J would come after योजनीयः, J om. व, P पुज्झिआ for पुच्छिया, P तंति for तमिह, J adds तं जहा after तमिह. 12 > P किं जीवं णं जीवाणं, J वारण, P किं च जलंमि भमंताण मताण मंदिरं होइ भमराणं for the second line. 13 > J om. जइ जाणइ तओ कमलं, P om. दइए, P बहुविहं अण्णं, J om. अवरं वत्थयं. 14 > P om. एक्कालावयं, P विहत्तिभिन्नं, P repeats कालभिन्नं, P कारयतिन्नं, P adds सव्वभिन्नं before ति, P सक्कयं पुणो पायं. 15 > J अवभंसो P अवब्भसं, P आति उत्तरं, J चेति for च त्ति, P णिरविसेसं, P तरइं । गूढत्तरं साहामो. 17 > P गूढत्तरं, J om. तं जहा. 18 > J उ for व, P पोंडरीयाणि, P कामरसाणिचं तं किर जोन्हासमूहेण ॥. 19 > P तदा for तया, P काइ, J om. तत्थ etc. to केसराणि. 21 > P जं पट्ठं दंसिज्जइ, J पट्ठंवं P पट्ठकं. 22 > J देहो अभट्ठिओ, P जीयति जिया साहसु मे याहितं तुज्झ. 23 > P adds तओ before केण, P °पतिरुपदिष्टः । कः इत्यात्मा, P प्रोक्तं । अतो, J केण for कयं, कः प्रजापतिः etc., obviously three pādas of a śloka.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जत्थ सिलेसो विहडइ चालिज्जंतेण अक्खरेणेय । घडिं पुण घडियं चिय तं भण्णइ अक्खरचुययं ॥ तं जहा ।

पच्चग्ग-धूय-गंधा सेविज्जंती सुरेहि जूडेहिं । गिम्हे वि होइ सिसिरा सा वउलावली रम्मा ॥

अइ जाणसि, ता सा देवकुलावली रम्मा ।

जत्थ य लुप्पइ किरिया मत्ता-भावेण होइ तब्भावो । तं चिय मत्ता-चुययं बिंदुचुययं पि एमेव ॥

पयइ-धवलाइँ पहिओ पवास-पच्चागओ पियइमाण । तल्लच्छाइँ सयण्हो सरए वयणाइँ व जलाइं ॥

जइ पुण जाणसि, पियइ वयणाइं व जलाइं ति । बिंदु-चुययं जहा ।

असुईण जं असुइअं दुग्गंधाणं च होइ दुग्गंधं । कुहयण-सहस्स-परिणिंदियं च को जगलं खाइ ॥

लइयम्मि जंगलं ति ।

गूढ-चउत्थय-पायं णामेणं चेय लक्खणं सिट्ठं । आइम-पएसु तीसुं गोविज्जइ जत्थ तुरिय-पयं ॥

गूढ चउत्थ-पायं जहा ।

सुण्णो भमामि एसो आसण्णं मच्चु-लिंग-पत्तो हं । कण्णं दे सुण वयणं

किंतु गूढो चउत्थो पाओ । जइ पुण णज्जइ एत्थेय चिट्ठइ । 'सुभए आलिंगणं देसु' । सेसाणं पुण लक्खणं णामेणं चेय णायव्वं । भणिएव्विया जहा ।

जइ धम्मिएण भणियं दारे ठाऊण देसु भिक्खं ति । ता कीस हलिय-धूया तुरियं रच्छाए णिक्खंता ॥

भिक्खा-विणिग्गाए धम्मिए मढे संकेओ त्ति । हियय-गाहा जहा ।

गोसे च्चिय हलिय-वहू पढमं चिय णिग्गया घरद्दारं । दट्ठुं कलंब-कुसुमं दुहिया रोत्तुं समाढत्ता ॥

संकेय-भंगो दइएण साहिण्णाणं कलंबं ठवियं ति हिययं । पोम्हं जहा ।

ण कयाइ तेण रमिया सयणे सुयणे वि णो अहं वसिया । णामं पि णेय गहियं कीस पउत्थं तयं भरिमो ॥

पोम्हं पुण ।

सो चेय मए रमिओ वसिया वच्छत्थलम्मि अह तस्स । दइयं ति जो भणंतो सो चेय महं भरउ णाहो ॥ त्ति ।

गाहद्धं ति । जहा ।

अवहत्थिऊण लज्जं गेण्हसु कंठम्मि किं व ण सुयं ते । अब्भत्थिओ ण लब्भइ चंदो व्व पिओ कला-णिलओ ॥

एत्थं पुण अण्णं गाहद्धं ।

दिट्ठो णयणाणंदो णिव्वुइ-जणणो करेहिँ वि छिवंतो । अब्भत्थिओ ण लब्भइ चंदो व्व पिओ कला-णिलओ ॥ त्ति ।

संविहाणयं जहा ।

अइ भणसु तं अलज्जं परलोय-विरुद्धयं इमं काउं । घोरे तमम्मि णरए गंतव्वं संबलि-वणम्मि ॥

एत्थं संविहाणयं । केण वि दूई पेसिया पत्थेउं । णाइया कुविया पडिवयणं देइ । किर परदार-गमणेण णरए कूड-सिंबली-वणे छुब्भइ त्ति । इओ ताए पुण तस्स संकेयं दिण्णं । परलोओ एस दूई । इमिणा कज्जेण गंतव्वं तए एत्थ संबली-वणे । काए पुण वेलाए । घोरे तमम्मि । अरे पुरिस ए तए त्ति, अहं तत्थ वच्चीहामि त्ति । एत्तिओ संविहाणो त्ति । गाहा-रक्खसं जहा ।

एत्तियमेत्तं चिय से भणमाणो मुच्छिओ पहिओ ॥

इमं च पच्छिमद्धं । जा काइ भुयणे गाहा, तीय रक्खसो इव सव्वत्थेसु लग्गइ त्ति । पढमक्खर-रइयं जहा ।

दाण-दया-दक्खिण्णा सोम्मा पयईए सव्व-सत्ताणं । हंसि व्व सुद्ध-पक्खा तेण तुमं दंसणिज्जासि ॥

1 > J सिलोसो, J चालिज्जंतोण, P विडज्जतेणं अक्खरेणय, P अक्खरजुययं. 2 > J पच्छक्खच्चूअ, P गंधो सेविज्जंता, P om. जूडेहिं which is added on the margin in J, P गिम्हेहिं होंति. 3 > P देववलावली. 4 > P लुप्पति, P होंति, J तब्भात्रे, J चिव, P बिंदुचुतयं पि येमेय ॥. 5 > P पियइमाण, P सयण्हा, J मऊलइं for व जलाइं. 6 > J जे for जइ, P जाणासि, P वयणाइ जाणाइं ति बिंदुचुतयं जहा. 8 > P जंगलं for जगलं, J om. लइयम्मि जंगलं ति. 9 > J चउत्थपादेणं चेअ. 11 > P adds आ after एसो. 12 > J किंता (?) for किंतु, P चतुत्थपादो ।, P एत्थयं, P सुहए, P सेसाण उण. 13 > J भणिएव्विया, P भणिएव्वे जहा, J om. जहा. 14 > P धम्मिऊण, J ठाऊ देसु, P तुरिय. 15 > J विणिग्गयएण. 16 > P घरदारं, J दट्ठूण P दट्ठुं, J [illegible] P रोत्तु. 17 > P inter. दइएण and साहिण्णा (ज्ञा) ण, P हितयं, J पम्हं for पोम्हं. 18 > P गहितं कीसं, P भणिमो. 19 > J पुम्हं for पोम्हं, P पोम्हसुण. 20 > J चेव, P दइतं, P भण तो सो चेय, P om. ति. 22 > P कंटंमि किं च ण सुअते, P व्व कउकलाणिउणो. 24 > P णिव्वत्ति व जणणो, P मि for वि, P व्व कलापिउउणो ॥. 25 > J सविहाणयं. 26 > J अह for अइ, P अलज्ज, J om. इमं. 27 > J सविहाणयं, J om. पत्थेउं । णाइया, P पडिवयण न देइ, P परदारा-, P कूडसबलावणे छुभइ. 28 > J om. त्ति, P om. इओ, J om. ताए, P संकियं दियं दिन्नं ।, P om. परलोओ एस etc. to संवाहाणो त्ति. J संवाहाणो (?, for सविहाणो). 30 > P एत्तियमेत्ते, P पुच्छिओ for मुच्छिओ. 31 > J om. च, P पच्छद्धं, J repeats जा, J P repeat तीय, P रइतं. 32 > P सोमा पयतीय सव्वभत्ताणं ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ य पाय-पढमक्खराइं 'दासो हं' ति कामयंतेण लिहिऊण पेसिया गाहा ।

एवं इमाइँ एत्थं अण्णाइ मि होंति बहु-वियप्पाइं । छप्पण्णय-बुद्धि-वियप्पियाइँ मइ-वित्थर-कयाइं ॥

ता साहसु पिए, इमाणं मज्झे केण विणोएण चिट्ठामो'त्ति । कुवलयमालाए भणियं । 'अज्जउत्त, सव्वाइं चेय इमाइं सुंदराइं, ता चिट्ठंतु ताव इमाइं । अण्णं किंचि देवं विण्णवेमि, जइ देवो पसायं करेइ' । कुमारेण भणियं 'पुच्छ वीसत्थं, णत्थि ते अणाइक्खणीयं' । कुवलयमालाए भणियं 'अज्जउत्त, एत्तियं साहसु । कहं तए जाणिओ एस पायय-वुत्तंतो, कहं इमं देसंतरं पत्तो, कहं वा पायओ पूरिओ'त्ति । कुमारेण भणियं 'सुंदरि, णिसामेसु ।

§ २८१) अत्थि अउज्झाए दढवम्मो णाम राया । सामा देवी । तीय पुत्तो अहं । दिव्व-तुरयावहरिओ वणं पत्तो तत्थ य दिट्ठो महारिसी, सीहो, दिव्व-पुरिसो य । तेण रिसिणा साहियं पुव्व-जम्मं पंचण्ह वि जणाणं । तं जहा । चंडसोमो कोव जणिय-वेरग्गो उवसंतो धम्मणंदणस्स पायमूले कोसंबीए पुरवरीए । माणभडो वि । एवं चिय मायाइच्चो, लोहदेवो, मोहदत्तो तओ एवं च तवं काऊण कय-जिणवर-धम्म-संकेया कालं काऊण पउमे विमाणे समुप्पण्णा । तत्थ वि धम्म-तित्थयर-संबो-हिया कय-सम्मत्ता पुणो समागया जंबुद्दीवं । तत्थ य जो सो लोहदेवो सो इहं चंपा-पुरवरीए वणिउत्तो जाओ । तम्मि जाण-वत्ते विणिग्गओ पउमकेसरेण देवेण संबोहिओ, पव्वइओ, ओहि-णाणी जाओ । तेण वि णिरूवियं जाव चंडसोमो सीहो जाओ, माणभडो अउज्झाए अहं जाओ । तओ अवहरिओ पउमकेसरेण मोहदत्तेण, रिसिणो य पासं संपाविओ । तेण य भगवया साहिओ एस सव्वो वुत्तंतो । गहियं च मए सम्मत्तं, जहा-सत्तीए किंचि देस-विरइय-वयं च । तत्थ य सीहेण कयं अणसणं । पुच्छिओ य मए भगवं 'सो उण मायाइच्च-देवो कत्थ ववण्णो संपयं' । साहियं च भगवया । 'दाहिण-समुद्द-वेला-वण-लग्गा विजया णाम पुरवरी । तत्थ य विजय-राइणो धूया कुवलयमाल' त्ति । मए भणियं 'भगवं, तीय को होही उवाओ सम्मत्त-लंभे' त्ति । भगवया भणियं 'तुमं चेव पडिबोहेसि' । मए भणियं 'भगवं, किं मम सा वयणं करेइ' । भगवया भणियं 'तए सा परिणेयव्वा' । मए भणियं 'केण उवाएण' । भगवया साहियं 'तीय पुरिस-देसिणीए अण्णो मुणिवरो सयलं पुव्व-भव-वुत्तंतं साहेइ सुय-णाण-पभावेणं । ता ताणं पंचण्हं जणाणं एक्का एसा । अण्णे चत्तारि अण्णत्थ उववण्णा । ताणं च मज्झे एक्केण परिणेयव्वा, ण अण्णेण । तओ सा तप्पभिइं पाययं लंबेहिइ पुव्व-भव-वुत्तंत-सूययं । तं च तुमं एक्को जाणिहिसि, ण उण अण्णो, तेण तुमं तं परिणेहिसि । पुणो संजाय-पीइ-वीसंभ-परूढ-पणयाए संभरिऊण पुव्व-जम्म-वुत्तंतं, काऊण धम्म-कहं, जणिऊण वेरग्गं, णिंदिऊण संसार-वासं, पसंसिऊण सम्मत्तं सव्वहा तम्मि काले पओय-पुव्वयं तहा करणीयं जहा णाइवत्तइ सम्मत्तं' ति । तओ मए पुच्छियं 'भगवं, एस पुण पउमकेसरो देवो कत्थ उववज्जिहिइ' त्ति । भगवया भणियं 'एस तीए चेव कुवलयमालाए पुत्तो पुहइसारो णामं होहिइ त्ति तओ तुम्हेहि पडिबोहेयव्वो' त्ति । तं च सोऊण पिए, इमं देसंतरं संपत्तो किर तुमं पडिबोहेमि त्ति । एवं च भिण्णो पायओ । परिणीया एत्थ तुमं ति । ता पिए, संपयं इमं जाणिऊण पडिवज्जसु सम्मत्तं ।

§ २८२) तं च केरिसं । अवि य ।

दुत्तार-दूर-तीरे फुडिए जाणम्मि वुज्झमाणस्स । पुरिसस्स उयहि-मज्झे जह फलहासायणं सरणं ॥
तह संसार-महोयहि-दुत्तारुत्तार-विसम-दुह-सलिले । जीवस्स होइ सरणं सम्मत्तं फलहयं चेव ॥
बहु-जोयण-वित्थिण्णे अडई-मज्झम्मि भीरु-पुरिसस्स । भीयस्स अयंडे च्चिय सत्थो पुरओ जहा होइ ॥
संसाराडइ-मज्झे बहु-दुक्ख-सहस्स-सावयाइण्णे । जीवस्स णत्थि सरणं मोत्तुं सत्थं व सम्मत्तं ॥
जह कंटय-रुक्ख-समाउलम्मि गहणम्मि णट्ठ-मग्गस्स । अवियाणिय-देस-दिसी-विभाग-मूढस्स वर-मग्गो ॥
तह जीवस्स वि सुइरं कुसत्थ-मग्गेसु मूढ-हिययस्स । सिद्धि-महापुरि-गमियं मग्गं पिव होइ सम्मत्तं ॥

---

1) P ते for ति, J कामयंतो P भावयंतेण. 2) J adds विह after बहु, P मतिवित्थर, J कराइं ॥. 3) P साहसु प्पिए P adds त्ति before भणियं. 4) P ता for ताव. 5) P अणाविक्खणीयं, P adds वा before इमं 7) J adds अण्ण after अत्थि, P दढधम्मो महाराया, P तुरियावहरओ वणसंपत्तो. 8) P तत्थ दिट्ठो, P रिसिणासीहियं, P को for कोव. 9) P वेरग्गो, J कोसंबीपुर°. 10) P om. च, P om. काऊण after कालं, J om. वि, P तित्थरय बोहिया कयसमत्ताण. 11) P जंबुयदीवं, J om. य, P लोहदेसो सो इय, P वणियउत्ता जाओ, P तम्मि य जाणवत्त वि°. 12) P सबोहिओ, P सोहो for सीहो. 13) P om. जाओ after अहं, P रिसिणो य, P संपाइओ, P om. तेण य भगवया साहिओ. 14) J अन्नो for सव्वो, P om. च, J किंच P किंपि, J देसविरईवयं. 15) J adds य before कयं, J सोऊण for सो उण, P उववण्णो for ववण्णो, J om. संपयं, P भणियं for साहियं. 16) J पुरी for पुरवरी, J भयवं, P adds य before को. 17) J होहि P होति, P उवाय, J -लम्भो, P तुमं वियपडिबोहेसु, J कयणं for सा वयणं. 18) P adds भगवं before केण, P -देसिणीय. 19) J साहेहिति P साहेति, J -प्पभावेणं, J om. ता. 20) P adds एक्के before एक्केण, P अन्नोण ।, J तप्पभूई, J लंबेहिति P बेहिति, P वुत्तंतं. 21) P जाणहसि, P om. तं, J P पीति-. 22) J om. पुव्वजम्मवुत्तंतं काऊण, J धम्मस्स कहं, P वेरयं for वेरग्गं. 23) J णाइवंतइ सा सम्मत्त, P णातिवत्तं इ, J भयवं P भगव, P एस for पुण. 24) J P उववज्जिहिति, J om. त्ति, P चेय कवलय°, J repeats पुत्तो. 25) J तत्थ for तओ, J तुम्भेहि P तुम्हेवि, P चेय for च, J पत्तो for संपत्तो, P पडिबोहेयव्व त्ति ।. 26) J om. एत्थ, J पिइ for पिए, J पडिवज्ज सम्मत्तं. 27) P जं for तं, P adds से after च, P om. अवि य. 28) P मज्जमाणस्स ।, P उहिमज्झे, P फलयायणं. 29) P महोमहिदुत्तारो विसमदुहसयासलिले ।, J सुह for दुह, P चेय. 30) P अडमज्झंमि, J सत्थं for सत्थो. 32) P अवियाणयदेसदिसाविहाय-, P -मग्गे. 33) J कुमग्गलग्गो for कुसत्थमग्गे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह होइ मरुत्थलीसुँ तण्हा-वस-सूसमाण-कंठस्स । पहियस्स सीयल-जलं होइ सरं पंथ-देसम्मि ॥
तह संसार-मरुत्थलि-मज्झे तण्हाभिभूय-जीवस्स । संतोस-सीयल-जलं सम्मत्तं होइ सर-सरिसं ॥
जह दुकाले काले असण-विहीणस्स कस्सइ णरस्स । छायस्स होइ सहसा परमण्णं किं पि पुण्णेहिं ॥
तह दूसमाए काले सुहेण हीणस्स एस जीवस्स । दुहियस्स होइ सहसा जिण-वयणं अमय-णीसंदं ॥
जह णाम कोइ पुरिसो सिसिरे पवणेण सीय-वियणत्तो । संकोइयंगमंगो जलमाणं पेच्छए जलणं ॥
तह चेय एस जीवो कम्म-महासिसिर-पवण-वियणत्तो । दुक्ख-विमोक्खं सहसा पावइ जलणं व जिण-वयणं ॥
जह एत्थ कोइ पुरिसो दूसह-दारिद्द-सोय-भर-दुहिओ । हेलाए च्चिय पावइ पुरओ चिंतामणिं रयणं ॥
तह णरयादि-दारिद्द-दूसिओ दुक्खिओ इमो जीवो । चिंतामणि व्व पावइ जिण-वयणं कोइ तत्थेय ॥
जह कोइ हीरमाणो तरल-तरंगेण गिरि-णइ-वहेण । कह कह वि जीय-सेसो पावइ तड-विडव-पालंबं ॥
तह राग-दोस-गिरि-णइ-पवाह-हीरंत-दुक्खिओ जीवो । पावइ कोइ सउण्णो जिण-वयणं तरुवरालंबं ॥
जह कोंत-सत्ति-सव्वल-सर-वर-खग्ग-प्पहार-विसमम्मि । पुरिसस्स होइ सवरे णिवारणं ताण संणाहो ॥
तह दुक्ख-सत्थ-पउरे संसार-रणंगणम्मि जीवस्स । जिण-वयणं संणाहो णिवारणं सव्व-दुक्खाणं ॥
जह दूसह-तम-भरिए णट्ठालोयम्मि कोइ भुवणम्मि । अंधो व्व अच्छइ णरो समुग्गओ जाव णो सूरो ॥
अण्णाण-महातम-संकुलम्मि अंधस्स तह य जीवस्स । कत्तो दंसण-सोक्खं मोत्तुं सूरं व जिण-वयणं ॥
जह रुयल-जलिय-हुयवह-जाला-मालाउलम्मि गुविलम्मि । वित्थिण्णं होइ सरं सहसा पुरिसस्स भीरुस्स ॥
तह चेव महामोहाणलेण संतावियस्स जीवस्स । सव्वंग-णेव्वुइ-करं जिण-वयणं अमय-सर-सरिसं ॥
जह दूर-टंक-छिण्णे कह वि पमाएण णिवडमाणस्स । जीवस्स होइ सरणं तड-तरुवर-मूल-पालंबो ॥
तह दूर-णरय-पडणे पमाय-दोसेहिँ णिवडमाणस्स । अवलंबो होइ जियस्स णवर मूलं व सम्मत्तं ॥
इय जह सयले भुवणे सव्व-भएसुं पि होइ पुरिसस्स । सरण-रहियस्स सरणं किंचि व णो दीण-विमणस्स ॥
तह णरय-तिरिय-णर-देव-जम्म-सय-संकुलम्मि संसारे । जीवस्स णत्थि सरणं मोत्तुं जिण-सासणं एक्कं ॥

§ २८३) इमं च एरिसं जाणिऊण दइए, किं कायव्वं । अवि य ।

फलयं व गेण्हसु इमं लग्गसु अवलंबणे व्व णिवडंती । सलिलं व पियसु एयं ओयर पंथम्मि व पणट्ठा ॥
चिंतामणिं व गेण्हसु अहवा उवसप्प कप्परुक्खं वा । णिय-जीवियं व मण्णसु अह जीवाओ गरुययरं ॥

तओ पिए, केरिसं च जिण-वयणं सव्व-धम्माणं मण्णसु । अवि य ।

जह लोहाण सुवण्णं तणाण धण्णं धणाण रयणाइं । रयणाण काम-रयणं तहेय धम्माण जिणधम्मो ॥
जह णंदणं वणाणं दुमाण सिरिचंदणं मुणीण जिणो । पुरिसाण चक्कवट्टी तहेय धम्माण जिणधम्मो ॥
णागाणं णाइंदो चंदो णक्खत्त-तारयाणं च । असुराणं असुरिंदो तहेय धम्माण जिणधम्मो ॥
देवाणं देविंदो जह व णरिंदाण णरवरो सारो । जह मयवई मयाणं सारो धम्माण जिणधम्मो ॥
एरावणो गयाणं सारो खीरोयही समुद्दाणं । होइ गिरीण व मेरू सारो धम्माण जिणधम्मो ॥
जह वण्णाणं सेओ सुरही गंधाण होइ वरयरओ । फरिसाणं मिउ-फरिसो धम्माण वि एस जिणधम्मो ॥

अण्णं च दइए, एस स जिणवर-धम्मो केरिसो । अवि य ।

जह होइ जलं जलणस्स वेरियं हत्थिणो य जह सीहो । तह पावस्स वि एसो जिणधम्मो होइ पडिवक्खो ॥
जह जलणो कट्ठाणं मयरो मच्छाण होइ णिण्णासो । जह मयवई पसूणं एवं पावाण जिणधम्मो ॥

---

1 > J -सूसमाणस्स, J writes कंठस्स on the margin and ठ is just a fat zero. 2 > P मरुत्थली-, P संतोसवसीयलयजलं. 3 > P वि for कस्सइ. 4 > P सुहण, P सहस्स for सहसा. 5 > P को वि पुरिसो, P संकोतियंगमंगो. 6 > P जंम for कम्म. 7 > P inter. कोइ & एत्थ, J हेलाय, P चिंतामणी. 8 > P णरयाइदारिद्दभूमिओ दुक्खिओ जिओ दीणो ।, P कोति तत्थिय ॥. 9 > J सरल for तरल, P जह for कह, J विअड-पालंबं, P पालम्बं ॥. 10 > P तह कोहरायदोस, P -णति-, P हीरे दुत्थिओ, P सउणो, P तरुयरालंबं. 11 > P नह for जह, J कोंति-, P खग्गहारावसमंति ।, P समरे for सवरे. 14 > J दंसेण सोक्खं, P व्व for व. 15 > P विउलंमि for गुविलम्मि, J विच्छिण्णं, P सहसा ण भीयस्स. 16 > P चेय, P -णेव्वुइयरं, J रस for सर. 17 > P दूरकंट[illegible]णो, P जह for तड, P सालंब for पालंबो, P has an additional verse here, and it runs thus : तह दूरणरयवडणे पसमाय दोसेहिं णिवडमाणस्स । जीवस्स होइ (?) सरणं जह तरुवरमूलसालंब ॥. 18 > P -वडणे, J -देसेहिं. 19 > P इह for इय, P णे for णो. 22 > J adds मूलं व before गेण्हसु, J व्व for व, P पिबसु, JP उयर for ओयर-, J यणट्ठा for पणट्ठा. 23 > P चिंतामणि व्व, J उअसप्प, P कप्पं रुक्खं व ।, J अहवा for अह, P जीवाउगुरुययरं. 25 > P सुअं तेणाण, P तहहो for तहेय, P जिणवयणं ॥. 26 > P जह चंदणं, P तहेव, P जिणधमो ॥. 27 > णायाणं, P गोविंदो for णाइंदो, P तहेव. 28 > P णरिंदाणराणवरयरओ ।, P मयवती. 30 > P जह विण्णाणं से तो सुरही, P वरवरओ, P मिऊ, 31 > J om. स, P जिणधंमो, P om. केरिसो. 32 > J om. य, J जहा, P leaves a gap of two letters and has एस for होइ. 33 > P मयवती, J धम्माण for पावाण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह गरुलो सप्पाणं मज्जारो मूसयाण जह ेरी । वग्घो इव वसहाणं तह ओ पावाण जिणधम्मो ॥
सूर-तमाण विरोहो छाया-घम्माण जह य लोगम्मि । एसो वि तह विरुद्धो कम्माणं होइ जिणधम्मो ॥
तावेण पारय-रसो ण वि णज्जइ कं दिसं समल्लीणो । जिण-वयण-ताव-तत्तं पावं पि पणस्सए तह य ॥
जह णिद्दय-वज्ज-पहार-पडण-दलिओ गिरी वि भिज्जेज्ज । तह जिणवरोवएसा पावं पि पणस्सए वस्सं ॥
जलण-पहओ वि रुक्खो पुणो वि सो होज्ज किसलय-सणाहो । जिण-वयण-जलण-दड्डस्स कम्मुणो णत्थि संताणं ॥
मुक्को वि पुणो बज्झइ णरवइ-वयणेहिँ कोइ णियलेहिं । जिण-वयणेण विमुक्को बंधाओं ण बज्झए जीवो ॥
पज्जलइ पुणो जलणो धूलि-कलिंबेहिँ पूरिओ संतो । जिण-वयण-जलण-सित्तो मोहग्गी सव्वहा णत्थि ॥

अण्णं च पिए, एरिसं इमं मण्णसु जिण-धम्मं । अवि य ।

जह करि-सिरम्मि मुत्ताहलाइँ फणिणो य मत्थए रयणं । तह एयम्मि असारे संसारे जाण जिणवयणं ॥
जह पत्थराओं कणयं घेप्पइ सारो दहीओं णवणीयं । संसारम्मि असारे गेण्हसु तह चेय जिणधम्मं ॥
पंकाउ जहा पउमं पउमाउ महू महूउ रस-भेउ । णिउणं गेण्हइ भमरो गेण्हसु लोयाओं सम्मत्तं ॥
गलंकुराओ कणयं खार-समुद्दाओ रयण-संघाओ । जह होइ असाराउ वि सारो लोयाओ जिणधम्मो ॥

§ २८४) अण्णं च पिए,

भवणम्मि जह पईवो सूरो भुवणे पयासओ भणिओ । मोहंधयार-तिमिरे जिणधम्मं तह वियाणासु ॥ एरिसो य

अत्थाण होइ अत्थो कामो एयाण सव्व-कामाण । धम्माण होइ धम्मो मंगलाणं च मंगलं ॥
पुण्णाण होइ पुण्णं जाण पवित्ताण तं पवित्तं ति । होइ सुहाण सुहं तं सुंदरयाणं पि सुंदरयं ॥
अब्भुयाण अब्भुयं ति अच्छेरयाण अच्छेरं । सेयाण परं सेयं फलं फलाणं च जाणेज्जा ॥

तओ पिए, धम्मं तित्थयराणं,

जह आउराण वेज्जो दुक्ख-विमोक्खं करेइ किरियाए । तह जाण जियाय जिणो दुक्खं अवणेइ किरियाए ॥
जह चोराइ-भयाणं रक्खइ राया इमं जणं भीयं । तह जिणराया रक्खइ सव्व-जणं कम्म-चोराण ॥
जह रुंभइ वच्चंतो जणओ अयडेसु तरलयं बालं । जिण-जणओ वि तह च्चिय भव्वं रुंभे अकज्जेसु ॥
जह बंधुयणो पुरिसं रक्खइ सत्तूहि परिहविज्जंतं । तह रक्खइ भगवं पि हु कम्म-महासत्तु-सेण्णस्स ॥
जह जणणी किर बालं थणयच्छीरेण णेइ परियड्ढिं । तह भगवं वयण-रसायणेण सव्वं पि पोसेइ ॥
बालस्स जहा धाई णिउणं अंजेइ अच्छिवत्ताइं । इय णाण-सलागाए भगवं भव्वाण अंजेइ ॥

दइए, तेण तं भगवंतं धम्म-देसयं कहं मण्णइ । अवि य ।

मण्णसु पियं व भायं व मायरं सामियं गुरुयणं वा । णिय-जीवियं व मण्णह अहवा जीवाओ अहिययरं ॥ अवि य ।
हिययस्स मज्झ दइओ जारिसओ जिणवरो तिहुवणम्मि । को अण्णो तारिसओ हूँ णायं जिणवरो चेय ॥ सव्वहा ।
जइ मं मण्णसि मुद्धे कज्जाकज्जाण जाणसि विसेसं । जइ इच्छसि अप्प-हियं सुंदरि पडिवज्ज जिण-वयणं ॥
जइ जाणसि संसारे दुक्खाइँ अणोर-पार-भीमाइं । जइ णिव्वेओ तुम्हं सुंदरि ता गेण्ह सम्मत्तं ॥
जइ सुमरसि दुक्खाइं मायाइच्चत्तणम्मि पत्ताइं । जइ सुमरसि णिव्वेओ सुंदरि ता गेण्ह सम्मत्तं ॥
जइ सुमरसि कोसंबिं जइ जाणसि धम्मणंदणो भगवं । जइ सुमरसि पव्वज्जं सुंदरि पडिवज्ज जिणधम्मं ॥
जइ सुमरसि संकेओ अवरोप्पर-विरइओ तहिं तइया । सम्मत्तं दायव्वं ता सुंदरि गेण्ह तं एयं ॥
जइ सुमरसि अप्पाणं पउम-विमाणम्मि देवि परिवारं । ता सव्व-सोक्ख-मूलं दइए पडिवज्ज जिणधम्मं ॥

---

2) J कयोप्पम्माण for छायाधम्माण, J लोअम्मि, P जहा for वि तह. **3)** P तोवेण परिय-, P पावं मि विणासए. **4)** P दलिरो, P वि भज्जेज्ज, J जिणवरोवएसं पहवं पावं, J वस्स ॥. **5)** P जलणेण कड्डरुक्खो, P किलयसणाहो, P किं पुणो for कम्मुणो. **6)** P inter. पुणो & वि, P णरवय-, P मुक्को for विमुक्को, P बंधए for बज्झए. **7)** P जणवयणजलयसित्तो. **8)** P सं for इमं. **9)** P -सिरिंमि, P repeats संसारे, P om. जिण, J धम्मो for वयणं. **10)** P तं for तह. **11)** P महूअ, J रसहेऊ P रसमेओ. **12)** P असारो तो वि. **14)** P तह वियाणा ॥. **15)** P अत्थीण, P धम्मा for धम्माण. **16)** P सुहयं for सुहं तं. **19)** P आउरा वेज्जो दुक्खं करेइ. **20)** J चोराति P चोराउभयं, P भव्वजणकंम-. **21)** P जह इं रुभइ, J च्चिय भयवं रुम्हे अयज्जेसु. **22)** P पुरिसो, P सत्तूण. **23)** P णेय परियट्ठिं ।, P रसायणेण भव्व पि पासेइ. **24)** P धाइं, P -सिलागाए भगव. **25)** P om. धम्म, P om. कहं, P वण्णइ for मण्णइ. **27)** P हिअस्स, P जारिसो, P तिभुवणंमि, P हुं, P चेव. **28)** J जइ इमं, P om. one कज्जा, P विसिसं, P धम्मं for वयणं. **29)** J -भीआइं ।. **30)** P सुमरं सि तं दुक्खं मायाइच्चत्तणं पि जं पत्तं ।, P om. second line जइ सुमरसि etc. **31)** J धम्मनिंदणो भयवं ।. **32)** सुंदर गेण्ह तं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ तं जाणसि मुद्धे दिट्ठो चंपाए धम्म-तित्थयरो । णिसुओ धम्माधम्मो पडिवज्जसु ता जिणाणं ति ॥ सव्वहा ।
जइ जाणसि सुंदरमंगुलाण दिट्ठाण दोण्ह वि विसेसं । ता सयल-लोय-कल्लाण-कारणं गेण्ह जिणवयणं ॥ ति ।

इमं च णिसामिऊण कुवलयमालाए संलत्तं ।

तं णाहो तं सरणं अज्जं चिय पावियं मए जम्मं । अज्जं चेय कयत्था सम्मत्तं जेण मे लद्धं ॥

ति भणिऊण णिवडिया कुमारस्स चलण-जुयले । कुमारेण भणियं ।

उण्णमसु पाय-पडिया दइए मा जूर इयर-जीओ व्व । लद्धा तए जिणाणं आणा सोक्खाण संताणं ॥

ति भणमाणेण उण्णामियं वयणयं । भणियं च कुवलयमालाए ।

'जयइ जय-जीव-जम्मण-मरण-महादुक्ख-जलहि-कंतारे । सिव-सुह-सासय-सुहओ जिणधम्मो पायडो लोए ॥
जयइ जिणो जिय-मोहो जेण इमो देसिओ जए धम्मो । जं काऊण सउण्णा जम्मण-मरणाउ मुंचंति ॥
जयइ य सो धम्म-धणो धम्म-रुई धम्मणंदणो भगवं । संसार-दुक्ख-तवियस्स जेण धम्मो महं दिण्णो ॥
मूढो महिला-भावे दियलोग-चुओ परोप्पर-विउत्तो । अम्ह जिओ पडिबुद्धो जिणधम्मे तुम्ह वयणेहिं ॥'

ति भणंतीय पसंसिओ कुमारो त्ति ।

§ २८५) जाव य एस एत्तिओ उल्लावो ताव समागया पडिहारी । णिवेइयं च तीए 'देव, दुवारे लेह-वाहओ चिट्ठइ' । कुमारेण भणियं । 'लहुं पेसिहि'त्ति भणिए णीहरिया पडिहारी, पविट्ठा य सह तेणेय । पणमिओ लेह-वाहओ, पुच्छिओ य कुमारेण 'कओ आगओ' । भणियं च तेण 'अओज्झा-पुरवरीए' । 'अवि कुसलं तायस्स, दढ-सरीरा अंबा' । तेण भणियं । 'सव्वं सव्वत्थ कुसलं' ति भणमाणेण पणामिओ लेहो, वंदिओ य उत्तिमंगेण, अवणीया मुद्दा, वाइउं पयत्तो । अवि य ।

'सत्थि । अउज्झापुरवरीओ महारायाहिराय-परमेसर-दढवम्मे विजयपुरीए दीहाउयं कुमार-कुवलयचंदं महिंदं च ससिणेहं अवगूहिऊण लिहइ । जहा । तुह विरह-जलिय-जालावली-कलाव-करालिय-सरीरस्स णत्थि मे सुहं, तेण सिग्घ-सिग्घयरं अवस्सं आगंतव्वं' ति । 'णिसुयं कुवलयमाले', भणियं च कुवलयचंदेण, 'एस एरिसो अम्ह गुरुसंतिओ आदेसो, ता किं कीरउ' त्ति । कुवलयमालाए भणियं 'अज्जउत्त, जं तुह रोयइ तं पमाणं अम्हाणं' ति । तओ सद्दाविओ महिंदो, दंसिओ लेहो । उवगया णरवइ-सयासं । साहिओ लेहत्थो । णरवइणा वि वाइओ लेहत्थो, साहियं जहा । 'लिहियं ममं पि राइणा । अवस्सं कुमारा पेसणीय त्ति । ता वच्च सिग्घं' ति भणमाणेण सद्दाविया णिओइया, भणिया य 'भो भो, सज्जीकरेह पुव्व-देस-संपावयाइं दढ-कढिणाइं जाण-वाहणाइं, सज्जीकरेह वर-करिवर-घडाओ, अणुयट्टह वर-तुरय-वंदुराओ, दंसेह रहवर-णियर-पत्थारीओ, सज्जेह पक्क-पाइक्क-संघे, गेण्हह महारयणाइं, आणवेह ते महाणरिंदे जहा तुम्हेहिं पुव्व-देसं गंतव्वं' ति । आणत्ते य सव्वं सज्जीकयं, गणियं संवच्छरेण लग्गं । ताव य हलहलीहूओ परियणो, खुहिया णयरी, सोय-वियणा-विहुरा कुमारस्स सासू, हरिस-विसण्णा कुवलयमाला, उत्तावलो सहि-सत्थो, वावडो राया । एएण कमेण कीरंतेसु पाहेएसु, पक्किज्जंतेसु संभारेसु, रुंविज्जंतासु कणिकासु, दलिज्जंतेसु उरुपुलेसु संपत्तो लग्ग-दियहो । संपत्ता कुवलयमाला, गुरुयणं परियणं सहियणं च आउच्छिउं ववसिया । ताव गया रुक्ख-वाडियं । दट्ठूण य बाल-रुक्ख-वाडियं पसरंतंतर-सिणेह-भर-पसरमाण-बाहुप्पील-लोल-लोयणाए भणियं । अवि य ।

अइ खमसु असोय तुमं वर-किसलय-गोच्छ-सत्थ-संछण्ण । चलण-पहारेहिँ समं दालो व्व तुमं मए पहओ ॥
भो बउल तुमं पि मए मइरा-गंडूस-सेय-पाणेहिं । सित्तो सि अलज्जं चिय जइ रुसिओ खमसु ता मज्झं ॥

1) P णिसु धम्मा°, P repeats सु before ता. 2) J दिट्ठोण, P लोव for लोय. 4) J तण्णाहो. 5) J जुअले P जुवलेसु. 6) P णयवडिया for पायवडिया. 8) P जलहिसंतारो, P सासयहओ जिणधम्मे. 9) J जइ for जयइ, P जयमोहो J सिओ for जए, J सउण्णो, J मुंचंति. 10) P धम्मरुती, P धन्नो for धम्मो. 11) J दिअलोअ-. 13) P तुल्लावो for उल्लावो, J तीय for तीए, P लेहवाडओ चिट्ठेइ. 14) J लहुं पवेसेहि (later correction), P तेण । पणामिओ लेहो पु° (the reading accepted is a marginal correction in J). 15) P om. य, J अयोज्झा, P वि for अवि. 16) P लोहो for लेहो, P om. य, J अवणिआ य मुद्दा P अविणीया मुद्दा. 18) P अत्थि for सत्थि, P °पुरवरीए, J °हिरायायपर°, J P दढधम्म विजय°, P विजयपुरवरीए, J om. दीहाउयं, P om. कुमार. 19) P अवऊहिऊण, J लिहियं for लिहइ, P जलण for जलिय, J सिग्घविग्घयरं, P तेण विसिग्घाघविसिग्घतरं. 20) J अवस्स, P कुवलयमालाए, P कुवलयचंदउत्तेण एस, P adds य before आदेसो, J आएसो. 21) P om. अम्हाणं, J om. ति. 22) J om. वाइओ लेहत्थो. 23) P अवस्स कुमारो पेसणीओ त्ति, J पेसणिय, J वच्चह, P सद्दाविया य णिइया, J नियोइआ. 24) J संपावियाइं, P करिघडाओ. 25) P अणवेह for आणवेह, J om. ते, J तुब्भेहि for तुम्हेहिं. 26) J ताव for आणत्ते य, P adds ताव य before सव्वं. 27) P -विमणा, P om. विहुरा, P सासुया for सासू, P याणो for सत्थो, P एतेण. 28) J कीरंतेणसु P कीरंतिसु पाहेएसु उअकिज्जंतेसु संसारेसु, J सुंभारेसु, J रुंचिज्जंतासु, P दलजंतेसु, J ऊरुफुल्लेसु P उरसुलेसु. 29) P सहिजणं च आउच्छिओ, P om. ववसिया, J om. ताव गया, P -वाडीयं. 30) J om. भरपसरमाण. 31) P असोग, P adds कुसुम before गोच्छ, P om. सत्थ, P संच्छन्ना ।. 32) P अलिज्जं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भो भो तुमं पि चंपय दोहल-कज्जेण चुंबिओ बहुसो । मा होज मज्झ दोसं खमसु य तं परिभवं एक्कं ॥
वियलंत-कुसुम-बाहोह-दुम्मणा मज्झ गमण-सोएण । आउच्छिया सि पियसहि कुंदलए दूर-गमणाए ॥
अणुयत्त णियय-दइयं एयं सहयार-पायव-जुयाणं । पइ-सरणा महिलाओ भणिया णोमालिए खमसु ॥
तं रोविया मए च्चिय पुणो वि परिणाविया तमालेण । धूए गाहवि एण्हिं ण-याणिमो कत्थ दट्ठव्वा ॥
भो भो पियाल-पायव दिण्णा मे जूहिया सिणेहेण । एयाएँ तं कुणेज्जा जं किं पि कुलोइयं तुज्झ ॥
सच्चं चिय पुण्णागो पुंणाग तुमं ण एत्थ संदेहो । आलिंगिज्जसि तं चिय सयंवरं माइविलयाहिं ॥
रे णाय तुमं पि पुणो बहुसो विणिवारिओ मए आसि । मा छिवसु कुंदलइयं एण्हिं तं खमसु दुव्वयणं ॥
हिंताल खमसु एण्हिं बहुसो जं णिट्ठुरं मए भणियं । किसलय-करग्ग-णिट्ठुयं पियंगु-लइयं फरिसमाणो ॥
भो भो कयंब तं पि हु अणुयत्तसु पाडलं इमं वरइं । छेए वि हु सप्पुरिसा पडिवण्णं णेय मुंचंति ॥
अज्ज वि ण दीसइ च्चिय रत्तं कुसुमं इमाए बंधूए । मा तूरेज्जसु चंपय जणस्स कालो फलं देइ ॥
हे हे पियंगु-लइए वारिज्जंती वि मुंच मा दइयं । एसो असोय-रुक्खो पेम्मेण ण हीरइ कयाइं ।
जाइ-विसुद्धा सि तुमं चंपय-दइयं ण मुंचसे जेण । कुलबालियाओ लोए होंति च्चिय सुद्ध-सीलाओ ॥
इय एवं भणमाणी चिर-परिहिय-पायवे खमावेंती । उव्वाह-बाह-णयणा रोत्तुं च्चिय सा समाढत्ता ॥

§ २८६) संठाविया य सा सहियणेणं समागया णिय-भवणं । तत्थ वि दिट्ठाइं णाणाविहाइं घर-सउण-सावय-समूहाइं, भणिउं च पयत्ता, अवि य ।

मुद्धे ण जीवसि च्चिय मिय-रहिया य मईएँ तुमं महया । ता पसरसु वच्चामो आउच्छसु जो सि दट्ठव्वो ॥
सारसि मरसि सरंती मुंचामि कहं इमो य ते दइओ । दोण्णि वि वच्चह एसो आवडिओ अंध-वुत्तंतो ॥
अण्णं रुइर-कलावं मोरं तुह मोरि वरिहिमो अम्हे । धीरा मा रस-विरसं परिहासो मे कओ मुद्धे ॥
हंसिणि सरस-सिणेहे णिय-हंसं भणसु हास-ससि-सरिसं । वच्चामु सामिणीए समयं सम-दुक्ख-सोक्खाए ॥
चक्काइ तुमं रयणिं दइय-वियोगम्मि णेसि मह पासे । ता वच्चसु मा णिवडउ विओय-वज्जासणी तुज्झ ॥
मा होंतु विसेण व ते चओरि णयणाइँ पियम-विओए । गुंजाफल-सरिसाइं वच्चसु समयं पि दइएण ॥
पढ कीरि किंचि भणिया दइय-विओयम्मि पढिहिसि अलक्खं । पत्थाण-वज्जणिज्जं अणुहुव-सरिसं विरह-वज्जं ॥
आयल्लय-वुत्तंतो जइ वि तए साहिओ म्ह दइयस्स । पिसुणे कुविया अहयं मुंचामि ह सारिए कस्स ॥
इय कीरि-मोरि-सारंगि-सारिया-चक्क-सारसि-चओरिं । भणमाणी सा वियरइ स-णेउरा चारु-तरलच्छी ॥

एवं च आउच्छणयं कुणंतीए समागया लग्ग-वेला । तत्थ कयं धवलहरस्स बहु-मज्झ-देस-भाए सव्व-धण्ण-विरूढंकुरा चाउरंतयं । तत्थ य दहि-अक्खय-सुवण्ण-सिद्धत्थय-दुव्वंकुर-रोयणा-सत्थिय-वड्ढमाणय-णंदावत्त-पत्त-छत्त-चमर-कुसुम-महासणा-जवंकुर-पउमादिए सव्वे दिव्व-मंगले णिवेसिए । ताणं च मज्झे अहिणव-पल्लव-किसलयालंकियं तित्थोदय-भरियं कणय-पउम-पिहाणं चंदण-चच्चिक्क-चच्चियं णिबद्ध-मंगल-रक्खा-सुत्तयं कणय-कलसं ठावियं । तओ तत्थ य संठिया दोण्णि वि पुव्वाभिमुहा, वंदिया रोयणा, कयाइं मंगलाइं । एत्थंतरम्मि ताव य संपत्तं लग्गं । पूरिओ संखो । भणियं संवच्छरेण 'सिद्धि'त्ति । ताव य उच्चालिओ दाहिणो पाओ कुमारेण । कुवलयमालाय वि वाम-चलणं चालियं । पयत्त-गेतुं, णिक्खंता बाहिं । संख-भेरी-तूर-काहल-मुइंग-वंस-वीणा-सहस्स-जयजयासद्द-णिब्भरं गयणयलं आसी । समुहस्स गुरुयणस्स संपत्ता रायंगणं । ताव य सज्जिओ जय-कुंजरो । केरिसो । अवि य ।

धवलो धवल-विसाणो सिय-कुसुमाभरण-भूसिओ तुंगो । जस-कुंजर-पुंजो इव पुरओ जय-कुंजरो दिट्ठो ॥

1) P चंपयडोहल, P सहसा for बहुसो, P दोसो for दोसं, P परिहवं. 2) J दुम्मणो. 3) J पइसरणं, P भइणिणोमालए. 4) J च्चिअ बाला परिणामिआ. 5) P मे दूहिया, P कुणेज्जासु जं. 6) P पुन्नाणतुमणं, P °लयाइं ॥. 7) P छिदसु for छिवसु. P ता for तं. 8) P लिहियं for णिट्ठुयं, P फरुसमाणो. 9) P adds भो भो कयं फरुसमाणो before भो भो, P पाडलिं. 11) P देहे for हेहे, P व for वि, P माइमयं ।, P पेमेण ण हीरति. 12) J जामिं for जेण, P सुद्धसीलेण ॥. 13) J खमावेंति, P रोत्तं. 14) P ममाए गया, J om. णिय, P दट्ठाइं, P घरसवणसावइय-. 16) P वुद्धे for मुद्धे, J om. च्चिय, P च्चियर, हिता य, J मइए, P adds मए before तुमं, J ता परसु. 17) J पदइए for ते दइओ, P दोन्नि, J विवच्चसु. 18) P तुइ पुत्ति मोरि धरिहामो ।, P मुद्धो ॥. 19) P सरसिसिणेहे, P सुइ for सम. 20) P चक्काय, J विओअम्मि. 21) P मा होओ विमेण विते चउरिणयाणाइं, J विसणवरे चउरिणयसाइं विअयन, J गुंजाहल, P मुंचसि तइयं for वच्चसु समयं. 22) P inter. किंचि & कीरि, P दय for दइय, P पथाण-, J मणुहव for अणुहुव. 23) P य for वि, P पिसुणि, P adds वि before अहयं, P अहियं. 24) J -सारआ-, P चक्कसारसचउरी ।, J om. सा, J रसिर for स. 25) P बहुदेसभायंमि, J धण्णं. 26) P सिद्धत्थदुव्वंकुररोवणा, P णंदावत्तयचमरकुसुमहासणाजंवकुरपउमादिया. 27) J जायंकुर for जवंकुर, J °पउमातीए, J om. सव्वे, P दव्व for दिव्व. 28) P पउमप्पहाणं, J om. चंदण, P -चक्कियं. 29) J मंगलाइं, P संपएत्तं. 30) P चालिओ for चालियं. 31) J बहु for बाहिं, P -मुयंग-, P गयणं आसी । सा समुहस्स, J सुमुहस्स गुरुअस्स. 33) P धवधवलविसण्णो सिय, J विसालो for विसाणो, J जय for जस.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरूढा य जय-कुंजरं दुवे वि जुवाणया। केरिसा य दीसिउं पयत्ता जणेणं। अवि य।

कुवलयचंदो रेहइ कुवलयमालाय कुंजरारूढो। इंदो इंदाणीय व समयं एरावणारूढो॥

§ २८७) एवं च णीहरिउं पयत्ता अहिणंदिज्जमाणा य जण-समूहेण, वियप्पिज्जंता णायरिया-लोएण। अवि य। अइ,

कोउय-रहस-भरिज्जंत-हियय-पूरंत-णेह-बहुमाणो। अह जंपइ वीसत्थं णायर-कुलबालिया-सत्थो॥

एक्का जंपइ महिला भणइ हला को व्व एत्थ अभिरूवो। किं कुवलयमाल च्चिय अहवा एसो सहि कुमारो॥

तओ अण्णाए भणियं।

एयस्स सहइ सीसे कसणो अह कोंतलाण पब्भारो। कज्जल-तमाल-णीलो इमाएँ अह सहइ धम्मेल्लो॥

एयस्स सहइ वयणं सरए अह वियसियं व सयवत्तं। संपुण्ण-चंद-मंडल-लायण्णं सोहइ इमीए॥

एयस्स णयण-जुयलं कुवलयदल-सरिसयं सहइ मुद्धे। तक्खण-वियसिय-सिय-कमल-कंति-सरिसं इमीएँ पुणो॥

रेहइ इमस्स पियसहि वच्छयलं धवल-पीवरं पिहुलं। उब्भिज्जमाण-थणहर-विराविंयं रेहइ इमीए॥

सोहइ महंद-रुंदं णियंब-बिंबं इमस्स पेज्जालं। रइ-रहसामय-भरियं इमीए अहियं विराएज्जा॥

ऊरु-जुयलं पि सुंदरि इमस्स सरिसं करेण गयवइणो। रंभा-थंभेण समं इमाएँ अहियं विराएज्ज॥ त्ति।

अण्णाए भणियं। 'हला हला, एत्थ दुवे वि तए अण्णोण्ण-रूवा साहिया, ण एत्थ एक्कस्स वि विसेसो साहिओ'। तीए भणियं 'हला, जइ एत्थ विसेसो अत्थि तो णामं दंसीयइ, जो उण णत्थि सो कत्तो दंसीयइ' त्ति। अण्णाए भणियं 'किं विसेसो णत्थि, अत्थि से विसेसो। अवि य।

वच्छत्थलं विरायइ इमस्स असमं जयम्मि पुरिसेहि। एयाएँ णियंबयडं रेहइ महिलाण असमाणं॥

अण्णाए भणियं 'अलं किमण्णेण एत्थ पुरिसंतरेण महिलंतरेण वा। इमाणं चेय अवरोप्परं किं सुंदरयरं' ति। तीए भणियं 'अत्थि इमाणं पि अंतरं'। ताहिं भणियं 'किं अंतरं'। अवि य।

'पुरिसाण एस सारो एसा उण होइ इत्थि-रयणाणं। एसो चेय विसेसो एसा महिला इमो पुरिसो॥'

ताहिं भणियं 'किं इमिणा इत्थि-पुरिसंतरेणं, अण्णं भण'। अण्णाए भणियं 'जइ परं फुडं साहेमो। अवि य।

एस कुमारो रेहइ एसा उण सहइ रेहइ कुमारी। ॰ जइ सहइ य रेहइ दोण्ह वि सद्दा पयट्टंति॥'

तओ ताहिं भणियं 'अहो एक्काए वि णायरियाए ण लक्खिओ विसेसो'। ताहिं भणियं 'पियसहि, साह को विसेसो तए लक्खिओ'। तीय भणियं णिसुणेसु, अवि य।

'मरगय-मणि-णिम्मविया इमस्स अह सहइ कंठिया कंठे। एयाए उण सोहइ एसा मुत्तावली कंठे॥'

तओ ताहिं हसमाणीहिं भणियं 'अहो, महंतो विसेसो उवलक्खिओ, जं रायउत्तस्स अवदाय-वण्णस्स मरगय-रयणावली सोहइ, एमाए पुण सामाए मुत्तावलि त्ति। अण्णं पुच्छियाए अण्णं साहियं' ति। अण्णाए भणियं।

धणयाण दोण्ह को वा रेहइ अच्छीण भणसु को कइया। इय एयाण वि अइसंगयाण को वा ण सोहेज्जा॥

ताहिं भणियं 'ण एत्थ कोइ विसेसो उवलब्भइ, ता भणह को एत्थ धण्णाणं धण्णयरो'। तओ एक्काए भणियं।

'धण्णो एत्थ कुमारो जस्स इमा हियय-वल्लभा जाया। धण-परियण-संपण्णो विजओ राया गुरुयणं च॥

अण्णाए भणियं 'णहि णहि, कुवलयमाला धण्णयरा।

धण्णा कुवलयमाला जीए तेलोक्क-सुंदरो एसो। पुण्णापुण्ण-विसेसो णज्जइ महिलाण दइएहिं॥'

अण्णाए भणियं 'सव्वहा कुमारो धण्णो कुवलयमाला वि पुण्णवइ त्ति को इमाणं विसेसं करेउं तरइ' त्ति। अवराहिं भणियं।

'धण्णो जयम्मि पुरिसो जस्सेसो पुत्तओ जए जाओ। महिला विं सा कयत्था जीय इमो धारिओ गब्भे॥'

---

1 › P om. य after आरूढा, P य दंसिउं. 2 › P कुवलयमाला कुं°, JP कुंजरारूढा, J इंदाणीअ P इंदाणीइ. 3 › P पयत्तो आणंदिज्जमाणा, P वियप्पियंता णायरलोएण. 4 › P adds the verse कोउयरहस etc. to सत्थो and further adds एक्का जं ता णायरलोएण अवि य अइ before the verse कोउय etc., J परत्त for पूरंत. 5 › P अभिरुइओ।, P कुवलयमाला च्चिय. 7 › P एतस्स, P कसिणो, P अहरेइ धम्मेल्लो, 8 › P एतस्स, P सरिसं for सरए. 9 › P कुवलयदय-. 10 › P वच्छलयं for वच्छयलं. 11 › P जहंण for अहियं. 12 › P ऊरुजुवलं पि सुरिसरिसं, P रंधा for रंभा, P विराएज्जंति. 13 › P साहियं for साहिओ. 14 › J तीय, P अओ for हला, P णो for तो, J दंसीयति P दंसियइ, J जो पुण, J दंसीयति, P om. अण्णाए भणियं किं etc. to असमाणं॥. 17 › P adds वा after पुरिसंतरेण, P सुंदररयरं, J तीय. 18 › P om. अंतरं, P ताहे for ताहिं. 19 › P एसो उण होइ इत्थियणाणं।. 20 › J अह for ताहिं. 21 › P सहइ रेहइ कुमारो। छज्जिइ सहिइ, P दोन्नि सद्दा पयट्टंति, J सद्दो पयत्तंति. 22 › J एक्काय. 24 › P -णिम्मरया, P अहइ कंठिया, P एताए, J पुण, P adds इ after एसा. 25 › P हसमाणीए, J अवदात-. 27 › P को वा वा ण सोहेज्जा. 28 › P को विसेसो उवलब्भइ. 29 › P धम्मो for धण्णो, P वल्लहा, P संपुन्नो. 30 › P कुवलयमाली. 31 › P एसु।. 32 › P विसेसो. 33 › P जाय इमो जारिओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णाओ भणंति ।

'धण्णो विजय-णरिंदो जस्स य जामाइओ इमो सुहओ । अहवा स च्चिय धण्णा इमस्स सासू जए जा सा ॥ अहवा, अम्हे च्चिय धण्णाओ जाण इमो णयण-गोयरं पत्तो । रइ-वम्महाण जुवलं केण व हो दिट्ठ-पुव्वं ति ॥'

एवं च वियप्पिज्जमाणो णायरिया-कुलबालियाहिं, अहिणंदिज्जमाणो पुर-महल्लएहिं, पिज्जंतो तरुणियण-णयण-मालाहिं, उद्दिसिज्जंतो अंगुलि-सहस्सेहिं, दाविज्जंतो विलया-बालियाहिं, पविसंतो जुवइयण-हिययावसहासु, जणयंतो मयण-मोहं कामिणीणं, करेंतो मुणीण वि मण-वियप्पंतरं सव्वहा णीहरिओ पुरवरीओ । आवासिया य तहाविहे एक्कम्मि पएसंतरे ।

§ २८८) ताव य एयम्मि समए केरिसो वियप्पो पुरिसाण महिलाण य ।

धण्णा कुवलयमाला जीएँ इमो वल्लहो त्ति महिलाण । पुरिसाण इमं हियए कुवलयचंदो सउण्णो त्ति ॥

एवं च समावासिओ कुमारो णयरीए, थोवंतरे सेस-बलं पि गय-तुरय-रहवर-पाइक्क-पउरं समावासियं तत्थेय । तत्थ समए णीहारिज्जंति कोसल्लियाइं, उवदंसिज्जंति दंसणिज्जाइं, संचइज्जंति णाणा-वत्थ-विसेसाइं, ठाविज्जंति महग्घ-मुत्ता-णियराइं, ओवाहिज्जंति महल्ल-कुलइं, उवणिमंतिज्जंति बंभण-संघइं, कीरंति मंगलइं, अवणिज्जंति अवमंगलइं, जंपिज्जंति पसत्थइं । कुमरो वि 'णमो जिणाणं, णमो सव्व-सिद्धाणं' ति भणमाणो भगवंतं समवसरणत्थं झाइऊण सयल-मंगल-माला-रयण-भरियं चउव्वीस-तित्थयर-णमोक्कार-विज्जं झाएंतो चिंतिउं पयत्तो । 'भगवइ पवयण-देवए, जइ जाणसि जियंतं तायं पेच्छामि, रज्जं पावेमि, परियड्ढए सम्मत्तं, विरइं पालयामि, अंते पव्वज्जं अब्भुवेमि सह कुवलयमालाए, ता तह दिव्वेणं णाणेणं आहोइऊण तारिसं उत्तिमं सउणं देसु जेण हियय-णेव्वुई होइ' त्ति चिंतिय-मेत्ते पेच्छइ पुरओ उड्डुंड-पोंडरीयं । तं च केरिसं ।

मणि-रयण-कणग-चित्तं सुवण्ण-दंडुल्लसंत-कंतिल्लं । लंबिय-मुत्ताऊलं सियायवत्तं तु सुमहग्घं ॥

उवणीयं च समीवे, विण्णत्तं च पायवडिओट्ठिएण एक्केण पुरिसेण । 'देव, इमस्स चेय राइणो जेट्ठो जयंतो णाम राया जयंतीए पुरवरीए, तेण तुह इमं देवया-परिग्गहियं छत्त-रयणं पेसियं, संपयं देवो पमाणं' ति । कुमारेण चिंतियं 'अहो, पवयण-देवयाए मे संणिज्झं कयं, जेण पेच्छ चिंताणंतरमेव पहाणं सव्व-सउणाणं, मंगलं सव्व-दव्व-मंगलाणं, इमं आयवत्त-रयणं उवणीयं ति ता सव्वहा भवियव्वं जहा-चिंतिय-मणोरहेहिं' ति चिंतिऊण साहियं कुवलयमालाए 'पिए, पेच्छसु पवयण-देवयाए केरिसो सउणो उवणीओ । इमिणा य महासउणेण जं पियं अम्हेहिं मणसा चिंतियं तं चेय सव्वं संपज्जइ' त्ति ।

§ २८९) कुवलयमालाए भणियं 'अज्जउत्त, एवं एयं, ण एत्थ संदेहो । अह पत्थाणे काणि उण सउणाणि अवसउणाणि वा भवंति' । कुमारेण भणियं 'संखेवेण साहिमो, ण उण वित्थरेणं । अवि य ।

दहि-कलस-संख-चामर-पउम-महावड्ढमाण-छत्तादी । दिव्वाण सव्वओ च्चिय दंसण-लाभाइं धण्णाइं ॥
दंसण-सुहयं सव्वं विवरीयं होइ दंसण-विरूयं । जं कण्ण-सुहं वयणं विवरीयं होइ विवरीयं ॥
एवं गंधो फरिसो रसं च जा इंदियाणुकूलाइं । तं सव्वं सुह-सउणं अवसउणं होइ विवरीयं ॥
वत्थसु सिद्धी रिद्धी लद्धी य सुहं च मंगलं अत्थि । सहा सउणं सिद्धा अवसउणा होंति विवरीया ॥
ण्हाओ लित्त-विलित्तो णर-णारि-गणो सुवेस-संतुट्ठो । सो होइ णवर सउणो अवसउणो दीण-मलिणंगो ॥
समणो साहू तह मच्छ-जुवलयं होइ मंस-पेसी य । पुहई फलाइँ सउणं रित्तो कुडओ य अणुगामी ॥
छीतं सव्वं पि ण सुंदरं ति एक्के भणंति आयरिया । अवरे समुहं मोत्तुं ण पिट्ठओ सुंदरं चेय ॥

1 > J भणियं for भणंति. 2 > P जामाओओ, P जा या for जा सा. 3 > J जुअलं, J दिट्ठउव्वं. 4 > J विअप्पिज्जमाणणो, P अभिणंदिज्जमाणो पुरमहिल्लएहिं, J °ल्लएहिं पुइज्जंतो आणिअणयण. 5 > J अंगुली-, J विसंतो for पविसंतो, P -हिययसेहासु जइणंतो मयणमोहं. 6 > P om. वि मण-, J कम्मि for एक्कम्मि. 7 > J तावया एअम्मि. 8 > J जीअ, P हियाए, P सउ for सउण्णो. 9 > P च समारोणरीए थोवंतरे, J थोअंतरे, J समत्थोसिअं तत्थेय समए णीहाविज्जंति. 10 > P ज्जाइं for दंसणिज्जाइं, P संवाइज्जंति for संचइज्जंति, P विसेसइं, J णिअराइं P णियरइं. 11 > J अवहिज्जंति, P उवणमंतिमज्जंति बम्ह संघइ, J om. अवणिज्जंति अवमंगलइं. 12 > J सव्वजिणाणं ति, P रयणसरिसं चउवीस. 13 > P विज्जं उझायंतो चिंतियं, P तातं. 14 > P पव्वज्जमब्भुवेमि, J तहा for तह. 15 > P सउणं दिसु, P णेव्वुई होय त्ति, P उद्दंड. 17 > J गणय for रयण, P कणय, J सुअण्ण, J लंपिअमुण्णजलं. 19 > P जयंतीपुरवरीए, P देवतापरिग्गहियं, 20 > J सण्णज्झं P सन्निज्झं. 21 > P आयवत्तयणं, P तो for ता, P om. जहा चिंतिय etc. to चिंतियं तं, 23 > P adds जेण जं before चेय. 24 > P om. अज्जउत्त, J एत्थण्णे for पत्थाणे, P om. उण. 25 > J om. अवसउणाणि, P om. वा, J adds दइए after अवि य. 26 > J कमल for कलस, P °वद्धमाण, J छत्ताती ।, J दिव्वाण P देवाण. 27 > J adds समुणं P adds सव्वउणं after सव्वं, P विवरीय होंति, J विरूवं ।, J विवरीतं ॥. 28 > J विवरीतं ॥. 29 > J सिद्धि रिद्धी, P सउणसिद्धा. 30 > P णरणारयाणो, P परितुट्ठो for संतुट्ठो, J om. होइ णवर, P सणो for सउणो. 31 > J मच्छजुअलं, J मुहई P पुहइ, P फलाइं साउणं, J उडओ for कुडओ, P आगामी for अणुगामी. 32 > J ण मिट्ठओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साणो दाहिण-पासे वामं जइ वलइओ भवे सिद्धी । अह वामो दाहिणओ वलइ ण कज्जं तणो सिद्धं ॥
जह सुणओ तह सव्वे णाहर-जीवा भणंति सउणण्णू । अण्णे भणंति केई विवरीयं जंबुओ होइ ॥
मउयं महुरं वामो लवमाणो वायसो भवे सोम्मो । उत्ताल-णिट्ठुर-सरा ण देंति सिद्धिं भयं देंति ॥
गोरूयस्स उ छीतं वज्जेज्जा सव्वहा वि जीय-हरं । मज्जारस्स वि छीयं पत्तिय-जीयं विणासेइ ॥
सारस-रडियं सव्वत्थ सुंदरं जइ ण होइ एक्कस्स । वामं भणंति फलयं जइ सो य ण दीसए पुरओ ॥
इंदग्गेईजम्मा य णेरई वारुणी य वायव्वा । सोम्मा ईसाणा वि य अट्ठ दिसाओ समुद्दिट्ठा ॥
अट्ठ य जामा कमसो होंति अहोरत्त-मज्झयारम्मि । जत्थ रवी तं दित्तं तं दिसि-दित्तं वियाणाहि ॥
जं मुक्कं तं अंगारियं ति आधूमियं च जं पुरओ । सेसाओ दिसाओ पुण संताओ होंति अण्णाओ ॥
दित्तेण तक्खणं चिय होइ फलं होहिइ त्ति धूमेणं । अंगारियम्मि वत्तं जइ सउणो रवइ तत्थेय ॥
सूराहिमुहो सउणो जइ विरसं रवइ दित्त-ठाणम्मि । ता जाण किं पि असुहं पत्थाणे कस्स वि णरस्स ॥
सर-दित्तं सुइ-विरसं सुइ-सुहयं होइ जं पुणो संतं । संतेण होइ संतं दित्ते पुण जाण दुक्खं ति ॥
पासाण-कट्ठ-भूती-सुक्कय-रुक्खेसु कंटइल्लेसु । एएसु ठाण-दित्तं विवरीयं होइ सुह-ठाणं ॥
दियह-चरा होंति दिया राइ-चरा होंति तह य राईए । सउणा सउणा सव्वे विवरीया होंति अवसउणा ॥

एस संखेवेणं सुंदरि, जं पुण सिवा-रुतं काय-रुतं साण-रुतं गिरोलिया-रुतं एवमाईणि अण्णाणि वि विसेसाइं को साहिउं तरइ त्ति । सव्वहा,

एयाणं सव्वाणं अवसउणाणं तहेय सउणाणं । पुव्वकयं जं कम्मं होइ णिमित्तं ण संदेहो ॥
तम्हा जिणवर-णामक्खराइँ भत्तीएँ हियय-णिहियाइं । संभरिउं भगवंतं पाव-हरं समवसरणम्मि ॥
तस्स य पुरओ अत्ताणयं पि झाएज्ज पायवडियं ति । जइ जाइ तेण विहिणा अवस्स खेमेण सो एइ ॥
चमराइँ आयवत्तं होइ असोओ य कुसुम-वुट्ठी य । भामंडलं धयं चिय महासणं दिव्व-णिम्मवियं ॥
एयाइँ मंगलाइं उच्चारेंतो जिणं च झाएंतो । जो वच्चइ सो पावइ पुण्ण-फलं णत्थि संदेहो ॥

एवं च साहिए पडिवण्णं कुवलयमालाए 'अज्जउत्त, एवं चेय एयं ण एत्थ संदेहो' त्ति ।

§ २९०) अण्णम्मि य दियहे दिण्णं पयाणयं महंतेण खंधावारेणं । तओ केत्तिय-मेत्तं पि भूमिं गंतूण भणियं कुमारेण 'भो भो पउरा, णियत्तह तुम्हे कज्जाइं विहडंति तुम्हाणं । एवं भणिओ णियत्तो पउरयणो पज्झरंत-लोयण-जलप्पवाहो । तओ कं पि पएसं गंतूण भणिओ कुमारेण राया 'ताय पडिणियत्तसु, जेण अम्हे सिग्घयरं वच्चामो तायं च पेच्छिमो' त्ति । एवं च पुणो पुणो भणिओ णियत्तो कुवलयमालाए जणओ जणणी य । एवं च कमेण कुमारो संपत्तो तं सज्झ-सेल-सिहरब्भासं, आवासिओ य एक्कम्मि पएसे । साहियं च पुरिसेहिं 'कुमार, इमम्मि सरवर-तीरे सुण्णाययणं, तत्थ कामो व्व सरूवी, इंदो व्व पच्चक्खं, सूरो व्व कोइ रूव-सोहाए अहियं पयासमाणो मुणिवरो चिट्ठइ' । कुमारेण भणियं 'अरे, को एस मुणिवरो, किं ताव तावसो, आउ तिदंडी, आउ अण्णो को वि' । तेहिं भणियं 'देव, ण-याणामो तावसं वा अण्णं वा ।

लोय-कय-उत्तिमंगो सिय-वसणो पिच्छएण हत्थम्मि । उवसंत-दंसणीओ दीह-भुओ वम्महो चेय ॥'

कुमारेण चिंतियं । 'अहो कत्थ भगवं साहू, ता चिरस्स अत्ताणयं बहु-पाव-पंक-कलंकियं णिम्मलीकरेमि भगवओ दंसणेणं' ति भणमाणो अब्भुट्ठिओ समं कुवलयमालाए । भणियं च णेण 'आदेसह मह तं मुणिवरं' । संपत्तो तं पएसं । दिट्ठो य मुणिवरो । चिंतियं च णेण । 'अहो मुणिणो रूवं, अहो लायण्णं, अहो सुंदरत्तणं, अहो दित्ती, अहो सोम्मया । ता सव्वहा ण होइ एस माणूसो । को वि दिव्वो केण वि कारणेण मुणि-वेसं काऊणं संठिओ' त्ति चिंतयंतेण णिरिक्खियं जाव णिमिसंति

1 > P साहो for साणो, J जति वलति, P चलण for वलइ, J दाहिणतो वलति, P वणति, P सिद्धी ॥. 2 > J अह for जइ, P inter. सव्वे and तह, P -जीवो, J सवणण्णू P सउणंणू ।, J विवरीतं. 3 > P लवमाहो, P सोमो ।. 4 > J गोरूअस्स च्छीतं P गोरूवसओ लच्छी तं वज्जेज्जा, J वज्जेज्जो, P जीवहरं, J छीतं, J छीतं for जीयं, P जीतं विणासेति. 5 > P उण for य ण. 6 > P इंदग्गेती-जंमायणेरुती वारुणी, P सोमा. 7 > J अट्ठा य, P रं for तं before दित्तं, P दिसित्तं. 8 > P आहूमियं, P पुणो सत्थाओ. 9 > P दित्ते तक्खणं, JP होहिति त्ति, P रवति. 10 > P सूराभिमुहो, P विरइ for विरसं, J रमइ for रवइ, P om. रवइ, P दित्तट्ठाणंमि ।. 11 > P दित्तं ति सुविरसं सुति, P दित्त पुण. 12 > P रुक्खेसु, JP एतेसु, P ट्ठाण-, JP विवरीतं, P ठ्ठाणं ॥. 13 > P रायचरा, P रातीए, P सउणो सउणो, P °सउणाओ ॥. 14 > P एते for एस, P om. जं पुण, J एवमातीणि, P अन्नाण विसेसाइं. 16 > J °णाणं च तह य. 17 > J सत्तीय for भत्तीए, P संभरियं, P समवसरंमि. 18 > P जति जाति तेण विहिण, P एति ॥. 19 > J आतवत्तं. 20 > P उझायंतो, P पावति, J पुण्णहलं. 21 > P adds भणियं after कुवलयमालाए, P चेय एतं णत्थि संदेहो. 22 > P खंधायारेण, P om. पि. 23 > P णियत्तब्भे कज्जाइं, P तुम्हा for तुम्हाणं, P जुयल° for जल. 24 > P तय for ताय, P जिणम्हे for जेण अम्ह, P adds त्ति after वच्चामो. 25 > J कुवलयमालाजणओ, P संपत्तो वंच सज्जसेलं. 26 > J om. च, P कुमार मंमि सरवतीरे, J सुण्णायतणं, J सरूई. 27 > J अधियं, P पुणिवरो चिट्ठति ।. 28 > P आउसन्नो को वि, J adds वि after अण्णो, J तावसं व अण्णं च. 29 > P -भुओ ठंमहो चेय ॥; P कुमारे चिंतियं. 30 > J adds वि after कत्थ, P adds णिम्मलीकयं after कलंकियं. 31 > P णेण दसेमि मह तं. 32 > J दिट्ठं for चिंतियं, P om. अहो दित्ती, P [illegible]. 33 > J माणुसो, P om. वि कारणेण, P समुट्ठिओ for संठिओ, P om. त्ति, P चिंतयंतो णिरिक्खइ जाव.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णयणाइं, फुसंति पाया महियलं । तओ चिंतियं 'ण होइ देवो, विहडंति दिव्व-लक्खणाइं । ता सुव्वत्तं विज्जाहरो होहिइ त्ति । एसो य जहा अहिणव-कय-सीस-लोओ अज्ज वि अमिलाण-देहो उवलक्खीयइ तहा लक्खेमि ण एस आइसंजओ, संपयं एस पव्वइओ, वेसो वा विरइओ । ता किं वंदामि । अहवा सुट्ठु वंदणीयं भगवंताणं साहूणं दिट्ठ-मेत्तं चेव लिंगं ति । जो होउ सो होउ त्ति साहु त्ति उवसप्पिऊण कुमारेण कुवलयमालाए य ति-पदाहिणं भत्ति-भर-विणमिउत्तिमंगेहिं दोहि वि वंदिओ साहू । भणियं च मुणिणा 'धम्मलाभो' त्ति । तओ उवविट्ठो कुमारो महिंदो य । पुच्छियं च कुमारेण 'भगवओ, कत्तो तुमं एत्थ रण्णुद्देसे, कत्थ वा तुब्भे इहागया, किं वा कारणं इमाए रूव-संपयाए णिव्विण्णो' त्ति ।

§ २९१) तेण भणियं 'जइ सव्वं साहेयव्वं ता णिसुणेसु वीसत्थो होऊणं ति ।

अत्थि पुहई-पयासो देसो देसाण लाड-देसो त्ति । णेवत्थ-देसभासा मणोहरा जत्थ रेहंति ॥
तम्मि य पुरी पुराणा णामेण य वारयाउरी रम्मा । तत्थ य राया सीहो अत्थि महा-दरिय-सीहो व्व ॥
तस्स सुओ हं पयडो भाणू णामेण पढमओ चेय । अइवल्लहो य पिउणो वियरामि पुरिं विगय-संको ॥

मज्झं च चित्तयम्मे वसणं जायं । अवि य ।

रेहा-ठाणय-भावेहिँ संजुयं वण्ण-विरयणा-सारं । जाणामि चित्तयम्मं णरिंद दट्ठुं पि जाणामि ॥

एवं च परिब्भममाणो अण्णम्मि दियहे संपत्तो बाहिरुज्जाणं । तत्थ य वियरमाणस्स आगओ एक्को उवज्झाओ । तेण भणियं । 'कुमार, मए चित्तवडो लिहिओ, तं ता पेच्छह किं सुंदरो किं वा ण व' त्ति भणिए, मए भणियं 'दंसेहि मे चित्तयम्मं जेण जाणामि सुंदरं ण व' त्ति । दंसिओ य तेण पडो । दिट्ठं च मए तं पुहईए णत्थि जं तत्थ ण लिहियं । जं च तत्थ णत्थि तं णत्थि पुहईए वि । तं च दट्ठूण दिव्व-लिहियं पिव अइसंकुलं सव्व-वुत्तंत-पच्चक्खीकरणं पुच्छियं मए विम्हिएण 'भो भो, किं एत्थ पडे तए लिहियं इमं' । तेण भणियं 'कुमार, णणु संसार-चक्कं' । मए भणियं 'किं अणुहरइ संसारो चक्कस्स' । तेण भणियं 'कुमार, पेच्छसु ।

मणुयत्तण-णाहिल्लं जीवाणं मरण-दुक्ख-णेमिल्लं । संसार-पाय-चक्कं भामिज्जइ कम्म-पवणेण ॥'

§ २९२) तओ मए भणियं 'विसेसओ साहिज्जउ जं तत्थ लिहियं' । तेण भणियं 'देव, पेच्छ पेच्छ ।

एसो णारय-लोगो एसो उण होइ मणुय-लोओ त्ति । एसो उ देव-लोओ एयं तं होइ तेलोक्कं ॥

दंडग्गेणं पदंसिउं पयत्तो ।

जो होइ अहिय-पावो सो इह णरगम्मि पावए दुक्खं । जो वि य बहु-पुण्ण-कओ सो सग्गे पावइ सुहाइं ॥
जो किंचि-पुण्ण-कलिओ बहु-पावो सो वि होइ तिरियंगो । जो बहु-पुण्णो पावं च थोवयं होइ मणुओ सो ॥
एयासुं च गईसुं कुमार सव्वासु केवलं दुक्खं । जं पेच्छ सव्वओ च्चिय दीसंते दुक्खिया जीवा ॥
जं एस एत्थ राया बहु-कोव-परिग्गहेहिँ संपुण्णो । बहुयं बंधइ पावं थोवं पि ण पावए पुण्णं ॥
जीवाण करेइ वहं अलियं मंतेइ गेण्हए सव्वं । णिच्चं मयणासत्तो वच्चइ मरिऊण णरयम्मि ॥
आहेडयं उवगओ एसो सो णरवई इमं पेच्छ । जीव-वध-दिण्ण-चित्तो धावइ तुरयम्मि आरूढो ॥
तुरओ वि एस वरओ णिद्दय-कस-घाय-वेविर-सरीरो । धावइ परयत्तो च्चिय कह व सुहं होउ एयस्स ॥
पुरओ वि एस जीवो मारिज्जामि त्ति वेविर-सरीरो । णिय-जीविय-दुक्ख-भओ धावइ सरणं विमग्गंतो ॥
पुरओ वि एस वरओ हलबोलिज्जइ जणेण सव्वेण । ण य जाणंति वराया अप्पा पावेण वेढविओ ॥
एसो वि को वि पुरिसो गहिओ चोरेहिँ णिद्दय-मणेहिं । सरणं अविंदमाणो दीणं विक्कोसइ वराओ ॥
एए करेंति एयं किर अम्ह होइ कह वि इमं अत्थं । तेण य पाणं अह भोयणं च अण्णं सुहं होही ॥

1 > P णयाणाइं, P adds मि after महियलं, J adds अहो before ण होइ, P होति for होइ, J adds ति before देवो, P विहडियाइं for विहडंति, P सव्वं for सुव्वत्तं, J ता सुव्वंति विज्जाहरे होइति ।, P होहित्ति सोय. 2 > P अहिणवयसीस, J विज्झारि for अज्जवि, P अनिलाण, JP उवलक्खीयति, J आदिसंजतो. 3 > P विरईओ, P दिट्ठिमेत्ते. 4 > P तिपयाहिणं, J विणउत्तिमंगेहि, P दोहिं वि. 5 > J वविट्ठो for उवविट्ठो, P कुमारेणा, P भगवं कओ तुमं. 6 > P एत्थत्तुद्देसं कत्थ, P णिव्विण्ण त्ति. 7 > J साहिअव्वं P साहेतव्वं. 8 > P पुहतीपयासो, J om. देसो, P repeats देसो, J वेसभासा for देसभासा, P मणाहार, P रेहं ॥ तम्मि पुरी पोराणा. 9 > P om. य after णामेण, P रायासी अत्थि. 10 > P विअइरामि. 11 > P च चितयंतस्स वसणं. 12 > P रेहागणयपावेत्तिसंजुयं. 13 > P अणंमि. 14 > J पेच्छ for पेच्छह, J किम्वा for किंवा, P भणिसाए for भणिए. 15 > P repeats जेण, P जं for तं, P णे for णत्थि, P णं for ण. 16 > J तण्णत्थि पुहईयं वि, P पुहई वि, P लिहियं, J अतिसंकुलं, P वुत्तंतं, J adds च before मए. 17 > J विंभिएण, P om. पडे, P पडिलेहियं for लिहियं, P ते for तेण, P कुमारे, P om. किं 18 > J संसारचक्कस्स. 19 > J जीवारं, P वीस for पाय, P भामिज्जइं कंम-. 20 > P एत्थ for तत्थ. 21 > P एसो रयलोगो, J तु for उ, P उ देव-, J P एतं. 23 > P अहिय, P इह णयरंमि, P कयो सो मग्गे. 24 > P वि होंति तिरियं वा ।, J थोअअं. 25 > P एयसु चउगतीसुं, P चिय. 26 > P संमत्तो for संपुण्णो, P बहुतं बंधइ. 27 > P adds कण before करेइ, P मंतेहिं, P सव्वं । णोयणासत्तो. 28 > P नरवती इम पेच्छं ।, P वह for वध, P धावति. 29 > P धाइ परायत्तो, P होइ एयस्स. 30 > J -भयो. 31 > P पुरओ for वरओ, P तुट्ठेण for सव्वेण. 32 > P दीणं वक्कोसइ. 33 > P एते करेंति एतं किर अम्ह होहिति इमं अत्थि, J अम्हं होहिई ।, J inter. इमं & कह वि, J पणं पट्टु for पाणं अह.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण य चिंतयंति मूढा इह जम्मे चेय दुत्तरं दुक्खं । फालण-लंबण-भेयण-छेयण-करि-चमढणादीयं ॥
परलोए पुण दुक्खं णरय-गयाणं महाफलं होइ । एयं अयाणमाणा कुमार चोरा इमे लिहिया ॥
एसो वि जो मुसिज्जइ पेच्छह एयं पि एरिसं लिहियं । तण्हा-राय-सरत्तो परिग्गहारंभ-दुक्खत्तो ॥
पावइ परिग्गहाओ एयं अह परिभवं ण संदेहो । अह मुंचइ कह वि परिग्गहं पि ता णिव्वुओ होइ ॥
एसो पडिपहरंतो इमेहिँ घेत्तूण मारिओ वराओ । मा को वि इमं पेच्छे खित्तो अयडम्मि पावेहिं ॥
§ २९३) एए वि हलियउत्ता लिहिया मे णंगलेण वाहेंता । अम्हाण होहिइ सुहं मूढा दुक्खं ण लक्खेंति ॥
एए वि एत्थ जुत्ता परयत्ता कड्डिऊण णत्थासु । खंधारोविय-जूया गलय-णिबद्धा बलीवद्दा ॥
रुहिरोगलंत-देहा तोत्तय-पहरेहिं दुक्ख-संतत्ता । पुव्व-कय-कम्म-पायव-फलाइँ विरसाइँ भुंजंति ॥
एसा वि एत्थ धरणी फालिज्जइ णंगलेण तिक्खेण । पुव्व-कयं चिय वेयइ बंधइ हलिओ वि णिय-दुक्खं ॥
पुहइं जलं च वाउं वणस्सइं बहु-विहे य तस-जीवे । दलयंतो मूढ-मणो बंधइ पावं अणंतं पि ॥
एसो वि मए लिहिओ पर-कम्मयरो कुडुंबिओ मूढो । पुत्त-कलत्ताण कए पावेंतो गरुय-दुक्खाइं ॥
छेत्तूण ओसहीओ कुलिय-फलियाओ मुग्ग-सालीओ । चमढेइ बइल्लेहिं गलए मेढी-णिबद्धेहिं ॥
जइ होइ बहुं धण्णं जीयेज्ज कुडुंबयं पियं मज्झं । ण य चिंतेइ अउण्णो कत्थ कुडुंबं कहिं अहयं ॥
एसो सो चिय लिहिओ जर-वियणा-दुक्ख-सोय-संतत्तो । डाहेण डज्झमाणो उव्वसंतो इमो सयणे ॥
एयं पि से कुडुंबं दीणं विमणं च पास-पडिवत्तिं । किं तुह बाहइ साहसु किं वा दुक्खं ति जं पत्तं ॥
जं किं पि तस्स दुक्खं का सत्ती तत्तियं च अवणेउं । एक्केणं चिय रइयं एक्को च्चिय भुंजए तइया ॥
अह मंत-तंत-ओसह-जोए एसो वि को वि सो देइ । कत्तो से तस्स समं जाव ण भुत्तं तयं पावं ॥
§ २९४) एसो सो चेय मओ चल-चलुव्वेल्लयं करेऊण । मरणंत-वेयणाए किं च कयं हो कुडुंबेण ॥
अह तस्स एस जीवो पुण्णं पावं च णवर घेत्तूण । कम्माणुभाव-जणियं णरयं तिरियं च अल्लीणो ॥
एसा वि रुयइ दइया हा मह एएण आसि सोक्खं ति । तं किं पि सुरय-कज्जं संपइ तं कत्थ पावेमो ॥
अण्णं च एस दासो सव्वं चिय मज्झ किं पि जं कज्जं । णिप्पंतं करयं तो हा संपइ को व वुत्तंतो ॥
को मह दाहिइ वत्थं को वा असणं ति को व कज्जाइं । एयं चिय चिंतेंती एसा लिहिया रुवंती मे ॥
एए वि हु मित्ताइं रुयंति भरिऊण दाण-माणाइं । संपइ तं णो होहिइ इय रुयमाणाइँ लिहियाइं ॥
एसो सो चिय घेत्तुं खंधे काऊण केहिँ मि णरेहिं । णिज्जंतो सव-सयणं अम्हे लिहिओ विगय-जीवो ॥
एसो अक्कंदंतो बंधुयणो पिट्ठओ य रुयमाणो । तण-कट्ठ-अग्गि-हत्थो धाहाधाहं करेमाणो ॥
हा बंधु णाह सामिय वल्लह जिय-णाह पवसिओ कीस । कत्थ गओ तं णिद्दय सरण-विहूणे वि मोत्तूण ॥
एए ते चिय लिहिया विरयंता बंधवा चितिं एत्थ । एसो पक्खित्तो च्चिय कुमार अग्गी वि से दिण्णा ॥
एयस्स पेच्छ णवरं चियाए मज्झम्मि किंचि जइ अत्थि । जं दुक्खेहिं विढत्तं तं सव्वं चिट्ठइ घरम्मि ॥
खर-पवणुद्धुय-दीविय-जलंत-जालोलि-संकुले एत्थ । एक्कं चिय से वासं भण अण्णं कत्थ दीसेज्ज ॥
अणुदियह-सुरय-सोक्खेहिँ लालिया बद्ध-णेह-सब्भावा । रोवइ दइया पासे डज्झइ एक्कल्लओ जलणे ॥
जेण य मणोरहेहिं जाओ संवड्ढिओ य बहुएहिं । एसो सो से जणओ रुयमाणो चिट्ठए पासे ॥
अह पुत्त-वच्छला सा एसा माया वि एत्थ मे लिहिया । दट्ठूण डज्झमाणं पुत्तं अह उवगया मोहं ॥
जेहिँ समं अणुदियहं पीयं पीयं च णेह-जुत्तेहिं । अह एक्को च्चिय वच्चइ एए ते जंति घर-हुत्तं ॥

1) P जम्मो, J दुक्करं दुक्खं., J भेतण छेतण, P भोयण for भेयण, J चमढणादीअं. 2) P देइ for होइ. 3) P मि for पि, P रायसरंते, P दुक्खंतो. 4) P मुच्चइ for मुंचइ, P व for वि, P ता णिब्भुओ. 5) P मं for मा, P पेच्छ खित्तो. 6) P एते, P मे लंगलेण, P मुहं for सुहं, P लक्खंति. 7) P कड्डिऊण. 8) J रुहिरोभलंत-, P तोतूय-, J पहराहिं, P om. विरसाइँ, P adds वसहाओ after भुंजंति. 9) J वेदइ, P बंधइ हिलिओ. 10) J पुहई, J वणस्सई, P बहुविहे य तसजीवा ।, P मूढमणा, J अणंतंमि. 11) J य for वि, P कुडुंबिओ, P पावेंतो गरुया-. 12) P मुग्गसीओ । चमढेहि. 13) P बहू, P कुटुंबयं, P कुटुंबं, P सयणं for अहयं. 14) P सो चेय, J इमे, P सयणो ॥ एतंम्मियं कुटुंबं. 15) J पडिवत्ति P परिवत्ति, P कंमा for किं वा, P om. ति, P जयंता for जं पत्तं. 16) J ताण तंति for तत्तियं च, P भुजेग for भुंजए. 17) J अहमंतंतउसहजो उवएसो, J से for सो. 18) P सो चेय, P चलं-, P किं पि हु न कयहो कुटुंबणे. 19) P कंमाणभाव-. 20) दया for दइया, P एतेण, J अत्थि for आसि, P पावेमि ॥. 21) P दोसो for दासो, J जं किं चि for किं पि, J को व्व, J व पोत्तव्वो ॥. 22) P दाही for दाहिइ, P adds इय befor एयं, P om. चिय, J रुअंती. 23) P एते, P रुयंति सरिऊण. 24) P om. सो, J काऊण रेहिं ।, J सवसणं, P जीहोओ for जीवो. 26) P जियणाम- 27) P एते, P विरयंतो बंधवा, P विती for चितिं. 28) J पेच्छ णवर चिताए. 29) P पवणद्धुय. 30) P सुक्खेहिं लालियावडाणहसत्ताव । रोयइ. 32) P adds तं सव्व before माया, J से for मे. 33) P अणुदियहो, J adds पिअं in between two पीयं, J णेहसंजुत्तेण P णेहजुत्ताहिं, P तं for ते.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहु-असमंजस-घडणा-सएहिँ जे अज्जियं कह वि अत्थं । तेण पयं पि ण दिण्णं गेहे च्चिय संठियं सव्वं ॥
जा आसि सुट्ठु दइया पुत्ता धूया य हियय-वल्लहिया । हा वावत्ति भणंती एसा अह वच्चइ घरम्मि ॥
एए वि पुणो लिहिया कट्ठं भामेउ अत्तणो सीसं । सुक्कं तुह कट्ठं च्चिय अपच्छिमो होसु अम्हाणं ॥
एयं ते भणमाणा तलए गंतूण देंति से वारिं । एसं किर होहिइ से करथुट्ठो कत्थ णेरयं णीए ॥
एए वि देंति गंतूण तस्स पुण्णेहिँ बम्हण-कुलाणं । किर तस्स होइ एयं एसो लोयस्स छउमत्थो ॥
§ २९५) एयं कुमार लिहियं अण्णं च मए इमं इहं रइयं । पेच्छसु कुणसु पसायं विद्धं किं सोहणं होइ ॥
एसो को वि जुवाणो एयाएँ समं जुवाण-विलयाए । वियसंत-पंकय-मुहो लिहिओ किं-किं पि जंपंतो ॥
लज्जोणमंत-वयणा पायंगुट्ठय-लिहेंत-महिवट्ठा । दइएण किं पि भणिया हसमाणी विलिहिया एत्थ ॥
एसो को वि जुवाणो फंसूसव-रस-वसेण हीरंतो । *आलिंगंतो लिहिओ दइयं अमए व्व णिम्मवियं* ॥
ण य जाणए वराओ एसा मल-रुहिर-मुत्त-बीभच्छा । असुई-कलिमल-णिलया को एयं छिवइ हत्थेहिं ॥
असुई इमं सरीरं विबुहेहिँ य णिंदियं महापावं । तह वि कुणंति जुवाणा विसमो कम्माण परिणामो ॥
एयं पि मए लिहियं सुरयं बहु-करण-भंग-रमणिज्जं । जं च रमंति जुवाणा सारं सोक्खं ति मण्णंता ॥
एए कुमार मूढा अवरोप्परयं ण चेय जाणंति । एयं अलज्जयम्मं अप्पाण-विडंबणा-सारं ॥
ऊससइ ससइ वेवइ णयणे मउलेइ दीणयं कणइ । दीह-सिय-सल्ल-विद्धा कुणइ मरंति व्व सुरयम्मि ॥
जं जं से *गुज्झयरं रक्खिज्जइ सयल-लोय-दिट्ठीओ* । विणिगूहिज्जइ सुइरं दिट्ठम्मि ससज्झसो होइ ॥
मल-रुहिर-मुत्तवाहोत्तयज्झिया असुइ-वाहिणी पावा । जो तं पि रमइ मूढो णमो णमो तस्स पुरिसस्स ॥
सुरयं ण सुंदरं चिय अंते काऊण लज्जए जेण । असुइं पिव असिऊणं तेण ण कज्जं इमेणं पि ॥
एयं पि मए लिहियं कीय वि महिलाए मंगल-सएहिं । कीरइ से फल-ठवणं वज्जिर-तूरोह-सद्देणं ॥
ण य जाणंति वराया जं ता अम्हेहिँ किं पि एयंते । कुच्छिय-कम्मं रइयं तं पयडं होइ लोयम्मि ॥
§ २९६) एसो वि जणो लिहिओ णच्चंतो रहस-तोस-भरिय-मणो । ण य जाणए वराओ अत्ताण-विडंबणं एयं ॥
एसो पुण गायंतो लिहिओ णिव्वोलिएण वयणेणं । ण य जाणए वराओ एयं पलविज्जए सव्वं ॥
एसो वि हसइ पुरिसो हा हा पयडाए दंत-पंतीए । जं पि हसंतो बंधइ तं रोवंतो ण वेएइ ॥
एसो वि रुयइ पुरिसो अंसु-पवाहेण मउलियच्छीओ । अण्णं बंधइ पावं अण्णं वेएइ पुव्व-कयं ॥
एसो वि धाइ पुरिसो तुरियं कज्जं ति किं पि चिंतंतो । ण य जाणए वराओ मच्चू तुरियं समल्लियइ ॥
एसो मए सुयंतो लिहिओ अह णिच्चलेहिँ अंगेहिं । किं सुयसि रे अलज्जिर मच्चू ते जीवियं हरइ ॥
एसो वि मए लिहिओ मल्लो अप्फोडणं करेमाणो । सारीर-बलुम्मत्तो इंदिय-विसएहिँ अह णिहओ ॥
एसो वि रूवमंतो अच्छइ अत्ताणयं णियच्छंतो । ण य चिंतेइ अउण्णो खणेण रूवं विसंवयइ ॥
एसो वि धणुम्मत्तो कंठय-कडएहिँ भूसिय-सरीरो । ण य विगणेइ अयाणो कत्थ धणं कत्थ वा अम्हे ॥
एसो कुल-मय-मत्तो अच्छइ माणेण थड्ढओ पुरिसो । ण य चिंतेइ वराओ काओ वि इमो हवइ जीवो ॥
एसो वि मए लिहिओ लोहुम्मत्तो अहं किर लहामि । ण य चिंतेइ अउण्णो कम्म-वसा होइ एयं पि ॥
एसो पंडियवाई लिहिओ वक्खाण-पोत्थय-करग्गो । जाणंतो वि ण-याणइ किं णाणं सील-परिहीणं ॥
एसो तव-मय-मत्तो अच्छइ उद्धेण बाहु-डंडेण । काऊण हणइ मूढो गव्वेण तवं ण संदेहो ॥
एसो वि कोइ पुरिसो कड्ढिय-कोडंड-भासुरो लिहिओ । मारेंतो जीवाइं अगणेंतो णरय-वियणाओ ॥

1) P घट्टण for घडणा. 2) P जे for जा, J पत्ता for पुत्ता, P जीव *for* हियय, P वा वाभत्ति भणंता एए ते जंडंति ए हुत्तं *for the 2nd line.* 3) P एते, P कद्धे भोमेउ अप्पणो, J भामेउं अत्तणीसेसो, P तह for तुह, J तिय for च्चिय. 4) J एवं, P एयं चि भणमाणो, P वारि । एतं किर होहिति से कछुट्टो, P णेरय. 5) P एते, J म्हेण for बम्हण, J किरत्तस्स होईअं एसो P होति एतं एसो, J उम्मच्छो for छउमत्थो. 6) J inter. इमं & मए, J om. इहं, P रइया ।. 7) J जुआणो, P एताए, J जुआण, P सुहो for मुहो. 8) J लअणमंतवयणो पायंगुट्ठायलिहिंतमहि-, P किम्मि for किं पि, P विहिलिहिया. 9) J जुआणो. 10) P जाणाए, J विब्भच्छा ।, P असुई-किलमल. 11) P वि for य. 12) P एतंमि for एयं पि, P करणिभंगरसणिज्जं ।, J जुआणा, P सारसोक्खं 13) P एते, P अवरोप्परं. 14) J मउलेउ दीणइं, P भणइ for कणइ. 15) J असजझसो for ससज्झ°. 16) J सुइर for असुइ, P तंमि for तं पि. 17) J सुंदर च्चिय, P इमेणम्मि ॥. 18) P एयंमि मए, J -ठमणं P -ठुवणं. 19) J ते for ता, P जं च कम्हे कतं ति एयं ते. 20) P रोस for रहस. 21) J णिव्वोलिएण, P जाणेइ, P एतं. 22) P वि सहइ, J रोअंतो. 23) JP वेतेइ. 24) P किम्मि for किं पि, J चिंतेंतो, J जाणई. 25) P अह निव्विलहिं, J ए for ते, P वरइ for हरइ. 26) P इंदियवसएहिं अह निहिओ. 27) J वि रुअइमत्तो, P णिच्छंतो, P ण इ चिंतेइ, P खणेण्ण. 28) J तु for वि, P कणय for कंठय, P चिंतेइ for विगणेइ, J अयणओ for अयाणो, P वणं for धणं. 29) P घट्टउ for थड्ढओ, P णइ चिंतेइ. 30) P inter. मए & वि, P कम्मवसो होति एयं मि ॥. 31) J पंडिय यातं P पंडिय वाती, P करायो for करग्गो, P वि ण जाणइ, P सीण्ण for सील. 32) P बाहुदंडेण, P इ for हणइ, P तव ण. 33) JP को वि for कोइ (emended), P कोदंड, P मारेंतो, P अगणंतो, J वियणाइं ॥.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एसो वि पहरइ च्चिय कड्ढिय-करवाल-भीसणो पुरिसो । ण य चिंतेइ अउण्णो खणेण किं मे समाढत्तं ॥
जइ कह वि अहं णिहओ कज्जं तं कत्थ पावियं होइ । अह कह वि एस णिहओ संबद्धो मज्झ पावेण ॥
एए वि कुमार मए लिहिया सुय-सारिया य पंजरए । पुव्व-कयं वेयंता अण्णं च णवं णिबंधंता ॥
एसा वि का वि महिला वियणा-वस-मउलमाण-णयणिल्ला । पसवइ कं पि वियारं सारिच्छमिणं मए लिहियं ॥
जो पसवइ इह बालो सो संदेहम्मि वड्डए वरओ । संकोडियंगमंगो जीवेज्ज मरेज्ज वा णूणं ॥
एसा वि एत्थ महिला दोहाइज्जंत-गुज्झ-वियणाए । खर-विरसाइ रसंती पीलिज्जइ सरस-पोत्ति व्व ॥
एसा वि एत्थ लिहिया का वि विवण्णा ण चेय णीहरियं । अण्णाईं सयं बालं मयाइँ अह दो वि अवराइं ॥
§ २९७) एसो परिणिज्जंतो लिहिओ अह पेच्छ कुमर वेदीए । तूर-रव-मंगलेहिं णच्चिर-महिला-विलासेहिं ॥
ण य जाणए वराओ संसारो एस दुक्ख-सय-पउरो । हत्थेहिँ मए गहिओ महाए महिल त्ति काऊण ॥
णच्चंति ते वि तुट्ठा किर परिणीयं ति मूढया पुरिसा । ण य रोयंति अधण्णा दुक्ख-समुद्दे इमो छूढो ॥
एसो वि मए लिहिओ कुमार उत्ताण-सायओ बालो । आउं ति परं भणिरो अण्णं वरओ ण-याणाइ ॥
एसो सो धि अउण्णो कीलइ अह कीलणेहिँ बालो त्ति । असुइं पि असइ मूढो ण य जाणइ कं पि अत्ताणं ॥
एवं सो च्चिय कुमरो कुक्कुड-सुय-सारियाय-मेसेहिं । दुल्ललिओ अह वियरइ अहं ति गव्वं समुव्वहिरो ॥
एसो पुणो वि तरुणो रमइ जहिच्छाए कण्ण-जुवईहिं । कामत्थेसु पयत्तइ मूढो धम्मं ण-याणाइ ॥
एसो सो चेय पुणो मज्झारो बाल-सत्थ-परियरिओ । अणुविद्ध-पलिय-सीसो लग्गइ ण तहा वि धम्मम्मि ॥
एसो सो चेय थेरो लिहिओ अह वियलमाण-वलि-वलिओ । बालेहिँ वि परिभूओ उव्वियणिज्जो य तरुणीहिं ॥
एसो वि भमइ भिक्खं दीणो अह णियय-कम्म-दोसेण । एण्हिं ण कुणइ धम्मं पुणो वि अह होहिइ दरिद्दो ॥
एसो वि को वि लिहिओ रोरो थेरो य सत्थर-णिवण्णो । चीवर-कंथोत्थइओ पुव्व-कयं चेय वेयंतो ॥
एसो वि को वि भोगी कय-पुण्णो अच्छए सुह-णिसण्णो । अण्णे करेंति आणं पुव्व-अउण्णाण दोसेहिं ॥
§ २९८) एसो वि को वि लिहिओ राया जंपाण-पवहणारूढो । पुरिसेहिं चिय वुज्झइ जम्मंतर-पाव-वहएहिं ॥
एए वि मए लिहिया संगामे पहरणेहिँ जुज्झंता । ण य जाणंति वराया अवस्स णरयं इमेणं ति ॥
एसो वि पुहइ-णाहो अच्छइ सीहासणे सुह-णिसण्णो । णीसेसिय-सामंतो मत्तो माणेण य पयत्तो ॥
एयस्स पंच कवला ते च्चिय वासाइं दोण्णि काइं चि । एक्क च्चिय से महिला असरालं वड्डए पावं ॥
एसो वि को वि पुरिसो लोह-महग्गह-परिग्गहायल्लो । पइसइ भीमं उयहिं जीयं चिय अत्तणो मोत्तुं ॥
एसो वि को वि पुरिसो जीविय-हेऊण मरण-भय-रहिओ । कुणइ पर-दव्व-हरणं ण य जाणइ बहुयरं मरणं ॥
एसो वि एत्थ लिहिओ महद्दहे भीम-काल-बीभच्छो । पुरिसो च्चिय गेण्हंतो जालेणं मच्छ-संघाए ॥
ण य जाणए अउण्णो एयं काऊण कत्थ गंतव्वं । किं थोवं किं बहुयं किं वप्प-हियं पर-हियं वा ॥
एए वि एत्थ वणिया सच्चं अलियं व जंपिउं अत्थं । विढवेंति मूढ-मणसा परिणामं णेय चिंतेंति ॥
एए वि के वि पुरिसा वेरग्ग-परा घराइं मोत्तूण । साहेंति मोक्ख-मग्गं कह वि विसुद्धेण जोएणं ॥
एयं कुमार लिहियं मणुयाणं विद्ध-ठाणयं रम्मं । संखेवेणं च्चिय से वित्थरओ को व साहेज्जा ॥
§ २९९) एयं पि पेच्छ पत्थिव तिरिय-समूहस्स जं मए लिहियं । सोहणमसोहणं वा दिज्जइ दिट्ठी पसाएण ॥
तं चिय सुव्वसि णिउणो तं चित्त-कलासु सुट्ठु णिम्माओ । तेणेत्थ देसु दिट्ठिं खणंतरं ताव वर-पुरिस ॥
सीहेण हम्मइ गओ गएण सीहो त्ति पेच्छ णरणाह । एस य मओ मइंदेण मारिओ रण्ण-मज्झम्मि ॥

---

1) P अउणो खणेण किमे. 2) P णिहिओ, J om. कत्थ, P सव्वद्धा मज्झ सावेण ॥. 3) P एते, P सउणया for सारिया, J वेतेंता for वेयंता, P अण्णं च णयं निबद्धंता. 4) P मउलमालण, P पसवइ किं पि. 5) J वट्टए, J वराओ P घरओ, P °अंगसंगो. 6) J मुज्झ for गुज्झ, P पीहिलिज्जइ, J पोत्ती व्व. 7) JP inter. एत्थ & वि, P को for का, P मएयं for मयं. 8) J कुमार वेईए P कुरवेदीए. 9) P णइ जाणइए वराओ, J संसारवि for संसारो, P हत्थेण मए, P om. महाए. 10) P रोवंति अउण्णा. 11) P उत्ताणसोयओ, P आउत्ति, P भणिओ रो, J अण्णा P अण्णं. 12) J सोद्धि for सो धि, P एसो सोयव्वे पुणो कीलइ, P असुइम्मि असुइ ढोणय, P किं पि. 13) P एसो for एवं. 14) P कंनजुवतीण ।. 15) P सो चेय. 16) P repeats अह, P -वलओ, J परिहूओ, P परिभूओ व्वियणिज्जो. 17) P इयर for णियय, J दोसेहिं, P अ for अह. 18) P om. चेव, J वेयंतो. 19) P पुव्वय अण्णाण. 20) P चिय, J बुब्भइ for वुज्झइ, P पावपवाहेहिं. 21) P एते, P जुझंता, P ण य ज्झाणंति, P इमेहिं ति. 22) P सामन्तो मत्तो माणेण परयत्तो ॥. 23) P काई वि, P एक्क विय, P असढालं. 24) P पयसरइ भीमओअहि जीयं. 25) J हेतूय P हेऊण, P मीओ for रहिओ. 27) P अउणो, J थोअं. 28) P एते, P वण्णिया, J मणसो. 29) P एते, J सावेंति P साहंति, P जोगेणं. 30) P सो for से, J को व्व साहेज्ज ॥. 31) P एतं च for एयं पि, P लिहिउं ।, P om. सोहणमसोहणं वा etc. to ताव वरपुरिस. 33) P सोहण for सीहेण, P गएत्ति सीहो, P repeats एस.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वग्घेण एस वसहो मारिजइ विरसयं विरसमाणो । एसो उण भिण्णो च्चिय वग्घो सिंगेण वसभस्स ॥
एए वि मए लिहिया महिसा अवरोप्परेण जुज्झंता । रागद्दोस-वसट्टा सारंगा जुज्झमाणा य ॥
ईसा-वसेण एए अवरोप्पर-पसर-वेर-वेलविआ । जुज्झंति पेच्छ पसवो अण्णाण-महातमे छूढा ॥
आहारट्ठा पेच्छसु इमिणा सप्पेण गिलियओ सप्पो । मच्छेण पेच्छ मच्छो गिलिओ मयरो य मयरेण ॥
विहएण हओ विहओ ईसा-आहार-कारणा कोइ । सिहिणा य असिज्जंतो भुयंगमेसो मए लिहिओ ॥
एयं च पेच्छ सुंदर चित्तं चित्तम्मि चिंतियं चित्तं । मच्चु-परंपर-माली जीवाण कमेण णिम्मविया ॥
एसा मए वि लिहिया वणम्मि तर-भारएण भममाणी । लूआ तंतु-णिबद्धा गहिया एयाएँ लूयाए ॥
एसो वि य कोलियओ भममाणीए छुहा-किलंतीए । घरहारियाएँ गहिओ पावो पावाए पावेण ॥
घरहारिया वि एसा कह वि भमंतीए तुरिय-गमणाए । सामाए इमा गहिया चुकइ को पुव्व-कम्मस्स ॥
एसा वि पेच्छ सामा सहसा पडिऊण गयण-मग्गाओ । ओवायएण गहिया पेच्छसु णरणाह कम्मस्स ॥
ओवायओ वि एसो णिवडिय-मेत्तेण जाव उट्ठेइ । ता रण्ण-बिरालेणं गहिओ लिहिओ इमो पेच्छ ॥
एसो वि पेच्छ पावो रण्ण-बिरालो बला णिवडिएण । कोलेणं गहिओ च्चिय सुतिक्ख-दाढा-करालेणं ॥
कोलो वि तक्खणं चिय आहारट्ठा इमेण पावेण । हम्मइ य चित्तएणं पेच्छसु चित्ते वि चित्तेणं ॥
अह एसो वि हु दीवी दाढा-वियराल-भीम-वयणेण । लिहिओ हि खलिज्जंतो खर-णहरा-वज्ज-घाएहिं ॥
एसो वि तक्खणं चिय पेच्छसु वग्घो इमेण सीहेण । फालिज्जंतो लिहिओ कर-करवत्तेण तिक्खेण ॥
एसो वि पेच्छ सीहो जाव ण मारेइ दारुणं वग्घं । ता गहिओ भीमेणं सरहेण पहाविणा पेच्छ ॥
इय अवरोप्पर-सत्ता सत्ता पावम्मि णवर दुक्खत्ता । रायद्दोस-वसत्ता सत्तुम्मत्ता भमंति इहं ॥
§ ३००) एयं पि पेच्छ णरयं कुमार लिहियं मए इह पडम्मि । बहु-पाव-पंक-गरुया झस त्ति णिवडंति जत्थ जिया ॥
एए ते मे लिहिया उववज्जंता कुडिच्छ-मज्झम्मि । बहु-पूय-वसामिस-रुहिर-भरियम्मि बीभच्छ-भीसणए ॥
एत्थ य जाय च्चिय से णिवडंता एत्थ मे पुणो लिहिया । णिवडंता वज्ज-सिलायलम्मि उय भग्ग-सव्वंगा ॥
अह एए परमाहम्मिय त्ति पावंति पहरण-विहत्था । हण-लुंप-भिंद-छिंदह मारे-चूरेह जंपंता ॥
एए ते तेहिँ पुणो घेत्तूणं जलण-तत्त-तउयम्मि । छुब्भंति दीण-वियणा विरसा विरसं विरसमाणा ॥
एए भिज्जंति पुणो दीहर-तिक्खासु वज्ज-सूलासु । जेहिँ पुरा जीयाणं बहुसो उप्पाइयं दुक्खं ॥
एए वि पुणो जीवा विरसं विरसंति गरुय-दुक्खत्ता । एयाण एत्थ तंबं मुहम्मि अह गालियं गलियं ॥
एए पुण वेयरणिं धावंता कह वि पाविया तीरं । डज्झंति तत्थ वि पुणो तउ-ताविय-तंब-सीसेहिं ॥
एसा वि वहइ सरिया वेयरणी तत्त-जल-तरंगिल्ला । एत्थ य झंपावडिया झत्ति विलीणा गया णासं ॥
अह पुण संगहिय च्चिय भीम-महाकसिण-देह-भंगिल्ला । एत्थ विभिज्जंति पुणो वणम्मि असि-ताल-सरिसम्मि ॥
एए वि मए लिहिया फालिज्जंता बला य बलिएहिं । करवत्त-जंत-जुत्ता खुत्ता बहु-रुहिर-पंकम्मि ॥
एए वि पुणो पेच्छसु अवरोप्पर-सिंघ-वग्घ-रूवेण । जुज्झंति रोद्द-भावा संभरिओ पुव्व-वेरि त्ति ॥
एए वि पेच्छ जीवा णरए वियणाएँ मोह-मूढ-मणा । विरसंति पुणो दीणं खर-विरसं भीसणं सहसा ॥
एत्थ य कुमार एए णरए बहु-दुक्ख-लक्ख-लक्खम्मि । तेत्तीस-सागराइं भमंति णिच्चं ण संदेहो ॥
§ ३०१) एयं पि मए लिहियं कुमार सग्गं सुओवएसेण । जत्थ य जंति सउण्णा बहु-पुण्ण-फलं अणुहवंति ॥
ता पेच्छ ते वि णरवर सयणिज्जे दिव्व-वत्थ-पत्थरिए । उववज्जंता जीवा मणि-कुंडल-हार-सच्छाया ॥

1) P सिंहेण वसहस्सं. 2) P एते, P महिआ, JP वसड्ढा (?). 3) J एणा P एते for एए, P पोस पसरं for पसरवेर, J पसओ. 4) J इमंमि for इमिणा, P लिहिओ for गिलिओ. 5) P कारणे को वि ।, P भुयंगमो एस मे लिहिओ. 6) P सुचित्त for चित्तं after सुंदर, P परंपरमाणीए, P om. जीवाण कमेण etc. to भममाणीए. 7) J लूता, J लूताए. 8) J घरहारिअए, P repeats पावो. 9) P भमतीए तु तुरियगमणाए ।, P गिलिया for गहिया. 10) J ओवातएण, P ओवाएणं. 11) JP ओवातओ, P मेत्ते ण. 13) P म for य, P चित्तेवि चित्तेणं. 14) P विकराल, P om. लिहिओ हि ख, J om. हि, P लिज्जंतो खरणरहावज्जघाएहिं ॥ as the 2nd line. 15) P पीलिज्जंतो, J काकरवंतेण. 16) P महावणे for पहाविणा. 17) P writes सत्ता thrice, J दुक्खंता, P रागद्दोस, P सत्तुसत्ता, J भवंति इहं. 18) P पहु for बहु, P ज्झड for झस. 19) P एते ते, J उवविज्जंता P उवडज्झंता, J वस for वसामिस. 20) J उवदग्गसव्वद्धा ॥. 21) P अह पत्ते परमाहम्मिए त्ति, P धावंति for पावंति, P हणलुपछिंदह मारे तूरेह. 22) P एतेहिं पुणो धक्कूण णारया जलण, P वयणा for विमणा. 23) P एते for एए, P जीवाणं, P उप्पाइओ दुक्खं. 24) P अ for अह, J अह गलियं, P om. गलियं. 25) J उण. 26) J य for वि, P वेयरणी, P नाम for तत्त, P ज्झडत्ति for झत्ति, P पासं for णासं. 27) P संगलिय, P महाकसण, P वि छिज्जंति. 28) P एते वि, P बहुमरुहिर. 29) P एते वि गुणो, P वग्घवेण ।, J संभरिउं, P वेर त्ति. 30) P एते, P repeats वियणाए, J मूढवण-सण्णा ।, P णो for पुणो. 31) P om. य, J एते, P om. एए, P दुक्खा, P भमंति णच्चं. 32) P एयं मि मए, J एत्थ for जत्थ, P सउणा, J बह for बहु. 33) P सिज्झायले for सयणिज्जे (which is a marginal correction of the former in J also), P om. वत्थ, P वत्थरिए । P उववज्जंती.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एए उण उववण्णा दिव्वालंकार-भूसिय-सरीरा । सोहंति ललिय-देहा दिव्वा दिव्वेहिँ रूवेहिं ॥
एसो देव-कुमारो रेहइ देवी-सएहिँ परियरिओ । आरण्ण-मत्त-मायंग-सच्छमो करिणि-जूहेहिं ॥
एसो उण सुरणाहो अच्छइ अत्थाण-मज्झयारम्मि । बहु-देवीयण-देवीहिँ परिगओ माण-पडिबद्धो ॥
एसो पुण आरूढो उवरिं एरावणस्स दिव्वस्स । विज्जुज्जल-जालावलि-जाला-मालाहिँ दिप्पंतो ॥
एसो वि को वि देवो लिहिओ सुर-पेक्खणं पलोएंतो । णट्टोवयार-सरहस-हाविर-भावाओ देवीओ ॥
एयाओ पुण पेच्छसु मंथर-गमणाओ पिहुल-जहणाओ । तणु-मज्झेण य थणयल-रेहिरंगीओँ ललियाओ ॥
एया पुण विलयाओ गायंति सुहं-सुहेण तुट्ठाओ । अच्छइ थंभिय-मणसो गीएण इमो वण-गओ व्व ॥
एयाण वि एत्थ पुणो कुमार दे पेच्छ विलिहिया एए । किब्बिसिया णाम सुरा किंकर-सरिसा इमे अहमा ॥
एए परियेयंता दुक्खं वेदेंति णत्थि संदेहो । एसो एत्थ महप्पा अम्हे उण किंकरा जाया ॥
एसो वि को वि देवो चवणं णाऊण अत्तणो अइरा । परिहीयमाण-कंती मिलाण-मल्लो दुहं पत्तो ॥
अण्णो व्वि एस जीवो विलवइ कलुणं सुदीण-मण-जुत्तो । हा हा अहं अउण्णो संपइ पडिहामि असुइम्मि ॥
एसो वि को वि देवो विलवंतो च्चेय देवि-मज्झाओ । पवणेण पईवो इव झत्ति ण णाओ कहिं पि गओ ॥
एयं कुमार सव्वं देवत्तणयं मए वि लिहिऊण । एसो पुणो वि लिहिओ मोक्खो अच्चंत-सुभ-सोक्खो ॥
एत्थ ण जरा ण जम्मं ण वाहिणो णेय मरण-संतावो । सासय-सिव-सुह-ठाणं तं चेय सुहं पि रमणिज्जं ति ॥

एवं कुमार, तेण साहिए तम्मि तारिसे संसार-चक्क-पडम्मि पच्चक्खीकए चिंतियं मए । 'अहो, कट्ठो संसार-वासो, दुग्गमो मोक्ख-मग्गो, दुक्खिया जीवा, असरणा पाणिणो, विसमा कम्म-गई, मूढो जणो, णेह-णियलिओ लोओ, असुइयं सरीरं, दारुणो विसओवभोओ, चवलं चित्तं, वामाइं अक्खाइं, पच्चक्ख-दीसंत-दुक्ख-महासागरोगाढ-हियओ जीव-सत्थो त्ति । अवि य ।

मणुयाण णत्थि सोक्खं तिरियाण ण वा ण यावि देवाण । णरए पुण दुक्खं चिय सिद्धीए सुहं णवरि एक्कं ॥'

चिंतयंतेण भणियं मए । 'अहो तए लिहियं चित्तवडं, सव्वहा ण तुमं मणुओ, इमेण दिव्व-चित्तयम्म-पडप्पयारेण कारणंतरं किं पि चिंतयंतो दिव्वो देवलोयाओ समागओ'त्ति । एवं भणंतेण दिट्ठं मए तस्स एक्क-पएसे अण्णं चित्तयम्मं । भणियं च मए 'अहो उवज्झाय, एवं पुण इमाओ संसार-चक्काओ अइरित्तं, ता इमं पि साहिज्जउ मज्झं'ति ।

§ ३०२) इमं च सोऊणं दंसिउं पयत्तो उवज्झाओ । कुमार,

एयं पि मए लिहियं पेच्छसु सुविभत्त-रूव-सविभायं । काणं पि दोण्ह चरियं भवंतरे आसि जं वत्तं ॥
एसा चंप त्ति पुरी लिहिया धण-रयण-कणय-सुसमिद्धा । दीसंति जीय एए पासाया रयण-पोंगिल्ला ॥
दीसइ णायर-लोओ रयणालंकार-भूसिओ रम्मो । दीसइ य विवणि-मग्गो बहु-धण-संवाह-रमणिज्जो ॥
एसो वि तत्थ राया महारहो णाम पणइ-दाण-परो । अच्छइ तं पालेंतो लिहिओ से मंदिरो एत्थ ॥
एत्थ य महामहप्पा धणदत्तो णाम बहु-धणो वणिओ । देवी य तस्स भज्जा देवि व्व विलास-रूवेण ॥
ताणं च दोण्ह पुत्ता दुवे वि जाया मणोरह-सएहिं । ताणं चिय णामाइं दोण्ह वि कुलमित्त-धणमित्ता ॥
ताणं जायाणं चिय णिहणं से पाविओ पिया सहसा । अत्थं सव्वं चिय से परिगयमाणं गयं णिहणं ॥
णिज्झीण-विहव-सारा परिविगलिय-सयल-लोय-वावारा । परिहीण-परियणा ते दोगच्चं पाविया वणिया ॥
एक्का ताणं माया अवरो से ताण णत्थि बंधुयणो । अकय-विवाहा दोण्णि वि कमेण अह जोव्वणं पत्ता ॥
भणिया ते जणणीए पुत्त मए बाल-भाव-मुद्धयरा । तुम्हे जीवावियया दुक्खिय-कम्माइँ काऊण ॥

1) JP एते, P °लंकारभूविलासरूवेण । and further adds ताणं च दोण्ह पुत्ता etc. to णिहणं । निझीसियसरीरा before सोहंति etc. as at ll. 29–31, p. 190, J दिव्वे for दिव्वा. 2) P देविकुमारो, P सच्छिमो करणि°. 3) P उण सरणाहो, P देवी उण, P पडिगओ. 4) J एसो उण, P om. दिव्वस्स, J वज्जुज्जलजलणावलि, P दिप्पंता. 5) J णट्टोवहारसहरिस-, P णज्जेवयार-, P हाविरहावाउ. 6) JP पुणो, P देहुलजघणाओ, J जहणाओ । थणनज्झेण, J adds स before रेहिर°. 7) J एता P एयाओ, P उट्ठाओ !, P वणमउ व्व. 8) P एया वि, P विलहिया एते !. 9) P एते, J परिवेएंता, P वेयंति णत्थ, P एऽसो, rather [अण्णे] उण. 11) P अण्णे, P अउणो. 12) J चेव. 13) P inter. वि & पुणो, J -सुह-, P -साक्खो. 14) P om. ण after जरा, P वाहिणा, P संततावो । सासंव सिवं ठाणं, J सुहं परमणिज्जं ॥ इति ॥. 15) P adds च after एवं, P चक्के पडमि, J om. मए । अहो. 16) P लोहो for लोओ. 17) J विसयोवभोओ, P om. चवलं चित्तं, J अक्खइं, P पच्चक्खं, J आढ for गाढ, P त्थि for त्ति. 19) J वि ताव for ण वा ण यावि, P देवेण । and further repeats णरए वामाइं अक्खाइं etc. to ण यावि देवेण !. 20) P चितियं तेण, P om. मए, P चित्तियंमपडसारेण. 21) J देवलोगाओ, J तक्कपएसे, P अन्नं चितयमं. 22) J एअं पुण, JP अतिरित्तं, P सादिज्जओ मज्झ त्ति. 23) J उअज्झाओ. 24) P एयं मि मए, J पेच्छअ for पेच्छसु, J रूवयविभायं-, P ताणं for काणं, J हवंतरे for भवंतरे. 25) P रयणवोंगिल्ला. 26) J adds वर before रयणा°, J विवणि.. 27) P एत्थ for तत्थ, P पालंतो, P लिहिओ मे मंदिरे. 28) J धणमित्तो णाम बहुधणो धणिओ. 29) J om. च, J दोण्हं, P inter. धणमित्त and कुलमित्त (°त्ता). 30) P णिहणं स पिया सहसा, J परिगमाणं. 31) P निज्जीण, P दोगच्चं. 32) P एक्काण ताण माया, P -वियाहा. 33) P वियाय for वियया.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एण्हिं जोव्वण-पत्ता सत्ता दाऊण मज्झ आहारं । ता कुणह किं पि कम्मं इय भणिरिं पेच्छ मायं से ॥
एए वि मए लिहिया लग्गा णिययम्मि वणिय-कम्मम्मि । तत्थ वि य णत्थि किंचि वि जेण भवे भंड-मोल्लं ति ॥
अह होइ किंचि तत्थ वि जं चिय गेण्हंति भंड-जायं ति । जं जं ग्रेण्पइ दोहिँ वि तं तं एक्केण विक्काए ॥
जं एक्केण गहियं मग्गिज्जइ तं पुणो वि अन्नेण । अन्नेण जं पि किणियं वच्चइ तं ताण पाएणं ॥
इय जाणिउं वणिज्जं णत्थि अउण्णेहिँ किंचि लाहं ति । ताहे लग्गा किसि-करिसणम्मि कह-कह वि णिव्विण्णा ॥
§ ३०३) एए ते मे लिहिया हल-णंगल-जोत्त-पग्गह-विहत्था । अत्ताणं दममाणा गहिया दारिद्द-दुक्खेण ॥
जं किंचि घरे धण्णं सव्वं खेत्तम्मि तं तु पक्खित्तं । मेहा ण मुयंति जलं सुक्कं तत्थेय तं धण्णं ॥
अह ते तं चइऊणं लग्गा धोरेसु कह वि दुक्खत्ता । एए मए वि लिहिया आरोविय-गोणि-भरयाला ॥
एए वि ताण थोरा तिलयं होऊण वाहिया सव्वे । णीसेसं ते वि मया तत्थ विभग्गा अउण्णेण ॥
वित्तीए संतुट्ठा पर-गेहे अच्छिउं समाढत्ता । एत्थ वि एसो सामी ण देइ वित्ती अउण्णाण ॥
एए पुणो वि ते च्चिय वेरग्गेणं इमं परिव्वइउं । अण्णत्थ पुरवरीसुं उवागया जाय-णिव्वेया ॥
एत्थ वि एए भिक्खं भमंति घरंगणेसु भममाणा । ण लहंति तत्थ वि इमे केण वि कम्मेण असुहेणं ॥
एवं च ते कमेणं पत्ता णिव्वेय-दुक्ख-संतत्ता । रयणायरस्स तीरं अत्थं परिमग्गिरा वणिया ॥
ताव य को वि इमो सो परतीरं पत्थिओ इहं वणिओ । घेत्तूण बहुं भंडं जाणं भरिऊण वित्थिण्णं ॥
एसो सो तेहिँ समं वणिओ भणिओ वयं पि वच्चामो । देज्जसु अम्हं वित्ती जा तुह पडिहाइ हिययस्स ॥
वणिएण वि पडिवण्णं एवं होउ त्ति वच्चह दुवे वि । दाहामि अहं वित्तिं अण्णाण वि जं दईहामि ॥
एयं तं पोयवरं कुमार एयम्मि सलिल-मज्झम्मि । पम्मोक्कियं जहिच्छं धवलुव्वत्तंत-विजयाहिं ॥
एयं समुद्द-मज्झे वच्चइ जल-तरल-वीइ-हेलाहिं । सहसा अह फुडियं च्चिय लिहियं तं पेच्छ बोहित्थं ॥
एए वि वणियउत्ता दुवे वि सलिलम्मि दूर-तीरम्मि । कह कह वि णिबुड्डुंता फलयारूढा गया दीवं ॥
तरिऊण महाजलहिं एए पुच्छंति एस को दीवो । एसो इमेहिँ कहिओ केहि मि जह रोहणो णाम ॥
एयं सोऊण इमे लट्ठं जायं ति हरिसिया दो वि । अवरोप्पर-जंपंता एए मे विलिहिया एत्थ ॥
एयं तं दीववरं जत्थ अउण्णो वि पावए अत्थं । संपइ ताव खणामो जा संपत्ताइँ रयणाइं ॥
§ ३०४) एवं भणिऊण इमे खणिउं च्चिय णवर ते समाढत्ता । दियहं पि अह खणंता ण किं च्चि पावंति ते वराया ॥
अह तत्थ वि णिव्विण्णा अल्लीणा कं पि एरिसं पुरिसं । धाउव्वायं धम्मिमो त्ति तेण ते किं पि सिक्खविया ॥
तत्थ वि खणंति गिरि-कुहर-पत्थरे णट्ठ-सयल-पुरिसत्था । ते च्चिय धमंति सुइरं तत्थ वि छारो परं इत्थे ॥
तत्थ वि तेणुव्विग्गा लग्गा अह खेलिउं इमे जूयं । एत्थ वि जिणिऊण इमे बद्धा सहिएण ते वणिया ॥
कह-कह वि तत्थ मुक्का लग्गा ओलग्गिउं इमे दो वि । तत्थ वि एसो जाओ संगामो पाडिया बद्धा ॥
एत्थ वि चुक्का मुक्का अंजण-जोएसु णेय-रूवेसु । अंजंति य णयणाइं उवघाओ जाव से जाओ ॥
अह पुण ते च्चिय एए कं पि इमं गहिय-पोत्थय-करग्गा । पुरओ काउं पुरिसं बिलम्मि पविसंतया लिहिया ॥
एत्थं किर होहिइ जक्खिणि त्ति अम्हे वि कामुया होहं । जाव विगराल-वयणो सहसा उद्धाइओ वग्घो ॥
एए ते च्चिय पुरिसा मंतं गहिऊण गुरुयण-मुहाओ । मुद्दा-मंडल-समएहिँ साहणं काउमाढत्ता ॥
एत्थ वि साहेंताणं सहसा उद्धाइओ परम-भीमो । रोद्दो रक्खस-रूवी पुव्व-कओ पाव-संघाओ ॥ सव्वहा,
जं जं करेंति एए पुव्व-महा-पाव-कम्म-दोसेण । तं तं विहडइ सव्वं वालुय-कवलं जहा रइयं ॥

---

1) J सहा for सत्ता. 2) P एते वि माइभणिया लग्गा, P किंची जेण. 3) J inter. तत्थ & किंचि, J adds ता before जं च्चिय, P भंडमुल्लं पि ।, P om. वि, J om. one तं, J विकाई for विक्काए. 4) J तत्थाण for तं ताण. 5) J ता for ताहे. 6) P एते ते, P गहिता दारिद्दरक्खेण. 7) P धणं सव्वं. 8) P लग्गा धोरेसु, P व for वि, P एते. 9) P एते, P ताण धोरा, P सत्थो for सव्वे, P णीसंसे for णीसेसं. 10) P मी for सामी, P देति. 11) P एते, P परिव्वइओ ।. 12) P एते, P घरपंगणेसु. 14) J इमा सा परतीरं, P बहु. 15) P repeats भणिओ. 16) P दाहामि तुहं वित्ती. 17) J P एतं, J पोतवरं P पायवरं, P एतंमि, P धवलधुव्वंत-. 18) P एतं, P -वीतिहेलीहिं, P अह for तं. 19) P एतेवि, P om. one कह, P वि णिउस्तंता फलरूढा. 20) P एते, P इमोण for इमेहिं, P केइम्हि जइ. 21) P एतं, P लद्धं, P एते, P विलिया. 22) P एतं, P तत्थ अतओ for जत्थ अउण्णो. 23) P पत्ता ए for च्चिय णवर, P °ता णं for ता ण, J °ताण इंचि. 24) P अलीणा किंपि, P पुरि for पुरिसं. 25) J चिर for च्चिय, P इत्थो. 26) P °व्विग्गा अढत्ता खेलिउं इमे. 27) P चुक्का for मुक्का, P इसो for एसो. 28) P तत्थ for एत्थ, J जोएसु णायरूवेसु । अंजोति, J उवग्घतो. 29) J एते किं पि अहं, P इमं महिय-, P -करग्गं, J पुरिसं पिलंमि, P पसंतया. 30) P एत्थ किर होहिति, J विअराल. 31) J एते, P गुरुयमुहाओ. 32) J साधेंताणं P साहंताणं. 33) P एते, P विहडसव्वं.

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

अह एए एयं जाणिऊण णिव्विण्ण-काम-रइ-भोगा । देवीएँ पाय-वडिया चिट्ठंति इमे सुह-णिवण्णा ॥
एत्थ वि सा हो देवी कत्थ वि अण्णत्थ पवसिया दूरं । एए वि पेच्छ वरया सेलत्थंभोवमा पडिया ॥
दियहेहिँ पुणो पेच्छसु सयलाहारेण वज्जिय-सरीरा । अट्ठिमय-पंजरा इव णिव्विण्णा उट्ठिया दो वि ॥
§ ३०५) कह कह वि समासत्था एए भणिऊण इय समाढत्ता । अव्वो देव्वेण इमो रोसो अम्हाण णिव्वडिओ ॥
जं जं करेसु अम्हे आसा-तण्हालुएण हियएण । तं तं भंजइ सव्वं विहिदा(वा)ो पेच्छ कोवेण ॥
अम्हाण धिरत्थु इमं धिरत्थु जीवस्स णिप्फलं सव्वं । घडियम्हे देव्वेणं अहो ण जुत्तं इमं तस्स ॥
किं तेण जीविएणं किं वा जाएण किं व पुरिसेणं । जस्स पुरिसस्स देव्वो अम्हाण व होइ विवरीओ ॥
दीसंति केइ पुरिसा कम्मि वि कम्मम्मि सुत्थिया बहुसो । अम्हे उण राग-पुण्णा एक्कम्मि वि सुत्थिया णेय ॥
ता अम्ह हो ण कज्जं इमेण जीवेण दुक्ख-पउरेण । आरुहिउं अहवा गिरियडम्मि मुचामु अत्ताणं ॥
एयं चेय भणंता पत्ता य इमे चउर-सिहरम्मि । एयं च चउर-सिहरं लिहियं मे पेच्छ णरवसहा ॥
एत्थारुहंति एए पेच्छसु णरणाह दीण-विमण-मणा । आरूढा सिहरम्मि उ अत्ताणं मोत्तुमाढत्ता ॥
भो भो गिरिवर-सिहरा जइ तुह पडणो वि अत्थि माहप्पो । तो अम्हे होज्जामो मा एरिसया परभवम्मि ॥
इय भणिउं समकालं जं पत्ता घत्तिउं समाढत्ता । मा साहसं ति भणियं कत्थ वि दिव्वाए वायाए ॥
सोऊण इमं ते च्चिय दुवे वि पुरिसा ससज्झसा सहसा । आलोइउं पयत्ता दिसाओ पसरंत-णयणिल्ला ॥
केणेत्थ इमं भणियं मा हो एयं ति साहसं कुणह । सो अम्ह को वि देवो मणुओ वा दंसणं देइ ॥
एत्थंतरम्मि णरवर पेच्छसु एयं तवस्सिणं धीरं । परिसोसियंगमंगं तेएण य पज्जलंतं वा ॥
एएण इमं भणियं वलिया ते तस्स चेय मूलम्मि । अह वंदिऊण साहू भणिओ दोहिं पि एएहिं ॥
§ ३०६) भो भो मुणिवर सुव्वउ कीस तुमे वारियम्ह पडणाओ । णणु अम्ह साहसमिणं जं जीवामो कह वि पावा ॥
भणियं च तेण मुणिणा वर-पुरिसा तुम्ह किं व वेरग्गं । भणिओ इमेहिँ साहू दारिद्दं अम्ह वेरग्गं ॥
तेण वि ते पडिभणिया कुणह य अत्थस्स बहुविह-उवाए । वाणिज्जं किसि-कम्मं ओलग्गादी बहु-वियप्पा ॥
तेहि वि सो पडिभणिओ भगवं सव्वे वि जाणिया एए । एक्केण वि णो किंचि वि तेण इमे अम्ह णिव्विण्णा ॥
मुणिणा पुणो वि भणियं एए तुब्भेहि णो कया विहिणा । जेण अहं तुह भणिमो करेह तेणं विहाणेणं ॥
भणियं च तेहिँ भगवं आइस दे केण हो उवाएण । अत्थो होहिइ अम्हं सुहं च परिभुंजिमो बहुयं ॥
भणियं च तेण मुणिणा जइ कज्जं तुम्ह सव्व-सोक्खेहिं । किसि-कम्म-वणिज्जादी ता एए कुणह जत्तेण ॥
कुणसु मणं आमणयारयं ति देहामणेसु वित्थिण्णे । पुण्णं गेण्हसु भंडं पडिभंडं होहिइ सुहं ते ॥
अह कह वि किसिं करेसि, ता इमं कुणसु ।
मण-णंगलेण पूए सुपत्त-खेत्तम्मि वाविए बीए । सयसाहं होइ फलं एस विही करिसणे होइ ॥
अह कह वि गोवालणं कुणसि, ता इमं कुणसु ।
§ ३०७) गेण्हसु आगम-लउडं वारे पर-दार-दव्व-खेत्तेसु । इंदिय गोरुययाइं पर-लोए लहसि सुह-वित्तिं ॥
अह कम्मं ता करेसि, ता इमं कुणसु ।
जं जं भणाइ सामी सव्वण्णू कुणह भो इमं कम्मं । तं तं करेह सव्वं अक्खय-वित्तीय जइ कज्जं ॥
अह वच्चह जाणवत्तेण, ता इमं कुणसु ।
कुण देह जाणवत्तं गुणरयणाणं भरेसु विमलाणं । भव-जलहिं तरिऊणं मोक्खदीवं च पावेह ॥

---

1) P एते एतं, J तं for एयं, P णिव्वन्नकामरइअभोगा, P सुहनिसन्ना ॥. 2) P om. हो, P विरया for वरया, J वडिया for पडिया. 3) P अट्ठिमयं. 4) P एते, P देवेण, J णिव्वरिओ. 6) P om. इमं धिरत्थु, J पडिअम्हो P घडिओ म्हे, P देवेणं. 7) P देवो, P वि for व. 8) P केवि for केइ, P कंमं वि. 9) J जीएण, P आरुहयं, J अह for अहवा, P मुव्वम्ह for मुचामु. 10) P एतं, P वउर for चउर, P वर for च चउर. 11) P एते, P दीव for दीण, J om. उ. 12) P पडणा वि, P परिभवंमि. 13) J जाअंता for जं पत्ता, P पत्ता घेत्तिउ, P om. भणियं, P adds भणिया after वि. 14) P संज्झसा, P आलोइयं, J पयत्त°. 15) P वि देवो, P देओ for देइ. 16) P पेच्छइ एतं तवसिणं, J परिसेसि°. 17) P एए इमं, P भणिया, P एयस्स for ते तस्स, J साहुं, J दोहं पि. 18) P पव्वओ for सुव्वउ, P वारिया अम्ह. 19) P inter. किंव (P किम्व) & तुम्ह, P तुह for तुम्ह, P इमेण साहू. 20) P बहुविहओवाओ ।, J वाणिज्जकिसी°, P ओलग्गादी. 21) J तेहिमिसो पडिभणिमो, P एते ।, P णा for णो. 22) J करेसु. 23) P आइस देकोण, P होही अम्हं, J पडिभुंजिमो. 24) J om. तेण, P अत्थे for सव्व, P कम्मविणिज्जाती ता, J एते कुणसु. 25) P कुणेसु for कुणसु, J अमणयारयं ति P आमणआयरंति, P देहामाणे, P धुन्नं for पुण्णं, P भंडं हो हो पएण सोक्खं तो ॥ for भंडं etc. 26) P वि कहिं करेसु, J किसि करेसि. 27) J पूते सुपयत्त, P पूसुपत्त, P ठाविए for वाविए, P सयसोह, P करिसणा. 28) P गोवालत्तणं, P om. कुणसि ता इमं. 29) P गोरूवाई, P लहसु. 31) P adds होइ before कुणह, P मं for भो इमं. 33) J कुण जाणवत्त देहं, P तरेसु for भरेसु, P मोक्खं दीवं पि पा°.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह खणसि रोहणं, ता इमं कुणसु ।

णाणं कुण कोद्दालं खण कम्मं रोहणं च विरिथिण्णं । अइरा पाविहिसि तुमं केवल-रयणं अणग्घेज्जं ॥

अह कुणह थोर-कम्मं, ता इमं कुणसु ।

मण-थोरं भरिऊणं आगम-भंडस्स गुरु-सयासाओ । एयं हि देसु लोए पुण्णं ता गेण्हह पडिभंडं ॥

अह सिक्खं भमसि, ता कुणसु ।

गेण्हसु दंसण-भंडं संजम-कच्छं मई करंकं च । गुरु-कुल-घरंगणेसुं भम सिक्खं णाण-भिक्खट्ठा ॥

अण्णं च जूयं रमियं, तं एवं रमसु ।

संसारम्मि कडित्ते मणुयत्तण-किसि-जिय-वराडीए । पत्तं जइत्तणमिणं मा घेप्पसु पाव-सहिएण ॥

अह धाउव्वायं ते धमियं, तं पि

तव-संजम-जोएहिं काउं अत्ताणयं महाधाउं । धम्मज्झाण-महग्गिए जइ सुज्झइ जीय-कणयं ते ॥

किं च राइणो पुरओ जुज्झियं तुम्हेहिं । तत्थ वि,

ओलग्गह सव्वण्णू इंदिय-रिउ-डामरेहिँ जुज्झसु य । तव-कड्डिय-करवाला जइ कज्जं सिद्धि-णयरीए ॥

अह मल्लत्तणं कुणसु ।

संजम-कच्छं अह बंधिऊण किरिया-वलम्मि ठाऊण । हणिऊण मोह-मल्लं जय-णाण-पडाइयं गेण्ह ॥

किं च अंजणजुत्ती तुम्हेहिं कया, तं पि सुणेसु ।

संजम-दंसण-जोयं-णाण-सलायाए अंजियच्छि-जुओ । पेच्छसि महाणिहाणे णरवर सुर-सिद्ध-सुह-सरिसे ॥

अण्णं च असुर-विवरे तुब्भे पविट्ठा आसि । तत्थ वि,

णाण-जलंत-पदीवं पुरओ काऊण किं पि आयरियं । विसिउं संजम-विवरे गेण्हह सिद्धिं असुर-कण्णं ॥

§ ३०८) किं च मंतं साहिउं पयत्ता, तं च इमिणा विहाणेण साहेयव्वं । अवि य ।

समयम्मि समय-जुत्तो गुरु-दिक्खा-दिण्ण-सार-गुरु-मंतो । सिद्धंतं जवमाणो उत्तम-सिद्धिं लहसि लोए ॥

अण्णं च देवया आराहिया तुब्भेहिं सा एवं आराहेसु ।

सम्मत्त-णिच्छिय-मणो संजम-देवंगणम्मि पडिऊण । जइ ते वरेण कज्जं दिक्खा-देविं समाराहे ॥

एयाइं वणिज्जाइं किसि-कम्माइं च एवं कीरमाणाइं उत्तिम-बहु-णिच्छय-फलाइं होंति ण अण्णह त्ति 'ता भो वणियउत्ता, मा णिव्वेयं काऊण पाण-परिच्चायं करेह । जइ सव्वं दुग्गच्च-णिव्वेएण इमं कुणह, ता किं तुम्ह इह पडियाणं दोहग्गं अवसप्पइ, णावसप्पइ । कहं ।

पुव्व-कय-पाव-संचय-फल-जणियं तुम्ह होइ दोग्गच्चं । ता तं ण णासइ च्चिय जाव ण णट्ठं तयं पावं ॥

एवं च तस्स णासो ण होइ जम्मे वि पडण-पडियस्स । अण्णम्मि वि एस भवंतरम्मि तह चेय तं रइयं ॥

ता मा होहिह मुद्धा अयाणुया बाल-मूढ-सम-सरिसा । अत्ताण-वज्झयारा पावा सुगइं ण पावेह ॥

तओ तेहिं भणियं 'भगवं, कहं पुण जम्मंतरे वि दारिद्दं पुणो ण होइ' त्ति । भगवया भणियं ।

'जइ कुणह तवं विउलं दिक्खं घेत्तूण गरुय-वेरग्गा । ता हो पुणो ण पेच्छह दारिद्दं अण्ण-जम्मे वि ॥'

तओ एवं च णिसामिऊणं इमेहिं भणियं 'भगवं, जइ एवं ता दारिद्द-भय-विहलाण सरणं होहि, देसु दिक्खं' त्ति । तओ कुमार, दिण्णा दिक्खा ताणं तेण मुणिणा, इमे य ते पव्वइया, मए लिहिया तवं काऊण समाढत्ता । कालेण य इमे ते चेय मरिऊण देवलोगं पाविया । पुणो तम्मि भोए भुंजिऊण एसो एक्को ताणं चविऊण देव-लोगाओ बारवई णाम णयरी तत्थ

2) J व for च, P अणग्घेय. 4) P मणघोरं भणिऊण आमम-, J एअम्मि P एतं हो for एयं हि. 6) P दंसणवंडं संड जमसमिई तवं करंकं च ।. 7) P जूयरमियं, J एअं for एवं. 8) P कडत्ते, P कत्ति for किसि. 9) P धाउवायं ते धमिउं तं. 10) P धम्महा° for महा°, P महग्गी जय सुज्झइ जीयक्कणयं. 11) P किं चि राइणो, P जुज्झिओ, J तुब्भेहिं. 12) J सव्वग्घ for सव्वण्णू, P रिओडामएहिं जुज्झसि, J -डामरेहिं जुज्झसु आ ।. 13) J मल्लत्तणं कुणह, P मल्लणं. 14) P किरिय-. 15) P किं चि अंजणजुत्तीउ, J तुब्भेहि, J सुणसु. 16) P दंसणजोगं, J सिद्धि-, P -सरिसो. 17) P सुह for असुर. 18) J पईवं. 19) P किं चि, P साहितव्वं. 20) P om. समयम्मि, P -गुरमंतो ।, P -सिद्धी लहसु. 21) J om. च, P देवता, P तुब्भे सा. 22) J ए for ते, P -देवी समाराह ।. 23) P एताइं, J एआइं अवणिज्जइ किसिकम्मादीणि एवं कीरमाणा अत्तमहुए णिच्छिअफलाइं, P adds जाइ लोयंमि । before एवं, P adds च after एवं, P त्ति भो भो वणिउत्ता. 24) J माणव्वेअं, P दोहग्गं for दुग्गच्च, P तुम्हाण इह, J दोग्गच्चं for दोहग्गं. 26) J -जलियं तुब्भ, P दोगच्चं । तं दाण, P तवं for तयं. 27) P om. वि, P चेव. 28) P होहि मुद्धा, P अत्तावज्झायारो पावा सुगयं ण पावेति ॥. 29) JP ततो, P हिं for तेहिं, P inter. पुण & कहं, P adds दा वि after वि, P होहि त्ति. 30) P कुणसि for कुणह, P दुक्खं for दिक्खं, P गुरुय-, J तम्हा for ताहो, J अण्णजम्मम्मि ॥. 31) P om. च, P दारिद्दं, P दोहि for होहिं, P om. त्ति. 32) P दिक्खियाणं for दिण्णा दिक्खा ताणं, P मुणिणो दिण्णा इमे य, P repeats जइं एवं ता etc. to मए लिहिया । तवं and adds च before काऊण. 33) J देवलोअं, J तम्मि अ भोअ भुं°, J देवलोआओ, P बारवती.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीह-रण्णो पुत्तो भाणू णाम जाओ। सो एत्थ उज्जाणे वट्टइ, तुमं जो पुण दुइओ से भाया सो अहं एयं पडं लिहिऊण तुम्ह पडिबोहणत्थं इहागओ। ता भो भो भाणुकुमार, पडिबुज्झह पडिबुज्झह। भीमो एस संसार-वासो, दुग्गमो मोक्ख-मग्गो, तरलाओ संपयाओ, हत्थ-पत्ताओ विवत्तीओ, दूसहं दारिद्दं, सो से एस जीवो, असासयाइं पयत्थाइं। अवि य।

णाऊण इमं सव्वं संसार-महण्णवे महादुक्खं। बुज्झसु भाणुकुमारा मा मुज्झसु विसय-सोक्खेहिं ॥ त्ति।

इमं च सोऊण ईहापोह-मग्गणं करेमाणो धस त्ति मुच्छिओ भाणुकुमारो। ताव य उद्धाइया पास-परिवत्तिणो वयंसया। तेहि य आसासिओ सीयलेणं कयली-दल-पवणेणं। समासत्थेण य भणियं भाणुकुमारेण।

'तं णाहो तं सरणं तं चिय अह बंधवो महापुरिस। जेण तए हं मूढो एसो सुमराविओ एण्हिं ॥
सव्वं सरियं जम्मं पुव्वं अम्हेहिँ जं कयं आसि। तं एयं सव्वं चिय चरियं अम्हेहिँ अणुहूयं ॥

§ ३०९) एवं च भणमाणो अहं णिवडिओ चलणेसु। पणाम-पच्चुट्ठिओ य पेच्छामि तं उवज्झायं। अवि य।

वर-वेजयंति-माला-परियरिए रयण-किरण-विच्छुरिए। दिव्वे विमाण-रयणे मज्झ-गयं रयण-पुंजं व ॥
वर-हार-मउड-राहं वणमाला-घोलमाण-सच्छायं। मणि-कुंडल-गंडयलुल्लसंत-दित्ती-पयासेंतं ॥

भणियं च तेण देवेणं। 'भो भो भाणुकुमार, दिट्ठो तए एस संसार-महाचक्क-वित्थरो, जायं तुह वेरग्गं, संभरिया जाई, अम्हे ते दोण्णि वि सहोयरा वणिय-दारया, पावियाइं इमाइं दोगच्च-दुक्खाइं। पुणो तेण रिसिणा संबोहिया, तओ एसा रिद्धी पत्ता। तत्थ य तुमं एक्को चविऊण समागओ। ता दुलहं मणुयत्तणं, पत्थणीयाइं सुहाइं, परिहरणीयाइं णरय-दुक्खाइं, तुलग्ग-पावणीयं जिणवर-धम्मं, ता सव्वहा ण कज्जं माणुसेहिं भोगेहिं, दिक्खं पडिवज्ज भगवंताणं साहूणं संतियं। जेण य पावेसि तुमं। अवि य।

जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं। सासय-सुहं महत्थं तं सिद्धिं पावसे जेण ॥'

एवं च कुमार, तेण देवेणं भणिए समाणे, मए उम्मुक्काइं तक्खणं चेय आभरणाइं, कयं सयं चेव पंच-मुट्ठियं लोयं उत्तिमंगे, उवणीयं च तेण य दिव्वेणं रयहरण-मुहपोत्तिया-पडिग्गहादीयं उवगरणं, णिक्खंतो उज्जाणाओ। ताव य हाहा-रव-मुहलो वयंस-भिच्च-सत्थो उद्धाइओ सीह-रण्णो सयासं। अहं पि तेण देवेण तम्हाओ पदेसाओ अवहरिय इह पदेसे मुक्को। संपयं पुण कं पि आयरियं अण्णिस्सामि जस्स मूले पव्वज्जं करेमि त्ति। ता इमिणा वुत्तंतेण एत्थ वणे अहं इमिणा य पव्वइओ त्ति। इमं च णिसामिऊण भणियं च कुमारेण। 'अहो, महंतो वुत्तंतो सुंदरो एस संसार-चक्क-पओओ, णिउणो य भाया दिव्वो। कयं तुह भाउयत्तणं, तेण पुण्णवंतो तुमं जेणं इमं पावियं' ति। इमं च सोऊण महिंदकुमारेण वि गहियं सम्मत्तं, पडिवण्णाइं अणुव्वयाइं। भणियं च महिंदेण 'अहो, एरिसो तुमं अम्हाणं णिण्णेहो जेण भगवओ धम्मं णाचिक्खियं'। कुमारेण भणियं। 'महिंद, पुव्व-विहियं एयं णियय-परिणामेण पाविज्जइ' त्ति भणिऊण वंदिऊण साहुं उवगया आवासं ति। भणियं च कुवलयचंदेण। 'अहो एरिसो एस जिणवर-मग्गो दुग्गमो जेण बहुए जीवा मिच्छा-वियप्प-वामूढा परिब्भमंति संसारे, ण उण सयल-तेलोक्क-पयड-रूवं पि इमं जिणधम्मं पावंति। ता ण-याणामो किं कम्माणं बलवत्तप्पणं, आदु जीवस्स मूढत्तणं, किं वा जिण-मग्गस्स दुलभत्तणं, किं वा विहाणं एरिसं चेय सयल-जग-जीव-पयत्थ-वित्थरस्स' त्ति। एवं भणमाणा केवलि-जिण-साहु-धम्म-सम्मत्त-कहासुं महिंदकुमारस्स दढं सम्मत्त-परिणामं जाणेमाणा संपत्ता तं खंधावार-णिवेसं। तत्थ कय-कायव्व-वावारा पडियग्गिय-सयल-सेणिय-जणा पसुत्ता। राईए वि पुणो विमले गयणंगणे णिवडमाणेसु तारा-णियरेसु, संचरमाणेसु हरि-णउलेसु गुहा-मुहेसु, राई-खेय-णीसहेसु मयवईसु, चरमाणेसु महाकरि-जूहेसु, करयरेंतेसु वायस-सउणेसु, णिलुक्कमाणेसु कोसिय-संघेसु, सव्वहा

कुंकुम-रायारत्ता सूरं दइयं व मग्गए एंतं। पुव्व-दिसा महिला इव णहयल-सयणं समारूढा ॥

1) J adds य after सो and च after तुमं, J adds सो and P adds सोऊण before जो पुण, P इमं for एयं. 2) P भाणकुमार, P ति for second पडिबुज्झह, J भो भो for भीमो, J दुग्गे for दुग्गमो. 3) P om. पत्ताओ विवत्तीओ etc. to महादुक्खं। बु°. 5) J ईहापूह, P विमग्गणं for मग्गणं, J मुद्धाइया P उद्धाइय, P परियत्तणो, J वयंस तेहि. 6) J om. कयलीदल, J adds ति after भाणुकुमारेण. 7) J मह for अह, P एण्हं. 8) P om. जम्मं पुव्वं अम्हेहिँ, J om. तं, J om. चिय. 9) P पणामि पच्चुट्ठिओ. 10) P कणय for किरण. 11) P सोहं for राहं. 12) P जाती. 13) J om. वि, P पवियाइं, P दोगच्च, P om. तेण. 14) P om. य, P चविओ समाउगओ, P माणुसत्तणं. 15) P om. णरय, P णु for ण. 16) P om. अवि य. 17) P णेय माणुसं दुक्खं सासयसुहपरमत्थं तं. 18) P कुमारेणं देवेणं, P समाणो, P सयं वे मुट्ठियं लोवे उत्तिमंगे, J उत्तमंगे. 19) P दिव्वेयं, J परिग्गहादीअं उवकरणं णिक्खंताओ, P हा for हा हा. 20) P om. भिच्च, P पएसाओ, P पएसे. 21) P पुण किं पि, P om. अहं इमिणा य. 22) P च णेसामिऊण, P om. वुत्तंतो, J om. चक्क, P पओतो. P य साया दिव्वा. 23) J पुण्णभंतो, P एवं for इमं, J °कुमारेणावि. 24) J धम्म, P णाविक्खियं. 25) J णिय°, J साहुं, 26) J om. भणियं च कुवलयचंदेण, P परिभमंति. 27) P adds ता ण धम्मं पावंति after पावंति, P बलवत्तएणं, P आउ for आदु. 28) P om. किं वा जिणमग्गस्स दुलभत्तणं, J जय for जग, J om. पयत्थ. 29) P भणमाणो, P जाणेमाणो संत्ता पत्तो तं खंणवार, J खंधारणिवेसं. 30) J adds य after तत्थ, P inter. पुणो & वि, J adds वि after पुणो. 31) P रातीसु for राईखेयणीसहेसु मयवईसु, P करयरंतेसु. 32) J वायसउलेसु. 33) J रायारइयासूरं, P दइय त्ति, P एतं।, J - सयलं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३१०) एरिसम्मि य समए दिण्णं पयाणयं ताव जा संपत्ता कमेण विंझ-सिहरासण्णं, तत्थ य समावासिया । तओ कय-दियह-सेस-परियारा कय-राई-वावारा य णिसण्णा सयणिज्जेसु । तओ कय-सयल-वावारो उवविट्ठो सयणयले कुमारो कुवलयमाला य । तत्थ य अच्छिऊण कं पि कालं वीसंभालाव-णिब्भरा, पुणो कय-अरहंत-णमोकारा कय-जहा-विचिन्तिय-पच्चक्खाणा य णिवण्णा सयणयले, पुणो सयल-खेय-णीसहा पसुत्ता । थोव-वेलाए य विबुद्धो कुमारो जाव तीए राईए दियड्ढं जामं ति पलोयंतेण गयणयलं दिट्ठं एक्कम्मि विंझ-गिरिवर-कंदरालंतरम्मि जलणं जलमाणं । तं च पेच्छिऊण वियप्पिउं समाढत्तो कुमारो । 'अहो, किं पुण इमं, किं ताव एस वणदेवो । सो ण होइ, तेण वित्थारेण होयव्वं, इमं पुण एक्कत्थ पएसे । अह होज्ज वसिमं, तं पि एत्थ णत्थि । अह चिंति होज्ज, सा वि ण संभावीयइ । दीसंति य एत्थ पासेसु परिब्भममाणा के वि पुरिसा । किं वा ण होंति पुरिसा, रक्खसा पिसाया वा एए । ण मए दिट्ठा रक्खसा पच्चक्खं । ता किं ण पेच्छामि के एए । किं वा एत्थ पज्जलइ' त्ति चिंतिऊण सुइरं णिहुयं समुट्ठिओ कुवलयमालं मोत्तुं पल्लंकाउ त्ति । णिबद्धा छुरिया । गहियं खग्ग-रयणं वसुणंदयं च । णिहुय-पय-संचारं वंचिऊण जामइल्ले गंतुं पयत्तो, तं जलणं थोय-वेलाए य पवण-मण-वेओ कुमारो संपत्तो थोवंतर-संठियमुद्देसं थोवंतरेण य णिहुओ ठिओ कुमारो, दे किं वा एए मंतयंति, के वि रक्खसा वा पुरिसा व त्ति । तओ ते य जंपिउं पयत्ता । 'अरे लक्खह जलण-जालाओ । किं ताव पीताओ, आदु लोहियाओ, किं वा सुक्किलाओ, किं वा कसिण' त्ति । तओ अण्णेण भणियं 'अरे, किमेत्थ लक्खियव्वं । इमं जालाए लक्खणं । तं जहा ।

तंबम्मि होइ रत्ता पीता कणयम्मि सुक्किला रयए । लोहे कसिणा कंसम्मि णिप्पभा होइ जालाओ ॥
जइ आवट्टं दव्वं ता एसा होइ अहिय-रेहिल्ला । अह कह वि अणावट्टो स च्चिय मउया य विच्छाया ॥

अण्णे उण भणंति ।

लक्खेह अग्गियम्मं णिउणा होऊण सव्व-बुद्धीए । राहा-वेह-समाणं एयं दुल्लक्खयं होइ ॥
जइ मउयं ता कीं खर-जलणे होइ फुट्टणं कणयं । मउयं वंग-विहीणं अज्ज वि बहुए ण जाणंति ॥'

अण्णेण भणियं । 'किमेत्थ जाणियव्वं,

जह दीसइ अग्गि-समा मूसा-अंतो कढंत-धाउ-रसा । जह य सिणिद्धा जाला तह कालो होइ वावस्स ।'

एवं च जंपंता णिसुया ।

§ ३११) कुमारेण चिंतियं च । 'अहो धाउवाइणो इमे तण्हा-वस-विणडिया वराया पिसाय व्व अडईए गिरि-गुहासु य परिभमंति । ता किं देमि से दंसणं, अहवा ण दायव्वं दंसणं मए इमाणं । कयाइ कायर-हियया एए मं दट्ठूणं दिव्वो त्ति संभाविऊण भय-भीया दिसोदिसं पलाइस्संति विवज्जिस्संति वा । ता इहट्ठिओ चेय इमाणं वावारं पेच्छंतो अच्छिस्सं' त्ति ठिओ । भणियं च तेहिं 'अहो, एस अवसरो पडिवावस्स, दिज्जउ पडिवावो णिसिप्पउ धाऊ-णिसेगो' त्ति । भणमाणेहिं सव्वेहिं चेय पक्खित्तो सो चुण्ण-जोगो मूसाए । अवसारिया मूसा । पक्खित्ते णिसेगे थोय-वेलाए य णियच्छियं जाव तंबयं जायं । तओ वज्जेणेव पहया, मोग्गरेणेव ताडिया, जम-डंडेणेव डंडिया विमणा णिरासा सोयाउरा 'धिरत्थु जीवियस्स'त्ति भणिऊण अवरोप्पर-वयणावलोयण-विलक्खा जंपिउं समाढत्ता 'भो भो भट्टा, कहिं भणह सामग्गीए जोओ ण जाओ, जेण कणयं ति चिंतियं सुब्वं जायं' । तओ एक्केण भणियं । 'दिट्ठ-पच्चओ एस जोगो, सुपसिद्धं खेत्तं, कुसलो उवज्झाओ, णिउणा णरिंदा, सरसाओ ओसहीओ, सोहणं लग्गं, दिण्णाओ बलीओ । तह वि विहडियं सव्वं । णत्थि पुव्व-पुण्णो अम्हाणं । को अण्णो संभवो एरिसस्स वि विहडणे, ता एवं गए किं संपयं करणिज्जं' ति । तओ तेहिं भणियं 'पयट्टह वच्चामो गामं, किं अवरं एत्थ करियव्वं' ति भणमाणा चलिया । भणिया य कुमारेण 'भो भो णरिंदा, मा

1 > P मए for समए, P om. य. 2 > J आगया for कय (before राई), P रोती for राई-, J णिसण्णो, P adds सम्मा before सयणिज्जेसु. 3 > J णमोकारा. 4 > J om. सयल, J णीसहो पसुत्तो थोअवेलाए, P उवविट्ठो for विबुद्धो, J om. तीए, P रातीए दिवड्ढजायं. 5 > J पलोएंतेण, P विअप्पिअं. 6 > J om. अहो, J om. किं before ताव, P एकत्थ. 7 > P वो for होज्ज, J संभावीयति P संभावीअत्ति, P परिभममाणा. 8 > JP एते, J adds ता and P adds ए before ण मए, P किं for के, JP एते. 9 > J वा एतं एत्थ पज्जालइ (ओ?), J सइरं for सुइरं, P मोत्तूणं for मोत्तुं. 10 > P रयणी for रयणं, P वि for च, P पयसंचारो, P जलमालं for जलणं, J repeats तं जलणं, J थोव-. 11 > J adds तं before थोवंतर, J संठिअं उद्देसं P सद्वियमुद्देसं ।, J थोअंतरेण, P ट्ठिओ, P om. दे, JP एते. 12 > J वचंति for व त्ति, P जंपियं, P पयत्तो, P लक्खेह, P repeats अरे लक्खेह जलणजालाओ, P आउ for आदु, J लोहिताओ. 13 > P ततो, P एक्केण for अण्णेण, P adds इमं जालाए लक्खियव्वं । before इमं जालाए etc. 14 > P रयते ।, P कसिण त्ति कंसंमि णिप्पिहा होइ. 15 > J एस होइ, P om. कह, P अणावट्टासिव्वय मउआ य. 16 > J om. उण. 17 > P णिऊण होऊण, P सव्व बुद्धाए, P °वेहरस माणं. 18 > P तो for ता, P मउयवगविहीण. 20 > P सणिद्धा जा तह, J झाला for जाला. 21 > P जंपंतो. 22 > J धाउव्वाइणो, P अडतीए. 23 > P om. मए इमाणं, P ए for एते. 24 > J भयभीता, P दिसादिसं, P repeats पलाइस्सं, J विवज्जिअंति, P °ट्ठिओ ।. 25 > P दिज्जइ, J -णिसेगित्ति. 26 > P जोग्गो, J अवसरिआ, J पक्खित्तो, P तं for य. 27 > P तंबं जायं, P वज्जेण व हया, P मोग्गरेण व, J जमडंडेण व P जमदंणेव मंडिया, P साआउरा. 28 > P जीवियस त्ति, P वयणावलोवलक्खा, J भट्टो for भट्टा, P om. कहिं, J भण, P adds किं after भणह. 29 > P तंबं for सुव्वं, J जोओ, P सुपसिद्धक्खेत्तं. 31 > P पुव्वपुन्नाइ अम्हाणं, P परिसस्स वि. 32 > P पट्ट वच्चामो, J अपरं, P णरिंद, P writes मा वच्चह thrice.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वच्चह, मा वच्चह' त्ति । इमं च णिसामिऊण संभम-वस-पसरिय-दिसिवह-लोल-लोयणा भीया कंपंत-गत्ता पलाइउं पयत्ता । तओ भणियं कुमारेण 'भो भो मा पलायह, अहं पि णरिंदो कुतूहलेण संपत्तो, ण होमि रक्खसो ।' 'मा पलायह' त्ति भणिया संठिया । संपत्तो कुमारो । भणिया य कुमारेण 'सिद्धि सिद्धि' त्ति । पडिभणियं तेहिं 'सुसिद्धि सुसिद्धि सागयं महाणरिंदस्स, कत्तो सि आगओ' । कुमारेण भणियं 'अहं पि णरिंदो चेय, एयं चिय काउं इह समागओ अयोज्झाओ' त्ति । तेहिं भणियं 'सुंदरं एयं, किं अत्थि किंचि सिद्धं णिव्वीयं अहवा होइ रस-बंद्धो अद्ध-किरियावसिद्धो पाओ अहवा विउक्करिसो । कुमारेण भणियं ।

'जइ होइ किंचि दव्वं होंति सहाय व्व णिउणया केइ । ओसहि-जोयउ अक्खर ता सिद्धं णत्थि संदेहो ॥'

तओ सव्वेहि मि भणियं 'एवं एयं, ण एत्थ संदेहो । किंतु तुह किंचि सिद्धं अत्थि' । कुमारेण भणियं 'कहं जाणह जहा मह सिद्धं' । तेहिं भणियं 'अत्थि लक्खणाइं सिद्ध-पुरिसस्स' । कुमारेण भणियं 'केरिसाइं सिद्ध-पुरिस-लक्खणाइं, भणह' । तेहिं भणियं 'सुणसु,

जो सव्व-लक्खण-धरो गंभीरो सत्त-तेय-संपण्णो । भुंजइ देइ जहिच्छं सो सिद्धी-भायणं पुरिसो ॥

इमाइं च लक्खणाइं सव्वाइं तुज्झ दीसंति । ता साहसु किं तुह सिद्धं, किं ता अंजणं, आउ मंतो, आउ तंतो, किं व जक्खिणी, किं वा काइ जोइणी, किं वा रक्खसी पिसाई वा । किं वा तुमं, को वि विज्जाहरो देवो वा अम्हे वेलवेसि दुक्खिए । ता साहिज्जउ, कीरउ पसाओ' त्ति । भणियं च कुमारेण 'अहं माणुसो णरिंदो, ण य मम किंचि सिद्धं' ति । तेहिं भणियं 'सव्वहा अवस्सं तुह किं पि सिद्धं, तेण एत्थ महा-विंझ-कुहरंतरे सरस-मयणाहि-दिव्व-विलेवण-पसरमाण-परिमलो अहिणव-समाणिय-तंबोलो दिव्व-कुसुम-विलइज्जमाण-कय-मुंड-मालो तक्खण-सूइज्जंत-बहल-दइया-दिव्व-परिमलो झत्ति इहं संपत्तो णिम्माणुसे अरण्ण-देसे' त्ति ।

§ ३१२) चिंतियं च कुमारेण । 'अहो, इमाणं गरुओ अणुबंधो, तं जं वा तं वा उत्तरं देमि' त्ति चिंतयंतेण भणियं । 'जइ एवं ता णिसुणेसु । अत्थि दक्खिण-समुद्द-वेला-लग्गं विजयं णाम दीवं । तत्थ य कुवलयमाला णाम जक्खिणी, सा मह कहं पि सिद्धा, तीय एसो पभावो परिमलो य' त्ति । तओ तेहिं भणियं 'अहो, एवं एयं ण एत्थ संदेहो, केण उण एरिसं मंतं तुह दिण्णं' ति । कुमारेण भणियं 'अण्णेण महामुणिणा दिण्णो' त्ति । तेहिं भणियं 'अहो, महप्पभावो मंतो जेण आगरिसिया तए जक्खिणि' त्ति । कुमारेण भणियं 'तुम्हे उण किमेत्थ काउमाढत्तं' । तेहिं भणियं 'अउण्ण-फलं' ति । कुमारेण भणियं 'तह वि साहह मे, केरिसो जोओ एसो समाढत्तो' । तेहि भणियं 'जइ फुडं सीसइ ता णिसुणेसु । एत्थ विंझ-गिरिवरे एयं खेत्तं एयम्मि पएसे तं च अम्हेहि धमिउमाढत्तं । तं च ण सिद्धं सुलुव्वं णिव्वडियं, कणयं तु पुत्थए लिहियं' । कुमारेण चिंतियं । 'ता ण-याणीयइ केरिस-दव्वेहिं वावो पडिबद्धो णिसेओ वा कओ इमेहिं' ति चिंतयंतेण भणियं 'अहो, इमं ताव खेत्तं, ता इमस्स कहं पिंडी बद्धा, कहं वा पडिवाग-णिसेए कए' । तेहिं सव्वं कहियं 'इमं इमं च दव्वं' ति । तओ कुमारेण चिंतियं 'अहो विरेयणाइं दव्वाइं, तह वि ण जायं कणगं' ति । ता किं पुण इमाणं एरिसं जायं ति । हूं, अत्थि अवहरियं तं इमाणं' । चिंतयंतेण भणियं कुमारेण 'अहो, गेण्हह सज्जेह दव्वं, धमह तुब्भे अहं पडिवायं देमि । जइ अत्थि सत्ती रक्खसाणं वंतराणं वा अवहरंतु संपयं' ति भणमाणस्स सव्वं सज्जीकयं, धमिउं समाढत्ता । थोव-वेलाए य जाणिऊण जाला-विसेसं कुमारेणं अवलंबिऊण सत्तं णमोक्कारिया सव्व-जय-बंधवा जिणवरिंदा, पणमिया सिद्धा, गहियं तं पडिवाय-चुण्णं, अभिमंतियं च इमाए विज्जाए । अवि य 'णमो सिद्धाणं णमो जोणी-पाहुड-सिद्धाणं इमाणं' । इमं च विज्जं पढंतेण पक्खित्तं मूसा-मुहम्मि, धग त्ति य

1 > J भीअकंपत. 2 > P महा for मा. 3 > P भडिमडिणियं सुद्धिसिरतेहिं य सागयं for पडिभणियं etc. 4 > J एयं च्चि काउं, P चेव पयंचियं. 5 > P om. अयोज्झाओ, J adds त्ति after णिव्वीयं, J अहवा होराइ रसबंधो, P अद्धकिरियावसिद्धा पाउ णहवा. 6 > J पातो for पाओ. 7 > J जं किंचि अत्थि दव्वं for जइ etc., P अखरसिद्धि. 8 > P वि for मि, P तु for तुह. 9 > J मम P महा for मह, P सिद्धि ।, P पुरिसस्स लक्ख°. 11 > J हरो for धरो, P संपुन्नो ।. 12 > P तायंजणं, J आतु, J om. आउ तंतो, P रंतो for तंतो. 13 > P किं रक्खसी पिसाती, P वेलवेमि. 14 > J दुक्खए, P अहो for अहं, J सिद्ध त्ति ।. 15 > P मज्झ विंझकुहरंतरं, P दिव्वेविलेव पसर°. 16 > P कयकुंडमालो. 18 > P इमाणं गुरुयाणुबंधो, J अणुबद्धो ता जं, P चिंतियंतेण. 19 > J समुद्दे, J om. य, P जा for सा. 20 > P एस भावो परिमलो व त्ति, P om. ण. 21 > J महापभावो. 22 > J तुब्भे for तुम्हे. 23 > J om. कुमारेण भणियं, J om. मे, J एसमाढत्तो. 24 > J धमिउं समाढत्तं P धंमिउमाढत्तं, P च णिमुद्धं सुव्वं णिव्वत्तियं. 25 > P पढियं for लिहियं, J om. ता, J णयाणसि केरिस, P पडिबंधो, J णिसिओ वा कतो°. 26 > J तेण for चिंतयंतेण, P om. भणियं, P पडिबंधो for पिंडी बद्धा, J om. पडिवाग, J णिसेते कते तेहिं अ सव्वं. 27 > P repeats दव्वाइं, J कणयन्ति. 28 > J om. चिंतयंतेण भणियं कुमारेण, P चिंतियंतेण, P om. अहो, J om. गेण्हह. 29 > J सज्जोह P धंमह तुम्हे अहं, J ... वाव देमि, P om. जइ, P om. वा. 30 > P सज्जीककयं धंमिउमाढत्ता, J अविलंबिऊण. 31 > J पणमिता, P अहमंतियं. 32 > J सिद्धादि for इमाणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जलिया मूसा ओसारिया य, णिसित्ता णिसेएण थोव-वेलाए णियच्छियं जाव विज्जु-पुंज-सच्छयं कणयं ति। तं च दट्ठूण सव्वे पहरिस-वसुल्लसंत-रोमंचा णिवडिया चलणेसु कुमारस्स, भणिउं च पयत्ता। 'णमो णमो महाणरिंदस्स। अहो अच्छरियं। तं चेयं खेत्तं, तं चेय चुण्णं, सो चेय णिसेओ। अम्हं तंबं जायं, तुह पुण हेमं ति। अत्थि पुरिस-विसेसो त्ति। ता साह, एस को विसेसो' त्ति भणिए संलत्तं कुमारेणं 'भो भो तुम्हे सद्धाभिसंकिणो सत्त-मंत-रहिया। मए पुण सत्तं अवलंबियं, पणमिओ इट्ठ-देवो, मंतं पढियं, तेण मह सिद्धं एयं, ण उण तुम्हाणं' ति। तेहिं भणियं 'देसु अम्हाणं तं मंतं, साहसु य तं सिद्ध-देव-सुयं ति'। कुमारेण भणियं। 'एत्थ अधिकय-देवओ भगवं सव्वण्णू जेण एयं सव्वं जोणीपाहुडं भणियं, ता तस्स णमोक्कारो जुज्जइ। मंतो 'णमो अरहंताणं णमो सव्वसिद्धाणं' ति भणंतो समुट्ठिओ कुमारो 'वच्चामि अहं' ति। तओ तेहिं ससंभमं पायवडिएहि भणिओ 'देव, पसीदसु करेसु पडिवज्जसु ओलग्गं ति। तुब्भे उवज्झाया, अम्हे चट्ट' त्ति। कुमारेण भणियं 'दिण्णा मए तुम्हाणं विज्जा। संपयं जं चेह कुणह तं चेय सिज्झइ त्ति। पडिवण्णा य मए ओलग्गा। जइया कहिंचि कुवलयचंदं पुहईवइं सुणेह तइया आगंतव्वं' त्ति भणमाणो पत्थिओ कुमारो मण-पवण-वेगो तं चेय दिसं जत्थागओ, संपत्तो कडय-संणिवेसं उवगओ सयणीयं जाव कुवलयमाला विउद्धा ससंभम-पसारिय-लोल-लोयणा ण य तं पेच्छइ। कुमारं अपेच्छंती य चिंतिउं पयत्ता 'कत्थ मण्णे गओ मह दइओ, किं कत्थइ जुयइ-वियप्पेण, अहवा मंत-साहणेणं, अह विज्जाहरीहिं अवहरिओ, किं णु एयं' ति चिंतयंतीए झत्ति संपत्तो पुरओ। तओ सहरिसाए गहिओ कंठे वीसत्थो य पुच्छिओ। 'देव, जइ अकहणीयं ण होइ, ता साहिज्जउ कत्थ देवो गओ' त्ति। कुमारेण भणियं। 'किं तमत्थि जं देवीए ण साहिज्जइ' त्ति भणिऊण साहिओ सयलो धाउव्वाइय-वुत्तंतो त्ति।

§ ३१३) भणियं च कुवलयमालाए 'देव, सव्व-कला-पत्तट्ठा किल अहं, एयं गुरुणो समाइसंता, इमं पुण णरिंद-कलं ण-याणिमो। ता कीस ममं ण होसि तुमं उवज्झाओ' त्ति। कुमारेण भणियं 'सुंदरि, कीस उण सयल-कला-कलाव-पत्तट्ठाए वि होऊण एयं ण सिक्खियं' ति। तीए भणियं 'अज्जउत्त, किर एत्थ णत्थि फलं, वादो चेय केवलं'। कुमारेण भणियं 'मा एवं भणह। अवि य।

अवि चलइ मेरु-चूला सुर-सरिया अवि वहेज्ज विवरीया। ण य होज्ज किंचि अलियं जं जोणी-पाहुडे रइयं॥'

तीए भणियं 'जइ णाह, एवं ता कीस एए धाउव्वाइणो णिरत्थयं परिब्भमंता दीसंति'। कुमारेण भणियं। 'अत्थि णिरत्थया णरिंदा जे सत्त-परिहीणा सोय-परिवज्जिया अबंभयारिणो तण्हाभिभूया लुद्धा मित्त-वंचणपरा कयग्घा अदेव-सरणा मंत-वज्जिय-देहा असहाया अयाणुया अणुच्छाहिणो गुरु-णिंदया असद्दहमाणा अलसायंति। अवि य।

जे एरिसा णरिंदा आगम-सत्तेहिँ वंचिया दूरं। रंक व्व चीर-वसणा भमंति भिक्खं खल-णरिंदा॥

जे उण विवेगिणो उच्छाहिणो बंभयारिणो जिइंदिया अलोलुया अगव्विया अलुद्धा महत्था दाण-वसणिणो मित्त-वच्छला गुरु-भत्ता देव-पूयया अभिउत्ता मंतवाएसु ताणं णीसंसयं सिद्धि त्ति। अवि य।

जे गुरु-देवय-महिमाणुतप्परा सयल-सत्त-संपण्णा। ते तारिसा णरिंदा करेंति गिरिणो वि हेममए॥'

कुवलयमालाए भणियं 'जइ एवं, ता कीरउ पसाओ साहिज्जउ मज्झ इमं' ति। कुमारेण भणियं।

'किरियावाइ णरिंदा धाउव्वाई य तिण्णि एयाइं। लोए पुण सुपसिद्धं धाउव्वाई इमे सव्वे॥
जो कुणइ जोय-जुत्तिं किरियावाई तु सो भवे पुरिसो। जो उण बंधइ णिउणो रसं पि सो भण्णइ णरिंदो॥
जो गेण्हिऊण धाउं खेत्ताओ धमइ खार-जुत्तीए। सो किर भण्णइ पयडं धाउव्वाई जणे सयले॥
किरिया बहू वियप्पा णिब्बीया होइ पाय-वीया य। अद्ध-किरिया य पयडा पाओ तह होइ उक्करिसो॥
सा हेम-तार-भिण्णा दुविहा अह होइ सा वि दुवियप्पा। कट्ठ-किरिया य पढमा दुइया सरसा भवे किरिया॥

1) P पज्जलियाओ मूसाओ, J णिसेयत्थोअ-, P णिसेतेग, J adds य before णियच्छियं, P विज्जपुंज. 2) P सव्वपहारिस-वसूल्लसंतरोमंच, J वसूसलंत, P कुभणियं for भणिउं. 3) P हेमन्ति. 4) J तुब्भे for तुम्हे, P om. सद्धाभिसंकिणो, J om. सत्त. 6) P adds हसु after साहसु, J देवयं for देवसुयं, P om. कुमारेग भणियं। 'एत्थ etc. to अम्हे चट्ट' त्ति।, J अधिकअ-देवतो. 9) J चट्टंति. 10) J वेओ for वेगो. 11) J सणियं for सयणीयं, P पसरिय. 12) P om. य before चिंतिउं, P कण्ण for कत्थ, P कत्थ वि जुवइ. 13) J किण्ण P किण्णु एत त्ति, J चिंतयंतीय, P तइ for तओ, J सहरिसाय. 14) P जइ कहणीयं ण होत्ति ता, P किमेत्थ for किं तमत्थि. 15) J सयलधा°, JP धाउव्वातिय. 16) P दिव्व for देव, J एतं, P om. एयं. 17) JP पत्तट्ठा य वि. 18) P य for एयं, J तीअ, P om. णत्थि फलं, J वातो for वादो, P केवलो णत्थि फलं। कुमारेण. 19) J भण for भणह. 20) P मूरुचूला, P अवि इवेज्ज. 21) J तीय, P धाउव्वाइणा, J णीरत्थयं, P परिभमंता. 22) P जे स परिवज्जिया, J तण्हाभिभूता लद्धा मित्तवथेण परा, JP यदेव for अदेव, P सन्नि for मंत. 23) अलसत्ति। अवि य. 24) P जे पुरिसा णतरिदा, P रंकवच्चीर, P तिक्खं for भिक्खं. 25) P om. उच्छाहिणो बंभयारिणो J जितिंदिया, J om. अलोलुया, J अणुद्धा, P दाणवणवसणिणो, J वच्छलो. 26) J मंतवातेसु. 27) P गुण for गुरु, P महिमाण-तप्परा, P om. सत्त, J हेममये. 29) JP किरियावाति, P णरिंदो, J धाउव्वाआ P धाउव्वाती, JP एताइं, J धातुव्वाती, P धाउव्वाओ इमो सव्वो. 30) J किरियावाती, P उ for तु, P रसं मि सो. 31) J खेत्तातो, J धातुव्वाती P धाउव्वाती, P सयलो. 32) P होति, J पादवीआ य, J पातो तह. 33) P होति सा वियप्पा अद्धकिरिया पढमा, J दुतिया.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह वाव-णिसेगेहिं दव्वेणेक्केण दव्व-जोएहिं । तह धाउ-मूल-किरिया कीरइ जीवेहिँ अण्णा वि ॥
एवं बहू वियप्पा किरिया सत्थेसु सुंदरि पसिद्धा । ते सारोदाहरणे वाहिप्पंते णिसामेहि ॥
णागं गंधं सुव्वं घोसं तह तार-हेम-तिक्खाई । सीस-तउ-तंब-कंसं रुप्प-सुवण्णाइँ लोहं च ॥
खारं तहा पसिद्धं सूयय-कुण्डी य तालयं चेय । णाइणि-भमराईयं एसा भासा णरिंदाणं ॥
एसो धाउव्वाओ सुंदरि वोच्छामि संपयं एयं । सयलं णरिंद-वायं अहवा को भाणिउं तरइ ॥

§ ३१४) ताव य पडु-पडह-पडिरव-संखुद्ध-विउद्ध-वण-सावय-सहस्स-पडिरवुच्छलंत-बहल-हलबोल-हलहलाऊरमाण-दस-दिसं पहयं पाहाउय-मंगल-तूरं । ताव य णिवडंति तारया, गलियप्पभो णिसाणाहो, ऊसारिज्जंति दिसि-मुहाइं, वड्डए गयणयलं, पणस्सए तिमिरं, अरुणारुणा पुव्व-दिसा, पलवंति वण-कुक्कुडा, पलायंति रिच्छा, पविसंति गुहासु मइंदा, गुविल-मल्लियंति वग्घा, करयरेंति सउणया, मूइज्जंति घूया, करयरंति रिट्ठा । दिणयर-णरवर-कर-णियर-विलुप्पणा भीय व्व झीण-विमणा पईव-कुडुंबिणो त्ति । एत्थंतरम्मि पढियं बंदिणा । अवि य ।

णासेंतो तिमिरयं पि विछायइ ससि-बिंबयं । विमलंतो दिसि-मुहाइँ अंधीकरेइ घूययं ॥
विहडेंतो संगमाइं मेलेंतो चक्कवायए । ओलग्गइ भुयणम्मि दिणयर-कर-पब्भारओ ॥
इय एरिसे पभाए णिद्दं मोत्तूण णाह दइयं व । कीरंतु अवक्खेयं गुरु-देवय-पणइ-कज्जाइं ॥

इमं च पढियं णिसामिऊण कुमारेण भणियं ।

'सुंदरि एस पभाया रयणी संपयँ गुरु-देव-बंधु-कज्जाइं । कीरंति इमाइँ वणे अच्छउ पासत्थ-उल्लावो ॥'

भणमाणा णिम्मल-जल-विमलिय-वयण-कमला पविट्ठा देवहरयं । 'णमो जिणाणं' ति भणमाणा पणमिया भगवंताणं कमल-कोमलेसु चलण-जुवलेसु । तओ पुण भणिउमाढत्ता ।

सुप्रभातं जिनेन्द्राणां धर्मबोधिविधायिनाम् । सुप्रभातं च सिद्धानां कर्मौघघनघातिनाम् ॥
सुप्रभातं गुरूणां तु धर्मव्याख्याविधायिनाम् । सुप्रभातं पुनस्तेषां जैनसूत्रप्रदर्शिनाम् ॥
सुप्रभातं तु सर्वेषां साधूनां साधुसंमतम् । सुप्रभातं पुनस्तेषां येषां हृदि जिनोत्तमाः ॥

एवं च थुणिऊण कयं कायव्वं । ताव य सजल-जलय-गंभीर-धीर-पडिसद्द-संका-विद्दाण-सरोयर-रायहंस-कुल-कलयल-मुहला अप्फालिया पयाणय-ढक्का । तेण य सद्देण जय-जयासद्द-मुहलो विबुद्धो सव्व-खंधायार-परियणो सामग्गिउं पयत्तो सव्वभंडोवक्खराइं । किं च कीरिउं पयत्तं । अवि य कच्छिज्जंति गइंदे, पल्लाणिज्जंति तुरंगमे, भारिज्जंति करहे, भरिज्जंति बइल्ले, जुप्पंति रहवरे, जोइज्जंति सयडे, उट्टाविज्जंति भारिए, संभाविज्जंति जंपाणिए, संभारिज्जंति कम्मयरए, संजमिज्जंति भंडयरे, संवेल्लिज्जंति पडउडीओ, परिहिज्जंति समायोगे, घेप्पंति य सर-सरासण-झस-चक्क-कोंतासि-णिवहे पक्कल-पाइक्क-णिवहेणं ति ।

उट्ठेसु वच्च तूरसु गेण्हसु परिसक्क तह पयट्टाहि । उच्छलिए बहल-बोले गोसग्गे तं बलं चलियं ॥

कुवलयमाला वि समारूढा वारुयं करिणिं । कुमारो वि विविह-तुरय-खर-खुरग्गुद्दारिय-महियलुच्छलंत-रय-णियर-पूरमाण-दस-दिसामुह-णिरुद्ध-दिणयर-कर-पसर-पसरियंधयार-दुद्दिण-संकास-हरिस-तंडविय-सिहंडि-कलाव-रेहिरं वणं खणंतो गंतुं पयत्तो । अणवरय-पयाणएहिं संपत्तो अत्तणो विसय-संधिं । ताव य महिंदेण पेसिओ सिरि-दढवम्मराइणो वद्धावओ जहा कुमारो संपत्तो त्ति । तं च सोउं राया वि सहरिस-वस-समुच्छलंत-रोमंच-कंचुओ णीहरिओ सपरियणो संमुहं गंतुं पयत्तो । पहाइओ कुमारस्स वद्धावओ जहा महाराया संपत्तो त्ति ।

1) P णिसागेहिं, J धातु-, J अण्णे वि. 2) P सव्वेसु सुंदरि, P ते सागेता हरणे साहिप्पंते णिसामेह ॥. 3) P वंगं for गंधं, J तिक्खत्ती P तिक्खाती, P तंबा-. 4) J सूतय, P तालसंचेया, J भवगातीयं P भमरादीतं. 5) J धातुव्वातो, J पेच्छामि for वोच्छामि, P अहवा भणिउं. 6) J adds पडिअ before पडु, P संखुव्व-, J मुद्ध for विउद्ध, P -पडिरावुद्धलंद-. 7) J गलिअप्पभो, P ऊरिसारिज्जंति, P वट्टए. 8) J रच्छा P तिरिच्छा for रिच्छा, P गुहासु सिंघा गुव्विसंतिमल्लियंति. 9) P करयरंति, J करयरेंति before रिट्ठा, J दीस for भीय, P भीय व्वझीणविमाणा पतीवकुटुंबिणो. 11) J तिमिरचयं, P विच्छाअयससि-. J puts danda after विमलं, J अंधीअरेइ P अधीकरेइ. 12) P विहडंतो, J चक्कायए, P ओलगइं उअगइ, J भुअणयम्मि, 13) P पभाइए, J णिंदं for णिद्दं, P कीरओ सच्चक्खेवयं, P पणयकज्जाइं. 14) P inter. भणियं & कुमारेण. 15) J एसा पभाया, J देवय for देव, P बंधकज्जाइं, P जाव संलावो for पासत्थउल्लावो. 16) P om. जल, P विमल for विमलिय, J om. ति. 17) J जुअलेसु P जुवणेसु, J भाणिउमाढत्ता P भणिउमाढत्ता. 18) P धर्मे बोधवि॰. 19) P जिनेंद्राणां for गुरूणां. 20) J सर्व्वेषां, P साधुसंमताम्, P येषां हुदि शि जिनोत्तमः ॥. 21) J वयं P कय for कयं, J अवि य for ताव य, P om. one जल, J adds सद्द after पडिसद्द, P निदाण for विद्दाण, P हंसराय for रायहंस, J कल for कलयल. 22) J पयाणयपयढक्का, P सद्देण जयासद्दमुहलो, P खधावार, P सामग्गिउ पयत्तो. 23) P किं त्ति for किं च, J पयत्ता !, P पल्लालिज्जंति. 24) P adds, after जोइज्जंति, भरिउं पयत्तं । etc. to जोइज्जंति, P उवठविज्जंति, J संभारिज्जंति जंपाणिए, P भंडागारे for भंडयरे. 25) P adds ज्जंति after संवेल्लिज्जंति, P समायोगो, P om. य, J om. सर, P सज्झस for झस. 27) P उद्धसु वच्चसु तूरसु, J गेण्हसु परसुव्व चकम पयट्ट !, J उच्छलियबहलबोलो, P उउच्छलिए ह बोलो. 28) J वारुअकरिणिं, P करिणीं, J तुरयं, P णिय for णियर. 29) P om. दस, P दिसिसामुह, P दियर, P om. पसर, P दुद्दिणासंकास, P om. हरिस, P तड्डविय, J कलकरेहि खणंतो, P ता जणंतो for खणंतो. 30) J अत्तो P अणत्तो for अत्तणो, P धाइणो for राइणो. 31) P सोऊण for सोउं, J वि हरिसव्वस, P वियस for वस. 32) J य after कुमारस्स.

§ ३१५) तओ कुमारो वि पहरिस-वस-वियसमाण-कुवलय-दल-दीह-लोयण-जुवलो 'सागयं तायस्स' त्ति भणंतो उत्तिण्णो तुरयाओ। सरय-समउग्गय-दिणयर-कर-परिमास-वियसियंबुरुह-सरिस-चलण-जुवलो चलणेहिं चेय गंतुं पयत्तो। ताव य चेएणं संपत्तो महाराया। दिट्ठो य णेण कुमारो देव-कुमारो व्व णयण-मणाणंदणो। कहं। अवि य।

कमलेण दिणयरो इव अहवा कुमुएण चंदिमा-णाहो। सिहिणा घणो व्व अह कोइलेण चूओ व्व महुमासे॥

तं च दट्ठूण सरहस-पसारिय-दीह-बाहु-फलिहेण आलिंगिओ कुमारो राइणा। हिययब्भंतर-धर-भरिउव्वरंत-पहरिस-वस-णीहरंत-बाहुप्पील-लोल-लोयणा दोण्णि वि जाया। पणामिओ य पाएसु महाराया। माया वि चिर-विरह-दुब्बलंगी दिट्ठा कुमारेण। तीए सिणेह-णिब्भरं अवगूढो। रोइउं च पयत्ता, संठाविया य परियणेण। दिण्णं णयण-वयण-धोवणं गंधोदयं उवविट्ठा तम्मि चेय ठाणे। कुमारो वि गहिओ उच्छंगे देवीए, चुंबिओ उत्तिमंगे, भणिओ य 'पुत्त, दढ-कढिण-हियओ सि तुमं। अम्हे उण पुत्त-भंड-णेह-णिब्भर-पसरमाण-विरह-जालावली-दूमिया मयं पिव अत्ताणं मण्णामो। ता जीवेसु चिरं, अइबहुयं अम्ह इमं जं जियंतो दिट्ठो सि' त्ति। भणियं च राइणा। पुत्त,

तइया अम्हाण तुमं देव्वेण हओ तुरंग-रूवेण। कत्थ गओ कत्थ ठिओ कह चुक्को तं तुरंगाओ॥
कह गमिओ ते कालो कत्थ व परिहिंडिओ अणाहो व्व। कह व मणि-पूस-वण्णो कत्थ व सो पूसओ दिट्ठो॥
कह व तुमं संपत्तो वेलाउलम्मि कहं समुद्दस्स। वच्छेण वच्छ इमिणा कह व महिंदेण संपत्तो॥
कह व तए परिणीयं कह णाओ विजयसेण-णरवइणा। किं तत्थ ठिया तुब्भे केण व कज्जेण कालमिणं॥
कह आगओ कह गओ कह वा दुक्खाइँ पुत्त पत्ताइं। साहिज्जउ मह एयं जेणज्जं णिव्वुई होइ॥

एवं च पुच्छिओ समाणो चलणे पणमिऊण साहिउं पयत्तो। साहियं च सयलं वुत्तंतं संखेवेणं ति। ताव य।

उज्जमह धम्म-कज्जे मा बज्झह णेह-णियल-पासेहिं। णेहो त्ति णाम डड्ढं भणियं मज्झण्ह-ढंढाए॥

तओ जहो मज्झण्हो जाओ त्ति कय-मज्जण-भोयणा संवुत्ता। पुणो सुहासणत्था जाया, विविह-देस-कला-कलाव-कहासु चिरं ठिया। गणियं च गणएहिं कुमार-गह-दिण-लग्ग-वेला-पवेसस्स समयं जुवरायाभिसेयस्स य। तओ हरिस-तोस-णिब्भरेहि य समाढत्ताइ य वद्धावणयाइं। धवल-धयवडाडोव-मंडिया कीरए अओज्झा पुरवरी। सज्जीकयं सयलं उवगरणं। वोलीणो य सो दियहो त्ति। ताव य।

किं अच्छह वीसत्था ढुकइ कालो त्ति कुणह कायव्वं। उय जाम-संख-सद्दो कुविय-कयंतस्स हुंकारो॥

तं च सोऊण समुट्ठिया सव्वे धम्म-कज्जाइं काउं समाढत्ता। पाओसियवयं अत्थाणि-मंडलं दाऊण पसुत्तो कुमारो। णिसा-विरामे य पढियं बंदिणा। अवि य।

पडणम्मि मा विसूरह मा गव्वं वहह उग्गमे पुरिसा। इय साहेंतो व्व रवी अत्थमिओ उग्गओ एण्हिं॥

इमं च सोऊण समुट्ठिया सयल-महारायप्पमुहा णरिंद-वंदा। तओ कय-कायव्वाणं च वच्चंति दियहा।

§ ३१६) पुणो समागओ कुमारस्स णयर-पवेस-दियहो। अओज्झा-पुरवरीए घोसावियं च राइणा जहा कीरउ णयरीए सक्कारो त्ति। तओ किं च कीरिउं समाढत्तं। अवि य सोहिज्जंति रच्छा-मुहाइं, अवणिज्जंति कयार-संकरे, सिच्चंति गंधोदएण रायवहे, बज्झंति वंदणमालाओ, विरइज्जंति कणय-तोरणे, भूसिज्जंति धवलहरे, मंडिज्जंति वार-मूले, चिंत्तिज्जंति राय-सभाओ, पूइज्जंति चच्चरे, समाढप्पंति पेच्छणए, पत्थरिज्जंति सिंधवडए, वित्थारिज्जंति चंदोयवे, विहाडिज्जंति पडिओ, उब्भिज्जंति पट्ट-पडायाओ, लंबिज्जंति कडि-सुत्तए, पयडिज्जंति महारयणे, विक्खिप्पंति मुत्ताहले, कीरंति कुसुम-दामोऊले, हलहलायइ कुमार-दंसणूसव-पसरमाणुकंठ-णिब्भरो णायर-लोओ त्ति। अवि य।

मणि-रयण-भूसियंगी पिययम-दट्ठव्व-पसरिउक्कंठा। वासय-सज्ज व्व पुरी अच्छइ कुमरं पडिच्छंती॥

1 > P om. वस, J जुअलो, P adds य after जुवलो. 2 > P सरयमउग्गंत, P परिफंस for परिमास, J जुअलो. 3 > J चेय before संपत्तो. 4 > P विव for इव, P घणा व्व, P सूउ for चूओ. 5 > J सहरिस पसरिअ, J घरि for धर. 6 > P बाहुलोल, P om. माया, J विरहिर for चिरविरह. 7 > P णिब्भंतरं अवऊढो।, J om. च, P संट्ठाविया, P वयणे. 8 > J गंधोअयं, P उवविट्ठो, P त्थाणे for ठाणे, P om. दढ. 9 > P डभ for भंड, J दुमिया. 10 > P जीवसु, P om. इमं. 11 > J अम्हण, J ए for हओ, P राओ for गओ, P ट्ठिओ, J कत्थ चुक्को, P तह for तं. 12 > J कह य गमिओ, J om. ते, J om. व and व्व।. 13 > J वेलाजलम्मि किं समुद्दस्स, P वेलाउलं कहं, P मज्झं for वच्छ, P कह वि महिं°. 14 > P कह वि तए, J om. णाओ, P ट्ठिया. 15 > P om. कह गओ, J मए एअं. 16 > P चलणेसु पयत्तो, P संसंखेवेणं. 17 > P णेहणेयल, P ढंढं for डड्ढं. 18 > J कयभोयणमज्जणा P कयमज्झण्हभोयणा. 19 > J om. च and adds गणियं on the margin, P adds पवेला after वेला, J जुगराया° P जुवरायाहिसेयस्स य।, J om. य, rather [कुमारस्स गहदिणलग्गवेलासमयं पवेसस्स जुवरायाभिसेयस्स य]. 20 > P adds धवणयाइं after वद्धावणयाइं, J अओज्झा. 22 > P दुक्कयकालो, P उ for त्ति, P च उ for उय. 23 > P धम्मे for धम्म, J पाउसिअवयं अत्थाणि P पाओसिअं च अत्थाणि. 24 > P om. य before पढियं. 25 > P वहह मगव्वं च मंगव्वं उग्गसे पुरिसे. 26 > P समुट्ठिता सयले महारायपमुहा णरिंदवदा।, J om. च. 28 > P om. रच्छामुहाइं etc. to भूसिज्जंति. 29 > P वरमूले, J P चिंतिज्जंति राय-. 30 > J सिंगवडए, P repeats सिंधवडए वित्थारिज्जंति, J वित्थरिज्जंति, P चंदावे, J विहडिज्जंति पडीए. 31 > P पडिओब्भिज्जंति पट्टपडाओ, P कडसुत्तए. 32 > J °दामोजले, P हलहलाइ, P दंसणूसव, J पसरम्माणुकंठ P पसरसाणुकंठो, P लोय त्ति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थंतरम्मि कुमारो वि सह राइणा समारूढो जयकुंजरं पविसिउं समाढत्तो अयोज्झा-पुरवरीए। ताव य पूरिज्जंति संखाइं जयजयाविर्य बंदिय-जणेणं। पविसंते य कुमारे सव्वो य णयर-णायरियायणो कोउअ-रसाऊरमाण-हियओ पेच्छिउं समाढत्तो। कमेण य वोलीणो कुमारो रायमग्गं, संपत्तो रायदारं। वोलीणे य कुमारे किं भणिउं समाढत्तो णायर-जणो। अवि य।

धम्मं करेह तुरियं जइ कज्जं एरिसीएँ रिद्धीए। मा हीरह चिंताए ण होइ एयं अउण्णाण॥

कुमारो वि रायउले पेच्छइ परियणं। केरिसं। अवि य।

रज्जाभिसेय-मंगल-समूह-करणेक्क-वावड-करग्गं। हियउग्गय-हलहलयं चियरंतं परियणं पुरओ॥

§ ३१७) पविट्ठो य अत्थाण-मंडवं कुमारो, णिसण्णो य णाणा-मणि-किरणुल्लसंत-बहु-सुरचाव-विब्भमे कणय-महामइंदासणे। णिसण्णस्स य मंगल-पुव्वयं जयजया-सद्द-पूरमाण-महियलं उक्खित्ताइं महाराय-पमुहेहिं महासामंतेहिं णाणा-मणि-विचित्ताइं कणय-पउम-प्पिहाणाइं कोमल-किसलय-सणाहाइं कंचण-मणि-रयण-कलस-संघायाइं। तेहिं जय-जयासद्द-णिब्भरं अहिसित्तो कुमारो जोयरज्जाभिसेयम्मि, जोक्कारिओ य महाराय-दढवम्मप्पमुहेहिं। णिसण्णा सव्वे सीहासणस्स पुरओ। भणियं च महाराइणा। 'पुत्त कुमार, पुण्णमंतो अहयं जस्स तुमं पुत्तो। इमाइं च चिर-चिंतियाइं मणोरहाइं णवरं अज्ज संपुण्णाइं। ता अज्जप्पभुइं धण-धण्ण-रयय-मोत्तिय-मणि-रयण-जाण-वाहण-पवहण-खेड-कव्वड-णयर-महाणयर-गाम-गय-तुरय-णरवर-रह-सय-सहस्सुद्दामं तुज्झ दे रज्जभरं दिण्णं। अहं पुण धम्माधम्म-णिरूवणत्थं कं पि कालंतरं अच्छिऊण पच्छा कायव्वं काहामो' त्ति। कुमारो वि एवं भणिओ सविणयं उट्ठिऊण णिवडिओ राइणो चलण-जुयले 'महापसाओ' त्ति भणिय, 'जं च महाराओ आणवेइ तं अवस्सं मए कायव्वं' ति। दंसिया कुवलयमाला गुरुयणस्स। कओ पणामो। अभिणंदिया तेहिं। एवं च अवरोप्पर-वयण-कमलावलोयणा-सिणेह-पहरिस-णिब्भराणं वच्चइ कालो, वोलेंति दियहा। अण्णम्मि दिणे राइणा भणियं। 'पुत्त कुमार, णिसुणेसु।

जं किंचि एत्थ लोए सुहं व असुहं व कस्सइ णरस्स। तं अप्पण च्चिय कयं सुहमसुहं वा पुराकम्मं॥
मा हो जूरह पुरिसा असंपडंतेसु विहव-सारेसु। जं ण कयं पढमं च्चिय कत्तो तं वास-लक्खेहिं॥
ता जइ सुहेण कज्जं इह जम्मे कुणह आयरं धम्मे। कारण-रहियं कज्जं ण होइ जम्मे वि लोगम्मि॥

तओ कुमार, इमं णाऊण धम्मे आयरो कायव्वो। कालो य एस मम धम्मस्स, ता तं चेय करिस्सं' ति। कुमारेण भणियं। 'ताय, जं तए समाणत्तं तं सव्वं तहा, सुंदरो य एस धम्म-कम्म-करण-णिच्छओ, एक्कं पुण विण्णवेमि 'सो धम्मो जत्थ सफल-किलेसो हवइ' त्ति। राइणा भणियं। 'कुमार, बहुए धम्मा, ताणं तो जो चेय एक्को समाढत्तो सो चेय सुंदरो' त्ति।

§ ३१८) कुमारेण भणियं 'ताय, मा एवं आणवेह, ण सव्वो धम्मो समो होइ'। तेण भणियं 'कुमार, णणु सव्वो धम्मो समो चेय'। तेण भणियं 'देव, विण्णवेमि। अवि य।

किं पुहईएँ गइंदा होंति समा गयवरेहिँ अवरेहिं। अहव तुरया तुरंगेहिँ पव्वया पव्वय-वरेहिं॥
किं पुरिसा पुरिसेहिं अहवा तियसा हवंति तियसेहिं। किं धम्मेहिँ वि धम्मा सरिसा हु हवंति लोयम्मि॥
जइ एयाण विसेसो अत्थि महंतो जणेण उवलद्धो। तह धम्माण विसेसो अह केण वि देव उवलद्धो॥'

णरिंदेण भणियं।

'जइ अत्थि कोइ धम्मो वरयरओ एत्थ सव्व-धम्माणं। ता कीस सव्व-लोओ एक्कम्मि ण लग्गए एसो॥'

कुमारेण भणियं।

'जइ एक्को णरणाहो सव्व-जणेहिं पि सेविओ होज्ज। धम्मो वि होज्ज एक्को सव्वेहि मि सेविओ लोए॥
पेच्छंता णरवसहं सेवंते गाम-सामियं के वि। संति परमत्थ-रहिया अण्णाण-भयाउरा पुरिसा॥
एवं एए मूढा पुरओ संते वि धम्म-सारम्मि। तं काउं असमत्था अहव विवेगो ण ताण इमो॥

1) P एत्थंतरे कुमारो, P अउज्झा°, P तूराइं for संखाइं. 2) J बंदिअणेणं, J रहसाऊरमाण, P कम्मेण. 3) P om. य, P रायमग्गो, P om. संपत्तो रायदारं, P वोलिणो कुमारे, P भणियं, P णयरजणो. 5) P जयकयं, J एरिसीय. 7) J हिअयुग्गय-, P हियउग्गमहलहयं त्रिरयंतं. 8) P om. य after पविट्ठो. 9) P महामहिंदासणे, J -प्पमुहेहिं. 10) P पउमप्पहाणाइं कोमले किसयल-. 11) P अतिसित्तो, J जोअरज्जा° P जुयरज्जा°, P जोक्कारिओ, J om. य, P य मेहराय-, J P दढधम्म°, J adds य before सव्वे. 12) P om. च. 13) P अज्ज पुन्नाइं, J अज्जप्पभुअं P अज्जपत्ताइं, J रयतमुत्तिय, P रयण for रयय, P -णयरा. 14) P om. णरवर, J -सहस्सुद्दमं, J om. दे, P रज्जहरं दिव्वं ।. 15) P om. त्ति. 16) J P भणियं, P महाराइणो आणवेइ, P अवस्स. 17) J गुरुअरस, J अहिणंदिआ, P अवरोप्परवरोप्परवयण-. 18) J दिअहे for दिणे. 19) P होइ for एत्थ. 20) P adds एवं च before मा हो जूरह, J असंपुडंतेसु, J जण्ण for जं ण, J पढमं च्चिअ. 21) P सुहेहिं, J अह for इह, P adds कुण before कुणह, P रज्जं for कज्जं, J लोअम्मि. 22) P adds य before एस. 23) J धम्मकारणणिच्छओ, J कत्थ for जत्थ. 24) P सफलं, P om. ताणं, J om. तो. 25) P om. ण सव्वो. 27) P पुहतीए, P समागयावरेहिं, P कुरया for तुरया, P om. पव्वया पव्वयवरेहिं. 28) J adds किं after पुरिसा, J धम्मे हि मि धम्मा. 29) P एयाविसेसो. 31) P ल for ण. 33) P -जणहिं, P होज for होज्ज, P repeats सव्वेहिं. 34) P णरवसहे, J णाम for गाम, P भयाउयाउरा. 35) P मूढारओ.

तेण भणियं 'कुमार, कहं पुण धम्मस्स वरावरत्तणं लक्खिज्जइ'त्ति । कुमारेण भणियं 'देव, फलेण' । णरवइणा भणियं 'कुमार,

पच्चक्ख-णुमाण-चउक्कयस्स को एत्थ वावडो होइ । किं उवमाणं अहवा वि आगमो फल-उवेक्खाए ॥
पच्चक्खं धम्म-फलं ण य दीसइ जेण होइ पर-लोए । पच्चक्खं जत्थ ण वा तत्थ कहं होइ अणुमाणं ॥
उवमाणं दूरे च्चिय अहवा किं भणइ आगम-पमाणं । धम्मागमा सम च्चिय सफला सव्वे वि लोगम्मि ॥
ता कत्थ मणं कुणिमो कत्थ व सफलो त्ति होहिइ किलेसो । कत्थ व मोक्खं सोक्खं इय घोलइ मज्झ हिययं ति ॥

कुमारेण भणियं 'ताव देव को उवाओ' । राइणा भणियं 'एक्को परं उवाओ ।

पुच्छिज्जउ को वि णरो पंडिय-पढिओ जयम्मि सवियड्ढो । को एत्थ धम्म-सारो जत्थम्हे आयरं करिमो ॥

कुमारेण भणियं । 'देव,

को एत्थ किं वियाणइ अह जाणइ राय-दोस-वस-मूढो । अण्णह परमत्थ-गई अण्णह पुरिसो वियप्पेइ ॥
ईसालुं मच्छरेणं सपक्खराएण पंडियप्पाणो । अलियं पि भणंति णरा धम्माधम्मं ण पेच्छंति ॥

§ ३१९) णरवरेण भणियं 'एवं ववत्थिए दुग्गमे तत्त-परिणामे को उण उवाओ भविस्सइ' त्ति । कुमारेण भणियं 'देव,

एक्को परं उवाओ मह हियए फुरइ णिच्च-संणिहिओ । परमत्थो तेण इमो णज्जइ धम्मस्स पच्चक्खं ॥
इक्खागु-वंस-पभवा णर-वसभा के वणंत-संखिला । णिव्वाणमणुप्पत्ता इह धम्मं कं पि काऊण ॥
आराहिऊण देविं मंगल-पुव्वं तवेण विणएण । पुच्छिज्जउ कुल-धम्मो को अम्ह परंपरायाओ ॥
एवं कयम्मि जं च्चिय तीए कुलदेवयाएँ आइट्ठं । सो चेय अम्ह धम्मो बहुणा किं एत्थ भणिएण ॥

इमं पडिवण्णं राइणा भणियं च । 'साहु कुमार, सुंदरं तए संलत्तं, ता णिव्वियारं इमं चेय कायव्वं' ति भणमाणो समुट्ठिओ राया, कायव्वं काउमाढत्तो । तओ अण्णम्मि दियहे असेसाए गंध-कुसुम-बलि-पईव-सामग्गीए पविट्ठो देवहरयं राया । तत्थ य जहारुहं पूइऊण देवे देवीओ य पुणो थुणिऊण समाढत्तो । अवि य ।

जय विजय जयंति जए जयाहि अवराइए जय कुमारि । जय अंबे अंबाले बाले जय तं पिए लच्छी ॥
इक्खागु-णरवराणं को कुल-धम्मो पुराण-पुरिसाण । साहिज्जउ मज्झ इमं अहवा वज्झा तुमं चेय ॥

इमं च भणिऊण णरवई णिसण्णो कुस-सत्थरे, ठिओ एक्कमहोरत्तं । दुइय-राईए य मज्झिम-जामे उट्ठाइया आगासयले वाया ।

भो भो णरवर-वसभा जइ कज्जं तुम्ह धम्म-सारेण । ता गेण्हसु कुल-धम्मं इक्खागूणं इमं पुव्वं ॥

इमं च भणंतीए समप्पियं कणय-सिलायलं णरिंदस्स कुलसिरीए । तं च पाविऊण विउद्धो राया जाव पुरओ पेच्छइ कणय-सिलायलं । तं च केरिसं । अवि य ।

ललिउव्वेल्लिर-मत्ता-वण्णय-पइंत-पत्तिया-णिवहं । बंभी-लिवीएँ लिहियं मरगय-खय-पूरियं पुरओ ॥

तं च दट्ठूण हरिस-वस-समुच्छलंत-रोमंचेण सद्दाविओ कुमारो भणिओ य । 'पुत्त कुमार, एसो दिण्णो कुलदेवयाए अम्हाण कुलधम्मो, ता णिरूवेउं वाएसु इमं' ति । कुमारेण वि 'जहाणवेसि' त्ति भणमाणेण धूव-बलि-कुसुमच्चणं काऊण सविणयं भत्तीए वाइउं पयत्तं ।

§ ३२०) किं च तत्थ लिहियं । अवि य ।

दंसण-विसुद्धि-णाणस्स संपया चरण-धारणं चेय । मोक्खस्स साधयाइं सयल-सुहाणं च मूलाइं ॥
जत्थ ण हम्मइ जीवो संतुट्ठो णियय-जोणि-वासेण । ण य अलियं मंतिज्जइ जियाण पीडायरं हियए ॥

---

1) P कह पण धम्मवरावरत्तणं, P om. त्ति. 3) J पच्चक्खाउमाण पमाणचउक्कयस्स, J om. वि. 4) P om. य. 5) P वि भणंति for किं [illegible]ह, P सफलो, J लोअम्मि. 6) P होहिति, P हियपंति. 7) J तह वि for ताव, J पर for परं. 8) P पुच्छिज्जइ, J कोइ णरो, P सविअढो. 10) J परमत्था-, P -गती. 11) J पंडिअप्पाणा. 12) P णरवइणा for णरवरेण, P एवं वत्थिए, P परिणामो, J को उण. 14) P एक्को महिहरपकओ यए फुरइ, J सण्णिहिओ P सन्निहिओ. 15) P -पभावा णरवसहा, J कवि अणंत- for केवणंत, P संखेज्जा for संखिला, P धम्मं किं पि. 18) P om. च, P om. चेव. 19) J om. गंध, J -पईव P -पतीव. 20) P om. य after तत्थ, P om. पुणो थुणिऊण etc. to को कुलधम्मो. 21) J जए जायाहि अवराईए. 22) P वज्झं for वज्झा, P च for चेय. 23) P om. इमं च, P om. णरवई, P णिवण्णा for णिसण्णो, P adds पत्ती before कुस, P ट्ठिओ, J दुइअ य राईए मज्झिमजामे उद्धाइया. 25) J -वसहा, P कज्ज, J कुलधम्मो, P इक्खागकुलाइयं पुव्वं. 26) J भणंतीय, P om. पुरओ. 27) P om. तं च केरिसं. 28) P °मत्तावण्णपयइंतिपत्तिया-, J बंभीलिवाए, P पूरिउ for पूरियं. 29) P हरिसवसुच्छलंत-, P कुलदेवत्ता अम्हाण. 30) P णिरूवेह, P वाएसुद्ध इमं ति । कुमारो वि, P भणमाणो, J कुसुमच्चणं. 31) P पयत्तो ।. 32) P लिहितं. 33) P -विसुद्ध-, P साहणाइं सयणसुहाणं. 34) P णं हंमइ, P पीडाकरं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण य घेप्पई अदिण्णं सरिसं जीएण कस्सइ जणस्स । दूरेण जत्थ महिला वज्जिज्जइ जलिय-जलणं व ॥
अत्थो जत्थ चइज्जइ अणत्थ-मूलं जयम्मि सयलम्मि । ण य भुजइ राईए जियाण मा होज्ज विणिवाओ ॥
तं णरवर गेण्ह तुमं धम्मं अह होइ जत्थ वेरग्गो । परियाणसु पुहइ-जिए जलम्मि जीयं ति मण्णेसु ॥
अणिलाणले सजीए पडिवज्ज वणस्सइं पि जीवं ति । लक्खिज्जइ जत्थ जिओ फरिसेंदिय-मेत्त-वावारो ॥
अलस-किमिया दुइंदी पिवीलियाई य होंति तेइंदी । भमराई चउरिंदी मण्णसु सेसा य पंचेंदी ॥
णर-पसु-देव-दइच्चे सव्वे मण्णेसु बंधवे आसि । सव्वे वि मए सरिसा सुहं च इच्छंति सव्वे वि ॥
णासंति दुक्ख-भीरू दुक्खाविज्जंति सत्थ-पउरेहिं । सव्वाण होइ दुक्खं दुव्वयण-विसेण हिययम्मि ॥
सव्वाण आसि मित्तं अहयं सव्वाण बंधवो आसि । सव्वे वि बंधवा मे सव्वे वि हवंति मित्ताइं ॥
इय एवं परमत्थे कह पहरिज्जउ जियस्स देहम्मि । अत्ताण-णिव्विसेसे मूढा पहरंति जीयम्मि ॥
जं जं पेच्छसि जीयं संसारे दुक्ख-सोय-भय-कलियं । तं तं मण्णसु णरवर आसि अहं एरिसो चेय ॥
जं जं जयम्मि जीवं पेच्छसि सिरि-विहव-मय-मउम्मत्तं । तं तं मण्णसु णरवर एरिसओ आसि अहयं पि ॥
जीएसु कुणसु मेत्तिं गुणवंते कुणसु आयरं धीर । कुणसु दयं दीण-मणे कुणसु उवेक्खं च गव्विराए ॥
असमंजसेसु कायं वायमसब्भेसु रुंभ वयणेसु । रुंभसु मणं अयज्जे पसरंतं सव्व-दव्वेसु ॥
काएण कुणइ किरियं पढसु य वायाए धम्म-सत्थाइं । भावेसु भावणाओ भावेण य भाव-संजुत्तो ॥
कुणसु तवं सुविसुद्धो इंदिय-सत्तुं णिरुंभ भय-रहिओ । कोवम्मि कुणह खंतिं असुइं चिंतेसु कामम्मि ॥
माणम्मि होसु पणओ माया-ठाणम्मि अज्जवं कुणसु । लोहं च अलोहेणं जिण मोहं णाण-पहराहिं ॥
अच्छसु संजम-जमिओ सीलं अह सेव णिम्मलं लोए । मा वीरियं णिगूहसु कुण कायव्वं जयं भणियं ॥
मा कुणसु पाग-किरियं भिक्खं भमिऊण भुंजसु विहीए । मा अच्छसु णिच्चिंतो सज्झाए होसु वक्खित्तो ॥
णिज्झीण-पाव-पंको अवगय-मोहो पणट्ठ-मिच्छत्तो । लोयालोय-पयासो समुग्गओ जस्स णाण-रवी ॥
संभिण्णं सो पेच्छइ लोयमलोयं च सव्वओ सव्वं । तं णत्थि जं ण पासइ भूतं भव्वं भविस्सं च ॥

सो य भगवं किं भण्णइ ।

तित्थयरो लोय-गुरू सव्वण्णू केवली जिणो अरहा । सुगओ सिद्धो बुद्धो पारगओ वीयरागो य ॥
सो अप्पा परमप्पा सुहुमो य णिरंजणो य सो चेव । अव्वत्तो अच्छेज्जो अब्भेज्जो अक्खओ परमो ॥
जं जं सो परमप्पा किंचि समाइसइ अमय-णीसंदं । तं तं पत्तिय णरवर तेण व जे दिक्खिया पुरिसा ॥
अलियं अयाणमाणो भणइ णरो अह व राग-दोसत्तो । कह सो भणेज्ज अलियं भय-मय-रागेहिँ जो रहिओ ॥
तम्हा णरवर सव्वायरेण पडिवज्ज सामियं देवं । जं किंचि तेण भणियं तं तं भावेण पडिवज्ज ॥
सुहुमो सरीर-मेत्तो अणादिमं अक्खओ य भोत्तादी । णाण-किरियाहि मुच्चइ एरिस-रूवो जहिं अप्पा ॥
एसो णरवर धम्मो मोक्ख-फलो सव्व-सोक्ख-मूलं च । इक्खागू-पुरिसाणं एसो च्चिय होइ कुल-धम्मो ॥
जं जं एत्थ णिरुत्तं तं तं णरणाह जाण सारं ति । एएण विरहियं पुण जाण विहम्मं कुहम्मं च ॥
एयं अवमण्णंता णरवर णरयम्मि जंति घोरम्मि । एयं काऊण पुणो अक्खय-सोक्खाइँ पावंति ॥

§ ३२१) एवं च पढिए इमम्मि धम्मे णरवइणा भणियं । 'अहो अणुग्गहीया अम्हे भयवईए कुलदेवयाए । ता सुंदरो एस धम्मो, ण एत्थ संदेहो । एयं पुण ण-याणिज्जइ केरिसा ते धम्म-पुरिसा जाण एरिसो धम्मो' त्ति । कुमारेण भणियं 'देव, जे केइ धम्मिय-पुरिसा दीसंति ताणं चेय दिक्खं घेत्तूण कीरए एस धम्मो' त्ति । राइणा भणियं 'कुमार, मा

1) P घेप्पइ, P जियस्स for जणस्स, P जलण for जलिय. 2) P वइ for चइज्जइ, P जलंमि for जयम्मि, P भुज्जति रातीए. 3) P धंमं जह होइ, P repeats जह होइ, P हइ जए for पुहइ जिए, J पीअं for जीयं. 4) P सुजीए for सजीए, P जीवं पि ।, P फरिसेंदियमेक्कवावारो. 5) P अलसा-, P दिइंदी for दुइंदी, J om. पिवीलियाय होंति तेइंदी ।, P पिवीलियाती, P भमराती चउरेंदी, P पंचिंदी. 6) P अन्ने वि for सव्वे वि, P सा for सरिसा. 7) P दुखाविज्जंति, P पहरेहिं, J विसेए for विसेण. 9) P पहरिज्जइ. 10) P adds त after अहं. 11) P जीवे for जीवं, J -मपुमत्तं. 12) P मित्तं for मेत्तिं, J गुणमंते, P कुणसु अवेक्खं. 13) P वायमसत्तेसु, J om. रुंभ, P सव्वेसु for सव्वदव्वेसु. 14) P भाएसु भायणाओ. 15) P इंदियसेत्तुं, J णिसुंभ P णेरुंभ, P खंती असुतिं, P देहंमि for कामम्मि. 16) P मायंमि for माणम्मि. 18) P पाव for पाग, P णिव्विन्नो for णिच्चिंतो, P आउत्तो for वक्खित्तो. 19) P णिज्झाण, P लोगालोग. 20) P पेच्छ लोगमलोगं, J सव्वतो, P पेच्छं for सव्वं, J जण्ण पासति भोत्तुं सव्वं, P भूतसव्वं. 22) J सुगतो णिद्धो, J वीतरागो. 23) J अप्पा वरमप्पा, J चेअ ।, J सव्वत्तो for अव्वत्तो, P अमेज्जओ, J अक्खरो परमो. 25) J रागरोसत्तो, J भममय, P भयममरोगेहिं. 27) P अणाइमं, J अक्खयभोत्तादी ।, J -किरियादी, P adds मुच्चइ before अप्पा. 28) J om. च. 29) J णिहित्तं for णिरुत्तं. 31) P भयवतीए. 32) P इमं for एयं, P एसो for एरिसो. 33) P दिक्खा, J कीरउ, P om. मा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं भण। णाणाविह-लिंग-वेस-धारिणो धम्मपुरिसा परिवसंति पुहई-यले। ते य सव्वे भणंति 'अम्हं च उ धम्मो सुंदरो,' अण्णो वि भणइ 'अम्हं च उ धम्मो,' अण्णो वि 'अम्हं च उ' त्ति। एवं च ठिए कस्स सद्दहामो कस्स वा ण व' त्ति। कुमारेण भणियं 'ताय, जइ एवं ता एक्को अत्थि उवाओ। जो कोइ पुहईए धम्म-पुरिसो सो सव्वो पडहएण आघोसिज्जइ जहा, राया धम्मं पडिवज्जइ जं चेय सुंदरं, ता सव्वे धम्म-पुरिसा पच्चक्खीहवंतु, साहेंतु य अप्पणो धम्माइं जेण जं सुंदरं तं गेण्हइ त्ति। पुणो देव, साहिए सयले धम्म-वित्थरे जो चेय एयस्स दिण्णस्स देवयाए वियारिज्जंतो घडीहिइ, तम्मि चेय आयरं काऊण दिक्खं पडिवज्जीहामो'त्ति। राइणा भणियं 'एवं जइ परं पाविज्जइ विसेसो त्ति। ता आणवेसु पडिहारं जहा पाडहियं सद्दावेसु। आएसाणंतरं च समाणत्तो पडिहारो, संपत्तो पाडहिओ, समाइट्ठो राइणा जहा इमिणा य अत्थेण घोसेसु सव्व-णयर-चच्चरेसु पडहयं' ति। तओ 'जहाणवेह' त्ति भणमाणो णिग्गओ पाडहिओ घोसिउं च पयत्तो। कत्थ। अवि य।

सिंगाडय-गोउर-चच्चरेसु पंथेसु हट्ट-मग्गेसु। घर-मढ-देवउलेसुं आराम-पवा-तलाएसुं॥

किं च घोसिउं पयत्तो। अवि य।

जो जं जाणइ धम्मं सो तं साहेउ अज्ज णरवइणो। जो तत्थ सुंदरयरो तं चिय राया पवज्जिहिइ॥

एवं च घोसेंतेण 'ढं ढं ढं ढं' ति अप्फालिया ढक्का। किं च भणिउं पयत्ता। अवि य।

अप्फालिया वि ढक्का छज्जीव-णिकाय-रक्खणं धम्मो। जीय-दया-दम-रहिओ ढं ढं ढं ढं ति वाहरइ॥

तओ इमं च घोसिज्जंतं तिय-चउक्क-चच्चर-महापहेसु सोऊण सव्वे धम्म-पुरिसा संभंता मिलिया णियएसु धम्म-विसेस-संघेसु अवरोप्परं च भणिउं पयत्ता। अवि य।

भो भो सहधम्मयरा वच्चह साहेह राइणो धम्मं। धम्मम्मि पुहइणाहो पडिबुज्झइ किं ण पज्जत्तं॥

एवं च अवरोप्परं मंतिऊण जे जत्थ णिगाए ससिद्धंत-कुसला ते समुट्ठिया धम्मिय-पुरिसा, संपत्ता रायमंदिरं। राया वि णिक्खंतो बाहिरोवत्थाण-मंडवं दिट्ठो सव्वेहिं जहाभिरूव-दंसणीयासीसा-पणाम-संभासणेहिं। णिविट्ठा य णियएसु आसणेसु। भणिया य राइणा 'भो भो धम्मिय-पुरिसा, गहियत्था तुम्हे अम्हाभिप्पायस्स। ता भणह कमेण अत्तणो हिययाभिरुइए धम्म-विसेसे।'

§ ३२२) एवं च भणिया समाणा परिवाडीए साहिउं पयत्ता। एक्केण भणियं। अवि य।

जीवो खण-भंगिल्लो अचेयणा तरुवरा जगमणिच्चं। णिव्वाणं पि अभावो धम्मो अम्हाण णरणाह॥

राइणा चिंतियं।

जीवो अणाइ-णिहणो सचेयणा तरुवरा वि मह लिहिया। मोक्खो सासय-ठाणं अह दूरं विहडए एयं॥

अण्णेण भणियं।

सव्व-गओ अह जीवो मुच्चइ पयईए झाण-जोएहिं। पुहइ-जल-सोय-सुद्धो एस तिदंडीण धम्मवरो॥

राइणा भणियं।

सव्व-गओ जइ अप्पा को झाणं कुणइ तत्थ सोयं वा। पुहइ-जलाउ सजीवा ते मारेउं कई सुद्धी॥

अण्णेण भणियं।

सव्व-गओ इह अप्पा ण कुणइ पयडीए बज्झए णवरं। जोगब्भासा मुक्को इह चेय णिरंजणो होइ॥

राइणा चिंतियं।

अप्पा सरीर-मेत्तो णिय-कम्मे कुणइ बज्झए तेणं। सव्व-गए कह जोओ विवरीयं वट्टए एयं॥

अण्णेण भणियं।

एक्को चिय परमप्पा भूए भूयम्मि वट्टए णिययं। णिच्चाणिच्च-विरहिओ अणाइ-णिहणो परो पुरिसो॥

राइणा चिंतियं।

1) P भणइ for भण, J विसेस for वेस, P पारिवसंति पुहतीयले।. 2) J om. धम्मो before अण्णो, P adds भणइ before अम्हं, P सद्दहामि. 4) P घोसिज्जइ for आघो°, P adds तं गेण्हइ for ता, J °होंतु for °हवंतु, J यप्पणो. 5) P om. जं, P तस्स धम्मस्स for एयस्स. 6) J घडीहिति P ण वाही ति, J दिक्खं पवज्जीहामो, P राइण भणियं, J एयं, J पाविज्ज विसेसो. 7) P om. संपत्तो पाडहिओ. 8) J इमम्मिणा for इमिणा, J णरय for णयर, P पडिहयं, P जहाणवेहि. 10) P सिंघाडगोउरचच्चरे पत्थेसु हट्टमग्गेसु।. 11) J पयत्तं. 12) P धम्मे, P साहेह, P ता for जो, J किय for चिय, J परिज्जिहिति P पडिवज्जिहि त्ति. 13) P om. च, P om. ति, P भाणिउं. 14) P ढक्का जिणधम्मो सुंदरो त्ति लोगंमि। अन्ने उण जे धम्मा ढं etc. 15) P घोसिज्जंति तिय., P चच्चरेसु महा°, P णिययधंम्म-. 16) J सामेसु for संघेसु, P भणियं, P om. अवि य. 17) J °णाहो पडिवज्जइ किण्ण पव्वज्जं॥. 18) P जत्थ णिकाएसु सिद्धंति कुसला. 19) P बाहिरअत्थाण-, J दंसणीया। सीसा°, J णिविट्ठाय णिआएसु, P णियए आसणेसु. 20) J तुम्मे for तुम्हे, P om. ता. 21) P हिययाहिरुइए धम्मं. 22) P om. च, P साहिओ. 23) J णेव्वाणं. 25) P तचेयणा for सचेयणा, J तरुभरा, P मोक्खसासयं ठ्ठाणं. 26) J om. अण्णेण भणियं। सव्वगओ अहजीवो etc. ending with कई सुद्धी॥. 27) P पयइएज्झाण-. 29) P सोयव्वा. 30) P om. अण्णेण भणियं (after कई सुद्धी॥) सव्वगओ इह etc. ending with वट्टए एयं॥. 33) J तं॥ for एयं॥. 35) P पुरो for परो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ एक्को चिय अप्पा कह सुह-दुक्खाइँ भिण्ण-रूवाइं । एक्केण दुक्खिएणं सव्वे ते दुक्खिया होंतु ॥

अण्णेण भणियं ।

अव्वावारं दिज्जइ पसुओ मारिज्जए य मंतेहिं । माई-पिइस्स मेहं गो-मेहो वा फुडो धम्मो ॥

राइणा चिंतियं ।

जं दिज्जइ तं सारं जं पुण मारिज्जए पसू गो वा । तमधम्मं मह लिहियं देवीए पट्टए सव्वं ॥

अण्णेण भणियं ।

काय-बलि-वइस-देवो कीरइ जलणम्मि खिप्पए अण्णं । सुप्पीया होंति सुरा ते तुट्ठा देंति धम्मं तु ॥

राइणा चिंतियं ।

को णेच्छइ काय-बलिं जं पुण जलणम्मि खिप्पए भत्तं । तं तस्स होइ अण्णस्स वा वि एयं ण-पाणासो ॥

अण्णेण भणियं ।

चइऊण सव्व-संगं वणम्मि गंतूण वक्कल-णियत्थो । कंद-फल-कुसुम-भक्खो जइ ता धम्मो रिसी तेण ॥

राइणा चिंतियं ।

सारो जइ णीसंगो जं पुण कंदप्फलाइं भुंजंति । एसो जीव-णिकाओ जीव-दया वहए धम्मो ॥

अण्णेण भणियं ।

दिज्जइ बंभण-समणे विहले दीणे य दुक्खिए किंचि । गुरु-पूयणं पि कीरइ सारो धम्माण गिहि-धम्मो ॥

णरवइणा चिंतियं ।

जं दाणं तं दिट्ठं अणंत-घाओ ण पेच्छइ घरम्मि । एसो विंधइ बालं चुक्कइ हत्थिस्स कंडेण ॥

अण्णेण भणियं ।

भक्खाभक्खाण समं गम्मागम्माण अंतरं णत्थि । अद्दैत-वाय-भणिओ धम्मो अम्हाण णिक्खुहो ॥

राइण चिंतियं ।

एयं लोय-विरुद्धं परलोय-विरुद्धयं पि पच्चक्खं । धम्मो उण इंदिय-णिग्गहेण मह पट्टए लिहियं ॥

अण्णेण भणियं ।

विण्णप्पसि देव फुडं पंच-पविसेहिं आसण-विहीय । सद्दइत-वाय-भणिओ धम्मो अम्हाण णिक्खुहो ॥

राइणा चिंतियं ।

लोमसहारे जिब्भिंदियस्स अणुकूलमासणं फंसे । धम्माओ इंदिय-णिग्गहेण एसो वि धम्मो त्ति ॥

अण्णेण भणियं ।

धम्मट्ठियस्स दिज्जइ णियय-कलत्तं पि अप्पणो देहं । तारेइ सो तरंतो अलाबु-सरिसो भव-समुद्दं ॥

राइणा भणियं ।

जइ भुंजइ कह व मुणी अह ण मुणी किं च तस्स दिण्णेण । आरोविया सिलोवरि किं तरइ सिला जले गहिरे ॥

अण्णेण भणियं ।

जो कुणइ साहस-बलं सत्तं अवलंबिऊण णरणाह । तस्स किर होइ सुगई मह धम्मो एस पडिहाइ ॥

राइणा चिंतियं ।

वेय-सुईसु विरुद्धो अप्पवहो णिंदिओ य विउहेहिं । जइ तस्स होइ सुगई विसं पि अमयं भवेज्जासु ॥

अण्णेण भणियं ।

गंतूण गिरि-वरेसुं अत्ताणं मुंचए महाधीरो । सो होइ एत्थ धम्मो अहवा जो गुग्गुलं धरइ ॥

राइणा चिंतियं ।

---

1 > P तिण्णि for भिण्ण, J होंति ॥. 3 > P मारिज्जएहिं मंतेहिं ।, P फुडो धमो ॥. 4 > P वि भणियं for चिंतियं. 5 > J मारिज्जई, P एयं चिलायकंमं एस विहंमो जए जाओ ॥ for the second line तमधम्मं etc. 7 > J वैस for वइस, J सुप्पीता P सुव्वीया, J देंतु. 9 > P repeats को नेच्छइ, P जं पुण लोगंमि निक्खिवे भत्तं । तं तस्स तस्स ण वेसयाण छारो परं हवे ॥. 13 > P एसो जीवाण वहो कह कीरओ कुच्छिओ धम्मो ॥ for the second line. 15 > P दिज्जओ, P -समण, P पूयणं पि, J गिहधम्मो. 17 > J -घातो P -नाघो, P after कंडेण ॥ omits अण्णेण भणियं । भक्खा॰ etc. ending with पट्टए लिहियं ॥. 19 > J अद्दैतवात-. 21 > J, after लिहियं ॥, omits अण्णेण भणियं । विण्णप्पसि etc. ending with धम्मो त्ति. 23 > P विणप्पसि, P वातभणितो, P णिखुहो. 27 > P सरिसं. 29 > P कह व मुंणी, J व मुणी किंव तस्स, P सिलोयरि, P सिलायले. 31 > J सामस for साहस, P सुगती. 33 > P जलणं जलं च जीए तस्स वहो अप्पघाइओ पुरिसो for the first line वेयसुईसु etc. P सुगदी, P अमयं हवेज्जासु. 35 > P भेरवगिरिं for गिरिवरेसुं, J महावीरो, P गुग्गलं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्ताणं मारेंतो पावइ कुगई जिओ सराय-मणो । एवं तामस-मरणं गुग्गुल-धरणाइयं सव्वं ॥

अण्णेण भणियं ।

खाणे कूव-तलाए बंधइ वावीओ देइ य पवाओ । सो एत्थ धम्म-पुरिसो णरवर अम्हं ठिओ हियए ॥

राइणा चिंतियं ।

पुहई-जल-जलणानिल-वणस्सई तह य जंगमे जीवे । मारेंतस्स वि धम्मो हवेज्ज जइ सीयलो जलणो ॥

अण्णेण भणियं ।

गंगा-जलम्मि ण्हाओ सायर-सरियासु तह य तित्थेसु । धुयइ मलं किर पावं ता सुद्धो होइ धम्मेण ॥

णरवइणा चिंतियं ।

भागीरहि-जल-विच्छालियस्स परिसडउ कह व कम्मं से । बाहिर-मलावणयणं तं पि हु णिउणं ण जाएज्जा ॥

अण्णेण भणियं ।

राईण रायधम्मो बंभण-धम्मो य बंभणाणं तु । वेसाण वेस-धम्मो णियओ धम्मो य सुद्दाण ॥

राइणा चिंतियं ।

धम्मो णाम सहावो णियय-सहावेसु जेण वट्टंति । तेणं चिय सो भण्णइ धम्मो ण उणाइ पर-लोओ ॥

अण्णेण भणियं ।

णाय-विढत्त-धणेणं जं काराविज्जंति देव-भवणाइं । देवाण पूयणं अच्चणं च सो च्चेय इह धम्मो ॥

राइणा चिंतियं ।

को ण वि इच्छइ एयं जं चिय कीरंति देवहरयाइं । एत्थं पुण को देवो कस्स व कीरंतु एयाइं ॥

अण्णेण भणियं ।

काऊण पुढवि-पुरिसं डज्झइ मंतेहिँ जत्थ जं पावं । दीविज्जइ जेण सुहं सो धम्मो होइ दिक्खाए ॥

राइणा चिंतियं ।

पावं डज्झइ मंतेहिँ एत्थ हेऊ ण दीसए कोइ । पावो तवेण डज्झइ झाण-महग्गीए लिहियं मे ॥

अण्णेण भणियं ।

झाणेण होइ मोक्खो सो परमप्पा वि दीसए तेण । झाणेण होइ सग्गं तम्हा झाणं चिय सुधम्मो ॥

राइणा चिंतियं ।

झाणेण होइ मोक्खो सच्चं एयं ति ण उण एक्केण । तव-सील-णियम-जुत्तेण तं च तुब्भेहिँ णो भणियं ॥

अण्णेण भणियं ।

पिउ-माइ-गुरुयणम्मि य सुरवर-मणुएसु अहव सव्वेसु । णीयं करेइ विणयं एसो धम्मो णरवरिंद ॥

णरवइणा चिंतियं ।

जुज्जइ विणओ धम्मो कीरंतो गुरुयणेसु देवेसु । जं पुण पाव-जणस्स वि अइयारो एस णो जुत्तो ॥

अण्णेण भणियं ।

णवि अत्थि कोइ जीवो ण य परलोओ ण यावि परमत्थो । भुंजह खाह जहिच्छं एत्तिय-मेत्तं जए सारं ॥

राइणा चिंतियं ।

जइ णत्थि कोइ जीवो को एसो जंपए इमं वयणं । मूढो णत्थिय-वाई एसो दट्ठुं पि णवि जोग्गो ॥

अण्णेण भणियं ।

गो-भूमि-धण्ण-दाणं हलप्पयाणं च बंभण-जणस्स । जं कीरइ सो धम्मो णरवर मह वल्लहो हियए ॥

णरवइणा चिंतियं ।

---

1) P कुगई, J गई for जिओ, P जिओ राइमणो । एयं तामस. 3) J खणेइ for खाणे, J -तालाए, J वावीए, P उ for य P अम्हट्ठिओ. 5) J दुविहो त्थ होइ धम्मो भोगफलो होइ मोक्खधम्मो य । दाणं ता मोक्खफलं ता भोगफलो जइ जिआणं ण पीडयरो ॥ for the verse पुहई जल etc., P repeats जल, P विहंमो. 7) P सारय for सायर, P तो for ता. 9) J जइ होइ सुद्धभावो आराहइ इट्ठदेवयं परमं । गंगाजलतलयाणं को णु विसेसो भवे तस्स ॥ for the verse भागीरहिजल etc., P -मलावणयलं तं 11) P रायाण, J सुद्दाण. 13) J धम्मे, P णार्वेतिर्यंहावो, J धम्मइ for भण्णइ, J उणाए. 15) P कारविज्जंति, J चे अ. 17) J एक्कं for एत्थं, P को इह for पुण को. 19) P इह इ for पुढवि, P तेण for जेण. 21) P कोति for कोइ, P सुद्धड जलचेलवणो पासंडो एस तो रइओ ॥ for the line पावो तवेण etc. 22) J om. भणियं. 23) P विदीसते तेण, J जाणं for झाणं, J adds सुभ before सुधम्मो, P सुधम्मा. 25) P जुत्ते for जुत्तेण. 27) J माउ for माइ, P गुरुजणंमि, J om. य. 29) J धम्मं, P गुणवएसु देवेसु, P ज for जं, J अतियारो. 31) J एत्थ for अत्थि. 32) P को वि जीवो. 33) P को एसं जपए, J णत्थियवाती, P दट्ठुम्मि विणिजोग्गो. 35) J धम्मदाणं P धणदाणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देइ इलं जीयहरं पुहई जीयं च जीवियं भण्णं । अबुहो देइ हलाइं अबुहो च्चिय गेण्हए ताइं ॥
अण्णेण भणियं ।

दुक्खिय-कीड-पयंगा मोएऊणं कुजाइ-जम्माइं । अण्णत्थ होंति सुहिया एसो करुणापरो धम्मो ॥
राइणा चिंतियं ।

जो जत्थ होइ जंतू संतुट्ठो तेण तत्थ सो सव्वो । इच्छइ ण कोइ मरिउं सोउं पि ण जुज्जए एयं ॥
अण्णेण भणियं ।

सद्दूल-सीह-रिच्छा सप्पा चोरा य दुट्ठया एए । मारेंति जियाण सए तम्हा ताणं वहे धम्मो ॥
राइणा चिंतियं ।

सव्वो जीवाहारो जीवो लोयम्मि दिट्ठ-परिणामो । जइ दुट्ठो मारिज्जइ तुमं पि दुट्ठो वहं पावं ॥
अण्णेण भणियं ।

दहि-दुद्ध-गोरसो वा घयं व अण्णं व किं पि गाईणं । मासं पिव मा भुंजउ इय पंडर-भिक्खुओ धम्मो ॥
राइणा चिंतियं ।

गो-मासे पडिसेहो एसो वज्जेइ मंगलं दहियं । खमणय-सीलं रक्खसु मज्झ विहारेण वि ण कज्जं ॥
अण्णेण भणियं ।

को जाणइ सो धम्मो णीलो पीओ व सुक्किलो होज्ज । णाएण तेण किं वा जं होहिइ तं सहीहामो ॥
राइणा चिंतियं ।

णज्जइ अणुमाणेणं णाएण वि तेण मोक्ख-कज्जाइं । अण्णाण-मूढयाणं कत्तो धम्मस्स णिप्फत्ती ॥
अण्णेण भणियं ।

जेण सिही चित्तलिए धवले हंसे कए तह म्हे वि । धम्माहम्मे चिंता काहिइ सो अम्ह किं ताए ॥
राइणा चिंतियं ।

कम्मेण सिही चित्तो धवलो हंसो तुमं पि कम्मेण । कीरउ तं चिय कम्मं तस्स य दिव्वो विही णाम ॥
अण्णेण भणियं ।

जो होइ धम्म-पुरिसो सो च्चिय धम्मो पुणो वि धम्म-रओ । जो पुण पावम्मि रओ होइ पुणो पाव-णिरओ सो ॥
राइणा चिंतियं ।

जइ एक्को चिय जीवो धम्म-रओ होइ सव्व-जम्मेसु । ता कीस णरय-गामी सो च्चिय सो चेय सग्गम्मि ॥
अण्णेण भणियं ।

जो ईसरेण केण वि धम्माहम्मेसु चोइओ लोगो । सो च्चेय धम्म-भागी पत्तिय अण्णो ण पावेइ ॥
णरवइणा चिंतियं ।

को ईसरो त्ति णामं केण व कज्जेण चोयणं देइ । इट्ठाणिट्ठ-विवेगो केण व कज्जेण भण तस्स ॥
अण्णेण भणियं ।

धम्माधम्म-विवेगो कस्सइ पुहवीए होज्ज पुरिसस्स । मूढ-परंपर-माला अंधाण व विरइया एसा ॥
णरवइणा चिंतियं ।

धम्माधम्म-विसेसो अवस्स पुरिसस्स कस्स वि जयम्मि । तेण इमे पव्वइया अण्णह को दुक्करं कुणइ ॥
अण्णेण भणियं ।

णाऊण पंचवीसय-पुरिसं जइ कुणइ बंभ-हच्चाओ । तो वि ण लिप्पइ पुरिसो जलेण जह पंकयं सलिले ॥
राइणा चिंतियं ।

1 > P देइ वलं जीयहरं पुहविजीवं च, P ताई for ताइं. 3 > P मो मो ए for मोएऊणं, P अन्नत्थ, J करुणो परो, P धमो ॥. 5 > P हो for सो, P सोउ पि ण जुए धयं. 6 > P adds पुण before भणियं. 7 > P -रिछा, P चोरा या एए ।, J एते ।, P मारंति जिणणसए. 9 > P लोगंमि, P मारिज्जस तुमं, J तुमं पि दिट्ठो वधं, P पावा for पावं ॥. 11 > P किं पि काईणं, P भुज्जउ इय पिंडरयभिक्खवो धंमो. 13 > P खखमणय-. 15 > P जो for को, J पीहो व्व सु°, P होज्जा ।, P होहिति तं. 17 > J -भज्जाए for -कज्जाइं. 19 > P चित्तिलिते, P तहेवे for तह म्हे, P धम्मोधम्मे, P काही सो. 20 > P om. राइणा चिंतिय before कम्मेण J चिण्णा for चित्तो, P देवे for दिव्वो. 23 > P जो होधइ, P after धम्मपुरिसो repeats अम्ह किं ताए । कंमेण etc. ending with जो होइ धम्मपुरिसो, P om. धम्मो, J होज्ज रओ for धम्मरओ, P सो उण पावरओ सो होइ for जो पुण etc. 25 > P तो for ता, P चे for च्चिय. 27 > P धंमाधंमेसु, J गाहिओ लोगो for चोइओ लग्गो, J चेअ, J पत्तिअण्णो P पत्तियणो. 29 > P ईसर त्ति, J लोमं for णामं, J चेअणं for चोयणं, P -विवेओ, P भणंतस्स. 31 > P धम्माधम्मविवेओ कस्सव पुहवीए, J -माली for माला. 33 > P -विसउवस्स पुरिसस्स, J व for वि, P दुकर कुणइ. 35 > P पंचवीसयं, P पंकयसलिले.

जाणंतो खाइ विसं कालउडं तेण सो णवि मरेज्ज । ता जइ होज्ज इमं पि हु ण य तं तम्हा हु धम्मोयं ॥

अण्णेण भणियं ।

पाणि-वहालिय-वयणं अदिण्णदाणं च मेहुणं अत्थो । वज्जेसु दूरओ च्चिय अरहा देवो इमो धम्मो ॥

राइणा चिंतियं ।

पावट्ठाण-णियत्ती अरहा देवो विराग-भावो य । लिहियम्मि तम्मि धम्मे घडइ इमो णत्थि संदेहो ॥

§ ३२३) इमं च जाव णरवई चिंतिउं समाढत्तो ताव य ।

सम्मत्त-जाणवत्तं अह एसो णरवई समारुहइ । आरुहइ जस्स कज्जं पुंकरियं जाम-संखेणं ॥

तं च मज्झण्ण-संख-सद्दं सोऊण णियय-धम्म-कम्म-करणिज्ज-वावड-मणेहिं पुलइयाइं दस वि दिसिवहाइं धम्म-पुरिसेहिं । णरवइणा वि गहिय-सव्व-धम्म-परमत्थेण भणिया सव्व-धम्म-वाइणो 'वच्चह तुब्भे, करेह णियय-धम्म-कम्म-किरिया-कलावे' त्ति । एवं च भणिया समाणा सव्वे णिययासीसा-मुहला समुट्ठिया अत्थाणि-मंडवाओ । साहुणो उण भगवंते राइणा भणिए 'भगवं, तुब्भेहिं कत्थ एरिसो धम्मो पाविओ' त्ति । साहूहिं भणियं 'अम्हेहिं सो महाराय, आगमाओ' त्ति । तेण भणियं 'को सो आगमो' त्ति । गुरुणा भणियं 'अत्त-वयणं आगमो' त्ति । राइणा भणियं 'केरिसो अत्तो जस्स वयणं आगमो' त्ति । गुरुणा भणियं ।

'जो राय-दोस-रहिओ किलेस-मुक्को कलंक-परिहीणो । णाणुज्जोइय-भुवणो सो अत्तो होइ णायव्वो ॥'

राइणा भणियं ।

सो केण तुम्ह दिट्ठो केण व णिसुओ कहं कहेमाणो । केण पमाणेण इमं घेप्पउ अम्हारिसेहिं पि ॥

गुरुणा भणियं ।

अम्हेहिँ सो ण दिट्ठो ण य णिसुओ किंचि सो कहेमाणो । आगम-गमएहिँ पुणो णज्जइ इह अत्थि सव्वण्णू ॥

राइणा भणियं ।

जइ ण णिसुओ कहं तो कह भणसि महागमेण सव्वण्णू । जो ण सुओ ण य दिट्ठो कह तं अम्हाण साहेसि ॥

गुरुणा भणियं ।

जइ वि ण सुओ ण दिट्ठो तहा वि अण्णेहिँ दिट्ठ-पुव्वो त्ति । गुरव-परंपर-माली-कमेण एसो महं पत्तो ॥
जह तुम्ह इमं रज्जं पावइ पारंपरेण पुरिसाण । तह अम्ह आगममिणं पावइ जोग्गत्तण-विसेसो ॥

राइणा भणियं 'कहं पुण एस सुंदरो त्ति आगमो णज्जइ' । गुरुणा भणियं ।

जीवाजीव-जहट्ठिइँ य कम्म-फल-पुण्ण-पाव-परिकहणे । पुव्वावराविरुद्धो अणुहत्र-पच्चक्ख-गम्मो य ॥
अणुमाण-हेउ-जुत्तो जुत्ती-दिट्ठंत-भावणा-सारो । अणवज्ज-वित्ति-रइओ तेणेसो आगमो सारो ॥

राइणा भणियं । 'सुंदरं सुंदरयरं इमं, जइ पुण इमस्स आगमस्स उवएसं जहा-भणियं करेइ पुरिसो, ता किं तस्स फलं हवइ' त्ति । गुरुणा भणियं ।

सव्वण्णु-वयण-वित्थर-भणिए जो सद्दहइ सयल-भावे । विहि-पडिसेह-णिरूवण-परो य सो भण्णए साहू ॥
सो तव-संजम-सीले काउं विरइं च णाम संपत्तो । णिट्ठविय-सव्व-कम्मो सिद्धिपुरिं पावए अइरा ॥
जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं । सासय-सिवं च सोक्खं तं सिद्धिं पावए सहसा ॥

साहिए भगवया गुरुणा तओ किं किं पि अंतोमुहं ससीसुकंपं पहरिस-वस-वियसमाण-वयण-कमलेण पलोइऊण कुवलय-चंदं भणियं । 'कुमार, णिरुत्तं एस सो मोक्ख-धम्मो त्ति । अवि य ।

एसो हि मोक्ख-धम्मो धम्माण वि एस सारओ धम्मो । एसो वि देवि-दिण्णो इक्खागूणं च कुल-धम्मो ॥'

1 > P विसं तालउडं तिण सो, P होइ for होज्ज, J इमंमि हु, P तं तंमा कुधम्मो य ॥. 3 > P पाण for पाणि, P मेहुणे अत्थि ।. 5 > P विरागधम्मो य, P इमं णत्थि. 6 > P णरवइ चिंतिउमाढत्तो. 7 > P सामत्त for सम्मत्त, P णरवती, P कज्जं पुकरियं. 8 > P संखद् सोऊण, J om. करणिज्ज, P om. वि. 10 > J भणिया सव्वे, J om. णियया, P अत्थाणमंडवाउ. 11 > P भणियं for भणिए, J om. अम्हेहिं सो. 12 > P om. को सो आगमो etc. ending with णायव्वो ॥ राइणा भाणियं ।. 16 > P तुम्हे दिट्ठो, J इइं घेप्पइ, P अम्हारिसेहिम्मि ।. 18 > J inter. सो & ण, P adds कइं before कहेमाणो. 20 > J कहं रे for कहं तो, P भणासि, P सुए for सुओ, P om. य. 22 > P om. सुओ ण, P adds अम्हे before तहा, P गुरुएस for गुरव, P एसा महं पत्ता. 23 > J पुरिसेण ।, P आगमेणं for आगममिणं, P जोगत्तण. 24 > P inter. त्ति & आगमो. 25 > J जहत्थिय, J कम्मफलो, P परिकहणा । पुव्वापरा°. 26 > P वित्तिरइओ तेण य सो. 27 > P सुंदरंमसुंदर°. 29 > P सयलरूवे, P जो for सो. 30 > P सीलो काओ विरयं, P ण for णाम, J संपुण्णो for संपत्तो, P णिट्ठवियसकम्मो सिद्धिपुरी. 31 > P णेय दुक्खसव्वाइं ।. 32 > P ससीस्सकंपं. 33 > J om. अवि य. 34 > P हु for हिं, P adds ति before धम्माण, P एसो देवी दिण्णी.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

§ ३२४) कुमारेण भणियं ।

विण्णप्पसि देव फुडं जइया हरिओ तुरंगमारूढो । देवेण बोहणत्थं इमम्मि धम्मम्मि णरणाह ॥
दिट्ठो रण्णम्मि मुणी सीहो देवो य पुव्व-संगइया । पुव्वं पि एस धम्मो अम्हे काउं गया सग्गं ॥
तेहिँ पुणो मह दिण्णो एसो धम्मो जिणिंदवर-विहिओ । तेहिं चिय पेसविओ कुवलयमालाएँ बोहत्थं ॥
वच्चंतेण य णरवर अद्ध-पहे देव-दाणव-समूहा । विजाहरा य जक्खा दिट्ठा मे तत्थ धम्मम्मि ॥
जेण य सुएण कहिया अम्ह पडती गयाण तं देसं । तेण सयं चिय दिट्ठो सव्वण्णू एत्थ धम्मम्मि ॥
इंदो वि तयं वंदइ हरिसुप्फुल्लंत-लोयण-णिहाओ । रय-हरणं जस्स करे पेच्छइ बहु-पाव-रय-हरणं ॥ अण्णं च देव,
देवत्तणम्मि दिट्ठो अम्हे चिय आसि धम्म-तित्थयरो । असुरिंद-णरिंदाणं आइसमाणो इमं धम्मं ॥
ते वि सुरा असुरिंदा वंतर-विज्जाहरा मणुस्सा य । कर-कमल-मउल-सोहा दिट्ठा धम्मं णिसामेंति ॥
दिट्ठा य मए रिसिणो इमम्मि धम्मम्मि सोसिय-सरीरा । उप्पाडिऊण णाणं सासय-सिद्धिं समणुपत्ता ॥
ता सामिय विण्णप्पसि एसो धम्मो सुधम्म-धम्माण । चूडामणि व्व रेहइ चंदो वा सव्व-ताराण ॥ अण्णं च ।
वजिंद-णील-मरगय-मुत्ताहल-रयण-रासि-चंचइयं । पाविज्जइ वर-भवणं णरवर ण उणो इमो धम्मो ॥
सव्वंग-लक्खण-सुहं सुहेण पाविजए महारयणं । सिद्धि-सुह-संपयगरो दुक्खेण इमो इहं धम्मो ॥
पीणुत्तुंग-पओहर-पिहुल-णियंबो रसंत-रसणिल्लो । होइ महिलाण सत्थो सुहेण ण उणो इमो धम्मो ॥
सुह-संपय-सय-भरियं सुहेण पाविजए जए रज्जं । दुक्खेण एस धम्मो पाविजइ णरवर विसालो ॥
सग्गम्मि वि सुर-भवणे पाविजइ सयल-भोय-संपत्ती । एसो उण जो धम्मो पत्तो पुण्णेहिँ थोवेहिँ ॥
तो णरणाह तुमे चिय अलद्धउव्वो इमम्मि संसारे । लद्धो णिउणेण इमो संपइ इह आयरं कुणह ॥'

त्ति भणिए पडिवण्णं णरवइणा । 'अहो सच्चं एयं जं एस दुलहो मग्गो । जेण अम्हे पलिय-उत्तिमंगा जाया तहा वि ण उवलद्धो एत्तियं कालंतरं' ति ।

§ ३२५) भणियं च णरवइणा सप्पणामं 'भो भो गुरुणो, कत्थ पएसे तुम्हाणं आवासो' त्ति । गुरुणा भणियं 'महाराय, बाहिरुज्जाणे कुसुमहर-णामे चेइयहरे' त्ति । णरवइणा भणियं । 'वच्चह सट्ठाणं, कुणह कायव्वं, पभायाए रयणीए अहं चेइयहरं चेय आगमिस्सामि' त्ति भणमाणो समुट्ठिओ णरवई कुमारो य । साहुणो य धम्मलाभासीसाए अभिवड्ढिऊण णिग्गया उज्जाणं णियय-किरिया-कलावेसु संपलग्गा । णरवई वि संमाणिऊण संमाणणिज्जे, पूइऊण पूयणिज्जे, वंदिऊण वंदणिज्जे, पेच्छिऊण पेच्छणिज्जे, रमिऊण रमणिज्जे, आउच्छिऊण आउच्छणिज्जे, काऊण कायव्वे, भक्खिऊण भक्खियव्वे सव्वहा जहा-जुत्तं पुत्त-मित्त-कलत्त-भिच्च-भड-भोइय-णरिंद-वंदस्स काऊण तओ णिरूविउं पयत्तो भंडायारे जाव अक्खयं पेच्छइ अत्थ-संघायं । तओ किमेएणं पुहइ-परिणामेणं कीरइ त्ति, इमेण वि को वि सुहं पावइ त्ति, आदिट्ठा सव्वाहियारिया । 'अहो महापुरिसा, घोसेसु तिय-चउक्क-चच्चर-महापहेसु सिंघाडय-णयर-रच्छामुहेसु उज्जाण-देवउल-मढ-तलाय-वावी-बंधेसु । अवि य । तं जहा ।

जो जं मग्गइ अज्जं जीयं मोत्तूण संजम-सहायं । तं तं देइ णरवई मग्गिज्जउ णिब्भयं पुरिसा ॥

एवं च घोसाविऊण, दाऊण य जं जहाभिरुइयं दाणं जणस्स, ण्हाय-सुइ-विलित्त-सुयंध-विलेवण-विसेसो सव्वालंकार-रेहिर-सरीरो सुकुसुम-महादाम-मणहरो पूइय-देवया-विइण्ण-धम्म-रयणो आरूढो सिबिया-रयणं णरवई, गंतूण य पयट्टो । अणेय-णायर-विलया-दाविज्जमाणंगुली-पसर-मणोहरो किं-कोत्थ इयासेस-णरिंद-लोओ संपत्तो कुसुमहरं उज्जाणं तत्थ य अवइण्णो, पाएसु गंतुं पयत्तो । दिट्ठो य तेण सो मुणिवरो अणेय-मुणि-सय-परियारो णक्खत्त-सहस्स-मज्झ-गओ

3) P पुव्वसंगमिया । पुव्वंमि एस. 4) P दिण्णा एसो, J लिहिओ for विहिओ, J कुवलयमालाय, P कुवलयगाए बोहेत्थं 5) P वचंते णरवर अहपहे, J अद्धवओ for अद्धपहे, P एत्थ for तत्थ. 7) P तयं तंदइ हरिफुलंततलोवण-, J हरिसफुलंत. 8) P एस for आसि. 9) P मउलि for मउल, P णिसामेत्ता. 10) P रिसिणा. 11) P एसो धंमो सुधंमो धंमधम्माण !. 12) P मरगल-, P om. मुत्ताहल, J वरसुवणं, P -भवण, P ण उणा, J इमं धम्मं. 13) P inter. सुहं & लक्खण, J om. महा°, P संपयकरो. 14) J पिहुलत्तुंगपओहर, P णिउणो for ण उणो. 15) J -सुहभरियं P -सतभरियं, P पाविज्जइ णइ णरवर. J णरवइ for णरवर. 16) P सलभोगसंपत्ती, P कत्तो for पत्तो. 17) J ता for तो, J अह for इह. 18) P adds जं before सच्चं, J जेणम्हे वलिअउत्तिमंगो जाओ. 19) J उअलद्धो. 21) P णोम for णामे, J चेतिअहरे, J inter. कुणह & कायव्वं, J पभाए. 22) J चेतिअहरं चेअ गमिस्सं ति, P चेईहरं, P om. चेय, P om. त्ति. 23) P अभिणिंदिऊण, P णरवती. 24) J om. वंदिऊण to पेच्छणिज्जे. 25) P adds पायव्वे before सव्वहा, P तओ विरूवयं, P भंडायारो. 26) P om. त्ति, J adds जइ before इमेण, J कोइ for कोवि, P आयट्ठा. 27) J सव्वा वि आरिआ P सव्वाहि आयरिया, P om. घोसेसु, P सिंघाडय. 28) P बंधिसु, P om. तं. 29) P णरवती. 30) P om. य, P ण्हाइसुइ, P सुगंध. 31) J सरीरो कुसुमदाममण°, P -महामणोहरो, J पूइअवयाविइण्ण, P णरवइ, P om. य. 32) J पयत्तो for पयट्टो, J मणहरो, P कुसुमहरउज्जाणं. 33) P परिवारो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विव सरय-रमय-सस्सिरीओ ससलंछणो अलंछणो त्ति वंदिओ भगवं राइणा कुमारेहिं महिंदप्पमुहेहि य सव्व-णरवईहिं। भणियं च णरवइणा बद्ध-करयलंजलिणा 'भगवं, णियय-दिक्खाए कोरउ अम्हाणं पसाओ' त्ति। गुरुणा भणियं 'भो भो णरणाह, किं तुह पडिहायइ हियए एसो धम्मो जेण दिक्खं गेण्हसि' त्ति। राइणा भणियं 'अवस्सं मह हिययाभिमओ तेण दिक्खं पव्वज्जामो' त्ति। भगवया भणियं 'जइ एवं, ता अविग्धं देवाणुप्पिया, मा पडिबंधं करेसु।' णिरूवियं लग्गं जाव सुहयरा पावग्गहा, सम-दिट्ठिणो सोम्मा, वट्टए जिणमती छाया, अणुकूला सउणा। इमं च दट्ठूण गुरुणा पुलइयाइं सयल-णरिंद-मंति-महल्लय-वयणाइं। तेहिं भणियं। 'भगवं, एसो अम्ह सामी, जं चेय इमस्स पडिहायइ तं अम्ह पमाणं' ति भणिय-मेत्ते गुरुणा सज्जावियं चेइहरं, विरइया पूया, ऊसियाओ धयाओ, णिम्मज्जियं मणि-कोट्टिमं, ण्हाणिया तेलोक्क-बंधवा जिणवरा, विलित्ता विलेवणेणं, आरोवियाणि कुसुमाणि, पवज्जियाइं तूराइं, जयजयावियं जणेणं। 'अह णरवई पव्वजमब्भुवगजइ' त्ति पयट्ट-हलबोल-बहिरियं दिसियक्कं ति। तओ णरवइणा वि ओयारियाइं आहरणयाइं, णिक्खित्तं पट्टंसुअ-जुवलयं, विरइओ तक्कालिओ महाजइ-वेसो, परिसंठिओ जिणाणं पुरओ। पणमिए भगवंते उप्पियं बहु-पाव-रओ-हरणं रयहरणं, उप्पाडियाओ कुडिल-तरंग-भंगुराओ माया-रूवाओ तिण्णि केसाण अट्ठाओ, उच्चारियं तिण्णिवारं भव-सय-पावरय-पक्खालणं सामाइयं ति। आरोविओ य मंदर-गिरि-गरुययरो पव्वजा-भारो त्ति। पणमिओ मुणिवर-पमुहेहिं वंदिओ य कुवलयचंदप्पमुहेहिं सव्व-सामंत-मंति-पुरोहिय-जण-सय-सहस्सेहिं, उवविट्ठो गुरू रायरिसी सव्वो य जणवओ।

§ ३२६) सुहासणत्थस्स य जणस्स भणियं गुरुणा। अवि य।

चत्तारि परमंगाणि दुल्लभाणीह जंतुणो। माणुसत्तं सुई सद्धा संजमम्मि य वीरियं॥

कहं पुण दुलहं मणुयत्तणं ताव। अवि य।

जह दोण्णि के वि देवा अवरोप्पर मंतिऊण हासेणं। एक्को घेत्तुं जूयं अवरो समिलं समुप्पइओ॥
जो सो जूय-करग्गो वेगेणुद्धाइओ दिसं पुव्वं। समिलं घेत्तूण पुणो धावइ अवरो वि अवरेण॥
जोयण-बहु-लक्खिल्ले महासमुद्दम्मि दूर-दुत्तारे। पुव्वम्मि तओ जूयं अवरे समिलं च पक्खिवइ॥
पक्खिविऊणं देवा समिलं जूयं च सायरवरम्मि। वेगेण पुणो मिलिया इमं च भणिउं समाढत्ता॥
पुव्वम्मि तडे जूयं अवरे समिला य अम्ह पक्खित्ता। जुग-छिड्डे सा समिला कइया पविसेज्ज पेच्छामो॥
अह पेच्छिउं पयत्ता सा समिला चंड-वाय-वीईहिं। उच्छालिज्जइ बहुसो पुण हीरइ जल-तरंगेहिं॥
उव्वेल्लिज्जइ बहुसो णिव्वोला जाइ सायर-जलम्मि। मच्छेण गिलिय-मुक्का कमढ-णहुक्कत्तिया भमइ॥
गीलिज्जइ मयरेणं मयर-कराघाय-णोल्लिया तरइ। तरमाणी घेप्पइ तंतुएण तंतू पुणो मुयइ॥
सिसुमार-गहिय-मुक्का पइसइ कुंभीरयस्स वयणम्मि। कुंभीर-दंत-करवत्त-कत्ति-उक्कत्तिया गलइ॥
गलिया वि मच्छ-पुच्छच्छडाहया धाइ गयण-मग्गेण। गयणावडणुल्ललिया घेप्पइ भुयगेहिँ विसमेहिं॥
विसम-भुयंगम-डक्का घोर-विसालुंखणेण पज्जलिया। विज्झविया य जलेणं हीरइ पवणेण दूरयरं॥
हीरंत च्चिय वेवइ अणुमग्गं हीरए तरंगेहिं। मुज्झइ विदुम-गहणे घेप्पइ संखेहिँ विसम-कयं॥
धावइ पुव्वाभिमुहं उद्धावइ दक्खिणं तडं तत्तो। वच्चइ य उत्तरेणं उत्तरओ पच्छिमं जाइ॥
तिरियं वलइ सहेलं वेलं पुण वग्गिरा तरंगेसु। भमइ य चक्काइद्धं मज्जइ आवत्त-गत्तासु॥
इय सा बहु-भंगिल्ला गह-गहिओम्मत्तिय व्व भममाणी। जलमइय-जीव-लोए सायर-सलिले य पारम्मि॥
अच्छेज्ज भमंत च्चिय किं पावइ णिय-जुवस्स तं छिड्डं। सा सयलं पि हु खुट्टं देवाणं आउगं ताणं॥

1) P ससिलंछणो. 2) J करयंजलिणा, P -दिक्खए, J अम्ह for अम्हाणं. 3) P पडिहायए, J गेण्हहि त्ति, P अवस्स. 4) J पवज्जामो, P विग्घं for अविग्घं, J मा बंधं. 5) P पावगहा सम्मदिट्ठिणो सोमा वट्टए जिणसमती. 6) P दट्ठूण गुणा पलोइयाइं. 7) P पडियाइ, J भणिए मेत्ते, P सिज्जावियं चेईहरयं. 9) P णरवइ पव्वज्जमब्भु°, P हलबोलं विहरियं. 10) P ओयावियाइं आहरणाइं, P णिक्खंतं for णिक्खित्तं, J जुअलयं, P adds णियत्थं हंससारसमं वत्थजुवलयं before विरइओ. 11) P पणामिए, P अप्पियं, P बहुपावरयंसुअजुवलयं। णियत्थं हंससारसमं वत्थजुवलयं। विरइओ तक्कालिओ महाजइवेसो एरिसं ठिओ जिणाणं पुरओ पणामिए भगवंति अप्पियं बहुपावरयं ओहरणा for बहुपावरओहरणं, P उप्पाडिओ, P om. कुडिल, J मायासवाओ. 12) P तिण्णिवाराओ भव-, P पावरयहरपक्खालणं, J आराविओ, P गरुयरो. 13) J मुणिवरमुहेहिं, P om. कुवलय°, J -परोहियजणसएहिं, 14) P adds ति। before सव्वो. 15) P जगत्थस्स for य, P भणितं. 16) P परंपरमंगणि, J दुल्लभाणि अ जंतुणो, P दुल्लहाणीह, J सत्था for सद्धा. 17) P माणुसत्तणं for मणुयत्तणं. 18) P दोण्णि. 19) P दिसिं पुव्वि. 20) P च क्खिवइ. 21) P भणिउ. 22) P तओ for तडे, J जूअच्छिड्डे, P पसज्ज for पविसेज्ज. 23) P पेच्छिओ, P -वीतीहिं. 24) P उव्वोलिज्जइ, P णिव्वोल. 25) J णीलिज्जइ, P मगरेणं, P मुणा for पुणो. 26) J पविसंइ, P भमइ for गलइ. 27) P om. मच्छ, J गयणावडणुल्लज्जिया, J भुअएहिं विसमवयणेहिं॥. 28) P विज्झावियजलेणं. 29) P हरति for हीरंत, P भिससंकं for विसमकयं. 30) P पुव्वाहिमुहं, P om. तडं, P उरओ for उत्तरओ, P जाओ for जाइ. 31) P तिरियं, J वेलं, P तरंगेत्तासु, P om. 2nd line भमइ etc. 32) P repeats य. 33) J जुअलस्स for णियजुवस्स, P has blank space for सा सयलं पि हु खुट्टं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एसो तुह दिट्ठंतो साहिज्जइ अबुह-बोहणट्ठाए । जो एस महाजलही एसो संसार-वासो त्ति ॥
जा समिला सो जीवो जं जूयं होइ तं खु मणुयत्तं । जे देवा दोण्णि इमे रागद्दोसा जियस्स भवे ॥
अह तेहिं चिय समिला उक्खित्ता णवर मणुय-छिड्डाओ । परिभवइ कम्म-पवणेरिया व वरं भव-समुद्दम्मि ॥
अह राग-दोस-वसओ चुक्को मणुयत्तणाओ सो जीवो । चउरासीति-सहस्से सयाण मूढो परिब्भमइ ॥
मणुयत्तणाउ चुक्को तिरिक्ख-जोणीसु दुक्ख-लक्खासु । भमइ अणंतं कालं णरएसु य घोर-रूवेसु ॥
अह राग-दोस-दालिद्द-दुक्ख-संताव छिण्णासो । कम्म-पवणेण जीवो भामिज्जइ कहिय समिल व्व ॥
कालेण अणंतेण वि सा समिला जह ण पावए छिड्डुं । तह मणुयत्तण-चुक्को जीवो ण य जाइ मणुयत्तं ॥

§ ३२७) भणियं च गुरुणा ।

जह समिला पब्भट्ठा सायर-सलिले अणोरपारम्मि । पविसेज्जा जुग-छिड्डुं इय संसइओ मणुय-लंभो ॥
पुव्वंते होज्ज जुयं अवरंते तस्स होज्ज समिला उ । जुय-छिड्डुम्मि पवेसो इय संसइओ मणुय-लंभो ॥
सा चंड-वाय-वीई-पणोल्लिया वि लभेज्ज जुयछिड्डुं । ण य मणुयाओ चुक्को जीवो पुण माणुसं लहइ ॥
अह मणुयत्तं पत्तं आरिय-कुल-विहव-रूव-संपण्णं । कुसमय-मोहिय-चित्तो ण सुणइ जिण-देसियं धम्मं ॥ कहं ।
जह काय-मणिय-मज्झे वेरुलिओ सरस-विहव-संठाणो । इयरेण णेय णज्जइ गुण-सय-संदोह-भरिओ वि ॥
एवं कुधम्म-मज्झे धम्मो धम्मो त्ति सरिस-उल्लावो । मोहंधेहिँ ण णज्जइ गुण-सय-संदोह-भरिओ वि ॥
जह णल-वेणु-वणेसुं कह वि तुलग्गेण पाविओ उच्छू । ण-यणंति के वि बाला रस-सार-गुणं अलक्खेंता ॥
तह कुसमय-वेणु-महावणे वि जिणधम्म-उच्छु-वुच्छेओ । मूढेहिँ णेय णज्जइ सुह-रस-रस-रसिय-रसिओ वि ॥
जह बहु-तरुवर-गहणे ठवियं देणावि कप्पतरु-रयणं । पुरिसेहिँ णेय णज्जइ कप्पिय-फल-दाण-दुल्ललियं ॥
तह कुसमय-तरु-गहणे जिणधम्मो कप्प-पायव-समाणो । मूढेहिँ णेय णज्जइ अक्खय-फल-दाण-सुहओ वि ॥
जह मज्झे मंताणं मंतो बहु-सिद्धि-सिद्ध-माहप्पो । असयण्णेहिँ ण णज्जइ सरिसो सामण्ण-मंतेहिं ॥
तह कुसमय-मंत-समूह-मज्झ-परिसंठिओ इमो धम्मो । असयण्णेहिँ ण णज्जइ सिद्धि-सयंगाह-रिद्धिल्लो ॥
जह सामण्णे धरणीयलम्मि अच्छइ णिहित्तयं अत्थं । अबुहो ण-याणइ चिय इह बहुयं अच्छइ णिहाणं ॥
तह धम्म-धरणि-णिहियं जिणधम्म-णिहाणयं इमं सारं । अबुहो ण-याणइ चिय मण्णइ सरिसं कुतित्थेहिं ॥
इय णरवर जिणधम्मो पयडो वि णिगूहिओ अउण्णाण । दिट्ठं पि णेय पेच्छइ ण सुणइ साहिज्जमाणं पि ॥
अह णिसुयं होइ कहं पि तह वि सद्दं ण सो कुणइ । मिच्छा-कम्म-विमूढो ण-याणइ जं सुंदरं लोए ॥
जह पित्त-जरय-संजाय-डाह-डज्झंत-वेविर-सरीरो । खंड-घय-मीसियं पि हु खीरं अह मण्णए कडुयं ॥
तह पाव-पसर-संताव-मूढ-हियओ य अयणओ कोइ । पायस-खंड-सम-रसं जिण वयणं मण्णए कडुयं ॥
जह तिमिर-रुद्ध-दिट्ठी गयणे ऽसंते वि पेच्छए रूवे । संते वि सो ण पेच्छइ फुड-वियडे घडय-पड-रूवे ॥
तह पाव-तिमिर-मूढो पेच्छइ धम्मं कुतित्थ-तित्थेसु । पयडं पि णेय पेच्छइ जिणधम्मं तत्थ किं कुणिमो ॥
जह कोसिय-पक्खि-गणो पेच्छइ राईसु बहल-तिमिरासु । उइयम्मि कमलणाहे ण य पेच्छइ जं पि अत्ताणं ॥
तह मिच्छा-दिट्ठि-जणो कुसमय-तिमिरेसु पेच्छए किं पि । सयलुज्जोविय-भुयणे जिणधम्म-दिवायरे अंधो ॥
जह अग्गिंधण-तत्ते जलम्मि सिज्झंति बहुयरा मुग्गा । कंकदुया के वि तहिं मणयं पि ण सिज्झिरे कढिणा ॥
तह धम्म-कहा-जलणेण तविय-कम्मस्स पाव-जीवस्स । कंकदुयस्स व चित्तं मणयं पि ण होइ मउययरं ॥
जह मुद्धड-बालयओ ढुक्कइ वग्घीएँ जणणि-संकाए । परिहरइ पुणो जणणी मूढो मोहेण केणावि ॥

1) P संसारे वासो. 2) P सा for सो, P तु for खु, J सढभावा for भवे. 3) J जीअ P जीय for चिय, J उत्थाणिआ for उक्खित्ता णवर, J om. 2nd line परिभवइ etc., Rather चिरं for व वरं. 4) P परिभमइ. 5) P -लक्खेसु, P त for य. 6) P -दोसद्दालिद्द, J adds ताव after संताव. 7) P कह वि for जह ण, J मणुअत्तं ॥. 9) P सागर-, J पविसेज्ज जुअच्छिड्डुं, P om. इय संसइओ मणुयलंभो etc. to लभेज्ज जुयच्छिड्डुं ॥. 10) J पुव्वतो, J समिला तु ।. 11) J चंडवात-, J पणोल्लिया. 12) P संपुण्णं ।, J कह for कहं. 13) P कह for जह J वेरुलिआ सरिसवयणसंठाणा ।. 14) J कुद्धम्म, P सरिसओलाओ, J मोहंधेण. 15) P विओ for पाविओ, J उच्छं, J रसआर, P अलक्खं वा ॥. 16) P जह for तह, J adds हो after तह, P कुसुमय, J विच्छेओ P वुच्छोओ, P om. रसिय. 17) P तरुयर, P कप्पतरुयं ।. 18) P कुसुमय 19) P om. ण before णज्जइ. 20) P कुसुमय. 21) J adds अ before णिहित्तयं, P अइ for इह, J अच्छए अत्थं ॥. 22) P repeats धम्म, P repeats the line अबुहो न याणइ चिय अइ बुहयं अच्छइ निहाणं ॥ after इमं सारं ।. 24) P होति कहं, J adds अ before सद्दं, P सद्दं, P ण इ for ण सो कुणइ, P जह for जं. 25) P जय for जरय, J -डोहडज्झंति, P मीसयं, J हु छीरं. 26) P संताप for संताव, P om. य, P अयाणुउ को वि ।. 27) JP गयणे संते, P पेच्छए, P om. रूवे । संते वि सो ण etc. to पि णेय पेच्छइ. 28) P तुसिमो for कुणिमो. 29) P पक्खिगमो, P -तिमिरेसु. 30) P कुसुमय-, P -भुयणो. 31) P -तत्तो, J किंकदुवा, J मणायं, J सिज्झिरे कढिणे, better सिज्जंति, सिज्जिरे. 32) J किंकदुयस्स P कंकडवस्स, J वि for व, P मणुयं. 33) J मुद्धडयालसओ, J वग्घीय, P जणणीं, J मेहेण for मोहेण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तह सुद्धो कोइ जिओ कुसमय-वग्घीसु ढुकइ सुहत्थी । परिहरइ जिणाणत्तिं जणणिं पिव मोक्ख-मग्गस्स ॥
इय णरवर केइ जिया सोऊण वि जिणवरिंद-वयणाइं । ण य सद्दहंति मूढा कुणंति बुद्धिं कुतित्थेसु ॥
मह कह वि कम्म विवरेण सद्दहाणं करेज्ज एस जिओ । अच्छइ सद्दहमाणो ण य लग्गइ णाण-किरियासु ॥
जह अयड-तडे पुरिसो पयलायइ मुणइ जह पडीहामि । ण य वच्चइ सम-भूमिं अलसो जा णिवडिओ तत्थ ॥
तह णरय-कूव-तड-पडण-संठिओ कुणइ पाव-पयलाओ । तव-णियम-समं भूमिं ण य वच्चइ णिवडिओ जाव ॥
अह सयल-जणिय-काणण-वण-दव-डज्झंत-भीसणं जलणं । दट्ठूण जाणइ णरो डज्झिज्जइ सो ण य पलाइ ॥
तह सत्तु-मित्त-घर-वास-जलण-जालावली-विलुट्ठो वि । जाणइ डज्झामि अहं ण य णासइ संजमं तेण ॥
अह गिरि-णइ-वेय-वियाणुओ वि मज्जेज्ज गिरि-णइ-जलम्मि । हरिऊण जाणमाणो णिज्जइ दूरं समुद्दम्मि ॥
तह पाव-पसर-गिरि-णइ-जल-रय-हीरंतयं मुणइ जीयं । ण य लग्गइ संजम-तरुवरम्मि जा णिवडिओ णरए ॥
जह कोइ णरो जाणइ एसो चोरेहिँ मूसए सत्थो । ण य धावइ गामंतो जा मुसिओ दुट्ठ-चोरेहिं ॥
तह इंदिय-चोरेहिं पेच्छइ पुरओ मुसिज्जए लोए । जाणइ अहं पि मुसिओ संजम-गामं ण अल्लियइ ॥
जह कोइ चोर-पुरिसो जाणइ कइया वि होइ मह मरणं । ण य सो परिहरइ तयं जाणंतो पाव-दोसेण ॥
तह पाव-चोरियाए गिद्धो जीवो वियाणए दुक्खं । जाणंतो वि ण विरमइ जा पावइ णरय-णिग्गहणं ॥
इय णरवर को पावइ मणुयत्ते पाविए वि जिण-वयणं । णिसुए वि कस्स सद्धा कत्तो वा संजमं लहइ ॥
तेण णरणाह एयं दुलहं भव-सायरे भमंतस्स । जीवस्स संजमं संजमम्मि अह वीरियं दुलहं ॥
तुमए पुण संपत्तं सम्मत्तं संजमं च विरियं च । पालेसु इमं णरवर आगम-सारेण गुरु-वयणं ॥
धम्मम्मि होसु रत्तो किरियाए तग्गओ रओ झाणे । जिण-वयण-रओ णरवर विरओ पावेसु सव्वेसु ॥
होसु दढव्वय-चित्तो णित्थारग-पारगो तुमं होसु । वड्ढसु गुणेहिँ मुणिवर तवम्मि अब्भुज्जओ होसु ॥
भावेसु भावणाओ पालेसु वयाइँ रयण-सरिसाइं । कुण पावकम्म-खवणं पच्छा सिद्धिं पि पावेसु ॥ त्ति ।

§ ३२८) एवं च णिसामिऊणं भगवं दढवम्म-राय-रिसी हरिस-वसुल्लसंत-रोमंचो पणमिओ चलणेसु गुरुणो, भणियं च । 'भगवं, अवि य,

अज्जेय अहं जाओ अज्ज य संवड्ढिओ ठिओ रज्जं । मण्णामि कयत्थं अप्पयं च जा एस पव्वइओ ॥
जं जं मह करणिज्जं तं तं तुम्हेहिँ आइसेयव्वं । जं जं चाकरणिज्जं तं तं पडिसिज्झह मुणिंद ॥' त्ति ।

गुरुणा भणियं । 'एवं हवउ' त्ति भणिए चलण-पणामे अब्भुट्ठिओ वंदिओ सयल-सामंत-चक्केण कुमारेण य । णायर-जणो वि कय-जय-जय-सद्दो अभिणंदंतो आगओ णयरिं । णरिंद-लोओ वि 'अहो महासत्तो महाराया दढवम्मो' त्ति भणंतो आगंतुं पयत्तो । तओ गुरुणा वि महाराया काराविओ तक्कालियं करियव्वं ति । एवं च करेंतो कायव्वाइं, परिहरंतो अकायव्वाइं, भणंतो भणियव्वाणि, अभणंतो अभणियव्वाइं, जंतो गम्माणि, वज्जेंतो अगम्माणि, भुंजंतो भक्खाणि, अभुंजंतो अभक्खाणि-पियंतो पेयाणि, परिहरंतो अपेयाणि, इच्छंतो इट्ठाणि, वज्जेंतो अणिट्ठाणि, सुणेंतो सोयव्वाणि, अवमण्णंतो असोयव्वाणि, पसंसंतो पसंसणिज्जाणि, उवेक्खंतो अपसंसणिज्जाणि, वंदंतो वंदणिज्जाणि, वज्जेंतो अवंदणिज्जाणि, णिंदंतो संसार-वासं, पसंसंतो जिणिंद-वर-मग्गं ति । अवि य ।

कज्जाकज्ज-हियाहिय-गम्मागम्माइँ सव्व-कज्जाइं । जाणंतो च्चिय विहरइ किंचिम्मेत्त-परिसेस-कम्मंसो ॥ त्ति ।

---

1) J को वि, P कुसुमय, J -वग्घीय, P जिणाणत्ती जणणि, P मोक्खसारस्स. 2) P इय नर को वि, J बुद्धी. 3) J सद्दहणं जइ करेज्ज. 4) J सुणइ for मुणइ, J एत्थ for तत्थ. 5) P नयर for णरय. 6) P तण for दव, P om. three lines दट्ठूण जाणइ णरो etc. to संजमं तेण ॥. 8) P वियाणओ. 9) P सुणइ for मुणइ, P -तरुयरंमि. 11) P adds पुइ before पुरओ, P -गाम. 12) P पावदोसेहिं. 13) J जीओ, J विरइ for विरमइ, P -णिग्गमणं. 14) J पावि for पाविए, P सिद्धा कत्ता. 15) P दुलहं भवसागरे, P वीरियदुलहं. 16) P च विरईयं ।. 17) P om. रओ, P ज्झाणे, J inter. णरवर & विरओ, P पावसु. 18) J णित्थरया-, P अब्भुज्जओ. 20) P भयवं, P -वसुच्छलंतरोमंचो पणामिओ, P गुरुणा, P om. भणियं च. 22) J आउ for जाओ, P ट्ठिओ, P अप्पियं च जाएसु पव्वइओ. 23) J तुम्भेहिं for तुम्हेहिं, P आयसेयव्वं, P जं च न करणिज्जं, J परिसिज्झह P पडिसिद्धह. 24) J हवतु, P हणिए for भणिए, J -पणामब्भुट्ठिओ, P पणामे पब्भुट्ठिओ य वंदिओ य सयल-, J णायरजणेहि कय°. 25) P अभिनंदिऊण, P नरिंदलो°, J om. वि, P आहो for अहो, J दढवम्मदेवो, P दढधम्मो. 26) J पयत्ता, J adds तं before तओ, P कारिओ तक्कालिय किरियव्वं, P करेंण्णो for करेंतो. 27) P om. भणंतो भणियव्वाणि, J om. भणियव्वाणि अभणंतो, P वज्जंतो, J om. भुंजंतो भक्खाणि, P भुज्जंतो for भुंजंतो (emended). 28) P पेयाणि for अपेयाणि, P असुणेंतो for अवमण्णंतो. 29) J वद्धंतो for वंदंतो, P वंदणियाणि, P repeats अवंदंतो for वज्जेंतो. 31) J जाणंतो विहर केइ किंचिमेत्तपरिसेय-.

§ ३२९) एवं च तस्स मुणिणो वच्चइ कालो कुवलयचंदस्स । पुण असेस-णरिंद-वंद-मंडली-मउड-कोडि-विडंक-मणि-णिहसमाण-मसिणिय-चलण-पट्टस्स वोलीणाइं सत्त-वास-लक्खाइं रज्जं करेंतस्स । एत्थंतरम्मि पउमकेसरस्स देवस्स को वुत्तंतो वट्टिउं पयत्तो । अवि य ।

आयइ आसण-कंपो छाया परियलइ गलइ माहप्पो । विमणा य वाहणा परियणो य आणं विलंघेइ ॥

तओ तं च जाणिऊण तवक्खयं खणमेक्कं परिचिंतिऊण दीण-विमण-दुम्मण-हियएण वियारियं हियए ।

मा होह रे विसण्णो जीव तुमं विमण-दुम्मणो दीणो । ण हु चिंतिएण फिट्टइ तं दुक्खं जं पुरा रइयं ॥
जइ पइससि पायालं अडइं व दरिं गुहा समुद्दं वा । पुव्व-कयाउ ण मुंचसि अत्ताणं खायसे जइ वि ॥
जइ रुयसि वलसि वेवसि दीणं पुलएसि दिसि-विदिसियक्के । हा हा पलवसि विलवसि चुक्कसि कत्तो कयंताओ ॥
जइ गासि धासि दुम्मण मुज्झसि अह लोलसे धरणिवट्टे । जंपसि मूओ व्व ठिओ चुक्कसि ण वि तं कयंताओ ॥
जं चेय कयं तं चेय भुंजसे णत्थि एत्थ संदेहो । अकयं कत्तो पाविसि जइ वि सयं देव-राओ त्ति ॥
मा हो जूरह पुरिसा विहवो णत्थि त्ति अम्ह हियएण । जं पुव्वं चिय ण कयं तं कत्तो पावसे एण्हिं ॥
मा हो मज्जह पुरिसा विहवो अम्हं ति उत्तुणा हियए । किं पि कयं सुकयं वा पुणो वि तं चेय भे कुणह ॥
होऊण अम्ह ण हुयं मा दीणा होह इय विचिंतेह । काऊण पुणो ण कयं किं पि पुरा सुंदरं कम्मं ॥
ता एत्तियं मए चिय सुकयं सुकयं ति अण्ण-जम्मम्मि । एत्तिय-मेत्तं कालं जं भुत्तं आसि दिय-लोए ॥
जेहिँ कयं सरिसेहिं पुव्व-तवं धम्मणंदण-समक्खं । ते सव्वे मह सहया पुव्वयरं पाविया पडणं ॥
ता मज्झं चिय विहवे चिरयरयं आसि काल-परिणामं । एवं ठियम्मि किं जह अप्पाणं देमि सोयस्स ॥

§ ३३०) ता जं संपइ संपत्त-कालं तं चेय काहामि त्ति आगओ अयोज्झा-पुरवरिं, दिट्ठो राया कुवलयचंदो, कुवलयमाला य । साहियं च ताण जहा 'अहं अमुग-मासे अमुग-दियहे तुम्ह पुत्तो भवीहामि त्ति । ता इमाइं पउमकेसर-णामंकियाइं दिव्वाइं कडय-कोंडल-कंठाभरणादीयाइं आभरणाइं गेण्हह । इमाइं च मह पसरमाण-बुद्धि-वित्थरस्स परिहियव्वाइं । जेण इमाइं बहु-काल-परिहियाइं पेच्छमाणस्स मह जाईसरणं उप्पज्जइ त्ति । पुणो जेण उप्पण्ण-पुव्व-जाई-सरणो संजाय-वेरग्गो ण रज्ज-सुहे सुट्ठु वि मणं करिस्सं ति । किंतु भव-सय-सहस्स-दुलहे जिण-मग्गे रइं करेमि' त्ति भणमाणेण समप्पियाइं आभरणयाइं । उप्पइओ य णहयलवहं संपत्तो सग्गं । तत्थ य जहा-तव-विहवं पुणो वि भोए भुंजिउं पयत्तो । एवं च वच्चंतेसु दियहेसु तम्मि चेय पउमकेसर-देव-दिण्णे ओहि-दियहे उउमईए कुवलयमालाए उप्पण्णो गब्भो । जहासुहं च मणोरह-सय-सएहिं संवड्ढिओ । णिय-काल-मासे य संपुण्ण-सयल-दोहलाए सुकुमाल-पाणि-पाओ जाओ मणिमय-वाउल्लओ विय दारओ त्ति । सो य परिवाडीए वड्ढमाणो गहियासेस-कला-कलावो पसरमाण-बुद्धि-वित्थरो जाओ । तओ तस्स य से णामं पुव्व-कयं चेय मुणिणा पुहइसारो त्ति । तओ तस्स समोप्पियाइं ताइं आभरणाइं । ताणि य पेच्छमाणस्स 'इमाइं मए दिट्ठ-पुव्वाइं' ति ईहापूह-मग्गण-गवेसणं कुणंतस्स झत्ति जाईसरणं समुप्पण्णं । तओ संभरिय-पुव्व-दुक्खो मुच्छिओ पडिओ धरणिवट्टे । ससंभमं पहाइएण य सित्तो चंदण-जलेण सहयर-सत्थेणं ति । तओ आसासिओ चिंतिउं पयत्तो । 'अहो, तारिसाइं सग्गे सुहाइं अणुभविऊण पुणो वि एरिसाइं तुच्छासुइ-णिंदियाइं अइ मणुय-सुहाइं जीवो अभिलसइ त्ति धिरत्थु संसारवासस्स । अहवा धिरत्थु जीवस्स । अहवा धिरत्थु कम्मस्स । अहवा धिरत्थु रायदोसाणं । अहवा धिरत्थु पुणो वि इमस्स बहु-दुक्ख-सहस्साणुभव-णिब्विलक्खस्स णिय-जीव-कलिणो, जो जाणंतो वि दुक्खाइं, वेएंतो वि सुहाइं, बुज्झंतो वि धम्मं, वेयंतो वि अहम्मं, पेच्छंतो वि संसारं, अणुभवंतो वि वाहि-वियारं, चेवंतो

1 > P मुणिंदो वच्चए, P णियसेस for पुण असेस, J कोडी-. 2 > J णिहसणामसिणीअयचलणवट्टं वोलीणाइं. 3 > P वड्ढिउं for वट्टिउं, P om. अवि य. 4 > P विमणो, P परियणा वि आणं विलंघेंति. 5 > J एयं for तं, J हियएणावि आविअहिअए. 6 > P होभि for होह, J दिट्ठइ for फिट्टइ, P इयं for रइयं. 7 > P पयससि, P गुहं, P मुंचणि for मुंचसि, P खाइसे. 8 > J दस- for दिसि-, J विलवसि for पलवसि. 9 > P वासे for धासि, P om. अह, P लोलसि, J अउ for मूओ, J कत्तो for ण वि तं. 10 > P जं चिय कयं तं चिय भुंजसि, J पावइ for पाविसि. 11 > J विहओ णत्थि, J मज्झ for अम्ह, J inter. तं & कत्तो, P पावसे इन्हि ॥. 12 > P म हो गव्वइ पुरिसो, J अर्ज for अम्हं, P अत्तुणो for उत्तुणा, J सुकयं हो पुणो वि. 13 > J विंतेह. 15 > P जे कहिं, J सयरया for सहया. 16 > P विहवो चिरयरं, J आसि परिमाणं, P अत्ताणं. 17 > P जं तं for ता जं, P adds कायव्वं before तं चेय, P चेय कहामि, P आउज्झापुरवरिं. 18 > P om. च, J adds य before तुम्ह, P om. त्ति, J om. ता, J adds च after इमाइं, P पउमसारणामंकियाइं किं दिव्वाइं. 19 > J कणय for कडय, P om. °भरणा°, J आहरणाइं. 20 > P om. जेण इमाइं, J जातीसरणं, P जाइसरणं उज्जइ त्ति, J जातीसरणो य जातवेरग्गो ण रज्जसु सुहेसु ठाइ मणं करइस्सं किंतु सयसयसहस्स दुलंमे, P जातिसरणो. 21 > P जिणमग्गो, P भणमाणे समप्पियाइ आभणयाइं. 22 > P om. उप्पइओ य णहयलवहं etc. to समोप्पियाइं ताइं आभरणाइं. 23 > J उउमतीए. 24 > J कुसुमाल for सुकुमाल. 27 > P दिट्ठा पुव्वाइं त्ति, P करेंतस्स for कुणंतस्स, P om. झत्ति, J जातीसरणं 28 > J धरणिवट्ठे, J ससंभमपधाइएण, P पहाइएणंमि सित्तो. 29 > P पुत्तेणो for पुणो, J om. वि, J तुच्छासुई P वच्छासुति, P om. अइ, P गणुसुहाइं. 30 > P अहिलसइ. 31 > P रागदोसाणं, P सहसाणुभव, P णियजीवस्स वलिणो जोणंतो वि. 32 > P वेणंतो वि, J om. वेयंतो वि अहम्मं, J वाधिवियारं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि महाभयं, तह वि पसत्तो भोएसु, उम्मत्तो विसएसु, गव्विओ अत्थेसु, लुद्धो विहवेसु, थद्धो माणेसुं, दीणो अवमाणेसु, मुच्छिओ कुडुंबेसु, बद्धो सिणेह-पासेसु, गहिओ माया-रक्खसीए, संजमिओ राय-णियलेहिं, पलित्तो कोव-महाजलणेण, हीरंतो आसा-महाणइप्पवाहेणं, हिंदोलिज्जंतो कुवियप्प-तरंग-भंगेहिं, दिण-पक्ख-णक्खत्त-करवत्त-दंतावली-सुसुमूरिओ महाकाल-मच्चु-वेयालेणं ति। ता सव्वहा एवं ठिए इमं करणिज्जं, पव्वज्जं घेत्तूणं उप्पण्ण-वेरग्गो तव-संजमं करेहामि त्ति चिंतयंतो भणिओ वयंसएहिं। 'कुमार, किं णिमं सत्थ-सरीरस्स ते मुच्छा-वियारो' त्ति। तेण भणियं 'ममं आसि उयरे अजिण्ण-वियारो, तेण मे एसा भमली जाय' त्ति ण साहिओ सब्भावो वयंसयाणं ति। एवं च वच्चंतेसु दियहेसु अणिच्छंतो वि अहिसित्तो जोयरज्जाभिसेए कुमारो, कुवलयचंद-राइणा भणिओ 'पुत्त, तुमं रज्जे, अहं पुण तुज्झ महल्लओ त्ति ता करेसु रज्जं' ति। कुमारेण भणियं 'महाराय, अच्छसु तुमं, अहं चेव ताव पव्वयामि' त्ति। राइणा भणियं 'पुत्त, तुमं अज्ज वि बालो, रज्ज-सुहं अणुभव, अम्हे उण भुत्त-भोगा। इमो चेय कुलक्कमो इक्खागु-वंस-पुव्व-पुरिसाणं जं जाए पुत्ते अभिसित्ते परलोग-हियं कायव्वं ति। एवं भणियं सव्व-महल्लएहिं। ठिओ कुमारो। राया वि णिव्विण्ण-काम-भोगो पव्वज्जाभिमुहो संजम-दिण्ण-माणसो अच्छिउं पयत्तो कस्स वि गुरुणो आगमणं पडिच्छंतो त्ति।

§ ३३१) एवं च अण्णम्मि दिणे दिण्ण-महादाणो संमाणियासेस-परियणो राया कुवलयमालाए समं किं-किं पि कम्म-धम्म-संबद्धं कहं मंतयंतो पसुत्तो। पच्छिम-जामे य कह-कह वि विबुद्धो चिंतिउं पयत्तो। अवि य।

कइया खणं विबुद्धो विरत्त-समयम्मि काय-मण-गुत्तो। चरण-करणाणुयोगं धम्मज्झयणे अणुगुणेस्सं॥
कइया उवसंत-मणो कम्म-महासेल-कढिण-कुलिसत्थं। सज्जं पिव अणवज्जं काहं गोसे पडिक्कमणं॥
कइया कय-कायव्वो सुमणो सुत्तत्थ-पोरिसिं काउं। वेरग्ग-मग्ग-लग्गो धम्मज्झाणम्मि वट्टिस्सं॥
कइया णु असंभंतो छट्ठट्ठम-तव-विसेस-सूसंतो। जुय-मेत्त-णिमिय-दिट्ठी गोयर-चरियं पवज्जिस्सं॥
कइया वि हसिज्जंतो णिंदिज्जंतो य मूढ-बालेहिं। सम-मित्त-सत्तु-चित्तो भमेज्ज भिक्खं विसोहेंतो॥
कइया खण-वीसंतो धम्मज्झयणे समुट्ठिओ गुणिउं। रागद्दोस-विमुक्को भुंजे सुत्तोवएसेण॥
कइया कय-सुसत्थो संसारेगत्त-भावणं काउं। सुण्णहर-मसाणेसुं धम्मज्झाणम्मि ठाइस्सं॥
कइया णु कमेण पुणो फासु-पएसम्मि कंदरे गिरिणो। आराहिय-चउ-खंधो देहच्चायं करीहामि॥
इय सत्त-सार-रहिओ चिंतेइ च्चिय मणोरहे णवरं। एस जिओ मह पावो पावारंभेसु उज्जमइ॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो बालत्तणयम्मि गहिय-सामण्णा। अणरसिय-णिव्विसेसा जेहिँ ण दिट्ठो पिय-विओओ॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो अकय-विवाहा अणाय-मयण-रसा। अदिट्ठ-दइय-सोक्खा पव्वज्जं जे समल्लीणा॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो अगणिय-पेम्मा अणाय-विसय-सुहा। अवहत्थिय-जिय-लोया पव्वज्जं जे समल्लीणा॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो उज्जुय-सीला अणाय-घर-सोक्खा। विणयम्मि वट्टमाणा जिण-वयणं जे समल्लीणा॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो कुडुंब-भारेण जे य णोत्थइया। जिण-सासणम्मि लग्गा दुक्ख-सयावत्त-संसारे॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो जाणं अंगम्मि णिव्वुडो कामो। ण वि णाओ पेम्म-रसो सज्झाए वावड-मणेहिं॥
धण्णा हु बाल-मुणिणो जाय च्चिय जे जिणे समल्लीणा। ण-यणंति कुमइ-मग्गे पडिकूले मोक्ख-मग्गस्स॥
इय ते मुणिणो धण्णा पावारंभेसु जे ण वट्टंति। सूडेंति कम्म-गहणं तव-कड्डिय-तिक्ख-करवाला॥
अम्हे उण णीसत्ता सत्ता विसएसु जोव्वणुम्मत्ता। परिवियलिय-सत्तीया तव-भारं कह वहीहामो॥
पेम्म-मउम्मत्त-मणा पणट्ठ-लज्जा जुआण-कालम्मि। संपइ वियलिय-सारा जिण-वयणं कह करीहामो॥
सारीर-बलुम्मत्ता तइया अप्फोडणेक्क-दुल्ललिया। ण तवे लग्गा एण्हिं तव-भारं कह वहीहामो॥

1) P पमत्तो for पसत्तो, P विम्मत्तो for उम्मत्तो. 2) P कुडुंबेसु, P सिणिह, J रक्खसीसु, J रायणिअणेसु. 3) P महाणईपवाहेणं, P वियप्प for कुवियप्प, J णक्खरकरणत्त-. 4) P मच्चू-, P एवं ट्ठिए. 5) P चिंतियंतो, J किंणिमिअं, P किंणिमसत्थं-, J ए for ते, P अउरे for उयरे. 6) J अजिण्णे-, P वयंसाण त्ति।, J om. य, J om. अणिच्छंतो वि. 7) J अभिसित्तो,. 8) J om. अहं चेव ताव पव्वयामि त्ति राइणा भणियं पुत्त तुमं, P मं for तुमं. 9) J भत्तभोआ, P om. पुव्व, J adds य after अभिसित्ते. 10) J परलोअहिअं, J om. ति, J भणिओ for भणियं, P adds त्ति after कुमारो. 13) P om. कम्म, P om. य, P कहं विबुद्धो, P चिंतयंतो पयत्तो. 14) J पिबुद्धो for विबुद्धो, J धम्मज्झाणो. 16) P om. सुमणो. 17) P यंभंतो for असंभंतो, P दिमिय for णिमिय. 20) P संसारे गंत भावणा कउं, P ट्ठाइस्सं. 22) P सव्वसार. 23) P adds उज्जायसीला अणेय before बालत्तणयम्मि, P repeats बालत्तणयंमि गहिय साम(मि)ण्णा, P अणरिसिय P पिओ for पिय. 24) J विआहा, P -नयणरसा।, P अदिट्ठकदइय, P जेण for जे. 25) J om. four lines from धण्णा हु बालमुणिणो अगणियपेम्मा etc. to जे समल्लीणा, P -जेयलोया, P अणेयघारसोक्खा. 27) P कुटुंब, J णो छइआ. 28) J णिव्वुओ. 29) J कुमतमग्गे. 30) J वट्टंता. 31) P ववभारं for तवभारं, 32) J -मयुम्मत्तमणा, P जुयाण, P करीकामो. 33) P अप्फोडणेक्क, P जरमरणवाहिविहुरा for ण तवे लग्गा एण्हिं.

अगणिय-कज्जाकज्जा रागद्दोसेहिँ मोहिया तइया। जिणवयणम्मि ण लग्गा एण्हिं पुण किं करीहामो ॥
जइया धिईए वलिया कलिया सत्तीए दप्पिया हियए। तइया तवे ण लग्गा भण एण्हिं किं करीहामो ॥
जइया णिट्ठुर-देहा सत्ता तव-संजमम्मि उज्जमिउं। ण य तइया उज्जमियं एण्हिं पुण किं करीहामो ॥
जइया मेहा-जुत्ता सत्ता सयलं पि आगमं गहिउं। ण य तइया पव्वइया एण्हिं जड्डा य वड्डा य ॥
इय वियलिय-णव-जोव्वण-सत्तिल्ला संजमम्मि असमत्था। पच्छायाव-परद्धा पुरिसा झिज्जंति चिंतेंता ॥
जइ तइया विरमंतो सम्मत्त-महादुमस्स पारोहे। अज्ज-दियहम्मि होंतो सत्थे परमत्थ-भंगिल्लो ॥
जइ तइया विरमंतो सुय-णाण-महोयहिस्स तीरम्मि। उक्खेंतो अज्ज-दिणं भव्वाइँ य सेस-रयणाइं ॥
जइ तइया विरमंतो आरूढो जिण-चरित्त-पोयम्मि। संसार-महाजलहिं हेलाए चेय तीरंतो ॥
जइ तइया विरमंतो तव-भंडायार-पूरियप्पाणो। अज्ज-दिणं राया इं मुणीण होंतो ण संदेहो ॥
जइ तइया विरमंतो वय-रयण-गुणेहिँ वड्ढिय-पयावो। रयणाहिवो त्ति पुज्जो होंतो सव्वाण वि मुणीणं ॥
जइ तइया विरमंतो रज्ज-महा-पाव-संचय-विहीणो। झत्ति खवेंतो पावं तव-संजमिओ अणंतं पि ॥
जइ तइया विरमंतो तव-संजम-णाण-सोसियावरणो। णाणाण कं पि णाणं पावेंतो अइसयं एण्हिं ॥
इय जे बालत्तणए मूढा ण करेंति कह वि सामण्णं। सोयंति ते अणुदिणं जराएँ गहियाइमा पुरिसा ॥
ता जइ कहं पि पावइ अम्हं पुण्णेण को वि आयरिओ। ता पव्वयामि तुरियं अलं म्ह रज्जेण पावेणं ॥

§ ३३२) इमं च चिंतयंतस्स पढियं पहाउय-पाढएणं। अवि य।

हय-तिमिर-सेण्ण-पयडो णिवडिय-तारा-भडो पणट्ठ-ससी। वित्थय-पयाव-पसरो सूर-णरिंदो समुग्गमइ ॥

इमं च सोऊण चिंतियं राइणा 'अहो, सुंदरो वाया-सउण-विसेसो। अवि य।

णिज्जिय-गुरु-पाव-तमो पणट्ठ-गुरु-मोह-णरवइप्पसरो। पसरिय-णाण-पयावो जिण-सूरो उग्गओ एण्हिं ॥

चिंतयंतो जंभा-वस-वलिउव्वेल्लमाण-भुय-फलिहो,

'नमस्ते भोग-निर्मुक्त नमस्ते द्वेष-वर्जित। नमस्ते जित-मोहेन्द्र नमस्ते ज्ञान-भास्कर ॥'

इति भणंतो समुट्ठिओ सयणाओ। तओ कुवलयमाला वि 'णमो जिणाणं, णमो जिणाणं' ति भणमाणी संभम-वस-खलमाण-खलंतुत्तरिज्जय-वावडा समुट्ठिया। भणिओ य णाए राया 'महाराय, किं तए एत्तियं वेलं दीहुण्ह-मुक्क-णीसासेणं चिंतियं आसि'। राइणा भणियं 'किं तए लक्खियं ताव तं चेय साहेसु, पच्छा अहं साहीहामो' त्ति। कुवलयमालाए भणियं। "महाराय, मए जाणियं जहा तइया विजयपुरवरीए णीहरंतेण तए विण्णत्ता पवयण-देवया जहा 'जइ भगवइ, जियंते पेच्छामि णरणाहं, रज्जाभिसेयं च पावेमि, पच्छा पुत्तं अभिसिंचामि, पुणो पव्वज्जं अंते गेण्हामि। ता भगवइ, देसु उत्तिमं सउणं'ति भणिय-मेत्ते सव्व-दव्व-सउणाणं उत्तिमं आयवत्त-रयणं समप्पियं पुरिसेणं। तओ तुम्हेहिं भणियं 'दइए उत्तमो एस सउणो, सव्व-संपत्ती होहिइ अम्हाणं'ति। ता सव्वं संजायं संपइ पव्वज्जा जइ घेप्पइ' त्ति। इमं तए चिंतियं' ति। णरवइणा भणियं 'देवि, इमं चेय मए चिंतियं' ति। अवि य।

पुहईसार-कुमारो अभिसित्तो सयल-पुहइ-रज्जम्मि। संपइ अहिसिंचामो संजम-रज्जम्मि जइ अम्हे ॥

कुवलयमालाए भणियं। 'देव,

जाव इमं चिंतिज्जइ अणुदियहं सूसमाण-हियएहिं। ताव वरं रइयमिणं तुरिओ धम्मस्स गइ-मग्गो ॥'

राइणा भणियं। 'देवि, जइ एवं ता मग्गामो कत्थ वि भगवंते गुरुणो जेण जहा-चिंतियं काहामो' त्ति भणंतो राया समुट्ठिओ सयणाओ, कायव्वं काऊण समाढत्तो।

1) J रायद्दोसेहिं, P मोहिय तईया, P करीहार for करीहामो and then repeats four lines from वलुम्मत्ता तइया etc. to एण्हिं पुण किं करीहामो, J adds a line जइया मेहंजुत्ता सत्ता सयलं पि आगमं गहिउं which occurs at its place below (line 4). 2) J धितीय P वितीए for धिईए, J वलिया for कलिया, J दूप्पिया for दप्पिया. 3) P उज्जमियं, P तइया उज्जमिया. 4) P सयलंमि आगमं, P एहिं जड्डा. 5) P परद्धा परिम्मिहिज्जंति. 6) P भंगिले. 7) P om. य, P सीस for सेस. 8) P सइया for तइया, J पोतम्मि. 9) P पूरियप्पण्णो. 10) P रयणायरो त्ति पुरिसो होंतो. 11) P संचिय, P ज्झत्ति, P अणंतंमि. 12) P सोहियाभरणो. 13) P सामण्णं l. 14) P कोइ for को वि, JP अलम्ह. 16) J om. णिवडियताराभडो, P निपडिय°, J विणिहयप्पावपसरो for वित्थयपयावपसरो. 17) P राइणो. 19) P चिंतयं भावसलिलि-ओव्वेल्लमाणभुय. 21) J om. णमो जिणाणं ति, P संभव°, P ललमाणंतुत्तरिज्जय. 22) J °तुत्तरेज्जंतय. 23) P रायणा, P तं चिय, J साहिमो त्ति. 24) J om. महाराय मए जाणियं, J बिजयपुरीए. 25) P अभिसंचयामि, P वत्तिमं for उत्तिमं. 26) P om. दव्व, P उत्तमं, P repeats उत्तमं आयवत्तरयणं, J तुम्मेहिं for तुम्हेहिं, P चइए for दइए. 27) P होही for होहिइ, P सव्वत्तं जायं संपयं पव्वज्जा, J adds च before तए. 28) J adds ए before देवि. 29) P असहिसित्तो सुयलपुहइरज्जंमि. 31) P चिंतिज्जंति, P गतिमग्गो. 32) P देव for देवि, J कत्थइ for कत्थवि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३३३) एवं च अच्छमाणेण तम्मि चेय दियहे वोलीणे मज्झण्ह-समए पडिणियत्तेसु सेस-समण-माहण-वणीमय-किमिग-सत्थेसु भुत्त-सेस-सीयल-विरसे आहारे जणवयस्स णिय-मदिरोवरि णिज्जूह-सुहासणत्थेण दिट्ठं साहु-संघाडयं णयरि-रच्छा-मुहम्मि । तं च केरिसं । अवि य ।

उवसंत-संत-वेसं करयल-संगहिय-पत्तयं सोम्मं । जुय-मेत्त-णिमिय-दिट्ठिं वासाकप्पोढिय-सरीरं ॥

तं च साहु-संघाडयं तारिसं पेच्छिऊण रहस-वस-समूससंत-रोमंच-कंचुओ राया अवइण्णो मंदिराओ । पयट्टो य गयवर-गमणो तं चेय दिसं जत्थ तं साहु-जुवलयं । तम्मि य पयट्टे पहाइओ सयल-सामंत-मंडल-संणिहिओ राय-लोओ सयलो य पक्कल-पाइक्क-णिवहो । तओ तुरिय-तुरियं गंतूण राया तम्मि चेय रच्छा-मज्झयारे तिउणं पयाहिणं काऊणं णिवडिओ चलणेसु साहूणं । भणिउं च पयत्तो ।

चारित्त-णाण-दंसण-तव-विणय-महाबलेण जिणिऊण । गहियं जेहिँ सिव-पुरं णमो णमो ताण साधूणं ॥

भणमाणेण पुणो पुणो पणमिया णेण साहुणो । उव्वूढो य चूडामणि-किरण-पसरमाण-दस-दिसुज्जोविएण उत्तिमंगेण बहु-भव-सय-सहस्स-णिम्महणो मुणि-चलण-कमल-रओ त्ति । मुणिवरेहिं पि

सम-मित्त-सत्तु-चित्तत्तणेण सम-रोस-राय-गणणेहिं । विम्हय-संभम-रहियं अह भणियं धम्मलाभो त्ति ॥

भणिया य भत्ति-भरावणउत्तमंगेण राइणा भगवंतो समणा । अवि य ।

तव-संजम-भार-सुणिब्भरस्स सुय-विरिय-वसभ-जुत्तस्स । देह-सयडस्स कुसलं सिद्धि-पुरी-मग्ग-गामिस्स ॥

साधूहिं भणियं 'कुसलं गुरु-चलणप्पभावेणं' ति । राइणा भणियं 'भगवंतो, अवि य,

गुरु-कम्म-सेल-वज्जं अण्णाण-महावणस्स दावग्गिं । किं णामं तुह गुरुणो साहिज्जउ अह पसाएणं ॥

साहूहिं भणियं । 'महाराया,

इक्खागु-वंस-जाओ पाविय-गुरु-वयण-सयल-सत्थत्थो । कंदप्प-दप्प-फलिहो दप्पफलिहो त्ति आयरिओ ॥'

राइणा भणियं । 'भयवं, किं सो अम्ह भाया रयणमउडस्स रिसिणो पुत्तो दप्पफलिहो किं वा अण्णो' त्ति । साहूहिं भणियं । 'सो चेय इमो' त्ति भणिय-मेत्ते हरिस-वस-वियसमाण-लोयण-जुवलेण भणियं 'भगवं, कम्मि ठाणे आवासिया गुरुणो' त्ति । तेहिं भणियं । 'अत्थि देवस्स मणोरमं णाम उज्जाणं, तत्थ गुरुणो' त्ति भणंता साहुणो गंतुं पयत्ता । णरवई वि उवगओ मंदिरं । साहियं च कुवलयमालाए महिंदस्स जहा 'पत्तं जं पावियव्वं, सो चेय अम्ह भाया दप्पफलिहो संपत्तो आयरियत्तण-कल्लाणो इहं पत्तो । ता उच्छाहं कुणह तस्स चलण-मूले पव्वज्जं काऊणं' ति । तेहिं भणियं । 'जं महाराया कुणइ तं अवस्सं अम्हेहिं कायव्वं' ति भणमाणा काऊण करणिज्जं, णिरूविऊण णिरूवणिज्जं, दाऊण देयं, उच्छलिया कोउय-सिणेह-भत्ति-पहरिस-संवेय-सद्धा-णिव्वेय-हलहलाऊरमाण-हियवया संपत्ता मणोरमं उज्जाणं । तत्थ य दिट्ठो भगवं दप्प-फलिहो, वंदिओ य रहस-पहरिस-माणसेहिं । तेणावि धम्मलाभिया पुच्छिया य सरीर-सुह-वट्टमाणी, णिविट्ठा आसणेसु ।

§ ३३४) पुच्छियं च राइणा । 'भगवं, तइया तुमं चिंतामणि-पल्लीओ णिक्खमिऊण कत्थ गओ, कत्थ वा दिक्खा गहिया, किं च णामं गुरु-जणस्स' ए पुच्छिओ भगवं साहिउं पयत्तो । महाराय, तइया अहं णीहरिऊण संपत्तो भरुयच्छं णयरं ति । तत्थ साहुणो अण्णेसिउं पयत्तो । दिट्ठो य मए भगवं महामुणी, वंदिओ मए जाव तेणाहं भणिओ 'भो भो दप्पफलिह रायउत्त, परियाणसि ममं । मए भणियं । 'भगवं

पंच-महव्वय-जुत्तं ति-गुत्ति-गुत्तं तिदंड-विरय-मणं । सिवउरि-पंथुवएसं को वा तं ण-यणए जीवो ॥'

तेण भणियं 'ण संपयं पुव्वं किं तए कहिंचि दिट्ठो ण व' त्ति । मए भणियं 'भगवं, ण मह हिययस्स मई अत्थि जहा मए दिट्ठो सि' त्ति । तओ तेण भणियं 'केण उण चिंतामणी पल्ली तुह दिण्ण' त्ति । मए भणियं 'भगवं, किं तुमं सो' त्ति । तेण

1 > P तंमि य चेय हे वोलीणे, P सेसयणवाहणवलीमयकिसिणसत्थेसुत्तसेसे-. 2 > P निजूहिय for णिज्जूह. 3 > P om. तं च केरिसं. 4 > P पत्तं य सोमं, P -दिट्ठी, P वासाकप्पोठिय-. 5 > J समूसलंत, P अवइमो महिमंदिराओ. 6 > P adds य after जत्थ, J पयट्टो, P मंडव for मंडल. P om. लोओ, P लो for सयलो, J पक्क for पक्कल. 9 > P संमत्त for चारित्त, P णियम for विणय, P साहूणं. 10 > P णे for second पुणो, P om. णेण, P साहुणो, P उछूढो य चूडामणी-, P दसु for दस, J सय for भव. 11 > J om. मुणिवरेहिं पि. 12 > J चित्तणेण, P समरोसरायगणेणेहिं, J तह for अह. 13 > On this page the writing in J is very much rubbed, J भत्तिभारावणउत्तमंगेण, P समाणा. 14 > J सुत for सुय, P तिरिय for विरिय, P देव for देह. 15 > P साहूहिं, J गुरूण चलण°, P भयवंतो. 16 > J मोह for कम्म, P वयं for वज्जं, J किण्णामं P किनामं, J अम्ह for अह, J पसएणं. 17 > J देव for महाराया. 18 > P इगु for इक्खागु, P विणय for वयण, P -सुत्तत्थो, JP दप्पफलिहो. 19 > P रायणा, P किं एसो, P रिसिणो दप्पपुत्तो फलिहो. 20 > P वियमाण, J जुअलेण, J om. भणियं before भगवं. 21 > P om. देवस्स, J मणोरमनामुज्जाणं, P णरवत्ती वि गओ. 22 > J adds य before जहा, P अप्पम्ह for अम्ह, P संपत्तायरियत्तणो इहं. 24 > P adds वि before कायव्वं. 25 > P हलहलाकरमाण, P om. य. 26 > P वंदिओ य रहरिसमाणसेहिं तेहिं वि धम्मलाहिया, P संरीस for सरीर, J वट्टमाणि णिहिट्ठा, J णिविट्ठामासणेसु. 27 > P om. भगवं, J चिंतामणी. 28 > P किंचि णामं, J गुरुअणस्स, P om. ए, P नीहारिऊण. 29 > P om. ति, J inter. भगवं & महामुणी, J adds य before मए. 31 > J तिडण्ड. 32 > J हिअयसम्मत्ती, P मती. 33 > P om. मए भणियं भगवं किं etc. to अमं ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणियं 'आमं' ति । मए भणियं 'भगवं, तए मह रज्जं दिण्णं' । तेण भणियं 'आसि' । मए भणियं 'जइ एवं ता भगवं रयणं रायरिसि-संपयं पि देसु मे संजम-रज्जं' ति । तेण भणियं । 'जइ एवं ता कीस विलंबणं करेसि' त्ति भणंतस्स तस्स कयं मए पंच-मुट्ठियं लोयं । भगवया वि कयं मज्झ सव्वं कायव्वं । तओ जहारिहं अज्झावयंतेण सिक्खाविओ सयलं पवयणसारं । णिक्खित्तो गच्छो, विहरिउं पयत्तो । भगवं ति-रयणयरणाहिवो विहरमाणो संपत्तो अयोज्झाए । तत्थ य णिक्खंतो तुज्झ जणओ महाराया दढवम्म-रिसी । सो य भगवं मासक्खवणेहिं पारयंतो कम्मक्खयं काउमाढत्तो । तओ तं च एरिसं जाणिऊण गुरुणा णिक्खित्तो अम्ह गच्छ-भारो । एवं च काऊण घेत्तूण दढवम्म-रिसिं सम्मेय-सेल-सिहरे वंदण-वत्तियाए संपत्तो । तत्थ य जाणिऊण अप्पणो कालं, कयं संलेहणा-पुव्वयं कालमासे अउव्वयं करणं खवग-सेढीए केवल-णाणं आउक्खयं च । तओ अंतगड-केवली जाया भगवंते दो वि मुणिंद-वसहे त्ति ।

§ ३३५) एवं च सोऊण कुवलयचंदप्पमुहा सव्वे वि हरिस-वस-संपत्ता णरिंदा । तओ भगवया भणियं । 'सावग,

सो च्चिय एक्को पुरिसो सो च्चिय राया जयम्मि सयलम्मि । हंतूण मोहणिज्जं सिद्धिपुरी पाविया जेण ॥'

भणियं च सव्वेहिं । 'भगवं, एवं एयं ण एत्थ संदेहो । ता कुणह पसायं, अम्हं पि उत्तारेसु इमाओ महाभव-समुद्दाओ' त्ति । भगवया वि पडिवण्णं । 'एवं होउ' त्ति भणमाणस्स भगवओ राइणा ओयारियाइं आभरणाइं सहिंदप्पमुहेहिं कुवलयमालाए वि अणेय-णारीयणेण परियालियाए । पवयण-भणिय-विहाणेण य णिक्खंता सव्वे वि । समप्पिया य कुवलयमाला पवत्तिणीए । तत्थ जहा-सुहं आगमाणुसारेणं संजमं काऊण संपुण्णे णिय-आउए संपत्ता सोहम्मं कप्पं दु-सागरोवमट्ठिईओ देवो जाओ त्ति । कुवलयचंद-साहू वि गुरूवएसे वट्टमाणो बहुयं पाव-कम्मं खविऊण कालेण य णमोक्कारमाराहिऊण वेरुलिय-विमाणे दु-सागरोवम-ट्ठिईओ देवो उववण्णो त्ति । सीहो उण पढमं अणसणं काऊण विंझाडईए संपत्तो तं चेव विमाण-वर-रयणं ति । सो वि भगवं ओहिण्णाणी सागरदत्त-मुणी संबोहिऊण सव्वे पुव्व-संगए काले य कालं काऊण देवत्तण-बद्ध-णाम-गोत्तो तम्मि चेव विमाणम्मि समुप्पण्णो त्ति । अह पुहईसारो वि कं पि कालंतरं रज्जं काऊण पच्छा उप्पण्ण-पुत्त-रयणो संठाविय-मणोरहाइच्च-रज्जाभिसेओ संभंतो संसार-महारक्खसस्स णाऊण असारत्तणं भोगाणं सो वि गुरूणं पाय-मूले दिक्खं घेत्तूण पुणो कय-सामण्णो तम्मि चेय विमाणे समुप्पण्णो त्ति । एवं च ते कय-पुण्णा तम्मि वर-वेरुलिय-विमाणोयर-उववण्णा अवरोप्परं जाणिऊण कय-संकेया पुणो णेह-णिब्भर-हियया जंपिउं पयत्ता । 'भो सुरवरा, णिसुणेह सुभासियं ।

जर-मरण-रोग-रय-मल-किलेस-बहुलम्मि णवर संसारे । कत्तो अण्णं सरणं एक्कं मोत्तूण जिण-वयणं ॥
तिरिय-णर-दणुय-देवाण होंति जे सामिणो कह वि जीवा । जिण-वयण-भवण-रूवाण कं पि पुण्णं कयं तेहिं ॥
जं किं पि कह वि कस्स वि कत्थ वि सोक्खं जणस्स भुवणम्मि । तं जिण-वयण-जलामय-णिसित्त-रुक्खस्स कुसुमं तु ॥ सव्वहा,
किं सोक्खं सम्मत्तं किं व दुहं होइ मिच्छ-भावो त्ति । किं सुह-दुक्खं लोए सम्मामिच्छत्त-भावेण ॥
सम्मत्तं सग्ग-समं मिच्छत्तं होइ णरय-सारिच्छं । माणुस-लोय-सरिच्छो सम्मंमिच्छत्त-भावो उ ॥
सम्मत्तं उड्ड-गई अहर-गई होइ मिच्छ-भावेण । तिरिय-गई उण लोए सम्मामिच्छत्त-भावेण ॥
सम्मत्तं अमय-समं मिच्छत्तं कालऊड-विस-सरिसं । अमय-विस-मीसियं पिव मण्णे उभयं तु लोगस्स ॥
सम्मत्तं जय-सारो मिच्छत्तं होइ तिहुयण-असारो । सारासार-सरिच्छो सम्मामिच्छत्त-भावो उ ॥
जं जं जयम्मि सारं तं तं जाणेसु सम्म-पुव्वं तु । जं जं जए असारं तं तं मिच्छत्त-पुव्वं तु ॥

एरिसं च तं जाणिऊण भो भो देवाणुप्पिया, अणुमण्णह जं अहं भणिस्सं ति । तओ सव्वेहि वि भणियं 'को वा अम्ह ण-याणइ जं सव्वं सम्मत्त-पुव्वयं ति । एवं ठिए किं भणियव्वं तं भणह तुब्भे' त्ति । तेण भणियं 'एत्तियं भणियव्वं

1) P रिज्जं for रज्जं, J om. जइ, P तं for ता. 2) J रयणंगयरिसी संपयं, P करिसि. 3) J मम for मज्झ, J om. कायव्वं. 4) P पयत्तो । रयणंगणरयणाहिवो, P अउज्झाए. 5) J तुब्भ or तुम्ह for तुज्झ, P महाय for महाराया, JP दढधम्मरिसी, J मासखमणेहि, J तव for तंच. 6) P निक्खिअम्ह गच्छभरो, JP दढधम्मरिसिं, P संमेतसेलसिहरं वंदण-. 7) P om. कयं, J अउव्वं. 8) J -भगवंतो, JP वसहो त्ति. 9) J विसण्णा for वससंपत्ता, J देव for सावग. 10) P सेक्को for एक्को, P जलंमि for जयम्मि, P मोहरज्जं, P पावया. 11) P कुणह पिसायं, P om. भव. 12) J om. वि, P ओयारियाओ आहरणाइ. 13) P वियणेणारीयणपूरियालिआए, J -णारिस्सणेण, P यणिक्खित्ता, P om. वि. 14) J एत्थ for तत्थ, J य for णिय, J °ठितीओ P ट्ठिती. 15) P साहू, P बहुपाव-, J काले य. 16) J वेरुलिया-, J दुस्सागरोवमठितीओ उववण्णो P दुसागरट्ठिईओ, P उण सणं काऊण. 17) P ओहिणाणी. 18) P देवत्तबद्ध, P चेय विमाणे, P अहं for अह. 19) J -रज्जाभिओ, जाणिऊण for णाऊण. 20) J प्पणो for पुणो, J कयसंपुण्णा P कयपुन्नो. 21) P विमाणायरे उवणायरे उण्णा, P पुणो णिय P णेब्भर. 22) P सुहासियं, J adds अवि य before जरमरण etc. 23) P किमल for मल, J om. एक्कं, J जिणिंदवर for जिण. 24) P तिरिनरदणसुदेवाण, J होंति जो सामिणो, P adds रूव before रूवाण. 25) P om. कत्थ वि, P सोक्खं तु जणस्स होइ भुवणंमि, P मूलं for कुसुमं. 26) P होति. 27) P om. the verse सम्मत्तं सग्गसमं etc. to भावो उ ॥, J तु for उ. 28) P inter. verses सम्मत्तं उड्डगई etc. & सम्मत्तं अमयसमं etc., P उड्डगती, P तिरियगती. 29) J विसमीसयं, J पि for तु. 30) P adds जय before होइ, P होइ संसारो । सारासार-, J तु for उ. 31) P om. तु, J ण सारं for असारं. 32) P adds इमं च before एरिसं, P om. च तं, P om. one भो, J देवाणुपिआ, P भणिस्सं ति, om. तओ सव्वेहि वि भणियं. 33) P om. भणियव्वं तं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं दुत्तारो संसार-सागरो, विसमा कम्म-गई, अणिच्चं जीवियं, भंगुरो विसय-संगो, चंचला इंदिय-तुरंगा, बंधण-सरिसं पेम्मं, उम्मायणो मयण-बाण-पसरो, मोहणं मोहणीय-कम्म-महापडलं ति। ता तुलग्ग-पावियं पि सम्मत्त-रयणं एत्थ महोयहि-समे संसारे अक्खिप्पइ महाराय-मच्छेहिं, उच्छूरिज्जइ महारोस-जल-माणुसेहिं, पल्हत्थिज्जइ महामाया-कम-ढीए, गिलिज्जइ महामोह-मयरेणं ति। तओ इमं च जाणिऊण पुणो वि सयल-सुरासुर-णर-तिरिय-सिद्धि-सुह-लंभ-कारणे भगवंताणं वयणे आयरं कुणह पावियव्वे।' तेहिं भणियं 'कहं पुण पावियव्वं' ति। तेण भणियं 'पुणो वि गेण्हह समायाणं जहा जत्थुप्पण्णा तत्थ तुम्हाण मज्झे केण वि अइसय-णाणिणा सव्वे संबोहणीया जिणधम्मे' त्ति। तेहि वि 'तह' त्ति पडिवण्णं। तं च तारिसं समायाणं काऊण वीसत्था भोए भुंजिउं समाढत्ता।

§ ३२६) एवं च भुंजंताणं भोए वच्चइ कालो जाव भुत्ताइं दोण्णि सागरोवमाइं किंचि-सेसाइं। इमम्मि य जंबुद्दीवे दाहिण-भरहे वोलीणेसु तिसु कालेसु किंचि-सेसे चउत्थे काले सिद्धिं गएसु इहावसप्पिणी-वट्टमाणेसु उसभाइसु पास-जिण-चरिमेसु तित्थंकरेसु समुप्पण्णे ति-लोय-सरोवर-महापंकए व्व महावीर-जिणिंदे त्ति। एरिसे य अवसरे सो कुवलय-चंद-देवो णिय-आउयं पालिऊण देव-लोगाओ चुओ समाणो कत्थ उववण्णो। अवि य। अत्थि कायंदी णाम णयरी। सा य केरिसा। अवि य।

तुंगट्टालय-तोरण-मंदिर-पुर-गोउरेहिँ परियरिया। तिय-चच्चर-सुविभत्ता जण-धण-मणि-कंचण-विचित्ता ॥

तम्मि य महाणयरीए कंचणरहो णाम राया।

रिउ-कुंजराण सीहो जो य रवी मित्त-पंकय-वणस्स। पणइ-कुमुयाण चंदो वासारत्तो व्व धरणियले ॥

तस्स य महिलाए इंदीवर-णामाए सुपुत्तो मणिरहो णाम समुप्पण्णो। सो य संवड्ढिओ बहुएहिं मणोरहसएहिं परिवड्ढ-माणस्स कहं कहं पि तारुव-कामोदएणं पारद्धि-वसणं समुप्पण्णं। तओ दियहं राईए य अवीसंतो आहेडयं वच्चइ पडिसेहिज्जंतो वि गुरुयणेणं, णिंदिज्जंतो वि वयंसएहिं, णिरुज्झंतो वि मंतियणेणं, वारिज्जंतो वि परियणेणं ति। अण्णया य तस्स तम्मि अवसरे पारद्धिं अरण्णं पविट्ठस्स को वुत्तंतो जाओ। अवि य।

णर-सुर-दइच्च-महिओ थुव्वंतो थुइ-सुहासिय-सएहिं। उप्पण्ण-णाण-सारो पत्तो वीरो तिलोय-गुरू ॥

तस्स य भगवओ महइ-महावीर-वद्धमाण-जिणयंदस्स विवित्ते पएसे विरइयं देवेहिं मणि-सुवण्ण-रयय-पायार-तियं, ठावियं दिव्वं वियड-दाढा-कराल-वयण-सीहाहिट्ठियं आसण-रयणं, णिम्मविओ मउय-सिसिर-सुरहि-पवण-चलमाण-साहा-समूह-पेरंत-णव-वियसिय-सुरहि-कुसुम-गोच्छ-रिंछोलि-णिलीण-महु-मत्त-भमर-रणरणाबद्ध-संगीय-मणहरो रत्तासोय-पायवो। तस्स य अधे णिविट्ठो भगवं सुरासुर-णरिंद-वंदिय-चलण-जुयलो संसार-महोवहि-णिमज्जमाण-जंतु-सहस्स-हत्थावलंबण-दाण-दुल्ललिओ महावीरो। तत्थ य इंदभूइप्पमुहाणं एगारसण्हं महामईणं गणहर-देवाणं सोधम्म-णाहस्स महिंदस्स य अण्णाणं च भवण-वइ-वाणमंतर-जोइस-विमाण-वासीणं सुराणं कंचणरहस्स य राइणो सपरियणस्स सम्मत्त-मूलं भव-भय-विणासणं दुविहं धम्मं साहिउं पयत्तो। अवि य।

णारय-तिरिय-णरामर-भव-सय-संवाह-दुग्गम-दुरंते। संसार-महा-जलहिम्मि णत्थि सरणं सिवाहिंतो ॥
सम्मत्त-णाण-दंसण-तिएण एएण लब्भए मोक्खो। जीवस्स गुणा एए ण य दव्वं होइ सम्मत्तो ॥
सम्मं भावो सम्मं जहुज्जुयं णत्थि किंचि विवरीयं। धम्माधम्मागासा-पोग्गल-जीवेसु जो भणिओ ॥ अहवा।
जीवाजीवा आसव-संवर तह बंध-णिज्जरा मोक्खो। एयाइं भावेणं भावेंतो होइ सम्मत्ते ॥ अहवा।
जं चिय जिणेहिँ भणियं पडिहय-मय-दोस-मोह-पसरेहिं। तं सव्वं सव्वं चिय इय-भावो होइ सम्मत्तं ॥
अरहा जाणइ सव्वं अरहा सव्वं पि पासइ समक्खं। अरहा भासेइ सच्चं अरहा बंधू तिहुयणस्स ॥

1) P कंमगती. 2) P मोहणिय-, P त्ति for पि, P adds त्ति before एत्थ. 3) P -°समें संसारि, P महारायकमढिणा. 5) J समायारं जहा जत्थु°. 6) P जं हो for जहा, P य for वि, J अतिसय, P om. जिणधम्मे त्ति, J तेहि मि तह. 7) J om. तारिसं. 8) P वच्चएइ, P किंच-, P इमं पि य जंबुदीवे. 9) P किंचसेसे, P सिद्धि, P इहावओस्सप्पिणीए-, P उसभाइपास-जिणवट्टेसु तित्थंकरेसु. 10) P इव for व्व, P कुवलयचंदो णिय-. 11) J देवलोभाओ. 13) J गोअरेहिं, P सुविहत्ताजण-धणिमणि. 14) J करणरहो for कंचणरहो. 15) P °रत्तो व धरणियले ॥. 16) J णामाए पुत्तो रयणरहो णामो, P संवड्ढिओ. 17) P रुणे for रूव, J adds से before समुप्पण्णं, P रातीए, J वीसंतो P अविसंतो. 18) P गुरुतरेणं, P निरुंभंण्णो for णिरुज्झंतो, P om. वारिज्जंतो वि परियणेणं. 19) J अण्णता, J inter. तस्स & तम्मि, P पारद्धिए रण्णे. 21) P om. य after तस्स, J वद्धमाण, J रयत P रइय, J तिसं for तियं. 22) J -सिहाहिट्ठियं, P णिमिओ for णिम्मविओ. 23) P -निलीणमररणरणावत्तसगीय. 24) P अधि for अधे, P om. णरिंद, P महो for महोवहि, P जंतुहत्थालंबण. 25) P तस्स for तत्थ य, JP इंदभूति°, P महामंतीणं गण°, P सोहमनाहस्स, J om. च. 26) J जोतिस, P वासीसुराणं. 27) P adds जिणो before धम्मं. 28) P दुग्गदुरंते, P जिणं मोत्तुं for सिवाहिंतो. 29) P तिणएतेण, P एतेण दिव्वं होत्ति सम्मत्तं. 30) P जहुद्दुत्तं for जहुज्जुयं, P inter. णत्थि & किंचि, P °धम्माभासा, J सो for जो. 31) J °जीवासव, P भावें च तो अह होइ सम्मत्तं. 32) P भणियं हयरागदोस, P adds, after होइ सम्मत्तं ॥, अरहा जाणइ सव्वं सव्वं चिय इय भावो होइ संमत्तं ।. 33) P जाणं for सव्वं before पि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरहा भासइ धम्मं अरहा धम्मस्स जाणए भेयं । अरहा जियाण सरणं अरहा बंधं पि मोएइ ॥
अरहा तिलोय-पुज्जो अरहा तित्थंकरो सुधम्मस्स । अरहा सयं पबुद्धो अरिहा पुरिसोत्तमो लोए ॥
अरहा लोग-पदीवो अरहा चक्खू जयस सव्वस्स । अरहा तिण्णो लोए अरहा मोक्खं परूवेइ ॥
इय भत्ती अरहंते कुणइ पसंसं च भाव-गुण-कलिओ । साहूण भत्तिमंतो इय सम्मत्तं मए भणियं ॥
तं जिण-वयण-रसायण-पाण-विबुद्धस्स होइ एक्कं तु । दुइयं पुण सहस च्चिय कम्मोवसमेण पुरिसस्स ॥
एयं तिलोय-सारं एयं पढमं जयम्मि धम्मस्स । एएण होइ मोक्खो सम्मत्तं दुलहं एयं ॥

§ ३३७) एवं च तिलोय-गुरुणा साहिए सम्मत्ते जाणमाणेणावि अबुद्ध-बोहणत्थं भगवया इंदभूइणा गणहारिणा आबद्ध-करयलंजलिउडेण भणियं 'भगवं, इमं पुण सम्मत्त-रयणं समुप्पण्णं भावओ कस्सइ जीवस्स कहं णज्जइ जहा एस सम्मद्दिट्ठी जीवो' त्ति । भगवया भणियं ।

उवसम-संवेगो च्चिय णिव्वेओ तह य होइ अणुकंपा । अत्थित्त-भाव-सहियं सम्मत्ते लक्खणं होइ ॥ अहवा,
मेत्ती-पमोय-कारुण्णं मज्झत्थं च चउत्थयं । सत्त-गुणवंत-दीणे अविणए होंति सम्मं ॥
खामेमि सव्व-सत्ते सव्वे सत्ता खमंतु मे । मेत्ती मे सव्व-भूएसु वेरं मज्झ ण केणइ ॥
सम्मत्त-णाण-दंसण-जुत्ते साहुम्मि होइ जो पुरिसो । ठिइ-वंदण-विणयादी करेइ सो होहिइ पमोओ ॥
संसार-दुक्ख-तविए दीणाणाहे किलिस्समाणम्मि । हा हा धम्म-विहीणा कह जीवा खिज्जिरे करुणा ॥
दुट्ठाण मोह-पंकंकियाण गुरु-देव-णिंदण-रयाण । जीवाण उवेक्खा एरिसाण उवरिम्मि मज्झत्थं ॥
अहवा वि जय-सभावो काय-सभावो य भाविओ जेण । संवेगो जेण तवे वेरग्गं चेय संसारे ॥
सव्वं जयं अणिच्चं णिस्सारं दुक्खहेउ असुइं च । अह तम्हा णिव्वेओ धम्मम्मि य आयरो होइ ॥
वेरग्गं पुण णियमं सरीर-भोगेसु उवहि-विसएसु । जाणिय-परमत्थ-पओ णवि रज्जइ धम्मिओ होइ ॥
एएहिँ लक्खणेहिं णज्जइ अह अत्थि जस्स सम्मत्तं । उवसम-विराग-रहियं णज्जइ तह तस्स सम्मत्तं ॥

§ ३३८) एवं च सुरासुरिंद-गुरुणा साहिए सम्मत्त-लक्खणे भणियं गोयम-सामिणा 'भगवं, इमं पुण सम्मत्त-महा-चिंतामणि-रयणं केण दोसेण दूसियं होइ, जेण तं दोसं दूरेण परिहरामो' त्ति । भगवया भणियं ।

दीहाऊ गोयम इंदभूइ अह पुच्छियं तए साहु । सम्मत्तं रयण-समं दूसिज्जइ जेण तं सुणसु ॥
संका-कंखा-विइगिच्छा होइ चउत्थं च कुसमय-पसंसा । पासंडियाण संथव पंच इमे दूसण-कराइं ॥
जीवादीएँ पयत्थे जाणइ जिण-वयण-णयण-दिट्ठिल्लो । किं होज्ज इमं अहवा ण व त्ति जो संकए संका ॥
कंखइ भोए अहवा वि कुसुमए कह वि मोह-हय-चित्तो । आकंखइ मिच्छत्तं जो पुरिसो तस्स सा कंखा ॥
एत्थं पि अत्थि धम्मो एत्थ वि धम्मस्स साहिओ मग्गो । एवं जो कुणइ मणं सा विइकिच्छा इहं भणिया ॥
इह विज्जा-मंत-बलं पञ्चक्खं जोग-भोग-फल-सारं । एयं च्चिय सुंदरयं पर-तित्थिय-संथवो भणिओ ॥
एए णिउणा अह मंतिणो य धम्मप्परा तवस्सी य । पर-तित्थ-समणयाणं पासंडाणं पसंसा तु ॥
जह खीर-खंड-भरिओ उडओ केणावि मोह-मूढेण । मेलिज्जइ णिंब-रसेण असुइणा अह व केणावि ॥
एवं सम्मत्तामय-भरिओ जीवाण चित्त-घडओ वि । मिच्छत्त-वियप्पेणं दूसिज्जइ असुइ-सरिसेणं ॥

तम्हा भणामि 'तुम्हे पडिवज्जह सम्मत्तं, अणुमण्णह सुय-रयणं, भावेह संसार-दुक्खं, पणमह जिणवरे, दक्खेह साहुणो, भावेह भावणं, खामेसु जीवे, बहु मण्णह तवस्सिणो, अणुकंपह दुक्खिए, उवेक्खह दुट्ठे, अणुगेण्हह विणीए, चियारेह पोग्गल-परिणामे, पसंसह उवसमे, संजणेह संवेगं, णिव्विज्जह संसारे, पत्तेवेह अत्थिवायं, मा कुणह संकं, अवमण्णह

1) P जाणई मेयं, J जिणाण for जियाण, P सव्वरणं for सरणं, P बद्धं विमोएइ. 2) P तिलोए, J सुबुद्धो for पबुद्धो, P adds पुरिहा before पुरिसो°, P पुरिसोत्तिमो. 3) J लोगपईवो, P तिसो for तिण्णो, P पदीवेइ ॥. 4) J भत्तिवंतो. 5) दुतियं. 6) J परमं for पढमं. 7) J इंदभूतिग°. 8) J adds च after भणियं, JP भावतो. 10) JP त्रिय, J अत्थेत्तिभाव, P समत्ति for सम्मत्ते. 11) J पमोत, P मज्झत्थयं च चत्थयं ।, P संतगुणवंतदीणथं नह विणए होति, J अविणाए, J समं P सम्मं तु. 13) P साहुंमि, P जो हरिसो, J थिति P ठिति, J विणयाती, J सो हेहिति पमोतो, P adds त्ति after पमोओ. 14) P दीणाणाहि, J कीलेसमावंमि, P जीवो किज्जरे. 15) P वुट्ठाण for दुट्ठाण, P उव्वेक्खा. 16) J जए सहावो P मणसब्भावो, P कायसहावो, J संवेओ, J भवे for तवे, P चे for चेय. 17) J तण्हा for तम्हा, P होहित्ति for होइ. 18) J repeats वेरग्गं, P नियरं for णियमं. 19) P कह for तह. 20) J गोतम, P सम्म for सम्मत्त. 21) J om. चिंतामणि, P दूसेण. 22) P दीहाओ, J गोतम, JP इंदभूति, P पुच्छिउं, P सुणेसु. 23) JP वितिगिच्छा, P थेवं for संथव. 24) J जीवातीए अत्थे जाणति, P जीवादीण, P om. णयण, J संकते. 25) J कंखति P कंखत्ति, J अधवा, P कुसमये, J कहवि लोहमोहहियचित्तो । आकंखति, मीछत्तं, P सो for सा. 26) JP वितिकिच्छा, P इमं for इहं. 27) J बल for फल, J तित्थं for तित्थिय. 28) P एते, P अभि for अह, J अह संतिणो पारम्पयरा, P ओ for तु. 29) P inter. खंड & खीर, [कुडओ or घडओ for उडओ]. 30) J °मयसरिओ जीआण, P चित्तघडिओ, P वियप्पे जीवेणं दूसिज्जइ. 31) J तुब्भे for तुम्हे. 32) J om. उवेक्खह दुट्ठे, P अणुगेण्ह. 33) P सवेग्गं, J अत्थिवातं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केखं, विगिंचेह विइकिच्छं, पमाएह कुसमय-पसंसं ।
सम्मत्त-सार-रहिए मा सज्जह उत्तुणं पर-कुतित्थे । मिच्छत्त-वडूणं भो होइ कयं अलिय-वयणं च त्ति ॥ तम्हा,
जइ छुब्भइ पायाले पल्हत्थिज्जइ गिरिस्स टंकम्मि । जइ छिज्जइ कह वि सिरं मा मुंचह तह वि जिणवयणं ॥ त्ति ।

§ ३३९) एयं दंसण-रयणं णाणं पुण सुणसु जं मए भणियं । एक्कारसंग-चोद्दस-पुव्वं अत्थं च वित्थरियं ॥
एक्कम्मि वि जम्मि पदे संवेयं कुणइ वीयराग-मए । तं तस्स होइ णाणं जेण विरागत्तणमुवेइ ॥
किं बहुणा वि सुएणं किं वा बहुणा वि एत्थ पढिएणं । एक्कम्मि वि वट्टंता पयम्मि बहुए गया सिद्धिं ॥
तम्हा करेसु जत्तं दंसण-चरणेसु सव्व-भावेणं । दंसण-चरणेहिँ विणा ण सिज्झिरे णाण-सहिया वि ॥

§ ३४०) णाणेण होइ किरिया किरिया कीरइ परस्स उवएसो । चारित्ते कुणह मणं तं पंच-महव्वए होइ ॥
पाणिवहालिय-वयणं अदिण्णदाणं च मेहुणं चेय । होइ परिग्गह-सहियं एएसु य संजमो चरणं ॥
एयाइं पावयाइं परिवज्जेंतो करेसु विरइं तु । इह परलोए दुह-कारयाइँ वीरेण भणियाइं ॥
जो हिंसओ जियाणं णिच्चं उव्वेय-कारओ पावो । असुहो वेराबंधो वेरेण ण मुच्चइ कया वि ॥
णिंदिज्जइ सव्व-जणे वह-बंधं घाय-दुक्ख-मरणं वा । पावइ इहं चिय णरो पर-लोए पावए णरयं ॥
सव्वं च इमं दुक्खं जं मारिज्जइ जिओ उ रसमाणो । जह अप्पा तह य परो इच्छइ सोक्खं ण उण दुक्खं ॥
जइ मम ण पियं दुक्खं सोक्खत्थी जह अहं सजीयस्स । एमेव परो वि जिओ तम्हा जीवाण कुण अभयं ॥

§ ३४१) एवं च साहिए भगवया तित्थयरेण पुच्छियं गणहर-देवेण 'भगवं, कहं पुण हिंसा भण्णइ' । भगवया भणियं ।

जीवो अणादि-णिहणो सो कह मारिज्जए जणेण इहं । देहंतर-संकमणं कीरइ जएँ णाम तस्सेय ॥
एक्के भणंति एवं अण्णे उण वाइणो जहा सुहुमो । ण य सो केणइ जीवो मारिज्जइ णेय सो मरइ ॥
अण्णे भणंति पुरिसा सव्व-गओ एस तस्स कह घाओ । अण्णे पुण पडिवण्णा अणुमेत्तो केण सो वहिओ ॥
अवरे भणंति एवं उड्ढ-गईं किर जिओ सभावेण । अच्छइ देह-णिबद्धो जो मोयइ धम्मिओ सो हु ॥
अवरे भणंति कुगइच्छूढो अह एस अच्छइ वराओ । अह जोणि-विप्पमुक्को वच्चउ सुगईसु आवेओ ॥
अण्णे भणंति मूढा पुराण-घरयाउ पइसइ णवम्मि । को तस्स होइ पीडा देहंतर-संकमे भणसु ॥
अण्णे भणंति पुरिसा एएणं मारिओ अहं पुव्विं । तेण मए मारिज्जइ दिज्जइ तस्सेय जो देइ ॥
अवरे विहियं ति इमं इमस्स जायस्स मरण-जम्मं वा । तं होज्ज अवस्सं चिय मित्त-मेत्तो मज्झ अवराहो ॥
अवरे भणंति विहिणा एसो अह पेसिओ महं वज्झो । तस्सेव होउ पुण्णं पावं वा मज्झ किं एत्थ ॥
अण्णे पुण पडिवण्णा कम्म-वसो कम्म-चोइओ जीवो । कम्मेणं मारिज्जइ मारेइ य कम्म-परयत्तो ॥
इय एवमाइ-अण्णाण-वाइणो जं भणंति समएसुं । तं सव्वं अलियं चिय जीव-वहे होंति दोसाइं ॥
जीवो अणाइ-णिहणो सच्चं देहंतरम्मि संकमइ । देहाओ से ण सुहं विउज्जए होइ दुक्खं से ॥
ऊसास-इंदियाइं अब्भिंतर-बाहिरा इमे पाणा । ताणं विओय-करणं पमत्त-जोएण सा हिंसा ॥
अह तेहिँ विउज्जंतस्स तस्स जीवस्स दुस्सहं दुक्खं । जं उप्पज्जइ देहे अह पावो तस्स सो भणिओ ॥
तिल-तेल्लाण परोप्परमणुगय-सरिसस्स जीव-देहस्स । दुक्खं ताण विओओ कीरइ जो कुणइ सो पावो ॥ त्ति ।

एवं च साहिए सुरासुर-गुरुणा पुच्छियं भगवया गोयम-सामिणा 'भगवं, इमं पुण पाणाइवाय-वेरमणं महावय-रयणं केरिसेण पुरिसेण रक्खिउं तीरइ' त्ति । भगवया भणियं ।

---

1) P विगिच्छेह, J विगिच्छं, P कुसुमय. 2) J सामत्थं त्र for मा सज्जह, J परकुडिच्छे ।, P सो for भो, P कणं for कयं, P om. तम्हा. 3) P पायालो, J पल्हेछिज्जइ, P कहं वि. 4) J पुण भणसु, P पुच्छं for पुव्वं, J अण्णं for अत्थं. 5) P एकंमि जो पयंमी संवेगं, J वीतरागमते P वीयमए, J ता for तं, J जोण for जेण. 6) J om. वि before एत्थ. 7) P करेसु जुत्तं, P चरणेणसु, J दंसणचरणेसु विणा. 8) J om. one किरिया, P कीरस्सइ, P उवएसा. 10) JP एताइं, P पडिवज्जंतो, J ति for तु, P दुह काइं वीरेण, J वीरेहिं. 11) J णहिंसओ for हिंसओ, P उव्वियकारणो, J असुहो रोद्दावंधो, J कयाइ ॥. 12) J adds ण before वहबंधं, J वहबंधघाय, J णरओ for णरं. 13) J जयंमि for उ, P वि for य, J सोक्खे. 14) J अब्भयं, 15) P तित्थंकरेण, J गणधर-, P inter. कहं & पुण. 17) P अणाइ-, P सो किर माणिज्जए जणिण इहं, J जाण माम for जएँ णाम, P जय for जए. 18) J पुण for उण, P वाइणा, P क्खेण वि for केणइ, P adds त्ति after मरइ. 19) P को for कह, P अवरे उण for अण्णे पुण, J अणुमेत्ता. 20) P एयं उड्डगती, P सहावेण, P जो मायाइ, P साहू for सो हु. 21) J कुगई, J विप्पवुत्तो, P मुच्चइ for वच्चउ, P सुगइं सुयावेयो. 23) P पुव्वं, P om. दिज्जइ, P नेइ for देइ. 24) J जीवस्स for जायस्स, J होइ for होज्ज. 25) J तस्सेय P तस्सव, P जोओ for होउ. 26) P उण for पुण, P पडिवन्नो, P परियत्तो. 27) J एवमाति अण्णाणवातिणो, P अन्नाणवाणो भणंति, P होइ for होंति. 28) J संभमइ for संकमइ, P सो ण य अहं J सो ण सुहं for से ण सुहं (emended). 29) P इंदियाई भवति अब्भितरा इमे, J भवे for इमे, P ताओ for ताणं, J अमत्तजोएण. 30) P om. तस्स. 31) P तिलतेल्लाण, J सरिसं जिअस्स देहस्स, P जं for जो. 32) P पुच्छिउं, J गोतम-, P गोयमगणहारिणा, J पाणातिवातविरमण महाबयणरयणं, P पाणातिपात, P महावइरयणं. 33) J om. पुरिसेण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इरिया-मण-समिईओ एसण-पडिलेह तह य आलोयं । पढमस्स वयस्स इमा समिईओ पंच विण्णेया ॥
जुगमेत्त-दिण्ण-दिट्ठी जंतू-परिहरण-दिण्ण-णयण-मणो । आवासयम्मि वच्चइ इरिया-समिओ हु सो पुरिसो ॥
तव-णियम-सील-रुक्खे भजंतं उप्पहेण वच्चंतं । णाणंकुसेण रुंभइ मण-हत्थिं होइ मण-समिओ ॥
असणं पाणं वत्थं व पत्तयं संजमम्मि जं जोग्गं । एसंतो सुत्तेणं मग्गइ जो एसणा-समिओ ॥
सेज्जा-संथारं वा अण्णं वा किंचि दव्व-जायं तु । गेण्हइ जइ वा मुंचइ पडिलेहेउं पमज्जेउं ॥
गहियं पि जं पि भत्तं पाणं वा भोयणस्स कालम्मि । आलोइऊण भुंजइ गुरुणो वा तं णिवेएइ ॥
एयाहिँ पंच-समिईहिँ समियओ जो भवे कह वि साधू । सो सुहुम-जंतु-रक्खं कुणमाणो संजओ भणिओ ॥
पाणाइवाय-विरमणमह पढमं इह महव्वयं भणियं । संपइ भण्णइ एयं मुस-वयण-णियत्तणं बिइयं ॥

§ ३४२) असभाय-कवलियं मि उ अलियं वयणं ति होइ मुसवाओ । तव्विरमणं णियत्ती होइ मुसावाय-विरइ त्ति ॥
अलियं जो भणइ णरो णिंदिय-अहमो इहं दुसद्देओ । अह चप्फलो त्ति एसो हीलिज्जइ सव्व-लोएण ॥
दुक्खेहिँ ठवेइ जिए अब्भक्खाणेहिँ अलिय-वयणेहिं । ताणं पि सो ण चुक्कइ पुव्वं अह बंध-वेराण ॥
मारण-लुंपण-दुक्खे पावइ जीहाएँ छेयणं लोए । मरिऊण पुणो वच्चइ णरए अह दुक्ख-पउरम्मि ॥
जं मज्झ इमं दुक्खं अलियब्भक्खाण-पडियस्स भवे । तह एयस्स वि तम्हा कुणह णियत्तिं तु अलियस्स ॥

एवं परूविए तिहुयण-गुरुणा पुच्छियं गोयम-गणहारिणा 'भगवं, केरिसं पुण अलिय-वयणं होइ' त्ति । भगवया भणियं ।

सब्भाव-पडीसेहो अत्थंतर-भासणं तहा णिंदा । एयं ति-भेय-भिण्णं अलियं वयणं मुणेयव्वं ॥
सब्भाव-पडीसेहो आया णत्थि त्ति णत्थि पर-लोओ । अब्भुय-भणणं आया तंदुलयंगुट्ठमेत्तो वा ॥
जो हत्थिं भणइ खरं एसो अत्थंतरो उ अलियस्स । पेसुण्ण-भाव-जुत्तं अरहा तं भण्णए अलियं ॥
फरुसं णिंदियमहमं अपच्छियं कोव-माण-संवलियं । सच्चं पि जइ वि भण्णइ अलियं तं जिणवर-मयम्मि ॥
सच्चं पि तं ण सच्चं जं होइ जियाण दुक्ख-संजणयं । अलियं पि होइ सच्चं जियाण रक्खं करेमाणं ॥
एयं अलियं वयणं अह कुणइ इमस्स विरमणं जो उ । दुइयं पि हु धरइ वयं दिण्ण-महा-सद्द-पुव्वं तु ॥

एवं च परूविए भगवया तियसिंद-वंदिएणं पुच्छियं गोयमसामिणा 'भगवं, कहं पुण एवं मुसावाय-वेरमण-महव्वय-रयणं रक्खणीयं' ति । भगवया भणियं ।

अणुवीइ-भासणं कोह-माय-लोहं च णिब्भर-पयारो । हासच्चाओ य तहा पंचेए भावणा होंति ॥
एयम्मि मए भणिए वयणेहिँ होज्ज ताव चिंतेमि । जंतूण सुहं दुक्खं होज्जा अणुवीइ-भासा तु ॥
कोवेण किंचि भण्णइ अलियं वयणं ति केण वि णरेण । तम्हा पच्चक्खाणं कोवस्स करेह हियएणं ॥
लोह-महा-गह-गहिओ को वि णरो किं पि जंपए अलियं । दूरेण तं अहिक्खिव मुणिवर संतोस-रक्खाए ॥
इह लोयाजीव-भएण कोइ पुरिसो भणेज्ज अलियं पि । सत्तविहं तं पि भयं परिहर दूरेण मुणिवसभा ॥
होइ परिहास-सीलो को वि णरो वेलवेइ हासेणं । तं पि ण जुज्जइ काऊण सच्च-संधाण साधूणं ॥
एयाओं भावणाओ भावेंतो रक्ख संजयं वयणं । एयाहिँ विणा मुणिवर सच्चं पि ण सच्चयं होइ ॥

§ ३४३) तह तेणो वि हु पुरिसो पर-दव्वं जो हरे अदिण्णं तु । सव्वत्थ होइ वेसो जण-संपयणं च पावेज्ज ॥
बंध-वह-घाय-छेयण-लंबण-तडिवडण-सूल-भेयादी । पावइ अवस्स चोरो मओ वि णरयं पवज्जेज्ज ॥
जइ इट्ठ-दव्व-विरहे होइ विओओ महं तह इमस्स । एयं चिंतेऊणं कुणह णियत्तिं पर-धणस्स ॥

एवं च समाइट्ठो भगवया संसार-महोयहि-जाणवत्तेण भणियं च गोयम-मुणिवरेणं 'भगवं, इमं पुण अदिण्णदाण-विरमण-

1) JP समितीओ, P अलोया ।, P om. वयस्स, JP समितीओ. 2) J आवस्सयंमि, J समितो. 3) P रुक्खो, P रंभइ मणहत्थी, J मणसमितो. 4) J -समितो. 5) P किं पि for किंचि, JP दव्वजातं, P मुचइ, J पडिलेहेतु वमज्जेतुं. 7) J पताहिं पंचसमितीहिं समितओ, P समिइओ जइ भवे, P साहू, J संजतो भणितो. 8) J पाणातिवात, P om. भण्णइ, P एवं, JP वितियं. 9) J मासवाकुअलिअम्मि तु अलियं, P असइवाय, J मुसवातो, J मुसावातविरति, P -विरए त्ति. 10) P adds हि before इहं, P अह तिफलो. 11) P ठवेवि, P वंक for बंध. 12) P लंछण for लुंपण. 13) P जइ for जं, P अलियउभक्खाणगडियस्स, P निवत्तिं. 14) J adds च after एवं, P पुच्छिओ, J गोतम, P inter. पुण & केरिसं. 15) P पडिरसेहो, P -भावणं. 16) P पडिरसेहो, J अब्भयभणमाया. 17) P हत्थीं, J तु for उ, P गरहा for अरहा, 18) J सुपच्छिमं P अपच्छिम. 19) P संजणणं P करेमाणो. 20) J तु for उ, J दियसं for दुइयं, P सो for पि हु. 21) J गोतम°, P गोयमगणहारिणा, J पुण एअं मुसावात-. 23) P कोहवायआभं च णिब्भय-, J पंचेते, P om. पंचेए. 24) P होरं अणुवीति भासाओ ॥. 25) J किअएण for हियएणं. 26) P के वि for कोवि, J अभिक्खिव. 27) P लोगाजीव, P परिहरइ, J मुणिवसहा ॥. 28) P किं पि for वेलवेइ, P काउं सच्च-, J संधारण, P साहूणं. 29) J एताओ, P सव्वयं for संजयं, P एताहिं. 30) P परेदव्वं, P हरेइ दिन्नं तु, P वेसो जणजंपवणं. 31) J पंत्र for बंध, P पाय for घाय, J लंपण, J सूलभेताइं, P पविज्जेज्ज. 32) P नियत्ती. 33) J महोवहि, J om. च, J गोतम.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महव्वय-रयणं कहं पुण सुरक्खियं साहुणो हवइ' त्ति । भगवया भणियं ।
अणुवीइ य भक्खण एत्तियं ति साहम्मिउग्गहो चेय । अणुणाय-भत्त-पाणो भुंजणए ताओ समिईओ ॥
देविंद-राय-सामंत-वग्गहो तह कुडुंबिय-जणस्स । अणुवीइ वियारेउं मग्गिजइ जस्स जो सामी ॥
वक्खित्त-कोव-माणेहिँ होज दिण्णो कया वि केणावि । मग्गिज्जए य भिक्खं अवग्गहो तेण कजेण ॥
इह सुत्त-गंथ इह मंतयाइँ एयम्मि होज मे उयही । अवियत्तं मा होहिइ अवग्गहो एत्तिओ अम्हं ॥
पासत्थोसण्ण-कुसील-संजया होज सड्डया वा वि । तं जाइऊण जुजइ साहम्मियवग्गहो एसो ॥
ऊसस-णीसस-रहियं गुरुणो सेसं वसे हवइ दव्वं । तेणाणुण्णा भुंजइ अण्णह दोसो भवे तस्स ॥
एयाओं भावणाओ कुणमाणो तत्तियं वयं धरइ । एत्तो वोच्छामि अहं मेहुण-विरइ त्ति णामेण ॥
§ ३४४) काम-महागह-गहिओ अंधो बहिरो व्व अच्छए मूओ । उम्मत्तो मुच्छियओ व्व होइ वक्खित्त-चित्तो य ॥
विब्भम-कडच्छ-हसिरो अणिव्वुओ अणिहुओ य उब्भंतो । गलियंकुसो व्व मत्तो होइ मयंधो गयवरो व्व ॥
अलियं पि हसइ लोए सवियारं अप्पयं पलोएइ । उग्गाइ हरिसिय-मणो खणेण दीणत्तणं जाइ ॥
विहसिज्जइ लोएणं एसो सो णिंदिओ जणवएणं । कज्जाकज्जं ण-यणइ मोहेण य उत्तुणो भमइ ॥
परदार-गमण-दोसे बंधण-वहणं च लिंग-छेदं च । सव्वस्स-हरणमादी बहुए दोसे य पावेइ ॥
मरिऊण य पर-लोए वच्चइ संसार-सागरे घोरे । तम्हा परिहर दूरं इत्थीणं संगमं साहू ॥
अह कोइ भणइ मूढो धम्मो सुरएण होइ लोगम्मि । इत्थीणं सुह-हेऊ पुरिसाण य जेण तं भणियं ॥
आहारं पिव जुज्जइ रिसिणो दाउं च गेण्हिउं चेय । जं जं सुहस्स हेऊ तं तं धम्मप्फलं होइ ॥
एयं पि मा गणेजसु दुक्खं तं दुक्ख-कारणं पढमं । तं काऊण अउण्णा उवेंति कुगईं गईं जीवा ॥
दुक्खं च इमं जाणसु वाहि-पडीयार-कारणं जेण । पामा-कंडुयणं पिव परिहर दूरेण कुरयं तं ॥
असुहं पि सुहं मण्णइ सुहं पि असुहं ति मोहिओ जीवो । दुक्ख-सुह-णिव्विसेसो दुक्खं च्चिय पावए वरसं ॥
पामा-कच्छु-परिगओ जह पुरिसो कंडुय-रइ-संतत्तो । णह-कट्ठ-सक्कराहिं कंडुयणं कुणइ सुह-बुद्धी ॥
तह मोह-कम्म-पामा-वियणाए चुलचुलेंत-सव्वंगे । सुरय-सुहासत्त-मणो असुहं पि हु मण्णइ सुहं ति ॥
एवं च भगवया तियसिंद-णरिंद-वंद-सुंदरी-वंदिय-चलणारविंदेण साहिए समाणे भगवया पुच्छियं गोयम-गणहारिणा 'भगवं इमं पुण मेहुण-वेरमण-महव्वय-महारयणं कहं पुण सुरक्खियं होइ' त्ति । भणियं च भगवया ।
वसहि-कहा-महिलिंदिय-पुव्वणुसरणं पणीय-रस-भुत्ती । एयाओं परिहरंतो रक्खइ मिहुणव्वयं पुरिसो ॥
इत्थि-पसु-पंडय-वज्जियाएँ वसहीएँ अच्छइ णीसंगो । सज्झाय-झाण-णिरओ इय बंभे भावणा पढमा ॥
इय छेयाओ ताओ णायरियाओ चलंत-णयणाओ । किलिकिंचिय-सुरयाइं इत्थीणं वजए साहू ॥
थण-जहण-मणहराओ पेच्छामि इमाओं चारु-जुवईओ । इय बंभचेर-विरओ मा मा आलोयणं कुणसु ॥
इय हसियं इय रमियं तीय समं मा हु संभरेज्जासु । धम्मज्झाणोवगओ हवेज णिच्चं मुणी समए ॥
मा भुंजेज पणीयं घय-गुड-संजोग-जोइयं बहुयं । जइ इच्छसि पालेउं बंभव्वयमुत्तमं धीर ॥
एयाओं भावणाओ भावेंतो भमसु भाव-पव्वइओ । संपइ वोच्छामि अहं परिग्गहे होंति जे दोसा ॥
§ ३४५) कुणइ परिग्गह-सारं जो पुरिसो होइ सो जए लोभी । अग्गि व्व इंधणेणं दुप्पूरो सायरो चेव ॥
लोभाभिभूय-चित्तो कज्जाकजाइँ णेय चिंतेइ । अज्जेंतस्स य दुक्खं दुक्खं चिय रक्खमाणस्स ॥
लुद्धो त्ति एस लोए णिंदिज्जइ परिभवं च पावेइ । णट्ठेसु होइ दुक्खं तम्हा वोसिरसु परिगहणं ॥

1) P सुक्खियं, 2) J अणुवीइ अभक्खणं P अभिक्खाण, P भत्तपाणे भुंजणाए, J समितीओ P समिता. 3) J सामं for सामंत, J om. वग्गहो. 4) J विक्खित्त, P मालेहिं for माणेहिं. 5) P मताइं for मंतयाइं, J होहिति P होहित्ति. 6) J संजता, P अट्टया for सड्डया, P ते for तं. 7) P तेणाणुसोयं for तेणाणुण्णा, P हवइ for भवे. 8) J तत्तियं वतं P तइययं वयं. 9) J होई P होति. 10) J विब्हम, P कडक्ख-, P अणिच्छओ, J अणिहिओ. 11) P लोएइ for सवियारं अप्पयं पलोएइ. 12) P निंदओ. 13) P छेयं, J हरणमाती, P सो for दोसे, J पावेति. 14) P पलोए वच्चइ संसायरे, P परिहरइ. 15) P सुरते कहं न for सुरएण होइ, J लोअंमि. 16) P adds, after जुज्जइ, पुरिसा एएणं मारिओ अहं पुव्वं । तेण मए मारिज्जइ तस्सेय जो देइ ॥ अवरे विहियंति, J हेउं तं. 17) P कुगइं गइं. 18) P वाहीपडियार, J पतीआर. 19) P च for पि सुहं, P om. पि, P सुहं for असुहं. 20) P पामाकंडूपुरिगओ, J कंडुअरति, P कंडूयणं. 21) P कंमपावाविणयाले चलचलेंतसव्वंगं, J विअणाय चुलचुलेंत. 22) J गोतम-, P गणहारिणो. 23) J मेहुणं वेरमण, P वेरमणं महव्वयं, P पुण रक्खियं भवइ त्ति ।. 24) P रसभोई ।, J एताए for एयाओ. 25) J इत्थीपसुपंडिय, J वसईए अच्छ णीसंको, P निस्संगो, P एगंते for इय बंभे. 26) P adds य after ताओ, P किलकिंची सुरयादी. 27) P थणहरनमणथराओ, J आलोवणं. 28) P ओ for हु, P धम्मज्झाणावगओ. 29) J संजोअ, P इच्छह, P वीर for धीर. 30) J एताओ, P भातो for भावेंतो, P adds संपइओ before संपइ. 31) J से for सो, J चेय. 32) JP °भूतचित्तो, J अज्जंतस्स. 33) P परिहवं.

Jain Education International		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

मरिऊण जाइ णरयं आरंभ-परिग्गहेहिँ जो जुत्तो । तस्स ममत्ते पावं ममं ति अप्प व्व संकुणइ ॥

एवं च सयल-विमल-केवलालोइय-लोयालोएण परूविए भणियं गोयम-मुणिणाहेणं 'भगवं, इमं पुण परिग्गह-वेरमण-महव्वय-रयणं कहं सुरक्खियं हवइ' त्ति । भगवया भणियं ।

पंचण्ह इंदियाणं विसए मा कामसु इ सुरूवे य । असुहे य मा दुगुंछसु इय समिई पंच परिगहणे ॥ त्ति । इय
पंच-महव्वय-जुत्तो ति गुत्ति-गुत्तो तिदंड-विरय-मणो । साहू खवेइ कम्मं अणेय-भव-संचियं जं तु ॥ पुणो,
जत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं । सासयमकारिमं चिय णवर सुहं जाइ तं सिद्धिं ॥
एयाण वयाण पुणो भेया दो होंति जिणवर-मग्गए । अणुव्वय-महव्वयाइं गिहिणो मुणिणो य सो भेदो ॥
एए मुणिणो कहिया जावज्जीवं हवंति सव्वे वि । गिहिणो उण परिमाणं अणुव्वए ते वि मुंचंति ॥ अण्णं च ।
कुणइ दिसा-परिमाणं अणुदियहं कुणइ देस-परिमाणं । तेणुड्ढं विरओ सो लब्भइ सव्वेसु अत्थेसु ॥
तइयं अणट्ठदंडं उवभोगं अत्तणो परिहरेत्ता । सेसेसु होइ विरओ पावट्ठाणेसु सव्वेसु ॥
सामाइयं चउत्थं एयं कालंतरं महं जाव । समणो व्व होमि विरओ सावज्जाणं तु जोगाणं ॥
पोसह-उववासो चिय पव्वे अट्ठमि-चउद्दसीय अण्णयरे । उववासो होइ तहिं विरई सावज्ज-जोगाणं ॥
घर-भोग-जाण-वाहण-सावज्ज-जियाण दुपयमादीण । परिमाण-परिच्छेदो विरई उवभोग-परिभोगे ॥
णाएण जं विढत्तं खाणं पाणं च वत्थ पत्तं वा । साहूण जा ण दिण्णं ताव ण भुंजामि विरओ हं ॥
तिण्णि य गुणव्वयाइं चउरो सिक्खावयाइँ अण्णाइं । पंच य अणुव्वयाइं गिहि-धम्मो बारस-विहो उ ॥ अण्णं च ।
मरणंतम्मि पवज्जइ छट्ठट्ठम-तव-विसेस-सूसंतो । समणो व सावओ वा मरणं संलेहणा-पुव्वं ॥

§ ३४६) एवं च तियसिंद-सुंदरी-वंद्र-रहस-पणमंत-पारियाय-मंजरी-कुसुम-रय-रंजिय-चलणारविंदेण साहिए जिणिंदेण भणियं गणहर-देवेणं 'भगवं, इमाणं पुण बारसण्हं वयाणं संवेग-सद्धा-गहियाणं गिहिणा के अइयारा रक्खणीय' त्ति । भगवया भणियं ।

एक्केक्के पंच जहा अइयारा होंति सव्व-वय-सीले । तह भणिमो सव्वे च्चिय संखेवत्थं णिसामेह ॥
बंध-वहच्छवि-छेदो अइभारारोवणं चउत्थं तु । पाणण्ण-णिरोधो वि य अइयारा होंति पढमस्स ॥
मिच्छोवदेस-करणं रहसब्भक्खाण कूड-लेहो य । णासावहार-करणं अलियं मंतस्स भेदं च ॥
तेण-पउंजण-आहिय-गहणं विरुद्ध-रज्जं वा । ऊणाहिय-माणं च्चिय पडिरूवं तेणिया होंति ॥
परउव्वाहो इत्तर-परिग्गहे गमण होइ पर-महिला । कीरइ अणंग-कीडा तिव्वो वा काम-अहिलासो ॥
खेत्त-हिरण्णे धण्णे दासी-दासेसु कुप्प-भंडेसु । होइ पमाणाइक्कम अइयारो होइ सो वस्सं ॥
खेत्तादिक्कम-सीमा-वइक्कमो तह हिरण्ण-अइचारो । खेत्तस्स वुड्ढि-सइअंतरं च पंचेव य दिसाए ॥
सद्दव्वाणयणं पेस-पओगो य सद्द-पाडो य । रूवाणुवाय-पोग्गल-पक्खेवो होइ देसस्स ॥
कंदप्पे कुक्कुइए मोहरिए चेव होइ असमिक्खा । उवभोगो वि य अधिओ अणट्ठदंडस्स अइयारो ॥
मण-वयण-काय-जोगे दुप्पणिहाणे अणादरो चेय । ण य सुमरइ तिय-कालं सामाइएँ होंति अइयारा ॥
उच्छग्गो आयाणं संथारो वा अजोइए कुणइ । ण य आदरो ण भरइ पोसध-धम्मस्स अइयारा ॥

---

1) P जोइ for जाइ, J adds य before ममत्ते, P पाव, J ममहि अप्पव्व संकुण ॥. 2) P °लोइया लोयालोए J (लोआ) लोएण for लोयालोएण, J गोतम, P गोममुणि°. 4) P कामसुहे सुरज्जेज्जा । अहेसु य, JP समिती, P परिग्गहेणे, P om. इय, 6) P मच्छू, P ण य for णेय, P च्चिय नवरं अह जीहमं तं, J सिद्धी. 7) P अणुव्वय. 8) J उण मरियाणं, J तु for वि, P विमुंचंति. 9) J तेणत्थं for तेणुड्ढं, J विरतो सो P परिओसो. 10) P अणत्थदंडं, P परिहरित्तो, J विरतो P विरत्तो. 11) P repeats एयं, J महो P मह for महं [=अहं], P सव्वणो, J विरतो. 12) J पोसध-, J अट्ठमी चउद्दसीय P अट्ठम्मि चउद्दसीउ. P होति, JP विरती. 13) J दुपतमातीण, P परिच्छेओ, J विरती 14) J तत्थ for वत्थ, P दिन्नं for दिण्णं, P विरतो 15) P बारसविहाओ ॥. 16) J संजतो for सावओ. 17) J एतं for एवं, P om. वंद्र, P -परियाय-, J कुसुमरयंजिअ. 18) J adds च after भणियं, P भणियं for भगवं, P गहिताण, JP अतियारा. 20) P adds एक्केक्के पंच पंच जहा अतियारा. होंति रक्खणीय त्ति । भगवया भणियं before एक्केक्के, P च्चिय, P निसामेहा. 21) P बंधं वहं च छेओ, P -निरोहा वि, J अतियारा. 22) P मिच्छोवएस, P रहस्सभक्खाण कूडलोहो य ।, P भेयं. 23) J पयुंजणयाहित, P -आहित, J होइ for होंति. 24) P परिविवाहो इत्तर, J उत्तर for इत्तर. 25) P खेत्त हिरसे सुवन्ने धणधन्नदासिदासे कुप्प, J पमाणातिक्कम अतिआरो, P होइ सव्वस्सं. 26) J खेत्तातिक्कम्म, J वतिक्कमो P वइक्कमे, J अइयारो P अतिचारो, J -सतिअंतरं P -स्सइअंतरं. 27) J सद्दो दव्वाण परं पेस. P सद्दा दव्वाणयणं, J सद्दपातो P सद्दपाढो, J रूवाणुपात P रूवाणुपाय, P होति. 28) P कंदप्प, P असमिक्खो, P उवभोगा, P अहिव्वो अणत्थ-, J अतिआरो. 29) J जोए, J णणादरो चेअ P अणायरे चेव, J सुमरति. 30) P उवसग्गो for उच्छग्गो, P अजोयणे for अजोइए, P आरो for आदरो, J भरई P भरेइ पोसह-, P अतिचारो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सच्चित्ते संबद्धो मीसो सच्चित्त-अभिसव-दुपक्को । आहारेंतो पुरिसो अइयारं कुणइ उवभोगे ॥
सच्चित्ते णिक्खेवो अधवा पिडणं परस्स एयं ति । देइ च मच्छर-जुत्तं अधवा काले अइक्कंते ॥
संलेहणाएँ जीविय-मरणे मित्ताणुराग-सुह-हिअओ । कुणइ णियाणं एए मरणंते होंति अइयारा ॥
इय सम्मत्त-महव्वय-वय-सील-गुणेसु रक्ख अइयारे । णर-सुर-सिद्धि-सुहेहिं जइ कज्जं तुम्ह भव्वजिय ॥ त्ति ।

§ ३४७) एवं च संसार-महोवहि-कम्म-महापवण-पहय-दुक्ख-सहस्स-तरंग-भंग-भंगुरे णरय-महामयर-करवत्त-कराल-दाढावली-मुसुमूरणा-चुक्कस्स जहिच्छिय-तीर-गामिए जियस्स जाणवत्ते व्व साहिए समण-सावय-महाधम्म-रयणे जिणिंदयंदेणं ति अवसरं जाणिऊण बहु-जीव-वह-पावासंकिएण पुच्छियं कंचणरहेण राइणा 'भगवं, मणिरह-कुमारो किं भव्वो, किं वा अभव्वो' त्ति । भगवया तिलोय-गुरुणा भणियं 'महाणुभाव, ण केवलं भव्वो चरम-सरीरो वि' । कंचणरहेण भणियं 'भगवं, जइ चरम-सरीरो ता कीस णिरुज्झंतो वि पारद्धि-वसणी जाओ' । भगवया भणियं 'किं कीरउ एत्थ पुरिसा तस्स कम्म-भवियव्वय' त्ति । राइणा भणियं 'भगवं, कहं पुण कइया तस्स बोही जिण-मग्गे होहिइ' त्ति । भगवया भणियं 'देवाणुप्पिया, पडिबुद्धो वि एत्तियं वेलं उवसंत-चारित्तावरणो जाव जाय-णिव्वेओ पत्त-संवेगो इहेव पत्थिओ' त्ति । राइणा भणियं 'भगवं केण उण वुत्तंतेण से संवेगं जायं' ति । भगवया भणियं 'अत्थि इओ जोयणप्पमाण-भूमि-भाए कोसंबं णाम वणं । तत्थ बहुए मय-संबर-वराह-सस-संघाया परिवसंति । तत्थ पारद्धि-णिमित्तं संपत्तो अज्ज मणिरह-कुमारो । तत्थ भममाणेण दिट्ठं एक्कम्मि पएसे मयउलं । तं च दट्टूण अवलयं अवलएण संकमंतो उवगओ समीवं । केरिसो य सो । अवि य ।

आयण्ण-पूरिय-सरो णिच्चल-दिट्ठी णिउंचियग्गीओ । णिम्मविओ लेप्प-मओ व्व कामदेवो कुमारो सो ॥

सो वि कहं-कहं पि णियय-मंस-विलुंपणा-भय-चकिय-लोल-दस-दिसा-पेसिय-कसिण-तरल-तारएहिं दिट्ठो मुद्ध-मय-सिलिंबेहिं । तं च दट्टूण सहसा संभंता पणट्ठा दिसोदिसिं सव्व-मया । ताणं च मज्झे एक्का मय-सिलिंबी तं कुमारं दट्टूण चिरं णिज्झाइ-ऊण दीहं णीससिऊण णिप्फंदिर-लोयण-जुयला सिणेह-वस-पम्हुट्ठ-णियय-जीय-विलुंपण-भया पफुल्ल-लोयणा उप्पण्ण-हियय-वीसंभा सव्वंग-मुक्क-णीसहा तं चेय आयण्ण-पूरिय-सरं कुमारं अहिलसेइ त्ति । तं च तारिसं दट्टूण कुमारेण चिंतियं । 'अहो, किमेयं ति । जेण सव्वे मया मईओ मय-सिलिंबा य दिसोदिसं पणट्ठा, इमा पुण मयसिलिंबी ममं दट्टूणं चिरयाल-दिट्ठ-दइयं पिव अवयासण-लालसा अभिमुहं उवेइ' त्ति चिंतयंतस्स संपत्ता तं पएसं । कुमारो वि संपत्तो । तओ दिट्ठो य तीय अणेय-सावय-जीवंतयरो अद्धयंद-सरवरो । तह वि,

दइयं पिव चिर-दिट्ठं पुत्तं पिव पाविया पियं मित्तं । अवगय-मरण-वियप्पा कुमरं अह पाविया मइया ॥

तं च तहा दट्टूण सिणेह-णिरंतरं पिव दइयं वण-मय-सिलिंबिं कुमारेण 'आ अणज्जो अहं' ति णिंदियं भग्गं तं सरवरं, चलणग्गेण य अक्कमिऊण मोडियं तं अत्तणो चावं । तओ मोडिय-कोडंडो अच्छोडिय-असि-धेणुओ इमं भणिउं पयत्तो । अवि य ।

जो मह पहरइ समुहं कड्ढिय-करवाल-वावड-करग्गो । तं मोत्तूण रण-मुहे मज्झ णियत्ती पहरिउं जे ॥
जो पहरइ जीवाणं दीणाणं असरणाण विमणाणं । णासंताण दस-दिसं कत्तो भण पोरिसं तस्स ॥
मारिज्ज दुट्ठ-मणो समुहं मारेइ पहरण-विहत्थो । जो उण पलाइ भीओ तस्स भयस्सावि किं मरइ ॥
मा होह गव्विय-मणा अम्हि किर विणिहया जिया रण्णे । एएहिं चिय वहिया तुब्भे एवं वियप्पेसु ॥
एए अम्हेहिँ जिया एक्कं वारेंति विणिहया रण्णे । अम्हे पुण एएहिं अणंतसो मारिहिज्जामो ॥
अहमो चिलीण-कम्मो पावो अह विट्टलो णिहीणो य । जो अवराह-विहीणे पहरइ जीवम्मि पाव-मणो ॥

1) J सच्चित्ता अभिसवदुप्पक्को, P अभिसवहुथक्को । आहारंतो, P अइयारो, P उवभोगो. 2) P अहव पियाणं, P एतं ति, P अहवा. 3) J जीवित, P मित्ताणुराय, J कुणइ मिताणं च एते, P मरणं तो, J अतिआरा. 4) P समत्त. P रय for वय, P वएसु for गुणेसु, J अतिआरे P अतियारे, J कज्जा, JP भवजिय. 5) P महोयहिकंममहपवण, P om. भंग. 6) P जिरस for जियस्स, P साहिते, 7) P पावासकंएण, P रायणा. 8) P केवलो, J om. वि, P कंचणरथेन भणितं. 9) P निरुंभंतो वि, P after पारद्धिवसणीजाओ repeats the further portion, namely, भगवया भणियं देवाणुप्पिया etc. to संवेगं जायं ति, J adds अ before किं, J repeats एत्थ, J एरिसो. 10) J om. भगवं, P om. कहं. 11) J देवाणुपिया, P एत्तियवलं, J om. जाव, P om. जाय, J पयत्त for पत्त. 12) P om. से, J वेरग्गं for संवेगं, J °प्पमाणे भूभाए. 13) J तत्थ य वहुमय-, P मणोरहकुमारो. 14) J संकंतो, P उवगतो. 15) P णिउव्वियग्गीओ. 16) P -नियमास-, J भूय for भय, JP चकित. 17) J सहा for सहसा, J दिसादिसं, J om. मय-. 18) J om. दीहं णीससिऊण, P सिणह, P णियजीविया विलुप्पणभया पप्फुल्ल, J °पप्फुल. 19) P च for चेय, J अहिलेइ त्ति, P om. अहो किमेयं ति. 20) J adds य after मईओ, P दिसादिसि पयट्टा, P उण for पुण, J adds एक्का after पुणो, P चिरकाल- 21) P अहिमुहं, P चिंतियंतस्स. 22) J जीअंतरो अद्धयंद, P जीवंतपरो अद्धयंदस्स वरो तहे वि. 23) P कुमारं, P inter. अह & कुमारं, P मतिया. 24) P inter. तहा & तं च, P वणमयासिलिंबी, P भयं for भग्गं. 25) P मोडितं अत्तणो, P -कोदंडो, J -ससिवेणुओ. 27) J om. तं, P रणमुहो, J जो for जे. 28) P भीयाणं for दीणाणं, P कत्तो पुण पोरुसं. 30) P गव्वियमणो अम्हि किर विणहिया, P repeats जिया, P विहया for वहिया, P वियप्पेओ ।. 31) P एते, P उण for पुण. 32) P विणिट्टणो for विट्टलो, P विहीणो.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

§ ३४८) एवं च चिंतयंतेण उप्पण्ण-मित्त-करुणा-भावेण छित्ता करयलेहिं सा मय-सिलिंबी । अवि य ।

जह जह से परिमासइ अंगे मइयाए णिहुययं कुमरो । पणय-कलहे व्व तह तह दइयाए गलंति अच्छीणि ॥

कुमारस्स वि तं दट्ठूणं वियसिय-लोयणेहिं उव्वूढो अंगेसु रोमंचो, पसरिओ हियए पहरिसो, णायं जहा 'का वि एसा मम पुव्व-जम्म-संबद्ध त्ति । अवि य ।

जाइंभराइँ मण्णे इमाइँ णयणाइँ होंति लोयस्स । वियसंति पियम्मि जणे अन्नो मउलेंति वेसम्मि ॥

सा एयं पुण ण-याणिमो कम्मि जम्मंतरम्मि का मम एसा आसि' त्ति चिंतयंतस्स ठियं हियए 'अज्ज किर ताओ गोसे चेय चंपाउरिं उवगओ किर तत्थ भगवं सव्वण्णू समवसरण-संठिओ,. तस्स वंदणा-णिमित्तं ता अहं पि तत्थ गमिस्सं जेण पुच्छामि एयं वुत्तंतं 'का एसा मय-वहू आसि अम्ह जम्मंतरे' त्ति चिंतयंतो चलिओ । संपयं पढमए समोसरण-पायार-गोउरंतरे वट्टइ, मय-सिलिंबी वि त्ति भणंतस्स भगवओ पुरओ मणिरह-कुमरो ति-पयाहिणं च काउं भगवंतं वंदिउं पयत्तो ।

'जय जय जियाण बंधव जय धम्म-महा-समुद्द-सारिच्छ । जय कम्म-सेल-दारण जय णाणुज्जोविय मुणिंद ॥' त्ति ।

भणमाणो पणमिओ चलणेसु । पणाम-पच्चुट्ठिएण भणियं । 'भयवं,

तं णत्थि जं ण-याणसि लोगालोगम्मि सव्व-वुत्तंतो । ता मह साहसु एयं का एसा आसि मह मइया ॥'

एवं च पुच्छिओ भयवं णाय-कुल-तिलओ जय-जीव-बंधवो बहुयाण जिय-सहस्साण पडिबोहणत्थं णियय-जाय-पव्वत्तं पुव्वक्खाणं साहिउं पयत्तो ।

§ ३४९) 'भो भो देवाणुप्पिया, अत्थि इओ एक्कम्मि मह जम्मंतरे सागेयं णाम णगरं । तत्थ मयणो णाम राया । तस्स य पुत्तो अहं, अणंगकुमारो य महं णामं तम्मि काले आसि । एवं च अच्छमाणस्स तम्मि णयरे को वुत्तंतो आसि । अवि य । आसि वेसमणो णाम महाधणो सेट्ठी । तस्स य पुत्तो पियंकरो णाम । सो य सोम्मो सुहओ सुयणो सुमणोहरो वाई कुसलो विणीओ पियंवओ दयालू दक्खिण्णो संविभागी पुव्वाभिभासी य त्ति । तस्स य एरिसस्स समाण-जम्म-काला सह-संवड्ढिया सहज्झय घरे पिउ-मित्तस्स धूया णामेण सुंदरि त्ति । सा वि रूवेण मणोहरा मुणीणं पि भावाणुरत्ता य । तस्स पियंकरस्स तं च तारिसं दट्ठूण तेण पिउणा तस्सेय दिण्णा, परिणीया य । धणियं च बद्ध-णेह-सब्भावा अवरोप्परं खण-मेत्तं पि विरहे ऊसुया होंति । एवं च ताणं अहिणव-सिणेहे णव-जोव्वण-वस-पसरमाण-सिणेह-पेम-राय-रसाणं वच्चए कालो । अण्णया य तहा-भवियव्व-कम्म-दोसेण वेयणीउदएण अपडु-सरीरो सो पियंकरो जाओ । अपडु-सरीरस्स सा सुंदरी महासोगाभिहया ण भुंजए ण सुयए ण जंपए ण अण्णं कायव्वं कुणइ, केवलं संभाविय-दइय-मरणा हिययब्भंतर-घरुव्वरंत-संताव-ताविय-णयण-भायणुव्वत्तमाण-बाह-जल-लवा दीण-विमणा सोयंती ठिया । तओ तहाविह-कम्म-धम्म-भवियव्वयाए आउय-कम्मक्खययाए य मओ सो वणिय-पुत्तो। तओ तं च मयं पेच्छिऊण विसण्णो परियणो, सो य विमणो पलविउं पयत्तो । अवि य ।

'हा पुत्तय हा बालय हा मुद्धड-गुण-गणाण आवास । कत्थ गओ सि पियंकर पडिवयणं देसु मे तुरियं ॥'

एवं च पलाव-णिब्भरे घर-जणवए हलबोलीहूए परियणे कयं च करणिज्जं, विणिम्मिवियं मय-जाणवत्तं । तओ तत्थ वोढु माढत्ता । तओ तं च तारिसं दट्ठूण सुंदरी पहाइया । 'भो भो पुरिसा, किं एयं तुब्भेहिं समाढत्तं' । तेहिं भणियं । 'वच्छे एस सो तुह पई विवण्णो, मसाणं णेऊण अग्गि-सक्कारो कीरइ' त्ति णिसुए कोव-विरज्जमाण-लोयणाए बद्ध-तिवली-भंगुर-णिडालवट्टाए भणियं 'अवेह, णिक्करुणा पावा तुब्भे जं दइयं मयं भणह, इमस्स कारणे तुब्भे चेय मया पडिहया डड्ढा य,

1) P चिंतयंतो, P कलुण for करुणा, P छिक्का for छित्ता, P मइसिलिंबी. 2) P परिमुसती अंगे मइया णिहुययं, J दइआय. 3) P उव्वूढो अंगे य. 4) J om. पुव्वजम्म, P om. अवि य. 5) P जाईसराइं मन्ने, P जमे for जणे, J वेस्सम्मि. 6) P जंजंतरंमि, P ट्ठियं, P गोसो चेय चपाउरीं आगवो. 7) J समवसरिओ तस्स, P वंदण-, P om. पि. 8) P एतं, P inter. आसि & अम्ह, P समवसरण- 9) P वट्टंति, P om. त्ति. 11) P om. one जय, P -दारुण. 12) P पणामिओ, P पणामपच्चुट्ठिएण 13) P जं न जाणसि, J लोआलोअम्मि. 14) J भगवं, J repeats जय, J पहूण for बहुयाण, J णिअअजातयवत्तं. 16) J देवाणुपिया, J सागेतं. 17) P अहं for य महं. 18) P adds तु before महाधणो, J om. य before पुत्तो, P सोमो. P सुयणा. 19) P कुसली, P °भागी पुभासी व त्ति, J च for य before त्ति, P om. य एरिसस्स, J समाणकम्मकलासह, P जंमकालसमाणसंवड्ढिया. 20) J सयज्झय P सयज्झिय, P पिय for पिउ, P om. पि. 21) J तेण से पिउणा तस्स य, P adds परिन्ना before परिणीया, P वद्धणे for बद्धणेह. 22) J om. पि, J adds तओ before एवं, P -सिणेह, J पेम्मरायवसाण. 23) J अण्णत्ता, J adds य before वेयणी, P अपटु- in both places, P om. सा. 24) J °सोगाहिहया, J adds न हसए after सुयए, P adds त्ति after कुणइ, J °हिअब्भंतर P हिययब्भंतर. 25) P सं for संताव, P ट्ठिया, J भविअव्वताए. 26) P कंमक्खयाए, P वणियउत्तो. J वि पुणो for विसण्णो. 28) P पुत्त महा, J गुणमणाणभयणया ।. 29) J कयं च जं करणीयं विणिम्मियं मयजाणं ।, P मयज्जाणवत्तं, J तत्थ वोढुं पयत्तो P तत्थ छोढुमाढत्ता, J om. तओ. 30) P किमेयं, 31) P तुह पती, P णाऊण for णेऊण, P नयणाए for लोयणाए. 32) J -पट्ठाए for वट्टाए, P repeats वट्टाए, J om. पावा J रड्ढाए P वट्टाइय for डड्ढा य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण कयाइं एस मह वल्लहो मरीहिइ डज्झिस्सइ' त्ति । तओ तेहिं चिंतियं 'अरे, एस गेह-गह-गहिया उम्मत्तिया पलवइ वराई' । 'गेण्हह एयं कलेवरं, णिक्कासेह मंदिराओ' त्ति भणमाणेहिं पुणो वि उक्खिविउं पयत्तं । तओ पुणो वि अभिधाविऊणं लग्गा सुंदरी । 'भो भो दुट्ठ-दुब्बुद्धिय-पुरिसा, कत्थ ममं इमं दइयं घेत्तुं चलिय' त्ति । अवि य ।

'पेच्छह पेच्छह लोया एसो मह वल्लहो जियंतो वि । हीरइ कहिं पि माए किं एस अराउलो देसो ॥'

त्ति भणंती णिवडिया उवरिं, तं च सव्वंगियं आलिंगिऊण ठिया । तओ य ते सयणा सव्वे किं-कायव्व-विमूढा विमणा दुम्मणा चिंतिउं पयत्ता । भणिया य पिउणा 'सुंदरि वच्छे, एस ते भत्ता मओ, मा एयं छिवसु, मुंचसु, डज्झइ एसो' त्ति । तीए भणियं 'एयस्स कए तं चिय डज्झसु' त्ति । तओ जणणीए भणियं ।

'कीस तुमं गह-गहिया एयं परिरक्खसे विगय-जीयं । मा होह पुत्ति मूढा एस मओ डज्झए एण्हिं ॥'

तओ तीए भणियं । 'अत्ता,

णाहं गहेण गहिया गहिया रक्खेण तं चिय अलज्जा । जा मज्झ पियं दइयं डज्झइ एसो त्ति वाहरसि ॥'

एवं च ससुरेण अण्णेण य गुरुयणेण सही-सत्थेण भणिया वि

पेम्म-महा-गह-गहिया मयं पि सा णेच्छए पियं मोत्तुं । रागेण होंति अंधा मण्णे जीवा ण संदेहो ॥

तओ विसण्णो से जणओ गारुलिए भूय-तंतिए अण्णे य मंतिवादिणो मेलेइ, ण य एक्केण पि से कोइ विसेसो कओ त्ति । तओ णत्थि को वि उवाओ त्ति पम्मोक्किया, तम्मि चेय अच्छिउं पयत्ता । तओ दुइय-दियहे जीय-विमुक्कं तं कलेवरं सुज्झिउं पयत्तं । पुणो अण्ण-दियहे य उप्पण्णो पोग्गलाण वि गंधो । तह वि तं सा मडयं

आलिंगइ बाहाहिं गुलुलइ हत्थेहिँ चुंबइ मुहेण । कीयंत-सुरय-लीलं तं चिय सा सुमरए मूढा ॥

तओ णिंदिज्जमाणी परियणेणं वारिज्जमाणी सहीहिं इमं भणिउं पयत्ता । अवि य ।

'एहेहि मज्झ सामिय वच्चामो बाहिरं वणंतम्मि । जत्थ ण पेच्छामो च्चिय अप्पिय-भणिरं इमं लोगं ॥

पेच्छ इमो गह-गहिओ लोगो इह भणइ किर मओ तं सि । इय णिट्ठुर-वयणाणं कह मज्झे अच्छिउं तरसि ॥

किर तं पि य मय-कुहिओ एसो अह जंपए जणो धट्ठो । एयस्स किं व कीरउ अहवा गह-गहियओ एसो ॥

मज्झ ण जुज्जइ एयं सामिय तुह णिंदणं सहेउं जे । तम्हा वच्चामो च्चिय जत्थ जणो णत्थि तं ठाणं ॥'

ति भणमाणीए उक्खित्तं तं करंकं आरोविउं उत्तिमंगे ओइण्णा मंदिराओ पयत्ता गंतुं रच्छा-मुहम्मि विम्हय-करुणा-हास-बीभच्छ-भय-भावेण जणेण दीसमाणी णिग्गया णयरीओ । केरिसं च घेत्तुं कलेवरं कुहियं । सिमिसिमेंत-अंतो-किमि-संकुलं भिणिभिणेंत-मच्छियं सडसडेंत-चम्मयं फसफसेंत-फेसयं कलकलेंत-पोट्टयं उव्वमंत-दुग्गंधयं दीसंत-हड्डयं फुरंत-पवणयं तुट्टंत-अंतयं फुडंत-सीसयं वहंत-मुत्तयं पयट्ट-पुव्वयं खिरंत-लोहयं वमंत-पित्तयं किरंत-मज्जयं ति ।

अंतो असुइ-सयब्भं बाहिर-दीसंत-सुंदरावयवं । कंचण-कलस-समाणं भरियं असुइस्स मज्झम्मि ॥

तं पि तारिसं भीमं दुद्दंसणं पेम्म-गह-गहिया घेत्तुं उवगया मसाणं । तत्थ खंधारोविय-कंकाला जर-चीर-णियंसणा धूलि-पंडर-सरीरा उद्ध-केसा मलिण-वेसा महा-भइरव-वयं पिव चरंती भिक्खं भमिऊण जं तत्थ सारं तं तस्स णिवेएइ । भणइ य ।

'पिययम एयं भुंजसु भिक्खं भमिऊण पावियं तुज्झ । सेसं पि मज्झ दिज्जउ जं तुह णवि रोयए एत्थ ॥'

एवं च जं किंचि भुंजिऊण दियहे दियहे कयाहारा कावालिय-बालिय व्व रक्खसी वा पिसाई व तस्सेय रक्खण-वावडा अच्छिउं पयत्ता तम्मि महा-मसाण-मज्झम्मि ।

1) J मरीहइ, J डज्झिस्स त्ति P डज्झिसइ त्ति, P ओमत्तिया विलवइ. 2) P गेण्ह एयं कडेवरं, P पुणो उवक्खिउं, J भओ for तओ. 3) J भो भो दुद्धिपुरिसा. 4) P कहं पि. 5) P om. त्ति, J om. य after तओ, P विमणदुम्मणा चिंतापरा अच्छिउं पयत्ता. 6) P सुंदरी, J ए for ते, J मा एवं, P om. मुंचसु. 7) J तीय, J डज्झासु P डज्झस, P माया पलविउं पयत्ता for जणणीए भणियं (on the margin in J). 8) P एतं, P -जीवं ।, P एहिं for एण्हिं. 10) P om. one गहिया, J अणज्जे for अलज्जा. 11) P om. वि. 12) J राएण, J जीआ. 13) P गारुलीए भूते-, J भूततंतिए, J मंतवातिणो मेलेति ण य एक्को पि, P म for ण य, P सो for से. 14) P तं उ for तओ, J कोइ for कोवि, P पुणो for तओ before दुइय, J adds य before जीय. 15) P सुज्झिउं, J अंबो for गंधो. 16) J गोलइ for गुलुलइ, P हत्थेण, P जायंत for कीयंत. 17) P सहियणेण इमं भणियं पयत्ता. 18) P adds च्चिय after वच्चामो, P भणियं इमं, J लोअं. 19) J लोओ किर भणइ किर, P तरइ ।. 20) P म for मय, J घेट्ठो ।. 21) P तुह णिंदणं पि सोउं जे ।, P जणे णत्थि. 22) J भणमाणीय, J उत्तमंगे P उत्तिमंगो. 23) P राय for भय, P om. कलेवरं, J किमिकुलं. 24) P फसफसेंते. 25) J तुडंत for तुट्टंत, P adds फुट्टंत अंतयं after अंतयं, J फुरंत P फुट्टंत for फुडंत, P पूव्वयं, J किरंतलोहियं, P adds रसंतवंधयं पयंतमेत्तयं after पित्तयं, P किरयंत. 26) J सरिस for कलस. 27) P भीम-, P रोवयं for मसाणं, P खंधाधारो वि य, P धूली-. 28) J om. तं before तस्स, P तत्थ for तस्स. 30) P पाविया एयं ।, P तुज्झ for तुह, P न for ण वि. 31) P om. जं किंचि, J कावालिणिअ व्व रक्खसी, J वा P य for व after पिसाई, P बहु व्व for तस्सेय रक्खणवावडा. 32) P om. महा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३५०) पुणो तेण तीए पिउणा विण्णत्तो अम्ह ताओ जहा 'देव एरिसो वुत्तंतो, अम्ह धूया गह-गहिया, ता तं जइ कोइ पडिबोहेइ तस्स जं चेय मग्गइ तं चेय अहं देमि त्ति दिज्जउ मज्झ वयणेण णयर-मज्झे पडहओ' त्ति । एवं च तायस्स विण्णत्तं तं णिसुयं मए । तओ चिंतियं मए । 'अहो, मूढा वराई पेम्म-पिसाएण ण उण अण्णेणं ति । ता अहं बुद्धीए एयं पडिबोहेमि' त्ति चिंतयंतेण विण्णत्तो ताओ । 'ताय, जइ तुमं समादिससि ता इहं इमस्स वणियस्स संबोहेमि तं धूयं' ति । एवं च विण्णविएण ताएण भणियं । 'पुत्त, जइ काऊण तरसि ता जुत्तं इमं कीरइ वणियाण उवयारो' त्ति भणिए चलिओ अहं मसाण-संमुहं । जाणिया मए कम्मि ठाणे सा संपयं । जाणिऊण णिवारियासेस-परियणो एगागी गहिय-चीर-माला-णियंसणो धूली-धूसर-सरीरो होऊण खंधारोविय-दुइय-कंकालो उवगओ तीए समीवं । ण य मए किंचि सा भणिया, ण य अहं तीए । तओ जा जं सा तस्स अत्तणो कंकालस्स कुणइ तं अहं पि णियय-कंकालस्स करेमि त्ति । तओ वच्चंतेसु दियहेसु तीए भणिओ अहं 'भो भो पुरिसा, किं तए एयं कीरइ' त्ति । मए भणियं 'किं इमाए तुज्झ कहाए' । तीए भणियं 'तह वि साहिज्जउ को एस वुत्तंतो' त्ति । मए भणियं 'एसा अम्ह पिया दइया सुरूवा सुभगा य । इमा य मणयं अपडु-सरीरा संजाया । ताव य जणो उल्लवइ 'एसा मया, मुंच एयं, डज्झइ' त्ति । तओ अहं तेण जणेण गह-गहिओ इव कओ । मए वि चिंतियं 'अहो, एस जणो अलिओ बलिओ य । ता इमिणा ण किंचि मज्झ कज्जं ति घेत्तूण दइयं तत्थ वच्चामि जत्थ णत्थि जणो' त्ति । एयं च णिसामिऊण तीए भणियं 'सुंदरं कयं जं णीहरिओ पियं घेत्तूण, एस जणो अलिय-भणिरो, इमिणा ण कज्जं ति । मह पि एसो च्चिय वुत्तंतो' त्ति । ता अम्ह सम-सहाव-वसणाणं दोण्हं पि मेत्ती जाया । मए वि भणियं 'तुम्हं मम भइणी, एस य भइणीवईओ, किं च इमस्स णामं' ति । तीए साहियं 'पियंकरो' त्ति । 'तुह महिलाए किं णामं' । मए भणियं 'मायादेवि' त्ति । एवं च कय-परोप्पर-सिणेहा अण्णमण्णं अच्छंति । जइया उण आवस्सय-णिमित्तं जल-पाण-णिमित्तं वा वच्चइ तइया य ममं भणिऊण वच्चइ । 'एस तए मह दइओ ताव दट्ठव्वो' त्ति भणंती तुरियं च गंतूण पुणो पडिणियत्तइ त्ति । अहं पि जइया वच्चामि तइया तं मायादेविं समप्पिऊण वच्चामि, झत्ति पुणो आगच्छामि'त्ति । एवं च उप्पण्ण-वीसंभा अण्णं पुण दियहं मम समप्पिऊण गया आगया य । तओ मए भणियं 'भइणि सुंदरि, अज्ज इमिणा तुह पइणा किं पि एसा मह महिला भणिया तं च मए जाणियं' ति । तीए भणियं । 'भो भो दइय, तुह कारणे मए सव्वं कुलहरं सहियणो य परिचत्तो । तुमं पुण एरिसो जेण अण्णं महिलंतरं अहिलससि' त्ति भणिऊण ईस-कोवा ठिया । पुणो अण्णम्मि दियहे मह समप्पिऊण गया कायव्वेणं । मए वि घेत्तूणं दुवे वि करंका कूवे पक्खित्ता । पक्खिविऊण य तीय चेय मग्गालग्गो अहं पि उवगओ । दिट्ठो य तीए पुच्छिओ । 'कस्स तए समप्पियाइं ताइं माणुसाइं' ति । मए भणियं 'मायादेवी पियंकरस्स समोप्पिया, पियंकरो वि मायादेवीए त्ति । अम्हे वि वच्चामो चेय सिग्घं' ति भणमाणा काऊण आवस्सयं संपत्ता संभंता जाव ण पियंकरो णा मायादेवि त्ति ।

§ ३५१) तओ तं सुण्णं पएसं दट्ठूण मुच्छिओ अहं खणं च समासत्थो धाहाविउं पयत्तो । कह वि य,

धावह धावह मुसिओ हा हा दुट्ठेण तेण पुरिसेण । जीवाओ वि वल्लहिया मायादेवी अवहिया मे ॥
धावह धावह पुरिसा एस अणाहो अहं इहं मुसिओ । अवियाणय-सील-गुणेण मज्झ भइणीएँ दइएणं ॥
भइणी सुंदरि एण्हि साहसु अह कत्थ सो तुहं दइओ । घेत्तूण मज्झ जाया देसाओ विणिग्गओ होज्ज ॥
किर तं सि महं भइणी सो उण भइणीवइ त्ति वीसत्थो । तं तस्स समप्पेउं पिय-दइयं णिग्गओ कज्जे ॥
जाव तुह तेण पइणा सील-विहूणेण णट्ठ-धम्मेण । साल-महिलं हरंतेण सुंदरं णो कयं होज्जा ॥

1) J तीय, J om. ता. 2) P om. मज्झ वयणेण, J om. णयरमज्झे, J इमं for एवं. 3) J तातस्स, P च तस्स विन्नत्तं, J तओ for अहो, P वराती पिम्म-. 4) P ताइं for अहं, P om. एयं, J om. ताओ, J जदि तुमं समादिससि ता इमस्स अह वणिअस्स, P समाइससि. 5) P जुत्तमिणं कीरइ वयारो त्ति. 6) P हं for अहं, P -समुहं, P ट्ठाणे. 7) P चीरमला, P -सीरीरो, J om. दुइय. 8) J तीय, P जं for जा, P repeats तं, P om. पि. 9) J तीय, P om. मए भणियं. 10) P तुह for तुज्झ, J तीय, P तहा वि, J अम्हं. 11) J सुहया for सुभगा, P om. य, P मणुयं for मणयं, P अपडुसरीरा, J जाया for संजाया, J om. य, P एतं. 12) P om. इव कओ, P om. वि, P अलिय for अलिओ, J om. बलिओ. 13) J तत्थ for जत्थ, P om. च, J तीय. 15) J om. तुम्हं, P य रुविणीवइओ. 16) P om. ति, J तीय. 17) P अण्णमण्णं इच्छंति, J पुण for उण, P om. य, J मं for ममं. 18) P om. च. 19) J समोविऊण, P -विसंभा. 20) P समप्पिऊ गया, J भइणो, P om. पि. 21) J adds ण after मए, P om. ति, J तीय, P सव्वकुसलहरं, J om. य, P व्व for य. 22) J अभिलससि, P मम for मह. 23) P गय, P पक्खिविऊण तस्सेय मग्गा°, P पिव for पि. 24) J तीय, J adds य after पुच्छिओ, P ताइं for तए, P समप्पिया. 25) P मायादेवी इ त्ति, P om. चेय, P भणमाणो, J ण सुहंकरो णा. 26) P om. णा. 27) J inter. अहं & खणं, J om. च, P सद्दाविउं for धाहाविउं, P om. अवि य. 28) P मो for मे. 29) J अविय ॥ णिय-, J भइणीय, P adds, after दइएणं ॥, भइणि सुंदरि एस अणाहो अहं इहं मुसिओ । and repeats the line अवियाणय etc. 30) J भइणो P भइणि, P साहह अह, P सो द तुह दइओ, P जायं, P अज्ज for होज्ज. 31) J ममं for महं, J तीय for तस्स, J पिय दुइयं. 32) P सालमहलं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइय च्चिय मे णायं जइया अवरोप्परेण जंपंता। किं-किं पि विहसमाणा जह एस ण सुंदरो पुरिसो ॥
ता संपइ कत्थ गओ कत्थ व मग्गामि कत्थ वच्चामि। जो चोरिऊण वच्चइ सो किर ओवलब्भए केणं ॥

ति भणमाणो पुणो पुणो वि अलियमलिय-दुक्ख-भर-मउलमाण-णयण-जुवलो विमुक्क-णीसह-वेवमाण-सव्वंगो णिवडिओ धरणिवट्ठे। पुणो वि सो विलविउं पयत्तो।

हा दइए हा मह वल्लहिए हा पिययमे अणाहो हं। कत्थ गया वर-सुंदरि साहसु तं ता महं तुरियं ॥ ति। अवि य।
तुज्झ कएणं सुंदरि धण-जण-कुल-मित्त-बंधवे सव्वे। परिहरिए जीयंते तुमए पुण एरिसं रइयं ॥

इमं च अलिय-पलवियं सोऊण मुद्ध-सहावाए चिंतियं वणिय-दारियाए जहा 'किर तेण मह पइणा इमस्स महिला उद्दालिऊण अण्णत्थ णीया होज्जा। ता एरिसो सो अणज्जो णिक्किवो णिग्घिणो णिद्दओ अणप्पणो कयग्घो पावो चंडो चवलो चोरो चप्फलो पारदारिओ आलप्पालिओ अकज्ज-णिरओ त्ति जेण मह माउणो महिलं वलविऊण कहिं पि घेत्तूण पलाणो त्ति। अवि य।

तुज्झ कए परिचत्तो घर-परियण-बंधु-वग्ग-परिवारो। कह कीरउ एत्ताहे अणज्ज भण विप्पियं एक्कं ॥
दइओ त्ति इमीएँ अहं मरइ विमुक्का मए त्ति णो गणियं। अह कुणइ मज्झ भत्तिं भत्तो अवहत्थिओ कह णु ॥
अह एस मह विणीया तुमए गणियं ण मूढ एयं पि। मोत्तूण ममं णिद्दय का होहिइ एरिसा महिला ॥
एस महं किर भाया एसा उण साल-महिलिया मज्झ। गम्मागम्म-विवेगो कह तुह हिययम्मि णो फुरिओ ॥
ता जो एरिस-रूवो माइल्लो कवड-कूड-णिण्णेहो। किं तस्स कएण अहं झिज्जामि असंभला मूढा ॥

§ ३५२) जाव य इमं चिंतिउं पयत्ता ताव मए भणियं। 'सुंदरि, एरिसे ठिए किं कायव्वं' ति। तीए भणियं 'णाहं जाणामि, तुमं जाणासि किमेत्थ करणीयं' ति। भणियं च मए। 'सुंदरि,

को णाम एत्थ दइओ कस्स व किर वल्लहो हवइ को वा। णिय-कम्म-धम्म-जणिओ जीवो अह भमइ संसारे ॥ अवि य।
सव्वं इमं अणिच्चं धण-धणिया-विहव-परियणं सयलं। मा कुणसु एत्थ संगो होउ विओगो जणेण समं ॥
सुंदरि भावेसु इमं जेण विओगे वि ताण णो दुक्खं। होइ विवेग-विसुद्धो सव्वमणिच्चं च चिंतेसु ॥
जह कोइ मय-सिलिंबो गहिओ रोद्देण सीह-पोएण। को तस्स होइ सरणं वण-मज्झे हम्ममाणस्स ॥
तह एस जीव-हरिणो दूसह-जर-मरण-वाहि-सिंघेहिं। घेप्पइ विरसंतो च्चिय कत्तो सरणं भवे तस्स ॥
एवं च चिंतयंतस्स तस्स णो होइ सासया बुद्धी। संसार-भउव्विग्गो धम्मं चिय मग्गए सरणं ॥
एस अणादी जीवो संसारो कम्म-संतति-करो य। अणुसमयं च स बज्झइ कम्म-महाकसिण-पंकेण ॥
णर-तिरिय-देव-णारय-भव-सय-संबाह-भीसण-दुरंते। चक्काइद्धो एसो भमइ जिओ णत्थि से थामं ॥
ण य कोइ तस्स सरणं ण य बंधू णेय मित्त-पुत्तो वा। सव्वो च्चिय बंधुयणो अव्वो मित्तं च पुत्तं च ॥
सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि जो ण जीयाण। सव्वाण आसि मित्तं पुत्तो वा बंधवो वा वि ॥
होऊण को वि माया पुत्तो पुण होइ दास-रूवो सो। दासो वि होइ सामी जणओ दासो य महिला य ॥
होऊण इत्थि-भावो पुरिसो महिला य होइ य णपुंसो। होऊण कोइ पुरिसो णवुंसयं होइ महिला वा ॥
एवं चउरासीई-जोणी-लक्खेसु हिंडए जीवो। रागद्दोस-विमूढो अण्णोण्णं भक्खणं कुणइ ॥
अण्णोण्णं वह-बंधण-घाउव्वेवेहिँ पावए दुक्खं। दुत्तार-दूर-तीरं एयं चिंतेसु संसारं ॥
एवं चिंतेंतस्स य संसार-महा-भएण गहियस्स। णिव्वेओ होइ फुडं णिव्विण्णो कुणइ धम्मं सो ॥

1) J तइउ, P पि वहसमाणी. 2) P गओ जत्थ व, P ओवलंभए णं के त्ति. 3) J om. one पुणो, J जुअलो. 4) J om. वि सो. 5) P दयए, P om. हा मह, J adds हा before अणाहो, J कत्थ गयासि तुमं। अवि य. 6) P जाण for जण, P रतियं. 7) J -वलवियं (विलवियं ?), J जह किर. 8) P उद्दालिऊण अणत्थ, P om. कयग्घो. 9) P inter. चँडो & चवलो, P परदारिओ आलपालिओ, J अयज्जणिरओ, P माइणो. 11) P om. परिचत्तो धर, J परिआरो, J पयाए for एत्ताहे. 12) P दइ त्ति इमीए हं, P भग्गो for भत्तो. 14) P सा for साल. 15) J तउ for ता, P माइण्णो, P inter. कूड & कवड, J महं for अहं, P असंभलाढा. 16) P मए भणिओ।, P ट्ठिए, J तीय. 18) J inter. णाम & एत्थ. 19) P धणवणिया, J होइ विओओ. 20) J विआए for विओगे, P विवो for विवेग, J °णिच्चं ति चिंतेइ. 21) P को वि. 22) P सिंघेण।. 23) JP om. तस्स, J सासता, J भवुव्विग्गो, P धंमो चिय. 24) P अणाई, J -संततिकरो P संततिरो. 25) J माणुस for णारय, P सो for से. 26) P को वि तस्स, J तत्थ for तस्स, P णेय पुत्त मित्तो वा, J सव्वो for अव्वो. 27) P को वि for कोइ. 29) J पुरुसो, P होइ अणुपुरिसो।, P णपुंसयं. 30) J चउरासीती P चउरासीतिजोणि. 31) J घाउव्वेवेहिं P घाउखेवेहिं, J एवं for एयं. 32) P निव्वेओ होइ फुडं, J से for सो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्को च्चिय एस जिओ जायइ एक्को य मरइ संसारे । ण य हं कस्सइ सरणं मह अण्णो णेय हो अत्थि ॥
ण य मज्झ कोइ सरणं सयलो सयणो व्व परजणो वा वि । दुक्खम्मि णत्थि बिदिओ एक्को अह पच्चए णरए ॥
एवं चिंतेंतीए भाविय-एगत्तणाए तुह एण्हिं । सयणेसु अवेइ फुडं पडिबंधो सुट्ठु वि पिएसु ॥
ण य परजणेसु रोसो णीसंगो भमइ जेण चित्तेण । पारंपरेण मोक्खो एगत्तं चिंतए तेण ॥
अण्णं इमं सरीरं अण्णो हं सव्वहा विचिंतेसु । इंदिय-रहिओ अप्पा सरीरयं सेंदियं भणियं ॥
अण्णं इमं सरीरं जाणइ जीवो त्ति सव्व-भावाइं । खण-भंगुरं सरीरं जीवो उण सासओ एत्थ ॥
संसारम्मि अणंते अणंत-रूवाइँ मज्झ देहाइं । तीयाणि भविस्संति य अहमण्णो ताणि अण्णाणि ॥
एवं चिंतेंतीए इमम्मि लोगम्मि असुइ-सरिसम्मि । ण य होइ पडीबंधो अण्णत्तं भावए तेण ॥
अह भणसि कहं असुई सरीरमेयं ति तं णिसामेहि । पढमं असुइय जोणी बिइयं असुइत्तणं च तं अंते ॥
असुइय-भायणमेयं असुई-संभूइमसुइ-परिणामं । ण य तं तीरइ काउं जेण सुइत्तं इमं होइ ॥
पढमं चिय आहारो पक्खित्तो वयण-कुहर-मज्झम्मि । उल्लेज्जइ सेंभेणं सेंभट्ठाणम्मि सो असुई ॥
तो पावइ पित्तेणं अंबिल-रस-भाव-भाविओ पच्छा । पावइ वायुट्ठाणं रस-खल-भेदे य कीरए तेण ॥
होइ खलाओ मुत्तं वच्चं पित्तं च तिविह-मल-भेओ । रस-भेओ पुण भणिओ सो णियमा तीय सत्त-विहो ॥
जो तत्थ रस-विसेसो रत्तं तं होइ लोहियं मासं । मासाओँ होइ मेओ मेयाओ अट्ठिओ होंति ॥
अट्ठीओ पुणो मज्जा मज्जाओ होइ सुक्क-भावेण । सव्वं च तं असुइयं सेंभादी सुक्क-पज्जंतं ॥
णह-दंत-कण्ण-णासिय-अच्छी-मल-सेय-सेंभ-वच्चाणं । असुई-घरं व सुंदरि भरियं राओ कहं होउ ॥
असुईओ उप्पण्णं असुई उप्पज्जइ त्ति देहाओ । गब्भे व्व असुइ-वासे असुई मा वहसु सुइ-वायं ॥
उदु-काल-रुहिर-बिंदू-णर-सुक्क-समागमेण पारद्धं । कललब्बुद-दव्वादी-पेसी संबद्धए एवं ॥
बाल-कुमारय-जोव्वण-मज्झिम-थेरत्त-सव्व-भावेसु । मल-सेय-दुरहि-गंधं तम्हा असुई सरीरं तु ॥
उव्वट्टण-ण्हाण-विलेवणेहिँ तह सुरहि-गंध-वासेहिं । सव्वेहिँ वि मिलिएहिं सुइत्तणं कत्थ तीरेज्ज ॥
सव्वाइं पि इमाइं कुंकुम-कप्पूर-गंध-मल्लाइं । ताव च्चिय सुइआइँ जा देहं णेय पावेंति ॥
देहम्मि पुणो पत्ता खणेण मल-सेय-गंध-परिमिलिया । ओमालयं ति भण्णइ असुइत्तं जंति सव्वे वि ॥
तम्हा असुइ सरीरं सुंदरि भावेसु जेण णिव्वेओ । उप्पज्जइ तुह देहे लग्गसि धम्मम्मि णिण्णेहा ॥
चिंतेसु आसवाइं पावारंभाइँ इंदियरसाइं । फरिसिंदिय-रस-विवसा बहुए पुरिसा गया णिहणं ॥
फरिस-सुहामय-लुद्धा वेगसरी गेण्हए उ जा गब्भं । पसवण-समए स च्चिय अह दुक्खं पावए घोरं ॥
बहु-करिणी-कर-कोमल-फरिस-रसासाय-दिण्ण-रस-लोलो । बज्झइ वारीबंधे मत्त-गओ फरिस-दोसेण ॥
इह लोए च्चिय दोसा परलोए होइ दुग्गई ताण । फासिंदिय-लुद्धाणं एत्तो जिब्भिंदियं सुणसु ॥
मय-हत्थि-देह-पविसण-रुंभण-वासोह-पत्त-उयहि-जले । जह मरइ वायसो सो धावंतो दस-दिसं मूढो ॥
हेमंत-थीण-वय-कुंभ-भक्खणे मूसओ जहोइण्णो । गिम्हम्मि विलीयंते मरइ वराओ रसण-मूढो ॥
गोट्ठासण्ण-महद्दह-वासी कुम्मो जहा सुवीसत्थो । रसणेंदिय-लोल-मणो पच्छा मारिज्जइ वराओ ॥
जह मास-पेसि-लुद्धो घेप्पइ सेणो झसो व्व बडिसस्स । तह मारिज्जइ पुरिसो मओ य अह दोग्गइं जाइ ॥
घाणिंदिए वि लुद्धो ओसहि-गंधम्मि बज्झए सप्पो । पललेण मूसओ वा तम्हा मा रज्ज घाणम्मि ॥
रूवेण पुणो पुरिसा बहुए णिहणं तु पाविया वरया । दीवेण पयंगो इव तम्हा रूवं पि वज्जेसु ॥

1 > P जायति, P ण for य, P अइ for मह. 2 > P inter. मज्झ & कोइ, P om. सयलो, J सुयणो for सयणो, P सुयणो for व्व परजणो, P बीओ for बिदिओ. 3 > P एग for एगत्तणाए, P सुयणेसु, J पडिबद्धो P पडिबुद्धो, J सुट्ठु वि, P एएसु. 4 > P परजणेय रोसो, P भजइ जेण, P एगंतं. 5 > J सेंदअं P संदियं. 6 > J अयणं for अण्णं; J repeats after सासओ एत्थ ॥, a verse from above ण य परजणेसु रोसो etc. to चिंतए तेण and some other portion. 7 > P om. अणंते, J तीताणि, J अइ अण्णो ताणं अणाईणि, P अहमण्णे. 8 > J लोअंमि, J पडीबद्धो P पडिबंधो. 9 > P असती सरीरमेत्तं, J सरीरमेतं, J बितियं, P चितिइ for बिइयं, P om. च तं. 10 > P असुइं भोयणमेत्तं असुती-, J -संभूतअसइ-, J जोण for जेण. 11 > P संमेणं संभट्ठाणंमि, J जो असुई P सो असुती. 12 > P अंबरसंभाव-, J भावितो, P पावइ असुइट्ठाण, J रसविलभेतेण कीरए. 13 > P मुत्तं वच्चं, J मलमाति for तिविहमलभेओ, J om. a line रसभेओ पुण etc. 14 > J लोहिआ, J मेज्जो मेताओ, P अट्ठिए. 15 > P पुणो मिज्जा मिज्जाओ, J सुक्कसंवेण P सुक्कभावे. 16 > J -णासिअ-, P om. अच्छी, J सेतसेंभवच्चारं, P सेत for सेंभ, P -घरयं सुंदरि, P राउं, P होइ. 17 > P असुतीओ, J उप्पज्जति, P गब्भो, P -वासो असुती, J सुइवातं. 18 > P उवकाल, J कललब्बुदवूहादी P वरलंबुदव्वदादी. 19 > J कुमार-, J थेरंत for थेरत्त, J -गंधे. 20 > P सव्वेहिं मि मिलियहिं मि, J मलेहिं for मिलिएहिं. P कुंकुर-, J च्चिय असुइअइं, P जावेहं. 22 > J परिमलिआ. 23 > P om. जेण णिव्वेओ etc. to णिण्णेहा ॥ चिंतेसु, J विरया for विवसा. 24 > P इंदियस्सीइं. 25 > P सुरहामय, J वेगसरीरगेण्हए, J तु for उ. 26 > P बहुकरिसरसायदिन्नरस, P बज्झति, P महागओ. 27 > P दुग्गती. 28 > P -वासोयपत्त, P दसदिसि. 29 > P जहोइण्णा. 30 > P लोलुमणो. 31 > P घेप्पइ सयणो, J पडिसस्स P बडियस्स, P वि for य. 32 > P तम्हा मारेज्ज. 33 > P पुरिसो, P पावया, J पतंगो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सवर्णिदियम्मि लोला तित्तिरय-कवोय-हरिणमादीया । पावंति अप्प-णिहणं तम्हा परिहरसु दूरेण ॥
एवं आसव-भावं सुंदरि भावेसु सव्व-भावेण । पडिरुद्ध-आसवो सो जेण जिओ मुच्चए तुरियं ॥
चिंतेसु संवरं चिय महव्वए गुत्ति-समिइ-गुण-भावे । एएहिँ संवुतप्पा जीवो ण य बंधए पावं ॥
चिंतेसु णिज्जरं चिय णरए घोरम्मि तिरिय-मणुएसु । अवसस्स होइ दुक्खं पावं पुण बंधए णियमं ॥
जइ पुण सहामि एण्हिं परीसहे भीसणे य उवसग्गे । ता मज्झ होइ धम्मो णिज्जरणं चेय कम्मस्स ॥
एण्हि च रम्मए च्चिय थोयं दुक्खं ति विसहियं एयं । मा णरय-तिरिय-मज्झे डहणंकण-बंधण-सएहिं ॥
एवं चिंतेंतीए परीसहोवद्दवेहिँ णो चलसि । धम्मम्मि घडसि तुरियं णिज्जरणं भावए एवं ॥
पंचत्थिकाय-मइयं पोग्गल-परिणाम-जीव-धम्मादी- । उप्पत्ति-णास-ठाणं इय लोगं चिंतए मतिमं ॥
एवं चिंतेंतस्स य लोए तत्तं च पेहमाणस्स । संजम-जोए बुद्धी होइ थिरा णाय-भावस्स ॥
एसो अणादि-जीवो संसारो सागरो व्व दुत्तारो । णर-तिरिय-देव-णारय-सएसु अह हिंडए जीवो ॥
मिच्छत्त-कम्म-मूढो कइया वि ण पावए जिणाणत्तिं । चिंतेसु दुलहत्तं जिणवर-धम्मस्स एयस्स ॥

§ ३५३) एवं च भो सुरासुर-णरवरिंदा, मणिरह-कुमार तुमं च णिसुणेसु । एवं च साहिए सयल-संसार-सहावे तओ आगय-पुव्व-बुद्धीए जाया अवगय-पेम्म-राय-महग्गहा जंपिउं पयत्ता ।

तं णाहो तं सरणं तं च्चिय जणओ गुरू तुमं देवो । पेम्म-महा-गह-गहिया जेण तए मोइया एण्हिं ॥

भणमाणी णिवडिया चलणेसु । मए वि भणिया 'सुंदरि, एरिसो संसार-सहावो किं कीरउ त्ति ता संपयं पि तं कुणसु जेण एरिसाणं संसार-दुक्खाणं भायणं ण होसि' त्ति भणिए सुंदरीए भणियं ।

ता पसिय देव मज्झं आएसो को वि दिज्जउ असंकं । किं संपइ करणिज्जं किं वा सुकयं कयं होइ ॥

त्ति भणिए मए भणियं ।

सुंदरि गंतूण घरं दिट्ठीए ठविऊण गुरुयणं सयलं । जिणवर-कहियं धम्मं पडिवज्जसु सव्व-भावेण ॥
पडिवज्जसु सम्मत्तं गेण्हसु य महव्वए तुमं पंच । गुत्तीहिँ होसु गुत्ता चारित्ते होसु संजुत्ता ॥
णाणेण कुणसु कज्जं सीलं पालेसु कुणसु तव-जोगं । भावेसु भावणाओ इय कहिओ भगवया धम्मो ॥
एयं काऊण तुमं सुंदरि कम्मेण विरहिया तुरियं । जत्थ ण जरा ण मच्चू तं सिद्धिं पावसे अइर ॥ त्ति ।

एवं च भो मणिरह-कुमार, संबोहिया सा मए सुंदरी घरं गया । कओ वणिएण महूसवो । पयट्टो य णयरे वाओ 'अहो कुमारेण पडिबोहिया एस' त्ति । ता भो भो मणिरह-कुमार, जो सुंदरि-जीवो सो तम्मि काले लद्ध-सम्मत्त-बीओ मरिऊण माणभडो जाओ, पुणो य पउमसारो, पुणो कुवलयचंदो, पुणो वेरुलियप्पभो, पुणो एस मणिरह-कुमारो त्ति । जो उण सो वणियउत्त-जीवो सो इमं संसारं भमिऊण एस वणे वणमई जाओ त्ति । तुमं च दट्ठूण कहं कहं पि जहा-णाणेण तुह उवरिं पुव्व-जाई-णेहो जाओ' त्ति ।

§ ३५४) एवं च भगवया सयल-जय-जंतु-जम्म-मरणासेस-वुत्तंत-सक्खिणा साहिए विण्णत्तं मणिरह-कुमारेण । 'भगवं, एवं णिमं, ता ण कज्जं मह इमिणा भव-सय-रहट्ट-घडी-सरिसेणं जम्म-जरा-मरण-णिरंतरेण संसार-वासेणं त्ति । देसु मे सिव-सुह-सुहयं पव्वज्जा-महारयणं' ति भणमाणेण कयं पंच-मुट्ठियं लोयं । दिक्खिओ भगवया मणिरह-कुमारो त्ति । एयम्मि अवसरे पुच्छियं भगवया गोयम-गणहरेणं 'भगवं, संसारि-जीव-मज्झे को जीवो दुक्खिओ' त्ति । भगवया भणियं 'गोयम, सम्मादिट्ठी जीवो अविरओ य णिचं दुक्खिओ भणिओ' । गोयमेण भणियं 'भगवं, केण उण कज्जेणं' ति । भगवया भणियं ।

1> J सवर्णिदिअं पि लोला P सवर्णिदि लोला, J तित्तिरय कवोतहरिणयादीया, P तित्तरकाओयहरिण°, P अप्पहणिहणं प तम्हा परिहरस. 2> J सव्वहावेण. 3> JP तिय for च्चिय, P adds तुरियं before गुत्ति, J समिति, P समित्ति, J एतेहिं. 5> P होउ for होइ. 6> J अण्णे व्व रंभई विय for एण्हि etc., P दहणं°. 7> P एवं च चिंतेंती परी°, J एअं for एवं. 8> P परिमाणजीव, J धम्माती, P -ट्ठाणं, J लोअं. 10> P अणाइ, P णायर for णारय, P आ for अह. 11> P ढो for मूढो, P जिणाणं ति ।. 12> P नरिंवरिंदा, J adds य after णरवरिंदा, J मणिरहकुमारं, J om. तुमं, J om. च after एवं, P सयले, P -सहावो. 13> P om. तओ आगय-पुव्व etc. to एरिसो संसारसहावो before किं कीरउ. 15> P om. तं before कुणसु. 16> P एरिसारं, J inter. भायणं & ण, J होमि. 17> P संकं for असंकं, J कहं for कयं. 19> P धितीए for दिट्ठीए. 20> P गुत्तीसु, P गुत्तो. 21> J तवजोअं. 22> P दूरं for तुरियं, P तत्थ for जत्थ, P पावए, J अइरा ॥ इति ।. 23> P om. च भो, P om. य, J ततो for वाओ. 24> J °कुमारा जो सुंदरीजीओ, P adds सो before सुंदरि°. 25> J पउमप्पभो for पउमसारो, P कुवलचंदो, P मणिरकुमारो. 26> J वणियउत्तो P वणिउत्त-, P om. इमं, P मयी for वणमई. 27> P जहा-णेण, P -जाती-. 28> P यंम for जम्म, P -सक्खिणो. 29> P मिमं for णिमं, J भवसयरहट्टघडो- P भवसायरअरहट्टघडी-, P मरणे. 30> P मि for मे, P सिवसुहयं. 31> J adds पुणो before पुच्छियं, J om. गोयम-, P -गणहरिणा, P संसारे जीवाण मज्झे जीवो. 32> P गोयम संगमद्धिट्ठी अविरओ निचं, J अविरतो, J उ for उण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जो होइ सम्मदिट्ठी जाणइ णर-तिरिय-मणुय-विग्रणाओ । पेच्छइ पुरओ भीमं संसार-भयं च भावेइ ॥
ण य कुणइ विरइ-भावं संसार-विमोक्खणं खणं पि णरो । अणुहवइ णरय-दुक्खं अणुदिण-वड्ढंत-संतावो ॥
एएण कारणेणं अविरयओ सम्मदिट्ठि-जीवो उ । सो दुक्खियाण दुहिओ गोयम अह भण्णइ जयम्मि ॥

गणहारिणा भणियं 'भगवं, सुहियाण को जए सुहिओ' त्ति । भगवया भणियं ।

सुहियाणं सो सुहिओ सम्मदिट्ठी जयम्मि विरओ य । सेसा उण जे जीवा ते सव्वे दुक्खिया तस्स ॥

गणहरेण भणियं 'भगवं, केण कज्जेण' । भगवया भणियं ।

'जो होइ सम्मदिट्ठी विरओ सव्वेसु पाव-जोगेसु । चित्तेण होइ सुद्धो ण य दुक्खं तस्स देहम्मि ॥
जिणवयणे वट्टंतो वट्टइ जह-भणिय-सुत्त-मग्गेण । अवणेइ पाव-कम्मं णवयं च ण बंधए सो हु ॥
संसार-महाजलहिं तरियं पिव मण्णए सुचित्तेणं । अप्पाणं पुण पत्तं सिद्धि-पुरिं मण्णए सहसा ॥
सारीरे चि हु दुक्खे पुव्व-कए णत्थि एत्थ अण्णं तु । ण य भाविज्जइ तेहिं ण य दुक्खे माणसे तस्स ॥
इय गोयम जो विरओ सम्मादिट्ठी य संजयप्पाणो । सो सुहिओ जीवाणं मज्झे जीवो ण संदेहो ॥ भणियं च ।
देव-लोगोवमं सोक्खं दुक्खं च णरलोवमं । रयाणं अरयाणं च महाणिरय-सारिसं ॥ त्ति ।

एवं बहुयाइं पण्हावागरण-सहस्साइं कुणंता भविय-सय-संबोह-कारए अदूर-ववहिय-अंतरिय-सुहुम-तीयाणागय-वट्टमाण-वुत्तंताइं साहिऊणं समुट्ठिओ भगवं सव्व-जय-जीव-बंधवो महति-महावीर-वद्धमाण-जिणिंदयंदो त्ति ।

§ ३५५) ताव य उवगया णियय-ठाणेसु देव-दाणव-णरवरिंदा, अण्णे उण उप्पण्ण-धम्माणुराय-परमत्था अणुगया सुरासुर-गुरुणो जिणवरिंदस्स । भगवं पि णिट्ठविय-अट्ठकम्मट्ठ-समुप्पण्ण-णाण-धरो विहरमाणो सावत्थिं पुरवरिं संपत्तो । अण्णम्मि य दियहे समोसरिओ भगवं, तेणेय समवसरण-विरयणा-कमेणं समागया सुरासुर-मुणि-गणिंदा । णिग्गओ सावत्थी-वत्थव्वओ राया रयणंगओ साहिउं च समाढत्तो संसार-महासागर-तीर-पारयं धम्मं । एवं च साहिए सयले धम्मे जाणमाणेणावि अबुह-जण-बोहणत्थं पुच्छिओ भगवया गोयम-रिसिणा तित्थयरो त्ति । भणियं च तेण ।

सो च्चिय वच्चइ णरयं सो च्चिय जीवो पयाइ पुण सग्गं । किं सो च्चिय तिरिएसुं सो च्चिय किं माणुसो होइ ॥
सो चेय होइ बहिरो अंधो सो चेय केण कम्मेणं । होइ जडो मूओ वि हु पंगू अह ईसर-दरिद्दो ॥
सो च्चिय जीवो पुरिसो सो च्चिय इत्थी णपुंसओ सो य । अप्पाऊ दीहाऊ होई अह दुम्मणो रूवी ॥
केण व सुहओ जायइ केण व कम्मेण दूहवो होइ । केण व मेहा-जुत्तो दुम्मेहो कह णरो होइ ॥
कह पंडियओ पुरिसो केण व कम्मेण होइ मुक्खत्तं । कह धीरो कह भीरू कह विज्जा णिप्फला तस्स ॥
केण व णासइ अत्थो कह वा संगलइ कह थिरो होइ । पुत्तो केण ण जीवइ केण व बहु-पुत्तओ होइ ॥
जच्चंधो केण णरो केण व भुत्तं ण जिज्जइ णरस्स । केण व कुट्ठी खुज्जो कम्मेण केण व असत्तो ॥
केण दरिद्दो पुरिसो केण व सुकएण ईसरो होइ । केण व रोगी जायइ रोग-विहूणो हवइ केण ॥
संसारो कह व थिरो केण व कम्मेण होइ संखित्तो । कह णिवडइ संसारे कह बद्धो मुच्चए जीवो ॥
सव्व-जय-जीव-बंधव सव्वण्णू सव्व-दंसण-मुणिंद । सव्वं साहसु एयं कस्स व कम्मस्स कज्जमिणं ॥

§ ३५६) इमं च पुच्छिओ भगवं तियसिंद-सुंदरी-वंदिज्जमाण-चलणारविंद-जुयलो साहिउं पयत्तो । अवि य ।

गोयम जं मे पुच्छसि एक्को जीवो इमाइं सव्वाइं । पावेइ कम्म-वसओ जह तं कम्मं णिसामेसु ॥
जो मारओ जियाणं अलियं मंतेइ पर-धणं हरइ । परदारं चिय वच्चइ बहु-पाव-परिग्गहासत्तो ॥
चंडो माणत्थद्धो मायावी णिट्ठुरो खरो पावो । पिसुणो संगह-सीलो साहूणं णिंदओ अधमो ॥

1) P सम्मदिट्ठी, P -वियणातो, J भावेति. 2) J कुणति विरति-, P सत्तावो for संतावो. 3) J एतेण, J अविरतओ P अविरओ, P संमदिट्ठी जो जीवो ।, J तु for उ, J गोतम, P जगंमि ॥. 6) P om. केण कज्जेण, P या for भगवया. 7) P संमदिट्ठी, J -जोएसु. 8) P वड्डंतो, J भणित-, P मग्गेणं, P बंधते साहू ॥. 9) J सचित्तेण, P सिसिपुरिं. 10) P कए एत्थ नत्थिन्नं तु, P माणसो. 11) J गोतम सो विरतो संजमदिट्ठीय संजतप्पाणो ।, P समदिट्ठी. 12) J देवलोगोयमं P देवलोउवमं, J णरयोवमं ।, J रताण अरताणं च महाणरय सरिसं ।, P -सरिसं. 13) J सहस्साहि, J -ववहित P -ववहरिय for ववहिय, J सुहमतीताणागत, P -तीताणागय. 14) P महती-, P वद्धमाण. 15) P -ट्ठाणेसु. 16) P जिणिंदस्स ।, P निट्ठविए, P om. अट्ठ, P कम्मसमुप्पन्न, J -णाणवरो. 17) P om. य, P तेणेव, P समोसरयणाकमेण, J -विरयाणा-. 18) P -वत्थतुव्वओ, P राया हरणंगओ साहिउं समाहा सागरतीर-, J सवले for सयले. 19) P जीणमाणेणावि, J यबुह for अबुह, P om. जण, P भगवं for भगवया, J गोतम, P om. गोयमरिसिणा तित्थयरो त्ति । भणियं च तेण. 20) J adds भयवं before सो च्चिय, J om. सो च्चिय before जीवो, P पयाति. 21) P सो चिय, J सो चेय कज्जेण ।, P चेय केम्मेणं, P मुओ, P पंगू दोसो य सो जीवो. 22) P होइ. 23) J दूहओ, P होति. 24) P पंडिओ य पुरिसो, P होइ दुक्खत्तं. 25) J संगिलइ, P व for ण. 26) J जिज्जए, J कुज्जो for खुज्जो, J केण अवसत्तो. 27) P केण व कंमेण दुब्बलो ईसरो होति ।. 28) P -संकिलत्तो, P बुद्धो for बद्धो. 30) J adds वंदिअ after वंदिज्जमाण. 31) J गोदम, J om. पावेइ, P निसामेह. 32) P मारेओ. 33) P माणी थट्ठो मायावी, J णिट्ठुरक्खरो, P निंदिओ अहम्मो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आलप्पाल-पसंगी दुट्ठो बुद्धीऍ जो कयग्घो य । बहु-दुक्ख-सोय-पउरे मरिउं णरयम्मि सो जाइ ॥
कज्जत्थी जो सेवइ मित्तं कय-कज्जो उज्झए सढो कूरो । पिसुणो मइ-दुम्मइओ तिरिओ सो होइ मरिऊण ॥
अज्जव-मद्दव-जुत्तो अकोहणो दोस-वज्जिओ सज्झो । ण य साधु-गुणेसु ठिओ मरिउं सो माणुसो होइ ॥
तव-संजम-दाण-रओ पयईए मद्दवो किवालू य । गुरु-विणय-रओ णिच्चं मओ वि देवेसु सो जाइ ॥
जो चवलो सढ-भावो माया-कवडेहिँ वंचए सुयणं । ण य कस्सइ वीसत्थो सो पुरिसो महिलिया होइ ॥
संतुट्ठा सुविणीया य अज्जवा जा थिरा हवइ णिच्चं । सच्चं जंपइ महिला पुरिसो सा होइ मरिऊण ॥
आसं वराह पसुं वा जो लंछइ वद्धियं पि हु करेइ । सो सव्वाण वि हीणो णपुंसओ होइ लोगम्मि ॥
मारेइ णिद्दय-मणो जीवे परलोयं णेय मण्णए किंपि । अइ-संकिलिट्ठ-कम्मो अप्पाऊ सो भवे पुरिसो ॥
मारेइ जो ण जीवे दयावरो अभय-दाण-परितुट्ठो । दीहाऊ सो पुरिसो गोयम भणिओ ण संदेहो ॥
देइ ण णिययं संतं दिण्णं हारेइ वारए देंतं । एएहिँ कम्मएहिं भोगेहिँ विवज्जिओ होइ ॥
सयणासण-वत्थं वा पत्तं भक्खं च पाणयं वा वि । हियएण देइ तुट्ठो गोदम भोगी णरो होइ ॥
अगुणो य गव्विओ च्चिय णिंदइ रागी तवस्सिणो धीरे । माणी विडंबओ जो सो जायइ दूहवो पुरिसो ॥
गुरु-देवय-साधूणं विणय-परो संत-दंसणीओ य । ण य कं पि भणइ कडुयं सो पुरिसो जायए सुभगो ॥
तव-णाण-गुण-समिद्धं अवमण्णइ किर ण-याणए एसो । मरिऊण सो अउण्णो दुम्मेहो जायए पुरिसो ॥
जो पढइ सुणइ चिंतइ अण्णं पाढेइ देइ उवएसं । सुद-गुरु-भत्ती-जुत्तो मरिउं सो होइ मेहावी ॥
जो जंत-दंड-कस-रज्जु-खग्ग-कोंतेहिँ कुणइ वियणाओ । सो पावो णिक्करुणो जायइ बहु-वेयणो पुरिसो ॥
जो सत्ते वियणत्ते मोयावइ बंधणाओ मरणाओ । कारुण्ण-दिण्ण-हियओ थोवा अह वेयणा तस्स ॥
मारेह खाह पियह य किं वा पढिएण किं व धम्मेण । एयं चिय चिंतेंतो मरिऊणं काहलो होइ ॥
जो उण गुरुयण-सेवी धम्माधम्माइँ जाणिउं महइ । सुय-देवय-गुरु-भत्तो मरिउं सो पंडिओ होइ ॥
विज्जा विण्णाणं वा मिच्छा-विणएण गेण्हिउं पुरिसो । अवमण्णइ आयरियं सा विज्जा णिप्फला तस्स ॥
बहु मण्णइ आयरियं विणय-समग्गो गुणेहिँ संजुत्तो । इय जा गहिया विज्जा सा सहला होइ लोगम्मि ॥
देमि त्ति ण देइ पुणो आसं काऊण कुणइ विमुहं जो । तस्स कयं पि हु णासइ गोयम पुरिसस्स अहमस्स ॥
जं जं इट्ठं लोए तं तं साहूण देइ सव्वं तु । थोवं पि मुणइ सुकयं तस्स कयं णो पणस्सेज्ज ॥
जो हरइ तस्स हिज्जइ ण हरइ जो तस्स संचओ होइ । जो जं करेइ पावं विवरीयं तस्स तं होइ ॥
पसु-पक्खि-मणूसाणं बाले जो विप्पउंजइ सकामं । सो अणवच्चो जायइ अह जाओ तो विवज्जेज्ज ॥
जो होइ दया-परमो बहु-पुत्तो गोदमा भवे पुरिसो । असुयं जो भणइ सुयं सो बहिरो जायए पुरिसो ॥
अदिट्ठं चिय दिट्ठं जो किर भासेज्ज कह वि मूढप्पा । जच्चंधो सो जायइ गोदम एएण कम्मेणं ॥
जाइ-मउम्मत्त-मणो जीवे विकिणइ जो कयग्घो य । सो इंदभूइ मरिउं दासत्तं वच्चए पुरिसो ॥
जो उण चाई विणओणओ य चारित्त-गुण-सयाइण्णो । सो जण-सय-सम्माओ महिड्ढिओ होइ लोगम्मि ॥
जो वाहेइ णिसंसो छाउव्वायं च दुक्खियं जीयं । सीयंत-गत्त-संधिं गोदम सो पंगुलो होइ ॥
महु-धाय-अग्गि-दाहोदहणं जो कुणइ कस्सइ जियस्स । बालाराम-विणासो कुट्ठी सो जायए पुरिसो ॥
गो-महिस-पसुं करहं अइभारारोवणेण पीडेइ । एएण णवरि पावेण गोदमा सो भवे खुज्जो ॥
उच्छिट्ठमसुंदरयं पूइं जो देइ अण्ण-पाणं तु । साहूण जाणमाणो भुत्तं पि ण जीरए तस्स ॥

1 > J बुद्धीय, P बहुसोगदुक्खपउरे, P जायइ ॥. 2 > P उज्झए, J मयगुम्मइओ. 3 > J उज्जुय for अज्जव, P दीस for दोस, J साधुगणेसु, P सुद्धु for साधु, P ट्ठिओ. 4 > P मद्दवो for मद्दवो, P जायइ for जाइ. 5 > P सुयणो ।. 6 > J सुविणीता, P om. य, P अज्ज विजा, J अथिरा for जा थिरा, P सो for सा. 7 > J आसवसहं, J बुद्धिअं for वद्धियं, J सव्वाण णिहीणो, J लोअम्मि. 8 > P om. जीवे. 9 > J गोदम. 10 > J एतेहिं, P कंमेहिं. 11 > P भत्तं च पाणियं, J देइ दुट्ठो, P om. गोदम, P सोगी for भोगी. 12 > P अगुणे वि गव्विओ, P धीरो ।, P मोणी for माणी, J दूहगो. 13 > P साहूणं, P सुहओ. 15 > P सुयगुरु. 16 > J दण for दंड. 17 > J थोआ. 18 > P मारेयइ, P खाह पीयह किं, P om. च्चिय. 21 > P सफला, J लोयंमि. 22 > P त्ति न देमि, J गोतम. 23 > P देइ दव्वं तु, P पणासेज्जा. 25 > P माणुसाणं, J विप्पयुंजइ P विप्पिउंजइ, P विवज्जेज्जा. 26 > P गोयमा, J असुतं, J सुतं. 27 > J अदिट्ठं, P किर for च्चिय, P गोयम, P एतेण. 28 > J मयुम्मत्तमणो P मणोमत्तमाणो, J विक्खिणइ, J इंदभूती. 29 > P उण चादी विणओ य, J विणओणतो, J उण for जण, P सयसमइओ, J लोयंमि. 30 > J सीतंत, P संधी गोयम. 31 > J -वात, P को for जो, P कस्स वि. 32 > P पसू करभं, P गोयम एसो. 33 > P उच्चिट्ठम°, J पूतिं, P पुव्वं for पूइं, P भत्त for अण्ण, P पि न जिज्जए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लहु-हत्थयाए धुत्तो कूड-तुला-कूड-माण-भंडेणं । ववहरइ णियडि-बहुलो तस्सेगं हीरए अंगं ॥
कुक्कुड-तित्तिर-लावे सूयर-हरिणे य अहव सव्व-जिए । घारेइ णिच्च-कालं णिच्चुव्विग्गो हवइ भीरु ॥
ण य धम्मो ण य जीवो ण य पर-लोगो त्ति णेय कोइ रिसी । इय जो जंपइ मूढो तस्स थिरो होइ संसारो ॥
धम्मो वि अत्थि लोए अत्थि अधम्मो वि अत्थि सव्वण्णू । रिसिणो वि अत्थि एवं जो मण्णइ सो ण संसारी ॥
सम्मत्त-णाण-दंसण-ति-गुणेहिँ इमेहिँ भूसिय-सरीरो । तरिऊण भव-समुद्दं सिद्धि-पुरिं पावए अइरा ॥

§ ३५७) एवं च साहिए भगवया तियसिंद-सुरिंद-परिवंदिय-चलणारविंद-जुयलेण तओ सव्वेहिं मि कर-किसलयंजली-घडिय-भालवट्टेहिं भणियं तियसिंद-णरिंद-पमुहेहिं । 'अहो, भगवया साहिओ सयल-जय-जंतु-जम्म-जरा-मरण-अरहट्ट-घडी-परिवाडी-कारण-वित्थरो' त्ति । एत्थंतरम्मि समागओ पलंब-दीह-भुयप्फलिह-मणोहरो पिहुल-वच्छत्थलं-दोलमाण-मुत्ताहल-हार-रेहिरो बद्धुद्ध-कसिण-कंत-कोंतल-कलावो गंडयल-विलसमाण-मणि-कुंडल-किरण-पडिप्फलंत-दिणयर-कर-संघाओ, किं च बहुणा,

वेल्लहल-ललिय-बाहू वच्छत्थल-रेहमाण-हारिल्लो । समवसरणे पविट्ठो देवकुमारो व्व कोइ णरो ॥

तेण य 'जय जय' त्ति भणमाणेण ति-पयाहिणी-कओ भगवं छज्जीव-णिकाय-पिय-बंधवो जिणिंदो । पायवडणुट्ठिएणं भणियं तेणं । 'भगवं,

दिट्ठं सुयमणुभूयं रयणी-मज्झम्मि जं मए अज्ज । तं साहसु किं सुमिणं महिंदजालं व सच्चं वा ॥'

भगवया भणियं ।

'देवाणुपिया सव्वं सच्चं ति जं तए दिट्ठं । जोगिंदयाल-कुहयं णरवर सुविणं पि हु ण होइ ॥'

एवं च भणिय-मेत्ते गुरुणा तक्खणं चेय तुरिय-पय-णिक्खेवं णिग्गओ समवसरणाओ दिट्ठो य तिय-वलिय-वलंत-कुवलय-दल-दीहराहिं दिट्ठि-मालाहिं तियसिंदप्पमुहेहिं जण-समूहेहिं । एत्थंतरम्मि जाणमाणेणावि भगवया गणहारिणा पुच्छिओ भगवं महावीरो । 'भगवं,

को एस होज्ज पुरिसो किं वा दिट्ठं सुयं व राईए । जं पुच्छइ मह साहसु किं सुमिणं होज्ज सच्चं वा ॥'

इमम्मि य पुच्छिए सव्वेहिं सुरिंदप्पमुहेहिं भणियं 'भगवं, अम्हाणं पि अत्थि कोऊहलं, ता साहउ भगवं, करेउ अणुग्गहं' ति भणिय-मेत्ते गुरुणा भणियं ।

§ ३५८) 'अत्थि इओ णाइदूरे अरुणाभं णाम पुरवरं, जं च वित्थिण्णं पि बहु-जण-संकुलं, अणंतं पि रम्मोववण-पेरंतं, महंतं पि फरिहा-वलय-मज्झ-संठियं, थिरं पि पवण-चंचल-धयवडं ति । तम्मि य णयरे रयणमइंदो णाम राया । सो य सूरो धीरो महुरो पच्चलो दक्खो दक्खिण्णो दया-दाण-परायणो त्ति । तस्स य पुत्तो कामगइंदो णाम । सो य

कामी काम-गय-मणो कामत्तो काम-राय-रइ-रत्तो । कामेणं कामिज्जइ काम-गइंदो सहावेण ॥

तस्स य बहूणं पि मज्झे महिलाणं वल्लहा एक्का राय-दारिया पियंगुमई णाम । अह अण्णम्मि दियहे रायपुत्तो मज्जिय-जिमिय-विलित्तो महादेवीए सह मत्त-वारणए णिसण्णो आलोएंतो णयर-जण-विहव-विलासे अच्छिउं पयत्तो । तेण य तहा अच्छमाणेणं एक्कम्मि वणिय-वरोवरि-कोट्टिमे एक्का वणिय-दारिया कुमारी कंदुय-कीला-वावडा दिट्ठा । तं च दट्ठूण चिंतियं कामगइंदेण । 'अहो, पेच्छ पेच्छ वणिय-धूयाए परिहत्थत्तणं । जेण

ता वलइ खलइ वेवइ सेय-जलं फुसइ बंधए लक्खं । सुरय-पडुय व्व बाला कंदुय-कीलाएँ वट्टंती ॥

एवं पेच्छमाणस्स काम-महाराय-वसयस्स गुरुओ से अणुराओ समुप्पण्णो । अवि य ।

होइ सुरूवे पेम्मं होइ विरूवे वि कम्मि वि जणम्मि । मा होह रूव-मत्ता पेम्मस्स ण कारणं रूवं ॥

तओ पासट्ठिय-महादेवीए बीहमाणेण कयं आयार-संवरणं । तीय य तं सयं लक्खियं तस्स पेम्म-चित्तं । तओ तस्स रायउत्तस्स तं झायंतस्स हियए उव्वेवो जाओ, ण य पुच्छिओ वि साहइ । पुणो तीए चिंतियं । 'किं पुण इमस्स

1) P हत्थयाइ धत्तो. 2) P तित्तिलावे, P अहइ for अह, P णिचं, P भवइ for हवइ. 3) P जीवो नयरलोगो. 4) P अहम्मो. 5) P सिद्धिपुरी. 6) P जुलेण, P om. मि, P करयंजली. 7) JP भालवट्टेहिं, J -प्पमुहेहिं, P मययल, P om. जम्म. 8) P अरिहट्टघटी-, P दीहरंतभुयफलिह, J मणोहर. 9) J om. हार, J कुंतला-, P गंडल-, P om. मणिकुंडलकिरण, P -परिफलंत. 11) P बाहुवच्छलरेहिमाणहारिरिल्लो, J को वि णरो. 14) J सुतमणुभूतं, P तं कहयसु किंसु किं सुमिणं अदिंदियालं व, 16) P सुविणं मिहु. 17) P तक्खणं च्चिय, J om. य, P तिवलिय-. 18) P प्पमुहिहिं जणेहिं. 20) P inter. एस & होज्ज, P रातीए. 21) P इमं पुच्छिए, J अत्थि कुतूहलं, P साहहं, P करेह. 22) P भयणियमेत्ते. 23) J इतो, J अरणाहं, P पुरवं for पुरवरं, P रम्मोववणा-. 24) P रयणगइंदो, J om. धीरो. 25) J om. दया. 26) P कामगयणो कामंतो कामराया, P कामगयंदो. 27) P om. य, P पियंगुमती णामा, P रायउत्तो. 28) P जिमियवलित्तो, P आलोयंतो णरजण. 29) P तह for तहा, J वणिदारिया. 30) P कामगयंदेण, J वणिअधूताए, P परिहत्थणं. 31) P पडुय. 33) P सुरूवपेम्म, P अकारणं for ण कारणं. 34) J सयलं for सयं, P adds तं before पेम्म. 35) P ज्झायंतस्स, P उव्वोओ,, P साहदिह, J तीय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उव्वेय-कारणं होज्ज । अहवा जाणियं मए सा चेय कंदुय-रमिरी वणिय-दुहिय त्ति । ता दे अवणेमि से उव्वेवं'ति चिंतिऊण पियंगुमईए सद्दाविया तीय दारियाए माया । सा तीए भणिया 'रायउत्तस्स देसु धूदं' ति । तीय वि दिण्णा, उव्बूढा य । तओ तुट्ठेण कामगइंदेण भणिया महादेवी 'अहो, लक्खिओ तए भावो मम, ता भण भण किं ते वरं देमि' । तीए भणियं 'जइ सच्चं देसि, ता भणामि' । तेण भणियं । 'भण णीसंकं, अवस्स देमि' त्ति भणिए, तीए भणियं ।

'जं किंचि तुमं पेच्छसि सुणेसि अणुहवसि एत्थ लोगम्मि । तं मज्झ तए सव्वं साहेयव्वं वरो एसो ॥'

तेण भणियं 'एवं होउ' त्ति । तओ एवं च ताणं अच्छमाणाणं अण्णम्मि दियहे समागओ एक्को चित्तयर-दारओ । तेण य पडे लिहिया समप्पिया चित्त-पुत्तलिया । सा य केरिसी । सयल-कला-कलाव-कुसल-जण-वण्णणिज्ज त्ति । तं च दट्ठूण भणियं कामगइंदेण 'अहो, सच्चं केणावि भणियं । त्रीण्येते नरकं यान्ति राजा चित्रकरः कविः ।' तेण भणियं 'देव, किं कारणं' । राइणा भणियं ।

पुहईए जं ण दीसइ ण य होहिइ णेय तस्स सब्भावो । तं चेय कुणइ राया चित्तयरो कवियणो तइओ ॥
अलियस्स फलं णरयं अलियं च कुणंति तिण्णि ते पुरिसा । वच्चंति तेण णरयं तिण्णि वि एए ण संदेहो ॥

तओ चित्तयर-दारएण भणियं । 'देव, विण्णवेमि ।

राया होइ सतंतो वच्चउ णरयम्मि को णिवारेइ । जं चित्त-कला-कुसलो कई य अलियं पुणो एयं ॥
सत्तीए कुणइ कव्वं दिट्ठं व सुयं व अहव अणुभूयं । चित्त-कुसलो वि एवं दिट्ठं चिय कुणइ चित्तम्मि ॥'

§ ३५९) भणियं कामगइंदेण ।

'जइ दिट्ठं चित्तयरो अह रूवं कुणइ ता विरुद्धमिणं । कत्थ तए दिट्ठमिणं जं रूवं चित्तियं पडए ॥'

तेण भणियं 'णणु देव, दिट्ठं मए लिहियमिणं' । राइणा भणियं 'कहिं ते दिट्ठं' । तेण भणियं ।

उज्जेणीए राया अत्थि अवंति त्ति तस्स धूयाए । दट्ठूण इमं रूवं तइउ च्चिय विलिहियं एत्थ ॥'

तं च सोऊण राया पुणरुत्तं पलोइउं पयत्तो जाव पेच्छइ णिइं पिव मण-णयण-हारिणी, तिलोत्तिमं पिव अणिमिस-दंसणं, सत्तिं पिव हियय-दारण-पच्चलं, सग्गपुरिं पिव बहु-पुण्ण-पावणिज्जं, सुद्ध-पक्ख-पढम-चंदं पिव रेहा-विसुद्धं, महाराय-रज्ज-वित्तिं पिव सुविभत्त-वण्ण-सोहियं, धरणिं पिव ललिय-दीसंत-वत्तिणी-विरयणं, विवणि-मग्गं पिव माण-जुत्तं, जिणाणं पिव सुपइट्ठिय-अंगोवंगं सुंदरि त्ति । अवि य ।

भंतूण मयण-देहं मसिणं मुसुमूरिऊण अमएण । चित्त-कला-कुसलेणं लिहिया णूणं पयावइणा ॥

तं च दट्ठूण राया खणं थंभिओ इव झाण-गओ इव सेलमओ इव आसि । पुणो पुच्छियं 'अहो एसा किं कुमारी' । तेण भणियं 'देव, कुमरी' । राइणा भणियं ।

'भुमय-धणु-कालवट्ठा सिय-पम्हल-दीहरच्छि-बाणेहिं । मारेंती भमइ जणं अहो कुमारी ण सा मारी ॥'

भणमाणो राया समुट्ठिओ । कयं कायव्वं पुणो । दंसिया महादेवीए, भणियं च तेण 'सुंदरं होइ, जइ एसा कुमारी पाविज्जइ' त्ति । पुणो मंतीहिं भणियं । 'देव, णियय-रूवं चित्तवडए लिहावेसु, तेणेय चित्तयरएण पुणो तं चेय पेसेसु तत्थ जेण राय-धूया तं दट्ठूण सयं चेय तं वरेहिइ' त्ति भणिए मंतीहिं तं चेय णिरूवियं । लिहिओ कामगइंदो । णिग्गओ चित्तयर-दारओ, संपत्तो उज्जयणीए, दंसिओ राय-दुहियाए, अभिरुइओ हिययस्स । साहियं रण्णो अवंतिस्स जहा 'अभिरुइओ इमीए पुरिसद्देसिणीए रायधूयाए कामगइंदो णाम रायउत्तो' । इमं च सोऊण अवंतिणा 'अहो, सुंदरं जायं जं कत्थ वि चित्तस्स अभिरुइं जाया' । दिण्णा तस्स । जायं वद्धावणयं । 'एहि परिणेसु' त्ति संदिट्ठो पयट्टो

1) P कंडुय, J रमिणी. 2) P पियगुमतीए, J माता, J ती for तीए, P भणिया उत्तस्स, P धूय त्ति. 3) P om. one भण. 4) J तीय, P om. भणियं, P निरसंकं. 5) J तीय. 6) P om. सुणेसि, J लोअम्मि, J साहेतव्वं P सायव्वं. 7) P एक्कओ for एक्को. 8) P पडिलेहिया, P om. कला, P कुसला, P वण्णणिज्जत्ति. 9) J तृण्येते, J यांति. 10) P om. देव. 11) J पुहईअ, P inter. पुहईए & जं, J होहिति, P om. णेय, P adds होइ after तस्स, J संभवो (followed by जस्स written on the margin), P चेव, P कइयणो. 12) P कुणंति त्रि त्ति पुरिसा ।, J एते. 14) P होति, P वच्चइ, P adds वि after को. 15) P भत्तीए for सत्तीए, J सुतं, J अणुभूतं. 17) P इह for अह, P विरुद्धमण ।. 18) P कइं ति दिट्ठं. 19) P inter. राया & अत्थि, J धूताए, P धूणइ मं for धूयाए, P om. दट्ठूण इमं, J तत्थ for एत्थ. 20) P या for राया, J पलोइतुं, P मणिरयणहारिणी, P अणमिस-. 21) P सत्तं for सत्तिं, P दारुण, J om. पक्ख. 22) P सुविहत्त, P पि for पिव, J वत्तणी. 23) J अंगोवंग P अंगोवंगु. 24) P हंतूण for भंतूण, P पयाविहिणा. 25) P झाणगओ. 27) P भुमए-, P पत्तल for पम्हल, P वाणेणि । मारेंती, P कुमीरी. 29) P णियरूवं, P चित्तपडए, P लेहाविय तेणय चित्तयरेण पुणो, P adds तं after जेण. 30) J वरेहित्ति, P वरेहिति, P चेय नियरूवं गहिओ कामगइंदो. 31) J चित्तयरओ, P उज्जेणीए, P साहिउं. 32) J अहिरुइओ P अभिरूविओ, J रायधूताए. 33) P कत्थइ चित्तत्तस्स अभिरुती.

30

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

कामगइंदो तं परिणेउं समं महादेवीए बद्ध-खंधावारेण य। इओ णाइदूरे समावासिओ। ताव य अत्थं गओ बहु-जण-समूहेक्क-लोयणं सूरो। तओ राईए कय-कायव्व-वावारो खंधावार-जणो बहुओ पसुत्तो, को वि जामइल्लो, को वि किं पि गायइ, अण्णो अण्णं किं पि कुणइ त्ति। एवं च राईए दुइए जामे पसुत्तो राया पल्लंके समं महादेवीए जाव विउद्धो केण वि अउव्व-कोमल करयल-फरिसेणं, चिंतिउं च पयत्तो। 'अहो, एरिसो मए फरिसो ण अणुहूय-पुव्वो त्ति। सव्वहा ण य कोइ इमं सामण्णं माणुस-फरिसं' ति चिंतयंतेण विहडियाइं णियय-लोयणेंदीवराइं जाव पेच्छइ दुवे कुमारीओ पुरओ ठियाओ।

§ ३६०) केरिसाओ पुण ताओ। अवि य।

एक्का रणंत-णेउर-णच्चिर-चलणग्ग-रेहिर-पयारा। अण्णा णिहित्त-जावय-रस-राय-मिलंत-कंतिल्ला ॥
एक्का कोमल-कयली-थंभोरु-जुएण जियइ तेलोक्कं। अण्णा करि-कर-मासल-लायण्णप्पीण-जंघिल्ला ॥
एक्का णियंब-गरुई रणंत-रसणा मणं वियारेइ। अण्णा पिहुल-कडियला घोलिर-कंची-कलाविल्ला ॥
एक्का मउंद-मज्झा तिवलि-तरंगेण रेहरा सुयणू। अण्णा मुट्ठिग्गेज्झं अह मज्झं वहइ रहसेण ॥
एक्का णाभी-वेढं महाणिहाणस्स वहइ वयणं व। अण्णा लायण्णामय-वावि-सरिच्छं समुव्वहइ ॥
एक्का माल्रूर-थणी किंचि-समुब्भिण्ण-रोम-राइल्ला। अण्णा कविट्ठ-सरिसा पयहर-जुवलेण रेहिल्ला ॥
एक्का मुणाल-कोमल-बाहु-लया सहइ पल्लव-करिल्ला। अण्णा णव-लय-बाहा पउम-दलारत्त-पाणिल्ला ॥
एक्का मियंक-वयणा रुइराहर-रेहमाण-वयणिल्ला। अण्णा सयवत्त-मुही कुवलय-दल-वियसमाणच्छी ॥
एक्का पियंगु-वण्णा रेहइ रयणेहिँ भासरच्छाया। अण्णा वर-चामीयर-णिम्मविया णज्जए बाला ॥
इय पेच्छइ णरणाहो संभम-कोऊहलेक्क-तल्लिच्छो। दोण्हं पि ताण रूवं कामगइंदो रइ-दिहीणं ॥

§ ३६१) चिंतियं च णरवइणा। 'अहो
किं होज्ज रइ-दिहीओ किं सिरि-हिरि-रंभ-उव्वसीओ व्व। किं वा सावित्ति-सरस्सईओ अव्वो ण-याणामो ॥'
इमं च चिंतिऊण भणियं राइणा। अवि य।
'किं माणुसीओ तुब्भे किं वा देवीओ किंणरीउ व्व। किं वा विज्जाहर-बालियाओं साहइ मह कोउयं एत्थ ॥'
ताहिं भणियं।
'विज्जाहरीओ अम्हे तुह पासं आगयाओ कज्जेणं। ता पसिय कुणसु कज्जं आसा-भंगो ण कायव्वो ॥'
राइणा भणियं।
'आसंघिऊण घरमागयाण पणईण कज्ज-हिययाण। सुंदरि आसा-भंगो ण कओ म्ह कुलम्मि केणावि ॥'
ताहिं भणियं।
'जइ ण कओ तुम्ह कुले आसा-भंगो कहं पि पणईण। ता भणसु तिण्णि वयणे कज्जं तुम्हाण कायव्वं ॥'
राइणा चिंतियं। 'ण-याणीयइ किं ममाओ इमे पत्थेहिंति। अहवा
जं ण पणईण दिज्जइ भुज्जइ मित्तेहिँ बंधु-वग्गेण। आ सत्तमम्मि वि कुले मा हो अम्हाण तं होउ ॥
सत्तेण होइ रज्जं लब्भंति वि रोहणम्मि रयणाइं। णवर ण कहिं पि कत्थ वि पाविज्जइ सज्जणो पणई ॥
विज्जाहर-बालाओ महुरा मुद्धाओ गुण-समिद्धाओ। कं पत्थेंति इमाओ मं च्चिय मोत्तूण कय-पुण्णं ॥
ता जइ मग्गंति इमा धण-रज्जं विहव-परियणं बंधुं। सीसं व जीवियं वा तं चिय मे अज्ज दायव्वं ॥'
त्ति चिंतयंतेण भणियं णरिंदेण 'सुंदरि इमं तुम्हेहिं भणियं जहा भणसु तिण्णि वयणे त्ति। अवि य।
जइ पढमं च्चिय वयणं होइ पमाणं णिरत्थया दोण्णि। अह ण पढमं पमाणं णिरत्थयं सेस-लक्खं पि ॥
सव्वहा भणह तं कज्जं' ति

1) P कामगयंदो, P बधकंधावारो णीहरिओ णाइदूरे, J इतो, 2) P रातीए, J वउउ for बहुओ. 3) P अन्नं पि, P एवं रातीए, J सुत्तो for पसुत्तो. 4) J विबुद्धो, J प्फरिसेणं, P फरिसो अणुभूय-. 5) J om. य, P adds किं पि before इमं, J माणुस-हरिसं, P लोवणिंदीवराइं. 6) P पुरट्ठियाओ. 7) J om. केरिसाओ पुण ताओ. 8) P -कुंतिला. 9) P जुयेण, J जिणेइ for जियइ, P मंसलुलायन्नापीण, J °प्पील. 10) J गरुइ, P मयं for मणं, P कलत्ता for कडियला. 11) J -मज्झा, P तरंगेण रेहिरे अण्णा। अन्नाए मुट्ठिगिज्झं, J अप्पज्जं for अहमज्झं, P inter. अह & मज्झं. 12) P णाहीवेढं. 13) J समुत्तिण्ण P सुभिन्न for समुब्भिण्ण, J पयर for पयहर, P पओहरजुवेण. 14) P अण्णाण्णव, P -बाहो पउदलारत्त. 15) P रेहिमाण, P कुवलयदलयदलवियससमालच्छी ॥. 16) P भासुरच्छाया. 17) P कामइंदो. 19) P om. किं before सिरि, J रंभउ-सीउव्व P रंभव्व उव्वसीउ, P सावत्ति, J adds सवत्ति after सावित्ति. 21) J किं विज्जाहरवालिआ सोहइ मह, P साहइ मह. 24) P रायणा. 25) P केणावि ॥. 27) J तुम्ह for अम्ह. 28) P णताणियइ किं ममाओ ममच्छेहि त्ति।. 29) P ज ण पणदीण दिज्जइ, P मित्तेण. 30) P विराहणंमि, P ता भण for णवर ण, P ममं च for मं च्चिय. 32) J इमे (or इमं) for इमा, P बंधू, P जीविसं वा. 33) P चिंतियंतेण, J तुम्भेहिं, P तिणि वयणे. 34) P om. ण पढमं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३६२) ताहिं भणियं । 'जइ एव ता सुणसु । अत्थि इओ उत्तर-दिसा-भाए सव्व-रयण-णिम्मिओ पज्झरंत-कंचण-धाऊ-रसा पिंजर-कडएक्क-देसो दरि-मुह-रममाण-विज्जाहर-मिहुण-सुंदरो वाजिंदणील-मरगय-भूसिय-कडओ सिद्ध-भवणोवरि-विइण्ण-धवल-धयवड-रेहिरो णाणा-विह-पजलंत-दित्तोसही-सय-मंडिओ वेयड्ढो णाम पव्वय-वरो । तत्थ य दोण्णि सेढीओ, उत्तर-सेढी दाहिण-सेढी य । तत्थ विज्जाहराणं णिवासो । तत्थ रायउत्त, उत्तर-सेढीए सुंदराणंदमंदिरं णाम णयरं । तं च कुमार, बहु-मंदिर-सुंदरं बहु-पुरिस-सेवियं बहु-महिलायण-मणहरं बहु-रयण-रेहिरं बहु-जलासय-परिगयं बहु-कुसुमिओववणं, किं बहुणा, बहु-वयण-वण्णणिज्ज-सरूवं । तत्थ य राया पुहइसुंदरो णाम, सो य बहु-वण्णणिज्जो । तस्स य महिला महादेवी मेहला णाम । तीय धूया समुप्पण्णा, तीए णामं बिंदुमती । सा उण चउरा महुरा दक्खा दक्खिण्णा दयालू रूविणी सोहग्गंत-विण्णाण-णाणा-कला-कोसलेणं सव्वहा असरिसा पुहईए महिलायणेण बहु-वास-कोडि-जीवणेहिं पि पंडिय-पढिय-पुरिसेहिं अलद्ध-गुण-समुद्द-पार त्ति । ता कुमार, किं बहुणा जंपिएणं, सा य पुरिसद्देसिणी जाया, रूव-विहव-विलास-पोरुस-माहप्प-जुत्ते वि णेच्छइ विज्जाहर-बालए । पुणो जोव्वण-वसं च वट्टमाणी गुरु-जणेण भणिया । 'अहो गेण्हसु सयंवरं भत्तारं कं पि जं पावसि' त्ति भणिया भमिउं समाढत्ता । तत्थेक्कम्मि दियहे तीए भणियं 'हला वयंसीओ, एहि, दाहिण-सेढी-दाहिण-संसिए उववणाभोए परिभमामो' त्ति । अम्हे वि 'एवं होउ' त्ति भणंतीओ समुप्पइयाओ धोय-खग्ग-णिम्मलं गयणयलं, अवइण्णाओ य एक्कम्मि गिरि-वर-कुहर-काणणंतरम्मि । तत्थ रममाणीहिं णिसुयं एक्कं किण्णर-मिहुणयं गायंतं । तं च णिसामिऊण दिण्णं सविसेसं कण्णं जाव । तेहिं गीया इमा गीदिया । अवि य ।

रूवेण जो अणंगउ संगय-वेसो जसेण लोयम्मि । कत्तो कामगइंदउ लब्भइ दट्ठुं पि पुण्ण-रहिएहिं ॥

§ ३६३) इमं च सोऊण पियसहीए भणियं 'हला हला पवणवेगे, पुच्छसु इमं किण्णर-जुवलं को एस, कत्थ वा कामगइंदओ, जो तुम्हेहिं गीओ' त्ति । अहं पि 'जहाणवेसि' त्ति भणिऊण उवगया पुच्छियं च तं किण्णर-जुवलयं 'को एस कत्थ वा कामगइंदओ जो तुम्हेहिं गीओ' त्ति । तओ तीए किण्णरीए भणियं ।

किं विज्जाहर-बाले सुणेसि कण्णेहिँ पेच्छसे किंचि । जइ सव्वमिणं सच्चं कामगइंदो कहं ण सुओ ॥

मए भणियं ।

'तण्णाया सि वियड्ढा इमिणा परिहास-वित्थरेणेय । ता सहि साहसु मज्झं कामगइंदो कहिं होइ ॥

तीए भणियं 'जइ तुह कामगइंदेणं कज्जं, ता पुच्छसु इमं' ति । पुच्छिओ किण्णरो । तेण भणियं । 'अत्थि रयणाहं पुरं । तत्थ रणगइंदस्स पुत्तो कामगइंदो णामं । सो एरिसो जेण तस्स चरिय-णिबंधाइं दुवई-खंड-धढ-जंभेट्टिया-चित्त-गाहा-रूवयाइं संपयं सयल-किण्णर-गणेण गिज्जंति । इमं च सोऊण रायउत्त, णिवेइयं मए बिंदुमईए । तप्पभूइं च सा केरिसा जाया । अवि य सरवरुत्तारिय व्व कमलिणी, थल-गय व्व सफरुल्लिया, मोडिया इव वण-लया, उक्खुडिया इव कुसुम-मंजरी, विउत्ता विव हंसिया, गह-गहिया इव चंदलेहिया, मंताहया इव भुयंगिया, ण कुणइ आलेक्खयं, ण गुणइ णट्टयं, ण सुणइ गीययं, ण पढइ वागरणं, ण लिहइ अक्खराइं, ण पेच्छइ पोत्थयं, ण वायइ वीणं, ण जवइ विज्जं । केवलं मत्ता इव परायत्ता इव सुत्ता इव गह-गहिया इव मया विव भणिया वि ण भणइ, दिट्ठा वि ण पेच्छइ, चलिया वि ण चलइ, णवरं पुण अकारणं वच्चइ, आलेक्खं णियच्छइ, अकज्जं कुणइ, णिद्दयं उट्ठइ, विब्भमं उद्धाइ, अमणं झायइ, दुम्मणं गायइ, दीहं णीससइ, सहियणं णिंदइ, परियणं जूरइ, गुरुयणं हसइ । किं च कइया वि हसइ, कइया वि रुवइ, कइया वि धावइ, कइया वि गाइ, कइया वि चलइ, कइया वि वलइ, कइया वि सुणइ । कइया वि कणइ त्ति । किं च बहुणा ।

1) J सव्वरयदमणिचित्तो. 2) J धातूरसा P धाओ रसो, P हरि for दरि, P वज्जंदनील, J भूसियकडगु. 3) J पिइण्ण for विइण्ण, P दित्तोसहि, J सम for सय. 4) P राय for रायउत्त. 5) P महियणमणहरं. 6) J कुसुमिउववयणं, J repeats बहु, P वण्णणिज्जं, J पुहईसुंदरो, J बहुदिअहवण्णणिज्जो. 7) P महिला for मेहला, J धूता. 8) P om. दक्खिण्णा, J सोहग्गरण्णविण्णाण, P om. णाणा, P om. सव्वहा, J असरिस, P पुहतीए. 9) P पढिय, P समुद्द. 10) P माप्प for माहप्प, P बालाए, P om. च. 11) P गुरुयणेण, J भणिअं P भणिय for भणिया, P भत्तारं । किं पि, J भणिउं for भमिउं, P तत्थेक्कंमि. 12) P om. एहि दाहिणसेढी, P adds त्त before उववणा°. 13) P गयणयत्तं. 14) P रममाणाहिं. 15) तेहिं गीईया इमा गीया ।. 16) P अणंगओ संसयवेसो, P कामगइंदो. 17) P पवणवेए, P किन्नरजलयं । सो एस. 18) P तुमेहिं, P भमिऊण गया, P जुवलयं । को एस कामगइंदो त्ति । तओ. 20) J -बाला, P सुणेसु, P पेच्छसि, J सुणसु for ण सुओ ॥. 22) J वियड्ढो, P वित्थरेणय ।. 23) P कामगंदेण. 24) P रणगरं इंदस्स, P जेणस्स चरिय निबद्धाइं, P दुवइखंडवढजंतेहि य वित्तगाहा. 25) J सयलकिण्णरयणे गिज्जइ त्ति । P सयलं किन्नरगणगणेण, J बिंदुमतीए, J तप्पभूई च. 26) P adds य before केरिसा, P सरवरत्तारिय, P वया for वणलया, J उक्कुडिया P उखुडिया. 27) P om. विउत्ता, P मंतहया, P कुणइयालक्खयं ण कुणइ. 28) P वायरणं. 29) P मत्ता विव, J परयत्ता, P पराइत्ता विव, P मया इव. 30) P om. पुण, P वच्चाइ, J om. णिद्दयं उट्ठइ, P om. विब्भमं उद्धाइ. 31) P झायइ दुमणं, P किं च कइया. 32) J रुअइ for रुवइ, P धाइ for धावइ, P om. कइया वि वलइ, J सुणेइ for सुणइ. 33) P कइ वि भणइ त्ति, P om. च.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

सा वलइ खलइ वेवइ जूरइ सोएण पारगया होइ । भीय व्व सुहय-मुद्धा कामगइंदस्स णामेणं ॥

तओ मए जाणियं इमाए कामगइंदो वाही, कामगइंदो च्चिय ओसहं । अवि य ।

जो किर भुयंग-डक्को डंके अह तस्स दिज्जए महुरं । एसा जणे पउत्ती विसस्स विसमोसहं होइ ॥

त्ति चिंतयंतीए मए भणिया माणसवेगा इमा 'हला, इमीए कामगइंदो परं वेज्जो पियसहीए' । तत्तो कामगइंदो त्ति सद्दायण्णणेण केरिसा जाया । अवि य ।

उक्कंठ-दिण्ण-हियया कामगइंदस्स सुहय-सद्देण । तंडविय-कण्ण-वण-हत्थिणि व्व तत्तो-मुही जाया ॥

तओ मउय-मंजु-महुरक्खरालावं तीए पलत्तं । अवि य ।

पियसहि अत्थि विसेसो इमिणा मंतेण मम य वाहिस्स । पीयक्खराइं जं मे कामगइंदो त्ति ता भणसु ॥

तओ रायउत्त, अम्हेहिं मंतियं हिययाणुकूलत्तणं कीरंतीहिं । विरइओ इमो अलियक्खरालावो मंतो । अवि य । ओं ।

सरलो सुहओ दाया दक्खो दयालु दक्खिण्णो । अवणेउ तुज्झ वाहिं कामगइंदो त्ति हुं साहा ॥

तओ कुमार इमिणा य मंत-गोत्त-कित्तणेण केरिसा जाया पियसही । अवि य ।

सुक्कोदय-तणु-खंजण-कडुयालय-वलिय व्व सा सुहय । तुह सूर-गोत्त-किरणेहिँ ताविया मरइ व फुडंती ॥

तं च तारिसं दट्ठूण चिंतियं अम्हेहिं । सव्वहा,

काम-भुयंगम-डक्का अइकाय-विसोयलंत-विहलंगी । धीरिज्जइ कामगइंद गरुल-मंतेहिँ जइ णवरं ॥

इमं च चिंतयंतीहिं सा भणिया 'पियसहि, तुमं अच्छसु । अम्हे गंतूण तत्थ जो सो कामगइंदो तं अब्भत्थिऊण इहाणेमो, जेण पियसहीए वाही अवणेइ' त्ति । तीए सणिय-सणियं भणियं । अवि य ।

'वच्चह दुवे वि वच्चह एक्को दूओ ण जाइ वेज्ज-घरे । दाऊण वि णिय-जीयं करेह सह तं जहा एइ ॥'

तओ इमं च वयणं सोऊण अम्हेहि 'तह' त्ति पडिवण्णं । तओ एक्कम्मि वियड-गिरिवर-कुहर-सिलायलम्मि तिविह-चंदण-कप्पतरुवर-साहा-लयाहरए विरइओ सत्थरो सरस-सरोरुह-दलेहिं । तत्थ णिक्खिविऊण समुप्पइयाओ कुवलयब्भंतर-दलंत-णीलं गयणयलं । तओ कुमार, पेच्छंतीओ विविह-णगरागर-णइ-गाम-तरु-गहण-गोउल-जलासयं पुहईयलं ति संपत्ता य इमं पएसं । तओ ण-याणिमो कत्थ सा णयरी जत्थ तुमं होहिसि, कत्थ वा तुमं पावेयव्वो त्ति । इमस्स य अत्थस्स जाणणत्थं आहूया भगवई पण्णत्ती णाम विज्जा, विण्णविया य 'साहसु कत्थ उण कामगइंदो अम्हेहिं दट्ठव्वो' त्ति । भगवईय वि आणत्तं जहा 'एस अहो, खंधावार-णिवेसे संपयं' ति । इमं च णिसामिऊण अम्हे अवइण्णाओ संपयं 'देव, तुहायत्तं पियसहीए जीवियं' ति । तओ कामगइंदेण चिंतियं 'अहो, अइगरुया कामावत्था वराईए' । भणियं च मए जहा 'अवस्सं कज्जं तुम्हाणं कायव्वं' ति । चिंतयंतेण भणियं 'ता संपयं भणह को एत्थ उवाओ, जेण एस पिय-सही जीएज्ज' । ताहिं भणियं । अवि य ।

'एक्को परं उवाओ काम-करेणूए सुंदरं होज्ज । कामगइंद-करालिहण-फरिस-सुह-संगमोवाओ ॥

ता मा विलंबसु, उट्ठेसु संपयं जइ कह वि जीयंतिं पेच्छसि पियसहिं । अवि य ।

तुज्झाणुराय-हुयवह-जाला-हेलाहिँ सा विलुट्टंगी । एत्तिय-मेत्तं वेलं मुद्धा जइ दुक्करं जियइ ॥'

§ २६४) कामगइंदेण भणियं 'जइ अवस्सं गंतव्वं ता साहेमि इमीए महादेवीए' । तओ ताहिं भणियं 'एरिसो तुमं राया सव्व-णीइ-कुसलो लोयं पालेसि जेण महिलाण रहस्सं साहसि । किं ण सुओ ते जणम्मि एसो तंतक्खणे य सिलोओ । अवि य ।

1) P वलइ for खलइ, P जूवइ for जूरइ, P सेदण for सोएण. 2) P मे for मए, J मए for इमाए, P वही for वाही. 3) J दंसे for डंके, J पयुत्ती. 4) P चिंतयंतं, J om. मए, J इमाए for इमा, P वर for परं, P पियसहिए, J तओ कामगइंद त्ति सद्दायण्णेण. 6) P अहव for सुहाय, P तडुड्डियकन्न. 7) P मंजुर for मंजु. 8) J इमय P इमस्स for मम य (emended), P बीइक्खराइ जं मि क्खामगइंदो, J जंम्मि for जं मे. 9) J om. कीरंतीहिं, J अलिअक्खालावो, P °क्खरलाओ, J उउं P ओ for ओं. 10) JP दाता, JP दयालू, P उवण्णेओ for अवणेउ, P वाही कामइंदो हुं स्वाहा ॥. 12) J सुखेदयतणु, P सा सुहया ।, J फुरंती ॥. 16) P वाहिं, J तीय, P om. सणिय सणियं. 17) J दूतो, P वेज्जहरे, J करेसु. 19) P साइल्याइरए, P trans. सत्थरो after -दलेहिं, P दलं for दलंतणीलं. 20) J णगणअरा for णगरागरा, P पुहतीयलं, P संपइत्ता इमं. 21) P adds कत्थ व तुमं होहसि after तुमं होहिसि, P व for वा, J पावेयव्व त्ति, P om. य. 22) J आहूता, P भगवती, P om. कामगइंदो अम्हेहिं दट्ठव्वो etc. to जीवियं ति । तओ. 24) P वरातीए. 25) J जहावस्सं, P तेण for चिंतयंतेण. 26) P पियसहीए, J जीएज्जा. 27) P कामगइंदक्खकलिहणफरिस. 28) P जीयंती, P पेच्छसि पेयसही. 29) P विलुट्टंती. 31) J -णीति- P -निती, J किण्ण P तेन for किं ण. 32) J तक्खाण य preceded on the margin by पंचतं (in a later hand).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'नीयमानः सुपर्णेन नागः पुण्डरिको ऽब्रवीत् । यः स्त्रीणां गुह्यमाख्याति तदन्तं तस्य जीवितम् ॥'

ता मा साहसु णारीणं रहस्सं' ति । तेण भणियं 'सच्चमिणं, किंतु अत्थेत्थ कारणं, कहिं पि कारणंतरे तहा-तुट्ठेण मए वरो इमीए दिण्णो जहा 'जं किंचि सुविणं पि तं मम साहेयव्वं । मए 'तह' त्ति पडिवण्णं । ता एस महंतो वुत्तंतो । विज्जाहर-लोय-गमणं अवस्सं एस साहेयव्वो' त्ति । ताहिं भणियं 'जइ एवं ता साहसु, किंतु अवस्सं गंतव्वं' तिं । पडिबोहिया महादेवी । तीए साहियं सयलं वुत्तंतं । 'ता दइए, संपयं वच्चामि अहं तत्थ' । तीए भणियं 'जारिसं चेय महाराइणो रोयइ तारिसं चेय कुणउ, को पडिबंधं कुणइ देवस्स । केवलं इमाओ दिव्वाओ विण्णवेमि' । बद्ध-करयलंजलीए भणियं देवीए । अवि य ।

'विज्जाहरीओ तुब्भे देवीय व विण्णवेमि ता एक्कं । एसो तुज्झं णासो अप्पेज्जसु मज्झ दीणाए ॥'

त्ति पडिया पाएसु । 'एवं होउ' त्ति भणमाणीहिं आरोविओ विमाणम्मि । उप्पइया तमाल-दल-सामलं गयणयलं । देवी वि उप्पाडिय-फणि-मणि-रयणा इव फणा, उक्खुडिय-कुसुमा इव कुसुम-मंजरी, उड्डीण-हंसा इव णलिणिया, अचंदा इव रयणिया, दिणयर-कर-विरह-विओय-विमणा इव चक्काय-वालिय त्ति सुविणं पिव, इंदयालं पिव, कुहयं पिव, चक्खु-मोहणं पिव, परलोगं पिव, दिट्ठं पिव णिसुयं पिव अणुहूयं पिव मण्णमाणी चिंतिउं पयत्ता । 'कस्स साहामि, किं भणामि, किं मा भणामि, किं करेमि, किं वा ण करेमि, कत्थ वच्चामि, को एस वुत्तंतो, कहं गओ, किं गओ, काओ ताओ, एरिसा मणुस्सा, विसमा विसयासा, भीसणो णेह-रक्खसो, रोद्दो विरह-भुयंगमो, एरिसाओ कवड-बहल-पत्तल-दल-समिद्धाओ होंति महिलाओ महाविस-वल्लीओ त्ति । अवि य ।

किं होज्ज इमं सुमिणं दिट्ठी-मोहं व किं व अण्णं वा । कइया पुण पेच्छामो अवहरिओ माए देवीहिं ॥'

§ २६५) जाव य इमाइं अण्णाणि महादेवी विहंतेइ ताव य थोवावसेसिया रयणी जाया । अवि य ।

जह जह झिज्जइ रयणी दइय-विउत्ता वि मुद्ध-कवोला । तह तह झिज्जइ देवी गयणं-मुह-दिण्ण-दिट्ठीया ॥

तओ एवं च गयणंगण-दिण्ण-णीलुप्पल-दल-सरिस-दीहर-दिट्ठीए दिट्ठं देवीए विमाणं । तओ णलिणी-वण-दंसणेण व रायहंसिया, अहिणव-जलय-वंद-हरिसेण व बरहिण-वालिया, अवर-सरवर-तीरागमेण व रहंगस्स रहंगिय त्ति । तं पेच्छमाणीए ओवइयंतम्मि पएसंतरम्मि दिट्ठाओ ताओ सुंदरीओ कामगइंदो य, ओइण्णो विमाणाओ, णिसण्णो सयणवट्टे । भणियं ताहिं विज्जाहरीहिं । अवि य ।

'देवि इमो ते दइओ णिक्खेवो अम्ह जो तए णिहिओ । एस सहत्थेणं चिय पणामिओ मा हु कुप्पेज्ज ॥'

त्ति भणंतीओ समुप्पइयाओ धोय-खग्ग-सामलं गयण-मग्गं । राया वि दिट्ठो देवीए अणहय-सरीरो । तओ किं सो किं वा अण्णो त्ति चिंतयंतीए पुलइयाइं असाहारणाइं लक्खण-वंजणाइं जाव जाणियं सो चेय इमो त्ति । चिंतियं च देवीए । 'संपयं एस दीण-विमणो विव लक्खीयइ' त्ति । 'ता किं पुच्छामि । अहवा दे पुच्छामि' त्ति चिंतयंतीए पायवडणुट्ठियाए सविणयं पुच्छिओ कामगइंदो । 'देव, भणइ कहं तत्थ तुमं गओ, कहं वा पत्तो, किं वा दिट्ठं, किं वा अणुहूयं, कहं वा सा विज्जाहरी पाविया । बहु-कोऊहल-संकुलो य विज्जाहर-लोओ, ता पसीय सव्वं साह मज्झं' ति भणिए राया साहिउं समाढत्तो । अत्थि इओ समुप्पइया अम्हे मुसुमूरियं जण-पुंज-सच्छमं गयणयलं । तओ देवि, अउव्व-णहयल-गमण-रहस-पसरमाण-गमणुच्छाहो विमाणारूढो गंतुं पयत्तो । तओ इमम्मि सरय-काले राईए गयणयल-गमण-वेएणं किंचि दीसिउं पयत्तं । अवि य ।

1) P नीयमानो सुवर्णेन राजा नागाधिपो ब्रवीत्, J सुपर्ण्णेन, J तदंतं जीवितमिति. 2) P adds मि after कारणं, J om. कहिं पि, P कारणे for कारणंतरे, J om. तहा-. 3) P दिण्णो तहा जं किं पि सुविणं मि तं. 5) J तीय, J inter. साहियं & सयलं, P तावइए, J तीय, 6) P च for चेय, P को वि पडिबंधं, J करेइ for कुणइ, P om. दिव्वाओ. 7) P करयंजलीए. 8) P देवीसु व, P मित्थं for एक्कं, P उप्पेज्जसु. 9) J आरोवितो, P आरोविओ माणंमि. 10) J हणा for फणा, P उक्खडिया इव, J om. कुसुम. 11) P रयणीय, P om. विओय, J om. कुहयं पिव, P repeats कुहयं पिव. 12) J चक्खुम्मोहणं, P चिंतयं पयत्ता. 13) J कं भणामि कण्ण भणामि, P adds वा before करेमि, J om. किं वा ण करेमि, P किच्छ वा न करिमि. 14) P जओ for काओ. 15) P बह for बहल, P -वेल्लीओ. 16) J मोहं व किण्णमण्णं वा ।, P कइया उण, J माय, P देवेहिं. 17) P इमाणि, P महादेवी ति चिंतेइ. 18) P om. one जह, P विउत्ता, P om. one तह, P गय से मुह. 19) P om. दल, J दिट्ठिआ. 20) P रायहंसीया. P हरिसेणेव, P तीरागमेणे, P om. रहंगस्स, P om. तं, J पेच्छमाणीय. 21) P ओवयंतंमि, J adds य after दिट्ठाओ, J om. सुंदरीओ, P निसण्णा सयणे निविट्ठो । भणियं. 23) J ए for ते, P लिहिओ ।. 24) P अणहसरीरो. 25) P पुलोइयाइं, P om. जाव, P जाणिउं, J चेय P विय. 26) J om. पायवडणुट्ठियाए. 27) P om. सविणयं, J भण आव for भणइ, P कत्थ for कहं तत्थ, J अणुहूतं, P कहिं for कहं. 28) P बहू-, P य ज्जाहरलोओ ता पसिय. 29) J इतो for इओ, P मुसुमूरियं जसच्छमं. 30) J किंच दीसिउं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयण-सरे तारा-कुमुय-मंडिए दोसिणा-जलुप्पीले । सेवालं पिव तिमिरं ससिहंसो सहइ भमिऊण ॥
गिरि-रुक्ख-सणाहाणं गामाणं मंदिराइँ दीसंति । जोण्हा-जलहर-पडिपेल्लियाइँ कीडोयराइं च ॥
कास-कुसुमेहिँ पुहई गयणं ताराहिँ हसइ अण्णोण्णं । दट्ठूण सराइँ पुणो कुमुएहिँ समं पहसियाई ॥
जायम्मि अड्डरत्ते णलिणी-महिलायणे पसुत्तम्मि । फुल्ल-तरूहिँ हसिज्जइ जलेण सह संगया जोण्हा ॥
तेल्लोक्क-मंथणीए जोण्हा-तक्केण अद्ध-भरियाए । दीसंति महिहरिंदा देवि किलाड व्व तरमाणा ॥

§ ३६६) तओ सरय-समय-ससि-दोसिणा केरिसा मए वियप्पिया हियएणं । अवि य । वड्डइ व धरणिहर-सिहरेसु, वित्थारिज्जइ व जल-तरंगेसु, हसइ व कास-कुसुमेसु, अंदोलइ व धयवडेसु, णिसम्मइ व धवल-घरेसु, पसरइ व जाल-गवक्खएसु, धावइ व वेलायडेसु, वग्गइ व समुद्द-कल्लोलेसु, णिवडइ व ससिमणि-मय-घडिय-पणाल-णाल-मुहेणामय-जलं व त्ति । अवि य ।

इय बहु-तरुवर-जोण्हा-गिरि-चंद-सराईं पेच्छमाणो हं । वच्चामि देवि देवो व्व सरहसं गयण-मग्गेण ॥
पुणो ताओ कुमारियाओ भणिउं पयत्ताओ । अवि य ।

कामगइंद गइंदो एसो रण्णम्मि पेच्छसु पसुत्तो । कामि व्व करिणि-कुंभत्थलम्मि हत्थं णिमेऊण ॥
पेच्छ कुमुएहिँ समयं दट्ठुं हसमाणिउ व्व ताराओ । सस-लंछणेण मइलं करेइ मुह-मण्डलं चंदो ॥
धवल-सुरहीण वंद्रं गोट्ठंगणयम्मि पेच्छ पासुत्तं । रे अणिया-छिण्णं पिव सेरीसि-सिरं पिट्ठु-पिडम्मि ॥
एयं पि पेच्छ णयरं जामय-पूरंत-संख-घोराहिं । लक्खिज्जइ सुत्तं पिव पसंत-जण-कलकलारावं ॥
एयं च पेच्छ गोट्ठं अज्ज वि आबद्ध-मंडली-बंधं । रासय-सरहस-ताला-वलयावलि-कलयलारावं ॥
जोण्हा-चंदण-परिधूसराओं चक्काय-सद्द-हुंकारा । किं विरहे किं सुरए पेच्छसु एयाओं सरियाओ ॥
एसो वच्चइ चंदो तारा-महिलायणं इमं घेत्तुं । अत्थाहो व्व सरहसं अवर-समुद्दस्स तित्थेसु ॥
एवं च जाव ताओ वच्चंतीओ पहम्मि सोहंति । ता पत्ता वेएणं दइए तं ताण आवासं ॥
तओ तं च मियंक-कर-सच्छमं दट्ठूण महावेयड्ढ-गिरिवरं भणियं ताहिं विज्जाहर-बालियाहिं । अवि य ।
'एसो वेयड्ढ-गिरी एस णियंबो इमो वणाभोओ । एसो सो धवलहरो संपत्ता तक्खणं अम्हे ॥'

त्ति भणंतीओ पविट्ठाओ तम्मि वियड-गिरि-गुहा-भवण-दारम्मि । दिट्ठं च मणि-पईव-पज्जलंतुज्जोविय-दिसियक्कं भवणोवरं । तत्थ य णलिणी-दल-सिसिर-सत्थरे णिवण्णा दिट्ठा सा विज्जाहर-राय-कुमारिया । केरिसा उण दइए । अवि य ।

कोमल-मुणाल-वलया चंदण-कप्पूर-रेणु-धवलंगी । कयली-पत्तोच्छइया कावालिणिय व्व सा बाला ॥

§ ३६७) तओ तं च तारिसं दट्ठूण सहरिसं उवगयाओ ताओ बालाओ । भणियं च ताहिं । अवि य ।
'पिय-सहि उट्ठेसु लहुं लग्गसु कंठम्मि एस तुह दइओ । संपत्तो अह भवणं जं कायव्वं तयं कुणसु ॥'

एवं च भणमाणीहिं अवणीयाइं ताइं णलिणी-दलाइं । पेच्छंति जाव ण चलंति अंगाइं । तओ झत्ति ससंकाहिं पुलइयाइं णयणाइं जाव दिट्ठाइं मउलायमाण-कंदोट्ट-सच्छमाइं । ताइं च दट्ठूण संभंताहिं दिण्णं हियए कर-पल्लवं जाव ण फुरइ तं । तओ हा हा ह त्ति भणंतीहि णिहित्तं वयण-पंकए करयलं जाव ण लक्खिओ ऊसासो । परामुसियाइं सयलाइं मम्मट्ठाणाइं । सव्वाइँ मि णिप्फुराइं सीयलीहूयाइं ति । तओ दइए, तं च पेच्छिऊण ताहिं धाहावियं विज्जाहर-बालियाहिं । अवि य ।

हा देव्व तए हा हा हा पिय-सहि हा हयं महाकट्ठं । हा कामगइंद इमा पेच्छ सही केरिसा जाया ॥
तओ दइए, अहं पि तं तारिसं पेच्छंतो गरुय-मण्णु-थंभिज्जमाण-बाहुप्पीलो 'हा किमेयं' ति ससंभमं जंपंतो पलोइउं

---

1) P मंडिदोसिणी-, J सो अहइ असिऊण ॥, P इसति for सहइ. 2) J -जलयर-, J कीडोअराइं P खीरोअराइं. 3) P कासव-कुसमेहिं, P पुणो कुमरेण समं पहसिइं. 5) P महहरिंदा लोणियपिंड व्व तरमाणा. 6) J -दोसिणा. 7) P om. कासकुसुमेसु, अंदोलइ व, P धवलहरेसु, P वेलायलेसु. 10) J णहतरुवर P बहुतरयर, P om. व्व. 12) P कामगइंदो, J करणि-, P हत्थं मिमिऊणा. 13) P पेच्छसु for पेच्छ, P समं for समयं, P ससि-. 14) P गोट्ठंगयणंमि, P रे यणआ, P सिरीसि for सेरीसि, P पिडंति. 15) P णरयं for णयरं, J पलंत for पसंत, P जलकलारावं. 16) J रोसव-, P रासव सारहस 17) J -हुंकाओ ।, P य इमाओ for एयाओ. 18) P सत्थाउ for अत्थाहो. 19) P om. च, P सहिति ।. 20) J inter. वेयड्ढ & महा. 21) J वणाहोउ. 22) J om. त्ति, P -हरण- for भवण, P दिसायक्कं भवणोयरं. 23) P om. य, P विवण्णो for णिवण्णा, P दए for दइए. 24) P कयली. 25) J om. तारिसं, J om. ताओ. 26) P उट्ठेह लहुं. 27) P ण वलंति तओ अंगयाई, P inter. झत्ति & तओ, J सासं काहि. 28) P दिट्ठायं, P कंदोट्ठ, P संभंताइं, J om. ण, P om. तं. 29) P हा हा हित्ति, P तं for णिहित्तं. 30) J सव्वइ मिणिप्फरा सीअलिहूआइं, P om. मि, P णपुराइं, P repeats सीअलीहूआइं, P धाहा for धाहावियं, P बालियाइं. 31) P दव्व for देव्व, J हा हयम्ह हा कट्ठं, P कामइंद हइं पेच्छ इमा केरिसा. 32) J -त्थभिज्जमाण.

पयत्तो जाव पेच्छामि चंदण-पंक-समलं णिच्चलंगी विणिमीलिय-लोयणं णिच्चलंगोवंगं दंत-विणिम्मियं पिव वाउल्लियं ति। ता दइए, तं च तारिसं दट्ठूण मए वि भणियं। अवि य।

हा मह दइए हा हा बाले हा अयाणुए मुद्धे। हा मह विरह-विवण्णे हा देव्व ण एरिसं जुत्तं ॥

ति भणमाणो मोहमुवगओ खणं च विबुद्धो णिसुणेमि ताणं विलावे। अवि य।

हा पियसहि कीस तुमं पडिवयणं णेय देसि अम्हाणं। किं कुवियासि किसोवरि अइ-चिर-वेला कया जेण ॥
किं वा पियसहि कुविया जं तं अम्हाहिँ णिद्दय-मणाहिं। हा एक्किय त्ति मुक्का तुमए च्चिय पेसिया अम्हे ॥
हा देव्व ण ए जुत्तं तं सि मणूसो जयम्मि पयडयरो। एसा महिला बाला एक्का कह परिहयं कुणसि ॥
हा हा तिहुयण-कामिण-जण-मण-वासम्मि दूर-दुल्ललिया। काम ण जुज्जइ तुम्हं अबलं एयाइणी हंतुं ॥
वहसि मुह च्चिय चावं हा णिज्जिय-तिहुयणेक्क-खंभं व। हा तं सव्व-जसं चिय धिरत्थु तुह अवगयं एण्हिं ॥
पिय-सहि कामगइंदो एसो सो पाविओ घरं एण्हिं। एयस्स कुणसु सयलं जं कायव्वं तयं सुयणु ॥
जो किंणरेहिँ गीओ पिय-सहि एस म्ह अच्छइ सहीणो। तुमए च्चिय पेसविया जस्स कए एस सो पत्तो ॥

भणंतीओ मोहमुवगयाओ। तओ खणं च मए णव-कयली-दल-मारुएण आसासियाओ पुणो भणिउं समाढत्ताओ। अवि य।

हा देव्व कत्थ संपइ किं काहं कत्थ वच्चिमो कहय। को वा सरणं होहिइ किमुत्तरं राइणो साहं ॥

§ ३६८) एवं च भणमाणाओ पुणो पुणो से परामुसंति तं कोमल-मुणाल-सीयलं अंगं। भणियं च ताहिं।

कामगइंद इमा सा जा तुह अम्हेहिँ साहिया बाला। एसा तुह विरहाणल-करालिया जीविय-विमुक्का ॥
ता संपइ साह तुमं का अम्ह गई कहं व किं काहं। किंचुत्तरं व दाहं जणणी-जणयाण से एण्हिं ॥

इमं दइए, सोऊण महं पि महंतं उव्वेय-कारणं जायं। ण-याणामि किं करेमि, किं वा ण करेमि, किमुत्तरं देमि, किं वा भणामि, विलक्खो विव थंभिओ इव मोहिओ विव परायत्तो इव, सव्वहा इंदयालं पिव मोहणं पिव कुहयं पिव दिव्वं पिव माया-रमणं पिव पडिहायइ त्ति। तह वि मए भणियं

'अम्हो ण-याणिमो च्चिय किं करणिज्जं ति एत्थ अम्हेहिं। तुब्भे च्चिय तं जाणह इमस्स कालस्स जं जोग्गं ॥'

जाव य एस एत्तिओ उल्लावो ताव य,

अरुण-कर-भासुरंगो दस-दिस-णासंत-तम-महामहिसो। णहयल-वणम्मि दइए सूर-मइंदो किलोइण्णो ॥

तं च दट्ठूण पणट्ठ-तम-वंदं दिणयरं भणियं ताहिं बालियाहिं 'रायउत्त, पभाया रयणी, उग्गओ कमलिणी-रहंगणा-पिय-पणइणी-पसंग-संलग्ग-पयट्टो सूरो, ता जं करेयव्वं तं करेमो' त्ति। मए भणियं 'किमेत्थ करणीयं।' ताहिं भणियं 'अग्गि-सक्कारो' त्ति। मए भणियं। 'एवं होउ' त्ति भणिए आहरियाइं चंदण-लवंग-सुरदारु-कप्पूर-रुक्खागुरु-सुक्काइं दारुयाइं। रइया य महाचिती। पक्खित्ता य सा महागइंद-दंत-घडिय व्व वाउल्लिया विज्जाहर-बालिया। दिण्णो य अभिणवुग्गय-दिणयर-कर-पुंज-पिंजरो जलणो। डज्झिउं च समाढत्ता जलण-जालावली-करालिज्जंतावयवा सा बालिय त्ति। तओ तं च दट्ठूण 'हा पियसहि' त्ति भणंतीओ मोहमुवगयाओ बालियाओ। अहं पि ताओ समासासिउं पयत्तो। समासत्थाओ य विलविउं पयत्ताओ। अवि य।

हा पियसहि हा बाले हा मुद्धे हा वयंसि हा सोम्मे। हा विंदुमई सुहए हा पिउणो वल्लहे तं सि ॥
तुज्झ ण जुज्जइ एयं अम्हे मोत्तूण जं गया एक्का। अम्हेहि विणा एक्का कत्थ व तं पवसिया भद्दे ॥
वच्चामो कस्स घरं अहव गया णाम किं व पेच्छामो। किं उत्तरं च दाहं विंदुमई कत्थ पुच्छाए ॥
ता पियसहि अम्हाणं किमेत्थ जीएण दुक्ख-तविएण। तुमए च्चिय सह-गमणं जुज्जइ मुद्धे हयासाण ॥

---

1) P -पंकफलसंगी विणिमी°, J समलं or ससलं, J णिच्चलंगि वणिमीलियलोअणं णिच्चलं अंगोवंगं दंतविणिमिअं, P वाउलिय त्ति. 3) P हा हा मइए हा हा. 4) J om. ति, P मोहमवगओ. 5) P नय for णेय, P किसोयरि, P -वेला कयं तेण ॥. 7) P तुह for ए, P एस महिला, P एक्को, P परिहवं. 8) J कामिणि, J एआए णिहणं तु ॥. 9) P णिज्जय, P खंभे व्व. 10) P adds पियसहि कामगइंदो before एयस्स, P तए for तयं. 11) JP किण्णरेहिं, P ज for जस्स. 12) J कयलि, P आसासिओ J समाढत्त. 13) J वच्चिमे, JP होहिति, P om. से. 14) P पुरामुसंति. 15) P विरहानल. 16) P गती, J किं उत्तरं, J एहिं for एण्हिं. 17) P महंतं पि महं उव्वेय, J om. महंतं, J णयरेमि, J om. वा. 18) P इव for विव, J परयत्तो, P इंदजालं, P पिव देव्वं. 19) J om. मायारमणं पिव, P पि for पिव, J पडिहायदि त्ति. 20) P om. अम्हो ण-याणिमो etc. ताहिं बालियाहिं, J कालस्स जो ज्जंगं. 24) P तो for ता, P किमत्थ. 25) J झाहविझाइं, P आहारयाइं for आहरियाइं (emended), J कप्परुक्खागुरु, P रुक्खागभासुकाइ दारुयाइ. 26) P महा चिता ।, J वाहुल्लिआ, J om. विज्जाहर बालिया, P अहिणवुग्गय. 27) P om. च, P जलणजावली, P om. तं च. 28) J om. बालियाओ, P समासत्थिओ. 29) P विलंबिउं. 30) P हा सोमे ।, P बिंदुमती. 31) J आसि for भद्दे. 32) J adds व before घरं, P णामं च पेच्छामो, J किमुत्तरं P किं वुत्तरं, P बिंदुमई. 33) J अम्हाहिं, P किमत्थ, J जुज्जइ मद्धए गयासाणं.

इमं च पलवंतीओ झत्ति तम्मि चेय चिताणलम्मि पविट्ठाओ। तं च दट्ठूण ससंभमो हं 'मा साहसं, मा साहसं' ति भणंतो पहाइओ जाव खर-पवण-जलण-जालावली-विलुट्ठाओ अट्ठि-सेसाओ। तं च दट्ठूण अहं पि पहओ इव महामोह-मोग्गरेणं, भिण्णो इव महालोय-कोंतेण, परद्धो इव महापाव-पव्वएण चिंतिउं समाढत्तो। 'अहो, पेच्छिहिसि मह विहि-विहियत्तणस्स, जेण पेच्छ ममं चेय अणुराय-जलण-जालावली-विलुट्ठा विवण्णा बिंदुमई, तीए चेय मरण-दुक्ख-संतत्त-मणाओ इमाओ वि बालाओ जलणे पविट्ठाओ। ता मए वि किमेरिसेणं इत्थी-वज्झा-कलंक-कलुसेण जीविएण। इमम्मि चेय चियाणले अहं पि पविसामि' त्ति चिंतयंतस्स तेण गयणंगण-पहेण विज्जाहर-जुवलयं वोलिउं पयत्तं। तओ भणियं तीए विज्जाहरीए 'पिययम, पेच्छ पेच्छ,

अह एरिसा मणुस्सा णिक्करुणा णिट्ठुरा णिरासंसा। जेणं डज्झइ दइया एसो उण एस पासत्थो ॥

§ ३६९) विज्जाहरेण भणियं। 'दइए, मा एवं भण। अवि य।

महिलाण एस धम्मो मयम्मि दइए मरंति ता वस्सं। जेण पडिज्जइ सत्थे भत्तारो ताण देवो त्ति ॥
एस पुरिसाण पुरिसो होइ वियड्ढो य सत्त-संपण्णो। जो ण विमुंचइ जीयं कायर-महिलाण चरिएण ॥
जुज्जइ महिलाण इमं मयम्मि दइयम्मि मारिओ अप्पा। महिलत्थे पुरिसाणं अप्प-वहो णिंदिओ सत्थे ॥'

त्ति भणंतं वोलीणं तं विज्जाहर-जुवलयं। मए वि चिंतियं 'अहो, संपयं चेय भणियं इमिणा विज्जाहरेण जहा ण जुज्जइ पुरिसस्स महिलत्थे अत्ताणं परिच्चइउं। ता णिंदियं इमं ण मए कायव्वं ति। दे इमाए सच्छच्छ-खीर-वारि-परिपुण्णाए वियसट्टमाणेंदीवर-णयणाए धवल-मुणाल-वलमाण-वलय-रेहिराए वियसिय-सरस-सयवत्त-वयणाए तरल-जल-तरंग-रंगंत-भंग-भंगुर-मज्झाए वियड-कणय-तड-णियंब-वेढाए वावी-कामिणीए अवयरिऊण इमाणं जलंजली देमि' त्ति चिंतिऊण दइए, जाणामि अवइण्णो तं वाविं णिबुड्डो अहं, खणेण उव्वुड्डो हं उम्मिल्लिय-णयण-जुवलो पेच्छामि गयणंगण-वलग्गे तरुयरे महापमाणाओ ओसहीओ गिरिवर-सरिसे वसहे महल्लाइं गोहणाइं ऊसिय-देहे तुरंगमे पंच-धणु-सय-पमाणे पुरिसे महादेहे पक्खिणो णाणाविह-समिद्ध-सफल-ओसहि-सणाइं धरणि-मण्डलं ति। अवि य।

इय तं पेच्छामि अहं अदिट्ठउव्वं अउव्व-दट्ठव्वं। गाम-पुर-णगर-खेडय-मडंब-गोट्ठंगणाइण्णं ॥

तं च तारिसं सव्वं पि महप्पमाणं दट्ठूण जाओ मह मणे संकप्पो। 'अहो, किं पुण एयं। अवि य।

किं होज्ज इमो सग्गो किं व विदेहो णउत्तरा-कुरवो। कीं विज्जाहर-लोओ किं वा जम्मंतरं होज्ज ॥

सव्वहा जं होउ तं होउ त्ति। अम्हं दीवं ताव ण होइ, जेण तत्थ सत्त-हत्थप्पमाणा पुरिसा। एत्थं पुण पंच-धणु-सयप्पमाणा गयणंगण-पत्त व्व लक्खिज्जंति। ण य इमे रक्खसा देवा वा संभावियंति, जेण सव्वं चिय महल्ल-पमाणं इमं। अण्णं च विविह-कुसुमामोओ रुणरुणेंत-महु-मत्त-मुइय-महप्पमाण-भमर-गणा य तरुयरा। ता सव्वहा अण्णं किं पि इमं होहिइ' त्ति चिंतिऊण उत्तिण्णो वावि-जलाओ जाव दइए, पेच्छामि तं वाविं। अवि य।

जल-जाय-फलिह-भित्ति विसट्ट-कंदोट्ट-दिण्ण-चच्चिक्कं। विमलं वावि-जलं तं जलकंत-विमाण-सच्छायं ॥

तं च दट्ठूण मए चिंतियं। 'अहो, अउव्वं किं पि वुत्तंतं, जेण पेच्छ जं तं वावि-जलं तं पि विमाणत्तणं पत्तं। ता एत्थ कंचि पुच्छामि माणुसं जहा को एस दीवो, किं वा इमस्स णामं, कत्थ वा अम्ह दीवो, को व अम्हाण वुत्तंतो' त्ति। इमं च चिंतयंतो समुत्तिण्णो वावि-जल-विमाणाओ परिभमिउमाढत्तो जाव पेच्छामि सग्ग-सरिसाइं णयराइं णयर-सरिस-

1) J विलवंतीओ, J om. तम्मि चेय, P चित्तानलंमि, P om. one मा साहसं, J om. ति. 2) P om. पवण, J om. जलण, P पिलुद्धाओ, J om. °मोह. 3) J भिण्णोविव, P महामोहकोंतेण, J -कुंतेण, P पारद्धो, J पेच्छमह P पेच्छिसिहि, P om. मह. 4) P मज्झं for ममं, P -पिलुद्धा, P बिंदुमइ, P om. वि. 5) P जलण, P कि for वि, J वज्झ-, J जीवमाणेणं for जीविएण, J चिताणले, P om. अहं पि. 6) P बोलिउं. 8) P repeats मणूसा for मणुस्सा, P एसो for एस. 9) P वं for मा एवं. 11) P एसो पुण सप्पुरिसो होइ, P विमुच्चइ. 12) J मारिउं, P अत्थवहो. 13) P om. त्ति, J om. तं, P om. वि. 14) P महिलाजत्थे, J अत्ताणयं, P णिंदिउं, P कायव्वो त्ति। दो इमाए, J खीरोभवारि, P वारिपुन्नाए. 15) P om. वियसट्टमाणें-दीवरणयणाए, P om. वलमाण, P सरससयवणाए, J adds भं before तरंग, J om. रंगंतभंग. 16) J भंगुरंगुरमज्झाए, P भंगु for भंगुर, P तडंवियंब, P अवतरिऊण, J जलंजलिं P जलंतजली. 17) P अवइण्णा तं वावीओ णिउडोहं खणेण उव्वेड्डोहं, J णिउड्डो, J om. हं, J उव्वुडो अहं, P जुयलो, J adds य before पेच्छामि, J तरुवरे. 18) P महप्पमाणाओ, P अउव्वे for गिरिवर-, सरिसे, P महल्लाइं मोहणाइं, J देहतुरंगमे, J सतप्पमाणे, P पमाणपुरिसे. 19) J पक्खिणो णविहसमिद्ध सफलोसहि, P सफला. 20) J गामणगरखेडकव्वडगोट्ठंगणणयरसोहिउं ॥. 22) P मो for इमो, P किं व देहाण, J om. ण after विदेहो. 23) J om. पंचधणुसयप्पमाणा. 24) P गयणंगणं पत्ता। अन्नं च विविह. 25) J कुसुमामोओ रुंटंतमहु. 26) J होहिति चिंति°. 28) P om. वाविजलं तं (before पि), P एत्थ किंचि वुच्छामि. 29) J दीवं को व. 30) P वाविपासायहोओ विमाणाओ परिभमिउं समाढत्तो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहवाइं गाम-ठाणाइं, गाम-ठाण-समाइं गोट्ठाइं, गोट्ठंगणाउलाइं सयल-सीमंताइं, सीमंत-वसिमाइं वणंतराइं, पुरंदर-समप्पभावा राइणो, वेसमण-समा सेट्ठिणो, कामदेव-सरिसो जुवाण-जणो, कप्पतरु-सरिसा तरुयरा, गिरिवर-संठाणाइं मंदिराइं, विरूव-धरिणी-रूव-लायण्ण-वण्ण-विण्णाण-कला-कोसल्ला ववण-सरिसाओ महिलियाओ त्ति । अवि य ।

जं जं एत्थ महग्घं सुंदर-रूवं च अम्ह दीवस्स । तं तं तत्थ गणिज्जइ पक्कण-कुल-कयवर-सरिच्छं ॥

§ ३७०) ता संपयं किंचि पुच्छामि । 'को एस दीवो' त्ति चिंतयंतेण दिट्ठा दुवे दारया । केरिसा । अवि य ।

बाला वि तुंग-देहा रुइरा कंदप्प-दप्प-सच्छाया । रयण-विभूसिय-देहा णज्जइ दइए सुर-कुमारा ॥

दट्ठूण मए चिंतियं । 'दे इमे णयण-मणहरे सोम्म-सहावे पुच्छामि ।' चिंतयंतेण भणिया मए 'भो भो दारया, किंचि पुच्छिमो अम्हे, जइ णोवरोहं सोम्म-सहावाणं' ति । इमं च सद्दं सोऊण धवल-विलोल-पम्हला पेसिया दिट्ठी । कहं च तेहिं दिट्ठो ।

कीडो व्व संचरंतो किमि व्व कुंथू-पिवीलिया-सरिसो । मुत्ताहल-छिड्डं पिव दइए कह कह वि दिट्ठो हं ॥

तओ जाणामि पिए, तेहिं अहं कोउय-रहस-णिब्भरेहिं पुलइओ । भणियं च अवरोप्परं । 'वयंस, पेच्छ पेच्छ, केरिसं किंपि माणुस-पलावं माणुसायारं च कीडयं ।' दुइएण भणियं । 'सच्चं सच्चं केरिसं जीव-विसेसं । अहो अच्छरियं सयलं माणुसायारं माणुस-पलावणं च । ता किं पुण इमं होज्ज ।' पढमेण भणियं 'अहो मए णायं इमं' । दुइएण 'वयंस, किं' । तेण भणियं । अवि य ।

'वण-सावयस्स लीवं छाउच्छायं सुदुक्खियं दीणं । माऊए विप्पणट्ठं उब्भंत-मणेरयं भमइ ॥'

दुइएण भणियं 'वयंस, कत्तो एरिसाइं एत्थ वणाइं जत्थ एरिसाइं वण-सावयाइं उप्पज्जंति ।'

'सर-खेत्त-मेत्त-गामं गामंगण-संचरंत-जण-णिवहं । जण-णिवह-पूरमाणं अवर-विदेहं वयंस इमं ॥'

इमं च सोऊण दइए मए चिंतियं । 'अहो, अवरविदेहो एस, सुंदरं इमं पि दिट्ठं होहि' त्ति चिंतयंतस्स भणियं पुणो एक्केण दारएण 'वयंस, जइ एस वण-सावओ ता केण एसो कडय-कंठयादीहिं मंडिओ होज्ज'त्ति । तेण भणियं 'वयंस, एसो माणुसाणं हेलिओ दीविय-मइ व्व मणुएहि मंडिओ' त्ति । अण्णेण भणियं 'सव्वहा किं वियारेण । इमं च गेण्हिऊण सयल-सुरासुर-वंदिज्जमाण-चलणारविंदस्स सयल-संसार-सहाव-जीवादि-पदत्थ-परिणाम-वियाणयस्स भगवंत-सीमंधर-सामि-तित्थयरस्स समवसरणं वच्चामो । तत्थ इमं दट्ठूण सयं चेय उप्पण्ण-कोउओ को वि भगवंतं पुच्छिहिइ जहा 'को एस माणुसागिई सावय-विसेसो' त्ति भणंतेहिं दइए, चडओ विव गहिओ हं करयलेणं, पत्थिया गंतुं । अहं पि चिंतेमि । 'सुंदरं इमं जं भगवओ सव्वण्णुस्स समवसरणं ममं पावेहिंति । तं चेय भगवंतं पुच्छिहामि जहा को एस वुत्तंतो' त्ति चिंतेंतो च्चिय पाविओ तेहिं जाव पेच्छामि पुहइ-मंडल-णिविट्ठं पिव सुरगिरिं भगवंतं धम्म-देसयं सीहासणत्थं अणेय-णर-णारी-संजुया सुरासुरिंद-प्पमुहा बहुए दिव्वा य रिद्धी जा सव्व-संसारीहिं सव्व-कालेणं पि सव्वहा णो वण्णेउं तीरइ त्ति । ते य वंदिऊण भगवंतं करयल-संगहियं काउं ममं णिसण्णा एक्कम्मि पएसे । भणियं च तेहिं । 'वयंस, ण एस अवसरो इमस्स कीडयस्स दंसियव्वे । भगवं गणहारी किं पि पुच्छं पुच्छइ, ता इमे णिसुणेमो' त्ति चिंतयंता णिसण्णा एक्कम्मि पएसंतरम्मि सोउं पयत्ता ।

§ ३७१) भणियं च भगवया गणहारिणा । 'भगवं, जं तए णाणावरणीयाइ-पयडी-सलाया-घडियं कम्म-महापंजरं साहियं इमस्स किं णिमित्तं अंगीकाउं उदओ खयं वा खओवसमो उवसमो जायइ' त्ति । इमम्मि पुच्छिए भणियं तेण बहु-मुणि-सय-वंद-वंदिज्जमाण-चलण-कमलेण सीमंधर-सामि-धम्म-तित्थयरेण । 'देवाणुप्पिया, णिसामेसु ।

1) P गामट्ठाणाइं गामंगणसमाइं, J om. गोट्ठंगणाउलाइं, सयलसीमंताइं सीमंतवसिमाइं वणंतराइं. 2) J सप्पभावा P समयप्पभावा, P से for सेट्ठिणो, P संट्ठाणाइं. 3) J रूवलावण्णुवण्णकलाकोमला, P रूयलोयण्ण, P वण्ण for ववण. 4) P मणग्घं, P अम्हदीवंमि, P एक्केण-, J करिवर for कयवर-. 5) J दुवे दो राया. 6) J विउंगदेहा. 7) P सोमसहावे, P तेण for चिंतयंतेण. 8) P अम्ह पुछामि अहं for पुच्छिमो अम्हे जइ णोवरोहं सोम्मसहावाणं ति, P adds मइ before दिट्ठो. 10) P व्व कंथू, P पुरिसो for सरिसो, P om. one कइ. 11) P जाणामि पए, J om. अहं, P रहसपूरेहिं पुलइय।, P om. one पेच्छ. P om. किं after केरिसं. 12) P om. कीडयं, P om. one सच्चं, P अच्छरियं. 13) P om. (after सयलं माणुसा) यारं माणुसपलावणं etc. to भणियं । अवि य, J पलाविणं. 15) P विप्पणयं. 16) P दइएण for दुइएण, J repeats एरिसाइं before एत्थ. 17) P om. जणणिवह. 18) P दईए, P om. अहो, P °विदेहे, P होहिति त्ति, P inter. पुणो & एक्केण. 19) J कंठयाहीहिं, J एस for एसो. 20) P हेलिओ धाडेरव होहिति त्ति।, P om. च. 21) P वंदणिज्जमाण, P जीवाइ-पयत्थ, J विआणायस्स, P भगवयातो सीमंधरसामिं वित्थयरस्स. 22) P चेव, P om. उप्पण्णकोउओ, J om. को वि, J पुच्छीही P पुच्छिहि त्ति. 23) J माणसगिती सावतविसेसो, P माणुसागिति. P om. चडओ, P विय, J करेणं P कारयलेणं. 24) J भगवतो, P पावेंति।, J पुच्छीहामि. 25) P चिंततो, P om. तेहिं. 26) J om. संजुया, P बहुवे दिव्वाए रिद्धीए संपण्णा जो सो सव्व-, J सव्वहा ण विण्णेउं. 27) J तेण for तेहिं, P adds ण before वयंस. 28) P कीडस्स, P om. पुच्छं, P पुच्छति, J इमं णिसुणेमि. 30) JP °वरणीयाति, P पयतीसलाय. 31) J उदयो, J खवोवसमो, P वसमो for उवसमो, J जायति त्ति । इमं च पुच्छिए. 32) P चल for चलण, J om. देवाणुप्पिया णिसामेसु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदय-क्खय-क्खओवसमोवसमा जं च कम्मुणो भणिया। दव्वं खेत्तं कालं भवं च भावं च संपप्प ॥
कम्मस्स होइ उदओ कस्स वि केणावि दव्व-जोएण। पहयस्स जह व वियणा वज्जेण व मोहणीयस्स ॥
णाणावरणीयस्स व उदओ जह होइ दिसि-विमूढस्स। पत्तस्स किं पि खेत्तं खेत्त-णिमित्तं तयं कम्मं ॥
पित्तस्सुदओ गिम्हे जह वा छुह-वेयणीय-कम्मस्स। कालम्मि होइ उदओ सुसमादीसुं सुहादीणं ॥
विहय-गइ-णाम-कम्मं होइ भवं पप्प जहा पक्खीणं। तत्थ भवो च्चिय हेऊ णरय-भवो वा वि वियणाए ॥
पढमे कसाय-भावे दंसण-मोहस्स होइ जह उदओ। जिण-गुण-वण्णण-भावे दंसण-कम्मस्स जह उदओ ॥
एण्हिं खयं पि वोच्छं तित्तय-दव्वेण जह य सेंभस्स। होइ खओ खग्गेण व आउय-कम्मस्स सुपसिद्धं ॥
खेत्ताणुबंधि-कम्मं एरिसयं होइ किं पि जीवस्स। जं पाविऊण खेत्तं एक्कं चिय होइ तं मरणं ॥
सुसमा-कालम्मि खओ जीवाणं होइ कम्म-जालस्स। दुसमाएँ ण होइ च्चिय कालो च्चिय कारणं तत्थ ॥
णाणावरणं कम्मं मणुय-भवे चेय तं खयं जाइ। सेस-भवेसु ण वच्चइ कारणमित्थं भवो चेय ॥
भावम्मि तम्मि णियमा अउव्वकरणम्मि वट्टमाणस्स। होइ खओ कम्माणं भावं चिय कारणं एत्थ ॥
जह ओसह-दव्वेणं वियणा-कम्मस्स कत्थइ कहिं पि। होइ खओवसमो वि हु अण्णो णवि होइ दव्वेण ॥
आरिय-खेत्तम्मि जहा अविरइ-कम्मस्स होइ मणुए वा। खय-उवसमाइँ एत्थं खेत्तं च्चिय कारणं भणियं ॥
सुस्सम-दुसमा-काले चारित्तावरण-कम्म-जालस्स। होंति खओवसमाइं काले वि हु कारणं तत्थ ॥
देवाण णारयाण य अवही आवाण-कम्म-पंकस्स। होंति खओवसमाइं होइ भवो चेय से हेऊ ॥
उदए त्ति होंति भणुए मणुस्स-भावम्मि वट्टमाणस्स। खय-उवसमेहिँ तह इंदियाइँ अधवा मई-णाणं ॥
जं दव्वं अवलंबइ खेत्तं कालं च भाव-भव-हेऊ। उवसम-सेणी जीवो आरोहइ होइ से हेऊ ॥
इय दव्व-खेत्त-काला भव-भावो चेय होंति कम्मस्स। उदय-खय-उवसमाणं उदयस्स व होंति सव्वे वि ॥

§ ३७२) एवं च भगवया सव्व-तेलोक्केक्कल्ल-बंधवेण सयल-गम्मागम्म-सीमंधरेण सीमंधर-सामिणा सभाइट्ठे कम्म-परिणाम-विसेसे पडिवण्णं सव्वेहिं मि तियसिंद-णरिंद-मुणि-गणिंदप्पमुहेहिं भणियं च। 'अहो भगवया सिट्ठाओ कम्म-पयडीओ, साहियं कम्मस्स उदयादीयं सयलं वुत्तंतं' ति। एत्थंतरम्मि अवसरो त्ति काऊण तेहिं कुमारेहिं मुक्को अहं करयल-करंगुली-पंजर-विवराओ ठिओ भगवओ तित्थयरस्स पुरओ। एत्थंतरम्मि ममं चेय अइ-कोउय-रहस-भरमाण-णयण-मालाहिं दिट्ठो हं देव-देवि-णर-णारीयणेणं, अहं च पयाहिणीकाउं भगवंतं थुणिउं पयत्तो। अवि य।

'जय सव्व-जीव-बंधव संसार-जलोह-जाण-सारिच्छ। जय जम्म-जरा-वज्जिय मरण-विमुक्का जयाहि तुमं ॥
जय पुरिस-सीह जय जय तेलोक्केक्कल्ल-पत्थिय-पयाव। जय मोह-महामूरण रण-णिज्जिय-कम्म-सत्तु-सय ॥
जय सिद्धिपुरी-गामिय जय-जिय-सत्थाह जयहि सव्वण्णू। जय सव्वदंसि जिणवर सरणं मह होसु सव्वत्थ ॥'

त्ति भणंतो णिवडिओ चलणेसु, णिसण्णो य णाइदूरे। ममं च णिसण्णं दट्ठूण दइए, एक्केण आबद्ध-करयलंजलिणा पुच्छिओ णरणाहेण भगवं सव्वण्णू। 'भगवं, किमेस माणुसो किं वा ण माणुसो, कहं वा एत्थं संपत्तो, किं वा कारणं, केण वा पाविओ, कत्थ वा एस त्ति महंतं महं कोऊहलं, ता पसीय साहेसु'त्ति भणिऊण णिवडिओ चलणेसु।

§ ३७३) एवं च पुच्छिओ भगवं मुणि-गण-वंदिय-चलण-जुवलो भणिउं समाढत्तो। अवि य। 'अत्थि इमम्मि चेय जंबुद्दीवे भारहं णाम वासं। तत्थ य मज्झिम-खंडे अरुणाभं णाम णयरं। रणगइंदो णाम राया। तस्सेस पुत्तो कामगइंदो णाम। इमो य इमेहिं देवेहिं महिला-लोलुओ त्ति काऊण महिला-वेस-धारीहिं अवहरिऊण वेयड्ढ-कुहरं पाविओ।

1 > P उदओ-, J -क्खयोवसमो, P खओवसमो जं च कम्मुणा भणियं।, J भणिता।. 2 > J उदयो, P कस्स व, J मज्जेण for वज्जेण. 3 > P नाणावरणीयकंमस्सवरणीयस्स व उदओ, J कम्मि for किं पि. 4 > J जह वण्णुहवेदणीअस्स कम्मस्स।, J ससमादिसु जहे सुहादीण, P सुहादीणि. 5 > J -गति-, J होइ, P होइ तवं जह पप्प पक्खीणं, J जह, P भवे च्चिय, J हेतू, P om. वि. 6 > J उदयो ॥. 7 > J चितय for तित्तय, P जह वसंतस्स।. 8 > P होइ कंपि, J जीअस्स, P होति. 9 > J कालखयो यो जीवाणं हीउ कम्म-, P दसमाए, P कालो च्चिय. 10 > J भवं चेअ P भवो चेय, P जायइ।, J कारणमत्थं. 11 > P अउव्वकरणं निवट्ट°, J P कम्माणं ताव च्चिय, P तत्थ for एत्थ. 12 > J खयोवसमो, P अन्ना वि होइ-. 13 > P आयारिय, P वहो for जहा, J अविरति-, P खउवसमाइं. 14 > P दुस्समा, J कालो, P होति, J खयोवसमाइं, P खओवसमाइं होइ भवो चेय से होओ ॥. 15 > P om. the gātha देवाण णारयाण etc., J खयोवसमाइं होइ भवे च्चिय तेसिं हेतू ॥. 16 > P उदउत्ति होंइ, P om. four lines खयउव-समेहिं etc. to होंति कम्मस्स ॥, J मतीणाणं. 17 > J हेतू।, J हेतू ॥. 19 > J सयल for सव्व, P तेलोक्केक-, P गंमागंमा-, J समाइट्ठो P इट्ठे. 20 > P -मुणिंदप्पमुहेहि भहेहि भणियं. 21 > P om. ति, P अत्थंतरंमि, 22 > P करयंजलीपंजर, P विभोव for ठिओ, P चेव, J भरमाणे. 25 > P om. देवि, P पयाहिणीउं, J om. थुणिउं. 26 > P जलोहजारिच्छा।, P विमुक्क जयाह तुमं. 25 > P om. one जय, P पयावा।, J सया ॥. 26 > P जय जसत्थाह, J जिण सरणमहं, P सणं for सरणं. 28 > J किं एस. 29 > J पावितो, J त्थि for त्ति, P om. महं, P पसिय. 30 > J भणिउमाढत्तो. 31 > J भरहं for भारहं, P om. य after तत्थ, J अरणाभं, P रणइंदो, P तस्सेय. 32 > P om. य, P om. त्ति, P adds य after धारिहिं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ अलिय-विउव्विय-भवणे किर विज्जाहर-बालिया, सा उण मया, किर तुह विओय-दुक्खेण एसा मय त्ति विलवमाणीहिं दड्ढा, ते वि तत्थेय आरूढा। इमेणावि कवड-महिला-अवहरिय-माणसेण चिंतियं 'अहं पि जलणं पविसामि'त्ति। एवं-मणसस्स विज्जाहर-जुवलय-रूवं दंसियं अवरोप्परं-मंतण-वयण-विण्णाण-वयण-विण्णासेण णियत्तिओ इमाओ साहसाओ। पुणो दे एत्थ वावीए ण्हामि त्ति जाव णिउड्डो जाव जल-कंत-विमाणेणं इहं पाविओ। पुणो कुमार-रूवं काऊण इमेहिं अरण्ण-सावओ त्ति काऊण अलिय-परिहास-हसिरेहिं इहाणीओ जेण किर सव्वण्णु-दंसणेण एत्थ सम्मत्तं पाविहिइ त्ति अवसरेण विमुक्को'त्ति। णरवइणा भणियं 'भगवं, किं पुण कारणं एस अवहरिओ इमेहिं देवेहिं।' भगवया आइट्ठं 'पुव्वं पंचहिं जणेहिं अवरोप्परं आयाणं गहियं ता 'जत्थ ठिया तत्थ तए सम्मत्तं अम्ह दायव्वं'ति। एसो सो मोहदत्तो देव-लोगाओ चविऊण पुहइसारो आसि। पुणो देवो, पुणो एस संपयं चरिम-सरीरो कामगइंदो त्ति समुप्पण्णो। ता भो भो कामगइंदा, पडिबुज्झसु एत्थ मग्गे, जाणसु विसमा कम्म-गई, दुग्गमो मोक्खो, दुरंतो संसार-समुद्दो, चंचला इंदिय-तुरंगमा, कलि-कलंकिओ जीवो, दुज्जया कसाया, विरसा भोगा, दुलहं भव-सएहिं पि जिणयंद-वयणं ति। इमं च जाणिऊण पडिवज्जसु सम्मत्तं, गेण्हसु जहा-सत्तीए विरइं' ति। इमम्मि भणिए मए भणियं 'जहा संदिससि भगवं, तह' त्ति। एत्थंतरम्मि पुच्छियं णरवइणा 'भगवं, जइ एस माणुसो, ता कीस अम्हे पंच-धणु-सयप्पमाणा, इमो पुण सत्त-रयणिप्पमाणो।' भगवया भणियं। 'देवाणुप्पिया, णिसुणेसु। एस अवरविदेहो, सो उण भरहो। एत्थ सुह-कालो, तत्थं आसण्ण-दूसमा। एत्थ सासओ, तत्थ असासओ। एत्थ धम्मपरो जणो, तत्थ पावपरो। एत्थ दीहाउया, तत्थ अप्पाउया। एत्थ बहु-पुण्णा, तत्थ थोव-पुण्णा। एत्थ सत्तवंता, तत्थ णीसत्ता। एत्थ थोव-दुज्जण-बहु-सज्जण-जणो, तत्थ बहु-दुज्जणो थोव-सज्जणो। एत्थ एग-तित्थिया, तत्थ बहु-कुतित्थिया। एत्थ उज्जय-पण्णा, तत्थ वंक-जडा। एत्थ सासओ मोक्ख-मग्गो, तत्थ असासओ। एत्थ सुह-रसाओ ओसहीओ, तत्थ दुह-रसाओ। सव्वहा एत्थ सासय-बहु-सुह-परिणाम-पत्तट्ठा, तत्थ परिहीयमाण-सुह-परिणाम त्ति। तेणेत्थ महंता पुरिसा तत्थ पुण थोयप्पमाणा।' एवं च भगवया साहिए किर मए चिंतियं देवि जहा 'अहो, एरिसो अम्हाण दीवो बहु-गुण-हीणो। एसो पुण सासय-सुह-परिणामो। एरिसो एस भगवं सव्वण्णू सव्व-दंसी सव्व-जग-जीव-बंधवो सव्व-सुरिंद-वंदिओ सव्व-मुणि-गण-णायगो सव्व-भासा-वियाणओ सव्व-जीव-पडिबोहओ सव्व-लोग-चूडामणी सव्वुत्तिमो सव्व-रूवी सव्व-सत्त-संपण्णो सव्व-महुरो सव्व-पिय-दंसणो सव्व-सुंदरो सव्व-वीरो सव्व-धीरो सव्वहा सव्व-तिहुयण-सव्वाइसय-सव्व-संदेहो त्ति। अवि य।

जइ सव्वण्णु महायस जय णाण-दिवायरेक्क जय-णाह। जय मोक्ख-मग्ग-णायग जय भव-तीरेक्क-बोहित्थ ॥

त्ति भणंतो णिवडिओ हं चलणेसु। पायवडिओ चेय भत्ति-भरेक्क-चित्तत्तणेण विणिमीलमाण-लोल-लोयणो इमं चिंतिउ-माढत्तो। अवि य।

दंसण-मेत्तेणं च्चिय भगवं बुद्धाण एत्थ लोगम्मि। मण्णे हं ते पुरिसा किं पुरिसा वण-मया वरइ ॥

त्ति भणिऊण जाव उण्णामियं मए सीसं ता पेच्छामि इमो अम्हं चिय कडय-संणिवेसो, एयं तं सयणं, एसा तुमं देवि' त्ति।

§ ३७४) एवं च साहिए सयले णियय-वुत्तंते कामगइंदेण देवीए भणियं। 'देव, जहाणवेसि, एक्कं पुण विण्णवेमि 'देव, जो एस तए वुत्तंतो साहिओ एत्थ उग्गओ दिवायरो, तओ दिट्ठा विभाया रयणी, महंतोवक्खेवो, बहुयं परिकहियं, बहुयं णिसामियं, सव्वहा महंतो एस वुत्तंतो। ता ममं पुण जत्तो च्चिय तुमं ताहिं समं गओ, तप्पभूइं चेव जागरमाणीए जाम-मेत्तं चेय वोलियं। तो विरुद्धं पिव लक्खिज्जए इमं। ता ण-याणीयइ किं एयं इंदयालं, उदाहु कुहगं, किं वा सुमिणं, होउ मइ-मोहो, किं णिमित्तं, किं अलियं, आदु सच्चं' ति वियप्पयंतीए किं जायं। अवि य।

---

1) P त for तत्थ, J om. विउव्विय, J किल, J सोऊण for सा उण, P विलवमाणेहिं. 2) P om. आरूढा, P इमिणा वि, P -वहरिय-, P एवं माणस्स. 3) P विज्जाहजुवलयं, J जुवलरूवं, P देसियं for दंसियं, J अवरोप्परा-, J मंतणा-, P मंतणवेयणविन्नासेण. 4) P निउत्तो for णिउड्डो, P जाव जालल्कतं विमाणे इहं. 5) J पावेहि पावेहिति. 6) J दिव्वेहिं for देवेहिं. 7) P जत्थ गया तत्थ गया संमत्तं. 8) P चरम-. 9) J पडिवज्ज for पडिबुज्झसु, P कंमगती, P मोखो. 10) J तुरंगा, P कल for कलि, J भोआ for भोगा, P दुलहं, P om. च. 11) J जहा दिससि. 12) J सतप्पमाणा ईसो पुण. 13) P रयणिप्पमाणो, J देवाणुपिया. 14) J तत्थासण्ण-. 15) P उप्पाइया for अप्पाउया, J थोअपुण्णा, J सत्तमंता, P णीसंता, J थोअदुज्जण. 16) P -दुज्जणा, J थोअसज्जणो, P बहुतितिथिया, P एत्थ उज्जपुण्णो तत्थ, J एस सासओ. 17) P दुरसाओ, J एस सासत-. 18) J पत्तत्था P पब्भट्ठा, P परिहीयमाणासुपरिणाम, J तत्थ उण, J थोअपमाणा, P थोयप्पमाणो त्ति. 19) P एसो उण. 20) P गय for गण. 21) J लोअ for लोग, P सव्वत्तमो. 22) J -सव्वातिसय-. 23) P सव्वण्णू, P adds दिवाण after णाण, P भगवं एक्क-बोहित्थ, J बोहित्थे. 24) P om. हं, P भरेणक्क-, P विणिवीलमाण, J om. लोल, P चिंतिउं समाढत्तो. 26) J भगवं जे तुह बुद्धणा एत्थ लोअम्मि, P वणमयावय ॥. 27) P उण्णामयं, J ताव for ता, P अहं for अम्हं, J कडय for कडय, P देवि ति ।. 29) J दिट्ठो विभाता, P महंतो विक्खेवो. 30) J बहूयं णिसामियं, J om. ता, J समयं गओ, J तप्पभूतिं चेअ. 31) J ता for तो, P लक्खिज्जइ, J ण याणीयति किं एतं, P कुदाहु, P कुहयं. 32) J P मतिमोहो, P om. किं णिमित्तं, P आउ सच्चं पि, J वियप्पयंतीय P वियप्पंतीए.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

कीरइ साक्खत्तणयं दिट्ठ-वली-पलिय-पंडुरंगेण । सव्वं सच्चं ति अहो भणियं गोसग्ग-संखेणं ॥

ताव य पवज्जियं पाहाउय-मंगल-तूरं, पढियं बंदि-वंदेहिं, उग्गीयं वारविलासिणीयणेण । इमं च णाऊण एरिसं पभाय-समयं भणियं कामगइंदेण । 'सच्चं इमं मए दिट्ठं णिसुयं अणुभूयं च, णत्थि वियप्पो । जं पि तए भणियं महंतो वुत्तंतो एस थोवं कालंतरं । एत्थ वि देव-माया य । देवा ते भगवंतो अचिंत-सत्ति-जुत्ता जं हियएण किर चिंतिजइ तं सव्वं तक्खणं संपज्जइ त्ति । जेण भणियं 'मनसा देवानां वाचा पार्थिवानाम्' इति । जो सो भगवं सीमंधरसामि-तित्थयरो दिट्ठो सो णजइ अहं पेच्छंतो चेय अज्ज वि हियएण चिट्ठामि, मंतयंतं पिव उप्पेक्खामि । अहवा किमेत्थ वियारेणं । एस भगवं सव्वण्णू सव्व-दरिसी वीर-वद्धमाण-जिणयंदो विहरइ एयम्मि पएसंतरम्मि । संपयं पभाया रयणी । तेण तं चेय गंतूण भगवंतं पुच्छिमो 'भगवं, किं सच्चमिणं किंवा अलियं'त्ति । ता जइ भगवया समाइट्ठं 'सच्चं', ता सच्चं, अण्णहा इंदयालं ति भणमाणो पत्थिओ कामगइंदो मसंतिए । पत्थिओ य भणिओ महादेवीए । 'देव, जइ पुण भगवया सव्वण्णुणा आइट्ठं होज जहा सच्चं ता किं पुण कायव्वं देवेण' । कामगइंदेण भणियं 'देवि, णणु सयल-संसार-दुक्ख-महासायर-तरणं ति किमण्णं कीरउ' । तीए भणियं 'देव, जइ एवं ता अवस्सं पसाओ कायव्वो, एकं वारं दंसणं देज्जं, जेण जं चेय देवो पडिवजइ तं चेव अम्हारिसीओ वि कहं पि पडिवज्जिहिंति' त्ति भणमाणी णिवडिया चलणेसु । तओ पडिवण्णं च कामगइंदेण । 'एवं होउ' त्ति भणंतो एस संपत्तो मम समवसरणं । वंदिओ अहयं पुच्छिओ इमिणा 'किं इंदजालं आउ सच्चं' ति । मए वि भणियं 'सच्चं' ति ।

§ ३७५) इम च णिसामिऊण कय-पव्वज्जा-परिणामो उप्पण्ण-वेरग्ग-मग्गो 'विसमा इमा कम्म-गई, असासया भोगा, दुरंतो संसारो, दुलंघं सिणेह-बंधणं, विरसाइं पिय-विओयाइं, कडुय-फलो कामो, पयडो मोक्ख-मग्गो, सासयं मोक्ख-सुहं, पडिबुद्धो अहं' ति चिंतयंतो कडय-णिवेसं गओ त्ति । एवं च भगवया वीर-मुणिणाहेण साहिए पुच्छियं गणहर-सामिणा 'भगवं, इओ गएण किं तेण तत्थ कयं, किं वा संपइ कुणइ, कत्थ वा वट्टइ' त्ति । भगवया आइट्ठं 'इओ गंतूण साहियं महादेवीए जहा सव्वं सच्चं ति । तओ दिसागइंदं पढम-पुत्तं रज्जे अभिसिंचिऊण आउच्छिय-सयल-णरवइ-लोओ संमाणिय-बंधुयणो पूरमाण-मणोरहो पडिणियत्त-पणइयणो एस संपयं समवसरण-पढम-पागार-गोउर-दारे वट्टइ' त्ति भणमाणस्स चेय समागओ त्ति । पयाहिणं च काउं भणियं तेण 'भगवं, अवि य,

मा अच्छसु वीसत्थं कुणसु पसायं करेसु मज्झ दयं । संसारोयहि-तरणे पव्वज्जा-जाणवत्तेण ॥

एवं च भणिए पव्वाविओ सपरियणो राया कामगइंदो, पुच्छिओ य 'भगवं, कत्थ ते पंच जणा वट्टंति' । भगवया भणियं 'एक्को परं देवो, सो वि अप्पाऊ, सेसा उण मणुय-लोए । दाविओ य भगवया मणिरह-कुमारो महरिसी । अवि य ।

एसो सो माणभडो तम्मि भवे तं च मोहदत्तो त्ति । एसो उ पउमसारो बिइय-भवे पउमकेसरो तं सि ॥
एसो कुवलयचंदो पुहईसारो इमस्स तं पुत्तो । वेरुलियाभो एसो वेरुलियंगो तुमं देवो ॥
मणिरहकुमार एसो कामगइंदो पुणो तुमं एत्थ । भव-परिवाडी-हेउं एएण भवेण सिज्झिहिइ ॥

त्ति आदिसंतो समुट्ठिओ भव्व-कुमुद-मियंको भगवं ति । एवं च भगवं तिहुयण-घरोदरेक्क-पदीव-सरिसो विहरमाणो अण्णम्मि दियहे संपत्तो कायंदीए महाणयरीए बाहिरुज्जाणे । तत्थ वि तक्खणं चेय विरइओ देवेहिं समवसरण-विहि-वित्थरो । णिसण्णो भगवं सीहासणे । साहिओ जीव-पयत्थ-वित्थरो, संथिओ य जीव-सब्भावो, उप्फालिओ कम्मासव-विसेसो, वज्जरिओ जीवस्स बंध-भावो, सिट्ठो पुण्ण-पाव-विहाओ, सूइओ सव्व-संवरप्पओगो, णिदरिसिओ णिज्जरा-पयारो, पयंसिओ सयल-कम्म-महापंजर-मुसुमूरणेण मोक्खो त्ति ।

---

1 > P सक्खिणयं पिव दिट्ठ, J वलिअ for पलिय, J सच्चं सच्चं. 2 > P ताव पडिवज्जियं. 3 > P om. णिसुयं. 4 > J थोअं, JP ए for य, P देवया ए for देवा ते, J सत्ति-जुत्तो जो. 5 > P om. त्ति, P पढियं for भणियं, J वाचया पत्थिवानामिति, P पार्थिवानामिति ।, P °सामी, P दिट्ठा. 6 > J उवेक्खामि, P अहावा, P om. सव्वण्णू after भगवं. 7 > P वद्धमाण, P विहरइ त्ति इमंमि, P इं for तं. 8 > P om. सच्चं before ता. 9 > P पुच्छिओ for पत्थिओ, P पट्ठिओ भणिओ देवीए, P adds after भणिओ देवीए । देव जइ, some fourteen lines beginning with पि य साहइ लेसमेएण बंधए कम्मं etc. to एकंमि तरुवरंमि तं भत्तं हाविथं तेहिं ॥ which come again below, p. 245, lines 7-13. 10 > P देव्वेण, P दुक्खसायर, J adds किमण्णं ति before किमण्णं. 11 > J तीअ P तए, P inter. देव & जइ, J तावस्सं, J देज्जा, P पडिवज्जए. 12 > J चेअ, J कहिं पि, P कहं ति पडिवज्जइंति. 13 > P वंदिउं, J उच्छयं for पुच्छिओ, P इंदयालं, P om. मए वि भणियं सच्चं ति. 15 > J om. च, P कंमगती. 16 > P दुलंधं, J पिव-, P कडुयप्फलो. 17 > P कडुय for कडय, P °मुणिणा साहिए, P गहर for गणहर. 18 > J कत्थ for तत्थ, J संपयं कुणइ, P वट्ठइ, J इतो, P इयं for इओ. 19 > P महादेवि, P adds देवि after जहा, J णरवइणाओ. 20 > P पूरमाणारहो, J पणईअणो, J पायारगोउरद्दारे. 21 > P काऊण for काउं. 24 > P परे for परं, J उ for उण, P om. य after दाविओ, J कुमारमहारिसी. 25 > J माणहडो, JP बितियभवे, P adds त before पउम 26 > P वेरुलियभो तुमं. 27 > P -कुमारो, P om. पुणो, P adds पुण before एत्थ, P परिवाडीए हंतुं, J हेतुं एतेण, J सिज्झिहहि त्ति P सिज्झिहि त्ति. 28 > J अइट्ठंतो, J adds भगवं after आदिसंतो, P -कुमुय-, J घरोअरेक, P विरमाणो. 31 > P सूइया, J °प्पयोगो णिदरिसिओ, P णिज्जारापायारो पसांसिओ. 32 > J सयलमहापावपंजर.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३७६) एत्थंतरम्मि पुच्छियं भगवया गोदम-महामुणि-णायगेणं । अवि य ।
भगवं पुरिसा बहुए वट्टंता एक्कयम्मि वावारे । थोय-बहु-भेय-भिण्णं किं कम्मं केइ बंधंति ॥
भगवया वि सयल-कम्म-पयडी-पच्चक्ख-सव्व-दव्व-सहावेण समाणत्तं । अवि य ।
गोदम बहुए पुरिसा जोगे एक्कम्मि ते पुणो लग्गा । थोय-बहु-भेय-भिण्णं णियमा बंधंति अवि पावं ॥
भणियं च गणहरेणं । अवि य ।
केणट्ठेणं भंते आइट्ठं तियसिंद-बद्ध-पुज्जेहिं । बहुए जीवा एक्कं कुणमाणा बंधिरे भिण्णं ॥
अह भगवं पि य साहइ लेस्सा-भेएण बंधिरे कम्मं । बंधइ विसुद्ध-लेस्सो थोवं बहुयं असुद्धाए ॥
किण्हा णीला काऊ तेऊ पउमा य होइ सुक्का य । छच्चेय इमा भणिया संसारे जीव-लेस्साओ ॥
जइ फलिह-पत्थरम्मि य कसिणे णीले व्व पीय-रत्ते व्व । उवहाणे तं फडियं कसिणं णीलं व जाएज्जा ॥
अप्पा वि तह विसुद्धो फालिह-मइओ व्व गोयमा जाण । कसिणाइ-कम्म-पोग्गल-जोए कसिणत्तणं जाइ ॥
जारिसयं तं कम्मं कसिणं णीलं व पीय पउमं वा । तारिसओ से भावो जंबू-फल-भक्ख-दिट्ठंतो ॥
गामाओ छप्पुरिसा भत्तं घेत्तूण णिग्गया रण्णं । सव्वे वि परसु-हत्था किर दारुं छिंदिमो अम्हे ॥
गहणं च ते पविट्ठा पेच्छंति य तरुवरे महाकाए । एक्कम्मि तरुवरम्मि तं भत्तं ठावियं तेहिं ॥
अह छिंदिउं पयत्ता भमिउं रण्णम्मि ते महारुक्खे । ता तम्मि भत्त-रुक्खे वाणर-जूहं समारूढं ॥
अह तेण ताण भत्तं सव्वं खइऊण भायणे भग्गे । अह लुंपिऊण सव्वं पडिवह-हुत्तं गया पवया ॥
वण-छिंदया वि पुरिसा मज्झण्हे तिसिय-भुक्खिया सव्वे । किर भुंजिमो त्ति एण्हिं तं भत्त-तरुं समल्लीणा ।
पेच्छंति ण तं भत्तं ण य भायण-कप्पडे य फालियए । अह णायं तेहिँ समं वाणर-जूहं समल्लीणं ॥
ता संपइ छायाणं का अम्हाणं गइ त्ति चिंतेमो । वण-पुप्फ-फले असिमो वणम्मि अण्णेसिमो सव्वे ॥
एत्थंतरम्मि कालो दर-पव्विर-जंबु-पिक्क-सहयारो । पढमोवुट्ठ-मही-रय-पसरिय-वर-गंध-गंधड्ढो ॥
अह एरिसम्मि काले तम्मि वणे तेहिँ अण्णिसंतेहिं । दिट्ठो जंबुय-रुक्खो णिरूविओ फलिय-दर-पिक्को ॥
दट्ठूण छावि पुरिसा तुट्ठा ते मंतिउं समाढत्ता । संपइ पत्ता जंबू भण पुरिसा कह वि खायामो ॥
एक्केण तत्थ भणियं फरसू सव्वाण अत्थि अम्हाणं । मा कुणह आलसं तो मूलाओ छिंदिमो सव्वं ॥
छिण्णो पडिहिइ एसो कडयड-रावं वणम्मि कुणमाणो । पडिएणं रुक्खेणं भक्खेस्सं राय-जंबूणि ॥
एवं च णिसामेउं भणियं दुइएण तत्थ पुरिसेण । छिण्णेण इमेण तुहं को व गुणो भणसु मूलाओ ॥
छिज्जंतु इमाओँ परं एयाओ चेय जाओँ साहाओ । पडियाओ भक्खेस्सं मा अलसा होह हो पुरिसा ॥
तइय-पुरिसेण भणियं मा मूलं मा य छिंद साहाओ । छिंदह पडिसाहं से जा जा फलिया इहं होज्जा ॥
पुरिसो भणइ चउत्थो मा बहुयं भणह कुणह मह बुद्धी । थवए छिंदह सव्वे जे जे सफले य पेच्छेज्जा ॥
अह पंचमेण भणियं मा पलवह किंचि कुणह मह भणियं । लउडेण हणह एयं पक्कं आमं च पाडेह ॥
सोऊण इमे वयणे ईसी हेलाएँ हसिय-वयणेण । छट्ठ-पुरिसेण भणिया सव्वे वि णरा समं चेय ॥
किं कट्ठं अण्णाणं अहो महारंभया अयाणत्तं । थोवा तुम्ह बुद्धी एरिसयं जेण मंतेह ॥
किं एत्थ समाढत्तं जंबू-फल-भक्खणं तु तुब्भेहिं । जइ ता किं एएहिं मूलाइच्छेय-पावेहिं ॥
एए सहाव-पिक्का पडिया सुय-सारियाहिँ अण्णे वि । पिक्क-फल-जंबु-णियरा धरणियले रयण-णिवह व्व ॥
वीसमिऊण णिवण्णा अहव णिसण्ण ट्ठिया व इच्छाए । घेत्तूण खाह तुब्भे वच्चह अहवा वि अण्णत्थ ॥

---

1) J om. भगवया, P गोयम. 2) P बहुए भगवंता एक्कंमि 3) P inter. सयल & कम्म, P om. सहावेण. 4) P गोयम. 6) P ति असंबद्ध-, J om. बद्ध. 7) J आह for अह, P लेसा-, P बंधए कम्मं, P बंधइ य सुद्धलेसो, J लेस्से थोअं. 8) J तेजा for तेऊ, P मा for इमा, P लेसाओ. 9) P om. य, P पीवरत्ते वा ।, P तं पडियं, J नीलं for णीलं. 10) P कह for तह, P फालिहयमइउ व्व, J गोतमा, P जायइ ॥. 12) P वि फरसहत्था, P दारं. 13) P om. ते, J तरुअरे, P ट्ठाविगं. 14) P भमिउं रन्नंमि. 16) P वणच्छिंदिया, J मज्झण्ह for मज्झण्हे. 17) P कप्पडेण फा॰, J य फलियए, J अह णाओ. 18) J च्छायाणं, P गय त्ति, P -पुप्प-. 19) P काले दरपिक्करजंबु, J वट्ट for वुट्ठ, P -महीएरयपसरियपवरसुगंधड्ढो. 20) J दिक्खो for दिट्ठो, P -रुक्खा. 21) J मंततुं. 22) J परसू, P मूलाउं. 23) J छिण्णा पडिहिति एसा, J कुणमाणा, J पडिआए पक्खएणं, P एक्केणं for रुक्खेणं, J राजजंबूणि. 24) P एवं निसामेत्तं, J छिण्णाए इमाए तुहं कोव्व, J मूलातो. 25) J छिज्जंति इमाए इहं एआओ, J दो for हो. 26) P साहा ।, P होज्ज. 27) P मा यहुयं, P कुहण for कुणह, J बुद्धि । चेवए छिंदह, P जो जस्स फले. 28) P एयं for भणियं, P हण एयं. 29) J ईस P इसी. 30) J अयाणंतं । थोआ. 31) J तत्थ for एत्थ, J एतेहिं, P मूलाइं छेय. 32) P -पक्का पाडिया, P पक्क-. 33) P वीसविऊण निवण्णो, J om. अहव निसण्ण, J ठिआ, J adds हि after तुब्भे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय ते भणिआ सव्वे एयं होउ त्ति णवर भणमाणा । असिऊण समाढत्ता फलाइँ धरणीएँ पडियाइं ॥
तित्ता तेहिं चिय ते धरणी-वडिएहिँ णवर जंबूहिं । सरिसो से फल-भोओ पावं पुण बहु-विहं ताणं ॥
जो सो मूलं छिंदइ थोवे कज्जम्मि बहु-विहारंभो । मरिऊण कण्ह-लेस्सो अवस्स सो जाइ णरयम्मि ॥
बिदिओ सालं छिंदइ वरयरओ सो वि णील-लेसिलो । मरिऊण पाव-चित्तो णरयं तिरियं व अल्लियइ ॥
तइओ त्ति पाव-पुरिसो भणइ पसाहाउ छिंदिमो अम्हे । कावोय-लेस्स-भावो सो मरिउं जाइ तिरिएसु ॥
जो उण चउत्थ-पुरिसो थवए सव्वे वि एत्थ अवणेह । सो तेयस-लेस्साए पुरिसो वा होइ देवो वा ॥
जो उण पंचम-पुरिसो पक्के आमे व्व गेण्हिमो सव्वे । सो पउम-लेस्स-भावो अवस्स देवत्तणं लहइ ॥
जो उण छट्ठो पुरिसो भूमिगए गेण्हिमो त्ति सदय-मणो । सो होइ सुद्ध-भावो मोक्खस्स वि भायणं पुरिसो ॥
ता गोदम पेच्छ तुमं कज्जे एक्कम्मि जंबु-भक्खणए । छण्हं पि भिण्ण-भावो लेसा-भेओ य सव्वाणं ॥
भिण्णो य कम्म-बंधो भिण्णा य गई मई वि से भिण्णा । एक्कम्मि वि वावारे वट्टंता ते जहा भिण्णा ॥
एवं जं जं कज्जं केण वि पुरिसेण काउमाढत्तं । कज्जम्मि तम्मि एया छल्लेसा होंति णायव्वा ॥
हण छिंद भिंद मारे-चूरे-चमढेह लुंपह जहिच्छं । जस्स ण दया ण धम्मो तं जाणह किण्ह-लेस्स त्ति ॥
जो कुणइ पंच-कज्जे अधम्म-जुत्ते व्व भणइ जो वयणे । थोवं पुण करुणयरं तं जाणह णील-लेस्सं तु ॥
चत्तारि वियण-कज्जे कुणइ अकज्जे व्व पाव-संजुत्तो । जो धम्म-दया-जुत्तो कवोय-लेस्सं पि तं जाण ॥
जो कुणइ तिण्णि पावे तिण्णि व वयणे स कक्कसे भणइ । धम्मम्मि कुणइ तिण्णि य तेउल्लेस्सो हु सो पुरिसो ॥
काऊण दोण्णि पावे चत्तारि पुणो करेइ पुण्णाइं । णिंदइ पावारंभं तं जाणसु पउम-लेस्सं तु ॥
एक्कं पावारंभं पंच य धम्मस्स कुणइ जो पुरिसो । सो होइ सुक्क-लेस्सो लेसातीओ जिणो होइ ॥

§ ३७७) एवं च साहिए भगवया भव्वारविंद-संड-पडिबोहण-पडु-वयण-किरण-जालेण जिणवर-दिवायरेणं आबद्ध-करयलंजलिउडेहिं सव्वेहिं मि भणियं तियसिंदप्पमुहेहिं । 'भगवं, एवं एयं, सद्दहामो पत्तियामो, ण अण्णहा जिणिंद-वयणं' ति भणंतेहिं पसंसियं ति । एत्थंतरम्मि पविट्ठो समवसरणं एक्को रायउत्तो । सो य,
दीहर-भुओ सुणासो वच्छत्थल-घोलमाण-वणमालो । णिमिसंतो जाणिज्जइ अव्वो किर माणुसो एसो ॥
तेण पयाहिणीकओ जय-जंतु-जम्मण-मरण-विणासणो वीरणाहो । भणियं च ।
जय मोह-मल्ल-मूरण णिस्सुंभण राय-रोस-चोराणं । जय विसय-संग-वज्जिय जयाहि पुज्जो तिहुयणम्मि ॥
पाय-पणाम-पच्चुट्ठिएण य भणियं । अवि य ।
भगवं किं तं सच्चं जं तं दिव्वेण तत्थ मह पढियं । मंगलममंगलं पिव को वा सो किं व तं पढइ ॥
भगवया वि आइट्ठं ।
देवाणुपिया सव्वं सच्चं तं तारिसं च्चिय मुणेसु । सो दिव्वो तुज्झ हियं परलोए पढइ सव्वं पि ॥
इमं च सोऊण 'जइ एवं ता तं चेय कीरउ' त्ति भणंतो णिक्खंतो समवसरणाओ । णिग्गए य तम्मि आबद्ध-करयलंजलिउडेण पुच्छिओ भगवं गोयम-गणहारिणा । अवि य । 'भगवं,
को एस दिव्व-पुरिसो किं वा एएण पुच्छिओ तं सि । किं पढियं मंगलवाढएण मह णिग्गओ कत्थ ॥'
एवं च पुच्छिओ अणेय-भव्व-सत्त-पडिबोहणत्थं साहिउं पयत्तो ।

§ ३७८) अत्थि इमम्मि जंबुद्दीवे भरहद्ध-मज्झिम-खंडे उसभपुरं णाम णयरं । तं च
बहु-जण-कय-हलबोलं हलबोल-विसट्टमाण-पडिसद्दं । पडिसद्द-मिलिय-वज्जं वज्जिर-तूरोघ-रमणिज्जं ॥

---

1) P भणमाणो, P समारूढो फलाइं. 2) J तेत्तिहिं चिअ तित्ता धरणी, P धरणिपडिगएहिं, P om. से, P बहुविहत्ता ॥. 3) P किण्ह for कण्ह, P लेसो, P जाय for जाइ. 4) P बीउं for बिदिओ, P णीय for णील, P च for व. 5) P ततिओ, J कावोत, P लेसभावो, P मरिओ जाय तिरियं सो. 6) J चेवए for थवए, J तेअसत्तलेस्सोए, P -लेसाए. 7) P पउमो लेसभवो. 8) P धायणं for भायणं. 9) P तायम, P कज्जं, P जंबुतक्खण ।, J छण्णं पि, P लेसा तेउ य. 10) P गती मती. 11) P कम्मं केण, P एते for एया. 12) P लपह जरिच्छं, P -लेस त्ति. 13) J छट्ठं पुण धम्मिट्ठं तं जाणसु णीललेस्सं ति for थोवं पुण etc., P नीललेसं. 14) P वयण for वियण, J अयज्जे, P व for व्व, J -जुत्ते, P कावोतलेसं. 15) P वि for व, J तेऊलेस्सो P तेउल्लेसो. 16) J कोउण for काऊण, J पावाइं for पुण्णाइं, P -लेसं. 17) P पारंभे पंच, P सा for सो, P -लेसो लेसातीते, J लेस्सातीतो. 18) J -संद-, J पडुअ-. 19) P -करकमलंजलेउडेहिं, J om. सव्वेहिं, P यद्दहामो for सद्दहामो. 20) P समवसरणंमि एक्को. 21) J अणासो P सुवेसो for सुणासो, P वलमालो । णिमिसेंतो, J जाणिज्जति. 22) J पयाहिणीकओ, P -जंममरण-, J -विणासणारी (?) वीरणाहो. 23) J णिसुंभणाराय-, J पुज्जा. 24) P पचुट्ठिएण भणियं. 27) P देवाणुप्पिया, P सुणेसु for मुणेसु. 28) P om. य. 29) J गोतम-. 30) P पुच्छिउं, P अम्ह for अइ. 31) J adds य after पुच्छिओ, P सव्व for भव्व. 32) P मज्झिमे. 33) P विसट्टमाणदमाणपडिसद्दं, P वज्जियतूरोह-.

तत्थ य राया सूरो धीरो परिमलिय-सत्तु-संगामो । णामेण चंदगुत्तो गुत्तो मंते ण उण णामे ॥
तस्स य पुत्तो एसो णामेण इमस्स वइरगुत्तो त्ति । संपइ इमस्स चरियं साहिप्पंतं णिसामेह ॥

तस्स य चंदगुत्तस्स अण्णम्मि दियहे पायवडण-पच्चुट्ठियाए विण्णत्तं पडिहारीए 'देव, दुवारे सव्व-पुर-महल्लया देवस्स चलण-दंसण-सुहं पत्थेंति, सोउं देवो पमाणं' । भणियं च ससंभमं णरवइणा 'तुरियं पवेसेसु णयर-महल्लए' त्ति । णिग्गया पडिहारी, पविट्ठा महल्लया, उप्पियाणि दंसणीयाणि । भणियं च णरवइणा 'भणह, किं कज्जं तुम्हागमणं' ति । तेहिं भणियं 'देव, उभय-वेलं चेय इट्ठ-देवयं पिव दंसणीओ देवो, किंतु णत्थि एत्तिए पुण्ण-विसेसे, अज्जं पुण सविसेसं दंसणीओ' त्ति । राइणा भणियं 'किं तं कज्जं' । तेहिं भणियं 'देव, दुर्बलानां बलं राजा ।' इति । ता अण्णिसावेउ देवो दिव्वाए विट्ठीए उसभपुरं, जो को वि ण मुसिओ । देव, जं जं किंचि सोहणं तं तं राईए सव्वं हीरइ । जं पि माणुसं किंचि सुंदरं तं पि देव णत्थि । एवं ठिए देवो पमाणं' ति । राइणा भणियं । 'वच्चह, अकाल-हीणं पावेमि' त्ति भणंतेणं तेण पेसिया णयर-महल्लया । आइट्ठो पडिहारो 'तुरियं दंडवासियं सद्दावेह' । आएसाणंतरं च संपत्तो दंडवासिओ । भणियं च तेण 'आइसउ देवो' त्ति । राइणा भणियं 'अहो, णयरे कीस एरिसो चोर-उवद्दवो' त्ति । तेण भणियं । 'देव,

ण य दीसइ हीरंतं चोरो वि ण दीसए भमंतेहिं । एक्क-पए च्चिय सुव्वइ गोसे सयलं पुरं मुसियं ॥
ता देव बहु-वियप्पं अम्हे अणुरक्खिओ ण उवलद्धो । अण्णस्स देउ देवो आएसं जो तयं लहइ ॥'

इमम्मि य भणिए राइणा पलोइयं सयलं अत्थाणि-मंडलं । तओ वइरगुत्तो समुट्ठिओ, भणिओ य तेण चलण-पणाम-पच्चुट्ठिएण राया । 'देव,

जइ सत्त-रत्त-मज्झे चोरं ण लहामि एत्थ णयरम्मि । ता जलिरिंधण-जालाउलम्मि जलणम्मि पविसामि ॥
ता देव कुणसु एयं मज्झ पसायं ति देसु आदेसं । पढमो च्चिय मज्झ इमो मा भंगो होउ पणयस्स ॥'

विण्णत्ते वइरगुत्तेण राइणा चंदउत्तेण भणियं । 'एवं होउ' त्ति भणिय-मेत्ते 'महापसाओ' त्ति पडिवण्णं कुमारेण । वोलीणो सो दियहो, संपत्तो पओस-समओ । तत्थ य णिम्मजियं परियरं जारिसं राईए परिभमणोइयं । तं च काउं णिग्गओ रायतणओ मंदिराओ । पूरियं च पउट्टे वंसुणंदयं । करयल-संगहियं च कयं खग्ग-रयणं । तओ णिहुय-पय-संचारो परिभमिउं समाढत्तो । केसु पुण पएसेसु । अवि य ।

रच्छामुह-गोउर-चच्चरेसु आराम-तड-तलाएसु । देवउलेसु पवासु य वावीसु मढेसु णीसंकं ॥

एवं च वियरमाणस्स वोलीणा छट्ठा राई तह वि ण कोइ उवलद्धो दुट्ठ-पुरिसो । तओ सत्तमए य दियसे चिंतियं वइरगुत्तेण 'अहो, अमाणुसं किं पि दिव्वं कम्मं, जेण पेच्छ एवं पि अणुरक्खिज्जंतो तह वि ण पाविज्जइ चोरो । ता को एत्थ उवाओ होहि त्ति । पच्चूसे य मज्झ पइण्णा पूरइ । अवि य ।

अइ सत्त-रत्त-मज्झे चोरं ण लहामि एत्थ णगरम्मि । ता जलिरिंधण-जालाउलम्मि जलणम्मि पविसामि ॥

ता आगओ मज्झ मच्चू अपूर-पइण्णो हं । ता सव्वहा अज्ज राईए मसाणं गंतूण महामंसं विक्केऊण कं पि वेयालं आराहिऊण पुच्छामि जहा 'साहसु को एत्थ चोरो' त्ति, अण्णहा णीसंसयं मज्झ मरणं' ति । वोलीणो सो दियहो । संपत्ता राई । णिग्गओ रायतणओ राईए णगरीए संपत्तो महामसाणं ।

§ ३७९) तत्थ य काऊण कायव्वं उक्कत्तियं असिधेणूए ऊरूसु, णिययं महामंसं गहियं हत्थेण, भणियं च तेणं ।

'भो भो रक्ख-पिसाया भूया तह वंतरा य अण्णे य । विक्केमि महामंसं घेप्पउ जइ अत्थि ते मोल्लं ॥'
एवं च एक्क-वारं दुइयं तइयं पि जाव वेलाए । उद्धाइओ य सद्दो भो भो अह गेण्हिमो मंसं ॥

1) P वीरो for धीरो, P परिमिलियसत्तुसंगामे, P om. गुत्तो, P मंतेण न उण. 2) P वयरगुत्तो. 3) P -पच्भुट्ठियाए. 4) P नयरे महल्लए. 5) J उपिआणि P उप्पयाइं, P दंसणीयाइं, J om. च, P om. तेहिं भणियं. 6) P उभयवेयं, P इत्तिओ पुन्नविसेसो. 7) P om. तं before कज्जं, J दुर्ब्बलानां, P दुर्बलानामनाथानां बालवृद्धतपस्विनां । अनार्यै [:] परिभूतानां सर्वेषां पार्थिवो गतिः ॥, P om. इति. 8) J कोइ ण, J किंपि for किं चि, P किंपि सुंदरं. 9) P ट्ठिए, J om. तेण. 10) P आइद्धो. 11) J आइससु त्ति, P om. अहो, P om. देव. 12) P हीरंतो, P भमंतंमि, P गोस सयलं. 13) P अम्हे आरक्खिओ, J adds उण after ण, P आएसो. 14) P om. राइणा, P सयलमत्थाणमंडवं, J adds अत्थं after सयलं, J वेरगुत्तो, P समट्ठिओ अ भणिओ, P पणाममब्भुट्ठिएण. 15) J adds अवि य after देव. 16) P om. रत्त, P ता जालिंधण, P जळणे पविस्सामि. 17) J एवं for एयं, J ति देव आएसं. 18) P om. राइणा चंदउत्तेण. 19) P निम्मिजयपरियरं, J राई परि° J काऊण for काउं. 20) P खयरयणं, P निहुयपयं. 22) P तह लाएसु. 23) P वोलीण, P राती, P कोवि उवलद्धो, P om. दुट्ठपुरिसो, P सत्तमे य दिवसे. 24) P अमाणुसो. 25) J होहिति, P अपूरमाणस्स for पूरइ. 26) P चोरो न, J णयरंमि, P जालिंधण-, P जलणे पविस्सामि. 27) J अपूरइ-, P अ for अज्ज, J महामासं, P किंपि, J वेअरं for वेयालं, P साहिऊण for आराहिऊण. 28) J से for सो, P संपत्त. 29) P रायतओ नगरीए, J णयरीए, P जहामसाणं. 30) P repeats काऊण, P उक्कित्तियं, J णिअयमहामासं. 31) P रक्खस-, J भूता, J तध वंतरा व अण्णे वा ।, J अत्थि सेम्मोल्लं. 32) J एक्कं-, J महामंसं for मंसं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहाइओ रायतणओ तं दिसं 'को इहं गेण्हइ मंसं'। वेयालेण भणियं 'पेच्छामि केरिसं मंसं'। कुमारेण भणियं।

'एयं मंसं गेण्हसु जिग्घसु चक्खसु सुरहिं मिट्ठं च। ता मह देज्जसु तुट्ठो जं दायव्वं इहं मोल्लं॥'

ति भणिए पसारिओ हत्थो वेयालेणं। णिक्खित्तं तस्स करयले मंसं कुमारेण। तओ तेण आसाइऊण भणियं।

'भो भो एयं आमं णिस्सत्तं विस्सगंधियं एयं। णाहं गेण्हामि इमं जइ पक्कं देसि अग्गीए॥'

रायउत्तेण भणियं।

'पक्कं देमि जहिच्छं पयट्ट वच्चामु इह चितिं जाव। उक्कत्तिय पक्क-रसं देमि अहं भुंज तं तत्थ॥'

वेयालेण भणियं 'एवं होउ' त्ति भणंता उवगया दोण्णि वि नक्खण-पलीविय-चिय-समीवं। तत्थ य 'णिसम्मसु भुंजसु' त्ति भणंतेणं रायतणएणं उक्कत्तियं अण्णं महामंसं, पोइय-संठए पक्कं, पणामियं तस्स वेयालस्स। गहियं तेण भुत्तं च।

§ ३८०) एत्थंतरम्मि पुच्छिओ भगवं महावीर-जिणिंदो गोदम-सामि-गणहारिणा 'भगवं, किं पिसाया रक्खसा वा देव-जोणिया इमे महामंसं अण्णं वा कावलियं आहारं आहारेंति'। भगवया समाणत्तं 'गोदमा ण समाहारेंति'। भणियं गोयमेण 'भगवं, जइ ण आहारेंति, ता कीस एयं महामंसं तेण असियं ति भण्णइ'। भगवया समाइट्ठं 'पयईए इमे वंतरा केलीगिल-सहावा बाल व्व होंति। तेण पुरिसेहि सह खेलंति, सत्तवंतं च दट्ठूण परितोसं वच्चंति, बलियं पिव मल्लं रायउत्तं, तस्स सत्तं णाणा-खेलावणाहिं परिक्खंति। तेण मंसं किर मए भुत्तं ति दंसेंति, तं पुण पक्खिवंति। तेण पक्खित्तं तं मासं। पुणो भणियं वेयालेण। अवि य।

भो भो एयं मासं णिरट्ठियं णेय सुंदरं होइ। जइ देसि अट्ठि-सरिसं भुज्जं तं कडयडारावं॥

कुमारेण भणियं।

भुंजसु देमि जहिच्छं मंसं वा अट्ठिएहिं समयं ति। एयं चेय भणंतेण कप्पिया दाहिणा जंघा॥

छूढा चिताणले, पक्का उप्पिया वेयालस्स। पक्खित्ता तेण। भणियं पुणो।

भो भो अलं इमेणं संपइ तिसिओ पियामि तुह रुहिरं। पियसु त्ति भाणिऊणं कुमरेण वियारियं वच्छं॥

तं च रुहिरं पाऊण पुणो वि भणियं। अवि य।

'एयं जं तुज्झ सिरं छिण्णं करवत्त-कत्तिय-विरिक्कं। माणुस-वस-रुहिरासव-चसयं मह सुंदरं होइ॥'

कुमारेण भणियं।

छेत्तूण देमि तुज्झं जं पुण करवत्त-कत्तरण-कम्मं। तं भो सयं करेज्जसु एत्तिय-मेत्तं महायत्तं॥

ति भणमाणेण कवलिओ कंत-कसिण-कोंतला-कलावो वाम-हत्थेण दाहिण-हत्थेण य छेत्तूण पयत्तो असिधेणूए। ताव य हा-हा-रव-सद्द-मुहलो उद्धाइओ अट्टट्ट-हासो गयणंगणे। भणियं च तेण वेयालेण। अवि य।

'एएण तुज्झ तुट्ठो अणण्ण-सरिसेण वीर-सत्तेण। ता भणसु वरं तुरियं जं मग्गसि अज्ज तं देमि॥'

कुमारेण भणियं।

'जइ तं सि मज्झ तुट्ठो देसि वरं णिच्छियं च ता साह। केण मुसिज्जइ णयरं चोरो भण कत्थ सो तुरियं॥'

तेण भणियं।

'एसा महइ-महल्ला वीर तए पुच्छिया कहा एण्हिं। तुह सत्त-णिज्जिएणं साहेयव्वं मए वस्सं॥

लद्धो वि णाम चोरो कुमार भण तस्स होज्ज को मल्लो। दिट्ठो वि सो ण दीसइ अह दिट्ठो केण गहियव्वो॥'

तओ 'कीस ण घेप्पइ' त्ति चिंतयंतेण पुलइयं अत्तणो देहं जाव सव्वंग-संपुण्णं अक्खयं सुंदरयरं ति। भणियं च कुमारेण। 'भो भो,

पेच्छामि परं चोरं एत्तिय-मेत्तं सि पुच्छिओ तं मे। घेप्पइ ण घेप्पइ व्वा एत्थ तुहं को व वावारो॥'

तेण भणियं।

1) P om. रायतणओ, J केरिसं मासं. 2) J मासं, P जिघसु भक्खसुरभि मिट्ठ च, J adds जइ तुमं पडिहाइ before सुरहिं, P ता मेह. 3) J मासं. 4) J थोअं P एवं for एयं, P णिस्सायं विस्सगंधेयं. 6) P जदिच्छं, P पक्करिसं. 7) P दो for दोण्णि, P om. य, J पलीविअं. 8) P उक्कित्तियं, J महामासं, P पोइयं सोउए पक्कं, P om. तस्स, J om. भुत्तं च. 9) P om. भगवं, P गोतम-, P पिसाता रक्खरा वा. 10) P इमं, J महामासं, P वा कालियं, P om. आहारं, J आहरेंति, P गोयमा णो आहारेंति.. 11) J गोदमेण, P जइ णा, J महामासं, P om. ति. 12) P केलीकिल, P पुरिसेण सह. 13) J मल्लरायउत्तं P मल्लं रायउत्ता, P तंच for तस्स, P परिक्खवंति, P परिक्खवे for पक्खिवंति, P om. तेण पक्खित्तं तं मासं etc. to तं कडयडारावं॥. 14) J तम्मासं. 17) J मज्झं P तुज्झं for मंसं, P मि for ति. 18) J बूढा for छूढा, J inter. पुणो and भणियं and adds अवि य. 19) J इमिणा संपइ, J भणिएण, J कुमारेण. 20) P om. वि. 21) J -किरिक्कं, P सुइ for मह. 23) P देइ, J तुम्हं for तुज्झं, J कत्तणं कम्मं, P को for भो, J महापत्तं॥. 24) P repeats दाहिण, P घेत्तूण for छेत्तूण, P om. अवि य. 26) P एतेण, P अणण्णसरिसेत्तेण. 28) P निच्छयं ति ता, P मुणिज्जइ. 30) J महति-, P तु for तुह, P साहेयव्वो. 31) P गहिब्वो॥. 32) P om. तओ, P चिंतिअंतेण पलोइउं, P सव्वंगं, P अक्खरसुंदरयं ति. 34) P पुच्छिउं, P घेप्पई वा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'णं वप्पो तस्सम्हे पुरओ ठाउं पि णेय चाएमो । जो पुण तस्सावासो तं दूरत्था पयंसेमो ॥'

कुमारेण भणियं ।

'जइ तं मज्झ ण साहसि आवासं मज्झ तं चिय कहेसु । रक्खामि ताव तं चिय जा दिट्ठो सो वि तत्थेय ॥'

तेण भणियं 'जइ एवं ता णिसुणेसु ।

जो एस मसाण-वडो आरुहिउं एत्थ कोत्थरो अत्थि । तं चेय तस्स दारं चोरावासस्स हो वीर ॥'

§ ३८१) इमं च सोऊण पविरल-पयच्छोहो पहाइओ तं चेय दिसं रायतणओ, संपत्तो तं च वड-पादवं । अवि य ।

इय बहल-पत्तलं तं साह-पसाहा-लुलंत-घर-जालं । बहु-पसरिय-पारोहं मसाण-वड-पायवं पत्तो ॥

तं च दट्ठूण आरूढो कुमारो, अण्णेसिउं पयत्तो तं च कुडिच्छं । कत्थ ।

साहासु पसाहासु य मूल-पलंबेसु पत्त-णियरेसु । णिकड्ढिय-करवालो बिलस्स वारं पलोएइ ॥

कहं पुण पलोइउं पयत्तो । अवि य ।

परिमुसइ करयलेहिं पायं पक्खिवइ जिंघए गंधं । खण-णिहुयंगो सद्दं इच्छइ सोउं कुडिच्छेसु ॥

एवं च पुलोएंतेण एक्कम्मि कुडिच्छ-समीवे उवणीयं वयणं, जाव

णिग्गहइ धूव-गंधो कुंकुम-कप्पूर-मासलुग्गारो । उच्छलइ तंति-सद्दो वर-कामिणि-गीय-संवलिओ ॥

तं च सोऊण अग्घाइऊण य चिंतियं राय-तणएण । अव्वो,

लद्धं जं लहियव्वं दिट्ठं चोरस्स मंदिरं तस्स । तस्स य मइं च एण्हिं जो बलिओ तस्स रज्जमिणं ॥

इमं च चिंतिऊण पविसिउं समाढत्तो । थोवंतरं च जाव गओ ताव

बहु-णिज्जूहय-सुहयं आलय-चुंपाल-वेइया-कलियं । धुव्वंत-धयवडायं वर-भवणं पेच्छए कुमरो ॥

तं च दट्ठूण रहस-वस-विसेस-पसरिय-गइ-पसरो पविट्ठो तं भवणं । केरिसं च तं पेच्छइ । अवि य ।

फालिह-रयण-मयं पिव णाणा-मणि-चुण्ण-विरइयालेक्खं । कंचण-तोरण-तुंगं वर-जुवई-रेहिर-पयारं ॥

चिंतियं च तेण 'अहो महंतं इमं भवणं' । 'कत्थ दुरायार-कम्मो होहिइ चोरो' त्ति चिंतयंतेण दिट्ठा एक्का जुवई । केरिसा । अवि य ।

णीलुप्पल-दीहच्छी पिहुल-णियंबा रणंत-रसणिल्ला । अहिणव-तुंग-थणहरा देवाण वि मणहरा बाला ॥

तं च दट्ठूण चिंतियं रायतणएण । 'अहो एसा तुरिय-पय-णिक्खेवं तस्सेव आएसेण पत्थिया, ण ममं पेच्छइ, ता किंचि सद्दं करेमि जेण ममं पेच्छइ' त्ति । भणियं तेणं । अवि य ।

'गरुओ सिहिणाण भरो तणुयं मज्झं ति सुयणु चिंतेसु । मा गमण-वेय-पहया भरेण कणइ व्व भज्जिहिसि ॥'

तं चिय सहसा सोऊण कह तीए पुलइयं । सुण ।

संभम-विलास-मीसं वलिउं अइ-दीह-लोयण-तिभायं । तह तीए पुलइओ सो जह भिण्णो मयण-बाणेहिं ॥

§ ३८२) तं च तहा दट्ठूण संभम-भयाणुराय-कोउय-रस-थंभिया इव ठिया । तं च तारिसं दट्ठूण चिंतियं रायतणएण । 'अहो,

जत्तो विलोल-पम्हल-धवलाइँ वलंति णवर णयणाइं । आयण्ण-पूरिय-सरो तत्तो च्चिय धावइ अणंगो ॥'

किं च इमाए पुच्छामि किंचि पुच्छियव्वं' ति भणिया ।

'को य इमो आवासो का सि तुमं सुयणु को इहं णाहो । कत्थ च सो किं व इमो गायइ महिलायणो एत्थ ॥'

---

1 > P ण for णं, P पुरउ हाउं पि णोय वाएमो, P जं for जो. 3 > P दिट्ठा, P तत्थेवा. 6 > P -पवित्थोहो, P om. च. 7 > P अइ for इय, P पत्तलंवं तं, J -ललंतघरयालं. 8 > P om. च before कुडिच्छं. 9 > P बिलस्स दारं पलोएत्ति ॥, 12 > P पलोइयतेण, P कुडिच्छय-. 13 > P णिस्सइ for णिग्गहइ. 14 > J अघाइऊण, P om. य, P अयो for अव्वो. 15 > P तस्स रज्जं तु ॥. 16 > P adds अवि य before थोवंतरं, JP add पेच्छइ after ताव. 17 > P adds तु before आलय, P पालयगरुयवेइताकलियं ।. 18 > J वससविसेस, J inter. तं & च after केरिसं. 19 > J फालिय P फलिह for फालिह, P रयणामयं, P रेहिर for तोरण. 21 > J om. च, J होहिति P होहि त्ति, P चिंतियं तेण, P adds आए before दिट्ठा, P om. एक्का. 22 > P नीलुप्पील, P वि मइणरा. 23 > P पयनिक्खेवो, J तस्सेअ. 24 > P भणिया. 25 > P सुयण, P trans. भरेण after कणइ व्व, P कणय व्व- 26 > P च for च्चिय, J कय तीय पुल°, P सुयणु for सुण. 27 > P वलियं, J तीय for तीए. 28 > P थंभिय इव वट्टिया. 30 > P आइन्न-, 31 > P किं वा इमा. 32 > J को व इमो, J adds हो before कत्थ, P कत्थ वि सो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीए भणियं । 'सुंदर,
जो जं जाणइ थाणं अह सो पावेइ तं सकज्जेणं । कह तं अयणंतो च्चिय एत्तिय-मेत्तं अइगओ सि ॥'
तेण भणियं ।
'अयणंतो च्चिय मूढो कह वि तुलग्गेण पाविओ एत्थ । ता साहसु परमत्थो को एत्थ पहू कहिं सो वा ॥'
तीए भणियं ।
'जइ तं पंथ-विमूढो कत्तो णयराओ आगओ एत्थ ।' भणियं च तेण 'सुंदरि उसभपुरा आगओ अहयं' ॥
तीए भणियं ।
'जइ तं उसभपुरे च्चिय किं जाणसि चंदउत्त-णरणाहं । पुत्तं च वइरगुत्तं सुहयमणंगं व रूवेणं ॥'
तेण भणियं ।
'सुंदरि कहं वियाणसि रूवं णामं च ताण दोण्हं पि ।'
तीए भणियं ।
'किं तेण बोलियं तं आसि गुलो खाइओ एण्हिं ॥'
तेण भणियं ।
'सुंदरि साहेसु फुडं ताणं किं होसि किंचि पुरिसाणं । कह व वियाणसि ते तं केण व हो पाविया एत्थं ॥'
तीय भणियं ।
'सावत्थी-णरवइणो धूया हं वल्लहा सुरिंदस्स । बाल च्चिय तेणाहं दिण्णा हो वइरगुत्तस्स ॥
एत्थंतरम्मि इमिणा विज्जासिद्धेण सुहय केणावि । हरिऊण एत्थ कत्थ वि पायालयलम्मि पक्खित्ता ॥
जाणामि तेण ते हं णामं रूवं च ताण णिसुयं मे । णाहं एक्का हरिया महिलाओ एत्थ बहुयाओ ॥'
तेण चिंतियं । 'अहो, एसा सा चंपयमाला ममं दिण्णा आसि, पच्छा किर विज्जाहरेणावहरिया णिसुया अम्हेहिं, ता सुंदरं जायं, दे साहिमो इमाए सब्भावं' । चिंतिऊण भणियं तेणं ।
'सो वइरगुत्त-णामो पुत्तो हं सुयणु चंदगुत्तस्स । एयं विज्जासिद्धं अण्णिसमाणो इहं पत्तो ॥
ता साह कत्थ संपइ विज्जासिद्धो कहं व हंतव्वो । मह किंचि साह मम्मं जइ णेहो अत्थि अम्हेसु ॥'
तीए भणियं ।

§ ३८३) जइ तं सि वइरगुत्तो ता पिययर सुंदरं तए रइयं । साहामि तुज्झ सव्वं जह सो मारिज्जए पावो ॥
जं जं परम-रहस्सं सिद्धं वसुणंदयं च खग्गं च । एत्थं च्चिय देवहरे अच्छइ तं ताव तं गेण्ह ॥
गहिएहिँ तेहिँ सुपुरिस अल-च्छिण्णो विब्भुओ व्व सो होही । अह तं पावइ हत्थे उप्पइओ केण दीसेज्ज ॥
रायउत्तेण भणियं 'ता सुंदरि, साहसु कहं पुण सो संपइ वट्टइ विज्जासिद्धो । तीए भणियं 'कुमार, राईए सो भमइ, अत्थमिए महिलं वा अण्णं वा जं किंचि सुंदरं तं अक्खिवइ । दियहओ उण एत्थ बिल-भवणे महिला-चंद-मज्झ-गओ अच्छइ । ता संपइ णत्थि सो एत्थ । अह सो होइ ता अत्थि तुमं अहं च एवं अवरोप्परं वीसत्था आलावं करेंता ।' तेण भणियं 'जइ सो णत्थि ता कीस एयाओ महिलाओ गायंति' । तीय भणियं ।
'सुंदर तेणेय विणा इमाओ हरिसम्मि वट्टमाणीओ । गायंति पढंति पुणो रुयंति अण्णाओं णच्चंति ॥'
तेण भणियं ।
'सुंदरि साह फुडं च्चिय विज्जासिद्धस्स मज्झ दोण्हं पि । को होहिइ एयाणं वेसो व्व पिओ व्व हिययस्स ॥'
हसिऊण तीए भणियं ।
'अइ मुद्ध किं ण-याणसि महिला-चरियं वियाणियं केण । गामेल्लओ व्व पुच्छसि महिल च्चिय महिलिया-हिययं ॥

2) J तं तं for अह, J पावइ अ कज्जेण ।, P अह तं अयाणंतो. 4) P अयाणंतो, P कह व, P कव हिं for कहिं. 6) P आहयं ॥ 8) P चि for च्चिय, J च वेरगुत्तं संगमणंग व, P वइरइगुत्तं सुहयणंगं. 11) J तेण for तीए. 12) J खइदओ for खाइओ. 13) P om. तेण भणियं. 14) P वि for व, P inter. तं and ते, P केण वि हो. 15) P om. तीय भणियं. 17) P विज्जो-, P पायालवलंमि. 19) P विज्जाहरेण अवहरिया, J णिसुअ, P सुरं for सुंदरं. 21) P °गुत्तनामा P सुयण चंद°. 22) P किंचि साहसु तुमं. 24) P जं for जइ, J सुंदर for पिययर, P पियय सुंदरं, P रइ for रइयं, P om. साहामि तुज्झ सव्वं जह etc. to चंचलहियपेम्माओ इमाओ. This passage is reproduced in the text with ya-śruti and minor corrections etc. from J alone. 26) J अलच्छिण्णो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घेप्पइ जलम्मि मच्छो पक्खी गयणम्मि भिज्जए राहा। गहियं पि विहडइ च्चिय दुग्गेज्झं महिलिया-हियय॥
वेस्सं पि सिणेहेण वि रमंति अइवल्लहं पि णिण्णेहा। कारण-वसेण णेहं करेंति णिक्कारणेणं पि॥
रामेंति विरूवं पि हु रूविं पुण परिहरंति दूरेण। रूव-विरूव-वियप्पो हियए किं होइ एयाण॥
बीहेंति पंडियाणं कुमार लज्जंति रूवमंतस्स। वंकं वंचेंति पुणो उज्जुय-सीलं उवयरंति॥
रज्जंति अत्थवंते रत्तं पुण परिहरंति रोर व्व। जाणंति गुणा पेम्मं करेंति ते णिग्गुणे तह त्ति॥
सूरं जाणइ पुरिसं तहा वि तं कायरं समल्लियइ। जाणंति जं विरत्तं घडेंति पेम्मं तहिं चेय॥
गुण-रहिए वि हु पेम्मं पेम्म-पराओ वि तं णिसुंभंति। हंतूण तं सयं चिय जलणे पविसंति तेणेय॥
सव्वे जाणंति गई भत्तत्तणयाण सुहिइ-हिययाण। महिला णिययस्स पुणो हिययस्स गई ण-याणंति॥
इय विज्जु-विलसियं पिव खर-पवणुद्धुय-धयवडाचलणं। महिलाण हियय-पेम्मं कुमार को जाणिउं तरइ॥

तह वि एत्तियं लक्खेमि जइ तुमं पेच्छंति ता अवस्स तुमम्मि णेहो जायइ। अण्णं च सव्वा इमाओ उसभपुर-वत्थव्वाओ तुमं च दट्ठूण अवस्सं पच्चभिजाणंति, तेण इमाणं दिज्जउ दंसणं' ति। कुमारेण भणियं 'सुंदरि, तं ताव सिद्ध-वसुणंदयं खग्गं च समप्पेसु, ता पच्छा दंसणं दाहामि'। तीए भणियं 'एवं होउ' त्ति। 'केवलं कुमारेण एयम्मि चेय पएसे अच्छियव्वं जावाहं तं खग्ग-खेडयं घेत्तूण इहागच्छामि' त्ति भणिउं गया। कुमारो वि तम्मि ठाणे अच्छिउं पयत्तो। चिंतियं च तेण। 'अहो, संपयं चिय इमीय चेय साहियं खर-पवणुद्धुय-धयवड-चंचल-हियय-पेम्माओ इमाओ महिलियाओ होंति, ता कयाइ इमा गंतूण अण्णं किं पि मंतं मंतिऊण ममं चेय णिसुंभणोवायं कुणइ। ता ण जुत्तं मम इहं अच्छिऊणं' ति चिंतयंतो अण्णत्थ संकंतो, आयारिय-खग्ग-रयणो पूरिय-वसुणंदओ य अच्छिउं पयत्तो। थोव-वेलाए य आगया गहिय-वसुणंदया गहिय-खग्ग-रयणा य। पलोइए तम्मि पएसे, कुमारो ण दिट्ठो। तओ तरल-तार-पम्हल-वलंत-लोयणा पलोइउं पयत्ता। भणिया य कुमारेण। 'एहि एहि सुंदरि, एस अहं अच्छामि' भणिया संपत्ता। तीए भणियं 'रायउत्त, कीस इमाओ ठाणाओ तुमं एत्थ संपत्तो'। तेण भणियं। सुंदरि, णणु तुमए चेय साहियं जहा 'चंचल-पेम्म-बंधाओ होंति जुवईओ'। तेण मए चिंतियं 'कयाइ कहं पि ण भिरुइओ होमि, ता णिहुयं होऊण पेच्छामि को वुत्तंतो त्ति तेण चलिओ हं'। तीए सहरिसुप्फुल्ल-लोयणाए भणियं। 'कुमार, जोग्गो पुहइ-रज्जस्स तुमं जो महिलाणं ण वीसंभसि' त्ति। सव्वहा,

भुयगस्स व मुह-कुहरे पक्खिव ता अंगुली सुवीसत्थो। महिला-चंचल-भुयईण सुहय मा वच्च वीसंभं॥

ता सुंदरं कयं, जं चलिओ सि। गेण्हसु एयं वसुणंदयं खग्ग-रयणं च।' णिक्खित्तं वसुमईए। रायउत्तेणावि णिययं विसज्जिऊण ति-पयाहिणं वंदिऊण गहियं तं वसुणंदयं दिव्वं खग्ग-रयणं च। तओ गहिय-खग्ग-रयणो केरिसो सो दीसिउं पयत्तो। अवि य।

विज्जाहरो व्व रेहइ तक्खण-पडिवण्ण-खग्ग-विज्जाए। संपइ उप्पइओ इव विज्जाहर-बालियाएँ समं॥

तओ तीए भणियं 'विजयाय होउ कुमारस्स एयं खग्ग-रयणं' ति। कुमारेण भणियं 'सुंदरि, साहसु संपयं कत्थ सो दट्ठव्वो विज्जासिद्धो' त्ति। तीए भणियं 'कुमार, तुमं केण मग्गेणेत्थ पविट्ठो'। तेण भणियं 'वड-पायव-बिलेण'। तीए भणियं 'णाहं किंचि जाणामि, परं एत्तियं पुण जेण दारेण तुमं आगओ तेणेय सो वि आगमिस्सइ त्ति। ता जाव इमिणा मग्गेण पढमं उत्तिमंगं पेसेइ, ता तं चेय छेत्तव्वं। अण्णहा दुस्सज्झो पुण होहिइ' त्ति। कुमारेण भणियं। 'एवं होउ' त्ति भणिऊण आयरिय-खग्ग-पहारो ठिओ बिल-दुवारे।

---

2) J सिणेहेणं. 3) J हिअयंमि for हियए. 15) J कयाइ मा P कयावि मा, J कंपि for किंपि, P णिसुंभणावासं. 16) P om. ति, P पायड्डिय for आयारिम, J य पुच्छिउं. 17) P om. य before आगया, P om. गहिय before खग्ग, P रयणे य। पलोइओ, P तओ तारतरलपंतलवलंत. 18) P संपत्ती. 19) P ट्ठाणाओ, P एस for एत्थ, J om. णणु, P मए for तुमए. 20) J पेम्माबंधाओ, P जुवतीउ, P कया वि कहिं पि, P om. ण भिरुइओ होमि, J तेण for णिहुयं होऊण. 21) P om. त्ति, P ण for तेण, P सहरिसफुल्ल, P भणिउं, P om. पुहइरज्जस्स, P om. जो. 23) P पक्खिवि, P य for ता, P भुयंगीण सुह मा. 24) J जं वलिओ, P वसुणदणयं, P वसुमतीए. 25) J om. ति-, P om. दिव्वं, P रयणा before केरिसो, P om. सो before दीसिउं. 26) P तखण, P सम्मं ॥. 28) J तीय for तीए, P विजाओ for विजयाय, P om. एयं, P om. साहसु, J om. सो. 29) J तीय, P केणे मग्गण पविट्ठो, J तीय. 30) P वारं for परं, J तेणय, P om. वि. 31) P पेसइ, P दुसज्जो, P om. पुण, J होइ त्ति P होहिति त्ति. 32) J ट्ठिओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३८४) एत्थंतरम्मि किंचि-सेसाए राईए वियलमाणेसु तारा-णियरेसु पलायंतेसुं तम-वंदेसु दूरीहूयासु सयल-दिसासु पहायं ति कलिऊण परिब्भमिऊण धवलहरोवर-अंतेउर-चच्चर-रच्छासु उसभपुरवरस्स समागओ । तस्सेव राय-तणयस्स एक्कल्ल-पसुत्तं भारियं घेत्तूण पविट्ठो य तं बिलं । तं च पविसंतं दट्ठूण धाहावियं राय-धूयाए ।

'हा वइरगुत्त-सामिय एसा सा तुज्झ महिलिया अहयं । गहिया केण वि धावसु रक्खस-रूवेण रोद्देणं ॥
चंपावइ-णामा हं महिला हा वइरगुत्त-णामस्स । एसा हीरामि अहं सरण-विहीणा वराइ व्व ॥'

एवं च तीए विलवंतीय भणिया विज्जासिद्धेणं ।

'को कस्स होइ सरणं कत्थ व सो किं व तेण करणिज्जं । जइ तं पावेमि अहं तुह दइयं तं चिय असामि ॥'

त्ति भणंतो णिसुओ कुमारेण । 'अहो, एस दुरायारो आगओ सो मह महादेवी घेत्तूण । ता दे सुंदरं जायं सलोत्तो एस चोरो' त्ति चिंतयंतस्स णीहरियं उत्तिमंगं बिलाओ सिद्धस्स । चिंतियं कुमारेणं 'एयं उत्तिमंगं छिंदामि । अहवा णहि णहि ।

किं जुज्जइ पुरिसाणं छल-घाओ सव्वहा ण जुत्तमिणं । पेच्छामि ताव सत्ती इमस्स ता णवर सिद्धस्स ॥'

चिंतयंतो णिक्खंतो बिलाओ, भणिओ य कुमारेण । 'रे रे पुरिसाहम, अवि य,

जइ तं विज्जासिद्धो वट्टसु णाएण एत्थ लोगम्मि । जं पुण राय-विरुद्धं करेसि किं सुंदरं होइ ॥
ता जं चोरेसि तुमं राय-विरुद्धाइँ कुणसि कम्माइं । तेणेत्थ णिग्गहिज्जसि अह सज्जो होसु सत्तीए ॥'

एवं च राय-तणयं पेच्छिऊण चिंतियं विज्जासिद्धेण 'अहो, एस सो वइरगुत्तो, कहं एस सयं पत्तो । विणट्ठं कज्जं । ता किं इमिणा बलेणं ।' चिंतियं तेण, भणियं च ।

केणेत्थ तुमं छूढो कयंत-वयणे व्व रोद्द-बिल-मज्झे । अव्वो सुंदर-रूवो कह णिहणं गच्छइ वराओ ॥ त्ति

'अरे अरे, खग्गं खग्गं' ति भणंतो चलिओ तं देवहरयं । तेण गहियं च तं खग्गं वसुणंदयं च, जं रायउत्त-संतियं । गहियं जाणियं च ण होइ तं सिद्ध-खग्गं । ता किं व इमिणा समत्थस्स' चिंतयंतो कुमार-मूलं पत्तो । भणियं च तेण ।

'सुण्णम्मि मज्झ अंतेउरम्मि तं मूढ पेसिओ केण । अहवा कुविओ देव्वो लउडेणं हणउ किं पुरिसं ॥
ता तुज्झ जमो कुविओ संपइ तुह णत्थि एत्थ णीहरणं । सूवार-सालवडिओ ससओ व्व विणस्ससे एण्हिं ॥'

कुमारेण भणियं ।

'आलप्पालिय रे रे अच्छसि महिलायणं म्ह हरिऊण । जारो होऊण तुमं संपइ घर-सामिओ जाओ ॥
चोरो त्ति मज्झ वज्झो अरहसि तं चेय पढम-दुव्वयणं । इय विवरीयं जायं ससएहिँ वि लउडया गहिया ॥'

भणमाणो पहाविओ कुमारो तस्स संमुहं, पेसिओ खग्ग-पहारो । तेण वि बहु-कला-कोसल्ल-परिहत्थेणं वंचिऊण पडिपहारो पेसिओ । सो वि कुमारेण वंचिओ । तओ पहर-पडिपहर-विसमं संपलग्गं महाजुद्धं । कहं ।

दोण्णि वि ते सुसमत्था दोण्णि वि णिउणा कलासु सव्वासु । दोण्णि वि अणंग-सरिसा दोण्णि वि सत्ताहिया पुरिसा ॥
दोण्णि वि रोसाइट्ठा दोण्णि वि अवरोप्परेण मच्छरिणो । दोण्णि वि णिट्ठुर-पहरा दोण्हँ वि खग्गाइं हत्थम्मि ॥
दोण्णि वि फरम्मि णिउणा दोण्णि वि उक्कोट्ठ-भिउडि-भंगिल्ला । दो वि वलंति सहेलं दोण्णि वि पहरे पडिच्छंति ॥

§ ३८५) एवं च एक्केक्कमस्स पहरंता केरिसा दिट्ठा जुवइ-चंदेणं । अवि य ।

विज्जाहर व्व एए अहव समत्थत्तणेणं वण-महिसा । अह व दिसा-करि-सरिसा दोण्णि वि चालेंति महिवेढं ॥

एवं च जाव ताणं एक्को वि ण छलिउं तीरइ ता चिंतियंतीए चंपावईए ताव 'एएण एस छलिउं ण तीरइ विज्जासिद्धो । ता दे कवडं किंचि चिंतेमि' त्ति भणियं तीए 'कुमार, सुमरसु इमं खग्ग-रयणं' ति । कुमारेण वि चिंतियं 'सुंदरं पलत्तं' ति । भणियं तेण । अवि य ।

---

1 > P रातीए, P दूतीहूयासु. 2 > P परिभमिऊण, J धवलहरोअरंतेउरे चच्चर-, P चच्चरवच्छासु. 3 > P एक्कलयसुत्तं भारि घेत्तूण, J रायधूताए. 4 > J वैर°, P धाविसु. 5 > P चंपावइणो धूया महिला हो वइर°, J वैरगुत्त, P सरणविहूण. 6 > P तीए पलोविउं सोऊण भणिया. 7 > P किं कस्स. 9 > P नीहरिउं, P चिंतयं. 11 > P चिंतयंतस्स for चिंतयंतो, P पुरेसाहम. 12 > J लोअंमि. 13 > P चोरोसि, P कुणसु, P तेणेय, J सत्तीय ॥. 14 > J तं for एवं, P om. सो, P एस संपत्तो. 15 > J om. किं, J इमिणा बालेण. 16 > P सुंदर for रूवो, J गच्छिहित्ति वराओ. 17 > J om. अरे अरे, P om. तं, J खग्गयं, P रायउत्तस्स संतियं. 18 > J inter. जाणियं & च, P om. च, P मूलं संपत्तो. 19 > P अन्नंमि for सुण्णम्मि, P देवो, P हणइ किं पुरिसो. 20 > P एत्थ नीसरणं, P सूतारसाल, J विणस्सए. 22 > J आलवालिअरे रे रे, P आलिप्पालिय, P महिणम्म हरिऊण P होइ पुण for होऊण. 23 > J वज्झे, P जीयं for जायं, P मि for वि. 24 > P संमुहो, J कलाकोमलपरिहच्छेण वंदिऊण पडिप्पहा पण्णि वि सत्ताहिआ पुरिसा । दोण्णि वि रोसाइट्ठा ; thus J has omitted some portion here. 26 > P दोण्णि मि in two places. 27 > P मच्छरिण्णो ।, P दोण्णि मि निट्ठुरट्ठुर, J दोण्णि वि P दोण्णि मि for दोण्हँ वि (emended). 28 > P दोण्णि मि फरंमि, P उक्केट्टभमरभंगिल्ला, J -भडिल्ला, P दो वि गिलंति, P दोण्णि मि पहरे. 29 > P om. च. 30 > P एते, P -महिसे, P -सरिसे, P मि for वि, J चालंति. 31 > P om. जाव, P ण विच्छलिउं, P om. चंपावईए J ण for एएण, J om. ण. 32 > J तीय for तीए, P om. वि, J om. चिंतियं, J संवलत्तं for पलत्तं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जइ सिज्झसि चक्कीणं विज्जा-सिद्धाण सत्त-सिद्धाण । ता खग्ग-रयण एयं पहरसु मह करयलत्थो वि ॥'

जाव इमं भणइ ताव विज्जासिद्धेण चिंतियं 'अरे इमीए विलयाए इमं खग्ग-रयणं इमस्स समप्पियं' । 'आ पावे कत्थ वच्चसि' त्ति पहाइओ तं चेय दिसं विज्जासिद्धो । अवि य ।

जा पावइ महिलाणं करगं मोत्तूण जुज्झ-समयम्मि । ताव ज्झड त्ति लुइयं सीसं अह रायउत्तेण ॥

दिट्ठो य धरणिवडिओ केरिसो । अवि य ।

कसिणं रुक्ख-विवण्णं लहुयं सिरि-विरहियं व दीणं व । दिट्ठं पडिय-कबंधं सीसं पुण अहिय-तेइल्लं ॥

इमं च चिंतयंतस्स भणियं चंपयमालाए । 'कुमार, वयणे इमस्स गुलिया अच्छइ, तं पि गेण्हउ कुमारो' त्ति भणिएण वियारियं मुह-पुडं असिधेणूए । दिट्ठा य कणगप्पभा गुलिया । पक्खालिऊण पक्खित्ता वयणे कुमारेण । अवि य ।

दिप्पंत-अहिय-सोहो णिव्वडिय-विसेस-रूव-सच्छाओ । वड्डिय-दप्पुच्छाहो सो कुमरो तीए गुलियाए ॥

तओ जय जय त्ति अभिवाइय-ललिय-विलासिणी-चलण-खलण-मणि-णेउर-रणरणाराव-मुहलं पमक्खिओव्वत्तिय-ण्हाणिओ कओ णिसण्णो सीहासणे, अहिसित्तो तम्मि महिला-रज्जम्मि । महिलाहिं समं च विविहे च भोए भुंजिउं पयत्तो । अवि य ।

जुवईयण-मज्झ-गओ बिल-भवणे खग्ग-खेडय-सणाहो । गुलिया-सिद्धो सो वि हु णिस्संको भुंजए भोए ॥

§ ३८६) एवं च तस्स अणेय-महिला-णियंब-बिंबुत्तुंग-पओहर-सहरिस-समालिंगण-परिरंहणा-फरिसामय-सुहेल्लि-णिब्भरस्स पम्हुट्ठ-सयल-गुरु-धण-विहव-रज्जस्स णिय-सत्ति-विणिज्जिय-सिद्ध-लद्धाणेय-पणइणी-सणाहं पायाल-भवणम्मि रज्ज-सुहमणुहवंतस्स अइक्कंताइं बारस संवच्छराइं, बारसमे य संवच्छरे संपुण्णे पसुत्तस्स राईए पच्छिम-जामे सहसा उद्धाइओ अदिस्समाणस्स कस्स वि बंदिणो सद्दो 'जय, महारायाहिराय वइरउत्त-परमेसर दरिय-रिउ-णिद्दलण-लद्ध-माहप्प । अवि य ।

उज्जोविय-भुवणयलो एसो णरणाह झिज्जए चंदो । अहवा उदयत्थमणं भण कस्स ण होइ भुवणम्मि ॥
णासइ तारायक्कं अरुण-करालिद्धयम्मि गयणम्मि । माणं मा वहउ जणो बलियपरा अत्थि लोगम्मि ॥
एयं पि गलइ तिमिरं राई-विरमम्मि पेच्छ णरणाह । अहवा णियय-समाओ अहियं भण को व पावेइ ॥
उदय-गिरि-मत्थयत्थो अह सूरो उग्गओ सुतेइल्लो । मा वहह किंचि गव्वं पुण्णेहिँ जणस्स उग्गमणं ॥
इय एरिसम्मि काले पहाय-समयम्मि बुज्झ णरणाह । उज्झसु णिद्दा-मोहं परलोग-हियं पवज्जासु ॥

इमं च सोऊण चिंतियं रायतणएण 'अहो, कत्थ एसो बंदि-सद्दा, अपुव्वं च इमं पढियं' । पुच्छिओ य परियणो 'केण इमं पढियं' । तेण भणियं 'देव, ण-याणामो केणावि, ण दीसइ एत्थ एरिसो कोइ केवलं सद्दो चेय सद्दो सुव्वइ' त्ति ।

§ ३८७) एवं दुइय-दियहे तम्मि पभाय-समयम्मि पुणो पढिउमाढत्तं । अवि य ।

रमसु जहिच्छं णरवर को णेच्छइ तुज्झ भोग-संपत्ती । किंतु विवत्ती वि धुवा चिंतिज्जउ सा पयत्तेण ॥
को णेच्छइ संजोगं गरुय-णियंबाहिँ देव विलयाहिं । किंतु विओगो वस्सं होहिइ एयाहि चिंतेसु ॥
सच्चं हीरइ हिययं जुवईयण-णयण-बाण-पहरेहिं । किंतु दुरंतो कामो पावारंभेसु उज्जमइ ॥
सव्वं भो हरइ मणं लीलावस-मंथरं गयं ताण । किंतु ण णज्जइ एसो अप्पा अह कत्थ वच्चिहिइ ॥
सच्चं हरंति हिययं लज्जा-भर-मंथराइँ हसियाइं । किंतु इमो चिंतिज्जउ णरवर एयस्स परिणामो ॥
सच्चं हरंति हिययं महिलाणं पेम्म-राय-वयणाइं । किंतु दुरंतं पेम्मं किंपाग-फलं व कडुयं तं ॥
इय जाणिऊण णरवर मा मुज्झसु एत्थ भोग-गहणम्मि । संबुज्झसु वीर तुमं विरइं ता कुणसु हिययम्मि ॥

---

1) P repeats सत्तसिद्धाणं, P मई. 2) P रे for अरे, P ता for आ. 3) P om. अवि य. 4) J उझण for ज्झड, P त्ति पलुइयं, J च्चिय for सीसं अह रायउत्तेण. 5) P धरणिवड्ढे केरिसो. 6) J सु for व before दीणं, J अविअ for अहिय. 7) P भणिए for भणिएण. 8) P मुहयंदं असिधेणू किं दिट्ठा, P om. य, P वयणो. 9) P सोहा. 10) P रणरणारोवमुहलं पमक्खिओ उव्वत्तिअ-, J सुण्हाणिओ for °यण्हाणिओ. 11) J सीहासणेसु अभिसित्तो, P -रज्जिमि ।, J om. समं च, P repeats विविहं च. 12) P om. अवि य. 14) P नियंबउत्तुंग, P परिमरिमलफरिसा°, J- हरिसामयसुहल्लि. 15) P -निज्झरस्स, J सत्त for सत्ति, J भवणस्स P भुवणंमि. 16) J om. रज्जसुहमणुहवंतस्स, P °मणुहवंतो, P बारस वच्छराइं, P om. य, P संपत्तो for संपुण्णे, P रातीए. 17) J अइस्स°, P om. °माणस्स, J om. जय महारायाहिराय etc. to लद्धमाहप्प, P वयरउत्त, P निद्दलणलद्धमाहप्पा. 19) P उदयत्थवणं. 20) P करालियंमि गणंमि ।, J लोअम्मि. 21) P राइं for राई, J अहवालियसमयाओ, J को व्व. 22) P तुज्झ for बुज्झ, P परलोअ-, P पवज्जयं ॥. 24) J adds आई before इमं, J बंदी-, P om. अपुव्वं च इमं पढियं, J पुच्छिमो परिअणो. 25) P पढिमं for पढियं, J ताहिं for तेण, P न याणिमो, J तत्थ for एत्थ, P को वि केवलो च्चिय. 26) P om. तम्मि, P पहाय-. 27) J भो for को, P भोय-, P पयत्ते ॥. 28) J संजोगो, J देववामाहिं ।, J होहिति एताहि. 29) P रइ for हीरइ, P जुवईणं नयण-, J पहराहिं ।. 30) J हो for भो, P कह for अह, J वच्चिहिति. 32) J किंपाक-. 33) P adds एसु before एत्थ, P संबज्झसु, P विरयं कुणसु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३८८) एवं च तइय-दियहे पहाय-वेलाए पुणो वि भणिउं समाढत्तो । अवि य ।
कीरउ भोग-पसंगो जइ किर देहम्मि जीवियं अचलं । अह उड्डिऊण काओ पडिहिइ णडवेडयं अण्णं ॥
पावं काऊण पुणो लग्गइ धम्मम्मि सुंदरो सो वि । सा वि सइ च्चिय णरवर जा एइ पहाय-समयम्मि ॥
मा अच्छसु संसारे णिच्चिंतो वीर बीह मच्चुस्स । मयरेण सह विरोहो वासं च जलम्मि णो होइ ॥
भोग-तिसिओ वि जीवो पुण्णेहिँ विणा ण चेय पावेइ । उट्ठो जइ परिओ च्चिय पंगुरिओ भणसु सो केण ॥
धम्मं ण कुणइ जीवो इच्छइ धम्मप्फलाइँ लोगम्मि । ण य तेल्लं ण य कलणी वुड्ढे तं पयसु वडयाई ॥
जो कुणइ तवं इहइं सो पर-लोए सुहाइँ पावेइ । जो सिंचइ सहयारे सो साउ-फलाइँ चक्खेइ ॥
जइ इच्छसि परलोगो इह णत्थि अहइँ णवर ण परं । दोलेंतस्स य णरवर अवस्स किर णासए एक्कं ॥
जो अलसो गेहे च्चिय धम्मं अहिलसइ एरिसो पुरिसो । वडवड-मुहम्मि पडियर भाउय-मज्झम्मि तं भणसु ॥
इय वीर पाव-भोए भोत्तुं णरयम्मि भुंजए दुक्खं । खासि करंबं णरवर विडंबणं कीस णो सहसि ॥

§ ३८९) एवं च पुणो चउत्थ-दियह-राईए पभाय-समए णिसुयं पढिज्जमाणं । जय महारायाहिराय-सेविय,
जाणामि कमल-मउए चलणे एयाण तुज्झ जुयईण । सरणं ण होंति णरए कुप्पेज्जसु तं च मा वीर ॥
कोमल-कदली-सरिसं ऊरू-जुयलं ति जाणिमो वीर । णरए ण होइ सरणं मा कुप्पसु तेण तं भणिमो ॥
एयाण णियंबयडं पिहुलं कल-कणिर-कंचि-दामिल्लं । णरए ण होइ सरणं वीरम्हे जूरिमो तेण ॥
पीणं पक्कल-तुंगं हारावलि-सोहियं च थणवट्टं । णरए ण होइ सरणं भणामि धम्मक्खरं तेण ॥
वियसिय-सयवत्त-णिभं मुहयंदं जइ वि वीर जुवईण । णरए ण होइ सरणं तेण हियं तुज्झ तं भणिमो ॥
दीहर-पम्हल-धवलं णयण-जुयं जइ वि वीर जुवईण । णरए ण होइ सरणं चिंता मह तेण हिययम्मि ॥
इय जाणिऊण णरवर ताणं सरणं च णत्थि णरयम्मि । तम्हा करेसु धम्मं णरयं चिय जेण णो जासि ॥

§ ३९०) एवं च पुणो पंचम-दियह-राईए पहाय-समय-वेलाए पुणो पढियं । जय महारायाहिराय, जय,
सग्गं गएण णरवर तियसिंद-विलासिणीहिँ सह रमियं । कंतार-बंभणस्स व पजत्ती णत्थि भोएसु ॥
मणुयत्तणे वि रज्जं बहुसो भुत्तं चलंत-चमरालं । जीवस्स णत्थि तोसो रोरस्स व धण-णिहाएण ॥
असुरत्तणे वि बहुसो बलवंतो देवि-परिगओ रमिओ । तह वि ण जायइ तोसो जलणस्स व वीर कट्ठेहिं ॥
जक्खत्तणम्मि बहुसो रमियं बहुयाहिँ जक्ख-जुवईहिं । तह वि तुह णत्थि तोसो णरिंद जलहिस्स व जलेहिं ॥
बहुसो जोइस-वासे देवीयण-परिगएण ते रमियं । तह वि ण भरियं चित्तं णरिंद गयणं व जीवेहिं ॥
इय णरवर संसारे पत्ताइँ सुहाइँ एत्थ बहुयाइं । जीवस्स ण होइ दिही वड्ढइ राओ तह वि एण्हिं ॥

§ ३९१) एवं च छट्ठ-दियह-राईए पभाय-समए पुणो पढियं । जय महारायाहिराय, जय । अवि य ।
सूलारोवण-डंभण-वेयरणी-लोह-पाण-दुक्खाइं । मा पम्हुस चित्तेणं मा होसु असंभलो वीर ॥
बंधह हणेज्ज णत्थण-गुरु-भारारोवणाइं तिरियत्ते । पम्हुट्ठाइँ खणेणं किं कज्जं तुम्ह णरणाह ॥
जर-खास-सोस-वाही-दूसह-दारिद्द-दुम्मणस्साइं । पत्ताइं मणुयत्ते मा पम्हुस वीर सव्वाइं ॥
अभियोग-पराणत्ती चवण-पलावाइँ वीर देवत्ते । दुक्खाइँ पम्हुसंतो किं अण्णं कुणसि हिययम्मि ॥
असुइ-मल-रुहिर-कद्दम-वमालिओ गब्भ-वास-मज्झम्मि । वसिओ सि संपयं चिय वीर तुमे कीस पम्हुट्ठं ॥
संकोडियंगमंगो किमि व्व जणणीए जोणि-दारेणं । संपइ णीहरिओ च्चिय पम्हुट्ठं केण कज्जेणं ॥

---

1 > J पुणो पढिउमाढत्तो. 2 > P भोय-, J कीर for किर, P अयलं, JP पडिहिति, P नडवेयहं. 3 > J पति पभाय-, P कालंमि for समयम्मि. 4 > J विब्भ for बीह, J वासो, J om. च, P किं for णो. 5 > P उद्धो वत्थविहिओ केण सो भणसु for the second line उट्ठो जइ etc. 6 > J लोअम्मि, P वयडाइं. 7 > J जो किर धावइ णरवर सो खायइ मोरमंसाइं for the second line जो सिंचइ etc., P से for सो, P नरवेइ for चक्खेइ. 8 > J परलागो णत्थि अह इहं ण परं । दोलंतस्स, P इह इहं नवरं न य देहं ।. 9 > P अहिसइ, J पडया, J -मज्झं पि तं भणया ॥. 10 > J भोच्चिछसी for भुंजए, J विलंबयं कीसु णो सहसि. 11 > J जय महाराजाहिराजसेविय. 12 > P जुवईण, J होइ for होंति, J तं सि मा धीर. 13 > J कयली, P -जुवलं, P जाणि नो वीर, J धीर for वीर. 14 > P किंचि for कंचि, P वीरम्हे झूरिमो. 16 > P inter. जइ वि & वीर, P जुवतीण, P om. ण. 17 > J दीहरवम्हल, P -पंभल-, P जुवतीण. 18 > P नरयंति ।. 19 > P रातीए, P om. समय, P भणियं for पढियं. 20 > P रमिउं ।, J धज्जती for पज्जत्ती. 21 > P adds ण before वि, P चत्तं for भुत्तं, P धणनिहाणेण. 22 > P परगओ, P सार for वीर. 23 > P रमिओ, P adds तु before जक्ख, P जुवतीहिं, P जलणस्स व जलणेहिं. 24 > J जोतिस, J परिगए ते, P रमिउं ।, J गयणं जादेहिं ।. The letters on this folio (No. 227) in J are rubbed and not clearly readable. P adds, after जीवेहिं । three lines: इय नरवर संसारे पत्ताइं सुहाइं एत्थ बहुसो । जोइसवासे देवीयण-परिगएण ते रमिउं ॥ तह वि न भरियं चित्तं नरिंद गयणं च जीवेहिं ।. 25 > P संसा for संसारे, P होइ दीही वड्ढइ, P adds इ before राओ. 26 > P -रातीए पहाय-, P पुवि for पुणो. 27 > P सूलारोयणेणं किं कज्जं तुम्ह, i. e., it omits a portion of about three lines ending with पम्हुट्ठाइं खणेणं. 29 > P खासे-, P दुमणस्साइं. 30 > J अहियोग-, P अभिगओ पराणत्ती कंकणपलवाइं वीर, P कुणसे. 31 > J कद्दमघमालिओ, J om. वसिओसि. 32 > J जणणीय जोणिभारेणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपइ बालत्तणए कजाकजेसु मूढ-चित्तेसु । अवि असियं ते वत्तं पम्हुट्ठं तुज्झ ता कीस ॥
इय णरवर संसारो घोरो अह सयल-दुक्ख-दुत्तारो । बुज्झसु मा मुज्झ तुमं विरमसु मा रमसु जुवईहिं ॥

§ ३९२) एवं च पुणो सत्तम-राईए पच्छिम-जामे णिसुयं । जय महारायाहिराय, जय । अवि य ।

फरिसिंदियम्मि लुद्धो णरवर बहुसो वि पाविओ णिहणं । विरमसु एण्हिं बज्झसि वारी-बंधम्मि व गइंदो ॥
रसणिंदियम्मि लुद्धो णरवर बहुसो विडंबणं पत्तो । विरमसु एण्हिं णाससि गलेण मच्छो व्व जल-मज्झे ॥
घाणिंदिय-गय-चित्तो मत्तो णरणाह पाविओ दुक्खं । विरमसु एण्हिं घेप्पसि ओसहि-गंधेण भुयगो व्व ॥
णयणिंदिएण बहुसो रूवे गय-चेयणो विणट्ठो सि । विरमसु एण्हिं डज्झसि णरवर दीवे पयंगो व्व ॥
सोइंदियम्मि लुद्धो मुद्धो बहुसो विणासिओ वीर । विरमसु एण्हिं घेप्पसि वाहेण मओ व्व गीएहिं ॥
इय णरवर पंचेए एक्केक्केएहिँ घायणं पत्ता । तुह पुण पंच वि एए महारिणो एत्थ देहम्मि ॥
ता वीर फुडं भणिमो पंचहिँ समिईहिं समियओ होउं । काय-मण-वाय-गुत्तो णीहरिउं कुण तवं घोरं ॥

§ ३९३) एवं च अणुदिणं भणिज्जमाणस्स रायउत्तस्स तम्मि पायाल-भवणे अच्छमाणस्स चित्ते वियप्पो जाओ । 'अहो, को पुण एस दियहे दियहे जयकार-पुव्वं इमाइं वेरग्गुप्पादयाइं कुलयाइं पढइ । ता जइ अज्ज एइ अवस्सं ता पुच्छामि' त्ति चिंतयंतस्स, जय महारायाहिराय वइरगुत्त जय, अवि य, जाव पढिउं समाढत्तो ताव भणियं रायउत्तेण ।

'भो भो दिव्वो सि तुमं केण व कज्जेण एसि मह पासं । किं च इमं वेरग्गं अणुदियहं पढसि मह पुरओ ॥'

दिव्वेण भणियं ।

'तुज्झ हिययम्मि णरवर जइ किंचि कुऊहलं पि ता अत्थि । णीहरिऊणं पुच्छसु पायाल-घराओ सव्वण्णू ॥'

कुमारेण भणियं ।

'किं पायाल-घरमिणं केत्तिय-कालं च मज्झ वोलीणं । कत्तो वच्चामि अहं सव्वण्णू कत्थ दट्ठव्वो ॥'

तेण भणियं ।

'एयं पायाल-घरं बारस-वासाइँ तुज्झ एयम्मि । एएण णीहि दारेण पेच्छसे जेण सव्वण्णू ॥'

भणिए समुट्ठिओ पास-परिवत्तमाण-विलासिणी-गुरु-णियंब-बिंबयड-मणि-मेहला-णिबद्ध-किंकिणी-जाल-माला-रवारद्ध-संगीय-पूरिज्जमाण-पायाल-भवणोयरो वइरगुत्त-कुमारो पायवडणुट्ठियाहिं विण्णत्तो सव्वाहिं । 'देव,

जं सुपुरिसाण हियए कह वि तुलग्गेण संठियं किंचि । तं तेहिँ अवस्सं चिय वीर तह चेय कायव्वं ॥
ता को तीरइ काउं आणा-भंगं णरिंद देवस्स । होउ तुह कज्ज-सिद्धी एक्कं अब्भत्थणं सुणसु ॥
जइ पढमं पडिवण्णो सुपुरिस पुरिसेहिँ जो जणो कह वि । सो तेहिँ तह च्चिय आयरेण अंते वि दट्ठव्वो ॥

अण्णं च देव, किं ण णिसुयं तुम्हेहि णीदि-सत्थेसु ।

सत्संगतमार्येषु अनार्ये नास्ति संगतम् । अनया सह राजेन्द्र एकराज्युषिता वयम् ॥ इति ।

ता देव,

एत्तिय-मेत्तं कालं तुमए समयं जहिच्छियं रमियं । एक्क-पए च्चिय णरवर कीस विरत्तो अउण्णाण ॥'

एवं च भणिओ कुमारो भणिउमाढत्तो ।

'जं तुब्भेहिँ पलत्तं सच्चं सव्वं पि णत्थि संदेहो । पडिवण्णं सप्पुरिसा छेए वि ण मुंचिरे पच्छा ॥
किं मुंचइ एक्कपए जं तुब्भे भणह चंदवयणाओ । तं तुब्भेहि मि णिसुओ सत्त-दिणे धम्मवयणोहो ॥'

ताहिं भणियं । 'देव,

---

1) J यहियं (?) for असियं, J तं for ता. 2) P संसारे घोरमहासयल-, P दुत्तारे, P मा बुज्झ, P जुवतीहिं. 3) J एवं पुण सत्तम-, P रातीए. 4) P बज्झ वारी, P त्रि for व. 5) J om. णरवर, J adds वि after बहुसो, P adds वि after पत्तो, P विरमस्सु, P णासुसु गलेण. 6) P om. मत्तो, J भुअओ व्व. 8) J सोतिंदियम्मि. 9) J पचेअं एक्केक्कयरेहिं, J पत्तो, P तुज्झ पुणं च एए, J एते. 10) JP समितीहिं, J समितओ होउ. 11) P adds रायस्स before रायउत्तस्स, J adds वि before वियप्पो. 12) P को उण, P वेरग्गपाययाइं. 13) P om. त्ति, P जा for जाव, P ता for ताव. 16) J कुतूहलं P कुऊहलं. 20) P एतेण, P सव्वन्नू. 21) J णियंबयड-, P रवाबद्ध. 22) P -पाणंयाल-, P -पायवडणोणयाहिं. 23) P सुवुरिसाण, J तव for तह. 24) J -भंगो, P तुम्हाण for देवस्स, P कुणसु for सुणसु. 25) P पुरिसेण जो, P आयरेहिं. 26) P तुब्भेहिं नीइसत्थेसु. 27) P एकराज्ञोषिता वयमिति ।. 28) J om. ता देव. 29) P समियं, P adds वर before कीस, P अउत्ता for विरत्तो. 31) J सपुरिस छेए, P मुंचए for मुंच्चिरे. 32) P मुंचवइ, P जं for तं, P निसुयं, J धम्मवियणोहो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेणं चिय णिसुओ सो देवं अह विण्णवेमु तेणेय। संसार-सायरं तो अम्हे हि वितरिउमिच्छामो ॥

तओ हरिस-पुलइज्जमाण-सरीरेण कुमारेण भणियं। अवि य।

महुर-मिउ-मम्मणुल्लाविरीहिँ णाणा-विलास-लासाइं। बारस-वासाइँ अहं तुम्हाहिं वासिओ एत्थ ॥
इह-परलोय-विसुद्धं सपक्ख-परपक्ख-रामयं वयणं। अम्हेहिँ असुय-पुव्वं अभणिय-पुव्वं च तुम्हाहिं ॥
ता सुंदरीओं सुंदरमिणमो संपइ विचिंतियं कज्जं। जर-मरण-सोग-विसमो संसारो जुज्जए तरिउं ॥ किंतु,
पुच्छामि ताव गंतुं सव्वं सव्वण्णु हियमणहियं च। को एस किं च जंपइ किं काउं जुज्जए एवं ॥'

ति भणिए ताहिं भणियं। 'एस

तुह अंजली विरइओ अम्हं सव्वाहि सुणसु वेण्णप्पं। जं पडिवज्जसि णरवर अम्हाहि वि तं करेयव्वं ॥'

ति भणिऊण णिवडिया चलणेसु। एवं 'पडिवण्णं' ति भणमाणो णिग्गओ वइरगुत्त-कुमारो तेणेय वड-पायव-कुडिच्छ-मग्गेणं, समागओ य इह समवसरणे। पुच्छिऊण संदेहं णीहरिओ समवसरणाओ त्ति।

§ ३९४) ता भो गोयम, जं तए पुच्छियं जहा को एस पुरिसो। एस चंदगुत्त-पुत्तो वइरगुत्तो, इमिणा दिव्व-पओगेण पडिबुद्धो त्ति। भणियं च भगवया गणहारिणा 'भगवं, संपयं कत्थ सो उवगओ' त्ति। भगवया भणियं 'तं सव्वं महिलायणं तम्हाओ पायाल-घराओ णिक्कासिऊण आणेहिइ। एसो य संपयं समवसरण-तइय-तोरणासण्णे संपत्तो' त्ति, जाव एत्तियं साहइ भगवं सो संपत्तो, पयाहिणीकाऊण समं महिला-सत्थेण भगवं कुमारेण पणामिओ उवविट्ठो। सुहासणत्थेण य पुच्छिओ भगवं 'केण कज्जेण को वा एस दिव्वो ममं पडिबोहेइ, कहिं वा सो संपयं' ति। भगवया वि साहिओ सयलो पंचण्ह वि जणाणं भव-परंपरा-वित्थरो ता जा मणिरह-कुमारो, कामगइंदो, तइओ सो चेय वइरगुत्तो। तत्थ देवलोग-चुओ तुमं लोहदेव-जिओ एत्थ उववण्णो पमत्तो य। तओ मायाइच्च-चंडसोम-जीएहिं इमिणा पाहाउय-मंगल-पढणच्छलेण पडिबोहिओ त्ति। इमं च सोऊण भणियं। 'भगवं, किं संपयं विलंबसि, देसु मे दिक्खं' ति भणिए दिक्खिओ समं चेय विलासिणीहिं वइरगुत्तो त्ति।

मणहर-विलासिणीयण-करेणु-परियारिओ वण-गओ व्व। दिक्खा-वारी-बंधे सुहप्फले णवर सो बद्धो ॥ त्ति।

§ ३९५) एवं च सयल-तेलोक्कक्कल्ल-सरोयर-सरस-पुंडरीय-सिरि-सोहिओ भगवं महावीरणाहो विहरमाणो पुणो संपत्तो हत्थिणाउरं णाम णयरं। तत्थ य बाहिरुज्जाणे विरइयं देवेहिं से समवसरणं विहि-वित्थरा-बंधेण। तत्थ य भगवया साहियं जियाणं अणेय-भव-लक्ख-परंपरा-कारणं। पुणो आबद्ध-करयलंजलिणा पुच्छिओ भगवं गोदम-गणहारिणा धम्म-तित्थयरो त्ति। 'भगवं,

लोगम्मि केइ पुरिसा णरणाहं सेविरे सुसंतुट्ठा। दाहिइ एसो अत्थं तेणम्हे भुंजिमो भोए ॥
अह ताण सो वि तुट्ठो देइ धणं हरइ सो च्चिय अतुट्ठो। अह ताण तस्स सेवा जुज्जइ सफला भवे जेण ॥
जो पुण एसो लोगो देवं अच्चेइ भत्ति-विणएण। तस्स ण दीसइ किंचि वि इह लोए जं फलं होइ ॥'

एवं च पुच्छिएणं भगवया भणियं वीरणाहेण।

'गोदम जं मे पुच्छसि देवच्चणयम्मि कह फलं होइ। इह-लोए पर-लोए जे फलया ते य तं सुणसु ॥
देवाणुपिया दुविहा देवा एयम्मि होंति लोगम्मि। एक्के होंति सरागा विरागिणो होंति अण्णे वि ॥
गोविंद-खंद-रुद्दा वंतर-देवा गणाहिवो दुग्गा। जक्खा रक्खस-भूया होंति पिसाया तहा अण्णे ॥
किंणरा य किंपुरिसा गंधव्वा महोरगा य चंद-तारया उडु-गहाइया।

---

1 > P विन्नवेमि, J हो for तो. 3 > P विलासलाइं. 4 > P परलोयविरुद्धं, P अम्हाहिं for तुम्हाहिं. 5 > P सुंदरिमिणिमो, J सोअ for सोग, P दुज्जए for जुज्जए. 6 > J P om. सव्वं, J सव्वण्णू P सव्वन्नू, J हिअं अणहिअं च, J कातुं, J एअं ॥. 8 > J विरओम्ह, P om. अम्हं, P adds अम्हाहिं before सुणसु, P करेयव्वमिति भणि°. 9 > J om. भणिऊण, P om. पायव. 10 > J adds ति before समागओ, P om. य, P om. त्ति. 11 > J गोतमा, J जधा, P adds ता after पुरिसो, J चंदउत्त, P चंडगुत्तो गुत्तो. 12 > J पओएण, J om. भगवया, J सोत्तगओ. 13 > P महिलाणयं, J पयालघराओ, P repeats पायालघराओ, J णिक्कोसिऊण, J आणेहित्ति P अणेहाति ।, एस संपयं. 14 > P om. त्ति, P ताओ for सो, J कओ for काऊण, J पणमिओ, P adds य after पणामिओ. 15 > P सुहासणत्थेण. 16 > P om. वि before साहिओ, P तव for भव, P ताव जाव for ता जा. 17 > J चुतो, P देवेहिं for जीएहिं, P पभाओ य for पाहाउय. 19 > P वयरगुत्तो, P om. त्ति. 20 > P करिकरेणुपरिवारिओ वणगइंदो व्व ।, J बद्धे, P सुहफलेण. 21 > P तेल्लोक्केक्कल्ल, P सरोअ-, J adds सरय before सरस, P विहारमाणो पत्तो. 22 > P विरइओ, P om. से, P समवसरण, J बद्धेण, P बंधो for बंधेण. 23 > J साहिया, J om. कारणं, P करयंजलिणा, P गोयम-. 24 > P भणियं च भगवया for भगवं. 25 > J लोअंमि, JP दाहिति. 26 > J विअ for च्चिय, P सफला पभवे सेण. 27 > P अंचेइ, P दीसति. 29 > P गोयम, P होति. 30 > P देवाणुप्पिया, P एवंमि होति, J लोयंमि, P om. वि. 31 > P दुग्गा for दुग्गा, J रक्खसभूता पिसाय तह किण्णरा etc. 32 > J गंधव्वमहोरयचंद, P om. य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नागा उदहि-सुवण्णा अग्गी विज्जू य जाव इंदंता । एए सव्वे देवा सराइणो दोस-मोहिल्ला ॥
एयाण पूयणं अच्चणं च जो कुणइ परम-भत्तीए । ताय व्व तस्स तुट्ठा देंति धणादी य कल्लाणे ॥
भत्तीएँ जे उ तुट्ठा णियमा रूसंति ते अभत्तीए । सह-भाविणो य मोहे रागद्दोसा इमे दोण्णि ॥
जह णरवइणो कुविया रज्जादी-दिण्णयं पुण हरंति । इय तह देवा एए सुहमसुहं वा फलं देंति ॥
अह पुच्छसि पुण्णेहिं सा रिद्धी ताण किं व देवेहिं । अह देवेहि मि कीरइ ता कम्मं णिप्फलं तत्थ ॥
जइ तस्स तारिसं चिय कम्मं ता किं व तत्थ देवेहिं । अह तस्स देवय च्चिय करेंति ता णिप्फलं कम्मं ॥
एसो तुज्झ वियप्पो गोदम चित्तम्मि वट्टए एत्थ । तं अबुह-बोहणत्थं साहिप्पंतं णिसामेहि ॥
णणु भणियं उदयाई खय-उवसम-मिस्स-परिणए कम्मे । दव्वं खेत्तं कालं भवं च भावं च संपप्प ॥
तत्थेरिसयं कम्मं किं पि भवे णमसिएण देवाण । वच्चइ उदयं खय-उवसमं च खेत्तम्मि वा काले ॥
ता तारिस-कम्मुदओ देवाणं णमसियं च सहभावी । तं खलि-बिल्ल-सरिसं कागागम-तालवडणं च ॥
जं णरवदी वि गोदम सेवा-कम्मेण तोसिओ देइ । कम्माण सो विवागो तह वि हु दिण्णं ति णरवइणा ॥
देवा य मंगलाइं सउणा सुमिणा गहा य णक्खत्ता । तह तह करेंति पुरिसं जह दिट्ठं पुव्व-कम्मेहिं ॥
इय एए राग-मणा संपइ णीरागिणो वि वोच्छामि । जाण पणामो वि कओ मोक्खस्स गई णिरूवेइ ॥
तित्थयरा भगवंतो सिद्धा णिद्दड्ढ-कम्म-वण-गहणा । भव-केवलिणो एए रय-मय-मोहेहिं परिहरिया ॥
ताणं वयणाभिरए आयरिउज्झाय-सव्वसाहू य । भावेण णमंसंतो गरुयं पुण्णप्फलं लहसि ॥
पुण्णेण होइ सग्गो सग्गाओ सुमाणसेसु पुण जम्मं । सुकुलाओ धम्म-बुद्धी सम्मत्तं जिणमए होइ ॥
तत्तो णाणं णाणाओं होइ चरणं पि तेण णिज्जरणं । णिज्जरणाओ मोक्खं मोक्खे सोक्खं अणाबाहं ॥
जो ताण कुणइ थवणं भयणं बिंबं च पूयणं अहवा । पारंपरेण सो वि हु मोक्ख-सुहं चेय पावेइ ॥
अह भणसि तुमं गोदम काय-मणो-वाय-विरहिया कह णु । कोव-पसाय-विमुक्का कुणंति कह मोक्ख-सोक्खाइं ॥
जिय-राग-दोस-मोहा कह ते तुट्ठा कुणंति वर-लावे । सावाणुग्गह-रहियं को किर सेवेज्ज थाणुं वा ॥
§ ३९६) एत्थ णिसुणेसु गोदम रागद्दोसेहिँ वज्जिया जइ वि । सावाणुग्गह-हेऊ भवंति ते भावण-वसेण ॥
जह वण्णंतो वण्णे सुवण्ण-वण्णे पुरम्मि चउरंसे । माहिंद-वज्ज-चिंधे विचिंतिओ कुणइ विस-थंभं ॥
जह तज्जणीऍ सो च्चिय अट्ठमि-चंदम्मि अमिय-भरियम्मि । पउमच्छण-जलदेवे हरइ विसं खत्तिय-फणिम्मि ॥
जह मज्झिमाए सो च्चिय रत्ते तं सेय-सोत्थिय पसत्थे । वइस-फणिंदे छूढो विसस्स अह थोहणं कुणइ ॥
जह य अणामाएँ पुणो कसणो वट्टो य बिंदुम-विचित्तो । सुद्द-फणि-वाउ-देवे छूढो संकामणं कुणइ ॥
सो च्चिय हंसो णह-मंडलम्मि रव-मेत्त-संठिओ सुहुमो । चिंतिय-मेत्तो एसो विसस्स णिव्वाहणं कुणइ ॥
एवं गोदम पुहई आऊ तेऊ य पवण-गयणंता । पंच वि भूया पंचंगुलीसु पयरंति कम्माइं ॥
एक्को च्चिय विण्णत्तो मंडल-भेदेण कुणइ कम्माइं । ण य तस्स राग-दोसा हिय-अणहिय-चिंतणं णेय ॥
एएण चिंतिओ हं पीओ थंभं करेमि एयस्स । एएण अमय-वण्णो एयस्स विसं व णासेमि ॥
एवं थोहो संकम-णिव्वाहा रत्त-कसिण-सामेहिं । ण य सो करेइ चिंतं अणुग्गहं णिग्गहं कुणइ ॥
एसो तुह दिट्ठंतो वण्णंतो गोदमा मए दिण्णो । जह एसो तह भगवं जाणेज्जसु वीयरागो वि ॥
ण य सो चिंतेइ इमं अणेण जह संथुओ अहं एसो । पावेमि सिद्धि-वसइं ण कयाइ विचिंतए एवं ॥ अहवा,

1 > J उवहि, J एते, P होंति for दोस. 2 > P adds पडिमा before पूयणं, P om. अच्चणं, J धणाइं. 3 > J om. उ, P रूसंति ते य तुट्ठीए ।, P मोहो रागं दोसा इमे होंति ॥. 4 > P जह नवरं नरवइणा कुविया, P रज्जादि-दिन्नय हरंति ।, J एते. 5 > P अहं, P किंचि for किंव, P अहवा देवेहिं मि, P तस्स for तत्थ. 6 > P तस्स दिवय, J adds ताणि before ता. 7 > P गोयम चित्तं पि वट्टए, P जं for तं. 8 > J उदयाती, P om. उदयाई, J मिस्सदि परिणदि कम्मे, P मिस्सादी-. 9 > P भवे नंमसिएण, J देवेण, P repeats उदयं, P om. वा, P कालो. 10 > J कम्मुदयो, P कंमुवओ देवाणमंसियं च सुहभावी ।, J तं खिलि बिल्लि, P कागागमल-वडणं. 11 > P णरवई, P गोयम सेवाधंमेण, J तोसितो, P विवासो तह. 12 > J सउणा for सुमिणा, P तं for second तह. 13 > J एदे. 14 > J भयवंतो, P सिद्ध निद्दद्ध, J णिड्डड्ड, J एते. 15 > P वयणा तिरए, P गरु for गरुयं. 17 > P सोखं. 18 > P भवणं for थवणं. 19 > P गोयम, J कोय-, P तह for कह, J सोक्खाती P सोक्खाइ. 20 > J जित, P जे वीतरागमोहा, P व्व for वा. 21 > P गोयम, J हेतू, P भणंति ते. 22 > J वण्णा J वंन्नो for वण्णे, P चउरंसि, P चिण्हे for चिंधे, J विण्णतिओ for विचिंतिओ, P विसं. 23 > P जे for जह, J तज्जणीय, J अट्ठमि, J अमय, P जलदेवा. 24 > J से for सो, P सो वि रत्ते तं च्चिय सोत्थिय पसत्थे, J वेइस्सट्ठाणछूढो, P अहवा कुणं हणइ ॥. 25 > J कसणवट्टो, P पुणो वसणे वट्टे य बिंदुयविच्चित्ते । अइफणि-, J वायु-. 26 > J सामो for हंसो, P वर for रव, P चिंतिमेत्तो, J च्चिय सो for एसो. 27 > P गोयम, P पवणमयणे य ।, J भूता पंचंगुलिआ पयरेंति, P कंमाइ. 28 > J वण्णंतो for विण्णत्तो, P एण वि for अणहिय, J अणहियं. 29 > J पीतो P पीउं, J adds देत्ता before थंभं, J एतस्स, J एतेण, J एदस्स विसं व णासंमि. 30 > P adds च ॥ after एवं, J रत-, P से करेइ, J अणुग्गओ णिग्गहे. 31 > J om. वण्णंतो, P गोयमा, J दिट्ठाण्णो for दिण्णो, J वीतरागो. 32 > P जइ for ण य सो, J अण्णेण जइ संथुतो, P कयावि, P om. एवं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एएण णिंदिओ हं इमस्स पावं करेमि ता बहुयं । ण कयाइ वीयरागो भगवं चिंतेहिइ वियप्पं ॥
जेण ण मणो ण रागो ण य रोसो तस्स णेय सा इच्छा । णिक्कारणं णिरत्थं अमणं को चिंतिउं तरइ ॥
तह त्ति थुणंतो गोदम थुइ-फलमउलं तु पावए पुरिसो । णिंदंतो णिंदा-फलमहवा अह णरयवडणाइं ॥
तम्हा एक्को भगवं पुण्ण-फलो होइ पाव-हेऊ य । विस-थंभण-णिव्वाहे जह वण्णंतो मए भणिओ ॥
मा चिंतेसु वियप्पं गोदम दव्वाईं होंति लोगम्मि । अवरोप्परं विरोहो जाणसु अह दीसए पयडो ॥
जह अग्गी पज्जलिओ तावण-उज्जोवणं च सो कुणइ । अरहा तह य पयासं पावस्स य तावणं कुणइ ॥
गोदम जह य रसिंदो अथंभिओ अग्गि-मज्झ-पक्खित्तो । फुडिऊण तक्खणं च्चिय दिसो-दिसं वच्चइ अदिट्ठो ॥
तह जिण-दंसण-जलणेण ताविओ पाव-पारय-रसोहो । एत्तिय झत्ति विलिज्जइ असहंतो संगमं तस्स ॥
जह रविणा तिमिरोहो तिमिरेण वि चक्खु-दंसणं सहसा । दंसण-मोहेण जहा णासिज्जइ कह वि सम्मत्तं ॥
तह गोदम जिण-दंसण-जिण-चिंतण जिणवराण वयणेहिं । णासइ पाव-कलंकं जिण-वंदण-जिण-गुणेहिं च ॥

एवं च साहिए सयल-पुरिसिंद-पुंडरीएण भगवया णाय-कुलंबर-पुण्णयंदेण जिण-चंदेण पडिवण्णं सव्वेहि मि आबद्ध-कर-कमल-मउल-सोहेहिं तियसिंदप्पमुहेहिं सयल-सत्तेहिं ।

§ ३९७) एत्थंतरम्मि पविट्ठो एक्को बंभण-दारओ समवसरणम्मि । केरिसो । अवि य ।

सामल-वच्छत्थल-घोलमाण-सिय-बम्ह-सुत्त-सोहिल्लो । पवणंदोलिर-सोहिय-कंठद्ध-णिबद्ध-वसणिल्लो ॥

तिगुणं पयाहिणीकओ णेण भगवं । पायवडण-पच्चुट्ठिएण य भणियं तेण । भगवं,

को सो वणम्मि पक्खी माणुस-भासाएँ जंपए किं वा । जं तेण तत्थ भणियं तं वा किं सच्चयं सव्वं ॥

भगवया भणियं ।

देवाणुपिया सुव्वउ जो सो पक्खी वणम्मि सो दिव्वो । जं किंचि तेण भणियं सच्चं तं सोम्म सव्वं पि ॥

तेण भणियं ।

भगवं जइ तं सच्चं वणम्मि जं पक्खिणा तहिं भणियं । ता रयणाणि इमाइं ताणं सामीण उप्पेमि ॥

भगवया आइट्ठं ।

देवाणुपिया जुज्जइ पच्छायावो बुहाण काउं जे । दिट्ठो च्चिय तम्मि वडे तुमए पक्खीण ववहारो ॥

एवं च भणिय-मेत्ते णिक्खंतो समवसरणाओ सो बंभण-दारओ । तओ पुच्छिओ भगवं जाणमाणेणावि गोयम-गणहारिणा । 'भगवं,

को एस दियाइ-सुओ किं वा एएण पुच्छिओ भगवं । को सो वणम्मि पक्खी किं वा सो तत्थ मंतेइ ॥'

एवं च पुच्छिओ भगवं महावीरो साहिउं पयत्तो । 'अत्थि णाइदूरे सरलपुरं णाम बंभणाणं अग्गाहारं । तत्थ जण्णदेवो णाम महाधणो एक्को चउव्वेओ परिवसइ । तस्स य जेट्ठउत्तो सयंभुदेवो णाम । सो य इमो । एवं च तस्स बहु-सयण-जण-वेय-विज्जा-धण-परिवारियस्स वच्चंति दियहा । एवं च वच्चंतेसु दियहेसु, अवस्सं-भावी सव्व-जंतूण एस मच्चू, तेण य सो जण्णदेवो इमस्स जणओ संपुण्ण-णिय-आउयप्पमाणो परलोगं पाविओ । इओ य सव्वं अत्थं परियलमाणं णिहणं पाविथं । सव्वहा तारिसेणं कम्म-परिणामेणं तं ताण णत्थि जं एग-दियह-असणं । तओ एवं च परिवियलिए विहवे ण कीरंति लोगयत्ताओ, विसंवयंति अतिहि-सक्काराइं, सिढिलियाओ बंभण-किरियाओ, अवहत्थियाइं णिद्ध-बंधु-दाणाइं ति । सव्वहा,

गुरु-णिद्ध-मित्त-बंधव-परियण-जण-सामिणो य पुरयम्मि । ता मण्णिज्जइ पुरिसो जा विहवो अत्थि से तस्स ॥

1 > P कयावि, JP चिंतेहिति. 2 > P तम्हा for अमणं. 3 > P गोयम, JP थुति, J पावई, P निंदितो, J फल अहवा. 4 > J हेतू, P थंभणे निव्वाहो जह, P भणियं ॥. 5 > P गोयम, J लोअम्मि. 7 > P गोयम, P फडिऊण, P -दिसिं वच्चए. 8 > P असंतो संगमं. 9 > P om. वि. 10 > P गोयम, P om. दंसण, P om. वंदणजिण, P adds त्ति after च. 11 > J भगवता. 14 > P बंभ for बम्ह. 15 > J णिउणं पयाहिणिकओ, P तिगुणीं, J पायवडणणु-, P om. पायवडण etc. to भगवं. 16 > P after तत्थ repeats भणिल्लो । तिगुणीपयाहिणीकओ णेण भगवं । पायपडणुट्ठिएणं भणियं तेण भगवं को for भणियं तं वा किं etc. to सुव्वउ जो. 18 > P om. पक्खी, P सोम सव्वं. 20 > P रयणाइं, J तं पि for ताणं, P सामाण उप्पेमि. 21 > P भणियं for आइट्ठं. 22 > P दुहाण for बुहाण. 23 > P भणियमेत्तो, J om. तओ पुच्छिओ, J गोदम. 25 > P एतेण, P om. किं. 26 > P अग्गहारं । जत्थ. 27 > P जेट्ठो उत्तो. 28 > P -वर- for धण, J असव्वं भावी P अवस्सभावी. 29 > J णिअयाउअ° P नियआओय°, J परलोअं, J इतो, P om. य, P परिसयलमाणं. 30 > P तारिसाणं, J ता for तं, P ता for ताण, P असण्णं, P परियलिए. 31 > P कीरयंति, J लोअयत्ताओ, J -सक्कारइं, P बंधु for बंभण, J अवहत्थिअइं, J बंधुदाणइं P णिद्धदाणाइं. 33 > P निद्द for णिद्ध.

णिज्झीण-पुव्व-विहवा पुरिसा पुरओ ठिया ण दीसंति । दारिद्दंजण-जुत्ता पत्तिय-सिद्ध व्व दीसंति ॥

इमं च एरिसं णाऊणं सयंभुदेवस्स जणणीए भणिओ सयंभुदेवो । अवि य ।

पुत्त धण-सार-रहिओ उवहसणिज्जो जणम्मि सव्वम्मि । मय-किरियाएँ विहूणो जीवंत-मयल्लओ पुरिसो ॥
अम्हाण तुमं पुरिसो णिक्खित्तं तुह कुडुंब-भारं ति । ता तह करेसु पुत्तय जह पिउ-सरिसं कुणसि अत्थं ॥
णिउणो तुमं पि पुत्तय पंडिय-पढिओ य सूर-चित्तो य । ता तह करेसु संपइ जह जियइ कुडुंबयं मज्झं ॥

§ ३९८) एवं च दीण-करुणं भणिओ जणणीए इमो सयंभुदेवो अहिय-संजाय-मण्णु-गग्गर-वयणो भणिउमाढत्तो । अवि य ।

पुण्णेहिँ होइ अत्थो अम्हं पुण्णाइँ माएँ णट्ठाइं । घेत्तूण विहव-किरणे रवि व्व सो चेय अत्थमिओ ॥
एक्कस्स होइ पुण्णं ण पोरुसं दोण्णि होंति अण्णस्स । अण्णो दोहिँ पि विणा सपोरुसो पुण्ण-रहिओ य ॥
पुण्णेहिँ होइ लच्छी अलसा महिल व्व णाम-मेत्तेण । पुण्ण-णियलेहिँ बद्धा अण्णमणा चेय बंदि व्व ॥
जो पुण्ण-पोरुसेहिँ लच्छी पुरिसस्स होइ दोहिं पि । सुरय-वियड्ढा पोढ व्व सहइ सा वंचियं साहुं ॥
जा पुण पुण्णेहिँ विणा एक्केणं पोरुसेण णिव्वडिया । अथिरा सा होइ पुणो णव-पाउस-विज्जु-रेह व्व ॥
पोरुस-पुण्ण-विहूणा लच्छी घेत्तुं ण तीरइ जणेण । चवलत्तण-दुल्ललिया माए जल-चंद-रेह व्व ॥
पुण्ण-रहियाण अम्हं अम्मो सत्तेण किं पि जइ होइ । तं तं करेमि एण्हिं जं भणियं तं खमिज्जासु ॥

त्ति भणंतो णिवडिओ चलणेसु, समुट्ठिओ य । भणियं च तेण । अवि य ।

भमिऊण सयल-पुहइं छाउव्वाओ खुह त्ति पडिऊण । अवि णाम मरेज्ज अहं अकयत्थो णो घरं एमि ॥

त्ति भणंतो णिक्खंतो मंदिराओ सो बंभण-दारओ । तप्पभूइं च णयर-पुर-सोहियं वसुंधरं भमिउमाढत्तो । कत्थ । अवि य ।

णयर-पुर-खेड-कब्बड-गामागर-दीव-तड-मडंबेसु । दोणमुहाइइ-पट्टण-आराम-पवा-विहारेसु ॥ एवं च,
अत्थ-परिमग्गिरो सो सव्वोवायाइँ णवरि काऊण । भमिऊण सयल-पुहइं चंपा-णयरिं समणुपत्तो ॥

§ ३९९) तत्थ य अत्थंगए दिणयरे ढक्किय-दुवारे सव्वम्मि णयरि-जणवए चिंतियं तेण । 'दे एत्थ जुण्णुज्जाणे पविसिय एक्कम्मि पायवे समारुहिऊण राइ-सेसं णेमि' त्ति चिंतयंतो पविट्ठो आरूढो य एक्कम्मि तमाल-पायवम्मि । तत्थ य अच्छमाणो चिंतिउं पयत्तो । अवि य ।

'अव्वो मवणुव्वाओ उदर-दरी-भरण-वावडो दियहं । तरु-साहासु पसुत्तो पक्खा-रहिओ अहं काओ ॥

ता धिरत्थु इमस्स अम्ह जम्मस्स, ण संपत्तं किंचि मए अत्थं, जेण घरं पविसामि' त्ति चिंतयंतेण णिसुओ कस्स वि सद्दो । तओ 'अहो, को एत्थ जुण्णुज्जाणे मंतेइ' त्ति जायासंको आयण्णयंतो अच्छिउं पयत्तो जाव एक्केण भणियं । 'एस तमाल-पायवो, इमस्स अधे कीरउ इमं कज्जं' ति भणंता संपत्ता तमाल-पायवं दुवे वि वणियउत्ता । णिरूवियाओ तेहिँ दस वि दिसाओ । तओ भणियं । 'अहो, सुंदरं इमं ठाणं, ता दे णिहणसु इमम्मि पदेसे' त्ति भणंतेण तेण खणिउमाढत्तं तं पएसंतरं । णिक्खित्तं च तत्थ तेहिँ तंबमय-करंडयं, पूरियं धूलीए, वेल्लि-लयाहिँ कयं साहिण्णाणं । तत्तो तेहिँ भणियं । अवि य ।

'जो एत्थ को वि रक्खो भूय-पिसाओ व्व होज अण्णो वा । णासो तस्स णिहित्तो पालेज्जसु अह पसाएणं ॥'

ति भणिउं जधागयं पडिगया । चिंतियं च इमेण । अहो,

जं जेण जहिँ जइया जत्तिय-मेत्तं च जस्स पासाओ । तं तेण तहिँ तइया पाविज्जइ तत्तियं चेय ॥

जेण पेच्छ ।

1) P णिज्झीण, J ट्ठिआ P ट्ठिया, J °जणसिद्धा पत्तिय. 2) P एरिसं नाऊणं भुदेवस्स. 3) P सव्व for मय, P जीय व्व मयल्लओ. 4) P अम्हा तुमं, P तइ कुडुंब-, P पिओ सारिसं. 5) P पंडियओ सूर-. 6) P adds स before दीण, P इमं for इमो, J अहिअंजाय, J adds माए after अवि य. 8) P करणे, P चेव. 9) P होई अत्थं पुन्नेहि पोरुसेण दिन्नं पि ।, P दो for दोहिँ, P विणा अपुरुसो. 10) P अण्णमण्णो. 11) P होति, J सुरयावियड्ढ, P सव्वंगियं for सा वंचियं, P साहू for साहुं. 12) P जो पुण, P एक्केणं पुरिसेण, J णिव्वरिआ, J विज्जरेह. 13) J विहीणा, P घेत्तुं, P रेहि. 14) P होइ । ता तं, J भणिया तं खमेज्जासि. 16) P पुहइ, JP खुड्ढु त्ति, P ति for त्ति, P मरेज्जाइं. 17) J तप्पभूई. 19) P अत्थि for अत्थ, P om. भमिऊण, P पुहती, J चंपं. 20) J अत्थंगदे, P दिणयरठ्ठविय, P घर for णयरि, P जिमुज्जाणे परिवसिय. 21) J om. य 22) P तत्थ माणो चिंतिउं. 23) J उअर for उदर, P तव for तरु. 24) P तो for ता, P adds जं before अम्ह, P संसत्तं किं पि मए. 25) P जिणुज्जाणे, P अण्णेण for एक्केण. 26) P अहो for अधे, P om. ति, J adds तं before तमाल, J दुवे विणियपुत्ता P दुवे वणियउत्ता. 27) P दसा दिसाओ, J P ततो for तओ, P इमं थाणं ता देहिमि हणसु, P पएसे, J om. तेण. 28) J खणिउमाढत्तो, J om. तंबमय, J om. धूलीए, P वल्लि for वेल्लि. 29) J ततो. 30) P वि रुक्खे भूय-, P अण्णा वा, J अम्ह पसएणं. 31) J जधागतं, P जहागया तहा पडिगया, P om. च, P om. अहो. 32) P जत्तिमेत्तं, P चेव for चेय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयलं भमिऊण इमं पुहइं वण-सेल-काणण-सणाहं । अज्ज इहं संपत्तो देव्वेण पणामियं अत्थं ॥

अवइण्णो पायवाओ । अवणीयं सयलं कयारुक्केरं । उप्पाडिया करंडिया । उग्घाडिऊण पुलइया जाव पेच्छइ पंच अणग्घेयाइं रयणाइं । ते य दट्ठूण हरिस-वसूसलंत-रोमंच-कंचुओ अंगे वि ण माइउं पयत्तो । 'दे, संपयं घरं वच्चामि' त्ति पयत्तो सयल-पुरग्गहाराभिमुहं । अद्धपहे य तस्स महाडई, तीए वच्चमाणस्स का उण वेला वट्टिउं पयत्ता । अवि य ।

संकोडिय-रत्त-करो आयंबो अत्थ-सेल-सिहरम्मि । दीवंतर-कय-सज्जो रेहइ पवओ विय पयंगो ॥

इमम्मि य वेला-समए चिंतियं सयंभुदेवेण ।

अव्वो वण-मज्झगओ पत्तो रहसेण णत्थि इह वसिमं । ता किं करेमि संपइ कत्थ व रयणीएँ वच्चामि ॥

चिंतयंतस्स बुद्धी समुप्पण्णा । 'दे, इमम्मि अणेय-पादव-साहा-समाउले वड-पारोहे आरुहिऊण णिसं अइवाहयामि । बहु-पत्तवाओ एस वणाभोगो' त्ति । आरूढो तम्मि वड-पायवम्मि । एक्क-पएसे य बहु-विडव-संकुले अणेय-साहा-पत्त-णियरे अच्छिउं पयत्तो । चिंतियं च णेण 'अहो, विहिणा दिण्णं जं मह दायव्वं । संपयं गंतूण घरं एक्कं विक्केऊण रयणं पुणो सयल-कुडुंब-बंधवाणं जं करणीयं सव्वं काहामि' त्ति । इमं चिंतयंतस्स बहलो अंधयारो उत्थरिउं पयत्तो दस-दिसं । आवासीहूया सव्वे सउण-सावय-णिवहा । बहुए य पक्खि-कुले तत्थ णिवसंति वडोयरे । ते य णाणाविह-पलावे णाणाविह-वण्णे बहुप्पमाणा पेच्छंतो तक्काल-सुलह-वियप्पंतर-संभरंत-चित्त-महापवंगो अच्छिउं पयत्तो सयंभुदेवो त्ति ।

§ ४००) एत्थंतरम्मि समागओ झत्ति एक्को महापक्खी । सो य आगंतूण एक्कस्स महापक्खि-संघ-मज्झट्ठियस्स महाकायस्स चिर-जरा-जुण्ण-पक्ख-जुवल-परिसडिय-पत्त-पेहुणस्स पुरओ ठाऊण पायवडणुट्ठिओ विण्णविउं पयत्तो । अवि य ।

'ताय तुमे हं जाओ तुमए संवड्ढिओ य तरुणो हं । कुणसु य मज्झ पसायं ता विण्णत्तिं णिसामेसु ॥
णयणे अज्ज कयत्थे मण्णे कण्णे वि अज्ज मह जाए । एयं पि पक्ख-जुवलं अज्ज कयत्थं ति मण्णामि ॥
अज्ज तुमे हं जाओ अज्ज य मण्णामि सफलयं जीयं । गरुडा अवि अज्ज अहं अप्पाणं गरुयमं मण्णे ॥'

भणियं च तेण जुण्ण-पक्खिणा ।

'किं अज्ज जोग-रज्जं णिविखत्तं अज्ज तुज्झ खगवइणा । किं पुत्त पुत्त-लाहो पत्तं वा अक्खय-णिहाणं ॥'

तेण भणियं ।

'को ताय रज्ज-लाभे तोसो को वा धण-पुत्त-विहव-लाभेहिं । तं अज्ज मए लद्धं कत्तो खग-राइणो होज्ज ॥'

जुण्ण-पक्खिणा भणियं ।

'दे पुत्त साह सव्वं दिट्ठं व सुयं व अज्ज अणुभूयं । किं व तए संपत्तं कीस व हो हरिसिओ तं सि ॥'

तेण भणियं । 'णिसुणेसु, अज्ज अहं तुम्हाण सयासाओ उप्पइओ गयणयलं किंचि आहारं अण्णेसिउं बहु-लक्खो धरणियले-परिभमामि जाव दिट्ठं मए एक्कम्मि पएसे पायार-परिययं महाजण-समूहं । तत्थ य उप्पयंति देवा, णिवयंति विज्जाहरा, परिसक्कंति मणुया, गायंति किंणरा, णच्चंति अच्छरा, वग्गंति वंतरा, थुणंति सुरवरा, जुज्झंति असुर-मल्ल त्ति । तं च दट्ठूण जाओ मम हियए वियप्पो 'अहो, किं पुण इमं' ति । 'दे पेच्छामि' त्ति चिंतयंतो उवइओ गयणयलाओ जाव पेच्छामि अण्णे वि बहुए पक्खिणो एक्कम्मि पायारंतरम्मि । तओ हं ताणं मज्झ-गओ पेच्छामि कोमल-किसलय-सिलिसिलेंत-वियसमाण-णव-कुसुम-गोच्छस्स रत्तासोय-पायवस्स हेट्ठओ महरिहे सीहासणे णिसण्णो भगवं को वि दिव्व-णाणी तेलोक्क-सुंदरावयव-सव्वंग-दंसणीओ मणहरो सयल-जय-जंतु-जण-णिवहाणं सदेवासुराए परिसाए मज्झ-गओ धम्माधम्मं साहेंतो । तं च दट्ठूण चिंतियं मए 'अहो, मए दिट्ठं मए जं दट्ठव्वं एरिसं तिहुयणच्छेरयं पेच्छमाणेण' ।

1 > J पुहई, J om. सेल, P सेण for सेल, P इमं for इहं. 2 > J अवणिअं, P कयवरुक्केरं, P पेच्छओ पंच, J पंचऽणग्घेयाइं P पंच अग्घेयाइं. 3 > P inter. माइउं & ण. 4 > P om. त्ति, P पयत्ता, J पुरग्गाहा°, P पुरग्गहाभिमुहं, P महाडईए, J तम्मि य वट्टमाणस्स for तीए etc. 5 > J कतसज्जो P कयसिज्जो, P पहविओ विय, J इव for विय, J पतंगो. 6 > P om. य, P वेलासए. 7 > P व for वसिमं, P after इह व repeats सिहरंमि । दीवंतरकयसिज्जो etc. to रहसेण नत्थि इहत्थ and again सेलसिहरंमि । दीवंतर etc. to इह वसिमंतो, P om. ता, J adds कत्थ before वच्चामि. 8 > J पातव P पाठव for पादव, J अतिवाहयामि. 9 > J पतेसे, P विडवि–, P अण्णेय-. 10 > P adds जइ before जं, P om. मह. 11 > P कुटुंब. 12 > P आवासीभूआ, P णिहाया for णिवहा, P बहले for बहुए, P कुले त्थ विवसंति, J वडे य एतो for वडोयरे, P ते अन्न विहपलावे, J -पलाव. 13 > P बहुप्पमाणो, P सुलभ, J संचरंतमहा°, P अच्छिओ, P पवत्तो. 14 > P एयस्स for एक्कस्स, P rep. महापक्खिसंघ. 15 > J om. महाकायस्स, P -जुयल-, P ट्ठाऊण. 16 > P संड्ढिओ य, P या for ता. 17 > J om. मण्णे, J अज्जमेव सह, P अज्जे, P एवं जुअलं, P adds अ before कयत्थं. 18 > J सफलं, P जायं ।, P गरुडा य वि [गरुडाण वि]. 20 > J पुत्तलाभो P पुत्तणाहो. 22 > P -लाभो, P विहवलोमेहिं । जज्ज मए, P कत्ता. 23 > P om. जुण्णपक्खिणा भणियं. 24 > P साह व्वं, J om. अज्ज, J अणुभूतं, P हरिसिउं. 25 > J अण्णेसितुं. 26 > P धरणियलं, P पएसो, P देवा नियवंति. 27 > J किण्णरा P किन्नरा, P जुज्जंति. 28 > J हिअय. 29 > P ताव for जाव, P पायारंतंमि, J ततो, P om. हं, P पेच्छाओ. 30 > J सिलिसिलेंत, P को for को वि. 31 > P पसत्थ for सव्वंग, P सलसयजंतु. 32 > J धम्माहम्मं, P साहेंता, J om. अहो मए दिट्ठं जं दट्ठव्वं, P एरिसं तुहणयअच्छेरयं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तओ ताय, तेण भगवया सव्वण्णुणा साहिओ सयलो संसार-सहावो, पदंसिओ जीव-संसरणा-वित्थारो, वित्थारिओ कम्म-पयइ-विसेसो, विसेसिओ बंध-णिजरा-भावो, भाविओ संवरासव-वियप्पो, वियप्पिओ उप्पाय-ट्ठिइ-भंग-वित्थरो, परूविओ जहट्ठिओ मोक्ख-मग्गो त्ति। तओ इमं च सोऊण सव्वं उप्पण्ण-संवेय-सद्धा-सुद्ध-हियएण पुच्छिओ मए भगवं सव्वण्णू जहा 'भगवं, अम्हारिसा उप्पण्ण-वेरग्गा वि किं कुणंतु तिरिय-जोणिया परायत्त-करणा'। तो इमं च लक्खिऊण मह हिययत्थं भणियं भगवया।

देवाणुपिया सण्णी तिरिओ पंचिंदिओ सि पज्जत्तो। सम्मत्तं तुह जायं होहिइ विरई वि देसेण॥

§ ४०१) एत्थंतरम्मि पुच्छिओ भगवं गणहर-देवेण। अवि य।

'भगवं के पुण सत्ता णरयं वच्चंति एत्थ दुक्खत्ता। किं वा कम्मं काउं बंधइ णरयाउयं जीवो॥'

भगवया भणियं।

'णरयाउयस्स गोदम चत्तारि इहं हवंति ठाणाइं। जे जीवा तेसु ठिया णरयं वच्चंति ते चेय॥
पंचेंदियाण वहया पुणो पुणो जे हणंति जीव-गणं। केवट्टाई गोदम ते मरिउं जंति णरयम्मि॥
कुणिमाहार-पसत्ता कुणिमं मंसं ति तं च आहारो। सावय-पक्खीण वहो मरिऊणं ते वि णरयम्मि॥
सर-दह-तलाय-सोसण-हल-णंगल-जंत-वावडा पुरिसा। मरिऊण महारंभा गोदम वच्चंति णरयम्मि॥
गाम-णगर-खेड-कब्बड-आराम-तलाय-विसय-पुहईसु। परिमाण-विरइ-रहिया मुच्छिय-चित्ता गया णरयं॥'

तओ इमं च सोऊण ताय, मए चिंतियं। 'अहो भगवया मंसाहारिणो पंचेंदिय-वह-कारिणो य णरय-गामिणो आइट्ठा। ता अम्हे पंचिंदिय-वहया मंसाहारिणो य गया णरयं, ण एत्थ संदेहो। ण-याणिमो अत्थि कोइ संपयं उवाओ ण व'त्ति चिंतयंतस्स पुणो पुच्छिओ भगवं गणहारिणा 'भगवं, जइ पढमं इमेसु ठाणेसु होऊण पच्छा उप्पण्ण-विवेगत्तणेण य णरय-दुक्ख-भीरू कोइ विरमइ सव्व-पाव-ठाणाणं ता किं तस्स णरय-णियत्तणं हवइ किं वा ण हवइ' त्ति। भगवया भणियं। 'गोयम, होइ जइ ण बद्धाउओ पढमं। बद्धाउओ पुणो सव्वोवाएहिं पि ण तीरइ णरय-गमणाओ वारेउं' ति। तओ ताय, इमं च सोऊण मए चिंतियं 'अहो, महादुक्ख-पउरो णरयावासो, पमाय-बहुला जीव-कला, विसमा कम्म-गई, दुरंतो संसार-वासो, कढिणो पेम्म-णियला-बंधो, दारुण-विवागो एस पंचेंदिय-वहो, णरयग्ग-दूओ एस कुणिमाहारो, णिंदिओ एस तिरियत्त-संभवो, पाव-परमं अम्हाणं जीवियं ति। एवं च ववत्थिए किं मए कायव्वं'ति। तओ एत्थंतरम्मि भणियं भगवया। अवि य।

जो छिंदिऊण णेहं इंदिय-तुरए य संजमेऊण। विहिणा मुंचइ देहं जहिच्छियं पावए सिद्धिं॥

ति भणंतो समुट्ठिओ भगवं सव्वण्णु त्ति। विहरिउं समाढत्तो। जहागयं पडिगया देव-दाणवा। अहं पि ताय, अहो भगवया अण्णोवएसेण दिण्णो महं उवएसो। इमं चेय काहामि। अवि य।

छेत्तूण णेह-णियले इंदिय-तुरए य संजमेऊण। कय-भत्त-णियत्तमणो मरिउं सुगई पुण लहामि॥

त्ति। ता दे करेमि, अहवा णहि णहि गुरुयणं आउच्छामि। अवि य।

आउच्छिऊण गुरुणो सयणं बंधुं पियं च मित्तं च। जं करियव्वं पच्छा तं चेय पुणो अहं काहं॥

ति चिंतयंतो अज्ज अकयाहारो एत्थ संपत्तो त्ति।

ता विण्णवेमि संपइ ताय तुमे एस पायवडणेण। देसु अणुज्जं खमसु य मह अज्जं सव्व-अवराहे॥

त्ति भणिऊण णिवडिओ चलण-जुवलेसु।

---

1) J सहाओ, P संसिओ for पदंसिओ, P संसरणापयत्थारो वियत्थारिओ. 2) P विसेसओ बद्धनिज्जरा, J om. वियप्पिओ, P ट्ठिति-. 3) J पन्नविओ for परूविओ, P मोक्खमग्ग त्ति, P om. सव्वं, P उप्पणसंवेसद्धा. 4) P repeats किं, P कुणंति, P जोणीयपरायत्तकरणा, J परयत्त, J ततो for तो. 5) P om. भणियं. 6) P देवाणुप्पिया, P adds पज्जत्तियाहिं before पज्जत्तो, JP होहिति, P ति for वि. 7) P एत्थंतरंति. 10) P गोयम, P ट्ठाणाइं, P हिया for ठिया. 11) P जीवाणं केवट्टाती गोयम. 12) P आअहारो. 13) P सोसेण, J जुत्त for जंत, P मरिऊ महारंभा, P गोयम, P नरयंति. 14) P गामागर-खेडमढंबआराम–, P पुहतीसु. 15) J ततो, P भाय for ताय, J om. य. 16) P काइं for कोइ. 17) J किं तायवस्स for चिंतयंतस्स, J गणहारिणो, P om. पढमं, P ऊण for होऊण, P विवेयत्तणेण नरय-. 18) P भएण for भीरू, J विमरइ सव्व-, P पाणट्ठाणाइं ता, P तस्स रयणत्तणं हवइ. 19) J गोतम, P होइ जणइ बद्धाउयं, J om. पढमं। बद्धाउओ, P om. पुणो, J सव्वं वाएहिं, P धारिउं for वारेउं. 20) P om. च, J य for मए, P णरयवासो, J बहुलो जीवफली, P कंमगती. 21) P कढ्ढिणो, P एसं चिंदियवहो णरयम्गिदूओ. 22) J संभववो, P पोव for पाव, P om. च, J किम्मए P किं मयं. 23) J om. अवि य. 24) P जहच्छियं पावसिद्धिं, J सिद्धि त्ति. 25) P सव्वन्नू, P जहा पडिगया, P ताह for ताय. 26) P अण्णावएसेण. 27) P छेऊण, P -णियलो, P भत्तू for भत्त, P om. पुण, P लहीहामि. 28) P om. one णहि, P अउच्छामि, P अहवा for अवि य. 29) J णिद्धं for मित्तं, P काहिंति. 30) P अज्ज कयाहारो. 31) J विण्णवेसि (?), P अणज्जं. 32) P ति for त्ति, J चलणेसु। तओ, P वलय for चलण.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

§ ४०२) तओ पसरंतंतर-सिणेह-पगलमाण-णयण-जुयलेण अंसु-किलिण्ण-वयणेण भणियं जुण्ण-पक्खिणा । अवि य ।

'पुत्त ण कीरइ एसो ववसाओ दुत्तरो सुरेहिं पि । अण्णं च अहं थेरो वच्छ ममं मुंचसे कइयं ॥'

तेण भणियं 'ताय जं तए भणियं तं णिसामेसु ।

किं दुत्तरं तिलोए णरयावासाउ होज्ज बहुयं पि । णियओ जो तुह जणओ ताय तुमे कस्स सो मुक्को ॥'

वुड्ढेण भणियं ।

'जह पायवस्स पुत्तय पारोहो होइ लग्गणक्खंभो । तह किर पुत्त तुमं पि हु होहिसि मह पुत्तओ सरणं ॥'

तेण भणियं । 'ताय,

को कस्स होइ सरणं को वा किर कस्स लग्गणक्खंभो । णिय-कम्म-धम्म-वसओ जीवो अह भमइ संसारे ॥'

वुड्ढेण भणियं ।

'अज्ज वि तरुणो पुत्तय मा मर इह ताव भुंजसु सुहाइं । पच्छा काहिसि धम्मं वच्छय जा वुड्ढओ जाओ ॥

तेण भणियं ।

'किं मरइ णेय तरुणो वुड्डत्तं ताय को ण पावेइ । तं अच्छसि वुड्ढयरो ण-यणसि धम्मस्स णामं पि ॥'

वुड्ढेण भणियं ।

'अत्थो कामो धम्मो तरुणत्तण-मज्झ-वुड्ढ-भावेसु । कीरंति कमेणेवं पुत्तय मा तिक्कमं कुणसु ॥

तेण भणियं ।

'को व ण इच्छइ एसा परिवाडी ताय जा तुमे रइया । जइ अंतरेण पडिउं मच्चु-गइंदो ण विहणेइ ॥'

वुड्ढ-पक्खिणा भणियं ।

'जणिओ सि पुत्त दुक्खं दुक्खं संवड्ढिओ य जणणीए । किर होहिसि आलंबो वुड्ढत्तणयम्मि अम्हाण ॥'

तेण भणियं ।

'सुरयासत्त-मणेणं जाओ संवड्ढिओ य आसाए । इंधण-कज्जेण गओ ससयं जह पावए को वि ॥'

वुड्ढ-सउणेण भणियं ।

'एत्थ वि तुज्झ अधम्मो होइ च्चिय पुत्त ताव चिंतेसु । वुड्ढं मोत्तूण ममं कायर-पुरिसो व्व तं जासि ॥'

तेण भणियं ।

'जइ तं वच्चसि णरयं मए वि किं ताय तत्थ गंतव्वं । अयडे णिवडइ अंधो ता णिवडउ किं सचक्खू वि ॥'

वुड्ढ-पक्खिणा भणियं ।

'तह वि पिओ मे पुत्तय तुह विरहे णेय धारिमो जीयं । पिइ-वज्झाए घेप्पसि एस अधम्मो तुहं गरुओ ॥'

तेण भणियं ।

'ताय ण तुज्झं दइओ जेणं णरयम्मि खिवसि घोरम्मि । को कस्स मरइ विरहे जाव ण खुट्टं णियं कम्मं ॥'

वुड्ढेण भणियं ।

'तुज्झ पिओ हं पुज्जो पुत्तय ता कुणसु मज्झ वयणं ति । मुच्चउ मरणासंसा पढमं पिव अच्छ णीसंको ॥'

तेण भणियं ।

'को कस्स होइ जणओ को व जणिज्जइ जणेण हो एत्थ । जणओ सो च्चिय एक्को धम्मुवदेसं तु जो देइ ॥'

वुड्ढ-पक्खिणा भणियं ।

'जइ पुत्त तुमे एयं अवस्स करणिज्जयं तु ता विसह । जा ते पेच्छामि सुहं दीह-पवासम्मि चलियस्स ॥'

तेण भणियं ।

---

1) J पसरंत सिणेहेण पगल°, J -जुअले आलिक्किलण्ण, P जुमलो for जुयलेण. 2) P एसो ओ दुत्तारो, P अन्नं वाहं थेरा वच्छ, J मए for ममं, J कस्स for कइयं, P adds थेरं after कइयं. 3) P निसामेहि. 4) J णरयावासो हु. 6) P पुत्तस्स, P लग्गणक्खंतो ।. 8) P inter. कस्स & होइ, P परि for अह. 11) J adds य after तेण. 12) P ताव को, J को व for को ण, P न य जाणसि धम्मनामं पि. 13) P वुढेण. 14) J om. मज्झ, P वुढभावेण्णु, P कामं णेयं for कमेणेवं, J उज्जमं for तिक्कमं. 16) P पडियं, J °गइंदे, J हारेइ for विहणेइ. 17) J वुड्ढेण for वुड्ढपक्खिणा. 18) P संठिओसि जणणीए. 20) J गओ ससयं. J कोइ ॥. 22) P तुज्झ न धम्मो, P तुमं for व्व तं. 24) P जइ सिं तं, P अंधो जइ निवडिओ किं. 26) P पिय-, P एस अहंमो. 27) J adds तओ before तेण. 28) P adds ति after खुट्टं. 30) P कुज्झ पियाइं. 32) J होइ सरणं को. 34) P तए for तुमे, P ति for तु, J ए for ते.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जं कायव्वं कीरउ को जाणइ दियह-पक्ख-मासाणं । किं होहिइ अहिययरं वयणं जेणम्ह दीसेज्ज ॥'
ता खमसु अहं वच्चामि' त्ति भणंतो उवगओ माऊए समीवे ।

§ ४०३) तत्थ य पायवडणुट्ठिएण विण्णविया माया । अवि य ।

तं धरणी सावित्ती सरस्सई तं भगीरही पुहई । धारणि-अम्मा देवी माया जणणी य जीयं च ॥
ता खमसु माए एण्हिं कय-पुव्वं जं म्ह अविणयं किंचि । संपइ मरियव्वमिणं उवट्ठियं अम्ह संसारे ॥

इमं च सोऊण जरा-जुण्ण-खुडिय-पक्खावली-वियलणा-पयड-पंडर-सरंडय-डंडावली-मेत्त-पक्ख-पडली-सणाहाए भणियं जुण्ण-पक्खिणीए । अवि य ।

'हा हा पुत्त किमेयं वयणं अइ णिट्ठुरं तए भणियं । थक्किय-पडिहयमेयं ण सुयं म्ह ण यावि ते भणियं ॥'
तेण भणियं ।
'चिरजीविणीए अम्मो दिट्ठो व्व सुओ व्व कोइ लोगम्मि । मरणाओ जो चुक्को मंगल-सय-लक्ख-वयणेहिं ॥'
थेरीए भणियं ।
'पुत्त तहा वि ण जुज्जइ भणिऊणममंगलं इमं वयणं । सोऊण इमं दुलहइ मह दुक्खं होइ हिययम्मि ॥'
तेण भणियं ।
'अम्मो वयणेण इमं दुक्खं जायं ति तुज्झ दुत्तारं । जइ सच्चं चिय मरणं हवेज्ज ता किं तुमं भासि ॥'
थेरीए भणियं ।
'पुत्त ण वट्टइ एयं भणिउं जे जइ पुणो कह वि होज्जा । ता पुत्त तुम्ह णेहेण तं चितिं चेय पविसेज्जा ॥'
तेण भणियं ।
'अम्मो मा भण अलियं एक्केक्कं अणुमरेज्ज जइ तं सि । ता कह थेरी होंती बाल च्चिय तं मुआ होंती ॥'
थेरीए भणियं ।
'मा पुत्त भणसु एयं जीयाओ वि वल्लहो तुमं मज्झ । मा मं मुंचसु एण्हिं थेरत्तण-दुक्ख-संतत्तं ॥'
तेण भणियं ।
'अम्मो को कस्स पिओ को वा जीवेज्ज कस्स व वसेण । को वा मुच्चइ केणं को थेरो किं व से दुक्खं ॥'
थेरीए भणियं ।
'पुत्त इमो ते धम्मो अम्मा-तायाण कुणसि जं विणयं । बंधुयणस्स य पोसं पम्मुक्को होहिइ अहम्मो ॥'
तेण भणियं ।
'अम्मो सच्चं एयं भणियं घर-वास-संठिय-जियस्स । जो पुण मुंचइ सव्वं तस्स ण कज्जं इमेहिं पि ॥'
थेरीए इमं भणियं ।
कुच्छीएँ मए धरिओ णव-मासे पुत्त-भार-सुढियाए । उवयारस्स फलं ते पच्चुवयारो कओ को वा ॥'
तेण भणियं ।
'अम्मो कीस तए हं धरिओ गब्भम्मि केण कज्जेण । णियय-जणणीएँ तुमए उवयारो को कओ होज्ज ॥
माए हं ते जणिओ तुमं पि जणिया मए भव-सएसु । अरहट्ट-घडि-समाणा अवरोप्परयं पिया-पुत्ता ॥'
भणंतो उवगओ जेट्ठ-भाउणो समीवं ।

§ ४०४) तत्थ वि पायवडणुट्ठिओ विण्णविउं पयत्तो । अवि य ।

'भाउय तं सि खमेज्जसु अम्हे उच्छंग-वड्ढिया तुम्ह । डिंभत्तण-दुल्ललिएहिं तुज्झ जो अविणओ रइओ ॥'
भाउणा भणियं ।

---

1) P जाणओ for जाणइ, JP होहिति, P दीसेज्जा. 2) P समीवं. 3) P विण्णविय, P om. माया, P adds after अवि य like the following which is partly repeated subsequently तं धरणी सतवती सरस्सीती तं भगीरही पुहती । धारअंगादेवी माय जण अहं वच्चामि त्ति भणंतो उवगओ माऊए समीवं । तत्थ य पायवडणुट्ठिएण विण्णविय. 4) P धरणी सत्तवती सरस्सीती, P पुहती । धारणिअंमी, J धरणीअम्मा, P जणणी अजीयं च. 5) J जम्ह P जम्हं for जं म्ह, P अम्हि for अम्ह. 6) P खुडिया से सडिय पक्खावली वियडणापयडा-, J पम्हावली, J -सडंडय-, J -पडाली. 8) J थुक्किय, J ण सुअम्ह P णयं अम्हे for ण सुयं म्ह, J ए P तं for ते. 10) J चिरजीविणीय P चिरजीवणीए, P repeats सुओ व्व, J लोअम्मि, P सलक्ख-. 12) P भणिऊण अमंगलं, P om. दुलहइ मह. 14) P दुक्खं जीवं ति पइसेज्जा ।, P om. जइ सच्चं चिय मरणं etc. to चितिं चेय पविसेज्जा ।. 18) P होंति in both places. 20) P पुत्त धणमुएसु जीयाउ वि. 22) J वा मुंचइ, P केण व को. 23) J थेरीय P थोरीए. 24) J ए for ते P बंधुयणस्स पसायं पंमुक्के, JP होहिति. 26) P भणियं परवाससंठियस्स जीवस्स, P उण for पुण, P ति for पि. 27) P has additional lines here beginning with थेरीए भणियं । कुच्छीए etc. धरिओ गब्भं ति which are repeated below, P om. इमं. 28) P भणिओ for धरिओ, P सुढियाए. 32) P जेट्ठ भायणो समीव तस्स. 33) P पीयवडणुट्ठिओ विउं पयत्तो. 34) P खमज्जसु, P तुम्हे for तुज्झ.

'हा कीस वच्छ मुंचसि केण व तं किंचि होज्ज भणिओ सि । को णाम एत्थ धम्मो किं वा पावं भवे लोए ॥'
तेण भणियं ।
'मा भाउय भण एवं धम्माधम्मेहिँ संठिओ लोओ । अह अत्थि को वि धम्मो विणयाए सुओ जहा राया ॥'
भाउणा भणियं ।
'मुद्धो सि वच्छ बालो केण वि वेयारिओ वियड्ढेण । सो को वि इंदयाली वेयारेंतो भमइ लोयं ॥'
तेण भणियं ।
'भाउय विवेग-रहिओ तं मुद्धो जं भणासि कावडिओ । मा हो तं भण एवं तियसिंद-णमंसियं वीरं ॥'
भाउणा भणियं ।
अच्छसु भुंज जहिच्छं परलोओ वच्छ केण सो दिट्ठो । एक्कं हूयं अण्णं होहिइ का तम्मि ते सद्धा ॥'
तेण भणियं ।
'धम्मेण एत्थ भोगा भाउय धम्मेण होइ सग्गं पि । ता तं चेय करिस्सं णत्थि सुहं धम्म-रहियस्स ॥'
भणमाणो उवगओ कणियसं भाउयं, तं पि उच्छंगे चुंबिऊण भणिउं समाढत्तो । अवि य ।
'उच्छंग-लालिओ मे वच्छ तुमं पुत्तओ व्व मह दइओ । खर-फरुसं सिक्खविओ अवराहं खमसु ता मज्झं ॥'
कणीयसेण भणियं ।
'हा भाउय कत्थ तुमं चलिओ होज्जा णु अम्ह मोत्तूण । अम्हाण तं सि सामी तुज्झायत्तं इमं सव्वं ॥'
तेण भणियं ।
वच्छ चलिओ मि मरिउं तुम्हे मोत्तुं पुणो वि गंतव्वं । को कस्स वच्छ सामी जम्मण-मरणेहिँ गहियम्मि ॥
§ ४०५) इमं भणंतो उवगओ जेट्ठं भइणिं, तीय पायवडणुट्ठिएण भणियं ।
भइणी तं महदेवी सरस्सई तं सि पूयणिज्जा सि । ता खमसु अविणयं मे डिंभ-सहावेण जं रइयं ॥
तीए वि वियलमाण-णयण-जल-पवाहाए भणियं । अवि य ।
'वच्छम्हाण तुमं चिय कुलम्मि किर भो कुमारओ आसि । पोमाय म्ह तुमे च्चिय तुमए च्चिय जीविमो अम्हे ॥'
तेण भणियं ।
जीयइ कम्मेण जिओ पोमायइ सुंदरेण तेणेय । जइ हं कुले कुमारो माए ण य लज्जणं काहं ॥'
तीए भणियं ।
'थेरं मुंचसि पियरं कस्स इमं मायरं च गइ-वियलं । सत्थेसु किर पढिज्जइ अयण्ण-परिपालणं काउं ॥'
तेण भणियं ।
'किर वाहेण तओ हं बद्धो पासेण अहव ण य जाओ । मोत्तूण ममं पुत्ता अण्णे वि हु अत्थि तायस्स ॥'
§ ४०६) इमं भणंतो उवगओ कणीयसं भइणिं । तं पि साणुणयं उवलप्पिऊण भणिउमाढत्तो । अवि य ।
'खर-णिट्ठुर-फरुसाइं वच्छे भणिया सि बाल-भावम्मि । ता ताइँ खमसु एण्हिं होसु विणीया गुरूणं ति ॥'
तं च सोऊण मंतु-गग्गरं तीए भणियं । अवि य ।
'हा भाउय मं मोत्तुं दीणमणाहं च कत्थ तं चलिओ । ताओ वट्टइ थेरो तुज्झम्हे चिंतणीयाओ ॥'
तेण भणियं ।
'अलिओ एस वियप्पो जं चिंतिज्जइ जणो जणेणं ति । वच्छे पुव्व-कएणं दुक्ख-सुहे पाविरे जीवा ॥'
§ ४०७) एवं च भणमाणो उवगओ भारियाए समीवं सो पक्खी । भणियं च तेण । अवि य ।
सुंदरि सुहय-विलासिणि तणुयंगे पम्हलच्छि घर-लच्छि । घणिए मह हियय-पिए वल्लह-दइए य सुण वयणं ॥

---

3) P एवं धंमेहिं, J धम्माहम्मेहि, P लोए ।. 5) J सि बद्धबाला, P वेयारंतो. 7) P विवेय-, P भणामि for भणासि. 9) P जहच्छि, P om. वच्छ, P adds कत्थ before सो, JP होहिति, P ते सिद्धा. 11) J भोआ. 12) J कण्णसं भाउअंतेण तं पि, P भणिओ. 13) P से for मे, P तुह for मह. 14) J कण्णसेण भणिअं. 17) P मरिओ तुम्हे म्हेतुं पुणो, P मरणेहिं, J गहिअस्स ॥. 18) P भणिउं for भणंतो, P जेट्ठभगिणिं, J adds तेण before तीय. 19) J तमहं देवी, P तं महादेवी, J भो for मे. 20) J तीय वि, P om. णयण, P जलह-. 21) P तुच्छम्हाण, P पिय for च्चिय, P हो for भो, J कुमारओ, J पोमाय P पामाय. 23) P सुंदरे य तेणेय, JP कुमारो. 24) J तीअ for तीए. 25) P अइछ for अयण्ण. 27) P कर for किर, P कओ हं [हओ हं ?], P बद्धो पोसेण अह वि न य, P अत्थे for अण्णे. 28) J कण्णस्स for कणीयसं, P भइणी. 29) P फरिसाइं, P ता माइं खमसु. 30) J मणु for मंतु, P मंतुयग्गरं. 31) P घोरो (थोरो ?). 33) P जीवो ॥. 34) P गओ for उवगओ. 35) J वंभलच्छि, P घरलच्छी !, P om. य, P सुवयणं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुद्धाणि य पीयाणि य तुमए समयं बहूणि तणुयंगि । गयणंगणम्मि भमियं रुक्खग्गे णिवसियं समयं ॥
सुरसरि-पुलिणेसु तए समयं तणुयंगि विलसियं बहुसो । माणस-सरस-सरोरुह-दलेसु सुइरं पसुत्ता मो ॥
किलिकिंचियं च बहुसो कय-कलयल-राव-मुइय-मणसेहिं । तं णत्थि जं ण रइयं दइए ता खमसु तं सव्वं ॥

इमं च सोऊण गुरु-दुक्ख-भर-भार-तुडिया इव णिवडिया से मुच्छा-णीसहा दइया । तं च णिवडियं दट्ठूण तेण भणियं ।

'आसस मुद्धे आसस सरल-सहावा ण-याणसे किंचि । किं ण सुयं ते सुंदरि संजोया विप्पओयंता ॥
आसस मुद्धे आसस विहडइ अंते सराय-घडियं पि । संपुण्ण-णियय-कालं पेम्मं चक्काय-जुवलं व ॥
आसस मुद्धे आसस चडुलं संकमइ अण्णमण्णेसु । विंझगिरि-सेल-सिहरे वाणर-लीलं वहइ पेम्मं ॥
आसस मुद्धे आसस चवलं परिसक्कए सराइल्लं । णव-पाउस-जलहर-विज्जु-विलसियं चेय हय-पेम्मं ॥
आसस मुद्धे आसस एयं चिंतेसु ताव लोगम्मि । खर-पवणुद्धुय-धयवड-चवलं छडयंगि हय-पेम्मं ॥
इय बुज्झिऊण सुंदरि मा मोहं वच्च आससु मुहुत्तं । गय-कलह-कण्ण-चंचल-चलाओ पेम्माण पयईओ ॥' त्ति ।

इमं च भणमाणेण आसासिआ सा तेण पक्खिणी । तओ होंत-विओयाणल-जणिय-जालावली-पिलुट्ठ-हिययुत्तत्त-णयण-भायणोयर-कढंतुव्वत्त-बाह-जल-पवाहाए भणियं सगग्गयं तीए पक्खि-विलासिणीए । अवि य ।

'हा दइय णाह सामिय गुण-णिहि जियणाम णाह णाह त्ति । एक्क-पए च्चिय मुंचसि केण वि वेयारिओ अम्हं ॥
हा णाह विणा तुमए सरणं को होहिई अउण्णाए । कस्स पलोएमि मुहं सुण्णाओ दस दिसाओ वि ।'

तेण भणियं ।

'मा विलव किंचि सुंदरि एस पलावो णिरत्थओ एत्थिंह । जंतो य मरंतो विय किं केणइ वारिओ को वि ॥
जं जस्स किं पि विहियं सुहं व दुक्खं व पुव्व-जम्मम्मि । तं सो पावइ जीवो सरणं को कस्स लोगम्मि ॥

तीए भणियं ।

'जइ एवं णिण्णेहो वज्जमओ तं सि मुच्चसे अम्हं । ता किं जाणसि डिंभे अह जणिए किं परिच्चयसि ॥'

तेण भणियं ।

'मोहंधेणं सुंदरि किंचि-सुहासाय-जणिय-राएण । एयं कयं अकज्जं दुक्खमणंतं ण तं दिट्ठं ॥
जइ काम-मोह-मूढो बद्धो वारीऍ कह वि वण-हत्थी । मुद्धे किं मरउ तहिं किं वा बंधं विमोएउ ॥
जं कह वि मोह-मूढेण सेविओ किं मरेज्ज तत्थेव । जो जाओ गोत्तीए किं जाउ खयं तहिं चेय ॥
जइ सेवियम्हि कामो कह वि पमाएण तं च ईहामि । किं कह वि जो णिउड्डो सो पायालं समल्लियउ ॥

तीए भणियं ।

'जइ तं वच्चसि सामिय अहं पि तत्थेय णवरि वच्चामि । भत्तार-देवयाओ णारीओ होंति लोगम्मि ॥'

तेण भणियं ।

'सुंदरि पयइ वच्चसु पारत्त-हियं ण रोयए कस्स । पेच्छसु भव-जल-रासिं जम्म-जरा-दुक्ख-भंगिल्लं ॥'

तीए भणियं ।

'एयं बालारामं णिसंस-मुक्कं तए अह मरेज्ज । किं मुच्चामि तुमे च्चिय जइ अहयं मुंचिमो एयं ॥'

तेण भणियं ।

'णिय-कम्म-धम्म-जाया जियंति णियएण चेय कम्मेण । बालाण किं मए किं तए व्व मा कुणसु मिसमेयं ॥'

इमं च णिसामिऊण तीए भणिया ते डिंभरूवा ।

एसो य तुम्ह जणओ पुत्तय मरणम्मि दिण्ण-ववसाओ । ता लग्गह पायाहिं कम्मम्मि इमस्स गाढयरा ॥

1 > J वीआणि for रुद्धाणि, P बहुणि तणुयंगी, P भमिउं. 2 > P पुलिलेसु. 3 > P om. च, P om. ता. 4 > J om. भर, P तुट्टिया, P णिवडिय, J adds अवि य after भणियं. 5 > P णयासे. 6 > P यंते for अंते, P repeats पेम्मं. 7 > J विंझइरि, J वाणरणीलं वहय. 8 > J चलं च for चवलं. 9 > P एवं, J चिंतेसु आव लोअंमि, P लोगं ।, P धयधयडचंचलं. 10 > J आसस. 11 > J om. तेण, J -विओआलि-जलिअजालावलीविलुट्ठ, P -पिलुट्ठहियपुत्तत्तणयभायणोदराकढंतुंबत्त. 12 > P -प्पवाहाए, P सगग्गरं, J तीय पक्खिविलासिणीय. 13 > P हे for हा, P जियनाहराह त्ति ।, P मुद्धय for मुंचसि, J केणावि, P वियारिओ. 14 > JP होहितो, J अउण्णाए. 16 > P किंच सुंदरि, J णिरत्थयो, P केण व धारिओ, J कहिमि for कोवि. 17 > J लोअम्मि. 18 > J तीय. 19 > P जइ व णिणेहो, P तं च से अम्ह ।, P जणेहि for जाणसि, J adds पि after किं. 21 > J सुहासाए. 22 > P कोव for मोह, P वारीय कइ व, J बद्धं, P बंधं मिमाएउ. 23 > P जीवो for जाओ after जो, P किं for खयं, P तहिं च्चिय. 24 > J सेविअम्हि P सेविओसि, J जो णिउड्डो, P समल्लियइ. 25 > J तीय. 26 > P देवताओ, J लोअंमि. 29 > J तीय. 30 > P निस्संसं, P मरेज्जा, P adds अह before अहयं, P मुंचमा. 33 > J तीय भणियं तेण ते, P डिंभुरूवा. 34 > J om. य, J तुम्हं, P ता लयइ पायाहिं, J मा दाहिह for पायाहिं, J कण्णम्मि, J गाढयरं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ४०८) एवं च भणिया समाणा किं काउमाढत्ता । अवि य ।
उव्वाइया सरहसं सव्वे च्चिय मुद्ध-मम्मणुल्लावा । खंधम्मि केइ कंठे अण्णे पट्ठिं समारूढा ॥
'मोत्तूण ताय अम्हे कत्थ तुमं पवससि त्ति णिण्णेहो । अंबं पेच्छ रुवंतिं अम्हे वि मरामु तुह विरहे ॥'
तेण भणियं ।
'पुत्त मए तुम्हाणं ण किंचि कज्जं ति जियउ ए अंबा । स च्चिय दाही भत्तं होह समत्था सयं चेव ॥'
तेहिं भणियं ।
'अंबाए ताय कहियं ताएण विणा मरामि हं पुत्त । तुम्हे वि मए मुक्का मरिहिह मा देसु गंतुं जे ॥'
तेण भणियं ।
'मा पत्तियाह पुत्तय एसा अह कुणइ तुम्ह परिहासं । को केणं जीविज्जइ को केणं मरइ लोगम्मि ॥
भव-रुक्ख-पाव-कुसुमप्फलाइँ एयाइँ डिंभ-रूवाइं । महिला णियलमलोहं बंधण-पासं च बंधुयणो ॥
त्ति चिंतयंतेण धुणिऊणं देहं तरुवरं पिव पिक्क-फलाइं व पाडिऊण डिंभ-रूवाइं चलिओ ससुरंतेणं । भणियं च तेण ।
'तुह ताय पायवडणं करेमि एसो म्ह खमसु जं भणियं । जारिसओ मह जणओ तारिसओ चेय तं पुज्जो ॥'
तेण भणियं ।
'कल्लाणं ते पुत्तय जइ मरियव्वं अवस्स ता सुणसु । अज्ज वि बालो सि तुमं को कालो वच्छ मरणस्स ॥'
तेण भणियं ।
बालो तरुणो वुड्ढो ताय कयंतस्स णत्थि संकप्पो । जलणो व्व सव्व-भक्खो करेउ बालो वि तो धम्मं ॥'
त्ति भणंतो उवगओ अत्तंतेण । भणियं च ।
'अत्ता तुह पायवडणं अम्हं जणणी तुमं ण संदेहो । ता खमसु किंचि भणियं डिंभत्तण-विलसियं अम्ह ॥'
तीए भणियं ।
'अज्ज वि पुत्तय बालो कुग्गाहो केण एरिसो रइओ । भुंजसु भोए पच्छा वुड्ढो पुण काहिसी धम्मं ॥'
तेण भणियं ।
'धम्मत्थ-काम-मोक्खा अत्ता चत्तारि तरुण-जण-जोग्गा । जोव्वण-गलियस्स पुणो होंति समुद्दो व्व दुत्तारो ॥'
तीए भणियं ।
'धूयं मोत्तूण इमं फुल्ल-फल-भरिययं सुरूवं च । मा मरसु पुत्त मुद्धो ण-याणसि अत्तणो सारं ॥'
तेण भणियं ।
'अत्ता फुल्ल-फलेहिं किं वा रूवेण किं व तरुणीए । घोरं णरए दुक्खं इह जम्मायंतरं होइ ॥'
तीए भणियं ।
'जं तुह कुलस्स सरिसं भणियं तं पुत्त आसि पढमम्मि । भिंदसि कुल-मज्जायं संपइ तुह हो ण जुत्तमिणं ॥
तेण भणियं ।
भत्तार-देवयाणं अत्ता जुत्तं ण एव णारीणं । अहयं मरामि सा उण ण मरइ जुत्तं कुणउ तीय ॥'
त्ति भणंतो चलिओ पिय-मित्तंतेणं । भणियं च तेण ।
मित्तं ति णाम लोए वयंस अह केण णिम्मियं होज्ज । वीसंभ-गब्भ-हरओ पणय-दुमो दिण्ण-फल-णिवहो ॥
परिहास-मूल-पसरं रइ-खंधं पेम्म-राय-साहिल्लं । धिइ-कुसुम-चिंतिय-फलं मित्त-तरुं को ण संभरइ ॥
ता मित्त तुमे समयं जयम्मि तं णत्थि जं तुहं गुज्झं । जइ किंचि अम्ह खलियं खम सव्वं पसिय तं सुयणु ॥'
मित्तेण भणियं ।
'साहसु मह सब्भावं किं कज्जं मित्त पवससे तं सि । को णाम एस णरओ मुद्धो सि वियारिओ केण ॥'

---

2) P उव्वाइय सहरिसं, P को वि for केइ. 3) J पाव P ताव for ताय, P पवसस, P पेच्छे, J रुअंति P रुवंती, P सह for तुह. 5) P तु for ति, P inter. अंबा & ए, J दाहिति for दाही, J चेअ. 7) P तुम्भे, P मरहिह, P देतु गंतव्वं ॥. 9) P पत्तियाहि, P कुणइइ, P । जा वाविज्जइ केणं को केणं, J लोअंमि. 10) J -रूआइं, J णिअलुमलोहं बंधं व पासं. 11) J om. पिव, P पिव पक्क-, P ससुत्तेणं. 12) J चेव. 14) J जइ करिअव्वं. 16) P तया for ताय, J करेसु, P उ for वि. 17) P अणेण for अत्तंतेण, P om. च. 19) J तीय. 20) P एरिसो वइओ. 22) P मोक्खो अत्थ चत्तारि. 23) J तीय. 24) J धूतं, P रइयं for भरिययं, J याणसी. 26) J repeats किं वा. 27) J तीय. 28) J inter. पुत्त and तासि for आसि, J भिंदिसि. 30) P एय for एव. 31) P om. भणियं च तेण. 32) J adds पिय before मित्तं, P पित्तं त्ति णाम, J पोए for लोए, J होज्जा, P फणयदुमो दिण्णल. 33) P पेम्मराइ-, J धिति-, P चिंतसफलं. 34) J तुमं समयं, J तुहं गुज्झं, P खमियव्वं पसियं त सुयणु. 36) J मुद्धो वेआरिओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण भणियं ।

'एत्थ ण जुजइ भणिउं णवरि तुहं मित्त-वयण-मेत्तं पि । गहियं जं तुह चित्तं तं सि अभव्वो अकल्लाणो ॥'

तेण भणियं ।

'जइ अत्थि कोइ णरओ पावो य हवेज्ज जीव-णिहणेणं । किं एस सव्व-लोओ ण मरइ जह तं मरिउ-कामो ॥'

तेण भणियं ।

'किं सव्वो च्चिय पेच्छइ तं वीरं सुणइ किं व वयणाइं । णिसुए वि कस्स सत्ती जो मुंचइ सव्व-पावाइं ॥'

मित्तेण भणियं ।

'तं एक्को पंडियओ मज्झे किं पक्खि-लक्ख-कोडीण । गो-सय-मज्झे कुल्लो खज्जइ मसएहिँ जह एक्को ॥'

तेण भणियं ।

'किं सव्वस्स विवेओ धम्मे बुद्धी व होइ पक्खीण । रुक्ख-सयाण वि मज्झे विरलं को चंदणं होइ ॥'

त्ति भणंतो चलिओ सामण्ण-सव्व-पक्खि-लोगंतेण । भणियं च तेण ।

'भो भो हो पक्खिगणा वसिया एक्कम्मि रुक्ख-सिहरम्मि । गयणम्मि समं भमिया सरिया-पुलिणेसु कीलियया ॥

ता खमह किंचि भणियं अव्वो बाउत्तणेण दुव्वयणं । सहवास-परिहवो हो होइ च्चिय सव्व-लोगम्मि ॥'

इमं च भणिया सव्वे सहरिस-दीण-कलुणा हास-रस-भरिज्जमाण-माणसा भणिउं पयत्ता ।

'एवं होउ खमेज्जसु जं तुह रुइयं करेसु तं धीर । सुट्ठु वि जइ विण्णप्पसि ण कुणसि अम्हं तुमं वयणं ॥'

तेण भणियं ।

'कीस ण कीरइ वयणं ओसारिय-मच्छरस्स पुरिसस्स । किं तु ण दीसइ कत्थ वि एक्कं मोत्तूण तं वीरं ॥'

भणंतो समुप्पइओ तमाल-दल-सामलं गयणयलं सो विहंगमो ।

एत्थंतरम्मि सूरो कय-मेरु-पयाहिणो णियमियंगो । वियसाविय-कमल-वणो जिणवयणं कुणइ भत्तीए ॥

ताव य करयरेंति सउणया, णिलुक्कंति घूया, णिसियंति वग्घा, वियरंति सिंघा, वियसंति कमलायरा, संकुयंति कुमुयायरा, कुसुमिय-सिय-कुसुमट्ट-हास-हसिरा वणसिरि त्ति । अवि य ।

सिय-कुसुम-लोयणोदर-णिविट्ठ-मूयलिएक्क-भमरेहिं । गोसग्गम्मि वण-सिरी पुलएइ दिसीओ व विउद्धा ॥

§ ४०९) तओ तं च तारिसं पंडरं पहायं दट्ठूण उप्पइआ सव्वे ते पक्खिणो तम्हाओ वड-पायवाओ त्ति । ते य उप्पइए दट्ठूण विम्हिय-खित्त-हियओ चिंतिउं पयत्तो सयंभु-देवो । 'अहो, महंतं अच्छरीयं जं पेच्छ वणे पक्खिणो ते वि माणुस-पलाविणो फुडक्खरं मंतयंति, ते वि धम्मपरे । ता कहं आहार-भय-मेहुण-सण्णा-मेत्त-हियय-विप्फुरंत-विण्णाणा, कहं वा एरिसी धम्म-बुद्धि त्ति । ता ण होइ एयं पयइत्थं, दिव्व-पक्खिणो त्थ एए । अहो तस्स पक्खिणो फुडक्खरालावत्तणं, अहो सत्तसारो, अहो ववसाओ, अहो पियं वत्तणं, अहो णिट्ठुरत्तणं, अहो णिण्णेहया, अहो-गुरु-गउरवो, अहो दढ-धम्मया, अहो वेरग्गं, अहो णरय-भीरुत्तणं अहो मरणाणुबंधो त्ति । सव्वहा ण सुट्ठु जाणीयइ किं पि इमं जं सो पक्खी कुडुंबं सव्वं परिच्चइऊण अत्तणो हियं धम्मं पडिवज्जइ त्ति । अहवा पेच्छ, पक्खिणो वि धम्मपरा कुडुंब-णिण्णेहा धम्म-राय-भिसा । अहं पुण कीस पर-संतियाइं रयणाइं चोरिऊण इमं एरिसं दिट्ठ-सब्भावं विड-कवड-कुडुंबं जीवावेमि । ता संपयं इमं एत्थ करणीयं । जस्स सयासे इमिणा धम्मो णिसुओ तं गंतूण पेच्छामि । पुच्छामि य जहा 'भगवं, के ते वणम्मि पक्खिणो, किं वा तेहिं मंतियं, किं कारणं' ति । इमं च सोऊण पच्छा जं करियव्वं तं काहामि जं इमिणा पक्खिणा कयं'ति चिंतिऊण अवइण्णो वड-पायवाओ, गंतुं पयत्तो हत्थिणपुराभिमुहं जाव 'भो भो गोदम, एस ममं समवसरणे पविट्ठो,

---

2) P अभव्वा. 4) J व्व for य, P मरिउंकामो. 6) P सव्वो च्चिय, P व for वि. 8) P -कोडी ।, P खुज्जइ. 10) P सव्वविविओ, P om. को. 11) J लोअंतेण P णोगंतेण, P om. च तेण. 12) J om. हो, P समा for समं. 13) P खमसु, J सव्वलोएसु. 14) P-करुणा, J -हरिज्जमाण-, P om. माण. 15) J एअं for एवं, P रुइउं, P repeats वि जइ, J जइ भणिप्पसि. 16) J om. तेण भणियं. 17) P om. कीस ण, P उस्सरिय, P om. पुरिसस्स, P किं तुहण. 18) P भणंतो उप्पइओ, P गणयलं. 19) P पयाहिणा, J णियसंगो, J करकमलो for कमलवणो, J भत्तीय. 20) P करयरंति, P घुअया, J विरंति सिंघा, J संघडंति for संकुयंति. 21) J कुसुमप्पहास, P वणसिर त्ति. 22) P सेव for सिय, J लोअणोअर, J मूएलिअक्क, J इव for व. 23) P om. पंडरं, J सहायं for पहायं. 24) J चित्त for खित्त, P अच्छरियं, P पक्खिवणो, P om. ते वि. 25) P धम्मं परा ते वि कहं, J सण्ण-, J विफुडंत, P विण्णाण्णो. 26) J एवं for एयं, P खु एवं ते for त्थ एए, J °लाविचणं. 27) J पिअं वयत्तणं, P om. अहो णिट्ठुरत्तणं, P गुरुगुरवो । अह दढ-. 28) J °भीरुत्तणं । मरणाणुबंधि त्ति, J जाणीयति P जाणीयं. 29) P कुडुंबं, P inter. कुडुंबं & सव्वं, P अहवा पच्छ, P कुटुंब-. 30) P कुटुंबं. 31) P om. इमं, J om. य. 32) P om. जं करियव्वं, J हत्थिणाउराभिमुहं, P गोयमा, P om. ममं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुच्छिओ य अहं इमिणा 'को सो वणम्मि पक्खी'। साहिओ मए जहा 'दिव्वो' त्ति।' इमं च सोऊण उप्पण्ण-वेरग्गो णिव्विण्ण-काम-भोगो उप्पण्ण-कुडुंब-णीसार-बुद्धी संजाय-विवेगो उइण्ण-चारित्तावरणीय-खओवसमत्तणेण चारित्त-वेदणीय-सुह-कम्मो त्ति ताणं समप्पिऊण रयणाइं आउच्छिऊण पक्खिणोवएस-सरिसुत्तर-पडिउत्तरालावेहिं ममं चेय सयासं एहिइ त्ति।

§ ४१०) इमं च एत्तियं जाव भगवं वीरणाहो साहइ गोयमाईणं ताव संपत्तो सयंभुदेवो त्ति, पयाहिणं च काऊण पायवडणुट्ठिओ भणिउं समाढत्तो। अवि य।

'जय संसार-महोयहि-जर-मरणावत्त-भंगुर-तरंगे। जय जीव-जाणवत्तो सिद्धि-पुरी-सामिओ तं सि॥
भगवं पडिबुद्धो हं वणम्मि सोऊण पक्खिणो वयणं। ता देसु णियय-दिक्खं कुणसु पसायं सुदीणस्स॥'

इमं च वयणं सोऊण दिक्खिओ जहा-विहिणा भगवया गोदम-गणहारिणा चंडसोम-जीवो सयंभुदेवो त्ति॥

§ ४११) एवं च भगवं भव्व-कुसुयागर-सहस्स-संबोहओ विहरमाणो मगहा णाम देसो, तत्थ य रायगिहं णाम णयरं, तत्थ संपत्तो, देव-दाणव-गणेहिं विरइयं समवसरणं। तत्थ य सिरिसेणिओ णाम राया। सो य तं भगवंतं सोऊण समागयं जिणचंदं हरिस-वस-वियसमाण-मुह-पंकओ सयल-जण-हलबोल-वड्डमाण-कलयलो गंतुं पयत्तो। भगवंतं वंदिऊण संपत्तो, समवसरणं पविट्ठो। ति-पयाहिणीकओ भगवं जिणयंदो, पायवडणुट्ठिएण य भणियं तेण। अवि य।

'जय दुज्जय-मोह-महा-गइंद-णिद्दारणम्मि पंचमुहा। जय विसम-कम्म-काणण-दहणेक्क-पयाव-जलण-समा॥
जय कोवाणल-पसरिय-विवेय-जल-जलहरिंद-सारिच्छा। जय माणुद्धर-पव्वय-मुसुमूरण-पच्चला कुलिसा॥
जय माया-रुसिय-महाभुयंगि तं णाग-मणि-सारिच्छा। जय लोह-महारक्खस-णिण्णासण-सिद्ध-मंत-समा॥
जय अरई-रइ-णासण जय-णिज्जिय हास-वज्जिय जयाहि। जयहि दुगुच्छा-मुक्का असोय जय जयसु तं देव॥
जयहि ण-पुरिस ण-महिला णीभय जय वेय-वज्जिय जयाहि। सम्मत्त-मिच्छ-रहिया पंच-विहण्णाण-भय-मुक्का॥
अज्जेव अहं जाओ अज्ज य पेच्छामि अज्ज णिसुणेमि। मगहा-रज्जम्मि ठिओ दट्ठुं तुह वीर मुहयंदं॥
तं णाहो तं सरणं तं माया बंधवो तुमं ताओ। सासय-सुहस्स मुणिवर जेण तए देसिओ मग्गो॥'

त्ति भणंतो णिवडिओ चलणेसु, णिसण्णो य णिययासणट्ठाणेसु। साहियं च भगवया अंगोवंग-पविट्ठं सुत्त-णाणं मइ-णाणं च, परूवियं भव-पच्चयं कम्मक्खओवसमयं च णाणा-संठाणं ओहि-णाणं, सिट्ठं तु उज्जुय-विउल-मइ-भेयं मणुय-लोयब्भंतरं मणपज्जव-णाणं, वज्जरियं च सयल-लोयब्भंतर-पयत्थ-सत्थ-जहावट्ठिय-सहाव-पयासयं केवल-दंसणं केवल-णाणं च त्ति।

§ ४१२) एत्थंतरम्मि आबद्ध-करयलंजलिउडेण पुच्छियं महारायाहिराइणा सिरिसेणिएण 'भगवं, केण उण णाणेण एए णेमित्तिणो सुहासुहं तीयाणागय-पच्चुप्पण्णं वियाणंता दीसंति, केण वा पयारेणं' ति। भगवया भणियं। अवि य।

'देवाणुपिया एयं सुय-णाणं जेण जाणए लोओ। केवलि-सुत्त-णिबद्धं केवलिणा केवली-सुत्तं॥
जइ जाणिऊण इच्छसि सुणेसु णरणाह थोव-वित्थरियं। अप्पक्खरं महत्थं जह भणियं केवलि-रिसीहिं॥
होंति इमे अ-इ-क-च-ट-त-प-य-सक्खरा वि य सोहणा वण्णा। आ-ई-ख-छ-ठ-थ-फ-र-सा असोहणा ते पुणो भणिया॥
ए-ऊ-ग-ज-ड-द-ब-ल-सा सुहया अह होंति सव्व-कज्जेसु। ए-ओ-घ-झ-ढ-ध-भ-व-हा ण सोहणा सव्व-कज्जेसु॥
हो होंति ओं-ओ-ण-न-मा मीस-सहावा हवंति कज्जेसु। संपइ फलं पि वोच्छं एयाणं सव्व-वण्णाणं॥
सोहणमसोहणं वा सुह-दुक्खं संधि-विग्गहं चेय। एइ ण एइ व लाभो ण लाभ-जय-अजय-कज्जे य॥
होइ ण होइ व कज्जं खेममखेमं च अत्थि णत्थी वा। संपत्ती व विवत्ती जीविद-मरणं व रिसमरिसं॥
पढम-वयणम्मि पढमा सुह-वण्णा होंति अहव बहुया वा। ता जाण कज्ज-सिद्धी असुहेहिँ ण सिज्झए कज्जं॥
अहवा पुच्छय-वयणं पढमं घेत्तूण तं णिरूवेसु। विहि-वयणे होइ सुहं असुहं पडिसेह-वयणम्मि॥ अहवा।

1 > P अहो for अहं, P च सोऊप्पन्न-. 2 > P निच्छिन्नकामभोगा, P कुटुंवनीरसा बुद्धी, J विवेओ, P उदिओय for उइण्ण, P वेयणीय. 3 > P सरिसमुत्तर, P चेय सयासं एहिय त्ति. 7 > P दिखं. 8 > J भगवओ, P गोयम. 9 > J om. य-. 10 > P समवसवरणं, J om. तं, P भगवं. 11 > J जिणयंदं, P सयलसजलहरबोलवट्टमाण. 12 > P पविट्ठा, P जित्तंणयंदो, P om. य. 13 > P विद्धारणंमि, P विसय for विसम. 14 > P विविंयजलहरिंद, J सारिच्छ, P जइ माणुमहपव्वय, P मुसुमूरणलिसा ॥, J कुलिस. 15 > P मोह for लोह, P विण्णासण. 16 > J अरतिरतीणासण, P -रयणासण जयनिव्विखय, P जहाहि ।, P जुगुंछा, P देवा. 17 > J वेत-, P तित्थय for मिच्छ, J विवण्णाण. 18 > J अज्जेय, J दिट्ठं for दट्ठुं. 19 > P पविट्ठो सुयनाणं. 21 > P भव्व for भव, J खयोवसमयं, P सिद्धं उज्जय, JP मति-, J -भेदं. 22 > P om. च, J जहावट्ठिय, P दंसण. 23 > P °रायाहिराएण, J om. सिरिसेणिएण. 24 > P एते निमित्तिण्णो, J तीताणागत-. 25 > P देवाणुप्पिया, J एदं. 26 > P वोघ for थोव, P केवल-, J -इसीहि. 27 > P om. इमे, J अ-ए-, P om. इ, P शक्खरा, J चेअ for विय, J ए for ई, P ढतप for ठथ, P फरया. 28 > J ओ for ऊ, JP अ for ओ-. 29 > P ओअडञणनमाः अं अः मीस-, J adds जदा before ओंण, P ति for पि, P वणाणं ॥. 30 > J सोहण असोहणं, J एउ for second एइ, J जय अज्जयं चेअ ॥. 31 > P क्खेममक्खेमं. P व for वा, P विपत्ती जीविय, P मरणं वरिसं ॥. 32 > J वयणं पि, P पढमो सुहवणो होति, J adds जा before ता, J सिज्झदी, P सिज्झए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फल-कुसुमक्खय-पत्ते रूवय अण्णं च पुरिस-रूवं च । अट्ट-विभत्ते लद्धं तेण फलं सुणसु तं एयं ॥
होइ छए सव्व-फलं धूमे फल-णिप्फलं च संतावो । सीहे विक्कम-लाभो साणे तुच्छाह-वदिवित्ती ॥
वसहे गउरव-लाभो खरम्मि कलहो य सोय-संतावो । होइ गए पुण पूया टंके णिच्चं परिब्भमणं ॥ अहवा ।
पुच्छाणंतर-पुलइय-दिट्ठे णिसुए व्व सोहणे अत्थे । कज्जस्स अत्थि सिद्धी विवरीए णत्थि सा भणसु ॥'

त्ति साहिय-मेत्ते भगवया जिणयंदेणं एत्थंतरम्मि सिरिसेणिय-रण्णो पुत्तो महारह-कुमारो णाम अट्ठ-वरिस-मेत्तो तेण चलण-पणाम-पच्चुट्ठिएण भणियं । अवि य ।

'जाणमि अज्ज सुमिणे भगवं पेच्छामि कसिण-वण-वण्णं । कालायस-कंचण-मिसियं व एक्कं महापुंजं ॥
जाणामि मए धमियं जलियं जालोलि-तावियं गलियं । कालास-मीस-गलियं जच्च-सुवण्णं ठियं तत्थ ।
एत्थंतरे विउद्धो भगवं पडु-पडह-संख-सद्देहिं । साहसु सुमिणस्स फलं संपइ किं एत्थ भवियव्वं ॥'

भगवया भणियं ।

'भद्दमुह एस सुमिणो साहइ सम्मत्त-चरण-दिक्खाए । केवल-णाणं सिद्धी सासय-सुह-संगमं अंते ॥
कालायसयं कम्मं जीयं कणयं च मीसियं तत्थ । झाणाणलेण धमिउं सुद्धो जीवो तए ठविओ ॥
अण्णं च तुमं एरिसो चरिम-सरीरो य एत्थ उप्पण्णो । कुवलयमाला-जीवो देवो देवत्तणाओ तुमं ॥
सव्वं च तस्स कहियं मायाइच्चादि-देव-पज्जंतं । सव्वे ते पव्वइया तुम्ह सहाया इमे पेच्छ ॥'

इमं च वुत्तंतं णिसामिऊण भणियं महारह-कुमारेण 'भगवं, जइ एवं तो विसमो एस चित्त-तुरंगमो' । 'किं विलंबेसि' त्ति भणिए भगवया गणहारिणा दिक्खिओ जहा-विहिणा महारह-कुमारो त्ति । मिलिया य ते पंच वि जणा अवरोप्परं जाणंति जहा 'कय-पुव्व-संकेया सम्मत्त-लंभे अम्हे' त्ति । एवं च ताण भगवया जिणयंदेण समं विहरमाणाणं वोलीणाइं बहुयाइं वासाइं ।

§ ४१३) साहियं च भगवया सव्वण्णुणा मणिरह-कुमार-साहुणो जहा 'तुज्झ थोवं आउयं ति जाणिऊण जहासुहं संलेहणा-कम्मं पडिवज्जिऊण उत्तिम-ठाणाराहणं'त्ति । तओ मणिरहकुमारो वि 'इच्छं' ति अणुमण्णमाणेण समाढत्ता चउ-खंधा आराहणा काउं । कय-संलेहणा-कम्मो दिण्णालोयण-वित्थरो णिसण्णो तक्कालप्पाओग्गे फासुय-संथारए, तत्थ भणिउं समाढत्तो । अवि य ।

'पणमामि तित्थणाहे तित्थे तित्थाहिवं च उसभ-जिणं । अवसेसे तित्थयरे वीर-जिणिंदं च णमिऊणं ॥
णमिऊण गणहरिंदे आयरिए धम्मदायए सिरसा । णमिऊण सव्व-साधू चउव्विधाराहणं वोच्छं ॥
णाणे दंसण-चरणे विरिया आराहणा चउत्थी उ । णाणे अट्ठ वियप्पा तं चिय वोच्छामि ता णिउणं ॥
पढमं काले विणए बहुमाणुवहाण तह य णिण्हवणे । वंजण-अत्थ-तदुभए णाणस्साराहओ तेसु ॥
जो काले सज्झाओ सो ण कओ जो कओ अकालम्मि । जं जह-कालं ण कयं तं णिंदे तं ५ गरिहामि ॥
अब्भुट्ठाणं अंजलि आसण-णीयं च विणय-पडिवत्ती । जा ण कयं म्ह गुरूणं तमहं णिंदामि भावेणं ॥
भावेण अणुदिणं चिय एस गुरू पंडिओ महप्पा य । ण कओ जो बहु-माणो मिच्छा हो दुक्कडं तस्स ॥
जं जत्थ तवच्चरणं अंगोवंगेसु तह पइण्णेसु । ण कयं उवहाणं मे एण्हिं णिंदामि तं सव्वं ॥
असुयं पि सुयं भणियं सुयं पि ण सुयं ति कह वि मूढेण । अण्णाए णिण्हवियं तमहं णिंदामि भावेण ॥
मत्ता-बिंदु-वियप्पं काउं अण्णत्थ जोडियं अत्थं । वंजण-विवंजणेण य एण्हिं णिंदामि तं पावं ॥

1) J पत्तो, P adds रूवयपत्ते before रूवय. 2) J अए for छए, P धूमफल, P सिंघे for सीहे, P -वनिवित्ती. 3) P गयवरलाभो, P ढंके for टंके, J पडिक्कमणं ॥. 4) P पुच्छलइय, J -दिट्ठो, P णिसुणे, J अत्थ for अत्थि. 6) P -प्पणाम. 7) P पेच्छमि, P वणं ।, P मीसयं व एक्कपुंजं. 8) P धंमियजलियजलिय जालालि, J कालायसमीसयं गलियं, P om. कालासमीस-गलियं (emended), P सुवण्णहियं तत्थ. 9) P सुविणस्स. 11) P सुविणो, P दिक्खाया, P नाणसिद्धी. 12) P कालाययं, J मेछिअं for मीसियं, P सुद्धिय for धमिउं, P ठुविओ. 13) P चरिमो for एरिसो, P देवा देवत्तणाउ तुमं. 14) P om. ते, J पव्वइता, P पेच्छा. 15) P त for च, J वुत्तं for वुत्तंतं, P adds च after भणियं, J ता for तो, P क विलंबसि. 16) J जहाविहाणं, J om. य, P जणो, P जाणति. 17) J णेण for ताण. 19) J थोअं, P जाणिऊण अम्हासुहं. 20) J पव्व-ज्जिऊण, J उत्तम, P -ठ्ठारोहणं, P तव for तओ, P मणिरह साहुणोवि, P अण्णुमण्ण°, P समाढत्तो. 21) J आराधणा P आराहणं, P कयसंमोहणाकंमो. P °लोयणाविलोयणा वित्थारो, P तक्कालपओगे, J तत्थ य भणिउमाढत्तो. 23) P तित्थाहवं. 24) P -साहू चउव्विहे रोहणं, J °धाराहणा. 25) P विरिय. 26) JP बहुमाणं, J °वधाण, J तदुभये. 27) J om. जो, J कतो, P om. कओ after जो, P -काले, J कओ तं. 28) J णिअय P विण for विणय, P नाणकयं मि for जा etc., J कयं म्ह. 29) P जा बहु हो दुक्कडं for जो etc. 30) P तवतच्चरणं. 31) P अन्नाओ. 32) P ॥ मित्ता, J च for य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमयप्पवाह-सरिसे जिण-वयणे जं कहा-विमूढेण । अत्थस्स विवज्जासो रइओ णिंदे तयं पावं ॥
सुत्तत्थाणं दोण्ह वि मोहेण व अथव होज्ज हासेण । जो कह वि विवज्जासो एण्हिं णिंदामि तं पावं ॥
उस्सुत्तो उम्मग्गो उकरणिज्जो व्व एत्थ जो जोग्गो । मोहंधेण ण दिट्ठो संपइ आराधिमो णाणं ॥
एसो णाणायारो भगवं जइ खंडिओ मए कह वि । मिच्छामि दुक्कडं तं संपइ अह दंसणं वोच्छं ॥
णिस्संकिय-णिक्कंखिय-णिव्वितिगिच्छा अमूढ-दिट्ठी य । उववूह-थिरीकरणे वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ॥
सच्चं जिणाण वयणं एत्थ वियप्पो ण चेय कायव्वो । एयं होज्ज ण होज्ज व जइ मह संका तयं णिंदे ॥
गेण्हामि इमं दिक्खं एयं लिंगं इमो य परमत्थो । मूढेण कंखिओ मे मिच्छा हो दुक्कडं तत्थ ॥
अह होज्ज ण वा मोक्खं आयरियादीण जा य वितिगिच्छा । जइ मे कह वि कया सा णिंदामि ह पावयं एण्हिं ॥
दट्ठूण रिद्धि-पूयं परवाईणं कुतित्थ-मग्गेसु । जइ मह दिट्ठी मूढा एण्हिं णिंदामि तं पावं ॥
खमगं वेयावच्चं सज्झाए चेव वावडं साहुं । उववूहणा य ण कया एस पमाओ तयं णिंदे ॥
साधु-किरियासु कासु वि दट्ठुं सीयंतयं मुणिं ण कया । बहु-दोसे माणुस्से थिरिकरणा णिंदिरे-तमहं ॥
गुरु-बाल-तवस्सीणं समाण-धम्माण वा वि सव्वाणं । वच्छल्लं ण कयं मे आहारादीहिँ तं णिंदे ॥
मेरु व्व णिप्पयंपं जिणाण वयणं तहा वि सत्तीए । ण कयं पभावणं मे एस पमाओ तयं णिंदे ॥
पावयणी धम्मकही वाई णेमित्तिओ तवस्सी य । विज्जा-सिद्धो य कवी अट्ठ व पभावया भणिया ॥
सव्वाणं पि पसंसा कायव्वा सव्वहा विसुद्धेण । सा ण कया तं णिंदे सम्मत्ताराहणा सा हु ॥
पंच समिईओ सम्मं गुत्तीओ तिण्णि जाओ भणियाओ । पवयण-मादीयाओ चारित्ताराहणा एसा ॥
इरियावहं पयत्तो जुगमेत्त-णिहित्त-णयण-णिक्खेवो । जं ण गओ हं तइया मिच्छामि ह दुक्कडं तस्स ॥
जंपंतेण य तइया भासा-समिएण जं ण आलत्तं । तस्स पमायस्साहं पायच्छित्तं पवज्जामि ॥
वत्थे पाणे भत्तेसण-गहण-घासमादीया । एसण-समिई ण कया तं आणा-खंडणं णिंदे ॥
आयाण-भंड-मेत्ते णिक्खेवग्गहण-ठावणे जं च । दुपमज्जिय-पडिलेहा एस पमाओ तयं णिंदे ॥
उच्चारे पासवणे खेले सिंघाण-जल्ल-समितीओ । दुप्पडिलेह-पमज्जिय उम्मग्गे णिंदिओ सो हु ॥
भंजंतो सीलवणं मत्तो मण-कुंजरो वियरमाणो । जिण-वयण-वारि-बंधे जेण ण गुत्तो तयं णिंदे ॥
जो वयण-वण-दवग्गी पज्जलिओ डहइ संजमारामं । मोण-जलेण णिसित्तो एस पमाओ तयं णिंदे ॥
अय-गोलओ व्व काओ जोग-फुलिंगेहिँ डहइ सव्व-जिए । तुंडेण सो ण गुत्तो संजम-मइएण तं णिंदे ॥
इय एत्थ अईयारो पंचसु समिईसु तिसु व गुत्तीसु । जो जो य महं जाओ तं णिंदे तं च गरिहामि ॥
बारस-विधम्मि वि तवे सब्भिंतर-बाहिरे जिणक्खाए । संते विरियम्मि मए णिगूहियं जं तयं णिंदे ॥'

एवं च चउक्खंधं आराहणं आराहिऊण मणिरहकुमारो साधू अउव्वकरणेणं खवग-सेढीए अणंत-वर-णाण-दंसणं उप्पाडिऊण तक्काले कालस्स खवगताए अंतगड-केवली जाओ त्ति ॥

§ ४१४) एवं च वच्चमाणेसु दियहेसु कामगइंद-साधू वि णिय-आउक्खयं जाणिऊण कय-संलेहणाइ-कप्पो णिसण्णो संथारए । तत्थ भणिउमाढत्तो । अवि य ।

णमिऊण तिलोय-गुरुं उसभं तेलोक्क-मंगलं पढमं । अवसेसे य जिणवरे करेमि सामाइयं एण्हिं ॥
एस करेमि य भंते सामाइय तिविध जोग-करणेण । रायद्दोस-विमुक्को दोण्ह वि मज्झम्मि वट्टामि ॥

1 > P सरिसो जिणं वयणं, P विवज्जो for विवज्जासो, P om. रइओ णिंदे etc. to उक्करणिज्जो. 3 > P जोगो ।, P आराहणो णाणं. 5 > P णीसंकिय, P णिव्वित्तिगिच्छा, J दिट्ठीया ।, P -पभावणो. 6 > J एवं, J व्व for व, P जय मह. 7 > J व्व for य, J मो for मे. 8 > P मोह for अह, J आयरियातीण, P जा भवे कुच्छा. 9 > P परवाइणं. 10 > J गमगं for खमगं, J J वेतावचं, P चेय, P उव्वबूहा णेय कयाइस, J कता एस पमातो. 11 > P साधु-, P दट्ठुं, J सीतंतयं, J थिरिअवणा P थिरकरणे. 13 > P व्व निप्पकंपं, P वि तत्तीए, J om. मे. 14 > J धम्मकधी वाती, P वातीणोमित्तिओ, P व वंभावया. 15 > J सव्वाण वि यासंसा, P या for कया. 16 > JP समितीओ, J -मातीयाओ. 17 > J एरिसावहे for इरियावहं, P नय for णयण, J जण्णत्त उहं, J जण्ण for जं ण, P तस्सा. 19 > J पाणे भवेणेसणगहण-, P गहणे, JP समिती, J कता. 20 > J आताण, P मेत्त, J णिक्खेवणगहण, P °ग्गहणट्ठाणसेज्जं च । उपमपडिलेहा, J पमातो. 21 > P सिंहाण, P दुडिलेह, P उम्मग्गा, P साहू ॥. 22 > P बंधो. 23 > P । नाणजण्णेण निसित्ति. 24 > P अतमोलउच्चकाओ, P कूडेण for तुंडेण. 25 > JP अईयारो, J J समितीसु, P तीसु गुत्तीसु, P जो कोइ महं. 26 > P -विहंमि, J य for वि, J जिणक्खाते, P निग्गहियं. 27 > P °कुमारसाहू, P खवसेढीए, J सेणीए अणंतं, P उप्पडिऊण तक्कालो. 28 > P खयंताए, P केवली जाओ. 29 > J वच्चमाणदियहेसु, P साहू वि, P संलेहणो कप्पो J संलेहणाउकम्मो. 31 > P om. य, J सामाइअं P सामाइयं. 32 > P तिविहकंमजोएणं ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं सुहुम बायरं वा पाण-वहं लोह-मोह-जुत्तस्स । तिविधेण कयं तिविधं तिविधेण वि वोसिरे सव्वं ॥
जं कह वि मुसं भणियं हास-भय-कोध-लोभ-मोहेहिं । तं तिविध-काल-जुत्तं तिविधेण य वोसिरे तिविधं ॥
थोवं बहुं व कत्थइ दव्वं पारक्कयं अद्दिण्णं तु । तं तिविधम्मि वि काले वोसिर तिविधं पि तिविधेणं ॥
जं णर-तिरिक्ख-दिव्वे मेहुण-संजोग-भावियं चित्तं । तिविधे वि काल-जोगे वोसिर तिविधं पि तिविधेण ॥
चित्ताचित्तो मीसो परिग्गहो कह वि भाव-संजुत्तो । तिविधम्मि वि तं काले तिविधं तिविधेण वोसिरसु ॥
राईए जं भुत्तं असणं पाणं व खाइमं अण्णं । तिविधम्मि वि तं काले वोसिर तिविधेण तिविधं पि ॥
जो मह धणे ममत्तो महिलासु य सुंदरासु तरुणीसु । रयणेसु रूवएसु व तिविधं तिविधेण वोसिरियं ॥
वत्थेसु जो ममत्तो पत्तेसु य डंडओवयरणेसु । सीसेसु जो ममत्तो सव्वो तिविधेण वोसिरिओ ॥
पुत्तेसु जो ममत्तो धूयासु य सुंदरेसु भिच्चेसु । अहवा सहोदरेसु व सव्वो तिविहेण वोसिरिओ ॥
भइणीसु जो ममत्तो माया-पित्तेसु अहव मित्तेसु । सो सव्वो वि दुरंतो तिविधं तिविधेण वोसिरिओ ॥
सामिम्मि जो ममत्तो सयणे सुयणे व्व परिजणे जे वि । भवणे व्व जो ममत्तो सव्वो तिविधेण वोसिरिओ ॥
बंधुम्मि जो सिणेहो सेज्जा-संथार-फलहए वा वि । उवयरणम्मि ममत्तो सव्वे तिविधेण वोसिरिओ ॥
देहम्मि जो ममत्तो मा मे सीदादि होज्ज देहस्स । सो सव्वो वि दुरंतो तिविहं तिविधेण वोसिरिओ ॥
णियय-सहाव-ममत्तो अम्ह सहावो त्ति सुंदरो एसो । सो सव्वो वि दुरंतो वोसिरिओ मज्झ तिविधेण ॥
देसेसु जो ममत्तो अम्हं णगरो त्ति अम्ह देसो त्ति । संहेसु जो ममत्तो तिविहेणं वोसिरे सव्वं ॥
जो कोइ कओ कोवो कम्मि वि जीवम्मि मूढ-भावेण । वोसिरिओ सो सव्वो एण्हिं सो खमउ मह सव्वं ॥
जो कोइ कओ माणो कम्मि वि जीवम्मि मूढ-चित्तेण । सो खमउ ममं सव्वं वोसिरिओ सो मए माणो ॥
जा काइ कया माया कम्मि वि जीवम्मि मूढ-भावेण । सो खमउ ममं सव्वं वोसिरिया सा मए एण्हिं ॥
जो कोइ कओ लोहो परस्स दव्वम्मि मूढ-भावेण । सो खमउ महं सव्वं वोसिरिओ सो मए लोभो ॥
जो कोइ मए विहिओ कम्मि वि कालम्मि राय-रत्तेण । सो मज्झ खमउ एण्हिं मिच्छामि ह दुक्कडं तस्स ॥
जो मे दुक्खावियओ ठाणाठाणं व संकमं णीओ । सो खमउ मज्झ एण्हिं मिच्छामि ह दुक्कडं तस्स ॥
पेसुण्णं जस्स कयं अलिए सच्चे व भाणिए दोसे । रागेण व दोसेण व एण्हिं सो खमउ मह सव्वं ॥
णिट्ठुर-खर-फरुसं वा दुव्वयणं जस्स किंचि मे भणियं । विद्धं च मम्म-वेहं सो सव्वं खमउ मह एण्हिं ॥
दाऊण ण दिण्णं चिय आसा-भंगो व्व जस्स मे रइओ । दिज्जंतं व णिरुद्धं सो एण्हिं खमउ मह सव्वं ॥
जो दीणो परिभूओ गह-गहिओ रोर-वाहि-परिभूओ । हसिओ विडंबणाहिं एण्हिं सो खमउ मह सव्वं ॥
अण्णेसुं पि भवेसुं जो जं भणिओ अणिट्ठ-कडुयं वा । सो खमउ मज्झ एण्हिं एसो मे खामणा-कालो ॥
मित्तं पि खमउ मज्झं खमउ अमित्तो वि मज्झत्थो । मित्तामित्त-विमुक्को मज्झत्थो एस मे जीवो ॥
खामेमि अहं मित्ते एस अमित्ते वि हं खमावेमि । खामेमि दोण्णि मग्गे मज्झत्था होंतु मे सव्वे ॥
मित्तो होइ अमित्तो होंति अमित्ता खणेण ते मित्ता । मित्तामित्त-विवेओ काऊण ण जुज्जए एण्हिं ॥
सयणा खमंतु मज्झं खामंतु तह परियणा वि खमेमि । सयणो परो व्व संपइ दोण्णि वि सरिसा महं होंति ॥
देवत्तणम्मि देवा तिरियत्तणे व्व होंति जे केइ । दुक्खेण मए ठविया खमंतु सव्वे वि ते मज्झं ॥
णरयत्तणम्मि णरया मणुया मणुयत्तणम्मि जे केइ । दुक्खेण मए ठविया खमंतु ते मज्झ सव्वे वि ॥
छण्ह वि जीव-णिकायाण जं मए किंचि मंगुलं रइयं । ते मे खमंतु सव्वे एस खमावेमि भावेण ॥ सव्वहा,

1 > P बातरं, P -मोहजोत्तेणं । तिविहेण, P तिविहं तिविहेण. 2 > P भयकोहलोह, P तिविह, P repeats काल, P तिविहेणं वोसिरे तिविहं. 3 > P कत्थ विदड्ढं पारक्कयं च जं गहियं । जं तिविहंमि, J पारकगाहिअयं अदिण्णं तु, P तिविहं पि तिविहेणं. 4 > J संजोअ, P तिविहे, J कालजोए, P तिविहं पि तिविहेण. 5 > P om. तिविधम्मि वि तं काले, P तिविहं तिविहेण. 6 > J खातिमं, P तिविहंमि, P कालं वोसिर तिविहं पि तिविहेण. 7 > P जा for जो, P सुंदरातरुणीसु, J तरुणासु, P om. व, P तिविहं तिविहेण. 8 > ममत्तो वत्तेसु व, P °वमरणेसु, J सिस्सेसु, P तिविहेण. 9 > J धूताओ, P सुंदरेसु भिच्चेसु, J सहोअरेसु सव्वो. 10 > P तिविहं तिविहेण. 11 > P सोमिम्मि जो, P परजणो जो वि, P तिविहेण. 12 > P मत्तो for ममत्तो, J सव्वो, P तिविहेण. 13 > P सीतादि, J सव्वो for तिविहं, P तिविहेण. 14 > P एसा I, P तिविहेण. 15 > P सड्ढेसु, P वोसिरं सव्वं. 16 > P मूढभावे माणेण. 17 > P जो को वि कया, J काय for कया. 19 > P कए for कओ, P ममं for महं. 20 > P कोवि मए, P inter. मज्झ & खमउ. 21 > P दुक्खविययओ. 22 > J य for व, P सव्वो for सव्वं. 23 > P भणिउयं । बद्धं, J विद्धन्तमम्म-, P सव्वो खमउ. 24 > P जो मए for जस्स मे. 25 > P रोरवा for रोर, P om. मह सव्वं ॥ अण्णेसुं पि etc. to मित्तं पि खमउ मज्झं, P adds खमउ before मज्झत्थो. 27 > J om. मज्झं, P मित्तोमित्त. 28 > P एस आमित्ते, P मित्तवग्गे for दोण्णि-मग्गे. 29 > P होउ ममित्ता, J ममित्तो for अमित्तो, P repeats होति for होंति, P मित्तविवेओ काऊण ण जुज्जए इण्हिं ॥ सुयणा. 30 > J परिजणा. 31 > P adds तिरिया after देवा, J तिरिअत्तणए व्व, P ठुविया, J inter. सव्वेवि & ते (मे) मज्झं. 32 > P क्खमंतु मे मज्झ. 33 > J छण्हं पि जीवमणुआकायाणं जं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से जाणमजाणं वा रागद्दोसेहिँ अहव मोहेणं । जं दुक्खविया जीवा खमंतु ते मज्झ सव्वे वि ॥
खामेमि सव्व-जीवे सव्वे जीवा खमंतु मे । मेत्ती मे सव्व-भूएसु वेरं मज्झ ण केणइ ॥'

एवं च कय-सावज्ज-जोग-वोसिरणो कय-पुव्व-दुक्कय-दूमिय-जंतु-खामणा-परो वड्डमाण-सुहज्झवसाय-कंडओ अउव्व-करण-पडिवण्ण-खवग-सेढि-परिणामो उप्पण्ण-केवल-णाण-दंसण-धरो अंतगडो कामगइंद-मुणिवरो त्ति ।

§ ४१५) एवं च वच्चमाणेसु दियहेसु वइरगुत्त-साधू वि णाऊण आउय-कम्मक्खयं दिण्णालोयणो उद्धरिय-भाव-सल्लो कय-कायव्वो णिसण्णो संथारए, तत्थ भणिउमाढत्तो । अवि य ।

'एस करेमि पणामं जिणवर-तित्थस्स बारसंगस्स । तित्थयराणं च णमो णमो णमो सव्व-साधूणं ॥
काऊण णमोक्कारं धम्मायरियस्स धम्म-जणयस्स । भावेण पडिक्कमणं एसो काहामि समयम्मि ॥
कय-सामाइय-कम्मो सोहिय-इरियावहोसमण-चित्तो । इच्छिय-गोयर-चरिओ पगाम-सेज्जाए णिव्विण्णो ॥
मह मंगलमरहंता सिद्धा साहू य णाण-विणय-धणा । केवलिणा पण्णत्तो जो धम्मो मंगलं सो मे ॥
सरणं मह अरहंता सिद्धा साधू य बंभ-तव-जुत्ता । केवलिणा पण्णत्तो धम्मो सरणं च ताणं च ॥
जिणधम्मो मह माया जणओ य गुरू सहोयरो साहू । अह धम्म-परा मह बंधवा य अण्णं पुणो जालं ॥
किं सारं जिणधम्मो किं सरणं साहुणो जए सयले । किं सोक्खं सम्मत्तं को बंधो णाम मिच्छत्तं ॥
अस्संजमम्मि विरओ रागद्दोसे य बंधणं णिंदे । मण-वयण-काय-डंडे विरओ तिण्हं पि डंडाणं ॥
गुत्तीहिँ तीहिँ गुत्तो णीसल्लो तह य तीहिँ सल्लेहिं । माया-णिदाण-सल्ले पडिक्कमे तह य मिच्छत्ते ॥
इड्डी-गारव-रहिओ सातरसा-गारवे पडिक्कंतो । णाण-विराहण-रहिओ संपुण्णो दंसणे चरणे ॥
तह कोह-माण-माया-लोभ-कसायस्स मे पडिक्कंतं । आहार-भय-परिग्गह-मेहुण-सण्णं परिहरामि ॥
इत्थि-कह-भत्त-देसे राय-कहा चेय मे पडिक्कंता । अट्टं रोद्दं धम्मं सुक्कज्झाणे पडिक्कमणं ॥
सद्द-रस-रूव-गंधे फासे य पडिक्कमामि काम-गुणे । काइय-अहिगरणादी-पंचहिँ किरियाहिँ संकप्पे ॥
पंच-महव्वय-जुत्तो पंचहिँ समिईहिँ समियओ अहयं । छज्जीव-णिकायाणं संरक्खण-माणसे जुत्तो ॥
पडिक्कंतो छल्लेसा-सत्त-भयट्ठाण-वज्जिओ अहयं । पम्हुट्ठ-दुट्ठ-चेट्ठो अट्ठ-मयट्ठाण-पब्भट्ठो ॥
णव-बंभ-गुत्ति-गुत्तो दस-विह-धम्मम्मि सुट्ठु आउत्तो । समणोवासग-पडिमा एगारसयं पडिक्कंतो ॥
बारस-भिक्खू-पडिमा-संजुत्तो तेरसाहिँ किरियाहिं । चोद्दस-भूयग्गामे पडिक्कमे खंडियं जं मे ॥
परमाहम्मिय-ठाणे पण्णरसं ते वि मे पडिक्कंते । गाहा-सोलसएहिं पडिक्कमे सोलसेहिं पि ॥
अस्संजमम्मि सत्तारसम्मि अट्ठारसे य अब्बंभे । एगूणवीस-संखे पडिक्कमे णाम अज्झयणे ॥
असमाही-ठाणाणं वीसण्हं एक्कवीस-सबलेहिं । बावीस-परीसह-वेयणम्मि एत्थं पडिक्कंतो ॥
तेवीसं सूयगडे अज्झयणा ताण हं पडिक्कंतो । चउवीसं अरिहंते अस्सद्दहणे पडिक्कंतो ॥
वीसं पंच य सिद्धा समए जा भावणाओ ताणं पि । छव्वीसं दस-कप्पे ववहारा सद्दहे ते वि ॥
अणयारय-कप्पाणं सत्तावीसा य सद्दहे अहयं । अट्ठावीस-विहम्मि आयय-पगप्प-गहणम्मि ॥
पाव-सुय-पसंगाणं अउणत्तीसाण हं पडिक्कंतो । तीसं च मोहणिज्जे ठाणा णिंदामि ते सव्वे ॥
एक्कत्तीसं च गुणे सिद्धादीणं च सद्दहे ते वि । बत्तीस-जोग-संगह-पडिक्कमे सव्व-ठाणेसु ॥
तेत्तीसाए आसायणाहिँ अरहंत-आइगा एगा । अरहंताणं पढमं णिंदे आसायणा जाओ ॥
सिद्धाणायरियाणं तह य उवज्झाय-सव्व-साहूणं । समणीण सावयाण य साविय-वग्गस्स जा वि कया ॥

1) P रागद्दोसेण, P खमंति. 2) J भूतेसु. 3) J वोसिरणा P वोसिरिणो, P पुव्वयदुक्खय, J दुमिअ, P जंतक्खामणापरो वड्ढमाण-, P कंटओ. 4) J सेढी-. 5) P एवं वड्ढमाणदियहेसु, P साहू वि, J दिण्णो°. 6) J संसारए तत्थ. 7) P साहूणं. 8) P जणियस्स. 10) P मंगलमरिहंता, P जं for जो. 11) P साहू, P inter. सरणं च & ताणं च. 12) P सहोयरा, P सह for अह, J धम्मयरा, P म for मह. 13) P जले for जए, P धंमो for बंधो. 14) J विरतो, P -दंडे, P दंडाणं. 15) P om. तह य, P adds हियय before सल्लेहिं, J णियाण, P मिच्छत्तो. 16) P संपुण्णदंसणे. 17) J लोह-, P पडिक्कंतो ।. 18) P पडिक्कमणे ॥. 19) P फासेसु य, P काइह-, J अधिगरणाती-, P संतप्पो ॥. 20) J समितीहि समितओ, J संरक्खमाणुसे जुत्तो- 21) JP पडिक्कंतो. 23) J भिक्खप्पडिमा, J भूतग्गामे. 24) P परमाहम्मियट्ठाणे, J पण्णारस ते, P पडिक्कंतो, P च for पि. 25) P सत्तरसंमि. 26) J असमाहि-, J वीसण्हं एक्कवीस, P एत्थं च्छडिक्कंतो. 27) J सूतयडे, J असद्दहणे. 28) P छव्वीदस, P ववहारो. 29) J -गप्पाणं, J आयरपगप्प, P -विहिम्मि आयारयकप्पगहणं ॥. 30) J -सुत-, P अउणतीसाण, J मोहणिज्जो P मोणिज्जे ट्ठाणा. 31) P -ट्ठाणेसु. 32) J आसातणाहिं अरहंत आतिता एता ।, P अरिहंत आइगा, P पढमा, J आसा।तणा, P साओ for जाओ. 33) P सिद्धाणायरिताणं, P सव्व साधू य ।, P ए for य before सा विय.

देवाणं देवीणं इह-लोग-परे य साधु-वग्गस्स । लोगस्स य कालस्स य सुयस्स आसायणा जाओ ॥
सुय-देवयाएँ जा वि य वायण-आयरिय-सव्व-जीवाणं । आसायणाउ रइया जा मे सा णिंदिया एण्हिं ॥
हीणक्खर अच्चक्खर विच्चा-मेलिय तहा य वाइद्धं । पय-हीण-घोस-हीणं अकाल-सज्झाइयं जं च ॥ सव्वहा,
छउमत्थो मोह-मणो केत्तिय-मेत्तं च संभरे जीवो । जं पि ण सरामि तम्हा मिच्छामि ह दुक्कडं तस्स ॥
सम्मत्त-संजमाइं किरिया-कप्पं च बंभचेरं च । आराहेमि सणाणं विवरीए वोसिरामि त्ति ॥ अहवा ।
जं जिणवरेहिँ भणियं मोक्ख-पहे किंचि-साहयं वयणं । आराहेमि तयं चिय मिच्छा-वयणं परिहरामि ॥
णिग्गंथं पावयणं सच्चं तच्चं च सासयं कसिणं । सारं गुरु-सुंदरयं कल्लाणं मंगलं सेयं ॥
पावारि-सल्लगत्तण-संसुद्धं सिद्ध-सुद्ध-सद्धम्मं । दुक्खारि-सिद्धि-मग्गं अवितह-णिव्वाण-मग्गं च ॥
एत्थं च ठिया जीवा सिज्झंति वि कम्मुणा विमुच्चंति । पालेमि इमं तम्हा फासेमि य सुद्ध-भावेण ॥
सम्मत्त-गुत्ति-जुत्तो विलुत्त-मिच्छत्त-अप्पमत्तो य । पंच-समिईहिँ समिओ समणो हं संजओ एण्हिं ॥
कायव्वाइं आइं भणियाइँ जिणेहिँ मोक्ख-मग्गम्मि । जइ तइ ताइँ ण तइया कयाइँ ताइं पडिक्कमे तेण ॥
पडिसिद्धाइं जाइं जिणेहिँ एयम्मि मोक्ख-मग्गम्मि । जइ मे ताइँ कयाइं पडिक्कमे ता इहं सव्वे ॥
दिट्ठंत-हेउ-जुत्तं तेहिँ विउत्तं च सद्दहेयव्वं । जइ किंचि ण सद्दहियं ता मिच्छा दुक्कडं तत्थ ॥
जे जह भणिए अत्थे जिणिंदयंदेहिँ समिय-पावेहिं । विवरीए जइ भणिए मिच्छामि ह दुक्कडं तस्स ॥
उस्सुत्तो उम्मग्गो ओकप्पो जो कओ य अइयारो । तं णिंदण-गरहाहिं सुज्झउ आलोयणेणं च ॥
आलोयणाए अरिहा जे दोसा ते इहं समालोए । सुज्झंति पडिक्कमणे दोसाओं पडिक्कमे ताइं ॥
उभएण वि अइयारा केइ विसुज्झंति ताइँ सोहेमि । पारिट्ठावणिएणं अह सुद्धी तं चिय करेमि ॥
काउस्सग्गेण अहो अइयारा केइ जे विसुज्झंति । अहवा तवेण अण्णे करेमि अब्भुट्ठिओ तं पि ॥
छेदेण वि सुज्झंती मूलेण वि के वि ते पवण्णो हं । अणवट्ठावण-जोग्गे पडिवण्णो जे वि पारंची ॥
दस-विह-पायच्छित्ते जे जइ-जोग्गा कमेण ते सव्वे । सुज्झंतु मज्झ संपइ भावेण पडिक्कमंतस्स ॥'

एवं च आलोइय-पडिक्कंतो विसुज्झमाण-लेसो अउव्वकरणावण्णो खवग-सेढीए समुप्पण्ण-णाण-दंसणो वीरिय-अंतराय-आउक्खीणो अंतगडो वइरगुत्त-मुणिवरो त्ति ।

§ ४१६) एवं च सयंभुदेव-महारिसी वि जाणिऊण णिय-आउय-परिमाणं कय-दव्व-भावोभय-संलेहणो कय-कायव्व-वावारो य णिसण्णो संथारए, भणिउं च समाढत्तो । अवि य ।

णमिऊण सव्व-सिद्धे णिद्धूय-रए पसंत-सव्व-भए । वोच्छं मरण-विभत्तिं पंडिय-बालं समासेणं ॥
णाऊण बाल-मरणं पंडिय-मरणेण णवरि मरियव्वं । बालं संसार-फलं पंडिय-मरणं च णेव्वाणं ॥
को बालो किं मरणं बालो णामेण राग-दोसत्तो । दोहिं चिय आगलिओ जं बद्धो तेण बालो त्ति ॥
मरणं पाणच्चाओ पाणा ऊसासमाइया भणिया । ताणं चाओ मरणं सुण एण्हिं तं कहिज्जंतं ॥
कललावत्थासु मओ अवत्त-भावे वि कत्थइ विलीणो । गलिओ पेसी-समए गब्भे बहुयाण णारीणं ॥
पिंडी-मेत्तो कत्थइ गलिओ खारेण गब्भ-वासाओ । अट्ठिय-बंधे वि मओ अणट्ठि-बंधे वि गलिओ हं ॥
खर-खार-मूल-डड्ढो पंसुलि-समणी-कुमारि-रंडाणं । गलिओ लोहिय-वाहो बहुसो हं णवर संसारे ॥
कत्थइ भएण गलिओ कत्थइ आयास-खेय-वियणत्तो । कत्थइ जणणीएँ कई फालिय-पोट्टाए गय-चित्तो ॥

1) J लोअ for लोग, P परेसु साहु धम्मस्स । लोयस्स, J सुतस्स आसातणा जातु ॥. 2) J सुतदेवताय जा वि वायणं, P ण for वायण, J आसातणाउ. 3) P अच्चक्खरं, P तहाय आइद्धं ।, J पतहीण, P चेय for जं च. 4) J छत्तमत्थो, P संभरइ जीवो, P जं न सुमरामि तम्हा. 5) P संजमादी, P सद्दागं for सणाणं. 6) P साहियं, P तहिं चिय. 7) J सासतं P सावियं for सासयं. 8) P सल्लंगत्तूण, J संसुद्धं, P दुक्खाहिसुद्धिमग्गं, J णेव्वाण-. 9) J थिता for ठिया, J om. वि, P विमुच्चंति । पालेमि. 10) J -जुत्तिगुत्तो-, JP समितीहिं, J मित्तो for समिओ. 11) P जिणेइ, P inter. तइया & न (for ण), J ताहिँ for ताइं (emended), P om. ताइं. 12) J पडिसिद्धाइं, P पडिमे ता, J अहं for इहं. 13) P तस्स for तत्थ. 14) J समित, P ते तहा भणसु for समियपावेहिं. 15) P उम्मग्गो अकप्पो, P -गरिहाहिं. 16) J ता for ते. 17) J अतिआरा के वि. 18) J वहो for अहो, J केवि जे, P गे for जे, J अब्भुट्ठिते, P तं मि ॥. 19) J छेतेण, J वि को वि तं, P जोग्गे, P व for वि. 20) J जो for जे. 21) J -लेस्सो, P °करणवणो खयगसेढीए उप्पन्ननाण-, J वीरिअंतराय. 23) P om. च, P महरिसी, P आउयप्पमाणं, P सलेहणा. 25) P मरणविहित्तं. 26) J णवर for णवरि. 27) J -रोसत्तो P दोसत्ते, J आगणिओ. 28) J ऊसासमातिआ P ओसासमाईया, P ताण चाओ. 29) P कललावत्थासु, J अब्भुतभावे. 30) P पिंडो मित्तो, P अणिट्ठबंध वि. 31) P खीरमूलदड्ढो पंसुणि-. 32) P आयस, J -मेअवियणत्तो ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्थइ दर-णीहरिओ जणणी-जोणीऍ हं मुओ बहुसो । कत्थइ णीहरिओ च्चिय गुरु-वियणा-वेंभलो गलिओ ॥
कत्थइ जणणीऍ अहं उड्ढय-मुहो थण-मुहेण वहिओ हं । कत्थइ पक्खित्तो च्चिय सव-सयणे जीवमाणो वि ॥
जायावहारिणीए कत्थइ हरिओ मि छट्ठ-दियहम्मि । कत्थइ बलि च्चिय कओ जोइणि-समयम्मि जणणीए ॥
कत्थइ पूयण-गहिओ कत्थइ सउणी-गहेण गहिओ हं । कत्थइ बिडाल-गहिओ हओ मि बालग्गह-गहेण ॥
कत्थइ खासेण मओ कत्थइ सोसेण सोसिय-सरीरो । कत्थइ जरेण वहिओ कत्थइ उयरेण भग्गो हं ॥
कत्थइ कुट्ठेण अहं सडिओ सव्वेसु चेय अंगेसु । कत्थइ भगंदरेणं दारिय-देहो गओ णिहणं ॥
दंत-वियणाऍ कत्थइ कत्थइ णिहओ मि कण्ण-सूलेण । अच्छी-दुक्खेण पुणो सिर-वियणाऍ गओ णासं ॥
कत्थइ रुहिर-पवाहेण णवर णित्थामयं गयं जीयं । कत्थइ पुरीस-वाहो ण संठिओ जाव वोलीणो ॥
कत्थइ लूयाए हओ कत्थइ फोडीए कह वि णिहओ हं । कत्थइ मारीऍ पुणो कत्थइ पडिभाय-उक्कामे ॥
कत्थइ विप्फोडेहिं कत्थ वि सूलेण णवर पोट्टस्स । कत्थ वि वज्जेण हओ कत्थ वि पडिओ मि टंकस्स ॥
कत्थइ सूलारूढो कत्थइ उब्बद्धिऊण वहिओ हं । कत्थइ कारिसि-सेवा कत्थइ मे गुग्गुलं धरियं ॥
कत्थइ जलग-पविट्ठो कत्थइ सलिलम्मि आगया मच्चू । कत्थइ गरुण मलिओ कत्थइ सीहेण गिलिओ हं ॥
कत्थइ तण्हाए मओ कत्थइ सुक्को बुभुक्ख-वियणाए । कत्थइ सावय-खइओ कत्थइ सप्पेण डक्को हं ॥
कत्थइ चोर-विलुत्तो कत्थइ भुत्तो म्हि संणिवाएण । कत्थइ सेंभेण पुणो कत्थइ हो वाय-पित्तेहिं ॥
कत्थइ इट्ठ-विओए संपत्तीए अणिट्ठ-लोगस्स । कत्थइ सज्झस-भरिओ उव्वाओ कत्थ वि मओ हं ॥
कत्थ वि चक्केण हओ भिण्णो कोंतेण लउड-पहराहिं । छिण्णो खग्गेण मओ कत्थइ सेल्लेण भिण्णो हं ॥
कत्थइ असिंधणूए कत्थ वि मंतेहि णवरि णिहओ हं । कत्थइ वच्च-णिरोहे कत्थइ य अजिण्ण-दोसेण ॥
कत्थइ सीएण मओ कत्थइ उण्हेण सोसिओ अहयं । अरईय कत्थइ मओ कत्थइ रोहेण सोत्ताणं ॥
कत्थइ कुंभी-पाए कत्थइ करवत्त-फालिओ णिहओ । कत्थइ कडाह-डड्डो कत्थइ कत्तो-समुकत्तो ॥
कत्थइ जलयर-गिलिओ कत्थइ पक्खी-विलुत्त-सव्वंगो । कत्थइ अवरोप्परयं कत्थ वि जंतम्मि छूढो हं ॥
कत्थ वि सत्तूहिँ हओ कत्थ वि कल-घाय-जज्जरो पडिओ । साहस-बलेण कत्थ वि मच्चू विस-भक्खणेणं च ॥
मणुयत्तणम्मि एवं बहुसो एक्केक्कयं मए पत्तं । तिरियत्तणम्मि एण्हिं साहिज्जंतं णिसामेसु ॥
रे जीव तुमं भणिमो कायर मा जूर मरण-कालम्मि । चिंतेसु इमाइँ खणं हियएणाणंत-मरणाइं ॥
जइया रे पुढवि-जिओ आसि तुमं खणण-खारमादीहिं । अवरोप्पर-सत्थेहि य अव्वो कह मारणं पत्तो ॥
किर जिणवरेहिँ भणियं दप्पिय-पुरिसेण आहओ थेरो । जा तस्स होइ वियणा पुढवि-जियाणं तहक्कंते ॥
रे जीय जल-जियत्ते बहुसो पीओ सि खोहिओ सुक्को । अवरोप्पर-सत्थेहिँ सीउण्हेहिँ च सोसविओ ॥
अगणि-जियत्ते बहुसो जल-धूलि-कलिंच-वरिस-णिवहेणं । रे रे दुक्खं पत्तं तं भरमाणो सहसु एण्हिं ॥
सीउण्ह-खलण-दुक्खे अवरोप्पर-संगमे य जं दुक्खं । वाउकाय-जियत्ते तं भरमाणो सहसु एण्हि ॥
छेयण-फालण-डाहण-मुसुमूरण-भंजणेण जं मरणं । वण-कायमुवगएणं तं बहुसो विसहियं जीव ॥
तस-कायत्ते बहुसो खइओ जीवेण जीवमाणो हं । अक्कंतो पाएहिं मओ उ सीउण्ह-दुक्खेण ॥
सेल्लेहिँ हओ बहुसो सूयर-भावम्मि तं मओ रण्णे । हरिणत्तणे वि णिहओ खुरप्प-सर-भिण्ण-पोट्टिल्लो ॥
सिंघेण पुणो खइओ मुसुमूरिय-संधि-बंधणावयवो । एयाइँ चिंतयंतो विसहसु वियणाओ पउराओ ॥

1 > J जणणीए हं, J गुरुवेंभण-, P -विब्भलो. 2 > J सयणो. 4 > P सउणिग्गहेण, P विरालि for बिडाल, P om. हओ. 5 > P कत्थइ रोसेण गओ. 7 > P सिरिवियणओ. 8 > P मयं for गयं, J कत्थ पुरिसवाहो ण ट्ठिओ ता जाव, P -वाहेण. 9 > P कत्थ वि, J कत्थइ होडीए, P वि नीओ हं ।, P om. seven lines कत्थइ मारीए पुणो etc. to गिलिओहं ॥. 13 > P गओ for मओ after तण्हाए. 14 > P कत्थ वि in both places, J भुत्तो मि, P संभेण, J हो वाउ-. 15 > J लोअस्स, J तत्थइ for कत्थइ, P adds त्थवि before मओ. 16 > P सेलेण, P मंतेहि नवर, P वच्चनिरोहे. 18 > P कत्थइ उण्हेण, J अरतीए, P अरइय अत्थइ मओ. 19 > P कत्थइ कीडेहिं डक्को कत्थइ सत्थी मत्ती समूकंतो ।. 20 > P कत्थी पक्खी, J पक्खीहिँ लुत्त-, P कत्थ-वि अवरो, J जंतम्मि कूडो हं. 21 > J सामसबलेण P सामबलेणं. 22 > P मम्ए मत्तं ।, P साहिण्जंतं. 23 > P इं for इमाइं, P हियइ पमाणंत. 24 > J पुढइ-, P खणेण खारमादीसु, J खारमातीहिं, P सत्थेहिं अव्वो. 25 > P जिणवरेण, P -पुरिसेहिं, J थोरो for थेरो, P होति वियणा, P पुव्व for पुढवि, P तहा कंतो. 26 > P जलजियंतो, P खाहिओ, J सीतुण्हेहिं. 27 > J अगणिज्जियत्ते, P -निवहेहिं, P पत्तो संभर°. 28 > J सीतुण्हखलण-, P खखलण, P adds प्पर before संगमे, P वाउयकाय, J जिअंते, P सं for तं. 29 > J डाहे, P दाहण, J विसाहिमं जिअ. 30 > J तस्स कायत्थे, P कायत्तो, J खइओ जीएण, P णु for उ. 31 > P अण्णेहिं for सेल्लेहिं, J हरिणतणे, P सिर for सर, J पोकिल्लो. 32 > P om. विसहसु, P घोराओ for पउराओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तित्तिर-कवोय-सउणत्तणम्मि तह ससय-मोर-पसु-भावे । पासत्थं चिय मरणं बहुसो पत्तं तए जीय ॥
पारद्धिएण पहओ णट्टो सर-सल्ल-वेयणायल्लो । ण य तं मओ ण जीओ मुच्छा-मोहं उवगओ सि ॥
दट्ठूण पदीव-सिहं किर एयं णिम्मलं महारयणं । गेण्हामि त्ति सयण्हं पयंग-भावम्मि डड्ढो सि ॥
बडिसेण मच्छ-भावे गीएण मयत्तणे विवण्णो सि । गंधेण महुयरत्ते बहुसो रे पावियं मरणं ॥

§ ४१७) किं वा बहुएण भणिएण ।

जाइं जाइं जाओ अणंतसो एक्कमेक्क-भेयाए । तत्थ य तत्थ मओ हं अव्वो बालेण मरणेण ॥
णरयम्मि जीव तुमए णाणा-दुक्खाइँ जाइँ सहियाइं । एण्हिं ताइँ सरंतो विसहेज्जसु वेयणं एयं ॥
करवत्त-कुंभि-रुक्खा-संबलि-वेयरणि-वालुया-पुलिणं । जइ सुमरसि एयाइं विसहेज्जसु वेयणं एयं ॥
तेत्तीस-सागराइं णरए जा वेयणा सहिज्जंति । ता कीस खणं एक्कं विसहामि ण वेयणं एयं ॥
देवत्तणम्मि बहुसो रणंत-रसणाओ गुरु-णियंबाओ । मुक्काओ जुवईओ मा रज्जसु असुइ-णारीसु ॥
वज्जिंद-णील-मरगय-समप्पभं सासयं वरं भवणं । मुक्कं सग्गम्मि तए वोसिर जर-कडणि-कयमेयं ॥
णाणा-मणि-मोत्तिय-संकुलाओं आबद्ध-इंद-धणुयाओ । रयणाणं रासीओ मोत्तुं मा रज्ज विहवेसु ॥
ते के वि देवदूसे देवंगे दिव्व-भोग-फरिसिल्ले । मोत्तूण तुमं तइया संपइ मा सुमर कंथडए ॥
वर-रयण-णिम्मियं पिव कणय-मयं कुसुम-रेणु-सोमालं । चइऊण तत्थ देहं कुण जर-देहम्मि मा मुच्छं ॥
मा तेसु कुण णियाणं सग्गे किर एरिसीओ रिद्धीओ । मा चिंतेहिसि सुउरिस होइ सयं चेव जं जोग्गं ॥
देहं असुइ-सगब्भं भरियं पुण मुत्त-पित्त-रुहिरेण । रे जीव इमस्स तुमं मा उवरिं कुणसु अणुबंधं ॥
पुण्णं पावं च दुवे वच्चंति जिएण णवर सह एए । जं पुण इमं सरीरं कत्तो तं चलइ ठाणाओ ॥
मा मह सीयं होहिइ ठइओ विविहेहिँ वत्थ-पोत्तेहिं । वच्चंते उण जीए खलस्स कण्णं पि णो सिण्णं ॥
मा मह उण्हं होहिइ इमस्स देहस्स छत्तयं धरियं । तं जीव-गमण-समए खलस्स सव्वं पि पम्हुट्ठं ॥
मा मह छुहा भवीहिइ इमस्स देहस्स संबलं वूढं । तं जीव-गमण-काले कह व कयग्घेण णो भरियं ॥
मा मे तण्हा होहिइ मरुत्थलीसुं पि पाणियं वूढं । तेण च्चिय देह तुमं खल-गहिओ किं ण सुकएण ॥
तह लालियस्स तह पालियस्स तह गंध-मल्ल-सुरहिस्स । खल देह तुज्झ जुत्तं पयं पि णो देसि गंतव्वे ॥
अव्वो जणस्स मोहो धम्मं मोत्तूण गमण-सुसहायं । देहस्स कुणइ पेच्छसु तदियहं सव्व-कज्जाइं ॥
णत्थि पुहईए अण्णो अविसेसो जारिसो इमो जीवो । देहस्स कुणइ एक्कं धम्मस्स ण गेण्हए णामं ॥
धम्मेण होइ सुगई देहो वि विलोट्टए मरण-काले । तह वि कयग्घो जीवो देहस्स सुहइँ चिंतेइ ॥
छारस्स होइ पुंजो अहवा किमियाण सिलिसिलेंताण । सुक्खइ रवि-किरणेहिँ वि होहिइ पूयस्स व पवाहो ॥
भत्तं व सउणयाणं भक्खं वालाण कोल्हुयाईणं । होहिइ पत्थर-सरिसं अव्वो सुक्कं व कट्ठं वा ॥
ता एरिसेण संपइ असार-देहेण जइ तवो होइ । लद्धं जं लहियव्वं मा मुच्छं कुणसु देहम्मि ॥ अवि य,
देहेण कुणह धम्मं अंतम्मि विलोट्टए पुणो एयं । फग्गुण-मासं खेल्लइ परसंते णेय पिट्ठे य ॥
ताविज्जउ कुणह तवं भिण्णं देहाओं पुग्गलं देहं । कट्ठ-जलंतिंगाले परहत्थेणेय तं जीव ॥
देहेण कुणह धम्मं अंतम्मि विलोट्टए पुणो एयं । उट्टस्स पामियंगस्स वाहियं जं तयं लद्धं ॥
पोग्गल-मइयं कम्मं इम्मउ देहेण पोग्गल-मएण । रे जीव कुणसु एयं विल्लं विल्लेण फोडेसु ॥

---

1 > J कपोत, P कवोतसउणवरंमि तह, P मासत्थं for पासत्थं, J जाअं P जीव. 3 > J पईवसिहं, P त्ति यण्हं, P दड्डो सि. 4 > P पडिसेग for बडिसेण, P मयत्तेण, P महुरयत्ते, P महुरयत्ते, J ए for रे, P पाविओ मरणें. 5 > J बहुमणिएण. 6 > P जाओ for the first जाइं, P om. जाओ, P एक्कमेक्कराए. 7 > P नरणंमि भरंतो, J वेसहेज्जसु. 8 > P om. the verse करवत्त etc. to वेयणं एयं ॥. 9 > J तेत्तीसं सगराइं. 10 > J रसणा गुरु°, P मारेज्जसु. 11 > P मरमयसमप्पयं, P om. जर, P कडकथनिकयमेयं. 12 > P धनुया । णाणं रासीओ, P मारेज्ज. 13 > P दिव्वंगे, P फरिसिल्लो, P कंथरए, 14 > J सोमारं ।. 15 > P सपुरिस, J चेय. 16 > P सगब्भंतरियं, P रुहिराण, P कुमणसु. 16 > P वच्चति, P एते, P ड्डाणाओ. 18 > P मई सीईं होही, P कण्णं पि ना भिडं ॥. 19 > P देह छत्तयं. 20 > P भवीहइ, P संबलं मूढं. 21 > J देणं चिय, P खण for खल. 22 > P दयं for पयं. 24 > P पुहतीए अण्णो, P देह कुणइ कज्जं धम्मस्स. 25 > P सुगती. 26 > P सुक्कर, P वा for वि, J होहिति पुत्तिस्स व, P पूयस्स वाहो ॥. 27 > J कोल्हुआतीग । होहिति. 28 > P तओ होइ, P °यव्वं मु मा मुच्छेति कुणसु. 29 > J खेलइ, P परसत्ते, P परिसंतेणाय पिट्ठेगं. 30 > J कत्थसुजलतिंगालो पर पर° P कट्ठजलंतंगारे परहत्थेणाय. 31 > P वाहितं. 32 > P इम्मं उ, P जीय कुण एयं, P फोलेडेसु.

अवस-वसएहिँ देहो मोत्तव्वो ता वरं सवसएहिं । जो इसिर-रोहरीए वि पाहुणो ता वरं इसिरी ॥
इय जीव तुमं भण्णसि णिसुणेंतो मा करे गय-णिमीलं । देहस्स उवरि मुच्छं णिब्बुद्धिय मा करेज्जासु ॥

§ ४१८) किं च रे जीव तए चिंतणीयं । अवि य ।

सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि एत्थ रे जीव । जो जो तए ण खइओ सो चि हु तुमए भमंतेण ॥
सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि तुह भमंतस्स । ण य आसि कोइ बंधू तुह जीव ण जस्स तं बहुसो ॥
सो णत्थि कोइ जीवो जयम्मि सयलम्मि सुणसु ता जीव । जो णासि तुज्झ मित्तं सत्तू वा तुज्झ जो णासि ॥
जे पेच्छसि धरणिहरे धरणि च्च वणं णई-तलाए वा । ते जाण मए सव्वे सय-हुत्तं भक्खिया आसि ॥
जं जं पेच्छसि एयं पोग्गल-रूवं जयम्मि हो जीव । तं तं तुमए भुत्तं अणंतसो तं च एएण ॥
तं णत्थि किं पि ठाणं चोद्दस-रज्जुम्मि एत्थ लोयम्मि । जत्थ ण जाओ ण मओ अणंतसो सुणसु रे जीव ॥
गोसे मज्झण्हे वा पओस-कालम्मि अह व राईए । सो णत्थि कोइ कालो जाओ य मओ य णो जम्मि ॥
जाओ जलम्मि णिहओ थलम्मि थल-वड्डिओ जले णिहओ । ते णत्थि जल-थले वा जाओ य मओ य णो जत्थ ॥
जाओ धरणीएँ तुमं णिहओ गयणम्मि णिवडिओ धरणिं । गयण-धरणीण मज्झे जाओ य मओ य तं जीय ॥
जीवम्मि तुमं जाओ णिहओ जीवेण पाडिओ जीवे । जीवेण य जीवंतो जीयत्थे लुप्पसे जीय ॥
जीवेण य तं जाओ जीवावियओ य जीव जीवेणं । संवड्डिओ जिएणं जीवेहि य मारिओ बहुसो ॥
ता जत्थ जत्थ जाओ सच्चित्ताचित्त-मीस-जोणीसु । ता तत्थ तत्थ मरणं तुमए रे पावियं जीव ॥
मरणाइँ अणंताइं तुमए पत्ताइँ जाइँ रे जीव । सव्वाइँ ताइँ जाणसु अयणु अहो बाल-मरणाइं ॥
किं तं पंडिय-मरणं पंडिय-बुद्धि त्ति तीय जो जुत्तो । सो पंडिओ त्ति भण्णइ तस्स हु मरणं इमं होइ ॥
पायव-मरणं एक्कं इंगिणि-मरणं लगंड-मरणं च । संथारयम्मि मरणं सव्वाइ मि णियम-जुत्ताइं ॥
छज्जीव-णिकायाणं रक्खा-परमं तु होइ जं मरणं । तं चिय पंडिय-मरणं विवरीयं बाल-मरणं तु ॥
आलोइयम्मि मरणं जं होहिइ पंडियं तयं भणियं । होइ पडिकमणेण य विवरीयं जाण बालं ति ॥
दंसण-णाण-चरित्ते आराहेउं हवेज्ज जं मरणं । तं हो पंडिय-मरणं विवरीयं बाल-मरणं ति ॥
तित्थयराइ-पणामे जिण-वयणेणावि वट्टमाणस्स । तं हो पंडिय-मरणं विवरीयं होइ बालस्स ॥
किं वा बहुणा एत्थं पंडिय-मरणेण सग्ग-मोक्खाइं । बाल-मरणेण एसो संसारो सासओ होइ ॥

§ ४१९) एयं णाऊण तुमं रे जीव सुहाइँ णवर पत्थेंतो । चइऊण बाल-मरणं पंडिय-मरणं मरसु एण्हिं ॥
इट्ठ-विओओ गरुओ अणिट्ठ-संपत्ति-वयण-दुक्खाइं । एमाइँ संभरंतो पंडिय-मरणं मरसु एण्हिं ॥
छेयण-भेयण-ताडण-अवरोप्पर-घायणाइँ णरएसु । एयाइँ संभरंतो पंडिय-मरणं मरसु एण्हिं ॥
णत्थि ण वाहण-बंधण-अवरोप्पर-भक्खणाइँ तिरिएसु । एयाइँ संभरंतो पंडिय-मरणं मरसु एण्हिं ॥
जाइ-जरा-मरणाइं रोगायंकेण णवर मणुएसु । जइ सुमरसि एयाइं पंडिय-मरणं मरसु एण्हिं ॥
रे जीव तुमे दिट्ठो अणुभूओ जो सुओ य संसारे । बाल-मरणेहिँ एसो पंडिय-मरणं मरसु तम्हा ॥

भणियं च ।

एक्कं पंडिय-मरणं छिंदइ जाई-सयाइं बहुयाइँ । तं मरणं मरियव्वं जेण मुओ सुम्मओ होइ ॥
सो सुम्मओ त्ति भण्णइ जो ण मरीहिइ पुणो वि संसारे । णिड्डड्ड-सव्व-कम्मो सो सिद्धो जइ परं मोक्खो ॥

---

1 > J अवसवसेहं, P मोत्तव्वं, P हुणो for पाहुणो, P हसिए त्ति ॥. 2 > P निसुणंतो, J उअरि. 3 > J जीअ तए, P चिंतिणीयं. 4 > J एत्थ ए जीअ, P जो सो तेण न, P भवंतेण. 5 > P repeats सो, P णइ आसि, J जीअ. 6 > J जीअ, P जा for जो. 7 > J जो for जे, P व्व वरणं नती तलाए, P सयउत्तं. 8 > J जीअ ।, P मुत्तुं, P च तेएण. 9 > P तं किं चि नत्थि ट्ठाणं, P रज्जंमि, J सुणसु ए जीअ. 10 > P रातीए, P कोलो for कोइ कालो. 11 > P जोओ for जाओ, P repeats थलंमि, P व्व for य in both places. 12 > P निहओ मयणंमि, P तं जीवं. 13 > P जीवेण तुमं, P जीवो ।, P जीयत्थो लुंपसे जीव. 14 > J जीवाविओ, P तं वड्ढिओ, P मारिसो. 15 > J सचित्ता°, P सच्चित्ताचिमीस°, J जीअं ॥. 16 > J मित्तमए for तुमए, P पुत्ताइं जीइं, P अयाणु ता बाल°. 17 > J पंडा बुद्धि, P भणइ, P सुहं for इमं. 18 > P पायवमरणे, P वि for मि. 19 > P रखा. 20 > J तिअं for तयं, P चि for य, P बाल त्ति ॥. 21 > P चरित्ताण हेउं, J तं for जं, P om. three lines तं हो पंडिय etc. to होइ बालस्स. 22 > J तित्थयराति-. 23 > P तं चिय for किं वा बहुणा एत्थं, J मोक्खाती P मोक्खाइं. 24 > P नाउण, P पत्थेतो. 25 > P अट्ठ for इट्ठ, P संभरेंतो, P मर for मरसु, P om. एण्हिं. 26 > J तावण, P संभरेंतो पडिय ॥. 27 > P नत्थ ण, P भक्खाइं, P संभरेंतो पं ॥. 28 > P जाई-, J रोअतंकेण, P सुमरएसु एयाइं पं ॥. 29 > J जीअ, J अणुहूओ, J संसारो. 31 > J आई P जाती, P जेण मओ, J सुमुओ, P repeats सुम्मओ. 32 > J सुम्मतो P सम्मओ, J जेणं मरणे ण for जो ण, J मरीहिति P मरिहीति, P णिद्दड्ढ-, P मोक्खे.

णत्थि मरणस्स णासो तित्थयराणं पि अहव इंदाणं । तम्हा अवस्स मरणे पंडिय-मरणं मरसु एक्कं ॥
जइ मरणेहिँ ण कज्जं खिण्णो मरणेण चयसि मरणाइं । ता मरण-दुक्ख-भीरुय पंडिय-मरणं मरसु एक्कं ॥
अह इच्छसि मरणाइं मरणेहि य णत्थि तुज्झ णिव्वेओ । ता अच्छसु वीसत्थो जम्मण-मरणारहट्टम्मि ॥
इय बाल-पंडियाणं मरणं णाऊण भावओ एण्हिं । एसो पंडिय-मरणं पडिवण्णो भव-सउत्तारं ॥'

त्ति भणमाणस्स सयंभुदेवस्स महारिसिणो अउव्वकरणं खवग-सेढीए अणंतरं केवल-वर-णाण-दंसणं समुप्पण्णं, समयं च आउय-कम्मक्खओ, तेण अंतगडो सयंभुदेव-महारिसि त्ति ।

§ ४२०) एवं च वच्चंतेसु दियहेसु महारह-साहू वि णाऊण थोव-सेसं आउयं दिण्ण-गुरुयणालोयणो पडिक्कंत-सव्व-पावट्ठाणो संलेहणा-संलिहियंगो सव्वहा कय-सव्व-कायव्वो उवविट्ठो संथारए । तत्थ य णमोक्कार-परमो अच्छिउं पयत्तो । अवि य ।

एस करेमि पणामं अरहंताणं विसुद्ध-कम्माणं । सव्वातिसय-समग्गा अरहंता मंगलं मज्झ ॥
उसभाईए सव्वे चउवीसं जिणवरे णमंसामि । होहिंति जे वि संपइ ताणं पि कओ णमोक्कारो ॥
ओसप्पिणि तह अवसप्पिणीसु सव्वासु जे समुप्पण्णा । तीताणागय-भूया सव्वे वंदामि अरहंते ॥
भरहे अवर-विदेहे पुव्व-विदेहे य तह य एरवए । पणमामि पुक्खरद्धे धायइ-संडे य अरहंते ॥
अच्छंति जे वि अज्ज वि णर-तिरिए देव-णरय-जोणीसु । एगाणेय-भवेसु य भविए वंदामि तित्थयरे ॥
तित्थयर-णाम-गोत्तं वेएंते वद्धमाण-बद्धे य । बंधिंसु जे वि जीवा अज्जं चिय ते वि वंदामि ॥
विहरंति जे मुणिंदा छउमत्था अहव जे गिहत्था वा । उप्पण्ण-णाण-रयणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
जे संपइ परिसत्था अहवा जे समवसरण-मज्झत्था । देवच्छंद-गया वा जे वा विहरंति धरणियले ॥
साहेंति जे वि धम्मं जे व ण साहेंति छिण्ण-भय-मोहा । वंदामि ते वि सव्वे तित्थयरे मोक्ख-मग्गस्स ॥
तित्थयरीओ तित्थंकरे य सामे य कसिण-गोरे य । मुत्ताहल-पउमाभे सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
उज्झिय-रज्जे अहवा कुमारए दार-संगह-सणाहे । सावच्चे णिरवच्चे सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
भव्वाण भव-समुद्दे णिबुड्डमाणाण तरण-कज्जम्मि । तित्थं जेहिँ कयमिणं तित्थयराणं णमो ताणं ॥
तित्थयराण पणामो जीवं तारेइ दुक्ख-जलहीओ । तम्हा पणमइ सव्वायरेण ते चेय तित्थयरे ॥
लोय-गुरूणं ताणं तित्थयराणं च सव्व-दरिसीणं । सव्वण्णूणं एयं णमो णमो सव्व-भावेणं ॥
अरहंत-णमोक्कारो जइ कीरइ भावओ इह जणेणं । ता होइ सिद्धि-मग्गो भवे भवे बोहि-लाभाए ॥
अरहंत-णमोक्कारो तम्हा चिंतेमि सव्व-भावेण । दुक्ख-सहस्स-विमोक्खं अह मोक्खं जेण पावेमि ॥

§ ४२१) सिद्धाण णमोक्कारो करेमु भावेण कम्म-सुद्धाण । भव-सय-सहस्स-बद्धं धंतं कम्मिंधणं जेहिं ॥
सिज्झंति जे वि संपइ सिद्धा सिज्झिंसु कम्म-खइयाए । ताणं सव्वाण णमो तिविहेणं करण-जोएण ॥
जे केइ तित्थ-सिद्धा अतित्थ-सिद्धा व एक्क-सिद्धा वा । अहवा अणेग-सिद्धा ते सव्वे भावओ वंदे ॥
जे वि सलिंगे सिद्धा गिहि-लिंगे कह वि जे कुलिंगे वा । तित्थयर-सिद्ध-सिद्धा सामण्णा जे वि ते वंदे ॥
इत्थी-लिंगे सिद्धा पुरिसेण णपुंसएण जे सिद्धा । पत्तेय-बुद्ध-सिद्धा बुद्ध-सयंबुद्ध-सिद्धा य ॥
जे वि णिसण्णा सिद्धा अहव णिवण्णा ठिया व उस्सग्गे । उत्ताणय-पासेल्ला सव्वे वंदामि तिविहेण ॥
णिसि-दियस-पदोसे वा सिद्धा मज्झण्ह-गोस-काले वा । काल-विवक्खा सिद्धा सव्वे वंदामि भावेण ॥

---

1) P एक्के. 2) J भीरू, P adds य after भीरुय. 3) P तो for ता. 4) J भावतो, J सयुत्तारं. 5) J om. त्ति, P अणंतकेवल. 6) J कम्मक्खयो P कंमक्खओ. 7) J om. च, P साहुणा नाऊण, J थोअ-, J गुरुअणालोअणो P गुरुआलोअणो. 8) J om. सव्व. 10) P अरिहंताणं. 11) JP उसभातीए, P सव्वो 12) P ओसप्पिणी तह, P समुप्पण्णो, J °णागतभूता. 13) P om. पुव्वविदेहे, P पुक्खरद्धे, J धातइसण्डे. 14) P एयाणेयभवंतरभविए. 15) J वेतेंते P वेयंतो, J बद्धिंसु. 16) P adds वि before मुणिंदा, J छतुमत्था, P जो for जे. 17) P जो for जे J गता, P om. धरणि. 18) P सोहेंति, J वि for व, P om. वि. 19) P मुत्ताफल, P वंदिमि. 20) P om. सव्वे, P वंदिमि. 21) J णिउड्डमाणाण, P मरण for तरण. 23) P ताणं for एयं, P om. one णमो. 24) J भावतो, P तो for ता. 25) P चिंतेण for चिंतेमि. 26) P करेतु P कंमसुद्धाण, P दड्ढं for धंतं. 27) P om. संपइ, P सिद्धिंसु, J खयताए. 28) J भावतो. 29) P om. कह वि जे कुलिंगे. 30) J पुंसए for णपुंसएण, J om. जे, P जि, P पत्तेय बुद्धसयंबुद्ध, J °बुद्धिंसिद्धा J सयंबुद्धि-. 31) J अहवि णिविण्ण, P ट्ठिया, J ऊसग्गे. 32) दिवस, J पत्तोसे, P गोसकालंमि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोव्वण-सिद्धा बाला थेरा तह मज्झिमा य जे सिद्धा । ईत्तिवण्ण-दीव-सिद्धा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
दिव्वावहार-सिद्धा समुद्द-सिद्धा गिरीसु जे सिद्धा । जे केइ भाव-सिद्धा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥
जे जत्थ केइ सिद्धा काले खेत्ते य दव्व-भावे वा । ते सव्वे वंदे हं सिद्धे तिविहेण करणेण ॥
सिद्धाण णमोक्कारो जइ लब्भइ आगए मरण-काले । ता होइ सुगइ-मग्गो अण्णो सिद्धिं पि पावेइ ॥
सिद्धाण णमोक्कारो जइ कीरइ भावओ असंगेहिं । रुंभइ कुगई-मग्गं सग्गं सिद्धिं च पावेइ ॥
सिद्धाण णमोक्कारं तम्हा सव्वायरेण काहामि । छेत्तूण मोह-जालं सिद्धि-पुरिं जेण पावेमि ॥

§ ४२२) पणमामि गणहराणं जिण-वयणं जेहिँ सुत्त-बंधेणं । बंधेऊण तह कयं पत्तं अम्हारिसा जाव ॥
चोद्दस-पुव्वीण णमो आयरियाणं तहूण-पुव्वीण । वायग-वसहाण णमो णमो य एगारसंगीण ॥
आयार-धराण णमो धारिज्जइ जेहिँ पवयणं सयलं । णाण-धराणं ताणं आयरियाणं पणिवयामि ॥
णाणायार-धराणं दंसण-चरणे विसुद्ध-भावाणं । तव-विरिय-धराण णमो आयरियाणं सुधीराणं ॥
जिण-वयणं दिप्पंतं दीवंति पुणो पुणो ससत्तीए । पवयण-पभासयाणं आयरियाणं पणिवयामि ॥
गूढं पवयण-सारं अंगोवंगे समुद्द-सरिसम्मि । अम्हारिसेहिँ कत्तो तं णज्जइ थोय-बुद्धीहिं ॥
तं पुण आयरिएहिं परंपरएण दीवियं एत्थ । जइ होंति ण आयरिया [illegible] ते जाणेज्ज सारमिणं ॥
सूयण-मेत्तं सुत्तं सूइज्जइ केवलं तहिं अत्थो । जं पुण से वक्खाणं तं आ[illegible]रिया पयासेंति ॥
बुद्धी-सिणेह-जुत्ता आगम-जलणेण सुट्ठु दिप्पंता । कह पेच्छउ एस जणो सूरि-पईवा जहिं णत्थि ॥
चारित्त-सील-किरणो अण्णाण-तमोह-णासणो विमलो । चंद-समो आयरिओ भविए कुमुए व्व बोहेइ ॥
दंसण-विमल-पयावो दस-दिस-पसरंत-णाण-किरणिल्लो । जत्थ ण रवि व्व सूरी मिच्छत्त-तमंधओ देसो ॥
उज्जोयओ व्व सूरो फलओ कप्पद्दुमो व्व आयरिओ । चिंतामणि व्व सुहओ जंगम-तित्थं च पणओ हं ॥
जे जत्थ केइ खेत्ते काले भावे व सव्वहा अत्थि । तीताणागय-भूया ते आयरिए पणिवयामि ॥
आयरिय-णमोक्कारो जइ लब्भइ मरण-काल-वेलाए । भावेण कीरमाणो सो होहिइ बोहि-लाभाए ॥
आयरिय-णमोक्कारो जइ कीरइ तिविह-जोग-जुत्तेहिं । ता जम्म-जरा-मरणे छिंदइ बहुए ण संदेहो ॥
आयरिय-णमोक्कारो कीरंतो सहलत्तणं होइ । होइ णरामर-सुहओ अक्खय-फल-दाण-दुल्ललिओ ॥
तम्हा करेमि सव्वायरेण सूरीण हो णमोक्कारं । कम्म-कलंक-विमुक्को अइरा मोक्खं पि पावेस्सं ॥

§ ४२३) उवज्झायाणं च णमो संगोवंगं सुयं धरेंताणं । सिस्स-गण-हियट्ठाए झरमाणाणं तयं चेय ॥
सुत्तस्स होइ अत्थो सुत्तं पाढेंति ते उवज्झाया । अज्झावयाण तम्हा पणमह परमेण भावेण ॥
सज्झाय-सलिल-णिवहं झरंति जे गिरियड व्व तद्दियहं । अज्झावयाण ताणं भत्तीएँ अहं पणिवयामि ॥
जे कम्म-खयट्ठाए सुत्तं पाढेंति सुद्ध-लेसिल्ला । ण गणेंति णियय-दुक्खं पणओ अज्झावए ते हं ॥
अज्झावयाण तेसिं भद्दं जे णाण-दंसण-समिद्धा । बहु-भविय-बोह-जणयं झरंति सुत्तं सया-कालं ॥
अज्झावयस्स पणमह जस्स पसाएण सव्व-सुत्ताणि । णज्जंति पढिज्जंति य पढमं च्चिय सव्व-साधूहिं ॥
उवज्झाय-णमोक्कारो कीरंतो मरण-देस-कालम्मि । कुगइं रुंभइ सहसा सोग्गइ-मग्गम्मि उवणेइ ॥
उवज्झाय-णमोक्कारो कीरंतो कुणइ बोहि-लाभं तु । तम्हा पणमह सव्वायरेण अज्झावयं मुणिणो ॥
उवज्झाय-णमोक्कारो सुहाण सव्वाण होइ तं मूलं । दुक्खक्खयं च काउं जीयं ठावेइ मोक्खम्मि ॥

1) P दी-वण्ण. 2) P केवि for केइ. 3) P कह वि for केइ, P कालखेत्ते, P व्व for य. 4) P अण्णे, P पावेमि. 5) J भावंतो, P । रुंभइ कुगइ-, P पावेंति. 6) P सिद्धि-. 7) P गइराणं, P जाआ ॥. 8) P णवण्ह for तहूण, P वायय-. 9) J पणव तामि ॥. 10) P चरणेहि सुद्धभावे । तवकिरिय. 11) P दिब्वंति, P ससतीए, P पहासयाणं, J पणिवतामि. 12) J तण्णज्जउ, P थोव-. 13) P होति. 14) P अत्थे, P repeats से. 15) P पेच्छइ, P पतीवा. 16) P कुमुयविबोहेइ. 17) P विमलपलपयावोदयदिस-. 18) J उज्जोतउ. 19) J व्व for व, J तीताणागतभूता, J पणिवतामि. 20) J होहि ति P सो हित्ति. 21) P om. कीरइ, P जोय-. 23) P मोक्खं पि. 24) J उवझयाणं P उवज्झायाणं, P अंगोवंगं सुत्तं, J सुतं, J हितट्ठाए, P भरमाणाणं. 25) J पाढं ति, P म्हा for तम्हा. 26) J om. जे, P गिरि व्व, J भत्तीय, J पणिवतामि. 27) P कम्मक्खय°, P वज्झावए. 28) P बोहयाणं सरंति सुत्तं. 29) P om. पढिज्जंति, P साहूहिं. 30) JP उवज्झाय, P देसयालम्मि, P रुंभभइ. 31) JP उवज्झाय. 32) JP उवज्झाय, P om. सव्वाण, J जीवं, P पावेइ for ठावेइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ४२४) साहूण णमोक्कारं करेमि तिविहेण करण-जोएण । जेण भव-लक्ख-बद्धं खणेण पावं विणासेमि ॥
पणमह ति-गुत्ति-गुत्ते विलुत्त-मिच्छत्त-पत्त-सम्मत्ते । कम्म-करवत्त-पत्ते उत्तम-सत्ते पणिवयामि ॥
पंचसु समिईसु जए ति-सल्ल-पडिपेल्लणम्मि गुरु-मल्ले । चउ-विकहा-पम्मुक्के भय-मोह-विवज्जए धीरे ॥
पणमामि सुद्ध-लेसे कसाय-परिवज्जिए जियाण हिए । छज्जीव-काय-रक्खण-परे य पारंपरं पत्ते ॥
चउ-सण्णा-विप्पजढे दढव्वए वय-गुणेहिँ संजुत्ते । उत्तम-सत्ते पणओ अपमत्ते सव्व-कालं पि ॥
परिसह-बल-पडिमल्ले उवसग्ग-सहे पहम्मि मोक्खस्स । विकहा-पमाय-रहिए सहिए वंदामि समणे हं ॥
समणे सुयणे सुमणे समणे य-पाव-पंकस्स सेवए । सवए सुहए समए य सव्वए साहु अह वंदे ॥
साहूण णमोक्कारो जइ लब्भइ मरण-देस-कालम्मि । चिंतामणिं पि लद्धं किं मग्गसि काय-मणियाइं ॥
साहूण णमोक्कारो कीरंतो अवहरेज जं पावं । पावाण कत्थ हियए णिवसइ एसो अउण्णाण ॥
साहूण णमोक्कारो कीरंतो भाव-मेत्त-संसुद्धो । सयल-सुहाणं मूलं मोक्खस्स य कारणं होइ ॥
तम्हा करेमि सव्वायरेण साहूण तं णमोक्कारं । तरिऊण भव-समुद्दं मोक्खय-दीवं च पावेमि ॥
§ ४२५) एए जयम्मि सारा पुरिसा पंचेव ताण जोक्कारो । एयाण उवरि अण्णो को वा अरिहो पणामस्स ॥
सेयाण परं सेयं मंगल्लाणं च परम-मंगल्लं । पुण्णाण परं पुण्णं फलं फलाणं च जाणेज्जा ॥
एयं होइ पवित्तं वरयरयं सासयं तहा परमं । सारं जीयं पारं पुव्वाणं चोद्दसण्हं पि ॥
एयं आराहेउं किं वा अण्णेहिँ एत्थ कज्जेहिं । पंच-णमोक्कार-मणो अवस्स देवत्तणं लहइ ॥
चारित्तं पि ण वहइ णाणं णो जस्स परिणयं किंचि । पंच-णमोक्कार-फलं अवस्स देवत्तणं तस्स ॥
एवं दुह-सय-जलयर-तरंग-रंगंत-भासुरावत्ते । संसार-समुद्दम्मि कयाइ रयणं व णो पत्तं ॥
एयं अब्भुरुद्धुलं एयं अप्पत्त-पत्तयं मज्झ । एयं परम-भयहरं चोज्जं कोड्डुं परं सारं ॥
विज्जइ राहा वि फुडं उम्मूलिज्जइ गिरी वि मूलाओ । गम्मइ गयणयलेणं दुलहो एसो णमोक्कारो ॥
जलणो व्व होज्ज सीओ पडिवह-हुत्तं वहेज्ज सुर-सरिया । ण य णाम ण देज्ज इमो मोक्ख-फलं जिण-णमोक्कारो ॥
णूणं अलद्धउव्वो संसार-महोयहिं भमंतेहिं । जिण-साहु-णमोक्कारो तेणज्ज वि जम्म-मरणाइं ॥
अह पुण पुव्वं लद्धो ता कीस ण होइ मज्झ कम्म-खओ । दावाणलम्मि जलिए तण-रासी केच्चिरं ठाउ ॥
अहवा भावेण विणा दव्वेणं पाविओ मए आसि । जाव ण गहिओ चिंतामणि त्ति ता किं फलं देइ ॥
ता संपइ पत्तो मे आराहेयव्वउ मए पयत्तेणं । जइ जम्मण-मरणाणं दुक्खाणं अंतमिच्छामि ॥
त्ति भणमाणो महारह-साहू अउव्व-करणेणं खवग-सेणिं समारूढो । कह ।
§ ४२६) झोसेइ महासत्तो सुक्कज्झाणाणलेण कम्म-तरुं । पढमं अणंत-णामे चत्तारि वि चुण्णिए तेण ॥
अण्ण-समएण पच्छा मिच्छत्तं सो खवेइ सव्वं पि । मीसं च पुणो सम्मं खवेइ जं पुग्गलं आसि ॥

1) P नमोक्कारा, J om. करण, P लब, P पावं पणासेमि. 2) P om. गुत्ते, P -विच्छत्तपत्त-, J पणिवतामि. 3) JP समितीसु, J जते P जहे, J परिसोल्लणंमि, P परिमुक्के. 4) P पारंपरे पत्तो. 5) J सण्णी, P विप्पजढो, P संजुत्तो, P मि for पि. 6) P परिसबल, J पडिवण्णे, P उपसग्गसग्गे सहे पहम्मि. 7) P om. समणे सुयणे, P adds दुक्खदायस्स after पंकस्स, J स एव for य सव्वए साहु, P साहू. 8) P लद्धिं. 9) P om. अवहरेज्ज जं पावं etc. to साहूण णमोक्कारो कीरंतो. 10) P मेत्तसमिद्धो ।. 11) J सोक्खं दीवं च P मोक्खपदीवं. 12) P पुरिसाण पंचेव, J ता णमोक्कारो. 13) P सेयण, J होइ for परम, P परमं, J adds पर before पुण्णं. 14) J एवं, P वरवरयं, J अमयं for परमं, P सोयं for सारं, J सारं for पारं. 15) P परो for मणो. 16) P मि for पि, P adds जोगं before नो. 17) P समुद्दम्मी अपत्तदव्वं च माणिक्कं ॥, J कयाइं रयणाइं व. 18) P अब्भरुद्धुलं, P मज्ज ।. 19) P दुलहो सो. 20) P जलणा व्व, P सीलो पडिवहजुत्तं, J जिणे. 21) P महोयहं नमंतेहिं ।. 22) P पुण्ण for पुण, P दावानलंमि, P जाओ for ठाउ. 23) P दव्वेणं भाविओ, P जाव न हियओ. 24) P आराहेयव्वो, J om. मए, पयत्तेणं, P दुक्खाणं इच्छसे अंतं ॥. 25) P om. त्ति, P खवगसेढी-, J adds अवि य after कह. 26) P सोसेइ, P सुक्कज्झाणानलेण, P अणंतनामो. 27) J तं for जं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं णियट्टि-ठाणं खाइय-सम्मत्त-लाभ-सुललियं । लंघेऊणं अट्ठ वि कसाय-रिवु-डामरे हणइ ॥
झोसेइ णवुंसत्तं इत्थी-वेयं च अण्ण-समएण । हास-रइ-छक्कमण्णं समएणं णिद्दहे वीरो ॥
णिय-जीय-वीरिएणं खग्गेण व कयलि-खंभ-सम-सारं । पच्छा णिय-पुंवेयं सूडेइ विसुद्ध-लेसाओ ॥
कोधाई-संजलणे एक्केकं सो खवेइ लोभंतं । पच्छा करेइ खंडे असंख-मेत्ते उ लोहस्स ॥
एक्केकं खवयंतो पावइ जा अंतिमं तयं खंडं । तं भेत्तूण करेई अणंत-खंडेहिँ किट्टीओ ॥
तं वेएंतो भण्णइ महामुणी सुहुम-संपराओ त्ति । अहखायं पुण पावइ चारित्तं तं पि लंघेउं ॥
पंचक्खर-उग्गिरणं कालं जा वीसमित्तु सो धीरो । दोहिँ समएहिँ पावइ केवल-णाणं महासत्तो ॥
पयलं णिद्दं पढमं पंच-विहं दंसणं चउ-वियप्पं । पंच-विहमंतरायं च खवेत्ता केवली जाओ ॥
आउय-कम्मं च पुणो खवेइ गोत्तेण सह य णामेण । सेसं पि वेयणीयं सेलेसीए विमुक्को सो ॥
अह पुव्व-पओएणं बंधण-खुडियत्तणेण उड्ढ-गई । लाउय-एरंड-फले अग्गी-धूमे य दिट्ठंता ॥
ईसीपब्भाराए पुहईए उवरि होइ लोयंतो । गंतूण तत्थ पंच वि तणु-रहिया सासया जाया ॥
णाणमणंतं ताणं दंसण-चारित्त-वीरिय-सणाहं । सुहुमा णिरंजणा ते अक्खय-सोक्खा परम-सुद्धा ॥
अच्छेज्जा अब्भेज्जा अव्वत्ता अक्खरा णिरालंबा । परमप्पाणो सिद्धा अणाय-सिद्धा य ते सव्वे ॥
सा सिवपुरि त्ति भणिया अयला स च्चेय स बियापावा । से तं दीवं तच्चिय तं चिय हो बंभ-लोयं ति ॥
खेमंकरी य सुहया होइ अणाउ त्ति सिद्धि-ठाणं च । अववग्गो णेव्वाणं मोक्खो सोक्खो य सो होइ ॥
तत्थ ण जरा ण मच्चू ण वाहिणो णेय सव्व-दुक्खाइं । अच्चंत-सासयं चिय भुंजंति अणोवमं सोक्खं ॥
एत्थ य कहा समप्पइ कुवलयमाल त्ति जा पुरा भणिया । दक्खिण्ण-इंध-बुद्धी-वित्थारिय-गंथ-रयणिल्ला ॥

§ ४२७) पणय-तियसिंद-सुंदरि-मंदर-मंदार-गलिय-मयरंदं । जिण-चलण-कमल-जुयलं पणमह मुहलालि-संगीयं ॥
पढमं चिय णयरी-वण्णणम्मि रिद्धीओ जा मए भणिया । धम्मस्स फलं अक्खेवणि त्ति मा तत्थ कुप्पेज्जा ॥
जं चंडसोम-आई-वुत्तंता पंच ते वि कोधाई । संसारे दुक्ख-फला तम्हा परिहरसु दूरेण ॥
जाओ पच्छायावो जह ताणं संजमं च पडिवण्णा । तह अण्णो वि हु पावो पच्छा विरमेज्ज उवएसो ॥
जिण-वंदण-फलमेयं जक्खो जिणसेहरो त्ति जं कहिओ । साहम्मियाण णेहो जीयाण बलं वदीणं तं ॥
वइर-परंपर-भावो संवेगो तिरिय-धम्म-पडिवत्ती । विज्जाहराण सिद्धी अच्छरियं एणियक्खाणे ॥
सरणागयाण रक्खा धीरं साहम्मि-वच्छलत्तं च । अपमत्त-सुलभ-बोही संवेगो भिल्ल-वुत्तंतो ॥
कुवलयमाला-रूवं धम्म-फलं तत्थ जो य सिंगारो । तं कव्व-धम्म-अक्खेवणीय सम्मत्त-कज्जेण ॥
सम्मत्तस्स पसंसा घेप्पउ वयणं जिणाण लोगम्मि । चित्तवडेण विचित्तो संसारो दंसिओ होइ ॥
विण्णाण-सत्त-सारो होइ कुमारस्स दंसिओ तेण । जिण-णाम-मंत-सत्ती वुत्तंतेणं णरिंदाण ॥
पर-तित्थियाण-मेत्ती सरूव-जाणा-मणेण जिण-वयणं । होइ विसुद्ध-तरायं जुत्ति-पमाणेहिँ तं सारं ॥
जुय-समिला-दिट्ठंतो दुलहं माणुस्सयं च चिंतेसु । दिय-लोए धम्म-फलं तम्हा तं चेय कायव्वं ॥
कम्मस्स गई णेहस्स परिणई बुज्झणा य थोएण । धम्म-पडिबोह-कुसलत्तणं च वीरेण णियय-भवे ॥

1) P नियड्डिट्ठाणं खाइसम्मत्तलाह. 2) J झोसइ णमंसत्तं इत्थीवेतं P सोसेइ नपुंसत्तं इत्थीवेयं, P हासाइछक्कमण्णं, J -रति-, P निज्जिरे वीरो, J धीरो for वीरो. 3) P कस्सयलि, J पुंवेतं, J लेस्साओ. 4) J कोधाती संजलणा, P कोहाई-, J लोहंतं, J करेति, J मेते तु P मेत्तो उ. 5) P णवइ for पावइ, J करेती. 6) J अहखातं. 7) P पंचखर, J सो for जा, P वीसमीउ सो वीरो, P केवलिनालं. 8) J पढमे, P om. च. 9) P आउएखंमं, J खवेति, P इ for य, J वेतणीयं. 10) J एरंडइलं. 11) P has संजया twice for सासया. 13) P अच्छज्जा अकया निरालंबा ।, P अणायसुद्धा. 14) P स चिय अणाहा ।, J तद्दीवं, P om. तच्चिय. 15) J होउ for होइ, P अपवग्गो. 16) P नेय दुक्खसज्झाइं ।, J सासतं, P adds य after चिय. 17) J दक्खिण्ण', P बुधी-. 18) P पणयसुरसिद्धसुंदरि, P मंदारमलिय, P जिणचयण. 19) P चिय नगरी, J वण्णणंति, P वण्णाणंमि. 20) JP आती for आई, J कोधाती P कोहाती, J संसार. 22) J बलं च दीणंतं, P वदीणत्तं. 23) P विआहरणाण सिद्धि, J अच्छयरं, P एणियाखाणे. 24) P रक्खी, J सुलह-. 25) J कम्म for कव्व. 26) J लोअंमि P चित्तपडे वि विचित्तो. 27) P कुमार, J जिणे णाणं सम्मत्तसत्ती. 28) J तित्थयाण मेत्ती, P -मित्ती, P om. तं सारं. 30) P गई नेयस्स, P थेवण ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुडीए देव-माया वंचण-वेला खु धम्म-पडिवत्ती । अवर-विदेहे दंसण कामगइंदस्स वुत्तंते ॥
उच्छाह-सत्त-सारो सिद्धी विज्जाए भोग-संपत्ती । सम्मत्त-दाण-कुसलत्तणं च तह वइरगुत्तम्मि ॥
दिव्वाणं संलावो बोहत्थं सो सयंभुदेवस्स । मा कुण कुडुंब-कज्जे पावं एसा गई तस्स ॥
सुह-संबोधी-सुमिणं महारहे जम्मि ताईं भणियाइं । भव्वाणं एस ठिई थोवेण वि जेण बुज्झंति ॥
आराहणा य अंते आलोयण-णिंदणा य वोसिरणा । पंच-णमोक्कारो चिय मोक्खस्स य साहणो भणिओ ॥
केवल-णाणुप्पत्ती भणिया सेढीए खवग-णामाए । मोक्खे परमं सोक्खं संपत्ता तत्थ सव्वे वि ॥

§ ४२८) जं खल-पिसुणो अम्हं व मच्छरी रस-मूढ-वुग्गहिओ । भणिहिइ अभाणियव्वं पि एत्थ भणिमो सयं चेय ॥
रागो एत्थ णिबद्धो किं कीरइ राग-बंधणा एसा । पडिवयणं तत्थ इमं देज्जसु अह राग-चित्तस्स ॥
रागं णिदंसिऊण य पढमं अह तस्स होइ वेरग्गं । रागेण विणा साहसु वेरग्गं कस्स किं होउ ॥
धम्मस्स फलं एयं अक्खेवणि-कारणं च सव्वं च । रागाओ विरागो वि हु पढमं रागो कओ तेण ॥
वसुदेव-धम्मिलाणं हिंडीसुं कीस णत्थि रागो त्ति । तत्थ ण किंचि वि जंपसि अम्हं मज्झे ण तुह णेहो ॥
रागेण तुमं जाओ पच्छा धम्मं करेसि वेरग्गी । रागो एत्थ पसत्थो विराग-हेऊ भवे जम्हा ॥
कीस पइण्णं राया दढवम्मो कुणइ गुग्गुलाईयं । अज्ज वि मिच्छादिट्ठी जुज्जइ सव्वं पि भणिउं जे ॥
किं सो राया णम्मं लच्छीएँ समं करेइ देवीए । णणु होज्जा रज्ज-सिरी अरहइ सिंगार-वयणाइं ॥
पुरिसाइ-लक्खणेहिं किं कीरइ एत्थ धम्म-उल्लावे । णणु धम्मो कव्वाणं अक्खेवणि-कारणं जम्हा ॥
हरि-खंद-रुद्द-कुसुमाउहेसु उवमाण णागरी-वण्णे । कालम्मि तम्मि कत्तो उवमाणं किं असंतेहिं ॥
भण्णए समए भणिया णव-जुवला चक्कि-कामपाला य । रुद्दा खंदा य पुणो अइवइए विज्ज-सिद्ध त्ति ॥
खंदाणं रुद्दाणं गोविंदाणं च जेण अंगेसु । णामाइँ सुणिज्जंति वि सासय-रूवेसु सव्वेसु ॥
चोज्जं ण होइ एयं धम्मो कव्वस्स जेण उवमाणं । कीरइ अणसंते वि हु अच्छउ ता लोय-सिद्धेसु ॥
उद्धं पिसुणाण इहं वोलीणो अवसरो त्ति णो भणियं । सव्व च्चिय धम्म-कहा सम्मत्तुप्पायणी जेण ॥

§ ४२९) जो पढइ भाव-जुत्तो अहवा णिसुणेइ अहव वाएइ । जइ सो भव्वो वरिसं सम्मत्तं जायए तस्स ॥
लद्धं पि थिरं होहिइ होइ वियड्ढो कई य पसड्ढो । तम्हा कुवलयमालं वाएज्जसु हो पयत्तेण ॥
जो जाणइ देसीओ भासाओ लक्खणाइँ धाऊ य । वय-णय-गाहा-छेयं कुवलयमालं पि सो पढउ ॥
एयाईं जो ण-याणइ सो वि हु वाएउ पोत्थयं घेत्तुं । एत्थं चिय अह णाहिइ कइणो णिउणत्तण-गुणेण ॥
जो सज्जणो वियड्ढो एसा रामेइ तं महालक्खं । जो पिसुण-दुव्वियड्ढो रस-भावं तस्स णो देइ ॥
जीएँ मह देवयाए अक्खाणं साहियं इमं सव्वं । तीए च्चिय णिम्मविया एसा अम्हे मिसं एत्थ ॥
दियहस्स पहर-मेत्ते गंथ-सयं कुणइ भणसु को पुरिसो । हियय-णाया हिरि-देवी जइ मे लिहंतस्स णो होइ ॥
पउमासणम्मि पउमप्पभाए पउमेण हत्थ-पउमम्मि । हियय-पउमम्मि सा मे हिरि-देवी होउ संणिहिया ॥
जइ किंचि लिंग-भिण्णं विभत्ति-भिण्णं च कारय-विहीणं । रहसेण मए लिहियं को दोसो एत्थ देवीए ॥

1) P देवनयावंचण, P कामइंदस्स वुत्तंतो. 2) P विज्जाण, J सम्मत्त. 3) P बोहित्थं, P कुटुंब. 4) P संबोही. 5) P ए for य after णिंदणा, P य इसाहणं भणिओ. 6) P adds नाग before णामाए, P मोक्खं, J adds ते after तत्थ. 7) J वुग्गहियं. 9) P रागं निद्दसिऊण पढमं रागो अहं तस्स वेरग्गं, P किह for किं, P होइउ. 10) P adds वि after फलं, P कव्वं for सव्वं, J राओ कओ. 12) J करोसि, P एस for एत्थ, J विरागहेतू. 13) JP दढधम्मो, J गुग्गुलातीयं, P । नणु मिच्छादिट्ठीणं, J adds इय before जुज्जइ. 14) J लच्छीय, P नणु भोजा रज्जसिरी. 15) J पुरिसाति, P वच्चाणं for कव्वाणं. 16) P रुद्दसुमाउहेसु, P -वण्णो ।. 17) P भण्णइ, J adds ए before समए, J -जवला चक्किकामवालाणं ।. 18) P खंदाणं. 20) P सव्वं चिय, J सम्मत्तपायणी जम्हा ॥. 21) P पढम for पढइ, P om. जइ, P भत्त्वं for वरिसं. 22) J होहिति P जोहिइ. 23) P कव्वाइं for धाऊ य. 24) J om. हु, P पोत्थयए, J णाहिति, P नाइं इइ, J कइणो हिउ णिउणत्तण. 25) P नो होइ for नो देइ. 26) P जाए for जीए. 27) J कुणउ, J जइ मि लिहं°, P जइ संलिहियं तस्स, J देइ for होइ. 28) J पउमंमिभाए for पउमप्पभाए. 29) P चिहत्ति.

उज्जुय-पय-गमणिल्ला सरलुल्लावा य भूसण-विहूणा । दुग्गय-बाल व्व मए दिण्णा तुह सुयण-णेहेण ॥
णेहं देज्ज इमीए ललियं छाएज्ज वयणयं पुलए । अहवा कुलस्स सरिसं करेज्ज हो तुज्झ जं सुयणा ॥
दंसिय-कला-कलावा धम्म-कहा णेय-विक्खिय-णरिंदा । इह लोए होइ थिरा एसा उसभस्स कित्ति व्व ॥

§ ४३०) अत्थि पुहई-पसिद्धा दोण्णि पहा दोण्णि चेय देस त्ति । तत्थत्थि पहं णामेण उत्तरा बुह-अणाइण्णं ॥
सुइ-दिय-चारु-सोहा वियसिय-कमलाणणा विमल-देहा । तत्थत्थि जलहि-दइया सरिया अह चंदभाय त्ति ॥
तीरम्मि तीय पयडा पव्वइया णाम रयण-सोहिल्ला । जत्थ ट्ठिएण भुत्ता पुहई सिरि-तोररापुण ॥
तस्स गुरू हरिउत्तो आयरिओ आसि गुत्त-वंसाओ । तीएँ णयरीएँ दिण्णो जेण णिवेसो तहिं काले ॥
तस्स वि सिस्सो पयडो महाकई देवउत्त-णामो त्ति । ....सिवचंद-गणी अह महयरो त्ति ॥
सो जिण-वंदण-हेउं कह वि भमंतो कमेण संपत्तो । सिरि-भिल्लमाल-णयरम्मि संठिओ कप्परुक्खो व्व ॥
तस्स खमासमण-गुणो णामेण य जक्खदत्त-गणि-णामो । सीसो महइ-महप्पा आसि तिलोए वि पयड-जसो ॥
तस्स य बहुया सीसा तव-वीरिय-वयण-लद्धि-संपण्णा । रम्मो गुज्जर-देसो जेहि कओ देवहरएहिं ॥
णागो विंदो मम्मड दुग्गो आयरिय-अग्गिसम्मो य । छट्ठो वडेसरो छम्मुहस्स वयण व्व ते आसि ॥
आगासवप्प-णयरे जिणालयं तेण णिम्मवियँ रम्मं । तस्स मुह-दंसणे च्चिय अवि पसमइ जो अहव्वो वि ॥
तस्स वि सीसो अण्णो तत्तायरिओ त्ति णाम पयड-गुणो । आसि तव-तेय-णिज्जिय-पाव-तमोहो दिणयरो व्व ॥
जो दूसम-सलिल-पवाह-वेग-हीरंत-गुण-सहस्साण । सीलंग-विउल-सालो लक्खण-रुक्खो व्व णिक्कंपो ॥
सीसेण तस्स एसा हिरिदेवी-दिण्ण-दंसण-मणेण । रइया कुवलयमाला विलसिय-दक्खिण्ण-इंधेण ॥
दिण्ण-जहिच्छिय-फलओ बहु-कित्ती-कुसुम-रेहिराभोओ । आयरिय-वीरभद्दो अघावरो कप्परुक्खो व्व ॥
सो सिद्धंतेण गुरू जुत्ती-सत्थेहि जस्स हरिभद्दो । बहु-सत्थ-गंथ-वित्थर-पत्थारिय-पयड-सव्वत्थो ॥
आसि तिकम्माभिरओ महादुवारम्मि खत्तिओ पयडो । उज्जोयणो त्ति णामं तच्चिय परिभुंजिरे तइया ॥
तस्स वि पुत्तो संपइ णामेण वडेसरो त्ति पयड-गुणो । तस्सुज्जोयण-णामो तणओ अह विरइया तेण ॥
तुंगमलंघं जिण-भवण-मणहरं सावयाउलं विसमं । जावालिउरं अट्ठावयं व अह अत्थि पुहईए ॥
तुंगं धवलं मणहारि-रयण-पसरंत-धयवडाडोयं । उसभ-जिणिंदाययणं करावियं वीरभद्देण ॥
तत्थ ठिएणं अह चोद्दसीए चेत्तस्स कण्ह-पक्खम्मि । णिम्मविया बोहिकरी भव्वाणं होउ सव्वाणं ॥

1) P adds निरलंकारा य after गमणिल्ला, P सरलउल्लावा, P om. भूसण विहूणा, P om. बाल व्व, P तुह सयण-. 2) P करेज्ज जं तुज्झ हो सुयणु. 3) P -कलावो धंमक्खाणेय, P लोय, P om. होइ. 4) P om. two verses अत्थि पुहई etc. to चंदभाय त्ति, J adds वहं after उत्तरा. 6) P अत्थि for तीरम्मि तीय, P adds पुरीणं after पयडा, J जत्थत्थि ठिए भुत्ता, P तत्थ for जत्थ, P सिरितोरराणेण (°राणेण can be read as °माणेण). 7) P हरियत्तो, J तीय णयरीय, P दिन्नो जिणनिवेसो तहिं कालो. 8) P बहुकलाकुसलो सिद्धंतवियाणओ कई दक्खो । आयरियदेवगुत्तो जस्स वि विज्जए किती ॥ for the line तस्स वि सिस्सो etc. to देवउत्तणामो त्ति. The line is defective: perhaps some syllables like [तस्स वि सीसो सो] are missing at the beginning, JP मयहरो. 9) P सो एत्थ आगओ देसं for the line सो जिणवंदण हेउं etc. to संपत्तो. 10) J गुणा, P om. य, J जक्खयत्त P जक्खदत्त, P सिस्सो for सीसो. 11) P inter. बहुया & सीसा, P om. वयण, P लद्धचरणसंपण्णा. 12) P om. a verse णागो विंदो etc. to ते आसि, J वडेसरो, J स्स for व्व. 13) J -णरे for णयरे, P नयरे वडेसरो आसि जो खमासमणो ।, J जिणाणयं, J अब्भव्वो for अहव्वो. 14) P य आयारधरो for वि सीसो अण्णो, J अन्तो for अण्णो, P सार for पयड, J णिज्जिय-पविमयमोहो, J om. दिणयरो व्व ॥ etc. to हीरंतगुणसहस्साण ।. 15) P लक्खणखंभो व्व. 16) P कुवयमाला विलसिर. 17) J अत्थावरो P अवावरो. 18) P सो सिद्धंतगुरू पमाणनाए जस्स, P मह for बहु, P inter. गंथ & सत्थ. J पत्थरिय. 19) P सया खत्तियाणं वंसे जाओ वडेसरो नाम for the three lines आसि तिकम्माभिरओ etc. to त्ति पयडगुणो ।, J आसी. 20) J वडेंसरो. 21) J सारयाउलं, J विउरं for विसमं, P om. जावालिउरं, P inter. अह अत्थि & पुहईए. 22) P धयवडाडोयं, J °वडाडोवं, P उसह-, J जिणिंदायतणं, P कारवियं. 23) P तंमि for तत्थ, J P ट्ठिएणं, P किण्ह-, P बोहकरी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर-भड-भिउडी-भंगो पणईयण-रोहिणी-कला-चंदो । सिरि-वच्छराय-णामो रण-हत्थी पत्थिवो जइया ॥
को किर वच्चइ तीरं जिण-वयण-महोयहिस्स दुत्तारं । थोय-मइणा वि बद्धा एसा हिरिदेवि-वयणेण ॥
जिण-वयणाओ ऊणं अहियं व विरुद्धयं व जं बद्धं । तं खमसु संठवेज्जसु मिच्छा अह दुक्कडं तस्स ॥
चंदकुलावयवेणं आयरिउज्जोयणेण रइया मे । सिव-संति-बोहि-मोक्खाण साहिया होउ भवियाण ॥
एयं कहं करेउं जं पुण्णं पावियं मए विउलं । साहु-किरियासु चित्तं भवे भवे होउ मे तेण ॥
सग-काले वोलीणे वरिसाण सएहिँ सत्तहिँ गएहिँ । एग-दिणेणूणेहिँ रइया अवरण्ह-वेलाए ॥
ण कइत्तणाहिमाणो ण कव्व-बुद्धीऍ विरइया एसा । धम्मकह त्ति णिबद्धा मा दोसे काहिह इमीए ॥

§ ४३१) अरहंते णमिऊणं सिद्धे आयरिय-सव्व-साहू य । पवयण-मंगल-सारं वोच्छामि अहं समासेण ॥
पढमं णमह जिणाणं ओहि-जिणाणं च णमह सव्वाणं । परमोहि-जिणे पणमह अणंत-ओही जिणे णमह ॥
वंदे सव्वोहि-जिणे पणमह भावेण केवलि-जिणे य । णमह य भवत्थ-केवलि-जिण-णाहे तिविह-जोएण ॥
णमह य उज्जुमईण विउलमईणं च णमह भत्तीए । पण्णा-समणे पणमह णमह य तह बीय-बुद्धीणं ॥
पणमह य कोट्ठ-बुद्धी पयाणुसारीण णमह सव्वाण । पणमह य सुय-धराणं णमह य संभिण्णसोयाणं ॥
वंदे चोद्दस-पुव्वी तह दस-पुव्वी य वायए वंदे । एयारसंग-सुत्तत्थ-धारए णमह आयरिए ॥
चारण-समणे पणमह तह जंघा-चारणे य पणमामि । वंदे विज्जासिद्धे आगास-गामे य जिणकप्पे ॥
आमोसहिणो वंदे खेलोसहि-जल्लोसहिणो णमह । सव्वोसहिणो वंदे पणमह आसीविसे तह य ॥
पणमह दिट्ठी-विसिणो वयण-विसे णमह तेय-लेसिल्ले । वंदामि सीय-लेसे विप्पोसहिणो य पणमामि ॥
खीरासविणो णमिमो महुस्सवाणं च वंदिमो चलगे । अमयस्सवाण पणमह अक्खीण-महाणसे वंदे ॥
पणमामि विउव्वीणं जलही-गमणाण भूमि-सज्जीणं । पणमामि अणुय-रूए महल्ल-रूवे य पणमामि ॥
मण-वेगिणो य पणमह गिरिराय-पडिच्छिरे य पणमामि । दिस्सादिस्से णमिमो णमह य सव्वड्ढि-संपण्णे ॥
पणमह पडिमावण्णे तवो-विहाणेसु चेय सव्वेसु । पणमामि गणहराणं जिण-जणणीणं च पणमामि ॥
केवल-णाणं पणमामि दंसणं तह य सव्व-णाणाइं । चारित्तं पंच-विहं तेसु य जे साहुणो सव्वे ॥
चक्कं छत्तं रयणज्झओ य चमराईं दुंदुहीओ य । सीहासण-कंकेल्ली पणमह वाणी जिणिंदस्स ॥

1) P om. four verses परभडभिउडी etc. to होउ भवियाण ॥, J रोहणी for रोहिणी.　3) J om. व before जं.　4) J आयरियउज्जो अणेण, J साहियाण होउ.　5) P कउं for करेउं, P विमलं for विउलं, P किरिया चित्तं.　6) P एगदिणेणूणेहिं एस समत्तावरण्हंमि ॥.　7) P om. the verses ण कइत्ताहिमाणो etc. to काहिह इमीए ॥. For the Section § 431 consisting of verses beginning with अरहंते णमिऊणं etc. to होइ तं तं च ॥ of J, the Ms. P has the following verses which are reproduced with very minor corrections, some of its orthographical traits like the initial न etc. being retained:

बुज्झंति जत्थ जीवा सिज्झंति वि के वि कम्म-मल-मुक्का । जं च नमियं जिणेहिं तं तित्थं नमह भावेण ॥
पणमामि उसह-नाहं सेसे वि जेणेज उत्तर (जिणे य उत्तरे) नमिमो । जणणि-जणए य ताणं गणहर-देवे य पणमामि ॥
केवल-नाणं पणमामि दंसणं तह य सव्व-नाणाइं । चारित्तं पंच-विहं भावेण नमामि संपन्नं ॥
पणमामि धम्म-चक्कं जिणाण छत्तत्तियं रयण-चित्तं । धम्मज्झयं ति वंदे चेइय-रुक्खं पडा-जालं ॥
पउमासणं च वंदे चामर-जुवलं च चंद-किरणाभं । सुमरामि दुंदुभि-रवं जिणस्स वाणिं च वंदामि ॥
वंदामि सव्व-सिद्धे पंचाणुत्तर-निवासिणो जे य । लोयंतिए य देवे वंदे सव्वे सुरिंदे य ॥
आहारय देव(ह)हरे वंदह परिहार-संठिए मुणिणो । उवसामग-सेणित्थे वंदह तह खवग-सेढित्थे ॥
वंदे चउदस-पुव्वी दसणे तह रायगे (वायगे) य पणमामि । एगारसम्मि आयार-धारए पंच-समिए य ॥
अक्खीण-महाणसिए वंदे तह सीय-तेय-लेसिल्ले । चारण-समणे वंदे तह जंघा-चारणे नमिमो ॥
आसीविसे य वंदे जल्लोसहि-खेल-ओसहि-धरे य । आमोसही व विप्पोसही य सव्वोसहिं वंदे ॥
वंदामि बीय-बुद्धिं वंदे विउलं च कोट्ठ-बुद्धिं च । सव्वायरिए पणओ अज्झावय-सव्व-साहू य ॥
ओहिण्णाणी पणओ मणपज्जव-नाणिणो य जे समणे । पणमामि अणंतेहिं सव्वेहिं वंदिमो अहयं ॥
बल-केसवाण जुवणे (जुवले) सुमरामि इ चक्कवट्टिणो स [व्वे] । अण्णे वि वंदणिज्जे पवयण-सारि(रे) [पणि] वयामि
जिण-जम्मण-भूमीओ वंदे निव्वाण-नाण-मेरुं च । सम्मेय-सेल-सिहरे सिद्धाययणे पणिवयामि ॥
एयं जो पढइ नरो गोसग्गे अयल-भत्ति-संजुत्तो । सव्वं सिज्झइ कज्जं तद्दियहं तस्स विउलं पि ॥ छ ॥

...　　...　　...　　...

9) J अणंत ओहिजिणे.　10) J सव्वोहिजिणो.　12) J -बुद्धीणं पयाणु, J om. य before सुय.　15) J जल्लोसहि णमह.
16) J दिट्ठी विसणो, J तव for तेय.　17) J महुस्सराणं.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

वंदामि सव्व-सिद्धे पंचाणुत्तर-निवासिणो जे य । लोयंतिए य देवे वंदइ सव्वे सुरिंदे य ॥
आहारय-देह-धरे उवसामग-सेढि-संठिए वंदे । सम्मद्दिट्ठि-प्पमुहे सव्वे गुणठाणए वंदे ॥
संती कुंथू य अरो एयाणं आसि णव महाणिहिओ । चोद्दस-रयणाइँ पुणो छण्णउइं गाम-कोडीओ ॥
बल-केसवाण जुयले पणमह अण्णे य भव्व-ठाणेसु । सव्वे वि वंदणिज्जे पवयण-सारे पणिवयामि ॥
ओ मे भवग्ग-वग्गू सुमणे सोमणस होंतु महु-महुरा । किलिकिलिय-घडी-चक्का हिलिहिलि-देवीओ सव्वाओ ॥
इय पवयणस्स सारं मंगलमेयं च पूइयं एत्थ । एयं जो पढइ णरो सम्मद्दिट्ठी य गोसग्गे ॥
तद्दियसं तस्स भवे कल्लाण-परंपरा सुविहियस्स । जं जं सुहं पसत्थं मंगल्लं होइ तं तं च ॥
§ ४३२) इय एस गणिज्जंती तेरस-कलणाइँ जइ सहस्साइं । अण्णो वि को वि गण्णेही सो णाही णिच्छिया संखा ॥
इय एस समत्त चिय हिरिदेवीए वरप्पसाएण । कइणो होउ पसण्णा इच्छिय-फलया य संघस्स ॥

卐

॥ इति कुवलयमाला नाम संकीर्ण-कथा परिसमाप्ता ॥

॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

---

3 > J महाणिवहो, J छण्णउइ. 8 > J घडिचक्का. 9 > J om. two verses इय एस गणिज्जंती etc, P ए for एस. The colophon of P stands thus: समाप्तेयं कुवलयमाला नाम कथा ॥ छ ॥ ग्रंथ संख्या सहस्र ॥ १०००० कृति श्रीश्वेतपटनाथमुनेर्दाक्षिण्यलांछनस्य उद्योतनसूरे ॥ छ ॥ ॥ छ ॥. The Ms. J adds something more after महाश्रीः, ॥ छ ॥ संवत् ११३९ फाल्गु वदि १ रवि दिने लिखितमिदं पुस्तकमिति ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघी जैन ग्रन्थ माला

••••••••••••••••••••••••[ग्रन्थांक ४५-अ]••••••••••••••••••••••••

श्रीमद् - रत्नप्रभसूरि - विरचित

कुवलयमाला-कथा-संक्षेप

(प्राकृतभाषामय कुवलयमाला महाकथा वस्तुसार स्वरूप)

प्रथम भाग - परिशिष्टात्मक ग्रन्थ

SINGHI JAIN SERIES

•••••••••••••••••••••[NUMBER 45 A]•••••••••••••••••••••

KUVALAYAMĀLĀ-KATHĀ-SAMKSEPA

OF

RATNAPRABHA SŪRI

(A Stylistic Digest of the Prākṛta Kuvalayamālā Kathā
of Uddyotana Sūri)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SINGHI JAIN SERIES

A COLLECTION OF CRITICAL EDITIONS OF IMPORTANT JAIN CANONICAL PHILOSOPHICAL, HISTORICAL, LITERARY, NARRATIVE AND OTHER WORKS IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRAMSHA AND OLD RAJASTHANI-GUJARATI LANGUAGES, AND OF NEW STUDIES BY COMPETENT RESEARCH SCHOLARS

●

ESTABLISHED

IN THE SACRED MEMORY OF THE SAINT-LIKE LATE SETH

ŚRĪ DĀLCHANDJĪ SINGHĪ

OF CALCUTTA

BY

HIS LATE DEVOTED SON

DANASILA – SAHITYARASIKA – SANSKRITIPRIYA

ŚRĪ BAHADUR SINGH SINGHI

●

DIRECTOR AND GENERAL EDITOR

Padmashri, ĀCHĀRYA JINA VIJAYA MUNI

ADHIṢṬHĀTĀ, SINGHĪ JAIN ŚASTRA ŚIKSHĀ PĪTHA

(Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay.)

Honorary Founder-Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur; General Editor, Rajasthan Puratan Granthamala; etc.

(Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Vishveshvaranand Vaidic Research Institute, Hosiyarpur; and Gujarat Sāhitya Sabhā, Ahmedabad.)

●

PUBLISHED

UNDER THE PATRONAGE OF

SRI RAJENDRA SINGH SINGHI

AND

SRI NARENDRA SINGH SINGHI

BY THE ADHISTHĀTĀ

SINGHI JAIN SHASTRA SHIKSHAPITH

BHARATIYA VIDYA BHAVAN, BOMBAY

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्नप्रभसूरिविरचिता

कुवलयमालाकथा

[अथ प्रथमः प्रस्तावः]

卐

॥ ओं अर्ह ॥

§ १) आदित्यवर्णं तमसः परस्तादस्तान्यतेजःप्रचयप्रभावम् ।
यमेकमाहुः पुरुषं पुराणं परात्मदेवाय नमो ऽस्तु तस्मै ॥ १
लोकालोकलसद्विचारविदुरा विस्पष्टनिःश्रेयस-
द्वारः स्फारगुणालयस्त्रिभुवनस्तुत्यांह्रिपङ्केरुहः ।
शश्वद्विश्वजनीनधर्मविभवो विस्तीर्णकल्याणभा
आद्यो ऽन्ये ऽपि मुदं जनस्य ददतां श्रीतीर्थराजश्चिरम् ॥ २
गोभिर्वितन्वन् कुमुदं विमुद्रं तमःसमूहं परितः क्षिपंश्च ।
ददातु नेत्रद्वितयप्रमोदं श्रीशान्तितीर्थाधिपतिर्मृगाङ्कः ॥ ३
शिवाय भूयादपुनर्भवाय शिवाङ्गजन्मा स शिवालयो वः ।
जन्मप्रभृत्येव न यस्य कस्य ब्रह्मव्रतं विश्रुतमेतदत्र ॥ ४
अष्टमूर्तिरिव भाति यो विभुर्नम्रनागमणिराजिबिम्बितः ।
दर्पकोपचितिविच्युतिक्षमः क्षेममेष तनुतां जिनः स वः ॥ ५
यन्नाममन्त्रवशतो ऽपि शरीरभाजां नश्यन्ति सामजघटा इव दुष्कृतौघाः ।
पादाग्रलाञ्छनमृगेन्द्रभुवा भियेव देवः स वः शिवसुखानि तनोतु वीरः ॥ ६
सा भारती यच्छतु वाञ्छितानि यस्याः प्रसादात्कवयो वयन्ति ।
प्रबन्धवासः सुगुणाभिरामं न यस्य मूल्यं न च जीर्णता च ॥ ७
भास्वन्तमत्यन्तमुदा द्विधा तं गुरुं तमस्तोमहरं प्रणौमि ।
गोसंगतो यस्य भवत्यवश्यं विकस्वरं ज्ञानसरोजमेतत् ॥ ८
कुवलयमालेव कथा कुवलयमालाह्वया कुवलये ऽस्मिन् ।
अर्थप्रपञ्चपरिमलपरिमिलिताभिज्ञरोलम्बा ॥ ९
दाक्षिण्यचिह्नमुनिपेन विनिर्मिता या प्राक् प्राकृता विबुधमानसराजहंसी ।
तां संस्कृतेन वचसा रचयामि चम्पूं सद्यः प्रसद्य सुधियः प्रविलोकयन्तु ॥ १०

The references 1), 2), etc. are to the numbers of the lines of the text, put on both the margins. 1) After the symbol of *bhale*, which looks like Devanāgarī ६०, P opens thus: अर्ह ॥ श्रीगौतमाय नमः ॥ नमः श्रीह्रीदेवतायै ॥ नमः श्रीबृहत्कुवलयमालाकथाविधायिने श्रीदाक्षिण्यचिह्नसूरिप्रवराय ॥ ओं अर्ह ॥ आदित्यवर्णं etc.; B has its opening folios missing; C is made to open thus: ॥ अर्ह ॥ न्यायाम्भोनिधिश्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः ॥ श्रीमद्रत्नप्रभसूरिविरचिता कुवलयमालाकथा । आदित्यवर्णं etc. 12) P विभुर्नाम्र (°र्नाम्र ?). 13) P विच्युतिक्रमः. 15) P ते वः for देवः. 18) P द्विधातुं गुरुं 19) P नाम for ज्ञान. 22) P प्राग् प्राकृता.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ २) गतिचतुष्टयसंभूतप्रभूतदुष्कृतमयापारसंसारसागरे परिभ्रमता जन्तुना महता कष्टेन मनुष्यभवः प्राप्यते। तत्रापि दुर्लभप्राप्तपुरुषत्वेन सत्पुरुषेण पुरुषार्थेष्वादरः कर्तव्यः। ते पुनस्त्रिरूपाः। धर्मो ऽर्थः कामः। केषांचिन्मोक्षश्चेति। एतैर्विरहितस्य पुरुषस्य महद्दर्शनाभिरामस्यापि केवलं निष्फलं जन्मेति। यतस्तेषु च विशेषत एव धर्मः श्रेयस्तरः। स पुनस्तावद्बहुविधो लोकप्रसिद्धश्च। सर्वेषां मणीनामिव कौस्तुभः, कुञ्जराणामिव सुरगजः, सागराणामिव क्षीरसागरः, नृणामिव चक्रवर्ती, शाखिनामिव कल्पशाखी, शैलानामिव सुमेरुः, सुराणामिव देवेन्द्रः, तेषां धर्माणामुपरि विराजते जिनेन्द्रप्रणीतो धर्मः। स च चतुर्विधो दानशीलतपोभावनाभेदैः। तत्र प्रथममेव प्रथमतीर्थपेन प्रथितपृथुमहिम्ना धनसार्थवाहभवे व्रतिभ्यः प्राज्यमाज्यं ददता रोपितो दानधर्मः। ततः सिद्धगन्धर्वादीनां प्रत्यक्षं प्रतिज्ञां समाश्रयता भगवता सर्वं मम पापमकरणीयमिति प्रकटीकृतः शीलधर्मः। वर्षोपवासस्थितेन प्रकाशितो लोके तपोधर्मः। तथैकान्ताशरणत्वकर्मवर्गणाबन्धमोक्षनारकतिर्यग्गतिनरामरगमनागमनदुःखसुखधर्मशुक्लध्यानादिभावनां भावयता भगवता निवेदितो भावनाधर्मः। ततो ऽस्मादृशस्तादृशैर्दीनादिभिस्त्रिभिर्दूरत एव परित्यक्ताः। यतः सत्त्वसंहननवर्जिताः। तस्मादेष संवेगकारको भावनाधर्मः सुखकरणीय इति। यतः सदा सत्पुरुषालीकदोषप्रवृत्तिपराः प्रमादपरवशाश्चेतसो दुर्जनपार्श्ववर्तिनः परमर्ममार्गानुसारिणस्तिष्ठामः, ततः श्रीमज्जिनेन्द्रश्रमणपुङ्गवसत्पुरुषगुणग्रामाभिरामोत्कीर्तनेन सफलीक्रियते जन्मेति। अन्यच्च, ये च पूर्वं पादलिप्त-शातवाहन-षट्कर्णक-विमलाङ्क-देवगुप्त-बन्दिक-प्रभञ्जन-श्रीहरिभद्रसूरि-प्रभृतयो महाकवयो बभूवुः। येषामेकैको ऽपि प्रबन्धो ऽद्यापि सहृदयानां चेतांस्यनुहरति। ततः कथं तेषां महाकवीनां कवित्वतत्त्वपदवीमनुभवामः। यद्यूर्णनाभलालाभिर्मदोन्मत्ताः करिणो बध्यन्ते, यदि वा तुच्छगुञ्जाफलैरनुपमानां विद्रुमाणां शोभा प्राप्यते, यदि वा काचशकलैर्वैडूर्यमणिप्रभा प्रकाश्यते, यदि वा भुजाभ्यामुभाभ्यामम्भोधिस्तीर्यते, यदि वा काञ्चनगिरिस्तुलया तोल्यते, ततश्चतुरचेतसां चमत्कारिणी कथा मादृशैरपि समुद्गीर्यते। परमियं तु न कवित्वमदेन, न च शब्दशास्त्रप्रावीण्येन, न च साहित्यसौहित्येन, न च कर्कशतर्ककौशलेन, किंत्वात्मनो विनोदाय। सा च पञ्चधा सकल-खण्ड-उल्लाप-परिहास-वराख्यादिभिः कथाभिः। एताः कथाः सर्वा अपि प्रसिद्धाः। एतासां लक्षणधरा संकीर्णकथा ज्ञातव्या। अथ संकीर्णकथैवोच्यते। सापि त्रिविधा धर्मार्थकामकथाभिः। ततो धर्मकथैव भण्यते। सा च धर्मकथा चतुर्विधा, आक्षेपिणी १ विक्षेपिणी २ संवेगजननी ३ निर्वेदजननी ४ चेति। तत्राक्षेपिणी मनो ऽनुकूला १, विक्षेपिणी मनःप्रतिकूला २, संवेगजननी ज्ञानोत्पत्तिकारणम् ३, निर्वेदजननी वैराग्यजनका ४। ततः प्रस्तुतकथाशरीरमुच्यते। तच्च कीदृशम्। सम्यक्त्वलाभगुरुतरं परस्परनिर्व्यूढसुहृत्कार्यं निर्वाणगमनसारमेतद् दाक्षिण्यचिह्नेन सूरिणा निर्मितम्। यथा स कथास्वामी कुवलयचन्द्रो जातः। यथा च प्राक्संगतेन देवेन हृतः। यथा च तेन सिंहो देवः साधुश्च दृष्टाः शून्ये कानने। यथा स पूर्वजन्म पञ्चानामपि जनानां मुनिमुखाच्छुश्राव। यथा स सिंहश्च सम्यक्त्वं प्रतिपन्नौ। यथा स्वर्गाच्च्युताः परे ऽपि स कुमारश्च दुस्तपं तपो विधाय स्वर्गमार्गमगमन्। तत्र विविधान् भोगान् भुक्त्वा यथा पुनर्भरतक्षेत्रे समुत्पद्यान्योन्यमजानन्तः सन्तः सर्वे ऽपि केवलिना बोधिताः। श्रामण्यं च निरन्तरं प्रपाल्य संविग्नास्तपस्तीव्रं निर्माय कर्म विनिर्मथ्य यथा मोक्षलक्ष्मीमीयिवांसः। तत्सर्वमपि प्रसन्नाया ह्रियो देवताया मुखतः श्रुत्वा कुवलयमालायां कथायां पूर्वकविना निबद्धम्। तथात्राप्यसारवचसापि मया भण्यमानं महात्मभिः श्रोतव्यम्। यतः,

निस्तेजसो ऽपि माहात्म्यं महानर्पयति श्रितः। भर्गसंसर्गतः पश्य पावित्र्यं भस्मनो ऽपि ॥ ११
सर्वथैव परित्याज्यः स दूराद्दुर्जनः सताम्। द्विधा स्वेनार्पितेनापि यः परं कुरुते द्विधा ॥ १२
तद्विहाय तयोश्चर्चां स्वस्वकार्यविहस्तयोः। अस्याः कथायाः संक्षेपः क्रियते स्वार्थसिद्धये ॥ १३

2 > P om. सत्पुरुषेण, C पुनस्त्रिरूपा धर्मार्थकामाः। 3 > P रामस्यापि स्वैन केवलं. 7 > P तपोभावभेदैः. 8 > P धनसार्थभवे, P प्राज्यमाद्यं. 13 > P परवशाश्चेतसे पार्श्वदुर्जनपार्श्ववर्त्तिनः. 15 > P षट्कर्पर्णक. 18 > P यदि तुच्छ. 20 > P चमरिणी कथा. 28 > P प्राग् संगतेन. 34 > P तथा अत्रापि असारवचसापि. 36 > C explains भर्गसंसर्गतः as शिवसंसर्गादित्यर्थः in a footnote.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३) तथाहि । जम्बूद्वीपे द्वीपे घर्मवारणसधर्मणि षट्खण्डभरतक्षेत्रस्य दक्षिणार्धे मध्यमदेशावनीमौलिमण्डनमणिर्विनीता नाम नगरी । या महापुरुषनाभिजन्मनो जिनेश्वरस्य समेतवासवकृतराज्याभिषेकानन्तरं संप्राप्तनलिनीदलनिक्षिप्तवारिव्यापृतकरमिथुनकपर्यस्तचरणयुगलाभिषेकदर्शनसहर्षहरिप्रजल्पितसाधुविनीतपुरुषाङ्किता विनीतेति प्रसिद्धा तदाभवत् । यत्र च शक्रः स्वयं प्रमुदितचेता भक्तिभरनिभृतो वासनावासितान्तःकरणो ऽनन्तमहिमामेयगाङ्गेयच्छायकायश्रीनाभेयस्य समुच्छ्रितमपनीतहृदयावसादं प्रासादं कारयांचकार। या चानन्तप्रवरसुरभुवननिवहाग्रध्वजाञ्चलैः करैरिव मत्सदृशी पुरी नापरास्ति [इति] निवेदयतीव । यत्र शुभ्रशरदभ्रविभ्रमधारिणि स्फुटस्फाटिकप्रयान्यभ्रंलिहाग्राणि हर्म्याणि सुरपथपथसंचरिष्णोरुष्णांशोरपि विरचयन्ति स्यन्दनस्खलनम् । यत्र द्विमुखो मृदङ्गः, तीक्ष्णो मण्डलाग्रः, भ्रमणशीलो मधुकरः, सकलङ्कश्चन्द्रः, प्रवासी राजहंसः, चित्रलो मयूरः, अविनयी बालः, चपलः प्लवगः, परोपतापी ज्वलन एव न पुनर्जनः । यत्र च स्पर्श एव प्रस्तरः, पीयूषमेव जलम्, छायाद्रुम एव द्रुमः ।

वर्ण्यते सा कथं देवैः किल शक्रनिदेशतः । या श्रीमन्नाभिपुत्रस्य निवासार्थं विनिर्ममे ॥ १४
यां वीक्ष्य पथिका नैककौतुकानां निकेतनम् । प्रवासालापवैधुर्यं स्वप्रियाणां विसस्मरुः ॥ १५
तद्वस्तु नास्ति यत्तत्र प्राप्यते प्राणिभिः सुखम् । यत्कथास्वपि वर्तेत तत्सर्वमपि वीक्ष्यते ॥ १६
यत्र वक्राङ्गता हंसे मत्स्ये च स्वकुलक्षयः । अरिष्टं सूतिकागेहे जने नैव कदाचन ॥ १७
राजन्ते यत्र कासारा नराश्च कमलाश्रिताः । सद्वृत्तशालिनः स्वच्छाः सच्छाया द्विजभूषिताः॥ १८
यन्मृगाक्षीमुखाम्भोजलावण्येन विनिर्जिता । तपस्यतीव त्रपया सरोजालिः सरोजले ॥ १९
अनन्तवैभवोपेतनिकेतोन्नतकेतनैः । छन्नायां यत्र मार्तण्डमण्डलं न दृशां पथि ॥ २०

§ ४) तत्र दृढवर्मा नाम राजा । यः सरलो दाक्षिण्यनिधिर्दानशौण्डो दयालुः शरणागतवत्सलः प्रियंवदः [च] । यस्तु दौर्गत्यशीतसंतापितानां दहनः, न पुनर्दहनः; सुजनवदनकमलाकराणां तपनः, न पुनस्तपनः; घनसमयः स्वजनकदम्बानाम्, शरदागमः प्रणयिजनकुमुदवनस्य, हेमन्तः प्रतिपक्षलक्षकामिनीकमलिनीनाम्, शिशिरकालः सौधयुवतीजनकुन्दलतानाम्, सुरभिर्मित्रकाननानाम्, ग्रीष्मः शत्रुजलाशयानाम्, कृतयुगावतारो निजक्षितिमण्डले, कलिकालो वैरिनरेन्द्रराज्येषु, संतुष्टः स्वकलत्रेषु, न पुनः कीर्तिषु; लुब्धो गुणग्रामेषु, न पुनरर्थेषु; गृद्धः सुभाषितेषु, न पुनरकार्येषु; सुशिक्षितः कलासु, न पुनरलीककपटचाटुवचनेषु । तस्य करालकरवालधाराविदारितवैरिवारणकुम्भस्थलीगलितमुक्ताफलविभूषिताखिलक्षितितलस्य सर्वत्रास्खलितप्रसृतनिस्सीमप्रतापतपनशोषिताशेषविपक्षलक्षकीर्तिसरसीविसरस्य शरच्चन्द्रचन्द्रिकावदातगुणसंघातस्य निरवधिसौभाग्यलक्ष्मीकटाक्षलहरीलक्षितसाभिलाषवपुर्वैभवस्य नम्रानेकनरेश्वरशिरःश्रेणिमणिमुकुटतटोद्भवप्रभाजालपिञ्जरितपादारविन्दस्य प्रतापाक्रान्तदिक्चक्रवालप्रान्तविश्रान्तशासनस्य मधुमथनस्येव कमला, कुमुदबन्धोरिव कौमुदी, निरुपमरूपतिरस्कृतसुरसुन्दरीसार्था अनन्यसामान्यपुण्यलावण्योपचिता अविकलकलाकलापकलिता सदा सद्धर्मध्यानदत्तावधाना सर्वान्तःपुरप्रधाना समग्रगुणग्रामाभिरामा प्रियङ्गुश्यामा स्वयंवरपरिणीता कान्ता कान्ता बभूव । अथ तस्य तया सार्कं नाकेश्वरस्येव शच्या विषयसुखमनुभवतः को ऽपि कालो व्यतिचक्राम ।

§ ५) अन्यदा चाभ्यन्तरसभासीनस्य तस्य भूपस्य कतिपयमन्त्रिजनपरिवृतस्य स्नेहवशप्रियाप्रतिष्ठितवामपार्श्वस्य बाहुलतावलम्बितवेत्रलता प्रतीहारी समाययौ । तया विनतया भूपतेः पदपद्मयुग्ममयुग्मभक्त्या विज्ञप्तम् । 'देव, एष शबरसंज्ञसेनापतिपुत्रः सुषेणाख्यस्तदा देवस्यैवाज्ञया मालवनरेन्द्रविजयार्थं ययौ स सांप्रतं द्वारि स्वामिनश्चरणाम्बुजदर्शनमभिलषन्नस्ति' । राज्ञोक्तं 'प्रविशतु' इति । 'यदाज्ञापयति देवस्तत्प्रमाणम्' [इति] वदन्त्या तया प्रवेशितः सेनानीः । स च नृपं विलोक्य किंचिद्भूभागमुपसर्प्य ननाम । राज्ञापि 'आसनमासनम्' इति जल्पता दक्षिणकरतलेनोत्तमाङ्गं परिस्पृश्य संमानितः । ततो विरचितदेवीप्रणामः स सकलसामवायकनायकगणानतिदूरे यथोचितविष्टरे निषसाद । अथ पृथ्वीभृता तमासनासीनं सुषेणं निरीक्ष्य हृदयाभ्यन्तरप्रवर्तितप्रमोदामृतपूरितनिस्यन्दबिन्दुसंदोहमिव

12) P निर्देशतः 13) P पथिकानेक. 16) P स्वच्छाया 19) P C दृढधर्मा. 20) P दहनो न, P तपनो न. 23) P कलिकाले. 24) P लब्धो for लुब्धो. 28) P तटोद्भवप्राभा. 30) P अविकलाकलंककलाप. 31) C inter. स्वयंवरपरिणीता & प्रियङ्गुश्यामा. 33) Cg वृतस्य सप्रियस्य बाहु. 34) C प्रतिहारी. 35) P शबरसंज्ञः. 36) P द्वारिगो स्वामिन°. 39) P प्रणामसकल. 40) P om. पूरित, Cg °न्तरे प्रमोदामृतपूरितेन हर्षाश्रूणि विमुञ्चता सुषेण.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

मुञ्चता स्निग्धधवलपक्ष्मलचलन्नयनयुगलेन 'सुषेण, कुशलं तव' इत्यप्रच्छि। तेनोक्तं 'देवचरणयुगलदर्शनेनापि सांप्रतं मम क्षेमम्' इति। नृपेणोक्तं 'मालवनरेश्वरेण सह भवतां को वृत्तान्तः समभूत्'। ततः सुषेणः प्रोवाच। 'देवपादानामादेशेन तदा चतुरङ्गबलेन मालवपतिना समं संग्रामः समजनि। तावद्देवप्रतापेन प्रसर्पता मत्सैन्येन रिपुबलं भग्नम्। सैनिकैस्तदीयं सर्वस्वमपि स्वीचक्रे। तस्यान्तःस्थितो ऽबालचरितो बाल एकः पञ्चवर्षदेशीयस्तन्नृपतिसुतः स्वशक्त्या युध्यमानो ऽस्माभिर्गृहीतः। स एष सांप्रतं द्वारदेशे ऽवतिष्ठते।' ततो भूपतेरादेशलेशेन मालवनरेन्द्रनन्दनो महेन्द्रनामा स्फुरत्सौभाग्यसुभगः पुण्यलावण्यावयवश्रीश्चम्पककुसुमतनुरतनुगुणग्राममन्दिरं भविष्यन्महागन्धगज इवादीनैर्दृष्टिपातैर्विलोकयन्नास्थानमुपनृपमाजगाम। ततो राज्ञा विलसत्स्नेहनिर्भरहृदा दीर्घतरभुजादण्डाभ्यां गृहीत्वा निजोत्सङ्गे निवेशितः। भूपतिस्तं निरीक्ष्य प्रमुदितमनाः समुद्र इव चन्द्रमसं स्वयं परिरभ्य बभाषे। 'अहो, वज्रकठिनमानसो ऽस्य जनको यो ऽद्याप्यस्य वियोगे जीवति'। देव्यपि कुमारं देवकुमारमिव पश्यन्ती पुत्रमिव स्नेहं बिभ्रती जल्पितवतीति। 'धन्या सा युवतिर्यस्याः कुक्षौ रोहणगिराविव गुणैरसपत्नं पुत्ररत्नम्। दारुणा सा या सुतविरहे आत्मानं बिभर्ति।' सचिवेश्वरैरुक्तम्। 'किं करोत्वेषः, ईदृश एव विधिपरिणामः। तव सुकृतविलसितं चैतत्।' अपि च।

भवेयुर्न भवेयुर्वा कस्य कस्यापि भूस्पृशः। अतीव स्युः पुनः पुण्यवशातः सर्वतः श्रियः॥ २१

§ ६) अत्रान्तरे स चाभ्यन्तरगुरुदुःखज्वलनज्वालावलीतप्तचित्तो बाष्पाश्रुभी रोदितुं प्रवृत्तः। ततस्तस्य महीभृतः ससंभ्रमजलतरङ्गास्फालितशतपत्रमिव समुदितोदयाचलचूलावलम्बिमार्तण्डमण्डलकिरणगणाहतदिवसधूसरशशधरबिम्बमिव दीप्रप्रदीपप्रभापराभूतमालतिप्रसूनमिव बालस्यास्यं पश्यतः किंचिच्चित्ते 'महद्दुःखम्' इति वदतः प्रसृतबाष्पजलार्द्रं नयनयुगमभूत्। प्रकृतिकरुणहृदयाया देव्या अपि क्षणमश्रुबिन्दुसंदोहेन निपतता कुचकलशोत्सङ्गे हारलीलायितमलंचक्रे, मन्त्रिजनस्यापि पतितश्चाश्रुप्रसरः। 'अहो अतुच्छगुणवत्सल वत्स स्वच्छचित्त, मा विषादस्यावकाशी भव' इति जल्पता भूभृता स्वदुकूलाञ्चलेन बालस्य विमलीकृतं वदनकमलम्। ततः परिजनोपनीतशीतलजलेन कुमारस्य स्वस्य च नयनानि प्रक्षालितानि देव्या मन्त्रिगणेन च। राज्ञा भणितम्। 'भो भोः सुरगुरुप्रमुखाः सचिवेश्वराः, भणत किं कुमारेण ममोत्सङ्गसंगिना रुदितम्।' तत एकेनोक्तम्। 'किमत्र ज्ञेयम्। यत एष खलु बालः पितृमातृवियुक्तो विषण्णचित्तः, अत एतेन रुदितम्।' अपरेणोक्तम्। 'देव, त्वां विलोक्य निजपितरौ हृदि स्थिताविव्यनेन रुदितम्।' अन्येन च भणितम्। 'देव, तथा अस्मिन् समये सम्यग् न ज्ञायते यदस्य बालस्य पितरौ किमवस्थान्तरमनुभवतः, अतो ऽनेन दुःखेन रुदितम्।' राजापि जजल्प। 'किमत्र विचारेण, इममेव पृच्छामः।' भणितश्च भूपतिना। 'पुत्र महेन्द्रकुमार, कथय कथं त्वयाश्रुपातः कृतः।' ततः कुमारेण किंचित्सगद्गदं गम्भीरमधुराक्षरं भणितम्। 'पश्यत विधिविलसितम्, यत्तादृशस्यापि तातस्य पुरन्दरसमविक्रमस्य राज्यभ्रंशः समभवत्, तथाहं च शत्रुजनस्योत्सङ्गसंगतः शोचनीयतामगमम्, ततो मयानेन मन्युना बाष्पप्रसरो रोद्धुं न शक्यते।' अथो भूभृता तद्वक्त्रनिर्गतवाक्यविस्मयाद्भुतरसाक्षिप्यमाणमनसा भणितम्। अहो बालस्यामानो ऽभिमानः, अहो सावष्टम्भत्वम्, अहो वचनविन्यासः, अहो स्फुटाक्षरालापत्वम्, अहो कार्याकार्यविचारणं चेति सर्वथा विस्मयनीयमेतत्। यदेतस्याप्ययवस्थायामीदृश एव बुद्धिविभवः।' इति जल्पता भूभृता वीक्षितानि सचिवेशाननानि। मन्त्रिभिरुक्तम्। 'देव, को ऽत्र विस्मयः। यथा गुञ्जाफलप्रमाणो ऽपि ज्वलनो दहनस्वभावः, सिद्धार्थमात्रो ऽपि रत्नविशेषो गुरुरेव, तथैते महावंशप्रसूता राजपुत्राः सत्त्वपौरुषमानप्रभवैर्गुणविभवैः सह संवर्धितदेहा एव भवन्ति। अन्यत्, देव, नैते प्रकृतिपुरुषाः, किंतु देवत्वच्युताः सावशेषशुभकर्माणो ऽत्र जायन्ते।' ततो महीभृता जल्पितम्। 'एवमेवैतत्, नात्र संदेहः' इति। भणितश्च सानुनयं कुमारः। 'वत्स, मा चिन्ताचान्तमना भव। यथाहं भवतां रिपुस्तत्सत्यम्, न पुनः सांप्रतम्। यदा त्वमस्मन्मन्दिरे समागतस्तदाप्रभृत्येव त्वद्दर्शनमात्रेणापि स त्वत्पिता नृपतिर्मित्रं जातः। भवान् मम पुत्र एव। एवं परिज्ञायाधृतिं मा कार्षीः। मुञ्च प्रतिपक्षबुद्धिम्। अभिरमस्व वत्स, स्वेच्छयात्मनो निकेतने यथा, सर्वमेव भव्यं भावि' इति भणित्वा नृदेवेन कुमारस्य वक्षःस्थले स्वकण्ठकन्दलादुत्तार्य निर्मलमुक्ताफलहारो निक्षिप्तः, दत्तानि च क्रमुकफलफालीकलितनागवल्लीदलानि। तेन 'महाप्रसादः' इति भणित्वा तत्सर्वं

11) P बिभ्रती तल्पित.° 13) P सुकृतं विलसितं. 17) P मालतीप्रसून. 20) Cg स्वस्थचित्त. 22) P भो भो. 26) P °मनुभवतोऽनेन. 28) P गद्गदगम्भीर. 35) P रत्नविशेषोऽपि गुरु°, Cg °गुणविशेषैः सह सवर्धित. 40) P वत्सेच्छयात्मनो निकेते यथा. 41) C क्रमुकीफल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वीचक्रे। अर्पितश्च देवगुरोः सचिवाधीशस्य भणितश्च। 'तथा त्वयैष उपचरितव्यो यथा कदाचन सौवपित्रोर्न स्मरति, सर्वथा तथा कर्तव्यं यथा ममापुत्रस्यैष पुत्रो भवति' इति। ततः किंचित्कालं स्थित्वा राजा भद्रासनात्समुत्तस्थौ। कृतदिवसव्यापारस्य तस्यातिक्रान्तो वासरः।

§ ७) अथान्यदिवसे बाह्यास्थानमण्डपमुपगतस्य हृतनरेन्द्रमण्डलीपरिगतस्य तस्य भूपतेः सुरगिरेरिव कुलशैलमध्यगतस्यागता धौतधवलदुकूलयुगलनिवसना मङ्गलग्रीवासूत्रमात्राभरणशोभमाना सुमङ्गला नामान्तःपुरमहत्तरा, दृष्टा च राज्ञा प्रौढराजहंसीव ललितगतिमार्गा। सा च कञ्चुकिनी नृपतेर्दक्षिणकर्णे किंचिन्निवेद्य निर्गतवती। ततो भूधवः स्वयमनल्पविकल्पसंकल्पदोलायमानहृदयः क्षणमास्थाने स्थित्वा विसर्जिताशेषसेवकलोकः कण्ठीरवपीठादुत्थितवान्। प्रियङ्गुश्यामाभवनं प्रति प्रचलताचलापतिना चिन्तितम्। 'अहो, सुमङ्गलया कथितं यदद्य देव्या बहुधा विविधभङ्गीभिर्भणितयापि परिजनेनालङ्कारो ऽपि न कलयांचक्रे आहारो ऽपि न, केवलममानो मान एवावलम्बितः। किं पुनर्देव्याः कोपकारणम्। अथवा स्वयमेव चिन्तयामि, यतः स्त्रीणां स्वभावत एव पञ्चभिः कारणैः कोपः समुत्पद्यते। तद्यथा प्रणयस्खलनेन १, गोत्रस्खलनेन २, अविनीतपरिजनेन ३, प्रतिपक्षकलहेन ४, श्वश्रूसंतर्जनेन ५। तत्र तावत् प्रणयस्खलनं न, येन मम जीवितस्याप्येषैव स्वामिनी तिष्ठत्वन्यस्येति। अथ गोत्रस्खलनमपि न, येनास्याश्चैवाह्वया सकलान्तःपुरपुरन्ध्रीजनमपि व्याहरामि। अथ परिजनो ऽपि कदाचन ममाज्ञालोपी भवति न पुनर्देव्याः। प्रतिपक्षस्खलनमपि न, येन सर्वो ऽप्यन्तःपुरजनो देवतामिव देवीं मन्यते। शेषं श्वश्रूभण्डनं दूरत एव न, येनास्माकं माता महामहीपतेरग्रे ऽग्निमाविश्य देवी भूतेति। ततः किं पुनरेतद्भवेत्।' इति चिन्तयन् भूपतिर्देव्या वासवेश्म प्रविवेश। न पुनस्तस्य सा लोचनगोचरतां जगाम। नृदेवेन पृष्टा चेटिका कापि 'कुत्र देवी' इति। तया निवेदितम्। 'देव, देवी कोपौकसि प्रविष्टा।' तत्र भूमीविभुर्ययौ। दृष्टानेन देवी हस्तिनोन्मूलितेव कमलिनी, भग्नेव वनलता, प्रोक्षितेव कुसुममञ्जरी। ततस्तां प्रेक्षमाणः क्षितिपतिस्तस्याः सविधवर्ती बभूव। तत आसनात्सविनयमलसायमाना चारुलोचना समुत्तस्थौ, निजमासनमदाच्च। उपविष्टो राजा देवी च। ततः पृथ्वीपतिरुवाच। 'प्रिये कोपने, किमेतदकारणे चैव शरत्समयवारिधाराहतसरोजमिवोद्वहसि वदनाम्बुजम्। नाहं किंचिदपराधं स्वस्यान्यस्य वा स्मरामीति। ततो मनः प्रसन्नतामानीय निवेदय। किं मया न तव संमानितो बन्धुजनः, किं वा न पूजितो गुरुजनः, किं वा न संतोषितः प्रणयिवर्गः, अथवा न विनीतः परिजनः, अथ प्रतिकूलः सपत्नीसार्थः, येन कोपमवलम्ब्य स्थितासि।' ततस्तद्वचः श्रुत्वा किंचित्सहास्यमास्यं निर्माय देवी सुधामुचं वाचमुवाच। 'देव, तव पदपद्मयुगप्रसादवशतः किंचिदपि न न्यूनमस्ति, किंत्वनेकभूमिनायकमौलिमुकुटमाणिक्यकोटिनिघृष्टचरणयुगस्यापि तव प्रणयिनी भूत्वात्र वीक्षापन्ना जातास्मि। यादृशास्तस्यास्तरलदृशः पुण्यवत्यास्तनूद्भवः स्नेहभाजनं महेन्द्रकुमारस्तादृशो मम मन्दभाग्यायास्त्वयि नाथे सत्यपि नास्तीत्येतद्भावयन्त्याः स्वस्योपरि निर्वेदः, तवोपरि च मम कोपः समजायत' इति। ततो विस्मयस्मेरचेतसा नीतिप्रचेतसा विशामीशेन चिन्तितम्। 'पश्यताविवेकित्वं महिलाजनस्य यदलीकासंबद्धप्रलपितैरीदृशैर्ह्रियन्ते कामिनीभिः कामुकजनस्य चेतांसि।' ध्यात्वेत्युक्तम्। 'देवि, यदेतत्तव कोपकारणमत्र क उपायः। दैवायत्तमेतत्, नात्र पुरुषकारस्यावसरो नान्यस्य चेति। यतः,

अनुद्यमाय कुध्यन्ति स्वजनाय कुबुद्धयः। दैवायत्ताः पुनः सर्वाः सिद्धयो नेति जानते॥ २२

§ ८) तावदेवंविधे व्यवस्थिते कथमकारणे कोपमवलम्बसे।' देव्या विज्ञप्तम्। 'नाथ, नाहमकार्ये कुपिता, किंतु कार्य एव। किं यदि महीपतिरुद्यमं विधाय देवतामाराध्य संततिं याचते ततः कथं मनोरथाः प्रमाणकोटिं नाटीकन्ते, अतः प्रसीदतु मम मन्दभागिन्याः स्वामी देवताराधनेन' इत्युक्त्वा चरणकमलयुगले निपतन्ती राज्ञा भुजाभ्यां धृत्वा प्रोक्ता। 'कान्ते, यत्त्वं वदसि तदवश्यं विधास्ये सर्वथैवाधृतिं मुञ्च। परित्यज संतापम्। कुरु भोजनम्। भज पञ्चगोचरसंभवं सुखम्। प्रिये, निशितासिधारया त्रिनयनस्य पुरो हुत्वा स्वमांसं, कात्यायन्या अग्रतः शिरसा बलिं दत्त्वा वा, महाश्मशाने भूतप्रेतपिशाचादिकं कमपि साधयित्वा, विद्यया वा पुरन्दरमपि समाराध्य मया तनुजो याचनीय एव।' इति भूपवचनं समाकर्ण्य हर्षप्रकर्षप्रवृत्तसर्वाङ्गरोमोद्गमा प्रोत्फुल्लवदनाम्बुजा देवी समजनि। ततो नृपतिरुत्थाय कृतमज्जनभोजनविधिर्विधिज्ञं मन्त्रिगणं समादिदेश। 'भो भोः सुरगुरुप्रमुखाः सचिवाः,

1) P यदा कदाचन. 3) P व्यापारस्यातिक्रान्तो. 13) P अथा गोत्र. 16) P माता महीपते°. 22) P धाराहतमिव सरोजमुद्वहसि. Og स्वस्यापरस्य. 23) P सन्मानितो. 33) P कुप्यंति. 35) P कार्य एव च।. 39) Og त्रिनेत्रस्य पुरो. 40) P पिशाचादिकं किमपि, P inter. साधयित्वा & विद्यया, P मनुजो for तनुजो. 42) P विधिर्विधितं, P भो भो.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

अथेदृशो वृत्तान्तः समभूत्' । देव्याः कोपकारणमात्मनः प्रतिज्ञारोहणं च कथयामास । मन्त्रिभिरुक्तम् । 'देव, यतः

अङ्गणवेदी वसुधा कुल्या जलधिः स्थली च पातालम् । वल्मीकश्च सुमेरुः कृतप्रतिज्ञस्य धीरस्य ॥ २३

तथा,

पराक्रमवतां नृणां पर्वतो ऽपि तृणायते । ओजोविवर्जितानां तु तृणमप्यचलायते ॥ २४

ततो देव, यत्त्वया चिन्तितं तत्तथैव । सुन्दरश्चैष ईदृशो देवस्याध्यवसायः । यतो भणितं पूर्वमुनिभिर्लोकशास्त्रेषु । यथा,

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च । तस्मात् पुत्रमुखं दृष्ट्वा पश्चाद्धर्मं समाचरेत् ॥ २५

अन्यच्च, देव सर्वाण्यपि कार्याणि पिण्डपानीयप्रदानादीनि पुत्रं विना न संपद्यन्ते पुरुषाणाम् । भण्यते च ।

विद्यावतो ऽपि नो यस्य सूनुरन्यूनविक्रमः । वृथा तज्जन्म शाखीव पुष्पैराढ्यो ऽपि निष्फलः ॥ २६

तेन प्रधान एष स्वामिनः पराक्रमः । देव, तिष्ठन्तु सर्वे ऽप्येते शशिशेखरोपास्तिमहामांसविक्रयकात्यायन्याराधनप्रमुखाः प्राणसंशयकारिणः सुतप्राप्त्युपायाः । समस्ति स्वस्तिकारिणी महाराजवंशप्रसूतपूर्वपुरुषसांनिध्याध्यासिनी राज्यलक्ष्मीर्भगवती कुलदेवता । तामाराध्यामाराध्य पुत्रवरं प्रार्थयस्व' इति । ततो राज्ञा जल्पितम् । 'साधु मन्त्रिपुङ्गवाः' इति प्रोच्य भूपतिरासनादुत्तस्थौ मन्त्रिगणश्च ।

§ ९) अन्येद्युः स पार्थिवः स्वयं पुष्यनक्षत्रयुतायां भूतेष्टायामशेषत्रिकचतुष्कादिषु रुद्रादीन् देवानभ्यर्च्य यक्षराक्षसादिभ्यो देवेभ्यो बलिं दत्त्वा दुःस्थितान्धककार्पटिकादीननुकम्प्य निर्मितस्नानक्रियः प्रावृतधौतधवलदुकूलयुगलः श्रीखण्डद्रवचर्चिताङ्गः कण्ठकन्दलन्यस्तसुमनोमनोरममालः परिजनधृतकुसुमबलिपटलिकोपचारसारः कमलादेव्यालयं प्रविश्य सपर्यां विरचय्य दर्भसंदर्भितस्रस्तरे निषण्णः कृताञ्जलिः स्तुतिं पपाठ ।

पद्मनाभविभोर्वक्षःपद्मभ्रमरवल्लभे । विधेहि पुत्रपद्मां मे पद्मे पद्मासनस्थिते ॥ २७

ततो नरेश्वरो भक्तिभरनिर्भरहृदयस्त्रिरात्रं जितेन्द्रियः कुशमये स्रस्तरे स्थितवान् । तुरीयदिने च नृपो ऽजातदेवतादर्शनामर्षवशः श्यामलकुटिलललाटपट्टघटितभ्रुकुटीभङ्गभीषणाननो वामेन भुजादण्डेन गृहीत्वा कुन्तलकलापं दक्षिणबाहुधृतखड्गरत्नेन कन्धरायां यावत्प्रहारं दातुमारब्धवान् तावद्देवतया हाहारववाक्यपुरःसरं तस्य स्तम्भितो भुजादण्डः । राजापि यावदुन्नसितास्यः पश्यति तावद्वदनविधुसंनिधाने ऽपि विशेषविकचकरकमलपरिमलमिलदलिकुलझङ्कारमुखरितदिक्चक्रवाला कमलालया देवी राजकमला प्रत्यक्षीबभूव ।

§ १०) तद्दर्शनसमुत्पन्नरोमाञ्चकवचो विस्मितवदनारविन्दः कृतप्रणतिः क्षितिपतिरासीत् । राजलक्ष्म्या भणितम् । 'भो नरेश्वर, विलक्षीकृतप्रतिपक्षलक्षवनितावैधव्यस्थूललक्ष्यं कृपाणरत्नं ग्रीवायां किमित्यायास्यते ।' नृपेणोक्तम् । 'देवि, यत्त्वया त्रिरात्राभ्यन्तरे मम निराहारस्यापि न निजदर्शनमदायि ।' ततो राज्यश्रिया किंचिद्विहस्य प्रोक्तम् । 'वत्स, वद मया किं कार्यं तव' इति । अथो निगदितं मेदिनीशेन । 'देवि, प्रसादं विधाय सर्वकलाकलापनिलयः प्राज्यराज्यधुराधरणधौरेयः कुलमन्दिरावष्टम्भस्तम्भनिभः पुत्रः पवित्रगुणशाली दीयताम् ।' ततः स्मित्वा राज्यकमला समुवाच । 'महाराज, किं को ऽपि कदाचन मयि पुत्रो भवता न्यासीकृतो ऽस्ति, येन मां प्रार्थयसे ।' राज्ञोक्तम् । 'यद्यपि मया तनुजो न समर्पितस्तदवितथम् । परं कल्पलतासंनिधाने किमु को ऽपि बुभुक्षया विलक्षीक्रियते । स्वर्गापगापुलिनावस्थाने ऽपि किं तृष्णया बाध्यते । असपत्नचिन्तारत्नप्राप्तावपि किं दौःस्थ्येन दूयते । त्वयि दृष्टायां किं को ऽप्याधिबाधामनुभवति ।' देव्या ऊचे । 'महाराज, मया परिहासः कृतः । सर्वगुणसंपूर्णः पूर्णिमाचन्द्र इव कलाकलापनिलयस्तवैकः पुत्रो भावी' इति भणित्वा राज्यलक्ष्मीस्तिरोदधे ।

§ ११) ततो नृपतिर्लब्धराज्यश्रीप्रसादः श्रीदेवीगृहान्निर्गत्य निर्मितस्नानभोजनः सभायामुपविश्य मन्त्रिमण्डलमाकार्य च यथावृत्तं निवेदयामास । मन्त्रिभिर्जल्पितम् । 'देवगुरुप्रसादादेतद्भवतु ।' ततः

1) P देव्याश्च कोप. 5) O नृणां, P सर्वतोऽपि for पर्वतोऽपि. 6) P सुंदरश्च एष M सुंदरश्च । एष. 8) P B om. स्वर्गो नैव etc. to समाचरेत्. 9) O संपद्यते. 11) B शशिशेषरो°. 15) P स्वयं मनुष्यनक्षत्र. 17) O प्रावृत्तधौत, P चर्चितांगकंठ. 18) P om. कुसुम, P प्रस्तरे for स्रस्तरे. 30) P राजश्रिया. 32) Og कुलमन्दिरस्तम्भावष्टम्भः पुत्रः प्रदीयताम् । ततः स्मिता. 35) Og विलक्ष्मीक्रियते. 37) P B °स्तवैकपुत्रो. 39) P B श्रीदेविगृहा. 40) O प्रसादाद्भवतेतत् ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्ष्मापरिवृढो दृढवर्मा दृढप्रतिज्ञ आस्थानादुत्थाय देव्यै वृत्तान्तमचीकथत्। देव्यपि हृष्टमानसा समजनिष्ट। राज्ञा समग्रे ऽपि नगरे वर्धापनमहोत्सवश्चक्रे। इतश्च घर्मांशुरपि करनिकरप्रसरेण तमःसमूहं निराकृत्यास्तसमस्तकिरणदण्डो ऽस्ताचलचूलावलम्बी बभूव।

सति प्रभापतावभ्रे न प्रभा तनयस्य मे। इति ध्यात्वास्तदम्भेन रविर्ग्रस्तः सरस्वता ॥ २८
विना जीवितनाथं तं किमन्यैरवलोकितैः। इतीव नलिनी जज्ञे निद्राणनलिनेक्षणा ॥ २९
तदन्धकारं समभृद्भैरवादपि भैरवम्। यत्र वर्णश्रियां लोपो ज्ञायते स्वः परश्च न ॥ ३०

ततः शय्यागृहान्तर्धौतधवलपटप्रच्छादिते मन्दाकिनीपुलिनतलिने तलिनोदरी प्रियङ्गुश्यामा समाराधितदेवगुरुचरणकमला प्रमीलामीलितचारुलोचना पाश्चात्ययामिनीयामे स्वप्ने ज्योत्स्नाप्रवाहसंभृतदिक्चक्रममन्दकुमुदानन्दप्रदं कलङ्कविकलं बहलपरिमलाकर्षितालिकुलकलितया कुवलयमालया परिवृतं कलाभृतमद्राक्षीत्। तावत्प्राभातिकप्रहतमङ्गलमृदङ्गसंगतसंरावेण प्रबुद्धा। ततः स्वभावानुसदृशस्वप्नदर्शनरसवशप्रहर्षसमुच्छलद्रोमाञ्चकवचितया देव्या विनयावनतोत्तमाङ्गया यथादृष्टः स्पष्टः स्वप्नः क्षितिभर्तुः पुरो न्यवेदि। राजा तद्वाक्यमाकर्ण्य विस्मयस्मेरमनाः सुधासागरान्तस्थमिवात्मानं मन्यमानः प्रोवाच। 'प्रिये, यो राज्यलक्ष्म्या पुत्रवरः प्रदत्तः स सांप्रतं फलिष्यति।' ततो देवी 'देवतानामनुग्रहेण राज्यश्रियो वरप्रभावेन गुणगुरूणां गुरूणामाशीर्वादेन च वाञ्छितं भवतु' इति जल्पन्ती कवीनामप्यगोचरं प्रमोदं प्रतिपेदे।

§ १२) अथो महीनेता कृतावश्यकः समस्तसचिवाधीशैरलंकृतां स्वप्नपाठकैरन्वितां राजहंस इव सरसीं सभामलंकृत्य देव्या दृष्टं स्वप्नं निवेद्येति पप्रच्छ 'को ऽमुष्य फलविपाकः'। ततः स्वप्नपाठकैरुक्तम्। 'यथा किल महाराज, महापुरुषजनन्यः शशिसूर्यवृषभहरिगजप्रभृतीन् स्वप्नान् पश्यन्ति। तेन तस्येदृशस्य सकलकलाभृद्दर्शनस्य प्रधानपुरुषजन्म सूच्यते।' राज्ञा भणितम्। 'देव्याः पुत्रजन्मफलं राज्यश्रिया वरेणैव निवेदितम्। यः पुनः शशी कुवलयमालया कलितस्तद्वयं पृच्छामः।' ततो गदितं स्वप्नकोविदैः। 'देव, नूनमेषा तव दुहिता भविष्यति' इति। अथ देवगुरुणा मन्त्रिणा भणितम्। 'देव, युज्यत एतत्। यदि कुवलयमालैव चन्द्रतो विभिन्ना भवति ततः संभाव्यत एतत्। एषा पुनस्तमेव मृगाङ्कमवगृह्य स्थिता। तेनैषा काप्येतस्य राजपुत्रस्य पूर्वजन्मस्नेहप्रतिबद्धा कुवलयमालेव सर्वजनमनोहरा प्रियतमा भाविनी' इति। भणितं भूपेन 'संगतमेतत्'। ततः किंचित्कालं विद्वद्गोष्ठ्यामुपविश्य विशांपतिर्दिवसकृत्यकृते कृत्यवेदी समुदतिष्ठत्। अथ देवी तद्दिनमारभ्य लावण्यपुण्यावयवा परिजनस्य बहुमता साधुजनस्यानुकूला सर्वप्राणिगणे सानुकम्पा संपूरितदोहदसौहृदा सामोदा गर्भं द्यौरिवोद्वहन्ती विरराज।

§ १३) अथ कियति काले व्यतीते तिथिकरणनक्षत्रसुन्दरे वासरे शुभे लग्ने होरायामूर्ध्वमुख्यामुच्चस्थानस्थिते ग्रहचक्रे वृद्धाङ्गनाभिरनेकाभिः सततं रक्षाभिरुपचर्यमाणा, ताम्रपर्णीव मौक्तिकम्, रोहणभूरिव रत्नम्, वैडूर्यभूमिरिव वैडूर्यम्, प्राचीव चित्रभानुम्, मलयाचलाचलेव चन्दनपादपम्, वारिधिवेलेव विधुम्, राजहंसीव विशदच्छदम्, प्रभापहतप्रदीपप्रभम्, विकस्वरवदनकमलम्, कुवलयदललोचनयुगलम्, सा पवित्रं पुत्रमसूत।

ततो देव्यनुजीविन्यो हर्षोत्फुल्लदृशो भृशम्। अहंपूर्विकया श्रीमद्दृढवर्मान्तिकं ययुः ॥ ३१
वर्ध्यसे सुतरत्नस्य जन्मना देव संप्रति। इत्युक्त्वा भूपतिस्तासामभूत् प्रमोदमेदुरः ॥ ३२
दृढवर्मा महीपालस्तदा दानमदान्मुदा। तथा ताभ्यो यथा तासां दारिद्र्ये ऽभूद्दरिद्रता ॥ ३३
यथा प्राप्य निधिं को ऽपि भवेद्धर्षप्रकर्षभाक्। तथा तदा तनूजन्मजन्म भूपतिरप्यभूत् ॥ ३४
भूपः प्रवर्तयामास निःसामान्यं महोत्सवम्। महार्हामर्हतामर्हां कारयामास च स्वयम् ॥ ३५
तन्मात्रा युवतीजातिस्तथोत्कर्षमनीयत। यथा दूर्वां नरेशो ऽपि शिरसा तृणमप्यधात् ॥ ३६

---

1) B also दृढधर्मा. 2) B महोत्सवश्च चक्रे. 4) B प्रभापतावभ्र न. 6) B has a marginal note (on भैरवादपि) thus: ईश्वरादपि। ईश्वरपक्षे वर्णा ब्राह्मणादयस्तेषां श्रियस्तासां लोपः। अंधकारपक्षे वर्णा नीलपीतादयः।. 7) P पट्टप्रच्छादिते, P पुलिनवदतलिने, C adds देवी after प्रियङ्गुश्यामा. 9) B बहुल. 14) P गुणगुरूणां आशी°. 16) C कृतावश्यकः प्रभाते सचिवैः समं सभामुपविश्य स्वप्नपाठकानाहूय तेभ्यः स्वप्नफलं पप्रच्छ कोऽमुष्य. 19) Cg ततोऽनेन स्वप्नेन प्रधान for तेन etc. 21) C B देवगुरुमन्त्रिणा. 22) P कुवलयमाला चैव चंद्रतो, B adds on the margin कदाचित् between कुवलयमाला and चन्द्रतो. 23) P मृगांगकमवगदा स्थिता. 25) B has a marginal gloss कार्यस्थानं on कृत्यवेदी. 26) P संपूरितदेहसोहृदा, B has a gloss मेघं गर्भं on गर्भं. 34) Cg वर्ध्यते, B इत्युक्त्वा नृपति. 35) P B C दृढधर्मा or दृढधर्म्मा, but the spelling दृढवर्मा is uniformly adopted here. 36) P भवेद्दर्षः प्रकर्षभाक्.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकलाभिः कलाभिश्चिरादुत्कण्ठितचेतोभिर्वधूभिरिव वल्लभः प्रावृषि नदीभिरिवादीनाभिर्नदीनः स्वयं स्वीकृतः ।' अथ नृपेणोपाध्यायं विधिना संभूष्य प्रोक्तम् । 'वत्स, तवातुच्छदुःसहविरहदहनसमुत्थचिन्ताधूमध्यामा यथार्थाभिधाना प्रियङ्गुश्यामा समजनि जननी ते, तत्तां प्रणम ।' एवं समादिष्टः पुत्रः 'देवो यथा समादिशति' इति वदन् भूपतेरुत्संगात्समुत्थाय जननीं तदात्वविलोकनामन्दानन्दबाष्पभरप्लुतलोचनां समीपीभूय सविनयमाननाम । निःशेषमङ्गलोपचारं कृत्वा सुतं शिरसि चुम्बित्वा स्नेहेन देवगुरूणां सतीनां मातॄणां प्रभावेन पितरमनुहरस्व' इति जल्पितवती यावद्देवी तावत्त्वरितमागत्य प्रणिपत्य च जनयित्रीं प्रतीहारी प्रोवाच । 'देवि, स्वामी स्वयमद्य वाहकेलिं कर्तेत्यतः प्रेष्यतां कुमारः ।' ततो मात्रा स विसर्जितः क्षितिपसमीपमुपाजगाम । वसुधाधवेनोक्तम् । 'भो महासाधनिक, गरुडवाहनं तुरङ्गममुपनय महेन्द्रकुमारस्य । तथा यथार्हमुत्तमाँस्तुरगानपरेषां राजपुत्राणां नियोजय । ममापि पवनावर्तं तुरङ्गममर्पयेति । अपि च ।

रत्ननिर्मितपर्याणं सौवर्णमुखयन्त्रणम् । अर्पयोदधिकल्लोलं हयं कुवलयेन्दवे ॥' ५३

§ १६) तावदादेशानन्तरं तेन कुवलयचन्द्रस्य पुरतस्तुरङ्गमः समुपस्थापितः । यश्च कीदृशः । वायुरिव गमनैकदत्तचित्तः, मनोभाव इव क्षणप्राप्तदूरदेशान्तरः, युवतिस्वभाव इव चपलः, विपणिश्रेणिरिव मानयुतः, पण्याङ्गनाप्रेमप्रकर्ष इवानवस्थितचरणचतुष्कः । तं विलोक्य नृपेणोक्तम् । 'कुमार, किंचित्तुरङ्गलक्षणविचक्षणो ऽप्यसि ।' कुमारेण विज्ञप्तम् । 'गुरुचरणकमलाराधनेन किंचित्परिज्ञातमस्ति ।' भणितं भूपेन । 'वाजिनां कति जातयः, किं प्रमाणम्, किं लक्षणमपलक्षणं च' इति । कुमारेणाभ्यधायि । 'नाथ, अवधार्यताम् । यदश्वानामष्टादश जातयः, बोल्लाह-सेराह-कियाहादयः । ते वर्णलाञ्छनविशेषेण भण्यन्ते । अश्वस्योत्कृष्टवयसः प्रमाणम् ।

नराङ्गुलानि द्वात्रिंशन्मुखं भालं त्रयोदश । अष्टाङ्गुलं शिरः कर्णौ षडङ्गुलमितौ मतौ ॥ ५४
चतुर्विंशत्यङ्गुलानि हयस्य हृदयं तथा । अशीतिश्च समुच्छ्राये परिधिस्त्रिगुणो भवेत् ॥ ५५
एतत्प्रमाणसंयुक्ता ये भवन्ति तुरङ्गमाः । राज्यवृद्धिं महीपस्य कुर्वन्त्यन्यस्य वाञ्छितम् ॥ ५६
एकः प्रपाणे भाले च द्वौ द्वौ रन्ध्रापरन्ध्रयोः । द्वौ द्वौ वक्षसि शीर्षे च ध्रुवावर्ता हये दश ॥ ५७
अत ऊर्ध्वं गुणैर्न्यूनानन्यूनान् वा हयानिह । दुःखातिदुःखदान् प्रोचुरश्वलक्षणदक्षिणाः ॥' ५८

यावदेतत् कुमारो निवेदयति तावद्भूपेन निगदितम् । 'वत्स, पुनः प्रस्तावान्तरे श्रोष्यामः' इति वदन्नारूढः क्ष्मापरिवृढः पवनावर्ते तुरङ्गे, कुमारो ऽप्युदधिकल्लोले, महेन्द्रो ऽपि गरुडवाहने, अपरा अपि राजपुत्रा अपरेषु तुरङ्गेषु । अपि च ।

गजैस्तुरङ्गैरुत्तुङ्गैरनेकैः पदिकैस्तथा । विस्तीर्णमपि संकीर्णं राजद्वारं तदाभवत् ॥ ५९

§ १७) ततो धृतसितातपत्रश्चलच्चारुचामरयुगलोपवीज्यमानश्चतुरङ्गचमूचक्रपरिवृतः क्षितिपतिः श्रीपथमवतीर्य च वर्यधैर्यगुणशाली कौतुकायातलोकलोचनप्रमोदमादधानः क्षणेन पुरीपरिसरमवाप्य सकलमपि बलं दूरतो विधाय वाहकेलिं कर्तुं प्रवृत्तः । कुमारो ऽपि धौरितकादिपञ्चगतिक्रमनिरीक्षणाय स्वमश्वं वाहकेलौ मुमोच । यावज्जयजयारवं जनः करोति तावत्सर्वेषां राजपुत्राणां पश्यतामेव तत्क्षणं बहलतमालदलश्यामलं गगनतलमुदधिकल्लोलः समुत्पपात । ततस्तस्य वाजिनो जवेन दक्षिणां दिशं प्रति धावतो ऽनुधावन्तीव शाखिनः । यदग्रे निकटीभूताः पदार्थास्ते ऽप्यनिकटीभूताः । तत एवं ह्रियमाणेन कुमारेण चिन्तितम् । 'अहो, यदि तावत्तुरगस्ततः कथं नभस्तलमुत्पतितः । अथ यदि देवः को ऽपि ततः कथं तुरङ्गत्वं न मुञ्चति ।' एवं चिन्तयता कुमारेण परीक्षाकृते यमजिह्वाकरालया क्षुरिकया निर्दयं तार्क्ष्यः कुक्षिप्रदेशे हतः । ततः पतच्छोणितनिवहो वाहः शिथिलसर्वाङ्गसंधिर्मूर्च्छानिमीलिताक्षः क्षितौ पतितमात्रः 'कुमारापहारात् पापी' इति भणित्वा तत्कालमेव जीवितव्येन तत्यजे । ततस्तं गतासुं निरीक्ष्य कुमारेण चिन्तितम् । 'अहो, विस्मापनीयमेतत् ।

यद्यश्वस्तत्कथं देवमार्गगामी न चैष चेत् । तुरगस्तदयं किं वा प्रहारेण हतो मृतः ॥' ६०

§ १८) अथ तपात्ययसमयसजलजलदगर्जिगम्भीरधीरः कस्यापि शब्दः समभूत् । "भो निर्मलशशिवंशविभूषण कुवलयचन्द्रकुमार, समाकर्णय मम वचनम् । 'गन्तव्यमस्ति तवाद्यापि गव्यूतिमात्रं दक्षिणदिग्विभागे, द्रष्टव्यं चादृष्टपूर्वमिव किमपि' ।" इदं च श्रुत्वा चिन्तितं कुमारेण । 'अहो, कथं

3) PB inter. जननी & समजनि, P om. ते. 4) B तदात्वविलोक°. 6) O इति यावदाशीर्वादं दत्ते देवी ताव°. 7) O प्रतिहारी. 13) P मनोभव इव. 15) Og गुरुप्रसादेन किं°. 19) P लाभ for भालं. 23) P दक्षणः, B दक्षणाः. 28) P °पत्रावरचारु°, B om. चमूचक्र. 30) P धौरितादि. 35) P inter. न & तुरङ्गत्वं. 36) Okh °ताक्षः 'पापी' इति भणन् क्षितौ पतितमात्रो मृतः । ततस्तं. 40) O गम्भीरः कस्यापि. 41) B वंशभूषण, O गव्यूतमति°.

2

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

पुनरेतत्, को ऽपि मम गोत्रं नाम च जानाति। अथवा को ऽप्येष दिव्यो मम शुभायतये दक्षिणाशाभिमुखं मां प्रेरयति निष्कारणकरुणापरत्वेन। अतीन्द्रियज्ञानगोचरतया चालङ्घनीयवचनाः किल देवा मुनयश्च भवन्ति।' इति ध्यात्वा दक्षिणाभिमुखं गच्छन् गव्यूतिमतिक्रम्य कुमारो ऽशेषान् दिग्विभागान् यावद्विलोकयति तावदग्रतो ऽनेकपर्वतपादपश्वापदलतागुल्मगहनां महाविन्ध्याटवीं ददर्श। या च पाण्डवसेनेवार्जुनालंकृता, श्रीरिव महागजेन्द्रसनाथा, महापुरीव तुङ्गशालकलिता। चिन्तितं कुमारेण। 'अवश्यं वशीकृतेन्द्रियग्रामः को ऽप्यत्र महर्षिर्महात्मा दिव्यज्ञानावलोकिताखिलपदार्थसार्थः परिवसति। यत्तस्य भगवत उपशमवतः प्रभावेन विरुद्धानामपि जन्तूनां परस्परमकृत्रिमं प्रेम संजातम्।' एतच्चेतसि चिन्तयन् कुमारः कुवलयचन्द्रो यावत्किंचिद्भूभागमुपसर्पति तावदनतिदूरे ऽतिस्निग्धबहलकिसलयविराजमानं बहुद्विजकृतकोलाहलमसंख्यशाखासंकुलं वटपादपमपश्यत्। तं वीक्ष्य तामेव दिशं प्रति चलितो ऽचलापतिपुत्रः, क्रमेण च स वटवृक्षतलमलंचकार। ततो यावत्तत्र कुमारो ऽस्ति तावत्तस्य तपोनियमशोषिताङ्गस्तेजसा ज्वलन्निव, मूर्तिमानिव धर्मः, उपशमरसराजधानीव, निवास इव चारित्रलक्ष्म्याः, केलिवनमिव सौम्यतायाः, मुनिः को ऽपि महात्मा दिव्यपुरुषमृगेन्द्रयोर्मध्यस्थितश्चक्षुष्पथमायातः। ततस्तेन कुमारेण चिन्तितम्। 'यदिमं साधुं सकलत्रैलोक्यवन्दनीयचरणारविन्दयुगलं प्रणिपत्य स्वस्याश्वापहारं पृच्छामि। केन हेतुनाहमपहृतः, को वैष तुरङ्गः।' इति चिन्तयन् संप्राप्तः पृथुलशिलापट्टस्थितस्य महर्षेः संनिकर्षम्। मुनिना प्रोक्तम्। 'भो शशिवंशविभूषण कुवलयचन्द्रकुमार, स्वागतं तव। वत्स, आगच्छ' इति। अथ तेन स्वनामगोत्रकीर्तनविस्मितमानसेन महता विनयेन प्रणतं मुनिपतेः क्रमकमलयुगलम्। भगवता सकलभवभयहारिणा सिद्धिसुखकारिणा धर्मलाभाशीर्वादं लम्भितः कुमारः। ततो मुनिसमीपस्थदिव्यपुरुषेण प्रसारितः ससंभ्रमं सुरपादपकिसलयकोमलो माणिक्यकटकाभरणभूषितो वामेतरः करः। ततो नृपतनुजेन करद्वयेन तस्य पाणितलं गृहीत्वेषद्विनतोत्तमाङ्गेन कृता प्रणतिः। मृगेन्द्रेण च बहलशिथिलकेसरधारिणा उद्वेल्लदीर्घतरलाङ्गूलेन प्रशान्तश्रवणद्वयेन स्तोकमुकुलिताक्षेणानुमानितो राजतनयः। कुमारेण हर्षवशविकसन्मुदितान्तःस्नेहया स्निग्धधवलया दृशा हरिर्ददृशे। उपविष्टश्च नातिदूरे मुनिपस्य। भगवता निगदितम्। 'कुमार, त्वयेति चिन्तितम्।

पृच्छाम्यहं साधुममुं कुतो मे केनापहारः क इवात्र हेतुः।
को वायमश्वस्तदिदं निवेद्यमानं मया विस्तरतः शृणु त्वम्॥' ६१

इति श्रीपरमानन्दसूरिशिष्यश्रीरत्नप्रभसूरिविरचिते कुवलयमालाकथासंक्षेपे श्रीप्रद्युम्नसूरिशोधिते
कुवलयचन्द्रोत्पत्तितुरगापहारसाधुदर्शनकीर्तनो नाम प्रथमः प्रस्तावः॥ १॥

[अथ द्वितीयः प्रस्तावः]

§ १) ततश्च दन्तद्युतिभिर्मुनीन्द्रस्तमःसमूहं विदधद्विशिष्टम्।
उवाच तत्संशयभेददम्भात् तद्बोधनार्थं वचनं सुधाभम्॥ १
जीवितं यौवनं लक्ष्मीर्लावण्यं प्रियसंगमः। सर्वं चलाचलं लोके कुशाग्रजलबिन्दुवत्॥ २
दुर्हृदः सुहृदो ऽपि स्युः सुहृदो ऽप्यसुहृत्तमाः। मनीषी तेषु सर्वेषु ममतां कः करोति तत्॥ ३
एक एव भवेज्जीवः सुखी दुःखी च जायते। एक एवाश्नुते मृत्युं शिवं यात्येक एव हि॥ ४
अर्ज्यते कर्मणा राज्यं हार्यते ऽपि च कर्मणा। विद्वान् विना न को ऽप्यस्ति कर्मणो हन्ति मर्म यः॥ ५
अभाग्यादर्जितापि श्रीः क्षयं याति क्षणादपि। घनाघना घनालीव दुर्दान्तमरुता हता॥ ६
अविषह्याणि सह्यन्ते नरके ऽत्र शरीरिभिः। दुःखान्युद्धुषितं देहं येषां श्रवणतो भवेत्॥ ७
कशापाशाङ्कुशादीनामाबाधाः स्वस्वकर्मणा। सहन्ते नित्यशो हन्त तिर्यक्त्वे ऽपि हि देहिनः॥ ८
वियोगरोगसंतापभूपकोपादिवेदनाः। भवे भवन्ति भविनां मानवे ऽपि नवा नवाः॥ ९

7) C उपशमप्रभावेन. 9) PB किशलय. 10) P inter. स & च. 11) Cg चारित्रलक्ष्मीनिवासमिव for निवास इव चारित्रलक्ष्म्याः. 12) P केवलीवनमिव B केलीवन°. 14) P स्वस्याऽपहारं, Cg इति विचिन्त्य संप्राप्तः पृथुलशिलातलस्थस्य महर्षेः समीपम्।. 16) P अथ तेन नामगोत्रः की°. 18) B कुमारः। तेन दिव्यपुरुषेण. 27) P B कीर्तननाम. 29) P B add ओं अर्हं॥ before ततश्च etc., B C K °र्मुनीन्दुस्तमः°. 30) P B तच्छंशय. 32) P सुहृदो for दुर्हृदः. 33) Cg. भवे जीवः. 34) B Cg सिद्धान् for विद्वान्.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मायासूयाभयोद्वेगविषादाकुलचेतसाम् । त्रिदशत्वे ऽपि सत्त्वानामभिमानभवं सुखम् ॥ १०
इत्थं चतुर्गतावत्रासुमता भ्रमता भवे । कर्मनिर्मथनोपायः प्रापि धर्मः कदापि न ॥ ११
कल्पद्रुं दुर्लभं प्राप्य प्रार्थयेत्स वराटिकाम् । स्वायत्ते मोक्षसौख्ये ऽपि यो भवेद्विषयी नरः ॥ १२
संसारमरुकान्तारसमुत्तारं यदीहसे । सम्यक्त्वं सलिलं चित्तदृतिस्थं तत्सदोह्यताम् ॥ १३

ततः कुमारकुवलयचन्द्र एतस्मिन्नीदृशे ऽसारे संसारे क्रोधमानमायालोभमोहमूढमानसैरात्मभिर्यदनुभूतं तत्त्वया तुरगापहरणपर्यन्तमेकमनसा कथ्यमानं निशम्यतामिति । तथा हि,

§ २) अस्ति समस्तविशङ्कटयज्ञवाटहुताशसमुत्थबहलधूमध्यामलितातुलविपुलनभस्तलः सर्वदेशलक्ष्मीवक्षःस्थलालंकारतारहारो निखिलदेशान्तरसमागच्छदनेकवस्तुसङ्केतभूभाग इव वत्साख्यो विषयः । यत्र कम्पाङ्ककम्पितपुण्ड्रेक्षुपत्रनिचयशब्दवित्रस्तमिव प्रविशति काननभुवं कुरङ्गयूथम् । तदीयपूर्णतरलाक्षिनिरीक्षणेन स्वकीयकान्ताकर्णान्तविश्रान्तलोचनसंस्मृतिपरो लेप्यमय इव दृषन्निर्मितस्तम्भ इव निश्चलः पथि पथिकजनश्चिरं तिष्ठति । तत्र प्रोत्तुङ्गशृङ्गसंगतसुरमन्दिरोपशोभमाना गम्भीरनीरपरिखालंकृतप्राकारा लवणाम्बुधिवज्रवेदिकाकलिता जम्बूद्वीपलक्ष्मीरिव, सुरपुरीव सद्वृषाश्रया, अलकेव पुण्यजनान्विता, लङ्केव कल्याणमयी, कौशाम्बी नाम नगरी समस्ति ।

तस्या एकत्र विलसज्जगत्त्रयरमाजुषः । किं ब्रूमो वर्णने यस्या न गीष्पतिरपि क्षमः ॥ १४

तां प्रियप्रणयिनीमिव भुङ्क्ते पुरन्दरपराक्रमः पुरन्दरदत्ताभिधो वसुधाधीशः । यस्तु प्रालेयाचल इव कीर्तिमन्दाकिन्याः, विश्रामविटपीव गुणशकुनानाम्, कल्पपादप इव यथाचिन्तितदत्तवित्तः ।

अत्यवदातेन जिता हंसाः कंसारिमेचका हरयः । सवितुः सिता बभूवुर्यद्यशसा प्रसरता गगने ॥ १५
तत्रैक एव दोषो ऽस्ति समृद्धे ऽपि गुणश्रिया । यज्जैनवचने सौख्यवृक्षमूले न वासना ॥ १६

§ ३) तस्य भूवासवस्य वासवस्येव सुरगुरुश्चतुर्विधबुद्धिनिधानं वासवाभिधः सचिवेश्वरः । स नृपतिः सहोदरमिव सहचरमिव पितरमिव देवतामिव तं मन्त्रिणं मनुते । स मन्त्री कौस्तुभमणिमिव पुरुषोत्तमो दुर्वारवैरिवारणनिवारणवारणारितुल्यं श्रीजिनेश्वरप्रणीतं सम्यक्त्वं हृदि धारयति । तस्य मन्त्रिणो वासवस्यान्यदा कृतप्राभातिकावश्यकस्य भगवतामर्हतां महार्होणामर्हणानिमित्तं जिनायतनं प्रविशतो द्वारदेशे ऽनेकविधप्रभूतपरिमलपरिसिलितमधुकरनिनादमनोहरेण पुष्पकरण्डकेन समं बाह्योद्यानपालकः स्थावराख्यः समाययौ । तेन तच्चरणयुगं प्रणम्य 'देव, वर्ध्यसे । सकलकामिजनलोचनप्रमोदप्रदः प्रास्तावद्वसन्तावतारः' इति जल्पता पुष्पाण्युपदीकृत्य महामन्त्रिणः करतले सहकारमञ्जरी ततः समर्पिता। अन्यच्च 'तत्रोद्याने चन्द्र इव तारकानिकरेण शिष्यगणेन परिवृतः क्षमारामाललामश्चारित्ररत्नरत्नाकरः सर्वमुनिशिरोरत्नं निहतदुर्जेयकषायसंचयः सद्धर्मनन्दनः श्रीधर्मनन्दनो नाम यतीश्वरः समवातरत्' ।

§ ४) तदाकर्ण्य मन्त्रिणा भ्रुकुटीभङ्गभीमाननेन 'हा अनार्य' इति वदता सहकारमञ्जरीं निजसहचरहस्ते समर्प्य साक्षेपमिति जल्पितम् । 'रे रे दुराचार विवेकविकल स्थावरक, प्रथमं प्रधानं सादरं वसन्तं कथयसि पश्चाद् धर्मनन्दनाचार्यम् ।

क्व वल्मीकः क्व वा मेरुः क्वालसः क्व च नागराट् । क्व वसन्तः क्व भगवान् सूरिः श्रीधर्मनन्दनः ॥ १७
ऋतुराट् तनुते चित्तं कामार्तं स च साधुराट् । तदेव विपरीतं तु वीक्ष्यतामन्तरं द्वयोः ॥ १८

तदन्धैतस्यात्मनो दुर्बुद्धिविलसितस्य फलं भुङ्क्ष्व' इति । 'रे प्रतीहार,' अमुष्य वनरक्षकस्य केदाराणां लक्षार्धं त्वरितं दापय, येन तत्कर्षणायासविवशः पुनरपीदृशं निर्विवेकं न वदति' इत्युक्त्वा मन्त्री विहितदेवतार्चनः प्राप्य राजसौधं तामेव मञ्जरीं नृपतिकरतलसंगिनीं चक्रे । राज्ञा भणितम् । 'किं बहिरुद्याने पुष्पकालो ऽवततार ।' ततो मन्त्रिणा जल्पितम् । 'वसन्तलक्ष्मीवीक्षायै देवपादमवधारयस्वेति ।' इति श्रुत्वा सुरेश्वर इव चतुर्दन्तं नृपतिरुत्तुङ्गं मतङ्गजमारुह्य चतुरङ्गबलेन वनावनीमीयिवान् । मन्त्री नृपं प्रोवाच । 'देव, अवधार्यताम् ।

अमन्दानन्दसंदोहस्फुरन्मधुकरस्वरैः । स्थलाम्भोजानि ते स्वागतिकत्वं वदन्ति हि ॥ १९
अमी वृक्षा निरीक्ष्यन्ते नम्राः फलकदम्बकैः । त्वय्यागच्छति भूनाथे कः कुर्यान्न नतिं क्षितौ ॥ २०

---

4) B सम्यक्त्वसलिलं. 7) B विसंकट. 17) P हारयः for हरयः. 22) P महार्हाणानिमित्तं. 23) P परिमलित B मिलित for परिमिलित. 25) P adds हार and B adds हारि (but later scored) before °मञ्जरी. 29) P B °मञ्जरी for °मञ्जरीं. 33) B दुर्बुद्धे बुद्धिविलसितस्य. 35) P राजसौधं. 37) P °त्तुंगं मतङ्ग°. 39) P अमंदामंदसंदोह B अमंदामोदसंदोह.

भ्रमरैर्गीतमेकान्तमधुरैस्ताण्डवं दलैः । तूर्यत्रिकं वितन्वन्ति द्रुमा देव तवाग्रतः ॥ २१
कुर्वन्तीव द्रुमा देव भवतश्चरणार्चनम् । कुसुमैर्स्समैर्भृङ्गरणितैश्च गुणस्तुतिम् ॥' २२

§ ५) एवं निवेदयन् महामन्त्री परितो वने दृष्टिं व्यापारयन् ध्यायति स्म । 'तावदत्रोद्याने धर्मनन्दनो विभुर्न वीक्ष्यते, तमेव हृदि भृत्वा मयात्र विभुरानीतो विनाप्यर्थमेव, तन्मन्ये ऽन्यत्र कुत्र वा वनस्पतिकुन्थुपिपीलिकाप्रभृतिबाहुल्यात्प्रासुकत्वं विभाव्य सिन्दूरकुट्टिमतले सशिष्यः स्थितो भगवान् भविष्यति' इति चिन्तयित्वा राजानमवादीत् । 'देव, यस्त्वया कुमारत्वे सिन्दूरकुट्टिमासन्ने ऽशोकतरुरारोपितः स कुसुमितो न वा, इति न ज्ञायते ।' राज्ञोक्तम् । 'चारूदितं भवता' इति वदन् मन्त्रिणः करं करेण गृहीत्वा गतेन तेन तत्र मुनयो दृष्टाः । केचिद्धर्मध्यानदत्तावधानाः, केचित्प्रतिमापालनलालसमानसाः, केचिच्छुद्धसिद्धान्तपठनप्रवीणान्तःकरणाः, केचिद्विविधासनाध्यासीनाश्च । तेषां च मध्यगतं ताराणामिव ताराधिपम्, सागराणामिव क्षीरसागरम्, सुराणामिव सुरेश्वरम्, चतुर्ज्ञानिनं तं महामुनिं वीक्ष्य मनाक् प्रमुदितः क्षितीशः सचिवमुवाच । 'क एते पुरुषाः, कश्चैष नृप इवैषां मध्यगतः' इत्युक्ते वासवसचिवः प्रोवाच । 'देव, तावदयं मुनिपतिर्भवाटव्यां कुतीर्थिककथितकापथपतितानां जन्तूनां मुक्तिपुरीमार्गोपदेशको भगवान् श्रीधर्मनन्दनाचार्यो देवानामपि वन्द्यपादारविन्दः, तथास्यैव शिष्या महात्मानो ऽमी मुनयः, तदुपसृत्याचार्यस्य समीपे धर्माधर्मं प्रष्टुमुचितम् ।' 'अथ भवत्वेवम्' इति वदन् मन्त्रिकरतले लग्न एव भूपतिर्गुरुसमीपमुपेयिवान् । अथ मन्त्री स्तुतिपूर्वं प्रदत्तप्रदक्षिणात्रयः सुगुरुचरणाम्भोजं ननाम तथा वसुधाधिपो ऽपि । भगवाँश्च धर्मलाभं दत्त्वा 'स्वागतं भवताम्, उपाविशत' इत्युवाच । ततो 'यदादिशति भगवान्' इति वदन्नृपस्तत्रैव कुट्टिमतले न्यविक्षत, मन्त्री च गुरुजनमनुज्ञाप्य, तदा चान्ये ऽपि नृपमार्गमनुवर्तमानाः पान्थकार्पेटिकादयो नत्वा भगवन्तमुपविष्टाः । भगवता सुखदुःखे जानतापि लोकाचार इति शरीरकुशलतावृत्तान्तं ते पृष्टाः । तैरुक्तम् । 'सममद्य तत्रभवद्भवद्दर्शनेन' इति । ततश्च चिन्तितमवनीपेन । 'भगवतो ऽमुष्यासामान्यं रूपम्, अगण्यं लावण्यम्, अमेया कान्तिः, अपूर्वकरुणारसः प्रशस्तः, तथा चायं सेतुबन्धः संसारसिन्धोः, परशुस्तृष्णालतावनस्य, अशनिर्मानशिलोच्चयस्य, मूलं क्षमापादपस्य, आकरः सर्वविद्यानाम्, कुलमन्दिरमाचाराणाम्, महामन्त्रः क्रोधादिकषायचतुष्टयभुजङ्गमस्य, दिवसकरो मोहान्धकारस्य, दावानलः स्फूर्जद्रागशाखिनः, अर्गलाबन्धो नरकद्वाराणाम्, कथकः सत्पथानाम्, निधिः सातिशयशान्तमणीनाम् । सर्वथा सर्वगुणालिङ्गितसफलसंप्राप्तमनुष्यजन्मनो ऽस्य किं वैराग्यकारणं बभूव, येन भगवता यौवनलक्ष्मीभाजापि सर्वदा सर्वदुःखसमुच्चयशय्या प्रव्रज्याङ्गीचक्रे तत्पृच्छामि ।' इति चिन्तयन् महीपतिर्मुनिना ज्ञानिना स्वयमेव प्रोक्तः । 'चतुर्गतिके ऽपि भवे सुलभं वैराग्यकारणम् । यदन्ये ऽपि विषयसुखास्वादमोहिता जीवाः पापं कुर्वते तदेव ज्ञानिनां वैराग्यहेतुः । तत्र नरकगतौ तावत्त्रिविधा विबाधा, क्षेत्रजा ऽन्योन्यमुदीरिता परमाधार्मिकसुरकृता च । ततस्तद्दुःखानि वर्षकोट्याप्याख्यातुं न शक्यन्ते, एवं तिर्यङ्मनुष्यदेवगतिष्वपि । इह लोक एतदेव जिननाथवचनं क्रियमाणं धर्मार्थकामदम् । परत्र च मोक्षपुरुषार्थसाधकम् । ततः प्रथमं श्रावकधर्मं समाश्रित्य पश्चाच्छ्रमणधर्मपालने मनो नियोजय' इति ।

§ ६) अत्रान्तरे प्रस्तावं परिज्ञाय कृताञ्जलिना वासवमहामन्त्रिणा भगवन्तं धर्मनन्दनं मुनिपं नत्वा सविनयमूचे । 'नाथ, य एष त्वयाशेषदुःखनिलयश्चतुर्गतिलक्षणः संसारः प्रणीतः, एतस्य पूर्वं किं निमित्तम्, येन जीवा भवे परिभ्रमन्ति ।' श्रीधर्मनन्दनगुरुणा भणितम् । 'भो मन्त्रीश, नरेन्द्र पुरन्दरदत्त' तच्छृणु संसारपरिभ्रमणे जीवस्य यत्कारणं जिनेश्वरैरुक्तम् । तथा च ।

क्रोधो मानश्च माया च लोभश्चाप्यनियन्त्रिताः । अमी कषायाः संसारदुःखसागरहेतवः ॥ २३
अन्तर्दहन् गुणग्रामसिद्धः क्रोधधनञ्जयः । बहिर्वस्तुपरिप्लोषकृतः पावकतो ऽधिकः ॥ २४
कदाचन सुधीर्दत्ते स्थानं न स्वान्तवेश्मनि । क्रोधस्य दन्दशूकस्य निःशूकस्य जनक्षये ॥ २५
केवलं सर्पदष्टस्य प्रतीकारो ऽत्र विद्यते । दुर्दान्तक्रोधसर्पेण दष्टस्य तु न सर्वथा ॥ २६

1) B भ्रमरैर्गीतकंठाद्यं शाखाभिस्तांडवं दलैः. 3) B परितस्तत्र दृष्टिं. 4) C ध्यात्वा for धृत्वा, B मयाऽत्र विहरणीयं विनाप्यर्थमेव. 5) B कुंथुपपीलिका. 6) C suggests यस्त्वया for यत्त्वया. 10) P तारागणमिव, P सागराणामिव सुरेश्वरम्. 12) P कुतीर्थिककथितमुवाच । क एते पुरुषाः etc. repeated (as above) ending with कुतीर्थिककथित. 18) C मन्त्रीश्वरोऽपि गुरु. 20) P B ततश्चितित°. 29) P वर्षकोट्यौऽप्यातुं. 33) P भगवं धर्मं°. 37) Cg कषायाः संसारे चत्वारो दुःखहेतवः ।. 39) P दंशशूकस्य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मातङ्गस्पर्शने शुद्धिः सुवर्णपयसा नृणाम् । न पुनः कोपचाण्डालसांगत्ये स्यात्कथंचन ॥ २७
नितान्तं स्तिमितं यस्य स्वान्तं शान्तरसार्णसा । न कदापि स्फुरेत्तस्य कोपाटोपहुताशनः ॥ २८
जिनाम्बुदसमुद्भूतप्रशमामृतयोगतः । यः क्रोधाग्निं शमयति तस्य धर्मवनं स्थिरम् ॥ २९
यदि क्रोधो भवेन्नैव कदाचन शरीरिणाम् । तदवश्यं कराम्भोजवासिन्यः स्युः शिवश्रियः ॥ ३०

अत्यन्तकोपमहातमःप्रसरान्धीकृतस्वान्तो भ्रातरं भगिनीमपि हन्ति, यथायं पुरो निविष्टः पुरुषः ।' नृपेणोक्तम् । 'प्रभो, वयं न जानीमः को ऽप्येष पुरुषः, कीदृक्षः, किं चैतेन कृतम्' इति । ततो गुरुणा भाणि । 'य एष तव वामो मम दक्षिणपार्श्वे स्थितस्त्रिनयनगलगवलकज्जलाभो गुञ्जाफलरक्तनयनो भ्रकुटीभङ्गभीषणास्यो रोषस्फुरदधरोष्ठपुटो दृढकठिननिष्ठुराङ्गो मूर्तिमान् कोप इव संप्राप्तः । एतेन कोपवशवचसा यन्निर्मितं तदाकर्ण्यतामिति ।

§ ७) अस्ति वसुधावामाक्षया एकं कुण्डलमिवोत्तप्तकनकमयप्राकारगम्भीरपरिखापरिवृता काञ्ची नगरी । तस्याः पूर्वदक्षिणदिग्विभागे त्रिगव्यूतिमात्रे रगडानाम संनिवेशो ऽस्ति । तत्र सुशर्मदेवो द्विजः परिवसति । पत्नी सुशर्मा । तस्य च रुद्रसोमाभिधो ज्येष्ठपुत्रः । तस्य लघुभ्राता सोमदेवः । तयोः स्वसा श्रीसोमा च । स तु रुद्रसोमो बाल्यादेव चण्डश्चपलो ऽसहनो गर्वोद्धुरकन्धरः स्तब्धो ऽतिकर्कशवचाः सर्वदा सर्वडिम्भान्निरागसो ऽपि रथ्यासु परिताडयति । तस्य तादृशस्य स्वभावं वीक्ष्य डिम्भैरेव चण्डसोम इति नाम गुण्यं कृतम्, तावन्नरेश, स एषः । स कियद्भिर्वासरै-रतिक्रान्तैः पित्रा ब्राह्मणकुलबालिकया नन्दिन्या सह पाणिं ग्राहितः । तत्र पितरौ कुटुम्बभारमारोप्य मन्दाकिनीतीर्थयात्राकृते निर्गतौ । चण्डसोमः क्रमेण यौवनश्रियमलंचक्रे । ततः सा नन्दिनी च यद्यप्यखण्डितशीलव्रता तथापि तां तारुण्यपुण्यावयवरमणीयां वीक्षमाणश्चण्डसोमः स्वमनसि न विश्वसिति । ततो नरनाथ, तस्या उपरि किंचिद्रागमुद्वहतस्तस्य को ऽपि कालो व्यतिचक्राम । अथान्यदा तत्र शरल्लक्ष्मीरवततार ।

अभवन् सर्वतो यस्यां दिशः सर्वा विकस्वराः । कुमुदिन्यः प्रमोदिन्यः सदाकाशा विकासिनः ॥ ३१
अतुच्छस्वच्छतापात्रमाद्रियेत जनैर्जनः । यस्यामितीव जातानि निर्मलानि जलान्यपि ॥ ३२
यत्र स्वागतमप्रच्छि मरालानामुपेयुषाम् । सरोभिर्नलिनीगन्धलुब्धालिकुलनिःस्वनैः ॥ ३३
सप्तच्छदेषु चिक्रीडुर्विमुच्य करिणां कटान् । मधुपा यत्र नैकत्र स्थायिनो मलिना यतः ॥ ३४
यत्र चञ्चलकल्लोलभुजाभिरभिवादनम् । घनात्ययश्रियः प्रीत्या तन्वन्तीव जलाशयाः ॥ ३५
निष्पुण्यानामिव धनं सरितां नीरमत्रुटत् । यत्र धान्यान्यवर्धन्त कार्याणीवार्यचेतसाम् ॥ ३६

§ ८) अन्यदा तत्र ग्रामे नटपेटकमेकं ग्रामानुग्रामं परिभ्रमत् समाजगाम । तेन सर्वो ऽपि ग्रामः प्रेक्षावीक्षार्थमभ्यर्थितः । ततस्ते च ग्राम्या राजन्याः प्रथमे यामे व्यतीते प्रशान्ते कलकले मृदङ्गध्वनि-माकर्ण्य गन्तुं प्रवृत्ताः । एष चण्डसोमः 'स्वकलत्रपरित्राणं कथं करोमि' इति व्यचिन्तयत् । 'यदि तावन्नटं द्रष्टुं गच्छामि ततः कथं जायायाः परित्राणम्, यदि वल्लभाया रक्षणं तदा मम न प्रेक्षण-क्षणनिरीक्षणम्, 'इतस्तटी इतो व्याघ्रः' इति न्यायादनल्पविकल्पमालाकुलितमनाः किं रचयामि, भार्यात्मना सह नेतुं न युज्यते, तस्मिन् रङ्गे युवशतसंकुलो ग्रामः । सो ऽपि मम भ्राता तत्र गतो भविष्यति । तावद् यद्भवति तद्भवतु । एतस्याः श्रीसोमाया भगिन्या एतां समर्प्य व्रजामि ।' इति विचार्य समर्प्य च कोटिप्रहरणधरश्चण्डसोमः प्रययौ । चिरं तस्मिन्निर्गते भगिन्या भणितम् । 'हले नन्दिनि, तावन्नटनाट्यवीक्षायै गच्छावः ।' नान्दिन्या भणितम् । 'हले श्रीसोमे, किं न जानासि निजसोदरचेष्टितं येनैवं भणसि, न स्वजीवितस्य निर्विण्णास्मि, त्वं पुनर्यद्युक्तं तत्कुरु' इति जल्पन्ती स्थिता । श्रीसोमा पुनस्तत्र नाट्यं द्रष्टुं गता । तस्य चण्डसोमस्य तत्र रङ्गे प्रेक्षमाणस्य पृष्ठतः किंचिन्मिथुनं मन्त्रयितुं प्रवृत्तम् । इति जल्पितं तरुणेन । 'भद्रे, हृदये स्वप्ने ऽपि च त्वं दृश्यसे । अद्य मनोरथशतैन प्रत्यक्षं दृष्टासि ।

त्वद्वियोगानलज्वालामालाज्वलितविग्रहम् । सांप्रतं सौख्यसंयोगसुधासारेण सिञ्च माम् ॥ ३७

2) P B स्तीमितं. 6) O क एष for कोऽप्येष. 11) O गव्यूत. 12) P om. पत्नी सुशर्मा, P B om. च after तस्य, B P लघुर्भ्राता. 15) P B डैम्भः, B om. स before कियद्भि°. 19) O कियानपि for कोऽपि. 21) P B विकाशिनः. 24) P सप्तच्छेदेषु. 29) B एष सोमचंडः स्वकलत्र. 30) P B inter न & मम. 36) B निजसहोदर. 40) P माल्य for माला.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

§ ९) एतत्संलपत्तदाकर्णितं चण्डसोमेन । अत्रान्तरे स प्रतिभणितस्तया तरुण्या । 'परिज्ञातं मया यत्त्वं दक्षो दाक्षिण्यशिरोमणिस्त्यागी भोगी प्रियंवदः कृतज्ञः, परं प्रकृत्यैव मम पतिश्चण्डः ।' एतच्च श्रुत्वा चण्डशब्दाकर्णनजाताशङ्केन चिन्तितं चण्डसोमेन । 'नूनं सैषा दुराचारा मम भार्या मामिहागतं परिज्ञायैतेन संकेतितविटेन समं मन्त्रयन्ती मां न पश्यति ।'

युवा प्राह पतिस्ते ऽस्तु चण्डः सोमो ऽथवा यमः । इन्द्रो वाद्य मया सार्धं त्वया संगम्यमेव च ॥ ३८

भणितं तरुण्या । 'यद्येवं तव निश्चयस्तद्यावन्मम पतिरिह स्थितः कस्मिन्नपि प्रदेशे प्रेक्षां वीक्षते तावदहं निजगृहं व्रजामि । पुनस्त्वया मम मार्गलग्नेन समागन्तव्यम्' इति भणित्वा सा तरुणी रङ्गतो निर्गता । चिन्तितं चण्डसोमेन । 'अये, सैवैषा दुष्टप्रकृतिर्येन भणितमेतया मम पतिश्चण्डः ।' यावदेतच्चण्डसोमश्चिन्तयति तावदिदं नट्या गीतम् ।

इष्टं यन्मानुषं यस्य तदन्येन रमेत चेत् । स जानन्नेवमीर्ष्यालुरादत्ते तस्य जीवितम् ॥ ३९

एवं च निशम्येर्ष्यालुना चण्डसोमेन परिस्फुरदधरेण चिन्तितम् । 'कस्मिन् स दुराचारः सा च दुःशीला व्रजति । अवश्यं तच्छिरो लुनामि ।' इति चिन्तयन् स समुत्थाय क्रोधाध्मातहृदयः स्ववेश्म प्रविश्य बहलतमसाच्छादिते भूभागे गृहफलहकस्य पाश्चात्यपक्षे कोटिप्रहरणसज्जः स्थितः ।

§ १०) इतश्च प्रेक्षणे निवृत्ते गृहफलहकद्वारे लघुभ्राता स्वसा च प्रविशन्तौ चण्डसोमो वीक्षांचक्रे । तेन च कोपान्धतमसाच्छादितविवेकचक्षुषाविचार्य परलोकमवगणय्य लोकापवादं परित्यज्य नीतिं कोटिशस्त्रेण लघुसोदरः स्वसा च निहतौ । द्वावपि धरातले पतितौ । सैषा मम प्रियाप्रियकारिणी सैष पुरुषो दुःशील इति यावत्तस्य शिरश्छिनद्मीति चिन्तयन् कोटिप्रहरणमुद्गीर्य चण्डसोमः प्रधावितस्तावत्कोटिफलहके रणन्ती लग्ना, तच्छब्दाकर्णनमात्रेणास्य प्रतिबुद्धा भार्या नन्दिनी । भणितं ससंभ्रमया तया । 'हा निर्धर्म, किमेतत्त्वयाध्यवसितमिति । हतः कनीयान् भ्राता भगिनी च ।' एतन्निशम्य ससंभ्रमं यावद्विलोकयति तावद्बन्धुर्भगिनी च मृतिं प्रापतुः । ततः संजातगुरुपश्चात्तापेन तेन चिन्तितम् । 'हा हा, मया अकार्यं कृतं कोपवशतः ।' इति चिरं विलप्य मूर्च्छानिमीलिताक्षः पृथ्वीपीठे लुलोठ । नन्दिन्यपि 'देवरं ननान्दरं च' इति भणित्वास्तोकशोकशङ्कुव्यथितहृदया बहुधा रुरोद । ततः क्षणमात्रलब्धचैतन्यश्चण्डसोमः 'हा बन्धुरगुणग्रामाभिराम सदाचार, हा श्रीसोमे भगिनि, युवां विना सदाधारमपि निराधारं जगत्समभूत्' इति चिरं विललाप ।

असावकृत्यकारीत्यद्रष्टव्यवदनो द्विजः । ह्रियेव द्विजराजो ऽस्ताचलात्पतितुमुद्यतः ॥ ४०
तत्तदाक्रन्दमाकर्ण्य स्त्रीत्वान्मृदुलमानसा । रजनी तारकव्याजादिवाश्रूणि विमुञ्चति ॥ ४१
ततः क्रोधादिवाताम्रस्तमःशत्रुं क्षयं नयन् । प्रपातयन् करांश्चण्डान् सूर्यो नृप इवोदितः ॥ ४२

§ ११) अथ स जल्पितो जनेन 'भो चण्डसोम, एवं विलापं मा कार्षीः' । ततः स विलपन्नेव 'हा बान्धव, हा भगिनि', इति निःसृत्य श्मशानभूमौ चिताज्वलनज्वालावलीं कृत्वा प्रवेष्टुं यावच्चण्डसोमः प्रारेभे तावद्ग्रामजने 'गृह्णीत गृह्णीत द्विजं पतन्तम्' इति वदति चण्डसोमो बलिभिर्नरैर्धृतः । अथ द्विजैरुक्तः 'किं प्राणान् वृथा त्यजसि, प्रायश्चित्तं विरचय' । चण्डसोम उवाच । विप्राः, तद्दीयतां मे ।'

प्राहैको ऽघमकामेन कृतं तेनैव शुद्ध्यति । परः प्राह जिघांसन्तं निघ्नन्न ब्रह्महा भवेत् ॥ ४३
ऊचे ऽन्यः क्रुत्कृते पापे क्रोध एवापराध्यति । परो ऽवदद्भवेच्छुद्धो ब्राह्मणानां निवेदिते ॥ ४४
कश्चिदूचे कृतं पापमज्ञानान्न हि दोषकृत् । प्राहान्यो देहि सर्वस्वं द्विजानां स्वस्य शुद्धये ॥ ४५
मुण्डयित्वा ततो मुण्डतुण्डे भिक्षां भ्रमन् सदा । करपात्रीं करे बिभ्रद् गच्छ त्रिदशदीर्घिकाम् ॥ ४६
इत्थं मिथो विरुद्धानि श्रुत्वा तेषां वचांस्ययम् । मां चतुर्ज्ञानिनं मत्वा तान् विहाय समागमत् ॥ ४७
ततोऽत्र चिन्त्यतां तीर्थस्नानैः शुद्धिः कथं भवेत् । जलेनाङ्गमलो याति न लग्नं पापमात्मनि ॥ ४८
यदि स्नानात्स्मृतेर्वापि गङ्गा हरति कल्मषम् । जायते जलजन्तूनां तत्कदापि न कल्मषम् ॥ ४९
यदि स्मरणमात्रेण जगत्पूतं भवेदिदम् । अहो तन्मोह एवायं यज्जलेनात्मशोधनम् ॥ ५०
इदं वाक्यं विचारं न सहते हि महात्मनाम् । परं जनेन मूढेन प्रसिद्धिं गमितं परम् ॥ ५१
रागद्वेषविहीनेन यदुक्तं सर्ववेदिना । मनःशुद्ध्या कृतं तद्धि पापप्रक्षालनक्षमम् ॥' ५२
श्रुत्वेति चण्डसोमः स्वं वृत्तान्तं प्राञ्जलिः प्रभुम् । प्रणम्य प्राह सत्यं तद् यदाख्यातं विभो त्वया ॥ ५३

2) O परं मम पतिः प्रकृत्यैव चण्डः. 17) P B महरणमुद्गूर्य. 28) P O भोश्चण्डसोम, B ततः स विलापावलिप्त चेतागृहमथ सन्निःसृत्य. 29) P स्मशान. 30) B बलिभिर्नारै°. 40) P om. 2nd परम्.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वज्ञवाक्यस्य विशुद्धिदस्य योग्यो ऽस्म्यहं यद्यघभाजनो ऽपि ।
दीक्षां ततो देहि ममेति तेन प्रोक्ते व्रतं तस्य ददौ मुनीन्दुः ॥ ५४

। इति कोपे चण्डसोमकथा ।

§ १२) गुरुणा श्रीधर्मनन्दनेन पुनरप्युक्तम् ।

'दुर्दमो मानमातङ्गो धर्मारामं भनक्ति यः । स्वशक्तिव्यक्तितो यत्नः क्रियतां तस्य रक्षणे ॥ ५५
परित्यजन्नपि क्रोधं मानवो मानवर्जितः । भवेद्भवे यदि श्रेयःश्रिया संश्रियते ततः ॥ ५६
हिताभिलाषी यः स्वस्य तेन मानमहीधरः । भेदनीयः सदाप्युद्यन्मृदुताभिधधारया ॥ ५७
अहंकारो नदीपूर इव पुंसः कुलद्वयम् । भिनत्ति कूलद्वयवत् पक्षोच्छेदनलालसः ॥ ५८
दष्टो दर्पभुजङ्गेन नरश्चैतन्यशून्यधीः । नमस्यति गुरून् क्वापि पुरतो न स्थितानपि ॥ ५९
मानान्धलोचनो देही चारुमार्गं न पश्यति । अतः संसारकूपान्तर्निपतत्युचितं हि तत् ॥ ६०

मातरं पितरं भार्यामपि म्रियमाणामुपेक्षते मानमहागजेन्द्रपरवशः, यथैष पुरुषः ।' राज्ञा परिजल्पितम् । 'भगवन्, अस्यां सभायामनेकलोकाकुलायां सैष पुरुष इति कथं ज्ञायते ।' भणितं श्रीभगवता । 'य एष मम वामस्तवद्दक्षिणपार्श्वे स्थितः प्रोन्नामितभ्रूयुगः पृथुलवक्षःस्थलो गर्वभरमुकुलितदृष्टिरुत्तप्तकनकवर्णतनुराताम्रलोचन एतेन रूपेण मूर्तो मान इव समागतः । यदेतेनामानमानमूढचेतसा कृतं तदाकर्ण्यताम् । तथा हि,

अस्त्यवन्तीजनपदे नगरी श्रीगरीयसी । विशाला सुमनःशाला विशाला शालशालिता ॥ ६१
सुप्रापं यत्र सिप्रायाः पयः पीयूषसोदरम् । निपीय लोको न सुधापायिनो ऽपि प्रशंसति ॥ ६२
यत्राभ्रंलिहहर्म्याग्रचन्द्रशालासु योषितः । राजन्ते वीक्षितुं लक्ष्मीं स्वर्गवध्व इवागताः ॥ ६३
धनिनां यत्र हर्म्येषु सदनेषु मनीषिणाम् । वर्धते श्रीसरस्वत्योर्मिथः प्रीतिर्गतागतैः ॥ ६४

तस्या नगर्याः पूर्वोत्तरदिग्विभागे योजनमात्रप्रदेशे कूपपद्राभिधानो ग्रामः । तत्रैकः पूर्वं राजवंशप्रसूतो भागधेयपरिहीनः क्षत्रभटो नाम जीर्णठक्कुरः परिवसति । तस्य चैक एव वीरभटाख्यः पुत्रो निजजीवितादप्यधिकवल्लभो ऽस्ति । अन्यदा स तं तनुजं परिगृह्योज्जयिन्यां प्रद्योतननृपस्य सेवाहेवाकपरो बभूव । दत्तः क्षितिपतिना तस्य स एव कूपपद्रो ग्रामः । कालेन च स क्षत्रभटो ऽनेकसमीपसंपर्कवैरिवीरप्रहारविदारितावयवो जराजीर्णतया चरणचङ्क्रमणाक्षमस्तमेव पुत्रं वीरभटं भूपस्यार्पयित्वा गृह एव स्थितः । तस्यापि शान्तिभटाभिधः सूनुरस्ति । स च क्रमतः क्षितिपस्य सेवां कर्तुं प्रवृत्तः । तस्य स्वभावतः स्तब्धस्यात्यन्तमानिनो यौवनगर्वितस्य प्रद्योतनराज्ञा राजपुत्रवर्गेण च शान्तिभट इति नामधेयस्य मानभट इति नाम विदधे । नरेश्वर, स एष मानभटः ।'

§ १३) अन्यदा सदसि सर्वेषु स्वस्वस्थाननिविष्टेषु मानभटः समागमत् । ततः स्वस्वामिनः सचिवपुङ्गववर्गस्य कृतनमस्कारो निजस्थाने राजपुत्रं पुलिन्दाख्यमुपविष्टं दृष्ट्वा प्रोचिवान् । 'भोः पुलिन्द, मदीयमिदमासनस्थानं समुत्तिष्ठ त्वम्' इति । पुलिन्देन भणितम् । 'अहमजानन्नेवेहोपविष्टस्तावत् क्षमस्व ममागः, न पुनरुपविक्ष्ये । ततः 'तव मानभटस्य स्थाने पुलिन्दो निविष्टः' इति वदद्भिरपरैः स उत्तेजितः । तद्यथा ।

'त्यजन्ति मानिनः सर्वे तृणवज्जीवितं धनम् । उज्झन्ति मानं न क्वापि मान एव महद्धनम् ॥ ६५
लघ्वर्कमूलवद्द्रव्यं मानं मन्दरवद्गुरु । त्यजन्ति मानिनः पूर्वं परं च न कथंचन ॥ ६६

एतज्जनवचनमाकर्ण्य क्रोधाध्मातहृदयो मानभटो निर्दयः कार्याकार्यमविचार्यानार्य इव स्वस्मृतिमवगणय्य कृपाण्या वक्षःस्थले पुलिन्दं जघान । तं निपात्य स च सदसो निःसृत्य पुलिन्दपाक्षिकराजपुत्रेषु पृष्ठिलग्नेष्वपि वेगवत्तरया गत्या स्वग्राममागम्य कृतापराधो भुजङ्गम इव स्ववेश्म प्रविश्य पितुः पुरतो पुरतो यथावृत्तं कथयामास । तन्निशम्य पितृपित्रा जल्पितम् । 'पुत्र, यत्कृतं तत्कृतमेव । अत्र पुनः सांप्रतं सांप्रतं विदेशगमनम्, तदनुप्रवेशो वा । तत्र तदनुप्रवेशो न घटते, तावद्विदेश एव गम्यम् । अन्यथा जीवितव्यं न । ततस्त्वरितमेव वत्स, सज्जीकुरु वाहनम् । तत्रारोप्य सकलमपि गृहसारं

2) P मुनींद्रः. 7) P B °न्मृदुताभिदुधारया. 16) P सुमनसःशाला. 21) P एकवीरभटाख्यः. 27) P नाभाऽवतस्य B मामावनम्य for नामधेयस्य, P B सैष मान°. 31) P add : & ते before ततः. 23) P उज्झंते. 35) B adds पूर्वं द्रव्यं परं मानं before क्रोधाध्मात. 37) O °मागत्य. 40) B adds on the margin the following (to come after वाहनम् ।) -येन तदाभिख्य रेवातीरे गम्यते । तेन च मानभटेन मानाध्मातमनसापि किमपि दाक्षिण्यं दधता वाहनं सज्जीकृतम् ।.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

रेवातीरं प्रति प्रेषितौ क्षत्रभटवीरभटौ। परं स्वयं व्याघुट्य मानभटः कतिभिरपि स्वपुरुषैः परिवृतः पित्रा वार्यमाणो ऽपि पौरुषाभिमानितया स्थितः।

'द्विधापि लाभः संग्रामे शूरो मृतिमवैति चेत्। स्वर्गशर्माथवा जीवेत्ततः श्रेयः श्रियः पदम्॥' ६७

इति स यावच्चिन्तयन्नस्ति तावत्तत्र पुलिन्दस्य बलं प्राप्तमेव। ततस्तत्र तयोर्युद्धं प्रवृत्तं, मानभटेन मानवाहारूढेनाकर्षितखड्गरत्नेन तद्बलं सकलमप्यभञ्जि। ततः स गुरुप्रहारार्तो निर्व्यूढपराक्रमः स्वपुरुषैः सह पितुः पथि गच्छतो मिलितः। अथ तौ क्रमेण यान्तौ नर्मदोपकण्ठे पर्यन्तग्राममेकमाश्रित्य दुर्गमं तस्थतुः। सो ऽपि मानभटः कियद्भिर्दिनै रूढव्रणः संजज्ञे।

§ १४) तत्र तयोस्तस्थुषोः कियानपि कालो व्यतिचक्राम।

तत्रान्यदा वसन्तश्रीर्वनावन्यामवातरत्। सपल्लवश्रियो ऽभूवन् यस्याः संगान्महीरुहः॥ ६८
अशोका अपि कुर्वन्ति सशोका विरहिस्त्रियः। स्मरन्त इव चित्तान्तस्तत्पादतलाहतीः॥ ६९
अनङ्गो ऽपि हि यत्संगाद्धन्त हन्ति वियोगिनः। पुष्पश्रियैव सर्वत्र तत्र मित्रबलं महत्॥ ७०
किल माध्वीकगण्डूषोक्षितेन भृशरोपितः। स्त्रीणां विरहितं हन्ति केशरः केशरश्रिया॥ ७१
पलाशास्तु पलाशाढ्याः पलाशा इव रेजिरे। वियोगाक्रान्तनारीणामरीणाः प्राणितच्छिदे॥ ७२
कङ्केल्लिशाखिनां शाखा नवपल्लववेल्लनैः। अवलोत्तारणानीव पुष्पकालस्य तन्वते॥ ७३

§ १५) अथ स मानभटो ग्रामतरुणनरैः सह दोलायामधिरूढवान्। ग्रामजनेनोदितं 'यो यस्य हृदयंगमस्तस्य तेन नाम गेयमेव।' प्रतिपन्नं ग्राम्यपुरुषैः। एवं भणिते निजनिजप्रियाणां पुरस्तरुणपुरुषवर्गो गीतं गातुं प्रारेभे। ततः को ऽपि गौराङ्गीं को ऽपि श्यामलाङ्गीं को ऽपि तन्वङ्गीं को ऽपि नीलोत्पलाक्षीं गायति। ततो दोलाधिरूढेन मानभटेन निजा जाया गौराङ्ग्यपि श्यामाङ्गीनामोच्चारेण गीता। एवं च श्यामाया नाम गीयमानं श्रुत्वा तस्य प्रिया गौराङ्गी समधिकं चुकोप। ततो ऽपराभिर्युवतिभिः सा हसितेति। 'सखि, तव रूपमप्रमाणं सौभाग्यभङ्गी च यत्तव पतिरन्यायाः श्यामाङ्ग्या मनोवल्लभाया नामोत्कीर्तनमातनोति।' ततः सा सौभाग्यवती गौराङ्गी निक्षिप्तहृदयशल्येव क्षणं चिन्तयामास। 'अहो, मम प्रियेण सखीजनस्यापि पुरतो मानो ऽपि न रक्षितः। अहो, अस्य निर्दाक्षिण्यम्। अहो, निर्लज्जता। अहो, निःस्नेहता। येन प्रतिपक्षगोत्रग्रहणं कुर्वता महद्दुःखं प्रापितास्मि, ततो ममापमानितसौभाग्यलक्ष्म्या न समीचीनं प्राणितम्' इति विचिन्त्य सा गौराङ्गी महिलावृन्दस्य मध्यान्निर्गमनोपायमिच्छति, परं न तद्दृष्टिवञ्चनावसरं प्राप्नोति। इतश्च,

स्वप्रियागोत्रस्खलनश्रुतिसंतप्तचेतसः। तस्या दुःखमिव प्रेक्ष्य द्वीपमन्यं रविर्ययौ॥ ७४
कमलानि परित्यज्य मधुपाः कुमुदावलिम्। भेजुः प्रायेण नैकत्र मधुपानां रतिर्भवेत्॥ ७५
अस्तं गते दिनस्यान्तात् खगे विश्वप्रकाशके। क्रोशन्ति स्म खगानामसौहृदादिव दुःखिता॥ ७६
पर्यपूरि तथा विश्वमपि विश्वं तमोभरैः। यथा न लक्ष्यते लोकैस्तदा पाणिर्निजो ऽपि हि॥ ७७
सर्वा अपि क्षणादेव ग्रस्यन्ते तमसा दिशः। इनाद्विना सपत्नेन को नाम न हि दूयते॥ ७८
अभूत्तमोमयं भूमितलं निखिलमप्यथ। राज्यं तमसि कुर्वाणे यथा राजा तथा प्रजा॥ ७९
न जलं न स्थलं नोच्चं न नीचं नयनाध्वनि। न समं नासमं सर्वं तमसैकीकृते जगत्॥ ८०

ततः ईदृक्षे समये सा युवतिः सार्थमध्यतः कथंचिन्निर्गत्य मरणोपायं चिन्तयन्ती गृहमाजगाम। तत्र सा श्वश्र्वा पृष्टा 'वत्से, कुत्र ते पतिः'। भणितं तया। 'एष आगत एव मम पृष्ठे लग्नः' इति वदन्ती सावशा वासवेश्म प्रविवेश। ततो ऽसावतिगुरुदुःसहप्रतिपक्षगोत्रवज्रप्रहारदलितेव जजल्पेदम्।

'आकर्णयत भो लोकपालका नीतिपालकाः। विना प्रियं निजं नान्यो मया चित्ते विचिन्तितः॥ ८१
परं न कृतमेतेन वरं प्राणप्रियेण यत्। यदस्म्यन्तर्वयस्यानामपमानपदं कृता॥' ८२
इत्युदीर्य तयात्यन्तकोपया कण्ठकन्दले। अक्षेपि पाशकः प्राणान् विधूय तृणवद्द्रुतम्॥ ८३

§ १६) इतश्च स मानभटस्तां रमणीगणमध्यस्थामप्रेक्षमाणो जाताशङ्कः स्वभवनमाजग्मिवान्। तेन मातुः पार्श्वे पृष्टं 'यद्भवद्वधूः समागता किं वा नेति'। मात्रा जल्पितम्। 'यदत्र समागत्य वासभवने प्रविष्टा' इति समाकर्ण्य मानभटस्तत्रागम्य त्वरितमेव पाशं तस्याश्चिच्छेद। अथो सा जलेन संसिच्यमाना क्षणेन स्वस्थचित्ता समभवत्। भणितमनेन। 'प्रिये, किं केनापराद्धं, कथं कुपिता, किमिदं त्वया निर्नि-

6) O om. पर्यन्त. 12) P माध्वीगण्डू°. 26) P O omit line स्वप्रिया etc. to चेतसः, P om. तस्या, B अस्या for तस्या. 31) P B प्रजाः. 33) O ईदृशे. 36) P चित्तेऽतिचिंतितः B चित्तेऽपि चिंतितः. 39) P B स्वभुवन°. 40) P B वासभुवने. 41) O °स्तत्रागत्य, P जल्लेन.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्तं स्वकीयं जीवितं ममापि च संशयदोलामारोपितम्' इत्याकर्ण्य गौराङ्गी प्रियं प्रति वाक्यमाह स्म 'यत्र सा सौभाग्यवती कमलदलदीर्घलोचना श्यामाङ्गी निवसति तत्र त्वमपि गच्छ' इति। मानभटेनोक्तम्। 'प्रिये, सर्वथैवास्य वृत्तान्तस्यानभिज्ञः। का श्यामाङ्गी, केन कदा दृष्टा, केन तव पुरो निवेदितम्, इति कथय।' एतन्निशम्य सा रोषानलदह्यमानमानसा बभाण। 'अधुना त्वमनभिज्ञो ऽसि यदा त्वया दोलाधिरूढेन सखीजनपुरतस्तस्याः श्यामाङ्ग्या गीतमुद्गीतमेतत्कथं विस्मृतम्।' एवमुक्त्वा तया महापुण्यारण्यस्थमुनिनेव मौनमवलम्ब्य स्थितम्। मानभटेन चिन्तितम्। 'यदसावकारणे ऽपि कोपपर्वतमारुरोह'। ततस्तेन प्रसाद्यमानापि सा पुनः पुनर्न किंचिज्जल्पितवती। केवलममानं मानमेवाश्रित्य स्थितवती। मानभटेन चिन्तितम्। 'यदेतस्या रोषपोषितचित्ताया अनुनये पादपतनमेव हितम्' इति विचिन्त्य तेन तदेव कृतम्। परं तेन कृतेनापि प्राज्याज्यसंसिक्तज्वलनज्वालेव साधिकतरं क्रोधदुर्धरा बभूव, न पुनश्चेतसि शमरसं पुपोष। ततः स मानभटश्चिन्तयति स्म। 'युक्तमेषा मृगाक्षी प्रसाद्यमानापि नाम न प्रसीदति स्म। यत ईदृश्य एव स्त्रियो भवन्ति।

प्रत्यासन्ना भवेन्मोक्षलक्ष्मीर्मोक्षाभिलाषिणाम्। न जायते ऽन्तरा नाम दुस्तरा स्त्रीनदी यदि ॥ ८४
सेवन्ते कामुकाः कामतापच्छेदाय कामिनीः। परं प्रत्युत जायन्ते महासंतापभाजनम् ॥ ८५
सौदामिनीव संध्येव निम्नगेव नितम्बिनी। चञ्चलप्रकृतिर्दृष्टनष्टरागातिनीचगा ॥ ८६
विवेकपङ्कजं हन्ति मानसे महतामपि। कामिनीयं हिमानीव कस्तामिच्छति तत्सुधीः ॥ ८७
विवेकपर्वतारूढान् गुणप्रौढानपि द्रुतम्। हेलयापि महेलासौ वीक्षितेनापि पातयेत् ॥ ८८
नवीना कापि दृश्येत शस्त्रीव स्त्री शरीरिणाम्। आदीयन्ते यया प्राणा बाह्या आभ्यन्तरा अपि ॥

§ १७) इति चिरं विचिन्त्य वासभवनान्निःसृतो मानभटो जनयित्र्याप्रच्छि 'पुत्र, कथय किमेतत्'। ततः स तस्या अदत्तस्वप्रतिवचनो बहिर्निर्गतः। कान्तया चिन्तितम्। 'अहो, वज्रकठिनहृदयास्मि येन भर्तुः स्वयं पादपतितस्यापि न प्रसन्नाभवं ततो न वरं कृतम्, पुनः पुनः पदपतनाप्रसादवीक्षापन्नो मम प्राणेशः कुत्र जगाम, इति न सम्यग् जानामि, तस्मादमुष्य पृष्ठलग्ना व्रजामि' इति चिन्तयित्वा वासवेश्मतो निर्गता। 'पुत्रि, क्व चलितासि' इति श्वश्रूपृष्टा 'मातः, तव पुत्रः क्वापि प्रस्थितः' इति वदन्ती सा त्वरितपदं प्रधाविता ससंभ्रमं, पृष्ठे श्वश्रूरपि। चिन्तितं च तत्पित्रा वीरभटेन। 'सर्वमेव कुटुम्बं क्वापि प्रस्थितम्' इति चिन्तयन् सो ऽपि तेषां मार्गे लग्नः। ततः स मानभटो घनतिमिराच्छादिते कूपनिगमे व्रजन् तथा कथमप्युपलक्षितः। स च बहुपादपशाखासहस्रसंजातान्धतमसस्य कूपस्य तटमाजगाम। तत्र च तेनोपलक्षिता पृष्ठतः समायान्ती निजजायेति। तामवलोक्य 'एतस्याः परीक्षां करोमि' इति विचिन्त्य तेन कूपान्तः शिला निक्षिप्ता। तच्छिलापतनसंजातशब्दमाकर्ण्य 'मम पतिः पतितः' इति मत्वा तद्भार्या दुःखार्तावटे त्वरितमात्मानं मुमोच। ततः श्वश्रूरपि तद्दुःखदुःखिता स्वं मुक्तवती, ततस्तस्या दुःखेन महता पृष्ठलग्नः श्वशुरो ऽपि। ततस्त्रितयमपि विनष्टं दृष्ट्वा स चेतसि चिन्तितवान्। 'मयात्र किं कर्तव्यम्, एतेन दुःखेनात्मानं किं कूपे क्षिपामि, अथवा न' इति विचार्य तेन प्राप्तकालमेतेषां मृतानां निवापक्रियामातन्य परमवैराग्यमागतेन विषयान्तरं परिभ्रम्य परिभ्रम्य लोकेन निवेदितानि भैरवपातगङ्गास्नानप्रभृतीनि समाचरता भार्यामातृपितृवधप्रभूतसंभूतदुरन्तदुरितजातोपशान्तये कौशाम्बी नगरी भेजे। भो नरेश, तदयं वराको ऽनभिज्ञो मूढमना लोकोक्त्या तीर्थानि करोति। यदि तावच्चित्तशुद्धिस्तदा पुरुषो गृहे ऽपि तिष्ठन् पापं क्षिणोति। ततः सर्वथैव मनःशुद्धिरेव विधेया।

चित्तशुद्धिं विना दत्तं वित्तं पात्रे ऽपि सर्वथा। तथा क्रियाकलापश्च भस्मनीव हुतं वृथा ॥' ९०

एवं निशम्य गुरूदितं मानभटो मानमपनीय भगवतो धर्मनन्दनस्य चरणमूलमाश्रितः। ततः प्रतिबुद्धेन मानभटेन प्रव्रज्या याचिता। सूरिणा समादिष्टम्। 'वत्स, अतुच्छस्वच्छतानिधे, सर्वदैव निरतिचारं चारित्रप्रतिपालनं दुष्करमेव। यत्र कर्तव्यं केशोत्पाटनम्। नित्यमेव प्राणातिपातविरत्यादीनि व्रतानि निरतिचाराणि धारणीयानि। वोढव्यो ऽष्टादशसहस्रशीलाङ्गभारः। भोक्तव्यमरसविरसं रूक्षं भैक्षम्। पातव्यं प्रासुकैषणीयं निःस्वादु जलम्। शयितव्यं भूमौ। दुस्सहपरीषहोपसर्गवर्गसंसर्गे ऽपि न मना-

---

1) B इत्याकर्ण्य कर्णशूचिक्षेपादिव। दूनोवाच। तव मानसे कमलदलदीर्घलोचना. 2) P सौभाग्यभा for सौभाग्यवती. 4) B त्वमज्ञोसि. 18) P B वासभुवना°. 19) B अदत्तप्रतिवचनो. 20) P स्वयं पद (द?) पति°. 22) C मातुस्तव, C क्व for क्वापि. 26) B निजा जायेति. 32) B inter. प्रभूत & संभूत. 37) B वच्छ स्वच्छगुणातुच्छ सर्वदैव. 39) B °ष्टादशशीलांगमहभ्रभारः, B विरसरूक्षं.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

गपि शैथिल्यमाधेयम् । यन्मदनदन्तैर्लोहचणकभक्षणं सुकरं न पुनर्जिनप्रणीतव्रतप्रतिपालनम् ।' ततः श्रीधर्मनन्दनगुरोरुपदेशवचःपीयूषं माननमहाविषमविषदर्पनिर्दलनसमर्थमाकण्ठमुत्कण्ठया निपीय मानभटः प्रव्रज्यां जग्राह ।

। इति माने मानभटकथानकम् ।

§ १८) पुनरपि गुरुराह ।

'ईहध्वे यदि कल्याणमात्मनो भव्यजन्तवः । तदार्जवकृपाणेन च्छेद्या माया प्रतानिनी ॥ ९१
मायानदीमहापूरं यद्यमूर्खे तितीर्षसि । ऋजुत्वाख्यतरीं तूर्णं ततः सज्जय यत्नतः ॥ ९२
माया रात्रिचरी ज्ञेया जगज्जन्तुभयंकरी । अवक्रचित्तसद्भावस्फूर्जन्मन्त्रप्रभावतः ॥ ९३
मायानृतखनिर्येन कृता स्यात्तस्य दुर्गतिः । न कृता येन तस्येह श्रेयःश्रीर्वशवर्तिनी ॥ ९४
माया दुर्नयभूपालकेलिभूमिरियं वरा । जननी विश्वदुःखानां काननं पापभूरुहाम् ॥ ९५

माया क्रियमाणा यशो धनं मित्रवर्गं च नाशयति । जीवितव्यं च संशयतुलामारोपयति । भो नरेश्वर, यथैष पुरुषः ।' भूभृता प्रोक्तम् । 'भगवन्, न जानीमो वयं कः स पुरुषः, किमेतेन कृतम् ।' श्रीधर्मनन्दनः प्रोचे । य एष तव संमुखः पाश्चात्यभूभागे मम स्थितः संकुचितदेहभागः कृष्णकायकान्तिः पापीयान् दृश्यते स मायावी । अनेन मायाविना यत्पूर्वं कृतं तदाकर्ण्यताम् । तथा हि,

जम्बूद्वीपाभिधे द्वीपे क्षेत्रे भरतनामनि । काश्यदेशेऽस्ति विख्याता पुरी वाराणसी वरा ॥ ९६
स्फुटं स्फाटिकयद्भित्तौ यत्रेक्षन्ते मृगीदृशः । चरन्त्योऽपि निकेतान्तः स्व आदर्श इवानिशम् ॥ ९७
दुःखं तु त्यागिनामेव सर्वैश्वर्यविराजिनाम् । कदाचनापि प्राप्यन्ते याचनाय न याचकाः ॥ ९८
यत्र कामानलो यूनामदीपिष्ट कुतूहलम् । संध्यासमीरणैः सिद्धसिन्धुसीकरहारिभिः ॥ ९९

या चतुर्दशस्वप्नजन्ममहिम्नः अमूर्तमूर्तिरमणीयतातिरस्कृतानल्पकन्दर्पस्य उत्पन्नविमलकेवलज्ञानावलोकिताशेषपदार्थसार्थस्य संसारोदरविवरसंचरिष्णुसकलजनतात्राणदानोद्धतविशुद्धसद्धर्मदेशनासिंहनादविधुरितसकलकुमतकरिवरस्य सुरासुरनरेश्वरसंसेव्यमानचरणारविन्दयुगलस्य तीर्थकृतो भगवतस्त्रिजगदानन्दनस्य श्रीवामानन्दनस्य जन्मभूमिः । तस्या नगर्याः पश्चिमोत्तरदिग्विभागे शालिग्रामो नाम ग्रामः ।

अम्बुभिर्बन्धुरोऽगाधैः संकटो विकटैर्वटैः । मञ्जुलो वञ्जुलश्रेण्या चित्तप्रीत्यै न कस्य यः ॥ १००

§ १९) तत्र चैको वैश्यजातिर्गङ्गादित्याख्यः परिवसति । तत्र ग्रामे धनधान्यसमृद्धेऽपि स एवैको दारिद्र्यमुद्राविद्रुतः । कुसुमशरसमानरूपेऽपि जने स एवैको वैरूप्यधारी । किं बहुना, स एवैको दुर्वचनपरो निखिलजनोद्वेजनीयदर्शनः कृतघ्नः कर्णेजपः सर्वागुणगणमन्दिरं च । तस्य ग्रामजनेन मायाशीलस्य पूर्वनाम गङ्गादित्य इत्यवमत्य मायादित्य इत्यभिधा विदधे । भो नरेन्द्र, स चायं मायादित्यः । तत्र ग्रामे वणिक्पुत्र एकः पूर्वसुकृतसंचयक्षयपरिक्षीणद्रविणः स्थाणुरित्याख्यः । तस्य तेन मायादित्येन समं प्रीतिरुत्पन्ना । स च स्वभावेन सरलः कृतज्ञः प्रियवादी दयालुरवञ्चनपरः सदा दीनवत्सलोऽनादीनवश्चेति । तेन स्थाणुना ग्रामवृद्धजनेन प्रतिषिध्यमानेनापि सौवचित्तप्रविशुद्धतया मायादित्यस्य समीपं [सामिप्यं] न कदापि मुच्यते ।

जानाति साधुर्वक्राणि दुर्जनानां मनांसि न । आर्जवेनार्पयत्येव स्वकीयं मानसं परम् ॥ १०१

ततस्तयोः सज्जनदुर्जनयोः प्राज्ञमन्दयोरिव मरालबकयोरिव भद्रगजबर्बरकूलगजयोरिव स्वभावेन स्थाणोः कैतवेन मायादित्यस्य तु मिथः प्रीतिरवर्धत । अन्यदा विश्वस्तचेतसावन्योन्यं विविधान् धनोपार्जनोपायान् परिकल्प्य स्वजनवर्गं परिपृच्छ्य कृतमङ्गलोपचारौ गृहीतपाथेयौ दक्षिणदिशाभिमुखं जग्मतुः । तत्र ताभ्यामनेकगिरिसरिच्छाखिश्वापदसंकुलं वनं दुर्लङ्घ्यमुल्लङ्घ्य स्वर्गपुरप्रतिष्ठं प्रतिष्ठानपुरमवाप्य विविधवाणिज्यादि कर्म कुर्वाणाभ्यां कथंचित्प्रत्येकं पञ्च काञ्चनसहस्री समुपार्जिता । ततस्तौ 'द्रव्यमेतच्चौरभिल्लजनेभ्यः परित्रातुं दुष्करम्' इति विचिन्त्य स्वदेशं प्रति गमनसमुत्सुकमनसौ दश सुवर्णसहस्र्या दश रत्नीं स्वीकृत्य जरच्चीराञ्चले बद्ध्वा मुण्डितमस्तकौ प्रावृतधातुरक्तवाससौ विरचितदूरतीर्थयात्रिकलोकवेषौ भिक्षां याचमानौ क्वापि मूल्येन क्वापि सत्रागारेष्वश्नन्तौ कमपि संनिवेशमीयतुः ।

1) P B °माधेयं । यल्लोहचणकक्षणं न पुनर्जिन· 4) B C om. इति. 12) P वयं कोपि पुरुषः B वयं कोपि स पुरुषः. 13) P B पाश्चात्यभागे. 14) P B °विना पूर्वं यत्कृतं. 15) P B काश्यदेशे· 19) P B omit या, B तिरस्कृताऽनल्पकंदर्पदर्पस्य. 25) P °गंगादेव्याख्यः. 34) B दुर्जनयोः चंदनतरुपिचुमंदयोरिव. 37) B adds नदी after गिरि, P om. पुरप्रतिष्ठं etc. ending with द्रव्य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्रोक्तं स्थाणुना। 'भो मित्र, मार्गश्रमखिन्नदेहो भिक्षायै गन्तुं न शक्नोमीति तदद्य निरवद्या मण्डका एव भक्ष्यन्ते।' तच्छ्रुत्वा मायादित्यः प्रोचे। 'त्वमेव पत्तनान्तःप्रविश्य मण्डकान् कारय, नासिश्चर्थे निपुणो ऽसि, परं त्वरितमागन्तव्यम्।' स्थाणुना भणितम्। 'भवत्वेवं कथमयं रत्नग्रन्थिः क्रियताम्।' मायादित्यो जगाद। 'कस्तावज्जानाति नगरव्यवहारं तस्मात्को ऽप्यपायो भविष्यति तव प्रविष्टस्येति ममैव पार्श्वे रत्नग्रन्थिस्तिष्ठतु।' स्थाणुस्तस्य करे रत्नग्रन्थिमर्पयित्वा पुरं प्रविवेश। चिन्तितं च मायादित्येन। 'यदि केनाप्युपायेन रत्नग्रन्थिरसौ ममैव भवति तत्कृतार्थपरिश्रमः स्याम्' इति विचिन्त्य प्रत्युत्पन्नपापमतिना तेन मायिना सत्यरत्नग्रन्थिप्रतिरूपो द्वितीयः पाषाणशकलग्रन्थिः कृतः। तदा च 'कान्दविकापणेष्वनुद्घाटः' इत्यकारितमण्डक एव स्थाणुरायातः। भणितं स्थाणुना। 'मित्र, कथमद्य भयभ्रान्तविलोचन इव भवान् लक्ष्यते।' मायादित्येन निवेदितम्। 'मया त्वं सम्यक् समागच्छन्नत्र नावगतः किंतु चौर इति ज्ञातमतो बिभ्यदस्मि, न कार्यममुना रत्नग्रन्थिना।' एवं वदता तेन मायाविना गमनाकुलितचेतसा पुनर्विरचितं सत्यरत्नग्रन्थिं तस्य समर्प्य स्वयमसत्यरत्नग्रन्थिं स्वीकृत्य 'अहं भिक्षायै गच्छामि' इति कपटेन भणित्वाहोरात्रेण द्वादश योजनान्यतिक्रम्य यावद्रत्नग्रन्थिर्विलोकितस्तावत्केवलं पाषाणखण्डान्येव दृष्टानि। तन्निरीक्षणे वञ्चित इव मुषित इव स बभूव। ततस्तस्य पार्श्वतः सत्यरत्नग्रन्थिग्रहणाय पुनरपि कूटकपटधारी चिरं सर्वत्र बभ्राम। स स्थाणुर्मित्रमार्गान्वेषणं चिरं चकार, परं स न मिलितः। ततो ऽनेकधा विलप्य मित्रगुणं संस्मृत्य तेन दिनः समतिक्रमितः। रात्रौ पुनः कुत्रापि देवकुलान्तः सुप्तः।

§ २०) पाश्चात्ययामे केनापि गूर्जरपथिकेन गीतम्।

'धवल इव यो ऽत्र विधुरे स्वजनो नो भारकर्षणे प्रवणः। स च गोष्ठाङ्गणभूतलविभूषणं केवलं भवति॥' १०२

इति सूक्तं श्रुत्वा स्थाणोरपि श्लोक एकः स्मृतिमायातवान्।

'अथ क्षितौ विपत्तौ च दुःसहे विरहे ऽपि च। ये ऽत्यन्तधीरताभाजस्ते नरा इतरे स्त्रियः॥' १०३

तां रात्रिमतिक्रम्य तेन चिन्तितम्। 'यदि मृतं मम मित्रं भवति तदास्य मानुषाणां रत्नानि पञ्च समर्पयामि' इति पुनः कृतमतिः स्थाणुः स्वनगरं प्रति चचाल। व्रजतस्तस्य स्थाणोः क्रमेण नर्मदातीरे स मायादित्यो विलक्ष्यास्यो निःश्रीकशरीरो लोचनगोचरमुपाजगाम। ततस्तेन स्थाणुं मित्रं वीक्ष्य गाढमवगूह्य च कपटेनालीकवृत्तान्तो निवेदितुमारेभे। 'मित्र, तदा तव सकाशादहं निर्गत्य गेहं गेहं परिभ्रममाणो धनिनः कस्यापि वेश्मनि प्रविष्टः, तत्र मयालब्धायां भिक्षायां किंचित्कालं यावत्स्थितं तावत्तत्पदातिभिः क्रोधान्धैः साक्षाद् यमदूतैरिव चौर इति भणद्भिर्विविधैः प्रहारैर्मार्यमाणो ऽहं गृहस्वामिनः सकाशे नीतः। तेन समादिष्टम्। 'भव्यं कृतमेष धृतो यदनेनास्माकं कुण्डलमपहृतम्। तावत्सन्त्रैथायं यत्नेन ध्रियतां यावद्राजकुले निवेदये।' ततो मया चिन्तितम्।

'भुजङ्गगतिवद्वक्रचित्तेन विधिना नृणाम्। अन्यथा चिन्तितं कार्यमन्यथैव विधीयते॥' १०४

§ २१) ततो ऽकृतापराधो विलपन् वेश्मनः कोणे तैर्निक्षिप्तः। तत्र स्थितस्य दुःखार्तस्य मे दिवसो व्यतीतः। संप्राप्ता रात्रिः। सा तु स्वप्नसंजातभवत्समागमसंभूतसुखपरम्परासु स्थितस्य मम त्वरितमेव निष्पुण्यकस्य लक्ष्मीरिव क्षणदा क्षयमाप। संप्राप्तो ऽपरो दिवसः। तत्र मध्याह्नसमये कापि नायिका अनुकम्पया मम योग्यमाहारमानिनाय। सापि मां रमणीयरूपं विलोक्यानुरागवती संजाता। विजनीभूते च तत्र सा मया पृष्टा 'भद्रे, त्वां पृच्छामि यदि स्फुटं सर्वमपि निवेदयसि'। तयोक्तं 'वरेण्य, निखिलमपि निवेदयिष्ये'। मयोचे 'किमहं निर्मन्तुः पदातिभिर्गृहीतः'। तया जल्पितम्। 'सुभग, एतस्यां नवम्यां मद्भर्ता देवताराधननिमित्तं मलिम्लुचो ऽयमिति छद्मना स्वीकृतं त्वां देव्यै बलिं दास्यति।' ततो मयाधिकजातजीवितान्तभयेन पुनः पृष्टा 'कथय मम को ऽपि जीवनोपायो ऽस्ति।' तया कथितम्। 'नास्ति तव जीवनोपायः, न पुनः स्वस्वामिनो द्रोहं करोमि, परं तथापि त्वयि मम महान् स्नेहः, ततो वचः शृणु। अथ नवम्यां सकलो ऽपि परिच्छदो मत्स्वामिना सह तीर्थभुवि स्नातुं यास्यति तदा तव रक्षपालो ऽप्येको द्वौ वा भाविनौ।' इत्याकर्ण्य प्रस्तावं परिलभ्य गृहादहं निःसृत्य केनाप्यवीक्ष्यमाणः स्थाने स्थाने त्वां विलोकयन् सरलबहलवानीरे रेवातीरे यावदायातस्तावत्त्वं दृष्टः। मित्र, तव दुस्सहवियोगे एतन्मयानुभूतम्।' एतद्वृत्तान्तं निशम्य सम्यग्बाष्पजलप्लुतलोचनः स्थाणुः समजनि।

8) R °णेषु तद्धोट इत्यकारित. 10) B चौर इति ज्ञातः। अतो. 11) B om. सत्यरत्नग्रन्थिं तस्य समर्प्य स्वय,मं P स्वीकृत्याह॥ भिक्षायै. 12) P om. °विलोकितस्तावत्के etc. ending with सत्यरत्नग्रन्थि. 22) B व्रजतस्तेन स्थाणोः. 23) P निःश्रीकशरीरलोचन. 28) P धृयतां. 30) P om. °स्य दुःखार्तस्य etc. ending with दिवसः। तत्र. 33) B om. मम. 37) C inter. पुनः & पृष्टा. 38) P परं तं पि. 41) P B दृष्टः। एतद् दुःसहविरहवियोगे मित्र मयानुभूतं। तद् वृत्तांतं (twice in P) निशम्य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततो द्वावपि धौतवदनौ कृताहारक्रियौ प्रचलितौ। ततो मार्गभ्रष्टौ दिङ्मोहितचित्तौ भयभ्रान्तदृशौ च संसार इव दुस्तरे कान्तारे विविशतुः। 'कुत्रागतौ, कुत्र गमिष्यावः' इति तौ न जानीतः। स्थाणुना भणितम्। 'क्षुधाधिकं मां बाधते तत्त्वं रत्नग्रन्थिं गृहाण, कदाचिन्मम पार्श्वात्पतिष्यतीति समर्पितो ऽनेन रत्नग्रन्थिः।' चिन्तितं च मायादित्येन। 'अहो, यन्मम कर्तव्यमस्ति तदमुना स्वयमेव कृतम्। ततो मध्याह्ने ललाटंतपतपने ऽतीवतृष्णातरलितौ पानीयं सर्वत्र पश्यन्तौ वटपादपाधस्तादवटं ददृशतुः। ततश्चिन्तितं तेन दुष्टबुद्धिना 'सांप्रतमस्यैव कूपपातनमेवानपाय उपायः'। भणितं मायादित्येन। 'स्थाणो, कूपे कियत्प्रमाणं पयः, विलोक्य कथ्यताम्, यथा तदनुमानेन दृढां वल्लीतन्तुभिर्दृढां रज्जुं करोमि।' स तु महानुभावो ऽवक्रहृदयः पयःप्रमाणवीक्षाकृते प्रवृत्तः। ततस्तेन मोहमोहितचेतनेन मायाविनानपेक्ष्य लज्जामवमत्य प्रीतिमनालोच्य दाक्षिण्यमविचार्य परलोकमविचिन्त्य सज्जनमार्गे स्थाणुर्नीरं निरीक्षमाणः कूपे न्यक्षेपि। स च कूपे दलतृणचयचिते जम्बालान्तः पतितो ऽपि तथाविधां बाधां देहे न सेहे। ततस्तेन विश्वस्तचेतसा चिन्तितम्। 'अहो, पूर्वं दारिद्र्यम्, ततः कान्तारान्तः परिभ्रमणम्, तत्रापि प्रियमित्रवियोगः, एतत्त्रितयमपि पापिना विधिना विरचितमेव। अहमत्र केन निर्दयहृदयेन क्षिप्तः। अत्र मायादित्य एव समीपवर्ती नान्यः। कथमेतेनास्मि पातितः। अथवा नैतत् संवादि, दुष्टं मया खलु चिन्तितम्।

कदाचिद्वायुना स्वर्णशैलचूलापि कम्पते। उदेत्यंशुः प्रतीच्यां च न मित्रं तनुते त्विदम्॥ १०५

धिगहो, ममापि हृदयस्यानल्पविकल्पसंकल्पः। ततः केनापि राक्षसेन वा पिशाचेन वा पूर्ववैरिणा क्षिप्तो ऽस्मि।' स्थाणुरेवं विचिन्त्य स्वस्थचित्तस्तस्यामप्यवस्थायां तस्थौ। प्रकृतिरेवेदृशी सज्जनानाम्। चिन्तितं मायादित्येन। 'अहो, यत्कर्तव्यं तत्कृतमेव। सांप्रतं दशानां रत्नानां फलं गृह्णामि' इति चिन्तयन् मायादित्यो वनान्तः परिभ्रमन् चौरसेनापतिना वीक्षितो धृतश्च रत्नानि च गृहीतानि।

§ २२) अथ चौरपतिः कथंचिद्भवितव्यतयानन्ययोदन्यया बाधितस्तमेव विशङ्कटावटतटमवाप। समादिष्टं पल्लीस्वामिना 'भो भोः, कूपात्पयः कर्षत'। इत्याकर्ण्य तैः कूपे पयःकर्षणाय वल्लीवरत्रया ग्रावगर्भः पलाशदलपुटकः क्षिप्तः। कूपान्तःस्थेन स्थाणुना तं वीक्ष्य महता शब्देन गदितम्। 'केनापि दैवदुर्योगतः कूपे ऽत्र क्षिप्तः, ततो मामभ्युत्तारयत।' तैः सेनानायकस्य पुरो विज्ञप्तम्। 'यत्केनाप्यत्र जीर्णकूपे पुमानेकः पातितो ऽस्ति।' सेनापतिना जगदे।' 'भो भोः, अलमलं जलाकर्षेण, प्रथमं तमेव वराकं कर्षत।' ततस्तदादेशवशंवदैस्त्वरितमेव स्थाणुः कूपतः कर्षितः। सेनापतिस्तं बभाषे 'भद्र कुत्रत्यस्त्वं, कुतः समायातः, किमभिधानः, कथं जीर्णावटे निपातितः।' भणितं चानेन। 'देव, पूर्वदेशात आवां द्वौ जनौ दक्षिणाशामाश्रित्य कियता कालेन पञ्च रत्नान्युपार्ज्य मुदितमानसौ स्वगृहं प्रतिगच्छन्तौ मार्गपरिभ्रष्टौ तृषातरलितचित्तावेतस्यामटव्यां प्रविष्टौ। तत आवाभ्यां तृषातुराभ्यां जीर्णकूपो दृष्टः। अतः परं देव, न किमपि सम्यग् जाने, यदस्मि केनापि पातित इत्यवैमि। परं यद्भवता कृपावता कूपात्संसारादिव गुरुणा प्राणी सद्धर्मवचनोपदेशेनाकर्षितः।' एतदाकर्ण्य सेनापतिनोक्तम्। 'केवलं तेन दुराचारेण भवान्निक्षिप्तः।' स्थाणुना भणितम्। 'नहि नहि शान्तं पापम्। स कथं मयि जीवितादप्यधिकः प्रियो वयस्यः श्वपच इव दुश्चरितमाचरति।' सेनापतिना जल्पितं 'स तावत्कुत्रास्ते'। स्थाणुना जगदे 'सांप्रतं नावगच्छामि'। अथ सर्वैरपि परिमोषिभिः परस्परं सहास्यमास्यं निर्माय भणितम्। 'यदयं वराकः सर्वदैवावक्रचित्तः सद्भावः किमपि न जानाति स्वस्य शुद्धचित्ततया।' ततः पल्लीपतिरुवाच। 'सांप्रतमिदं स एवास्य वयस्यो भविष्यति, यस्यामूनि रत्नान्यस्माभिर्गृहीतानि।' चौरैरुक्तं 'देव, संभाव्यत एतत्'। अथ स पृष्टः 'कथय स कीदृशस्तव वयस्यः'। स्थाणुना भणितम्। 'देव, कृष्णवर्णः पिङ्गललोचनः कृशाङ्गो मम वयस्यः।' सेनाधिपेनोक्तम्। 'भद्र, त्वया लक्षणसंपूर्णः सुहृल्लब्धो येन कूपे भवान् पातितः। त्वं प्रत्यभिजानासि स्वानि रत्नानि दृष्टानि।' तेनोक्तं 'उपलक्षयामि'। ततस्तेन तस्य रत्नानि दर्शितानि। तेन तान्यात्मीयानि परिज्ञाय जल्पितम्। 'कुत्र कदा वा रत्नानि प्राप्तानि, कथं मन्मित्रं व्यापाद्याङ्गीकृतानि।' तैरुक्तम्। भवन्मित्रं न विनाशितम्, केवलं रत्नानि स्वीकृत्य नियम्य च

1 > P om. च. 5 > P B सर्वत्रैव. 7 > P B यथास्मि तदनुमानेन. 12 > P एतत्त्रितयपापिना. 13 > P अथवा न तमेतद्दृत्ता संवादि दृष्टं मया, B अथवा नूनमेतद्दृत्ताऽसंवादि. 16 > O संकल्पनम्. 20 > M om. तट. 29 > P om. न, P om. कृपावता. 31 > P B प्रिये वयस्ये श्वपच. 36 > B om. स after कथय. 37 > P सेनाधिपतिनोक्तम्.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स मुक्तः ।' तेन सेनापतिना सदयेन स्थाणोः पञ्च रत्नान्यर्पयांचक्रे । तेन मित्रं विलोकमानेनैकस्मिन् वनगहने दृढवल्लीसंदानितबाहुलतो नियमितचरणयुगः पोट्टल इव निबद्धो ऽधोमुखो वीक्षितः । तं विगतबन्धं विधाय हाहारवं कुर्वाणः स्थाणुः सानुकम्पः प्रोवाच । 'मया रत्नानि पञ्च व्याघुट्य लब्धानि । तव सार्धं रत्नद्वयं ममापि च । त्वं पुनर्मनसि विषादं मा विदधीथाः ।' इति भणित्वा स्थाणुना कान्तारपर्यन्तग्रामसीमां स समानिन्ये । तत्र तावदुपचारवृत्त्या स मायादित्यः कियद्भिरपि दिनैर्निर्व्यूढव्रणः समजनि । चिन्तितं च मायादित्येन । 'यदयं ममेदृशचेष्टितस्यापि परोपकारीति । ततो मया किं कर्तव्यम्, यन्मया मायाविना प्रथमं रत्नस्वीकारेण ततः कूपान्तर्निक्षेपेणालीकवचोभिश्च वयस्यो विप्रतारितः, ततो मम नरके ऽपि न निवासः, तस्माद् ज्वलनं प्रविश्यात्मानं काञ्चनमिवाशुशुक्षणौ विमलीकरिष्ये ।' ततो ऽतीवमित्रवञ्चनालक्षणचिन्तासंतापपरायणश्चितानलं प्रवेष्टुं स्थाणुना ग्रामजनेन च निवार्यमाणो ऽपि मायादित्यः समीहितवान् । ततो ग्राममहत्तरैरनेकैर्वाक्यैः प्रतिबोधितः । ततः स्वमित्रवञ्चनसमुद्भूतपापनिराकरणाय स्थाणुना मित्रेणानुगम्यमानः सर्वाणि तीर्थानि लोकप्रसिद्ध्या समाराधयन् स मायादित्यः समागत्येह समुपविष्टो ऽस्ति । ततो मायादित्यः श्रीधर्मनन्दनगुरोर्मुखतः स्वं वृत्तान्तमवगम्य बभाण । 'यन्मया मायामोहितचेतसा स्वमित्रद्रोहिता कृता तदपगमनाय प्रसादं विधाय प्रभो, प्रभो दयावास, सिद्धिनिवासभुवं प्रव्रज्यां मह्यं देहि ।' ततो भगवता धर्मनन्दनेन ज्ञानातिशयेन विलोक्योपशान्तमायाकषायप्रचारः स मायादित्यः श्रीतीर्थनाथप्रणीतप्रतीतयथोक्तविधिना प्रव्राजितः ।

। इति मायायां मायादित्यकथा ।

§२३) चारुचारित्रमलयाचलचन्दनेन गुरुणा श्रीधर्मनन्दनेन पुनरूचे ।

न वर्जयति लोभं यः क्रोधादिरहितो ऽपि हि । निमज्जति भवाम्भोधौ स कालायसगोलवत् ॥ १०६
जीवाः संसारकान्तारे विवेकप्राणहारिणा । स्पष्टं लोभाहिना दष्टा जानते न हिताहितम् ॥ १०७
सलोभे मानवे सद्यो निर्मलापि गुणावली । विलीयते ऽग्निसंतप्ते लोहे तोयच्छटा यथा ॥ १०८
प्रचुरैर्नीरधिर्नीरैरिन्धनैर्धूमकेतनः । न तुष्यति यथा जन्तुर्घनैरपि धनैस्तथा ॥ १०९

लोभपरवशः प्राणी द्रव्यं नाशयति, मित्रं च हन्ति, दुःखाम्बुधौ निपतति च । पार्थिव, यथैष पुरुषः ।' राज्ञा विज्ञप्तं 'भगवन्, स कः पुरुषः, किमेतेन कृतम्' । समादिष्टं भगवता । 'यस्तव पृष्ठिभागे वामे वासवस्योपविष्टो ऽतिकृशशरीरः केवलमस्थिपञ्जर इव रूपेण मूर्तो लोभ इव । नरेश्वर, अमुना लोभाभिभूतेन यत्कृतं तदेकचित्ततया श्रूयताम् । तथा हि । इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भरतक्षेत्रे मध्यमखण्डे

समस्ति नगरी सौवरामणीयकसंपदा । स्वःपुरस्तन्वती तक्षशिला मनसि लाघवम् ॥ ११०
कपिशीर्षावलीकम्रवप्रव्याजेन भोगिराट् । सहस्रशीर्षः सौन्दर्यं यस्या द्रष्टुमुपागतः ॥ १११
प्राकारः स्फाटिको यत्र परिखाम्बुनि बिम्बितः । भोगावतीनिरीक्षायै विशतीव रसातलम् ॥ ११२
सुजातिरम्याः सुशिवाः सदारम्भा वृषाश्रयाः । स्वभयाः स्वशना यत्रोद्याना इव जना बभुः ॥ ११३
प्रासादा यत्र राजन्ते महाराजतनिर्मिताः । क्रीडानिमित्तमायाता मेरोरिव कुमारकाः ॥ ११४
असंख्यातहरिख्यातां सदा जयविराजिताम् । यां पुरीं स्वःपुरी वीक्ष्य ह्रियेवादृश्यतामगात् ॥ ११५
श्रीनाभेयपदस्थाने धर्मचक्रं मणीमयम् । श्रीबाहुबलिना यत्र सहस्रारं विनिर्ममे ॥ ११६

यत्र शोभन्ते परमस्नेहलालसचेतसो जना अनगाराश्च सदा परमदारं सदारागपरं सदाहारसारं विभवविवृन्दं मुनिमण्डलं चेति । तस्याः पुर्याः पश्चिमदक्षिणयोरन्तराले दिग्विभागे समुच्चधान्यकूटाभिराम उच्चलाख्यो ग्रामः । तस्मिन् शुद्धवंशभवो धनदेवाभिधः सार्थपतिपुत्रः परिवसति । परैः सार्थपतिपुत्रैः सह तस्य क्रीडां कुर्वतः कियानपि कालो व्यतिचक्राम ।

§२४) स धनदेवः स्वभावत एव लोभदत्तचित्तः सततमेव वञ्चकशिरोमणिरलीकवचनभाषी परद्रव्यापहारी । ततस्तस्येदृशस्य तैः सार्थनाथतनुजैर्धनदेव इति नाम निराकृत्य लोभदेव इत्यभिधा विदधे ।

10) P B om. ततः. 11) P B °गम्यमानस्तीर्थां सव्वाणि लोक°. 17) P B omit गुरुणा श्री. 26) B तक्षसिला. 28) B has (on भोगावती) a marginal gloss, नागपुरी. 29) On. सुजाति etc. B has a marginal gloss: जातिर्गोत्रं मालती च । सुष्ठु शिवं कल्याणं येषां, द्वि० शोभनाः शिवाः पुण्डरीका वृक्षाः सहकारा यत्र । सत्प्रधान आरंभो येषां ते तथा । सदारंभाः कदल्यो येषु ॥ सुष्ठु निर्भयाः शोभना हरीतक्यो यत्र । शोभनं अशनं भोजनं द्वि० ऽशना वृक्षविशेषा यत्र ॥. 31) B has a marginal gloss on असंख्यात etc. असंख्यातैर्हरिभिरश्वैः प्रसिद्धां – जय इंद्रपुत्रः सकसन्निहवति कदापिनेत्यर्थः [?]. 33) P B om. यत्र B has a gloss (on परं): परं केवलं अस्नेहसुनयः. 38) P repeats (after गुरुजनमनुज्ञाप्य) लोभदेव इत्यभिधा etc. ending with गुरुजनमनुज्ञाप्य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततस्तस्य तारुण्यपुण्यावयवस्य मानसमतीव लोभाभिभूतमभूत् । अन्यदा द्रव्योपार्जनप्रगुणितचित्तो गुरुजनमनुज्ञाप्य लोभदेवस्तुरङ्गानुत्तुङ्गान् सज्जीकृत्य वाहनानि च स्वीकृत्य पाथेयं संगृह्य मित्रवर्गमापृच्छ्य तिथिकरणनक्षत्रपवित्रे मुहूर्ते चन्द्रबले बलवल्लग्ने स्वामिना वीक्षिते स्नानं विधाय देवतार्चनं निर्माय च वहभाडिकादत्तपदः स्वजनेनानुगम्यमानः प्रमुदितवदनो दक्षिणाशां प्रति प्रचलितः । जनकेनोक्तम् । 'वत्स, तवाधीतसर्वशास्त्रस्य माणिक्यस्य घटनमिव भारत्याः पाठनमिव मौक्तिकानामुत्तेजनमिव सर्वथा शिक्षावचः कीदृग्, तथापि स्नेहमोहितचेतसा मया त्वां प्रति किंचिदुच्यते । 'पुत्र, दवीयो देशान्तरं, विषमा मार्गाः, कुटिलहृदया लोकाः, वञ्चनप्रगुणाः कामिन्यः, घनतरा दुर्जनाः, विरलाः सज्जनाः, दुष्परिपाल्यं क्रयाणकम्, दुर्धरं यौवनम्, विषमा कार्यगतिः, तावत्त्वया सर्वथैव क्वचन पण्डितेन, क्वचन मूर्खेण, क्वचन दयालुना, क्वचन निष्कृपेण, क्वचन सूरेण, क्वचन कातरेण मार्गो निर्गमनीयः ।' इति शिक्षावचोभिः सुतममन्दानन्दसंदोहमुग्धदुग्धाब्धिमध्यस्थं परिगलन्नयनयुगलजलं पिता विदधे। लोभदेवः कतिपयैरप्यनवरतप्रयाणकैर्दक्षिणापथमाश्रित्य कियतापि कालेन सोपारकपत्तनं प्राप्तवान् ।

यत्रोत्पातः पतङ्गेषु वक्रता भ्रूषु योषिताम् । प्रकम्पश्च पताकानां जनानां न कदाचन ॥ ११७
प्रामाणिकेषु संवादः कन्यासु करपीडनम् । मथनं च दधिष्वेव भङ्गः पूगीफलेषु च ॥ ११८
सम्यग्भवोच्छित्तिविधौ नितान्तं सद्धर्मकर्माहितचेतसो ऽपि ।
शिवार्थिनो यत्र जना यतन्ते कुर्मः स्तुतिं कां नगरस्य तस्य ॥ ११९

यत्र विश्वोल्लासियशोदयापरिगतो जनार्दन इव जनः सर्वमङ्गलोपचारचारुश्च, पार्वतीपतिरिव विमोहयति संगतो गणिकागणो धार्मिकलोकश्च । तत्र जीर्णश्रेष्ठिनो रुद्राभिधानस्य गुणश्रेणिनिधानस्य वेश्मनि वसता कियतापि कालेन तुरङ्गान् विक्रीयाधिकं धनमुपार्ज्य लोभदेवेन स्वगृहागमनोत्सुकमनसा बभूवे । तत्रायमाचारः । 'ये केचिद्वणिजस्तत्रत्या देशान्तरागता वा सायं ते सर्वे मिलित्वा परस्परप्रीतिपूर्वकं क्रयविक्रयादिकेन किमुपार्जितम्, किं किं पण्यमद्य देशान्तरादागतम्' इति वार्तां वितन्वते । गन्धताम्बूलमाल्यादि परस्परं प्रयच्छन्ति ।

§२५) अन्यदा स लोभदेवस्तत्रैवोपविष्टस्तदा केनापि 'क्वापि देशान्तरे किमप्यल्पमूल्येन वस्तुनानल्पमूल्यं वस्तु प्राप्यते' इत्याचचक्षे । अथ केनचिद्वणिजा गोष्ठ्यन्तःस्थेन प्रोक्तम् । 'यदहं दुस्तरं वारिधिमुल्लङ्घ्य रत्नद्वीपमगमम् । तत्र मया पिचुमन्दपत्राणि दत्त्वा रत्नानि स्वीचक्रिरे । एवं विक्रयक्रयं विरचय्य व्यावृत्य क्षेमतयात्राहमागतः ।' इमां वार्तां श्रुत्वा लोभतत्त्वाहितमनसा लोभदेवेन स्ववेश्मगमनाभिप्रायं विमुच्य पुनर्नवीनद्रविणार्जनहेतवे चेतश्चक्रे । ततो निजवेश्मागत्य निर्मितस्नानभोजनो यथाश्रुतं लोभदेवः श्रेष्ठिरुद्रस्य पुरः कथयामास । 'तात रुद्र, तत्र रत्नद्वीपे गतानां महाँल्लाभ उत्पद्यते, यत्र निम्बपत्रै रत्नान्येतानि प्राप्यन्ते । ततः किं मया न तत्र समुद्यमः क्रियते ।' रुद्रश्रेष्ठिनादिष्टम् 'वत्स, यावन्मात्रो मनोरथोऽर्थकामयोर्विधीयते तावन्मात्र एव प्रसरति, 'लाभाल्लोभो हि वर्धते' इति न्यायात् । अग्रेतनमर्थसंचयं स्वीकृत्य स्वदेशं गच्छ । किं च बहुलापायं जलधेरुल्लङ्घनम् । ततोऽधिकलोभे मनो मा विधेहि । एतदेव द्रविणं यथेच्छं भुङ्क्ष्व । दीनादीनां दानं ददस्व । दुर्गतं जातिसंबद्धं च समुद्धर । सर्वथैव धनस्य फलं गृहाण । निगृहाण च समधिकद्रव्यार्जनलक्षणं लोभराक्षसम् ।' एतदाकर्ण्य लोभदेवेन जल्पितम् ।

'यः कार्ये दुर्गमे धीरः कार्यारम्भं न मुञ्चति । वक्षोऽभिसारिकेव श्रीस्तस्य संश्रयते मुदा ॥ १२०

तथा तात, प्रारब्धकार्यनिर्वाहिमनसा पुंसा भवितव्यम् । त्वमपि मया सह रत्नद्वीपमागच्छ ।' श्रेष्ठिना भणितं 'ममागमनं न भावि केवलं त्वमेव व्रज' । लोभदेवेनोक्तम् 'कथं भवतस्तत्र गमनं न संपद्यते तन्निवेदय ।' रुद्रश्रेष्ठी प्रोवाच । 'यदहं सप्तकृत्वः समुद्रान्तर्यानपात्रेण प्रविष्टः, परं सप्तकृत्वोऽपि मम वाहनं भग्नम्, तावदहं नार्थस्यैतस्य भाजनम् ।' लोभदेवेन जल्पितम् । 'घर्मांशोरपि प्रतिदिनमुदयाधिरोहप्रतापपतनानि किं पुनर्नान्यस्य इति परिभाव्य सर्वथैव कमलायाः समुपार्जने सावधानमनसा भाव्यम् । त्वया रत्नद्वीपे मया सह समागन्तव्यमेव ।' श्रेष्ठी जगाद पुनः । 'वत्स, त्वां प्रति सांप्रतं किंचिद्वदामि, अत्र यानपात्रे त्वमेव क्रयाणकनेता, अहं पुनर्मन्दभाग्यः' इति । ततस्तेन तदेवाङ्गीकृतम् ।

4) P दिशि for प्रति. 8) O G अतस्त्वया for तावत्त्वया. 9) P B मूर्षेण for मूर्खेण. 15) B has a marginal gloss on शिवार्थिनो etc. thus: विरोधोयं शिवार्थिन ईश्वरभक्तास्ते भवस्येश्वरस्योच्छेदविधौ कथं यत्नं कुर्वंति विरोध (जंग) श्रेत्थं शिवार्थिनो मोक्षार्थिनः । संसारोच्छेदविधौ. 17) B has a marginal gloss (on विमोहयति) thus: मोहमूढं कारयति पक्षे विगतमोहं करोति । संगमात् पक्षे संगतो मिलितः ।. 18) P स्वगृहगमनो°. 19) P तत्रायमाचा°, P देशांतरानागता, B देशांतरादागता, P B om. सर्वे, O परस्परं. 23) P यदस्मि दुस्तरवारिधि° B यदस्मि दुस्तरवारिधि°, P एवं विक्रयं क्रयं. 25) P B स्ववेश्मगमनं विमुच्य, O ततो विजोत्तारके समागत्य निर्मित. 28) P adds न before समुद्यमः. 34) P समं for सह.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§२६) अथ सज्जीकृतं यानपात्रम् । गृह्यन्ते क्रयाणकानि । उपचर्यन्ते निर्यामकाः । निर्णीयते निमित्तविद्भिर्यात्रादिवसः । स्थाप्यते लग्नम् । निरूप्यन्ते निमित्तानि । विलोक्यन्ते उपश्रुतयः । संमान्यन्ते विशिष्टजनाः । अर्च्यन्ते देवताः । सज्जीक्रियते सितपटः । ऊर्ध्वः क्रियते कूपस्तम्भः । संगृह्यते काष्ठसंचयः । स्थाप्यते परिग्रहः । आरोप्यते भक्तम् । भ्रियन्ते जलभाजनानि । एवं कुर्वतस्तस्य समागतो यात्रादिनः । तत्र च तौ कृतमज्जनौ मुदितचेतसौ सुमनोमालाविलेपनवासो ऽलङ्कारालंकृतौ द्वावपि सपरिजनौ यानपात्रमारुरुहतुः । चलितं यानपात्रम् । वादितानि तूर्याणि । चालितान्यरित्राणि । ततः प्रावर्तत गन्तुं जलधौ यानपात्रम् । अनुकूलो वायुर्ववौ । कियतापि कालेन वहनं रत्नद्वीपं ययौ । तस्मात्तावुत्तीर्यातीव रम्यतमं प्राभृतं गृहीत्वा भूपचरणयुगलमभिगम्य लब्धप्रसादविशदमानसौ क्रयविक्रयं विरचय्य व्यावृत्य निजकुलाभिमुखमुत्सुकौ प्रचेलतुः । अनुकूलवायुना वहनं प्रेर्यमाणं समुद्रान्तः परिवीक्ष्य लोभदेवेन व्यचिन्ति । 'अहो, प्राप्तो मनोरथादधिकतरो लाभः । संभृतं च रत्नैर्यानपात्रम् । तावत्तटं प्राप्तस्य वहनस्यैष मम भागी भावीति न सुन्दरमेतत् ।' इति चिंतयन् लोभदेवो ऽवगणय्य दाक्षिण्यं समवलम्ब्य निष्करुणत्वं शरीरचिन्तायां समुपविष्टं रुद्रश्रेष्ठिनं जलधौ पातयामास । तस्मिन् यानपात्रे योजनत्रयमतिक्रान्ते लोभदेवेन महता शब्देन पूत्चक्रे 'अये, धावत धावत, मम वयस्यो दुरुत्तारे प्रचुरमकरघोरे सागरे पपातेति ।' इत्याकर्ण्य निर्यामकलोकः परिजनश्च वीक्षितुं प्रवृत्तः । तैरुक्तं 'कुत्र पपात' । तेन निगदितम् । 'अत्रैव पतितो मन्ये मकरेण गिलितश्च । मया जीवतापि किम् । अहमपि तद्वियोगं दुस्सहमसहमानः प्राणत्यागं विधास्ये ।' एतन्निशम्य सत्यं विमर्श्य.कर्णधारकैः परिजनेन च प्रबोध्य स्थापितः । यानपात्रमपि प्रचलितम् । स रुद्रश्रेष्ठी अकामनिर्जरया जलधौ महामकरवदनकुहरदंष्ट्राककचगोचरीभूतो ऽवसानं प्राप्य रत्नप्रभापृथ्व्याः प्रथमे योजनसहस्रे व्यन्तरभवने ऽल्पैश्वर्यपरो राक्षस उत्पेदे । तत्र तेन विभङ्गज्ञानवशात्तो मकरेण गिलितमात्मकायं गच्छद्यानपात्रं च विलोक्य चिन्तितम् । 'अरे, एतेन पापिना लोभदेवेनाहमत्र प्रक्षिप्तः । अहो, दुराचारस्यास्य साहसम् । न गणितः स्नेहसंबन्धः । न धृतश्चित्ते परोपकारः । न कृतं सौजन्यम् ।' इति चिन्तयतस्तस्यानल्पः कोपानलो जज्वाल । एतेनेति चिन्तितम् । 'यदमुं व्यापाद्य सद्यः सर्वस्यार्थस्य भाजनं भविष्यामि । तत्तथा करिष्ये यथैतस्यापि नान्यस्य वा भवति ।' इति चिन्तयित्वा राक्षसो मध्ये समुद्रमाययौ । तत्र वहित्रं विलोक्य कौणपः प्रतिकूलमुपसर्गं कर्तुमारब्धवान् ।

§२७) अथाभूच्छ्यामलं मेघमण्डलं मरुद्ध्वनि । रुद्राभिधानं वीक्ष्येव श्रेष्ठिनं गतजीवितम् ॥ १२१

भ्राम्यन्ति परितो ऽप्यभ्रं घना विद्युद्विलोचनाः । पश्यन्तः श्रेष्ठिनमिव सार्द्राः स्नेहिस्वभावतः ॥ १२२

वर्षन्त्यमोघधाराभिः स्वैरं धाराभृतो ऽम्बुधौ । निशातशरराजीभिरिव वीरा रणाङ्गणे ॥ १२३

विश्वमन्धीकृतं विश्वमुदितैर्धूमयोनिभिः । पुत्रा अनुहरन्ते हि पितरं नितरामिह ॥ १२४

लोलकल्लोलमालाभिः प्रेर्यमाणं मुहुर्मुहुः । प्रचण्डपवनोद्भूतं प्राणिप्राणभयावहम् ॥ १२५

तद्रोषवशतः पारावारान्तर्वहनं वहत् । अगण्यपण्यसंकीर्णं त्वरितं स्फुटमस्फुटत् ॥ युग्मम् ॥ १२६

लोभदेवो ऽम्बुधौ द्वीपमिव नीरं मरावेव । भवितव्यतया प्राप फलकं तत्र चालगत् ॥ १२७

सप्तभिरहोरात्रैस्तारद्वीपमायातवान् । स तत्र समुद्रवेलावनपवनेन शीतलेन प्रत्युज्जीवित इव क्षणम् । ततस्तत्तीरवासिभिः कृष्णकायकान्तिभिः शोणलोचनैर्यमदूतैरिव पुरुषैर्जगृहे । ततो लोभदेवो जगाद 'भद्रिरहं कथं गृह्ये ।' तैः कैतवेनोक्तम् । 'भद्र धीरो भव, मा विषादं भज, यदस्माकमेष नियोगः पोतवणिजो ऽवस्थां पतितस्य स्वागतं विधीयते' इति । एवंविधं जल्पद्भिस्तैर्लोभदेवो गृहमानीय विनयधामनैर्विष्टरे निवेश्य सवनस्नानं भोजनाच्छादनविधिं विधाय जल्पितः । 'भद्र, चेतसि विश्वासं समाश्रय, मा भयस्य भाजनं भव ।' तत इत्याकर्ण्य चिन्तितमनेन । 'अहो, अयं कीदृगकारणवत्सलो लोकः । स यावदिति चिन्तयन्नस्ति तावत्तैर्निष्कृपैस्तं बद्धा बाढं शस्त्रेण मांसलप्रदेशं विदार्य मांसमुत्कर्तितं शोणितं च जगृहे । स पुनरौषधयोगेन विलिप्ताङ्गो ऽक्षतशरीरो जज्ञे । पुनरपि षड्भिर्मासैरतीतैस्तस्य तदेव कृतम् । पुनरपि स पटुतरशरीरः कृतः । एवमनया रीत्या तस्यास्थिपञ्जरावशेषस्य समुद्रान्तःस्थस्य द्वादशवत्सरी व्यतीयाय ।

2) P B निमित्तवद्भिर्या°. 3) On सितपट B has a marginal gloss thus: सिढ इति प्रसिद्धः. 5) P B °वासोऽलंकारपरिवृतौ द्वावपि. 6) On अरित्राणि B has a marginal gloss आउलां. 8) C °भिगम्य नमश्चक्रतुः । (ततः) लब्ध°, C रत्नान्युपार्ज्य for व्यावृत्य, C निजकुला°. 12) P जलधौ घातयामास. 13) P B inter. प्रचुरमकरघोरे & सागरे. 14) P परजनश्च. 16) P B एतन्निशम्य सम्यक्कर्णधारकैः. 19) P B एतेन लोभदेवेन पापिना अहमत्र. 29) B अगण्यपुण्य. 34) P om. इति. 35) B सविनयस्नानभोजना°, P B विश्वासमाश्रय. 37) P B मांसमुत्कीर्तितं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§२८) अन्यदा लोभदेवस्तत्क्षणोत्कर्तितमांसखण्डः प्रवहच्छोणितलिप्ततनुर्भारण्डपक्षिणोत्क्षिप्तः। तस्य व्योम्नि गच्छतः समुद्रोपरि परेण भारण्डपक्षिणा सह युध्यमानस्य भवितव्यतया चञ्चुपुटस्थितो लोभदेवः सागरान्तः पपात। तज्जलेन निर्मितवेदनः सज्जन इव दुर्जनवचसा बहलतरकल्लोलमालाप्रेर्यमाणः समुद्रेणापि मित्रविनाशमहापापकलुषितहृदय इव निष्कासितः। किमपि कूलं संप्राप्य तत्र क्षणमात्रं शीतलमरुता समाश्वासितः काननान्तः संचरन् वटपादपतलं ददर्श। तत्र मरकतमणिकुट्टिमं सुगन्धनानाविधकुसुमसंचयचित्रं निरीक्ष्य लोभदेवो व्यचिन्तयत्। 'अहो, किल शास्त्रेषु श्रूयते, यथा देवाः स्वर्गे वसन्ति तत्र ते रम्या रम्यविशेषज्ञाः। अन्यथा कथं लोकत्रयाह्लादकरमिमं प्रदेशं परित्यज्य त्रिदशास्त्रिदशालयमाश्रयन्ते।' ध्यात्वेति स तत्र न्यग्रोधपादपाधस्तादुपविश्यातीवतीव्रवेदनार्तश्चिरं दध्यौ। 'स को धर्मः, येन देवा दिव्यभोगधारिणो देवलोके सुखमनुभवन्ति। तत्किं पापमस्ति, येन नरके नैरयिका मद्दुःखतो ऽप्यधिकं दुःखमुद्वहन्ति। ततो मया किं पुनः पापमाचरितं यदेवंविधं दुःखनिकेतनमभवम्।' इति चिन्तयतो लोभदेवस्य चेतसि सहसैव तीक्ष्णशरशल्यमिव रुद्रश्रेष्ठी स्थितः। ततः स चिन्तयामासेति।

§२९) 'अहो, अस्मादृशां किं जीवितेन।

हतो वयस्यः सर्वस्य प्रियकारी कलानिधिः। श्रेष्ठी रुद्रो मया येन पापिना द्रव्यलोभतः ॥ १२८

तावत्सांप्रतमपि तत्किमपि तादृशमाचरामि येन प्रियमित्रवधकलुषितमात्मानं तीर्थभुवि व्यापाद्य सर्वपापविमुक्तो भवामि।' इति चिन्तयन् लोभदेवः क्षणं सुप्तः, प्रबुद्धश्च एकस्यां दिशि कस्यापि मधुराक्षरां गिरमाकर्ण्य चिन्तितमनेन। 'अये न संस्कृतं प्राकृतमपभ्रंशं च। इयं तावच्चतुर्थी पैशाचिकी भाषा, तावदाकर्णयामि।' ततस्तेषां पिशाचानामिति परस्परमुल्लापः प्रवर्तते, तावदेकेनोक्तम्। 'यदिदं पापापनोदाय तपस्यतां पवनाभोगस्थानं रमणीयम्।' अपरेणोक्तम्। 'इतो ऽपि चारुश्चामीकराचलः।' अन्येन भणितम्। 'अस्मादपि तुहिनशिशिरशिलातलस्तुहिनगिरिरेव रमणीयः।' इतरेणोक्तम्। 'एवं मा मा वदत, सर्वपापापहारिणी सुरनिर्झरणी प्रधाना।' इति निशम्य तां प्रति प्रचलितो लोभदेवः परित्यक्तलोभसंगः समुपागताभङ्गवैराग्यरङ्गः। क्रमेण च नरेश्वर, समागत्यात्रैव निविष्टः।' एवं वृत्तान्तं भगवता कथितमाकर्ण्य व्रीडाप्रमोदविषादपरवशः श्रीधर्मनन्दनगुरुचरणमूलमवाप्य लोभदेवः प्रोवाच। 'यद्भवच्चरणारविन्दैरावेदितं तदवितथमेव। किमत्र मया कर्तव्यम्।' ततः श्रीधर्मनन्दनमुनिपेन प्रोक्तम्। 'वत्स, सर्वथा मित्रवधसंभूतपापजातक्षयाय लोभमहानिशाचरमनीहाहेत्या पञ्चत्वमानीय विनयवामतो भूयसा तपसा पुराकृतकर्ममर्मनिर्मथनाय जैनतपस्यासरस्यां राजहंसलीलामलंकुरु। क्षान्तिकान्तासेवाहेवाकितामाश्रय। कायोत्सर्गमुग्रमाचर। पापमहाराजप्रकृतीर्विकृतीः परिहर। यत्र न जरा न मृत्युर्न व्याधिर्न चाधिर्न च दुःखं तच्छाश्वतं महोदयपदं विशदं ततः प्राप्स्यसि।' तदाकर्ण्य लोभदेवेनोक्तम्। 'भगवन्, यदि तावदेतस्य चारित्रस्य योग्यो ऽस्मि ततो मम प्रव्रज्यादानप्रसादं विधेहि।' भगवता श्रीधर्मनन्दनेन गुरुणा पादपतितस्य तस्य बाष्पजलप्लुतलोचनस्य प्रशान्तलोभस्य लोभदेवस्य व्रतमदायि।

। इति लोभे लोभदेवकथा।

§३०) पुनरपि गुरुरुवाच।

'हन्ति हन्त महामोहस्तुहिनौघ इवोदितः। पङ्केरुहं विवेकाख्यं यशःपरिमलोर्जितम् ॥ १२९
सर्वदुःखमयो भूप भव एष जिनैर्मतः। तस्य स्वभावं जानन्ति महामोहहता नहि ॥ १३०
भुवो ऽवतंसः संजज्ञे स एवागण्यपुण्यभाक्। सदध्वनौ न यः क्वापि ह्रियते मोहवाजिना ॥ १३१
अनेन मोहराजेन दुर्धरेण जगत्त्रयी। जिग्ये जिनमुनीन् मुक्त्वा तीव्रव्रतधुरंधरान् ॥ १३२
सर्वदायमहो मोहो महासागरसंनिभः। न यस्य प्राप्यते स्ताघो महावैरैरपि क्वचित् ॥ १३३

महामोहमोहितमनाः पुमान् गम्यागम्यमपि न विचारयति। स्वसारमप्यभिसरति। जनकमपि मारयति। नरेश, यथैष पुरुषः।' विज्ञप्तं नृपतिना। 'स्वामिन्, अनेकलोकसंकुलायां सभायां कः पुरुषः, इति नावैमि।' तदवगम्य गुरुणा भणितम्। 'य एष तव दूरे दक्षिणदेशे वासवस्य लेप्यमय इव कार्याकार्यविचारविमुखो दृश्यमानसुन्दरावयवः स्थाणुरिव स्थितः।' एतेन महामोहमोहितचेतनेन यत्कृतं तच्छ्रूयतामिति।

10) P B दुःखनिकेतनमिति. 12) P om. किं. 18) P B प्रवर्त्तते। एकेनोक्तं. 29) C inter. भगवन् & यदि. 31) P B om. इति. 36) P अन्येन for अनेन. 41) C वासवस्य वामो लेप्यमय, P B om. महा-.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ३१) अस्ति समस्तकुशलजनावृतग्रामाभिरामः कोशलाभिधो जनपदः । तत्र परचक्रदुर्लङ्घ्या कामिनीमुखचन्द्रचन्द्रिकात्यन्तधौतधवलगृहा कोशलाख्या नगरी ।

स्वर्नदीसंगतैर्यत्र मरुल्लोलैर्ध्वजाञ्चलैः । मार्जयन्तीव शशिनः कलङ्कममरालयाः ॥ १३४
रमारामाभिरखिलैः सुभगंभावुकैर्गुणैः । मात्राधिकतया यत्र पराभूयन्त भूरिशः ॥ १३५
वातावधूतप्रासादधवलध्वजवेल्लनैः । यत्र त्रिपथगा व्योम्नि सहस्रपथगाभवत् ॥ १३६
तत्र क्षत्रशिरोरत्नं पवित्रमतिभाजनम् । कोशलः कुशलः क्षोणीपालः प्रत्यर्थिकोशलः ॥ १३७
वाहिनीप्रसरविस्फुरद्रजोमण्डलेन रविरस्तदीधितिः ।
यस्य विक्रमगुणैकवर्णने न क्षमः फणभृतामपीश्वरः ॥ १३८
यदश्वीयक्षुण्णक्षितिविततरेण्वा रविरपि क्षतज्योतिर्यत्सिन्धुरनिकरदानोदकभरैः ।
प्रसस्रुर्वाहिन्यः प्रतिपथममन्दैः प्रतिरवैरहो निःश्वासनामजनि किल गर्जिर्जलभृताम् ॥ १३९
यस्य प्रयाणे पृथिवीश्वरस्य निःश्वासनादाः किल ये प्रसस्रुः ।
त एव विद्वेषि महीपतीनां पलायनोत्साहकरा बभूवुः ॥ १४०
यथाशास्वपि दुर्गलङ्घनलसन्निःश्वासनादैः स्फुरत्सैन्योद्धूतरजोभरैरविरतं प्रत्यर्थिपृथ्वीभृताम् ।
बाधिर्यं श्रवणेष्वथान्ध्यमभवन्नेत्रेषु तस्य स्तुतिं कर्तुं न क्षमते सहस्ररसनो ऽप्युर्वीभृतो विक्रमे ॥ १४१

§ ३२) अथ तस्य महीशक्रस्य मूर्त्या जयन्त इव परं नाकुलीनः, सिंह इव विक्रमी न नखरायुधः, सवितेव प्रकाशकरो न कठोरः, चन्द्र इव सर्वाह्लादकरो न कलङ्कितः, तोसलाख्यः संख्यावतां मुख्यस्तनूभवः समभवत् । एवंविधविविधगुणसंपूर्णेन तेनानिवारितप्रसरेण निजनगर्यां परिभ्रमता कदाचित्कस्यापि महतो नगरश्रेष्ठिनो हर्म्यरम्यगवाक्षविवरविनिर्गतं धाराधरपटलप्रकटीभूतपूर्णिमाकुमुदबान्धवमिव बालिकाया वदनकमलं कुवलयदलदीर्घलोचनयुगलं ददृशे । सापि तमालोक्य साक्षादिव मनोभवमुद्दामानुरागसागरान्तर्निमग्नमानसा तदात्वमेव समजायत । तद्दर्शनेन तस्यापि चेतः पञ्चशरेण परदारावलोकनेन जनितकोपेनेव तितउरिव पञ्चभिः शरैः शतच्छिद्रं व्यधायि । ततस्तेन निर्दयविषमशरप्रहारप्रसूतवेदनाविवशेनेव दक्षिणकरेण वक्षःस्थलं पस्पृशे, वामेन नाभिपार्श्वे तर्जन्यङ्गुली चोर्ध्वीकृता, तया च तन्निरीक्षणपरवशया वामेतरपाणिना कृपाणप्रतिकृतिः प्रकटिता । ततः कुमारस्तच्चेष्टितमालोक्य स्वावासं प्रति प्रचलितो व्यचिन्तयदिति ।

'यस्या मुखेन लावण्यपुण्येन द्विजनायकः । न्यक्कृतो ऽङ्कच्छलात्तुन्दे चिक्षेप क्षुरिकां निजे ॥ १४२
यदास्येन्दूदयादुल्ललास लावण्यवारिधिः । यत्रामृतायितं वाचा दृष्टिभ्यां शफरीयितम् ॥ १४३
प्रवालायितमोष्ठाभ्यां मुक्तापङ्क्तीयितं द्विजैः । कूर्मायितं कुचाभ्यां च दोर्भ्यां वेत्रलतायितम् ॥ १४४
इयं शृङ्गाररसर्वस्वं राजधानी मनोभुवः । उद्दामयौवनग्रामग्रहरा लावण्यदीर्घिका ॥ १४५
अहो अस्या बालिकायाः सर्वरूपातिशायिरूपं, अहो अद्भुता कापि सौभाग्यभङ्गी, अहो विदग्धत्वम्, अहो निरुपमा लावण्यलक्ष्मीः' इति ध्यायन्नेव निजावासमासदत् । साथ क्रमेण नयनपथातीते ऽपि तस्मिन्नराधीश्वरनन्दने इभ्यतनया विषमबाणबाणप्रहारप्रसरजर्जरशरीरसर्वावयवा मुक्तदीर्घोष्णनिःश्वासधूमध्यामलीकृतशय्यागृहविचित्रचित्तभित्तिः शयनीये लुलोठ ।

इष्टं मन्त्रमिव स्वान्ते स्मरन्ती तं नृपात्मजम् । सा तस्थौ सुकुमाराङ्गी कुरङ्गीनयना चिरम् ॥ १४६
न शय्यायां न च ज्यायां न जने न वने रतिः । तस्या न चन्द्रे नो चन्द्रे वियोगिन्याः कदाप्यभूत् ॥ १४७
शीतांशुरपि घर्मांशुश्चन्दनं च हुताशनः । निशापि वासरस्तस्या वैपरीत्यं तदाभवत् ॥ १४८
यतः,
'योगिनां चन्दनाद्यैर्यैः शीतैः प्रीतिः प्रजायते । तनुर्ज्वलति तैरेव सततं विप्रयोगिणाम् ॥' १४९

§ ३३) स कुमारो यावदन्यदा तस्या हृदयहारिण्याः संगमोपायतोयेन दुस्सहविरहदहनोत्तप्तदेहनिर्वापणमभिलषन्नस्ति तावत्पर्यस्तकिरणदण्डश्चण्डकिरणः पश्चिमाचलचूलिकावलम्बी बभूव । तदा ऽतिप्रसृते संतमसे कुसुमशरशरप्रसरव्यथितो 'दुःखेन विना सौख्यं नास्ति' इत्यवगम्य कुमारः समुदतिष्ठत् । ततस्तोसलो निजं वसनं गाढं नियम्य कुवलयदलश्यामलां यमजिह्वाकरालां क्षुरिकां कटीतटे

12) P पलायिनोत्साह. 15) B has a marginal gloss (on नखरायुधः) thus: नखरा नखा एवायुधं स्यादस्य स नखरायुधः कुमारः पुनर्न नखरायुधः कोऽर्थः खरायुध तीक्ष्णायुधः । तेन प्रकृत्यर्थवाचकौ ।. 16) B adds करः after कठोरः. 20) P सागरांतर निर्मग्न. 21) P लोकनजनित. 26) P यदास्येहृदयादु°. 38) PB दहनतप्त.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बद्धा दक्षिणकरे वैरिवीरवारनिशुम्भनं कृपाणरत्नमंसावलम्बितं वसुनन्दकं च कृत्वा रचितनीलपट्टप्रावरणस्तत्सदनान्तिकमागत्य वियदुत्क्षिप्तकरणं दत्त्वा वातायनमाससाद । निर्मलप्रज्वलद्यष्टिप्रदीपप्रद्योतितावयवां पराङ्मुखीं शयनतले विनिविष्टां तामेणलोचनामालोकत । कुमारेण पृथिव्यां वसुनन्दकोपरि कृपाणं मुक्त्वा निभृतपदसंचारमुपगम्य तस्याः सुदृशो लोचने पाणिभ्यां पिहिते । ततस्तया सर्वाङ्गरोमाञ्चकञ्चुकमुद्वहन्त्या चिन्तितम् । यदद्य सर्वतो ममाङ्गं पुलकितं बालमृणालिनीदलकोमलं करकिशलयं तज्जाने सैष मत्स्वान्तसर्वस्वतस्करः ।' इति विमृश्य तयाभाणि 'अहो सौभाग्यनिधे, मां मुञ्च' । कुमारेण हसता तन्नयनद्वयी शिथिलीचक्रे । तया तस्य गृहागतस्य विनयवृत्त्याभ्युत्थानं विदधे । तया दत्ते प्रधाने [विष्टरे] कुमारः समुपाविशत् । कुमारेणोक्तं 'तव संगममिच्छामि' । तयोदितम् । 'देव युक्तमेतत्परं कुलाङ्गनानां केवलं शीलपालनमेव हितम् ।' इत्याकर्ण्य कुमारेण जल्पितं 'यद्येवं भवती शीलवती ततो व्रजामि' । इत्युक्त्वा खड्गरत्नं वसुनन्दकं च स्वीकृत्य ससंभ्रममुत्तस्थौ । तया तं वस्त्राञ्चले धृत्वा प्रोक्तम् । 'भद्र पारिपन्थिक इव मम हृदयं मुषित्वा कुत्र व्रजसि । यतस्त्वां बाहुलतापाशनियमितं करिष्ये ।' इत्याकर्ण्य कुमारः स्थितः । तयोक्तम् । राजपुत्र, यदत्र परमार्थस्तं तावदाकर्णय पश्चाद्यदुक्तं तत्कुर्याः ।

§ ३४) अस्त्येतस्यामेव कोशलायां श्रेष्ठी नन्दनाभिधः । तस्य पत्नी रत्नरेखाख्या । तत्कुक्षिसंभवा सुवर्णदेवाभिधाना पित्रोरतीववल्लभा कन्यकास्मि । ततः पितृभ्यामहं विष्णुदत्तपुत्रस्य हरिदत्तस्य पाणिपीडनाय प्रदत्ता । स च मामुपयम्य वाणिज्याय यानपात्रमारुह्य लङ्कापुरीमभिजग्मिवान् । तस्य प्रोषितस्याद्य द्वादशो वत्सरः सातिरेकः । विपन्नो जीवति वेति न ज्ञायते । एतं यौवनमहासागरमपारं काममहावर्तगर्तदुस्तरं विषयमत्स्यकच्छपोत्कटमतिगहनं निरपवादमुल्लङ्घयन्त्या ममेयन्ति दिनानि जातानि । दुर्जेयतया विषयाणां चञ्चलतया चेन्द्रियग्रामस्यैकदा मम मानसे इति विकल्पसंकल्पमाला बभूव 'अहो जरामृत्युरोगशोकक्लेशप्रचुरे संसारे प्रियसंगमादपरं न किंचिच्छर्मास्ति, तच्च न विद्यते । ततोऽजागलस्तन इवारण्यमालतीकुसुममिव बधिरकर्णजाप इव निरर्थकं मे जीवितम् । इति विचिन्त्य चिरं मरणकृताध्यवसाया 'सुदृष्टं जीवलोकमद्य करोमि' इति यावद्गवाक्षमारूढा तावत्तत्र भवितव्यतया भवान्मम लोचनगोचरं गतः । त्वां दृष्ट्वा रागपरवशा तत्कालमेव जातास्मि । त्वया च परामृष्टं हृदयम्, एकाङ्गुलिरूर्ध्वीकृता । मया तदवगतं यदेतेन राजपुत्रेण मम संज्ञा कृता । हृदयपरिस्पर्शनेनेति कथितम् । 'यत्त्वं मम हृदयस्याभीष्टतमा' । अङ्गुल्या ऊर्ध्वीकृतया चेति कथितं 'यदेकदा संगमं ददस्व' इति । ततो मया तव खड्गानुकारी निजकर इति प्रदर्शितः, 'यदा किल त्वं खड्गबलेनैव समागच्छसि तदा तव संगमो नान्यथा' इति । तदाप्रभृति राजपुत्र, तव संगमाशाबद्धमानसा 'को ऽपि मा ज्ञासीत्' इति वेपमाना कृतमरणनिश्चया यावदस्मि तावद्भवान् समायातवान् । ततः सांप्रतं विनष्टं विज्ञानम्, गलितो गुरुजनविनयः, परिमुषितं विवेकरत्नम्, विस्मृतो धर्मोपदेशो भवत्संगमेन । किंच यदि तावत्त्वया सह संगतिं करोमि ततो मम कुलमन्दिरे दुःशीलेत्येषा पराभवः स्वजनानां गुरुतरो ऽपवादश्चेति । यदि लोकापवादः सह्यते तदा तव ममापीप्सितं, अन्यथा मृत्युर्वरम्' इति जल्पन्ती सुदती निशाकरेणैव निशा गाढतरं कुमारेण समालिङ्गिता सफलीकृतयौवना च । प्रीत्या च दिवसे भाविस्वविरहविनोदचिह्नं निजनामाङ्कां मुद्रिकामेकां तस्यै स तदा ददौ । ततो ऽलङ्कृतदिग्विभागे संध्यारागे कुमारः सहसा तन्मन्दिरात्तेनैव प्रयोगेण तद्यथागतं गतः । एवं च तस्यानुदिनं प्रतिवसतस्तत्र तया सहाष्टमो मासो व्यतीयाय । तत्र च तथाविधकर्मसंयोगेन भवितव्यतया नियोगेन सा गर्भवती बभूव । तत्सखीजननिवेदितवृत्तान्ताया रत्नरेखाया मुखात् नन्दश्रेष्ठिना समवगत्य संजातकोपेन कोशलनरेश्वरस्य पुरो न्यवेदि । राज्ञादिष्टम् । 'गच्छ गृहे ऽन्वेषयामि लग्नः' । ततो राजादेशमवाप्य मन्त्रिणा सर्वत्र विलोकमानेन तोसलकुमारः प्राप्तः, विज्ञप्तं च राज्ञे । ततो गुरुतरकोपस्फुरदधरेण धराधरेणादिष्टम् । सचिव, नाहमन्यायिनं पुत्रमपि सेहे, तदेनं द्रुतमेव निगृहाण । सचिवो 'यदाज्ञापयति स्वामी' इति भणित्वा कुमारं केनापि व्याजेन श्मशानभूमिमानिनाय । तत्र कार्याकार्यदक्षिणेन मन्त्रिणोक्तम् । 'कुमार, तव दुर्वृत्तेन तवोपरि कुपितस्ते पिता, भवान् वध्य आज्ञप्तो ऽस्ति, स्वामिसुतत्वेन त्वमपि मम प्रभुः कथं त्वां व्यापादयामि । सदैवास्मि तव वंशसेवकः, ततस्त्वं तथा व्रज यथा तत्र प्रवृत्तिरपि न श्रूयते । त्वया क्वापि न कथ्यं यदस्मि तोसलः ।' इति भणित्वा

2) PB प्रज्वलयष्टि. 8) PB om. विष्टरे. 14) B कोसलायां. 26) B inter. किल & त्वं. 30) P मत्कुलमंदिरे. 31) B निशाकरेणेव. 37) P B गृहमन्वेषयामि. 40) P B कुपितः पिता. 41) P B आज्ञप्तोसि, P repeats (after यदस्मि) तव वंशसेवकः etc. to न कथ्यं यदस्मि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मन्त्रिणा कुमारो विसर्जितः। कुमारो ऽपि तदैव निर्गत्य प्रचुराणि पुराण्युल्लङ्घ्य क्रमेण पाटलीपुत्रमगच्छत्। तदा तत्र च राजा जयवर्मा राज्यं पालयति स्म। स कुमारस्तत्र तस्य सेवापरो ऽभवत्।

§ ३५) इतश्च तस्यां कोशलायां सा सुवर्णदेवा ज्ञातदुःशीलत्वेन बन्धुजनेन निन्द्यमाना जनेन च कुमारविरहोद्विग्नमानसा गर्भभवदुःखभरबाधिता व्यचिन्तयदिति। 'स कुत्र राजपुत्रो यो मां परित्यज्य ययौ' इति चिन्तयन्ती सा कस्याश्चित्सखीमुखात् 'तव दोषेण राजादेशतः सचिवेन कुमारो हतः' इति श्रुत्वा सगर्भत्वेनाकृततदनुमरणा निशीथे केनापि छद्मना गेहतो निर्गत्य भवितव्यतायोगेन पाटलीपुत्रपुरं प्रति प्रचलता केनचित्सार्थेन सह चचाल। सा सुदती मन्दं मन्दं गच्छन्ती गर्भवेदनार्ता चरणचङ्क्रमणाप्रवीणा पश्चात्सार्थात्परिभ्रष्टा तालहिन्तालतमालकदम्बजम्बूजम्बीरादिफलदलशतसंकुले महाकानने मूढदिग्विभागा अपरिज्ञातनिगमा तृष्णातरलितचेतोवृत्तिः क्षुधार्ता श्यामवदना पथश्रान्ता सिंहनिनादविद्रुता व्याघ्रदर्शनवेपमानहृदया दुरध्वपतिता विलापानकार्षीदिति। 'हा तात, अहमभीष्टतमापि त्वया परित्राणं न कृतम्। हा मातः, ममापि त्वया रक्षणं न कृतम्। हा प्रियतम, यस्य तव कृते मया हेलयापि शीलं कुलं यशस्त्रपा सखीजनश्च पटप्रान्तलग्नतृणवद् वेश्मप्रमार्जनोद्धतावस्करवत् सर्वमपि तत्यजे, स त्वमपि मामुपेक्षसे।' इति विलपन्ती मूर्च्छिता धरायां पपात। अत्रान्तरे कुमुदिनीविभुस्तां मृतामिवावगत्य दुःखार्तो विश्रस्तकरः प्रतीचीजलनिधेरन्तः परिममज्ज। ततो महागजेन्द्रयूथमलिने विन्ध्यगिरिशिखरमालानीले समन्ततः प्रसृते संतमससमूहे शीतलेन वायुना जातानुकम्पेनेव समाश्वासिता सा। ततस्तस्मिन्महाभीमे वने एकाकिनी अशरणा सुवर्णदेवा प्रसूता एकं दारकं द्वितीयां दारिकां च। ततश्च।

सुतजन्ममुदारण्ये वासार्त्या तन्मनः क्षणम्। जग्रसे ऽहर्मुखमिव भासा भूच्छाययापि च ॥ १५०

सा च प्रलपितुमारेभे।

पित्रा मात्रा च भर्त्रा च स्वजनेन च वर्जिता। वत्स त्वमेव शरणं त्वं गतिस्त्वं मतिर्मम ॥ १५१
पिता पाति च कौमारे यौवने रक्षति प्रियः। स्थविरत्वे तनूजस्तु निर्नाथा स्त्री कदापि न ॥ १५२
इतश्चाहर्पतिः प्राप पूर्वपर्वतमस्तकम्। तस्या दुष्टमहाकष्टतिरस्कारकृताविव ॥ १५३
उदितस्तेजसामीशः कोपाटोपादिवारुणः। वर्णलोपकृतो ध्वान्तसंघातस्य विघातने ॥ १५४

§ ३६) एवंविधे प्रत्यूषप्रस्तावे चिन्तितमनया। 'किमधुना मया कार्यं तावन्मरणं न वरम्, यतो बालयुगलं मयि मृतायां मृतमेव, तदस्य पालनमेव संप्रति श्रेयः'। इति ध्यात्वा गता कस्यापि ग्रामस्य परिसरम्। ततस्तोसलराजपुत्रनामाङ्कां मुद्रां बालस्य कण्ठे निक्षिप्य निजनामाङ्कितमुद्रां बालिकायाश्च निजोत्तरीयप्रान्तद्वयेन दारकं दारिकां च पृथग्ग्रन्थौ बबन्ध। तद्बालयुगलं तत्र मुक्त्वा स्वयं सुवर्णदेवा शरीरवैवर्ण्यनिराकरणाय विन्ध्याचलोपत्यकानिर्झरणमुपाजगाम। अत्रान्तरे नवप्रसूता व्याघ्री स्वशिशोर्भक्ष्यार्थं भ्रमन्ती नवशोणितगन्धहृतचित्ता चीवरोभयप्रान्तबद्धं बालयुगलं जग्राह। तस्या व्रजन्त्या वसनान्तबद्धा दारिका पथि पपात, न च तया गलितापि दारिकाज्ञायि। तदा च पाटलीपुत्रेशश्रीजयवर्मनृपस्यागतः सभार्यस्तत्र दूतः। स तां दारिकां दृष्ट्वा गृहीत्वा च निरपत्यायाः स्वभार्यायाः समर्पयामास। तौ च दम्पती क्रमेण तां पुत्रीमङ्गीकृत्य पाटलीपुत्रमायातौ। ताभ्यां तस्या बालिकाया वनदत्तेति नाम विदधे।

§ ३७) इतश्च व्याघ्री स्तोकं भूभागमुपेता कुतो ऽपि कार्यान्तरात्तत्रायातेन राज्ञः श्रीजयवर्मणो राजपुत्रशबरशीलेन व्याघ्र इतिकृत्वा गुरुतरशल्यप्रहारेण हता मृता च। तं च बालकं कोमलमृणालदेहं रक्तोत्पलसमक्रमयुगलं विकस्वरेन्दीवरनयनं पार्वणचन्द्राननं स ददर्श। ततस्तं शबरशीलः प्रमुदितचेता निजप्रियतमायै 'तव पुत्रः' इति वितीर्णवान्। तत्कान्तया 'प्रसादः' इति भणितम्। वर्धापनकमहोत्सवं विधाय द्वादशे दिवसे पित्रा तस्य पुत्रस्य व्याघ्रदत्त इति नामधेयं गुण्यं ददे। सर्वत्र च नगरान्तस्तदास्यप्रच्छन्नगर्भा पत्नी प्रसूतेति विदितमभवत्। शबरशीलस्तेन बालकेन साकं पाटलीपुत्रमवाप। तत्र च समानशीलराजपुत्रैः सार्धं क्रीडां कुर्वतस्तस्य महामोहमोहितचेतसो लोकेन मोहदत्त इति संज्ञा कृता। एवं मोहदत्तः सह कलाकलापेन वयसा गुणगणेन च वर्धितुमारेभे। इतश्च सुवर्णदेवा गात्रपावित्र्यं निर्माय समागता बालकयुग्ममप्रेक्षमाणा मूर्छिता। पुनरपि वायुना लब्धचैतन्या चिरं विललाप। ततः स्वयमेव सा स्वं संबोध्य ततः स्थानात् प्रचलिता। पुरतो व्याघ्रीपदानि दृष्ट्वा व्याघ्र्या बालकयुगलं

7) B प्रतिचलता. 10) B हा ताताहमभीष्टतमापि त्वया परित्यक्ता। हा. 11) P om. हा मातः etc. कृतम्।, B परित्राणं for रक्षणं. 12) C inter. शीलं & कुलं. 14) P B °वावगम्य.। 15) P B गिरिशिखरशिपरिमाला. 25) B तदस्य for तदस्य. 27) B दारकं च दारिकां, B सुवर्णदेवी. 30) P जयवर्मानृपस्या°. 32) P B okkb तया for ताभ्यां. 37) P om. पुत्रस्य. 40) P B सकल for सह, B सुवर्णदेवी. 42) P B om. सा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भक्षितमिति चिन्तयन्ती तदनुमार्गमनुसरन्ती कस्मिन्नपि गोष्ठे कस्याश्चिदाभीर्या वेश्मनि समागता। तया 'दुहिता' इति स्थापिता। तत्र कियन्ति दिनानि स्थित्वा ग्रामानुग्रामं परिभ्रमन्ती पाटलीपुत्रं साप्यायाता। तत्र कर्मसंयोगेन तस्मिन्नेव दूतगृहे सा प्रविष्टा। तत्र च दूतकान्तया तद्दुहिता तस्या एव प्रतिपालनार्थमर्पिता। सुवर्णदेवा तामात्मीयां सुतामजानन्ती केवलं तत्सुतामेव हृदि भावयन्ती तां वर्धयितुमारभत। सा सुता क्रमेणोदग्रयौवनप्राग्रहरा लावण्यातिशायिनी सौभाग्यभूमिका चातुर्यधुर्या जाता।

§ ३८) इतश्च जनमनःप्रमोदभरदायिनि मधुरमधुकरनिकरध्वनिताकुले वसन्तकाले मदनत्रयोदश्यां बाह्योद्याने कामदेवस्य यात्रां वीक्षितुं मातृसखीपरिवृता गता वनदत्ता। स्वैरं परिभ्रमन्ती च तत्रागतेन मोहदत्तेन विलोकिता, तया च सः। तयोः परस्परं विलोकनेन प्रीतिः समभूत्। तत्रान्योन्यदर्शननीरसंसिक्तस्नेहमहीरुहं मिथुनं महतीं वेलां यावत्तस्थौ, तावत्सुवर्णदेवया स्वदुहितरि गाढतरं मोहदत्तानुरागं विभाव्य जल्पितम्। 'वत्से, तवेहागताया गुर्वी वेला जाता, तव पितापि दुःखाकुलितमानसो भविष्यतीति तावत्प्रवर्तस्व गृहं व्रजामः। यदि तावत्तव कौतुकं ततो वत्से, मदनोत्सवे निवृत्ते निर्जने कानने समागत्य पुनर्निजेच्छया भगवन्तमनङ्गं विलोकयेः' इति जल्पन्ती तया समं वनान्निर्गता। चिन्तितं च मोहदत्तेन। 'अहो, एतस्या ममोपरिसमस्ति स्नेहः' इति सुवर्णदेवावचोऽवश्यं संकेतजनकं परिभावयन्मोहदत्तः काननान्निःससार। सा वनदत्ता काममहापिशाचग्रस्तेन देहेन निकेतनमायाता न पुनश्चेतसा। तत्रापि गुरुविरहज्वलनज्वालावलीकरालदेहा

कङ्केलिपल्लवाकीर्णशयनीयतलस्थिता। वितीर्णास्थानहुंकारा कामज्वरभरातुरा॥ १५५
मृणालवलया रम्भादलावरणसंवृता। चन्दनद्रवसंसर्गसर्वाङ्गलतिका तदा॥ १५६
निर्गच्छदुष्णनिःश्वासशुष्यमाणाधरावनी। परित्यक्तकलाभ्यासपुष्पताम्बूलभूषणा॥ १५७
विच्छायवदनाम्भोजा दिवा चन्द्रकलेव या। न पल्यङ्के न वा भूमितले प्राप्तसुखाभवत्॥ १५८
चतुर्भिः कलापकम्॥

§ ३९) वनदत्तान्यदा मदनोत्सवे व्यतीते तस्मिन्नेवोद्याने गन्तुकामा जननीसखीजनान्विता राजमार्गे तोसलराजपुत्रेण वीक्षिता। देशान्तरपरावर्तितरूपयौवनलावण्यवर्णस्तोसलस्तया सुवर्णदेवया न प्रत्यभिज्ञातः। तेन सापि दूरदेशान्तरासंभावनीयसमागमा नावगता। केवलं तस्य तोसलराजपुत्रस्य वनदत्ताया उपरि महती प्रीतिरुत्पन्ना। चिन्तितं च तेन। 'एतां चारुलोचनां द्रव्यदानेन विक्रमेण वापरेण वाप्युपायेन परिणेष्यामि। सुन्दरमभवद्यदेषा बाह्योद्यानभुवं प्राप्ता। ततोऽहमपि तदनुमार्गलग्नो यास्यामि' इति विचिन्तयन् गन्तुं प्रवृत्तः। सा च वनदत्ता करिणीव सुललितगमना क्रमेण वनान्तर्विचचार। इतश्च गुरुतरानुरागदत्तहृदयेन तोसलेन लोकापवादमनपेक्ष्य दूरतो व्रीडां विमुच्य जीविताशामपि परित्यज्य भयमवगणय्य चिन्तितम् 'अयमत्रावसर इति।' ततः कर्षितकरालकरवालो महामोहमूढमानसस्तोसलो बभाण। 'भद्रे, यदि जीवितेन ते कार्यं तदा मयैव समं रमस्वेति। अन्यथा कृपाणलतयानया भवतीं कथाशेषां करिष्ये।' तत्तादृशं वृत्तं वीक्ष्य हाहारवमुखरे सखीजने सुवर्णदेवया च पूत्कृते। 'भो भो जनाः, त्वरितं प्रधावत प्रधावत, अनेन मम पुत्री निरपराधैव कानने व्याधेन हरिणीव विनाश्यते।'

§ ४०) इतश्च सहसा मोहदत्तः कदलीगेहतः कर्षितनिस्त्रिंशो निःसृत्य प्रोवाच। 'रे रे पुरुषाधम अग्राह्यनामधेय निस्त्रप, स्त्रीषु प्रहरसि। अहमस्या रक्षकस्तन्मम संमुखो भव।' इति श्रुत्वा तोसलस्तदभिमुखं प्रत्यधावत। तोसलेन मोहदत्तस्य कृपाणप्रहारः प्रदत्तः। तेन च मोहदत्तेन करणकौशलेन तस्य प्रहारं वञ्चयित्वा प्रतिप्रहारेण तोसलराजपुत्रः कृतान्तदन्तक्रकचगोचरीकृतः। ततो मोहदत्तो वनदत्ताभिमुखं चलितः। तया स जीवितदातेति प्रियः प्रतिपन्नः। सुता जीवितेति हृष्टमानसा सुवर्णदेवा समभवत्। मोहदत्तेन भणितम्। 'भद्रे, विश्वस्ता भव, कम्पं मुञ्च, भयं मा कार्षीः।' ततस्तेन मोहितेन मोहदत्तेनालिङ्ग्य यावत्तया सह रंस्यते तावदकस्मादेव दीर्घमधुरः स्वरस्तस्य कर्णातिथित्वं भेजे।

'जनकं मारयित्वापि जनन्याः पुरतोऽपि च। अरे रिरंससे मूढ स्वसारमपि संप्रति॥' १५९

ततो मोहदत्तेन विलोकितोऽपि क्वापि कोऽपि न दृष्टः। एवं वारत्रयाकर्णनजातशङ्कः कोपकौतूहलाबद्धचित्तः खड्गरत्नव्यग्रपाणिर्मोहदत्तः सर्वतः काननान्तर्विलोकितुं प्रारेभे। तावद्भगवान् साक्षादिव धर्म

4) B सुवर्णदेवी, P B om. तां. 7) P B परिभूता. 8) P B om. तया च सः. 11) P निर्वृत्ते. 13) B [illegible]. 26) P om. च. 30) O °मुखरेण सखीजनेन. 41) P B om. विलोकितोऽपि, P °जाताशंकः.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एको ऽनगारचूडामणिस्तस्य दृग्गोचरमागतः । 'अमुना मुनिपतिना जल्पितम्' इति चिन्तयन्मोहदत्तः श्रमणक्रमणयुगलमभिनम्य नातिदूरे निविष्टः सुवर्णदेवा वनदत्ता सखीजनश्च । ततो मोहदत्तेन विज्ञप्तम् । 'भगवन्, यत्त्वं कथयसि मातुः पुरतः पितरं व्यापाद्य स्वसारमभिरमसे तत्कथं ममायं पिता, कथमियं माता, कथं चेयं स्वसा, इति ।' ततः स मुनिपतिः कोशलाया आरभ्य वृत्तं तोसलमृतिं यावत्तत्पुरः स्पष्टमाचष्टे । एकं तावदकृत्यं कृतं यत्त्वया पूर्वं जनकस्तोसलो व्यापादितः, इदं तावद्द्वितीयं यत्त्वं भगिनीमभिवाञ्छसि । ततः सर्वथा धिग् महामोहविलसितम् ।' एतन्निशम्य सुवर्णदेवा वनदत्ताप्यधोमुखी बभूव ।

§ ४१) मोहदत्तो ऽपि निर्विण्णकामभोगो महाशुचिसमं मानुषत्वं मन्यमानः प्रचुरतरवैराग्यमार्गमनुलग्नो जजल्पेदम् ।

'अनन्तदुःखवृक्षाणां मूलमज्ञानमेव च । अज्ञानमेव वृजिनं भयमज्ञानमेव च ॥' १६०

ततो मुनीश, मम कथय मया सर्वथैवाधन्येन किमाचरणीयम्, येन सकलमपि पापं मूलादेव विनश्यति ।' भगवता समाख्यातम् ।

'कलत्रपुत्रमित्रादि सर्वमुत्सृज्य सर्वथा । दीक्षां भज भवाम्भोधिमज्जिनीमङ्गिनीमिव ॥' १६१

मोहदत्तेनेति जल्पितं 'भगवन्, मां प्रव्रज्यासंगतं तर्हि तनु' । मुनिनादिष्टम् । 'यदहं चारणश्रमणो न गच्छप्रतिबद्धस्तेन तव व्रतं दातुमनीशः ।' तथा

दशाष्ट यस्य पञ्चाशद् योजनानि यथाक्रमम् । विस्तारे शिखरे मूले प्रोचुः सिद्धान्तवेदिनः ॥ १६२
श्रीनाभिनन्दनो यत्र पवित्रितजगत्त्रयः । अवस्थितिं स्वयं चक्रे स शैलेषु शिरोमणिः ॥ १६३
कर्माण्यपि विजृम्भन्ते यत्र तावद्वपुष्मताम् । श्रीनाभिसूनुर्नाभ्येति यावल्लोचनगोचरम् ॥ १६४
कर्मेभपुण्डरीकश्रीः पुण्डरीकमहामुनिः । यत्रावृतः शिवं प्राप पञ्चभिर्मुनिकोटिभिः ॥ १६५
यस्मिन्नमिविनम्याख्यौ विद्याधरपती तथा । मुनिकोटिद्वयीयुक्तौ परमं पदमीयतुः ॥ १६६
श्रीरामभरतौ वालिखिल्यानां दशकोटयः । प्रद्युम्नादिकुमाराणां सार्धास्तिस्रश्च कोटयः ॥ १६७
नारदः पाण्डवाः पञ्च परे ऽपि मुनिपुङ्गवाः । यत्रापुः क्षीणकर्माणः सर्वदुःखक्षयं पदम् ॥ युग्मम् ॥
यत्रैकस्यापि सिद्धिः स्यात् तत्तीर्थं जगदुत्तमम् । अस्य किं प्रोच्यते यत्र निर्वृता मुनिकोटयः ॥ १६९
यत्र भूमीरुहश्रेणीरमणीयसमुच्छलात् । जिनाङ्घ्रिस्पर्शरहितान् हसत्यन्यमहीधरान् ॥ १७०
स्फुरन्निर्झरझात्कारैर्य एवमिव जल्पति । जनाः किमन्यतीर्थेषु भ्रमन्ते हा विहाय माम् ॥ १७१
अतीवगुप्ता यत्रास्ति शङ्के वश्यार्थमोषधी । तद्वृणोति स्वयं सिद्धिः प्रकामं कामवर्जिता ॥ १७२

§ ४२) तत्र श्रीशत्रुञ्जये महातीर्थे मया गच्छता गगनतलेनावधिज्ञानतः परिज्ञातं त्वया निहतं जनकं, चिन्तितम् 'एकमकार्यं कृतमनेन यावद्द्वितीयं नाचरति तावत्संबोधयाम्येनम्' । 'अयं तावद्भव्यः परमनेन मोहमोहितचेतसा विहितमहितम् ।

लक्षयोजनमानेन कलितं काञ्चनाचलम् । निवेशयन्ति दण्डस्य पदे ये चैकहेलया ॥ १७३
स्वयंभूरमणाभिख्यं सागरं ये जिनेश्वराः । तरन्ति दुस्तरं बाहुदण्डाभ्यामपि लीलया ॥ १७४
एकेन भुजदण्डेन धरामपि सभूधराम् । आतपत्रमिव क्षिप्रं लीलयैव धरन्ति ये ॥ १७५
त्रिलोकीतिलकास्ते ऽपि कर्मादेशवशंवदाः । किमुच्यते वराकस्य भवतो मोहदत्त ही ॥ १७६

अतो मया संप्रति वियतः समुत्तीर्य त्वं प्रतिबोधितः ।' विज्ञप्तं मोहदत्तेन 'भगवन्, कथं पुनः प्रव्रज्या प्राप्या' इति । मुनिना भणितम् । 'व्रज त्वं कौशाम्ब्यां दक्षिणे पार्श्वे भूपतेः पुरन्दरदत्तस्योद्याने समवसृतं श्रीधर्मनन्दनं मुनिप्रधानं गणाधिपं द्रक्ष्यसि । तत्र स गणभृत्तमः स्वयमेव तव वृत्तान्तमवगत्य दीक्षां दास्यति ।' इति वदन् कुवलयदलश्यामलं गगनतलमुत्पतितः । भोः पुरन्दरदत्तमहाराज, सैष तद्वचनं श्रुत्वा गृहवासं परित्यज्य मामन्वेषयन्निहागत इति ।' एवं च तदाकर्ण्य मोहदत्तेन भणितम् । 'भगवन्, इदमित्थमेव किमपि नालीकं तावन्मां प्रव्रज्याभाजनं विधेहि ।'

श्रीधर्मनन्दनगुरुर्गुरुगौरवार्हो मोहव्यपोहविशदीकृतचित्तवृत्तौ ।
दीक्षां जिनेशगदितामथ मोहदत्ते दत्ते स्म सर्वसुखसिद्धिपदस्य बीजम् ॥ १७७

---

2) P B om. ततो. 3) P B om. कथयसि. 4) P B कोसलाया. 8) C °समानं for समं. 10) B om. च । अज्ञानमेव etc. ending with च. 23) B स्यात्तत्तीर्थे. 26) B °मौषधी. 27) B परिज्ञाय त्वया, P B निहितं. 29) P repeats चेतसा विहितं. 30) P om. लक्षयोजनमाने. 33) P adds लक्षयोजनमानेन कलितं कां before त्रिलोकीति°. 34) P मद्दा for मया. 37) B भो. 41) P B सिद्धपदस्य.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुनरपि श्रीधर्मनन्दनेन भणितम् । 'भो वासव मन्त्रिवासव, यस्त्वया पृष्टं यथैतस्य चतुर्गतिलक्षणस्य संसारस्य किं प्रथमं कारणम् । तत्रामी महामल्लाः पञ्च क्रोधमानमायालोभमोहाः प्रवृत्ता जीवं दौर्गत्यपथमुपनयन्ति ।'

इत्याचार्यश्रीपरमानन्दसूरिशिष्यश्रीरत्नप्रभसूरिविरचिते कुवलयमालाकथासंक्षेपे श्रीप्रद्युम्नसूरिशोधिते क्रोधमानादिकषायचतुष्टयतथामोहस्वरूपवर्णनो नाम प्रस्तावो द्वितीयः ॥ २ ॥

[अथ तृतीयः प्रस्तावः]

§१) ततः स नृपतिः प्रमुदितचेताः सदामन्दानन्दकन्दकन्दलनाम्बुदस्य श्रीधर्मनन्दनस्य मुखतः कषायादिविपाकफललक्षणदेशनावचनामृतं तृष्णातरलित इव निपीय सदसः समुत्थाय निजं धाम समाजगाम । इतश्च दिवसाधीश्वरे ऽस्तगिरिशिखरमुपागते सायन्तनविधिं विधिवद्विधाय वसुधाधिपतिरचिन्तयत् । 'अस्मिन् मदनमित्रे महोत्सवे ईदृशे प्रदोषे ते साधवः किं कुर्वन्ति, किं यथावादिनस्तथाविधायिनः, किं वान्यथा, विलोकयामि' इति विचिन्त्यालक्षितः सर्वत्र प्रसृते तमोभरे कटीतटनिबद्धक्षुरिकः कृपाणपाणिरेकाकी भूपतिः सौधान्निर्गत्य नगरान्तररथ्यासु मिथुनानां दूतीनामभिसारिकाणां च प्रभूतान्परस्परालापानाकर्णयन् कस्मिंश्चिच्चत्वरे सान्धकारे स्तम्भमिव वृषभेणोद्घृष्यमाणमूर्द्धदमं कमपि मुनिं प्रतिमास्थं कृशाङ्गं दवदग्धस्थाणुसदृशं मन्दराचलवन्निश्चलं वीक्ष्य दिवा स्तम्भो ऽत्र नाभूत् 'किं को ऽपि धर्मनन्दनसंबन्धी व्रती, अथवान्यः को ऽपि दुष्टः पुमान्, अनेन रूपेण तावत्परीक्षामस्य रचयामि' इति ध्यात्वाकृष्टरिष्टिर्हत हतेति वदन्नासन्नमागतः । तमक्षुब्धं मुनिं वीक्ष्य निश्चित्य स्तुतिं कुर्वन् प्रदक्षिणात्रयं पूर्वं दत्त्वा प्रणिपत्य पुरतो ऽगच्छद्विद्युदुत्क्षिप्तकरणेन । ततो ऽसौ दुर्लङ्घ्यं प्राकारमुल्लङ्घ्योद्यानासन्नसिन्दूरकुट्टिमतलमाजगाम । तत्र च तेन भूभुजा श्रीधर्मनन्दनाचार्यस्य केचित्साधवो मधुरस्वरेण स्वाध्यायं विरचयन्तः केचिद्धर्मशास्त्राणि पठन्तः केचित्पदस्थपिण्डस्थरूपस्थरूपातीतध्यानदत्तावधानाः केचिद्गुरुचरणशुश्रूषापरायणाः केचिद्विचाराचारपरा विलोकिताः । ततो नृपतिर्दध्याविति । 'अहो यथाभिधायी तथाविधायी' । 'भगवान् क पुनः, स स्वयं किं करोति ।' इति विमृशंस्तद्दिनदीक्षितानां तेषां पञ्चानामपि मुनीनां पुरो धर्ममुपदिशन्तं निशम्य किं कथयत्येषामग्रे ।' इति विचिन्त्य नरेश्वरस्तमालतरुमूले निषण्ण इत्यश्रौषीत् । 'भो भो देवानांप्रियाः, कथमपि जीवा इमे पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिष्वनन्तकालं भ्रान्त्वा द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियतामवाप्य तिर्यक्पञ्चेन्द्रियत्वं च, ततश्चातीवदुर्लभं मनुष्यजन्म लभन्ते । तत्राप्यार्यदेशप्रशस्यजातिसुकुलसर्वेन्द्रियपटुत्वनीरोगताजीवितव्यमनोवासनासद्गुरुसमायोगतद्वचःश्रवणानि दुष्प्रापाणि । इयत्यां सामग्र्यां संपन्नायामपि जिनप्रणीतबोधिरत्नमतीवदुर्लभम् । तच्च लब्ध्वा धर्मं प्रति संशयेन अन्यान्यधर्माभिलाषेण फलं प्रति संदेहेन कुतीर्थिकप्रशंसया तत्परिचयेन चतुर्भिः कषायैः पञ्चभिर्विषयैर्व्यामूढा वृथा निर्गमयन्ति सम्यक्त्वम् । एके च 'ज्ञानमेव प्रधानम्' इति वदन्तः क्रियाहीनाः पङ्गुवत् । अपरे च 'क्रियैव प्रशस्या' इति मन्यमाना अन्धवद्भ्रवद्वान्तार्विनश्यन्ति मोहमोहिताः ।' इति कथयति भगवति नृपतिर्ध्यातवान् । 'तावत्सर्वमपि सत्यमेतत् । किं पुनरिदं दुर्लभं राज्यं महिलाप्रभवं शर्म परिजनसुखं चानुपाल्य पश्चाद्धर्ममाचरिष्यामि, इति चिन्तयतस्तस्य महीभृतः श्रीधर्मनन्दनगुरुणा ज्ञानेन भावमुपलक्ष्य तेषामेव पञ्चानां पुरः प्रोचे । 'यदेतद्राज्यसौख्यं स्त्रियश्च लोके सर्वमेतदनित्यं तुच्छं चेति । पुनः सिद्धिभवं सुखमनन्तमक्षयमव्याबाधं चेति ।'

§२) अस्ति समस्तपुरवरं पाटलीपुत्रं पुरम् । तत्र धनो धनेन धनद इव वणिगुत्तमः । सो ऽन्यदा यानपात्रेण रत्नद्वीपं प्रति प्रचलितः । तस्य संचरतः समुद्रान्तः प्रचण्डेन वायुना समुल्लसताभ्रंलिहकल्लोलमालाभिः प्रेर्यमाणं यानपात्रं पुस्फोट । स धनस्तदा क्षुधाक्षामकुक्षिराहारमिव, हिमार्तो वैश्वानरमिव, तृषाक्रान्तस्तोयमिव फलकमेकं प्राप्य सप्तभिर्वासरैः कटुकफलसमाकुलपादपशतसंकुलं संसारमिवालब्धपारं विषमिव महाविषमं कुडङ्गद्वीपमाशिश्राय । तत्र तेन स्वैरं परिभ्रमता सहसापरः पुरुषो ददृशे । धनस्तं निरीक्ष्य हर्षितवदनो भव्यजीव इव जैनधर्मं स्वच्छमनाः पप्रच्छ । 'कुत्रत्यः केन हेतुनात्र

7) B adds on the margin गुरो befor मुखतः. 8) B puts No. 1 on फल and No. 2 on विपाक, B adds on the margin चेता after तरलित. 10) B मित्रमहोत्सवे. 14) P B om. कोऽपि after किं. 15) P रूपे तावत. 16) P B om. दत्त्वा. 19) O inter. पदस्थ and पिण्डस्थ. 21) P om. तेषां, B trans. तेषां after मुनीनां. 25) P B °तद्वचनश्रवणानि. 33) P °नंतक्षयम°. 37) B adds मरुपांथः शाखिनमिव after वैश्वानरमिव, B तृष्टा for तृषा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वीपं समायातः ।' तेन तदवगम्य भणितम् । 'सुवर्णद्वीपं प्रति प्रचलतो मम भीषणे जलधावगाधे पूर्वभवार्जितदुष्कृतेनेव वायुना प्रेरितं त्वरितमेवागण्यपण्यसंभृतं पोतमस्फुटत् । ततो ऽहं फलकमेकं प्राप्य कुडङ्गद्वीपमाश्रितः ।' ततो धनेनेति भणितं 'सममेवात्र परिभ्रमावः' । अथ तत्रैव ताभ्यां परिभ्रमद्भ्यां कदाचित्तृतीयं पुरुषं मिलितं विलोक्य पृष्टम् । 'भद्र, कुतः पुरादत्र द्वीपे समायातवान् ।' तेनेति जल्पितम् । मम व्रजतो लङ्कापुरीं वाहनं भग्नं फलकप्राप्त्यात्र संप्राप्तः ।' ताभ्यां निगदितम् । 'अतीव रम्यतरमभूत्, यदस्माकं त्रयाणामपि समदुःखानां महती मैत्री समजनि । तावदत्र कस्मिन्नपि समुन्नते पादपे भिन्नयानपात्रचिह्नमूर्ध्वीक्रियते ।' तथेति प्रतिपद्य तैर्वल्कलमेकं तरुशिखरे निबद्धम् । ततस्तृष्णाक्षुधाक्रान्ताः सर्वत्र परिभ्रमन्तस्ते कमपि तादृशं शाखिनं न पश्यन्ति । एवं किल भक्ष्यतरुफलोद्गमः । एवं तैः सर्वत्र द्वीपे स्वैरं विचरद्भिर्दुःखशतसमाकुलैः कथमपि वेश्माकाराणि त्रीणि कुडङ्गानि दृष्टानि । ते एकैकं कुडङ्गमाश्रित्य स्थिताः । तेषु च काकोदुम्बरिकामेकैकां निरीक्ष्य चातीवोच्छ्वसितहृदयैर्भणितम् । 'अहो, सांप्रतं प्रासव्यं प्राप्तम्, वयं निर्वृतचेतसः संजाता एतद्दर्शनमात्रेणापि ।' तैः कुडङ्गेषु प्रविश्य काकोदुम्बरिकाफलानि विलोकितानि, परमेकमपि फलं न ददृशे । ततस्त्रयो ऽप्यतीवदुर्मनसो बभूवुः । कैश्चिदपि दिवसैस्तेषां मनोरथशतैः काकोदुम्बरिकाः फलाकुलास्तत्र जज्ञिरे । ते काकाद्युपद्रवेभ्यो रक्षन्तस्तिष्ठन्ति । इतश्च केनापि सांयात्रिकेण करुणावता भिन्नवहनचिह्नमालोक्य कर्णधारद्वयं प्रैषि । ततस्ताभ्यां सर्वत्रान्वेषयद्भ्यां पुरुषत्रयं कुडङ्गस्थं काकोदुम्बरिकाफलबद्धजीविताशयं निरीक्ष्य भणितम् । आवां पोतवणिजा प्रेषितौ भवतामानयनाय । अत्र द्वीपे दुःखशतप्रचुरे किं तिष्ठथ ।' तत्रैकेन नरेणेत्युक्तम् । 'किमत्र द्वीपे कष्टम्, एतत् कुडङ्गं गृहतुल्यम्, एषा च काकोदुम्बरिका फलिता भूयो ऽपि फलिष्यति, अहं महता सुखेनात्र तिष्ठामि, कथमपि परतटं नागच्छामि' । इति भणित्वा तत्रैवैकः पुरुषः स्थितः । ततस्ताभ्यां निर्यामकाभ्यां द्वितीयो भणितः । 'त्वमपि परतटमागच्छ ।' तदाकर्ण्य तेन भणितम् । 'अहं काकोदुम्बरिकापक्वफलमेकमुपभुज्य यः को ऽपि पश्चान्नाविकः समेष्यति तेन सहागमिष्यामि' । इति भणित्वा द्वितीयो ऽपि तत्र तस्थिवान् । ततस्ताभ्यां तृतीयो भणितः । 'भो भद्र, किमत्र करोषि सांप्रतं परतीरमागच्छ ।' 'भवतां स्वागतम्' इति भणित्वा तृतीयः पुमान् ताभ्यां समं गत्वासमप्रीत्या तरण्यामारुरोह । कियद्भिरपि दिनैर्वहनं तटं प्राप । तत्र पुत्रमित्रकलत्रधनधान्यादिभिर्वस्तुभिर्मिलितः सततमेव स सुखमनुभवन्नास्ते ।

§ ३) अथास्योपनयः श्रूयताम् ।

य एष जलधिर्घोरः संसारः स दुरुत्तरः । यः कुडङ्गो महाद्वीपः स मानुष्यभवः स्मृतः ॥ १
ये कुडङ्गा निवासास्ते ये तत्र पुरुषास्त्रयः । त्रिःप्रकारा भवेयुस्ते जीवाः संसारवर्तिनः ॥ २
काकोदुम्बरिका यास्तु कान्तास्तास्तारलोचनाः । फलानि यानि तत्र स्युस्तान्यपत्यानि भूरिशः ॥ ३
वृथाकृताशापाशास्ते या एवात्यन्तकोविदाः । दारिद्र्यदुःखरोगौघशकुनेभ्यो निरन्तरम् ॥ ४
यत्परत्र हितं स्वस्य तदेवायाति विस्मृतिम् । वैधेयानां गृहानेककार्यव्यापृतचेतसाम् ॥ ५
यः पोतेशः स च गुरुर्निर्यामौ धर्मयोर्युगम् । या तरी तत्र दीक्षा सा यत्तीरं सा च निर्वृतिः ॥ ६
संसारदुःखसंतप्तान् जीवानुत्तारयन्ति ये । सर्वदैव महासत्त्वाः सर्वतत्त्वावलोकिनः ॥ ७
निन्द्यं मनुष्यजन्मेदं शोचनीयमनेकधा । मोक्षसौख्यं भजस्वेति ते वदन्ति यतीश्वराः ॥ ८
अभव्यजीवस्तत्रैको द्वीपे ऽत्र नृभवे वदेत् । यत्सौख्यं स च मे मोक्षस्तत्तेन मम किं पुनः ॥ ९
ब्रूते द्वितीयः संसारी दूरभव्यो मुनीश्वर । पुत्रमित्रकलत्रादिममत्वं त्यक्तुमक्षमः ॥ १०
भव्यस्तृतीयो वदति श्रुत्वा सद्धर्मदेशनाम् । मनुष्यलोके कस्तिष्ठेद्दरिद्रे दुःखबाधया ॥ ११
सप्ताङ्गराजि यद्राज्यं प्राज्यं रम्या च संततिः । भवे भवे भवत्येव जैनदीक्षा कदापि न ॥ १२
ततो ममालमेतेन जन्मना दुःखजन्मना । समुद्यमं करोम्येष महोदयपदश्रिये ॥ १३
भूयो ऽप्यूचे कथामेतामुक्त्वा श्रीधर्मनन्दनः । भो वत्सा एतदृष्टान्तमाकर्णयत संप्रति ॥ १४
§ ४) तथाहि जम्बूद्वीपे ऽत्र क्षेत्रे भरतनामनि । देशो ऽस्ति मगधाभिख्यो वसुधामुखमण्डनम् ॥ १५
अनेकदेशविख्यातं श्रियामेकः समाश्रयः । अस्ति राजगृहं तत्र नगरं नगराजितम् ॥ १६

1) B द्वीपे समायातस्तेन, B प्रचलितो. 2) P °भवार्जितविगतदुःकृते° B भवार्जिताभितदुःकृते°, P B omit प्रेरितं. 3) P B om. ततो. 8) B सर्वतः for सर्वत्र, O om. एवं किल…फलोद्गमः ।. 12) P ततोऽजीवत्रयोपि दुर्मनसो B ततोतीव त्रयोपि दुर्मनसो. 14) P B सांयात्रिकेन. 17) P B एतं or एनं for एतत्, P एका च. 21) P B inter. भणित्वा or द्वितीयोऽपि. 24) P om. स. 26) O °घोरसंसार: 27) P om. second ये, O त्रिप्रकारा. 32) P जीवानुत्तीर्यंति B जीवानुत्तरयंति. 33) After वदन्ति य P repeats सर्वदैव महासत्त्वाः etc. to ते वदन्ति. 34) P leaves some space after द्वीपेत्र नृभ and then continues with म मोक्षस्तत्तेन. 41) P °देशविख्याती श्रेयामेकः.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्मिन् परंतपो नाम्ना कर्मणा च महीपतिः । विख्यातकीर्तिर्विस्फूर्तिर्दिशासु चतसृष्वपि ॥ १७
शश्वद्दिवस्वतस्तुल्यो यः कैलासौकसः समः । वाचस्पतेः समानश्च प्रतापेन श्रिया धिया ॥ १८
वीतरागपदाम्भोजभृङ्गः सम्यक्त्वधारकः । प्रतापशोषिताशेषारातिभूमीरुहो ऽभवत् ॥ विशेषकम् ॥
वशीकृतनतानेकभूपमौलिविलासिभिः । मणीनां किरणैर्यस्य पादपीठं समर्चितम् ॥ २०
यस्तु कण्ठीरव इव प्रदरैर्नखरैः खरैः । विपक्षान् गजलक्षाणि क्षणुते स्म क्षमापतिः ॥ २१
तस्यानेकपुरन्ध्रीणां श्रेष्ठा ज्येष्ठा गुणश्रिया । समस्ति शशिकान्तास्या शशिकान्ताभिधा प्रिया ॥ २२
तत्र चास्ति महादक्षः शुद्धबुद्धिर्धनाभिधः । श्रेष्ठी गरिष्ठः सुगुणैः पुण्यसंभारभाजनम् ॥ २३
धारिणीति शुभारम्भा रम्भारूपसरूपरुक् । प्रभुतेव सदाचारस्यास्य लोकंपृणा प्रिया ॥ २४
धनपालो धनदेवो धनगोपस्तथा परः । धनरक्षितनामाथ चत्वारस्तनयास्तयोः ॥ २५
सर्वे ऽपि पाठिताः पुत्राः पित्रोपाध्यायसंनिधौ । अल्पैरपि दिनैर्विद्यास्वनवद्याश्च ते ऽभवन् ॥ २६
मनोभवनृपोद्यानं शृङ्गारद्रुमजीवनम् । ततस्तेन [: क्रमेण] जनानन्ददायि यौवनमाययुः ॥ २७
तत्रैव स धनः पुत्रान् महेभ्यानां समश्रियाम् । कन्यकाभिः सुरूपाभिः क्रमशः पर्यणाययत् ॥ २८
प्रथमस्योज्झिका जाया भक्षिकाख्या परस्य च । रक्षिकाथ तृतीयस्य चतुर्थस्य तु रोहिणी ॥ २९
सुखं विषयजं ताभिः सेवमानाः सुता गतम् । भूयिष्ठमपि ते कालं देवा इव न जानते ॥ ३०
स कदाचिद्धनः श्रेष्ठी जजागार निशाञ्चले । धर्मानुध्यानमाधाय गृहचिन्तां चकार च ॥ ३१
स्त्रिया गृहस्य निर्वाहो नरि यन्तरि सत्यपि । धुरेव शताङ्गस्य भृतस्यानेकवस्तुभिः ॥ ३२
पुत्रपौत्रवधूभृत्यैराकीर्णमपि मन्दिरम् । भार्याहीनं गृहस्थस्य शून्यमेव विभाव्यते ॥ ३३
भुक्ते प्रियतमे भुङ्क्ते सुप्ते च स्वापिति स्वयम् । तस्मात् पूर्वं च जागर्ति सा श्रीरेव न गेहिनी ॥ ३४
करोति सारां सर्वस्मिन् द्विपदे च चतुष्पदे । सर्वस्यौचित्यमाधत्ते सा लक्ष्मीर्गृहिणीमिषात् ॥ ३५
एतासां तु वधूटीनां मध्यान्मम निकेतने । गृहभारसमुद्धारकारिणी का भविष्यति ॥ ३६
ततः स प्रातरुत्थाय प्रातःकृत्यं विधाय च । सूपकारैः कलासारैर्धान्यपाकमकारयत् ॥ ३७
पितृवर्गं चतसृणां वधूटीनां निमन्त्र्य सः । अपरं पौरलोकं च भोजयामास सादरम् ॥ ३८
भोजनान्ते ततः श्रेष्ठी बान्धवान् स न्यवेशयत् । सत्कारं च ताम्बूलस्रग्दुकूलविलेपनैः ॥ ३९
§ ५) समक्षमथ सर्वेषां वधूमाकार्य चोज्झिकाम् । पञ्च शालिकणास्तस्याः समार्पयदखण्डितान् ॥४०
गत्वैकान्ते तया चित्ते चिन्तितं मन्दमेधसा । अभूद्वृद्धत्वसंबन्धात् श्वशुरो विपरीतधीः ॥ ४१
महान्तमुत्सवं कृत्वा जनानाहूय सर्वतः । पञ्च शालिकणानेष पाणौ मम यदार्पयत् ॥ ४२
त्यजामि किं कणैरेतैर्यदा याचिष्यते ऽसकौ । तदान्यानर्पयिष्यामि ध्यात्वेत्युज्झांचकार तान् ॥ ४३
अथ वध्वै द्वितीयस्यै पञ्च शालिकणान् ददौ । धनः श्रेष्ठी गृहीत्वा सा विजने ऽचिन्तयच्चिरम् ॥ ४४
हेतुना श्वशुरः केन भ्रान्तो बुद्धियुतो ऽप्यसौ । यः कार्येण विना गेहे तनुते द्रविणव्ययम् ॥ ४५
प्रयच्छति कणान् पञ्च लोकस्य पुरतः करे । त्यजामि तान् कथं दत्ता ये तातेन मम स्वयम् ॥ ४६
सा स्नुषा निस्तुषानेतान् कृत्वा क्षिप्रमभक्षयत् । आकारयदथ श्रेष्ठी तृतीयां रक्षिकां वधूम् ॥ ४७
व्यश्राणयत्कणान् पञ्च तस्याः सा च व्यचिन्तयत् । मन्ये किंचिन्महत्कार्यं कणैरेतैर्भविष्यति ॥ ४८
सर्वानेतान् प्रयत्नेन रक्षामि महता यदा । याचिष्यते गुरुस्तूर्णमर्पयिष्ये तदा कणान् ॥ ४९
हृदये चिन्तयित्वेति स्वालङ्कारकरण्डके । शुद्धवस्त्रे नियन्त्र्येति क्षिप्त्वा रक्षिकया तया ॥ ५०
वीक्षामास त्रिसंध्यं सा देवतामिव तान् कणान् । आकारिता ततस्तेन चतुर्थी रोहिणी वधूः ॥ ५१
तेन प्रजल्पिता दत्त्वा पञ्च शालिकणान् करे । त्वत्तो वत्से यदा याचे देया एते तदा त्वया ॥ ५२
विजने रोहिणी गत्वाचिन्तयद्बुद्धिशालिनी । मत्या मे श्वशुरो वाचस्पतिप्रतिकृतिः कृती ॥ ५३
महाजनप्रधानो ऽसौ नानाशास्त्रविशारदः । वर्धयामि तदेतेन प्रदत्तं कणपञ्चकम् ॥ युग्मम् ॥ ५४
तथैवं हृद्यनुध्याय प्रेषितास्ते पितुर्गृहे । भ्रातृणामिति चादिष्टं निजा इव कणा अमी ॥ ५५
वर्षे वर्षे च वर्षासु वापं वापं स्वहालिकैः । तथा कथंचनाधेयं यान्ति वृद्धिं यथा पराम् ॥ युग्मम् ॥ ५६
ततस्तैर्बन्धुभिस्तस्या गिरा प्राप्ते घनागमे । उप्ताः शालिकणाः पञ्च ते वप्रे वारिहारिणि ॥ ५७
स्तम्बीभूय गता वृद्धिं शालयः कणशालिनः । प्रस्थस्तेषामभूदेकः प्रथमे वत्सरे ततः ॥ ५८

11) P B ततस्तेन. 18) B स्वप्ते for सुप्ते. 25) P B स्वसुरो 34) P क्षिप्ता. 36) P पञ्च शाखाकणान्. 41) P वप्रे वारिहारिणि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीये त्वाढको ऽनेके द्रोणा वर्षे तृतीयके । खारीशतानि तुर्ये तु पल्यलक्षाणि पञ्चमे ॥ ५९
अथान्यस्मिन् दिने श्रेष्ठी निमन्त्र्य स्वजनान् बहून् । महान्तमुत्सवं चक्रे पूर्वरीत्या निकेतने ॥ ६०
समाहूयोज्झिकां ज्येष्ठां वधूमर्थयति स्म सः । वत्से समर्पय मम तच्छालिकणपञ्चकम् ॥ ६१
तदाकर्ण्य गृहस्यान्तः सहसापि प्रविश्य सा । पञ्च शालीनथानीय तस्य हस्ते समार्पयत् ॥ ६२
तेनापि जल्पिता सर्वप्रत्यक्षं शपथैर्निजैः । त एव शालयो वत्से न वा सत्यं वदाधुना ॥ ६३
तयाथ जल्पितं तात प्रोज्झितास्ते मया कणाः । श्रुत्वेति लोकपुरतः श्रेष्ठी रुष्टः स जल्पति ॥ ६४
अयुक्तं कृतमेतेन यूयमेतद्भणिष्यथ । अन्यथा पापया त्यक्ताः शालयस्ते मदर्पिताः ॥ ६५
तस्मादस्याः करिष्यामि फलं तत्त्यागसंभवम् । छगणादिपरित्यागकारिणी भवतूज्झिका ॥ ६६
द्वितीयां तामथाहूय श्रेष्ठ्यूचे पुत्रि तान् कणान् । समर्पय ममेदानीं साब्रवीद्भक्षिता मया ॥ ६७
स श्रेष्ठिपुङ्गवो ऽवोचत् स्वजनानां पुरस्ततः । पचनादिषु कार्येषु भवताद्भक्षिका वधूः ॥ ६८
तृतीया श्वशुरेणोक्ता सा शालिकणरक्षणम् । निजं न्यवेदयत्तुष्टः श्रेष्ठिश्रेष्ठस्ततो ऽवदत् ॥ ६९
मदीयमन्दिरे लोकाः कोशे सर्वाधिकारिणी । वधूटी रक्षिकानाम्नी भवत्वेषा ममाज्ञया ॥ ७०
आकार्य जल्पितानेन चतुर्थी रोहिणी ततः । समानय कणान् पञ्च वत्से त्वमपि सांप्रतम् ॥ ७१
प्रजल्पितं तया तात शकटानि बहूनि मे । अर्प्यन्तां वृषभाः प्राज्याः शालिरानीयते यथा ॥ ७२
अभाणि श्रेष्ठिना तेन वत्से पञ्च कणाः कथम् । जज्ञिरे यानवाह्यास्ते स हेतुः कथ्यतां मम ॥ ७३
यत्कृतं मूलतो वध्वा कथितं तत्पुरस्तथा । मुदितस्तत्तदाकर्ण्य स श्रेष्ठी समजायत ॥ ७४
स्नुषायाः सो ऽर्पयामास शकटान् वृषभांस्तथा । अथानीतस्तया वध्वा शालिः सर्वः पितुर्गृहात् ॥ ७५
प्राहाथ स्वजनो धन्यो धनो यस्येदृशी वधूः । निन्यिरे कीदृशीं वृद्धिं पञ्च शालिकणा यया ॥ ७६
ऊचे तया ततस्तात गृह्यन्तां पञ्च ते कणाः । इति श्रुत्वा तदा श्रेष्ठी जनप्रत्यक्षमब्रवीत् ॥ ७७
सर्वस्वस्वामिनी गेहे वधूर्मम भवत्वसौ । अस्या एव समादेशः कर्तव्यः सर्वमानुषैः ॥ ७८
अस्या यः खण्डयत्याज्ञां स्थातव्यं तेन नो गृहे । सर्वैरपि जनैः शीर्षे तद्वचः शेखरीकृतम् ॥ ७९
उद्यदानन्दसंदोहमेदुरः स धनः क्रमात् । निश्चिन्तचित्तः सद्धर्मोलङ्कर्मीणस्ततो ऽभवत् ॥ ८०
एतदाख्यानकं शैक्षाः कथितं भवतां मया । सिद्धान्तोदितमेतस्य भावार्थं शृणुताधुना ॥ ८१
यथा राजगृहं लोके मानुषत्वमिदं तथा । यथा धनस्तथाचार्यो विचारचतुराननः ॥ ८२
यथा वध्वस्तथा ज्ञेया विनेयाश्च चतुर्विधाः । पञ्च शालिकणा ये सा ज्ञेया पञ्चमहाव्रती ॥ ८३
यथा स्वजनवर्गो ऽसौ तथा संघश्चतुर्विधः । दानं शालिकणानां यत्तन्महाव्रतरोपणम् ॥ ८४
उज्झिकेव शालिकणानुज्झेत्पञ्चमहाव्रतीम् । यः स्यादत्र परत्रापि स दुःखौघस्य भाजनम् ॥ ८५
निश्शङ्कमुपभुक्तास्ते यथा भक्षिकया तया । व्रतमाजीविकाहेतोर्न विधेयं तथा बुधैः ॥ ८६
ररक्ष रक्षिका यद्वत् तच्छालिकणपञ्चकम् । तद्वद्व्रतिजनै रक्ष्यं तन्महाव्रतपञ्चकम् ॥ ८७
महाव्रतानि संप्राप्य वृद्धिं नेयानि धीमता । रोहिण्या गुरुणा दत्ताः पञ्च शालिकणा यथा ॥ ८८

। इति व्रतदृष्टान्तः ।

§ ६) विनयः शासने मूलं विनीतः संयतो भवेत् । विनयाद्विप्रमुक्तस्य कुतो धर्मः कुतस्तपः ॥ ८९
विनीतः श्रियमाप्नोति विनीतस्तूज्ज्वलं यशः । कदापि दुर्विनीतेन नैव स्वार्थः प्रसाध्यते ॥ ९०

यतः,

गुणवानपि नाप्नोति नूनं स्तब्धः परां श्रियम् । किंचिन्नम्रः पिबन्नम्भः कुम्भः प्राप्नोति पूर्णताम् ॥ ९१
अपराधतमःस्तोमनिर्मूलनदिनेश्वरः । स्वर्गापवर्गसंसर्गकारणं विनयः सदा ॥ ९२
विनयः सर्वथा कार्यः कुलीनेन वपुष्मता । गुरूणां गुणवृद्धानां तथा बालतपस्विनाम् ॥ ९३
गुणेषु विनयः श्लाघ्यस्तेजस्विषु यथा रविः । येन कर्मग्रहाः सर्वे प्रच्छाद्यन्ते निजोदयात् ॥ ९४
विनयात्संपदः सर्वा मेघादिव जलर्द्धयः । केवलज्ञानलाभश्च विनीतस्यैव जायते ॥ ९५

तथा हि ।

जम्बूद्वीपाभिधे द्वीपे क्षेत्रे भरतनामनि । क्षमापुरी क्षमारम्या समस्ति स्वस्तिकारिणी ॥ ९६

1) B त्वाढकानेके. 5) B नो वा for न वा. 16) P तत्पुरस्तया. 18) P प्राहाथ स जनो. 27) P °कणानुज्झेव पंच°.
31) P B इति व्रतदृष्टांतः ॥ १४२७ ॥ छ ॥ छ ॥ (P has the symbol of *bhale* instead of छ ॥ छ ॥) नमः श्री सर्वज्ञाय ॥.
35) P किंचिन्निम्नः, P om. कुम्भः. 36) P निर्मूलनं दि°.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

यस्या उन्नत[रम्य]राजसदनश्रेण्याः पुरो मेनकाप्राणेशो ऽपि बभूव हीनमहिमा धन्यश्रियामग्रतः ।
निःस्वानन्दनकाननस्य सुषमा क्षीराशयानां पुरः पंपादीनि सरांसि हन्त नितरां मुञ्चन्त्यहंकारिताम् ॥९७
तत्र क्षमापतिरभूत् क्षमापतिकृतस्तुतिः । नभस्तले भानुरिव श्रीमान् हर्षाभिधः सुधीः ॥ ९८
गुणौघे विद्यमाने ऽपि लोभो यस्याधिको ऽभवत् । अभिरामं गुणग्रामं ग्रहीतुं गुणशालिनाम् ॥ ९९
समुद्रकन्दर्पघनाघनानां सारं समादाय विधिर्व्यधाद्यम् ।
न चेदिदं तत्कथमन्यथाभूदसौ गभीरः सुभगः प्रदाता ॥ १००
यश्चानूनगुणप्रसूनपटलप्रत्युल्लसत्सौरभ-
व्याप्ताशेषमहीतलः शुभकलः श्रेयः श्रियामाश्रयः ।
स्फूर्जत्कीर्तिलतावितानविलसत्कन्दः सदानन्दभूः
प्रोन्मीलत्सुकृतोन्मुखो न विमुखो याच्ञाकृतां कुत्रचित् ॥ १०१
माद्यच्छात्रवकोटिकोटिकरटिप्रस्फोटकण्ठीरव-
स्ताम्यच्छ्रीतिलतावलीकिशलनप्रोद्दामधाराधरः ।
यत्कीर्त्या च शुचीकृते त्रिभुवने ऽश्रान्तं स्फुरन्त्याभितः
सर्वज्ञो ऽपि वसन्न वेत्ति नियतं कैलासशैलं निजम् ॥ १०२
कल्पद्रुमाद्या ददतीप्सितं यत् सा शास्त्रवार्ता किल तेन दृश्या ।
प्रत्यक्षमेतं वसुधाधिनाथं तत्तन्मयं निर्मितवान् विधाता ॥ १०३
तत्र श्रेष्ठिपदभ्रष्टः श्रेष्ठी दौर्मुख्यदोषतः । विश्ववाक्य इति ख्यातो विद्यते कृषिजीवनः ॥ १०४
अन्यदा भक्तमादाय स्वयं कर्मकृतां कृते । गच्छन् शून्ये ददर्शैष रुदन्तं बालमेककम् ॥ १०५
प्रोद्यत्कृपाभरभ्राजिहृदयः शिशुमाशु तम् । लात्वा स्वपाणिनारोप्य कटीतटमभोजयम् ॥ १०६
त्यक्तः केनाप्ययं पाको वराकस्तद्विपत्स्यते । स्वीकृतेनैव तेनेति श्रेष्ठी क्षेत्रं ययौ निजम् ॥ १०७
स स्ववेश्म समागत्यापत्याभावार्दितस्ततः । दीनास्यायै कुटुम्बिन्यै तं मुदा डिम्भमार्पयत् ॥ १०८
लाल्यमानस्तया नित्यमात्मनात्मेव बालकः । कलाभिः कलितः प्राप कलाभृदिव यौवनम् ॥ १०९
दग्धं पितृगिरा लोकं स्ववाक्यैरमृतैरिव । निर्वापयन्नभूत्ख्यातः संख्यावान् सर्वतो ऽपि सः ॥ ११०
विनीत इति नाम्नाथ सर्वत्र प्रथितो ऽभवत् । श्रेष्ठित्वं नृपतिस्तुष्टो ऽदात्तस्मै तत्पितुः पदम् ॥ १११
जिनशासनमाहात्म्यसमुल्लासनवासनः । अभिरामगुणग्रामद्रुमारामो ऽवनीतले ॥ ११२
यो ऽभवन्नयनानन्ददायी यायी सदध्वनि । अवदातयशोजातसंपूरितदिगन्तरः ॥ ११३
श्रमणक्रमणाम्भोजसेवाहेवापरः सदा । अर्थसंप्रीणितात्यर्थावनीतलवनीपकः ॥ ११४
पैतृकं च पदं प्राप्य प्रसन्नमनसो नृपात् । स विनीतः श्रियां पात्रं भाग्यसौभाग्यभूरभूत् ॥ ११५
§ ७) अथ तत्रैव दुर्भिक्षं भीषणं समुपस्थितम् । यत्र धर्मक्रियालोपो भव्यानामपि संभवेत् ॥ ११६
कुतो ऽपि स्थानतो ऽभ्येत्य नित्यदुर्भिक्षदुःखिताः । वृद्धो वृद्धा युवा चैको ऽभवंस्तदनुजीविनः ॥११७
अथ वैरिदत्तकम्पा चम्पा नाम महापुरी । तत्रास्ति पृथिवीनाथो जितारिरिति संज्ञया ॥ ११८
प्रतापी कमलोल्लासी नृपस्तपनसंनिभः । न कर्कशकरश्चित्रं न गोमण्डलतापकृत् ॥ ११९
श्यामास्यो हि घनो वर्षन् तमोग्रस्तपनस्तपन् । यः प्रभुस्त्वर्थिनो ऽत्यर्थमर्थैः प्रीणन्न तादृशः ॥ १२०
श्रीदर्पः कृतहर्षश्रीर्जिघृक्षुस्तमधीश्वरम् । प्रचचाल विनीतेन सार्धं प्रेष्ययुतेन सः ॥ १२१
तदागमं परिज्ञाय चम्पेशः संमुखो ऽचलत् । ततः परस्परं युद्धं सैन्ययोरुभयोरभूत् ॥ १२२
अरुधत्सादिनं सादी निषादी च निषादिनम् । रथिको रथिकं पत्तिः पत्तिं च स्फूर्तिमूर्तिभृत् ॥ १२३
निशातशरधोरण्या भटैर्दर्पसमुद्भवैः । अकालवृष्टिर्विहिता कालरात्रिरिवापरा ॥ १२४
रणे निपेतुर्मातङ्गास्तीव्रं प्रदरजर्जराः । शतकोटिक्षताः साक्षात् पर्वता इव सर्वतः ॥ १२५
शितकुन्ताहताङ्गाग्रोच्छलच्छोणितदम्भतः । कौसुम्भवसनेवाभूदम्भोधिवसना युधि ॥ १२६
निजस्वामिप्रसादस्याभूम भूम्ना ऽनृणा वयम् । इति वीरकबन्धास्ते नृत्यन्तस्तत्र रेजिरे ॥ १२७
उल्ललल्लोहिताम्भोभिर्भीमा सङ्ग्रामभूमिका । कबन्धानि वहत्याशु काष्ठानीव तरङ्गिणी ॥ १२८

1) P उत्तरराज B उन्नतराज. 3) P क्षमापतिः कृत.° 4) B °को भवेत् ।. 5) P घनाघनीनां. 15) P B दृश्याः. 20) P °द्विपश्यति. 25) B °द्रुमारामेवनीतलः. 26) P यशोयातः. 28) P विनीतश्रियः पात्रं B विनीतः श्रियः पात्रं. 30) P वृद्धो वृद्धीयुवाचैको. 33) P प्रभुस्त्वर्थिने°. 39) P °हितांगाच्छोछलत् शोणित°.

दैवाच्चम्पेशसैन्यस्य सुभटैः करटैरिव । दिवान्धसैन्यवद्धर्षसैन्यं दैन्यमनीयत ॥ १२९
पताकिन्यपि निःशेषा तस्य हर्षमहीपतेः । ननाश काकनाशं सा जीवमादाय सत्वरम् ॥ १३०
नश्यद्भिः पदिकैस्त्यक्तो विनीतो ऽपि गते विभौ । परं प्रेष्यैर्न तैर्मुक्तश्चेतनः सुकृतैरिव ॥ १३१
पलायमानः प्रैक्षिष्ट स विनीतः सरस्वतीम् । तत्र स्नात्वा पयः पीत्वा तीरवृक्षमशिश्रियत् ॥ १३२
§ ८) अत्रान्तरे कान्दिशीकमेकमायुधपाणिना । केनचित्सादिना हन्यमानं मृगमवैक्षत ॥ १३३
कृपासंपूरितस्वान्तः स तयोरन्तरा स्थितः । यतः प्राणिपरित्राणं स्वप्राणैः के ऽपि कुर्वते ॥ १३४
तस्मिन् सरङ्गे सारङ्गे गते दूरं निरीक्ष्य सः । जगाद सादिनं रोषपोषिणं मृगरक्षणात् ॥ १३५
सर्वप्राणिशरण्यानामुन्नतानां महात्मनाम् । त्वादृशां न समीचीनं दीनजन्तुविनाशनम् ॥ १३६
मन्ये त्वं लक्षणैरेभिः को ऽप्यसि क्षत्रियोत्तमः । शस्त्रघातो गृहीतास्त्रे क्षत्रियाणां प्रशस्यते ॥ १३७
इत्यादिवाक्यैः पीयूषपेशलैस्तस्य तत्त्वतः । स भूपः पृथिवीचन्द्रः प्रबुद्धः कोपमत्यजत् ॥ १३८
धर्मोपदेशदातासौ ममाभूदिति तं समम् । उपकारचिकीः क्ष्मापः पुरे क्ष्मातिलके ऽनयत् ॥ १३९
तं विनीतं महीनाथः स्वपुरे सचिवं व्यधात् । सर्वाधिकारिणं यस्माद्गुणैः कस्को न रज्यते ॥ १४०
एतस्यानुपदं ते ऽथ त्रयो ऽपि प्राच्यकिंकराः । तामेव नगरीं प्राप्य सेवाहेवाकिनो ऽभवन् ॥ १४१
रक्षता सततं तेन न्यायेन नगरीजनम् । ऊर्जितोपार्जिता कीर्तिरात्मीयो ऽर्थस्तु साधितः ॥ १४२
तेनेत्युक्ताः कर्मकृतः स्नेहात्किमपि याचत । ते ऽवदन्निति निर्लोभा भाग्यैर्लभ्या हि किंकराः ॥ १४३
§ ९) अथ क्षमापुरी भग्ना क्षणादेव जितारिणा । चम्पापुरीमहीपेन सर्वसैन्यजुषा रुषा ॥ १४४
स्वपुरीस्वपुरीस्वामिभङ्गतो वित्तहानितः । विषवाक्यो विनीतात्मा प्रवव्राज विरागवान् ॥ १४५
तप्यमानस्तपस्तीव्रं सहमानः परीषहान् । आधीयानः स सिद्धान्तं तन्वन्नाराधनां गुरौ ॥ १४६
पापकर्मसु तन्द्रालुः श्रद्धालुर्धर्मकर्मसु । दयालुः सर्वभूतेषु स्पृहयालुः शिवाध्वनि ॥ १४७
सासहिश्चोपसर्गाणां शीलाङ्गानां च वावहिः । चाचलिः श्रमणाचारे सिद्धान्ताध्वनि पापतिः ॥ १४८
आजगाम समं स्वेन गुरुणा करुणानिधिः । तत्र क्ष्मातिलकपुरे विषवाक्यमुनिः क्रमात् ॥ १४९
चतुर्भिः कलापकम् ॥

अनुज्ञाप्य गुरून् सो ऽथ मासक्षपणपारणे । प्रविवेश परिभ्राम्यन् विनीतसचिवौकसि ॥ १५०
कथमेवंविधो भूत्वास्माकीनस्वामिनः पिता । उच्चनीचादिगेहेषु पर्यटत्येष दुर्बलः ॥ १५१
ततस्तमघसंघातघातिनं व्रतिनं मुदा । कर्ममर्मच्छिदं कर्मकृतः सर्वे ववन्दिरे ॥ १५२
तद्दत्तमन्नपानाद्यमकल्प्यमिति चेतसि । विचिन्त्य नाग्रहीत्साधुर्व्यावृत्योपाश्रयं गतः ॥ १५३
आगतस्य नृपावासाद्विनीतस्य च तस्य ते । प्रमोदमेदुराः कर्मकरास्तच्च न्यवेदयन् ॥ १५४
तथैव सुविनीतात्मा विनीतो मन्त्रिपुङ्गवः । तपःपात्रस्य शिक्षाय मुनेः पितुरुपाश्रयम् ॥ १५५
निरीक्ष्य विषवाक्यस्य मुनेरास्यसितद्युतिम् । विनीतसचिवाधीशश्चित्ताम्भोधिरवर्धत ॥ १५६
शुशोच च स्वं यदयं मम वेश्मागतो ऽपि हि । अगृहीतान्नपानीयो मुनिर्व्यावृत्य जग्मिवान् ॥ १५७
स विनीतस्ततः शुद्धश्रद्धासंभारसंभृतः । अवन्दत गुरून् पूर्वं तथा च जनकं निजम् ॥ १५८
ततो गुरुरभाषिष्ट स्पष्टवाग्मन्त्रिनायक । शृणु धर्मवचश्चारु क्षिप क्षिप्रमघव्रजम् ॥ १५९
मा मुहस्त्वं मुधा स्नेहे ऽमुष्मिन् संसारकारिणि । आदरं कुरु सद्धर्मे ध्रुवं संसारहारिणि ॥ १६०
धर्मः पितेव मातेव हितं यद्विदधात्ययम् । क्रियते तन्न केनापि शिशूनामिव देहिनाम् ॥ १६१
स च धर्मस्तितिक्षादिर्भिक्षूणां दशधा मतः । सम्यक्त्वमूलो गृहिणां ज्ञेयो द्वादशधा पुनः ॥ १६२
देवे ऽर्हति गुरौ साधौ धर्मे च जिनभाषिते । या स्थिरा वासना सम्यक् सम्यक्त्वमिदमाश्रय ॥ १६३
स्थूलाहिंसादीनि पञ्चाणुव्रतानि गुणत्रिकम् । शिक्षाव्रतचतुष्कं च स्वीकुरुष्व शिवश्रिये ॥ १६४
विधेहि विधिना मन्त्रिन् त्रिसंध्यं देवतार्चनम् । चिरं चारुयशः कुन्दधवलं प्राप्नुहि स्फुटम् ॥ १६५
दीनादीनां श्रियं देहि विधेहि विशदं मनः । न्यायाध्वनि भवाध्वन्यो भिन्द्धि क्रोधादिशात्रवम् ॥ १६६
जिनेन्द्रमुखसंभूतं सिद्धान्तं सादरं शृणु । सिद्धिसीमन्तिनीं शर्मदायिनीं तत्क्षणाद्वृणु ॥ १६७
सर्वसौख्यमयं स्थानं क्वापि मोक्षं विना न यत् । विद्यते देहिभिर्भाव्यं तत्तदर्थं समुत्सुकैः ॥ १६८

12) P सर्वाधिकारणे. 15) P तेवदन्नतिनिर्लोभा B तेवदन्नेति°. 25) P संयात. 26) B तद्दत्तमन्नपानीयमकल्पमिति. 33) P ध्रुवसंसार. 41) O समुत्सकैः.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ १०) तथा च । जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षानि नव तत्त्वानि । दानशीलतपोभावनामयश्चतुर्विधो धर्मः । आश्रवपञ्चकाद्विरतिः पञ्चेन्द्रियाणां निग्रहः क्रोधमानमायालोभलक्षणदुर्जेयकषायजयः मनोदण्डवचनदण्डकायदण्डत्रयविरमणं चेति सप्तदशधा संयमः । नरकगति–तिर्यग्गति–मनुष्यगति–देवगतिलक्षणाश्चतस्रो गतयः । मतिज्ञानं श्रुतज्ञानमवधिज्ञानं मनःपर्ययज्ञानं केवलज्ञानमिति पञ्च [ज्ञानानि] । अनित्यता १ अशरण २ भव ३ एकत्व ४ अन्यता ५ अशौच ६ आस्रव ७ संवर ८ निर्जरा ९ धर्मस्वाख्यातता १० लोक ११ बोधि १२ प्रमुखा भावना द्वादश । नमस्कारसहित १ पौरुषी २ पुरिमार्धं ३ एकासनक ४ एकस्थानक ५ आचामाम्ल ६ उपवास ७ चरिम ८ अभिग्रह ९ विकृति १० प्रभृतिदशविधं प्रत्याख्यानम् । अथवा–'अनागतमतिक्रान्तं, कोटीसहितं नियन्त्रितं चैव । साकारमनाकारं परिमाणकृतं निरवशेषम् ॥ संकेतमद्धा' चैतदपि दशविधम् । क्षुधा १ पिपासा २ शीत ३ उष्ण ४ दंश ५ अचेल ६ अरति ७ स्त्री ८ चर्या ९ निषीधिका १० शय्या ११ आक्रोश १२ वध १३ याचना १४ अलाभ १५ रोग १६ तनुस्पर्श १७ मल १८ सत्कारपुरस्कार १९ प्रज्ञा २० अज्ञान २१ सम्यक्त्व २२ [लक्षणाः] द्वाविंशति परीषहाः । स्पर्शन–रसन–घ्राण–चक्षुः–श्रोत्राणीन्द्रियपञ्चकम् । औत्पत्तिकी १ वैनयिकी २ कार्मजा ३ पारिणामिकी ४ चेति चतस्रो बुद्धयः । आर्तध्यानं रौद्रध्यानं धर्मध्यानं शुक्लध्यानं चेति चतुर्विधं ध्यानम् । पदस्थं पिण्डस्थं रूपस्थं रूपातीतमेतदपि चतुर्धा । ज्ञानं दर्शनं चारित्रं चेति रत्नत्रयम् । कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शुक्ललेश्या ६ चेति [लेश्या] षट्कम् । सामायिकं १ चतुर्विंशतिस्तवो २ वन्दनकं ३ प्रतिक्रमणं ४ कायोत्सर्गः ५ प्रत्याख्यानं ६ [चेति] षड्विधमावश्यकम् । पृथ्वीकायो ऽप्कायस्तेजस्कायो वायुकायो वनस्पतिकायस्त्रसकायश्चेति षड् जीवनिकायाः । मनोयोगो वचनयोगः काययोगश्चेति योगत्रयी । ईर्यासमिति–भाषासमिति–एषणासमिति–आदाननिक्षेपसमिति–उत्सर्गसमिति [लक्षणाः] पञ्च समितयः । इन्द्रियपञ्चकं मनोबलं वचनबलं कायबलं चेति बलत्रयम् उच्छ्वासो निःश्वास आयुश्चेति दशविधाः प्राणाः । मद्यं विषयाः कषाया निद्रा विकथाश्चेति प्रमादपञ्चकम् । अनशनमूनोदरता वृत्तिसंक्षेपो रसत्यागस्तनुक्लेशः संलीनता चेति षड्विधं बाह्यं तपः । प्रायश्चित्तं वैयावृत्यं स्वाध्यायो विनयो व्युत्सर्गः शुभध्यानं चेत्याभ्यन्तरं षड्विधं तपः । आहारसंज्ञा १ भयसंज्ञा २ मैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहसंज्ञा ४ [रूपाः] चतस्रः संज्ञाः । ज्ञानावरणीयं १ दर्शनावरणीयं २ वेदनीयं ३ मोहनीयम् ४ आयुष्कं ५ नाम ६ गोत्रम् ७ अन्तरायं ८ चेत्यष्टधा कर्म । मनोगुप्तिर्वचनगुप्तिः कायगुप्तिरिति गुप्तित्रयम् । अपायापगमातिशयः ज्ञानातिशयः पूजातिशयो वचनातिशयश्चेति चत्वारो ऽतिशयाः ।

§ ११) तथा च श्रीजिनेश्वराणां चतुस्त्रिंशदतिशया यथा । देहो ऽद्भुतरूपगन्धो निरामयः स्वेदमलविवर्जित इति प्रथमः । उच्छ्वासनिःश्वासौ कमलपरिमलोपमाविति द्वितीयः । रुधिरामिषे तु गोक्षीरधाराधवले अनामगन्धिके चेति तृतीयः । आहारनीहारविधी अदृश्यौ चेति चतुर्थः । अदृश्ये इति मांसचक्षुषां न पुनरवध्यादिलोचनेन पुंसा । यदाहुः,

'पच्छन्ने आहारे अदिस्से मंसचक्खुणो ।' एष चतुर्थः ।

एते चत्वारो ऽपि जगतो ऽप्यतिशेरते तीर्थकरा एभिरित्यतिशयाः, सहोत्थाः सहजन्मानः । अथ कर्मक्षयजा अतिशयाः । योजनप्रमाणे ऽपि क्षेत्रे समवसरणभुवि नृणां देवानां तिरश्चां च कोटिकोटिसंख्यमवस्थानमिति प्रथमः कर्मक्षयजो ऽतिशयः । वाणी अर्धमागधी नरतिर्यक्सुरलोकभाषया संवदति तद्भावाभावेन परिणमतीत्येवंशीला, योजनमेकं गच्छति व्याप्नोत्येवंशीला योजनगामी चेति द्वितीयः । भानां प्रभाणां मण्डलं भामण्डलं मौलिपृष्ठे शिरःपश्चिमभागे तच्च विडम्बितदिनकरबिम्बलक्ष्मीमनोहरमिति तृतीयः । साग्रे पञ्चविंशतियोजनाधिके गव्यूतिः क्रोशद्वये गव्यूतीनां शतद्वये योजनशत इत्यर्थः, रोगो ज्वरादिर्न स्यादिति चतुर्थः । तथा वैरं परस्परविरोधो न स्यादिति पञ्चमः । तथा ईतिर्धान्योपद्रवकारी प्रचुरो मुषिकादिप्राणिगणो न स्यादिति षष्ठः । तथा मारिरौत्पातिकं सर्वगतं मरणं न स्यादिति सप्तमः । तथा अतिवृष्टिर्निरन्तरं वर्षणं न स्यादित्यष्टमः । तथा अवृष्टिः सर्वथा वृष्ट्यभावो न स्यादिति नवमः । दुर्भिक्षं भिक्षायाम-

4) P मनःपर्याय B मनःपर्यय. 5) P B put serial nos. for अनित्यता etc. 6) P B put serial nos. in some of these lists, and here and there they are separately written with terminations. O is not quite particular in putting these nos. 7) P वरिस for चरिम. 11) O om. अज्ञान. 17) P २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ वनस्पति. 24) P मोहनीयं च ३ आयुचतुष्कं. 25) P गुप्तिरिति श्रयम्. 27) O adds च after श्री जिनेश्वराणां. 33) B कोटिकोटिसंख्यानामवस्थानमिति. 35) P योजनगामिनो B योजनगामिनां. 37) P B कोशद्वयं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावो न स्यादिति दशमः। तथा स्वराष्ट्रात्परराष्ट्राच्च भयं न स्यादित्येकादशः। एवमेकादशातिशयाः कर्मणां धर्मज्ञानावरणीयादीनां चतुर्णां घातात् क्षयाज्जायन्ते इति। तथा देवकृता अतिशयाः। खे आकाशे धर्मप्रकाशकं चक्रं भवतीति देवकृतः प्रथमो ऽतिशयः। तथा खे चमरा इति द्वितीयः। तथा खे पादपीठेन सह मृगेन्द्रासनं सिंहासनमुज्ज्वलं निर्मलमाकाशस्फटिकमयत्वादिति तृतीयः। तथा खे छत्रत्रयमिति चतुर्थः। तथा खे रत्नमयो ध्वज इति पञ्चमः। तथा पादन्यासनिमित्तं सुवर्णकमलानि नव भवन्तीति षष्ठः। तथा समवसरणे रत्नसुवर्णरूप्यमयं प्राकारत्रयं मनोज्ञं भवतीति सप्तमः। तथा चत्वारि मुखान्यङ्गानि गात्राणि च यस्य स तथा तद्भावश्चतुर्मुखाङ्गता भवतीत्यष्टमः। तथा चैत्याभिधानो द्रुमो ऽशोकवृक्षः स्यादिति नवमः। तथा अधोमुखाः कण्टका भवन्तीति दशमः। द्रुमाणां नम्रता स्यादित्येकादशः। तथा उच्चैर्भुवनव्यापी दुन्दुभिध्वानः स्यादिति द्वादशः। तथा वातः सुखत्वादनुकूलो भवतीति त्रयोदशः। तथा पक्षिणः प्रदक्षिणगतयः स्युरिति चतुर्दशः। तथा गन्धोदकवृष्टिरिति पञ्चदशः। बहुवर्णानां पञ्चवर्णानां जानूत्सेधप्रमाणानां मणीचकानां वृष्टिः स्यादिति षोडशः। तथा कचानामुपलक्षणत्वाल्लोम्नां च कूर्चस्य नखानां पाणिपादजानामवस्थितत्वस्वभावत्वमिति सप्तदशः। तथा भुवनपत्यादिचतुर्विधदेवनिकायानां जघन्यतो ऽपि समीपे कोटिर्भवतीत्यष्टादशः। तथा ऋतूनां वसन्तादीनां सर्वदा पुष्पादिसामग्रीभिरिन्द्रियार्थानां स्पर्शनरसगन्धरूपशब्दानाममनोज्ञानामपकर्षेण मनोज्ञानां च प्रादुर्भावेनानुकूलत्वं भवतीत्येकोनविंशः। इति देवैः कृता एकोनविंशतिस्तीर्थकृतामतिशयाः। एते च यदन्यथापि दृश्यन्ते तन्मतान्तरमवगम्यमिति। ते च सहजैश्च चतुर्भिः कर्मक्षयजैरेकादशभिः सह मीलिताश्चतुस्त्रिंशद्भवन्तीति।

§ १२) अथ वचनातिशयाः। संस्कारवत्त्वं-संस्कृतलक्षणयुक्तत्वम् १, औदात्त्यम्-उच्चैर्वृत्तिता २, उपचारपरीतता-अग्राम्यत्वम् ३, मेघगम्भीरघोषत्वं-मेघस्येव गम्भीरशब्दत्वम् ४, प्रतिनादविधायिता-प्रतिरवोपेतत्वम् ५, दक्षिणत्वं सरलत्वम् ६, उपनीतरागत्वं-मालवकैशिक्यादिग्रामरागयुक्तता ७, एते च सप्त शब्दापेक्षयातिशयाः। अन्ये त्वर्थातिशयाः। तत्र महार्थता-बृहदभिधेयता ८, अव्याहतत्वं-पूर्वापरवाक्यार्थाविरोधः ९, शिष्टत्वम्-अभिमतसिद्धान्तोक्तार्थता वक्तुः शिष्टतासूचकत्वं वा १०, संशयानामसंभवः-असंदिग्धत्वम् ११, निराकृतान्योत्तरत्वं-परदूषणाविषयता १२, हृदयंगमता-हृदयग्राह्यत्वम् १३, मिथः साकाङ्क्षता-परस्परेण पदानां वाक्यानां वा सापेक्षता १४, प्रस्तावौचित्यं-देशकालाव्यतीतत्वम् १५, तत्त्वनिष्ठता-विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १६, अप्रकीर्णप्रसृतत्वं-सुसंबद्धस्य सतः प्रसरणम्, अथवा असंबद्धाधिकारित्वातिविस्तरणाभावः १७, अस्वश्लाघान्यनिन्दिता-आत्मोत्कर्षपरनिन्दाविप्रयुक्तत्वम् १८, आभिजात्यं-वक्तुः प्रतिपाद्यस्य वा भूमिकानुसारिता १९, अतिस्निग्धमधुरत्वं-घृतगुडादिवत्सुखकारित्वम् २०, प्रशस्यता-उक्तगुणयोगात्प्राप्तश्लाघता २१, अमर्मवेधिता-परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २२, औदार्यम्-अभिधेयार्थस्यातुच्छत्वम् २३, धर्मार्थप्रतिबद्धता-धर्मार्थाभ्यामुपेतत्वम् २४, कारकाद्यविपर्यासः-कारककालवचनलिङ्गादिव्यत्ययवचनदोषापेतता २५, विभ्रमादिवियुक्तता-विभ्रमो वक्तृमनसो भ्रान्तता स आदिर्येषां विक्षेपादीनां स विभ्रमादिर्मनोदोषस्तेन वियुक्तत्वम् २६, चित्रकृत्त्वम्-उत्पादिताविच्छिन्नकुतूहलत्वम् २७, अद्भुतत्वं-प्रतीतत्वम् २८, तथानतिविलम्बिता-प्रतीता २९, अनेकजातिवैचित्र्यं-जातयो वर्णनीयवस्तुस्वरूपवर्णनानि तत्संश्रयाद्विचित्रत्वम् ३०, आरोपितविशेषता-वचनान्तरापेक्षयाहितविशेषणत्वम् ३१, सत्त्वप्रधानता-साहसोपेतता ३२, वर्णपदवाक्यविविक्तता-वर्णादीनां विच्छिन्नत्वम् ३३, अव्युच्छित्तिः-विवक्षितार्थसम्यक्सिद्धिं यावदव्यवच्छिन्नवचनप्रमेयता ३४, अखेदित्वम्-अनायाससंभवः ३५, इत्येवमर्हतां पञ्चत्रिंशद्वाचां गुणातिशया भवन्तीति।

§ १३) दानगतो ऽन्तराय इत्येको दोषः, लाभगतो ऽन्तराय इति द्वितीयः, वीर्यगतो ऽन्तराय इति तृतीयः, भुज्यत [इति] भोगः स्रगादिस्तद्गतो ऽन्तराय इति चतुर्थः, उपभुज्यत [इति] उपभोगो ऽङ्गनादि तद्गतो ऽन्तराय इति पञ्चमः, हासः-हास्यमिति षष्ठः, रतिः-पदार्थानामुपरि प्रीतिरिति सप्तमः, अरतिः रतेरविषय इत्यष्टमः, भीतिः-भयमिति नवमः, जुगुप्सा-घृणेति दशमः, शोकः-चित्तवैधुर्यमित्येकादशः, कामः-मन्मथ इति द्वादशः, मिथ्यात्वं-दर्शनमोह इति त्रयोदशः, अज्ञानं-मौढ्यमिति

8) B तथा कंटका अधोमुखा भवंतीति दशमः तथा द्रुमा वृक्षा नमंतीति एकादशः खे दुंदुभिनाद उच्चैरतिशयेनेति द्वादशः। 9) P read त्रयोदश etc. without. 10) om. पञ्चवर्णानां. 12) B P °मवस्थितस्वभा, B सप्तदश is made सप्तदशमः with the addition of मः on the line. 14) B स्पर्शरसगंध, P °मपाकर्षेण. 25) P अभिजात्य. 28) P B °भ्यामनपेतत्वम्. 30) O °दोषत्वेन वियुक्तत्वं. The printed text puts hyphens which are not found in the Mss. In the Mss, the words stand separate or joined in Samdhi.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

चतुर्दशः, निद्रा–स्वाप इति पञ्चदशः, अविरतिः–अप्रत्याख्यानमिति षोडशः, रागः–सुखाभिज्ञस्य सुखानुस्मृतिपूर्वदुःखे तत्साधने ऽप्यभिमते विषये गर्धत इति सप्तदशः, द्वेषः–दुःखाभिज्ञस्य दुःखानुस्मृतिपूर्वदुःखे तत्साधने वा क्रोध इत्यष्टादशः, इत्यष्टादशदोषास्तेषामृषभादीनामर्हतां न भवन्तीति। अतीतानागतवर्तमानलक्षणं कालत्रयम्। धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकायः पुद्गलास्तिकायो जीवास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते पञ्चास्तिकायाः। एतत्सर्वमपि श्रीजैनशासनरहस्यं विवेकिना परिज्ञेयम्।

§ १४) विनीतो देशनामेनां श्रुत्वा तत्त्वानुगामिनीम्।
नमस्कृत्य गुरून् गेहं गुणग्रामगुरूनगात् ॥ १६९
एवं स नित्यमभ्येति हित्वा व्यापारमात्मनः। धर्मामृतं पिबत्येष तृषाक्रान्त इव स्वयम् ॥ १७०
सो ऽन्यदा चलितान् ज्ञात्वा प्रभून् विनयतो ऽवदत्। जनको ऽस्त्वत्र मे येन प्रीतिरुत्पद्यते ऽमुतः ॥ १७१
ततस्ते सूरयो ऽवोचन् ज्ञात्वा ज्ञानेन तत्त्वतः। नायं ते जनको मन्त्रिन् किंतु ते पोषकः पिता ॥ १७२
विनीतः प्राह निर्माय निर्मायः स्वं शिरोनतम्। कस्तर्हि ते ततः प्रोचुः सूरयस्तत्त्वकोविदाः ॥ १७३
पिता कर्मकरो वृद्धो माता कर्मकरी च ते। युवा च कर्मकृद्भ्रातेत्यवगच्छ कुटुम्बकम् ॥ १७४
अन्यथाभाषिणो नामी निश्चित्येति प्रणम्य तान्। स जगाम निजं धाम बाष्पाविलविलोचनः ॥ १७५
मषीमलिनवस्त्राया धूमध्यामलचक्षुषः। कौतुकात्पश्यति जने स किङ्कर्याः पदे ऽपतत् ॥ १७६
त्वमत्रस्थापि न ज्ञाता हतकेन मया हहा। मातः सिद्धिरिवेदानीं गुरुभिः कथितासि मे ॥ १७७
त्वयाहं पुत्रवन्नित्यमजानत्यापि लालितः। कृतघ्नेन मया कर्मकृत्वे हासि नियोजिता ॥ १७८
दुर्भिक्षे पोषितं हा धिक् पिक्येव त्वामशक्तया। पापयासि मया मार्गे त्यक्तो धिग्मां कुमातरम् ॥ १७९
लब्धपक्षः स्वभाग्येन वचोभिरमृतोपमैः। पिकवत्प्रीणयन् लोकं परां श्रियमशिश्रियः ॥ १८०
पितुर्भ्रातुश्च चलनौ नमस्यन् विनयाद्यम्। विनीतो वक्षसा ताभ्यामाश्लिष्टः प्राप संमदम् ॥ १८१
चक्रेतरमतिश्चक्रे सच्चक्रे प्रथमस्ततः। सर्वत्राधिकृतानेतान् विनीतः स्वनिकेतने ॥ १८२
यथोचितां वितन्वानो ऽन्येषामप्येष माननाम्। सुवचोभिः क्रियाभिश्च सर्वत्र प्रथितो ऽभवत् ॥ १८३
श्रीमज्जैनपदाम्भोजे भजतश्चञ्चरीकताम्। कदाचनास्य न स्वान्ते क्रूरत्वं लभते स्थितिम् ॥ १८४
प्रवेष्टुं मानसे यस्य शमसर्पारिराजिते। न क्षमाः प्राणभीत्येव कषायाः पन्नगा इव ॥ १८५
सर्वदा प्राज्यराज्यश्रीचिन्ताचान्तमना अपि। गार्हस्थ्ये वर्तमानो ऽपि सदाचारं ततान यः ॥ १८६
कदापि श्रमणस्थाने वन्दनार्थं स यातवान्। मुनिमेकमतिग्लानं वीक्ष्य श्रद्धोद्धुरो ऽब्रवीत् ॥ १८७
औषधं मद्गृहे सम्यगस्ति रोगनिवर्तकम्। प्रासुकं चेति साधुभ्यामानाययत सत्वरम् ॥ १८८
इत्युक्त्वा स ययौ गेहे साधुभ्यां सह धीसखः। तस्थतुस्तौ बहिः साधू स तु वेश्मान्तराविशत् ॥ १८९
अथ च।
श्रेष्ठिकन्यामुना कापि वृतास्ति गुणशालिनी। दत्तो मौहूर्तिकैः सैष दिवसस्तद्विवाहने ॥ १९०
तद्विहस्ततया मन्त्री विसस्मार तदौषधम्। किंचित्तत्र मुनी स्थित्वा जग्मतुर्निजमाश्रयम् ॥ १९१
पाणिग्रहणसामग्रीं समग्रामप्यकारयत्। लग्नक्षणस्य प्राप्तौ स सस्मार च तदौषधम् ॥ १९२
स विधायोत्तरं तत्र किंचिन्मित्रेण संगतः। पश्चात्तापकृदादायौषधं वसतिमागमत् ॥ १९३
रोगार्तो ऽपि मुनिर्ग्लानो विदधे नान्यदौषधम्। ततः कष्टमुपारूढो बभूवातीव निस्सहः ॥ १९४
तं तथाविधमालोक्य विनीतः साश्रुलोचनः। आत्मानमात्मना निन्दन् पतितस्तस्य पादयोः ॥ १९५
त्रिधा क्षमयतस्तस्य विनीतस्य च तं मुनिम्। समलङ्कृतवीवाहोचितमण्डनशालिनः ॥ १९६
ध्यायतो भावनां तस्य भविनां भवनाशिनीम्। केवलज्ञानमुत्पेदे घातिकर्मक्षयात् क्षणात् ॥ १९७
ज्ञानेन तेन विदितेन समुज्ज्वलेन संपश्यतस्त्रिजगतीजनतामनन्ताम्।
चारित्रचिह्नमथ तस्य मुनीश्वरस्य क्षिप्रं समर्पितवती ननु जैनदेवी ॥ १९८
नारीं नितम्बजघनस्तनभूरिभारां हित्वा भवोदधिनिमज्जनहेतुमेताम्।
तत्रैव लग्नसमये प्रवरे वराङ्गीं व्यूहे तपस्विषु वरः स चरित्रलक्ष्मीम् ॥ १९९

---

2) B सुखे for दुःखे. 5) P धर्मास्तिकायाः। एतत्सर्वमपि etc. 11) P निर्माय निर्मेयि स्वं O निर्माय (यः) निर्माय स्वं, P मतः for ततः. 15) O सिद्धिरेवेदानीं. 16) B has an additional verse (after नियोजिता) like this–इति साश्रं [साश्रु] वदतास्मिन् संजातप्रश्न [= श्न] वाथ सा [।] चिरात् ज्ञातासि वत्सलमित्युक्त्वा दत्तवक्षसा ॥. 34) B साश्रलोचनः. 36) B भवनाशनीं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एनां कथामवितथां विनयप्रधानां सम्यग् निधाय हृदि मन्त्रिमुनीश्वरस्य ।
यूयं यतध्वमधुना विनये निकामं यस्मादयं दिशति निर्वृतिशर्मलक्ष्मीम् ॥ २००

। इति विनये विनीतस्य कथा ।

§१५) अत्रान्तरे चण्डसोमप्रमुखैः पञ्चभिर्मुनिभिर्विज्ञप्तम् । 'यद्भगवानाज्ञापयति तत्सर्वमपि प्रपत्स्यामहे । यत् पुनर्दुश्चरित्रं तच्छल्यमिव हृदये प्रतिभाति ।' ततो भगवता श्रीधर्मनन्दनेन समादिष्टम् । 'एतत् कदापि चेतसि न चिन्तनीयं यत्किलास्माभिः पापकर्म समाचरितम् । स केवलं पापकर्मा यः पश्चात्तापपरो न भवेत् ।' इति श्रुत्वा भूपतिर्मनसैव श्रीधर्मनन्दनाचार्यं प्रणिपत्योद्यानान्निर्गत्य विद्युदुत्क्षिप्तकरणेन प्राकारमुल्लङ्घ्य वासवेश्म प्रविवेश, निर्विण्णः शयने सुष्वाप च । साधवो ऽपि स्वाध्यायदत्तावधानाः कृतावश्यकाः क्षणं निद्रामुपलभ्य प्राभातिककालग्रहणप्रवणा बभूवुः । अत्रावसरे ऽरुणप्रभापाटलिते गगनतले क्रमेण विरोचने पूर्वाचलचूलावलम्बिनि प्राभातिकतूर्यारवाडम्बरं बन्दिजनमुखवर्णितं प्रभातावसरं च समाकर्ण्य निद्राघूर्णितताम्रनयनयुगलः पृथ्वीपालः शयनीयादुत्तस्थौ । ततः स कृतावश्यककर्मा भूमिवासवः प्रभातकृत्यं विधाय च सचिववासवसमेतश्चतुरङ्गबलकलितः शक्र इव चतुर्दन्तं कुञ्जरमारुह्योद्यानं समागम्य भगवन्तं श्रीधर्मनन्दनविभुं साधूंश्च प्रणनाम । ततो भूपतिना जल्पितम् । 'भगवन्, सर्वथैव पुत्रमित्रकलत्रादिममत्वं त्यक्तुं न क्षमः, परं गृहस्थावस्थस्यैव मम किंचित्संसारसागरतरण्डकं देहि ।' भगवता निवेदितम् । 'यद्येवं तावदेतानि पञ्चाणुव्रतानि त्रीणि गुणव्रतानि चत्वारि शिक्षाव्रतानीति सम्यक्त्वमूलं द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपालय' इति । तेन नरेश्वरेण 'यदाज्ञापयति प्रभुः' इति वदता सम्यक्त्वमूलानि द्वादशव्रतान्यङ्गीकृतानि । ततः सचिववासवः समुवाच । 'भगवन्, किमपि भवतां पूर्ववृत्तान्तं वयं न जानीमः ।' भगवता जल्पितम् । 'अयमेव कथयिष्यति । अस्माकं सूत्रपौरुषीव्यतिक्रमो भवति । अद्य तावदस्माभिर्विहारः कार्य एव ।' एतदाकर्ण्य भूपतिर्वासवसचिवान्वितो भगवच्चरणारविन्दयुगलमभिनम्य निजधवलधाम समुपाजगाम । भगवान् सूत्रपौरुषीं निर्माय प्रधानेषु क्षेत्रेषु विहाराय प्रचचाल । ते ऽपि चण्डसोमप्रमुखाः स्तोकेनापि कालेनाधीतशास्त्रार्था द्विविधशिक्षाविचक्षणा जज्ञिरे । तेषां चैकदिवससमवसृतिप्रव्रजितानां महान् धर्मानुरागो मिथः समजनि । अन्यदा तेषां पञ्चानामपि परस्परं संलापः समभूत् । 'भो, दुर्लभो जिनप्रणीतो धर्मः कथं पुनरन्यभवे प्राप्यत इति, तावत्सर्वथा किमत्राचरणीयम्'। इति भणित्वा परस्परं तैः पञ्चभिरप्यग्रेतनभवोपरि प्रतिबोधसंकेतश्चक्रे । एवं च तेषां मुनीनां सिद्धान्ताभ्यासलालसानां कालो व्यतिक्रमति । किंतु चण्डसोमः स्वभावेन कोपनो मायादित्यो ऽपि मनाग् मायावी वर्तते । अपरे पुनः संयमिनः प्रतिभग्नदुर्जयकषायप्रसराः प्रव्रज्यामनुपालयन्तः सन्ति । कालेन च स लोभदेवो निजमायुः प्रपाल्य कृतसंलेखनादिविधिर्ज्ञानदर्शनचारित्रतपोविहिताराधनः पूर्वबद्धदेवायुर्विपद्य सद्यो ऽनवद्यलक्ष्मीः सौधर्मदेवलोके पद्मविमाने समयेनैकेन देवत्वमशिश्रियत् । स च पद्मप्रभनामा तत्र त्रिदशः स्वैरं चिक्रीड । एवं मानभटो ऽपि स्वायुषि क्षयमीयुषि संसारलतालवित्रीं सुखसंपदां धरित्रीं पञ्चपरमेष्ठिनमस्कृतिं स्मरंस्तेनैव क्रमेण तस्मिन्नेव विमाने ऽनेकयोजनविस्तृते पद्मसारनामेति देवः समुदपद्यत । एवं मायादित्यचण्डसोममोहदत्तास्त्रयो ऽपि कृतचतुर्विधाहारपरीहाराः पञ्चपरमेष्ठिनमस्कारपरायणा आराधनविधानाबद्धचेतसश्चतुःशरणशरणाः परिहृताष्टादशपापस्थाना यथासंयमविधिना प्राणितान्ते यथाक्रमेण पद्मवर–पद्मचन्द्र–पद्मकेसराभिधानास्तस्मिन्नेव विमाने सुमनसः समभवन् । तत एवं तेषां पद्मविमाने समुत्पन्नानां समविभवपरिवारबलप्रभावपौरुषायुषामन्योन्यस्नेहलालितमनसां मिथः कृतसंकेतानां कालो व्यतिक्रामति ।

§१६) अत्रान्तरे सुरसेनापतिताडितघण्टानिनादे समुच्छलिते सहसैव तैर्वृन्दारकैः 'किमिति घण्टानादः ।' इति परिजनो ऽप्रच्छि । ततः प्रतीहारो व्यजिज्ञपत् । 'देव, जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे मध्यमखण्डे श्रीमतो धर्मतीर्थकृतः समुत्पन्नविमलकेवलज्ञानस्य समवसृतौ त्रिदशवृन्दसहितेन सुरेश्वरेण गन्तव्यमस्ति ।' तदा तदाकर्ण्य तैः सुरैस्तत्रस्थैरेव भक्तिभरावनतोत्तमाङ्गैः श्रीधर्मनाथस्य भगवतः प्रणतिश्चक्रे ।

1) B सम्यग् विधाय. 3) P B om. इति. 10) P पाटलिगगनतले. 13) P B °ह्योद्यानमागम्य. 14) P कलत्रादिमित्र. 15) O तरण्डं P तरडवं. 20) P B °चरणयुगल°. 21) P °धीतशास्त्रा. 24) O प्रापयिष्यते इति.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

अथ ते सुराः पद्मसारप्रमुखास्त्रिदशाधिपेन सार्धं भावनाभावितान्तःकरणाश्चम्पापुर्यां श्रीधर्मजिनेश्वरस्य समवसरणमवापुः । पद्मसारेण सुमनसा सुमनःपतिरभाणि । 'यदि यूयं ममाज्ञां दद्त ततो ऽद्याहमेक एव गोस्वामिनः श्रीधर्मजिनेन्द्रस्य समवसृतिं रचयामि' इति । वज्रिणा 'तथा' इति प्रतिपेदे । तथा हि,

योजनोन्मानमेदिन्यां पद्मसारः शुभाशयः । प्रमार्जयन् रजो बाह्यं स्वस्यान्तस्तदपाहरत् ॥ २०१
ततः स एव गीर्वाणः सुगन्धोदकवृष्टिभिः । सिषिचे पुण्यबीजस्य वापायेव महीतलम् ॥ २०२
सुवर्णमणिमाणिक्यश्रेणिभिर्भक्तिभासुरः । हर्षतः परितः पद्मसारः पृथ्वीं बबन्ध सः ॥ २०३
जानुदघ्नैरधोवृन्तैः पञ्चवर्णैर्मणीचकैः । भाविधर्माङ्घ्रिसंस्पर्शां पृथिवीमार्चयन् स च ॥ २०४
द्विधा सुमनसा तेन काष्ठासु चतसृष्वपि । अकारि सुमनोहारि तोरणानां चतुष्टयम् ॥ २०५
तस्याप्रतिमशोभस्य वीक्षणार्थमिवागताः । साक्षादिव बभुर्दैव्यो विविधा शालभञ्जिकाः ॥ २०६
रेजे ध्वजव्रजो यत्र चञ्चलस्तोरणोपरि । आकारयन् भव्यलोकमिव धर्मजिनान्तिके ॥ २०७
अधस्तले तोरणानां भूमिपीठेषु तेषु सः । प्रत्येकं रचयांचक्रे मङ्गलान्यष्ट निर्जरः ॥ २०८
चले वैमानिकसुरः पद्मसारः प्रमोदभाक् । वप्रं रात्नं पञ्चवर्णमण्याढ्यकपिशीर्षकैः ॥ २०९
रेजे रत्नमयो वप्रः पताकाराजिराजितः । स्वं संक्षिप्य वपुर्भक्त्या रोहणाद्रिरिवागतः ॥ २१०
जातरूपमयं वप्रं द्वितीयं तद्बहिः सुरः । स्वज्योतिषेव विदधे भक्तिसंभारभाजनम् ॥ २११
कपिशीर्षततो रेजे तत्र रात्नी विनिर्मिता । राजीवबन्धुराजीव बहुद्वीपेभ्य आगता ॥ २१२
तृतीयः पद्मसारेण प्राकारस्तद्बहिः कृतः । राजतः श्रीजिनं नन्तुं वैताढ्याद्रिरिवागमत् ॥ २१३
तत्रोच्चैर्जात्यरजतकपिशीर्षावलिर्दधौ । स्वर्गापगाम्भसि स्वर्णमयनीरजविभ्रमम् ॥ २१४
रेजे वप्रत्रयी पृथ्व्यास्त्रिपट्टवलयाकृतिः । प्राकाराग्रावली नानाविधिविच्छित्तिसंगता ॥ २१५
तोरणास्तत्र भान्ति स्म नीलाश्मदलनिर्मिताः । प्रतिवप्रं चतुर्द्वारे चतुर्द्वारे शिवश्रियः ॥ २१६
शारदाभ्रमहाशुभ्रास्तोरणेषु ध्वजव्रजाः । रेजुः पुण्यश्रियः शस्ता हस्ता विस्तारिता इव ॥ २१७
दह्यमानागुरुक्षोदधूपधूमसमाकुलाः । धूपघट्यः प्रतिद्वारं राजन्ते तत्पुरस्सराः ॥ २१८
रेजुर्वाप्यः प्रतिद्वारं स्वर्णाम्बुजमनोहराः । क्रीडनार्थमिव स्फूर्जद्बहिधर्मव्रतश्रियाम् ॥ २१९
प्राग्द्वारे मणिवप्रस्य स्वर्णवर्णविराजितौ । प्रतीहारौ स्फुरद्धस्तारहारौ स निर्ममे ॥ २२०
यतिश्रावकयोर्धर्माविव मूर्तित्वमागतौ । याम्यद्वारे द्वारपती सिताङ्गौ स चकार च ॥ २२१
चित्तोद्धृतेन सर्वज्ञरागेणेवारुणद्युती । निर्मितावपरद्वारे द्वारपालौ सुपर्वणा ॥ २२२
उदग्द्वारे ऽत्र दोषघ्ननीलिकास्थासकाविवा । कृतौ कृष्णाङ्कौ तेन द्वारपौ दानवारिणा ॥ २२३
स निर्ममे ऽप्रतिच्छन्दं देवच्छन्दं जिनेशितुः । विश्रामाय सुरः स्वर्णवप्रान्तर्मणिराशिभिः ॥ २२४
अन्तर्माणिक्यवप्रस्य त्रिदशश्चैत्यपादपम् । चकार चत्वारिंशाग्रधनुष्पञ्चशतीमितम् ॥ २२५
पद्मसारः स तस्याधो मणिपीठोपरि व्यधात् । साङ्घ्रिपीठं रत्नमयं सिंहासनमनुत्तरम् ॥ २२६
नवहेमाम्बुजन्यस्तपदस्त्रिदशकोटियुक् । विभुः समवसरणं प्राच्यद्वारे विवेश सः ॥ २२७
ततः प्रदक्षिणीकृत्य चैत्यद्रुं प्राङ्मुखः प्रभुः । नमस्तीर्थायेति वदन्निविष्टः सिंहविष्टरे ॥ २२८
अपरास्वपि काष्ठासु त्रिदशास्तिसृषु व्यधात् । रूपत्रयं प्रभोस्तुल्यं स तस्यैव प्रभावतः ॥ २२९
चतुर्गतिगतान् जन्तूनुद्धर्तुं निखिलानपि । चतुष्ककुम्मुखस्थायि हर्तुं मोहमहाबलम् ॥ २३०
चतुष्टयं कषायाणां निराकर्तुं विरोधिनाम् । कर्तुं चतुर्विधं संघमघसंघातघातिनम् ॥ २३१
दानशीलतपोभावभेदैर्धर्मं चतुर्विधम् । व्यक्तं निवेदितुं तच्च ध्यानमार्गचतुष्टयम् ॥ २३२
प्रपञ्चितचतुर्गात्रः पवित्रितजगत्त्रयः । व्याख्याक्षणे प्रभुः श्रीमान् धर्मनाथस्तदाशुभत् ॥ २३३
चतुर्भिः कलापकम् ॥

जगतीत्रितयैश्वर्यसूचकं भुवनप्रभोः । छत्रत्रयं सुरश्चक्रे वक्रेतरमतिः स्वयम् ॥ २३४

§ १७) एतस्यां समवसृतौ विभावसुदिशि क्रमात् ।
प्रविश्य पूर्वद्वारेण दत्त्वा तिस्रः प्रदक्षिणाः ॥ २३५

---

9) B शालिभञ्जिकाः. 12) B कपिशीर्षकं. 16) B राजतश्रीजिनं. 21) B दह्यमानागरु. 24) B याम्यद्वारि. 25) B P चित्तोद्भूतेन, O °वपरद्वारि. 26) On दोषघ्न B has a marginal gloss like this : दृष्ट्यादिदोषनिवारकौ नीलिकाहस्तकाविव I. 28) P पंचाशतीमितं. 29) सांह्रिपीठं. 37) P चतुर्भिः कु०. 38) P जगती त्रितयैश्वर्यं.

निविष्टाः साधवः साध्व्यो जिनं नत्वा तदन्तरे । प्रमोदमेदुरास्तस्थुरूर्द्ध्वा वैमानिकाः स्त्रियः ॥ २३६
युग्मम् ॥
प्रविश्य याम्यद्वारेण नैर्ऋते विधिना क्रमात् । ज्योतिष्कभुवनाधीशव्यन्तराणां स्त्रियः स्थिताः ॥ २३७
आगत्य पश्चिमद्वारा वायव्यां भुवनेश्वराः । ज्योतिष्का व्यन्तराश्चैवमादधुर्विधिना स्थितिम् ॥ २३८
प्रविश्याथोत्तरद्वारा प्रणम्यानुत्तरं जिनम् । वैमानिकनरा नार्य ईशान्यां क्रमतः स्थिताः ॥ २३९
न भीस्तत्र न मात्सर्यं न बाधा न च दुष्कथा । नान्योन्यियन्त्रणा नाहंकृतिः स्वामिप्रभावतः ॥ २४०
तत्र द्वितीयवप्रान्तः कण्ठीरवगजादयः । वैरिणोऽपि मिथः प्रेमलालसाः स्थितिमादधुः ॥ २४१
तस्थुस्तृतीयवप्रान्तर्वाहनानि क्षमाभृताम् । सुराणामसुराणां च विमानानि यथाक्रमम् ॥ २४२
क्षेत्रे योजनमात्रेऽत्र प्राणिनः कोटिकोटिशः । संमान्ति यदनाबाधं प्रभावः प्राभवो हि सः ॥ २४३
धर्मनाथं जगन्नाथमथानम्य जिनेश्वरम् । स्तुतिं कर्तुं समारेभे पद्मसारः सुधाशनः ॥ २४४
अवद्यमद्य सद्योऽपि क्षीणं मे क्षीणकल्मष । त्वदाननविलोकेन वायुनेव घनाघनः ॥ २४५
देव त्वदङ्घ्रिकल्पद्रुसेवाहेवाकिनोऽत्र ये । भजन्ते ते न दारिद्र्यमुद्रामुद्रितमाश्रयम् ॥ २४६
नीरागं तव यच्चित्तं तन्मिथ्या नाथ कथ्यते । मुक्तिनारीपरीरम्भलोलुभं कथमन्यथा ॥ २४७
गुणैस्तवातिनीरन्ध्रैर्धर्मनाथ मनो मम । तथा बद्धं यथा गन्तुं नोत्सहत्यन्यदैवते ॥ २४८
श्रीधर्मनाथभगवन् भविता स क्षणः कदा । भवितास्वो यदा त्वं चाहं चैकत्राव्यये पदे ॥ २४९
तनोति न तथोत्कण्ठां मानसं मे शिवश्रिये । यथा तव पदाम्भोजवरिवस्याविधौ विभो ॥ २५०
त्वमनल्पमतिः स्वामिन् ध्रुवमल्पमतिस्त्वहम् । अतो नहि मया कर्तुं शक्यस्तव गुणस्तवः ॥ २५१
जिह्वामेकां श्रुती नेत्रे द्वे द्वे नाथ विधिर्व्यधात् । क्षमः कीर्तिं गुणान् रूपं वक्तुं श्रोतुं किमीक्षितुम् ॥२५२
एतमेवार्थयेऽत्यर्थमर्थमर्थीव तीर्थप । वीतराग परं वीतरागं मम मनः कुरु ॥ २५३
ऋभुप्रभुप्रतीक्ष्यं तं स्तुत्वा तत्त्वावलोकदृक् । निषसाद यथास्थानं पद्मसारः प्रमोदतः ॥ २५४
अथो सुधारसमुचं समाचारप्रचारिकाम् । विधातुं देशनां धर्मचक्रवर्ती प्रचक्रमे ॥ २५५
असार एव संसारः सर्वदा दुःखमन्दिरम् । धर्म एव प्रशस्यः स्यात् तत्र स्वर्गापवर्गदः ॥ २५६
संसारसागरेऽपारे भ्रमद्भिः प्राणिभिश्चिरात् । नृजन्म लभ्यते पुण्यैर्वसुधान्तर्निधानवत् ॥ २५७
नृभवं दुर्लभं प्राप्य यः प्राणी तनुते तनु । न हितं प्रान्तकाले हि शोचत्यात्मानमेव सः ॥ २५८
करालज्वलनज्वालावलीढे मन्दिरे यथा । स्थातुं न युज्यते पुंसस्तथा दुःखाकुले भवे ॥ २५९
मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य चिन्तारत्नसहोदरम् । विवेकिभिर्विधातव्यः प्रमादो न कदाचन ॥ २६०
गृह्णाति काकिणीं कोऽपि मूढः कोटिं यथोज्झति । तथा पुमान् विषयजं शर्म धर्मं जिनोदितम् ॥ २६१
सागरान्तरकल्लोलमालालोलाः श्रियो नृणाम् । कुशाग्रस्थस्तुषाराम्बुबिन्दुकम्प्रं हि जीवितम् ॥ २६२
रूपलक्ष्मीस्तडिद्दण्डसादृश्यं भजतेऽनिशम् । स्वाम्यं स्वप्नोपमं संध्यामेघलेखासखं सुखम् ॥ २६३
देशनाविरते श्रीमद्धर्मनाथजिनेश्वरे । कृताञ्जलिस्ततो वाचमुवाच गणभृत्तमः ॥ २६४

'भगवन्, एतस्यां सुरासुरनरतिर्यक्कोटिनिभृतायां पर्षदि कः प्रथमं महोदयपदं गामी' इति । ततो भगवता निवेदितम् । 'भो देवानुप्रिय, यस्तव सविधे वृषलोचनः स्मृतपूर्वभवः संविग्नमानसो निर्भयप्रचारो मद्दर्शनसंतुष्टः प्रमोदभरप्रविगलदश्रुलोचनयुगलस्ताण्डवितकर्णयामलः समागच्छन्नस्ति सर्वेषामपीहस्थजन्तूनां पूर्वमेवैष पापविनिर्मुक्तः सिद्धिपदं गमिष्यति' इति । एवं भगवतो भणितानन्तरमेव समकालं सकलनरेन्द्रवृन्दत्रिदशेन्द्रलोचनानि कौतुकरभसविकाशवन्ति मूषकोपरि निपतितानि । स चागत्य भक्तिभरनिर्भराङ्गो भगवतः श्रीधर्मनाथस्य पादपीठे लुलोठ । महीतलनमितोत्तमाङ्गः सर्वाङ्गरोमोद्गमसंगम आखुः स्वभाषया भषितुं प्रवृत्तः । ततो भणितं त्रिदशपतिना । 'भगवन्, मम मनसि महत्कौतुकमिदं यदेष मूषकः सर्वाधमस्तुच्छजातिः काननान्तरसंचारी सर्वेषामेवास्माकं मध्ये प्रथमं निर्वृतिश्रियमाश्रयिष्यति ।' ततः श्रीमद्भगवान् स्वयमवादीत् ।

§ १८) अस्ति विन्ध्यो नाम महीधरः । तस्योपत्यकायां विन्ध्यावासाभिधानो महान् संनिवेशः, स चातीव विषमः । तत्र महेन्द्रः पृथिवीपतिः । तस्य ताराभिधाना महादेवी । तत्कुक्षिसंभवः सुतस्ताराचन्द्रोऽष्टवर्षदेशीयः । अत्रावसरे छिद्रान्वेषिणा बद्धवैरातिशयेन कोशलेन भूमिपतिनावस्कन्दं

8) P च वैमानानि. 20) P प्रतीक्ष्यं तं. 31) P B om. पर्षदि. 37) B om. ततो. 39) P B निवृत्ति°. 41) Before महादेवी P adds लोचना and B adds सुलोचना (सु being added later).

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दत्त्वा सकलो ऽपि संनिवेशो ऽभाजि। महेन्द्रो युध्यमानस्तेन वैरिणा विनाशितः। ततो हतं सैन्यमनायकमिति सकलमपि बलं पलायितुं प्रवृत्तम्। तत्र तारामहादेवी तं पुत्रं ताराचन्द्रमङ्गुल्यां विलग्य जनेन सह नष्टा। सापि नश्यन्ती क्रमेण शिवमिव दुर्गान्वितं, कामिनीकुचतटमिव विहारालंकृतं, सरोवरमिव कमलालयं, गान्धिकापणमिव सचन्द्रं, स्वर्गमण्डलमिव [विबुधालङ्कृतम्], वाटिकास्थानमिव वृषास्पदं सदारम्भं सशिवं च लाटदेशलक्ष्मीललाटललामश्रीभृगुकच्छमियाय।

आस्यान्यास्योपमामेव लभन्ते यत्र सुभ्रुवाम्। राकाशशाङ्कपद्मानि तेषां दास्यं तु बिभ्रति ॥ २६५
प्राकारो ऽभ्रंलिहो यत्र संक्रान्तः परिखाम्बुनि। पातालनगरीशालमलं जेतुमना इव ॥ २६६
रत्नान्याददिरे ऽनेन मद्गेहादिति मत्सरात्। अम्बुधिः परिखाव्याजाद् यत्र शालमवेष्टत ॥ २६७
नमेति लक्षणे लोकैर्यत्र पेठे ऽक्षरद्वयम्। याचके तु समायाते स्वभ्यस्तमपि विस्मृतम् ॥ २६८

§ १९) तत्र च सा किंकर्तव्यमूढचित्ता 'कथं वा भवितव्यम्' इति चिन्तयन्ती यूथभ्रष्टा हरिणीव चत्वरमहेश्वरमण्डपं प्रविवेश। तदैव तया गोचरचर्यां निर्गतं साध्वीयुगलमदर्शि। तद्दृष्ट्वा 'महानुभावे प्रधाने क्रियाकलापनिरते एते साध्व्यौ' इति चिन्तयन्त्या तया समुत्थाय वन्दिते। ताभ्यां धर्मलाभं दत्त्वा 'कुतस्त्वम्' इति पृष्टा। तया 'विन्ध्यपुरादागता' इति विज्ञप्तम्। ततस्तस्या रूपलावण्यलक्षणानि निरीक्ष्य तच्च तादृशगद्गदस्वरभाषितं च श्रुत्वा साध्व्योरनुकम्पा महती जाता। यतः,

"महतामापदं वीक्ष्य मोदन्ते नीचचेतसः। महाशया विषीदन्ति परं प्रत्युत सर्वदा ॥ २६९ ॥"

ताभ्यां भणितम्। 'यदि भद्रे, तव पुराभ्यन्तरे को ऽप्युपलक्षितो नास्ति तत आवाभ्यां सह समागच्छ।' ततो 'महाननुग्रहः' इति तया वदन्त्या ताभ्यां सहागत्य महत्या भक्त्या प्रवर्तिनी प्रणता। तां दृष्ट्वा चिन्तितं प्रवर्तिन्या। 'अहो, एतस्या अतिकमनीयाकृतिः पुनरीदृश्यवस्था, तन्मन्ये कापीयं राजवंश्या राजकलत्रं वा, असावत्यन्तसुन्दरः सलक्षणशाली पार्श्वे सुतश्च।' ततः प्रवर्तिनी तां तारां सुतसहितां सवात्सल्यमूचे। 'वत्से, समागच्छ मया सहेत्यादि।' तया प्रवर्तिन्या सा शय्यातरगृहे स्थापिता। शय्यातरेण च सा दुहितेव प्रतिपन्ना। स राजसूनुर्नित्यं विविधान्नवस्त्रपानादिभिरुपचर्यते। अन्यदा कियद्भिर्दिनैर्गतैस्तारा विगतश्रमा सुखोपविष्टा प्रवर्तिन्या भणिता। 'वत्से, सांप्रतं त्वया किं कर्तव्यम्' इति। तारया जल्पितम्। 'भगवति, यो मम प्रियतमः स समराङ्गणे विपन्नः। विन्ध्यावासपुरं कोशलराजेन भग्नम्। समग्रो ऽपि परिजनः सर्वासु दिक्षु काकनाशं ननाश। सांप्रतं कोशलनरेश्वरो मम पत्युर्वैरी प्रबलबलकलितो मम पुत्रस्तु बलरहितः, अतो मम नास्ति कापि स्वराज्यलक्ष्मीप्रत्याशा। अहमत्र पुनः प्राप्तकालं तत्करिष्ये येन भूयो ऽपि नममेदृक्षा आपदः संपद्यन्ते। यद्भगवती मम समादेशं दास्यति तदेवावश्यं करिष्ये।' प्रवर्तिन्योक्तम्। 'वत्से, यद्येवं तव निश्चयस्ततस्ताराचन्द्रं सुतं प्रव्रज्यार्थमस्मदाचार्याणां समीपे समर्पय। त्वं पुनरस्माकमन्तिके दीक्षां गृहाण। निगृहाण च निजं दुष्कर्म। एवं कृते सर्वस्यापि जनस्य नमस्या भाविनी। संसारवासदुःखस्यापि पर्यन्तो भविष्यति' इति तदाकर्ण्य तयापि 'तथा' इति प्रतिपन्नम्। तया तारया निर्मायया ताराचन्द्रस्तनुजः श्रीअनन्तजिननाथतीर्थे विचरतो धर्मनन्दनाचार्यस्य व्रतायार्पितः। तेनापि यथाविधिना स प्रव्राजितः। ततः कियति काले व्यतीते यौवनमाश्रितो राजसूनुमुनिः कर्मवशतो ऽध्ययनालसो नित्यमेव कृपाणधनुर्गन्धर्वनृत्यतूर्यकृतचित्तप्रवृत्तिरेव समभवत्। ततः स स्वयमेवाचार्यैः पेशलवचोभिः सिद्धान्तानुयायिभिस्तथोपाध्यायेन साधुजनेनापरैः श्रावकैश्च शिक्षितो ऽपि शैक्षो विलक्षमना बभूव न पुनस्ततः प्रत्यावृत्तः। यतः,

स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा। सुशिक्षितो ऽपि कापेयं कपिस्त्यजति नो यतः ॥ २७०

§ २०) अत्रान्तरे धर्मनन्दनसूरयो बाह्यभूमिकामुपाजग्मुः। स च ताराचन्द्रो ऽन्तेवासी गुरुमार्गानुगामी वनस्थल्यां स्वैरं मूषकान् क्रीडां कुर्वतो विलोक्य व्यचिन्तयदिति।

'क्रीडन्ति स्वेच्छया कस्यापि हि कुर्वन्ति नो नतिम्।
न दुर्जनवचः शृण्वन्त्यहो धन्यतमा अमी ॥ २७१ ॥'

---

2) B विलगय्य. 4) B has a marginal gloss on सचन्द्रं etc. like this: सह चन्द्रेण कर्पूरेण वर्तते सचन्द्रम्। नगरपक्षे सह सुवर्णेन वर्तते। वृषो देवेन्द्रः पुण्यं वृषभश्च। सदारम्भाऽप्सरा यत्र पक्षे सदा कदलीसहितम्, प्रधाना आरम्भा यत्र। शिव ईश्वरः, शिवो वृक्षविशेषः शिवं कल्याणम्।; P B omit [विबुधालंकृतम्]; P B वाटिकास्थानकमिव; P सवृषाश्रयं B सदा वृषाश्रयं सदारंभं; B °ललामं श्री°. 13) P B विंध्यावासपुरा°. 17) B om. तां दृष्ट्वा. 19) P सुतसहितां शय्यातरगृहे स्थापिता, O om. प्रवर्तिनी etc. to तया and adds तारा ससुता between सा and शय्यतरगृहे; B however adds on the margin सवात्सल्य° etc. to सा. 28) P B inter. निजं दुःकर्म and निगृहाण च. 30) P तया तथेति. 33) O inter. सिद्धान्तानुयायिभिः & पेशलवचोभिः. 35) P नोपदेशेन.

अस्माकं पुनः परायत्तानां सदैव निबिडनिगडवर्जितो बन्धनविधिः । अपर्वतपादपं पतनम् । सजीवं मरणम् । एकस्तावदिति वदति 'यदिदं विधेहि' । अन्यो जल्पति 'यदिदं समाचरेः' । परः 'चरणौ क्षालय' । अन्यो 'वाराभूमिं प्रमार्जय' । इतरो 'विश्रामणां कुरु' । एको 'वन्दनकं ददस्व, प्रतिक्रमणं विरचय' । इत्यादिविविधवचनैरनारतं प्राजनैरिव प्रेर्यमाणस्य मम नास्ति निमेषमात्रमपि नारकस्येव सुखावकाशः । तदेते ऽस्मत्तः प्रधानाः' इति चिन्तयन् गुरुभिः सह वसतिमायातवान् । स च कियन्तमपि कालं श्रामण्यमनुपाल्य तद् दुश्चिन्तितशल्यं गुरूणां पुरतो ऽनालोच्याकालमृत्युना ज्योतिष्केषु किंचिदूनपल्यायुः सुपर्वा बभूव । तत्र भोगान् भुक्त्वा च्युत्वास्या एव नगर्याः पूर्वोत्तरदिग्विभागे स काननान्तरस्थल्यामुन्दरत्वं प्राप्य यौवनमितो ऽनेकमूषिकाभिः समं क्रीडन् कदाचिद्विवराद्बहिरुपेतः सुरभिगन्धोदककुसुमवृष्टिगन्धमाघ्राय तदनुमार्गानुसारेणात्र समवसृतौ समागत्य धर्मं श्रोतुं प्रावर्तत । अथामुष्य मद्वचः शृण्वतो जातिस्मृतिरुदपद्यत । 'यदहं पूर्वभवे सशल्यं व्रतमापाल्य ज्योतिष्केषु देवत्वमवाप्य कान्तारान्तरचारी मूषकः संजातः ।' एतत्स्मृत्वा 'अहो, कीदृशः कर्मपरिणामः, धिग्विलसितं संसारस्य यद्देवत्वमुपलभ्य तिर्यग्जातौ मूषकः समुत्पन्नः । अधुना तदासन्नं श्रीभगवतः पादमूलमुपागत्य प्रणिपत्य च पृच्छामि किमहं मूषकभवादनन्तरं प्राप्स्यामि' इति चिन्तयन् मम समीपमुपससर्प । भक्तिभरनिभृतस्वान्तः सुचेतसा स्तोतुमारेभे ।

'तवाज्ञालोपिनो ये ऽत्र लोकत्रयशिरोमणे । जायन्ते जन्तवो दूरं दुर्गतौ ते भ्रमन्ति हि ॥' २७२

§ २१) ततो जानता गणभृता लोकबोधार्थं प्रभुः पृष्टः । 'भगवन्, किमनेन निर्ममे, यदनुभावेनेदृश एष जातो ऽस्ति' इति । प्रभुः प्राह । 'प्राग्भवे ऽनेन व्रतिना सता गच्छवासनियन्त्रणानिर्विण्णचेतसा बहिर्भूमिं गतेन स्वैरंविहारिणो मूषकान् दृष्ट्वेति चिन्तितं यथा 'अरण्यमूषका धन्यतमाः' । इति दुश्चिन्तनशल्ययुतव्रतपालनानुभावेन देवत्वमूषकत्वयोग्यमायुर्निबद्धम् ।' अथ भूयो ऽपि पृष्टं भगवतः पार्श्वे गणधरेण । 'नाथ, किं सम्यग्दृष्टिजीवो ऽपि तिर्यगायुर्बध्नाति न वा' इति । स्वामिनोक्तम् । 'सम्यग्दृष्टिजीवस्तिर्यगायुरनुभवति, न पुनर्बध्नाति । यतः,

भवद्वैमानिको ऽवश्यं जन्तुः सम्यक्त्ववासितः । यदि नोद्वान्तसम्यक्त्वो बद्धायुर्न पुराथवा ॥ २७३

तावदेतेन देवत्वे सम्यक्त्वं वान्त्वायुस्तिर्यक्त्वे निबद्धम्' इति । ततस्त्रिदशेशेन जल्पितम् । 'भगवन्, अयं संप्रति शीघ्रं कथं सिद्धिगामी' इति । निवेदितं च भगवता । 'इतश्चैष स्ववनस्थल्यां व्रजन् चिन्तयिष्यति । 'अहो दुरन्तः संसारः, कुशाग्रबिन्दुवच्चञ्चलं जीवितव्यं, चपला विषयताक्ष्यीः, न वरेण्यं निदानादिशल्यम्, अधमा मूषकजातिः, दुष्प्रापः श्रीजिनप्रणीतः पन्थाः, ततो वरमत्र नमस्कारपरायणो म्रिये, यथा विरतिप्रधानं जन्म लभेयम्' । इति चिन्तयन् तस्मिन्नेव स्थाने भक्तं प्रत्याख्यायैतदेव मद्वचो ऽतीव दुष्टं भवस्वरूपं च निरूपयन्नमस्कारपरो भावी । तत्रैतस्य तिष्ठतो मूषिकास्तन्दुलकोद्रवादिकं तत्पुरो मोक्ष्यन्ति । ततस्तन्निरीक्ष्य मूषकश्चिन्तयिष्यति ।

'मेरोरधिकमाहारं पयोधेरधिकं पयः । अनारतं भवं भ्राम्यन्नेव जन्तुरुपाददे ॥ २७४
तत्तेन चेन्न तृप्तो ऽयं भक्षितैस्तदिमैः कणैः । का नाम प्राप्स्यते तृप्तिः स्थास्यती'ति विचिन्तयन् ॥ २७५

§ २२) ततस्तदभिमुखमीषदपि मूषको न विलोकयिष्यते, तच्च तादृशं वीक्ष्य ता मूषिकाश्चिन्तयिष्यन्ति । 'कुतो हेतोरयमस्मत्पतिः कुपितस्तदेनं प्रसादयामः' इति चिन्तयन्त्य एतत्समीपमुपेष्यन्ति । ततः काश्चिदुत्तमाङ्गं कण्डूयन्ति, अपरा अङ्गं परिस्पृशन्ति । एवमुपचर्यमाणस्ताभिरभित एष चिन्तयिता 'सदैव नरकनिगमा इमा रामाः संसारदुःखमूलम् ।' ततस्ताभिरेतन्मनो न कथमपि समाधितः स्वर्णाद्रिशृङ्गवत्सशब्दवातोत्कलिकाभिः क्षोभयिष्यते, तत्कृतं सर्वथैव वृथा भावि एतस्मिन् वज्रे नखविलेखनमिव । ततस्तृतीयदिन एष क्षुधाक्षामकुक्षिर्विपद्य मिथिलानगर्यां मिथिलस्य राज्ञश्चित्राभिधाया महादेव्या उदरसरसि राजहंसलीलामलंकरिष्यति । तेन च गर्भस्थेन जनन्याः सर्वसत्त्वानामुपरि मैत्रीवासनावासितमन्तःकरणं भविता । स च भूपस्तस्य जातस्य 'मित्रकुमारः' इति नाम दास्यति । तस्य कौतूहलिनः कुमारस्य ताम्रचूडकपिपशुसम्बरहरिणमूषकादिभिर्नियन्त्रितैरेव क्रीडां कुर्वतो ऽष्टवर्षाणि यास्यन्ति ।

अन्यदा मेघमालाभिः पिहितव्योममण्डलः । विप्रलम्भभृतां कालः प्रावृट्कालः समागमत् ॥ २७६
सरितः प्राप्य यत्रापः पातयन्ति तटद्रुमान् । पीडयन्ति न कं नीचाः श्रियं प्राप्य महीभृताम् ॥ २७७

---

3) B विश्रामणं कुरु. 14) O B स्वचेतसा. 15) O ते for हि. 21) C om. न पुनर्बध्नाति. 29) P B मूषकश्चिंतयति. 31) B तृप्ति. 32) P B °भिमुखमीषन्मूषको विलोकयिष्यते. 37) B °भिधानाया.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

यथा यथावनीपीठे मुञ्चन्ति स्म घना वनम् । ऐच्छत्तथा तथा कान्ता मन्मथव्यथिता वनम् ॥ २७८
द्योतन्ते दिवि खद्योतास्तमस्विन्यां निरन्तरम् । संजातयुवतिजातविरहाग्निकणा इव ॥ २७९
अतीवोत्कम्पते यत्र योगिनामपि मानसम् । किं पुनर्दूरसंस्थानामध्वगानां निगद्यते ॥ २८०
सर्वेषामपि पर्जन्यः समभूद्रतिवल्लभः । प्रोषितप्रेयसीवर्गमनर्गलशुचं विना ॥ २८१
शुक्लापाङ्गाः प्रनृत्यन्ति गर्जन्ति च घनाघनाः । अन्तरिक्षे चतुर्दिक्षु क्षणिका लक्ष्यते क्षणम् ॥ २८२
प्रपा मयि समायाते कथमद्यापि मण्डिताः । वर्षते ऽतिघनेनाशु सर्वास्ताश्चक्रिरे वृथा ॥ २८३

§ २३) ईदृशे समये स मित्रकुमारः पुरबाह्योद्देशं निर्गतस्तैः शाकुनश्वापदगणैर्बन्धनबद्धैः क्रीडयिष्यति। तेन च प्रदेशेनावधिज्ञानी मुनिर्गमिष्यति । स च व्यावृत्तस्तत्कुमारक्रीडां निरीक्ष्योपयोगं दास्यति । 'अहो, अस्य कीदृशी प्रकृतिस्तत् किमत्र कारणम्' इत्युपयुक्तावधिज्ञानेन करतलकलितकुवलयस्पष्टदृष्टान्तवत् पूर्वभवे तस्य ताराचन्द्रस्य साधुत्वं ज्योतिष्कदेवत्वं मूषकत्वं राजसुतत्वं च द्रक्ष्यते । 'अयं बोधयोग्यः' इति चिन्तयन् स भणिष्यति ।

'श्रमणत्वं सुपर्वत्वमाखुत्वं स्मृतिमेति ते । स्वजनातुष्टः किं जीवान् कदर्थयसि भो वद' ॥ २८४

तदाकर्ण्य कुमारश्चिन्तयिष्यति । अहो, किं पुनरेतेन साधुना भणितोऽस्मि । 'साधुर्ज्योतिष्कदेवो वृषलोचनः' इति । तावत् श्रुतपूर्वमिव मे । एवमूहापोहमात्रमुपागतस्य तस्य तथाविधकर्मणः प्रशान्त्या जातिस्मृतिरुत्पत्स्यते । ततः संसारं दुःखसागरं परिज्ञाय तस्यैव मुनेः पार्श्वे प्रव्रज्य नानाविधाभिग्रहसाग्रहः समाधिना विविधं तपो विधाय क्षपकश्रेण्यान्तकृत्केवली भविष्यति' इति । तेन भणामो यदेष सर्वेषामप्यस्माकं पूर्वं महोदयपदं गमिष्यति । अस्माकं पुनर्दशवर्षसहस्रशेषमद्याप्यायुः । एतद्वृषलोचनाख्यानकं निशम्य त्रिदशेन्द्रादीनां मनुजानां च मनसि महत्कौतुकमुत्पेदे । अथो भक्तिभरनिभृतचेतसा मघवता तं मूषकं स्वपाणिक्रोडमारोप्याभाणि ।

'अहो धन्यस्त्वमेवैको वन्द्यस्त्वमसि नाकिनाम् । सिद्धिगामी पुरास्माकं यत्त्वमुक्तः स्वयंभुवा ॥ २८५
सुराः पश्यत कीदृक्षः स्वभावः श्रीजिनाध्वनः । लभन्ते निर्वृतिं येन तिर्यञ्चो ऽपि भवान्तरे ॥' २८६

एवं वासव इवान्यैरपि त्रिदशेश्वरैर्दनुजनाथैर्नृपशतैः करात्करतलं संचार्यमाणः क्षितिपतिकुमारवदालिङ्ग्यमानः स्नेहपरवशया दृशा 'अयमस्माकमप्यधिको यो ऽनन्तरजन्मनि निःश्रेयसभाजनं न वृथा श्रीजिनप्रणीतं वचः' इति स श्लाघितः ।

§ २४) ततो विरचिताञ्जलिना पद्मप्रभदेवेन पृष्टम् । 'भगवन्, वयं भव्याः किमभव्याः' इति । भगवानभ्यधात् । 'भवन्तो भव्याः सुलभबोधयः ।' पद्मप्रभेण विज्ञप्तं पुनः । 'वयं पञ्चापि जनाः कतिपयभवसिद्धिगाः ।' निगदितं श्रीमता धर्मतीर्थकृता । 'इतश्चतुर्थे जन्मनि यूयं पञ्चापि सर्वदुःखक्षयगामिनो भविष्यथ ।' पद्मप्रभः समुवाच । 'स्वामिन्, इतो मृतानामस्माकं कुत्रोत्पत्तिर्भाविनी ।' स्वामिना जगदे । 'इतश्च्युत्वा त्वं वणिक्पुत्रः, पद्मवरस्तु राजसुता, पद्मसारस्तु नृपतितनयः पद्मचन्द्रः, पुनर्विन्ध्यगिरौ नखरायुधः, पद्मकेसरः पुना राजपुत्रः ।' इति निवेद्य स्वयं भगवान् श्रीधर्मनाथस्तस्थौ । देवा अपि समवसरणं संहृत्य स्वर्गमार्गमगमन् । भगवानपि पीयूषरोचिरिव भव्यजनकुमुदप्रमोदसंपादनाय विहर्तुं प्रवृत्तः । ततस्ते पञ्चापि संलापं कर्तुं प्रावर्तन्त । एकेनैकस्य संमुखं भणितम् । 'यत् स्वयं भगवता गदितं तदाकर्णितम्, ततो ऽस्मात्मभिः किं करणीयं सम्यक्त्वलाभार्थम् ।' परेण मन्त्रयित्वा प्रोचे । 'यदिदं विषमं कार्यमुपस्थितम् । एको वणिग्जन्मा । अन्यो राजतनुजा । अपरः पारीन्द्रः । अपरौ राजपुत्राविति । ततो न ज्ञायते कथं पुनरस्माकं बोधिलाभः । क्व पुनः संगमो भावी । तदहो पद्मकेसर, इति भगवतादिष्टं यत्तव पश्चाच्च्युतिर्भाविनी । त्वया त्ववधिना ज्ञात्वास्माकं यत्र तत्रोत्पन्नानां सम्यक्त्वं दातव्यमिति । न पुनः स्वर्गसुन्दरीवक्षोजस्पर्शसुखलालसेन विस्मृतसकलपूर्वजल्पितेन भवितव्यम् ।' तेनोक्तम् । 'अहं सम्यक्त्वं दास्यामि, परं मोहोपहतचेतसां भवतां मद्वचःप्रत्ययो न भविष्यति ततः क उपायः कर्तव्यः ।' तैश्चतुर्भिरुक्तम् । 'भव्यं निवेदितम् । तत एतदधुनैव क्रियते, यदात्मीयात्मीयानि रत्नमयानि प्राग्भवमनुष्यरूपाणि कृत्वैकस्मिन् स्थाने निक्षिप्यन्ते, तानि कालेन दर्शनीयानि यथा परस्परं दृष्ट्वा कदा-

8) B om. कुमारक्रीडां etc. to प्रकृतिस्तत्. 14) B °मात्रमागतस्य. 15) B °विधाभिग्रहः समाधिना. 20) B पुरोस्माकं. 22) B क्षितिपकुमार°. 26) C °बोधयः (अ), B भगवन् for पुनः. 30) B has a marginal correction °नाथ समुत्तस्थौ. 40) P B क्षिप्यते for निक्षिप्यन्ते.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्पूर्वजन्मस्मरणसाभिज्ञानेन धर्मप्रतिपत्तिरस्माकं भवेत् ।' इति भणद्भिस्तैर्भुवमागत्य तानि तत्र निक्षिप्तानि यत्र वने तस्य कण्ठीरवस्योत्पत्तिः । विवरद्वारे च महती शिला प्रदत्तेति । ततस्ते सर्वे ऽपि स्वविमानलक्ष्मीमलंचक्रुः । तत्र ते दिव्यसुखमनुभवन्तस्तिष्ठन्ति ।

§ २५) ततः कुमारकुवलयचन्द्र, तेषु पद्मप्रभदेवो विगलच्छरीरकान्तिः परिम्लानवदनः सुदीनमनाः पवनाहतप्रदीप इव झटिति विध्यातः । ततो जम्बूद्वीपे द्वीपे भरतक्षेत्रे

प्रत्यर्थिपार्थिवप्रत्तकम्पा चम्पाभिधा पुरी । चम्पकैर्दृश्यते यत्र दैवतोद्यानसौरभम् ॥ २८७
धनदत्ताभिधस्तत्र पवित्रमतिशेखरः । श्रेष्ठी यस्तु श्रिया श्रीदलीलामालम्बते किल ॥ २८८

तस्य श्रीपतेरिव लक्ष्मीर्लक्ष्मीर्नाम्ना प्रियतमा । स पद्मप्रभजीवस्तत्कुक्षिसंभवः सागरदत्ताभिधसूनुर्जातः । पञ्चभिर्धात्रीभिः प्रतिपाल्यमानः स कान्त्या गुणैः कलाकलापेन च प्रवर्धमानः क्रमतो यौवनश्रियमाश्रितः । पित्रा समानसमाचारशीलस्य कस्यचिद्वाणिजस्य कन्यकां स श्रीसंज्ञां परिणायितः ।

सुखं वैषयिकं साकं श्रेष्ठिसूनोस्तयानिशम् । तस्यानुभवतः स्वैरं शरल्लक्ष्मीरवातरत् ॥ २८९
फलप्राग्भारमासाद्य सद्यः कलमशालयः । भजन्त्येव नतिं यत्र नयवन्त इव श्रियम् ॥ २९०
भेजुर्जलानि नैर्मल्यं हृदयानि सतामिव । अयुगच्छदसौगन्ध्यवासिता हरितो ऽभवन् ॥ २९१
यत्र तीव्रकरस्तीव्रैः करैश्च समतापयत् । कुभूपतिरिव स्वैरमखिलं भूमिमण्डलम् ॥ २९२
अभूज्जनः सुराक्षीव यत्र सन्मार्गजाङ्घिकः । सरोवतंसाः क्रीडन्ति राजहंसाश्च सश्रियः ॥ २९३

एवंविधायां शरदि स सागरदत्तः स्निग्धमुग्धबन्धुजनान्वितः पुरीबाह्योद्देशमुपागतः । कौमुदीमहोत्सवं दृष्ट्वा कस्मिंश्चिच्चत्वरे नटपेटकान्तः केनापि पठ्यमानं कस्यापि कवेः काव्यमशृणोत् ।

'यो धीमान् कुलजः क्षमी विनयवान् वीरः कृतज्ञः कृती
रूपैश्वर्ययुतो दयालुरशठो दाता शुचिः सत्रपः ।
सद्भोगी दृढसौहृदो ऽतिसरलः सत्यव्रतो नीतिमान्
बन्धूनां निलयो नृजन्म सफलं तस्येह चामुत्र च ॥' २९४

§ २६) ततस्तेन सुभाषितरसपूरितचेतसा भणितम् । 'भो भो भरतपुत्राः इदं लिखत यत्सागरदत्तेनामुष्य सुभाषितस्य लक्षं देयम् ।' ततः कैश्चिन्नागरैरुपश्लोकितः । 'यदयं सागरदत्तो महारसिको विदग्धो दाता प्रस्तावविदहो सत्त्वश्च' इति । अपरैश्च जल्पितम् । 'अमुष्य किं स्तूयते यः पूर्वोपार्जितं वित्तजातमर्थिभ्यो ददाति स कथं प्रशस्यः । यः पुनर्निजभुजसमार्जितमर्थं व्ययति स एव प्रशंसाभाजनम् ।' अहो, 'एतैर्ममोपहासः कृतः' इति चिन्तयतस्तस्य तद्वचश्चेतसि शल्यमिव लग्नम् । ततो ऽपत्रपापरो वीक्षापन्न इव गृहमागत्य स शय्यायां निविष्टः । यतः,

विज्ञानामप्यविज्ञानां मुदे मिथ्यापि हि स्तुतिः । निन्दा सत्यापि विज्ञानामपि दुःखाय जायते ॥ २९५

ततः श्रिया चेष्टिताकारपरिज्ञानकुशलया चिन्तितम् । 'अद्य कथं मम पतिरुद्विग्न इव लक्ष्यते । यतः,

जानन्ति जल्पितादपि निःश्वसितादपि विलोकितादपि च ।
त परमनांसि येषां मनस्सु वैदग्ध्यमधिवसति ॥ २९६

ततस्तया भणितम् । 'अद्य नाथ, कथं भवान् विलक्ष इव ।' तेन चाकारसंवरणं कुर्वताभ्यधायि । 'प्रियतमे नहि नहि, किंतु शरत्पूर्णिमायां कौमुदीमहोत्सवं प्रेक्ष्यमाणस्य मम महान् परिश्रमः समजन्यत ईदृशः, न पुनरन्यो हेतुः' इत्युक्त्वा स स्थितः । ततो रजन्यां शय्यागृहे ऽलीकं प्रसुप्तः क्षणं किमपि दध्यौ च । ततः सागरदत्तस्तां श्रियं कान्तां प्रसुप्तां परिज्ञाय मन्दं मन्दमुत्थाय वसनखण्डं परिधाय द्वितीयखण्डं च स्कन्धे क्षिप्त्वा खटिकाखण्डेन वासभुवनान्तरे स्वेनैव विरचितं श्लोकमेतं भारपट्टे लिलेख ।

'वर्षान्तरे न यद्यस्मि सप्तकोटीः समर्जये । विशामि ज्वलने ऽवश्यं ज्वालामालाकुले ततः ॥' २९७

इदं लिखित्वा वासवेश्मतो निःसृत्य नगरनीरनिर्गमद्वारेण दक्षिणाशां प्रति चचाल । स च क्रमतः सर्वेश्च जनपदस्वरूपं निरूपयन् दक्षिणाम्बुधितीरविराजिनीं जयश्रीनगरीमवाप । स तत्पुरीबाह्योद्देशे एकस्मिन् जीर्णोद्याने ऽशोकानोकहतले दूरमार्गश्रमव्यपगमाय निषण्णश्चिन्तयामासेति । 'किमतुच्छमत्स्यकच्छपसंकीर्णिततुङ्गतरङ्गसंगते सागरे यानपात्रमारुह्य परतीरं व्रजामि, किं वा चामुण्डायाः पुरस्तीक्ष्णक्षुरिकाविदारितोरुयुगलसमुच्छलल्लोहितपङ्किलभूतलं मांसखण्डैर्बलिं ददामि, किं वा रात्रिंदिवं

12) P भजंतेवनतिं. 18) P shows blank space for नयवान्. 20) B सौहृदोज्जलमनाः सत्यव्रतो. 24) B °विन्महासत्त्वश्चेति. 32) B तया for ततस्तया. 35) B inter. कांतां & श्रियं. 36) B द्वितीयं च. 41) B संकीर्णः तुंग.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अपहस्तिताशेषव्यापारो रोहणपर्वतभुवं खनामि, किं वा व्यपगतभयप्रचारः सत्पुरुषसंगतो धातुवादं वितनोमि ।' इत्यनल्पविकल्पसंकल्पमालाकुलितस्वान्त एकस्मिन् स्थाने सागरदत्तः श्रीपालपादपस्य प्रसूतं प्ररोहमेकं ददर्श । तं च विलोक्य संस्मृताभिनवशिक्षितखन्यवादेन तेन 'नमो धरणेन्द्राय नमो धनाय नमो धनपालाय' इति मन्त्रं पठता भूमितलं खनित्वा निधिर्लोचनगोचरमानीतः । यावता स तं निधिं गृहीतुं चिन्तयति स तावता व्योम्नि इति वाणी प्रससार । 'वत्स, यद्यपि त्वया सकलो ऽपि निधिर्वीक्षितः परं स्तोकमञ्जलिमात्रं मूलद्रव्यकृते गृहाण' इत्येवं श्रुत्वा तेन श्रेष्ठिसूनुना एक एवाञ्जली रूपकाणां जगृहे । निधिरपि तदैवादृश्यतामगमच्च । तद्धनं निबद्धं चानेन स्कन्धनिक्षिप्तद्वितीयवाससः प्रान्ते ।

§ २७) ततो वणिगुत्तमेन चिन्तितम् । 'अहो, चापल्यं दैवस्य ।
पूर्वं दत्तो निधिर्दैव कथं पश्चाद्धृतः कथम् । तव वृत्त्या परिज्ञातं सर्वथा ते गतिश्चला ॥ २९८

तथाप्येतावतापि वित्तेन द्रविणस्य सप्तकोटीरर्जयित्वात्मीयं प्रतिज्ञातमवितथं करिष्ये यदि दैवं स्वयं माध्यस्थ्यवृत्तिमङ्गीकरिष्यते ।' इति चिन्तयन् परितुष्टमनास्तस्यामेव नगर्यां विपणिमार्गे कमपि वणिजं परिणतवयसं मार्दवादिगुणोपेतं स्वभावतो ऽपि सुशीलमद्राक्षीत् । तं च निरीक्ष्य चिन्तितमनेन । 'अहो, रमणीयतमाकृतिर्ज्यायान् वणिक्पुङ्गवो ऽयं दृश्यते, ततो ऽमुष्य पादपतनं न्याय्यम्' इति ध्यात्वा तं नत्वा च सागरदत्तः पुरतो निविष्टः । तेन श्रेष्ठिना महता संभ्रमेण 'स्वागतं भद्राय' इति भाषितः सः । तदा च तस्मिन्नगरे कस्मिन्नपि महोत्सवे प्रवृत्ते तस्य श्रेष्ठिनो हट्टे प्रत्यासन्नग्रामीणजनो ऽतीवसमुत्सुकचेताः समस्तपण्यग्रहणार्थमभ्येति, तं च श्रेष्ठिनं जराजर्जरिततनुं पण्यानि दातुमक्षममवगम्य सागरदत्तः प्रोवाच 'तात, त्वं विपणिमध्यतः क्रयाणकान्यानीय मम समर्पय यथैतानि तोलयित्वा युक्त्यास्मै जनाय ददामि' इत्युक्त्वा दातुं प्रवृत्तः । तत एषः 'क्षिप्रं ददाति' इत्यवगत्य सर्वो ऽपि जनस्तदापणमायातवान् । तेन तत्क्षणमात्रेणापि पण्यान्यर्पयित्वा समग्रो ऽपि जनः प्रेषितः । क्रयाणकैर्विक्रीतैर्महत्यर्थलाभे श्रेष्ठिना चिन्तितम् । 'यदयं को ऽपि महाकुलसंभवः पुण्यवान् दारको यद्ययं मम निलयमलङ्करोति तदतीव सुन्दरं भवति' इति चिन्तयता जल्पितम् । 'भो वत्स, त्वं कुतः स्थानादागतो ऽसि ।' तेनोक्तम् । 'तात, चम्पापुरीतः ।' श्रेष्ठिना जगदे । 'वत्स, त्वया मम गृहमलङ्करणीयम् ।' स सागरदत्तः श्रेष्ठिना समं निकेतमुपागतः । प्रीत्या स्वपुत्रवदौशीरकशिपुक्रियया संमानितः । कियद्दिनानन्तरं तेन प्रवयसा तद्रूपगुणग्रामरञ्जितचेतसाभिनवोद्भिन्नयौवना निर्मलमुखमृगाङ्ककान्तिकलापकलिता विकस्वरकुवलयदलदीर्घलोचना कुसुमबाणप्रणयिनीनिभा कनी सागरदत्ताय प्रदत्ता, परं तेन तत्परिणयनं न मानितम् । तेनोक्तम् । 'तात, किंचिद्वक्तव्यमस्ति । केनापि हेतुना स्ववेश्मतो निःसृतो ऽस्मि, यदि तत्कार्यं प्रमाणकोटिमध्यारूढं ततो यद् यूयं भणिष्यथ तदवश्यं करिष्ये । यदि तन्न निष्पन्नं ततो मम केवलं ज्वलन एव शरणमतो ऽस्मिन्नर्थे सांप्रतं तात, प्रतिबन्धं मा कार्षीः ।' श्रेष्ठिना निगदितम् । 'एवं व्यवस्थिते मया भवतः किं कर्तव्यम् ।' तेनोदितम् । 'यदि त्वं मम सत्य एव तातस्तदा मद्धनेन क्रयाणकं परतीरयोग्यं गृहाण भाटकेन यानपात्रं च । मया परतीरं गन्तव्यम् ।' श्रेष्ठिना जल्पितम् । 'एवं भवतु' इति तद्दिनादेव श्रेष्ठिना पुरोभूय प्रतिपादितम् । सागरो ऽगण्यपण्यं संगृह्य निमित्तविद्दत्ते मुहूर्ते समुद्रदेवतामभ्यर्च्य तपश्चरणगुरुं गुरुं प्रणिपत्यार्हतामर्हणां कृत्वा तं वणिजमभिवाद्यापृच्छ्य च स्मृतपञ्चपरमेष्ठिनमस्कारः प्रवहणमारूढः, पूरितः सितपटः, लब्धो ऽनुकूलः पवनः, ततो नदीशमुलङ्घ्य क्रमेण यानपात्रं यवनद्वीपमवाप । तत्र क्रयविक्रयेण समार्जितसप्तकोटिः सागरदत्तस्तुष्टमना व्यावृत्य स्वदेशं प्रति प्रचलितः ।

§ २८) अथो तद्बोहित्थं सागरान्तः कर्मपरिणत्या संजातकालकज्जलश्यामलसजलजलदान्धकारच्छादितव्योमतलादृश्यमाननक्षत्रतया निर्यामकैरुत्पथप्रेरितं कस्यापि गिरेर्दन्तके आस्फाल्य कामिनीनिवेदितरहस्यमिव त्वरितं प्रपुस्फोट । तत्र च निखिले ऽपि जने विपन्ने केवलं सागरदत्तः प्राप्तफलकः कथमपि तुङ्गतरङ्गमालाभिः प्रेर्यमाणः पञ्चभिरहोरात्रैश्चन्द्रद्वीपमवाप्य मूर्च्छानिमीलितलोचनस्तीरपादपाधोभागे क्षणमेकं पवनस्पर्शलब्धचेतनस्तृषातरलितचेतोवृत्तिः क्षुधार्तः सर्वत्र परिभ्रम्य क्वचन प्रदेशे नालिकेरनारङ्गमातुलिङ्गपनसदाडिमीप्रमुखद्रुमफलैः कृतप्राणाधारश्चन्दनलवलीलवङ्गलतागृहं

1) P प्रचारः पुरुष. 3) On खन्यवाद B has a marginal gloss like this: भूमिगतनिधानखननविधिः. 7) P B रूपकानां. 10) B तत्व for तव. 12) B मध्यस्थवृत्ति°. 13) P तेन चिंतितं for चिन्तितमनेन. 21) C दारकोऽपि यद्यर्य. 24) B has a marginal gloss: कुशीरं शयनासने कशिपु भोजनाच्छादौ. 27) C तात यत्किंचिद्वक्तव्यमस्ति [यदहं]. 29) B has a marginal gloss प्रतिबंधं आग्रहं ।. 32) P गण्यं पण्यं. 37) B गिरेर्दंतके. 38) B त्वरितं पुस्फोट. 40) B °स्तृष्णातरलित°. 41) B has a marginal gloss on लवली thus: लताविशेषः

वीक्ष्य संजातचित्तकौतुकस्तमुद्देशं यावदाजगाम तावत्सहसा कस्यापि स्वर इव श्रवणातिथित्वं भेजे। तमाकर्ण्य चिन्तितमनेन। 'अत्र तावत्पूर्वं मनुष्यप्रचारोऽपि न कथं बालाया इव शब्दः। अहो, अहमपि कुत्र प्राप्तोऽस्मि यत्र कथास्वपि श्रूयते यत् स्वप्नेऽपि न दृश्यते तदैव दैवेन घट्यते' इति चिन्तयता यावन्निरूपितं तावत्कदलीतरुनिकुरम्बान्तरे रक्ताशोकतरुतले ऽसामान्यरूपातिशया गुणग्रामाभिरामा काचित्प्रत्यक्षा वनदेवतेव वनिता दत्तकण्ठपाशा दृष्टा। ततस्तया प्रजल्पितम्। 'श्रूयतां वनदेव्यः, परस्मि अपि जन्मान्तरे ममेदृशं मा भूयात्' इति भणन्त्या तयात्मोद्बन्धे। अत्रान्तरे तेन करुणाशरणेन सहसागत्य तस्याः पाशश्चिच्छिदे, पतिता सा धरायां वायुनाश्वासिता च। चन्दनकिशलयरसेन विलिप्तं वक्षःस्थलम्। तया लब्धसंज्ञया सागरदत्तो ददृशे। तं वीक्ष्य ससाध्वसहृदया स्ववासः संवरीतुमारेभे। तेन भणिता।

'पुष्पबाणप्रिया किं त्वं वनलक्ष्मीः किमत्र वा। किमात्मारोपितो दुःखे निवेदय कृशोदरि॥' २९९
उवाच सा 'रतिर्नैव नास्मि लक्ष्मीर्वनस्य च। समाकर्णय मद्वृत्तं त्वमेकाग्रमनाः पुनः॥ ३००

§ २९) अस्ति दक्षिणमकराकरतीरे जयतुङ्गा नाम नगरी। तत्रोत्तुङ्गश्रिया वैश्रमण इव वैश्रमणः श्रेष्ठी। तस्याहं दुहितात्यन्तप्राणप्रिया। अन्यदादिवसे स्वभवनकुट्टिमतले शय्यायां प्रसुप्तानेकशकुनिश्वापदकलकलरवेण विबुद्धा यावच्चिन्तयामि तावदनन्तपादपशतदलावलिनिरुद्धतरणिकिरणजालं कान्तारमेव पश्यामि। तच्च वीक्ष्य भयावेशकम्पिततनुलता विलपितुं प्रवृत्ता।

भविष्यामि कथं तात निराशा हा त्वयोज्झिता। इदानीं कानने भीमे शरणं भावि कुत्र मे॥ ३०१

अत्रान्तरे 'तव शरणमस्मि' इति जल्पन् दिव्यरूपधारी कोऽपि पुमान् लतानिकेतनतः समुत्तस्थौ। तमालोक्य द्विगुणतरं समुपजातक्षोभा रोदितुमारेभे, स च मत्समीपमुपागत्य वक्तुं प्रावर्तत।

'मुञ्च माश्रूणि तन्वङ्गि न करोमि तवाप्रियम्। त्वद्रूपाक्षिप्तचित्तेनापहृतासि मयाधुना॥ ३०२
बाला जगाद सा 'कस्त्वं केन ते कथितासि च।' तन्निशम्य ततोऽवोचन्नरः 'शृणु शुभानने॥ ३०३

§ ३०) अस्ति वैताढ्यपर्वतः। तच्छिखरनिवासिना मया विद्याधरेण महाबलवता त्रिदशवनितानामपि मानसे क्षोभकारिणा निखिलमपि क्षोणीतलं कलयतोपरितनकुट्टिमतले तलिने प्रसुप्ता तलिनोदरी त्रिभुवनाधिकशालिनी इतिकृत्वा भवती मम मनसि प्रवेशं चक्रे।

प्रेमोल्लसति कस्यापि क्वापि दैववशात्तथा। विनेतुं शक्यते यन्न विलग्नं वज्रलेपवत्॥ ३०४

ततो 'नापरोऽत्रोपायोऽस्ति' इति विचिन्त्याहं सुप्तां त्वामपहृत्य निजगुरुशङ्कितो निजनगरं न गतः, किन्त्वत्र द्वीपे विजने समागतोऽस्मि, अतो मया सह भोगान् भुङ्क्ष्व, दुःखं मा धेहि।' अतो मया चिन्तितम्। 'तावदहं कन्या न कस्यापि दत्ता, अन्येनापि वणिजा परिणेतव्या, ततो वरमयं सुन्दराकृतिर्विद्याधरः त्रिजगतीयुवतिजनवल्लभः स्नेहमोहितमना यदि मत्करग्रहं करोति तदा मया किं न लब्धम्' इति चिन्तयन्त्या मयोक्तम्। 'अहं त्वयात्र कानने आनीता यत्तुभ्यं रोचते तत्समाचरेः।' ततः सहर्षसंभृतचेताः समजायत। अत्रान्तरे कर्षितकरालकरवालभैरवो विद्याधर एकः 'रे रे अनार्य, कुत्र व्रजसि' इति जल्पन् प्रहर्तुमायातवान्। ततो मे दयितः समाकृष्टरिष्टी 'रे रे दुष्ट, मत्कलत्रापहारं कर्ता' इति वदन् तेन समं योद्धुमारेभे। ततस्तौ युध्यमानौ निशितासिघातैः परस्परं लूनशीर्षौ क्षितौ निपतितौ विलोक्य महद्दुःखाक्षिप्तचित्ता विलपितुं प्रवृत्ता।

'हा सौभाग्यनिधे नाथ रूपश्रीजितमन्मथ। मामेककां परित्यज्य वने कुत्र गतो भवान्॥ ३०५
गृहादानीय मुक्त्वात्र मामेकां काननान्तरे। जीवेश मा व्रज क्वाप्यथवा नय निकेतने॥' ३०६

§ ३१) तत एवं विलप्य मरणकृताध्यवसायया मया 'यथा भूयो भवदुःखानां पदं न भवामि' इति चिन्तयन्त्या लतावेश्मनि लतापाशं विरचय्य स्वं च शोचन्ती स्त्रीजन्म गर्हमाणा कुलदेवीं संस्मर्य मातापितरौ प्रणम्य चात्मा बबन्धे। अतो न जाने किं वृत्तम्, केवलं भवान् वीज्यमानो दृष्टः। 'कुतस्त्वं कुत्रत्यः, कथमत्र दुर्गमे द्वीपे।' ततः सागरदत्तः स्ववृत्तान्तं प्रतिज्ञारोहणाद्यं यानपात्रविघटनान्तं निवेदयामास। ततस्तयोक्तम्। 'एवंविधे विषमे कार्ये संप्रति त्वया किं करणीयम्।' सागरदत्तेनोक्तम्। 'सत्पुरुषाः प्राणान्तेऽपि न प्रतिज्ञाभङ्गं विदधति।' तया जल्पितम्। 'दैवायत्ते प्रतिज्ञानिर्वाहे न किमपि भद्र, तव दूषणम्, तत्किं त्वया संप्रति विधेयम्।' स भूयोऽप्युवाच 'ममैवं समुद्रान्तर्भ्रमत एकादश

3) B तदेव for तदैव. 5) P B om. वनिता. 6) P भणन्त्या. 7) P वलिप्तं for विलिप्तं. 12) P B °करप्रतीरे, B नगरी उत्तुंगश्रिया. 13) B प्रसुप्ता। अनेक. 17) P om. इति, B दिव्यधारी, P B om. पुमान्. 22) P प्रसुप्ता। मलिनोदरी O प्रसुप्ताऽमलिनोदरी. 26) P B द्वीपे निर्विजने. 40) B om. त्वया.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मासाः संजाताः। संप्रत्येष द्वादशो मासः प्रवृत्तः। अनेनैकेन मासेन कथमहं सप्तकोटीः समुपार्जयामि। अथो समुपार्जिता अपि सप्तकोटीः कथं गृहं नेष्यामि। तेनाहं सुन्दरि, भ्रष्टप्रतिज्ञो ऽभवम्। न मम भ्रष्टप्रतिज्ञस्य जीवितुं युक्तम्। ततो ज्वलनं प्रविशामि।' [तयोचे।] 'यद्येवं प्रतिज्ञाभङ्गे भवान् हुताशने प्रविशति तत्राहमपि भर्तृवियुक्ता त्वमिव कृशानुं साधयिष्ये, अतो ऽन्वेष्यतां कुतो ऽपि पावकः।' तेन भणितम्। 'भद्रे, न युक्तमेतत्तव'। [ततस्तयापि भणितम्।] मया किमत्र वने कर्तव्यम्' इति। ततस्तेन चित्यां विरचय्यारणिकाष्ठाग्निर्माय ज्वलनः प्रज्वालितः। ततस्तेनोक्तम्। 'भो लोकपालाः श्रूयतां, मम प्रतिज्ञा संवत्सरेणापि न पूर्णा, इति भ्रष्टप्रतिज्ञस्य मम ज्वलनः शरणमिति ज्वलनं विशामि' इति यावच्चित्यां गवेषयति तावच्चिता शतपत्रतां प्राप। ततो [सागर-] दत्तः कौतुकाक्षिप्तहृदयो व्यचिन्तयदिति।

'किमन्यज्जननं किं वा स्वप्नः किं मनसो भ्रमः। किमिन्द्रजालं यच्चित्या जगाम शतपत्रताम् ॥' ३०७

अत्रान्तरे पद्मरागघटितं व्योममण्डले। मुक्तावचूलप्रालम्बं विमानं समुपस्थितम् ॥ ३०८

चारुकाञ्चनकोटीरधरस्तत्र सुरः स्फुरन्। तेजसा भूयसा चञ्चद्रखण्डश्रुतिकुण्डलः ॥ ३०९

ईषदास्यहास्यविकस्वराधरतया दशनस्फुरत्किरणधोरणिसमुद्दीपितदिगङ्गनाननेन तेनोक्तम्। 'अहो सागरदत्त, किं त्वया पामरजननिषेवितो विबुधनिन्दितः स्ववधः प्रारब्धः। यतः,

प्राणेश दुःखसंतप्ता वनिता साहसाञ्चिता। तनोति तद्वरं भद्र सांप्रतं सांप्रतं न ते ॥ ३१०

एतच्च कथं विस्मृतम्, यत्त्वं सौधर्मविमाने ऽस्माभिः सममुत्पन्नः। तत्र तावत्त्वया कर्केतनेन्द्रनीलपद्मरागराशयः प्रमुक्ताः, अतः किमेताभिः सप्तधनकोटीभिः।

तत्त्वं गृहाण सम्यक्त्वं निशाभुक्तिनिवर्तनम्। महाव्रतानि पञ्चैव ता एताः सप्त कोटयः ॥ ३११

§ ३२) अथ द्रव्याभिलाषी भवांस्तदा त्रिगुणाः सप्तकोटीः स्वीकुरु। मम विमानमारोह यथा त्वामह्नाय निलयं नयामि।' एतदाकर्ण्य देवर्द्धिं वीक्षमाणस्य तस्य सम्यगूहापोहं कुर्वतः पूर्वजातिस्मृतिरुत्पेदे। ज्ञातं च यथा 'अहं स पद्मप्रभश्च्युत्वात्र समुत्पन्नः। एष पुनः पद्मकेसराभिधानो ऽनिमेषः। तत्र मया पूर्वजन्मनि भणित आसीत्, यथा 'त्वयास्मि श्रीमतो जिनेश्वरस्य शासने संबोध्यः' तत्स्मरतानेनामुतो मृत्युतो रक्षितो ऽस्मि। अहो दृढप्रतिज्ञः, अहो परोपकारी, अहो स्नेहपरः, अहो मित्रवात्सल्यम्। यतः,

मानुष्ये जीवितं सारं ततो ऽपि प्रेम सुन्दरम्। उपकारः परं प्रेम्णि तत्रैवावसरो वरः ॥' ३१२

इति चिन्तयतानेन सुरः प्रणतः। तेन भणितम्। 'सुष्ठु स्मृतस्त्वया पूर्वभवः।' सागरदत्तेनोक्तम्। 'अहो, त्वया परित्रातः संसारपतनात्। तावत्त्वया वरेण्यं कृतम्। समादिश किं कर्तव्यम्' इति। सुरेण जल्पितम्। 'अद्यापि ते चारित्रावरणीयं कर्म समस्ति, तद्भोगान् भुक्त्वा सप्तदशभेदभिन्नः संयमो विधेयः' इति। ततस्तेनास्मि विमाने समारोपितः। गृहीता च मया सा समं बाला। क्षणेनैव जयश्रीनगरीं प्राप्तः। तत्र जीर्णश्रेष्ठिवेश्मनि समवतीर्णेन मया सा कन्या श्रेष्ठिसुता च परिणिन्ये। ततो विमानारूढश्चम्पापुर्यामगमम्। वन्दितो महाभक्त्या गुरुजनः। ततो देवेनोक्तम्। 'भद्र, तव दशवर्षसहस्राण्यायुः, ततस्त्रीणि गतानि, पञ्च सहस्राणि भोगान् भुङ्क्ष्वेति, सहस्रद्वयं श्रामण्यं पालनीयम्' इत्युक्त्वैकविंशतिधनकोटीस्तद्गृहाङ्गणे ऽभिवृष्य गतः स सुरः। सो ऽथ चिरविरहखिन्नां पूर्वप्रियां संभाव्य ताभिरम्भोजदृग्भिः सह क्रीडां रचयन् प्रणयिजनं मानयन् क्रमेण निर्विण्णकामभोगो ऽवगतपरमार्थः स्मृतपूर्वभवदेववाक्यः क्षीणभोगफलकर्मा वैराग्यमार्गमुपगतः। ततश्चैत्येष्वष्टाह्निकां निर्माय कृतकृत्यः पुण्यवतां स्थविराणामन्तिके ऽन्तेवासी जातः। भोः कुवलयचन्द्र, सो ऽहं सागरदत्तः। तत्र चाधीतसर्वशास्त्रस्य गृहीतद्विविधशिक्षस्याङ्गीकृतैकाकित्वविहारप्रतिमस्य ममावधिज्ञानं प्रादुरभूत्। 'अधो यावद्रत्नप्रभायाः सर्वप्रस्तरान् ऊर्ध्वं यावत्सौधर्मविमानचूलिकां तिर्यग् मानुषोत्तरशिखरम्' एतत्प्रमाणे [अवधौ] जाते मया 'लोभदेवपद्मप्रभदेवौ' इति निजं प्राच्यं भवद्वयं ददृशे। एतद्विलोक्य चिन्तितं मया। 'अहो, ये पुनस्तत्र चत्वारस्ते कथं संप्रति' इति चिन्तयन् यावदुपयुक्तो ऽस्मि तावत्तान् दृष्टवान् तथा यच्चण्डसोमः।

2) P अथोपार्जितसप्तकोटीः B अथोपार्जिता अपि O अथो समुपार्जिताऽपि. 3) P B om. [तयोचे]. 4) P भर्तृप्रयुक्ता. 5) P B om. [ततस्तयापि भणितम्।]. 6) P चित्या B चित्तां, P °काष्ठान्यानिर्माय B °काष्ठान्यानीय्य, B प्रज्वालितः। तेनोक्तं, P om. ततस्तेनोक्तम्. 7) P संवत्सरेणापि न पूर्णादत्तः। कौतुकाक्षिप्त etc : obviously P has missed some portion between पूर्णा and दत्तः. Originally B also read like P, but by an additional line it is made to read thus: संवत्सरेणापि न पूर्णा इति भ्रष्टप्रतिज्ञस्य मम ज्वलनः शरणमिति ज्वलनं विशामीति यावच्चित्यां गवेषयति तावच्चिता शतपत्रतां प्राप ततो दत्तः कौतुकाक्षिप्त etc. O reads thus संवत्सरेणापि न पूर्णा तेन सम्प्रति स्वप्रतिज्ञापूर्त्यैं प्राणान् त्यजन्नसि' इति यावत्प्राणान्मुञ्चति [तावत्सा चिता पङ्कजायमाना जाता। तां दृष्ट्वा सागर] दत्तः कौतुकाक्षिप्त etc. 15) B एतत्कथं. 16) B om. अतः, P कोटिभिः. 18) P B विमानमारुह. 20) P B °धानोनिमिषः. 21) P ततः स्मरताः. 22) B दृढप्रतिज्ञा. 36) B सर्वशास्त्रगृहीत. 37) O adds [अवधौ] before जाते.

स स्वर्गे पद्मचन्द्रस्ततश्च्युत्वा विन्ध्याटव्यां कण्ठीरवः । पुनर्मानभटो ऽपि विपद्य पद्मसारः स्वर्गी, ततो ऽयोध्यापुर्यां भूपतेर्दृढवर्मणः सूनुः कुवलयचन्द्र इति । तथा मायादित्यश्च्युत्वा त्रिदिवे पद्मवराभिख्यो ऽनिमेषो भूत्वा दक्षिणस्यां दिशि विजयाभिधायां पुर्यां भूधनश्रीमहा(विजय)सेनस्य दुहिता कुवलयमाला । एतत्परिज्ञाय मया चिन्तितम् । 'तदा तपस्विभवे मम संमुखमेतैर्भणितमासीत्' यथा 'यत्र तत्रोत्पन्नानामस्माकं भवता सम्यक्त्वं दातव्यम्' इति सा यावन्मम प्रार्थना स्मृतिपथमागता तावदेष पद्मकेसरस्त्रिदशः समागत्य मां प्रति स्तुतिमाततान ।

'समुत्पन्नावधिज्ञान ज्ञातजन्तुभवान्तर । जय त्वं श्रमणाधीश धर्माचार्यस्त्वमेव मे ॥' ३१३

§ ३३) तदाकर्ण्य तं निरीक्ष्य च मया जल्पितम् । 'भद्र, कथय किं क्रियताम् ।' ततो जल्पितं नाकिना । 'भगवन्, पूर्वं मया प्रतिपन्नमिति, यथा सम्यक्त्वदानेन पद्मसारपद्मवरपद्मचन्द्रजीवा अनुग्राह्याः । एते शुद्धौ मिथ्यादृष्टिकुललब्धजन्मानौ, एकः सिंहश्च । तदेते ऽतिदुर्लभे श्रीजिनेन्द्रनिगमे प्रतिबोधनीयाः । ततः समागच्छ यथा गच्छावस्तस्यामयोध्यापुर्यां कुमारं कुवलयचन्द्रं प्रतिबोधयावः ।' मयादिष्टम् । 'न त्वयोपायः सुन्दरः समुपदिष्टः ।

यतः सुखनिमग्नानां रतिर्धर्मे न जायते । नीरुजामौषधे न स्यादादरस्य लवो ऽपि हि ॥ ३१४

तत्तस्य कुमारस्य राज्यदिग्धावितस्य पितृमातृभ्रातृभगिनीस्वजनवयस्यादिभ्यो ऽनतिदूरीकृतस्य च कुतो बोधावसरः । यदुक्तम् ।

"जननीजनकभ्रातृवियोगेनातिदुःखिताः । यावन्न देहिनस्तावद्धर्मकर्म न तन्वते ॥" ३१५

कुमारानयनाय त्वं भद्र गच्छाधुना त्वहम् । चण्डसोमो हरिर्यत्र तत्र गच्छामि कानने ॥ ३१६

§ ३४) तत्रैकान्ते कुमारः पितृबान्धववियोगकलितः सुखं सम्यक्त्वं ग्रहीष्यते' तदुक्त्वाहमिहागतः । पद्मकेसरः संप्राप्तो ऽयोध्यायाम् । तत्र च तत्क्षणनिर्गतस्त्वमश्वारूढो वाहकेलिगतो दृष्टः पद्मकेसरेण । स तुरङ्गं प्रविष्टः । त्वां गृहीत्वा तुरग उत्पतितः । त्वया च तुरगः प्रहतः । पद्मकेसरेण च मायया मृतो दर्शितो न पुनर्मृतश्च, केवलं तवाशाभङ्गः कृतः । ततः कुमार, सम्यक्त्वलाभार्थमनेनाश्वेनाक्षिप्य त्वमानायितः । एतानि तानि रत्नरूपाणि विलोकयेति । ततः कुवलयचन्द्रः स्वं प्राच्यरूपं तथा कुवलयमालायाश्चापरेषामपि पूर्वजन्मस्मृतिनिमित्तानि तान्यपश्यत् । उत्पन्नं च तद्दर्शनेन कुमारस्य सिंहस्य च जातिस्मरणम् । मुनिना समादिष्टम् । 'कुमार, ततस्त्वं विचारय । 'असारः संसारः, तीक्ष्णा नरकव्यथा, दुर्लभः श्रीजिनप्रणीतो धर्मः, दुष्प्रतिपाल्यः संयमभारः, बन्धनसदृशः सदननिवासः, निबिडनिगडप्राया दाराः, महाभयमज्ञानम्, न सुलभा धर्माचार्याः, महाभाग्यलभ्यं मनुष्यजन्म' इत्येवं च विज्ञाय 'सम्यक्त्वं गृहाण, द्वादशव्रतान्यङ्गीकुरु, परिहर पापस्थानानि ।' इदमात्मना पूर्वजन्मवृत्तमथाश्वापहृतिं च निशम्य भक्तिभरप्रणतोत्तमाङ्गः कुवलयचन्द्रो वक्तुं प्रवृत्तः । 'अहो, अनुगृहीतो भगवता सम्यक्त्वदानप्रसादेनेति तावन्मम दद‍स्व जिनराजदीक्षानुग्रहम् ।' मुनिना प्रोक्तम् । 'त्वमुत्सुकमना मा भव, तवाद्यापि भोगफलं कर्म समस्ति, अतः प्रव्रज्या न ग्राह्या । सांप्रतं पुनर्द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपालय ।' एतदाकर्ण्य कुमारेणोक्तम् । 'भगवन् श्रूयताम्, अतः परं श्रीजिनान् साधूंश्च विना नान्यं नमामि, श्राद्धधर्मं च पालयिष्ये ।' भगवता भणितं 'भवतु' इति । ततो मुनिना पुनरप्युक्तम् । 'भो मृगराज, त्वया पूर्वजन्मवृत्तं श्रुतम् । वयमपि तद्वचः संसर्य समागताः । तावदङ्गीकुरु सम्यक्त्वम् । गृहाण देशविरतिम् । मुञ्च निस्त्रिंशत्वम् । परिहर प्राणिवधम् । त्यज सर्वथा क्रोधम् । अनेन दुरात्मना क्रोधेनावस्थामिमामुपनीतो ऽसि ।' इदं वचो निशम्य मृगाधिपः सर्वाङ्गरोमाञ्चितश्चलद्दीर्घलाङ्गूलः समुत्थाय मुनिं प्रणम्य प्रत्याख्यानं ययाचे । भगवता ज्ञानेनादिष्टम् । 'कुमार, एष केसरीदं जल्पति, यथा ममानशनं देहि, यदस्माकमपुण्यवतां नास्ति प्रासुकाहारः । सदैव वयं मांसाशिनः, अतो मम न श्रेष्ठं जीवितम् ।' ततो मुनिना तस्य प्रपन्नप्रतिबोधस्य निरागारमशनमदायि । स च तदङ्गीकृत्य त्रसस्थावरजन्तुजातविरहिते स्थण्डिले संसारासारतां चिन्तयन् पञ्चनमस्कारपरायणः परित्यजन् स्वजातिदुःशीलत्वमुपाविशत् ।'

---

2) B मायादित्यो इति च्युत्वा, B °भिख्योनिमिषो. 3) P B दिशि जयाभिधायां, P B श्रीमहासेनस्य. 11) B °मयोध्यायां पुर्यां. 14) B राज्योदयश्रिया ललितस्य (this is a correction on the original reading something like the one adopted in the text), B °भ्यो दूरीकृतस्य. 17) B तत्रागच्छामि. 18) B तदुक्त्वाहमिहागतः पद्मकेसरः त्वामानेतुं गतः तत्र. 19) P om. संप्राप्तोऽयोध्यायाम्, shown by blank space; P B वाहकेलिगतो दर्शितो न पुनर्मृतश्च केवलं तवाशयाशाभंगः. 26) B निवड B for निबिड. 27) B इदमात्मनः. 36) B यथा मम मांसाहार एव ततोस्माकमपुण्यवतां.

7

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

कुमारेणोक्तम्। 'भगवन्, सा कुवलयमाला कथं बोध्या।' भगवतादिष्टम्। 'सापि तत्र विजयपुर्यां चारणश्रमणकथानकेन स्मृतपूर्वजन्मवृत्तान्ता गाथाचतुर्थपादं राजद्वारे सर्वजनदृष्टं करिष्यति। तत्र गत्वा गाथापूरणतस्त्वमेव तां परिणेष्यसि। सा पुनस्तव महादेवी भविष्यति। ततस्तत्कुक्षिभूरेष मृगकेसरत्रिदशः प्रथमः पुत्रो भावीति। तत्त्वमपाचीमभिगम्य कुवलयमालां प्रबोधय' इति निवेद्य सद्यः श्रमणेश्वरः ससार। सुपर्वापि 'अहं संबोध्यस्त्वया' इत्युक्त्वा गगने समुत्पपात। कुमारः 'भगवतादिष्टं कर्तव्यम्' इति चिन्तयन् दक्षिणाभिमुखं चलितः पश्चात्स्यं विलोक्य चिन्तयामासेति। 'यदयं साधर्मिको ऽथवा पूर्वसंगतः स्निग्धबन्धुरेकगुरुदीक्षितश्चानशनी च, अतो मयायमुपचर्यः। यद्यस्य कायपरित्राणं न करिष्ये तदायं केनापि व्याधेन शरैर्निहतो रौद्रध्यानवशमानसः श्वभ्रतिर्यग्दुःखभाजनं भावी' इति विचार्य भव्यरीत्या तेन प्रतिजागरितो भणितश्चेति।

'जनौ जनौ मृगेन्द्र त्वमबोधिर्बहुधा मृतः। तथा म्रियस्वेति यथा भूयः स्यान्न मृतिस्तव॥' ३१७

§ ३५) एवं धर्मकथां श्रुत्वा तृतीयदिने हर्यक्षः क्षुधाक्षामकुक्षिर्नमस्कारपरायणः समाधिना मृत्वा सौधर्मे द्विसागरोपमायुःस्थितिः सुमनाः समुदपद्यत। ततः केसरिशरीरसंस्कारमाधाय कुमारः कुवलयचन्द्रो दक्षिणाभिमुखमचालीत्। ततश्च

गिरिनिर्झरझात्कारैर्वाचालितदिगन्तरम्। त्रिपत्रं सप्तपत्राढ्यं नववाणद्रुबन्धुरम्॥ ३१८
शाखिस्तृतस्फुरद्गन्धलसद्भ्रमरविभ्रमम्। स्थाने स्थाने श्रूयमाणकेकिझंकारनिःस्वनम्॥ ३१९
दारुणश्वापदव्रातसंकुलं केतनं वनम्। कुमारः क्रमयन् प्राप विन्ध्यपर्वतकाननम्॥ ३२०

त्रिभिर्विशेषकम्॥

तदा तत्र नखंपचवालुकानिवहे उज्ज्वलद्बहलदावानलनिर्गच्छद्धूमध्यामलितककुम्मण्डले सर्वतः शुष्यमाणशाखिनि वात्याविवर्धिवर्तितरजःसंचये च प्रचण्डमार्तण्डकिरणदण्डसंशोषितक्षितितले भीष्मग्रीष्मभरे उदग्रतृषासंशुष्यद्गलतालुकः कुमारः सलिलावलोकनाय कंचिद्भूभागं बभ्राम।

ततस्तदन्तर्वसुधायोषिद्भाले विशेषकः। नृत्यत्त्रिदशसुन्दर्या भुवि स्रस्तं तु कुण्डलम्॥ ३२१
मुक्तावदातसद्वारि हारिवारिजराजितम्। वाताधूतकिञ्जल्कालिसकाष्ठाङ्गनामुखम्॥ ३२२
क्रीडत्स्वर्गाङ्गनापीनवक्षोजक्षोभितोर्मिकम्। पालिद्रुमालिसंलीनकिंनरीगीतसंगतम्॥ ३२३
आवर्तमिव गङ्गायाः क्षीराम्भोधेरिवानुजम्। सुधाकुण्डमिवोद्भूतं कासारं स व्यलोकत॥ ३२४

चतुर्भिः कलापकम्॥

तमालोक्योच्छ्वसितमिव हृदयेन, प्रत्यागतमिव बुद्ध्या सर्वथा प्राप्तमनोरथ इव कुमारः समभूत्। तत्तीरस्थितेन कुमारेण चिन्तितम्। 'आयुर्वेदशास्त्रमध्ये मया श्रुतमासीत्, यत्किल दुस्सहक्षुत्तृषापरिश्रमभागिनापि देहिना तत्क्षणं पयो न पेयमिति। यस्मादेते सप्तापि धातवः प्रकुप्यन्ति, वातपित्तश्लेष्मादयो दोषा उत्पद्यन्ते, अतो मम श्रान्तस्य सद्यः शरीरप्रक्षालनपानादिकं नैवोचितम्' इति विचिन्त्य तत्तीरतरोरेकस्य तले क्षणमेकं विश्रम्य ततः कुमारः सरःसलिलावगाहनं पयःपानं च विदधे। ततः पुष्पफलस्पृहयालुः सर्वतः परिभ्रमन् कस्मिन्नपि प्रदेशे लतानिकेतने ऽप्रतिमां यक्षप्रतिमां यावन्निरूपयति तावत्तत्र यक्षशिरोदेशे सकलत्रैलोक्यबन्धोर्भगवतो ऽर्हतो मूर्तिर्मुक्तामयी तल्लोचनगोचरमागता। कुमारस्तामालोक्य हर्षवशविकसल्लोचनः स्तुतिमाततान।

जय त्रिभुवनाधीश जय निर्मोह निर्मम। जय कारुण्यपाथोधे जय श्रेयःश्रियोनिधे॥ ३२५

§ ३६) ततः कुमारस्तां प्रतिमां जलेन प्रक्षाल्याहिमरुचिमरीचिवीचिपरिचयपेशलैः कमलैरभ्यर्च्य भक्तिभृतस्वान्तः पर्यष्टौदिति।

संसाराम्बुधिपापनीरलहरीमध्ये भृशं मज्जत-
स्त्राता त्वं भुवनैकभूषणमणे त्वं नायकस्त्वं गुरुः।
किंचान्यज्जनकस्त्वमेव जननी दीनत्वभाजो मम
त्वं बन्धुस्त्वमिह त्वमेव शरणं त्वं जीवितं त्वं गतिः॥ ३२६

अत्रान्तरे निर्मितातुलजलक्षोभा सरोवरोदरतः कापि कामिनी दिव्यरूपधारिणी निःससार। तां च दृष्ट्वा चिन्तितं कुमारेण।

14) P त्रिपत्रिसप्त°. 15) C काक for केकि. 18) B ककुम्मंडले. 21) B शेषकं for विशेषक: and B has a marginal gloss: तस्य वनस्य मध्ये। भूलीभालतिलकं। 27) P B दुःसहतृषाक्षुधापरिश्रमभाजिनापि 29) P पामारिकं for पानादिकं. 30) P पयः पानं च बंधाय blank space स्पृहयालुः, B च विधाय भोजनविषये स्पृहयालुः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'समुद्रनन्दिनी किं वा किं वा विद्याधरी वरा। किं वा सिद्धाङ्गना किं वा देव्यसौ व्यन्तरी किमु ॥ ३२७

तां चानु करकमलकृतजलभृतकनककलशा दिव्यसरोजादिपूजोपकरणपूर्णपटलिकाविहस्तहस्ता कुब्जिका च निर्गता। ते च विलोक्य कुमारश्चिन्तयामास। 'ननु दिव्ये इमे, न ज्ञायते केन हेतुनात्रागते।' ततो यद्यत्र प्रदेशे स्थास्यामि तदेतयोर्मनसि महान् क्षोभो भविष्यति, अतो ऽस्यैव यक्षस्य पृष्ठिभागे तिष्ठामि क्षणमेकम् 'यथैते किं निमित्तमागते, किमत्र कुर्वाते' इति परिज्ञानाय तद्यक्षपृष्ठावतिष्ठत्। ततः सा मृद्वङ्गी भगवत्प्रतिमां सरोजैरर्चितां विलोक्य जल्पितवती। 'हे कुब्जिके, यदियमन्येनापि भगवतः श्रीमदादिनाथस्य प्रतिमा केनाप्यर्चिता, परमिति न ज्ञायते यद्देवेन मानुषेण वा।' कुब्जिकयोक्तम्। 'अत्र वने शबरैरभ्यर्चिता भविष्यति।' तयोक्तम्। 'नहि नहि विलोकय पदपद्धतिम्, यदस्यां वालुकाप्रतिबिम्बितायां पद्मशङ्खाङ्कुशादीनि लक्षणानि लक्ष्यन्ते, ततो मन्ये को ऽप्युत्तमः पुमान्' इति वदन्ती सुदती पूर्वपूजाकमलान्युत्सार्य भगवन्मूर्तिं कनककलशगन्धोदकेन संस्नाप्य विकचैरम्भोजैरभ्यर्च्य स्तुतिमातन्य ततो यक्षं संपूज्य गीतं गातुं प्रवृत्ता। तस्या गेयं लय-ताल-तान-श्रुति-स्वर-मूर्छना-ग्रामसुन्दरममेयगुणमाकर्ण्य कुतूमनाः कुमारः 'अहो गीतम्, अहो गीतम्' इति वदन्नात्मानं प्रकटीचक्रे। सा च मृगलोचना रूपगुणकलाकलापकलिताय कुमारायाभ्युत्थानं विदधे। कुमारेणापि 'साधर्मिकवत्सलत्वम्' इति चिन्तयता प्रथममेव साभिवन्दिता। तया साध्वसत्रपाभरोत्कम्पकम्पमानस्तनभरया सविनयं भणितम्। 'देव कस्त्वम्, विद्याधरश्चक्रवर्ती सुरो वा, कुतः समागतः, क्व यास्यसि' इति। अथ भणितं कुमारेण। 'मनुष्यो ऽहं कार्यार्थी दक्षिणापथं प्रत्ययोध्यातश्चलितः। एष मम परमार्थः।

एतस्मिन् [हि] महारण्ये का त्वं यक्षः क एष वै। एतस्य हेतुना केन शीर्षे मूर्तिर्जिनेशितुः ॥ ३२८
एतच्चित्रं महच्चित्ते मम संप्रति वर्तते। कुरङ्गनयने तावदेतदाशु निवेदय ॥' ३२९

§ ३७) 'हे कुमार, श्रूयताम्।

समस्तीह भुवि ख्याता पुरी स्वर्गपुरीनिभा। माकन्दी भूरिमाकन्दा सदादीनजनस्थितिः ॥ ३३०
अरिष्टशब्दो निम्बे स्यात् कलिर्यत्र बिभीतके। पलंकषो गुग्गुलौ च जने नैव कदाचन ॥ ३३१

तत्रास्ति यज्ञदत्ताभिधः सूत्रकण्ठः श्रोत्रियः। स च कृष्णाङ्गः कृशशरीरः खरस्पर्शः प्रदृश्यद्धमनिजालः सदा दारिद्र्यमुद्राविद्रुतः। तस्य सावित्री प्राणप्रिया। तत्कुक्षिभवान्यपत्यानि त्रयोदश। तेषु चरमः सोमनामा तनूजः। तस्मिन् जातमात्र एव संवत्सराणामधमा विंशिका प्रविष्टा। तदनुभावेन द्वादशवत्सरीमवृष्टिरजायत।

यत्रौषध्यो न जायन्ते न फलन्ति महीरुहः। निष्पद्यते न वा सस्यं तृण्या नैव प्ररोहति ॥ ३३२
अतो देवार्चनं नैव नैवातिथिषु सत्क्रिया। वितरन्ति न वा दानं नार्चयन्ति जना गुरून् ॥ ३३३

एवंविधे महादुर्भिक्षे यज्ञदत्तकुटुम्बं समस्तमपि क्षयमियाय। केवलं स वटुः सोमः कनिष्ठपुत्रः कथमपि कर्मवशतः क्षुधाभारोपरतसमग्रबन्धुवर्गः कदाचिद्राजमार्गे विपणिश्रेणिपतितैर्धान्यकणैः कदाचिद्भोजनक्षणदत्तबलिपिण्डेन महता कष्टेन महद्दुष्कालकान्तारं व्यतीयाय। तदनन्तरं ग्रहगत्या प्रजानां भाग्यवशतः प्रभूतं तोयं निपतितं, सर्वत्र प्रमुदितानि जनमनांसि, सर्वत्रैवोत्सवः प्रवृत्तः। तस्मिन्नीदृशे सुभिक्षे प्रवृत्ते सोमवटोः षोडशवर्षदेशीयस्य दरिद्र इति पदे पदे जनेन हस्यमानस्य चेतसीदृशी चिन्ता संजाता।

'के ऽपि मर्त्यसहस्राणामुदरंभरयो नराः। प्राकृताद्दुष्कृतादात्मंभरयो ऽपि न मादृशाः ॥ ३३४
तत्कृतं सुकृतं किंचिन्नैव पूर्वभवे मया। येन मे न भवत्येव दुस्थावस्था कदाचन ॥ ३३५
सर्वदापि सुखेच्छा स्याल्लोकस्यामुष्य मानसे। न करोति परं किंचित् श्रेयो येन सुखी भवेत् ॥ ३३६

§ ३८) तत्सर्वथैव धर्मार्थकामपुरुषार्थत्रयशून्यस्यास्मादृशजनस्य जीवितत्यजनमेव श्रेयस्तरम्, अथवा न युक्तमेतत्, यत आत्मनो वध उचितो न।

ये त्यक्ता द्रव्यमानाभ्यां भवेयुर्भाविनो भुवि। श्रेयांस्तेषां वने वासो ऽथवान्यविषयान्तरे ॥ ३३७

---

3) B °यामास। अथ मया किं कर्तव्यमिति यद् अत्र प्रदेशे P has blank space for ननु दिव्ये etc. to ततो. 4) B पृष्ठिविभागे. 5) P अति for इति. 13) B °कलितस्य कुमारस्याभ्युत्थानं. 15) P has a gap shown by blank space for सविनयं etc. to एतस्मिन् [हि], B °भरया भाणि भो कुमार भवान् कुतः कुत्र किमर्थं याति। कुमारोऽप्यश्वापहारमारभ्य कुवलयमालाबोधं यावन्निवेद्यतां स्मी भद्रे महारण्ये. 17) B वा for वै. 21) B has a marginal gloss: ऽरिष्टशब्दो लिंबे वाचकः। न लोकेऽरिष्टशब्दप्रयोगः। कलिः कलहः। बिभीतकवृक्षश्च। पलंकषो गुग्गुलुः। पलं मांसं कषति विनाशयति पलंकषः।. 22) B भिदः कठः श्रोत्रियः, B प्रदृश्यमानधमनिजालः (मान added on the margin). 26) C तृणान्येव प्ररोहति but suggests an emendation thus: 'रोहन्ति तृणान्यपि'.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततो विदेशगमनमेव समीचीनम्' इति ध्यायन् सोमबटुर्माकन्दीपुरीतो निर्गत्य दक्षिणां दिशमाश्रित्य चलितः। क्रमेणानवरतप्रयाणेन कृतभिक्षावृत्तिर्विन्ध्यगिरेर्महाटवीमाटिवान्। तत्र तदातिमहानिदाघे तृषाक्षुधार्तः प्रभ्रष्टमार्गः सिंहव्याघ्रदर्शनवेपमानमानसः कस्मिंश्चित्सरसि पयः पीत्वा वनफलान्यभक्षयत्। तत्र तेन परिभ्रमता चन्दनैलालवङ्गलतागृहे भगवतः प्रथमतीर्थनाथस्य प्रतिमां निरीक्ष्य चिन्तितम्। 'अहो, पुरापि माकन्दीपुर्यां मयेदृशी मूर्तिर्दृष्टा' इति विमृश्य तीर्थकृतः सपर्यां विरचय्य पुरो बटुर्जजल्प। 'भगवन्, तव नामगोत्रगुणकलादिकं न जाने, किंतु भक्त्या त्वद्दर्शनेन भवच्चरणार्चनेन च यत्किंचिद्भवति तद्भवतु' इति प्रार्थ्य रम्यो ऽयं वनाभोगः, प्रधानः सरोवरोद्देशः, कमनीयं लतागृहम्, फलिताः पादपाः, सौम्य एष देवः, मया च तद्दुस्सहदारिद्र्यापमानकलङ्कितात्मना विदेशमपि गत्वा परप्रेष्येणैव भाव्यम्। का ऽन्या गतिरस्मादृशामकृतपूर्वतपश्चरणानाम्। यतः,

दूरं गतो ऽपि नो मर्त्यस्त्यज्यते पूर्वकर्मभिः। रोहणाद्रौ व्रजेद्यद्वा दारिद्र्यं तत्तथैव च ॥ ३३८

सर्वथापि नास्ति पूर्वविहितस्य नाशः। ततो वरमिहैव जले स्नानं कुर्वन्नेतान्येव जलकमलानि गृहीत्वा कमप्यमुं देवताविशेषमर्चयन् सुखेन वनतपस्वीव किं न तिष्ठामि' इति ध्यात्वा तत्रैव सोमस्तस्थिवान्।

§ ३९) एवं कालान्तरेण कृतभूरिफलाहारस्य तस्य विसूचिकया भगवन्मूर्तिं हृदि चिन्तयतः समाधिना मृतिर्बभूव। ततो रत्नप्रभायाः प्रथमे योजनशते व्यन्तराणामष्टौ निकाया ये ऽल्पर्द्धयः सन्ति, तेषां यक्ष १ राक्षस २ भूत ३ पिशाच ४ किंनर ५ किंपुरुष ६ महोरग ७ गन्धर्वाणां ८ मध्ये प्रथमनिकाये महैश्वर्ययुतो यक्षराजो रत्नशेखराख्यः स समुत्पेदे। तत्रस्थेन तेन चिन्तितम्। 'कस्य सुकृतस्य वशतः प्रभूतवैभवभाजनमभवम्' इत्यनुध्याय प्रयुक्तावधिज्ञानेन यक्षराजेन तस्मिन्नेव लतागृहे जगत्पतेः पुरः स्वं शरीरं निरीक्ष्य श्रीयुगादिजिनप्रतिमामभ्यर्च्य प्रोचे। 'यदहं सर्वपुरुषार्थबहिष्कृतो ऽपि सर्वत्र लोके हस्यमानो ऽप्येवंविधैश्वर्यभाजनं यक्षराजः समभवं स केवलं तव प्रसाद एव। अतो युक्ता मम शीर्षे जिनेश्वरस्थापना। एकं तावदयं सुरासुरनरेश्वराणामप्यभ्यर्च्यः, द्वितीयं यदुपकारकारि मे, तृतीयं यत्सिद्धिसुखनिदानं च' इति परिवारपुरस्सरमुक्त्वा तेन यक्षेण तत्र वने स्वस्य मूर्तिं महतीं मुक्तामयीं निर्माय तस्या मुकुटोपरि श्रीमदादिनाथस्य प्रतिमा विदधे। तदाप्रभृति तत्र यक्षलोकेन रत्नशेखर इत्यभिधानमवगणय्य तस्य जिनशेखर इत्याख्या पप्रथे। तेनाहं चेति भणिता। 'यत्कनकप्रभे, त्वया प्रतिदिनं भगवान् दिव्यमणीचक्रैरभ्यर्चनीयः। मया पुनरष्टम्यां चतुर्दश्यां च परिबर्हेण समं सपर्यानिमित्तं भगवतः समागन्तव्यम्।' इत्युदित्वा यक्षः स्वस्थानमगात्। ततो भद्र, यत्त्वया पृष्टं क एष यक्षः, किं चामुष्य मुकुटे जिनप्रतिमा, त्वमपि कासि, सैष यक्षराजः सेयं जिनप्रतिमा तस्य चाहं कर्मकरी। इह प्रतिदिनं मया समागन्तव्यमेव।' इति भणिते भणितं कुमारेण। 'अहो, महदाश्चर्यं, महत्प्रभावो भगवान्, भक्तिभरनिभृतो यक्षराजः, विनीता भवती, रम्यः प्रदेशः, सर्वथा पर्याप्तं मम दृशां श्रुतीनां च फलम्।' ततस्तया भूयो ऽपि जगदे। 'भो भद्र, सफलं देवदर्शनम्, अतः किमपि प्रार्थय, यथा तव हृदयेप्सितं ददामि' इति। कुमारेणोक्तम्। 'न किमपि मम प्रार्थनीयमस्ति।' तया जगदे। कस्यापि किमपीप्सितं स्यादतो याचस्व किमपि।' कुमारेण जल्पितम्। 'भद्रे, एष भगवान् जिनभक्तिकरो यक्षराजो भवती चेति सर्वमप्येतदवलोकितं यतः परमपि किं प्रार्थनीयम्' इत्युदित्वा कुमारः समुत्तस्थौ। ततस्तयोक्तम्। 'भो भद्र, भवता दूरे गन्तव्यं यदरण्यमार्गो विषमो ऽनेकप्रत्यूहव्यूहनिदानम्' इति भणित्वा तया स्वकरादुत्तार्य वर्यवीर्यनिलयमौषधीवलयमेकमर्पयामासे। कुमारस्तदङ्गीकृत्यापाचीं प्रति चचाल।

§ ४०) ततः क्रमेण कुमारेण प्रचण्डपवनहतकल्लोलमालाप्रेर्यमाणतीरपक्षिगणा करिकराघातसमुच्छलत्कल्लोला कुपितमत्तवनमहिषशृङ्गोच्छलज्जलच्छटासिच्यमानतीरतरुनिकरा मीनपृष्ठोल्लसदतुच्छफेनपटलालंकृता प्रमत्तदुर्दान्तमज्जन्मातङ्गमण्डलीगण्डस्थलगलितमदजलबिन्दुसंदोहसुरभितजला नर्मदा समुत्तीर्णा। तत्तीरे कुमारः परिभ्रमन् तमालतरुराजीविराजितं प्राङ्गणकुसुमितकेसरशिखरिणं प्रत्यासन्नविकसत्पुष्पजातिमकरन्दमधु [लुब्ध] मुग्धमधुपध्वनिमनोहरमुटजं प्रविश्य रुद्राक्षमालावलयं

3) B कस्मिंश्च सरसि. 5) B adds तस्य before तीर्थकृतः. 6) B om. न before जाने. 8) मया तावद्दुःसह. 9) B परप्रेष्येण (P प्रेक्षेण) भाव्यं. 10) C दारिद्रं. 14) C °मष्टनिकाया. 16) B om. तेन. 18) B om. श्री, P B यदस्मि for यदहं. 24) B परिवारेण समं. 26) P किं वाऽमुष्य. 31) P किमीप्सितं, B यदतो for स्यादतो, B om. किमपि. 39) The passage तत्तीरे कुमारः etc.... गरीयः पयोधरा is adopted from B in which too it is written in a different style

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमण्डलुं चालोक्य 'महामुनिरत्र को ऽपि निवसति' इति चिन्तयंस्तदग्रे पांसुले भूमिप्रदेशे पदप्रतिकृतिं ददर्श। तां च दृष्ट्वा चिन्तितं तेन 'नूनमयं कस्याश्चिन्महेलायाश्चरणप्रतिबिम्बो, न पुनरन्यस्य'। ततो गच्छता तेन वल्कलपिहितगरीयःपयोधरा जरत्तापसीपृष्ठगामिनी त्रैलोक्यातिशायिरूपा नवयौवना कामिनी दृष्टा। तयोः पुरस्सर एको राजकीरश्च। तस्यानुपदीनः शुकसारिकानिकरश्च। एतद्विलोक्य कुमारेण चिन्तितम्। 'अहो, अस्या महानुपशमः, यदरण्यनिवासिनः पक्षिणो ऽपि पार्श्वमस्या नोज्झन्ति' इति चिन्तापरस्तया तरुण्या कुमारो ऽभ्युत्तिष्ठत्। ततस्तं वीक्ष्य निर्मानुषवनजन्मतया भयेन चञ्चलदृशं तां पलायमानां चारुवदनां निरीक्ष्य राजकीरो बभाषे। 'स्वामिन्येणिके, किं पलायनं भवती कृतवती।' तयोक्तम्। 'अयं पुनः क एतस्मिन् ममोटजे वनश्वापदः।' तेनोक्तम्। 'एणिके, मा भयभ्रान्तं मनः कुरु, यदयं पथिकः पथश्रान्तः समागतः। ततः समागत्यामुष्य पुरुषोत्तमस्य स्वागतं पृच्छ' इति निगदिते नृपशुकेन सा सव्रीडं कम्पमानवक्षोरुहा पथिकस्य स्वागतमुक्तवती। तथा 'कुतस्तवागमः, कुत्र वा प्रचलितः, किं कार्यम्' इति शिक्षितं प्रोचे। स प्राह। 'अयोध्यातः समागतो ऽस्मि, कार्यार्थी दक्षिणां दिशामाश्रितः।' शुकः प्रोवाच। 'स्वागतं महानुभावस्य, क्षणमेकमत्र पल्लवस्रस्तरे समुपविश' इति निशम्य कुमारः समुपाविशत्। एणिका विविधतरुपक्वसुस्वादुसुरभीणि फलानि कुमारस्य पुरो मुक्त्वा निषसाद। कुमारो ऽप्यचिन्तयदिति। 'न ज्ञायते काप्येषा केनापि कारणेन वैराग्येण वा कुत्र वागतेह तपस्यति, तत्पृच्छामि' इति ध्यात्वा प्राह। 'भद्रे, कथय का त्वं, कथं वात्र वने स्थिता, किं वैराग्यकारणं तपसे' इति भणिता तेन सा न्यग्मुखी तस्थौ। कुमारस्तु तस्याः प्रतिवचनमुपेक्षमाणः क्षणं विलक्षास्यः समभूदिति। तद्दृष्ट्वा राजकीरेण जल्पितम्। 'भो भो महानुभाव, मनागेषा लज्जते। भवतः प्रार्थना मा वृथा भवतु' इत्यहं कथयिष्ये।

§ ४१) 'अत्रैव नर्मदाया नद्या दक्षिणकूले देवाटवी नाम महाटवी। तदन्तर्महान् पत्रलः सच्छायो वटपादपः। तस्मिन् सदैव कीरकुलं निवसति। तत्र चैको मणिमयाख्यः सर्वशुकवृन्दराजो राजकीरो ऽस्ति। तस्य राजकीरिकासंभवः क्रमेण स्फुरदिन्द्रनीलमणिसंनिभपक्षावलीविराजमानो मनोहरकान्तिः शुकः समजायत। स चान्यदा भीष्मग्रीष्मखरकिरणकिरणघोरणीतापिततनुस्तृषाशुष्यद्गलतालुकस्तमालतरुतले क्षणमेकमुपाविशत्। तत्रस्थस्य तस्य व्याध एकः समागमत्। स च राजकीरसुतं तं भयेन पलायमानं बलात्कारेण गृहीत्वा पल्लीपतेः प्राभृते ऽर्पयामास। तेन राजकीर इति पञ्जरे न्यक्षेपि। तत्र स्थितस्तेन स वृद्धिमानीतः, महापुरुष, सो ऽहं शुकः। अन्यदा श्रियः कच्छे श्रीभृगुकच्छे भृगुभूपतेः पल्लीपतिनाहमुपदीकृतः। तेन नरेन्द्रेण संतुष्टचेतसा मदनमञ्जर्यै सुतायै क्रीडार्थमर्पितो ऽस्मि। तयाल्पदिनैरप्यहं स्थावरजङ्गमविषचिकित्सागजताम्रचूडतुरङ्गपुरुषस्त्रीलक्षणप्रभृतिसमस्तशास्त्रपारदृश्वा कृतः जिनप्रणीतवचननिश्चितमतिश्च। तत्रान्येद्युरतिदारुणे निदाघे कस्यचिन्मुनेरनित्यतादिभावनाभाजिनः केवलज्ञानमुल्ललास। तदा तत्रत्यलोकेन केवलमहिमायै देवानां गतागतं वीक्ष्य भृगुभूपस्य पुरो न्यवेदि। 'देव, यत्तव पिता घातिकर्मचतुष्टयक्षये केवलशाली बभूव' इत्यवगम्य भृगुभूपः स परिच्छदः केवलिने जनकाय नमस्करणार्थमायातः। मदनमञ्जर्याहमपि तत्रानीतः।

§ ४२) अत्रान्तरे नीलपीतवाससौ विस्फूर्जन्मणिकनकभासुरालङ्कारसारौ द्वौ विद्याधरौ केवलिनं

---

on a pasted slip of paper, possibly a correction on the basis of some older codex. The corresponding passage in P runs thus: तत्तीरे कुमारः परिभ्रमन् तमालतरुमधुपध्वनिमनोहरमुटजं प्रविश्य रुद्राक्षमालावलयं कमंडलुं चालोक्य राजीवराजितं प्रांगणकुसुमितकेसरशिषरिणं प्रत्यासन्नविकसतपुष्पजातिमकरंदमधुलुब्धमुग्धचिंतितं तेन। नूनमयं कस्याश्चिन्महेलायाश्चरणप्रतिबिंबो न पुनरन्यस्य। महामुनिरत्र कोपि निवसतीति चिंतयंस्तदग्रे पांशुलभूमिप्रदेशे प्रतिकृतिं ददर्श तां च दृष्ट्वा गू पिहितगरीयः पयोधरा. This obviously represents disturbed version of the text adopted above. C reads thus: तत्तीरे परिभ्रमन् कुमारो [बहलस्निग्धतरुवरनिकरसंकुले एकस्मिन् प्रदेशे एकं भव्यमुटजं दृष्ट्वाऽत्र 'कोपि महर्षेराश्रमो भविष्यति' इति मन्यमानस्तद्दिशाभिमुखं यावच्चलितस्तावत्तरुणतमालपादपपङ्क्तिपरम्परापरिकलितं समन्ततः कुसुमितबहुजातिजातिकुसुमकरन्दलुब्धभ्रमरनिकररणरणशब्दसङ्गीतमनोहरं राजीवराजितमुटजाङ्गणं ददर्श। तत्र च रुद्राक्षमालावलयं कमण्डलुं चावलोक्य चिन्तितमनेन राजतनयेन-'नूनमत्र कश्चिन्महर्षिः प्रतिवसति' इति। ततस्तदग्रे पांसुले भूमिप्रदेशे प्रतिबिम्बितां सुलक्षणलक्षितां पदपद्धतिं विलोक्य चिन्तितमनेन-'नूनमयं कस्याश्चिद्विलासिन्याश्चरणप्रतिबिम्बो न पुनः पुरुषस्य' इति। ततस्तदनु यावदग्रे गम्यते] तावत्तेनोत्तरीयपिहितगरीयःपयोधरा. As portion of this is put in square brackets, the ms.-basis is not clear.

3) P नवयौवनकामिनी. 6) B कुमारोऽभ्युत्तिष्ठन् ददर्श (ददर्श added on the margin) ततस्तं. 11) P om. किं कार्यम् etc. to दिशमाश्रितः 13) C adds [उपदीकृत्य] before पुरो, P om. मुक्त्वा, B has a marginal gloss: ढौकि for मुक्त्वा. 16) B °वचनमपेक्षमाणः. 25) B श्रीभृगुकत्से. 28) C adds (महिम्ने) before देवानां. 30) B घातिचतुष्टयकर्मक्षये.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रणिपत्य प्रोचतुः 'भगवन्, निवेदय सा का ।' इत्याकर्ण्य भृगुभूपेन जनैश्च विज्ञतम् । 'भो विद्याधरौ, सा पुनः का ।' ततस्ताभ्यामुक्तम् । 'कदाचिद्वैताढ्यपर्वतात् सम्मेतशैलशिखरोपरि तीर्थकृतः प्रणिपत्य श्रीशत्रुंजयपर्वतमहातीर्थं प्रति गच्छद्भ्यामावाभ्यां विन्ध्यगिरिविनिर्गतनर्मदादक्षिणे तटे मृगयूथमार्गानुगामिनीमेकां कामिनीमालोक्य चिन्तितम् । 'अहो, महदाश्चर्यं मृगयूथेन सह कामिनी भ्रमति ।' तत्र कौतुकेनावामवतीर्णौ, आवाभ्यामाभाषिता च सा । 'हे बालिके, भीमे ऽरण्ये निर्मानुषे कथमेकाकिनी भवती, कुतो वा समागता ।' सा किंचिन्न जल्पति, प्रत्युताधिकतरमपससार । तत आवयोः पश्यतोरेव तन्मृगयूथं सा चारुलोचना च दर्शनादर्शनत्वमियाय । आवाभ्यां तदाश्चर्यमालोक्य को ऽप्यतिशयशाली मुनिः प्रष्टव्यः' इति ध्यायद्भ्यां भवानेवात्र दृष्टः । ततः पृष्टम् । 'मुनीश्वर, का पुनः सा ।' ततः स स्वयं केवलज्ञानशाली जल्पितुमारेभे ।

'अस्त्यवन्तीपुरी रम्या सदा नाकविराजिता । पुरी गरीयसी लक्ष्म्या सदाना कविराजिता ॥ ३३९
बभूव भूपतिस्तत्र प्रजापालनलालसः । श्रीमान् वत्साभिधः कान्त्या प्रजापालनलोपमः ॥ ३४०
यस्य प्रतापवशतो ऽरिनरेश्वराणां दन्तीन्द्रगण्डविगलन्मदवारिशोषः ।
कामं तदीयवनितानयनाम्बुपूरपोषः समं समभवच्च तदत्र चित्रम् ॥ ३४१
अभूत्तनूभवस्तस्यानूनसंवित्तिवैभवः । पुरंदरसमस्थामा नाम्ना श्रीवर्धनाभिधः ॥ ३४२

तथा श्रीमतीति तत्सुता च । तां विजयपुरस्वामिनो विजयनराधिपस्य तनुजः सिंहः पर्यणैषीत् । स च यौवनप्रातः 'सर्वदैवानयाध्वनीनो ऽसद्व्ययी' इति परिज्ञाय राज्ञा निर्विषयीचक्रे । ततः सिंहः स्वां प्रियां गृहीत्वैकस्मिन् पर्यन्तग्रामे ऽतिष्ठत् ।

§ ४३) इतश्च कालान्तरेण स श्रीवर्धनराजपुत्रो धर्मरुचिमुनेरन्तिके ऽन्तेवासी भूत्वा कियतापि कालेनाधिगतश्रुतः स्वीकृतैकाकिविहारिप्रतिमस्तत्र विहारमकरोद्यत्र स भावुको भगिनी च । अन्यदा स भगवान् मासक्षपणपारणायां क्षामतनुरतनुतपोनिधिस्तस्या एव स्वसुर्वेश्मनि भिक्षार्थं प्रविवेश । तया दूरत एव भ्रातरमुपलक्ष्य चिन्तितम् । 'यदयं केनापि पाषण्डिना विप्रतार्य प्रव्राजितः । ततस्तया स्नेहभरनिर्भरहृदयया चिरभ्रातृदर्शनोत्कण्ठया मुनिरालिलिङ्गे । ततस्तत्पतिना तदात्वं बाह्यागतेन तच्चेष्टितमालोक्य कोपपरवशमनसा मुनिर्निहतः । तया तत्पत्न्या 'भ्राता मम हतो ऽनेन पापिना' इति ध्यात्वा पतिरपि काष्ठखण्डेन विनाशितः । तेन म्रियमाणेन तेनैव काष्ठखण्डेन प्रियापि भिन्नशीर्षा व्यधायि । स च सिंहः स्वभावत एव क्रोधनो महामुनिघातसंजाताघसंघातेन रत्नप्रभायां रौरवे नरकावासे सागरोपमस्थितिर्नैरयिकः समुत्पेदे । सापि तस्य मुनेः स्वसा भ्रातृस्नेहमूर्च्छिता तत्क्षणोत्पन्नक्रोधा निहतपतिजातप्रभूतपापा तत्रैव नरकप्रस्तरे समजनिष्ट । स पुनर्यतिर्निर्दयं कृपाणप्रहारव्यथितो ऽपि समाधिना विपद्य सद्यः सागरोपमस्थितिः सौधर्मे त्रिदशः समभवत् । ततश्च्युत्वात्र भृगुकच्छे नृपतिर्जातः सो ऽहं दृष्ट्वा भवद्भ्यामुत्पन्नकेवलः । स च सिंहो नरकादुद्धृत्य नन्दिपुरे पुरे ब्राह्मणत्वमुपलभ्य वैराग्यादेकदण्डीभूयाश्रमानुरूपं तपः प्रपाल्यायुषः क्षये ज्योतिष्केषु देवत्वं प्राप । तेन च को ऽपि केवली पृष्टः स्वपूर्वभवम् । तेन च तस्य ज्योतिष्कदेवस्य प्राग्भव उक्तः । तं श्रुत्वा समुत्पन्नातुच्छमत्सरग्रस्तमतिरिति व्यचिन्तयदिति । 'अहं तया निजप्रियतमया मारितः । सा च दुराचारा कुत्र' इति चिन्तयता तेन सा ततो नरकादुद्धृत्य पद्मपुरे पद्मस्य भूपतेः कन्यका जातमात्रा दृष्टा । तदालोकनतस्तदात्वपरिस्फुरदमर्षकम्पमानाधरेण तेन तत्रागत्य विन्ध्यगिरिवनान्तराले सा बालिका जातमात्रा समुज्झिता । सा च कर्मवशतः कोमलकिसलयव्याप्तप्रदेशे पतिता पवनेनाश्वासिता च । तदानीं च भवितव्यतया तत्रैव गर्भभरवेदनार्ता वनमृगी समागता प्रसूता च । प्रसववेदनाविरामे तया मृग्या निरूपितं चिन्तितं च । 'किं ममाधुना युगलकमभवत् । तत आर्जवतया स्वापत्यमिति तस्या मुखे स्तन्यं स्रवन्ती तामवर्धयत् ।' ततश्च सा बाला मृगयूथेन रममाणा निर्मानुषे ऽरण्ये क्रमेण यौवनमाससाद । तत्र च तस्यास्तिष्ठन्त्या वननिकुञ्जानि गृहाणि, पक्षिणो बान्धवाः, वानरशिशवो मित्राणि, अशनं वनफलानि, सलिलं निर्झरजलं, शयनं विशालशिलातलानि, विनयः सारङ्गकुलस्य पृष्ठिशीर्षे कण्डूयनमिति । ततः सा मृगयूथसंगता मानुषं निरीक्ष्य मृगीव प्रोत्फुल्ललोचना पलायते । यद्भवद्भ्यां दृष्टं यथा

---

3) P has blank space between विन्ध्यगिरि and नर्मदा°. 5) P B om. आवाभ्यामाभाषिता च सा. 10) P नाकविराजिनी B has a marginal gloss thus: सह दानेन वर्तते सदाना । तथा कविभिः पंडितैः राजिता । पुनः किंविशिष्टा । सदा सर्वदा स्वर्गवत् शोभिता । ऽथवा सदानअकविराजिता दुःखविराजिता किंतु सदासुखिता इत्यर्थः. 17) P B गृहीत्वा कस्मिन्. 24) B adds सा before प्रियापि, P om. भिन्न. 25) B नरकवासे. 36) B गर्भभार°. 40) B विनयं सारङ्ग.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'का पुनरेषा वने परिभ्रमति' सेयं मम पूर्वभवीयस्वसुर्जीवः। यदेतया कदाचिन्मानुषो ऽपि न वीक्षित इति युवां दृष्ट्वा पलायिता ।' ताभ्यां विद्याधराभ्यां विज्ञप्तम् । 'किं सा भव्या, किमभव्या' इति। भगवतादिष्टम् । 'भव्या' । ताभ्यामुक्तम् । 'कथं तस्याः सम्यक्त्वप्राप्तिः'। भगवतोक्तम् । 'अस्मिन्नेव भवे ऽस्याः सम्यक्त्वलाभः' । ताभ्यामुक्तम् । 'कस्तस्या धर्माचार्यो भावी' । भगवता भणितं मामुद्दिश्य । 'एष राजकीरः' । ततो ऽहं भगवद्भणितेन मदनमञ्जर्याः 'पितामहवाक्यमलङ्घनीयम्' इति चिन्तयन्त्या तस्याः प्रबोधकृते विसर्जितो ऽम्बरतलमुत्पत्यात्र वनान्तः समागतः । मया च परिभ्रमता सेयं बालिका दृष्टा । ततः कियद्भिरपि दिनैर्भक्ष्याभक्ष्ये कार्याकार्ये तथा जिनप्रणीते धर्मे समग्रे ऽपि मनुष्यव्यवहारे च विचक्षणा कृता । कथितश्चास्यै केवलिप्रणीतः पूर्वभवः । यथा 'भवती पद्मभूपस्य दुहिता वैरिणात्र समानीता न वने जाता, तदरण्यं परित्यज्य मया समं वसन्तीं भुवं समागच्छ । तत्र भोगान् भुङ्क्ष्व परलोककृत्यमाचरेः ।' एतया भणितम् । 'यदिदं वनं ममावनमिति । येन दुर्लक्ष्यो लोकाचारः । विषमाश्चपलाः पञ्चापि विषयतार्क्ष्याः । बहवः खलाः । अतो ऽत्रैव मन्मनसि समाधिर्न पुनरन्यत्र लोकाचारे ।' तदनन्तरं सा तत्रैव वने पतितप्रासुककुसुमकन्दफलमूलपत्राशना दुश्चरं चिरं तपश्चरन्ती स्थितवती । ततो यत्त्वया पृष्टम् 'का त्वं, कुत आगता, किं वनवासे वैराग्यहेतुः' इत्यादिकमियं पृष्टा तत्तव भोः कुमार, मयोदितम् ।' ततः कुमारेण सविनयमुत्थाय 'राजकीर, त्वां साधर्मिकमभिवादये' इत्युक्तम् । एणिकया जल्पितम् । 'फलितं ममाद्य वनवासेन, दृष्टो यद्भवान् सम्यक्त्वधारकः श्रावकः' इति । अतिक्रान्तो मध्याह्नसमयः, तत्त्वरितमुत्तिष्ठ यथा स्नानार्थं गच्छावः । ततः सा तस्याश्रमस्य प्रत्यासन्नजलाशयोद्धृतगलितजलैः कृताङ्गप्रक्षालना प्रावृतधौतकोमलधवलवल्कला कस्मिंश्चिद्गिरिकन्दराभोगे पूर्वं जलेन संस्नाप्य भगवतः प्रथमतीर्थपतेः प्रतिमां जलस्थलजकुसुमैरभ्यर्च्य च प्रणतिं चकार। कुमारेण च स्नात्वा कृतपूजाविधानेन स्तुतिः कर्तुं समारेभे ।

'गुणैरमेय नाभेय भवच्छेदविधायक । अतो भव भवभ्रान्तिभीतिसंहृतये मम ॥ ३४३
श्रीवृषाङ्क जगन्नाथ देवदेव मनोभवः । मम प्रहर्ता संहर्ता तस्य त्वं तत्त्ववृत्तितः' ॥ ३४४

§ ४४) अथो कुमार एणिकया शुकेन च साकं तत्रैवोटजे समागत्य सुस्वादुसुरभिसुपक्वानि फलान्यग्रसत् । तत्रस्थस्य कुमारस्य विविधशास्त्रकलाकलापदेशभाषाख्यायिकाख्यानकभाषणप्रमोदितैणिकाराजकीरस्य एकदा श्यामलकायच्छायं शिखिपिच्छविनिर्मितकर्णावतंसं नानाविधतरुराजीप्रसूनापूर्णधम्मिल्लं शबरमिथुनमेकं समाजगाम । तदग्रतो भूत्वा राजपुत्रस्य बालिकाया राजकीरस्य च प्रणामं निर्माय दूरशिलातले ऽध्युवास । एणिकया तस्य निरपायकायकिंवदन्ती पृष्टा। तेन च प्रणतोत्तमाङ्गतयैव सर्वमपि प्रत्युक्तं न पुनर्वचनेन। शबरेण च मुक्तं धनुर्धरण्याम् । कुमारेण तद्रूपशोभाविरुद्धशबराचारकौतुकाक्षिप्तचेतसा चिन्तितम् । 'अहो, धिग् रूपं न कार्यं लक्षणैः, अप्रमाणानि शास्त्राणि, असाराः सर्वे गुणाः, अकारणं वेषाचारौ, सर्वमपि प्रतीपम् । अन्यथा कथमेतद्रूपं लक्षणव्यञ्जनविभूषितम् । कुत्र वा इदम् । प्राकृतपुरुषसंवादि शबरवेषत्वम्' इति चिन्तयता कुमारेण भणितम् । 'एणिके, किं पुनरेतत् ।' तयोक्तम् । 'कुमार, सर्वदैवात्र वने परिभ्रमदिदं पश्यामि, परमार्थवृत्त्या न जाने ।' कुमारेण भणितम् । 'एणिके, इदं न शबरयुगलम्, किंतु कृतशबरवेषमेतन्मिथुनं न सामान्यम् ।' एणिकया भणितम् । 'कथं लक्ष्यते' । कुमारेण जल्पितम् । 'सामुद्रिकलक्षणैः' । तयोक्तम् 'किं सामुद्रिकशास्त्रं कुमारस्य परिचितम् । एतत्प्राप्तशबरवेषं युगलं तावत्तिष्ठतु, प्रथमं पुरुषलक्षणं निवेदय ।' कुमारेण जल्पितम् । 'किं विस्तरतः कथयामि, किं वा संक्षेपतः ।' तया भणितम् । 'कापि विस्तरतः कापि संक्षेपतश्च ।' कुमारेणोक्तम् । 'विस्तरतो लक्षप्रमाणं संक्षेपतः परिक्षीयमाणं यावत्सहस्रं शतं श्लोकानां च ।' ततस्त्वं पूर्वं किंचिद्विस्तरतः शृणु । यथा ।

'पद्मवज्राङ्कुशच्छत्रशङ्खमत्स्यादयस्तले । पाणिपादेषु दृश्यन्ते यस्यासौ श्रीपतिः पुमान् ॥ ३४५
उन्नताः पृथुलास्ताम्राः स्निग्धा दर्पणसंनिभाः । नखा भवन्ति धन्यानां धनहेतुसुखप्रदाः ॥ ३४६
सितैः श्रमणता ज्ञेया रूप्यपुष्पितिकैः पुनः । जायते किल दुःशीलो नखैर्लोके ऽत्र मानवः ॥ ३४७
शुद्धाः समाः शिखरिणो दन्ताः स्निग्धा घनाः शुभाः । विपरीताः पुनर्ज्ञेया नराणां दुःखहेतवः ॥ ३४८

2) P om. विद्याधराभ्यां. 8) B trans. च after कृता (written on the margin). 9) B भुक्त्वा for भुङ्क्ष्व. 10) B °कृत्यमाचर, विषमा [विषया]श्चपलाः पञ्चापि विषय (इन्द्रिय) तार्क्ष्याः. 20) P मनः B नमः for मम. 21) P मनोभव B मनोभवं. 24) P B om. एकदा, P B श्यामलच्छाकायं. 25) P B मिथुनकमेकमाजगाम. 27) B धनुर्धरिण्यां, B शबरवेषकौतुका°. 30) B om. किं पुनरेतत् etc.......भणितम् एणिके. 31) P कुमारेणोक्तं for कुमारेण भणितम्. 39) P B धनहेतुः 40) P रूक्ष° B रूप्य° for रूप्य on which B has a marginal gloss thus: कर्णिकाकारपुष्पकसहितैः ।, C has a marginal note: रूप्यशब्दस्य सुवर्णवाचकत्वादत्र पीतवर्णत्वं ग्राह्यम् ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वात्रिंशद्दशनो राजा भोगी स्यादेकहीनतः । त्रिंशता मध्यमो ज्ञेयस्ततो ऽधस्तान्न सुन्दरः ॥ ३४९
स्तोकदन्ता अतिदन्ता ये नरा गर्भदन्तजाः । मूषकैः समदन्ताश्च ते च पापाः प्रकीर्तिताः ॥ ३५०
अङ्गुष्ठयवैराढ्याः सुतवन्तो ऽङ्गुष्ठमूलजैश्च यवैः । ऊर्ध्वाकारा रेखा पाणितले भवति धनहेतुः ॥ ३५१
वामावर्तो भवेद्यस्य वामायां दिशि मस्तके । निर्लक्षणः क्षुधाक्षामो भिक्षामटति रुक्षिकाम् ॥ ३५२
दक्षिणो दक्षिणे भागे यस्यावर्तस्तु मस्तके । तस्य नित्यं प्रजायेत कमला करवर्तिनी ॥ ३५३
यदि स्याद्दक्षिणे वामो दक्षिणो वामपार्श्वके । पश्चात्काले भवेत्तस्य भोगो नास्त्यत्र संशयः ॥ ३५४

संक्षेपतस्तु श्लोकेनैकेनाकर्णितव्यम् ।

गतेर्धन्यतरो वर्णो वर्णाद्धन्यतरः स्वरः । स्वराद्धन्यतरं सत्त्वं सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ ३५५

§ ४५) इति श्रुत्वा तया भणितम् । रम्यमेतत्, परं किं त्वयामुष्य शबरस्य सुलक्षणं ज्ञातम् ।' तेनोक्तम् । 'पणिके, यानि मयोक्तानि तानि सर्वाण्यप्यस्य पुरुषस्य तनौ शुभानि लक्षणानि दृश्यन्ते । तज्जाने को ऽप्येष महासत्त्वः केनापि हेतुनायं कृतशबरवेषः प्रच्छादितस्वाभाविकरूपो विन्ध्यगिरिवनान्तः स्थितः ।' एतदाकर्ण्य शबरेण चिन्तितम् । 'अहो, पुरुषलक्षणपरिज्ञानदक्षिणः पुमानयम् । तावन्न युक्तमत्र स्थातुं किन्त्वपसरणमेव श्रेष्ठम्, यावदस्मानेष न जानाति' [इति] । ततो ऽभ्युत्थाय शबरः शबरी च स्वस्थानं जग्मतुः । पणिकया भणितम् । 'कुमार, तव महती दक्षता यदेष प्राप्तशबरवेषो ऽप्युपलक्षितः ।' तेनोक्तम् । 'प्रथममेव परिज्ञातः । पुनर्विशेषतो ज्ञातुमिच्छामि स्फुटं प्रकटय ।' भणितमेणिकया । 'कुमार, विद्याधरावेतौ ।' तेनोक्तम् 'तर्हि कथमेतद्वेषधारिणौ ।' तयोक्तम् । 'एतयोर्विद्याधरयोर्भवानपि परिज्ञाता । भगवतः प्रथमतीर्थनाथस्य सेवाहेवाकिनोर्नमिविनम्योर्धरणेन्द्रेण बह्व्यो विद्या दत्ताः । कियत्यो विद्याः कयापि रीत्या साध्यन्ते । सर्वासामपि पृथक् पृथक् साधनोपायः ।

काश्चित्पानीयमध्ये ऽमूः काश्चित् पर्वतमस्तके ।
काश्चित् श्मशानमेदिन्यां विद्याः साध्या जितेन्द्रियैः ॥ ३५६

ततः कुमार, एतावनेन वन्येन वेषेण शाबरीं विद्यां साधयन्तौ तिष्ठतः । तथैष विद्याधरः सपत्नीको वनान्तः स्वेच्छया परिभ्रमन्नस्ति ।' कुमारेणोक्तम् । 'कथं त्वं पुनर्जानासि, यथैष विद्याधरः ।' तया भणितम् । 'न जानामि' [किंतु] मयैकदा कीरमुखतः श्रुतमेतत् । एकस्मिन् दिने स्वीकृतदुरितौषधपौषधाहं भगवतो नाभिभवस्य पूजार्थं फलपत्रकुसुमानां ग्रहणाय वनान्तरं न गता, कीरः पुनर्गतः । स च मध्याह्नसमये व्यतिक्रान्ते समायातः सन् मया पृष्टः 'अद्य कथमेतावतीं वेलामतिक्रम्य भवान् समायातः' । तेन निगदितम् । 'अद्य त्वं वञ्चितासि, यल्लोचनानामाश्चर्यभूतं न किमपि दृष्टिपथमवतीर्णं ते, यतो द्रष्टव्यफलानि हि लोचनानि ।' ततो मयोक्तम् । 'राजकीर, त्वं कथय किं तदाश्चर्यम् ।'

§ ४६) ततस्तेन ममाग्रे निगदितम् । 'यथाद्याहं वनान्तर्गतः । तत्र च सहसा शङ्खतूर्यभेरीमृदङ्गभवो महान्निनदः श्रुतः । ततो मया सहर्षोद्भ्रान्तचेतसा कर्णः प्रदत्तः । कतरस्यां दिशि ध्वनिविशेषः । ततस्तदनुसारेण यावद्गच्छामि तावद्भगवतो नाभिसूनोः प्रतिमायाः पुरो दिव्यं नरनारीजनं प्रणाममादधानं, तथाहार्यं वाचिकमाङ्गिकं सात्त्विकं चेति चतुर्विधमभिनयं वितन्वन्तं विलोक्य मया चिन्तितम् । 'एते न तावद्देवा अवश्यम्, यतो मयैकदा भगवतः केवलिनः केवलमहिमायै समेतानां देवानां चरणा भूमितले न लगन्ति, लोचनान्यनिमिषाणि चैतद्दृष्टमासीत् । एतेषां पुनश्चरणा महीपृष्ठे लग्ना लक्ष्यन्ते, सनिमिषाणि नयनानि च । तेन जाने नैते त्रिदशाः, अतिसश्रीकतया न मानुषा अपि, किंतु गगनाङ्गणचारिणो विद्याधरा इमे । 'तावत्पृच्छामि किमेतैः प्रारब्धम्' इति चिन्तयंश्चूतपादपाधः क्षणं निषण्णः । अत्रान्तरे यथास्थानमासीना विद्याधरनरा विद्याधर्यश्च । ततस्तेषामन्तःस्थितेनैकेन विद्याधरतरुणेनानेकरत्ननिर्मितो विमलदिव्यजलपूर्णकलशो जगृहे, तादृश एव द्वितीयो विद्याधरीणां मध्ये ऽत्यन्तरूपशोभया विद्याधर्यैकया च । ताभ्यां प्रमुदितचित्ताभ्यां भगवतः श्रीयुगादिभर्तुः स्नात्रं विधाय सुमनोभिः पञ्चवर्णैर्जलस्थलभवैरर्चा रचयांचक्रे । ततस्तौ स्तुत्वा भगवन्तं धरणेन्द्रस्य नागभूपतेराराधनाविधौ कायोत्सर्गमेकं द्वितीयं तदग्रमहिष्यास्तृतीयं शाबरविद्यया विरचय्य शरीराद्विभूषणान्युत्तार्य

4) B रूक्षिकां. 6) P स्याद्दक्षिणो वामपार्श्वके, B originally स्याद्दक्षिणे वामो दक्षिणो वामपार्श्वके, but it is improved thus (with some marginal addition: स्याद्दक्षिणे वा मस्तके वा वामपार्श्वके ।. 8) B inter. सर्वं & सत्त्वे. 19) P अंब for अमूः, P O om. काश्चित् पर्वतमस्तके. 21) P B om. वन्येन. 23) P B om. [किंतु], P B °पौषधा भगवतो. 24) B adds गता before फलपत्र°, B om. न गता, B om. स च. 26) P B om. ते. 32) B केवलिमहिमायै. 35) P om. इमे. 36) B °नरवरा for °नरा. 40) B शाबरविद्यया.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

च शबरवेषमङ्गीचक्रतुः । तयोर्महाधिराजेन शबरेण महाशाबरी विद्या न्यवेदि । ताभ्यां मौनव्रतं प्रतिपद्य सद्यः श्रीभगवान्नाभिभवो गुरुवर्गः साधर्मिकलोकश्च ववन्दे । विद्याधराणां मध्ये कृताञ्जलिनैकेन विद्याधरेणोक्तम् । 'भो लोकपाला विद्याधराश्च श्रूयताम् । पूर्वं शबरशीलो विद्याधरशेखरः सर्वांसिद्धशाबरविद्याकोशः सप्रभावश्चिरं राज्यं परिपाल्य समुत्पन्नवैराग्यरञ्जितः प्रतिपन्नश्रीजिनधर्मः सर्वसंगं परित्यज्यात्रैष गिरिकुहरे स्थितः । तस्य पुत्रेण शबरसेनापतिना पितृभक्त्यात्रैव स्फाटिकमयी भगवत्प्रतिमा निवेशिता, तदाप्रभृत्येतद्विद्यासिद्धक्षेत्रम् । ततो ऽमुष्य प्राप्तशबरवेषस्य भगवन्नाभिभवप्रभावतो धरणेन्द्रस्याभिधानेन चैषा निष्प्रत्यूहं सिद्धिमेतु । ततः सर्वे ऽपि विद्याधरा 'अस्य शीघ्रं विद्या सिध्यतु' इति प्रोच्य तमालदलश्यामलं गगनतलमुत्पेतुः । ततस्तौ द्वावप्यङ्गीकृतशबरवेषौ तत्रैव तिष्ठतः । ततः कुमार एतेन कीरकथनेन जाने कृतशबरवेषौ विद्याधराविमौ ।' इत्याकर्ण्य कुमारेणोक्तम् । 'पणिके, तन्ममैकं वचः कर्णकटुकं श्रूयताम् ।' तयोक्तम् । 'ममादेशं देहि ।' कुमारेण जल्पितम् । 'अत्रागतस्य मम कालक्षेपः समजनि, स्वस्ति भवतु भवत्यै, मया पुनरवश्यं दक्षिणापथे गन्तव्यम् ।' पणिकया भणितम् । 'कुमार, सत्यमेतद्यत्कदापि प्राघूर्णकैर्ग्रामा न वसन्ति । पुनर्निजवृत्तान्तनिवेदनप्रसादेन मम मनःप्रमोदो विधीयताम् । ततः कुमारेण मूलादारभ्य वनप्रदेशं यावच्चरितं निजं निगदितम् । पणिकयोक्तम् । 'कुमार, त्वद्वियोगेन जनकजनन्यौ विविधाबाधाभाजनं भविष्यतः, अतो यदि भवते रोचते तदा तव कायकौशलकथनार्थं कीरं प्रेषयामि ।' 'एतद्भवतु' इति प्रोच्य समुत्थाय कुमारश्चचाल । ततस्तत्संगतिविरहजातमन्युभरसंभूतबाष्पजललवप्रतिरुद्धनयनालोकप्रचारा पणिका कीरेण समं कियतीं भुवमनुगम्य कुमारमापृच्छय व्यावर्तत । कुमारो ऽपि क्रमेण क्रामन् विन्ध्याटवीं सह्यगिरिं निकषा कस्यचित्सरसस्तीरे सार्थमेकमावासितं समीक्ष्य पुरुषमेकं पप्रच्छ । 'भद्र, निवेदय कुतः सार्थः समागतः, कुत्र वा गमी ।' तेनोक्तम् । 'विन्ध्यपुरादायातः, काञ्चीपुरीं गमिष्यति ।' कुमारेण भणितम् । 'विजयापुरी कियद्दूरे, इति जानासि त्वम् ।' तेनोक्तम् । 'देव, दूरे विजयापुरी परं दक्षिणमकराकरतीरस्था भवतीति श्रूयते ।' कुमारेण चिन्तितम् । 'सार्थेनैतेन समं मम गमनं कमनीयम् ।' ततः कुमारः सार्थपतिं वैश्रवणदत्ताभिधमुपगम्य बभाषे । 'हे सार्थपते, त्वया सह समेष्यामि ।' तेनोक्तम् । 'भवत्विति महाननुग्रहः कृतः ।' ततः सार्थपतिना प्रयाणकं चक्रे ।

§ ४७) अत्रान्तरे सहस्रकरः पश्चिमाचलचूलामाललम्बे । सर्वत्र तमःप्रसरः प्रससार । ततः कस्मिंश्चित्प्रदेशे स सार्थ आवासं रचयांचक्रे । ततो भवितव्यतया संनद्धैर्भिल्लैः समाकृष्टनिष्कृपकृपाणैरारोपितचापदण्डैः 'गृहाण गृहाण' इति वदद्भिः सार्थः सकलो ऽपि लुण्टितः । तदसमञ्जसमालोक्य लोकः पलायनं चकार । इतश्च सार्थपतिदुहिता धनवती प्रनष्टे परिजने व्यापादिते पादातिकजने पलायिते सार्थपतौ किरातैर्गृह्यमाणा भयभ्रान्तलोचना निःश्वासधोरणीं मुञ्चमाना वेपमानपीनपयोधराशरणा 'शरणं शरणम्' इति प्रार्थयमाना कुमारकुवलयचन्द्रमुपससर्प ।

ततस्तयोचे 'शौर्येण दृश्यसे सिंहसंनिभः । रक्ष भिल्लजनत्रस्तामस्ताशङ्क त्वमद्य माम् ॥' ३५७
तेनोदितं 'भयभ्रान्तलोचने चारुलोचने । मा तनु स्वतनुत्यागादपि त्रातास्मि ते ऽधुना ॥' ३५८

इति प्रोच्य,

कुतो ऽपि भिल्लादाच्छिद्य सशरं स शरासनम् । शरैर्वर्षितुमारेमे धाराभिरिव वारिदः ॥ ३५९
जर्जरं तत्प्रहारौघैर्बलं नष्टं दिशोदिशि । वीक्ष्य पल्लीपतिर्योद्धुमुद्धतः समुपस्थितः ॥ ३६०
निशातशरधोरण्या तदा ताभ्यां परस्परम् । अकालवृष्टिर्विहिता कालरात्रिरिवापरा ॥ ३६१

§ ४८) ततः कुमारेण रोषारुणेक्षणेन स्तम्भनमन्त्रः प्रयुक्तः । भिल्लेशेनापि कुमारे स एव मन्त्रः प्रयुक्तः, परं तेन कुमारस्य न किमपि जातम् । ततो भिल्लपतिना चिन्तितम् । 'अहो, को ऽप्येष महासत्त्वः सर्वकलासु कुशलो मया हन्तुं न शक्यते, किंतु प्रत्युतामुष्य हस्ततो मया मृत्युः प्राप्यः, तदलं संप्रहारेण, सर्वसंगपरित्याग एव मम श्रेयान् संप्रति' इति चिन्तयन् भिल्लस्वामी रणधरण्या हस्तशतमपसृत्य करालं करवालमुत्सृज्य प्रलम्बमानभुजपरिघः परित्यक्तदुष्प्रणिधानः स्वीकृतसाकारनियमः पञ्चनमस्कारं समुच्चरन् समशत्रुमित्रः कायोत्सर्गमङ्गीचकार । तादृशवृत्तं वीक्ष्य पञ्चनमस्कारवचः श्रुत्वा

1) B महाशाबरविद्या. 8) B कृतशाबरवेषौ. 12) B प्रावूर्णिकै°. 13) P om. वन, B om. निजं. 16) B कियतीं. 21) C om. मम. 22) B om. हे. 31) B धुनु for तनु. 32) B om. इति प्रोच्य. 41) B पंचनमस्कारमुच्चरन्.

सहसा संभ्रान्तः कुवलयचन्द्रः 'साधर्मिको ऽयम्' इति तत्समीपमुपागत्य प्रोवाच । 'किं त्वया सहसा साहसमनीदृशं प्रारब्धम्, मुञ्च कायोत्सर्गम् । ममापि पूर्वकृतपापस्यापराधं सहस्व ।' ततः पल्लीपतिना चिन्तितम् । 'यदसावपि साधर्मिकस्ततो मम मिथ्यादुष्कृतं दातुमुचितम् ।' इति चिन्तयन् कायोत्सर्गं प्रोज्झ्य कुमाराय वन्दनकं विदधे, कुमारेणापि तस्य च । एवं तौ परस्परं दर्शितधर्मरागौ प्रीतिस्यूतचेतसौ प्रसरद्बाष्पबिन्दुदृष्टी बभूवतुः । कुमारेणोक्तम् । 'यद्येतत्कथमेतत्, अथैतत्किमपरेण ।' एतदाकर्ण्य भिल्लपतिरूचे । सर्वमपि जाने परं दुष्टैः कर्मवैरिभिर्लोभपरवशः कृतः, परं त्वत्संगत्या संप्रति तपोनियमध्यानयोगैरात्मानं साधयिष्ये ।' कुमारेणोक्तम् । 'न सामान्यं तव चरित्रम् । ततः कथय कोऽसि ।' स पल्लीपतिर्जगाद । 'नास्मि भिल्लाधिपः, एतत्तव विस्तरेण कथयिष्ये । सांप्रतं पुनः सार्थं भिल्लजनैर्लुण्ट्यमानं निवारयामि ।' ततः पल्लीपतिना सार्थः सर्वो ऽपि भिल्लेभ्यो रक्षितः । भिल्लाः सर्वे पल्लीपतिभयतो दूरं नेशुः । यद्यस्य संबन्धि वस्तुगतमासीत् तत्तस्य पल्लीपतिरर्पयामास । भिल्लैः सार्थपतिर्नश्यन् धृत्वा सेनापतये ऽर्पितः । तेनोक्तं च । 'सार्थपते, मा भयं भज, निजं पण्यं गृहाण' इति वदन् सेनापतिरुत्थाय कुमारेण समं सह्यशिखरिशिखरसंश्रयां महापल्लीमाटिवान् ।

§ ४९) कुमारेण च पल्लीं नगरीसमानश्रियं तथा तन्मध्यस्थप्रासादं विशदं विलोक्य पृष्टम् । 'यदमुष्य संनिवेशस्य किमभिधानम् ।' तेनोक्तम् । 'एतस्याः पल्ल्याश्चिन्तामणिरित्याख्या ।' एवमन्यान्यप्रश्नपरः कुमारस्तेन समं राजमन्दिरमाससाद । ततो द्वावपि मणिमयेषु भद्रासनेषु संनिविष्टौ । ततश्च स्नानपीठमलंकृत्य विकसन्मालतीगन्धसनाथं लक्षपाकं तैलमुत्तमाङ्गे प्रक्षिप्य संवाहकैः कमलकोमलकरतलैः सुखेन संवाहितौ । ततस्तौ कोष्णैर्जलैरङ्गं प्रक्षाल्य शुचिभूय चन्द्रांशुनिचयव्यूते इव श्वेतवाससी परिधाय ततस्तदन्तर्वर्तिनि देवतायतने कनकमयकपाटसंपुटमुद्घाट्य शिवश्रियो द्वारमिव भगवतां जिनानां कनकरत्ननिर्मिताः प्रतिमाः समभ्यर्च्य जिनस्तुतिचतुर्विंशिकां परामृश्य प्रणिपत्य च भोजनमण्डपमुपाजग्मतुः । ततश्च यथासुखं भोजनं निर्माय स्वैरं परस्परं यावद्वार्तां कुर्वन्तौ तिष्ठतस्तावदकस्मात् प्रावृतसितधौतनिवसनो लोहदण्डव्यापृतकर एकः पुरुषः समागत्य सेनापतेः पुरोभूय इदं पपाठ ।

'जानास्यपारसंसारमसारं सागरोपमम् । वचश्च वेत्सि श्रीजैनं शिवशर्मैकदेशकम् ॥ ३६२
एतदध्यवसायात्तु विरतिं न करिष्यसि । अतस्त्वां लोहदण्डेन ताडयिष्यामि निष्कृपम् ॥' ३६३

इति वदता तेन सेनापतिरुत्तमाङ्गे मनाक् ताडितः । ततो महागारुडमन्त्राभिमन्त्रितसिद्धार्थप्रहतो भुजंगम इवाधोमुखः स्थितः सेनापतिरित्यचिन्तयत् । 'अहो, कौतुकं यदनेन निर्दयमनसा सुपुरुषस्येदृशस्य पश्यतो ऽहं महतः कर्कशं भणितश्च । अथवा मम प्रमादिन एतेन रम्यमेव विरचितम् ।

जरामृत्युमहारोगदुःखतप्ता भ्रमन्ति हि । संसारघोरकान्तारप्रान्तरान्तस्तनूभृतः ॥ ३६४
तदन्तः को ऽपि यो भव्यः कर्मग्रन्थिं विभिद्य सः । सम्यक्त्वरत्नं दुष्प्रापममूल्यं स्वीकरोति च ॥ ३६५
तदेव फलकं प्राप्य भवाम्भोधौ प्रमाद्यति । यः शरीरी स सद्यः स्वं तनुते ऽतनुदुःखभूः ॥' ३६६

इति चिन्ताचान्तमनसं सेनापतिं बाष्पजललवप्लुतनयनयुगलं प्रमुक्तदीर्घनिःश्वासं दीनास्यं निरीक्ष्य कुमारः प्रोवाच । 'भद्र, कथय क एष वृत्तान्तः ।' ततो दीर्घं निःश्वस्य सेनापतिर्जजल्प । 'कुमार, श्रूयताम् ।

§ ५०) लोकंपृणगुणग्रामाभिरामास्ति गतावमा । धरारामाललामश्रीः पुरी रत्नपुरी वरा ॥ ३६७
स्वःपुरीवोग्रधन्वाढ्या व्योमश्रीवत्समङ्गला । अलकावत्सधनदा या लङ्केव सदा वरा ॥ ३६८
वनावनीव सन्नेत्रा कलिता ललिताशना । सपुंनागा सनारङ्गा श्रीफलैः सुमनोरमा ॥ ३६९
तत्र रत्नमुकुटाङ्कः प्रह्वविश्वमहीपतिः । समस्ति पृथिवीपालः पालिताखिलभूतलः ॥ ३७०

तदङ्गजौ दर्पफलिको भुजफलिकश्च । एवं च तस्य राज्यं पालयत एकस्मिन्नमावास्यादिने प्रदोषे वासवेश्म प्रविष्टस्य किमपि चिन्तयतः प्रदीपे पतङ्ग एकः समागतः । राज्ञा प्रकृत्यनुकम्पितहृदा चिन्तितम् 'अयं वराको मर्तुकामस्तस्मादमुष्य परित्राणं करोमि' । इति चिन्तयता तेन करेण गृहीत्वा वारत्रयं कपाटविवरेण बहिः प्रक्षिप्तः । स पुनरपि दीपान्तिकमायातः । राज्ञा चिन्तितम् । 'उपायरक्षितो जन्तुः

5) B तदाकर्ण्य for एतदाकर्ण्य. 7) P O साम्यं तव. 8) P भिल्लाभिधः. 9) B सर्वेपि for सर्वे. 11) B om. च. 16) B °समानं for सनाथं. 21) O °निवसिनो. 22) P जानाम्यपारं B जानास्यपारं. 33) B has some marginal glosses on these verses: इंद्रास्त्रेन आढ्या, पक्षे उग्राणि धनूंषि येषां ते उग्रधन्वानो धनुर्धरास्तैराढ्या ॥ धनदा दानेश्वरास्तैः सहिताः ॥ दावं संतापं राति यच्छंति दावरा राक्षसास्तैः सहिता पुरी सदावरा प्रधाना ॥ नेत्रैर्वृक्षविशेषैराकलिता संबद्धा, पुरी पक्षे सतां नेत्रा स्वामिना सहिता ॥ ललिता मनोहरा असना प्रियं[गु]वृक्षा यत्र, पुरी पक्षे ललितानि आसनानि यस्यां ॥ नारंगवृक्षसहिता पुरी सह नारंगैर्जनैर्विर्वर्त्तते स नारंगा ॥ बिल्वफलैः ।.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुचिरं कालं जीवति'। इति ध्यात्वा प्रागुद्घाटिते समुद्गके राज्ञा पतङ्गं प्रक्षिप्य पिधानं च दत्त्वा स उपधाने मुमुचे। अथ भूपतिर्निद्रासुखमवाप्य प्रगे समुद्गकं यावन्निरूपयति तावत्तत्र गृहोलिकामद्राक्षीत्। तेन समुद्गकं च पतङ्गशून्यं निरीक्ष्य चिन्तितम्। 'यदसौ निश्चितं कुड्यमत्स्येन भक्षितः। नास्ति कुत्रापि मोक्षो विहितस्य कर्मणः।

पूर्वजन्मार्जितं कर्म यावन्मात्रं शरीरिणा। शुभं वाप्यशुभं वापि तावन्मात्रमवाप्यते ॥ ३७१

इति महीपतेः सहसा वैराग्यमार्गजाङ्गिकस्य जातिस्मृत्या पूर्वभवः प्रकटीबभूव।

यथा पालितचारित्रः स्वर्गलोकं गतः पुरा। सुखं भुक्त्वा ततश्च्युत्वात्रैव भूपो भवं भुवि ॥ ३७२

§ ५१) अथ तस्य तत्रावसरे संनिहितया कयाचिद्देवतया रजोहरणवदनवस्त्रिकापात्रादिनवविधोपधिसमर्पणं चक्रे। ततः स राजर्षिर्यावत्कचांलुञ्चितुं प्रवृत्तस्तावद्विभाता विभावरी। पेठुर्मङ्गलपाठकाः।

'पूर्वमेष मुनेर्धर्मे जागरां प्रत्यपद्यत। ततो दिनमुखे न्विश्रं वयं सूर्यपरायणात् ॥ ३७३
उदयाचलचूलायामारुरोह दिवाकरः। पद्मालयेषु पद्मान्यवापन् भुवि विनिद्रताम् ॥ ३७४
प्रससार च सर्वत्र पत्रिकोलाहलोऽतुलः। ववौ वायू रतोद्भूतश्रमबिन्दुततिं हरन् ॥ ३७५
अन्धकारं करोति स्म क्लीबवत्प्रपलायनम्। अन्धकाररिपुक्रूरकराघातभयादिव ॥ ३७६
इन्दीवरं परित्यज्य षडंह्रिर्भजतेऽम्बुजम्। कुसेवक इवाश्रीकं सश्रीकं स्वामिनं नवम् ॥ ३७७
स्वरैर्निवेदयन्तीव पक्षिणो जगतोऽप्यहो। श्रियः प्रयान्ति चायान्ति चित्रभानुनिदर्शनम् ॥ ३७८
नभोलक्ष्मीरुदयिने सूर्याय ददते मुदा। तारापुष्पच्छलादर्घ्यं पाद्यं चेन्दुकराम्भसा ॥ ३७९
एवंविधे प्रभाते ऽत्र भूप मोहं परित्यज। केवलं परलोकस्य हितमर्थं समाचर ॥ ३८०

तच्च तादृशं स्तुतिव्रातं पठितं श्रुत्वा भगवान् महर्षिः कपाटसंपुटमुद्घाट्य वासवेश्मतो गिरिवरकन्दरात्कण्ठीरव इव निर्गतः। कृतकेशलुञ्चनः पात्ररजोहृतिमुखवस्त्रिकोपशोभितकरतलः पूर्वमेव शय्यापालिकाभिर्ददृशे। पूत्कृक्रे चेति। 'भो भोः परिजनाः, एतैत त्वरितमस्माकं स्वामी कामपि विडम्बनां प्राप्तः प्रयाति।' तदेवमाकर्ण्य ससंभ्रमवशस्खलन्नूपुररसनारवमुखरस्त्वरितमेवान्तःपुरपुरन्ध्रीजनो वाराङ्गनालोकः परिजनश्च तदा तत्रागतः प्रोवाचेति। 'नाथ, कथमस्मान्निरपराधांस्त्यक्त्वात्मानं विडम्ब्य प्रचलितः। अनाथास्त्वां विना वयम्।' एवमन्तःपुर्यादिजनस्य च विलपतोऽप्यदत्तसंलापो भगवान् गन्तुमारेभे।

श्रुत्वा विलपनं तस्य प्रोचिवान् मन्त्रिपुङ्गवः। 'किमेतद्देव ते वृत्तं मुनिवेषसधर्मिणः ॥' ३८१

§ ५२) एवं सचिवान्तःपुरीपरिजनेन पृष्ठलग्नेन समं भगवान् राजर्षिः पुरीबाह्योद्यानं संप्राप। तत्र च त्रसस्थावरजन्तुविरहिते *स्थाने प्रबोधाय प्रत्येकबुद्धः* समुपाविशत्। ततो मन्त्रिवर्गोऽन्तःपुरीजनश्च निविष्टः। तौ च द्वावपि दर्पफलिकभुजफलिकावत्रत्यौ पितुः समीपमुपविष्टौ।

ततो बोधविधानाय भगवान् मुनिसत्तमः। पापाहिजाङ्गुलिविद्यां प्रारेभे धर्मदेशनाम् ॥ ३८२
भयावहभवापाराकूपारान्तः परिभ्रमन्। चिरान्नृद्वीपमाप्नोति वहित्रभ्रष्टवङ्गवी ॥ ३८३
सद्ध्वनि सदाध्वन्यभावं भजत देहिनः। विध्यन्ति चरणं येन न तीक्ष्णा दुःखकण्टकाः ॥ ३८४
एकैकस्मिन् सप्त लक्षा भूजलानलवायुषु। प्रत्येकानन्तभेदे च वने दश चतुर्दश ॥ ३८५
[द्वे द्वे लक्षे समाख्याते प्रत्येकं विकलेन्द्रिये। देवतासु चतुर्लक्षी नारकेषु तथैव च ॥ ३८६
तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वेवं मनुष्येषु चतुर्दश।] लक्षाश्चतुरशीतिः स्युर्जीवानामिति योनयः ॥ ३८७
एतदुत्पत्तितो जीवा बहुशो दुःखभाजिनः। भवन्ति यावत् सम्यक्त्वं नाप्नुवन्ति शिवप्रदम् ॥ ३८८
प्रत्येकबुद्धो भगवान् देशनां क्लेशनाशिनीम्। अमात्यः स विनिर्माय विचचार धरातले ॥ ३८९

§ ५३) तस्य राज्ञ [आवां] सुभौ पुत्रौ। अहं ज्येष्ठो दर्पफलिकनामा, अपरो भुजफलिकः। ततः प्रभृत्यावां सम्यक्त्वमात्रश्रावकौ जातौ। तत्र मन्त्रिभिरयोध्यायामस्मत्पितृव्यस्य दृढवर्मणो भूपतेर्दूतप्रेषणपूर्वं तद्विज्ञापितम्। तेनेत्यादिष्टम्। 'यथा प्रथमसूनुर्दर्पफलिको राज्ये निवेश्य इति' तथैव राजलोकेन

5) शरीरिणां. 8) P has some blank space between वस्त्रिका & धोप°, B पात्रविधोपधि°, C वस्त्रिका [पात्रादिनव वि] धोप°. 10) B सूर्यपरायणाः. 11) P C पद्मालयानि. P has blank space between पद्मान्य and भुविनिद्रतां, C पद्मान्य-[नुवसुव] विनिद्रताम्. 14) P om. सश्रीकं. 15) B °निदर्शनम्. 18) P स्तुतिमतपठितं, संपुटं समुद्घाट्य. 20) P ° विडंबनं. 21) P °स्वमुखरितमंतःपुरपुरंध्री°. 22) B परिजनस्य, P B तदागतः for तदा तत्रागतः. 27) P inter. स्थाने & प्रबोधाय. 28) B द्वावपि भुजफलिकदर्पफलिकौ तत्र पितुः. 33) P B om. द्वे द्वे etc. to चतुर्दश put in square brackets. 37) B adds, after the line ending with धरातले, a line like this: ततः सर्वोपि लोकोसौ स्वस्वस्थानकमाययौ, P B om. तस्य राज्ञ [आवां] सुभौ पुत्रौ। अहं. 38) P B write generally दृढवर्म, but now and then B reads दृढवर्म as well, P °दूतः पूर्वं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिपन्नम्, परमेको मन्त्री तथैकश्चिकित्सक एका भुजफलिकजननी तद्वचो नामन्यन्त। ततस्त्रिभिरेकमत्यानपेक्ष्य परलोकमवगणय्य विमानं मम किमपि तदौषधमदायि, येन तदैव मम ग्रहिलत्वमुत्पेदे। अहं च कदाचिद्दिग्वासाः कदाचित्प्रावृताङ्गः कदाचिद्धूलीधवलितदेहः कदाचिद्गृहीतकरकर्परखण्डः सर्वत्र परिभ्रममाणो ऽत्र विन्ध्यगिरिशिखरिकुहरान्तराले क्षुधातृषाक्रान्तः पर्वतनदीषु सल्लकीहरीतकीतमालामलकदलफलप्राग्भारकषायितं तोयं वारत्रयं पीत्वा सर्वत्र दोषविप्रमुक्तः क्रमेण सावधानो ऽभवमिति। ततः स्वस्थचेतसा मया क्षुधार्तेन पुष्पफलेभ्यः स्पृहयालुनानेकभिल्लजनान्तस्थः प्रवररूपः पुरुष एको ददृशे। तेनाहमिमां पल्लीमानीतः। ततो वारवनिताजनेनावां स्नानं कारितौ। अथो देवतायतने मया तेन समं भगवान् जिनः प्रणतः। तथा भोजनमण्डपे यथारुचि आवाभ्यां भोजनं विदधे। ततः सुखासीनेन तेन जल्पितम्। 'भो भद्र, निवेदय केन हेतुनामुष्यामटव्यां निर्मानुषायां भवत्समागमः, कुतो जिनवचनप्राप्तिः' इति। मयोक्तम्। 'रत्नपुर्यां रत्नमुकुटनरेन्द्रस्य सूनुर्दर्पफलिकनामाहम्। स च मम पिता प्रत्येकबुद्धो ऽभवदिति। ततः स्वीकृतजिनधर्मो ऽहमपि कर्मवशात एतस्यां पल्ल्यामागतः।' तेनोक्तम्। 'यदि भवान् सोमवंशसंभवो रत्नमुकुटनरेन्द्रपुत्रस्ततः सुन्दरमजायत, यत आवयोरेक एव वंशः। ततस्त्वं राज्यं स्वीकुरु।' ततस्तेन पल्लीपतिना सर्वपल्लीपतिप्रत्यक्षं सिंहासने ऽहं निवेशितः। सर्वे ऽपि पल्लीपतयो भणिताः। 'यद्भवतामयमेव नरेश्वरः। अहं पुनर्यन्मनो ऽभिमतं तत्करिष्यामि' इति भणित्वा पल्लीपतिर्निर्गतः। तस्यानुगमनं विधाय सेवकाः पल्लीपतयो निवर्तिताः। अहं पुनः स्तोकमपि भूमिभागमग्रतो ऽगमम्। व्याघुटमानस्य मे तेन शिक्षा प्रदत्ता। 'यद् वत्स, जीववधो न विधेयः। भव्यरीत्या प्रजाः पालनीयाः। प्राणान्ते ऽप्यकृत्यं नाचरणीयम्। श्रीजिनधर्मे कदाचन न प्रमादः कार्यः' इत्युदित्वा पल्लीपतिः कुत्रापि गत इति न ज्ञायते। अहमिति मन्ये कस्यचिद्गुरोरन्तिके प्रव्रज्यामभ्युपपन्नः। तद्दिनादारभ्याह कुमार, न को ऽप्यसद्राज्ये ऽनीतिविधाता।

§ ५४) अहमपि पुनः कियता कालेन कर्मवशतो महामोहग्रस्तचित्तो विस्मृततत्सर्वशिक्षः सर्वान्यायपरः समभवमिति जर्जरितकलशप्रक्षिप्तपयोवज्जिनवचनरहस्यं सर्वमपि मम गलितम्। शिक्षाशेषापि दुर्जनप्रीतिरिव विलयं गता। अतो मयैष पुरुषो निर्देशितः, यल्लोभेनाहमीदृशीमवस्थामानीतस्तत्त्वया लोहदण्डेनाहं स्मरणार्थं ताडनीयः। ततो ऽयमपि प्रतिदिनं मां लोहदण्डेन ताडयति।' ततः कुमारेणोक्तम्। 'अमुं वृत्तान्तमाकर्ण्य कस्य चेतो न चित्रीयते। महासत्त्वो रत्नमुकुटः प्रत्येकबुद्धो ऽजनि। दुर्लभो जिनप्रणीतः पन्थाः। दुर्जयो लोभपिशाचः। तद् भो महाशय, किं खेदमुद्वहसि, यन्मया तच्छिक्षा विस्मृता [इति] अनुशयवतस्तव साद्यापि तथैवास्ते, तस्मात्त्यजाचद्यं किं तेन।' एवं कुमारेणोक्ते तेन जगदे। 'एवमेतन्न संदेहः, परं भवान् विज्ञानरूपकलाकलापविनयदाक्ष्यदाक्षिण्यमुख्यैर्गुणैर्ज्ञायते यथा महाकुलप्रसूतो महासाहसिकः। पुनरिदं न जाने यत्कुमारस्य कीदृक्कुलम्, किमभिधानं, तन्निवेदय।' कुमारेणोक्तम्। 'अयोध्यानायकस्य दृढवर्मणस्तव पितृव्यस्य पुत्रः को ऽप्यस्ति किं वा न। तेन दीर्घं निःश्वस्योक्तम्। 'कदाचिन्मया पथिकस्यैकस्य पार्श्वे श्रुतं, यथा दृढवर्मणो महीपतेर्लक्ष्मीप्रसादतः पुत्रप्राप्तिरभूत्। पुनर्न जाने पश्चात् किं तत्र वृत्तम्।' कुमारेण भणितम्। अहं स एव दृढवर्मनरेन्द्रस्य कमलाप्रसादलब्धः कुवलयचन्द्राभिधस्तनूजः।' एवं निशम्य तेनोक्तम्। अये, मम भ्राता भवान्' इति। ततो गलन्नयनयुगलजलबिन्दुर्दर्पफलिकः पप्रच्छ। 'कथय कथं कुमार, एवंविधे तपात्यये जलदजलधाराभिपूरितधरातले सर्वजनाल्हादविधायिनि राजहंसप्रवासदायिनि वियुक्तयौवनमनोवनावनीवनवह्नौ सकलकमलवनशमनशमने मुदितमत्तमयूरसमुच्चरितकेकारवे कलिकाल इव संचरद्भिरसनमण्डले कुभूपताविव प्रनष्टसन्मार्गे जंबालजालजटिलमार्गलग्नकण्टककोटिदुःसंचरे पयःपूरवाहेण पतितगर्ताशतसंकुले प्रचण्डपवनोच्छालिताभ्रंलिहलहरिदुरुत्तरगिरिसरिन्निकरे स्वं स्थानं विमुच्य क्व चलितो ऽसि।' कुमारेण सर्वमपि निवेदितम्। 'यत्पुनः संप्रति मया विजयापुर्यां कुवलयमाला प्रबोध्या' इति।

§ ५५) एवं दिनत्रयं तत्र प्रीत्या स्थित्वा कुमारेणोक्तम्। 'यदि तवादेशो भवति तदाहं व्रजामि' इति। नृपेण भणितम्। 'त्वयावश्यमेव गन्तव्यं यद्येवं ततो ऽहं त्वत्कार्यकौशलहेतवे विजयापुरीं यावत्स्वसैन्यकलितः समायामि, यतो भवानेकाकी मार्गपरिज्ञानानिपुणः।' कुमारेणोक्तम्। 'यतो ऽनुबद्धवैरा भवन्तः, स्तोकं बलम्, अतो भवतामागन्तुं नोचितम्' इत्याकर्ण्य तर्हि 'भवतु भवते स्वस्ति' इत्युदित्वा

2) C [विमाननां] for विमानं. 5) B क्रमेण समभवमति. 8) B यथारुच्या. 10) B om. इति. 16) P om. मे, B adds मम for it on the margin. 18) B °दारभ्य कुमार. 26) P B om. [इति]. 34) B राजहंसप्रदायिनि. 37) P om. क्व. 38) P B बोध्या for प्रबोध्या, B om. इति (this portion added on the margin).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पल्लीनृपतिः कुमारस्य दक्षिणापथं प्रचलतो ऽनुगन्तुं प्रवृत्तः। ततः कुमारं तरुणतरवनलतागुल्मान्तरितमवगम्य भूमिपः सदनमागत्य माननीयान् संमान्यापृच्छ्य प्रकृतिजनं राज्यव्यवस्थां च कृत्वा दीनेभ्यो दानं वितीर्यात्यन्तदुस्सहतद्विरहदहनदन्दह्यमानतनुना वारविलासिनीजनेन दीनवदनं विलोक्यमानो व्रताय निःससार। कुमारो ऽपि क्रमेणानेकगिरिसरिन्महाटवीमुलङ्घयन्ननेकग्रामाकरपुरेषु कौतुकानि प्रेक्षमाणो मकराकरतटस्थितां विजयापुरीमवाप।

सुजातयः कुलीनाश्च स्निग्धमुग्धालिसेविताः। सदारामा बहिश्चान्तर्यत्र सन्ति विराजिताः॥ ३९०
[..।] वापीतटमणिमयागारविद्योतिताम्भसि॥ ३९१
स्त्रीणां स्तनाधरेषु स्यात्करपीडनखण्डने। स्नेहहानिः प्रदीपेषु यदन्तर्न पुनर्जने॥ ३९२
उत्तुङ्गाः कुम्भिनः स्फूर्जद्भद्रजातिसमाश्रिताः। मर्त्याश्च यत्र विद्यन्ते भद्रजातिमनोहराः॥ ३९३
नरा विरेजिरे यत्र द्विधा विक्रमशालिनः। द्विधा सुवर्णसश्रीका कलाकेलिप्रिया द्विधा॥ ३९४
यत्र जन्यमजन्यं च जनानां न कदाचन। अतस्तु मार्गणः को ऽपि न वारे न च मन्दिरे॥ ३९५

§ ५६) ततः कुमारस्तदुत्तरदिग्विभागे चरणचङ्क्रमणाक्षमः क्षणं विश्रम्य व्यचिन्तयदिति। 'एषा सा विजयापुरी या साधुना निवेदिता, परं पुनः केनोपायेनात्र कुवलयमाला द्रष्टव्या' इति विचिन्त्य कुमारः समुत्थाय नानाविधवर्णरत्नविन्यासोच्चचारुकाञ्चनघटितप्राकारवलयोपशोभमानविद्रुममयगोपुरकपाटसंपुटां पुरीं स यावत्कियद्भूभागं व्रजति स्म तावत्पयोहारिणीनामनेकशो वार्ताः शुश्रावेति। कयाचिदुक्तम्। 'एषा कुवलयमाला कुमारिकैव क्षयं यास्यति न च को ऽपि परिणेष्यति।' अन्यया भणितम्। 'विधिना विवाहरात्रिस्तस्या न विहिता, यतो नाम रूपयौवनविलाससौभाग्यगर्विता कुलरूपविभवलावण्यसंपूर्णानपि नरनाथपुत्रान्नेच्छति।' तथानेकदेशसमायातव्यवसायिनां विचित्रा भाषाः शृण्वन् विपणिश्रेणिमार्गे वणिजां विविधानुल्लापानाकर्णयन् नागरवनिताधवलविमललोचनमालाभिरभ्यर्च्यमानः शिखण्डिपतत्रनिर्मितातपवारणशतसंकुलद्वारप्रदेशम् अनेकसेवकलोकानवरतयातायातपार्थिवमनिगर्म रङ्गत्तुङ्गतुरङ्गनिष्ठुरखुरक्षुण्णक्षोणितलं बन्दिवृन्दपठ्यमाननृपगुणग्रामस्तुतिशतमुखरितदिगन्तरं वैरिवारनिवारणवारणसंचरणकपोलपालिविगलद्दानजलजम्बालजटिलं विजयसेननरेश्वरस्य राजाङ्गणमाजगाम। तत्र च राजलोकं सर्वमपि चिन्तापरं करतलन्यस्तमुखकमलं विलोक्य कुमारेण को ऽपि राजपुरुषश्चिन्ताकारणं पृष्टः। तेनोक्तम्। 'भो महासत्त्व, नैषा दुःखचिन्ता, किन्त्वत्र भूपतिपुत्र्या कुवलयमालया पुरुषद्वेषिण्या राजद्वारे पत्रे लिखित्वा गाथायाः पाद एको ऽवलम्बितो ऽस्ति। यः को ऽप्येनां गाथां संपूर्णां करोति स मां परिणयति न कश्चिदन्यः। ततस्तां सर्वो ऽपि नृपतिलोकः स्वस्वमत्यनुसारेण चिन्तयन्नस्ति।' कुमारेणोक्तम्। 'कीदृशः स पादः।' तेनोक्तम् 'एष ईदृशः'। यथा "पंच वि पउमे विमाणम्मि।" कुमारेण भणितम्। 'यदि तावदेनां गाथां को ऽपि पूरयति ततस्तस्याः पूरितायाः किमभिज्ञानम्।' तेनोक्तम्। 'सा चैवं कुवलयमाला तदभिज्ञानाभिज्ञा। यतः पूर्वमेवैतया पादत्रयं गाथायाः पत्रके लिखित्वा गोलके निक्षिप्य तदुपरि राजमुद्रां दत्त्वा कोशवेश्मनि निचिक्षिपे।' कुमारेण चिन्तितम्। अहो, प्रकटीभूता मायादित्यस्य माया।'

§ ५७) अत्रान्तरे राजद्वारे जनस्य जलधिजलगम्भीरः कलकलो ऽभवत्। तत्र सर्वमपि लोकं प्रलयकालवत्क्षुब्धहृदयं वीक्ष्य कुमारेण चिन्तितम्। 'क एषो ऽकाण्डोत्पातः' तत्सत्यमभूयत् 'शान्तिं कुर्वतां वेतालोत्थानम्' इति यावत्कुमारो निरूपयति तावज्जयवारणवारणः प्रोन्मूलितालानस्तम्भश्छेदितनिबिडनिगडः प्रोद्यन्मदुर्दमः संमुखमायातः।

शिलोच्चय इव प्रोच्चैः सतः प्रालेयशैलवत्। कम्पाङ्कमपि वेगेन यो जिगाय मतङ्गजः॥ ३९६

---

4) B °टवीर्गमुलंघ°. 6) P leaves blank space विराजिताः and नयागार°, B विराजिताः। वापीतटमणि (णी ?) मयागारविद्योतितांभसि, O leaves blank space between विराजिताः and नयागार (standing for मयागार of the text). On these verses B has some marginal glosses: यस्यां नगर्यां सत्प्रधाना आरामा बहिर्भागे तथाऽतर्मध्ये सदा रामाः स्त्रियः संति। सुमालतीसहिता पक्षे सुगोत्रा॥ ऽलिभिः भ्रमरैः सखीभिः सेविताः॥ शकुनैः विशेषेण राजिताः शोभिताः। मंदो भद्रो मृगो मिश्रश्चतस्रो गजजातयः॥ प्रधानपराक्रमेण शालिनः। विशिष्टः क्रमो विक्रमः सदाचारस्तेन शालिनः॥ कांचनवत्सश्रीकाः यशसा च॥ कलानां गीतनृत्यादीनां या केलिर्विलासः तया वल्लभाः अथवा स्मरवन्मनोहराः॥ विरोधभंग इत्थं। जन्यं संग्रामः। ऽजन्यमुत्पात [:]यत्र नास्तीत्यर्थः। तत्कारणात् मार्गणो बाणो याचको वा न कस्यापि द्वारे न कस्यापि मंदिरे कः परामर्शः संग्रामाभावात् बाणो न। ईतेरभावात् याचको न॥ 20) P शतसंकुलद्वारं, B °नवरततयाप°. 22) P °द्दानजंबाल°. 29) B om. तेनोक्तम्. 34) B om. इति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं तादृशं कुपितं साक्षात्कृतान्तमिवायान्तं राजा कुवलयमालया समं विलोकितुं शिरोगृहमारुरोह। कुमारस्य च पुरो गजं सविध एव वीक्ष्य नृपतिना समादेशितम्। 'भो भद्र, सत्वरमपसर यतस्त्वं बालः।' इति नृपवचो निशम्य रोषारुणलोचनः कुमारः सहसा भूयसा तेजसा ज्वलन् जयकुञ्जरं वशीकृत्य दशनयोः पदद्वयं दत्त्वा कुम्भस्थलमलंचकार। तत्रस्थेन तेन पठितम्।

'कोसंबिधम्मनंदणमूले दिक्खा तवं च काऊण। कयसंकेया जाया पंच वि पउमे विमाणम्मि॥'

तदाकर्ण्य पूरितेयममुना 'समस्या' इति वदन्त्या कुवलयमालया मकरन्दगन्धलुब्धागतालिमालारवमुखरितासितकुसुमवरमाला कुमारस्य योग्या प्रेषिता। तेन च कण्ठकन्दले समारोपिता। रोमाञ्चकञ्चितेन नृपेणोक्तम्। 'वत्से कुवलयमाले, साधु साधु वृतम्।' तावत्तत्र पूरितायां समस्यायां राजलोकेन जयजयारावश्चक्रे। अहो, मनुजो ऽपि को ऽप्येष दिव्यप्रभावः। ततश्च,

तदुपरि परितः सुरैरदृश्यैः सुरपथतो मुमुचे प्रसूनवृष्टिः।
असमगुणगणप्रमोदपूर्णैर्भवति हि भाग्यभृतां किमूनमत्र॥ ३९७

§ ५८) अथ पूर्वोदितो दृढवर्मराजप्रतिपन्नसूनुर्मालवराजपुत्रो महेन्द्रकुमारः सहसागत्य जयकुञ्जरकरिणो ऽन्तिके प्रोवाचेति। 'श्रीदृढवर्मनरेन्द्रनन्दन शशिवंशमुक्ताफल कलाकुलगृह दानशौण्ड प्रणतजनवत्सल कुमार कुवलयचन्द्र, जय जय' इति। ततः कुमारः समुपलक्ष्य महेन्द्रकुमारं ज्येष्ठं सहोदरमिव मन्यमानः प्रीतिप्रमुदितमना जयकुञ्जरगजवरस्कन्धमारोप्य पितुर्देव्याश्च कुशलं पप्रच्छ। भवानपि कुशलशाली। अथ नृपस्तत्रागतः प्रोचे 'अहो, कियन्ति चित्राणि।

एकं तावदसौ सुरूपसुभगः कुम्भी द्वितीयं वशीचक्रे दिव्यसुमप्रकामपतनं व्योम्नस्तृतीयं तथा।
तुर्यं यत्पदपूरणं स्वदुहितुः प्रीतिः पुनः पञ्चमं षष्ठं श्रीदृढवर्मजो निखिलमप्येतच्चमत्कारि मे॥ ३९८

यत्प्राप्यं तत्प्राप्तमेव वत्सया कुवलयमालया अस्य पुरुषसिंहस्य प्राप्त्या। पुत्रि, त्वया कृत्रिममेव पुरुषद्वेषित्वं प्रकटीचक्रे। 'इयं परिणेष्यति' इति जैनवचनमपि तथ्यमासीत्। वत्स, त्वं कुञ्जरं समर्पय गजराजारोहकाणाम्। त्वं च सौधमध्यमागच्छ।' इत्याकर्ण्य कुमारो महेन्द्रकुमारेण कुमारेण समं मध्ये गत्वा सिंहासनस्थं नृपं नत्वा यथोचितासने निषसाद। ततः पितुरादेशेन कुवलयमाला कुमारं सस्नेहया दृशा पश्यन्ती शुद्धान्तमध्ये गतवती। राज्ञादिष्टम्। 'वत्स, कथ्यतां कथं भवानेकाकी कार्पटिकवेषधारी दूरदेशान्तरमायातः।' कुमारेण प्रोचे। 'देव एव जानाति। परमदैव कर्मवशतः परिभ्रमन्नत्र समायातः।' राज्ञोक्तम्। 'महेन्द्रकुमार, सैष दृढवर्मतनुजो यस्यात्रागमनं त्वयास्माकं पार्श्वे पृष्टम्।' ततः सविनयं महेन्द्रेण विज्ञप्तम्। 'देव, सत्यमेवैतत्।' कुवलयचन्द्रेण बभाषे। 'भवतः कुतः समागमः।' महेन्द्रेणोक्तम्। 'देव, श्रूयताम्। तदा भवान् वाहकेलिप्रवृत्तः समुद्रकल्लोलवाजिनापजह्रे।

पश्यतो राजलोकस्य समुत्पत्य नभस्तलम्। तुरङ्गमः क्षणेनैवादृश्यमार्गमुपागतः॥ ३९९

§ ५९) ततो नृपतिना सेवकलोकेन सार्कं त्वत्पृष्ठतो ऽतिदूरं गतेनापि क्वापि भवतः प्रवृत्तिर्न श्रुता। तत्रस्थपुरप्रदेशे तुरङ्गः पवनावर्तः पतितो मृतश्च।

राजापि त्वद्वियोगेन पवनावर्तमृत्युतः। अत्यन्तं दुःखितः क्षिप्रं मूर्छितः पतितः क्षितौ॥ ४००
अस्माभिः कदलीपत्रवातैराश्वासितो नृपः। विपाकं कर्मणो जानन्नपि व्यलपदज्ञवत्॥ ४०१
'कुमार विक्रमाधार स्फाराकार गुणाकर। अनाथं मां परित्यज्य गतस्त्वं केन कर्मणा॥' ४०२

एवं बहुधा विलपन् मन्त्रिजनेन नृपतिर्बोधित इति। यथा 'पूर्वं सगरचक्रवर्तिनः षष्टिसहस्रमिताः पुत्रा ज्वलनप्रभजातकोपविसर्पद्विषज्वलनज्वालावलीभिः क्षणमात्रेणापि भस्मसात्कृताः परं तेनापि चेतसि शोकस्य नावकाशो ऽदायि। तन्नाथ, कुमारः केनापि देवेनापहृतो ऽस्ति, तस्यावश्यं प्रवृत्तिरेष्यति। ततो देव, कातरत्वमुत्सृज्य सर्वथा धीरमार्गमवलम्बस्व' इति। ततो व्यावृत्य तत्प्रतिबोधितः क्षितिपतिः प्रासादमासदत्।

प्रवासो यद्दिनादेव कुमार भवतो ऽभवत्। तदैव यौगपद्येन सौख्यस्यापि वपुष्मताम्॥ ४०३
त्वद्वियोगे महादुःखाज्जनन्यापि निरन्तरम्। गलन्नेत्रजलैर्भूमिर्निर्ममे पङ्किलाखिला॥ ४०४
त्वद्दुस्सहवियोगाग्निज्वलज्ज्वालाभयादिव। प्रपलायितुमिच्छन्ति प्राणा देवानुजीविनाम्॥ ४०५

1) °मिवायातं. 2) c om. च. 7) P om. कण्ठ. 20) B परिणेष्यते, B inter. कुञ्जरं & समर्पय, B गजराजमारोहकारणं सौध°. 21) P B om. कुमारेण, B °मध्यं. 28) c नभःस्थले. 30) B ततः स्वपुरप्रदेशे. 40) P त्वद्वियोगे महादुःखादरोदीन्नगरीजनः- some lines are skipped over through haplographical mistake, the copyist's eye being led astray by a similar word.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुभूतं न केनापि दुःखं देव त्वया सह । अकृतज्ञानिव ज्ञात्वा प्रतस्थे श्रीः शरीरिणाम् ॥ ४०६
तथा कथंचित्त्वद्दुःखादरोदीन्नगरीजनः । अपि स्तनन्धया येन स्तन्यपाने निरादराः ॥ ४०७
यं विना क्षणमात्रं न स्थीयते बालकैरपि । आहारस्तत्यजे तैः स त्वद्वियोगातिदुःखितैः ॥ ४०८
सारिकाशुकशिष्यारिपक्षिभिर्भुक्तिरुज्झिता । त्वद्दुस्सहवियोगार्तैरपरेषां तु का कथा ॥ ४०९
सजीवमपि निर्जीवं सचैतन्यमपि स्फुटम् । चैतन्यरहितं चक्रे त्वद्वियोगः पुरीजनम् ॥ ४१०
स प्रदेशो न को ऽप्यस्ति यत्र त्वं न गवेषितः । पुरुषैः पौरुषाधीनैर्न लेभे किंवदन्त्यपि ॥ ४११
राजापि त्वद्वियोगेन जातः कान्त्या भृशं कृशः । भीष्मग्रीष्मनियोगेन साकार इव वारिणा ॥ ४१२

§ ६०) ततः कुमार, एवंविधे काले कियत्यपि व्यतीते प्रतीहार्या विज्ञप्तम् । 'यद्देव, कीर एको भवद्दर्शनाभिलाषी ।' राज्ञोक्तम् । 'कथं कीरो ऽपि तत्प्रवृत्त्यभिज्ञः ।' ततो राजादेशेन प्रतीहार्या समं शुकः क्षमापतिपदान्तिके समागत्य विज्ञापयामास । 'देव अवधारय, कुमारः कुवलयचन्द्रः कुशलशाली ।' ततो नृपतिः कीरं निजतनूजमिव क्रोडमारोप्य जगाद । 'वत्स, कुमारनिर्विशेषदर्शनो भवान् । कुत्र त्वया दृष्टः, कियत्कालान्तरं कुमारस्य दृष्टस्य समजनिष्ट ।' ततः कीरेण तेन स्पष्टाक्षरं संदेशहारकेणेव 'हयापहारादारभ्य कुवलयमालालंकृतविजयापुरीगमनान्तस्तव वृत्तान्तो भूपस्य पुरो न्यवेदि ।'

इत्याकर्ण्य महीपतिः परिलसद्रोमाञ्चवर्माञ्चितः
प्रोल्लासिप्रमदाब्धिमध्यपतितं स्वं मन्यमानस्ततः ।
प्रोचे हास्तिकराजकाश्वनिवहैः प्रीतस्तथा नो यथा
कीरोद्गीर्णतनूजकायकुशलश्रुत्या तया संप्रति ॥ ४१३

ततो लब्धस्वादुसहकारादिफलाहारप्रसादः शुको गतो निजमेव निवासवनं राज्ञा समादिष्टः, मां प्रति च प्रोचे । 'महेन्द्र, विजयापुरीं प्रति संप्रति गन्तुमिच्छामि ।' ततो मया विज्ञप्तम् । 'देव, ममैवादेशं दयस्व, न पुनस्तत्र मार्गवैषम्यतस्तत्रभवतां भवतां गमनं सांप्रतम् ।' ततो देवेन तव प्रवृत्तिनिमित्तमपरैः राजपुत्रैः समं प्रेषितस्य ममात्र ग्रीष्मकालस्यैको मासस्त्रयो वर्षाकालस्य च समभवन् । एकदा विभुं विजयसेनमेव प्रणम्य मया विज्ञप्तम् । 'देव, नरेन्द्रदृढवर्मपुत्रः कुवलयचन्द्रो भवत्समीपमुपागतः किं वा न ।' ततो ऽनेन स्वामिनादिष्टम् । 'सम्यग् न जानीमः, परं महेन्द्र, तवात्रैव तिष्ठतः कियद्भिर्दिनैर्यदि पुनः कुवलयचन्द्रो मिलति ।' ततो भूपवचो ऽङ्गीकृत्य त्रिकचतुष्कचत्वरदेवकुलमठप्रपारामविहारेषु भवतः शुद्धिं गवेषयन्नहं यावत्स्थितस्तावदद्य दक्षिणलोचनेन स्फुरता वामेतरभुजेन च भवद्दर्शनं सर्वेन्द्रियप्रीतिकारि समजायत ।' राज्ञोक्तम् । 'सुन्दरमेतज्जातं यदत्र प्राप्तः कुमारकुवलयचन्द्रो भवता । सर्वथा धन्यानामुपरि वयमेव स्थिताः । अधुना यूयमावासं व्रजत, यथा दैवज्ञमाकार्य कुवलयमालायाः पाणिपीडनलग्नं निर्णीय भवदन्तिके प्रेषयामि' इति वदन्नराधिपतिरुत्तस्थौ । ततः कुमारो महेन्द्रेण समं भूपतिसमर्पितनिकेतनमुपाजगाम । ततस्तौ विहितस्नानभोजनौ यावत्सुखासीनौ तिष्ठतस्तावन्महाराज-प्रेषिता राजप्रतिहारिका समागत्य जगाद । 'यद्देवः स्वयं भवन्तमित्यादिशति, अद्य कुवलयमालायाः पाणिग्रहणकृते गणकेन लग्नशुद्धिर्विलोकिता, परं सर्वग्रहबलोपेताद्यापि न वर्तते, अतः कुमारेणात्यन्तोत्सुकमनसा न भाव्यम्, सांप्रतं स्वमन्दिर इवात्रैव क्रीडासुखमनुभवतु कुमारः' इति निवेद्य सा निर्ययौ । महेन्द्रेणोक्तम् । 'अद्यापि लग्नं दूरतरम्, ततः श्रीदृढवर्ममहीपतेः पुरस्तवात्रागमप्रवृत्तिर्विज्ञप्तिकया ज्ञाप्यते' इति भणित्वा निष्क्रान्तो महेन्द्रः ।

§ ६१) ततश्च कुमारो व्यचिन्तयदिति । 'यदि विषमं मार्गमुल्लङ्घ्यात्रायातेन मया मुनिनिवेदितं गाथापूरणं चक्रे, परं तथापि विधिवशात्तस्याः संगमः । इयन्ति भाग्यानि न मे सन्ति, यैरिमां परिणेष्यामि । भूयो ऽपि केनोपायेन तद्दर्शनं भविष्यति । यदि स्त्रिया वेषं विरचय्य कन्यान्तःपुरे कयाचिच्चेट्यया सह यामि, ततः सत्पुरुषचरितविमुखं राजविरुद्धं च । यस्योद्दण्डभुजप्रकाण्डे ऽतिशायिनी शक्तिव्यक्तिः स कथं लोकनिन्द्यं महिलावेषमातनोति । अथवा तस्याः सखीजनस्य सङ्केतं वितीर्य तामपहृत्य गच्छामि, तदपि कुलीनस्यानुचितम्' इति चिन्तयतस्तस्य बहिरागतो महेन्द्रो बभाण । 'अद्य मया त्वदिहावस्थानोदन्तः सर्वो ऽपि तातस्य विज्ञापितो ऽस्ति । कुमार, तत्किमस्वस्थचित्त इव लक्ष्यते भवान् ।' कुमारेणोक्तम् । 'सुन्दरतरमाचरितमेतद्भवता । वयमेतावतीं भुवमागताः, परं भूपतिर्निजां

13) P om. पुरी. 18) P B °प्रसादे गते (B मते) निजमेव, B समादिष्टं, B om. मां प्रति च प्रोचे. 19) B गंतुमिच्छामः. 24) O मिलिष्यति. 25) P has blank space between शुद्धिं and याव°, O वितन्वन्नियत्कालं for गवेषयन्नहं, P B om. च. 26) B कुमारः कुवलय°. 33) P पुरस्तत्रागम° O पुरस्तवागम°. 39) B अथ for अथवा.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तनुजां दास्यति न वा, इत्यतो मे मनसि विषादः ।' महेन्द्रेणोक्तम् । 'त्वया यदनुध्यातं तन्मिथ्या, कुलशौर्यलावण्यनिरुपमरूपयौवनविज्ञानकलाकलापेन न यतः को ऽपि तव समः पुमान् यस्येमां दास्यति । अतो ऽमुष्यास्त्वमेव परिणेता ।' यावदित्यनल्पविकल्पोर्मिमालाकुलहृदम्बुधिं कुमारं स धीरयति तावदागत्य चेटिकया विज्ञप्तम् । 'यदद्य कुमार, मत्स्वामिन्या कुवलयमालया स्वकरतलगुम्फिता कुसुममाला प्रेषितास्ति, एष कृत्रिमसुकर्णपूरः ।' ततः कुमारो ऽपि सुखसंदोहमहोदधिमन्थनोद्गतं पीयूषमिव तच्च जग्राह । ततः कुमारेण कर्णपूरनाले प्रियोत्कण्ठितामिव राजमरालिकामेकां विलोक्य तस्या विज्ञानप्रशंसनेन सुचिरं स्थित्वा सा भणिता । 'भद्रे, इदानीं घर्मांशुरयमस्ताचलचूलावलम्बी जातस्तद्वयं सांध्यं विधिं विदध्मः । त्वमपि गत्वा तत्पुरः सर्वमपि सुन्दरं निवेदयेः, यतस्त्वमुचितभाषणे स्वयमपि निपुणासि ।' तदङ्गीकृत्य सा निःसृता । कुमारस्तु कृतसांध्यसवनः प्रावृतधौतसितवसनः समुच्चरितजिननमस्कारचतुर्विंशिकः समवसरणस्थं जगज्जीवबान्धवं श्रीनाभिसंभवमवन्दत । अथ महेन्द्रेण समं निद्रासुखमनुभूय शयनीयादुत्तस्थे । ततश्च पूर्वपर्वतमस्तकमहर्पतिरारुरोह । अथो एका महिला मध्यमवया भोगवत्यभिधेयया वृद्धयानुचर्यया समं तत्रागमत् । सा वृद्धा किंचिदग्रतो भूत्वा तं व्यजिज्ञपत् । 'कुमार कुवलयचन्द्र, कुवलयमालाया एषा जननी । ततः कुमारेण ससंभ्रममासनदानप्रतिपत्त्याभिनन्दिता । ततः सा वृद्धा योषित्तया प्रतिपत्त्या रञ्जिताभ्यधादिति 'वत्स कुमार, तव परपीडाभिज्ञस्य पुरः किंचिन्निवेद्यते, आकर्ण्यताम् ।

§ ६२) अस्त्यमुष्यामेव विजयापुर्यां विजयसेनो नामायं नरेश्वरः । इयमेव तस्य सहचरी रूपेणोपहसितत्रिदशयुवती भानुमती महादेवी । न चास्याः संततिः । ततो ऽस्या निरपत्यायाः संजातमहादुःखाया अनेकैर्देवताराधनैरनन्तैर्मनोरथशतैः स्वप्नदृष्टकुवलयमालानुसारेण कुवलयमालाभिधानासामान्यगुणकलावती कनी समजनि । सा च मया प्रतिपच्चन्द्रलेखेव वृद्धिमानीता यौवनश्रियमाशिश्राय । पित्रैतदर्थमनेकरूपलावण्यगुणशालिनो नृपपुत्रा विलोकिताः परमेषा पुरुषद्वेषिणी न कमप्यभिलषति । मया पुनर्बहुधा शिक्षिताप्यसौ मनागपि पुरुषेषु प्रीतिं न दधाति । अतः पितरौ व्यथितचेतसावभूतां मन्त्रिजनो राजलोकश्च । अन्यदा प्रतीहारेण निवेदितम् । 'देव, बाह्योद्याने को ऽपि दिव्यज्ञानी विद्याधरः श्रमणः समायातः' इत्याकर्ण्य नरेश्वरः कुवलयमालया समं सपरिच्छदः समागत्य तस्मै मुनये नमश्चक्रे । स च प्रदत्तधर्मलाभाशीर्वादः सकलमपि संसारस्वरूपमनित्यतादिकं देशनाद्वारेण प्रकटीचकार । तन्निशम्य प्रणिपत्य च भूपतिः पप्रच्छ । 'भगवन्, मम दुहिता कुवलयमाला कथमेषा परिणेतव्या, केन वा, कस्मिन् वा कालान्तरे, यदियं पुरुषद्वेषिणी ।' ततः स भगवान् ज्ञानातिशयेन कौशाम्ब्यां पूर्वभवकृतमायादित्यमायाबोधसङ्केतकुवलयमालाजन्मराजद्वारावलम्बितगाथापूरणाभिज्ञानजयकुञ्जरवशीकरणकुवलयचन्द्रपाणिग्रहणप्रभृति सर्वमपि निवेद्य नभस्तलमुत्पपात । ततो भूपतिः प्रमोदमाससाद । त्वयापि जयकुञ्जराधिपं वशीकृत्य गाथां प्रपूर्यात्मा प्रकटीकृतः । तद्दिनादारभ्य कुमार, कुवलयमालया भवदुःसहविरहतप्तया कुसुमशरजर्जरिताङ्ग्या वचनागोचरां नवमीमवस्थामनुभवन्त्या भवदन्तिके देव्या समं प्रेषितास्मि ।' कुमारेणोक्तम् । 'समादिश किं कृत्यम्' इति । तयोक्तम् । 'यदि कुमार, मां पृच्छसि तदतिक्रान्तः सर्वो ऽपि वाचामवसरः । यदि पुनर्यूयं नृपभुवनोद्यानमागच्छथ तदा केनचैवोपायेन भवद्दर्शनपाथसा बालिकायाः कुवलयमालायाः क्षणमेकं विरहतापोपशान्तिर्जायेत ।' महेन्द्रेणोक्तम् । 'को ऽत्र दोषो, भवत्वेवम्' एवमभिधाय भोगवती भानुमत्या समं निर्गतवती । ततः कुमारो महेन्द्रेण समं नृपाक्रीडक्रोडं विचचार । महेन्द्रेणोक्तम् । 'यथा मञ्जुमञ्जीररवः श्रूयते तथा मन्ये ऽभिनवमदनमहाज्वरविनाशमूलिका कुवलयमाला समागतैव मन्यते । कुमारेण भणितम् । 'न सन्तीयन्ति भाग्यानि ।' महेन्द्रेण निगदितम् । 'कुमार, धीरो भव ।' ततः क्षणान्तरेण कुमारेण बहललतान्तरितेन सखीनां मध्यगतां हंसीनामिव राजमरालिकां तारकाणामिव मृगाङ्करेखामप्सरसामिव रम्भां कुवलयमालामायान्तीमालोक्य भणितम् । 'सर्वथैव धन्यो विधिर्येनैषा त्रिभुवनजनाश्चर्यदायिनी विदधे' तथोक्तम् ।

'विधे यदि त्वं तुष्टो ऽसि तदद्यैव तथा कुरु । तं नवं येन पश्यामि स च पश्यतु मामिह ॥ ४१४

§ ६३) इति निशम्य कुमारेणोक्तम् । 'महेन्द्र, अग्रतो भूत्वा चेष्टितमस्या निरीक्षे' इत्यभिधाय कुमारो लतागृहं प्रविवेश । महेन्द्रस्तु क्रीडार्थमितस्ततो ऽभ्रमत् । [इतः] भोगवत्योदितम् । 'वत्से,

5) P मथनोद्गतपीयूष°. 6) B कर्णपूरनाले, P has blank space for ना. 20) P परमेषा पुरुषद्वेषिणी । ततः स भगवान् – thus between पुरुषद्वेषिणी and ततः it loses a few lines because the copyist's eye has wandered a few lines ahead where the same word occurs. 26) B कालांतरेण. 37) B क्षणांतरे. 40) P स्तं पुष्टो. 42) P B om. [इतः].

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषादपरवशं मानसं मा कुरु । स युवात्र समागत एव विभाव्यते यथा शङ्खचक्राङ्किता चरणप्रतिकृतिः ।' ततस्तदादेशवचनान्ते सर्वा अपि चेटिकास्तद्वीक्षायै प्रसस्रुः, परं कुत्रापि तामिर्न दृष्टः । भोगवत्या भणितम् । 'स्वयं गत्वाहं विलोकयिष्ये, त्वया पुनरत्र स्थातव्यम्' इति वदन्ती भोगवती गता । कुवलयमालया चिन्तितम् । 'एतत्सर्वमपि कपटं मन्ये यत्तेन यूनात्रोद्याने सङ्केतः प्रदत्तः । अन्यस्य कस्यचिदयं चरणप्रतिबिम्बः । स युवा देवानामपि दुर्लभो मया कथं प्राप्यः । यावता कालेन तातो मां परिणायिष्यति तावन्तं को जीविष्यति, सांप्रतं तत्करोमि यथा दुःखानां भाजनं न भवामि' इति विचिन्त्य कुवलयमाला पाशरचनार्थं लवलीलतागृहं प्रति चलिता यत्र कुमारः स्वयमेवास्ते । तेन च सा समागच्छन्ती वीक्षिता । ततः क्षणं कुमारो लज्जित इव भीत इव विलक्ष इव जीवित इव सर्वथैवानाख्येयमवस्थान्तरमवाप । सा च तं समीक्ष्य 'एकाकिनी' इति भीता, 'स एवायम्' इति प्रमुदिता, 'स्वयमागता' इति लज्जिता, 'मया पूर्वमेष वृतः' इति विश्वस्ता चतुर्दिक्षु प्रेषिततरलतरतारकदृष्टिः ससाध्वसा सस्तम्भा सविस्मया सस्वेदा सरोमाञ्चा समभवत् । तदा तयोः परस्परं निरीक्षणेनापि तत्सुखमजायत यत्कविवाचामप्यगोचरम्, दिव्यज्ञानिभिरप्यनुपलक्ष्यम् । ततः कुमारेण साहसमवलम्ब्य धीरत्वमङ्गीकृत्य कामशास्त्रोपदेशं स्मृत्वा समुत्सृज्य लज्जां परित्यज्य साध्वसं 'सुन्दरि, भवत्यै स्वागतम्' इति वदता प्रसारितोभयभुजादण्डेनांसस्थलयोः कुवलयमाला जगृहे । ततः सा प्रोवाच । 'कुमार, मां मुञ्च मुञ्च सर्वथा न कार्यमनेन जनेन ।' कुमारः प्रोवाच । 'सुतनु, प्रसीद मा कुप्यस्व त्वदर्थमेवाहमेतावतीं भुवमायातः, परमेतदपि त्वं न जानासि ।' तयोक्तम् । 'जानामि यद्भवान् पृथिवीमण्डलदर्शनकौतुकी ।' कुमारेण प्रोचे । 'एवं मा वादीः, किं तत्स्मरसि न सुतनो, मायादित्यस्य जन्मनि भवत्योक्तं 'यन्मम भवता दातव्यं बोधिरत्नम्' [इति] स्मृत्वा तन्मुनिवचसा प्राप्तो ऽहं लोभदेवजीवस्त्वाम् । मुग्धे, बुध्यस्व ततो मम वाचा मोहमुत्सृज्य' कुमारो यावदिदं जल्पन्नस्ति तावद्भोगवती समागत्य प्रोचे । 'वत्से, वञ्जुलाख्यः कन्यान्तःपुररक्षक इति वदन्नस्ति यद् राजा कथयति यदद्य कुवलयमाला दृढमस्वस्थशरीरा काननान्तःपरिभ्रमन्ती त्वया त्वरितमेवैषा समानेया ।' ततः सा सकलककुम्मण्डलदत्ततरललोचना कथमपि चलितुमारेभे । कुमारः प्रोवाच ।

'उक्तेन बहुना किं वा किं कृतैः शपथैर्घनैः । वदामि सत्यमेवैतत्त्वमेव मम जीवितम् ॥' ४१५

§ ६४) कुवलयमालापि 'महाप्रसादः' इति वदन्ती लवलीलतागृहतो निःसृता । कञ्चुकी जगाद । 'वत्से, भवतीयतीमत्र वेलां कथं स्थिता, केनात्राकारिता, अत्र तव वनान्तश्चिरं स्थातुं नो युक्तं सत्वरं त्वमग्रतो भव' इति । ततः सा तद्वचः कर्कशमाकर्ण्य तेन कञ्चुकिना सह पथि गच्छन्ती चिन्तयति स्म । 'अहो, अस्य कुमारस्य प्रतिपन्नवत्सलता, अहो, अस्य सत्यप्रतिज्ञता, अहो, उपकारिता, यदेष शिरीषकुसुमगात्रो ऽपि चरणचार्येव पथि क्षुत्तृषाद्यवगणय्य प्रीत्या दूरस्थामपि मां प्रष्टुं बोधयितुमिहागतः । भूयो ऽपि कदा संगंस्यते' इति ध्यायन्ती कन्या कन्यान्तःपुरमाययौ । कुमारस्तु तस्याः प्रेमकोपपिशुनं वचनं स्मरन्नेकस्मिन् पादपे कुसुमावचयं विरचयन्तं महेन्द्रं निरीक्ष्य जगाद । 'वयस्य, समेहि यथावासं व्रजावः । यद् द्रष्टव्यं तद्दृष्टमेव ।' ततो द्वावपि निकेतनमाजग्मतुः । तत्र च महाराजप्रेषितेन वारवनिताजनेन स्नानं कारितौ । ततः कृतभोजनौ यावदासनस्थौ तिष्ठतस्तावदेकया कामिन्या समागत्य कुमारस्य करे ताम्बूलमदायि । कुमारेणोक्तम् । 'केनेदं प्रेषितम्' । तयोदितम् । 'केनापि जनेन' इति । एवं सा कदाचिद्भोज्यं कदाचित्ताम्बूलं कदाचित्पत्रच्छेद्यं कदाचिदालेख्यं परमपि स्नेहरसविशेषपोषकं कुमारस्य योग्यं प्रतिदिनं प्रेषयति । एवं च तयोर्निजराज्य इव सुखेन तिष्ठतोः कियन्तः पुण्यभासुरा वासरा व्यतीयुः ।

§ ६५) अथ हेमन्ते भूमिभृता निमित्तमिदमाकार्य पुत्र्याः पाणिग्रहणलग्नं पृष्टम् । तेन सर्वाण्यपि ज्योतिःशास्त्राण्यवलोक्य प्रोचे । 'फाल्गुनसितपञ्चम्यां बुधे स्वातिनक्षत्रे यामिन्याः प्रथमे यामे व्यतीते प्रधानं गतदोषमुपयामलग्नमस्तीत्यवधार्यतां देवेन ।' राज्ञापि 'तथा' इत्यङ्गीकृत्य कुमारस्याग्रे ज्ञापितम् । 'कुमार वत्स, भवद्विज्ञानसत्त्वसाहसप्राग्भवस्नेहवश्यायाः कुवलयमालाया वियोगश्चिराय भवतो ऽस्माभिः कृतः । अतः सांप्रतममुष्यां पञ्चम्यां कुमारो ऽमुष्या वेदिकामध्यमध्यासीनायाः पाणिग्रहणं करोतु ।' कुमारेणोक्तम् । 'यदादिशति देवस्तत्तथा' इति । ततः कुवलयमाला पाणिग्रहणाकर्णनस्मेरवदनाम्बुजा प्रमोदभरभासुरा सर्वाङ्गरोमोद्गमसंगमा चिरसंचितपूर्यमाणमनोरथपथा न देहे न गेहे न

---

2) B °दादेशवचनेन सर्वा. 5) B परिणाययिष्यति. 10) B om. तर before तारक. 18) P B om. [इति], B मानभट for लोभदेव. 19) B वंजुलाख्यकन्यांतःपुररक्ष इति. 20) B om. यद् राजा कथयति. 27) B om. अस्य before सत्यप्रतिज्ञता. 31) B निकेत for निकेतन. 33) B om. सा after एवं. 39) O वशीकृतायाः for वश्यायाः.

9

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

त्रिभुवने ऽपि माति स्म । तत्र राजकुले विवाहभोजनार्थं धान्यान्यानीयन्ते । क्रियन्ते विविधानि पक्वान्नानि । विरच्यन्ते सर्वत्र मण्डपमञ्चप्रपञ्चाः । रच्यन्ते वेदिकाः । प्रेष्यन्ते लेखवाहाः सर्वेषां स्वजनराजन्यानाम् । निमन्त्र्यते सर्वत्र बन्धुवर्गः । भूष्यन्ते भवनानि । घट्यन्ते नानाविधान्याभरणानि । शोध्यन्ते नगरीरथ्याः ।

§ ६६) एवं विवाहारम्भकृत्यप्रवृत्तस्य जनस्य निधिलाभक्षण इव सौभाग्यनिर्मित इवोपयमदिवसः समागमत् । तस्मिन् दिने ऽविद्धमौक्तिकचारुचतुष्कस्थापितप्राङ्मुखासने निवेश्य कुमारं कुलवृद्धा मङ्गलस्नानमकारयत् । ततः स गोशीर्षचन्दनविलिप्ताङ्गः प्रावृतकौरकश्वेतसदशवसनः सिद्धार्थगोरोचनातिलकः कण्ठावलम्बितसुरभिकुसुमदामा महेन्द्रेण राजलोकेन चानुगम्यमानो जयकुञ्जरकुञ्जराधिरूढः प्रौढजनान्वितो दक्षिणकरकमलाबद्धकौतुकमदनफलः स्तुतिव्रातस्तूयमानगुणग्रामः प्रचुरमृदङ्गशङ्खपणववेणुवीणास्वरमुखरितदिक्चक्रवालो धृतसितातपत्रः पुरः प्रवर्तमानप्रेक्षणक्षणः क्षणेनोद्वाहमण्डपमलंचकार । ततश्च स प्रावृतसितचीवराया माङ्गल्याभरणभूषितायाः कुवलयमालाया लग्नवेलायां द्विजवरेणोपढौकितं करं करेण जग्राह । ततो ऽविधवा गीतं गातुं प्रवृत्ताः । वादितानि तूर्याणि । निःस्वानस्वनाः प्रसस्रुः । पूरिताः शङ्खाः । आहता झल्लर्यः । वेदोच्चारपरायणा द्विजन्मानो मङ्गलपाठकाः पठन्ति । जयजयारवपरो लोकश्च । ततः प्रवर्तितं मङ्गलचतुष्टयम् । ततो निर्वृत्ते पाणिग्रहणमहोत्सवे पूजिते गुरुजने कृते समस्तकरणीये स्वस्थाने समेत्य विविधरत्नविद्रुमनिर्मिततलिने गङ्गापुलिन इव राजहंसयुगलं कृतमङ्गलोपचारं तन्मिथुनमुपविष्टं दृष्ट्वा परिवारः सखीजनश्च मन्दं मन्दं निस्ससार । तत्रस्थस्य तस्य निद्रासुखमनुभवतः क्षणदा क्षणमिव क्षयमियाय । ततः प्राभातिकतूर्यरवप्रतिबोधितः कुमारः कृतदेवाधिदेवनमस्कृतिर्नित्यकृत्यमकरोत् । तत्रान्यदा कुमारो हिमगिरिशिखरसमानं स्वसौधमारुह्य दक्षिणपक्षप्राकारप्रत्यासन्नं रत्नाकरं निरीक्ष्य क्षणं व्यावर्णयन् मात्राक्षरबिन्दुच्युतकप्रश्नोत्तरक्रियागुप्तककाव्यकथाविनोदैश्च कुवलयमालया समं प्रीतिपरस्तस्थौ । अत्रान्तरे कुवलयमालया विज्ञप्तम् । 'देव, त्वया मद्वृत्तान्तः कथं परिज्ञातः ।' ततः कुमारेण सविस्तरमयोध्यातो हयापहाराद्यं मुनिनिवेदितचण्डसोममानभटमायादित्यलोभदेवमोहदत्तपञ्चजनपूर्वभवगाथापूरणपरिणयनपर्यन्तं सर्वमपि प्रोचे । प्रिये, ऐहिकसुखमूलं विवाहकर्म वृत्तम् । संप्रति पारत्रिकसौख्यप्रदं सम्यक्त्वमाद्रियस्व । यतः,

चिन्तामणिः श्रितः प्राणिस्वान्तचिन्तितमात्रदः । सम्यक्त्वं सर्वजन्तूनां चिन्तातीतार्थदं पुनः ॥ ४१६
तावदेव तमस्तोमः समस्तो ऽपि विजृम्भते । यावत्सम्यक्त्वतिग्मांशुरुदेति न हृदम्बरे ॥ ४१७
सद्दृष्टिर्दृष्टिहीनो ऽपि यः सम्यक्त्वविलोचनः ।
श्रुतिविश्रान्तनेत्रो ऽपि सो ऽन्धो यस्तद्विवर्जितः ॥ ४१८
यदि ते स्मृतिमेति सांप्रतं दयिते पूर्वभवः स्वचेतसि ।
तदवश्यमिदं जिनेशितुर्वचनं निर्वृतिशर्मदं श्रय ॥ ४१९
श्रुत्वेति तस्य वचनं किल सा जगाद नाथ त्वमेव शरणं सुगुरुस्त्वमेव ।
देव त्वयाखिलपुरातनजन्मजल्पात् सम्यक्त्वभाजनमहं विहिता यदद्य ॥ ४२०

इत्याचार्यश्रीपरमानन्दसूरिशिष्यश्रीरत्नप्रभसूरिविरचिते श्रीकुवलयमालाकथासंक्षेपे श्रीप्रद्युम्नसूरिशोधिते कुवलयचन्द्रकुमारवनपरिभ्रमणविजयापुरीगमनजयकुञ्जरहस्तिवशीकरणसमस्यापूरणकुवलयमालापरिणयनसम्यक्त्वोपदेशप्रभृतिवर्णनस्तृतीयः प्रस्तावः ॥ ३ ॥

[अथ चतुर्थः प्रस्तावः]

§ १) अथ श्रीदृढवर्मणो नृपतेर्लेखवाहः प्रतीहारनिवेदितः प्रविश्य कुमारं प्रणिपत्य लेखं पुरो विमुच्य विज्ञपयामासेति । 'देव, श्रीतातपादा भवन्तमाकारयन्ति ।' ततः कुमारः पूर्वं लेखं प्रणम्योन्मुच्य च स्वयं वाचयामास । 'स्वस्त्ययोध्यापुरीतो महाराजाधिराजश्रीदृढवर्मदेवो विजयापुर्यां पुत्रं दीर्घायुषं कुवलयचन्द्रकुमारं महेन्द्रसमन्वितं साश्रुसं गाढमालिङ्ग्य समादिशति, यथा 'अत्र तावत्तव दुःसहविर-

---

2) P रच्यते वेदिका. 7) P ततः स विलिप्तांगः. 9) B स्तुतिव्रात°. 11) B °भूषिताया वेदिकामध्यमध्यासीनायाः कुवलय°. 14) P निवृत्ते. 15) P B om. स्वस्थाने समेत्य. 16) P B om. निद्रासुखमनुभवतः. 17) B inter. क्षणदा & क्षणमिव. 18) B दक्षिणपक्षे. 38) B om. पुत्रं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्रेण मम जलबहिःक्षिप्तमत्स्यस्येव क्षणमात्रमपि न सुखावकाशः, तथा तव मातुः पुरीजनस्य च । अतस्त्वया त्वरितमागत्य निजदर्शनपाथसा पाथोदेनेव पादपो वियोगतप्तो ऽहं निर्वाप्यः' इति । कुमारेण जगदे । 'प्रिये, अस्माकमेष गुरुनियोगस्तत् किं कर्तव्यम् ।' तयोक्तम् । 'यत्तुभ्यं रोचते तदाचरणीयमेव ।' ततः कुमारः समुत्थाय महेन्द्रेण साकं श्रीविजयसेनमिति विज्ञपयामास । 'देव, ममायातस्य बहवो दिवसा अभवन्, उत्कण्ठितौ च पितरौ, अतः प्रसादं विधाय मां प्रेषयत ।' ततो नृपतिना विसृष्टः सांवत्सरेण निवेदिते मुहूर्ते कुमारः कृतमाङ्गल्यविधिर्वहच्छासिकादत्ताग्रपादो निर्मितजिननमस्कृतिर्जयकुञ्जरं गजमारुह्यानेकसेवकलोकपरिकलितो महेन्द्रेण सह प्रमुदितचित्तः पुरीतो निर्गत्य बाह्यभुवि प्रस्थानमङ्गलं विदधे ।

§ २) साप्यथो मातरं नत्वा तत्त्वालोकनबद्धधीः । पूर्णा हर्षविषादाभ्यां प्रोवाच नृपतेः सुता ॥ १ ॥
देहच्छायेव देहेन पत्या यास्याम्यहं सह । मातस्त्वदंह्रिसेवाया वियोगस्तु सुदुःसहः ॥ २ ॥
मद्रोपिता लता मातर्विना जलनिषेचनम् । पाण्डिमानमुपेष्यन्ति यथा प्रोषितयोषितः ॥ ३ ॥
मातर्मदीयविरहे कलापकलितः किल । कलापी तालसुभगं केनायं नर्तयिष्यते ॥ ४ ॥
जनन्युवाच किं वत्से धत्से खेदं स्वचेतसि । नरेश्वरसुता यत्त्वं दृढवर्मसुतप्रिया ॥ ५ ॥
तत्पुत्रि मा कृथाः खेदं हर्षस्थाने ऽस्य कः क्षणः । स्वर्धुनीस्नानसंप्राप्तौ को हि पङ्के निमज्जति ॥ ६ ॥
इत्युक्त्वा तनुजां क्रोडं स्वमारोप्य सबाष्पदृक् । चुम्बित्वा च शिरोदेशे जनन्येवमशिक्षयत् ॥ ७ ॥
वत्से चेत्त्वं गुणश्रेणिमीहसे स्वस्य सर्वदा । तद्भर्तृमन्दिरप्राप्ता भूयाः प्रियमसंशयम् ॥ ८ ॥
कार्यं श्वश्रूप्रभृतिषु गौरवार्हेषु गौरवम् । त्वयानुकूलया भाव्यं सपत्नीष्वपि संततम् ॥ ९ ॥
तदपत्यानि दृश्यानि निजानीवाश्रितेषु च । कृपा कार्या न तु क्वापि गर्वैः सर्वप्रतीपकः ॥ १० ॥
भुक्ते भर्तरि भोक्तव्यं स्वप्यं च शयिते सति । नीचैर्लोचनया स्थेयं नीरङ्गीस्थगितास्यया ॥ ११ ॥
दुःखिते दुःखिता पत्यौ सुखिते सुखिता भवेः । कोपवत्यपि मा कोपं विदधीथाः कदाचन ॥ १२ ॥
क्वापि पतिपादारविन्दद्वयविलोकनम् । न हेयं सर्वदा सर्वसतीमार्गो ऽयमद्भुतः ॥ १३ ॥

§ ३) इति शिक्षां शिरसि चारोप्य पितरौ प्रणम्य परिजनमभिपृच्छ्य कुवलयमाला ततः कुमारान्तिकमागता । ततो ऽन्यदिने कुमारः कुवलयमालया समं प्रचलितः सन् जातानुकूलपवनः श्रुतवामखरस्वरः सव्यसमुत्तीर्णैकवर्णशुनकः सर्वत्र समुच्चारितचारुवचनो व्यचिन्तयदिति । 'भगवति प्रवचनदेवते, यदि तातं निरामयं पश्यामि राज्यं च प्राप्नोमि परिवर्धते सम्यक्त्वं [तदा] कुवलयमालया समं प्रव्रज्यामाश्रयामि, तद्दिव्यज्ञानेन परिज्ञाय तादृशमुत्तमं शकुनं देहि, येन मे निर्वृतिः स्यात् ।' इति यावच्चिन्तयन्नस्ति तावत्पुरस्तस्य मणिकनकनिर्मितं प्रलम्बितमुक्तावचूलमातपत्रं केनाप्युपनीय विज्ञप्तम् । 'देव, अस्य भूपस्य जयन्तीपुरीपतिर्ज्येष्ठो भ्राता जयन्ताभिधो वसुधाधवः । तेन त्वद्धेतवे देवताकृताधिष्ठानं छत्ररत्नं प्रेषितम्' इति । कुमारेण चिन्तितम् । 'अहो, प्रवचनदेव्याः प्रभावः, येन प्रथममेव प्रधानं शकुनम्' इति ध्यात्वा तच्च स्वीकृत्य कुमारो राज्ञा पौरजनेन चानुगम्यमानो महता सैन्येन परिवृतः कियतीं भुवं परिगतः प्रोवाच । 'महाराज, व्यावृत्य धवलगृहमलंक्रियताम् । पौरजनाश्च निवर्तध्वम्, यतो दूरे भवति विजयापुरी ।' ततस्तेषु व्यावृत्तेषु कुमारः सपरीवारो गच्छन् कतिपयैरपि प्रयाणकैः सह्यशैलसमीपं संप्राप । अत्रान्तरे केनाप्यागत्य विज्ञप्तम् । 'नाथ, अत्र सरस्तीरे देवायतने महामुनिरेको ऽस्ति' । इत्याकर्ण्य कुमारः कुवलयमालया समं तत्र गत्वा मुनिं नत्वा सविनयं जगाद । 'भगवन्, भवन्तः स्वीकृतनवव्रता इव विभाव्यामस्तत्र को हेतुः ।' ततो मुनिमतल्लिका निवेदितुमारेभे ।

समस्ति लाटदेशान्तः पारापुर्यां नरेश्वरः । सिंहः प्राज्यतमस्थामा भानुनामास्ति तत्सुतः ॥ १४ ॥
चित्रकर्मप्रियः प्रायः सो ऽहं क्रीडनकौतुकी । अन्यदा तत्पुरीबाह्योद्यानभूमिमुपागतः ॥ १५ ॥

§ ४) तत्र च विचरता मया कलाचार्य एको दृष्टः । तेनोक्तम् । 'कुमार, चित्रपटममुं मल्लिखितं निरीक्ष्य निवेद्यतां यदयं रम्यो न वा' इति । ततस्तदालोकनेन मया चिन्तितम् । 'तत्किमपि पृथिव्यां नास्ति यदत्र न लिखितमस्ति' इति विस्मयस्मेरमानसं मां निरीक्ष्य तेनोक्तम् । 'कुमार, मयात्र सकलमपि संसारविस्तारस्वरूपं चित्रितमस्ति, यन्मनुष्यजन्मनि यत्तिर्यग्भवे यन्नरके यत्त्रिदिवे विविधं दुःखं सुखं चानुभूतं तत्सर्वमप्यस्ति, अत्र तावन्मोक्षो ऽपि, यत्र न जरा न मृत्युर्न व्याधिर्न चाधिः ।' एवं कुमार, तेन निवेदिते

2) B om. इति. 5) P क्षुतप्रसाद for अतः प्रसादं. 15) B मंदिरं प्राप्ता. 24) P om. च, P B om. [तदा]. 25) P निवृत्तिः. 29) B कियंतीं. 33) B adds इति (on the margin) after इव.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तस्मिंस्तादृशे संसारचक्रचित्रपटे प्रत्यक्षीकृते मया चिन्तितम्। 'अहो, कष्टं संसारवासः। दुर्गमो मोक्षमार्गः। अत्यन्तदुःखिताः प्राणिनः। विषमा कर्मगतिः। स्नेहनिबिडनिगडसंदानितो मूढजनः। अशुचिमयः कायः। विषमिव विषयसुखम्। साक्षादेवैष जीवसार्थो महासागरनिमग्नः।' इति चिन्तयता मया भणितम्। 'अहो, त्वयायं यदि चित्रपटो लिखितस्ततो न मनुष्यस्त्वम्, अनेन दिव्यचित्रपटप्रकारेण किमपि कारणान्तरं चिन्तयन् त्वं देवो देवलोकतः समागतः।' इति च वदता मया तस्यैकस्मिन् पार्श्वे ऽपरं चित्रपटं दृष्ट्वा प्रोक्तम्। 'अहो उपाध्याय, पुनरेव ततः संसारचक्रतो व्यतिरिक्तश्चित्रपटो ऽयम्, ततो ममायमपि प्रत्यक्षीक्रियताम्।' इदमाकर्ण्य कलाचार्येण भणितम्। 'कुमार, मयैव लिखितमेतद्वयोर्वणिजोश्चरितं विभक्तस्वरूपं पश्यतु भवान्। एषा चम्पापुरीति लिखिता। अत्रैव महाराजो महारथः। अत्र च धनी धनमित्रो नाम वणिग्। तस्य भार्या देवीति। तयोस्तनुजौ द्वौ धनमित्रकुलमित्रौ। तज्जन्मानन्तरं तदात्वमेव पिता पञ्चत्वमुपागतः। सर्वो ऽप्यर्थो निधनमियाय। ततस्तौ मात्रा कष्टेन वृद्धिमानीतौ यौवनमवापतुः। जनन्या निगदितम्। 'भवन्तौ व्यवसायं कुरुताम्।' ततस्तौ वाणिज्यकृषिपरमन्दिरकर्मकरवृत्तिप्रतिगृहप्रार्थनारत्नाकरसमुल्लङ्घनरोहणपर्वतारोहणानवरतखानिखननधातुवादद्यूतक्रीडनस्वामिसेवाप्रवृत्तिविवरयक्षिणीसमाराधनगुरूपदिष्टमन्त्रसाधनप्रभृतिभिः प्रकारैर्धनोपार्जनार्थं ताम्यतः, परं वराटिकाया अपि नोत्पत्तिः।

§ ५) ततो ऽतीवदुःखितौ ताविति संकल्पपरौ बभूवतुः। 'धिग् धिग् जीवितमस्माकम्। यः को ऽप्युपायः प्रारभ्यते स सर्वो ऽपि पूर्वकृतदुष्कृतवशेन वालुकापिण्डकलनमिव खलप्रीतिप्राग्भार इवाञ्जलिकृतजलसंघात इव समीरप्रेरितजीमूतपद्धतिरिव विलयमायाति। कथमनेन दैवेनावामेवाभाग्यभाजनं विहितौ। इदमपि दैवं सर्वेषामप्यन्येषामनवमम्, परमावयोरवममेव। तावत्सर्वथैवालममुना जीवितेन सर्वथा दुःखनिकरमन्दिरेण। अथ कस्मिंश्चिदुच्चशिलोच्चयशिखरमारुह्यात्मानं मुञ्चावः' इत्यालोच्य तौ तच्छिखरमारुह्यैवं प्रोचतुः। 'भोः पर्वत, तव शिखरपतनसाहसेनावामग्रेतनभवे दारिद्र्यदुःखभाजनं न भवावः।' इत्युदित्वा तौ युगपदेव यावदात्मानं मुञ्चतस्तावत्तयोः 'मा साहसं मा साहसं' इति ध्वनिः श्रवणाध्वनि पपात। तं निशम्य ताभ्यां सर्वतो दिशः पश्यद्भ्यां साधुं कायोत्सर्गस्थितं निरीक्ष्य भक्त्या प्रणिपत्य प्रोचे। 'परमेश्वर मुनीश्वर, भवतावां मृत्युतः कथं निषेधितौ।' मुनिनापि ततः प्रोक्तम्। 'युवयोः किं वैराग्यकारणम्।' ताभ्यामुक्तम्। 'भगवन्, आवयोर्दरिद्रतैव वैराग्यहेतुर्नान्यत्।' साधुनाप्यभ्यधायि। 'भो पण्याजीवौ, भवन्तौ निर्वेदं कृत्वा मा प्राणत्यागं तनुताम्।' ताभ्यामुदितम्। 'भो यतीश, कथय कथं जन्मान्तरे ऽपि न दारिद्र्यं पुनरावयोः।' भगवता भणितम्। 'यदि भवन्तौ दीक्षामङ्गीकृत्य तपः समाचरतस्तदेवंविधदुःखभाजनं भूयो ऽपि न भवतः।' ताभ्यामुक्तम्। 'एवं प्रसादः क्रियताम्।' ततस्तेन मुनिना जैनविधिना कुमार, तयोः प्रव्रज्या दत्ता। इमौ तौ प्रव्रजितौ मया चित्रपटे लिखितौ। ततस्तौ दुश्चरितं तपस्तप्त्वा समाधिना मृत्वा देवभवमुपाजग्मतुः। तयोः पुनरेकः आयुषि क्षयमीयुषि स्वर्गतश्च्युत्वा परापुर्यां सिंहभूपतेः सुतो भानुनामा संजातः। स चात्रोद्याने त्वम्। यः पुनर्द्वितीयो वणिग्जीवः स चाहम्। इमं चित्रपटं समालिख्य भवतः प्रतिबोधार्थमिहागतः। तावद्भो भानुकुमार, प्रतिबुध्यस्व मा मुहः, भीम एष भवाम्बुधिः, तरला कमला, हस्तप्राप्या विपत्तयः, दुःसहं दारिद्र्यम्' इदमाकर्ण्य ऊहापोहं कुर्वाणः सहसैव मूर्च्छितो भानुकुमारः। स्मृता जातिः। परिजनेन वयस्यैश्च शीतलजलकदलीदलपवनादिभिः समाश्वासितः। ततः संजातस्वस्थचेतसा भानुनानुभूतं पूर्ववृत्तं विलोक्य भणितम्।

'सर्वथा त्वं गुरुर्नाथ त्वमेव शरणं मम। येन त्वयाधुना जैनाध्वनि प्रीत्यास्मि रोपितः' ॥ १६ ॥

§ ६) एवं वदंस्तच्चरणशुश्रूषापरायणः क्षणमेकं यावद्भवं तावदुपाध्यायः पताकाराजिराजिते विविधासपत्नरत्ननिर्मिते विमाने मणिकुण्डलगलस्थलसमुच्छलदतुच्छदेहदीप्त्या दश दिशः प्रकाशयन्तं वरमुकुटविराजमानं विमानसंस्थितमात्मानं प्रकटीकृत्य जगाद। 'भो भानुकुमार, दृष्टस्त्वयैष संसारमहीचक्रविस्तारः।' ततो मया तन्निरीक्षणसंजातवैराग्येण स्मृतपूर्वभवेन देवस्य पुरस्तत्क्षणमेवाभरणानि विमुच्य स्वयं विनिर्मितोत्तमाङ्गपञ्चमुष्टिकलोचस्तद्देवार्पितरजोहरणमुखवस्त्रिकाप्रतिग्रहाद्युपधिरु-

6) B पुनरेतत्संसार- 16) C पिण्डक[व]लनमिव. 20) B °खरमारुह्य एवं. 38) P B om. दश, B [illegible] दश.
40) B संसारमहाचक्र°.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धानतो निष्क्रान्तः। ततो हाहारवमुखरो वयस्यवर्गः परिजनश्च सिंहनरेशसकाशमुपागमत्। तेन देवेन ततः प्रदेशतोपहृत्यात्र निर्जने वने मुक्तो ऽस्मि। सांप्रतं पुनः कमप्याचार्यं मृगयामि, यदन्तिके तपस्तनोमि।' इदं निशम्य कुमारेणोक्तम् 'अहो, महाविस्मयकारी वृत्तान्तः।' ततो महेन्द्रेण सम्यक्त्वं गृहीतम्। कुमारो ऽपि महेन्द्रकुवलयमालाभ्यां सममावासमागत्य कृतकृत्यः शर्वर्यामस्वाप्सीत्। ततः पुनरपि निर्मले गगनाङ्गणे तिरोहितेषु तारानिकरेषु समुदिते दिनेशे कुमारः प्रदत्तप्रयाणकः क्रमेण विन्ध्यगिरिकान्तारासन्नं समावासितः। तत्र स कुमारः कृतदिवसरात्रिककृत्यः कुवलयमालया समं पल्यङ्के प्रसुप्तः।

§ ७) ततो निशीथे यावज्जागर्ति तावद्विन्ध्यगिरिशिखरकन्दरान्तरे ज्वलनं ज्वलन्तं विलोक्य विकल्पमालाकुलः समजनि। 'अहो किमेतत्, किं तावदेष वनदवः, किमुतान्यत्। अत्र च पार्श्वेषु परिभ्रमन्तः के ऽपि पुरुषा दृश्यन्ते। किं वा राक्षसाः, पिशाचा वा। ततो ऽग्रतो भूत्वा सम्यग् निभालयामि किमेतज्ज्वलति, क एते पुरुषाः।' इति विचिन्त्य सुचिरं निभृतपदं समुत्थितः कुमारः कुवलयमालां तलिने सुप्तां विमुच्य स्वीकृतखड्गरत्नवसुनन्दकः कटीतटनिबद्धक्षुरिकः प्राहरिकान् वञ्चयित्वा गन्तुं प्रवृत्तः। ततस्तेन ज्वलनान्तिके धातुवादवार्तां वितन्वतः पुरुषान् विलोक्य चिन्तितम्। 'यदमी धातुवादिनः किमेतेषामात्मानं प्रकटीकरोमि किं वा न, कदाचिदेते वराकाः कातरहृदो ऽमी दिव्य इति मां संभाव्य भयभीता नङ्क्ष्यन्ति विपत्स्यन्ते वा, तदिह स्थित एव तेषां वाचः श्रोष्यामि' इति। तदा तत्र तैरपीत्युक्तम्। 'यदद्य कल्कः सर्वो ऽपि विघटितस्तावदिदानीं करणीयं किम् इति। किमत्रापरः कार्यः' इति वदन्तश्चलिताः। कुमारेण भणिताः 'भो भो नरेन्द्राः, किं व्रजत।' तैरित्युक्तम्। 'भवतो भयेन।' कुमारेण भणितम्। 'कथं भवतां भयम्, अहमपि भवन्मध्यवर्ती नरेन्द्रः, ततः सर्वमपि निवेद्यताम्।' ततस्तैर्जल्पितम्। 'अहोरात्रं यावदस्माभिः सुवर्णभ्रान्त्याध्मातं परं सर्वमेव भस्मीभूतम्।' ततः साहसमवलम्ब्य कुमारेण देवगुरुचरणस्मरणप्रवीणान्तःकरणेन तेषां पुरस्तेनैवौषधयोगेन सुवर्णं निरमायि। सर्वैरपि तैः प्रमुदितैर्विज्ञप्तम्। 'देव, अद्यप्रभृति भवानेवास्माकं गुरुः। वयं तु तव शिष्या एवातो विद्यादानप्रसादो विधेयः।' कुमारेण तत्प्रणीतभक्तिपरीतचेतसा योनिप्राभृतग्रन्थप्रयोगाः कत्यपि कथितास्तेषाम्। कुमारेण प्रोक्तम्। 'व्रजाम्यहं स्वस्ति भवद्भ्यः। यदा कदाचिद्यूयमयोध्यायां कुवलयचन्द्रभूपतिं शृणुत तदा सत्वरमेव समागन्तव्यम्' इति वदन् कुमारः कटकसंनिवेशे कुवलयमालाया विबुद्धायाः कुमारादर्शनेन महद्दुःखं दधत्याः पुरः संप्राप्त एव। ततस्तया प्रमुदितया प्रोक्तम्। 'देव, कुत्र गता भवन्तः।' ततः कुमारेण धातुवादिवृत्तान्तं सर्वमपि निवेदितम्। ततो निःश्वासनिःस्वनपटुपटहरवमङ्गलपाठकपठितादीनि विभातविभावरीचिह्नानि मत्वा कुमारेण भणितम्। 'अये प्रिये, प्रभातप्राया रजनिरजनि। क्षपापतिरपि क्षपितकिरणगणः। चरणायुधसंहतिरपि मन्दं मन्दं रौति च। सांप्रतं देवगुरुबान्धवकार्याणि क्रियन्ते' इति वदन् कुमारो निर्मलजलक्षालितवदनकमलः श्रीमति गृहचैत्ये प्रविश्य देवाधिदेवमेवं स्तोतुमारेभे।

'सुप्रभातं जिनेन्द्राणां धर्मबोधविधायिनाम्। सुप्रभातं च सिद्धानां कर्मौघघनघातिनाम्॥ १७॥
सुप्रभातं गुरूणां तु धर्मव्याख्याविधायिनाम्। सुप्रभातं पुनस्तेषां जिनस्तवप्रदर्शिनाम्॥ १८॥
सुप्रभातं तु सर्वेषां साधूनां साधुसंमतम्। सुप्रभातं पुनस्तेषां येषां हृदि जिनोत्तमः॥ १९॥

§ ८) एवंविधां स्तुतिं विधाय कुमारः करिवरारूढः सुखासनाधिरूढया कुवलयमालया समं विविधतुरगखुरखुराविदारितमहीतलसमुच्छलदतुच्छरेणुनिकरपरिपूर्यमाणसकलदिग्मण्डलमुखनिरुद्धदिनकरप्रसरजातदुर्दिनशङ्कासहर्षशिखण्डिताण्डवितकलापभ्राजमानेन वनान्तरेण संचचार। ततो ऽनवरतदत्तप्रयाणकः कुमारो ऽयोध्यापुरीपरिसरमलंचकार। तमायान्तं श्रुत्वा तदात्वाधिकप्रमोदवशसमुल्लसद्रोमाञ्चकवचितः क्षितिपतिः सपरिजनः सान्तःपुरः कुमारसम्मुखमाजगाम। ततः स्वदर्शनमात्रेणैव दृढवर्ममहीपतिः कमलबन्धुरिव कमलाकरं कैरवबन्धुरिव कैरवसंचयं घनाघन इव घनसुहृत्संघातं मधुरिव पिकनिकरं तं कुमारं भृशं प्रमुदितमानसमातत। ततो द्वावपि स्नेहभरपरवशमानसौ बाष्पाविललोचनौ बभूवतुः। ततः कुमारेण महाविनयशालिना पितृमातृचरणद्वन्द्वमद्वन्द्वभक्त्या

---

10) B क एते for केऽपि. 12) B adds प्राहरिकः before प्राहरिकान्. 32) P om. the verse सुप्रभातं गुरूणां etc., B om. जिनस्तव etc., to पुनस्तेषां in the next line–obviously a haplographical skipping over by the copyist.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

प्रणतम् । ताभ्यामुक्तम् । 'वत्स, अतीव दृढकठिनहृदयो भवान् बभूव । आवां पुनस्त्वत्स्नेहनिर्भरप्रसृतदुःसहविरहज्वालावलीदुःखितौ सजीवमप्यात्मानं मृतमिव मन्यमानौ स्थितौ । ततो वत्स, चिरं जीवास्माकं जीवितेन ।' राज्ञा पृष्टम् । 'तदा तुरगेणापहृतः कुत्र गतः, कुत्र स्थितः, इत्येतत्सर्वमपि स्वरूपमावेदय ।' एतदाकर्ण्य कुमारेण यत्र यत्र भ्रान्तं यत्र यत्र यद्यद्दृष्टमनुभूतं च तदखिलमपि विज्ञप्तम् । इतश्च मध्याह्नावसरे मागधेन निवेदिते तत्रैव विहितमज्जनभोजनौ दृढवर्मकुवलयचन्द्रौ सुखं समासीनौ क्षणं स्थितौ । ततः,

दृढवर्मसुतः शस्ते मुहूर्ते गणकोदिते । गजपृष्ठप्रतिष्ठेन भूमिभर्त्राग्रयायिना ॥ २० ॥
दुर्वारैर्वारणैरश्ववारैर्वारितवैरिभिः । मनोरमैः स्यन्दनौघैः संनद्धैः सुभटैः समम् ॥ २१ ॥
प्रवाद्यमाननिःस्वानस्वानडम्बरिताम्बरः । विधीयमानमाङ्गल्योपचारश्चतुराग्रिमैः ॥ २२ ॥
आकर्णयन्नुभाकर्णिबन्दिवृन्दभवां स्तुतिम् । वनीपकानां दीनानां ददद्दानं पदे पदे ॥ २३ ॥
जयकुञ्जरमारूढः पश्यन् मञ्चान् प्रपञ्चितान् । मुक्तावचूलसश्रीकविचित्रोल्लोचरोचितान् ॥ २४ ॥
वृद्धाङ्गनाशिषो गृह्णन् प्रतीच्छन्नक्षताक्षतान् । समाससाद प्रासादं विशदं सप्तभूमिकम् ॥ २५ ॥
षड्भिः कुलकम् ॥

§ ९) तस्मिन्नेव मुहूर्ते श्रीदृढवर्मणा कनकमयासने निवेश्य कुमारस्य जयजयशब्दपूर्यमाणनभस्तलं चारुचामीकरविरचितैः कलशैः सत्तीर्थसमानीतोदकसंभृतैः सर्वलोकप्रत्यक्षं युवराजपदाभिषेकश्चक्रे । ततस्तेन राजलोकेन नमस्कृतः कुमारः । राज्ञा प्रोक्तम् । 'वत्स कुमार, पुण्यवानसि, यस्य भवादृशस्तनुजः । अद्यैव चिरसंचितो मनोरथरथः परां प्रमाणकोटिमधिरूढः । अतः प्रभृति त्वमेव राज्यभारधौरेयः ।

ततः प्रीतिप्रकर्षेण रोमहर्षयुतो नृपः । राज्यप्रधानप्रत्यक्षं तनूजं समशिक्षयत् ॥ २६ ॥
राज्यभारधुराधुर्ये वर्ये वत्स गुणैस्त्वयि । अद्यापि न परं लोकं साधये तेन मे त्रपा ॥ २७ ॥
विश्वम्भरायास्त्वय्यद्यावनं कलितयौवने । मयि वत्स पुनर्युक्तं वनं गलितयौवने ॥ २८ ॥
परं भोगफलस्यास्य कर्मणः शेषमस्ति मे । यावत्तावत्त्वया राज्ये भूयतां सहकारिणा' ॥ २९ ॥

कुमारो ऽपि पादौ प्रणम्य प्रोवाच । 'यत्किंचित्तातः स्वयमादिशति तदवश्यं मया विधेयम्' इति । ततः कुवलयमालया गुरुजनस्य प्रणतिश्चक्रे । गुरुजनेनाप्यभिनन्दिताशीर्वचोभिः । कुमारो ऽथ यौवराज्यपदं पालयन् स्वगुणैः सर्वसंमतो बभूव । अपि च ।

स्मितैर्निरीक्षितैस्तस्य चरितैर्जल्पितैरयम् । राजलोकः समग्रो ऽपि सर्वदानन्दभूरभूत् ॥ ३० ॥
धिनोत्यखण्डधाराभिर्धरां धाराधरो यथा । तथायमर्थसंघातैरत्यर्थं सार्थमर्थिनाम् ॥ ३१ ॥

§ १०) ततश्च कियत्यपि गते काले सुखसंदर्भमये व्यतीते राज्ञा भणितम् । 'वत्स कुवलयचन्द्र, एष कालो मम धर्मस्याराधने ततस्त्वं करोमि ।' कुमारेण प्रोक्तम् । 'महाराज, युक्तमुक्तम्, परमेकं पुनर्विज्ञपये धर्मः कुलोचित एव कर्तव्यः ।' राज्ञोक्तम् । 'बहवो धर्मोपायाः, को ऽयं कुलोचितः ।' कुमारेणोक्तम् । 'य इक्ष्वाकुवंश्यैः पूर्वजैः कृतः स एवोचितः ।' तदाकर्ण्य राजा धर्मपरीक्षार्थं देवतागृहे कुलदेवतां श्रियमाराधयामास । ततस्तस्य राज्ञः कुसुमस्रस्तरे स्थितस्य षड् यामा व्यतीताः । अथ निशीथे गगनतले वाणी समुल्ललास । 'भो नरेश, यदि भवतो धर्मसारेण कार्यं तत इक्ष्वाकुवंश्यकुलधर्मं गृहाण ।' इति वदन्त्या कुलदेवतया श्रिया प्रत्यक्षीभूय हेमपट्टिकाखण्डं ब्राह्मीलिपिसनाथं समर्प्यान्तर्धानं विदधे । तन्निरीक्ष्य नरेश्वरः प्रमुदितः प्रगे कुमारमाकार्य सर्वमपि निशावृत्तं निवेदयामास । ततः कुमारः पित्रादेशेन तत्र लिपिं वाचयितुं प्रवृत्त इति ।

'ज्ञानदर्शनचारित्ररत्नत्रयमनुत्तरम् । साधनं मोक्षमार्गस्य निधानं शिवशर्मणाम् ॥ ३२ ॥
न हिंसा यत्र नासत्यं न स्तेयं ब्रह्मपालनम् । परिग्रहप्रमाणं च रात्रिभोजननिर्वृतिः ॥ ३३ ॥
सर्वदोषविनिर्मुक्तो यत्र देवो जिनेश्वरः । महाव्रतधरो धीरो गुरुर्धर्मोपदेशकः ॥ ३४ ॥
पूर्वापराविरुद्धश्चागमः श्रीशिवसंगमः । मुक्तये धर्म एवायं प्रतीपस्तु भवभ्रमौ ॥ ३५ ॥'

§ ११) एवं वाचिते धर्मस्वरूपे राज्ञोक्तम् । 'अहो, अनुगृहीता वयं भगवत्या कुलदेवतया । एतत्पुनर्न ज्ञायते, के ते धर्मपुरुषाः, येषामेष धर्मः ।' कुमारेणोक्तम् । 'दर्शनान्याकार्य धर्मपृच्छा विधीयते, यस्य कस्यचिद्धर्म एतल्लिपिसंवादी भवति स एव साध्यते ।' ततो भूपतिर्दर्शनप्रधानपुरुषानाकार्य यथा-

1 > B वत्स तवातीव (on the margin). 8 > B दुर्वारिवारणै°.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थानं निवेश्य धर्मं पप्रच्छ । सर्वैरपि निजनिजागमानुसारेण धर्मो निवेदितः परं तस्य चेतसि स्थितिं न बबन्ध । ततो राज्ञा जैनमुनयः पृष्टाः । 'यूयं निजं धर्मं निवेदयत ।' ततो गुरुणा 'यो धर्मः कुलदेवतया निवेदितः स एव धर्मो धर्मसारः' इति प्ररूपितः । ततो भूपः कुमारं विलोक्य बभाषे । 'सम्यगेवैष मोक्षमार्गक्षम इति । सर्वेषामपि धर्माणामेष एव मुख्यः । एष एव कुलदेवतया दत्तः । इक्ष्वाकूणामयमेव कुलधर्मः ।' कुमारेण विज्ञप्तम् । 'यदाहं तुरङ्गमाविष्टस्तदैतस्यैव धर्मस्य बोधार्थं देवेनापहृतः । मयारण्ये मुनिसिंहदेवा विलोकिताः पूर्वभवसंगताः पूर्वभवे ऽप्यमुमेव धर्ममाराध्य ते स्वर्गं गतवन्तः । तैरप्येनं धर्मं निवेद्य कुवलयमालाबोधार्थमस्मि प्रेषितः । येन च शुकेन तं देशं गतानामस्माकं प्रवृत्तिर्भवतां पुरो निवेदिता तेनाप्ययमेव सार्वज्ञो धर्मो दृष्टः ।

रजोहृतिः कराम्भोजं भेजे यस्य नरेश्वरः । पुरन्दरो ऽपि तं स्तौति सादरं विगतादरम् ॥ ३६ ॥
स्वयं स्वामी जगन्नाथ पाथोनाथः कृपाम्बुनः । सभायामादिशद्धर्ममसुमेव जिनेश्वरः ॥ ३७ ॥
साधवो ऽपि मया दृष्टा धर्मे ऽत्र स्थितिशालिनः । उत्पाद्य केवलज्ञानं महोदयपदं ययुः ॥ ३८ ॥
तेन विज्ञप्यसे तात जैनधर्मः सुशर्मदः । सर्वेषामेव धर्माणामयमेव मनोरमः ॥ ३९ ॥
दुर्वारवारणाकीर्णं रङ्गत्तुङ्गतुरङ्गमम् । भवेद्राज्यमपि प्राज्यं न धर्मस्तु जिनोदितः ॥ ४० ॥

§ १२) तावदेव भवता भवतापहारी दुर्लभो जिनधर्मः प्राप्तस्ततो निपुणेन त्वयायं विधेयः ।' राजा 'तथा' इति प्रतिपद्य प्रोवाच । 'अहो, सत्यमेतद्यदेष धर्ममार्गो दुर्लभः । तथा वयं पलितकलितशिरसः संजाताः परं धर्माणामन्तरं नावगतम्' । 'भोस्तपोधनाः, तत्रभवतां भवतां स्थानं न वयं जानीमः ।' गुरुणोक्तम् । 'राजन्, बाह्योद्याने कुसुमगृहचैत्ये ऽस्ति ।' राज्ञोक्तम् । 'व्रजत यूयं स्थानं कुरुत कर्तव्यानि, प्रभाते समेष्यामि' इति वदन् कुमारमहेन्द्राभ्यां समं क्ष्मापतिरुत्तस्थौ साधवो ऽपि स्वं स्थानमलंचक्रुः । ततो दृढवर्मावशेषमपि भवस्वरूपं मायागोलकमिव, इन्द्रजालमिव, आदर्शप्रतिबिम्बमिव नेत्ररोगिविभावरीवरयुगलावलोकनमिव, मरुमरीचिकानिचयावभासनमिव गन्धर्वपुरनिरूपणमिव, अविचारितरामणीयकमिवाकिंचित्करमनुपादेयं विचिन्त्य संजातवैराग्यः कुवलयचन्द्राय सप्ताङ्गं राज्यं ददौ, इति च शिक्षां तं प्रति जगाद । 'वत्स कुवलयचन्द्र, ज्ञातयुक्तायुक्तस्य पठितसर्वशास्त्रसार्थस्य तव धवलितधवलनमिव पिष्टपेषणमिव विभूषितविभूषणमिव शिक्षाप्रदानं, परं पुत्रप्रीतिर्मां मुखरयति ।

दुरन्तदुरितोपायाश्चपलाचपलास्तथा । श्रियः श्रियश्च तत् क्वापि मा भूयास्तद्वशंवदः ॥ ४१ ॥
उच्चैस्तरं पदं प्राप्य त्वया कार्यविदा सदा । गुरवो न लघुत्वेन दर्शनीयाः कदाचन ॥ ४२ ॥
त्वया बद्धानुरागेण पालनीया निजाः प्रजाः । यतः प्रजालता नीतिनीरसिक्ताः फलन्त्यमूः ॥ ४३ ॥
अन्तरङ्गारिषड्वर्गजयाय भवतादरः । शास्त्रे शस्त्रे च कर्तव्यो बहिरङ्गारिशान्तये ॥ ४४ ॥
आराध्या सर्वदा विद्यानवद्याः स्थविरास्त्वया । मज्जतां व्यसनाम्भोधौ वृद्धसेवा हि मङ्गिनी ॥ ४५ ॥
राज्यश्रीः काममाहेयी न्यायगोभक्तपोषिता । निकामं कामदुग्धानि प्रसूते वसुधाभुजाम् ॥ ४६ ॥

§ १३) इति शिक्षां दत्त्वा दत्तदीनजनदानः संमानितस्वजनः कृतचैत्याष्टाह्निकामहः सुतकारितां शिबिकामारुह्य नृपो गत्वा कुसुमगृहचैत्ये तस्यैव गुरोरन्तिके प्राव्राजीत् । तदग्रे करुणावता गुरुणा मनुष्यभवोपरि युगसमिलापरमाणुदृष्टान्तौ प्ररूपितौ । तथा हि ।

समग्रद्वीपवार्धीनां पर्यन्ते ऽस्ति महोदधिः । स्वयंभूरमणो नाम वलयाकारतां गतः ॥ ४७ ॥
देवः को ऽपि युगं प्राच्यां प्रतीच्यां समिलां पुनः । स्थापयेदथ सा भ्रष्टा जले तत्रातलस्पृशि ॥ ४८ ॥
अपारे चानिवारे च परितो ऽपि चलाचला । युगे चलाचले योगं लभते न कथंचन ॥ ४९ ॥ युग्मम् ॥
प्रचण्डवातवीचीभिः प्रेरिता सा कथंचन । युगे न लभते योगं जन्तुर्न तु जनुर्नृणाम् ॥ ५० ॥
[युगसमिलादृष्टान्तः ।]

तथाहि त्रिदशः कश्चिदारासनदृषन्मयम् । स्तम्भं महान्तमाचूर्य दृग्निक्षेपनिभं व्यधात् ॥ ५१ ॥
तच्चूर्णं स समादाय तूर्णं गत्वा सुराचले । चूलिकायामवस्थाय नलिकां स्वकरे ऽकरोत् ॥ ५२ ॥
तत्रस्थितेन फूत्कृत्य तया ते प्रचुरौजसा । ते ऽणवः पातिताः सर्वे दिशासु चतसृष्वपि ॥ ५३ ॥
कल्पान्तकालप्रोन्मीलदुद्दाममरुता हताः । सर्वे ऽपि पश्यतस्तस्यादृश्यास्ते जज्ञिरे क्षणात् ॥ ५४ ॥

5) P B तुरंगमाविश्य एतस्यैव. 8) P सर्वज्ञो धर्मः. 9) B नरेश्वर, B विन (ने?) यादरं for विगतादरं. 10) B जगन्नाथः. 19) B नेत्ररोगिणा (णा added above the line) विभावरी. 21) B सप्तांगराज्यं. 30) B °चैत्याष्टाहिकस्तत्कारितां. 36) C adds here [युगसमिलादृष्टान्तः] at the end of verse No; 50. 39) P om. स. 40) P पूत्कृत्य, B ति for ते.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुपर्वपर्वतभ्रष्टैस्तैरेव परमाणुभिः । स सुपर्वापि नो कर्तुं समर्थस्तं पुनर्यथा ॥ ५५ ॥
दुष्कर्मवशतो भ्रष्टस्तथा मानुषजन्मनि । निस्तुषं मानुषं जन्म जन्मी न लभते पुनः ॥ ५६ ॥

परमाणुदृष्टान्तः ।

ततः स राजर्षिर्द्विविधशिक्षाविचक्षणः चारुचारित्रं समाचरन् गुरुणा सह विजहार । कुवलयचन्द्रस्यापि निखिलभूपालमण्डलीमुकुटकोटिनिघृष्टचरणारविन्दस्य विपुलामासमुद्रमेखलां पालयतः प्रभूता वासरा व्यतीयुः ।

§ १४) अत्रान्तरे पद्मकेसरसुरः स्वानि च्यवनचिह्नानि परिज्ञाय दुर्मनाश्चिन्तयामास ।

'खेदं मा व्रज जीव त्वं दीनत्वं हृदि मा व्यधाः । तावदेव हि भुज्येत यावदायुरुपार्जितम्' ॥ ५७ ॥

ततः संप्रति कालोचितं क्रियत इत्यागत्यायोध्यायां सुरः कुवलयचन्द्र–कुवलयमालयोः पुरः कथयामासेति । 'यथामुकमासे ऽमुकदिवसे युवयोः सूनुर्भविष्यासि तावदिमानि पद्मकेसरनामाङ्कितानि कटककुण्डलहारार्धहारादीनि भूषणानि स्वीक्रियन्ताम् । तानि च प्रसृतबुद्धिविस्तरस्य मम तनौ निवेश्यानि, येनैतानि चिरपरिचितानि प्रेक्षमाणस्य मम जातिस्मृतिरुत्पद्यते' इत्युदित्वार्पयित्वा च त्रिदशः स्वस्थानमागतः । ततः कियद्भिर्दिनैः सुरश्च्युत्वा कुवलयमालाया गर्भे सुतत्वेनोदपद्यत । ततः सापि समये पवित्रं पुत्रं प्रासूत । पित्रा मध्ये पुरं विरचय्य वर्धापनकमहोत्सवे संजाते द्वादशे दिवसे तस्य मुनिना पूर्वमुदितमभिधानं 'पृथ्वीसारः' इति विदधे । स कुमारः कलाकलापेन यौवनेन च स्वीचक्रे । तस्य पितृभ्यां तान्याभरणानि समर्पितानि । तानि पश्यत एव तस्य प्रागपि क्वापि दृष्टान्येतानीत्यूहापोहवतो मूर्छाजनि, जातिं च सस्मार । ततः शीतेन तोयेन वायुना चाश्वासितो लब्धचैतन्यो दध्याविति । 'अहो, तत्र तानि सुखान्यनुभूय पुनरीदृशानि तुच्छानि मनुजजन्मजातानि जीवो ऽभिलषति, इति धिग् मोहं धिक् च संसारावासं यत्र निरन्तरमाधिव्याधिव्यथितो जनः, तदहं संसारदुःखपरंपरापराभवविधायिनीं प्रव्रज्यां गृहीत्वात्मानं साधयिष्ये' इति चिन्तयन् स वयस्यैर्भणितः । 'कुमार, तव स्वस्थशरीरस्य किमेतदत्याहितम् ।' तेनोक्तम् । 'ममाजीर्णविकारेणैषा भ्रमिरुत्पन्ना, तेन न पुनरात्मस्वभावो निवेदितः ।' एवं व्रजत्सु दिनेषु कुवलयचन्द्रेणोक्तम् । 'कुमार, राज्यं गृहाण, अहं प्रव्रज्यां ग्रहीष्ये । कुमारेणोक्तम् । 'महाराज, त्वमेव राज्यं प्रतिपालय, अहं पुनर्दीक्षां स्वीकरिष्ये ।' राज्ञादिष्टम् । 'अद्यापि बालस्त्वं राज्यसुखमनुभव, वयं पुनर्भुक्तभोगा दीक्षां ग्रहीष्यामः' इति कुमारं प्रतिबोध्य भूपतिर्निर्विण्णकामभोगः प्रव्रज्याग्रहणमनाः कस्यापि गुरोरागमनमभिलषंस्तस्थौ । अन्यदिने दत्तमहादानः संमानिताशेषपरिजनः कुवलयमालया समं धर्मवार्तां वितन्वानः क्षमाधनः सुप्त्वा पाश्चात्ययामिनीयामे प्रथममेव प्रबुद्धश्चिन्तयामासेति ।

§ १५) 'दुष्प्रापं प्राप्य मानुष्यं दक्षिणावर्तशङ्खवत् । विचारचतुरैश्चिन्त्या हेयोपादेयहेतवः ॥ ५८ ॥
मानुषत्वमतिश्रेष्ठं कुले जन्म विशेषतः । धर्मः कृपामयो जैनस्त्रयमेतद्धि दुर्लभम् ॥ ५९ ॥
धन्यास्ते पुण्यभाजस्ते निस्तीर्णस्तैर्भवार्णवः । ये संगमपरित्यागनिगमाध्वगतां ययुः ॥ ६० ॥
त एव कृतिनो ऽभूवन् भुवनश्रीविशेषकाः । जिनेन्द्रजल्पिता सर्वविरतिर्यैरलंकृता ॥ ६१ ॥
धन्यानि तानि क्षेत्राणि यत्र जैनमुनीश्वराः । भ्रमन्ति विभ्रमत्यक्ता मुक्ताहाराः शुभाशयाः ॥ ६२ ॥
पुण्यतिथिस्तिथिः सा का सा वा वारो ऽपि कः स च । तन्मुहूर्तं च किं भावि ममामोदप्रमोदकृत् ॥६३॥
यस्मिन् पवित्रचारित्रचित्रभानुप्रभोदयात् । मन्मनःसरसीजन्म स्मेरतामुपयास्यति ॥ ६४ ॥ युग्मम् ॥
प्रधानधान्यतो येन दीक्षाशिक्षाशिलोपरि । क्षालयिष्ये मनोवासः कुवासमलिनं कदा' ॥ ६५ ॥

इति चिन्तयतस्तस्य भूपतेः प्राभातिकमङ्गलपाठकः पपाठ ।

'हतसंतमसानीकः पातितनक्षत्रसुभटसंघातः । प्रसृतप्रतापनिकरः शूरः पृथिवीपतिरुदेति' ॥ ६६ ॥

एतदाकर्ण्य राज्ञा चिन्तितम् । 'अहो, सुन्दरोपश्रुतिः सुतराज्याय ।

नमस्ते लोकनिर्मुक्त नमस्ते द्वेषवर्जित । नमस्ते जितमोहेन्द्र नमस्ते ज्ञानभास्कर' ॥ ६७ ॥

इति वदन् भूपतिः शयनीयादुत्तस्थौ । ततो 'नमो जिनेन्द्रेभ्यः' इति वदन्ती संभ्रमपरा त्रिदशतटिनी-

---

2) B मानुषजन्मनः (partly on the margin). 5) O चरणारविन्दस्य, B adds समुद्र before समुद्रमेखलां, P चाल्यतः for पालयतः. 13) B inter. पवित्रं & पुत्रं. 14) B महोत्सवं. 24) P B om. दीक्षां ग्रहीष्यामः. 25) P महादानसन्मानिताशेष, P वितन्वत for वितन्वानः, B adds सुप्त्वाप before सुप्त्वा, 33) P O स for सा वा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुलिनकल्पात्तल्पादुत्थाय कुवलयमाला पतिं प्रति प्रोवाच । 'एतावतीं वेलां यावद्दोस्वामिना किं चिन्तितम् ।' राज्ञा जल्पितम् । 'पृथ्वीसारं कुमारं राज्ये निवेश्य प्रव्रज्याग्रहणेनात्मानं साधयिष्ये' इति । तया प्रोक्तम् । 'यदा विजयापुर्या आवां निःसृतौ तदा प्रियेण प्रवचनदेवता विज्ञप्ता, यदि भगवति जीवन्तं तातं परिपश्यामि राज्याभिषेकं च प्राप्नोमि ततः पश्चात्तनुजं राज्ये निवेश्य व्रतं गृह्णामि, ततो देवि शकुनोत्तमं विधेहि' इत्युदिते केनचिन्नरेणातपत्रमुपढौकितम् । ततः स्वामिना जल्पितम् । 'दयिते, प्रकृष्टमेतच्छकुनं सर्वापि संपत्तिः संततिश्चास्माकं भाविनी' इति तत्सत्यं जातम् । सांप्रतं प्रव्रज्यापालनस्यानुध्यानं ततो युक्तमेव । ततस्तयाभ्यधायि । 'धर्मस्य त्वरिता गतिः', अतो देव, कथं विलम्बः, त्वरितमेवात्महितं वितन्यते' । राज्ञोक्तम् । 'देवि, यद्येवं ततः कुत्रचिद्गुरवो विलोक्या येन यथा चिन्तितं प्रमाणपदवीमध्यारोहति ।'

§ १६) ततः प्राभातिकं कृत्यं विधाय भूनायकस्तत्रैव दिने पृथ्वीसारं कुमारं राज्ये ऽभिषिच्य द्वितीयदिवसे शिरोगृहासनस्थौ नभोमध्यमध्यासीने नभोमणौ साधुयुगलं भिक्षार्थं भ्रमन्तं रथ्यामुखे वीक्ष्य प्रासादादुत्तीर्य सुखासनाधिरूढः कियज्जनावृतो गत्वा प्रणिपत्य प्रोवाच । युवयोर्निरामयः कायः ।' साधुभ्यामुक्तम् । 'कुशलमावयोर्गुरूणां चरणस्मरणप्रवीणान्तःकरणयोः' । राज्ञोक्तम् । 'गुरूणां किमभिधानम् ।' ताभ्यामुक्तम् । 'इक्ष्वाकुवंश्यः प्राप्तगुरुविनयसकलशास्त्रार्थः कन्दर्पदर्पसर्पसर्पारिर्दर्पफलिकाख्यो गुरुः ।' राज्ञोक्तम् । 'भगवान्, किमु स अस्मत्संबन्धी रत्नमुकुटस्य राजर्षेः पुत्रो दर्पफलिकः, किं वापरः' इति । साधुभ्यामुक्तम् । 'स एव' । राज्ञा भणितम् । 'कस्मिन् स्थाने तिष्ठन्ति' । ताभ्यामुक्तम् । 'राजन्, संसारमरुतरवस्ते गुरवः प्रधाने मनोरमोद्याने समवसृताः सन्ति' इत्युदित्वा मुनियुगलं विचर्य स्वस्थानमाजगाम । नृपतिरपि प्रासादमासाद्य कुवलयमाला महेन्द्रस्य च पुरो वृत्तान्तं सर्वमपि निवेदयामास । अथ स चैत्रासङ्क्रान्ता दर्पफलिकः संपन्नाचार्यपदः समवसृतः । ततः कुवलयचन्द्रः कुवलयमालया महेन्द्रेण च समं मनोरमोद्याने समागत्य भगवन्तं दर्पफलिकं प्रणिपत्य पप्रच्छ । 'तदा भगवन्, भवन्तश्चिन्तामणिपल्लीतो निःसृत्य कस्य गुरोरन्तिके प्रव्रजिताः ।' ततो भगवानुवाच । 'महाराज, तदा ततो निर्गत्य मया श्रीभृगुकच्छं गतेन मुनिरेको ददृशे' । तेन मुनिना प्रोक्तम् । 'भो दर्पफलिक राजपुत्र, मामभिजानासि ।' मयोक्तम् । 'भवन्तं सम्यग् नोपलक्षये ।' तेनोक्तम् । 'केन तव तच्चिन्तामणिपल्लीराज्यं दत्तम् ।' मयोक्तम् । 'भगवन्, किं भवान् सः ।' तेनोक्तम् 'एवमेव' । मयोक्तम् । 'यथा तदा त्वया राज्यं दत्तं तथा संप्रति संयमराज्यदानेन प्रसादं तनु ।' तेनोक्तम् । 'यद्येवं ततः कथं विलम्बः ।' तदा तेन मुनिना व्रतं दत्तम् । तेन सह विहारं कुर्वाणो ऽयोध्यायामागतवान् । तत्र च तव पिता दृढवर्मा तदन्तिके निष्क्रान्तः । स च मम गुरुस्तव जनकश्चोत्पन्नकेवलज्ञानौ सम्मेतशैलोपरि द्वावपि सिद्धिपदमीयतुः । अहं पुनर्भवत्प्रतिबोधाय समागमम् ।' तत एवं पिशुनसंगतिमिव लीलावतीलोचनप्रान्तमिव महाबलान्दोलितकदलीदलमिव शरत्समयघनाघनपटलमिव सुरेश्वरशरासनमिव चपलस्वभावं पदार्थजातं परिज्ञाय तत्पदान्ते कुवलयचन्द्रः कुवलयमालया महेन्द्रेण च समं व्रतं जग्राह । कुवलयमालाप्यागमानुसारेण तपस्तप्त्वा सौधर्मे नाके सागरोपमद्वयस्थित्यायुस्त्रिदशः समभवत् । कुवलयचन्द्रो ऽपि समाधिना विपद्य तत्रैव विमाने तत्प्रमाणायुः समुदपद्यत । सिंहो ऽप्यनशनकर्मणा तत्रैव देवो जातो ऽस्ति । स च भगवानवधिज्ञानी सागरदत्तमुनिर्मृत्वा तस्मिन्नेव स्थाने सुरः समजायत ।

§ १७) अथ पृथ्वीसारः कियत्कालान्तरं राज्यसुखमनुभूय विरचितमनोरथादित्यनामतनुजराज्याभिषेकः संसारमहाराक्षसभयभ्रान्तस्वान्तः परिज्ञाय भोगान् भोगिभोगोपमान् गुरूणां चरणमूले प्रव्रज्य कृतश्रामण्यः प्रदत्तमिथ्यादुष्कृतः पञ्चत्वमवाप्य तत्रैव विमाने सुधाशनो ऽजनिष्ट । एवं ते पञ्चापि तत्रैव वरविमाने कृतसुकृताः समुत्पन्नाः । परस्परं ते विज्ञातपूर्वनिर्मितसङ्केता जल्पितुं प्रवृत्ताः । 'दुस्तरं संसारसागरमवगम्य यथा पूर्वं तथाधुनापि सकलसुरासुरनरसिद्धिसुखदायिनि भगवत्प्रणीते सम्यक्त्वे यत्न एव कार्यः । इतो ऽपि च्युतैरात्मभिः पूर्ववत्प्रतिबोधपरैः परस्परमेव भाव्यम् ।' तथेति प्रतिपन्ने तैस्तेषां कालो व्यतिक्रामति ।

अथो जम्बूद्वीपे दक्षिणभरते ऽस्यामेवावसर्पिण्यां युगादिजिनादितीर्थनाथेषु मोक्षं गतेषु सत्सु ततः समुत्पन्ने चरमजिने श्रीमहावीरे पूर्वं कुवलयचन्द्रदेवः स्वमायुः परिपाल्य स्वर्गतश्च्युत्वा काकन्दी-

---

1) P B om. पतिं प्रति . 2) B पृथ्वीसारकुमारं· 4) B पश्यामि for परिपश्यामि, P प्राप्नोति for प्राप्नोमि. 5) P यदि ते for दयिते. 18) P B जगाद for निवेदयामास. 36) P °मिथ्यादुःकृतः संसारमहाराक्षसभयभ्रांतस्वांतः परिज्ञाय भोगोपमान। गुरूणां चरणमूले पंचत्वमवाप्य तत्रैव वरविमाने कृताः समुत्पन्नाः।. 37) B दुरुत्तरं दुस्तरं.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पुर्यां प्रणतजनकुमुदामन्दप्रमोदकौमुदीशस्य शत्रुजनकुञ्जरकण्ठीरवस्य सत्पथजाङ्घिकस्य काञ्चनरथस्य पृथ्वीपतेरिन्दीवरलोचनाभिधानप्रणयिनीकुक्षिभवो मणिरथकुमारस्तनयः समभवत् । स च क्रमेण प्राप्तयौवनो गुरुजनैः प्रतिषिद्धो ऽपि वयस्यैर्निवारितो ऽपि सद्भिर्निन्द्यमानो ऽपि कर्मोदयेन नक्तंदिवा पापर्द्धिं कुर्वन्न विरमति । अन्यदा च तस्यारण्ये प्रविष्टस्य श्रीवर्धमानजिनः केवलज्ञानशाली जगत्त्रयपतिः पवित्रितत्रिभुवनतलः काकन्द्यां समवसृतः । ततश्चतुर्विधदेवनिकायैः समवसरणं चक्रे । तत्र च श्रीमहावीरः स्वयं गौतमादीनां गणभृतां सौधर्माधिपतेरपरस्य च सुरासुरनिकरस्य सपरिजनस्य काञ्चनरथस्य नरेशितुः पुरः सम्यक्त्वमूलं धर्मं द्विविधं निवेदितुमारेभे ।

शङ्कादिदोषरहितं स्थैर्यादिगुणभूषितम् । पञ्चभिर्लक्षणैर्लक्ष्यं सम्यक्त्वं शिवशर्मणे ॥ ६८
आर्जवं मार्दवं क्षान्तिः सत्यं शौचं तपो यमः । ब्रह्माकिञ्चनता मुक्तिर्यतिधर्मः प्रकीर्तितः ॥ ६९
अहिंसादीनि पञ्चाणुव्रतानि च गुणत्रयम् । शिक्षापदानि चत्वारि गृहिधर्मः कुकर्महृत् ॥ ७०

§१८) इतश्चावसरं मत्वा तत्त्वानुगामिना प्रभूतजन्तुवधजातपातकाशङ्किना कृताञ्जलिना काञ्चनरथेन राज्ञा पृष्टम् । 'नाथ, मणिरथकुमारो भव्यः किमभव्यश्च' इति । भगवतादिष्टम् । 'अयं भव्यश्चरमशरीरश्च' इति । नृपेण विज्ञप्तम् । 'भगवन्, यद्ययमन्तिमतनुस्ततः कथमनेकधा निषिध्यमानो ऽप्याखेटकव्यसनतो न निवर्तते, कदा पुनस्तस्य जिनधर्मे बोधिः ।' तीर्थकृतोक्तम् । 'भद्र, त्वत्सूनुः प्रबुद्धः प्राप्तसंवेगरङ्ग इहैव प्रस्थितः' इति । नृपेणोक्तम् । 'नाथ, केन वृत्तान्तेन तस्य वैराग्यमजायत ।' जगन्नाथेन समादिष्टम् । 'इतो ऽस्ति योजनप्रमाणे भूमिभागे कौशाम्बं नाम वनम् । तत्र च बहवः कुरङ्गशूकरशशकसंघाताः परिवसन्तीति मत्वा कुमारः पापर्द्धिनिमित्तमागतः । तत्र च तेन भ्रमता एकस्मिन् प्रदेशे सारङ्गयूथमालोक्य कोदण्डमारोप्य यावच्छरः सज्जीकृतस्तावत्सर्वमपि मृगकुलं काकनाशं ननाश । परं तदैकाकिनी मृगी कुमारं चिरमभिवीक्ष्य दीर्घं निःश्वस्य निष्पन्दलोचना संजातहृदयविश्रम्भा निःशङ्का स्थिता । तां च तथावस्थितां दृष्ट्वा कुमारेण चिन्तितम् । 'अहो, महत्कौतुकम्, एतस्मिन् हरिणयूथे प्रनष्टे ऽपि परमियं मृगी मदभिमुखं पश्यन्ती तथैव तिष्ठति' इति चिन्तयतस्तस्याभ्यासं सा समुपेयुषी । ततः सानेकश्वापदजीवान्तकरमर्धचन्द्रमालोक्यापि स्नेहनिर्भरहृदयेव स्थिता । ततः कुमारेण शरासनं शरश्चाभाजि । 'यो ऽपराधरहितान् जन्तून्निहन्ति स महापापी' इत्येवं चिन्तयता प्रादुर्भूतजन्तुजातकारुण्यमैत्रीपूरितचेतसा तेन सा हरिणी सहर्षं करतलेन पस्पृशे ।

यथा यथा तदङ्गं स सरङ्गं स्पृशति स्फुटम् । तथा तथासौ जायेत बाष्पाविलविलोचना ॥ ७१

ततस्तस्या विलोकनेन कुमारस्य दृग्भ्यां विकसितं सर्वाङ्गं रोमाञ्चकञ्चुकः प्रससार । चेतसि परमः प्रमोदः प्रवृत्तः । ज्ञातं यथा काप्येषा मम पूर्वसंबन्धिनीति ।

ज्ञानं मन्ये दृशोरेव नापरस्य च कस्यचित् । प्रमोदेते प्रिये दृष्टे दृष्टे संकुचतो ऽप्रिये ॥ ७२

'जन्मान्तरे का ममैषासीत्' इति ध्यायतस्तस्य हृदि स्थितम् । अद्यैव तातः काकन्दीं चम्पापुर्या आयातः । अत्र च किल भगवान् श्रीमहावीरः समवसृतः । 'तस्य वन्दनानिमित्तं तत्राहमपि गमिष्यामि, येनैतद्वृत्तान्तं पृच्छामि, कैषा मृगवधूः, अस्माकं जन्मान्तरे कीदृशि संबन्धे आसीत्' इति ध्यायंश्चलितः । 'स मृगी च सांप्रतं समवसरणबाह्यप्राकारगोपुरान्तरे द्वावपि वर्तेते' इति वदतस्तीर्थकृतः पुरो मणिरथकुमारः समागतश्च प्रदक्षिणात्रयं दत्त्वा भगवन्तं नत्वा प्रपच्छेति च । 'भगवान्, निवेदय कैषा कुरङ्गी ममोपरि परमप्रेमधारिणी ।' ततो भगवान् ज्ञातकुलतिलकः सकलजन्तुसंघातबोधाय पूर्वभवं तं तयोराख्यातुमारेभे ।

§१९) अत्रैव भरते साकेतपुरम् । तत्र नाम्ना कान्त्या च मदनो नृपः । तत्सूनुरनङ्गः कुमारः । तत्राढ्यो वैश्रमण इव वैश्रमणः श्रेष्ठी । तदङ्गजः प्रियंकराख्यः, स च सौम्यः सुजनः कुशलस्त्यागी दयालुः श्रद्धालुः । अन्यदा वैश्रमणेन प्रातिवेश्मिकप्रियमित्रपुत्र्या सुन्दर्या सह तनयस्य पाणिग्रहणमकार्यत । द्वयोरपि प्रीतिर्महती जाता । परस्परं स्तोके ऽपि विरहे तन्मिथुनं सोत्सुकचित्तं भवति । अन्यदा च भवितव्यतयापटुतरशरीरे प्रियंकरे सा सुन्दरी बहुतरशोकशङ्कुव्यथिता न भुनक्ति न स्नाति न जल्पति न गृहकृत्यं करोति, केवलं संभावितदयितपञ्चताधिकाभ्यन्तरतापलोचनप्रवर्तमानबाष्पजललवा विषीदन्ती स्थिता । ततस्तथाविधकर्मसंयोगेन क्षीणे प्राणिते प्रियंकरः परलोकमियाय । ततस्तं मृतं विलोक्य

11) B तत्त्वातत्त्वानुगामिना. 14) P सबुद्धः for प्रबुद्धः 21) P तिष्ठत इति. 22) B स्नेहभरनिर्भर (भर added on the margin). 23) P B शरश्चाभाजि. 31) P om. अस्माकं 37) B inter. वैश्रमणः & श्रेष्ठी.

परिजनो ऽतीवविषण्णमनाः। पिता प्रलपितुमारेभे।

'हा वत्स हा गुणावास हा सौभाग्यनिधे भवान्। प्रियंकर गतः कुत्र देहि प्रतिवचो मम' ॥ ७३

स्वजनैस्तच्छवं संस्कारार्थं गृहान्निष्कासितुमारेभे, परं सा सुन्दरी स्नेहमोहितमानसा तत्संस्कारं कर्तुं न ददाति। ततः सा पित्रा मात्रा स्वजनेन च वयस्याभिर्विविधाभिः शिक्षाभिः शिक्षितापि तत्कुणपं न मुञ्चति। केवलं विलपन्ती अराजकमिति वदन्ती सुन्दरी तन्मृतकलेवरमालिङ्ग्य स्थिता।

पतिं पश्यति निर्जीवमपि जीवन्तमेव सा। स्नेहे नैव विचारः स्यान्मोहान्धितदृशां यतः ॥ ७४

§२०) ततो विषण्णमनसा स्वजनेन मान्त्रिकास्तान्त्रिकाश्च समाकारिताः। तैरपि विशेषः को ऽपि न समजनि। स्वजनेन 'इयमयोग्या' इति विचिन्त्य मुक्तास्तथैव तद्दिनं स्थिता। द्वितीयदिवसे तद्देहं श्वयथुना व्याप्तं ततो विगन्धः प्रससार। तथापि सा प्रेमपरवशा मृतकमालिङ्गन्ती परिजनेन निन्द्यमानापि सखीभिर्वार्यमाणाप्येवं चिन्तयामास। 'अयं स्वजन इति जल्पति, 'यदयं मृत इयं च ग्रहिला', ततस्तत्र गन्तव्यं यत्र न को ऽपि स्वजनः' इति ध्यात्वा तच्छवं शिरसि समारोप्य मन्दिरतो निःसृत्य सुन्दरी विस्मयकरुणाबीभत्सहास्यरसवशेन जनेन दृश्यमाना श्मशानमुपाजगाम। तत्र प्रावृतजरच्चीवरगात्रा रेणुधूसरितशरीरा कृतोर्ध्वकेशा महाभैरवव्रतमिवाचरन्ती भिक्षामानीय यत्किंचित्सुन्दरं तत्तदग्रे मुक्त्वा, इति वदति। 'प्रियतम, यत्किंचिद्रम्यतरं तत्त्वं गृहाण पाश्चात्यं यत्किंचिद्विरूपतरं तन्मम देहि' इति प्रोच्य भुङ्क्ते। एवं सा दिने दिने कृताहारा कापालिकबालिकेव राक्षसीव पिशाचीव स्थिता। तदा तत्पित्रा प्रियमित्रेण पुरस्वामी विज्ञप्तः। 'यद्देव, मम सुता ग्रहगृहीतेव वर्तते। तत्तां यदि को ऽपि सकलीकरोति तस्य यथाप्रार्थितमहं ददामि' इति दाप्यतां मध्ये पुरं पटहः। एतत्तेन विज्ञप्यमानं कुमारेण श्रुतं चिन्तितं च। 'अहो, मूढा वराकी ग्रस्ता प्रेमपिशाचेन न पुनरन्येन तदहं बुद्ध्या एतां प्रतिबोधयामि' इति चिन्तयता तेन विज्ञप्तो राजा। 'तात, त्वं यदि समादिशसि तदेतां वणिजः सुतां संबोधयामि।' एवं विज्ञप्ते नृपेण भणितम्। 'वत्स, यदि स्वस्थां कर्तुं शक्नोषि ततो युक्तमेतत्क्रियतामस्य वणिज उपकारः।' ततो राजपुत्रः कमपि नार्याः शवं समानीय तस्याः समीपे मुमुचे। न च सा तेन जल्पिता न च तया सः। यत्किंचित्सा शवस्य करोति तदयमपि करोति। अन्यदा तया भणितम्। 'क एष वृत्तान्तः।' तेनोक्तम्। 'एषा मम प्रियतमा सुरूपा सुभगा किंचिदस्वस्थशरीरा जाता।' ततो लोको वदति। 'यदियं मृता संस्कारार्हा।' मया चिन्तितम्। 'यदयं लोके ऽलीकभाषी ततो मया ततः समानीयास्मिन् श्मशाने मुक्ता।' तयोक्तम्। 'सुन्दरं कृतम्, आवयोः समानस्वभावयोर्मैत्री समभवत्।' यतः "समानशील-व्यसनेषु सख्यम्।" तेन भणितम्। 'त्वं मम स्वसा, एष मम भावुकः। किमभिधानममुष्य।' तया जल्पितम्। 'मम पतिः प्रियंकराभिधः।' तयोक्तम्। 'तव प्रियायाः किं नाम'। तेन निवेदितम्। 'मम प्रिया मायादेवीति नाम।' एवं परस्परसमुत्पन्नसंबन्धौ तौ वर्तेते। यदा सावश्यककृत्यकृते प्रयाति तदा तदभिमुखं वदति। 'यदयं मद्दयितो द्रष्टव्यः।'

§२१) यदा स कुत्रापि याति तदा तस्यास्तं शवं समर्प्य याति। अन्यदा तेनोक्तम्। 'भगिनि, तव पत्या मम प्रिया किंचिद्भणिता तन्मया सम्यग् नावगतम्।' तयोक्तम्। 'हे जीवेश, त्वत्कृते मया सर्वमपि कुलगृहपितृमातृप्रभृतिकं तृणवत्परित्यक्तं त्वं पुनरीदृशः, यदन्याङ्गनामभिलषसि' इत्युक्त्वा किंचित्कोपपरा संजाता। पुनरन्यदिवसे सा शवं तस्य समर्प्य नित्यकृते गता। तत्पुनस्तेन शवद्वयमपि कूपे निक्षिप्तम्। ततस्तदनुमार्गमनुसरन्नयं तया भाषितः। 'कस्य त्वया तन्मानुषद्वयमर्पितम्।' तेनापि गदितम्। 'मायादेवी प्रियंकरस्य रक्षानिमित्तमर्पिता, प्रियंकरो मायादेव्याश्च। तदावामपि तत्रैव व्रजावः' इत्युदित्वा तत्र तौ समागतौ प्रियंकरं मायादेवीं च न ददृशतुः। ततः सा दुःखमुपागता। सो ऽपि च्छद्मना मूर्छितः। ततो लब्धचैतन्येन तेनादिष्टम्। 'भगिनि, किं कर्तव्यम्, यस्तव प्रियो मम महेलामादाय कुत्रापि गतः, तत्सुन्दरं तेन नाचरितम्। मदीयमिदमाचरितम्।' ततः सुन्दरी मुग्धस्वभावा चिरं चिन्तयति स्म 'यत्किल तेन मम स्वामिनामुष्य प्रिया हृतान्यत्र नीता च। तत ईदृशो ऽनार्यो निष्कृपो निर्घृणः कृतघ्नश्च, येनेदृशमाचरितम्।' ततस्तेन भणितम्। 'भद्रे, एवंविधे विधेये किं विधेयम्।' तयोक्तम्। 'नास्मि जानामि, भवानेव जानाति किमत्र कर्तव्यम्।' तेनोक्तम्। 'भद्रे, सत्यं

10 > B सखीभिर्वार्यमाणापि जल्पितुमारभत अयं. 11 > B वदंती for ध्यात्वा, P तत्सर्वं शिरसि. 14 > B om. प्रोच्य भुङ्क्ते. 30 > B प्रयाति for याति. 32 > P हे मज्जीवेश. 33 > B दिने for दिवसे, B नित्यकृत्यकृते. 35 > B तेनापि निगदितं, P नवं. 36 > B inter. तत्र & तौ. 37 > P लब्धचेतनेन, B तेन निर्दिष्टं. 41 > P एवं विधेये तयोक्तं, P सत्यं शृणु.

ततः शृणु। सर्वदैक एव जीवः संसारे परिभ्रमन्नस्ति, कः प्रियः, का प्रिया च, सर्वमपि संसारस्वरूपं सौदामिनीव क्षणदृष्टनष्टम्। सर्वथैवानित्यतादिभावनाः समाश्रय। वियोगान्ताः संयोगाः। पतनान्ताः समुच्छ्रयाः। महारोगा इव भोगाः। एष जीवः संसारे चतुरशीतिलक्षसंख्ययोनिषु नट इव विविधरूपभाग्भवतीति ज्ञात्वा सम्यक्त्वमङ्गीकुरु।' एवं च भो मणिरथकुमार, या सुन्दरी प्रबोधिता तेन गृहमुपागता च। तत्पित्रा महोत्सवो रचयांचक्रे। सर्वत्र मध्ये पुरं प्रवृत्तः साधुवादो यदियं सुन्दरी कुमारेण बोधिता। तावद्भो मणिरथकुमार, यः सुन्दरीजीवः स त्वं तदा कृतसम्यक्त्वरत्नयत्नः पश्चात्त्वमवाप्य मानभटः संजातः। ततः पद्मसारनामा। ततः कुवलयचन्द्रः। ततो वैडूर्यनामा देवः। ततस्त्वं मणिरथकुमार इति। यः पुनर्वणिकूतनूजः स संसारं परिभ्रम्यास्मिन् वने मृगी समुदपद्यत। त्वां दृष्ट्वोहापोहवत्या अस्याः प्राग्भवस्मरणेन त्वयि स्नेहः समुल्ललास।' एवं च भगवता निवेदिते मणिरथकुमारेण विज्ञप्तम्। 'एवं ममानेन दुःखावासेन संसारवासेनालं, भगवन्, प्रसादं विधाय मयि प्रव्रज्यारत्नं देहि' इति वदन् कुमारः श्रीभगवता दीक्षितः।

§ २२) अत्रान्तरे गौतमेन गणभृता विज्ञप्तम्। 'भगवन्, अस्मिन् संसारे जीवानां मध्ये को जीवो दुःखितः' इति। भगवता समादिष्टम्। 'सम्यग्दृष्टिर्जीवो ऽविरतो नित्यं दुःखित एव।' गौतमेन भणितम्। 'केन हेतुना।' भगवता निवेदितम्। 'यः सम्यग्दृष्टिर्भवति स नरकतिर्यग्मनुष्यवेदनां जानाति। ततः पुरतः संसारभावं प्रेक्षते। न च विरतिभावं करोति। अनुभवति वर्धमानसंतापो नरकदुःखमिति। अत एव स दुःखितानामपि दुःखी।' पुनर्गौतमेन पृष्टम्। 'स्वामिन्, कः सुखी।' भगवतादिष्टम्। 'सम्यग्दृष्टिर्जीवो विरतः स एव सुखितः। यतः,

देवलोकसमं सौख्यं दुःखं च नरकोपमम्। रतानामरतानां च महानरकसंनिभम्॥ ७५

एवमनेकधा भगवान् विविधजनपृष्टसंदेहसंदोहभङ्गं वितत्य समुत्तस्थौ। ततस्त्रिदशवृन्दमपि स्वस्वस्थानं जगाम। भगवानपि श्रावस्तीं पुरीं प्रति जगाम। सुरैः समवसरणे कृते त्रैलोक्याधिपतिः सिंहासनमलंचकार। गौतमादयो गणभृतो यथास्थानं निविष्टाः। तत्रत्यो नृपती रत्नाङ्गदो भगवन्तं प्रणिपत्य निषसाद। भगवता संसाराशर्मनाशिनी देशना निर्ममे। अत्रान्तरे गौतमस्वामिना सर्वमपि जानताप्यबोधजनबोधार्थं तीर्थनाथः प्रपच्छे। 'नाथ, जीवस्वरूपं निवेदय।' ततो भगवता यथावस्थं सर्वमपि जीवस्वरूपं प्ररूपितम्। अथ तत्र बालमृणालकोमलभुजो भुजान्तरराजमानहारसारः कपोलपालिविलसन्मणिकुण्डलः को ऽपि नरस्त्रिदशकुमार इव प्रविश्य जय जयेति वदन् त्रिजगदभिवन्द्यमभिवन्द्य बभाणेति। 'नाथ, यन्मया दृष्टं श्रुतमनुभूतं रजनीमध्ये तदधुना निवेदय, किमिन्द्रजालम्, किं स्वप्नः, सत्यं वा।' भगवता भणितम्। 'देवानुप्रिय, यत्त्वया दृष्टं तदवितथमेव।' एतदाकर्ण्य तत्क्षणमेव त्वरितपदं समवसरणान्निःसृतः। ततो गौतमेन पृष्टम्। 'स्वामिन्, किमेतत्, अस्माकमपि महत्कौतुकम्।' ततस्तीर्थकृतादिष्टम्। 'इतो ऽस्ति नातिदूरे ऽरुणाभं नाम नगरम्। तत्र रत्नगजेन्द्रो नाम नृपतिः। तत्तनुजः कामगजेन्द्रः। स चान्यदा प्रियङ्गुमत्या प्रियया सह मत्तवारणे निविष्टः। ततो नगरगतविभवविलासान् प्रेक्षितुं प्रवृत्तः। ततः कस्मिंश्चिद्वणिग्मन्दिरोपरि कुट्टिमतले कन्यकामेकां कन्दुककेलिं कुर्वतीमद्राक्षीत्। तस्य तदुपरि महानुरागः समुत्पन्नः।

सुरूपे ऽपि कुरूपे ऽपि भवति प्रेम कुत्रचित्। रूपं स्नेहस्य नो हेतुर्वृथा रूपं ततो ऽङ्गिषु॥ ७६

§ २३) तेन पार्श्वस्थितायाः कान्ताया भयेनाकारसंवरणमेव चक्रे। तया तु तत्सर्वमपि लक्षितम्। तस्य राजपुत्रस्य तामेव ध्यायतो महत्युद्वेगे जाते तया चिन्तितम्। 'किं पुनरस्योद्वेगकारणम्, अथवा ज्ञातं सैव वणिक्पुत्री मत्पत्युश्चेतसि स्थिता।' ततस्तया तां याचयित्वा प्रियः परिणायितः। ततस्तुष्टेन तेनोक्तम्। 'प्रिये, साधु त्वया तदा मम मनोभाव उपलक्षितः। ततस्त्वं ब्रूहि कान्ते, कं ते वरं ददामि।' तयोक्तम्।

'यत्किंचित्त्वं पश्यसि शृणोषि यद्वानुभवसि यद्दयित। तत्सर्वमपि निवेद्यं मह्यं देयस्त्वयैष वरः'॥७७

तेनोक्तम्। 'भवत्वेवम्।' ततो ऽन्यदा तत्र चित्रकृता तस्मै कुमाराय चित्रपटः समर्पितः। तत्र च चित्ताह्लादविधायिनीं चित्रितां कनीमेकां विलोक्य विस्मयस्मेरमनाः कुमारः पप्रच्छ। 'भोश्चित्रकर,

1) P सर्वदा वैक एव. 3) B om. संसारे. 4) B om. या. 10) P एवं मानेन B एवमनेन. 15) P B om. ततः पुरतः etc. to नरकदुःखमिति. 25) O त्रिजगदभिवंद्य. 29) O नाम भूपतिः 31) P B प्रेक्षितुं for प्रेक्षितुं. 32) B महानुरागः 36) P ततस्तुष्टेनोक्तं. 41) B भो चित्रकर.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारीरूपं प्रतिकृत्याः कस्याश्चित्त्वया लिखितम्, किमुत स्वमत्या।' तेन विज्ञप्तम्। 'देव, उज्जयिन्यां महापुर्यामवन्तीनृपतेः सुतायाः प्रतिच्छन्दः।' ततः कुमारः सादरं तां निद्रामिव नयनमनोहारिणीं, शक्तिमिव हृदयदारणनिपुणां, शुद्धपक्षेन्दुकलामिव भृशं विमलां, महाराजराज्यस्थितिमिव सुविभक्तवर्णोपशोभितां, जिनश्रुतिमिव सुप्रतिष्ठिताङ्गोपाङ्गसुभगां विलोक्य क्षणं स्तम्भित इव, ध्यानगत इव, दृषन्निर्मित इव, लेप्यमय इव स्थितः। ततः कृतकृत्य इव कुमारस्तं चित्रपटं देव्यै प्रदर्श्य जजल्पेति। 'देवि, सुन्दरमुत्पद्यते यद्येषा कन्या लभ्यते।' तया प्रत्युक्तम्। 'देवि, निजरूपं चित्रपटे लेखयित्वायमेव व्यावृत्य प्रेष्यतां, यथावन्तीपतिस्तद्दृष्ट्वा स्वयमेव दुहितरं ददाति।' कुमारेणोक्तम्। 'प्रमाणमेतत्।' ततस्तेन चित्रकृता चित्रपटः कामगजेन्द्ररूपसमन्वितो ऽवन्तीभर्तुः पुरो दर्शितः तेनापि सुतायै दर्शितः। तमालोक्य जातानुरागां तां विज्ञाय राजा जगाद। 'युक्तमेतद्यदियं पुरुषद्वेषिणी ततोऽन्यं कुमारं नाभ्यलषत्। सांप्रतं तु विधिप्रज्ञाप्रकर्षकशपट्टायमाने ऽस्मिन् कुमाररूपे भृशमनुरक्ता। ततो ऽस्या अयमेव वरो युक्तः।' इति ध्यात्वा राज्ञा तस्मै कुमाराय दुहिता दत्ता।

§२४) ततः पित्रादेशेन कुमारो वल्लभया समं स्कन्धावारेण च चलितः। ततो ऽस्तपर्यस्तकिरणदण्डे चण्डरोचिषि निशाप्रथमयामार्धे प्रियया समं सुष्वाप। एवं द्वितीये यामे कस्याप्यपूर्वकोमलकरतलस्पर्शेन विबुद्धः सन् कुमारो व्यचिन्तयदिति। 'यदीदृशः स्पर्शो नानुभूतपूर्व इति। सर्वथायं मनुष्यस्पर्शो न भवति' इति चिन्तयता कुमारेण पुरस्त्रिभुवनाश्चर्यकारि रूपहारि कन्याद्वयं निरीक्ष्य भणितम्। 'यद्भवत्यौ मानुष्यौ, किं वा देव्यौ, ममात्र महत्कौतुकम्।' ताभ्यामुक्तम्। 'आवां विद्याधर्यौ भवतः पार्श्वे केनापि हेतुना समायाते स्वः, परमावयोर्भवता परोपकारिणा प्रार्थना वृथा न कार्या।' कुमारेणोक्तम्। 'निवेद्यतामहं दुस्साध्यमपि भवत्कार्यं साधयिष्ये।' ताभ्यामुक्तम्। 'देव, शृणु। अस्ति कुबेरदिग्भागे वैताढ्यः पर्वतः। तत्रोत्तरदक्षिणश्रेण्यौ विद्येते। उत्तरश्रेण्यां सुन्दरमानन्दमन्दिरं नाम नगरम्। यत्कीदृशं, बहुसौवर्णमन्दिरं बहुपुरुषसेवितं बहुजलाशयपरिगतं बहुकुमुदोपवनम्। तत्र पृथ्वीसुन्दरः क्षमानेता। तस्य देवी मेखलाभिधा। तत्कुक्षिसंभवा बिन्दुमती कन्या। सा च सुन्दरावयवाभङ्गभाग्यसौभाग्यभूमिका चारुचातुर्यकरण्डिका पुरुषद्वेषिणी। सा च वयोविभवकलाकलापपरिकलितेभ्यो ऽपि विद्याधरकुमारेभ्यः कदापि न स्पृहयति। ततः सा यौवनस्था गुरुजनेन जल्पितेति। 'वत्से, स्वयंवरं वरं गृहाण।' तदाकर्ण्य तयावां भणिते। 'यदि, सख्यौ युवां भणथस्तदैकदा दक्षिणश्रेण्यां भवतीभ्यां सह परिभ्रमामि' इति। आवाभ्यामप्युक्तम्। 'एवं भवतु' इत्युदित्वा गगनतलमुत्पत्य गिरिवरकाननान्तरे वयमवतीर्णाः। तत्र क्रीडन्तीभिरस्माभिः किंनरमिथुनमेकं कामगजेन्द्रकुमारस्य गुणग्रामगानं कुर्वाणं समाकर्णितम्। प्रियसख्योक्तम्। 'सखि, पवनवेगे, अग्रतो भूत्वेदं पृच्छ, क एष कुत्रत्यो वा कामगजेन्द्रकुमारः, यस्याधुना गीतमुद्गीतम्।' ततस्तया किंनर्या निवेदितम्। 'विद्याधरबाले, कामगजेन्द्रः स कदापि न दृष्टः श्रुतश्च न। तर्हि यदि तेन कार्यं तदमुं किंनरं पृच्छ।' तेन भवद्वृत्तान्तः सर्वो ऽपि कथितः। तदिदं श्रुत्वा तया बिन्दुमत्याः पुरो गदितम्। तदाकर्णनेन तद्दिनादारभ्य बिन्दुमती तुहिनक्लिष्टा कमलिनीव प्रियवियुक्ता राजहंसिकेव मन्त्राहता भुजङ्गीव निःश्रीका निर्वचना निःप्रसरा तनोत्यालेख्यम्, न शृणोति गीतं न वादयति वीणां, केवलं मत्तेव ग्रहगृहीतेव मृतेव जाता। सखीभिर्भाषितापि सा किमपि नोत्तरं ददाति। मया ज्ञातं यदेतस्याः कामगजेन्द्र एव व्याधिनिदानम्। अतो ऽमुष्यास्तत्संगम एव महौषधम्। यतो ऽग्निदग्धानामग्निरेवौषधं विषक्रान्तानां विषमेव। इति विचिन्तयन्त्या मया भणिता मानवेगा। 'वयस्ये अमुष्याः कामगजेन्द्र एव चिकित्सकः।' तत आवाभ्यां भणितम्। 'प्रियसखि, विश्वस्ता भव' तथा करिष्यावः, यथा तं कुमारमानीय तव व्याधिमपनेष्यावः।' तयोक्तम्।' 'तदानयनाय युवां व्रजथः।'

§२५) तयेत्यावां प्रतिपद्य तस्मिन्नपि गिरिकुहरशिलातले कमलकोमलदलविरचिते स्रस्तरे तां बिन्दुमतीं विषादं कुर्वन्तीं निवेद्य प्रचलिते, परं न जानीवः कुत्र सा पुरी यत्र त्वं भवसि, कुत्र भवान् प्राप्य इति। एतदर्थपरिज्ञानाय भगवती प्रज्ञप्ती समाराधिता। ततस्तया प्ररूपितम्। 'यथैष कुमार उज्जयिन्यां गच्छन् वनान्तरे रचितशिबिरसंनिवेशः सांप्रतं तिष्ठति।' एतन्मत्वावां भवदन्तिके समायाते।' अतः परं सांप्रतं देव, तवायत्तं प्रियसख्या जीवितमिति मा विलम्बस्व त्वरितमेवोत्तिष्ठ यदि

3 > P सुविभक्तिवर्णोप°. 12 > B has a marginal note on अस्तपर्यस्त etc. : अस्तस्थाने पर्यस्तः पतितः किरणदंडो यस्य स तथा॥. 13 > P om. चण्ड, P प्रियासमं. 27 > P सखे पवन°. 32 > B adds न after निःप्रसरा. 34 > P B औषधं for महौषधं.

जीवन्ती बिन्दुमती कथंचिद्दृश्यते ।' कुमारेणोक्तम् । 'यद्यप्यवश्यं गन्तव्यं तथापि देव्याः पुरो निवेदयिष्ये ।' ताभ्यामुक्तम् । 'त्वमीदृशः स्वामी सर्वनीतिपरायणः कथं स्त्रीणां रहस्यं कथयसि, किं न श्रुतस्त्वया जनैर्वक्ष्यमाणः श्लोकः ।

'नीयमानः सुपर्णेन नागराजो ऽब्रवीदिदम् । यः स्त्रीणां गुह्यमाख्याति तदन्तं तस्य जीवितम्' ॥ ७८

ततो न कथ्यं नारीणां रहस्यम् ।' कुमारेणोक्तम् । 'किमपि कारणमत्रास्ते, एकदा मया तस्या वरो ऽदायि, यत्किंचिच्छ्रुतं दृष्टमनुभूतं तत्सर्वमपि निवेदयिष्ये ।' ततः कुमारः प्रोवाच । 'प्रिये, संप्रति व्रजामि ।' तयोदितम् । 'यत्किंचिद्देवाय रोचते देवस्तत्तनोतु ।' ततो देव्या विहिताञ्जलिपुटया विद्याधर्यौ विज्ञप्ते । 'अयं पतिर्मया भवत्योर्न्यासीकृत इत्यह्नाय इहानीय मोक्तव्यः ।' ततस्ते तं कुमारं विमानमारोप्य गगनतलमुत्पतिते । ततस्तस्य प्रिया 'माया काप्यत्र, किं स्वप्नो वा, इत एताभ्यां मम पतिरेष्यतीति किं वा न' इति ध्यायन्ती यावद्विषण्णा तिष्ठति तावत्स्तोकावशेषक्षणदायां विमानं प्राप्तमेव । ततस्तद्दृष्ट्वा तद्भार्या नलिनीवनविलोकनेनेव मरालिकाभिनवजलददर्शनेनेव शिखण्डिनी प्रमुदिता जाता । ततस्तया दृष्टे विद्याधर्यौ कामगजेन्द्रो ऽपि ।

§ २६) अथ विमानादवतीर्य वीर्यशाली शयनीये निविष्टः । प्रोचतुस्ते । 'भद्रे, स्वपतिर्न्यासीकृतस्त्वयावयोर्यः स चेदानीं समानीय समर्पितो ऽस्ति' इत्युदित्वा ते समुत्पत्य गते । ततो ऽसौ पादपतनमातत्य पप्रच्छ । 'देव, भवान् क्व गतः, कुतो वा प्राप्तः, किं त्वया दृष्टम्, किमनुभूतम्, किमवस्था सा विद्याधरी प्राप्ता । एतत्प्रसद्य सद्यः कथयस्व ।' कुमारः समाख्यातुं प्रवृत्ते । 'इतो विमानाधिरूढेन मया व्योम्नि वैताढ्यपर्वतकन्दरोदरे मणिप्रदीपप्रज्वलनप्रद्योतितदिक्चक्रं नवीनं भुवनमेकमदर्शि तत्र नलिनीदलस्रस्तरे विद्याधरकुमारी च । ततस्ते मृणालकोमलवलयां चन्दनकर्पूररेणुधवलां कुरङ्गीदृशमिमां कुमारीं जीवन्तीमभिवीक्ष्य प्रमुदिते ऊचतुः । 'प्रियसखि, प्रमोदं भज, एष तव मनो ऽभिरुचितो दयितः प्राप्तः, यत्कृत्यं तदाचर' इति वदन्तीभ्यां सखीभ्यां तदङ्गतो नलिनीदलान्यपनीतानि । इति यावत्ते सम्यक्पश्यतस्तावत्तस्याङ्गोपाङ्गानि शिथिलीभूतानि । ततो दयिते, ताभ्यां तद्दृष्ट्वा पूत्कृतं 'यदियमावयोः स्वामिनी मरिष्यति ततो ऽहमपि ।' 'किमेतत्' इति ध्यायन् विलोकितुं प्रवृत्तो यावत्तावत्सा विनिमीलितलोचना निश्चलाङ्गोपाङ्गा पञ्चतामुपागता । मया भणितम् ।

'भवतो न देव रचितुं युक्तमिदं गगनगामितनुजा यत् ।
मम विरहदुःसहानलसंतप्ता मृत्युमुपनीता ॥' ७९

इति जल्पन्नहं मोहमुपागतः क्षणेन विबुद्धस्तयोः प्रलापान् शृणोमि ।

प्रियसखि कुपिता किं त्वं प्रतिवचनं नो ददासि को हेतुः ।
किं कृतमप्रियमेतत् यदयं दयितः समानीतः ॥ ८०

§ २७) मयोक्तम् । 'यदस्यै कालयोग्यं तत्कार्यम् ।' ततस्ताभ्यामुदयाचलचूलावलम्बिनि किरणमालिनि चन्दनदारूण्यानीय प्रपञ्चितायां चितायां तदङ्गं निक्षिप्तम् । तद्दत्तो हुताशनः प्रसृतः । 'एतां विनावयोर्जीवितेन किम्' इति गदित्वा चिरं विलप्य च तत्रैव ते ऽपि प्रविष्टे । एवं त्रितये ऽप्यस्थिशेषीभूते क्षणमेकमहमपि मुद्गरेण प्रहत इव महाशोककुन्तेन प्रभिन्न इव व्यचिन्तयमिति । 'पश्य विधिविलसितम्, यदियं बिन्दुमती मदनुरागेण विपन्ना तद्दुःखेन एते च । ततः किं ममैतेन स्त्रीवधकलङ्ककलुषितेन जीवितेन । ततो ऽमुमेव चितानलं प्रविश्य स्वस्य कलङ्कमुत्तारयामि' यावदिति प्रिये, चिन्तयन्नस्मि तावद्विद्याधरमिथुनमध्ये विद्याधर्योक्तम् । 'विलोकय यदयं कीदृशो निर्दयः कुमारः, इयं वराकी मृता, अयं पुनरद्यापि जीवति ।' विद्याधरेणोक्तम् । 'मैवं वादीः, यतः स्त्रियः पत्यौ मृते चितायां प्रविशन्ति पुनः सत्पुरुषेण महिलाविनाशे स्ववधो न विधेयः ।' एतदाकर्ण्य मया चिन्तितम् । 'यदनेन युक्तमुक्तम् । तत एतस्यां बिन्दुमत्यनुकारिण्यां वाप्यां नीरलावण्यपूर्णायां विकसितनीलेन्दीवरलोचनायां चलद्धवलमृणालवलयकलितायां विकसितशतपत्रवरवक्त्रायां तरलजलतरङ्गरङ्गद्भङ्गिकटाक्षच्छटायां विकटकनकतटनितम्बफलकायामहमवतीर्यैतासां तिसृणां जलाञ्जलिं ददामि' इति चिन्तयित्वावतीर्णो दयिते, तां वापीं यावन्मज्जनोन्मज्जनं कृत्वा निर्गतस्तावत्तत्र सर्वमप्यपूर्वं पश्यामि । व्योमतलस्पर्शिनः शाखिनः । महाप्रमाणा औषध्यः । उच्छ्रिताङ्गास्तुरङ्गाः । पञ्चचापशतमाना मानुषाः । महादेहाः पक्षिणः ।

4) B° ब्रवीदिति. 9) B एव ताभ्यां for एताभ्यां. 11) B नलिनवन. 15) P पादपतनमातन्य. 16) B om. सद्यः. 19) B om. कुमारीं, B °वीक्ष्य सप्रमुदितमूचतुः. 21) B inter. ताभ्यां & तद्दृष्ट्वा. 29) B कालस्य योग्यं. 31) B ते for तेऽपि. 36) B adds एतत्कृते before मृता.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§२८) मया चिन्तितम् । 'सर्वथा नास्माकीनं स्थानम्, तत्र सप्तहस्तवपुषः पुरुषः, सर्वथायमन्यो द्वीपः' इति यावद्विचिन्तयामि तावद्दयिते, सा वापी विमानत्वमभजत् । 'तदहं कमपि पुरुषं पृच्छामि क एष द्वीपः' इति चिन्तयता मया दारकयुगलं विलोक्य पृष्टम् । 'को ऽयं द्वीपः । ततो मां कृमिमिव कुन्थुमिव पिपीलिकापोतमिव विलोक्य ताभ्यां विस्मयस्मेरमनोभ्यां निवेदितम् । 'वयस्य, तदिदमपूर्वविदेहमहाक्षेत्रम् ।' मया चिन्तितम् । 'अहो, अतिश्रेष्ठं संजातं, इदमपि द्रष्टव्यमभूत् ।' यावदिति चिन्तयन्नस्मि तावत्ताभ्यामहं कृमिरिव कौतुकात्करतलेन संगृहीतः । ततः श्रीसीमंधरस्वामिसमवसरणान्तर्मुक्तः । ततो मया भगवान् सिंहासनस्थः प्रणतः । ततस्तत्रत्येन केनचिन्नृपेण प्रस्तावमासाद्य पृष्टम् ।' 'क एषः ।' ततो भगवता निवेदितुमारेभे । 'अस्ति जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे मध्यमखण्डे ऽरुणाभं नाम नगरम् । तत्र रत्नगजेन्द्रो नाम राजा । तदङ्गजः कामगजेन्द्र एष कुमारः । एताभ्यां देवाभ्यां 'स्त्रीलम्पटः' इति मत्वा स्त्रीवेषं विधायापहृत्य वैताढ्यकन्दरान्तरानीतः । तत्रालीकभवने 'विद्याधरबालिका तव वियोगेन मृता' इति ते उक्त्वा तां चितामारोप्य तामनु विलपन्त्यौ स्वेनापि प्रविष्टे तत्रैव दग्धे च । सापि माया विद्याधरमिथुनता । प्रबुद्धो वाप्यां समागतः । ततो वापीव्याजेन जलकान्तयानेनात्राभ्यामानीयैष मदन्तिके सम्यक्त्वलाभार्थमवसरे मुक्तः ।' राज्ञेति पृष्टम् । 'भगवन्, एतयोरेतस्यानयने किं कारणम् ।' भगवतादिष्टम् । 'पञ्चभिर्जनैः पूर्वभवे सङ्केतः कृतो यदेकेनैकस्य परस्परं सम्यक्त्वं दातव्यमिति । पूर्वं मोहदत्तः १ ततः स्वर्गी २ ततः पृथ्वीसारः ३ पुनः स्वर्गी ४ पुनरेष चरमदेहः कामगजेन्द्रः ५ समुत्पन्नः । तत्त्वं बुध्यस्व मा मुह्य, यथाशक्त्या विरतिं गृहाण' इति स्वामिनोक्तम् । ततः प्रिये, राज्ञा पुनः पृष्टम् । प्रभो, अयं लघुः कथं वयमुच्चैस्तराः ।' भगवता भणितम् । इदमपूर्वमहाविदेहक्षेत्रं, अत्र तु सुषमा कालः सैष शाश्वतः, महादेहा देहिनः । तत्र पुनर्भरतक्षेत्रं, दुःषमा समयः, स अशाश्वतः, अतस्तुच्छतनवो जनाः ।' ततो ऽपि राज्ञा पृष्टम् । कावेतौ देवौ ।' जिनेनोचे । 'यैः पञ्चभिः सङ्केतः कृतः, तेषां मध्ये एतौ द्वौ देवौ ।'

§२९) एवं भगवता निवेदिते यावन्मया मस्तकमुन्नामितं तावदहं स्वस्मिंहव कटके पश्यामि, एतदेव शयनं, एषा भवती देवी' इति । तया भणितम् । 'देवो यदाज्ञापयति तदवितथमेव, परं किमपि विज्ञपयामि, एतद्वृत्तं त्वया कथितम्, अत्रोद्गतो ऽरुणो ऽपि महद्वृत्तं निवेदितं परमेष कालः स्तोकः ।' कुमारेण भणितम् । 'यतो मनसा देवानां वाचा पार्थिवानां, यो मया भगवान् श्रीसीमंधरस्वामी दृष्टः सो ऽद्यापि मम हृदयाग्रत एवावतिष्ठते । अथवा किमत्र विचारेण, भगवान् श्रीमहावीर एतस्मिन् प्रदेशे समवसृतः श्रूयते तमेव गत्वा पृच्छामि सत्यमसत्यं वैतत् । यदि भगवान् समादेक्ष्यति तत्सत्यमन्यथा माया' इति वदन् समुत्थाय कामगजेन्द्रः प्रस्थितः । प्रियया पृष्टम् । 'यदिदं सत्यं तदा किं कर्तव्यम् ।' तेनोक्तम् । 'सत्ये जाते व्रतं ग्राह्यम् ।' तयोक्तम् । 'यदि देवो दीक्षां ग्रहीष्यते तदाहमपि' । 'एवं भवतु' इति वदन् कुमार एष प्राप्तो मम समवसरणम् । अमुना प्रणम्य पृष्टो ऽहम् । 'किमिन्द्रजालं, किमु सत्यम् ।' मयोक्तम् । 'सत्यमेतत् ।' एतन्निशम्य समुत्पन्नवैराग्यः कटकनिवेशं गतः ।' गौतमस्वामिना पृष्टम् । 'भगवन्, इतो गतेन तेन किं कृतम्, संप्रति च किं तनोति, कुत्र वा वर्तते ।' भगवतादिष्टम् । 'इतो गत्वा देव्याः पुरः सत्यमिदमिति निवेद्य पितरौ दिग्गजेन्द्राख्यं स्वं सुतं चापृच्छ्य संमानितबन्धुजन एष संप्रति समवसरणबाह्यप्राकारगोपुरस्याग्रमागतो वर्तते' इति भगवति वदत्येव सत्वरं समागतः । ततो भगवता कामगजेन्द्रकुमारो वालुकाकवलनमिव निस्वादं, क्षुद्रबीजकोशाभक्षणमिवातृप्तिजनकं, क्षारनीरपानमिव तृष्णावर्धकं, बन्धनहेतुः(?) मिथ्यात्वमिव भववर्धकं, उपहासपदं, विद्वज्जननिन्दनीयं, विषयसुखसेवनं मन्यमानो वल्लभया तया परिजनेन च समं प्रव्राजितः । तेनान्यदा भगवान् पृष्टः । 'कुत्र ते पञ्च जनाः प्रवर्तन्ते ।' भगवतोदितम् । 'द्वौ देवौ स्तः, तावप्यल्पायुषौ । शेषाः पुनर्मनुष्यलोके । ततो दर्शितो भगवता मणिरथकुमारमहर्षिः । 'एष मानभटजीवः । तत्र भवे भवान् मोहदत्त इति, तस्य जीवो भगवान् कामगजेन्द्रः । एको लोभदेवजीवः, सो ऽपि मर्त्यभवे ऽवतीर्णो ऽस्ति, तस्य वैरिगुप्त इति नाम । सर्वेषामस्मिन् भवे सिद्धिः' इत्यादिशन् भगवान् श्रीमहावीरः समुत्थितवान् । अन्यदिने भव्यकुमुदमृगाङ्कस्त्रिभुवनभवनप्रदीपः श्रीवर्धमानः काकन्दीपुर्यां बाह्योद्याने समवसृतः । सदसि जीवाजीवपुण्य-

2) B इति विचिंतयामि. 10) B adds च befor वैताढ्य. 18) B इदं पूर्वमहा, P B दुःखमा. 19) B भूयोपि for ततोऽपि.
27) B ततः for तदा. 31) B om. भगवन्.

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

पापास्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षस्वरूपमाचख्यौ। ततो गौतमेन पृष्टम्। 'भगवन्' कथं जीवाः कर्म बध्नन्ति।' भगवतोक्तम्। 'लेश्याभेदैर्जीवाः शुभाशुभं कर्मार्जयन्ति। अत्र जम्बूफलभक्षणदृष्टान्तः।

§ ३०) एकदा कस्माद्ग्रामात् षट् पुरुषाः परशुविहस्तहस्ताः समुन्नततरुच्छेदाय काननान्तः प्रविष्टाः। तैरेकस्मिन् शाखिनि भक्तं स्थापितम्। तत्र भक्तपादपे समारुह्य केचिद्वानरास्तत्सर्वमपि भक्तं, भक्षयित्वा तद्भाजनमपि भङ्क्त्वा प्रतिनिवृत्ताः। ते वनच्छेदका अपि मध्याह्ने बुभुक्षाक्षामकुक्षयस्तृषातरलितचेतसस्तत्र तद्भक्तं न पश्यन्ति, भाजनमपि भग्नमालोकयन्ति। ततस्तैरिति परिज्ञातम्। 'यत्प्लवगयूथेन सर्वमपि भक्तमास्वादितम्, तावदस्माकं बुभुक्षितानां का गतिः' इति ध्यात्वा समुत्थाय फलान्वेषणाय प्रवृत्तास्ते एकं जम्बूपादपं फलितं दृष्ट्वा परस्परं मन्त्रयन्ति 'कथयत, कथं जम्बूफलभक्षणं करिष्यामः।' ततो जम्बूफलानि दृष्ट्वा तत्र तेषां मध्यादेकेनोक्तम्। 'सर्वेषामपि पञ्चशाखाः परश्वधायुधव्यग्रा वर्तन्ते, ततो मूलादप्येनं छित्त्वा फलभक्षणं कुर्मः।' तन्निशम्य द्वितीयेनोक्तम्। 'अस्मिन् पादपे मूलादपि च्छेदिते भवतां को गुणो भविष्यति, केवलमस्य शाखा एव च्छिद्यन्ते।' तृतीयेन भणितम्। 'न शाखा केवलं फलिता एव प्रतिशाखा गृह्यन्ते।' चतुर्थेनोक्तम्। 'न प्रतिशाखाः, केवलं स्तबका एव पात्यन्ते।' पञ्चमेनोक्तम्। 'ममैव बुद्धिरिह विधीयताम्, लकुटेनाहत्य पक्वजम्बूफलानि पातयत।' ततः किंचिद्विहस्य षष्ठेनोक्तम्। 'भो नराः, भवतां महदज्ञानम्, महान् पापारम्भः, स्तोको लाभः, किमत्र प्रारब्धम्, यदि जम्बूफलभक्षणेन वः कार्यं तदैतानि पक्वानि शुकसारिकादिभिः पातितानि स्वभावतः पतितानि जम्बूफलानि स्वैरं भक्षयत, नो वान्यत्र व्रजत' इति ते सर्वे ऽपि तैर्धरापतितैरेव फलैः सौहित्यसुखिता जज्ञिरे। सर्वेषामपि फलोपभोगः सदृश एव, परं पुनस्तत्र बहुविधं पापं येनेत्युक्तम्। 'अयं पादपो मूलादपि च्छिद्यते' स मृत्वा कृष्णलेश्ययावश्यं नरकातिथिरेव। द्वितीयेनोक्तम्। 'यच्छाखा एव च्छेद्याः' स नीललेश्यया विपद्य नरकं तिर्यक्त्वं वा प्राप्नोति। तृतीयेनोक्तम्। 'यत्प्रतिशाखा एव ग्राह्याः' स कापोतलेश्यया तिर्यग्योनावुत्पद्यते। चतुर्थेनोक्तम्। 'यत्केवलं स्तबका एव संगृह्यन्ते स तेजोलेश्यया नरो भवति।' पञ्चमेनोक्तम्। 'यत्पक्वानि पक्वानि फलानि पात्यन्ते स पद्मलेश्यया देवत्वं लभते।' षष्ठेनोक्तम्। 'यत्केवलं भूमिपतितान्येवास्वाद्यन्ते' स शुक्ललेश्यया सिद्धिसुखभाग्। ततो गौतम पश्य त्वं, यदेकस्मिन् भक्षणकार्ये षण्णामपि लेश्याभेदः पृथग् भिन्नश्च कर्मबन्धः। यश्छिन्द्धि भिन्द्धीत्यादिकं कर्कशं वचो जल्पति, यस्य न दया न सत्यं स कृष्णलेश्यः। यः पञ्चकार्याण्यनार्याणि समाचरति षष्ठं पुनर्धर्मार्थं स नीललेश्यः। यश्चत्वारि कार्याणि पापमयानि तनोति द्वयं धर्मनिमित्तं स कापोतलेश्यः। यस्त्रीणि कार्याणि पापार्थं त्रीणि च धर्महेतवे स तेजोलेश्यः। यः कार्यद्वयं पापार्थं चत्वारि धर्मकारणे स पद्मलेश्यः। य एकं कार्यं पापहेतवे पञ्च धर्मार्थं च स शुक्ललेश्यः। तया जिनत्वमाप्नोति।' तद्भगवतो भणितं सर्वैरपि सुरासुरनरेश्वरैस्तथेति प्रतिपन्नम्।

§ ३१) अत्रान्तरे राजपुत्र एकः प्रलम्बभुजदण्डः सुवेषो वक्षःस्थलविलसद्वनमालः समवसरणे भगवन्तं प्रणिपत्य प्रोवाच। 'भगवन्, किं तत्सत्यम्, यद्दिव्येन बन्दिना तत्र मम निवेदितं तन्मङ्गलममङ्गलं वा।' भगवतोक्तम्। 'भद्र, तत्सर्वमपि तथ्यमेव।' तदाकर्ण्य 'भगवदादेशः प्रमाणम्' इति गदित्वा समवसरणतस्तस्मिन्निर्गते गौतमेनाभ्यधायि। 'नाथ, को ऽयं पुमान्, किमेतेन पृष्टम्।' ततो भगवतानेकलोकप्रतिबोधाय समाचचक्षे। 'समस्ति जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे मध्यमखण्डे ऋषभपुरं नाम नगरम्। तत्र चन्द्रमण्डलकरनिकरनिर्मलकीर्तिस्फूर्तिशाली चन्द्रगुप्तः क्षितिपतिः। तत्सूनुरनूनविक्रमो वैरिगुप्तः। तस्यान्यदिने मेदिनीस्वामिनः सभासीनस्य समागत्य प्रणिपत्य च प्रतीहारी व्यजिज्ञपदिति। 'देव, द्वारे नगरप्रधाननरा भवच्चरणदर्शनमभिलषन्ति।' तदाकर्ण्य राज्ञोक्तम्। 'त्वरितमेव प्रेष्यन्ताम्।' ततस्तया सह तैर्नरैः प्रविश्य किमप्यपूर्वं च वस्तु प्राभृतीकृत्य राजानं प्रणम्य विज्ञप्तम्। "दुर्बलानां बलं राजा" इति परिभावयतु देवः। सर्वमपि नगरं केनापि मुषितम्। यत्किंचिच्चारु तदखिलमपि निशि ह्रियते।' राज्ञोक्तम्। 'यूयं व्रजत स परिमोषी विलोक्यते लग्नः।' ततो राज्ञा पुरारक्षमाकार्य समादिष्टम्। 'अहो, मध्ये पुरं महांश्चौरोपद्रवः' इति। तेनापि विज्ञप्तम्। 'न

12) P om. न. 14) B adds (above the line) संतु before केवलं. 16) B repeats स्वैरं (below the line). 17) B adds तस्य (above the line) after पापं. 21) B अपक्वानि for second पक्वानि, P B add वा before फलानि. 22) B adds भवति after °भाग्. 37) B om. च. 40) B adds देव before न ज्ञायन्ते.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दृश्यन्ते ह्रियमाणाः पदार्थाः, न चौरो ऽपि लोचनगोचरः। केवलमेतदेव सर्वत्रापि प्रातः परिश्रूयते यत्पुरं मुषितम्। अहं देवादेशेन पुरपरित्राणं करोमि, परं केनाप्युपायेन न मलिम्लुचोपलब्धिः। ततः स्वामी कस्याप्यन्यस्यादेशं ददातु।' तस्मिन्नेवमुक्तवति नरेश्वरेण सकलमप्यास्थानमण्डलमालुलोके।

§ ३२) ततो वैरिगुप्तेन विरचिताञ्जलिना विज्ञप्तम्। 'यदि देव, सप्तरात्रमध्ये तं स्तेनं देवान्तिकं नानयामि ततो ऽहं ज्वालाकुलं ज्वलनमाविशामि' इति। ततो राजादेशमासाद्य वैरिगुप्तस्य सुगुप्तविधिना प्रकोष्ठनिक्षिप्तखेटकस्य करतलकलितकरालकरवालस्य चत्वररथ्यामुखगोपुरारामसरोवरवापीदेवकुल-पानीयशालामठेषु विचरतः षड् दिवसा व्यतिचक्रमुः, न पुनस्तेन स चौरपुमानुपलब्धः। ततः सप्तमे दिवसे वैरिगुप्तेन चिन्तितम्। 'सर्वत्र मयान्वेषितं पुरं परं न चौरः प्राप्तः, तदत्र को ऽयमुपायो विधेयः, मम च प्रत्यूषे प्रतिज्ञा परिपूर्णा तावदागता ममापूर्णसंधस्य पञ्चता, तदद्य क्षणदायां श्मशाने महामांसं विक्रीय कमपि वेतालं साधयित्वा चौरवृत्तान्तं पृच्छामि' इति विचिन्त्य वैरिगुप्तः श्मशानभुवं संप्राप्तः। तत्र च तेन महासाहसिना क्षुरिकया जङ्घयोर्महामांसमुत्कृत्य हस्ते विधाय वारत्रयं भणितम्। 'भो भो राक्षसाः, पिशाचा वा श्रूयताम्, यदि भवतां महामांसेन कार्यं तदेतद्गृहीत्वा चौरवृत्तान्तं निवेदयत।' वेतालेनोक्तम्। 'महामांसमहं ग्रहीष्ये।' कुमारेण भणितम्। 'प्रमाणमेतत्, परं चौरप्रचारः परिकथनीयः।' कुमारेणार्पिते महामांसे तेनोक्तम्। 'भद्र, मांसमिदं स्तोकं विस्रं च, यद्यग्निना पक्वं भवान् ददाति तदा गृह्णासि।' कुमारेण भणितम्। 'चितासमीपमागच्छ यथा स्वेच्छयाग्निपक्वं स्वमांसं भवते ददामि।' वेतालः प्रोवाच। 'भवत्वेवम्।' ततस्तौ चितासमीपमाजग्मतुः। कुमारेणापरं स्वमहामांसं पक्वं तस्मै प्रदत्तम्। तेन च स्वेच्छया भुक्तं च। अत्रान्तरे गौतमेन पृष्टम्। 'भगवन्, किमु पिशाचा राक्षसाश्च कावलिक-माहारं कुर्वन्ति किं वा न।' भगवताज्ञप्तम्। 'गौतम, न कुर्वन्ति।' गौतमेनोक्तम्। 'यद्यमी नाश्नन्ति ततः कथमनेन महामांसमशितम्।' भगवतादिष्टम्। 'प्रकृत्या व्यन्तरा अमी बाला इव क्रीडां कुर्वन्ति। 'महामांसं भुक्तम्' इति लोकस्य मायां दर्शयन्ति।' वेतालेन भणितम्। 'एतन्महामांसं निरस्थि मह्यं न रोचते, यद्यस्थिवत्कटकटारावकरं परं ददासि तद्देहि।' तदाकर्ण्य कुमारो दक्षिणजङ्घामुत्कृत्य चितानले पक्त्वा वेतालस्यार्पयामास।' पुनस्तेनोक्तम्। 'भो भद्र, अमुनाधुना पूर्णं, संप्रत्यतीव तृषितो ऽस्मि, ततस्तव शोणितं पातुमिच्छामि।' 'पिब' इति वदता कुमारेण यावदेका स्नसा विदारिता तावत् हाहारवमुखरे-ऽट्टहासे गगनाङ्गणं प्रसृते,

'साहसेनामुना तुष्टो ऽस्म्यनन्यसदृशेन ते। यत्किंचिद्याचसे वीर तदेव वितराम्यहम्' ॥ ८१

§ ३३) ततः कुमारः प्रोवाच तुष्टस्त्वं यदि संप्रति। मत्पुरं मुषितं येन तमेव कथयस्व मे ॥ ८२
वेतालो ऽप्यब्रवीद्देव तस्य चौरस्य को ऽपि न। प्रतिमल्लः स दृष्टो ऽपि न हि केनापि गृह्यते ॥ ८३
तन्निशम्य कुमारेणाक्षतं वीक्ष्य क्षतं दृशा। प्रोचे वेताल चौरस्य स्थानमेव निवेदय ॥ ८४
जगाद स च वेतालो यद्येवं शृणु तत्त्वतः। श्मशानान्तःस्थन्यग्रोधे ऽमुष्य स्तेनस्य संश्रयः ॥ ८५

तत्र वटे छिद्रमेव द्वारम्। तच्छ्रुत्वा कुमारस्त्वरितं विकटं प्रेतवनवटं समारुह्य शाखासु प्रति-शाखासु मूले पत्रनिकरान्तरे च कृपाणपाणिर्विलोकितुं प्रवृत्तः। ततः कोटरस्थच्छिद्रसमीपे राजपुत्रो यावदधोवक्त्रं करोति तावत्ततो धूपगन्धः कस्तीरजघनसारमृगमदपरिमलमांसिलो निस्सरति। वेणु-वीणारवं कामिनीजनजनितगीतसंवलितं श्रुत्वा राजसूनुना चिन्तितम्। 'दृष्टममुष्य परिमोषिणो मन्दिरम्। अधुना यो बलवांस्तस्यैव राज्यम्' इति विचिन्त्य तत्रैव विवरे किंचिद्भूभागमुपसर्प्य मणिमय-भवनं चारुकाञ्चनतोरणं वरयुवतिजनप्रचारं विलोक्य व्यचिन्तयत्। 'स तावद्दुष्टचारः कुत्र भावी' इति चिन्तयता तेन कापि लोललोचना निस्तन्द्रचन्द्रवदना ततो निःसरन्ती दृष्टा पृष्टा च। 'कस्यायमावासः, कासि त्वम्, कुत्र वा स परास्कन्दी, स्त्रीजनश्च किं गायति।' तयोक्तम्। 'भद्र, कथमेतावतीं भुवमागतः, त्वमतीव साहसिकः, कुतः स्थानादागतः।' तेनोक्तम्। 'ऋषभपुरात्।' तयोक्तम्। 'यदि त्वं ऋषभपुर-वास्तव्यः [तत्] किं जानासि चन्द्रगुप्तनरेश्वरं, वैरिगुप्तं पुत्रं च।' तेनोचे। 'भद्रे, त्वं कथं जानासि तयोर्द्वयोरप्यभिधे।' तयोक्तम्। 'गतास्ते दिवसाः।' तेन भणितम्। 'कथय स्फुटं तयोः किं भवसि, कथमभिजानासि तौ, केन पथात्र प्राप्तासि।'

4) B रात्रि for रात्र. 5) B om. इति. 7) B चौरः पुमा°. 11) B तेन साहसिना. 24) P प्रवृते for प्रसृते. 28) B वीक्षा क्षतं. 31) B पाणिर्बिलं विलोकितुं. 34) B मणिमयं भुवनं. 35) B वरयुवतिजातप्रचारं. 39) P B om. [तत्].

§ ३४) तया भणितम् । 'श्रावस्तीपुर्यां सुरेन्द्रस्य भूपतेर्दुहिता बाल्यादेव तेन पित्रा तस्य वैरिगुप्तस्य परिणेतुं प्रदत्ताभूवम् । अत्रान्तरे विद्यासिद्धेनामुनापहृतात्र पातालतले प्रक्षिप्ता च । जानासि तेन तन्नाम्नी । केवलं नाहमेकापहृता अत्र बहुतरा महेला अन्या अपि ।' तेन चिन्तितम् । 'अहो, ममैषा चम्पकमाला प्रदत्तासीत्, ततः पश्चाद्विद्याधरेणामुना समानीता ।' तेनोक्तम् । 'भद्रे, कथय स कुत्र विद्याधराधमः, कथं हन्तव्यः स मया । अहं स एव वैरिगुप्तः, यदि ममोपरि महान् स्नेहः ।' तयोक्तम् । 'यदि भवान् वैरिगुप्तस्तद्वरेण्यमजनि ।' तया निवेदितम् । 'कुमार, रहस्यं शृणु यथा पापी मार्यते । अत्र देवतायतने ऽस्य खेटकं सिद्धकृपाणरत्नं चास्ति तद्गृहाण ।' राजपुत्रेणोक्तम् । 'तावद्भद्रे, कथय कथं कथं वर्तते स विद्यासिद्धः ।' तयोक्तम् । 'अयमस्तमिते दिनपतौ बहुलान्धकारायां निशायां स्वेच्छया परिभ्रमति, महिलादिकं यत्किंचित्सारं सारं वस्तु प्राप्नोति तत्सर्वं समानयति । दिवसे तु महेलावृन्दपरिवृतो ऽत्रैव तिष्ठति । तथास्यानेन कृपाणेनानेन खेटकेन च सर्वकार्यसिद्धिः ।' कुमारेणोक्तम् । 'अधुना कुत्रास्ते स निष्कृपचक्रवर्ती ।' तयोक्तम् । 'सर्वदैव सर्वस्त्रीजनमध्यगतो भवति, सांप्रतं यदि स भवति ततो नाहं न त्वं च ।' तेनोक्तम् । 'यदि स नास्ति तत एताः कथं गायन्ति ।' ततस्तया प्रोचे । 'भद्र, एतास्तेन विना प्रमुदिताः पठन्ति गायन्ति च । पुनरन्या रुदन्ति च ।'

§ ३५) कुमारेणोक्तम् । 'भद्रे, मम तस्य च द्वयोर्मध्ये एतासां हृदयंगमः को भावी' इति । स्मित्वा तया प्रोचे । यतः

'त्यजन्ति शूरमप्येताः सस्नेहमपि योषितः । कातरं विगतस्नेहं चापि गृह्णन्ति काञ्चन ॥ ८६
वातोद्धूतध्वजपट इव विद्युदिवास्थिरम् । मनो मनस्विनीनां हि कः परिच्छेत्तुमर्हति ॥ ८७

तथाप्येतावन्मात्रं जानासि यद्येता भवन्तं विलोकयिष्यन्ति ततो ऽवश्यमेवैतासां त्वयि स्नेहो भावीति । एताः सर्वा अपि भवत्पुरसंबन्धिन्य एव भवन्तं दृष्ट्वा प्रत्यभिज्ञास्यन्ति । ततो दर्शनमेतासां देयमेव ।' कुमारेणोक्तम् । 'तावदस्य विद्यासिद्धस्य सिद्धकृपाणं खेटकं च समानय, पश्चादपि तासां दर्शनं दास्यामि ।' तयोचे । 'अत्रैव कुमार, तावत् स्थातव्यं त्वया यावदस्य सिद्धखेटकं सिद्धखड्गं च समानयामि' इत्युदित्वा सा गता । ततः कुमारश्चिन्तितवान् । 'कदाचिदियं मम मृत्युहेतवे कमप्युपायमन्यं चिन्तयति' ततो न युक्तं स्थातुमत्रैव' इति कुमारः प्रविचार्य गृहीतखेटकः स्वीकृतखड्गरत्नः पश्चाद्व्याघुट्य स्थितः । ततः सा स्वीकृतखड्गखेटका तत्र प्रदेशे कुमारमपश्यन्ती विषण्णमानसा कुमारेण भणिता । 'भद्रे, त्वरितं समागच्छ अत्राहमवतिष्ठामि ।' इति समाकर्ण्य तया प्रोक्तम् । 'अतः स्थानात्कथमन्यत्र भवान् संप्राप्तः ।' तेनोक्तम् । 'यतो धीमतां 'स्त्रीणां कदापि न विश्वसनीयम्' इति शास्त्रोक्तिः । ततः पश्चाद्व्याघुट्य स्थितः ।' 'कुमार, राज्यपदवीयोग्यस्त्वमसि, यो महेलानां न विश्वसिति' इत्युदित्वा सा तत्पुरो भूमौ कौक्षेयकं खेटकं च मुमोच । राजतनयः सौवं निस्त्रिंशं खेटकं च तत्करे ऽर्पयामास । कुमारेण प्रदक्षिणीकृत्य तद्द्वयमद्वयरूपं स्वीचक्रे । तयोक्तम् । 'कुमारस्य विजयाय भवत्विदं खड्गरत्नम् ।' कुमारेणोक्तम् । 'भद्रे, कथय कुत्र संप्रति स दुष्टविद्यासिद्धः ।' तयोक्तम् । 'कुमार, केन निर्गमेनात्र प्रविष्टो भवान् ।' तेन प्रोक्तम् । 'वटपादपकोटरच्छिद्रेण ।' तयोक्तम् । 'नाहं द्वारं जानामि, एतत्पुनर्जाने येन द्वारेण त्वमागतः, सो ऽपि तेनैव समागमिष्यति ततस्त्वया सज्जीभूयामुना दिव्यखड्गेन शिरश्छेदनीयं तस्य । अन्यथा स पुनस्तव दुःसाध्यः' इत्यवगम्य कुमारः कृपाणपाणिश्छिद्रद्वारि स्थितः ।

§ ३६) अत्रान्तरे स विद्याधराधमः प्रभातकालमाकलय्य धवलगृहोपरि शयनीयप्रसुप्तामेकाकिनीं तस्यैव राजसूनोः पत्नीमपहृत्यागतः । तत्रैव बिले तं प्रविशन्तं निरीक्ष्य राजपुत्र्या पूच्चक्रे ।

'हा वैरिगुप्त हा वीर त्वत्प्रियास्मि हृतामुना । चम्पावत्यभिधानेन तस्मात्त्रायस्व मामिह ॥' ८८

एवं तत्प्रलपितमाकर्ण्य विद्यासिद्धेनोक्तम् । 'तेन तव किं कार्यम्, यदि तं दयितं प्राप्नोमि तदा तमेवाश्नामि' इति श्रुत्वा कुमारेण चिन्तितम् । 'अहो, दुराचारः समागत एव परं मम प्राणप्रियां गृहीत्वा, तदेतत्सुन्दरं जातमिति यत्सलोप्त्रो ऽयं चौरः' इति चिन्तयता कुमारेण बिलद्वारे विद्यासिद्धस्योत्तमाङ्गं प्रविशद्दृष्टम् । ततः कुमारेण चिन्तितम् । 'एतस्य शिरश्छिनद्मि, अथवा नहि नहि किं सत्पुरुषाश्छलान्वेषिणः, सर्वथा न युक्तमेतत्तावदस्य शक्तिमालोकयामि' इति ध्यायतः कुमारस्य विद्यासिद्धश्छिद्रेण प्रविष्टः । ततो भणितः कुमारेण । 'अरे, विद्यासिद्धो यदि भवान् तन्नीतिपथे व्रज, यदन्यायं कुरुषे

5) B हंतव्यो यदि ममोपरि. 21) C om. तावत्. 22) B कदाचिदयं. 26) B inter. धीमतां स्त्रीणां & कदापि. 27) B विश्वसति. 33) P B om. तस्य. 34) P प्रभातमाकलय्य. 38) B कुमारेणोक्तं for कुमारेण चिन्तितम्. 39) B °सुंदरं संजातं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तन्नोचितम्। यदि सत्येन चौरो ऽसि तेन निग्रहयोग्यस्त्वं तत्सज्जीभव युद्धाय।' तं राजतनयं प्रेक्ष्य 'अहो, कथमेष वैरिगुप्तः संप्राप्तः, तद्विनष्टं कार्यम्. तावत्किमनेन बालेन' इति चिन्तयता विद्यासिद्धेन प्रोचे।

'कृतान्तवदनप्राये क्षिप्तः केन बिले भवान्। कथं वा रूपसौभाग्यशाली निधनमिच्छसि' ॥ ८९

ततः 'कृपाणः कृपाणः' इति वदन् स देवायतने राजतनयसंबन्धिनं खड्गं खेटकं च गृहीत्वा दध्यौ। 'अहो, मदीयं न खड्गरत्नं न च खेटकमपि' इति चिन्तयन् कुमारमूलमागत्य बभाण।

'मदीयान्तःपुरे केन प्रेषितो मातृशासितः। आर्तं वा कुपितः प्रेतपतिरेव तवोपरि ॥ ९०
इदानीं ते न निस्सारो विद्यते बिलतो ऽमुतः। सूपकारकरायातः शशवत्त्वं विनंक्ष्यसि ॥ ९१
प्रोचे कुमारः 'किं रे रे, स्वैरचारी मम प्रियाम्। हृत्वाद्य माद्यसि प्राप्त एवासि त्वं यमान्तिकम्' ॥ ९२

§ ३७) इति वदता कुमारेण तदभिमुखं खड्गप्रहारः प्रदत्तः। तेनापि कलाकौशलशालिना वञ्चयित्वा तं प्रहारं कुमारं प्रति प्रहारो मुक्तः। कुमारेणापि स वञ्चितः। ततस्तयोर्वनमहिषयोरिव महानाहवः प्रवृत्तः, परमेतयोर्मध्ये न कस्यापि जयो ऽभूत्, तथाप्ययं विद्यासिद्धः 'कैतवी' इति विचिन्त्य चम्पकमालया प्रोचे। 'कुमार, खड्गरत्नमिदं स्मर'। 'रम्यमुक्तमनया' इति विचिन्त्य कुमारो निजगाद।

'यदि सिद्ध्यसि सिद्धानां चक्रिणां वासिरत्न भोः। तत्त्वं मम कराग्रस्थं लुनीह्यस्य शिरो ऽधुना' ॥ ९३

अथ विद्यासिद्धेन चिन्तितम्। 'अये, अनयैव वनितया खड्गरत्नमिदमस्यार्पितम्, आः पापे, कुत्र व्रजसि' इति वदन् तामेव दिशं विद्यासिद्धः प्रत्यधावत।

यावन्नाप्नोति वनितामिमामेष नराधमः। तावत्त्वरितमेवास्य शिरश्चिच्छेद राजसूः ॥ ९४

उक्तं चम्पकमालया।

'कुमारैतस्य वक्त्रान्तः समस्ति गुटिका किल। विदार्यास्य मुखं तत्त्वं तां गृहाण महाशय ॥ ९५
स श्रुत्वेति मुखात्तस्य दारिताद्गुटिकां ततः। लात्वा प्रक्षाल्य चात्मीयमुखे चिक्षेप तत्क्षणम् ॥ ९६
कुमारः सुगुणाधारः पारावारस्तरोर्णसः। तयाधिकं समुद्दीप्य दर्पभूः समभूत्तदा ॥ ९७

§ ३८) ततस्तस्य कुमारस्य तेनैव ललितविलासिनीजनेन सह विषयसुखमनुभवतो विस्मृतसकल-गुरुवचनस्य निजशक्तिविजितसिद्धलब्धार्थानेकप्रणयिनीजनसनाथपातालभुवनस्य तत्रैव वसत एकदिनमिव द्वादश वत्सराणि व्यतीयुः। द्वादशसंवत्सरप्रान्ते ऽस्य प्रसुप्तस्य तस्य निशायाः पश्चिमे यामे ऽदृश्यमानो मङ्गलपाठकः पपाठ।

'प्रभातसमये निद्रामोहं त्यज नरेश्वर। अवलम्बस्व सद्धर्मं कर्मनिर्मूलनक्षमम् ॥ ९८
संसारसागरं घोरमवगम्य दुरुत्तरम्। त्यक्त्वा स्त्रीसंगतिं धर्मपोतमेतमलं कुरु ॥' ९९

एतदाकर्ण्य राजसूनुना चिन्तितम्। 'अहो, कुत्रैष बन्दिध्वनिः।' ताभिर्भणितम्। 'देव, न जानीमः, स च न दृश्यते, केवलं शब्द एव श्रूयते।' एवं बन्दिना सप्त दिनानि यावज्जय जयेति शब्दपूर्वं संसार-वैराग्यजननानि वचांस्युच्चरता तस्य चेतो विस्मयस्मेरमतन्यत। ततो राजपुत्रेणोक्तम्। 'अयं तावद्-वक्ष्यमेति तदेनमेव पृच्छामि' इति वदतस्तस्य कुमारस्य स दिव्यबन्दी प्रत्यक्षीभूय 'कुमार, जय जय' इत्युवाच। कुमारेणोचे।

'भो दिव्य कथय क्षिप्रमायातः केन हेतुना। प्रत्यहं किमु वैराग्यवचो जल्पसि मत्पुरः ॥ १००
दिव्येनोचे 'तव स्वान्ते, किंचित्कौतुकमस्ति चेत्। पृच्छ तद्वत्स निर्गत्यामुतः पातालवेश्मनः' ॥१०१
स प्रोचे 'किंतु पातालमिदं कालः कियान् गतः। वसतो मे ऽत्र केनेतो निर्गच्छामि पथा ननु' ॥१०२
सो ऽप्यूचे 'श्वभ्रमेवेदं, द्वादशात्र समाः स्थितः। त्वं ततो विवरद्वारानया निर्गच्छ सत्वरम्' ॥१०३

§ ३९) एवमाकर्ण्य कुमारः समुत्थितः। तिरोहितो बन्दी। ताभिः स्त्रीभिर्नत्वा ततो विज्ञप्तः कुमारः। 'अतः परं देवः किं कर्तुकामः।' कुमारेणोक्तम्। 'अहं भगवन्तं दिव्यज्ञानिनं कथमपि गत्वा प्रक्ष्यामि यदेष किंचिज्जल्पति तत्सत्यं तत्क्रियते न वा' इति। ततस्ताभिर्भणितम्। 'यं मार्गं त्वमङ्गीकरिष्यसि वयमपि तमेवानुसरिष्यामः।' एवं प्रतिपद्य सद्यः कुमारः समुत्थाय तेनैव विवरद्वारेण निर्गत्येह स्थितानस्मान् मत्वागत्य संदेहं पप्रच्छ, निर्गतश्च सो ऽयं चन्द्रगुप्तपुत्रो वैरिगुप्तः, प्राग्भव-संबन्धिसङ्केतितदेवकृतबन्दिप्रयोगेण प्रतिबुद्धः।' ततो गौतमगणधारिणा विज्ञप्तम्। 'भगवन्, सांप्रतं

2) B तावत् अथवा किमनेन. 4) B om. ततः. 8) O कुमारः प्रोचे for प्रोचे कुमारः. 10) P प्रतिहारो for प्रति प्रहारो. 12) B °मनया विचिंतेति कुमारो. 21) P om. कुमारस्य, B adds च before सह. 22) B om. तत्रैव वसत, B एकं दिनमिव. 25) P कर्म्म निर्म्मलक्षमम्, O °निर्मैलन° 30) P तदेनमेव पृच्छामि. 37) B किमपि for कथमपि. 38) B यं त्वं मार्गमंगी.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

स कुम्भोपगतः' इति । भगवता निवेदितम् । 'तं कामिनीजनं पातालादाकृष्य संप्रति समवसरणतृतीयतोरणासन्न एव संप्राप्तः' यावद्भगवानिति कथयति तावदागत्य कुमारः स्त्रैणेन समं भगवन्तं प्रदक्षिणीकृत्य प्रणिपत्य च सुखासनस्थः पप्रच्छ । 'भगवन्, केन पुना क एष दिव्यः स्तुतिमतः प्रतिबोधयति, कुत्र वा स सांप्रतम्' इति । ततो भगवता पञ्चानां जनान भवपरंपरा विस्तारिता तावद्यावन्मणिरथकुमारः कामगजेन्द्रः स च तृतीयो वैरिगुप्तः स्वर्गतश्च्युत्वा ान् लोभदेवजीवो ऽत्र समुत्पन्नः प्रमत्तश्च । ततो मायादित्यचण्डसोमाभ्यामनेकप्राभातिकमङ्गलपठन ध्वना प्रतिबोधितः' इति । तन्निशम्य कुमारेणोक्तम् । 'भगवन्, संप्रति किं विलम्बं करोषि दी दानेन प्रसद्यताम् ।' ततो भगवता युवतीजनेन सह वैरिगुप्तः प्रव्राजितः । ततः सकलत्रैलो सरोवरालङ्कारपुण्डरीकः पुण्डरीकधवलमहिमा श्रीवर्धमानो हस्तिनापुरमागत्य समवसृतः । भगव पि स्वयं सरागनीरागदेवतास्वरूपं व्याख्यातम् । स्कन्दरुद्रचतुर्मुखव्यन्तरगणाधिपप्रभृतयो देवाः स ाः समाराध्यमाना जनानां जनाधिपा इव संतुष्टा राज्यश्रियं यच्छन्ति । रुष्टाः सन्तो ऽपहरन्ति च । नस्तीर्थकराः सिद्धा निर्दग्धकर्मेन्धनाः केवलिनो रजोमदमोहपरिहृता एते नीरागाः स्वर्गापवर्गश्रियं द ते ।

§ ४०) अत्रान्तरे ब्राह्मणदारकः श्यामलवक्षःस्थलविलसद्ब्रह्मसूत्रस्त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य भगवन्तं प्रणम्य पप्रच्छ । 'भगवन्, क एष पक्षी मनुष्यभाषया वक्ते, यत्तेनोक्तं तद्युक्तमयुक्तं वा ।' भगवतादिष्टम् । 'भद्र, स पक्षी वने दिव्यो यत्तेनोक्तं तत्सर्वमपि युक्तमेव ।' एतदवगम्य समवसरणतः स निष्क्रान्तः । ततो ज्ञानवतापि श्रीगौतमेन पृष्टम् । 'भगवन्, क एष सुखसंभवो दारकः, किमेतेन पृष्टम् ।' एवं पृष्टो भगवान्निवेदयामास ।

'अस्ति नातिदूरे सरलपुरं ब्राह्मणानां स्थानम् । तत्र यक्षदेवो महेभ्यः सूत्रकण्ठः । तत्सूनुः स्वयंभुदेवः । स च यक्षदेवः कालक्रमेण परलोकमियाय । अस्तमिते द्विजपतौ सर्वमपि वसुजालं विलिल्ये । पूर्वकर्मपरिणामेन दिनयोग्यमप्यस्य नास्त्यशनम् । एवं क्षीणे विभवे न भवन्ति लोकयात्राः, विसंवदन्त्यतिथिसत्काराः, बभूवुः शिथिला बन्धुक्रियाः, लहस्तितानि दानानि ।

गुरूणां बान्धवानां च महिमाभाजनं जनः । ता देव प्रजायेत मन्दिरे यावदिन्दिरा ॥ १०४
पुरः स्थिताः समुत्तुङ्गा अपि लक्ष्मीवतां नराः । भजन्ति न दृगातिथ्यं दारिद्र्याञ्जनभाजिनः ॥ १०५
मानवानां भवेदान्ध्यं बाधिर्यं च श्रिया सह । तो दीनं न पश्यन्ति न शृण्वन्ति च तद्वचः ॥ १०६

तत्परिज्ञाय जनन्या स्वयंभुदेवो भणितः ।

'सर्वो ऽपि शोभते लक्ष्म्या वत्स वत्सलमानस । तया विना भवानत्र जीवन्नपि मृतायते ॥ १०७

§ ४१) स पिता तव पुण्यवानस्तमितो ऽतः कुटुम्बपोषणं त्वदायत्तमेव' इति श्रुत्वा स्वयंभुदेवो मातुश्चरणनमस्करणपूर्वं रचिताञ्जलिः प्रोवाच । 'जननि, खेदपरं मनो न विधेयम्, अहं बहुभिरपि दिनैरनुपार्जितार्थो गृहं न विशामि' इत्युक्त्वा मन्दिरतो निःसृत्य विप्रसूनुर्ग्रामाकरनगरखेटाकुलां विपुलां विलोकयन् सर्वैरप्युपायैरर्थमन्वेषयन् चम्पापुरीमवाप । तत्र चास्तंगते दिनपतौ स्वयंभुदेवः पुर्यन्तःप्रवेशमलभमानो जीर्णोद्याने प्रविश्य कया ा विभावरीनिर्गमनोपायं करोमीति विचिन्तयन् तमालपादपमारुह्य व्यचिन्तयदिति 'धिग् जन्मेदं येन ममैतावतां दिनानां मध्ये सर्वत्र परिभ्रमतः करे वराटिकापि न चटिता । कथं गृहं प्रविशामि' इति चिन्तयन्नस्ति । ततस्तमालपादपस्याधो जनद्वयं समागतम् । एकेनोक्तम् । 'एतत्कार्यमस्य तमालस्याधः कार्यम् ।' द्वितीयेनोक्तम् । 'भवत्वेवम् ।' ततो द्वावपि दशापि दिशो विलोक्य सुन्दरमिति स्थानं ोचतुः । स्वयंभुदेवस्तयोर्वचो निशम्य स्थितः । ततस्ताभ्यां खनित्रेण भुवं खनित्वाभिज्ञानपूर्वकं करण्डकं निक्षिप्य प्रोक्तम् ।

'अत्र यः को ऽपि भूतो वा पिशाचो वापरो ऽपि वा । अयं न्यासीकृतस्तेन पालनीयो निधिः सदा ॥ १०८

इत्युक्त्वा तौ यथास्थानं गतौ विलोक्यामुना चिन्तितम् ।

'यत्र येन यदा यच्च यावल्लभ्यं यतो जनात् । तत्र तेन तदा तच्च तावदस्मादवाप्यते ॥ १०९

इति ध्यात्वा स च पादपादवतीर्य करण्डकस्थानि पञ्च रत्नानि निरीक्ष्य रोमाञ्चकवचिताङ्गश्चिन्तयामासेति । 'एतानि स्वीकृत्य संप्रति स्ववेश्म प्रति ामि' इति ध्यात्वा गृहीत्वा च स्वयंभुदेवः पथि गच्छन्महाटवीमासवान् । इतश्च दिनकरो ऽप्यस्तरो रजनि ।

4) ततो for ततो. 5) P भगवान् for भवान्. 6) °सोमाभ्यां प्राभातिक°. 7) P यौवनेन B यौवतेन for युवतीजनेन. 8) P om. पुण्डरीकः 19) B has a marginal gloss on द्विजपतौ and वसुजाल in this way: अर्थांतरं द्विजपतौ चन्द्रेऽस्तमिते सति वसुकिरण जालं विलयं गच्छति । 2) B समुत्तुंगापि. 26) B °मानसः 33) P न घटिता. 42) B इति दिनकरो°

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

§ ४२) सो ऽपि बहुलविटपसंकुले कस्मिन्नपि प्रदेशे ऽनल्पश्यामलदलनिचितं न्यग्रोधमारुह्येति ध्यातवान् । 'अहो, विधिना प्रदत्तं यद्दातव्यम् । ततो ऽधुना गृहं गतो रत्नमेकं विक्रीय सकलकुटुम्बबान्धवानां यत्कृत्यं तत्करिष्यामि ।' ततः प्रवृत्ते ऽवतमसे सूचीभेद्ये तत्र विविधवर्णा बहवः पक्षिणः समुच्छ्रितनवः स्वयंभुदेवाध्यासितमेव वटमाश्रितवन्तः । अथ तत्र समागत्यैकः पक्षी पक्षिसंघातमध्यस्थं जराजीर्णाङ्गं पक्षिणमेकं प्रणम्य व्यजिज्ञपदिति । 'तात, त्वयाहं जातस्त्वयाहं संवर्धितस्तरुणीभूतो नयने ममाद्य सफलीभूते, कर्णावपि कृतार्थौ जातौ, एतत्पक्षियुगलमपि सार्थं जातम् । अद्यात्मानं गरुत्मतो ऽपि गुरुतरं मन्ये ।' एतदाकर्ण्य जीर्णपक्षिणा भणितम् । 'संप्रति भवानतीवामन्दानन्दसंदोहमेदुरमना इव लक्ष्यते, [अतो] वत्स, भवता भ्रमता किमपि यद्दृष्टं श्रुतमनुभूतं वा तत्सर्वमपि निवेदय ।' तेनोक्तम् । 'तात शृणु, अद्याहं भवत्समीपतः समुत्पत्य गगनतलं किंचिदाहारमन्वेषयन् यावद्गगनतले भ्रमामि तावदहं हस्तिनापुरे प्राकारत्रितयमध्यगतं मनुष्यलोकं विलोक्य 'अहो, किं पुनरेतत्पश्यामि' इति ध्यात्वा द्वितीयप्राकारान्तरे पक्षिगणमध्ये गत्वाहमुपविष्टः सन् शोणाशोकपादपस्याधः सिंहासनासीनं भगवन्तं कमपि दिव्यज्ञानिनं ज्ञात्वा व्यचिन्तयमिति । 'अहो, दृष्टं यद्द्रष्टव्यं मया त्रिभुवनाश्चर्यकारि । ततस्तात, तेन भगवता सकलसंसारस्वरूपं प्ररूपितम् । तथा हि, 'प्रदर्शितः प्राणिगणविचारः । विस्तारितः कर्मप्रकृतिविशेषः । विशेषितो बन्धनिर्जराभावः । भावितः संसाराश्रवविकल्पः । विकल्पित उत्पत्तिस्थितिविपत्तिविशेषविस्तरः । प्ररूपितो यथास्थितो मोक्षमार्गः' इति । ततो मया भगवान् पृष्टः । 'हे नाथ, अस्मादृशः पक्षिणः प्राप्तवैराग्या अपि तिर्यग्योनित्वात्परायत्ताः किं कुर्वन्तु ।' ततो भगवता ममाभिप्रायं परिज्ञाय समाख्यातम् । 'हे देवानुप्रिय, भवान् संज्ञी पञ्चेन्द्रियः पर्याप्तस्तिर्यग्योनिरपि सम्यक्त्वं लभते ।' गणधारिणोदितम् । 'के प्राणिनो नरकगामिनः ।' भगवता निवेदितम् । 'ये पञ्चेन्द्रियवधकारिणो मांसाहारिणश्च ते सर्वे ऽपि देहिनः श्वभ्रयायिनः । ये च सम्यक्त्वं भजन्ते ते नरकतिर्यग्गतिद्वारपिधायिनः ।' मयोक्तम् । 'देव, पक्षिणः पञ्चेन्द्रियवधकारिणो मांसाहारिणश्च कथं सम्यक्त्वधारिणः, अस्माकं जीवितं पापपरमेव । एवं व्यवस्थिते मया किं कर्तव्यम् ।' ततो भगवान्निजगाद ।

'किल यः स्नेहं छित्वा नियन्त्र्य सर्वं तथा च करणगणम् ।
विधिना मुञ्चति देहं स प्राणी सुगतिमुपयाति ॥ ११०

पक्षिणो ऽपि शुद्धमनसः सम्यक्त्वं दधति' इति निवेद्य समुत्थाय भगवानन्यत्र विजहार । अहमपि तं भगवदुपदेशं निशम्य जातवैराग्यो ऽकृताहारस्तात, तव समीपमुपागतः । अधुना प्रसादं विधाय मां प्रेषय । ममापराधं सर्वमपि क्षमस्वेति यथा स्वार्थपरो भवामि ।' ततः स पक्षी स्नेहनिगडान् छित्वा स्पर्शनेन्द्रियादितुरगवृन्दमिदं नियन्त्र्य च मातरं ज्येष्ठं कनिष्ठं च भ्रातरं तथा महतीं लघ्वीं स्वसारं भार्यां शिशून् मित्राणि चापृच्छ्य गगनतलमुत्पपात ।

§ ४३) इतश्च विभातायां विभावर्यां सर्वो ऽपि पक्षिगणो वटपादपतः प्रययौ । तं विहङ्गगणं समुत्पतितं निरीक्ष्य स्वयंभुदेवो ऽपि विस्मयस्मेरमनाश्चिन्तितुं प्रवृत्तः । 'अहो, महदाश्चर्यं यदत्र वने पक्षिणो ऽपि मनुष्यभाषाभाषिणः सद्धर्मपरायणाश्चेति । अवश्यमेते दिव्यपक्षिणः । स च पक्षी कुटुम्बं परित्यज्यात्मनो हितं धर्ममेवाङ्गीचकार । यदि पक्षिणो ऽपि धर्ममार्गमनुसरन्ति तदहं परस्य रत्नानि गृहीत्वा कुटुम्बपोषणं कथं करोमि । ततः सांप्रतमेतदेव मे करणीयं यस्य समीपे ऽमुना धर्मः श्रुतस्तमेव गत्वा पृच्छामि । 'यद्भगवन् के पक्षिणः, किं वा तैर्मन्त्रितम्' इत्यापृच्छ्य यत्कृत्यं तत्पश्चादाचरिष्यामि । यदमुना पक्षिणा कृतम्' इति ध्यात्वा वटपादपादवतीर्य हस्तिनापुरमिदं समागतः । भो गौतम, मम समवसरणे सैष प्रविष्टः, पृष्टश्चाहमेतेन, स पक्षी वने कः, कथितो मया यथैष दिव्यपक्षी । इदं निशम्य समुत्पन्नवैराग्यो निर्गतः । ततो निर्विण्णकामभोगः संजातविवेको विगलितचारित्रावरणीयकर्मा तयो रत्नानि प्रत्यर्प्य ममैव सकाशमधुना समागच्छन्नस्ति' इति । यावदिदं स भगवान् महावीरो निवेदयति गौतमादीनां पुरस्तावत्प्रातः स्वयंभुदेवः प्रदक्षिणीकृत्य भगवन्तं प्रोवाच च । 'देव, प्रबुद्धो ऽहं वने पक्षिवचनमाकर्ण्य ततो मम दीक्षां देहि ।' ततो भगवता यथाविधि स्वयंभुदेवो दीक्षितः । चण्डसोमजीवः स्वयंभुदेवः पूर्वभवसङ्केतितदेवेन पक्षिप्रयोगेण प्रतिबोधितः । ततो भगवान् सर्वज्ञः श्रीमहावीरदेवो मगधदेशमण्डले श्रियोगृहं राजगृहं जगाम । तत्र रचिते सर्वदेवैः समवसरणे श्रीश्रेणिकः क्षोणिनायकः सपरि-

1) B पादप for विटप. 3) B has a marginal gloss on सूचीभेद्ये thus: लक्षणशब्दोयं महानिबडे. 8) P B om. [अतो]. 19) B adds च after ये. 24) adds भगवतोक्त before पक्षिणोऽपि. 30) P महने B यद्ने for यदत्र वने. 41) P संकेतितदेवेन.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

वारः परया भक्त्या भगवन्तं नत्वा यथास्थानसमासीनः सादरं प्रपच्छ। भगवन्, श्रुतज्ञानं किम्।'

§ ४४) ततो भगवता श्रुतज्ञानं साङ्गोपाङ्गं समादिष्टं विशिष्टम्। तथा च।

अ-इ-क-च-ट-त-प-य-श-एते शोभनवर्णा विज्ञेयाः।
आ-ई-ख-छ-ठ-थ-फ-र-ष-अशोभनास्ते पुनर्भणिताः॥ १११
ए-उ-ग-ज-ड-द-ब-ल-स-सुभगाः संभवन्ति सर्वकार्येषु।
ऐ-औ-थ-झ-ढ-ध-व-ह-न सुन्दराः कचन कार्येषु॥ ११२
ओ-औ-ङ-ञ-ण-न-म-अं-अः सिश्रस्वरूपा भवन्ति कार्येषु।
संप्रति फलमपि वक्ष्ये वर्णानामीदृशां सर्वम्॥ ११३
शोभनमशोभनं वा सुखदुःखं संधिविग्रहे चैव।
एति च नैति च लाभालाभौ न जयस्तथा च जयः॥ ११४
भवति च न भवति कार्यं क्षेमं न क्षेममस्ति नैवास्ति।
संपत्तिश्च विपत्तिर्वृष्टिश्च जीवितं मृत्युः॥ ११५
प्रथमवचने ऽपि प्रथमाः शुभवर्णाः संभवेयुरथ बहवः।
जानीहि कार्यसिद्धिं सिध्यति कार्यं न चाप्यशुभैः॥ ११६
अथवा पृच्छावचनं प्रथमं लात्वा च तन्निरीक्षेत।
विधिवचने भवति शुभं न शुभं प्रतिषेधवाक्ये च॥ ११७
अथवा फलकुसुमाक्षतपत्रं रूपकमन्यच्च पुरुषरूपं च।
अष्टविधभागलब्धं तेन फलं विद्धि चैतद्धि॥ ११८

ध्वजे तु सफलं सर्वं धूम उद्वेगकारकः। राज्यं श्रीविजयं सिंहे स्वल्पलाभश्च मण्डले॥ ११९
वृषे तुष्टिश्च पुष्टिश्च खरे तु गमनं कलिः। पूजा गजे भवत्येव ध्वांक्षे नित्यं परिभ्रमः॥ १२०

अत्रान्तरे श्रेणिकभूपस्य तनयो ऽष्टवर्षदेशीयो महारथकुमारः स्वामिनमानम्य व्यजिज्ञपत्। 'अद्य भगवन्, मया स्वप्नान्तः कालायसं सुवर्णमिश्रितं दृष्टम्। ततो ज्वलनज्वालावलीपरितप्तं तद्गिरिसारं परिक्षीणं, तच्च सुवर्णमेव केवलं स्थितम्, तस्य को ऽयं फलविशेषः।' भगवताज्ञप्तम्। 'भद्र, शोभनः स्वप्न एषः, सम्यक्त्वचारित्रकेवलज्ञानसमृद्धिं प्रान्ते शाश्वतसुखसंगमं च निवेदयति। शिलासारसदृशं कर्म। जीवस्तु कनकसमानः। तत्र ध्यानानलेन तद्दग्ध्वा त्वयात्मा निर्मलीकृतः। अन्यच्च चरमदेहः संजातस्त्वमसि भद्र, नृपगेहे कुवलयमालाजीवो देवः स्वर्गतश्च्युत्वा। सर्वमपि तस्य कथितं मायादित्यादिदेवपर्यन्तम्। ते सर्वे प्रव्रजिताः, पश्यैतान् सुकृतिनस्त्वम्।'

§ ४५) तदेतदाकर्ण्य महारथकुमारेण भणितम्। 'भगवन्, यद्येवं तावद्विषमश्चित्ततुरङ्गमः, किं विलम्बसे, मम दीक्षां ददस्व' इति भणिते तेन भगवता श्रीवर्धमानेन यथाविधि महारथकुमारो दीक्षितः।' इति ते पञ्चापि जना मिलिताः परस्परं जानते, यथा 'कृतपूर्वसङ्केताः सम्यक्त्वलाभे वयम्' इति। एवं तेषां भगवता श्रीवर्धमानजिनस्वामिना साकं विचरतां बहूनि वर्षाणि व्यतीयुः। कथितं च श्रीजिनेश्वरेण मणिरथकुमारादिसाधूनाम्, यथा 'स्तोकमायुर्भवताम्' इति परिज्ञाय ते पञ्चापि यतयो ऽनशनं प्रपद्य रागद्वेषबन्धनद्वयरहिताः शल्यत्रयदण्डत्रितयविवर्जिताः क्षीणकषायचतुष्काः चतुःसंज्ञारहिताः विकथाचतुष्टयपरित्यक्ताः चतुर्विधधर्मकर्मपरायणाः पञ्चसु व्रतेषु समुद्युक्ताः पञ्चसु विषयाभिलाषेषु द्वेषिणः पञ्चप्रकारस्वाध्यायप्रसक्तचेतसः पञ्चसमितीर्बिभ्राणाः पञ्चेन्द्रियशत्रूणां जेतारः षड्जीवनिकायपरिपालकाः सप्तभयस्थानप्रमुक्ताः अष्टविधमदस्थानविवर्जिता नवसु ब्रह्मगुप्तिषु रताः दशविधसाधुधर्मप्रतिपालनोद्यता एकादशाङ्गधारिणो द्वादशविधं दुस्तपं तपस्तप्यमानाः प्रतिमाद्वादशकबद्धरुचयो दुस्सहपरिषहसहिष्णवः स्वदेहे ऽपि निरीहा आमूलतो ऽपि श्रामण्यं निष्कलङ्कं प्रतिपालयन्तः पर्यन्तसमये समाधिनाराधनां व्यधुरिति।

§ ४६) तथा हि ज्ञानाचारो ऽष्टधा कालविनयादिकः, दर्शनाचारो ऽष्टधा निःशङ्कितादिकस्तत्र यः को ऽप्यतिचारः सर्वथैव तं त्यजामः। एकेन्द्रियाणां भूम्यप्तेजोवायुवनस्पत्यादीनां द्वीन्द्रियाणां कृमि-

1) P परभक्त्या B परमभक्त्या for परया भक्त्या. 15) O लात्या च. 25) P अन्यच्चरमदेहः. 37) B दशविधधर्म°. 38) P आमूरतोपि, P निःकलं प्रति.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शङ्खशुक्तिगण्डूपदजलौकप्रभृतीनां त्रीन्द्रियाणां यूकामत्कुणमत्कोटिलिक्षादीनां चतुरिन्द्रियाणां पतङ्गमक्षिकाभृङ्गदंशादीनां पञ्चेन्द्रियाणां जलचरस्थलचरखचरमानवादीनामस्माभिर्या हिंसा कृता सूक्ष्मा बादरा वा मोहतो लोभतो वा तां व्युत्सृजामः । हास्येन भयेन क्रोधेन लोभेन वा यत्किमपि वृथा प्रोक्तं तत्सर्वमपि निन्दामः प्रायश्चित्तं च चरामः । यदल्पं धनमपि क्वापि परस्य द्रव्यमदत्तं गृहीतं रागतो द्वेषतो वा तत्सर्वमपि त्यजामः । तैरश्च्यं मानुषं दिव्यं मैथुनं यत्पुरास्माभिः कृतं तत्त्रिविधं त्रिविधेनापि परित्यजामः । यस्तु धनधान्यपश्वादीनां परिग्रहो लोभतः कृतस्तं परिहरामः । पुत्रकलत्रमित्रबान्धवधनधान्यगृहादिष्वन्येष्वपि यन्ममत्वं कृतं तत्सर्वमपि निन्दामः । इन्द्रियपक्षे पराभूतैरस्माभिश्चतुर्विधो ऽप्याहारो रात्रौ भुक्तस्तं त्रिधापि निन्दामः । क्रोधमानमायालोभरागद्वेषकलहपैशून्यपरपरिवादाभ्याख्यानादिभिश्चारित्रविषये यद्दुष्टमाचरितं तत्त्रिविधेन व्युत्सृजामः । षड्विधबाह्याभ्यन्तरे तपसि यः को ऽप्यतिचारस्तं निन्दामः । वन्दनकप्रतिक्रमणकायोत्सर्गनमस्कारपरिवर्तनादिषु वीर्याचारे यद्वीर्यं गोपितं तत्त्रिधा निन्दामः । यत्कस्यापि किंचन वस्त्वपहृतं प्रहारः प्रदत्तो वा कर्कशं वचो जल्पितं चापराधश्च कृतो भवति सो ऽखिलो ऽप्यस्माकं क्षाम्यतु । यश्च मित्रममित्रं वा स्वजनो ऽप्यरिजनो ऽपि च स सर्वो ऽप्यस्माकं क्षाम्यतु तेषु सर्वेष्वपि समा एव । तिर्यक्त्वे तिर्यञ्चो नारकत्वे नारकाः स्वर्गित्वे स्वर्गिणो मानुषत्वे मानुषा ये ऽस्माभिर्दुःखे स्थापितास्ते सर्वे ऽपि क्षाम्यन्तु वयमपि तान् क्षामयामः । तेषु सर्वेष्वस्माकं मैत्री भवतु । जीवितं यौवनं लक्ष्मीर्लावण्यं प्रियसंगमा एतत्सर्वमपि वात्या नर्तितसमुद्रकल्लोलवल्लोलं व्याधिजन्मजरामृत्युग्रस्तानां देहिनां जिनप्रणीतं धर्मं विना न को ऽप्यपरः शरणम् । एते सर्वे ऽपि जीवाः स्वजनाः परजनाश्च जातास्तेषु मनागपि वयं सुधियः कथं प्रतिबन्धं विदध्मः । एक एव जन्तुरुत्पद्यते, एक एव विपत्तिमाप्नोति, एक एव सुखान्यनुभवति, एक एव दुःखान्यपि । अन्यच्छरीरमपरं धनधान्यादिकमन्ये बान्धवो ऽन्यो जीवस्तेषु कथं वृथा मुह्यामः । रसासृग्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्रयकृच्छकृतादिभिः पूरिते ऽशुचिनिलये वपुषि मूर्च्छां न कुर्मः । इदं देहं नित्यशः पालितं लालितमप्यवक्रयगृहीतगृहमिवास्थिरमचिरेणापि मोक्तव्यमेवेति । धीरा अपि कातरा अपि खलु देहिनो मृत्युमाप्नुवन्ति । वयं तथा मरिष्यामो यथा न पुनरस्माकं मृत्युकदर्थना । सांप्रतमर्हन्तः सिद्धाः साधवः केवलिभाषितो धर्मः शरणमस्माकमिति । जिनोपदिष्टः कृपामयो धर्मो माता धर्माचार्यस्तातः सोदरः साधर्मिको बन्धुश्च । अन्यत्सर्वमपीन्द्रजालमिव । भरतैरावतमहाविदेहेषु श्रीवृषभनाथादीन् जिनान् सिद्धानाचार्यानुपाध्यायान् साधून् नमामः । सावद्ययोगमुपधिं तथा बाह्यमाभ्यन्तरं यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन व्युत्सृजामः । यावज्जीवं चतुर्विधाहारमप्युच्छ्वासे चरमे च देहमपि त्यजामः । दुष्कर्मगर्हणा १ जन्तुजातक्षामणा २ तथा भावना ३ चतुःशरणं ४ नमस्कारः ५ तथानशनं च ६ एवमाराधना षोढा विहिता । ततः

दग्ध्वा ध्यानधनंजयेन निखिलं कर्मेन्धनौघं क्षणा-
दुन्मीलत्कलकेवलोक्यपरिज्ञातत्रिलोकीतलाः ।
ते पञ्चापि मुनीश्वराः समभवन् व्युत्सृष्टदेहास्ततः ।
श्रीमन्मुक्तिनितम्बिनीस्तनतटालङ्कारहारश्रियः ॥ १२१

इत्याचार्यश्रीपरमानन्दसूरिशिष्यश्रीरत्नप्रभसूरिविरचिते श्रीकुवलयमालाकथासंक्षेपे
श्रीप्रद्युम्नसूरिशोधिते कुवलयचन्द्रपितृसंगमराज्यनिवेशपृथ्वीसारकुमार-
समुत्पत्तिव्रतग्रहणप्रभृतिकश्चतुर्थः प्रस्तावः ॥ ४ ॥

॥ इति कुवलयमालाकथा समाप्ता ॥

---

2) P om. खचर. 7) B om. इन्द्रियपक्षे etc. to निन्दामः. 8) P C द्वेषकालोपशून्य. 11) B च । अपकारश्च. 19) P यकृत्सकृतादिभिः. 21) P मुक्तव्यमिति B मोक्तव्यमिति. 22) P B शरणमिति. 24) P साधून्नमाम. 29) P उन्मीलत्केवलोदय. 31) °हारः श्रिय. 33) P कुवलयचंद्रराज्यनिवेश. 35) P B omit इति, P B श्रीमत्कुवलय°, P B समाप्ताः ॥ छ ॥. P at the close एवं ग्रंथसंख्या ॥ ३९९४ ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ संवत् १४८९ वर्षे आषाढ शुदि १४ चतुर्दश्यां बुधे कुवलयमाला कथा लिखिता ॥ छ ॥ चिरं नंदतात् । B at the close एवं ग्रंथाग्रसंख्या ३८०४ ॥ सं० १४४५ वर्षे मार्गसिर शुदि ६ गुरुदिने पुस्तिका लिखिता ॥ छ ॥ यादृशं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया । यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते । १ भग्नपृष्टिकटिग्रीवा अधोदृष्टिरधोमुखं [।] कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत् । २ शुभं भवतु मंगलमस्तु लेखकपाठकयोः ॥ छ ॥ उदकानलचोरेभ्यो मूषकेभ्यो [भ्य] स्तथैव च । परहस्तगतां रक्ष एवं वदति पुस्तिकाः [का] ॥ छ ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ छ ॥ C at the close ॥ एवं ग्रन्थसङ्ख्या ३८९४ ॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

श्रीरत्नप्रभसूरिविरचितः

कुवलयमालाकथासंक्षेपः

समाप्तः ।

आ.श्री. कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org